April to June 2021
E-Journal
Volume I, Issue XXXIV

RNI No. – MPHIN/2013/60638
ISSN 2320-8767, E-ISSN 2394-3793
Impact Factor - 6.780 (2020)

Naveen Shodh Sansar

(An International Refereed/ Peer Review Research Journal)

नवीन शोध संसार

Editor - Ashish Narayan Sharma

Office Add. "Shree Shyam Bhawan", 795, Vikas Nagar Extension 14/2, **NEEMUCH** (M.P.) 458441, (INDIA)
Mob. 09617239102, **Email** : nssresearchjournal@gmail.com, **Website** www.nssresearchjournal.com

Index

01. Index 02
02. Regional Editor Board 07
03. Editorial Advisory Board 08
04. Referee Board 09
05. Spokesperson 11
06. Some Psychological Aspects of the Ancient Indian Education System : A Study 12
(Dr. Ashish Kumar Chachondia)
07. The Effect of Marketing Mix Strategy Adopted By Private Hospitals 15
(Dr. Rajeshri Desai, Dr. Shikha Kumrawat)
08. Phytochemical screening for various secondary metabolites of *Cocculus hirsutus* 18
(Stem, Leaf and Fruit Ethanolic Extracts) (Dr. Rajendra Prasad)
09. Economic impact of Goods and Services Tax(GST) on Indian Economy 24
(Dr. C.M. Tembhurnekar)
10. Comparison of Alienation and Mental Health among Rural and Urban College students 32
(Dr. Rashmi Singh, Dr. Jyotsana Meghwal)
11. Luminescence Characterization Of Tb Doped $Ca(Vo_3)_2$ Phosphors 35
(Vikas Gulhare, R. S. Kher, S. J. Dhoble)
12. Chemical Composition of Immune Stimulator Compound Acemannan Polysaccharides and 38
Gel of *Aloe Ferox Species* Under Stresses of Soil pH and Irrigation (Jyoti Nema, S. K. Shrivastava)
13. Impact of COVID-19 on Small Scale Entrepreneurs in India : An Overview 43
(Dr. Renu Markande, Dr. Anthonima Kenneth Robin)
14. Impact of Computer Technology Usages on Academic Performance in Higher Education 46
(Dr. Sheetal Chhabra, Dr. Vaniki Joshi)
15. Interpreter of Maladies: A Manifesto of Diasporas Sensibility (Miss Varsha Tiwari) 52
16. Environmental Pollution and Disease (Dr. (Smt.) Sadhna Goyal) 54
17. Result Assessment of TGCA And ECGCA (Ms. Anju Dave) 55
18. Growth in Area, Production and Productivity of Turmeric in Karnataka and India: 57
Problems and Suggestions (Anand Avale, Dr. Kiran Kumar P)
19. वैदिक परमात्मा- दक्ष प्रजापति (यज्ञ) (सृष्टिकर्ता, आत्म तत्व व शोडषी कला के रूप में 62
(आषाढ़ दक्ष पूर्णिमा-दक्ष प्रजापति के प्राकृटय दिवस के संदर्भ में)(डॉ. ईश्वरलाल प्रजापति)
20. मालवी बोली की कहावतें (डॉ. विनय शर्मा) 65
21. भारत में खाद्य सुरक्षा की स्थिति : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 70
(डॉ. सुनील कुमार चौधरी, डॉ. वन्दना मण्डलोई)
22. छत्तीसगढ़ की महिलाओ द्वारा आजीविका का साधन लोकनृत्य और गायिकी 76
(श्रीमती गायत्री तिवारी, डॉ. अंजू तिवारी)
23. टूटता परिवार बिखरता बचपन (प्रो (डॉ.) अनसूया अग्रवाल, डी. लिट्.) 79
24. भारत स्वदेशी बनाम आत्मनिर्भर (डॉ. लीला डावर, डॉ. तबस्सुम पटेल) 81
25. साहित्यकार नागार्जुन के उपन्यासों में नारी विमर्श (देवेन्द्रसिंह ठाकुर, डॉ. श्रीमती मंजुला जोषी) 83
26. खेल द्वारा शिक्षा (डॉ. सोनाली सिंह) 86
27. एक नई पहल - नई शिक्षा नीति - एन.सी.सी इलेक्टिव कोर्स के रूप में (डॉ. उदय डोलस) 88
28. गाँधी दर्शन के सामाजिक संरचना की अवधारणा (डॉ. गोपाल सिंह) 90
29. गाँधी चिन्तन में ग्राम स्वराज्य की आर्थिक संरचना की अवधारणा (डॉ. दुलारी राम मीना) 92
30. संगीत शिक्षा और गुरु शिष्य परंपरा (शाश्वती श्रीवास्तव) 95
31. पश्चिम ओड़िशा के लोक संस्कृति की वाहक - लोक वाद्य (गोविन्द नाएक) 97
32. नई शिक्षा नीति-2020 (डॉ. कलिका डोलस) 100

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

33. नारी सशक्तिकरण में अम्बेडकर का योगदान (डॉ. राजाराम परते) 103
34. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: प्रारंभिक बाल्यावस्था एवं देखभाल की शिक्षा के संदर्भ में शिक्षक शिक्षा 105
की चुनौतियाँ एवं समाधान (डॉ. वीन्द्रजीत कौर, अरोरा डॉ. अंजना पाटनवाला)
35. झारखंड में भगत परंपरा और टाना भगत आन्दोलन : एक विश्लेषण (नीरज कुमार) 109
36. वैदिकी शिक्षा पद्धति (डॉ. सविता वशिष्ठ) 112
37. श्रमिक अधिकारों में डॉ. अंबेडकर का योगदान: एक अवलोकन (डॉ. रजनी दुबे) 114
38. हिन्दी लेखिकाओं की रचना धर्मिता एवं आधुनिकता (कहानी के विशेष संदर्भ में)(डॉ. विजयलक्ष्मी पोद्दार) 116
39. वैश्विक महामारी में जनसंचार माध्यमों पर विश्लेषणात्मक अध्ययन (डॉ. संगीता कालरा) 118
40. ब्रिटिश काल का कला घोटाला (अरविन्द कुमार) 120
41. कोविड-19लॉकडॉउन का भारत की प्रमुख नदियों पर प्रभाव (देवेन्द्र धुर्वे) 123
42. कम्प्यूटर और हिन्दी भाषा (डॉ. विनय शर्मा) 126
43. बैकों की वित्तीय स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन (चयनित बैंक के संदर्भ में) (छाया शाक्य) 129
44. जनसंख्या प्रक्षेपण : ग्वालियर सम्भाग के जिला मुख्यालय नगरों की जनसंख्या का प्रक्षेपण वर्ष 2020........ 133
(डॉ. महिमा राठौर, डॉ. आर.के. श्रीवास्तव)
45. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की जीवन शैली का अध्ययन........ 135
(डॉ. इंद्रजीत सिंह भाटिया)
46. जयशंकर प्रसाद का 'कामायनी कृत' जीवन दर्शन (डॉ. सूर्य प्रकाश नापित) 139
47. गाँधी चरित हिन्दी काव्य (हृदा नाग) 142
48. Higher Education in Rural Areas of India (Dr. Sonia Chandani) 144
49. Inculcation of Value System/Ethics Among Students (Dr. Kavita Chandani) 146
50. Consumer Satisfaction Level towards Eco- Friendly Products 149
(Dr. Pooja Chouksey, Dr. Sonam Kulkarni Jaiswal)
51. भारतीय आयकर अधिनियम द्वारा दी जा रही रियायतें व छूटों से वेतनभोगी करदाताओं में बचत की........ 152
बढ़ती प्रवृत्ति का अध्ययन (डॉ. वीनस शाह, डॉ. सविता अग्रवाल)
52. Recent Advances in Biofuel Production Technology- A Comprehensive Review 154
(Dr. Rashmi Ahuja)
53. देवगढ़ ठिकाने का भौगोलिक -ऐतिहासिक परिचय (श्रीमती वर्षा चुण्डावत, डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत) 156
54. अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में भारतीय संस्कृति का योगदान-एक अध्ययन (प्रो. रीटा शर्मा, खेम चन्द) 160
55. Critical Analysis of Reservation Policy (Puja Nagar) 162
56. सोशल मीडिया में हिन्दी का बढ़ता प्रयोग (डॉ. सुषमा शाही) 165
57. हिन्दी भाषा एवं साहित्य का अन्त: सम्बन्ध (डॉ. मुकेश भार्गव) 167
58. Comparative Study of Education Patterns and Challenges of Students with Special 170
Needs In Higher Education Institutes of U.S. Nagar & Nainital (Sagheer Ahmad)
59. Role of Press and Media in the Indian Democracy in Present Times 173
(Dr. Rashmi Tandon Mishra)
60. अवधी और भोजपुरी लोकगीतों में संस्कार विधान (डॉ. वन्दना अग्निहोत्री) 177
61. The Impact of Consumer Digital Literacy on Digital Banking (with Special Refrence to 180
Bilaspur District) (Swati Pandey, Dr. Premshankar Dwivedi)
62. एनएसएस अमृत महोत्सव जुलाई -2021 के उपलक्ष्य में अंग्रेजी से उर्दू में अनूदित 'स्व. श्री जॉन कीट्स' 182
की रचना 'ऑड टू ऑटम' (डॉ. सेहबा जाफरी)
63. Laws Relating to Crime Against Women (Dr.Sarita Dehariya Mehra) 183
64. The Theme of Childhood in the Literature of Ruskin Bond (Dr. Shailendra Kumar Chourasia) 188
65. The Portrayalof Borders and Boundaries in *The Hungry Tide* 191
(Dr. Shailendra Kumar Chourasia)

66. Depiction of Udasis of Baba Nanak in the Wall Paintings of Punjab (Dr. Rupali Razdan) 196
67. A Study of Problems and Possibilities in the Field of Eco-Tourism (Special Reference to Jabalpur) (Mrs. Archana Sane) 199
68. A Study of Travel and Tourism (Mrs. Aarti Verma) 203
69. विद्यानिवास मिश्र का निबंध साहित्य (डॉ. शिप्रा वर्मा) 207
70. Right to Free Legal Aid (Dr. Anuradha Tiwari) 209
71. Need & Importance of Freedom of Speech and Expression in India (Priyanka Sarkar, Dr. B.K. Yadav) 211
72. Restrictions on Freedom of Expression in India (Loknath Paul, Dr. B.K. Yadav) 215
73. Emergence of Cyber Crimes During Covid 19 Pandemic (Shounak Bhattacharjee, Dr. B.K. Yadav) 218
74. Marketing Strategies of Indian Automobile Companies: A Case Study of Maruti Suzuki India Limited (Dr. Prasann Jain, Sanjay Payasi) 222
75. Impact of Human Resource Management (HRM) Practices on Employee Performance (Sanjay Payasi, Dr. Shaizal Batra) 226
76. उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का लिंगवार प्रभाव (प्रहलाद मटोरिया) 230
77. समाजीकरण में विभिन्न सामाजिक संस्थाओं की भूमिका (डॉ. हरिचरण मीना) 236
78. उच्च प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के जीवन में ऑनलाइन शिक्षा से मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन पर होने वाले प्रभावों का अध्ययन (अभिलाषा कुमावत) 239
79. साँची के बौद्ध स्मारकों में बुद्ध का जीवन दृष्य (डॉ. एकता पाल) 243
80. New Dimensions & Restrictions of Freedom of Speech and Expression in India (Prithwish Chakraborty, Dr. B.K. Yadav) 247
81. Amorous Relationship in the Novels of Chetan Bhagat (Vijaylaxmi Sathe) 250
82. The Impact of COVID 19 on CSR and Philosophy of Marketing (Dr. Swati Mathur) 255
83. किशोर श्रमिक : हमेशा आपके आस-पास, लेकिन क्यों (शिवपुरी शहर के संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन) (गौरव आर्य) 260
84. Non Verbal Communication Through Bioindicators (Miss Nikita Rai, Dr. Jaya Sharma, Dr. Sehba Jafri) 264
85. कवि प्रदीप के राष्ट्रीय गीत और संवेदना (संदीप सिद्ध) 267
86. वर्तमान परिदृष्य में युवाओं का पारंपरिक व ऑनलाइन खरीदारी के प्रति जागरूकता का अध्ययन (रितु चौहान).... 270
87. Seven Steps Around The Fire: A Play of Mahesh Dattani Against Dehumanized Approach Towards Eunuchs (Jyoti Pandey) 272
88. उज्जैन संभाग में उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र. के उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो के उपरांत उद्यम प्रारंभ करने वालो की आर्थिक स्थिति का अध्ययन (डॉ. रूपचंद चौहान) ... 275
89. A study of Service Quality in Health Care Industry (Dr. Sandeep Singh, Dr. Juhi Kamakoty) 278
90. उज्जैन संभाग में उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र. के उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो के उपरांत उद्यम प्रारंभ नही करने वालो द्वारा उद्यमिता नही अपनाने के कारणो का अध्ययन (डॉ. रूपचंद चौहान) 283
91. Critical Evaluation of Online Teaching Learning Process During Covid-19 (Dr. Lubhawani Tripathi) 286
92. खरगोन जिले के धार्मिक और ऐतिहासिक पर्यटन नगर महेश्वर का एक भौगोलिक अध्ययन (डॉ. सुरेश अवासे) 289
93. वर्ष 2014 से वर्तमान काल तक भारत की विदेश नीति का अध्ययन (आशुतोष सिंह) 293
94. बैतूल जिले की कृषि उत्पादकता एवं फसल स्वरुप में परिवर्तन का विश्लेषण - उन्नीसवीं सदी की प्रमुख नीतियों के अंतर्गत नवीन आर्थिक नीति के प्रभावों के विशेष सन्दर्भ में (जगेन्द्र धोटे) 297
95. छत्तीसगढ़ राज्य के कृषि विकास में सहकारी बैंक के ऋण की मांग एवं ऋण की वसूली का विश्लेषण (उपेन्द्र कुमार साहू, डॉ. प्रेम शंकर द्विवेदी) 300

96. ग्राम पंचायतों की कार्य शैली का मूल्यांकन (शिवराज सिंह राठौड़) 305
97. कोरोना काल में शिक्षा व्यवस्था (डॉ. शशिकिरण नायक, डॉ. रोहिणी त्रिपाठी) 307
98. पृष्ठ पग ऑन ड्राईव प्रहार क्षमता पर खिलाडी के मानसिक प्रशिक्षण के प्रभाव का अध्ययन (अंशुल शर्मा, डॉ. अखिलेश कुमार सिंह) 309
100. Effects of Plyometric Training on Selected Fitness Variables of Handball Players at University Level of State Punjab (Karamjit Kaur, Dr. Rajesh Kaswan) 312
101. Impulsive excitation of mechanoluminescence in g-irradiated $Mg(VO_3)_2$: Ce phosphors (Vikas Gulhare, S.J. Dhoble, R.S. Kher) 316
102. विकासाचे निर्देशांक एक आढावा (डॉ. एस. यु. अनपट) 318
103. बी.एड.स्तर पर आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियों में एड्स के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन (श्रीमती सरोज सिंह हाडा, श्रीमती कीर्ति राज राव) 322
104. महामारी को इंगित करती साहित्यिक कृतियाँ (डॉ. डी.पी. चन्द्रवंशी) 325
105. Education and Human Values : Looking Back and Thinking for the Future (Dr. Kuldeep Singh Tomar) 327
106. मध्यप्रदेश की सहरिया जनजाति की मूल समस्या गरीबी से अशिक्षा की ओर (डॉ. विजय सिंह) 329
107. भारत में हरित क्रान्ति का मूल्यांकन (डॉ. जयराम सोलंकी) 331
108. Modern Ghazal Singing Poets Of Rajasthan (Rajasthan Ke Modern Gazal Writers) (Dr. Shaheen Afroz) 333
109. Emerging Issues in High Rise Buildings: Geo-Technical Aspects (Er. Yagyesh Narayan Shrivastava) 335
110. इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हिंदी काव्य-कृतियों में राष्ट्रीय चेतना के स्वर (कांचन शेंदुर्णीकर) 337
111. आधुनिक शिक्षा प्रणाली और भारतीय संविधान का विश्लेषनात्मक अध्ययन (डॉ. पूजा नागर) 341
112. A Study on Small Scale Industry: With Special Reference to Jammu & Kashmir (Dr. L. N. Sharma, Mohd Rafi Malla, Dr. Imtiyaz Rashid Lone) 345
113. Trends of Urbanization and Urban Sprawl Growth Centre in Udaipur City in Rajasthan (Varsha Chundawat) 349
114. A Study of Market Efficiency and its Causal Impact on Investors' Behaviour (Dr. Atul Dubey) 352
115. भीष्म जी के नाटकों में ऐतिहासिकता (डॉ. तृष्णा शुक्ला) 355
116. A Comparative Study of General Well Being of Students of Government and Private Schools (Dr. Ravi Kumar Sharma) 358
117. चन्देरी का हस्त करधा वस्त्र उद्योग (राजकुमार अहिरवार, डॉ. ममता राजावत) 362
118. प्राचीन यूनानी और लैटिन साहित्य में भारतीय पशु पक्षियों का विवरण : एक समीक्षात्मक अध्ययन (अजय कुमार, डॉ. अजय सिंह आर्य) 364
119. Social Media Strategies in Post COVID - 19 Situation (Vijay Kumar Shrivastava, Hitendra Bargal, Uttam Rao Jagtap) 367
120. उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में जीवन कौशल का अध्ययन (डॉ. खेल शंकर व्यास, शीला सालवी) 370
125. न्यायपालिका की स्वतंत्रता एक अध्ययन,न्यायाधीशों की नियुक्ति के विशेष संदर्भ में(डॉ. राम सिंह पटेल) 373
126. 'कबीरदास' के काव्य में तत्त्वज्ञान का वैशिष्ट्य (डॉ. श्याम पाल मौर्य) 377
127. किसानों को प्राप्त लाभ एवं संभावित समस्याओं का समग्र मूल्यांकन: नए कृषि कानूनों के संदर्भ में (भास्कर दुबे) 379
128. श्रमजीवी महिलाएँ एवं पारिवारिक संगठन का समाजशास्त्री अध्ययन (रुची गौतम) 382
129. तक्षशिला एक शिक्षा केन्द्र के रूप में (संजीव कुमार, डॉ. अजय सिंह आर्य) 384

130. A Comparative Study of Profitability of Private and Public Sector General Insurance Business in India from the Year 2007-08 to 2020-21 (Dr. P. K. Sanse, Ekta Pandey) 388
132. मादक द्रव्य व्यसन व भारतीय विधि की स्थिति (ऋतिका साहनी, डॉ. दिव्या चांसोरिया) 397
133. Trace Elements Intake in Urban Population of North India (Dr. Shobha Gupta) 399
134. Charting a New Path Towards Gender Equality in India – Uniform Civil Code in India (Mrs. Ganga Mishra, Dr. Neelesh Sharma) 402
135. The Relevance of the 'Panchatantra' (Dr. Rajkumari Sudhir) 405
136. Role of ICT and Women Empowerment in India (Dr. Sapna Mishra) 408
137. राष्ट्रीय एकता का वाहक भारतीय संविधान (डॉ. प्रवीण ओझा).. 412
138. Analysis on Marketing Strategy of FMCG Products (Dr. Preeti Anand Udaipure) 415
139. भारत में प्राचीन काल में समय की गणना- एक ऐतिहासिक अध्ययन (डॉ. मधुसूदन चौबे)........................ 419
140. समकालीन हिन्दी कहानी में जन-जीवन : एक अध्ययन (डॉ. जयराम त्रिपाठी)...................................... 423
141. A Study of Corporate Social Responsibility Practices in the Selected Textile Companies of Madhya Pradesh (Mr. Sheetal Jain, Dr. Vijay Kumar Jain) 427
142. Biodiversity Conservation, Sustainable Development, and Human Health : Today and Tomorrow (Dr. Jolly Garg, Anant Kumar Garg, Dr. Shobha Gupta) 430
143. युवाओं के प्रेरक: स्वामी विवेकानन्द (डॉ. आरती कनौजिया).. 433
144. स्वरोजगार योजनाओं में जिला उद्योग केन्द्र की भूमिका का अध्ययन- नागपुर जिले के विशेष संदर्भ में (नीरज सोनी, डॉ. डी. बी. कोष्टा)........ 435
145. On the Structure Equation $F^5 + F^3 = 0$ (Lakhan Singh) 439
146. वर्षा जल संरक्षण : उदयपुर जिले का एक भौगोलिक अध्ययन (प्रियंका आमेटा, डॉ. हेमेन्द्र शक्तावत).......... 441
147. Impact of Covid-19 on Education (Dr. Kiran Yadav).. 444
148. परम्परा और साहित्य (डॉ. ओमवती देवी) 446
149. On CR- Structure and F- Structure Satisfying $F^{p_1 p_2} + F = 0$ (Lakhan Singh) 449
150. Host Specificity Tests for *Zygogramma Bicolorata* on Some Indigenous and Economically Important Flora Species, Closely Related to *Parthenium Hysterophorus* (Dr. Neeta Sharma) 451
151. हरियाणा में पारिस्थितिकी पर्यटन: समस्याएं व समाधान (डॉ. मुकेश कुमार)...................................... 454
152. Perceptions of Body Image among College Girls in Udaipur City: A Comparative Analysis with Models and Celebrities (Rashmi Manoj, Vinita Sharma) 458
153. दक्षिणी राजस्थान क्षेत्र के विश्वविद्यालय के बॉक्सिंग एवं कुश्ती के खिलाड़ियों की शारीरिक क्षमताओ का एक तुलनात्मक अध्ययन (संदीप कुमार) 461
154. Gender Gap in India: Based on Global Gender Gap Report 2018 (Dr. Saba Agwani) 465
155. भारतीय युवाओं में नशे की चुनौतियां एवं समाधान (हेमन्त कुमार मिश्रा) 468
156. Impact of Pilates Yoga on Fitness & Health (Dr. Pravita Khatri) 471
157. राजसमंद जिले में मार्बल उद्योग की अवस्थिति को प्रभावित करने वाले कारक (बद्रीलाल रेगर, डॉ. वीना सनाढ्य) 473
158. Textile Recycling (Dr. Punita Chordia) 477
159. A Study of Job Satisfaction of B.Ed. Trained Teachers Working at Primary Level in Relation to Their Teaching Effectiveness (Dr. Satish Chand) 479
160. अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित हायर सेकेन्डरी विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के शिक्षक अभिवृत्ति में भिन्नतापरक प्रभाव का अध्ययन (रामचन्द्र,डॉ. राजेन्द्र सिंह)..... 483
161. Importance of Social Studies as A Mandtory Subject in Entire Schooling (Dr. Rita Bisht).............. 487

Regional Editor Board - International & National

1. Dr. Manisha Thakur - Fulton College, Arizona State University, America.
2. Mr. Ashok Kumar - Employbility Operations Manager, Action Training Centre Ltd. London, U.K.
3. Ass. Prof. Beciu Silviu - Vice Dean (Management) Agriculture & Rural Development, UASVM, Bucharest, Romania.
4. Mr. Khgendra Prasad Subedi - Senior Psychologist, Public Service Commission, Central Office, Anamnagar, Kathmandu, Nepal.
5. Prof. Dr. G.C. Khimesara - Former Principal, Govt. PG College, Mandsaur (M.P.) India
6. Prof. Dr. Pramod Kr. Raghav - Research Guide, Jyoti Vidhyapeeth Women University, Jaipur (Raj.) India
7. Prof. Dr. Anoop Vyas - Former Dean, Commerce, Devi Ahilya University, Indore (India) India
8. Prof. Dr. P.P. Pandey - Dean, Commerce, Avadesh Pratapsingh University, Rewa (M.P.) India
9. Prof. Dr. Sanjay Bhayani - HOD, Business Management Deptt., Saurashtra University, Rajkot (Guj.) India
10. Prof. Dr. Pratap Rao Kadam - HOD, Commerce, Govt. Girls PG College, Khandwa (M.P.) India
11. Prof. Dr. B.S. Jhare - Professor, Commerce Deptt., Shri Shivaji College, Akola (Mh.) India
12. Prof. Dr. Sanjay Khare - Prof., Sociology, Govt. Auto. Girls PG Excellence College, Sagar (M.P.) India
13. Prof. Dr. R.P. Upadhayay - Exam Controller, Govt. Kamlaraje Girls Auto. PG College, Gwalior (M.P.) India
14. Prof. Dr. Pradeep Kr. Sharma - Professor, Govt. Hamidia Arts & Commerce College, Bhopal (M.P.) India
15. Prof. Akhilesh Jadhav - Prof., Physics, Govt. J. Yoganandan Chattisgarh College, Raipur (C.G.) India
16. Prof. Dr. Kamal Jain - Prof., Commerce, Govt. PG College, Khargone (M.P.) India
17. Prof. Dr. D.L. Khadse - Prof., Commerce, Dhanvate National College, Nagpur (Maharastra) India
18. Prof. Dr.Vandna Jain - Prof., Hindi, Govt. Kalidas Girls College, Ujjain (M.P.) India
19. Prof. Dr. Hardayal Ahirwar - Prof.,Economics, Govt. PG College, Shahdol (M.P.) India
20. Prof. Dr. Sharda Trivedi - Retd. Professor, Home Science, Indore (M.P.) India
21. Prof. Dr. Usha Shrivastav - HOD, Hindi Deptt., Acharya Institute of Graduate Study, Soldevanali, Bengaluru (Karnataka) India
22. Prof. Dr. G. P. Dawre - Professor, Commerce, Govt. College, Badwah (M.P.) India
23. Prof. Dr. H.K. Chouarsiya - Prof., Botany, T.N.V. College, Bhagalpur (Bihar) India
24. Prof. Dr. Vivek Patel - Prof., Commerce, Govt. College, Kotma, Distt., Anooppur (M.P.) India
25. Prof. Dr. Dinesh Kr. Chaudhary - Prof., Commerce, Rajmata Sindhiya Govt. Girls College, Chhindwara (M.P.) India
26. Prof. Dr. P.K. Mishra - Prof., Zoological, Govt. PG College, Betul (M.P.) India
27. Prof. Dr. Jitendra K. Sharma - Prof., Commerce, Maharishi Dayanand Uni. Centre, Palwal (Haryana) India
28. Prof. Dr. R. K. Gautam - Prof., Govt. Manjkuwar Bai Arts & Commerce College, Jabalpur (M.P.) India
29. Prof. Dr. Gayatri Vajpai - Professor, Hindi, Govt. Maharaja Autonomus College, Chhattarpur (M.P.) India
30. Prof. Dr. Avinash Shendare - HOD, Pragati Arts & Commerce College, Dombivali, Mumbai (Mh.) India
31. Prof. Dr. J.C. Mehta - Fr. HOD, Research Centre, Commerce, Devi Ahilya Uni., Indore (M.P.) India
32. Prof. Dr. B.S. Makkad - HOD, Research Centre Commerce, Vikram University, Ujjain (M.P.) India
33. Prof. Dr. P.P. Mishra - HOD, Maths, Chattrasal Govt. PG College, Panna (M.P.) India
34. Prof. Dr. Sunil Kumar Sikarwar - Professor, Chemistry, Govt. PG College, Jhabua (M.P.) India
35. Prof. Dr. K.L. Sahu - Professor, History, Govt. PG College, Narsinghpur (M.P.) India
36. Prof. Dr. Malini Johnson - Professor, Botany, Govt. PG College, Mahu (M.P.) India
37. Prof. Dr. Ravi Gaur - Asso. Professor, Mathematics, Gujarat University, Ahmedabad (Gujarat) India
38. Prof. Dr. Vishal Purohit - M.L.B. Govt. Girls PG College, Kila Miadan, Indore (M.P.) India

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Editorial Advisory Board, INDIA

1. Prof. Dr. Narendra Shrivastav - Scientist , ISRO, Bengaluru (Karnataka) India
2. Prof. Dr. Aditya Lunawat - Director, Swami Vivekanand Career Guidance deptt. M.P. Higher Education, M.P. Govt., Bhopal (M.P.) India
3. Prof. Dr. Sanjay Jain - O.S.D., Additional Director Office, Bhopal (M.P.) India
4. Prof. Dr S.K. Joshi - Former Principal, Govt. Arts & Science College, Ratlam (M.P.) India
5. Prof. Dr. J.P.N. Pandey - Fr. Principal, Govt. Auto.Girls P.G. Excellence College, Sagar (M.P.) India
6. Prof. Dr. Sumitra Waskel - Principal, Govt. Girls P.G. College, Moti Tabela, Indore (M.P.) India
7. Prof. Dr. P.R. Chandelkar - Principal, Govt. Girls P.G. College, Chhindwara (M.P.) India
8. Prof. Dr. Mangal Mishra - Principal, Shri Cloth Market, Girls Commerce College, Indore (M.P.) India
9. Prof. Dr. R.K. Bhatt - Former Principal, Govt. Girls College, Narsinghpur (M.P.) India
10. Prof. Dr. Ashok Verma - Former HOD, Commerce (Dean) Devi Ahilya University, Indore (M.P.) India
11. Prof. Dr. Rakesh Dhand - HOD, Student Welfare Deptt., Vikram University, Ujjain (M.P.) India
12. Prof. Dr. Anil Shivani - HOD, Commerce /Management, Govt. Hamidiya Arts And Commerce Degree College, Bhopal (M.P.) India
13. Prof. Dr. PadamSingh Patel - HOD, Commerce Deptt., Govt. College, Mahidpur (M.P.) India
14. Prof. Dr. Manju Dubey - HOD (Dean), Home Science Deptt. Jiwaji University, Gwalior (M.P.) India
15. Prof. Dr. A.K. Choudhary - Professor, Psychology, Govt. Meera Girls College, Udiapur (Raj.) India
16. Prof. Dr. T. M. Khan - Principal, Govt. College, Dhamnod, Distt. Dhar (M.P.) India
17. Prof. Dr. Pradeep Singh Rao - Principal, Govt. College, Sailana, Distt. Ratlam (M.P.) India
18. Prof. Dr. K.K. Shrivastava - Professor, Eco., Vijaya Raje Govt. Girls P.G. College, Gwalior (M.P.) India
19. Prof. Dr. Kanta Alawa - Professor, Pol. Sci., S.B.N.Govt. P.G. College, Badwani (M.P.) India
20. Prof. Dr. S.C. Jain - Professor, Commerce, Govt. P.G. College, Jhabua (M.P.) India
21. Prof. Dr. Kishan Yadav - Asso. Professor, Research Centre Bundelkhand College, Jhasi (U.P.) India
22. Prof. Dr. B.R. Nalwaya - Chairman,Commerce Deptt.,Vikram University, Ujjain (M.P.) India
23. Prof. Dr. Purshottam Gautam - Dean, Commerce Deptt.,Devi Ahilya University, Indore (M.P.) India
24. Prof. Dr. Natwarlal Gupta - HOD, Commerce Deptt.,Devi Ahilya University, Indore (M.P.) India
25. Prof. Dr. S.C. Mehta - Former, Professor/HOD, Govt. Bhagat Singh P.G. College, Jaora (M.P.) India
26. Prof. Dr. A. K. Pandey - HOD, Economics Deptt., Govt. Girls College, Satna (M.P.)

RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Referee Board

Maths - (1) Prof. Dr. V.K. Gupta, Director Vedic Maths - Research Centre, Ujjain (M.P.)
Physics - (1) Prof. Dr. R.C. Dixit, Govt. Holkar Science College, Indore (M.P.)
(2) Prof. Dr. Neeraj Dubey, Govt. Arts & Commerce College, Sagar (M.P.)
Computer Science - (1) Prof. Dr. Umesh Kumar Singh, HOD, Computer Study Centre, Vikram University, Ujjain (M.P.)
Chemistry - (1) Prof. Dr. Manmeet Kaur Makkad, Govt. Kalidas Girls College,Ujjain (M.P.)
Botany - (1) Prof. Dr. Suchita Jain, Govt. Girls P.G. College, Kota (Raj.)
(2) Prof. Dr. Akhilesh Aayachi, Govt. Adarsh Science College, Jabalpur (M.P.)
Life Science - (1) Prof. Dr. Manjulata Sharma, M.S.J. Govt. College, Bharatpur (Raj.)
- (2) Prof. Dr. Amrita Khatri, Mata Jijabai Govt. Girls P.G. College, Moti Tabela, Indore (M.P.)
Statitics - (1) Prof. Dr. Ramesh Pandya, Govt. Arts - Commerce College, Ratlam (M.P.)
Military Science - (1) Prof. Dr. Kailash Tyagi, Govt. Motilal Science College, Bhopal (M.P.)
Biology - (1) Dr. Kanchan Dhingara, Govt. M.H. Home Science College, Jabalpur (M.P.)
Geology - (1) Prof. Dr. R.S. Raghuvanshi, Govt. Motilal Science College, Bhopal (M.P.)
(2) Prof. Dr. Suyesh Kumar, Govt. Adarsh College, Gwalior (M.P.)
Medical Science - (1) Dr.H.G. Varudhkar, R.D. Gardi Medical College, Ujjain (M.P.)
Microbiology Sci. - (1) Anurag D. Zaveri, Biocare Research (I) Pvt. Ltd., Ahmedabad (Gujarat)

***** Commerce *****

Commerece - (1) Prof. Dr. P.K. Jain, Govt. Hamidia College, Bhopal (M.P.)
(2) Prof. Dr. Shailendra Bharal, Govt. Kalidas Girls College, Ujjain (M.P.)
(3) Prof. Dr. Laxman Parwal, Govt. Commerce College, Ratlam (M.P.)
(4) Naresh Kumar, Assistant Professor,Sidharth Govt. College, Nadaun (H.P.)

***** Management *****

Management - (1) Prof. Dr. Anand Tiwari, Govt. Autonomus PG Girls Excellence College, Sagar (M.P.)
Human Resources - (1) Prof. Dr. Harwinder Soni, Pacific Business School, Udaipur (Raj.)
Business Administration - (1) Prof. Dr. Kapildev Sharma, Govt. Girls P.G. College, Kota (Raj.)

***** Law *****

Law - (1) Prof. Dr. S.N. Sharma, Principal, Govt. Madhav Law College, Ujjain (M.P.)
(2) Prof. Dr. Narendra Kumar Jain, Principal, Shri Jawaharlal Nehru PG Law College, Mandsaur (M.P.)
(3) Prof. Lok Narayan Mishra, Govt. Law College, Rewa (M.P.)

***** Arts *****

Economics - (1) Prof. Dr. P.C. Ranka, Sri Sitaram Jaju Govt. Girls P.G. College, Neemuch (M.P.)
(2) Prof. Dr. J.P. Mishra, Govt. Maharaja Autonomus College, Chhattarpur (M.P.)
(3) Prof. Dr. Anjana Jain, M.L.B. Govt. Girls P.G. College, Kila Maidan, Indore (M.P.)
(4) Prof. Rakesh Kumar Gupta, Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur (C.G.)
Political Science - (1) Prof. Dr. Ravindra Sohoni, Govt. P.G. College, Mandsaur (M.P.)
(2) Prof. Dr. Anil Jain, Govt. Girls College, Ratlam (M.P.)
(3) Prof. Dr. Sulekha Mishra, Mankuwar Bai Govt. Arts & Commerce College, Jabalpur (M.P.)
Philosophy - (1) Prof. Dr. Hemant Namdev, Govt. Madhav Arts, Commerce & Law College, Ujjain (M.P.)
Sociology - (1) Prof. Dr. Uma Lavania, Govt. Girls College, Bina (M.P.)
(2) Prof. Dr. H.L. Phulvare, Govt. P.G. College, Dhar (M.P.)
(3) Prof. Dr. Indira Burman, Govt. Home Science College, Hoshangabad (M.P.)

Hindi	-	(1)	Prof. Dr. Vandana Agnihotri, Chairperson, Devi Ahilya University, Indore (M.P.)
		(2)	Prof. Dr. Kala Joshi , ABV Govt. Arts & Commerce College, Indore (M.P.)
		(3)	Prof. Dr. Chanda Talera Jain, M.J.B. Govt. Girls P.G. College, Indore (M.P.)
		(4)	Prof. Dr. Amit Shukla, Govt. Thakur Ranmatsingh College, Rewa (M.P.)
		(5)	Prof. Dr. Anchal Shrivastava, Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur (C.G.)
English	-	(1)	Prof. Dr. Ajay Bhargava, Govt. College, Badnagar (M.P.)
		(2)	Prof. Dr. Manjari Agnihotri, Govt. Girls College, Sehore (M.P.)
Sanskrit	-	(1)	Prof. Dr. Bhawana Srivastava, Govt. Autonomus Maharani Laxmibai Girls P.G. College, Bhopal (M.P.)
		(2)	Prof. Dr. Balkrishan Prajapati, Govt. P.G. College, Ganjbasauda, Distt. Vidisha (M.P.)
History	-	(1)	Prof. Dr. Naveen Gidiyan, Govt. Autonomus Girls P.G. Excellence College, Sagar (M.P.)
		(2)	Prof. Dr. Dr. Madhusudan Choubey, SBN P.G. College, Barwani (M.P.)
Geography	-	(1)	Prof. Dr. Rajendra Srivastava, Govt. College, Pipliya Mandi, Distt. Mandsaur (M.P.)
		(2)	Prof. Kajol Moitra, Dr. C.V. Raman University, Bilaspur (C.G.)
Psychology	-	(1)	Prof. Dr. Kamna Verma, Principal, Govt. Rajmata Sindhiya Girls P.G. College, Chhindwara (M.P.)
		(2)	Prof. Dr. Saroj Kothari, Govt. Maharani Laxmibai Girls P.G. College, Indore (M.P.)
Drawing	-	(1)	Prof. Dr. Alpana Upadhyay, Govt. Madhav Arts-Commerce-Law College. Ujjain (M.P.)
		(2)	Prof. Dr. Rekha Srivastava, Maharani Laxmibai Govt. Girls P.G. College, Bhopal (M.P.)
		(3)	Prof. Dr. Yatindera Mahobe, Govt. Girls College, Narsinghpur (M.P.)
Music/Dance	-	(1)	Prof. Dr. Bhawana Grover (Kathak),Swami Vivekanand Subharti University, Meerut (U.P.)
		(2)	Prof. Dr. Sripad Aronkar, Rajmata Sindhiya Govt. Girls College, Chhindwara (M.P.)
			***** Home Science *****
Diet/Nutrition Science	-	(1)	Prof.Dr. Pragati Desai, Govt. Maharani Laxmibai Girls P.G. College, Indore (M.P.)
		(2)	Prof. Madhu Goyal, Swami Keshavanand Home Science College, Bikaner (Raj.)
		(3)	Prof. Dr. Sandhya Verma, Govt. Arts & Commerce College, Raipur (Chhattisgarh)
Human Development	-	(1)	Prof. Dr. Meenakshi Mathur, HOD, Jainarayan Vyas University, Jodhpur (Raj.)
		(2)	Prof. Dr. Abha Tiwari, HOD, Research Centre, Rani Durgawati University, Jabalpur (M.P.)
Family Resource Management	-	(1)	Prof. Dr. Manju Sharma, Mata Jijabai Govt. Girls P.G. College, Moti Tabela, Indore (M.P.)
		(2)	Prof. Dr. Namrata Arora, Vansthali Vidhyapeeth (Raj.)
			***** Education *****
Education	-	(1)	Prof. Dr. Manorama Mathur, Mahindra College of Education, Bangluru (Karnataka)
		(2)	Prof. Dr. N.M.G. Mathur, Principal/Dean, Pacific EducationCollege, Udaipur (Raj.)
		(3)	Prof. Dr. Neena Aneja, Principal, A.S. College Of Education, Khanna (Punjab)
		(4)	Prof. Dr. Satish Gill, Shiv College of Education,Tigaon, Faridabad (Haryana)
		(5)	Prof. Dr. Mahesh Kumar Muchhal, Digambar Jain (P.G.) College, Baraut (U.P.)
			***** Architecture *****
Architecture	-	(1)	Prof. Kiran P. Shindey, Principal,School of Architecture,IPS Academy, Indore (M.P.)
			***** Physical Education *****
Physical Education	-	(1)	Prof. Dr. Joginder Singh, Physical Education, Pacific University, Udaipur (Raj.)
		(2)	Dr. Ramneek Jain, Associate Professor, Madhav University, Pindwara (Raj.)
		(3)	Dr. Seema Gurjar, Associate Professor, Pacific University, Udaipur (Raj.)
			***** Library Science *****
Library Science	-	(1)	Dr. Anil Sirothia, Govt. Maharaja College, Chhattarpur (M.P.)

Spokesperson's

1.	Prof. Dr. Davendra Rathore	-	Govt. P.G. College, Neemuch (M.P.)
2.	Prof. Smt. Vijaya Wadhwa	-	Govt. Girls P.G. College, Neemuch (M.P.)
3.	Dr. Surendra Shaktawat	-	Gyanodaya Institute of Management - Technology, Neemuch (M.P.)
4.	Prof. Dr. Devilal Ahir	-	Govt. College, Jawad, Distt. Neemuch (M.P.)
5.	Shri Ashish Dwivedi	-	Govt. College, Manasa, Distt. Neemuch (M.P.)
6.	Prof. Manoj Mahajan	-	Govt. College, Sonkach, Distt. Dewas (M.P.)
7.	Shri Umesh Sharma	-	Shree Sarvodaya Institute Of Professional Studies, Sarwaniya Maharaj, Jawad, Distt. Neemuch (M.P.)
8.	Prof. Dr. S.P. Panwar	-	Govt. P.G. College, Mandsaur (M.P.)
9.	Prof. Dr. Puralal Patidar	-	Govt. Girls College, Mandsaur (M.P.)
10.	Prof. Dr. Kshitij Purohit	-	Jain Arts, Commerce & Science College, Mandsaur (M.P.)
11.	Prof. Dr. N.K. Patidar	-	Govt. College, Pipliyamandi, Distt. Mandsaur (M.P.)
12.	Prof. Dr. Y.K. Mishra	-	Govt. Arts & Commerce College, Ratlam (M.P.)
13.	Prof. Dr. Suresh Kataria	-	Govt. Girls College, Ratlam (M.P.)
14.	Prof. Dr. Abhay Pathak	-	Govt. Commerce College, Ratlam (M.P.)
15.	Prof. Dr. Malsingh Chouhan	-	Govt. College, Sailana, Distt. Ratlam (M.P.)
16.	Prof. Dr. Gendalal Chouhan	-	Govt. Vikram College, Khachrod, Distt. Ujjain (M.P.)
17.	Prof. Dr. Prabhakar Mishra	-	Govt. College, Mahidpur, Distt. Ujjain (M.P.)
18.	Prof. Dr. Prakash Kumar Jain	-	Govt. Madhav Arts, Commerce & Law College, Ujjain (M.P.)
19.	Prof. Dr. Kamla Chauhan	-	Govt. Kalidas Girls College, Ujjain (M.P.)
20.	Prof. Abha Dixit	-	Govt. Girls P.G. College, Ujjain (M.P.)
21.	Prof. Dr. Pankaj Maheshwari	-	Govt. College, Tarana, Distt. Ujjain (M.P.)
22.	Prof. Dr. D.C. Rathi	-	Swami Vivekanand Career Gudiance Deptt., Higher Education Deptt., M.P. Govt., Indore (M.P.)
23.	Prof. Dr. Anita Gagrade	-	Govt. Holkar Science College, Indore (M.P.)
24.	Prof. Dr. Sanjay Pandit	-	Govt. M.J.B. Girls P.G. College, Moti Tabela, Indore (M.P.)
25.	Prof.Dr. Rambabu Gupta	-	Govt. Arts & Commerce College, Indore (M.P.)
26.	Prof. Dr. Anjana Saxena	-	Govt. Maharani Laxmibai Girls P.G. College, Indore (M.P.)
27.	Prof. Dr. Sonali Nargunde	-	Journalism & Mass Comm .Research Centre, D.A.V.V., Indore (M.P.)
28.	Prof. Dr. Bharti Joshi	-	Life Education Department, Devi Ahilya University, Indore (M.P.)
29.	Prof. Dr. M.D. Somani	-	Govt. M.J.B. Girls P.G. College, Moti Tabela, Indore (M.P.)
30.	Prof. Dr. Priti Bhatt	-	Govt. N.S.P. Science College, Indore (M.P.)
31.	Prof. Dr. Sanjay Prasad	-	Govt. College, Sanwer, Distt. Indore (M.P.)
32.	Prof. Dr. Meena Matkar	-	Suganidevi Girls College, Indore (M.P.)
33.	Prof. Dr. Mohan Waskel	-	Govt. College, Thandla Distt. Jhabua (M.P.)
34.	Prof. Dr. Nitin Sahariya	-	Govt. College, Kotma Distt. Anooppur (M.P.)
35.	Prof. Dr. Manju Rajoriya	-	Govt. Girls College, Dewas (M.P.)
36.	Prof. Dr. Shahjad Qureshi	-	Govt. New Arts & Science College, Mundi, Distt. Khandwa (M.P.)
37.	Prof. Dr. Shail Bala Sanghi	-	Maharani Lakshmibai Govt. Girls P.G. College, Bhopal (M.P.)
38.	Prof. Dr. Praveen Ojha	-	Shri Bhagwat Sahay Govt. P.G. College, Gwalior (M.P.)
39.	Prof. Dr. Omprakash Sharma	-	Govt. P.G. College, Sheopur (M.P.)
40.	Prof. Dr. S.K. Shrivastava	-	Govt. Vijayaraje Girls P.G. College, Gwalior (M.P.)
41.	Prof. Dr. Anoop Moghe	-	Govt. Kamlaraje Girls P.G. College, Gwalior (M.P.)
42.	Prof. Dr. Hemlata Chouhan	-	Govt. College, Badnagar (M.P.)
43.	Prof. Dr. Maheshchandra Gupta	-	Govt. P.G. College, Khargone (M.P.)
44.	Prof. Dr. Mangla Thakur	-	Govt. P.G. College, Badhwah, Distt. Khargone (M.P.)
45.	Prof. Dr. K.R. Kumhekar	-	Govt College, Sanawad, Distt. Khargone(M.P.)

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Some Psychological Aspects of the Ancient Indian Education System : A Study

Dr. Ashish Kumar Chachondia*

***Assistant Professor, Department of Ancient Indian, History, Culture & Archaeology, B.K.S.N. Govt. College, Shajapur (M.P.) INDIA**

Abstract - There are some characteristics of the ancient Indian education system that we can compare with various concepts of modern educational psychology. These psychological concepts made ancient education highly effective. Some psychological term as learning, memory, interest, individual differences which we see in the current education system were also present in the ancient system but with some obscure form. An attempt has been made to bring some of these concepts to light through this research paper.
Keywords- Learning, Interest, Behavior, Individual differences, Conditioning, Memory, Insight.

Introduction - The term "psychology" is not found in any text of ancient India nor is it vaguely mentioned anywhere in any context. This term has been used as a branch of science in the nineteenth century and after multiple modifications, it is now defined as "the study of behavior". But only on this ground, it cannot be said that the study of human behavior would have been overlooked in ancient times. From the very beginning of the Vedic age, the behavior and actions of man were thoroughly studied under philosophy. Philosophers and thinkers, not only in India but in other ancient civilized countries like Greek and China, were exploring the depth of the human mind and conduct. A great German scholar Hermann Ebbinghaus noted *"Psychology has a long past but only a short history."* This quotation clears that psychological studies had begun in very ancient times but as a branch of science its history does not go beyond 150 years.

The form of psychology in ancient India was completely different from that of today. Vedic literature shows a glimpse of some theories and hypotheses of psychology that were not named according to modern terms. *Upnishads* which are said to be the oldest literature of philosophy mention some facts that have a great psychological significance in the field of the ancient education system. The Upnishads discuss various aspects of human personality, for example, *Atma (consciousness), Mana/ Chitta (mind), Indriya (Senses), and Buddhi (Intelligence).*

Short History of Education in Ancient India- It is almost impossible to figure out the time when formal education came into existence. The early civilization in India was Harappan Civilization, which shows all the developed aspects of a well-cultured society, yet we have no written evidence which could be deciphered well so we can only make assumptions of a kind of formally established education system.

Vedic age was the time when we can be assured enough about the well-defined education system. The early system of education in this period was remarkably based on the unbelievable usage of memory by which the knowledge of Vedic Aryans was contained and handed over to multiple generations until the proper writing skills originated. Later on, various sects like Buddhism, Jainism, etc. contributed a lot to enrich the formal education system of ancient India that continued by the 12th century AD with some changes.

Psychological Aspects of Ancient Education – In course of time ancient education system adopted various teaching methods and techniques which were the results of continuous experiments and inventions by scholars and sages. The educationists of ancient times also paid their concentration on human behaviour, attitude, and personality, which are now absolutely psychological terms.

In this paper, it is not claimed that ancient educationists were using the concepts of present-day science, but it can be believed that they were aware of human behaviour and learning patterns, many scholars emphasize that the ancient system of education was altogether idealistic and confined to its particular objectives. But we can see that all-round development of pupil was targeted, and very practical and scientific theories were adopted which are now considered under educational psychology.

One verse reads "possessing the knowledge of various scriptures, if the insight of man is not developing, the man would be considered as uneducated" a man with insight is considered educated indeed.[1]

History shows that the education system in ancient India was of very high quality, but unfortunately, not a single book is available in which all the parts of the entire education

system have been published and can be called a book on pedagogy. With the help of other available literature and material, modern historians have tried to give a glimpse of the ancient education system. On studying it seriously concerning modern educational psychology, it appears that even in the ancient era, academics studied human behavior to make teaching strong and influential, and provided a psychological view to education.

Learning- A very important part of educational psychology is the theory of learning or the learning process. In a general sense, learning is called behavior change. Psychologists define learning as any relatively permanent change in behavior, or behavior potential, provided by experience.[2]

Under the ancient Indian education system, the entire process of learning was carried out with an invisible and highly effective conditioning process or creating a state of mind. Ancient education included some activities that were repeated to the student throughout the teaching period as mandatory rites. Initially, these activities were repeated with intensity and gradually accepted as an essential part of daily life or *Sanskaras*. These *Sanskaras* established education in the mind of the student as an important religious activity and an integral part of human life. The result would create awareness and a positive attitude toward education. On the occasion of *Upanayana Sanskar*, *Grihya Sutras* have mentioned the student's intellectual development, success, the achievement of educational objectives, etc. were wished in prayers, along with this, a healthy relationship of teacher and disciple was also built.

Regular prayers in the morning and evening wished for the development of intellect and educational success. This all used to be done with full awareness rather than mechanically, these regular actions created the condition of the mind of the disciple. In this way, educational religious actions created a mental state in the student and motivated him to pursue regular objective studies.

There is also a clear mention of methods in *Upnishadas* to increase eagerness for learning. During this task, the teacher used to make efforts that the students were constantly being motivated to find answers to the questions themselves. The feeling of intense eagerness in his mind is called the state of insight into modern psychology. After that, the knowledge attained by self-efforts was permanent. It is almost like Skinner's learning theory.

The process of learning is also mentioned in some ancient texts. According to Kautilya's *Arthashastra*, seven steps are considered for the learning process to be completed - the desire to learn, to accept the lesson daily, to understand the text, to hold it in memory, to contemplate, to judge or discriminate, and the Love for truth.[3] According to the *Vrihdaranyak Upanishad*, learning involves three processes - *Shravan, Manana,* and *Nididhyasana*. In listening, the students hear the sermon from the teacher, reconsider the teaching that is given, and meditate on it. The Yoga Sutra states two rules of learning - practice, and quietness. The *Gita* also mentions the third law of learning which is called self-control.[4]

Memory - Early Vedic education relied solely on the maximum use of memory in the absence of writing skills. The students used to hold the entire course material according to the instructions of the Guru in their memory. Even after knowing the script, writing art was not resorted to in the preservation and transfer of Vedic literature for a long time. Vedas were the main subject of study for centuries. The dedication of both Guru and disciple to their study was necessary for the pure tone and pronunciation of the Vedas, for this reason, education was imparted verbally for a long time. This was the direct mode of education in which books were not available between the teacher and the student. The dominant theory of memory was the principle of repetition.

Chinese traveler *I-Tsing* has vividly described some actions to increase memory. According to which in the practice of 10 or 15 days, the student used to get confidence in his memory and also used to remember anything once he heard it.[5] Unfortunately, a clear and complete description of these ancient methods of memory development is not obtained. But it is proved that the memory of the common student of ancient India was more educated and developed than modern students. Some methods of memory usage were - poetic conversion of text material, replication, formulation, symbolization etc. The development of the sutra system also proved beneficial. In this system, the key findings of complex topics were closed formulas in short sentences. These sutras were used prominently in the subject of philosophy. The main objective of the formulation was to reduce the memory load.[6]

Interest development- Interest in a structural sense refers to an acquired or innate quality or element of a person's personality that creates a meaningful feeling towards something in it. Interest acts as a driving force in children, as a result of which, they separate an object from other objects and pay more attention to it. Ancient Indian scholars understood the concept of interest in almost the same way. Even then, the structural and functional concept of interest was clear. Scholars of that time believed that education can only be fruitful when students help in teaching- learning process. If the student does not have the true desire for advancement and knowledge, then it is futile to put labor and time on him.[7]

Individual Differences- Individual differences are determined by the habits, qualities, intelligence, and other behaviors of two individuals. In addition to this, physical mental development, emotional variation, the difference in achievements, variation in abilities, etc. have been considered as fields of individual differences.[8]

Substantial recognition was given to individual differences in ancient education. But in the ancient scriptures, there were differences in teaching based on individual differences. Some thinkers did not differentiate

between the ratio of natural qualities and the importance of teaching. Instances are found in which it is said that proper education leads to equal development, in which the effect of natural qualities is negligible. Later on, it is also found that ignoring the differences of natural qualities, the education provided becomes meaningless.[9]

Evaluation- There was no system of annual or half-yearly examinations like the present. Exams were taken from time to time and at the end of the study, the student was presented in a scholarly meeting where he was asked some questions. When satisfied with the graduation answers, the *Acharya* used to announce the end of education. There was no law to give any certificate at the end of education, the developed qualification of the student was considered as a degree, which he had to protect for life-time through regular studies.[10]This examination system was psychologically free from serious defects that are seen in the current examinations. This system did not create fear or pressure on the student's brain.

Conclusion – Thus we see that ancient Indian education system indirectly included some psychological principles. Although these theories were not defined like modern psychology, yet they were used practically. Apart from these, ancient Indian education system also contains many scientific psychological facts whose study can improve our education system. There are many such features in ancient education that we can enhance the quality of our education by making them part of the current education system.

References :–

1. *Subhashit ratn sangrah 31/2* (see Altekar A.S. "Prachin Bhartiy Shikshan Paddhati" Nand Kishor and Brothers' Varanasi 1955)
2. Baron, Albert "Psychology" Pearson, New Delhi 2005, P- 168
3. Singh, Arun Kumar "Manovigyan ke sampraday evam itihas" Motilal Banarsidas, New Delhi 2002, P- 517
4. ibid P-518
5. Altekar A.S. "Prachin Bhartiy Shikshan Paddhati" Nand Kishor and Brothers' Varanasi 1955 122)
6. Mishra, Janardan "Bhartiy Pratik Vidya" Bihar Rashtrabhasha Parishad Patna 1980, Bhumika.
7. *Manusmriti* 2,113-4, 191 (Editor Gopal Shastri Nene, Varanasi)
8. Singh, Arun Kumar "Shiksha Manovigyan" Bhart Bharti, Patna p-222-26.
9. Altekar A.S. "Prachin Bhartiy Shikshan Paddhati" Nand Kishor and Brothers' Varanasi 1955 p-28)
10. Vrihdaranyak Upnishad 6.2.1(see Altekar A.S. "Prachin Bhartiy Shikshan Paddhati" Nand Kishor and Brothers' Varanasi 1955)

✽✽✽✽✽✽✽✽✽✽✽✽✽

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

The Effect of Marketing Mix Strategy Adopted By Private Hospitals

Dr. Rajeshri Desai* Dr. Shikha Kumrawat**

*Faculty School of Commerce, DAVV, Indore (M.P.) INDIA
** Guest Faculty, School of Commerce, DAVV, Indore (M.P.) INDIA

Abstract - Marketing mix is most applied tool of marketing management. Each sector utilize marketing mix component according to their business environment. These component varies from sector to sector. Marketing strategy for services are one of unique kind as they are more flexible and unpredictable. In this paper we analyzed marketing mix component in health sector. As health sector is highly people oriented sector that is why marketing concepts are modified in such a way that patient's satisfaction can be achieved desirably. But it's not easy task to satisfy and fulfill patient's needs and wants. In this paper we identified some component of marketing mix which hospitals can utilize to provide better service to their customers. For this data is collected from 5 hospitals and 150 responses were recorded from administrative department of hospitals. The data is then analyzed through SPSS applying Friedman's test.
Keywords- Marketing mix, marketing strategy,patient satisfaction, health care sector, business environment.

Introduction - The importance of marketing mix has grown in healthcare sector. Today almost every healthcare unit tries to offer complete healthcare facilities. For this, they have to maintain latest equipment with advance diagnostic treatment procedure. These all add up to their initial cost which ultimately compel them to adopt well-structured marketing plan to remain in market and gain competitiveness. The administrative department of hospital formulates marketing mix strategies as per their availability of resources and their requirement. It is like secret recipe of their hospital success. Because each hospital have its own unique offering and they tries to gain competitive advantage of their uniqueness through means of marketing mix strategies.

As we know hospital sector is people oriented-intensified service sector. In this sector, it is very difficult task to meet the needs and expectation of customer/ patients. Hospital is a place where customer opted for services in time of emergency. At this stressful mind set, it is difficult for hospital to fulfill the expectation of patients easily. This can be achieved through pricing transparency, behavior of staff, convenient location etc which works as a psychological factors in satisfying customers.

In short patient's satisfaction cannot be achieved without proper layout of marketing mix strategies now-a-days. As customer now not only utilize services of hospital but also compare it with their experiences (self or word of mouth) of other hospital. This makes market more competitive for hospitals also. Thus marketing mix strategies are very essential in today's scenario and play vital role in success of hospital units.

The components of marketing mix which we identified in this study were derived from pilot test performed on local hospitals of Barwani district. The results then gave overall perception of how this component are different in real than theoretical approach. These components are broad in nature as marketing tactics are different from different hospitals. Although we came to know all private hospitals are indulge in marketing process somehow in their own way.

Objective of study- The main purpose of this study is to find out the impact of marketing mix component of private hospital on patient satisfaction.

H0: There is no significance difference between mean ranks of marketing mix component which satisfy patient's needs.

H1: There is significance difference between mean ranks of marketing mix component which satisfy patient's needs.

Research methodology- To understand this relationship, Random sampling is done to collect data. The sample is collected from administrative staff of 5 private hospitals. The technique used for data collection is semi interview along with the questionnaire filling to get the insight observations from the respondent. Total 150 responses were recorded and this data is then analyzed through Friedman's test technique along with post hoc test to get interpretation.

Data Collection and Interpretation- The marketing mix component in this study comprises of variables, which are helpful in achieving better hospital performance which can satisfy patient's needs and wants.

Null hypothesis:There is no significance difference between

mean ranks of marketing mix components which helps in achieving better hospital performance by satisfy patient's needs

To test this hypothesis, Friedman's test was used. Mean ranks were composed of all the items of **marketing mix component**. Chi-square value also was computed. The results are summarized in Table-

Table 1 : Friedman's test for significant difference between mean ranks of Marketing mix component for achieving better hospital performance

Marketing Mix Componemt	Mean Rank	P-Value
Hospital Follows Formal Marketing Plan	4.63	0.000*
Current Marketing Strategy Is Working As Per Planning	5.48	
Contigencies Plans Are Prepared	5.66	
Hospital Is Performing Market Research	3.25	
Pricing Strategy Is As Per Market Competitiveness	1.31	
Profits Used In Promotional Activities	5.40	
Hospital Is Able To Give Location Benefit To Customers	4.74	
Infection Control Precautions Are Mandatory	5.54	

* denotes significance level at 5%

Table 1 reveals that since p value is less than 0.005, the null hypothesis is rejected at 5% level of significance. Hence it is concluded that there is significant relationship between mean ranks of marketing mix component that satisfy patients' needs. Based on mean ranks, "Contingencies plan for market change" (5.66) "Infection control strategy is mandatory" (5.54), and "Current market strategy working as per plan" (5.48) are the top most three variables of marketing mix component which satisfies patient's needs and wants Statistically we concluded that-

There was statistically significant impact of marketing mix components in achieving better hospital performance by customer satisfaction with X^2=280.657, p=0.00 with degree of freedom 5.

Inference- The table indicate the value of mean ranks of all the variables of marketing mix component. The graph indicate that Contingencies plan is most important variable for administration as it obtained highest value of 5.66. This means that in order to satisfy customer hospital administration always ready with contingencies plan so that service failure would be avoided. After that Infection control precautions (5.54) and Profit used in promotional activities (5.40) are second order highest values. The least opted variable is Pricing strategy is as per market competitiveness with value 1.31. As hospital administration found it unethical to charge their services as per competition. Also every private unit has its own service advantage so they can put comparative price for their superiority.This shows that marketing mix components are consider efficiently, if hospital wants to satisfy their customers augmented.

Limitation- Some of the limitations of the research are as follows-

1. The research is focused on only one strategic tool, while other elements also have scope which are not included.
2. This study included only 5 major private hospitals due to limitation of resources.
3. It can be further analyzed on different parametric and non-parametric measures.
4. Number of respondents is limited because of availability of resources.

Conclusion- This study brought out variables which proves that marketing mix components are helpful in obtaining patient's satisfaction and also helps in improving hospital performances. These variables may be symbolic in nature as the study does not cover all the hospitals yet it can derive idea of how this marketing mix tool works on the ground level.

References :-

1. Baker, M., and Hart, S. (2012). The Marketing Book 9thEdition.London: Routledge.
2. Palmer, Adrian, (2001), "Principles of Services Marketing", Third Edition, McGraw-Hill Publishing Company UK.
3. Lovelock, C, (2001), "Services Marketing People, Technology, Strategy", Fourth Edition, Prentice Hall.
4. Rafiq, M; Ahmed, P, (1995), "Using the 7Ps as Generic Marketing Mix: an Exploratory Survey of UK and European Marketing Academics", Marketing Intelligence & Planning, Vol. 13 No. 9, pp4-15.
5. Kotler, P, (1999), "Kotler on Marketing: How to Create, Win and Dominate Markets", New York, Press Free.
6. Bennett, A, (1997), "The five Vs -a buyer's perspective of the marketing mix", Marketing Intelligence & Planning, Vol. 15, Issue. 3, pp151-156.
7. Dibb, S; Smikin, L; Pride, W; Ferrell, C, (1997), "Marketing: Concepts and Strategies", Third European Edition, Houghton Mifflin Company.
8. Harvey, M; Lusch, R; Cavarkapa, B, (1996), "A Marketing Mix for the 21st Century", Journal of Marketing Theory and Practice, Vol. 4, No. 4, pp 1-15.
9. Van Waterschoot, W; Van den, B, (1992), "The 4P Classification of The Marketing Mix Revisited", Journal of Marketing, Vol. 56, No. 4, pp120-143.
10. Brunner, G, (1989), "The marketing mix: time for reconceptualization", Journal of Marketing Education, Vol. 11, No. Summer, pp 72-7.
11. McDonald, M, (1989), "The Marketing Plans: How to Prepare Them: How to Use Them", Second Edition, Betterworth Heinemann.

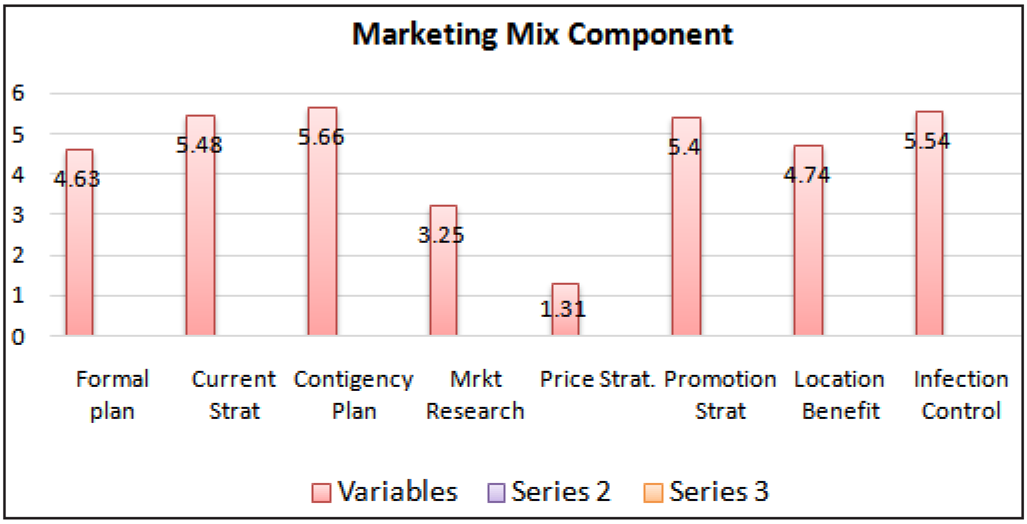
Marketing Mix Component
6
5
4
3
2
1
0
4.63
5.48
5.66
3.25
1.31
5.4
4.74
5.54
Formal plan
Current Strat
Contigency Plan
Mrkt Research
Price Strat.
Promotion Strat
Location Benefit
Infection Control
Variables
Series 2
Series 3

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Phytochemical screening for various secondary metabolites of *Cocculus hirsutus* (Stem, Leaf and Fruit Ethanolic Extracts)

Dr. Rajendra Prasad*

*Assistant Professor (Botany) Government College, Bundi (Raj.) INDIA

Abstract - *Cocculus hirsutus*is Indian traditional medicinal climber. It is perennial shrub and is commonly found in and around Mej river catchment area. It is belonging to the family *menispermaceae.*Its various parts are putative to have medicinal properties in folk system of medicine.Qualitative analysis of secondaryphytochemical from the ethanolic extract of different parts of this plant has been done in this work. The study revealed that they contain sufficient amount of alkaloids, phenols & tannins, flavonoids, saponins, terpenoids and glycosides.
Keywords - Metabolites, Alkaloid, Phenol, Glycoside, Terpenes.

Introduction - Metabolic substances are an important part of plant life. The metabolites can be mainly divided into two types such as primary metabolites and secondary metabolites. The primary metabolites are essential for the survival of the plants life. Their product is result of the primary metabolic pathways, which include sugars, proteins, amino acids, fatty acids, fats, pyrimidines and purines. Their cells are produced in large amounts. Plants products are most wonderful gift from nature has been used as drugs. Some plant species which are across different ethnic groups various types of drugs are obtained from are known as medicinal plants (Yadav *et al*, 2010).

Cocculus hirsutus(Family *Menispermaceae*) is climbing or prostrate, much branched, perennial herb commonly known as *Broom creeper* or *Ink berry* in English and *Patagarudi* in Hindi. It also possess many medicinal properties.*Cocculus hirsutus*is a weak Scandent, dioecious shrubs climber contains alternate leaves with (1.5-8.0 x 0.7-4.5 cm,) ovate-oblong, cordate-lanceolate or subdeltoid. Flowers areminute, yellowish green in colour. Male flowers in small axillary, cymose panicles and Female flowers in axillary clusters, rarely racemose. Fruits are Drupes smooth, reddish purple type. Their flowering and fruiting time is September to April. It is distributed on the fringes of forests and in wastelands on the plains of India. The present research paper deals and qualitative test of the ethanolic extracts of climber *Cocculus hirsutus*for secondary metabolites.

Aim of the study :

1. To prepare extract of different parts (leaves, stem, fruit) of *Cocculus hirsutus*on organic solvent ethanol.
2. Identification of primary metabolite in the extract to facilitate further study for human welfare.

Material and Methods:

Plant collection - *Cocculus hirsutus*was collected from in and around catchment area of Mej River. The identity of the plant species was established by Herbarium chamber Government College, Bundi by author department of botany. The herbarium sheets were prepared according to the standard method suggested by Jain and Rao (1977).

Preparation of plant extract - Fresh leaves stem and fruit of *Cocculus hirsutus*were washed thoroughly tap water and were dried in hot air oven at 40-50 c for a week. 60gm of dried powder was extracted for 24 hours in 300 ml solvent (ethanol 99%). Repeated extraction was done with the some solvent till colourless solvent was obtained. The condensed extract was used for screening of primary metabolites.Soxhlet equipment was used in this study. Powdered plant material (60 g) was extracted with organic solvents (300 ml) such as n-hexane, ethyl acetate methanol and ethanol in Soxhlet apparatus (Raaman, 2006)

Table 1 Name Of Secondary Metabolites Tests List

S.	Metabolites	Name of Test
1.	Alkaloids	Mayer's Test - Evans (1997). Wagner's Test- Wagner (1993). Hager's Test- Wagner *et al*. 1996.
2.	Tannins and Phenols	Ferric Chloride Test-Mace (1963). Lead Acetate Test

3.	Flavonoids	Alkaline Test
4.	Saponins	Froth Test
5.	Terpenoids	Horizon's Test
6.	Glycosides	Legal Test

Results - The qualitative phytochemical screening of leaf, stem and fruit extracts of *Cocculus hirsutus*exhibited in Table 8 indicates the presence of multiple phytoconstituents. It shows the presence of alkaloids, phenols flavonoids, saponins, terpenoids, and glycosides in the ethanolic extracts in varied degree of precipitation like copious, slight and moderate in all tested extracts.

(1) Alkaloids - Presence of alkaloids has been investigated through different tests [Mayer's test, Hager's test and Wagner's test]. All three tests for alkaloids revealed the lesser degree of precipitation **(+)** in ethanolic extracts of leaves, stems and fruits of *Cocculus hirsutus*.

(2) Phenols and Tannins - Ferric chloride test and lead acetate test shared similar results as the both tests ascertained the presence of phenols with higher degree of precipitation **(+++)** in leaves and stems extracts compared to lesser degree of precipitation **(+)** in fruit extract.

(3) Flavonoids - Presence of flavonoids contents has been investigated through different tests [sodium hydroxide test and alkaline reagent test]. The results of sodium hydroxide test, for flavonoids revealed the higher degree of precipitation **(+++)** in ethanolic extracts of leaves, and fruits of *Cocculus hirsutus* whereas, the same test resulted in moderate degree of precipitation (++) in stem extract. Alkaline reagent test showed moderate degree of precipitation (++) in leaf and fruit extracts while stem extract showed slight precipitation (+) in the same test.

(4) Saponins - Saponins in stem, leaf and fruit extracts showed higher degree (**+++**), moderate degree (++) and lesser degree of (+) precipitation, respectively with froth test.

(5) Terpenoids - Presence of terpenoids contents has been investigated through Horizon test. The results of this test revealed lesser degree of precipitation **(+)** in ethanolic leaf, stem and fruit extracts of *Cocculus hirsutus*.

(6) Glycosides - Glycosides in fruit, leaf and stem extracts showed higher degree of (**+++**), moderate degree (++) and lesser degree (+) of precipitation, respectively with legal test.

Table 2 Qualitative analysis for secondary metabolites in alcoholic leaf, stem and fruit extracts of *Cocculus hirsutus*

S.	Name of Phyto -chemicals	Name of tests	Extrac-ted Part	Results
1	Alkaloids	Mayer's Test	Leaf	+
			Stem	+
			Fruit	+
		Wagner' Test	Leaf	+
			Stem	+
			Fruit	+
		Hager's Test	Leaf	+
			Stem	+
			Fruit	+
2	Phenols & Tannins	Ferric Chloride Test	Leaf	**+++**
			Stem	**+++**
			Fruit	+
		Lead Acetate Test	Leaf	**+++**
			Stem	**+++**
			Fruit	+
3	Flavonoids	Sodium Hydroxide Test	Leaf	**+++**
			Stem	++
			Fruit	**+++**
		Alkaline Reagent test	Leaf	++
			Stem	+
			Fruit	++
4	Saponins	Froth Test	Leaf	++
			Stem	**+++**
			Fruit	+
5	Terpenoids	Horizon Test	Leaf	+
			Stem	+
			Fruit	+
6.	Glycosides	Legal Test	Leaf	++
			Stem	+
			Fruit	**+++**

Findings:

Table 2 and figures 1, 2 displays results of qualitative analysis of ethanolic extract of different part of *Cocculus hirsutus* which reveal that all the extracted plant material (Leaves, Stem, Fruit) of *Cocculus hirsutus* possess various secondary metabolites. The presence of alkaloids was ascertained by three tests namely, Mayer test, Hager test and Wagner test.Mayer test, Hager test and Wagner test for testing presence of alkaloids resulted in lesser degree (+) of precipitation for all three extracts.The presence of Phenols & Tannins was ascertained by Ferric Chloride Test. The result reveals that fruits and leaves extracts has more quantity of Phenols & Tannins as it exhibited higher degree of precipitation (+++). However the stem extract showed lesser degree (+) of precipitation. The presence of Phenols & Tannins was ascertained by Lead Acetate Test. The result reveals that fruits and leaves extracts has more quantity of Phenols & Tannins as it exhibited higher degree of precipitation (+++). However the stem extract showed lesser degree (+) of precipitation.

The presence of Flavonoidswas ascertained by Sodium Hydroxide Test. The result reveals that fruits and leaves extracts has more quantity of carbohydrates as it exhibited higher degree of precipitation (+++). However the stem extract showed moderate degree (++) of precipitation.The presence of Flavonoids was ascertained by Alkaline Reagent test. The result reveals that fruits and leaves extracts has more quantity of Flavonoids as it exhibited moderate degree of precipitation (++). However the stem extract showed lesser degree (+) of precipitation.Froth Test for presence of saponins showed increasing intensity of colour for stem, leaves and fruit extracts, respectively.The presence of

Terpenoids was ascertained by Horizon Test. Fruit, Leaves and stem extracts exhibited presence of Phenols and Tannins with lesser degree of precipitation (+).Legal Test for presence of glycosides showed increasing intensity of colour for stem, leaves and fruit extracts, respectively.

Present findings are supported by work of a number of researchers who also carried out phytochemical analysis studies of *Cocculus hirsutus*.Jangir *et al.* (2016) in a review provided updated comprehensive information of pharmalogical properties and phytochemistry of *Cocculus pendulus*. This medicinal plant in used to cure leprosy, helminthic, syphilis, fever, menstrual disorders, etc. Patil *et al*. (2014) in a phytochemical and aphrodisiac study of *Cocculus hirsutus* areal parts (stem and leaf) extracts observed the extract to have promotory effects on spermatogenesis and performance of accessory reproductive organs in albino rats. Kalirajan*et al*. (2012) tested wound healing and antimicrobial properties of methanol and aqueous extract of *Cocculus hirsutus*. Savithramma*et al*. (2011) screened fresh leaves of 20 different medicinal plants for secondary metabolites by qualitative phytochemical analysis and reported presence of various secondary metabolites including triterpenoids, steroids, saponins, tannins, phenols, flavonoids, etc. Nayak and Singhai (2003) examined antimicrobial properties of roots of *Cocculus hirsutus* using ethanolic and petroleum ether extracts. Kumar et al. (2012) were presented a detailed pharmacognostic study of the leaf of *Cayratiatrifolia*. Present finding are supported similar research worked by Prasad & Sharma (2020),Prasad & Sharma (2019),Prasad & Sharma (2018),Bhaduria*et al*,. (2012), Rahman *et al*,. (2015) and Deokate&Khadabadi, (2012). They evaluated different climber species which also support present research work.

Conclusion - Present research highlights the presence of secondary metabolite like alkaloids, phenols & tannins, flavonoids, saponins, terpenoids and glycosidesin *Cocculus hirsutus.* Beneficial properties could be done in further study by qualitative assessment of this climber.

ACKNOWLEDGEMENT - The author is grateful to Department of Botany, Government College Bundi for providing necessary Phytochemical Lab facilities. Help of senior faculty member Dr. O. P. Sharma and Dr. Shree Man Meena, Botanists, Botanical Survey of India, Jodhpur in identification of the plant species and Dr. P. C. Bhati, Assistant Professor, S.D. Government College Beawar and Dr.DilipKumar Rathore, Assistant Professor in Botany GovernmentCollege Bundi for instrument help is also duly acknowledged. Specially thanks to my daughter for helping me.

References: -

1. Prasad, R & Sharma, O.P. (2020) *Cayratiatrifolia* (L.) Domin: A qualitative analysis for Secondary metabolites of medicinal properties, International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR), 07(04):38-44.
2. Prasad, R & Sharma, O.P. (2019)Qualitative analysis of ethanolic extract of *Cayartiatrifolia* (Medicinal Climber) for profiling primary metabolites, *Remarking An Analisation, 04(2): E29-E35.*
3. Prasad, R & Sharma, O.P. (2019) Qualitative test on ethanolic extract of *Coccinia indica* for profiling Secondary metabolites, *International Journal of Scientific Research and Review, 07(1):147-152.*
4. Prasad, R & Sharma, O.P. (2018) Qualitative Test of Ethanolic Extract of Climber *Coccinia indica* for Primary Metabolites, *Remarking An Analisation,* 3(5):131-134.
5. Jangir S., Mathur K., Goyal, M. and Yadav, S.K. (2016). A review on *Cocculus pendulus*(J. R. Forst. and G. Forst.) Diels: traditional uses, phytochemistry and pharmac - ological properties.*Indian journal of drug,* 5(4): 672-681.
6. Rahman, M.S., Asaduzzaman, M., Munira, S., Rahman, M.M., Hasan, M., Siddique, A.H., Biswas, S., Khatun, M., Islam, M., Khan, M.H., Rahman, M. and Islam, M.A. (2015). Evaluation of phytochemical, antibacterial, antioxidant, and cytotoxic properties of *Coccinia cordifolia* leaves. *International Journal of Advanced Research*, 3(8): 384-394
7. Patil, S.A., Sujaya, M. and Patil, S.B. (2014). Aphrodisiac and phytochemical studies of *Cocculus hirsutus* extracts in albino rats. *Asian Pacific Journal of Reproduction*, 3(1): 23-29.
8. Kalirajan, A., Michael, J.S., Singh, A.J.A.R. and Padmalatha C. (2012). Antimicrobial and wound healing studies on the extracts of the medicinal plant *Cocculus hirsutus*(linn). *IJABPT*, 3(2): 63-67.
9. Savithramma, N., Rao, M.L. and Suhrulatha, D. (2011). Screening of medicinal plants for secondary metabolites middle-East. *Journal of Scientific Research*, 8(3): 579-584.
10. Nayak, S. and Singhai, A.K. (2003). Antimicrobial activity of the roots of *Cocculus hirsutus.Ancient Science of Life,* 22(3): 101-105.
11. Kumar, D. Gupta, J., Kumar, S., Arya, R., Kumar, T. & Gupta, A. (2012) Pharmacognostic evaluation of *Cayratia trifolia*(Linn.) leaf*Asian Pac J Trop Biomed*, 2(1): 6-10.
12. Deokate&Khadabadi, (2012) Pharmacology and Phytochemistry of *Coccinia Indica*. *Pharmacophore*, 3(3):179-185.
13. N.Raaman Phytochemical Techniques New India Publishing Agency, New Delhi p-10.
14. Bhadauria*et al*., (2012). In vitro Antioxidant activity of *Coccinia grandis* Root extracts. *Indo Global Journal of Pharmaceutical Sciences*, 2(3):230-238.
15. Yadav, G., Mishra, A. and Tiwari, A. (2010). Medical properties of Ivy Gourd (*Cephalandra indica*): a review. *International journal of Pharma Research and Development*, 2:0974-9446.
16. Jain, S.K. and Rao, R.R. (1977). *A handbook of field and herbarium methods*. Today and Tomorrow's Printers and Publishers, New Delhi.

17. Ramakrishanan. S., Parasannan, K.G. and Rajan, R. (1994). *Text book of medical biochemistry*. Orient Longman, New Delhi India 582.
18. Fisher, D.D. (1968). Protein staining of ribboned epon section for light microscopy. *Histochem*, 16: 81-96.
19. Ruthmann, A. C. (1970). *Methods in cell Research*. Cornell University Press, New York.U.S.A.
20. Gahan, P.B. (1984). *Plant histochemistry and cytochemistry*: An introduction. Academic press, Florida, U.S.A.
21. Kokate, C.K. (1999). *Practical Pharmacognosy*. 4th edn. Vallabh Prakashan Publication, New Delhi. India.

PLATE 1
Phytochemical screening of secondary metabolites of *Cocculus hirsutus*

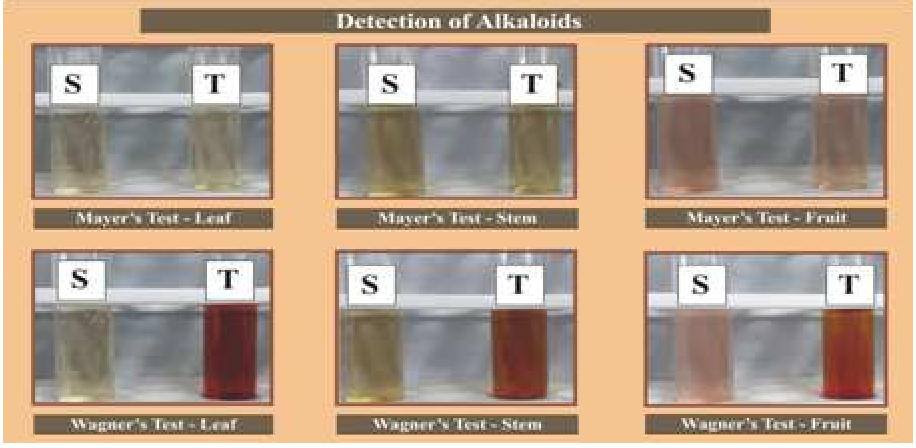

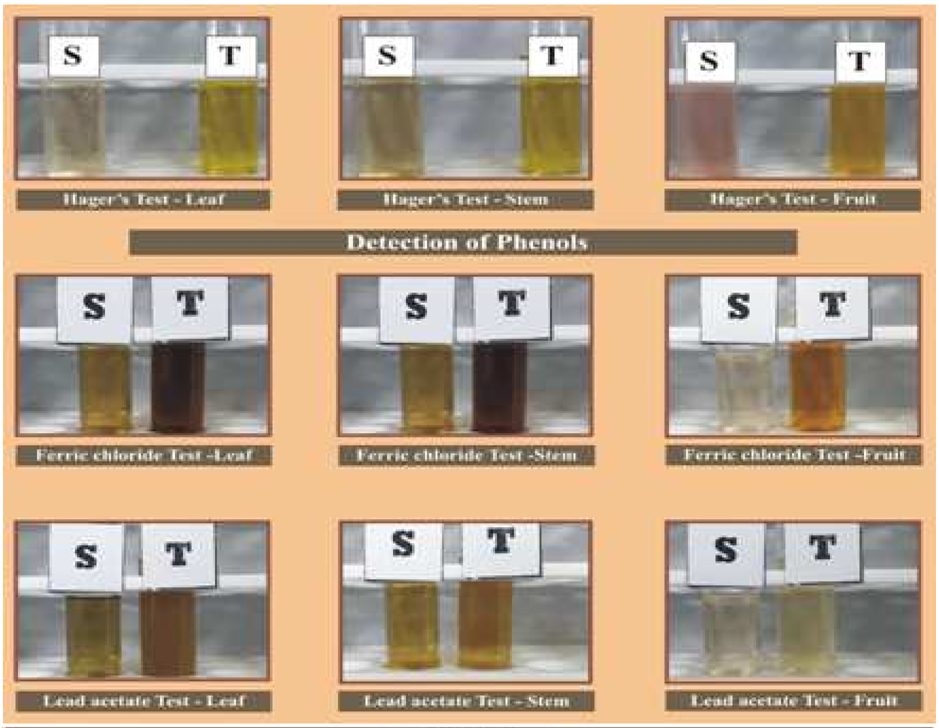

PLATE 2
Phytochemical screening of secondary metabolites of *Cocculus hirsutus*

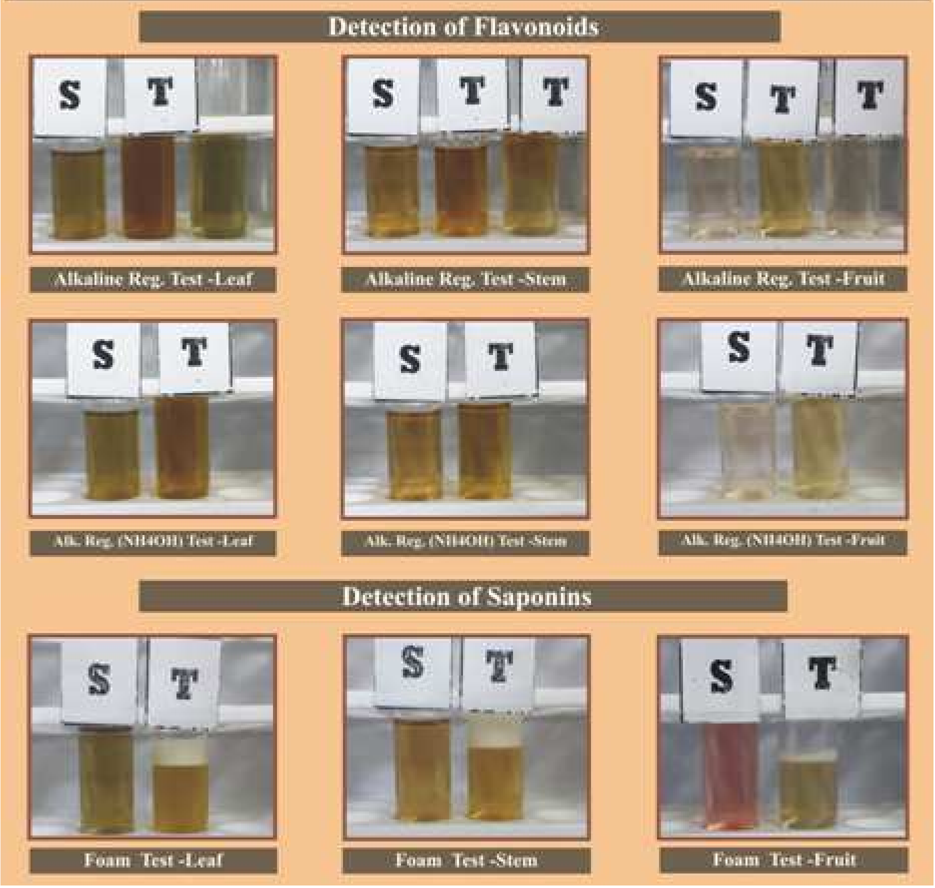

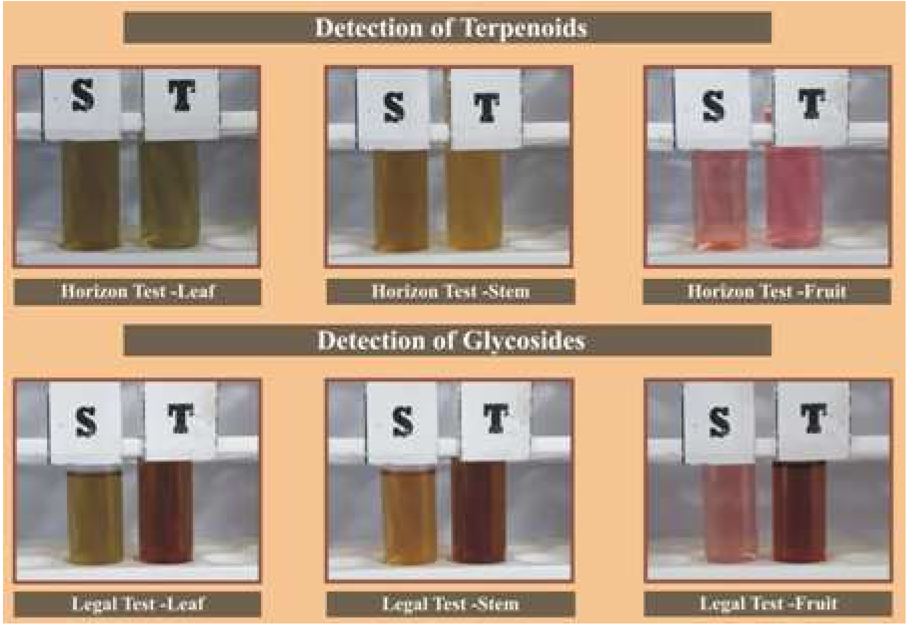
Detection of Terpenoids
S
T
Horizon Test -Leaf
Horizon Test -Stem
Horizon Test -Fruit
Detection of Glycosides
Legal Test -Leaf
Legal Test -Stem
Legal Test -Fruit

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Economic impact of Goods and Services Tax (GST) on Indian Economy

Dr. C.M. Tembhurnekar*

***Associate Professor (Commerce) M.B.Patel Arts, Commerce and Science College, SakoliDist- Bhandara (M.S.) INDIA**

Abstract - The achievement of any public scheme is analyzed through its power to transform the lifestyles and welfare of human beings and their capability to reduce variation in the society and contribute to economic development. The governments haveplanned a series of taxation to control on this problem which we have been facing since independence. Goods and service tax scheme is one of them which have focused on welfare of citizens. This paper is a theoretical conception of the economic impact of Goods and Services Tax over Indian Tax system. GST is the only indirect tax that directly affects all sectors of our economy. This paper focuses on the key features of the GST, benefits, challenges and impacts of implementation on different industries and services in India. More than 150 countries of the world have implemented GST to minimize the difficulty of multiple taxes. The present paper focused on explaining the concepts, features, objectives, types and economic impact of GST on Indian economy. Then it discusses the challenges faced by the government with respect to its implementation.
Keywords - Economy, GST, VAT, CGST, SGST,IGST, GSTR, and GSTN.

Introduction - France was the first **country** to implement the **GST** in 1954.GST has been commonly accepted around the world and more than 150 countries have adopted this tax system. GST has already been implemented by Canada, Vietnam, Australia, Singapore, United Kingdom, Monaco, Spain, Italy, Nigeria, Brazil, South Korea, Australia, Germany, Japan, and Pakistan etc. They acknowledged the same which ranges between 15%- 20% in most of the countries. India is one of the most stable economies of the world and we have proved to be quite adept at adjusting to major economic renovations. GST is a value added tax which will be levied on both goods and services (except for a list of exempted goods and services) at both the centre and state level (Central GST and State GST respectively). This is going to be one single tax which will be levied on the product or service which is being sold. In effect, multiple taxes like CENVAT, central sales tax, state sales tax, octroi etc. will be replaced by GST.

The aim of Goods and Service Tax (GST) has transformed the economy into a digital and standardized one, which in turn will now help seamless flow of information and availability of common set of data to both the Centre and the States making the Direct and Indirect Tax collections more effective.

Objectives - The research paper covers the following objectives:

1. To understand the history of Goods and Services Tax in India.
2. To understand the concept, features, objectivesand types of GST.
3. To highlight the tax slab and economic impact of GST.
4. To study the challenges regarding implementation of GST.

Review of Literature - Ehtisham Ahmed and SatyaPoddar (2013) studied, "Goods and Service Tax Reforms and Intergovernmental Consideration in India" and found that GST introduction will provide simplier and transparent tax system with increase in output and productivity of economy in India. But the benefits of GST are critically dependent on rational design of GST. Garg (2014) ,analysed the impact of GST on Indian tax scenario. He tried to highlight the objectives of the proposed GST plan along with the possible challenges and opportunity that GST brings. He concluded that GST is the most logical step in Indian indirect tax reforms. Further he mentioned that experts say that GST is likely to improve the tax collection and boost the economic development of the country. Kumar (2014), concluded that GST will help in eradicating economic distortion by current Indian tax system and is expected to encourage unbiased tax structures which will be indifferent to geo locations. Sehrawat&Dhanda (2015) , conducted a study focused on advantages and challenges of GST faced by India in execution. They concluded that a simplified and transparent tax system was the need of Indian economy. Pointing out the various advantages they said that GST will provide India a world class tax structure and a seamless tax system but it will depend upon effectiveness

of its implementation. Khurana& Sharma (2016) , conducted a study with a view to explore various benefits and opportunities of GST by throwing a light on its' background, objectives of proposed GST plan and its impact on Indian tax scenario. They concluded that GST implementation will definitely benefit producers and consumers although its' implementation requires concentrated efforts of all stake holders especially central and state government. Munde&chavan (2016) , conducted a study to discuss the pros and cons of GST and accordingly make suggestions to minimise loopholes and make it more effective. They concluded that if the probable loopholes are dealt effectively, tax payers will accept the change brought upon and if procedures in GST proves to be simple and assures the involvement of interest of all stakeholders then definitely it will lead to economic development and rationalization of prices. Lourdunathan& Xavier (2017) , conducted a study based on exploratory research technique on the basis of past literature to study the opinions of manufacturers, traders, society etc. about the GST and the challenges and prospects of introducing GST in India. They concluded that no doubt GST stands with one tax one nation slogan and will provide relief to producers as well as consumers. Nitin Kumar (2014), studied "Goods and Service Tax in India-A way forward" and found that GST will be levied on all the goods and services except those exempted, dual model of GST will be there, which will include Central GST (CGST) collected by Center and State GST (SGST) collected by State.Pinki, SupriyaKamma and RichaVerma (July 2015) studied, "Goods and Service Tax- Panacea For Indirect Tax System in India" and concluded that the new NDA government in India is positive towards implementation of GST and it is beneficial for central government, state government and as well as for consumers in long run if its implementation is backed by strong IT infrastructure

Research Methodology - The study is completely based on secondary data. This study refers to the secondary data because it is the suitable ways to collect the data. This is a macro study; therefore the primary data was not possible to collect from all over India. It is also one of the biggest reasons to choose the secondary data.

This is a descriptive cum conceptual research paper, which studies the need, concept, advantages, types, challenges and tax slab of GST based on past literature, books, journal, magazines etc., It also covers a wide range of academic literatures on Goods and Services Tax. Additionally, as per the need of the study, further considerations have been made.

What is India GST?

GST (Goods and Service Tax) is a multi-stage, designation based comprehensive tax imposed at each value addition stage. The replacement of multiple indirect taxes in the country has helped India's Government achieve its "One Nation One Tax" program.

This is one of the largest taxation reforms that has taken place in India and passed by the Government. Across the world, many countries have a single unified GST system. However, India has adopted a dual GST model, which means that GST will be administered by both the Central Government and the State Government.

All the taxes mentioned earlier are proposed to be subsumed in a single tax called the Goods and Services Tax (GST) which will be levied on supply of goods or services or both at each stage of supply chain starting from manufacture or import and till the last retail level. So basically any tax that is presently being levied by the Central or State Government on the supply of goods or services is going to be converted into GST.

GST is proposed to be a dual levy where the Central Government will levy and collect Central GST (CGST) and the State will levy and collect State GST (SGST) on intra-state supply of goods or services. The Centre will also levy and collect Integrated GST (IGST) on inter-state supply of goods or services. Thus GST is a unifier that is going to integrate various taxes being levied by the Centre and the State at present and provide a platform for forging an economic union of the country.

This tax reform will lead to creation of a single national market, common tax base and common tax laws for the Centre and States. Another very significant feature of GST will be that input tax credit will be available at every stage of supply for the tax paid at the earlier stage of supply. This feature would mitigate cascading or double taxation in a major way. This tax reform will be supported by extensive use of Information Technology [through Goods and Services Tax Network (GSTN)], which will lead to greater transparency in tax burden, accountability of the tax administrations of the Centre and the States and also improve compliance levels at reduced cost of compliance for taxpayers. Studies indicate that introduction of GST would instantly spur economic growth and can potentially lead to additional GDP growth in the range of 1% to 2%.

Primary Objective behind GST - Holding the crystal clear slogan "One Nation, One Tax, One Market" it aims-

1. To eliminate Indirect Tax issues
2. To remove Cascading Tax effects
3. To increase the number of tax payers
4. To entertain Consumption-based Tax administration instead of Manufacturing
5. To bring out a buoyancy in Govt. Revenue
6. To diminish Tax evasion and Corruption

History of GST in India - The detailed events according to various timelines for GST implementation in India are granted below:

During 1999: The idea of Goods and Services Tax (GST) in India started during meeting held in 1999 between Prime Minister AtalBihari Vajpayee and his economic advisory panel, which included three former RBI governors namely IG Patel, BimalJalan and C Rangarajan.

During 2000: On July 17, 2000, Indian Government

under **Vajpayee** leadership set up the **Empowered Committee** (**EC**) of State Finance Ministers to design a nationwide GST model. This committee was headed by AsimDasgupta (Finance Minister of West Bengal) and its members are State Finance Ministers of Karnataka, Madhya Pradesh, Maharashtra, Punjab, Uttar Pradesh, Gujarat, Delhi and Meghalaya. This committee which had formulated the design of State VAT (Value Added Tax) was requested to come up with a roadmap and structure for the GST with the following objectives:

1. To monitor the implementation of uniform floor rates of sales tax by States and Union Territories;
2. To monitor the phasing out of the sales-tax based incentive schemes;
3. To decide milestones and methods of States to switch over to VAT; and
4. To monitor reforms in the Central Sales Tax system existing in the country.

During 2003: The Vajpayee led government formed a task force to recommend tax reforms. This task force was under Vijay Kelkar on the implementation of Fiscal Responsibility and Budget Management (**FRBM**) Act, 2013.

During 2004: Vijay Kelkar recommends GST to replace the existing tax regime. Vajpayee headed BJP-led NDA government fell.

During 2006: On 28 February, 2006, under Congress-led UPA government, new Finance Minister P Chidambaram continued work on the same. He proposed 1 April, 2010 as deadline for GST implementation throughout India.

During 2007:on May 10, 2007, a Joint Working Group on GST was formed, which submitted its report to the Empowered Committee (EC) on November 19, 2007.

During 2008: On April 2008, Empowered Committee (EC) finalised its view on GST, submitted a report titled "A model and roadmap for Goods and Services Tax (GST) in India".

During 2009: The Empowered Committee (EC) released its First Discussion Paper (FDP) on GST in November, 2009, based on discussions within and between it and the Central Government.

During 2010: Finance Minister P Chidambaram had announced that GST will be implemented from April, 2011.

During 2011: In the LokSabha, the **115th Constitution Amendment Bill** was introduced for the levy of GST on all goods and services across India.

During 2012: In 8th November, 2012, a 'Committee on GST Design' was constituted, with members as officials of the Government of India, State Governments and the Empowered Committee was.

During 2013: In August 2013, Standing Committee submitted its report on GST. In November 2013, EC rejected Government's proposal to include petroleum products under GST regime.

During 2014: Under the leadership of NarendraModi, the NDA government was re-elected into power. The new Finance Minister ArunJaitley introduced the GST Bill (**122th Constitution Amendment**) in the LokSabha.

During 2015: In February 2015, Jaitley set another deadline for GST implementation in India as 1 April 2016.

During 2016: On August 3, 2016, RajyaSabha passed the GST. In 12 August 2016 when **Assam** became the **first state** to pass GST.

On September 8, 2016, Hon'ble President of India gave his final assent for Constitution 122nd Amendment Bill, 2014. Constitutional **101st Amendment Act** came into force which empowers both the States and Centre to levy this GST.

On September 23, 2016, **GST Network** was formed, it is an online network designed to solve the problems and questions of consumers and businessmen.

During 2017: On 16 January, 2017, Jaitley announces 1 July, 2017 as GST rollout deadline.

On 20 March, 2017, Cabinet approved CGST, IGST and UT GST and Compensation bills.

On 27 March, 2017, LokSabha and RajyaSabha pass all the four key GST Bills - Central GST (CGST), Integrated GST (IGST), State GST (SGST) and Union Territory GST (UTGST).

On 18 May, 2017, the GST Council fits over **1,200 goods** in one of the four rates of GST (5%, 12%, 18%, 24%). On 19 May, 2017, the GST Council decides on 5, 12, 18 and 28 percent as **service** tax slabs.

On 20 May, 2017, GST Council fixed four GST tax rates in India (5%, 12%, 18%, 24%) for all goods and services.

During Midnight of **30 June, 2017** - GST came into force across India except Jammu & Kashmir.

During Midnight of **7 July, 2017** - Jammu and Kashmir, the only State missed to adopt the Goods and Services Tax (GST) on July 1, finally joined the GST regime.

Need of GST in India - A common refrain in the popular discussions is what is the need for the introduction of GST? To answer that question, it is important to understand the present indirect tax structure in our country. Presently the Central Government levies tax on manufacture (Central Excise duty), provision of services (Service Tax), interstate sale of goods (CST levied by the Centre but collected and appropriated by the States) and the State Governments levy tax on retail sales (VAT), entry of goods in the State (Entry Tax), Luxury Tax, Purchase Tax, etc. It is clearly visible that there are multiplicities of taxes which are being levied on the same supply chain.

There is cascading of taxes, as taxes levied by the Central Government are not available as setoff against the taxes being levied by the State governments. Even certain taxes levied by State Governments are not allowed as set off for payment of other taxes being levied by them. Further, a variety of VAT laws in the country with disparate tax rates and dissimilar tax practices, divides the country into separate economic spheres. Creation of tariff and non- tariff barriers such as Octroi, entry Tax, Check posts etc. hinder the free flow of trade throughout the country. Besides that, the large number of taxes creates high compliance cost for the

taxpayers in the form of number of returns, payments etc.

Advantages of GST

1. Advantages for the Government:

1. Will help to create a unified common national market for India, giving a boost to foreign investment and "Make in India" campaign;
2. Will mitigate cascading of taxes as Input Tax Credit will be available across goods and services at every stage of supply;
3. Harmonization of laws, procedures and rates of tax between Centre and States and across States;
4. Improved environment for compliance as all returns are to be filed online, input credits to be verified online, encouraging more paper trail of transactions at each level of supply chain;
5. Similar uniform SGST and IGST rates will reduce the incentive for evasion by eliminating rate arbitrage between neighbouring States and that between intra and inter-state sales;
6. Common procedures for registration of taxpayers, refund of taxes, uniform formats of tax return, common tax base, common system of classification of goods and services will lend greater certainty to taxation system;
7. Greater use of IT will reduce human interface between the taxpayer and the tax administration, which will go a long way in reducing corruption;
8. It will boost export and manufacturing activity, generate more employment and thus increase GDP with gainful employment leading to substantive economic growth;
9. Ultimately it will help in poverty eradication by generating more employment and more financial resources.

2. Advantages to Trade and Industry:

1. Simpler tax regime with fewer exemptions;
2. Increased ease of doing business;
3. Reduction in multiplicity of taxes that are at present governing our indirect tax system leading to simplification and uniformity;
4. Elimination of double taxation on certain sectors like works contract, software, hospitality sector;
5. Will mitigate cascading of taxes as Input Tax Credit will be available across goods and services at every stage of supply;
6. Reduction in compliance costs - No multiple record keeping for a variety of taxes - so lesser investment of resources and manpower in maintaining records;
7. More efficient neutralization of taxes especially for exports thereby making our products more competitive in the international market and give boost to Indian Exports;
8. Simplified and automated procedures for various processes such as registration, returns, refunds, tax payments, etc;
9. Average tax burden on supply of goods or services is expected to come down which would lead to more consumption, which in turn means more production thereby helping in the growth of the industries manufacturing in India.

3. Advantages to Consumers:

1. Final price of goods is expected to be transparent due to seamless flow of input tax credit between the manufacturer, retailer and service supplier;
2. Reduction in prices of commodities and goods in long run due to reduction in cascading impact of taxation;
3. Relatively large segment of small retailers will be either exempted from tax or will suffer very low tax rates under a compounding scheme - purchases from such entities will cost less for the consumers;
4. Poverty eradication by generating more employment and more financial resources.

4. Advantages to States:

1. Expansion of the tax base as they will be able to tax the entire supply chain from manufacturing to retail;
2. Power to tax services, which was hitherto with the Central Government only, will boost revenue and give States access to the fastest growing sector of the economy;
3. GST being destination based consumption tax will favour consuming States;
4. Improve the overall investment climate in the country which will naturally benefit the development in the States;
5. Largely uniform SGST and IGST rates will reduce the incentive for evasion by eliminating rate arbitrage between neighboring States and that between intra and inter-state sales;
6. Improved Compliance levels of the tax payers will contribute greatly in improving the revenue collection of the States.

9. Finding:

Salient features of GST - The salient features of GST are as under:

1. GST is applicable on 'supply' of goods or services as against the present concept on the manufacture of goods or on sale of goods or on provision of services.
2. GST is based on the principle of destination-based consumption taxation as against the present principle of origin-based taxation.
3. It is a dual GST with the Centre and the States simultaneously levying tax on a common base. GST to be levied by the Centre would be called Central GST (CGST) and that to be levied by the States would be called State GST (SGST).
4. An Integrated GST (IGST) would be levied an inter-state supply (including stock transfers) of goods or services. This shall be levied and collected by the Government of India and such tax shall be apportioned between the Union and the States in the manner as may be provided by Parliament by Law on the recommendation of the GST Council.
5. Import of goods or services would be treated as inter-

state supplies and would be subject to IGST in addition to the applicable customs duties.

6. CGST, SGST & IGST would be levied at rates to be mutually agreed upon by the Centre and the States. The rates would be notified on the recommendation of the GST Council. In a recent meeting, the GST Council has decided that GST would be levied at four rates viz. 5%, 12%, 16% and 28%. The schedule or list of items that would fall under each of these slabs has been worked out. In addition to these rates, a cess would be imposed on "demerit" goods to raise resources for providing compensation to States as States may lose revenue owing to the implementation of GST.
7. GST would replace the following taxes currently levied and collected by the Centre:-

a. Central Excise Duty
b. Duties of Excise (Medicinal and Toilet Preparations)
c. Additional Duties of Excise (Goods of Special Importance)
d. Additional Duties of Customs (commonly known as CVD)
e. Special Additional Duty of Customs(SAD)
f. Service Tax
g. Cesses and surcharge in so far as they relate to supply of goods and services.

8. State taxes that would be subsumed within the GST are:-

a. State VAT
b. Central Sates Tax
c. Purchase Tax
d. Luxury Tax
e. Entry Tax (All forms)
f. Entertainment Tax and Amusement Tax (except those levied by the local bodies)
g. Taxes on advertisements
h. Taxes on lotteries, betting and gambling
i. State cesses and surcharges in so far as they relate to supply of goods and services.

9. GST would apply on all goods and services except Alcohol for human consumption.
10. GST on five specified petroleum products (Crude, Petrol, Diesel, ATF& Natural Gas) would by applicable from a date to be recommended by the GSTC.
11. Tobacco and tobacco products would be subject to GST. In addition, the Centre would have the power to levy Central Excise duty on these products.
12. A common threshold exemption would apply to both CGST and SGST. Tax payers with an annual turnover not exceeding Rs.20 lakh (Rs.10 Lakh for special category States) would be exempt from GST. For small taxpayers with an aggregate turnover in a financial year upto 50 lakhs, a composition scheme is available. Under the scheme a taxpayer shall pay tax as a percentage of his turnover in a State during the year without benefit of Input Tax Credit. This scheme will be optional.
13. The list of exempted goods and services would be kept to a minimum and it would be harmonized for the Centre and the States as well as across States as far as possible.
14. Exports would be zero-rated supplies. Thus, goods or services that are exported would not suffer input taxes or taxes on finished products.
15. Credit of CGST paid on inputs may be used only for paying CGST on the output and the credit of SGST paid on inputs may be used only for paying SGST. Input Tax Credit (ITC) of CGST cannot be used for payment of SGST and vice versa. In other words, the two streams of Input Tax Credit (ITC) cannot be cross-utilised, except in specified circumstances of inter-state supplies for payment of IGST. The credit would be permitted to be utilised in the following manner:-

a. ITC of CGST allowed for payment of CGST & IGST in that order;
b. ITC of SGST allowed for payment of SGST & IGST in that order;
c. ITC of IGST allowed for payment of IGST, CGST & SGST in that order.

16. Accounts would be settled periodically between the Centre and the States to ensure that the credit of SGST used for payment of IGST is transferred by the Exporting State to the Centre. Similarly, IGST used for payment of SGST would be transferred by the Centre to the Importing State. Further, the SGST portion of IGST collected on B2C supplies would also be transferred by the Centre to the destination State. The transfer of funds would be carried out on the basis of information contained in the returns filed by the taxpayers.
17. The laws, regulations and procedures for levy and collection of CGST and SGST would be harmonized to the extent possible.

The whole GST system will be backed by a robust IT system. In this regard, Goods and Services Tax Network (GSTN) has been set up by the Government. It will provide front end services and will also develop back end IT modules for States who opted for the same.

Types of GST

1. Central Goods and Services Tax (CGST):CGST is a tax collected by the Central Government on the transactions of goods and services which are moved within the state i.e., intrastate. The tax collected under CGST is payable to the central government treasury.

2. State Goods and Services Tax (SGST):SGST tax is collected by the state government and is levied on the transactions of interstate sales of goods and services, i.e., where the sale is made within the state. Under SGST, the tax revenue goes to the State Government Treasury or tp the eligible union territory.

3. Integrated Goods and Services Tax (IGST):IGST is a tax collected by the Central Government on inter-State supply of goods and services,i.e., where the sale is made outside

the state. It applies both to a supply made outside the state and those made outside the country.

GST Rates and Slabs in India - There are five slabs in GST system, Tax exempt 0% slab, 5% slab, 12% slab, 18% slab, and 28% slab.

A. Tax-Exempt 0%: As per the country's socio-economic needs, the Government has decided to exempt certain goods from the GST tax. To reduce the average taxpayer burden, everyday items like fruits, vegetables, bread, flour, newspaper, eggs, milk, etc. is exempt from the taxes.

B. 5% Tax Slab: The GST tax actually begins with the 5% tax slab. The items included in this slab are skimmed milk powder, coffee, tea, sugar, fish fillets, coal, fertilizers, ayurvedic medicine, insulin, cashew nuts, etc.

C.12% GST Slab: The items included in the 12% slab are butter, ghee processes food, mobile, fruit juice, almonds, packed coconut water, umbrella, food served at non- ac restaurant., etc.

D. 18% GST Slab: The items which are included in the 18% slab are, flavored refined sugar, pasta, cornflakes pastries, cakes, detergents, mirror, glassware, marble & granite, paints, vacuum cleaners, sanitaryware, leather clothing, hotels, which charge tariffs in excess of Rs. 7500, movie tickets costing above Rs.100.

E. 28% GST Slab: The highest GST rate in India is the 28% GST slab. It is reserved for sin goods and luxury items like pan masala, dishwasher, weighing machine, paint, cement, sunscreen, AC, fridge, washing machine, automobiles, motorcycle. The 28% GST rate also applies to 5-star hotels, where the actual billing amount of the hotel stay is above Rs. 7500 per night, movie tickets, betting in casinos, and racing.

Impact of GST on Indian Economy

1. **Increase in tax base:** After its implementation on 1 July 2017, over 38 lakh taxpayers migrated into the GST regime. This number had further increased to more than 64 lakh in September 2017. Also, with an addition of new GST registrations of over 58 lakh, this number has increased by almost 90 percent and we had total (new plus migrated) 1.23 crore active GST registrations, as on 31 March 2020. This growth indicates a significant increase in tax base and a change in taxpayers' compliance behavior.
2. **Revenue collections:** While the first nine months of FY 18 saw a revenue collection of Rs. 7.4 lakh crore, FY 19 witnessed healthy growth with the government collecting Rs. 11.7 lakh crore. On the other hand, in the backdrop of rate reduction/ rationalization over several products, the collections during FY 20 were below estimates and marginally grew at 4 percent over FY 19 to reach INR 12.2 lakh crore.
3. **Introduction of e-way bill system:** Barring the initial technical glitches, the e-way bill system has been largely streamlined. The total number of e-way bills (inter-state as well as intra-state) generated during FY 19 wasRs.56 crore; and with @13% growth, this number increased to Rs.63 crore during FY 20.
4. **Rate rationalization:** The government continued to focus on rationalizing GST rates. Although the overall rate structure remained same, a significant progress has been made in bringing down GST rates for various products. On 1 July 2017, @19 percent items were under the 28 percent GST rate bracket; currently only 3 percent are subject to 28 percent GST. Now about 50 percent items are under the 18 percent bracket, @21 percent face 12 percent, and @25 percent are subject to 5 percent GST.
5. **Legislative amendments and clarifications:** From its original shape and form, as on 1 July 2017, the GST law has undergone significant changes. With almost 700 notifications, 145 circulars, and over 30 orders, significant changes have been made to address taxpayers' demand, to carry out procedural simplifications and curb tax evasion.
6. **Increase in Foreign Investment-** With GST, India is now a unified market and the foreign investment has increased in India. The goods that are manufactured within India because of their reduced costs have become more competitive in international market leading to growth in export. The implementation of Goods & Services tax puts India in the line of international tax standards, making it easier for Indian businesses to sell in the global market.
7. **Fewer Tax-** GST has two constituents: The central GST and the State GST. The Central GST will replace - Service Tax, Central Excise Duty, and Custom Duty etc. The State GST will replace - State VAT, Central Sales Tax, Tax on Advertisements, Luxury Tax, Purchase Tax, Entertainment Tax etc. Before GST, there were so many taxes and now they have replaced all these taxes and duties with Central GST and State GST.
8. **Reduce the cost of doing business-** GST has changed VAT all over India. Now we do not need to pay different amounts of taxes in different states. It is one tax system for all states of India and so we have already got rid of various taxes and duties on our businesses.
9. **Transparency-** The tax administration has started working corruption free. Also enabling sales invoices to show the tax applied has resulted in transparency.

Challenges in Implementation of GST - During fiscal year 2016-17 about Rupees 17.10 lakh crore tax was collected by government of India. The tax collection raised by about 178% as compared to last year and indirect taxes consisting of service tax, VAT etc accounted for 50 % of the total returns from taxes. With introduction of major tax reform in indirect taxation system and introduction of GST, the tax collection equations are changed. This tax is expected to boost the economic growth of the country. By replacing the multiple tax system with a single unified tax, GST has simplified the India's indirect tax regime but a plethora of roadblocks that posed a challenge in its implementation were not the rock of mud. Some of them are enumerated below.

1. **Technical GST Issues for Indian Taxpayers**: Goods and services tax is currently going under tremendous pressure to go through some of the burnings and solution-

seeking problems of the year-old implemented indirect tax regime. The finance ministry, as well as the GST council, needs to take care of the GST return filling issues and forms related consequences that have to be faced by the taxpayers alike.

2. **September Return Due Dates:**It might be wrong to the taxpayers as they cannot claim the ITC before matching the invoice, for the date being shortened of October 20th. Also, the credit of ITC claimed or unclaimed is to be claimed or reversed according to the filing dates, so the dates must be extended.

3. **Credit Reversal:**The credit claimed on the purchases in which the payment has not been given to the suppliers within the 180 days must be reversed. And to keep a note of these things may indulge an extra burden on the organization.

4. **GSTR 2A Availability:**As the annual GSTR 2A can't be downloaded and has to be viewed monthly, this has created difficulties to match the returns with the books of accounts with 2A returns. Comply of Rule 36(4) on a mandatory basis also creates now a problem.

5. **Agricultural Commission Agent & Joint Development Agreement Issue:**

The tax liability has to be paid on the commission according to the taxable goods but when the goods are rated NIL and the commission is not taxable therefore making it an issue for builders and landlord taxation liability.

6. **GSTR 3B Issues:**Under this return type, there is no modification or amendment facility available and in case the changes are to be made then there is a lengthy one month period time for the amendment making it interest liability issue.

7. **GSTR 1 Issues:**It is worthy to note that the credit note/ debit note or B2C sales made cannot be modified again in the GSTR 1 making it a serious task while filing.

8. **Issues in TRAN 1 form:** There will be issues in the Trans 1 notice in Form 603 as it is now sent by the department to everyone making it troublesome for the real taxpayers. As the notice requires all the previous records to be available making it a tiresome issue for the taxpayer to provide the details again

9. **Issues for Small Traders:**GST implies additional operational costs for Small businesses. In a developing country like ours, not all SMEs will be able to afford the cost of computers and accountants required to implement GST (make bills and file tax returns). 28% GST rate on some products like plywood, automobile parts, and electronic items forces potential buyers to opt for unregistered dealers.

It is too difficult to assign MRP to handmade products like local shoes, BanarasiSarees, etc. Most small artisans are illiterate and therefore unable to write MRP on their products and/or do any paperwork. Dealers are confused about how to rates such products.

Small businesses that have a small turnover and need not pay GST face trust issues. Buyers demand bills from even those sellers who are exempted from GST. Without proof of a certificate of GST exemption, small shop owners find themselves stranded and immobile.

10. **Issues for E-commerce Companies:**E-commerce giants like Flipkart, Amazon also have not escaped the aftereffects of GST rollout. TCS has to be collected by the e-commerce companies from the sellers at the time of payment.

The capital blockage will hamper day to day operational costs due to TCS provisions. The GST council has fixed the 1 percent TCS over the deduction made while payment to the sellers.

11. **E-way Bill and Interstate Trade:**The E-way bill had the potential to liberate interstate trade from all sorts of obstructions. The excitement could be felt among the slightly nervous business community. But on the day when the Finance Budget 2018 was being introduced to the Lower House, the lethargic GST network turned to be a major spoilsport and February 1 turned out to be a watershed moment for the upbeat government. The inability of the network to handle large volume e-way bill requests was at the forefront of public jokes and disappointment. Immediately e-way bill was rolled back. In the aftermath of the failure, goods carrying vehicles were left stranded and highways enjoyed pin drop silence for a few hours. The crumbling GST network has been in the spotlight from the very beginning and it continues to garner unwanted criticism and public grievances.

12. **Evaders Bonanza:**The consistent policy rollbacks and amendments, powered by the glitchy GSTN Network, have enabled massive tax evasion. The benevolent composition scheme, as well as windows for filing quarterly returns, raises concerns about the intention and execution prowess of the government at the center. The increased pool of registered taxpayers has had little but no impact on Revenue generation. Only 70% of taxpayers file returns regularly. A major headache is, however, the mismatch between initial and final returns filed by taxpayers.

13. **The Confusion:**For a frictionless and less burdened GST, the government is looking to shore up revenues to the tune of Rs 1 lakh crore per month. It would be interesting to see if the Government still has the courage to take stern measures against tax evaders and other business firms involved in anti-profiteering activities. The GST was projected as India's second tryst with destiny.

Conclusion - Goods and Service Tax, with end-to-end IT-enabled tax mechanism, is likely to bring buoyancy to government revenue. It is expected that the malicious activity of tax theft will go away under Goods and Service Tax regime in order to benefit both governments as well as the consumer. In reality, that extra revenue that the government is expecting to generate won't come from the consumers pocket but from the reduction of tax theft. The GST is good advantages in India and draw backs are also presented. There are various challenges in the way of Goods & Service Tax, but its

advantages are more than its disadvantages. It will also give India a world class and a smart tax system. It requires rational use and effective implementation of GST in a nation like India. The main aim behind GST is to replace VAT. GST is a comprehensive indirect tax that subsumes all types of indirect taxes of central and state governments in it. It may be said that GST will provide relief to consumers, manufacturers and government and whole nation as well.

Impacts of GST reforms are very positive for growth, capital formation, investment, consumption and employment in the Indian economy. Higher growth rate allows more consumption which is higher than 6.3 percent relative to the benchmark. The distribution of income also becomes more equal after the GST reforms. The economic wellbeing of households and their consumption increases up to by 8 percent above the benchmark. They also increase labour supply to take up jobs created additionally. By eliminating the cascading effects of multiplicity of taxes and by removing the red-tape in the tax administration, GST reduces the cost of supply of goods and services. This results in up to 20 percent reduction in prices of commodities relative to benchmark. Consumers are better off as they get commodities at lower prices, producers also gain as the cost of capital decrease. Economy becomes more competitive in the international market.

References :-

1. EhtishamAhamad and SatyaPoddar(2013), "Goods and Service Tax Reforms and Intergovernmental Consider - ationin India", "Asia Research Center",LSE, 2013.
2. Garg, G. (2014). Basic concepts and features of Goods and Services Tax in India, International Journal of Scientific Research and Management, 2(2), 542-549.
3. Kumar, N. (2014). Goods and Services Tax in India: A Way Forward. Global Journal of Multidisciplinary Studies, 3(6), 216-225.
4. Khurana, A. & Sharma, A. (2016). Goods and Services Tax in India –A Positive return for indirect tax system. International Journal of Advanced Research, 4 (3), 500-505.
5. Lourdunathan, F. & Xavier, P. (2017). A study on implementation of Goods and Services Tax (GST) in India: Prospects and challenges. International Journal of Applied Research. 3 (1), 626-629.
6. Munde, B. M., &Chavan, A. (2016). Perspective of GST in India. International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology, 5 (11).
7. Nitin Kumar (2014). Goods and Services Tax in India- A way forward. In Global Journal of Multidisciplinary Studies, Volume 3, Issue 6, May 2014. Retrieved from the URL on 15 August 2015
8. Pinki, SupriyaKamna, RichaVerma(2015), "Good and Service Tax – Panacea For Indirect Tax System In India", "Tactful Management Research Journal",Vol2, Issue 10, July2014
9. Sherawat, M., &Dhanda, U. (2015). GST in India: A key tax reform. International Journal of Research Granthaalaya, 3 (12), 133-41.

Online References :

1. Central Board of Indirect Tax and Customs (2021). http://www.cbec.gov.in/htdocs-cbec/gst/index Retrieved on June12th, 2021 from http://www.cbec.gov.in.
2. Deskera. (2021). http://www.deskera.in/gst-benefits-and-impact-on-indian-economy Retrieved on June 6th , 2021 from http://deskera.in.
3. Goods and Services Tax Network (2021). http://www.gstn.org Retrieved on June8th, 2017 from http://www.gstn.org.
4. Goods And Services Tax Council (2021). http://www.gstcouncil.gov.in/brief-history-gst Retrieved on June 8th, 2021 from http://gstcouncil.gov.in.
5. Goods And Services Tax Council (2021). www.Brief History Of GST | Goods and Services Tax Council (gstcouncil.gov.in)Retrieved on June 10h,2021 from http://gstcouncil.gov.in
6. GST India. (2021). http://www.gstindia.com/history-of-gst/ Retrieved on June6th, 2021 from http://www.gst india.com.
7. GST India (2021). http://www.gstindia.com/about Retrieved on June 3rd , 2021 from http://www.gstindia.com.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Comparison of Alienation and Mental Health among Rural and Urban College students

Dr. Rashmi Singh* Dr. Jyotsana Meghwal**

*Assistant Professor (Psychology) Mohanlal Sukhadia University, Udaipur (Raj.) INDIA
** Ph.D. (Psychology) UCSSH, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur (Raj.) INDIA

Abstract - Adolescence is a crucial period for developing and maintaining social and emotional habits which are important for their mental health. Alienation may start at preschool age and persist until adolescence or even for life. There are many factors which contribute to the negative impact on psychological development of adolescents. These could be the physical changes they are going through or outside environment which in many cases criticize the adolescents or are misunderstood. When we talk about the Alienation in context to psychological health it is referred to as despair, loneliness, loss of self, isolation, loss of beliefs etc. Mental Health incorporates that concept of personality characteristics and behavior all in one. A mentally healthy person is the person who shows full harmonal relationship with his attitudes, desires, values, self concept and also with the world. The objective of the study is to find out the correlation between Alienation and mental health of adolescents. The sample of the study consisted of 50 adolescents of Udaipur district. 25 students belong to the rural background and 25 were from urban background. Sample age ranging is of 18- 25 years. Sample was selected with the help of random sampling from colleges of Udaipur district. Test administered was Student Alienation Scale (SAS) by Dr. R.R. Sharma and Mental Health checklist by Pramod Kumar. The findings indicated that there was significant difference between rural and urban students in aspect to social alienation and mental health.
Keywords - Adolescence, Mental Health, Alienation.

Introduction - When we are talking about health, always the physical health is given the priority, it is forgotten that there is the another aspect that is mental health, which is also the major part of the health which affects the individual very drastically. Mental health is the aspect with the help of which the person behave, think and take actions. It is very important in all the development stages of human being. When a person is mentally healthy he/she is easily aware about his/ her capabilities and can easily cope up with all the difficulties of the daily life. He/ she is purely in the state of wellbeing. Whereas talking about the concept of alienation it is a mentally ill state, in which a person experience of being alienated or in easy language it is referred as isolated, detached and estranged. This defines that individual feels that there is no controlling power on himself, on the situations, its own destiny and he or she feels that everything is out of control and believes that external factors are controlling like luck. The theoretical concept of Social Alienation was given by Karl Marx. This is used for the disconnectedness of the individual with his norms, values, society etc. The individual has difficulty finding the meaning of his actions, behavior, goals, relationships and plans.The individual feels the lack of commitment to other social relationships and also shows distrust, suspicion. The feeling of missing values and beliefs is also there. And yes, the individual feels isolation and disconnected with the other societal relations. And there is also the feeling of self diconnectedness.

Significance of the Study- The present study will give insight to the teachers of the colleges that how the background (rural and urban) of the college students affect the mental health of the students and also how the level of alienation also differs.

It will help counselor and eduactors to deal the student with the mental health issues faced by the students.

Review of literature

Chen, N. et. al. (2019) studied on 372 migrants, 254 urban and 268 rural children from various schools. The purpose of the study was to compare the mental health among migrants, urban and rural school going students from china. Rural and migrant children were found to have poor mental health as compred to the urban students. Rural children have a higher prevalence of the mental health problems.

Qadir & Basu (2018) studied the alienation among students of rural and urban higher secondary school. The sample consisted 300 rural and 300 urban that is total of 600 higher secondary school students from two districts that is Srinagar and Bandipora of Kashmir. Tools were used Student Alienation Scale developed by R.R. Sharma. It was found in the results that there is significant difference between rural and urban higher secondary school students on the

score of alienation and students from urban higher secondary school was found to have more level of alienation as compared to the students from rural higher secondary school.

El-Deep (2012) researched to identify the dimensions of the alienation. The sample taken was 150 college students that are male and female from rural and urban background which were studying in Zagazig University. This study was to determine the relationship between some independent variables and the dimensions of alienation. The results of the study revealed that there is no significant difference in the alienation of rural and urban adolescents.

Monika & Neeru (2017) studied to compare the 200 students from urban and rural area colleges of Delhi University. From each area 50 male and females students were taken. The scale used for the data collecetion was Dr. R. R. Sharma's Alientation scale. The study revealed that the male students who belongs to the urban area college have more level of alienation as compared to the rural area.

Naik, P., Prasanta, B. and Suradha, A. (2015) studied to compare the mental health of rural and urban adolescent students of Chhattisgarh. A sample size of 200 secondary adolescent students was selected for the study. The test used for the study was General Health Questionnares-28 (GHQ-28), developed by Goldberg and Hillier in 1979. The study revealed that that there are significant differences among rural and urban students.

Objectives :

1. To study the effect of background of student (Rural & Urban) on Alienation.
2. To study the effect of background of student (Rural & Urban) on Mental Health.

Hypothesis

1. There is no effect of background of student (Rural & Urban) on Alienation.
2. There is no effect of background of student (Rural & Urban) on Mental Health.

Methodology

Sample- The sample consisted of total 50 college students (rural & urban) in the age range 18-25 years.

Variables-

Independent variable-

Background of student**-** Rural
Urban

Dependent variable- Alienation
Mental health

Tools:

1. Student Alienation Scale (SAS) by Dr. R.R. Sharma, &
2. Mental Health checklist by Pramod Kumar.

Procedure- The test was administered on groups. Brief instructions were given to them. The scores obtained were analyzed statistically. Mean, S.D. and t value were calculated to see the effect of independent variables on dependent variables.

Result & Discussion :

Table-1 : A Statistical Summary of Alienation among Rural & Urban Students.

Group	N	Mean	STD	SEM	t value
Rural	25	21.28	5.68	1.136	7.37significant
Urban	25	34.76	7.16	1.433	

Table -1 shows the mean scores of alienation on rural & urban students. The mean score of rural students is 21.28 and the mean score of urban students is 34.76. It shows that urban students have high level of alienation as compared to rural students.

Table-2 : A Statistical Summary of Mental Health among Rural & Urban Students.

Group	N	Mean	STD	SEM	t value
Rural	25	14.56	3.60	.721	8.98significant
Urban	25	27.32	6.11	1.22	

Table -2 shows the mean scores of mental health of rural & urban students. The mean score of rural students is 14.56 and the mean score of urban students is 27.32. It shows that urban students have poor mental health as compared to rural students.

Urban students have high degree of alienation as compared to rural students. It is a fact that urbanization brings with its unique set of advantages and disadvantages. As per the sociologist it is believed that alienation increases when the people move from small, closed community to an urbanized, industrialized, and complex society. A study done by Simmel (1950) and Wirth (1938) showed that alienation is supposed to increase when urbanism increases. When the geographical area is small and people are strongly involved with each other in neighbors, they can easily interact and contact with each other. Rural adults were more likely than urban adults to say that they could rely on family and friends, and they have a large numbers of close friends and relatives. The rural adults were found to have less anxiety and make them more comfortable with trying a new social experience. Urban adults encounter more competition in their fields so they are more prone to have self-esteem issues as compared to the rural adults. Also mental health of urban students is poorer as compared to rural adults because of certain factors like more competition, distractions like social media and absence of interaction with their friends and family. With the growing technology era, the eye contact has been replaced with the screens of computers and mobiles which is easier than to have the feeling of being judged. These are the main issues which affect urban adults more than rural adults when talking about alienation and mental health.

Conclusion - Urban students have more alienation and poorer mental health as compared to rural students. The students who feel alienated can be given personal counseling also family counseling can be preferred. This could be a great help for the students as they can be more interactive and be friendly to the environment.

References :-

1. **Blauner R. (1964)**. Alienation and freedom. Chicago: University of Chicago Press.
2. **Chen, N., Pei, Y., Lin, X. *et al.* (2019)**. Mental health

status compared among rural-to-urban migrant, urban and rural school-age children in Guangdong Province, China. *BMC Psychiatry* 19, 383 (2019). https://doi.org/10.1186/s12888-019-2356-4

3. **El-Deep, H.A.E. (2012)**. Analytical Study Of Alienation Of Rural And Urban College Students Ýn Sharkia Governorate After The Revolution Of 25th Of January 2011. *Australian Journal Of Basic And Applied Sciences*, 6(8), 546-563.
4. **Farhana Qadir & Dr. Nighat Basu (2018).** To study the alienation among rural and urban higher secondary school students of Kashmir valley. *International Journal of Advanced Education and Research*, 3(2), PP 41-45
5. **Monika & Neeru Devi (2017)**. A comparative study of Alienation among Urban and Rural College Students of Delhi University. *International Journal of Innovative Science and Research Technology.* 2(5). 804-808
6. **Naik, P., Prasanta, B. and Suradha, A. (2015).** A comparative study of mental health among rural and Urban Adolecent students. *International Journal of Recent research in Social Sciences and Humanities*. 2(2), 143-145.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Luminescence Characterization Of Tb Doped $Ca(Vo_3)_2$ Phosphors

Vikas Gulhare* R. S. Kher** S. J. Dhoble***

*Department of Physics,Govt. G.N.A. P .G. College, Bhatapara (C.G.) INDIA
** Department of Physics, Govt. College, Ratanpur, INDIA
*** Department of Physics, R. T. M. Nagpur University, Nagpur (Mh.) INDIA

Abstract - To date most of the ML workers are actively engaged in search of intense luminescent materials. Just this fact promoted our interest to investigate the ML properties of rare earth activated divalent metal metavanadate. Present paper reports the mechanoluminescence characterization of Tb doped Ca $(VO_3)_2$ samples. $Ca(VO_3)_2$ samples having different concentration of Tb were prepared by solid state reaction method and ML was excited impulsively by dropping a load on to the sample. ML intensity increases with increasing concentration of dopant, irradiation doses and mass of the load. The ML intensity increases with increasing concentration of dopant and it is found optimum for the sample having 0.05% ofTb. A single peak is observed in ML intensity versus time curve for Tb doped samples. Photoluminescence study on the sample has shown the incorporation of Tb in host matrix. PL emission curves exhibit two peaks around 490 nm and 540 nm when the phosphor is excited by 383 nm which is attributed to characteristic emission of Tb^{3+} ions.
Keywords- Mechanoluminescence (ML), Photoluminescence (PL), Solid state reaction.

Introduction - In recent years serious efforts have been made to understand the origin of ML, to identify what electronic state is being populated and what state does the emitting. Lead in this direction Mechanoluminescence (ML) is an interesting luminescence phenomenon, which is caused by mechanical stimuli such as grinding, cutting, collision, striking and friction [1]. It can convert mechanical energy into visible light efficiently. The ML sensor to detect environmental stress by emitting light is expected to be used widely in various applications such as the forecasting of an earthquake, the damage detection of an air plane or car [2, 3].Takeda et al (1997) synthesized four kinds of europium complexes and investigated their mechanoluminescence properties. They found that out of four, only europium tris (2-thenoyltrifluoroacetone) phenanthroline exhibit intense mechanoluminescence[4].Yttrium vanadate doped with Eu^{3+} and co doped with Pr^{3+}as a red emitting phosphors and the effect of sensitizer on luminescence characteristics have been studied by Neeraja Rani et al (2004)[5].

The introduction of rare earths has resulted in a drastic improvement of the performance of luminescent devices based on these phosphors. Many efficient lasers are developed in vanadates host crystals in recent years [5-9]. The systematic study on ML and PL properties of calciummetavanadate has not been investigated so far. Present paper discussed the comparison of ML properties of γ -irradiated Tb activated $Ca(VO_3)_2$ with their PL properties may help to understand the basic mechanism of luminescence in these materials.

Materials and Method - Pure and Tb doped $Ca(VO_3)_2$ phosphors of different impurity concentrations were prepared by solid state diffusion method. Analargrade(99.9% pure) powder used as starting material. Requisite amount of host compound like $Ca(NO_3)_2.4H_2O$ and NH_4VO_3 were mixed thoroughly in 1:2 mole proportion for different samples. In case of doped samples known amount of impurity Tb_4O_7 (from 0.05 to 1 mole%) were added to above mixture and then transferred to J-mark porcelain crucibles. These powders were annealed in a high temperature muffle furnace by slowly raising the temperature to about 400^0C for 4 hours in air and heated at 650^0C for 12 hours then cooled to room temperature. The resulting compounds were crushed again and heated up to 1 hour at 650^0C, then quenched to room temperature.

Samples were exposed to gamma rays using ^{60}Co source having the exposure rate 0.93kGy/h. The ML glow curves were recorded by the routine ML unit. Two milligrams of sample was used every time for recording the glow curves. The ML was excited impulsively by dropping a fixed mass load on to the sample. The luminescence was monitored by a RCA-931 photomultiplier tube positioned below the transparent Lucite plate and connected to storage oscilloscope (SCIENTIFIC SM-340). The ML spectra were recorded using a series of optical band pass filter. Similarly, PL spectra of samples were recorded by using fluorescence spectrometer (SHIMADZU RF-1305 PC). In present investigation **Fig. A** shows Tb doped vanadate based

phosphors were prepared and XRD data of $Ca(VO_3)_2$ measured by using X-ray diffractometer and data matched well with the standard data of corresponding compounds(JCPDS).

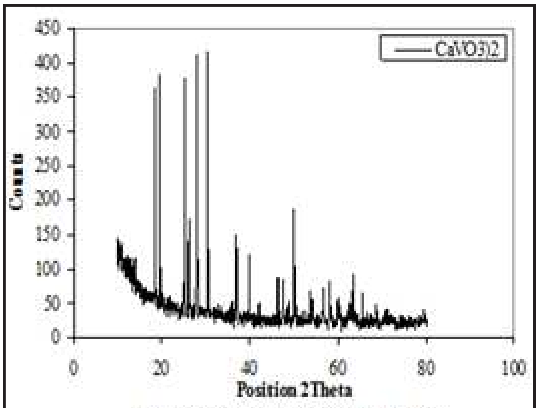

Fig 2.5 XRD pattern of $Ca(VO_3)_2$ phosphors

Figure A

Result

1. **Fig.1** shows that the time dependence of the ML intensity of $Ca(VO_3)_2$ having different concentration of Tb at dose level of 1.4 kGy. Only single peak is observed and optimum ML intensity is obtained for Tb (0.05 mol%) concentration.
2. **Fig.2** shows that the dependence of total ML intensity of $Ca(VO_3)_2$: Tb (0.05 mol%) samples for different gamma doses. Initially the intensity increases with increasing gamma doses and seems to saturate above 1.4 kGy.
3. **Fig.3** shows the ML spectra of $Ca(VO_3)_2$: Tb (0.05 mol%) samples. It is seen that the peak intensity in ML spectra around 450 nm.
4. **Fig.4** shows the emission spectra of $Ca(VO_3)_2$:Tb(0.05mol%) phosphors. Two peaks around 490 nm and 540 nm are observed when the phosphor is excited by 383 nm.

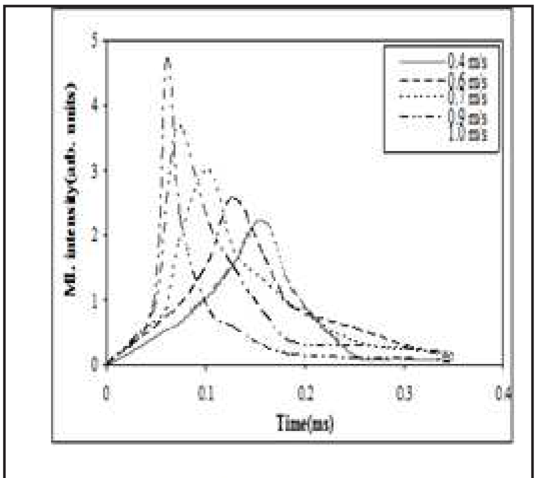

Fig. 1 Time dependence of ML intensity of $Ca(VO_3)_2$:Tb(0.05mol%) phosphors for different impact velocities (γ-dose 1.395 kGy, mass of the piston 0.4 kg)

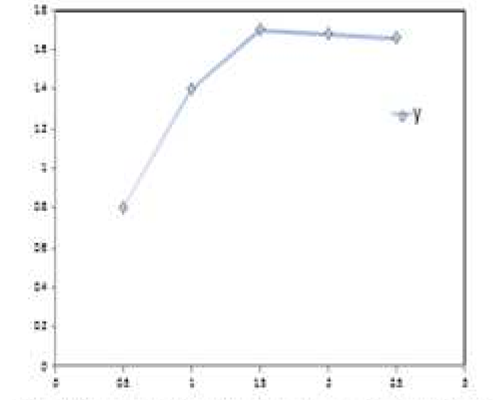

Fig. 2 Dependence of total ML intensity on γ-dose in Tb doped $Ca(VO_3)_2$ based phosphors (Impact velocity 0.98 ms^{-1}, mass of piston 0.4 kg)

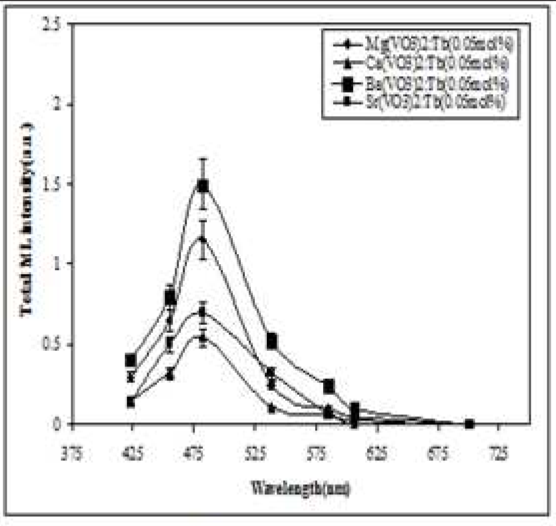

Fig. 3 ML spectra of Tb(0.05mol%) doped vanadate based phosphors

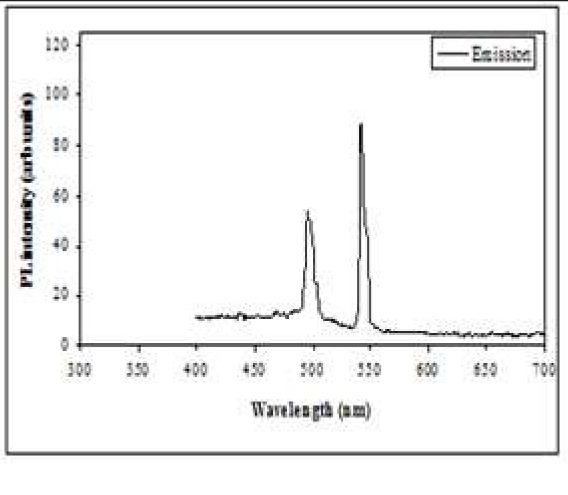

Fig. 4 PL Emission spectra of $Ca(VO_3)_2$:Tb(0.05mol%) phosphors(λ_{ex} = 383 nm)

Discussion- Mechanoluminescence and photoluminescence are most sensitive method for studying radiation induced

effects in luminescent materials. Non-irradiated undoped and doped $Ca(VO_3)_2$ samples do not show ML. The occurrence of ML in these materials and enhancement of MLwith gamma irradiation show the involvement of radiation induced defect centers in ML excitation process. The presence of impurities enhances the probability of formation of defect centers. In PL emisssion two peaks around 490 nm and 540 nm are observed when the phosphor is excited by 383 nm. There are many reports in the literature for a spectral difference between the ML spectrum and PL spectrum of the same compound. Numerous reasons have been suggested for this difference including pressure induced changes to Franck-Condon factors during the life time of the ML emission; self absorption of the ML emission and fracture induced symmetry changes perturbing the local field of the ML emitting species.Tb^{3+} emission peaks are found at 470-570 nm which are assigned to $^5D_4 \rightarrow {}^7F_i$ (j = 6, 5, 4, 3, 2, 1) transitions. Some emissions from $^5D_3 \rightarrow {}^7F_j$ (j = 5, 4, 3, 2, 1, 0) are also found from 400 to 485 nm (Menon et al, 2003). The $^5D_4 \rightarrow {}^7F_5$ line at approximately 550 nm is the strongest in nearly all host crystals. The reason is that this transition has largest probability for both the electric dipole and magnetic dipole induced transition. In present investigation two peaks around a band 473-563 nm have been observed in the Tb doped divalent metal metavanadate phosphors which are clearly due to $^5D_4 \rightarrow {}^7F_6$ and $^5D_4 \rightarrow {}^7F_5$ transitionsof Tb^{3+} ions. Peak around 556 nm is greater than the 485 nm peak.

Conclusion - ML and PL are although different excitation process but similar states are responsible for both the ML and PL emission in Tb doped calcium metavanadate. It gives the characteristic emission of Tb^{3+} and also shows the incorporation of Tb in host matrix.

Acknowledgements - I am thankful to VNIT Nagpur for providing lab facilities, IIT Roorkee and Govt. E.R.R. P. G. Sc. College, Bilaspur(c.g.).

References :-

1. C.N. Xu, T. Watanabe, M. Akiyama, X.G. Zheng, Appl. Phys. Lett. 74 (1999) 2414.
2. C.N. Xu, T. Wantanabe, M. Akiyama, X.G. Zheng, Appl. Phys. Lett. 74 (1999) 1236.
3. C.N. Xu, T. Wantanabe, M. Akiyama, X.G. Zheng, Mater. Res. Bull. 34 (1999) 1491.
4. TAKEDA N., SUGIYAMA J., MINAMI N.and HIEDA S. (1997): Molecular crystals and Liquid Crystals294-295, 369-72.
5. NEERAJA R.G., RAVINDRANATH K. and RAO V.J. (2004): Pro. of international conference on luminescence and its applications 138-141
6. T. Taira, A. Mukai, Y. Nozawa and T. Kobanyashi : Optics letters, 16, 1995 (1991).
7. T. Hayashi, S. Hanihara and N. Yamaguchi, NEC Tech. J. (Japan) 44, 75 (1991).
8. H. Saito, S. Chadda, R. S. F. Chang and N. Djeu, Optics letters 17, 189 (1992).
9. M. Yu. Nikalskii, A. M. Prokhorov, T. A. Shcherbakov, N. V. Kravstov, O. F. Nanli and V. V. Firov, Quantum Electronics (USA) 23, 999 (1993).
10. J. E. Bernard, V. D. Lokhnygn and A. J. Alock, Optics letters 18, 2020 (1993).
11. S.N. MENON, S.S. SANAYE, T.K. GUNDURAO, R. KUMAR, B.S. DHABEKAR and B.C. BHATT (2003): Proceeding of National conference on Luminescence and its Applications, 193-198.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Chemical Composition of Immune Stimulator Compound Acemannan Polysaccharides and Gel of *Aloe Ferox Species* Under Stresses of Soil pH and Irrigation

Jyoti Nema* **S. K. Shrivastava****

*Assistant Professor, Govt. Bhagat Singh PG College Jaora, Ratlam (M.P.) INDIA
** Professor (Applied Chemistry) Govt. Engineering College, Jabalpur (M.P.) INDIA

Abstract - *Aloe* leaf gel is exhibiting immune stimulating action. From the various studies found that acemannan Polysaccharide is considered a major and main active ingredient in *Aloe* gel is responsible for immune modulatory properties. Acemannan Polysaccharide stands out as a significant component in the fraction of major components, Therefore, knowledge of its chemical composition and physical properties are quite necessary for preparation of medicinal drugs. *Aloe ferox* is among the tallest of the more than 400 aloe species. Compared to the more widely known *Aloe Vera*, *Aloe ferox* produces 20 times more bitter sap and has higher nutrient concentrations. But concentration of polysaccharide, composition of gel, yield and growth attributes of *Aloe* plants are in considerable amount varied with species, climate, and exposure to sunlight, harvesting method and soil environment Thus in this investigation, studied the production of gel aloin, and acemannan polysaccharides and its physicochemical properties under various soil pH along with water stress level in *Aloe ferox* plant species. The results found in this studied ,chemical composition of gel and concentration of immune active compound were observed higher into higher soil pH and moderate moisture stress. The high soil pH 7.5 along with moderate moisture condition (crop coefficient k_c=0.3 and 0.4) of the soil were favorable and had significant affect for vegetative growth, Nutritional value and concentration of medicinal active content (Acemannan polysaccharides). The various soil environments (pH and moisture supplements) during cultivation of *Aloe* species appreciably affected the quality (physic-chemical and medicinal properties) of main active compound acemannan.
Keywords - *Aloe ferox*, Acemannan, Aloin, Aloe gel composition, Soil pH and Desiccation stress.

Introduction - *Aloe ferox* is members of the Liliaceae family among the tallest of the more than 400 aloe species and is native to southeastern and western regions of South Africa,. Compared to the more widely known *Aloe Vera*, *Aloe ferox* produces 20 times more bitter sap and has higher nutrient concentrations. Two distinct parts of the *Aloe ferox* plant are used medicinally. Firstly the aloe exudates (bitter sap) and secondly the mucilaginous gel from the remainder of the leaf. The *Aloe ferox* bitter is best known for its use as a laxative. However, in addition to the purgative effect the anthraquinone (bitter) substance is also an antioxidant, antiviral and effective for cancer prevention.

Numerous scientific studies on aloe gel are demonstrating its analgesic, anti-inflammatory, wound healing, immune modulating and anti-tumor activities as well as antiviral, anti-bacterial, antifungal and antiviral properties. (Silva *et al* 2010). The *Aloe ferox* juice has been shown to lower cholesterol and triglycerides while demonstrating anti-diabetic activity. *Aloe ferox* medicinal properties can be attributed to the synergistic effect of the combined nutritional elements producing a more powerful effect than the individual components.

Over 130 biological active compounds of the *Aloe ferox* have so far been reported. With so many components, aloe can be described as a pharmacy. The *Aloe ferox* leaf contains substances such as amino acids, minerals, vitamins, polysaccharides, glycoproteins, anthraquinones, enzymes, lignin, chlorophyll, saponins, sterols and other plant chemicals with numerous medicinal activities. (Ramachandra, and Rao, 2008) Therefore *Aloe ferox species* is also commercially cultivated in India as medicinally herbal crop.

Concentration of polysaccharide (Acemannan), composition of gel, yield and growth attributes of *Aloe* plants are in considerable amount varied with species, climate, and exposure to sunlight, harvesting method and soil environment. Temperature, rainfall leaf age and salinity of soil affect the level of polysaccharide within a species (Beppu *et al*, 2004). Chemical compositions of gel are also varying from *Aloe vera* and *Aloe ferox* (Hamman, 2008.). Therefore, need to study the effect on composition and concentration of gel and polysaccharide under various soil stress

environment during cultivation practices. Thus in this investigation, studied the production of gel, Acemannan polysaccharides and its chemical composition under various soil pH along with desiccation level in *Aloe ferox* plant species.

Experimental Detail: Pot experiment was conducted in research Polly house. *Aloe ferox* sucker were planted in randomized block design in 16x32 cm plastic pot filled with sandy soil. Plants were treated of stress of soil pH along with desiccation during two years. Treatment was viz:

T_1= *Aloe ferox* + pH 6.0 + k_c0.2
T_2 = *Aloe ferox* + pH 6.0 + k_c0.3
T_3 = *Aloe ferox* + pH 6.0+ k_c0.4
T_4 = *Aloe ferox* + pH 6.0+ k_c0.5
T_5= *Aloe ferox* + pH 6.5+ k_c0.2
T_6 = *Aloe ferox* + pH 6.5+ k_c0.3
T_7 = *Aloe ferox* + pH 6.5+ k_c0.4
T_8 = *Aloe ferox* + pH 6.5+ k_c0.5
T_9 =*Aloe ferox* +pH 7.0+ k_c0.2
T_{10} = *Aloe ferox* + pH 7.0+ k_c0.3
T_{11} =*Aloe ferox* + pH 7.0+ k_c0.4
T_{12} = *Aloe ferox* + pH 7.0+ k_c0.5
T_{13} =*Aloe ferox* + pH 7.5+ k_c0.2
T_{14} = *Aloe ferox* + pH 7.5+ k_c0.3
T_{15} =*Aloe ferox* + pH 7.5+k_c0.4
T_{16} = *Aloe ferox* + pH 7.5+k_c0.5

During treatment soil desiccation were maintain up to given crop coefficient level (k_c) through irrigation of required water to the *Aloe ferox* plants and soil pH were maintain up to given stresses through addition of HCl/NaOH. Required irrigation for maintaining moisture level up to crop coefficient was calculated by using following equation given by Hellman, 2004).

$$\text{Requiredwater} = \frac{\text{Evapotranspiration (loss of water ml/cm}^2\text{/ day) X Crop coefficient } (\mathbf{k_c})}{\text{Soil water holding capacity.}}$$

After every six months morphological growth and yield data were observed and after each year letter biochemical (protein and carbohydrate) and mineral content were evaluated. After harvested, the *Aloe* leaves have two distinct parts to be used for commercial purposes: the *Aloe* bitter (Aloin) and the *Aloe* gel (Mebusela 1990). Quantitatively, Aloin in yellow bitter sap was determined by using a Shimadzu LC-10A reverse phase HPLC system equipped with Shodex C18 column and Shimadzu PDA detector (SPD-10A).

Aloe gel was prepared from *Aloe* leaf by 50 % IPA method according to McAnalley 1990. Chemical and biochemical composition of *Aloe* gel was analyzed in various treatments under stress of salinity and water content. *Aloe* gel solid % in gel was determined by freeze-drying technique (Waller *et al.,* 2004). Total carbohydrate % determined by phenol sulphuric acid method. Nitrogen content and Protein content (%) in gel is estimated by Kjeldhal method. Phosphorus content was determined by UV-spectrophotometer method. Potassium, calcium and sodium were estimated by Flame photometer. Other nutritionally mineral content viz: magnesium, iron copper and zinc were determined by atomic absorption spectrophotometer using diacid digestion in dry gel.

The qualitative and quantitative (%) estimation of acemannan was done by gas liquid chromatographic (GLC,) method (t'Hart *et al.,* 1989). Prior to step up into GLC technique, the polysaccharide acemannan was hydrolyzed into monosaccharide and derivatized to alditol acetate form Physical properties of Acemannan polysaccharides like density, solubility, viscosity and thermal stability were determined by various prescribed method of AOAC. (Gerardo Daniel Sierra-García, 2014)

Results & discussion: Table 1 represents the results of studied of *A.ferox* plants under different treatment of pH and moisture application. Yield attributes like Maximum gel (75.77%), *Aloe* gel solid (1.18%) and Acemannan polysaccharide (87.8%) were observed in T_{14} treatment. Both treatments (T14 and T15)were found significantly higher than other treatment application. Mebusela *et al.,* (1990) supported this study and also similar ranged of yield attributes of *A. ferox* plant species.

Chemical composition of gel liquid and dry gel solid were also found significantly varied with different application of pH and moisture supplements (Table 2). Protein (9.98%) observed maximum in T_{14} in gel liquid. *A. ferox* gel was found in higher range of protein from 3.98 to 9.98%. Femenia *et al.* (1990) also found higher range of chemical constituents for protein and sugar in *A. ferox* gel Phosphorous (0.155%), potassium (7.05%), Calcium (9.06%), zinc (0.96%), magnesium (2.72%) were recorded maximum in T_{15} treatment. Sodium (3.24%) and iron (0.56%) were recorded higher in T_{14} and copper were found rich (0.098%) in T_{12}. This finding was analogous to those reported by Rajasekaran *et al.,* 2005. Mineral contents in *Aloe* plants plays important roles for physiological metabolism, vegetative growth and better sustenance under stress conditions. Despite the plants are xerophytes and halophytic, the higher contents of minerals in tissues strengthen the tolerance capacity against abiotic and biotic stresses. regulation of transport and distribution of ions within leaves cells is an important feature regarding mechanism of tolerance in *Aloe* plants. The results also depicted high contents of K and Na in the gels. These elements with high K^+/Na^+ ratio are attributed to be responsible for maintaining steady state in rate of photosynthesis conductance in leaf stomata through better water use efficiency particularly under xerophytic conditions. Wyn Jones *et al.* (1979) also suggested higher concentration of K and Na for normal growth of plants.

Monosaccharide's, galactose (5.81%) and mannose (37.79%) were observed maximum in T15 while glucose (46.55%) was recorded better in T14 than other treatments in *Aloe* gel solid of *A.ferox* plant species. Moreira and Filho, (2008) also supported this ranged and composition of

monosaccharide.

Study revealed that *Aloe* is made up of a vast range of compounds which can be divided into two groups for convenience of study viz., minor composition and major composition. The group of major composition includes complex sugars in *Aloe* leaf gel exhibiting immune stimulating action (Gerardo Daniel Sierra-García2014). Acemannan stands out as a significant component in the fraction of major components.

From this study, acemannan is considered a major and main active ingredient in *Aloe* gel. (Supported by Gerardo Daniel Sierra-García, 2014) Therefore, knowledge of its chemical composition and physical properties are quite necessary for preparation of medicinal drugs.

Physical properties of acemannan like density, solubility, viscosity and thermal stability were quite essential during processing of making drugs. These properties were found greatly affected with different soil environment on physical and chemical properties of soil liable to control extraneously viz., soil pH and moisture status (Table 3).

Density of *A. ferox* was observed in the range of 0.63 to 1.03 gm/l respectively .Moisture supplement at k_c 0.3 *A. ferox* acemannan was relatively denser, the density ranging from 0.73 at k_c 0.5 to 0.97 gm/l at k_c 0.3, respectively. For the plant species lower soil pH (6.0) and moisture supplements (k_c 0.5) were significantly not suitable, as the acemannan under the soil conditions exhibited lower density compared to the control one. The variation in density of acemannan depends on the content of inorganic salt which co-precipitate with the acemannan and also rate of hydration. Higher the density of acemannan powder, more rapid will be the lyophilization and more ease in drugs formation.

Table 3 depicted viscosity of acemannan aqueous solution. Acemannan in *A. ferox* was more viscous ranging from 1.42 to 1.59 centistokes/sec Moisture sulpements was found 1.57 centistokes/sec at k_c 0.2 and 1.45 centistokes/ sec at k_c 0.5 in *A.ferox* acemannan. In this study it was found that viscosity of acemannan was significantly affected by soil environment (pH and moisture supplements treatment) during cultivation of plant species.

Solubility of acemannan signifies penetrating capacity of the component in a medium. Pharmaceutical industries use the medium as a suitable solvent. Acemannan by visual observation is a white to off white amorphous powder. The data on solubility of acemannan are presented in Table 3. Acemannan powder on dissolving in pure water produce a highly viscous solution. Solubility of acemannan was affected with various sources of availability and methods of preparation (Mc Analley, 1990a). From the above study, it was found that the solubility of acemannan primarily affected with plant species and secondly with soil treatments during cultivation. Solubility of Acemannan in water solvent for *A. ferox* varied from 28.41% to 33.73% at pH 6.0 and pH 7.5 treatment respectively.

Different solvents were found to have different solubility ratio to acemannan polysaccharide for the plant species. Acemannan was insoluble in common organic solvents such as acetone and propylene glycol, but completely soluble in inorganic solvent 0.9% NaCl. Solubility of *A. ferox* acemannan was reported 94.50%.in 0.9% NaCl, In propylene glycol solvent *A. ferox* acemannan was observed in the range of 0.06 to 0.13%. in acetone solubility of *acemannan* varied from 0.01 to 0.09%. Forgoing facts showed that acemannan polysaccharide was less soluble in organic solvents (propelene glycol and acetone) as compared to the water and inorganic solvent.

Thermo gravimetric analysis gives an idea in characteristic weight loss profile with variation of temperature. Effect of temperature on acemannan weight loss is presented in Table 3. Significant weight loss of acemannan was identified at temperature ranging from 200ºC to 600ºC. The acemannan fractionation was controlled by these two temperature extremities. At temperature 200 ºC was found 38.53% weight loss of acemannan compound in *A. ferox* species. At temperature 400 ºC observed acemannan was reduced to 43.16% weight to original weight in *A. ferox* species. Whereas, at temperature 600 ºC the weight loss of *this polysaccharides* was observed 72.46%., .Above 600 ºC plant species loosed their acemannan weigh more than 80% and form residue of ash approx 20 to 30% The results revealed that acemannan polysaccharide degraded rapidly. Results found that thermal stability of *A. ferox* acemannan was significantly affected however, the various treatments of soil pH and moisture supplements during cultivation of *Aloe* species appreciably affected the physical properties viz; density, solubility, viscosity and thermal stability of acemannan.

Conclusion: This study concluded that higher pH (7.5 and 7.0) and moderate moisture supplements (at crop coefficient k_c 0.3 and 0.4) were required better vegetative growth yield and chemical or mineral composition of liquid and dry *Aloe ferox* gel. Physico chemical properties of Immune modulatory main active compound (Acemannan) were also favorable and had significant at higher pH (7.5 and 7.0) and moderate moisture supplements Sheteawi *et al* (2001) were supported this studied

References :-

1. **Beppu H, Kawari K, Shimpo K, Chihara T, Tamai I C, Veda M and Kuzuya H. (2004).** Studies on the components of *Aloe arborescens* from Japan monthly variation and difference to part and position of the leaf. *Journal of Biochemical systematic and ecology,* **V-32,** P: 783-795.
2. **Femenia A, Emma S S, Susana S and Carmen R. (1999).** Compositional features of polysaccharides from *Aloe vera* (*Aloe bar bdensis* Millar) plant tissue. *Journal of carbohydrate polymers*, **V-39 (II),** P: 109-117.
3. **Gerardo Daniel Sierra-García (2014).** Acemannan, an Extracted Polysaccharide from Aloe vera: A Literature Review in *Natural product communications*

9(8):1217-21 · August 2014.

4. **Grover J K, Yadav S and Vats V. (2002).** Medicinal plants of India with anti-diabetic potential. *Journal of Ethnopharmacol*, **V-81** (1): 81-100.
5. **Hamman, J., (2008**.) Composition and applications of Aloe vera leaf gel. *Molecules* 13 (**8**),1599–1616.
6. **Hellman, Ed. (2004).** Irrigation scheduling of grapevines with evapotranspiration data. *(http:// winegrapes. tamu.edu.)*
7. **McAnalley, B.H.** (**1990).** Processes for preparation of *Aloe* products, products produced thereby and composition there of. *United States Patent,* 4,959,214.
8. **Mebusela W T, Stephen A M and Botha M C. (1990).** Carbohydrate polymers from *Aloe* ferox leaves. *Phytochemistry*. **V-29**: 3555-3558.
9. **Moreira, L.R.S. and Filho, E.X.F.** (**2008**). An overview of mannan structure and mannan-degrading enzyme systems. *Appl. Microbiol. Biotechnol.* ***79*****:** 165-178.
10. **Ramachandra, C.T., Rao, P.S**., (**2008**). Processing of Aloe vera leaf gel: a review. Am. J. *Agric. Biol. Sci.* 3 (2), 502–510.
11. **Rajasekaran, S., K. Sivagnannam and S. Subramanian. (2005).** Mineral content of *Aloe vera* leaf gel and their role on *Streptozotoein* induced diabetic rats. *Biol. Trace elements*, 107-111.
12. **t' Hart, L.A., Van den Berg A.J., Kuis L, van Dijk H. and Labadie R.P.** (1989). An anti-complementary polysaccharide with immunological adjuvant activity from the leaf parenchyma gel of *Aloe vera*. *Planta Med.* **55**(6): 509-12.
13. **Sheteawi S A, Twafik K M and El-Gawad Z A. (2001).** Water relations, transpiration rate, stomatal behaviour and leaf sap pH of *Aloe* vera and *Aloe* eru. *Egyptian journal of Biology*, V-3: 140-148.
14. **Silva, H., Sagardia, S., Seguel, O., Torres, C., Tapia, C., Franck, N. and Cardemil, L**.**(2010**): Effect of water availability on growth and water use efficiency for biomass and gel production in *Aloe Vera* (Aloe barbadensis M.) Industrial Crops and products, **31**(1): 20-27, (2010)
15. **Twafik K M, Sheteawi S A and El-Gawad Z A. (2001).** Growth and aloin production of *Aloe*vera and *Aloe* eru under different ecological conditions. *Egyptian journal of Biology*, **V-3**: 149-159.
16. **Waller T A, Pelley R P and Strickland F M. (2004).** Industrial processing and quality control of *Aloe barbadensis (Aloe vera)* gel. In: Reynolds (ed.) *Aloe*s: The genus *Aloe*. CRC Press, London. : 139-205.
17. **Wyn Jones, R.G., Brady, C.J. and Speirs, J. (1979).** Ionic and osmotic regulation in plants. In: Laidman DL, Wyn Jones RG, editors. Recent Advance in the Bio-chemistry of Cereals *London: Academic press,* 63-103.

Table 1. Growth and Yield parameter of *Aloe ferox* under soil pH along with desiccation stresses.

S.	Treatments	Gel (%)	Aloe gel soild (%)	Acemannan%	S.No	Treatments	Gel (%)	Aloe gel soild (%)	Acemannan %
1	T1	24.64	0.45	26.8	9	T9	37.36	0.68	40.3
2	T2	26.83	0.43	37.5	10	T10	60.84	1.02	65.0
3	T3	25.64	0.38	34.3	11	T11	65.44	0.88	58.9
4	T4	15.62	0.31	24.4	12	T12	40.16	0.66	38.9
5	T5	31.07	0.49	29.0	13	T13	38.36	0.75	52.8
6	T6	33.04	0.60	47.1	14	T14	75.77	1.18	87.8
7	T7	32.71	0.54	42.1	15	T15	68.87	0.92	79.7
8	T8	30.80	0.37	28.0	16	T16	41.49	0.79	55.7
	CD $_{(5\%)}$	**2.6788**	**0.0519**	**3.47**		**CD $_{(5\%)}$**	**2.6788**	**0.0519**	**3.47**

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Table 2: Biochemical and mineral content (% of dry gel) of *Aloe ferox* under soil pH along with desiccation stresses

S.	Treatments	(%) of liquid gel			% of dry gel										
		Carbohydrate	N	Protein	P	K	Na	Ca	Zn	Cu	Mg	Fe	Galactose	Mannose	Glucose
1	T1	33.27	0.73	4.54	0.003	4.12	1.93	6.72	0.33	0.014	1.34	0.12	3.25	29.10	31.73
2	T2	38.62	0.88	5.52	0.002	4.26	1.72	7.52	0.43	0.020	1.61	0.18	3.85	30.63	31.92
3	T3	31.42	0.86	5.38	0.002	3.82	1.10	7.20	0.38	0.017	1.50	0.22	3.64	29.33	31.58
4	T4	28.44	0.64	3.98	0.002	3.55	2.24	6.82	0.30	0.013	1.44	0.14	3.13	27.40	30.45
5	T5	43.23	1.03	6.44	0.003	4.42	2.30	7.63	0.44	0.022	1.67	0.20	4.12	31.35	34.31
6	T6	48.25	1.11	6.96	0.005	4.71	2.35	7.53	0.57	0.025	1.90	0.23	4.33	32.61	35.37
7	T7	44.38	1.21	7.58	0.008	4.86	2.42	7.65	0.52	0.029	1.76	0.27	4.15	32.55	34.69
8	T8	40.37	0.93	5.82	0.006	4.36	2.38	7.33	0.46	0.018	1.51	0.21	3.65	30.37	33.51
9	T9	63.36	1.26	7.88	0.009	5.28	2.62	8.47	0.73	0.023	2.14	0.29	4.37	34.44	40.61
10	T10	73.39	1.41	8.79	0.103	6.06	2.71	8.65	0.92	0.037	2.69	0.41	5.29	34.90	44.43
11	T11	69.60	1.46	9.17	0.105	5.78	2.78	8.66	0.85	0.042	2.52	0.46	5.65	35.93	41.16
12	T12	54.39	1.18	7.38	0.015	5.49	2.61	8.19	0.56	0.098	2.34	0.29	5.01	31.50	38.68
13	T13	68.32	1.30	8.15	0.107	6.68	3.12	8.52	0.74	0.036	2.11	0.35	4.65	32.82	39.83
14	T14	76.30	1.60	9.98	0.155	6.83	3.24	8.82	0.84	0.046	2.57	0.56	5.12	36.13	46.55
15	T15	71.57	1.51	9.42	0.135	7.05	3.15	9.06	0.96	0.050	2.72	0.52	5.81	37.79	43.76
16	T16	56.37	1.34	8.38	0.116	6.17	3.12	8.08	0.76	0.042	2.34	0.38	4.51	34.86	43.39
	$CD_{(5\%)}$	**0.3842**	**0.0201**	**0.1278**	---	**0.1136**	**0.1431**	**0.2779**	**0.0368**	**0.0482**	**0.1578**	**0.0234**	**0.2227**	**0.7812**	**0.8880**

TABLE 3: PHYSICO-CHEMICAL PROPERTIES OF ACEMANNAN IN *ALOE* SPECIES UNDER STRESS CONDITIONS OF SOIL REACTION (PH) AND SOIL MOISTURE (κ_C)

Treatment	**Solubility**				**Density (g/ml)**	**Viscosity (centistokes/ sec)**	**Thermal stability (TGA)**			
	Water	**0.9% NaCl**	**Acetone**	**Propylene glycol**			**200° C**	**400° C**	**600° C**	**>600° C (residue)**
pH 6.0	28.41	84.47	0.02	0.06	0.63	1.42	38.38	43.15	72.09	28.79
pH 6.5	29.56	90.43	0.07	0.10	0.68	1.43	38.44	**43.27**	**72.46**	29.22
pH 7.0	31.48	91.53	**0.09**	**0.13**	0.88	1.51	38.44	42.77	72.35	31.67
pH 7.5	**33.73**	**94.50**	0.08	0.11	**1.03**	**1.59**	38.32	42.36	71.65	**32.93**
k_c 0.2	29.77	90.50	0.08	0.09	0.92	1.57	38.08	42.48	72.23	30.63
k_c 0.3	30.19	93.37	0.01	0.07	0.97	1.54	38.38	42.66	71.76	32.79
k_c 0.4	30.07	88.40	0.07	0.09	0.86	1.47	**38.53**	43.06	72.26	32.45
k_c 0.5	29.75	87.63	0.04	0.08	0.73	1.45	38.43	42.95	71.84	30.66
$CD_{5\%}$ Plant	**0.12**	**0.59**	**0.005**	**0.005**	**0.010**	**0.010**	**0.027**	**0.029**	**0.029**	**0.028**
$CD_{5\%}$ Treatment	**0.25**	**1.25**	**0.010**	**0.011**	**0.022**	**0.021**	**0.056**	**0.062**	**0.062**	**0.060**
$CD_{5\%}$ Plant x Treatment	**0.36**	**1.77**	**0.014**	**0.016**	**0.031**	**0.029**	**0.080**	**0.087**	**0.087**	**0.085**
SE_m ±	0.12522	0.61511	0.00510	0.00510	0.01111	0.01000	0.02811	0.03000	0.03000	0.03000

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Impact of COVID-19 on Small Scale Entrepreneurs in India : An Overview

Dr. Renu Markande* Dr. Anthonima Kenneth Robin**

*Asst. Professor (Economics) St. Aloysius College (Autonomous), Jabalpur (M.P.) INDIA
** Asst. Professor (Economics) St. Aloysius College (Autonomous), Jabalpur (M.P.) INDIA

Abstract - Trades have faced various challenges during the global pandemic, and their response to this disruption has impacted their resilience as well as their chances of recovering from this crisis. Small and medium sized enterprises (SMEs) are changing their business models to adapt to this changing environment. Service-based industries have been particularly badly hit.This research examines how SMEs operating in service industries are coping with the disruptions caused by the COVID-19 pandemic. The objective of this research is to gain insight into which trade of economic growth rate of SMES in India. An attempt has been made to explore these insights about SMEs according to their impact on their cost of production.The review data has been analyzed for the smart phone manufacturing industries as part of the small and medium scale industries. And in this letter, we will throw light on the government policies for small scale industries, what provisions have been made for them in India.
Keywords- SMEs, COVID-19, Small Scale Industries, Government Policies.

Introduction - The coronavirus pandemic is causing large-scale loss of life and severe human suffering globally. It is the largest public health crisis in living memory, which has also generated a major economic crisis, with a halt in production in affected countries, a collapse in consumption and confidence, of small scale business in M.P. There are several ways the coronavirus pandemic affects the economy, especially SMEs, on both the supply and demand sides. On the supply side, companies experience a reduction in the supply of labour, as workers are unwell or need to look after children or other dependents while schools are closed and movements of people are restricted. Measures to contain the disease by lockdowns and quarantines lead to further and more severe drops in capacity utilisation. Furthermore, supply chains are interrupted leading to shortages of parts and intermediate goods. On the demand side, a dramatic and sudden loss of demand and revenue for SMEs severely affects their ability to function, and/or causes severe liquidity shortages. Furthermore, consumers experience loss of income, fear of contagion and heightened uncertainty, which in turn reduces spending and consumption. These effects are compounded because workers are laid off and firms are not able to pay salaries. Some sectors, such as tourism and transportation, are particularly affected, also contributing to reduced business and consumer confidence. More generally, SMEs are likely to be more vulnerable to 'social distancing' than other companies.

The impact of the virus could have potential spill-overs into financial markets, with further reduced confidence and a reduction of credit.These various impacts are affecting both larger and smaller firms. However, the effect on SMEs is especially severe, particularly because of higher levels of vulnerability and lower resilience related to their size.In all OECD countries, SMEs account for the vast majority of companies, value added and employment. However, in some regions and sectors that have particularly felt the impacts of the situation, the prevalence of SMEs is even higher. For example, in some of the most affected regions, like Northern Italy, the significance of SMEs within the economic structure is even more critically important. Likewise, SMEs are strongly represented in sectors such as tourism and transportation, which are significantly affected by the virus and the measures taken to contain it, as well as fashion and food where short delivery times are of essence.

SMEs often have a more limited number of suppliers. In some cases, this may shelter them from the shock. At the beginning of the pandemic outbreak in China, this appeared to be the case with German SMEs operating more in regional supply chains and therefore less affected by developments in Asia. In other cases, SMEs may rely on suppliers from countries and regions with more COVID-19 cases, increasing their vulnerability. Similarly, obstacles in transportation by sea, road or air affect these SMEs. Some SMEs are particularly vulnerable to the disruption of business networks and supply chains, with connections with larger operators (e.g. MNEs) and the outsourcing of many business services critical to their performance. Over the longer term, it may be difficult for many SMEs to re-build connections

with former networks, once supply chains are disrupted and former partners have set up new alliances and business contracts. Businesses, including SMEs, will bear the brunt of a reduction in global demand for their products and services. This impact may particularly be felt in specific sectors such as tourism, but also amongst those SMEs catering for local markets where containment measures have been introduced.

Objectives :

1. To find out the conditions of Trade of Small Scale Industries.
2. To analyses the impact of COVID-19 on the Small Scale Industries.
3. To discuss Governmental policies for Small Scale Industries.

Even before the Covid-19 crisis, India had been experiencing slower economic growth and rising unemployment – problems that were dramatically worsened by the pandemic and the ensuing lockdown. The number of workers vulnerable to the lockdown could reach 364 million or more, including those in casual work, self-employment and unprotected regular jobs (lacking social protection coverage). These workers could face cuts in working hours, layoffs, furloughs and reductions in incomes, and for some, this could continue beyond the lockdown. Building on the stimulus packages and other policy responses, economic recovery will require a strategy that restores jobs and supports incomes of both enterprises and workers – re-establishing supply lines and building back demand, while protecting the health, rights and incomes of workers and their families, especially for migrant workers and those in the informal economy. Prior to the COVID-19 crisis, the Indian economy had entered a period of slower growth **(Table 1).**

According to the IMF, over the period 2015-2019 growth fell from 8.0 to 4.0 per cent.2 By 2018, the unemployment rate exceeded 6 per cent, while from 2012 to 2018, the youth unemployment rate more than doubled from 10 to 23 per cent. 3 India faces longer-term labour market challenge, including slow and uncertain structural transformation. In 2017-8, 85 per cent of workers were in the informal sector and a further 5 per cent were employed in the formal sector but under informal conditions in that they lacked social protection or other employment-related benefits. There are also many gender disparities: women are less likely than men to participate in the labour force and young women have a higher unemployment rate than young men.

Table (see in next page)

SMEs may have less resilience and flexibility in dealing with the **costs** these shocks entail. Costs for prevention as well as requested changes in work processes, such as the shift to teleworking, may be relatively higher for SMEs given their smaller size, but also, in many instances, the low level of digitalization and difficulties in accessing and adopting technologies. If production is reduced in response to the developments, the costs of underutilizedlabour and capital weigh greater on SMEs than larger firms. Furthermore, SMEs may find it harder to obtain information not only on measures to halt the spread of the virus, but also on possible business strategies to lighten the shock, and government initiatives available to provide support.

Small and medium enterprises (SMEs) are making their presence felt in the electronics market as the mobile manufacturing segment sets a scorching pace of growth. In fiscal 2018, the electronics sector is estimated to have seen its revenue jump 21 per cent year-on-year to Rs 3.86 trillion.That growth rode on a 45 per cent-plus spurt in the mobile phone manufacturing segment, which constituted about 34 per cent of the total market. SMEs accounted for nearly a third of the electronics sector revenue pie, with varied share in different segments.

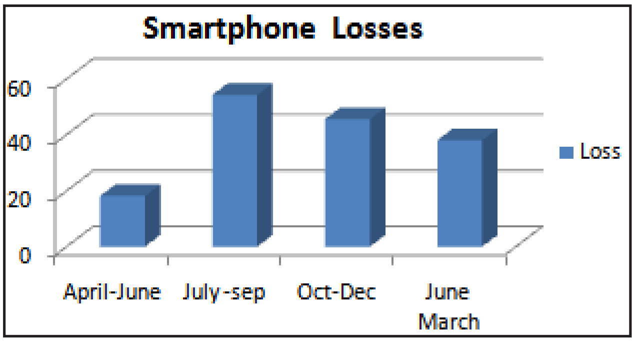

The IDC data for the January-March 2021 period shows a decline of 14 per cent in smartphone shipments versus the December quarter. On a year-on-year basis, however, the growth is 18 per cent. The June quarter will be difficult, more so because sentiment is down. The second COVID wave has increased very quickly, affecting shopping sentiment. Once the lockdown curbs are lifted.Navkendar Singh, research director at IDC India, said, "The recovery in calendar year 2021 might not be as smooth as expected earlier, with uncertainty around the lasting impact of the second wave and a possible third wave in the next few months." Singh said he saw single-digit year-on-year growth for the smartphone market in 2021, a markdown from the earlier expectations of double-digit growth for the year. He also warned of reduced discretionary spending, supply chain constraints, and anticipated price hikes in components in the quarters ahead. Consumers at the upper end of the smartphone market were more inclined to buy phones versus those at the mass end. In the March quarter, for instance, shipment of phones priced above Rs 37,000 grew by a whopping 143 per cent versus last year, while shipment of phones priced under Rs 2,000 declined 8 per cent.

Policies and Schemes for Promotion of MSME Implemented By State Governments

1. Several countries have introduced measures related to working time shortening, temporary lay-off and sick leave, some targeted directly at SMEs. Similarly, governments provide wage and income support for employees temporarily laid off, or for companies to safeguard

employment. In many cases, countries have introduced measures specifically focused on the self-employed.

2. In order to ease liquidity constraints, many countries have introduced measures towards the deferral of tax, social security payments, debt payments and rent and utility payments. In some cases, tax relief or a moratorium on debt repayments have been implemented. Also, some countries are taking measures regarding procedures for public procurement and late payments.
3. Several countries have introduced, extended or simplified the provision of loan guarantees, to enable commercial banks to expand lending to SMEs.
4. In some cases, countries have stepped up direct lending to SMEs through public institutions.
5. Several countries are providing grants and subsidies to SMEs and other companies to bridge the drop in revenues.
6. Countries increasingly use non-banking financial support intermediaries in their policy support mix.
7. Increasingly, countries are putting in place structural policies to help SMEs adopt new working methods and (digital) technologies and to find new markets and sales channels to continue operations under the prevailing containment measures. These policies aim to address urgent short-term challenges, such as the introduction of teleworking, but also contribute to strengthening the resilience of SMEs in a more structural way and support their further growth.
8. Some countries have introduced specific schemes to monitor the impact of the crisis on SMEs and enhance the governance of SME related policy responses.
9. Suspension/deferment of Sales Tax.

Conclusion - Our assessment is that Indian economy may have slow growing trade this calendar year 2020 in most realistic scenario and a negative growth. The manufacturing sector may decline their production and consumer demand also. In this time the manufacturing sector is going from best case to worst case scenario, respectively. In manufacturing, some of the most affected industries are likely to be Mobile phone which we discuss in this research paper. Government is trying to make some policies to improve this situation but if it may be possible when it is not in paper.

References :-

1. **Akpan, I.J., Soopramanien, D., Kwak, D.-H**. Cutting-edge technologies for small business and innovation in the era of COVID-19 global health pandemic. J. Small Bus. Entrep. 2020, 1–11. [CrossRef]
2. **Amankwah-Amoah, J., Khan, Z., Wood,** G. COVID-19 and business failures: The paradoxes of experience, scale, and scope for theory and practice. Eur. Manag. J. 2020. [CrossRef]
3. **Bretas, V.P.G.Alon,** I. The impact of COVID-19 on franchising in emerging markets: An example from Brazil Glob. Bus. Organ. Excell. 2020, 39, 1–11. [Cross Ref]
4. **Islam, D.M.Z., Khalid, N., Rayeva, E., Ahmed, U.** COVID-19 and Financial Performance of SMEs: 643 Examining the Nexus of Entrepreneurial Self-Efficacy, Entrepreneurial Resilience and Innovative Work 644 Behavior. Rev. Argent. Clín. Psicol. 2020, 29, 587–593. 11. Humphries, J.E.; Neilson, C.; Ul
5. **Kuckertz, A., Brändle, L., Gaudig, A., Hinderer, S., Reyes, C.A.M., Prochotta, A., Steinbrink, K.M., Berger, E.S.** Startups in times of crisis—A rapid response to the COVID-19 pandemic. J. Bus. Ventur. Insights 2020, 13, e00169. [CrossRef]
6. **Maritz, A., Perényi, Á., De Waal, G.A.; Buck, C.** Entrepreneurship as the Unsung Hero during the Current COVID-19 Economic Crisis: Australian Perspectives. Sustainability 2020, 12, 4612. [Cross Ref]
7. **Ratten, V.** Coronavirus and international business: An entrepreneurial ecosystem perspective. Thunderbird Int. Bus. Rev. 2020, 62, 629–634. [CrossRef]
8. **Reeves, M., Haanes, K., Sinha, J.** Your Strategy Needs a Strategy—How to Choose and Execute the Right Approach; Harvard Business Review Press: Boston, MA, USA, 2015; ISBN 978-1-62527-586-8.
9. **Sigala, M.** Tourism and COVID-19: Impacts and implications for advancing and resetting industry and research. J. Bus. Res. 2020, 117, 312–321. [CrossRef] [PubMed]
10. **Winston, A.** Is the COVID-19 Outbreak a Black Swan or the New Normal? Available online: https://sloanre view.mit.edu/article/is-the-covid-19-outbreak-a-black-swan-or-the-new-normal/(accessed on 16 December 2020).

Slow Trading in Economics Growth

Real GDP growth annual change%	2015	2016	2017	2018	2019	2020
IMF	8.0	8.3	7.0	7.0	6.1	4.2
Ministry of Statistics and Programme Implementation	7.4	8.o	8.3*	7.0#	6.1@	5.0+

IMF: * - April 2020 estimate; MOSPI: * - Third Revised Estimates; # - Second Revised Estimates; @ - First Revised Estimates; + - Second Advanced Estimates Source: IMF World Economic Outlook April 2020, www.imf.org/external/datamapper/NGDP_RPCH@WEO/OEMDC7IND, Government of India, Ministry of Statistics and Programme Implementation, http://www.mospi.gov.in .

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Impact of Computer Technology Usages on Academic Performance in Higher Education

Dr. Sheetal Chhabra* Dr. Vaniki Joshi**

*Assistant Professor, Lal Bahadur Shastri Institute of Technology and Management, Indore (M.P.) INDIA
** Associate Dean, Jawaharlal Nehru University, New Delhi, INDIA

Abstract - Computer technology has changed the way of living. Today computer technologies are playing very important role in every one's life and in every faces of life. Computer technology has transformed higher education system. Computer technology has made teaching and learning easy and more enjoyable. Students are adopting video lectures and learning materials with the use of Internet very conveniently. Computer technology with Internet creating learning very efficient regardless of distance. Study attempts to analyse the relationship between computer technology usages with academic performance. It also examines whether computer technology usage factors significantly predict students' academic performance. Correlation and Stepwise Regression analysis were applied to test the hypothesis of the study. Study results found positive correlation between computer technology usage factors viz Computer usage readiness, work enhancement, computer resistance, learning enhancement with academic performance. Results also reflects that computer usage readiness, computer resistance and work enhancement predict students' academic performance.
Keywords- Computer technology, Usages, Higher Education, Achievement, Impact of Technology, Teaching & Learning.

Introduction - Computer technology usages is rising among the students of higher education (Bragdon and Dowler. 2016 Rideout et al., 2010). Higher education institutions are spending millions of dollars for implementing computer technology. Computer technology enhances learning in higher education (Mc Cabe and Meuter, 2011).The focus of this study is to investigate impact of computer technology on academic performance. This study shed light on the way technology is being used in higher education of India. Technological developments lead to change in work and changes in the way of the organization work (Anderson and Weert, 2002).

The student academic performance refers to enhancement of the students' current state of knowledge and skills (Basri et al., 2018). Computer technology may be an asset to instruction since it has proven to valuable innovative tool in higher education. Computer technology revolutionized the evaluation system of higher education. It saves time and remove duplicity of data. The student can get immediate feedback and interactive sessions to improve his performance.

Computer technologies could assist with the educational process (Brown, 2012; Dermentzi et al., 2016; Hung & Yuen, 2010; Lim et al., 2015; Tahani et al., 2020). Younger individuals have been reported to show higher rates of innovation usage than their older counterparts (Arts et al., 2011; Bartels & Reinders, 2011; Im et al., 2003; Tahani et al., 2020). In the past students have become very comfortable to learning through transmissive modes. The growing use of computer technology in higher education change the teaching and learning process.

Review Of Literature

Students use computers as information sources and cognitive tools. for real-time communication; screen sharing, whiteboards, and digital pens for presentations and demonstrations; polls and quizzes for gauging comprehension or eliciting feedback; and breakout rooms for small group work (Bower, 2011; Hudson et al.,2012; Martin et. al., 2012; McBrien, Jones, & Cheng, 2009; Schindler et al., 2017).59 universities and 2965 colleges listed by UGC are enrolling 19.29 lakh students in the year 2018-19 (UGC Report, 2018-19).

Computer technologies allowing the learner to be more active in their construction of mental representations (Lowerison et. al., 2004). Computer technology encourages interaction and cooperation among students, teachers regardless of distance. It makes classroom more interactive and interesting (Raja and Nagasubramani, 2018).

The growing use of Internet and computer technologies as innovative and valuable tool of day-to-day life and expansion in recent years force future developments and computer technology will grow more (Oliver, 2002). Technology to achieve important developmental goals, today's college students expect that technology will be central in their higher education (Bragdon& Dowler, 2016). Computer applications have the potential to offer valuable

services to collegelevel instruction. Computer can do some things better than other media. It has to be understood that visual explanation of concepts makes learning fun and enjoyable for students. They're able to participate more in the classroom and even teachers get a chance to make their classes more interactive and interesting.

Research Questions :

1. Is there a significant relationship between computer technology usage factors in higher education with students' academic performance?
2. Is higher education adopting computer technologyfor students' academic performance?
3. Do computer technology usage factors act as significant predictors of students' academic performance?

Based on Literature review and research questions following hypothesis were developed:

H1:Computer usage readiness, work enhancement, computer resistance, learning enhancement are positively related with performance.

H2: Computer usage readiness, work enhancement, computer resistance, learning enhancement are significant predictors of performance.

Method - The present study was design to understand the perceptions of the students regarding computer technology usages and its impact on students' academic performance specifically in higher education institutions of Madhya Pradesh. The study was an attempt to identify significant factors of computer technology that will predict performance of students in different aspects.

Sample - The initial sample for this study consisted of 200 students. 40 survey rejected due to response error. The sample of 160 students was finalized. Government University, Private University, Government funded institution and Self-finance institution Madhya Pradesh were chosen for the sample.

Questionnaire Construction - The survey was designed to examine what, if any, impact the usages of computer technology has on students' academic performance. Factors related to computer technology helped to create an initial pool of items. Scales on selected factors viz computer usage readiness, work enhancement, computer resistance, learning enhancement and performance was developed with the help of literature review. The final survey consisted of 37 items for the student survey.

Results and Discussion - The reliability of the scales vizcomputer usage readiness, work enhancement, computer resistance, learning enhancement and performance developed for the study were tested with Cronbach alpha. The alpha values in Table 1 represent that all the developed scales are reliable and can be used for further analysis.

First hypothesis of the study argues that Computer usage readiness, work enhancement, computer resistance, learning enhancement are positively related with performance. Pearson correlation was applied on data collected for the study. The result in Table 2 explains that there is significant positive relationship between Computer usage readiness, work enhancement, computer resistance, learning enhancement are positively related and performance. Thus, alternate hypothesis 1 is accepted and null hypothesis is rejected.

Hypothesis 2 examines the predictive efficiency of Computer usage readiness, work enhancement, computer resistance, learning enhancementin predicting performance. Stepwise regression analysis was applied to access the efficiency of Computer usage readiness, work enhancement, computer resistance, learning enhancement in explaining performance. As per result of Table 3Computer usage readiness, work enhancement and computer resistance significantly predict performance. While, learning enhancement does not predicts performance. Results show that computer usage readiness contributes 50.1% of the variance in performance whereas computer resistance contributes 9.6% variance and work enhancement contributes 3.3% in performance. Thus, alternate hypothesis 2 is partially accepted.

Table 1:Scale Reliabilities

Table 1 (A) Computer Usage readinessReliability Statistics

Cronbach's Alpha	Cronbach's Alpha Based on Standardized Items	N of Items
.874	.875	9

Table 1 (B) Work Enhancement Reliability Statistics

Cronbach's Alpha	Cronbach's Alpha Based on Standardized Items	N of Items
.865	.867	7

Table 1 (C) Resistance to Computer Reliability Statistics

Cronbach's Alpha	Cronbach's Alpha Based on Standardized Items	N of Items
.762	.764	6

Table 1 (D) Learning Enhancement Reliability Statistics

Cronbach's Alpha	Cronbach's Alpha Based on Standardized Items	N of Items
.849	.850	7

Table 1 (E) Performance Reliability Statistics

Cronbach's Alpha	Cronbach's Alpha Based on Standardized Items	N of Items
.787	.787	8

Table 2 (see in last page)

Table 3 (see in last page)

Motivating factors predicts performance partially.

The results of the study opines that the factors like computer readiness, work enhancement, computer resistant and learning enhancement act as motivating factors in generating performance. In the era of digitisation, computer technology usage is must for all the stakeholders of society and business. It plays a crucial role in education sector. Present study is an effort that access contribution of different motivating factors like Computer usage readiness, work enhancement, computer resistance and learning enhancement in performance.

Both the hypothesis of the study tries to examine the role of computer technology in improving the performance of the education sector. Different factors comprising computer technology usages are means to increase the efficiency in education and related sectors.

Figure 1: Proposed Model

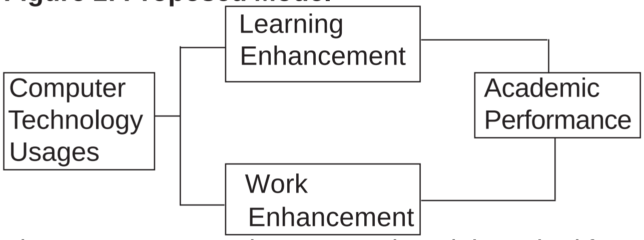

Figure 1 represents the proposed model resulted from the analysis of the study. It indicates that computer usage readiness, computer resistance and work enhancement acts as catalysis in generating desired academic performance through computer technology usages. Future studies might find more such factors that can improve academic performance with the help of effective computer technology usage.

The study is an effort to understand the role and importance of computer technology in improving performance in higher studies. Overall result explains that computer technology is the need of the hour and must be adopted in every aspect. It would serve as a pillar for future endeavours in higher education as well as in related sectors.

References :-

1. Anderson Jonathan and WeertTom van(2002). Information and communication technology in education. A curriculum for schools and programme of teacher development.
2. Arts, J. W. C., Frambach, R. T., &Bijmolt, T. H. A. (2011). Generalizations on consumer innovation adoption: A metaanalysis on drivers of intention and behavior. International Journal of Research in Marketing, 28(2), 134–144.https://doi.org/10.1016/j.ijresmar. 2010. 11.002.
3. Bartels, J., & Reinders, M. J. (2011). Consumer innovativeness and its correlates: A propositional inventory for future research. Journal of Business Research, 64(6), 601–609. https://doi. org/10.1016/ j.jbusres.2010.05.002.
4. Bower, M. (2011). Redesigning a web-conferencing environment to scaffold computing students' creative design processes. Journal of Educational Technology & Society, 14(1), 27–42.
5. Bragdon, Rodney, A., & Dowler, Kristina (2016). College Student Technology Use and Academic Performance. International Journal of Humanities and Social Science. 6 (1), 1-11.
6. Brown, S. A. (2012). Seeing Web 2.0 in context: A study of academic perceptions. Internet and Higher Education, 15(1), 50–57. doi.org/10.1016/j.iheduc.2011.04.003.
7. Dermentzi, E., Papagiannidis, S., Osorio Toro, C., &Yannopoulou, N. (2016). Academic engagement: Differences between intention to adopt social networking sites and other online technologies. Computers in Human Behavior, 61, 321–332. https://doi.org/10.1016/ j.chb.2016.03.019
8. Hudson, T. M., Knight, V., & Collins, B. C. (2012). Perceived effectiveness of web conferencing software in the digital environment to deliver a graduate course in applied behavior analysis. Rural Special Education Quarterly, 31(2), 27–39.
9. Hung, H. T., & Yuen, S. C. Y. (2010). Educational use of social networking technology in higher education. Teaching in Higher Education, 15(6), 703–714. doi.org/ 10.1080/13562517.2010.507307.
10. Lim, N., Grönlund, Å., & Andersson, A. (2015). Cloud computing: The beliefs and perceptions of Swedish school principals. Computers and Education, 84, 90–100. doi. org/10.1016/j.compedu.2015.01.009.
11. LowerisonGretchen, SclaterJennifer, Schmid Richard F., AbramiPhilip C. (2004). Student perceived effectiveness of computer technology use in post-secondary classrooms. doi:10.1016/j.compedu.2004.10.014
12. Martin, F., Parker, M. A., & Deale, D. F. (2012). Examining interactivity in synchronous virtual classrooms. International Review of Research in Open and Distance Learning, 13(3), 227–261.
13. McCabe, D. B., &Meuter, M. L. (2011). A student view of technology in the classroom: Does it enhance the seven principles of good practice in undergraduate education? Journal of Marketing Education, 33(2), 149-159.
14. Oliver, Ron (2002). The role of ICT in higher education for the 21st century: ICT as a change agent for education. https://www.researchgate.net/publication/ 228920282.
15. Rideout, V. J., Foehr, U. G., & Roberts, D. F. (2010). Generation M2: Media in the lives of 8- to 18-year-olds (Publication Number 8010).
16. Rodney A. Bragdon and Kristina Dowler (2016). College Student Technology Use and Academic Performance. International Journal of Humanities and Social Science. Vol. 6, No. 1; January 2016.
17. Schindler Laura A., Burkholder Gary J., Morad Osama A. and Marsh Craig (2017). Computer-based technology and student engagement: a critical review of the literature. Schindler et al. International Journal of Educational Technology in Higher Education (2017) 14:25 DOI 10.1186/s41239-017-00630
18. Tahani Z. Aldahdouh , Petri Nokelainen, and Vesa Korhonen (2020). Technology and Social Media Usage in Higher Education: The Influence ofIndividual Innovativeness. SAGE Open January-March 2020: 1–

20. DOI: 10.1177/2158244019899441.
19. UGC Report 2018-19. Downloaded from https://www.ugc.ac.in/pdfnews/3060779_UGC-ANNUAL-REPORT—ENGLISH—2018-19.pdf
20. Wael Sh. Basri ,Jehan A. Alandejani, and Feras M. Almadani (2018). ICT Adoption Impact on Students' Academic Performance: Evidence from Saudi Universities. Hindawi Education Research International Volume 2018, Article ID 1240197, 9 pages https://doi.org/10.1155/2018/1240197.

Table 2: Correlations

Correlations

		COMP_USAGE_READINESS	WORK_ENHANCEMENT	RESISTANCE_CT	LEARNING_ENHANCEMENT	PERFORMANCE
COMP_USAGE_READINESS	Pearson Correlation	1	.723**	.522**	.724**	.708**
	Sig. (2-tailed)		0.000	0.000	0.000	0.000
WORK_ENHANCEMENT	Pearson Correlation	.723**	1	.501**	.685**	.678**
	Sig. (2-tailed)	0.000		0.000	0.000	0.000
RESISTANCE_CT	Pearson Correlation	.522**	.501**	1	.576**	.635**
	Sig. (2-tailed)	0.000	0.000		0.000	0.000
LEARNING_ENHANCEMENT	Pearson Correlation	.724**	.685**	.576**	1	.694**
	Sig. (2-tailed)	0.000	0.000	0.000		0.000
PERFORMANCE	Pearson Correlation	.708**	.678**	.635**	.694**	1
	Sig. (2-tailed)	0.000	0.000	0.000	0.000	

**. Correlation is significant at the 0.01 level (2-tailed).

Table 3: Regression

Model Summary

Model	R	R Square	Adjusted R Square	Std. Error of the Estimate	Change Statistics				
					R Square Change	F Change	df1	df2	Sig. F Change
1	.708[a]	0.501	0.498	0.42212	0.501	158.474	1	158	0.000
2	.773[b]	0.597	0.592	0.38036	0.096	37.599	1	157	0.000
3	.793[c]	0.630	0.622	0.36593	0.032	13.621	1	156	0.000
4	.803[d]	0.644	0.635	0.35974	0.015	6.422	1	155	0.012

a. Predictors: (Constant), COMP_USAGE_READINESS
b. Predictors: (Constant), COMP_USAGE_READINESS, RESISTANCE_CT
c. Predictors: (Constant), COMP_USAGE_READINESS, RESISTANCE_CT, WORK_ENHANCEMENT
d. Predictors: (Constant), COMP_USAGE_READINESS, RESISTANCE_CT, WORK_ENHANCEMENT, LEARNING_ENHANCEMENT
e. Dependent Variable: PERFORMANCE

ANOVA

Model		Sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig.
1	Regression	28.237	1	28.237	158.474	.000[b]
	Residual	28.153	158	0.178		
	Total	56.390	159			
2	Regression	33.677	2	16.838	116.390	.000[c]
	Residual	22.713	157	0.145		
	Total	56.390	159			
3	Regression	35.501	3	11.834	88.371	.000[d]
	Residual	20.890	156	0.134		
	Total	56.390	159			
4	Regression	36.332	4	9.083	70.187	.000[e]
	Residual	20.059	155	0.129		
	Total	56.390	159			

a. Dependent Variable: PERFORMANCE

b. Predictors: (Constant), COMP_USAGE_READINESS
c. Predictors: (Constant), COMP_USAGE_READINESS, RESISTANCE_CT
d. Predictors: (Constant), COMP_USAGE_READINESS, RESISTANCE_CT, WORK_ENHANCEMENT
e. Predictors: (Constant), COMP_USAGE_READINESS, RESISTANCE_CT, WORK_ENHANCEMENT, LEARNING_ENHANCEMENT

APPENDIX 1

Correlations

		PERFORMANCE	COMP_USAGE_READINESS	WORK_ENHANCEMENT	RESISTANCE_CT	LEARNING_ENHANCEMENT
Pearson Correlation	PERFORMANCE	1.000	.708	.678	.635	.694
	COMP_USAGE_READINESS	.708	1.000	.723	.522	.724
	WORK_ENHANCEMENT	.678	.723	1.000	.501	.685
	RESISTANCE_CT	.635	.522	.501	1.000	.576
	LEARNING_ENHANCEMENT	.694	.724	.685	.576	1.000
Sig. (1-tailed)	PERFORMANCE	.	.000	.000	.000	.000
	COMP_USAGE_READINESS	.000	.	.000	.000	.000
	WORK_ENHANCEMENT	.000	.000	.	.000	.000
	RESISTANCE_CT	.000	.000	.000	.	.000
	LEARNING_ENHANCEMENT	.000	.000	.000	.000	.
N	PERFORMANCE	160	160	160	160	160
	COMP_USAGE_READINESS	160	160	160	160	160
	WORK_ENHANCEMENT	160	160	160	160	160
	RESISTANCE_CT	160	160	160	160	160
	LEARNING_ENHANCEMENT	160	160	160	160	160

ANOVA[a]

Model		Sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig.
1	Regression	36.332	4	9.083	70.187	.000[b]
	Residual	20.059	155	.129		
	Total	56.390	159			

a. Dependent Variable: PERFORMANCE
b. Predictors: (Constant), LEARNING_ENHANCEMENT, RESISTANCE_CT, WORK_ENHANCEMENT, COMP_USAGE_READINESS

Coefficients[a]

Model		Unstandardized Coefficients		Standardized Coefficients	t	Sig.	Correlations		
		B	Std. Error	Beta			Zero-order	Partial	Part
1	(Constant)	.668	.203		3.293	.001			
	COMP_USAGE_READINESS	.238	.069	.270	3.442	.001	.708	.266	.165
	WORK_ENHANCEMENT	.196	.069	.211	2.848	.005	.678	.223	.136
	RESISTANCE_CT	.224	.049	.275	4.591	.000	.635	.346	.220
	LEARNING_ENHANCEMENT	.167	.066	.195	2.534	.012	.694	.199	.121

a. Dependent Variable: PERFORMANCE

Residuals Statistics[a]

	Minimum	Maximum	Mean	Std. Deviation	N
Predicted Value	2.4117	4.7918	3.9672	.47802	160
Residual	-1.01205	.74912	.00000	.35518	160
Std. Predicted Value	-3.254	1.725	.000	1.000	160
Std. Residual	-2.813	2.082	.000	.987	160

a. Dependent Variable: PERFORMANCE

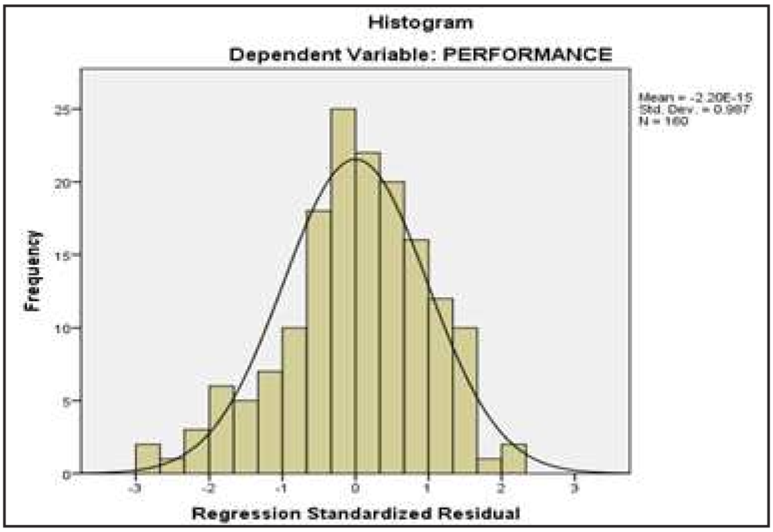
Histogram
Dependent Variable: PERFORMANCE
Mean = -2.20E-15
Std. Dev. = 0.987
N = 160
Frequency
Regression Standardized Residual

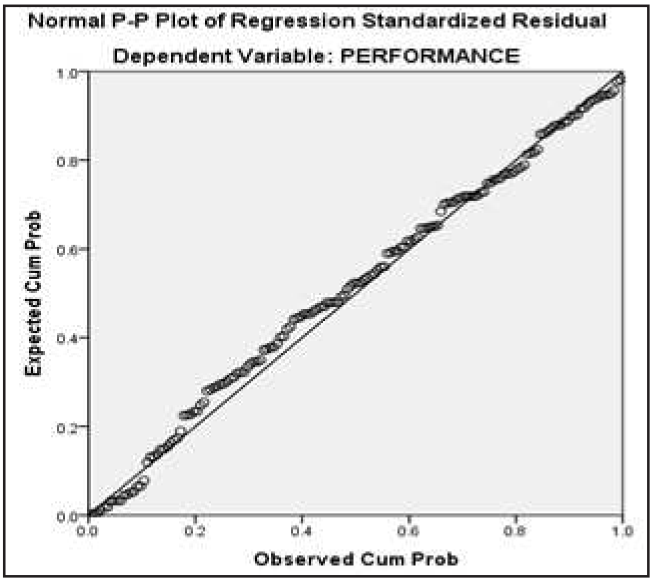
Normal P-P Plot of Regression Standardized Residual
Dependent Variable: PERFORMANCE
Expected Cum Prob
Observed Cum Prob

****

Interpreter of Maladies: A Manifesto of Diasporas Sensibility

Miss Varsha Tiwari*

*PhD Scholar, Madhyanchal University, Bhopal (M.P.) INDIA

Abstract - Indian Diaspora is not a new criterion for writing. It is a term used for migration literature composed by the people who migrated from their birth place to their work place either by economic or social reason or by some sort of political compromise. It may be a story of any Indian settled in the foreign. A large number of people migrated voluntarily from the India and they settled somewhere in England, America, Africa or any other part of the earth. People started to call it third world and Diaspora became the common term for general use. The diaspora-literature has its own pleasure and pain. It has a deep sigh for not to play in the yard of granny and a zeal to survive with the new people for whom they will always be 'foreigners'. The present paper is a small effort to seek the points of diasporas' sensibility in the short story *Interpreter of Maladies*.

Keywords - Maladies, memory, sorrow, alienation, culture, melancholy.

Introduction - The docile, sensitive and gentle Jhumpa, the brilliant daughter of bangle-breed and the tranquility lover, always concludes her stories with a happiness of emotional gain or deep sigh of emotional loss. Born on 11 July, 1967, basically an American author is well known for her short stories. Nilanjana Sudeshna " Jhumpa" with her debut collection got a series of fame because her voice was an American voice with an Asian nativity in Italian tone. *Interpreter of Maladies* (1999) is one of the nine short stories collected in the book with same title. It has Pulitzer Peize, Pen/Hemingway Award and American Fare Award in its account. Although she never lived anywhere but America still the nightingale deep in her heart was always a young woman from Bengal. India and its small joys and agony continuously stroked up her literary canvas and India always became a part and parcel of her lyrical soul.

The *Interpreter of Maladies* is also deep attached to India. Das families with all its natives, in the story, suffer from the feeling of alienation. This family is a visitor to India but Indian people do not feel any native appearance in them because "The family looked Indian but dressed as foreigners did, the children in stiff, brightly colored clothing and caps with translucent visors." (Lahiri2). Das people want to enter in the heart of India but they feel it is more a journey of introspection and expurgation with purgation. They continuously feel a gap between the immigrants Indians and the second-generation of native India that widens and widens further. That gap leads to a communication gap and zero understanding zone which, in turn, leads to a deep sigh for everyone involved.

Das family is asunder and they are mechanically living with individual goals. However, such is not the real chemistry of love. Despite of this, the wife likes to patch up her wound so to refresh herself in familial bond. Her journey to India and thereby meeting Kapasi and telling him her agonized heart is itself a journey to happiness. Thus, India and Kapasi both are metaphoric presentation of solace and peace for the Das family. India has become a metaphoric presentation of peace whereas Kapasi for interpreter of agony

The analysis of the central characters shows that there is a feeling of East West encounter in this tale. Mr. and Mrs. Das and the tour guide Mr. Kapasi are the main characters. The writer through the interactions of Das couple with their children Tina, Bobby and Ronny presents the fact that their relationship with their children is somewhat strange. It has a lack of perfection. Just opposite to Indian culture it looks futile as the children do not seem to obey their parents. It keeps them complexes among the and other Indians.

Mr. and Mrs. Das seem a subject matter of diasporas sensibility, because they seem more of sibling to their children than their parents because the children do not show any dignified attitude for parents. Mrs. Das does not show any interest in the relationship, It looks shabby. Mrs. Das describes Mr. Kapasi about some family affairs and he acts as an interpreter of maladies.

The presence of Mr. Kapasi (A romantic one) is also a subject of diasporas sensibility who fantasizes about Mrs. Das' which eventually turns out to be a futile exercise.

An aspect which does not fail to draw attention of the reader is the instance when the Das couple are engaged in

an argument as to who would take Tina to the bathroom is indicative of each one desire to shun responsibility.

Thus, we see a long chain of sense of futility, even in atmosphere, acts, characters and in the parental relationship too. The couple chemistry shown in share towards their children

Jhumpa has utilized the lack of communication as an aspect to present the futility of the relationship all the characters are dwelling in. Mr. Das is presented as a character always buried in his guide book while Mrs. Das hides her inner self behind her sunglasses. Mr. Kapasi is trapped in a loveless futile marriage spending lonely nights drinking tea by himself.

Conclusion - The comprehensive analysis of the “Interpretation of Maladies” of Jhumpa Lahiri is the choice of a female reader for analysis. This story is made primarily because it is a multitude thematic combination with autobiographical tone of Jhumpa.

This theme is believed to be essentially honest in portrayal of characters and emerging from the core of the heart of the novelist and present important issues relating to cultural issues with the discrimination which the characters are confronted with when they migrate to European lands. The writer has successfully presented the discrimination due to Diaspora in a subtle manner.

Hence, the Diasporas sensibility is expressed successfully with real life experiences in this story.

References :-

1. Personal Research.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Environmental Pollution and Disease

Dr. (Smt.) Sadhna Goyal*

*Professor (Chemistry) Govt. Motilal Vigyan Mahavidyalaya, Bhopal (M.P.) INDIA

Introduction - The immediate environment of man is made of air,water and soil on which depend all forms of life. But pollution of these three components poses a grave threat to human health occupational hazards are also cause due to one's occupation or employment. Heavy metals are elements having a density greater than 5 in their elemental form. The Heavy metals are widely distributed in the environment in soil, in plants, and animals are quite frequently used to control several types of pests now a days. Accumulation as residues of pesticides in higher concentration is toxic. Environmental pollution is reaching warning proportions worldwide. Human health is influenced by many factors like nutritional, biological, chemical, or psychological. It is quite true that environment has a direct impact on those living in it. Many people still associate mercury with Thermometers and most also know that it is toxic despite this mercury continues to circulate in our air, water soil and ecosystem due to the global nature of mercury pollution.

Table 1

Diseases Related to Environmental Pollution

S.	Agent	Diseases
1	Hydrocarbons, ozone, Nitrogen Oxides	Eyes, Nose Throat Problems
2	Sulphur di oxide ozone, Nitrogen Oxides	Heart Problem
3	Nitrogen Oxides, Hydrocarbons, Benzene	Cancer
4	Hydrocarbons, Sulphur dioxide	Birth Defects
5	Copper	Hypertension
6	Lead Mercury Arsenic	Brain damage Loss of Memory Conjunctivitis, Diarrhea.
7	Tobacco Smoke	Bronchitis, Tobacossis
8	DDT,Aldrin	Sever Asthma Cancer
9	Floride	Impotency in man
10	Cotton dust	Dental fluorosis
11	Canew fibre	Byssinosis
12	Grain Dust	Bagassosis
13	Coal Dust	Anthracosis, Pneumocotiosis
14	Silica	Silicosis
15	Iron	Siderosis
16	Asbestos	Lung Cancer, asbestosis Diseases due to occupational Hazards
17	Heat	Heat hyperpyrexia heat camp, prickly heat
18	Cold	Trenchloot, chilblains
19	Noise	Deafness
20	Radiation	Cancer
21	Virus	Viral hepatistis
22	Bacteria	Typhoid, Cholera
23	Protozoa	Amoebiasis

In order to increase consumer awareness about environment, The Government of India has introduced a scheme of ecolabelling of consumer products as ecomark. Ecoclub forms for environmental protection activities like tree plantation and encouraged to participate in environmental awareness campaigns on Earth. Day, world Environmental day and world Day for water Eco task force. Army men are involved in various environment protection activities under the Ecotask force. Information Technology plays a role in environment and Human health. NGO's non Government organization by Chipko movement and Narmada Bachao Andolan has played a land mask role in society for conservation of environment.

References :-

1. Environmental Education. Dr A.N. Rao Goyalbrothers prakashan Delhi 2005
2. Environmental Studies. Dr. S.M.Saxena, Dr. Seema Mohan Kailash Pustak Sadan Bhopal 2014.
3. Perspectives in environmental studies Anubha Kaushik, CP Kaushik 2016
4. Soil pollution, S.G. Mishra, Dineshmani Ashish Publishing house New Delhi. 1991

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Result Assessment of TGCA And ECGCA

Ms. Anju Dave*

***Asst. Professor, M.K.H.S. Gujarati Girls College, Indore (M.P.) INDIA**

Abstract - Register accesses are much faster than memory accesses. Register allocation [4] is one of them. Registers are fast and limited memory of any computing device. They are used to store the variable of program. If these limited registers are allocated appropriately to the variables, than the time complexity get decrease. In this paper a Tree Based Register Allocation technique is proposed and demonstrating their execution time comparison with Edge Cover Based Graph Coloring Algorithm.

Introduction - A graph coloring is a projection of mark, called colors, to the vertices of a graph. Distribution of colors in that manner such no two adjacent vertices contribute to the same color[2]. Table 1. shows the execution time comparison of Tree Based Register Allocation technique TGCA[6] and Edge Cover Based Graph Coloring Algorithm ECGCA [3] (execution time in seconds). The basic idea at the back of register allocation using graph coloring is to reduce register overflow by assigning variables globally to different registers throughout the complete program by the use of following five essential Phases [1].

Here total 25 graph instances and their execution time are compared for both algorithms.

Table 1 : ECGCA Vs TGCA

S.	Instance	ECGCA	TGCA
		Time (S)	Time (S)
1	1-FullIns_3	0.032	0.83
2	2-Insertions_3	0.016	53.16
3	DSJC1000.9	34584.47	1595.65
4	DSJC125.9	3.389	1.39
5	DSJR500.1c	599.203	136.24
6	GEOM20	0.016	0.22
7	GEOM20a	0.031	0.078
8	GEOM30a	0.047	0.079
9	GEOM30b	0.031	0.063
10	GEOM40a	0.062	1.187
11	GEOM40b	0.093	0.046
12	GEOM60a	0.093	25.332
13	latin_square_10	8545.583	15896.70
14	miles1000	2.286	42.13
15	myciel4	0.031	0.09
16	myciel5	0.094	39.43
17	queen10_10	0.437	216.15
18	queen11_11	0.737	16179.09
19	queen7_7	0.203	0.36
20	queen8_12	0.468	150.97
21	queen8_8	0.218	2.03
22	queen9_9	0.343	20.76
23	R50_9g	0.265	0.125
24	C250.9.clq	52.935	10.609
25	C500.9.clq	1379.94	108.419

Following facts are observed by experimental result analysis. Execution time of 14 graph instances for ECGCA is less than TGCA.

Execution time of 11 graphs are less for TGCA, They all are high degree graphs.

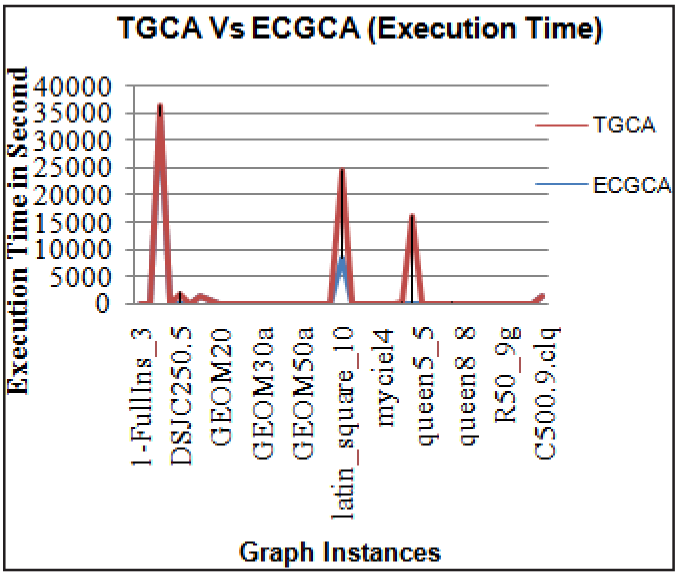

Figure1 : TGCA Vs ECGCA (Execution Time)

Fig. 1 shows the graphical comparison of execution time of TGCA and ECGCA [8]. Table 1 shows the execution time comparison of ECGCA and TGCA using different data sets [8]. Results shows in many graph instances TGCA is giving optimal chromatic number with less time.

Conclusion- Potential of parallel ECGCA to resolve the graph coloring difficulty for bulky graphs will present immense incentive in the area of solving graph coloring problem. A TGCA using Graph Coloring Approach is skilful, best time complex, large dataset sustained and extensive area of application supported algorithm. Proposed algorithm gives a good performance in high quantity variables program.

References:-

1. J.A. Bondy, U.S.R. Murty, “Graph Theory with its Applications”, Elsevier Science Publishing Co., 1976.
2. Chaitin, G. J., Auslander, M. A., Chandra, A. K., Cocke, J., Hopkins, M. E., and Markstein, P. W. “Register Allocation via Coloring”. Computer Languages, Vol. 6, Issue 1, 47–57, 1981.
3. H. N. Gabow and O. Kariv, “Algorithms for edge coloring bipartite graphs and multi graphs”, SIAM J. Compute. 117,129, 11, 1982.
4. David Koes and Seth Copen Goldstein, “An Analysis of Graph Coloring Register Allocation”, Carnegie Mellon University Technical Report No. CMU-CS-06-111, March1990.
5. H. Patidar, P. Chakrabarti, “A Novel Edge Cover based Graph Coloring Algorithm”, (IJACSA) International Journal of Advanced Computer Science and Applications,Vol. 8, No. 5, 2017.
6. H. Patidar, P. Chakrabarti, “A Tree-Based Graph Coloring Algorithm Using Independent Set”. In: Panigrahi C., Pujari A., Misra S., Pati B., Li KC. (eds) Progress in Advanced Computing and Intelligent Engineering. Advances in Intelligent Systems and Computing, vol. 714. Springer, Singapore, 2019.
7. P. C. Sharma and N. S. Chaudhari,” A Tree Based Novel Approach for Graph Coloring Problem Using Maximal Independent Set”, Wireless Personal Communications, https://doi.org/10.1007/s11277-019-06778-0, September 2019.

A. Dave, D. Pathak “Comparison Of Graph Coloring Approaches Used In Development Of Register Allocation Algorithms”, Journal of The Gujarat Research Society, vol 21, issue 14, December 2019.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Growth in Area, Production and Productivity of Turmeric in Karnataka and India: Problems and Suggestions

Anand Avale* Dr. Kiran Kumar P**

*Research Scholar (Economics) Rani Channamma University, Belagavi (Karnataka) INDIA
** Assistant Professor (Economics) Rani Channamma University, Belagavi (Karnataka) INDIA

Abstract - The study has been undertaken with the objectives to study growth in area, production and productivity of turmeric in Karnataka and India, to study the problems faced by the turmeric growers in Karnataka and to contribute suggestions for policy implications. The study period was 2017-18 to 2018-19. Turmeric area, production and productivity increased in India during the study period. Karnataka is one of the major states producing turmeric in India. The major problems faced by turmeric growers in Karnataka are explained and provided appropriate suggestions for the prevention of problems. To increase the production and productivity of turmeric in Karnataka, all the problems faced by the farmers must first be solved. The study has made it clear that the government needs to provide all facilities for turmeric growers for this purpose.
Keywords- Turmeric, problems, production, suggestions.

Introduction - India is known as the "Spice Bowl of the World "Various spices have been grown in the country since ancient times with premium quality. In the Vedas, as early as 6000 BC, there is evidence of various spices, their properties and their usefulness (Angles, 2001). Turmeric the Golden Spice is widely cultivated in different countries such as India, China, Myanmar, Nigeria, Bangladesh, Pakistan, Sri Lanka, Taiwan, Burma, Indonesia, etc. Among these countries, India occupies the first position in area, with 237.93 thousand hectares and also in production, with 1132.72 thousand tonnes during 2017-18. India is the world's largest producer of turmeric and produces 70-75 per cent of world's total production. Turmeric is grown in 18 states of India according to the Bureau of Indian Standards (BIS). The major states producing turmeric are Andhra Pradesh, Telangana, Tamil Nadu, Maharashtra, Karnataka and West Bengal. The southern state of Telangana, with nearly 295 thousand metric tons, was the leading producer of turmeric in India during 2018. Maharashtra and Tamil Nadu were second and third in the ranking that year. India has been known for spice production since ancient times. Turmeric occupies an important place in the spices produced in India. Turmeric is used in various forms as condiment, flavour and colour. Turmeric is a product that has many valuable properties and uses. It is used in the food, textile, medicine and cosmetics industries. India has the most spices varieties in the world, 63 varieties of spices are grown in India. Spices are grown all over the country in tropical and temperate climates. India is the world's largest producer, consumer and exporter of turmeric. Indian turmeric is considered the best in the world market due to its curcumin content.

Karnataka is one of the major states in India which produces turmeric. The soil and climate of Karnataka are suitable for successful turmeric cultivation, in 6,90,911 metric tonnes of turmeric were produced in the area of 2,98,429 hectors during 2018-19. More turmeric is produced in Chamarajanagar, Belagavi, Mysore, Dharwad, Bagalkot and Bellary. Turmeric growers are facing many problems in Karnataka, to increase the production of turmeric in Karnataka, the problems faced by turmeric growers should be overcome.

Review of literature:

Karthik, Amarnath (2014) this study has been carried out on economic analysis of turmeric production in Tamil Nadu. The present study shows that turmeric cultivation cost per hectare is Rs. 119873.75. Total income per hectare is Rs. 247754.92 Net Income Rs. 127881.17 per hectare Cobb-Douglas production function showed that planting material, nitrogen, potash and irrigated turmeric had a significant impact on yield. The results of Garrett's ranking strategy on farm-level restrictions and intermediate-level restrictions on turmeric production revealed that labour availability and pest and disease attacks were major constraints on production.

Dr. P Jayasubramanianet.al (2015) a study has been

conducted on the problems and future of turmeric products experienced by small farmers in Erode district. The purpose of this study is to find out the issues related to the cost, income, benefits, net income and their turmeric products of various aspects of the study area. The study was deliberately conducted to encourage small farmers to benefit from their hard work and continue their agricultural operations.

Viraja CVet.al (2018) the study was conducted on the cost and income of turmeric cultivation in Navasari district of southern Gujarat. The average cultivation cost per hectare of turmeric cultivation was 47 204737. It is the largest of the large farms (77 227790) followed by the medium farms (49 204925) and the small farms (23 182338). The study revealed that the share of operating expenses at the total cost was 82.83 per cent. Among the various items of expenditure, rhizomes rank first, followed by human labour, managerial fees, working capital interest, various costs and irrigation etc.

Paladugu Praveen Kumar et.al (2018)the study was conducted in connection with the production of turmeric in Guntur district. Its main purpose is to study the costs and income of turmeric. The outcome of the study reveals the socio-economic status of the sample respondents, the economics of turmeric production. The results reveal that the socio-economic status of farmers with primary education and good economic background is moderate. The study reveals that the economics of turmeric production are more profitable in small farms compared to medium-sized farms and large-sized farms.

Objectives:

1. To study the growth in area, production and productivity in Karnataka and India;
2. To study the problems faced by turmeric growers in Karnataka;
3. To contribute suggestions for policy implications;

Methodology: The study was mainly based on the secondary data from various sources, which included Annual Reports, Yearbooks, Statistical Data publications of Spices Board, Indiastat.com, Ministry of Commerce and Industries and Spices Development Board.

The Growth in Area, Production and Productivity of Turmeric in India - India is virtually a monopoly supplier to the world with a share of about 76 per cent of the total global output and 90 per cent of the global trade. Favorable weather conditions prevailing in major turmeric growing areas (Andhra Pradesh, Telangana, Tamil Nadu, Orissa, Karnataka, and West Bengal) and the important steps taken by the Spices Board including educational programs for growers on improved methods which lead to increase in productivity of turmeric,besides this, -high yielding varieties released over the years had their own contribution.

Table 1 (see in last page)

The table 1 shows that the area, production and productivity of major turmeric states in India. The area under turmeric cultivation increased from 231.39 thousand hectors during 2017-18 to 253.35 thousand hectors during 2018-19. The total output of turmeric had increased from 862.77 thousand tonnes during 2017-18 to 972.97 thousand tonnes during 2018-19. The productivity of turmeric per hectare had also increased from 3729 kg in 2017-18 to 3840 kg during 2018-19. Telangana State occupies first position in the production and area of turmeric in India for the years 2017-18 and 2018-19.

The Growth in Area, Production and Productivity of Turmeric in Karnataka - Karnataka is one of the major states producing turmeric in India. Turmeric area and production in Karnataka has been increasing for few years. Chamarajanagar, Mysore and Belgaum districts tops turmeric production in Karnataka. Karnataka contributes 15.80 percent to India's total turmeric production in 2018-19. Necessary for farmers ifentire the infrastructure is provided, turmeric production can be increased.

Table 2 (see in last page)

The table 2 shows that the area, production and productivity of turmeric in Karnataka. Area under turmeric cultivation in Karnataka has increased from 19.34 thousand hectares in 2017-18 to 26.58 thousand hectares in 2018-19. Total production of turmeric has increased from 122.76 thousand tonnes in 2017-18 to 153.77 thousand tonnes in 2018-19. Turmeric productivity per hectare declined from 6348 kg in 2017-18 to 5785 kg in 2018-19.

Table 3 (see in last page)

The table 3 shows that the district-wise distribution of area, production and productivity of turmeric in Karnataka for the year 2018-19. Karnataka is one of India's leading states in growing turmeric. Turmeric growth in Dharwad district in 2018-19 is 49929 hectares used area, its production is 57230 metric tonnes and its productivity is 1.15 metric tonnes, in Bellary district is 49600 hectares used area, its production is 118239 metric tonne and its productivity is 2.38 metric tonne, in Hassan district 43711 hectares used area, its production is 60962 metric tonne and its productivity is 1.39 metric tonne, in Chikkamagalur district is 36963 hectare used area, its production is 19932 metric tonne and its productivity is 0.54 metric tonne and Kodagu district is 22913 hectare used area, its production is 27003 metric tonne and its productivity is 1.18 metric tonne. These districts are considered as highest area growth of turmeric crop. On the other hand, Yadagiri district is only 24 hectare used area, its production is 55 metric tonne and its productivity is 2.29 metric tonne. So, it is considered as lowest area growth of turmeric crop and other districts are considered as average area growth of turmeric crop and their data are mention the tables.

Problems: Turmeric growers face many problems such as high-cost fertilizers and pesticides, unavailability of labour during peak time, excessive weed, transportation problem, and lack of capital. They are briefly described below.

High cost of fertilizers &pesticides: Turmeric cultivation requires the use of fertilizers and pesticides. Fertilizer is

needed to increase turmeric yield, and pesticides are needed to protect turmeric from diseases. These are sometimes not available to the farmers at the right time and the prices are very high

Non availability of labour during peak time: There is a need for labour in turmeric farming. Farmers need workers to remove weeds, fertilize, spray pesticides and boil turmeric. But sometimes workers are not available at this time. In addition, the wages of workers have increased, which in turn has led to an increase in the production costs of farmers.

Problem of transportation: Transportation plays a very important role in turmeric cultivation. Transportation is required to transport fertilizers and pesticides to the farm and sell grown produce, but farmers do not have access to good transportation and farmers have to pay higher transportation costs.

Non availability of storage facilities: Farmers do not have a proper storage facility to store the turmeric they have grown for many days. Farmers are selling their produce at inevitably lower prices in the market without the availability of storage facilities.

Inadequate sources of finance: Turmeric growers need financial resources to pay for seeds, fertilizers, pesticides, workers' wages, and rent of machinery etc. But there are no suitable sources of financing for turmeric growers. So, they get loans from money lenders but the interest rate on this loan is high.

Fluctuations in market price: The price of turmeric in the market is constantly fluctuating. Farmers are exploited by brokers because they do not have the right information about the market. Brokers receive higher commission fees from farmers.

Lack of proper knowledge: Many farmers do not have the knowledge on proper techniques for turmeric farming. Farmers do not have the proper knowledge about the market for advanced seeds, pesticides. Most farmers have traditional farming practices. It is very expensive.

Lack of proper sales and marketing network: Most turmeric farmers have no business skills and no organized marketing network. They rely on a middleman and an agent to sell their product.

Suggestions:

1. Priority needs to be given to increase turmeric production and productivity. On the one hand it is necessary to meet the increasing domestic demand and maintain the monopoly supply position in the international market.
2. The maximum number of farmers is facing the problem of shortage of skilled labour in their field; on the other hand, workers are leaving agriculture due to their current earnings shortfall and earning better income in other sectors other than agriculture.
3. More emphasis needs to be placed on evolving specific varieties of turmeric. Seed producing agencies need to be created in the turmeric growing areas of each state so that the burden of seed transportation and the availability of certified seeds will not hurt farmers.
4. It is necessary to have a consortium of progressive turmeric growers, scientists from various organizations, and representatives of turmeric growers' associations to address the real problems of turmeric growers in an organized manner and to develop a strategy for turmeric production.
5. To make the most profit from the sale of turmeric, one has to wait until the price of turmeric in the market increases. Until then, proper storage facilities should be provided to store turmeric and proper training should be provided to improve their storage habits.
6. As changes in area and productivity are causing instability in turmeric production, the government needs to put more emphasis on pricing strategies, market facilities and policies, which will help stabilize prices and increase profits for farmers.
7. The government should create more infrastructures to deal with major problems such as proper storage facilities, better varieties, proper electricity supply, chemical fertilizers, better transportation and pesticides.

Conclusion -The turmeric sector in India faces serious challenges in increasing efficiency improving technology in turmeric, Improvements in the sales of turmeric products domestically and internationally, as well as improvements in agriculture and processing. The need to invest in post-harvest turmeric management has increased, especially for storage, drying, processing and packing facilities. Skill development activities for farmers, especially production, harvesting, post-harvest, procurement, processing and marketing skills are essential. Proper branding and advertising of the Turmeric product and There is a need to explore markets for product transformations. Turmeric growers in Karnataka need timely fertilizers and pesticides, high quality seeds, availability of skilled labour, storage facilities and transport facilities. If all these facilities are provided, turmeric production and yield will increase. The government should provide incentive programs to promote turmeric growers so that more farmers grow turmeric.

References:-

1. Angles, S., (2001): "Production and Export of Turmeric in South India - An Economic Analysis", *M. Sc. (Agri) Thesis,* Univ. Agric. Sci., Dharwad, Karnataka (India).
2. Dr. P Jayasubramanian, Sasikumar (2015): "Problems and Prospects for Turmeric Products Perceived by Small Farmers in Erode District", *International Journal of Applied Research*, Vol. 1(13), pp 306-311
3. Dr. L. S. Sharma, Vanlalhumi (2013): "An Analysis on the Adoption, Marketing and Problems of Turmeric Growers in Mizoram: A Case Study of Reiek Turmeric Farmers", *Uttaranchal Business Review,* Vol. 3, Issue 2,
4. Directorate of Areca nut and Spices Development
5. GOK (2019): 'Horticultural Crop Statistics of Karnataka State at a Glance 2018-19', Directorate of Horticulture,

Lalbagh, Bangalore.

6. GOI (2019): 'Horticultural Statistics at a Glance 2018', Government of India Ministry of Agriculture & Farmers' Welfare Department of Agriculture, Cooperation & Farmers' Welfare Horticulture Statistics Division.
7. Karthik V, Amarnath JS. (2014): "An Economic Analysis of Turmeric Production in Tamil Nadu, India",*Direct Research Journal of Agriculture Food and Science,* Vol. 2(6), pp66-76.
8. M. S. Sawant, S. M. Hadole, And V. B. Gedam (2013): "Constraints of Turmeric Growers in Adoption of Recommended Practices of Turmeric Cultivation",*Hind Agricultural Research and Training Institute,* Volume 8, Issue 4, pp626-628
9. Paladugu Praveen Kumar, Dr. Nahar Singh, Jayant Zechariah, Deepthi Patluri and Vidya Sagar M (2018): "An Economic Analysis of Production and Marketing of Turmeric in Guntur District of Andhra Pradesh", *Journal of Pharmacognosy and Phytochemistry,* 7(3): 2596-2599
10. Paladugu Praveen Kumar, Dr. Nahar Singh, Jayant Zechariah, Deepthi Patluri and Vidya Sagar M (2018): "An Economic Analysis of Production and Marketing of Turmeric in Guntur District of Andhra Pradesh",*Journal of Pharmacognosy and Phytochemistry,*Vol. 7(3), pp 2596-2599
11. RT Katole, GB More, PritiTodasam, and ASDarange (2018): "Behaviour of Turmeric growers in Akola District of Maharashtra State", *International Journal of Chemical* Studies, Vol. 6(5), 09-12
12. Sarfraz Sheikh, Raghavendra Chourad, Shreyaamarapurkar and Raghavendra Kandaguri (2014): "Economics of Turmeric Production Under Conventional and Modern Methods in Belgaum District of Northern Karnataka", *International Journal of Commerce and Business Management,* Issue 1, Vol. 7, pp. 100-104.
13. Vinod Naik and S. B. Hosamani (2016):"Growth and Instability Analysis of Turmeric in India", *J. Farm Sci,*Vol. 29(3), pp 377-380

Table 1: Area, Production and Productivity of Turmeric by Major States in India

States	**2017-2018**			**2018-2019**		
	Area (‘000 ha)	**Production (‘000 tonnes)**	**Productivity (Kg/ha)**	**Area (‘000 ha)**	**Production (‘000 tonnes)**	**Productivity (Kg/ha)**
Andhra Pradesh	19.62	79.73	4063	20.37	85.50	4197
Gujarat	4.01	15.78	3941	4.43	17.39	3929
Assam	16.87	20.79	1232	15.90	19.40	1220
Karnataka	19.34	122.76	6348	26.58	153.77	5785
Kerala	2.78	8.82	3176	2.48	6.69	2695
Madhya Pradesh	11.70	41.29	3530	13.67	47.66	3487
Odisha	27.87	43.61	1565	27.87	43.61	1565
Rajasthan	0.52	0.47	910	0.19	0.45	2368
Telangana	50.15	294.56	5873	53.10	345.27	6502
Uttar Pradesh	2.00	6.00	3000	1.42	1.91	1347
West Bengal	17.45	44.70	2562	17.75	45.46	2561
India	**231.39**	**862.77**	**3729**	**253.35**	**972.97**	**3840**

Source:Directorate of Areca nut and Spices Development

Table 2: Area, Production and Productivity of Turmeric in Karnataka

2017-2018			**2018-2019**		
Area (‘000 ha)	**Production (‘000 tonnes)**	**Productivity (Kg/ha)**	**Area (‘000 ha)**	**Production (‘000 tonnes)**	**Productivity (Kg/ha)**
19.34	122.76	6348	26.58	153.77	5785

Source: Directorate of Areca nut and Spices Development

Table 3: District-Wise Distribution of Area, Production and Productivity of Turmericin Karnataka State-2018-19

Districts	Area(ha)	Production(MT)	Productivity(MT/ha)	Value(Lakh Rs)
Banglore Urban	400(0.13)	2302(0.33)	5.76	589
Banglore Rural	720(0.24)	3591(0.51)	4.99	801
Chikkaballapura	768(0.25)	2954(0.42)	3.85	1347
Chitradurga	1488(0.49)	4991(0.72)	3.35	3118
Davangere	2441(0.81)	10182(1.47)	4.17	697
Kolar	1987(0.66)	8338(1.20)	4.20	1226
Ramanagar	460(0.15)	1308(0.18)	2.85	420
Shimoga	8352(2.79)	40366(5.84)	4.83	12120
Tumakuru	8268(2.77)	17726(2.56)	2.14	12831
Bagalkote	3595(1.20)	18128(2.62)	5.04	13411
Belagavi	9790(3.28)	50646(7.33)	5.17	15088
Vijayapura	2613(0.87)	11843(1.71)	4.53	902
Dharwad	49929(16.73)	57230(8.28)	1.15	44122
Gadag	9496(3.18)	6002(0.86)	0.63	4300
Haveri	4556(1.52)	34872(5.04)	7.65	64097
Uttar Kannada	5013(1.67)	15073(2.18)	3.01	14887
Bellary	49600(16.62)	118239(17.11)	2.38	92440
Bidar	3995(1.33)	44403(6.42)	11.11	11632
Kalaburagi	2246(0.75)	10129(1.46)	4.51	3075
Koppal	231(0.07)	1082(0.15)	4.67	178
Raichur	7047(2.36)	15690(2.27)	2.23	14094
Yadagiri	24(0.008)	55(0.007)	2.29	11
Chamarajanagar	8986(3.00)	37278(5.39)	4.15	10433
Chikkamagalur	36963(12.38)	19932(2.88)	0.54	30674
Dakshin Kannada	5379(1.80)	847(0.12)	0.16	3071
Hassan	43711(14.64)	60962(8.82)	1.39	90587
Kodagu	22913(7.67)	27003(3.90)	1.18	25879
Mandya	390(0.13)	2970(0.42)	7.61	429
Mysuru	6233(2.08)	65987(9.55)	10.59	22016
Udupi	837(0.28)	782(0.11)	0.93	1233
State Total	**298429**	**690911**	**2.32**	**495707**

Source: Horticulture Crop Statistics of Karnataka state at a Glance 2018-19: pp08.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

वैदिक परमात्मा- दक्ष प्रजापति (यज्ञ) (सृष्टिकर्ता, आत्म तत्व व शोडषी कला के रूप में (आषाढ़ दक्ष पूर्णिमा-दक्ष प्रजापति के प्राकट्य दिवस के संदर्भ में)

डॉ. ईश्वरलाल प्रजापति *

* वार्ड नं. 12, मकान नं. 616, पाटीदार छात्रावास के पास, ग्वालटोली, नीमच (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – ऋग्वेद ग्रंथ ईश्वरीय ग्रंथ है जिसकी भाषा वैज्ञानिक है जो विश्व का अर्वाचीन ग्रंथ है। जिसमें दक्ष प्रजापति की महिमा की स्तुति/गायन कई रुप व गौण नामों से की गयी है। वेदों में दक्ष प्रजापति को 'क' संज्ञक प्रजापति (कल्याण स्वरूप प्रजापति) 'वाच्च' प्रजापति, यज्ञ स्वरूप दक्ष प्रजापति, सृष्टिकर्ता, आत्मा का दाता, 16 कलाओं का उत्पादक जो सर्वेज्ञ है उसकी स्तुति/उपासना करना श्रेष्ठ धर्म है। परन्तु अविद्धान पौराणिक ग्रंथकारों के अज्ञान के कारण प्रदूषित कथा शास्त्रों पुराणों में सम्मिलीत होने के कारण यज्ञ जैसे पवित्र कार्य में 'पशु बलि' जैसी कुप्रथा अस्तित्व में है, जिसे खत्म कर शुद्ध परमात्मा की उपासना गायन /यज्ञ करना श्रेष्ठ है।

प्रस्तावना –

विश्व के सम्पूर्ण धर्म ग्रंथों में से ऋग्वेद आदि ग्रंथों को ईश्वरीय कृत एवं अर्वाचीन ग्रंथ माना गया है। जिसकी लेखनीय भाषा वैज्ञानिक है। जिसका प्रादूर्भाव ऋषियों के माध्यम से प्रजापति ब्रह्माजी ने प्रकाशित किया है। वैदिक विज्ञान की दृष्टि से (1) अग्नि द्वारा ऋग्वेद को (2) वायु द्वारा यजुर्वे द को (3) आदित्य द्वारा सामवेद को एवं (4) अंगिरा द्वारा अथर्ववेद को, घूलोक रश्मि (तरंगों) द्वारा चारों वेदों को प्रजापतिजी ने उत्पन्न (प्रकट) किया है। जिसकी वैज्ञानिकता एवं प्राचीनता को देखते हुए 'यूनेस्को' ने ऋग्वेद को सांस्कृतिक धरोहर के रूप में सम्मिलित किया है। अन्तर्राष्ट्रीय संस्था नासा (NASA) व राष्ट्रीय संस्था (ISRO) इसरों ने भी कई बिन्दुओं पर वेदों में शामिल वैज्ञानिक चिंतन को स्वीकार करते है। आधुनिक इतिहासकार वेदों की रचना को 6500-10,000 साल पुराना मानते है, जबकि वैदिक विज्ञान 'वेदो' को अनादि-अर्वाचीन मानते है।

ऋग्वेद के 'प्रजापति सूक्त' में प्रजापति की महिमा का गायन किया गया है। जो सूक्त दार्शनिक है जिसमें दर्शन संबंधी तथ्यों का वर्णन मिलता है इन सूक्त में स्थूल (भौतिक) जगत में सूक्ष्म सत्ता (ब्रह्म जगत) तक की यात्रा का सौपान उल्लेख मिलता है। जिसमें प्राकृतिक दर्शन के माध्यम से उसे बनाने वाले परमात्मा की शक्ति का दर्शन किया जाता है। प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में 'दर्शन' की दीक्षा दी जाती थी। जो 'दीक्षांत समारोह' से प्रमाणित है।जो विश्वविद्यालय में आज भी जारी है।

वेदों में 'प्रजापति दक्ष' को देवता, ऋषि, यज्ञ, गुरु, वन-पति, यजुर्वेद व आयुर्वेद के देवता, ईश्वर, अजन्मा (अज), सत्य, 'क' संज्ञक प्रजापति (कल्याण स्वरूप प्रजापति), सृष्टिकर्ता, सामर्थवान,सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, माँ सती दुर्गा के पिता, ज्ञान के स्वामी, पूर्ण-सम आत्मदाता (सम्पूर्ण), हिरण्य, प्रजा का पति, अनादि अतुलनीय विराट जगत् स्वरूप , बैजी सृष्टि व संस्कार के देवता एवं यज्ञ स्वरूप प्रजापति के रूप में स्वीकार किया गया या वर्णन किया गया है। वेदों में ब्रह्माजी को उत्तर वैदिक युग में प्रजापति कहा गया है, इसलिए वेदों में जहाँ भी यज्ञ, प्रजापति, दक्ष या दक्ष प्रजापति के रूप में ऋषि, देवता, परमात्मा, मंत्र द्दष्टा के रूप में जो उल्लेख मिलता है, वह सभी (मंत्रों) में दक्ष प्रजापति का संदर्भ ही ग्रहण है। दक्ष प्रजापति 'यज्ञ' में 'जीव' व 'सृष्टि' में 'सामर्थवान' परमात्मा है। पुराणों में भावातीत व्यवहार में दक्ष प्रजापति राजाओं के भी राजा अर्थात् देवता है। जो 'साकार' रूप में माता सती (दुर्गा) के पिता है। वेदों में 'निराकार' रूप यज्ञ में सूक्ष्म जीव तत्व प्रजापति है। इस प्रकार दक्ष प्रजापति अतुलनीय, अनिर्वचनीय, निर्विकल्प

एवं सगुण-निर्गुण रूप में वंदनीय पूजा के योग्य है।

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे, भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

- ऋग्वेद 10/121/1

भावार्थ-प्रजापति हिरण्यगर्भ जगत् से पूर्व वर्तमान था और है, सूर्यादि प्रकाशमान पिण्डों को अपने अन्दर रखता हुआ सारे जगत् का स्वामी पृथिवी, अंतरिक्ष और द्यूलोक को धारण करता है। उस सुख स्वरूप प्रजापति या 'क' संज्ञक प्रजापति (कल्याण स्वरूप) प्रजापति को हम हविष्य (यज्ञ) विधान के द्वारा स्तुति करते है या आपकी स्तुति छोड़कर हम किस देवता की स्तुति करें ?

उक्त मंत्र में 'क' संज्ञक प्रजापति या कल्याण स्वरूप प्रजापति स्व प्रकाश से प्रकट होते है अर्थात् सोने के अण्डे के समान सृष्टि आरंभ में उत्पन्न होकर सृष्टि यज्ञ करते है।

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

- ऋग्वेद 10/121/2

भावार्थ- प्रजापति परमात्मा संसार में भेजकर आत्मबोध देता है अपनी सङ्गति से बल देता है उसका नियम सब देवता सेवन करते है कोई तोड़ नहीं सकता, उसकी शरण लेने से अमृत हो जाता है अन्यथा मृत्यु को प्राप्त होता रहता है उस सुख स्वरूप प्रजापति या 'क' संज्ञक प्रजापति (कल्याण स्वरूप) प्रजापति को हम हविष्य (यज्ञ) विधान के द्वारा स्तुति करते है या आपकी स्तुति छोड़कर हम किस देवता की स्तुति करें ?

उक्त मंत्र में कल्याण स्वरूप प्रजापति मानव को आत्मबोध कराकर आत्मा को बल देते है जिनकी छाया मानव को अमृत प्रदान करती है एवं जिनके अधीन मृत्यु है अर्थात् सुख स्वरूप प्रजापति अमृत का एवं आत्मा का दाता परमेश्वर है।

यस्माज्जातं न पुरा किं चनैव य आबभूव भुवनानि विश्वा।
प्रजापतिः प्रजयासꣳ रराणस्त्रीणि ज्योतीꣳषि सचते स षोडशी॥

- यजुर्वेद अ.23/5

भावार्थ - जिससे ईश्वर (प्रजापति) अनादि है इस कारण उससे पहिले कुछ भी नहीं हो सकता, वही सब प्रजाओं में व्याप्त जीवों के कर्मो को देखता और उनके अनुकूल फल देता हुआ न्याय करता है, जिसने प्राण आदि सोलह वस्तुओं को बनाया है इससे वह षोडशी कहाता है। (प्राण, श्रद्धा, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी, इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मंत्र, कर्म, लोक और नाम) से षोडश कला प्रश्नोपनिषद् में हैं। यह सब षोडश वस्तुरुप जगत प्रजापति में है, उसी ने बनाया और वही पालन कर्ता है।

16 कलाओं वाला पुरुष प्रत्येक मानव के शरीर में आत्म-भाव रूप में निवास करता है। जिस आत्म भाव के शरीर से निकल जाने पर शरीर मृत (मिट्टी) हो जाता है। जैसे-पृथिवीं की समस्त नदियां समुद्र में मिलकर अपना नाम स्वरूप खत्म कर समुद्रमयी हो जाती है। यहाँ जीव 'नदी' है एवं परमात्मा 'समुद्र' है।

भगवान प्रत्येक मानव में जीव आत्मा के रूप में 16 कलाओं का उत्पादन कर्ता है। प्रत्येक मनुष्य आत्मदाता प्रजापति को जानकर गुण + कर्म + साधना विद्या के माध्यम से अपने अन्दर 16 कला का विकास कर उसे प्राप्त करता है। पृथिवी पर श्रीराम, श्रीकृष्ण आदि भगवान शरीरधारी महापुरुष हुए है जिन्होंने गुरुओं के माध्यम से 16 कलाओं को जानकर उसे प्राप्त कर उनका भोग किया है। इस प्रकार षोड्शी प्रजापति 16 कलाओं का उत्पादक है व प्रत्येक मानव 16 कलाओं को अर्जित कर उसका भोग करता है और अन्त में नदी की भाँति 16 कला युक्त जीव आत्मा समुद्र रुपी आत्मदाता प्रजापति परमेश्वर में मिलकर अपने रंग-रूप-स्वरूप को समाप्त कर जीव आत्मा अपनी वासना के अधीन या वशीभूत होकर वासना के अनुसार नया जन्म धारण करती है। मानव शरीर में स्थित जीव आत्मा अपने कर्म, संस्कार, प्रभुभक्ति, पूजा, यज्ञ, योग, तप आदि के द्वारा आत्मा की वासना को परिवर्तित कर सकता है। इस संबंध में माण्डूक्योपनिषद् की बहुत प्रसिद्ध कथा जिसमें प्रजापति देवराज इन्द्र व देत्यराज विरोचन को समझाते है। शास्त्रों में दक्ष प्रजापति के 16 पुत्रों का उल्लेख किया गया है जिस कारण भी दक्ष प्रजापति को षोडशी कहा गया है। इस प्रकार चन्द्र की 16 कलाएं भी दक्ष प्रजापति द्वारा ही निर्मित है जिनसे दक्ष प्रजापति नेअपनी 27 नक्षत्र रुपणी कन्या का संबंध स्थापित किया है।

दक्ष प्रजापति द्वारा निर्मित संस्कार विधान में भी 16 संस्कार का ही विधान किया गया है जिसमें से 8 संस्कार प्रवृत्ति मार्ग के एवं 8 संस्कार मुक्ति मार्ग के बनाये गए है। आगे विस्तार रूप में भगवान श्री कृष्ण की 16 कलाएं, माता सती (दुर्गाजी) का 16 श्रृंगार, भाषा में 16 स्वर, 16 शराद (पितृतर्पण), वास्तुशास्त्र में 16 शुभ द्वार, गुरु ग्रह के 16 चन्द्र,वेदों में 16 महाजनपद, 1 रूपये में 16 आने, 1 डॉलर में 16 आउंस, यज्ञ में षोड्श (16) पूजन एक स्वास्थ्य मानव द्वारा एक मिनट में 16 बार श्वास लेना, 16 सोमवार का व्रत, 16 सुहागिन महिलाओं का व्रत, 16 गणगौर, शतरंज खेल में 16 सिपाही, रानी त्रिशला के 16 सपने जैन धर्म में आदि सभी स्मृति दक्ष प्रजापति के षोडशी होने का प्रमाण है। जो किसी न किसी रूप में सृष्टि के अस्तित्व में है।

अतः मनुष्य प्रजापति परमात्मा की शक्ति को जानकर व उसकी उपासनासे ही आनंद को भोगता है। अर्थात् प्रजापति सुख व आनंद का दाता है या आनंददायी है।

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमा :।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ताऽआपः स प्रजापतिः॥

- यजुर्वेद अ.23/1

भावार्थ- हे मनुष्यों ! जैसे ईश्वर के ये अग्नि, इन्द्रादि, आदि गौण नाम हैं वैसे ही सब प्रजा का स्वामी होने से प्रजापति है. उस प्रजापति की उपासना ही फलवाली है, ऐसा तुम सब लोग जानों ।

उक्त मंत्र में परमात्मा के कई गौण नाम है परन्तु सभी प्रजा का स्वामी होने से उसका एक नाम प्रजापति भी है। अतः उसी प्रजापति की उपासना स्तुति फलदायी बताई है।

यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः।
यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

- ऋग्वेद 10/121/4

भावार्थ - नदियों के साथ समुद्र हिमालय पर्वत और समस्त दिशाएँ परमात्मा के महत्व को दर्शा रही है उस सुख स्वरूप प्रजापति या 'क' संज्ञक प्रजापति (कल्याण स्वरूप) प्रजापति को हम हविष्य (यज्ञ) विधान के द्वारा स्तुति करते है या आपकी स्तुति छोड़कर हम किस देवता की स्तुति करें ?

उक्त मंत्र में सुख स्वरूप प्रजापति परमात्मा के महत्वों का बखान पर्वत, नदियां, समुद्र, दिशाऐं एवं प्रदिशाऐं कर रही है अतः उस परमात्मा की महिमा

का गायन हम सब मनुष्यों को करना चाहिए।

येन द्योरुग्रा पृथिवी च दृढ़हा येन स्व: स्तभितं येन नाक: ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमान: कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

– ऋग्वेद 10/121/5

भावार्थ– परमात्मा तेजस्वी द्युममण्डल को और कठोर पृथिवी को, मध्य स्थान को और लोकमात्र को तथा मोक्षधाम को संभाला हुआ है उस सुख स्वरूप प्रजापति या 'क' संज्ञक प्रजापति (कल्याण स्वरूप) प्रजापति को हम हविष्य (यज्ञ) विधान के द्वारा स्तुति करते है या आपकी स्तुति छोड़कर हम किस देवता की स्तुति करें ?

उक्त मत्र में 'क' संज्ञक सुख स्वरूप प्रजापति परमात्मा ने द्युलोक, पृथिवी लोक, आंतरिक्ष लोक व मोक्षधाम को संभाला हुआ है। ऐसे सुख स्वरूप प्रजापति की उपासना हविष विधान द्वारा बताया गया है।

यश्चिदापों महिना पर्यपंश्यद्दक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम् ।
यो देवेष्वधि देव एक आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

– ऋग्वेद 10/121/8

भावार्थ–प्रजापति परमात्मा अपने महत्व से सृष्टियज्ञ के प्रारम्भ करने वाले परमाणुओं को भली भाँति जानता है जो सब देवों के ऊपर अधिष्ठाता होकर वर्तमान है।उस सुख स्वरूप प्रजापति या 'क' संज्ञक प्रजापति (कल्याण स्वरूप) प्रजापति को हम हविष्य (यज्ञ)विधान के द्वारा आहुति स्तुति करते है या आपकी स्तुति छोड़कर हम किस देवता की स्तुति करें ?

मा नो हिंसीज्जनिता: य: पृथिव्या यो वा दिवं सत्यधर्माजजान ।
पश्चापश्चन्द्रा बृहतीर्जजान कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

– ऋग्वेद 10/121/9

भावार्थ–जिस परमात्मा ने पृथिवीलोक द्युलोक चन्द्रताराओं से भरा मन भानेवाला अन्तरिक्ष उत्पन्न किया है, उस सुख स्वरूप प्रजापति या 'क' संज्ञक प्रजापति (कल्याण स्वरूप) प्रजापति को हम हविष्य (यज्ञ)विधान के द्वारा आहुति स्तुति करते है या आपकी स्तुति छोड़कर हम किस देवता की स्तुति करें ?

जिस प्रजापति ने पृथिवी–द्युलोक एवं चन्द्र ताराओं से भरा आकाश उत्पन्न किया, ऐसे 'क' संज्ञक कल्याण स्वरूप प्रजापति की स्तुति यज्ञ विधान से बताया गया है।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जहुमस्तन्नोऽअस्तु वयं स्याम पतयो रमीणाम् ।।

–ऋग्वेद 10/121/10, यजुर्वेद अ. 23 मंत्र 65

भावार्थ– हे प्रजापति ! ऐश्वर्ययुक्त सर्वशक्तिमान परमात्मा समस्त पदार्थ (वस्तुऐं) में पूर्व उत्पन्न या वर्तमान में होती है। जो सबका परमात्मा अधिष्ठाता है अन्य कोई नहीं जिस जिस कामना को लेकर हम मनुष्य भक्ति विशेष से आपकी स्तुति करते है और अपने पुरुषार्थ से इस लोक के ऐश्वर्य और योगाभ्यास के सेवन से परलोक के सामर्थ्य को हम सबको प्राप्त हो। या हम सब धनों (वैभव) को प्राप्त करें।

इस प्रकार दक्ष प्रजापति वैदिक परमात्मा है जिसे वेदों में कई गौण नामों से संबोधित किया है एवं कई नामों से दक्ष प्रजापति की महिमा वेदों में बताई है परन्तु पौराणिक मिलावटी ग्रंथों में दक्ष प्रजापति को शिव द्रोही बताकर दक्ष प्रजापति के महत्व को कम किया है। पुराणों में वीर भद्र द्वारा दक्ष प्रजापति का सिर काटकर 'यज्ञ कुण्ड' में (प्रदूषित कथा के अनुसार) शिव के गणों ने जला दिये जाने का कल्पित उल्लेख किया गया है जिस कारण आज भी धार्मिक अंधविश्वासी लोग पशुबलि का अनर्थ करते है। अत: वेदों को जानकर यज्ञ स्वरूप दक्ष प्रजापति की उपासना करना ही श्रेष्ठ धर्म है, क्योंकि दक्ष प्रजापति वैदिक परमात्मा है।

टिप्पणी (स्पष्टीकरण):

1. ऋग्वेद के दशम् मण्डल के 121 वे सूक्त से मंत्र उद्धृत है। जो दार्शनिक सूक्त की श्रेणी में आता है। जो त्रिष्टुप् छंद है जिसके प्रत्येक पद में 11–11 अक्षर और पूरे मंत्र में 44 अक्षर होते है।
2. यजुर्वेद का अध्याय23 का मंत्र क्रमांक 1,5,65 यजुर्वेद से लिया गया है जो प्रजापति की महिमा बताता है।
3. सायणाचार्य के अनुसार प्रजापति 'क' नाम से प्रख्यात है। सायणाचार्य ने 'क' का अर्थ 'सूख' से लिया है। प्रजापति सुखमय होने के कारण उन्हें 'क' संज्ञा प्रदान की गयी है। वैदिक मंत्रों में 'कस्मै' शब्द प्रजापति के लिये लिया गया है। 'क' अक्षर से 'वाच्य' होने के कारण भी प्रजापति को 'वाच्य' प्रजापति कहा गया है। यज्ञकर्त्ता ब्राह्मण जब यज्ञ आहुति प्रजापति को प्रदान करता है तो प्रजापति के मंत्रों का उच्चारण न कर मौन मंत्र के द्वारा आहुति दी जाती है क्योंकि वाच्य प्रजापति के समक्ष किसी को भी बोलने की हिम्मत नहीं है क्योंकि वह सम्पूर्ण है।
4. 'क' अक्षर दो वर्णो के मेल से बना है, जिसमें 'क्' एवं 'अ' वर्ण शामिल है। इस प्रकार क्+अ= 'क' अक्षर होता है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि हिन्दी भाषा में 'क' वर्ण व्यञ्जन का प्रथम वर्ण है और 'अ' वर्ण 'स्वर'का प्रथम वर्ण है। इसलिए जो व्यञ्जन में प्रथम वर्ण 'क्' एवं स्वरों में प्रथम स्वर 'अ' है वह सम्पूर्ण स्वर व व्यञ्जन का प्रथम, अग्र व अग्रिम है। इसी प्रकार समस्त लौकिक–अलौकिक देवताओं में प्रथम अग्र देवता प्रजापति है। जिन्हें वेदों व निरुक्त आदि ग्रंथों में 'क' संज्ञक कल्याण स्वरूप प्रजापति कहा गया है।
6. 'अज' का अर्थ निरुक्त व निघण्टु शास्त्र (वैदिक शब्द कोश) में 'अजन्मा', सूर्य (धान) अन्न, ईश्वर होता है। (सं ✓जन् + ड. न.त.) जो जन्मा न हो। अर्थात् वेदों में दक्ष प्रजापति को 'अजन्मा' कहा गया है।
7. वेदों में एवं चरक संहिता व सुश्रुत संहिता आदि ग्रंथों में दक्ष प्रजापति का आशय/अर्थ 'यज्ञ' से लिया गया है। जो निराकार रूप में स्वीकार है तथा पुराणों में साकार रूप में माता सती के पिता महाराजा दक्ष प्रजापति के रूप में स्वीकार किया गया है।
8. वेदों में प्रजा का आशय समस्त प्राणी जगत् से लिया गया है और जो उसका स्वामी (पति) है वही प्रजापति देवता है अर्थात् समस्त प्रजा के स्वामी को प्रजापति कहा गया है।
9. वेदों के शब्दकोष जानने के लिये एवं शब्दों का इतिहास जानने के लिये निरुक्त, निघण्टु, व्याकरण शास्त्र जानना आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. ऋग्वेद भाष्य– महर्षि दयानंद सरस्वती।
2. यजुर्वेद भाष्य–महर्षि दयानंद सरस्वती।
3. प्रजापति का तत्व दर्शन–डॉ. ईश्वरलाल प्रजापति।
4. श्री प्रजापति दक्ष स्मृति ग्रंथ–डॉ. ईश्वरलाल प्रजापति।
5. उपनिषद् रहस्य–स्व. श्री महात्मा नारायण स्वामीजी महाराज।
6. सत्यार्थ प्रकाश–आर्य समाज।
7. शब्द–रुपावली–पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक।

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

मालवी बोली की कहावतें

डॉ. विनय शर्मा *

* सहायक प्राध्यापक, प.म.ब. गुजराती वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना - भावों की अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम भाषा है। लिखकर, बोलकर या संकेतों के द्वारा अपनी भावनाओं और विचारों को व्यक्त किया जाता है। भाषा सम्प्रेषण के यही तीन रूप हैं, लेकिन जैसे-जैसे भाषा का विस्तार होता है, उसके लिखित और मौखिक दोनों रूपों में भिन्नता आने लगती है। ऐसी स्थिति में शिष्ट तथा सुशिक्षितजन द्वारा व्यवहार में लाया जानेवाला भाषा का लिखित या लिपि-रूप ही मानक रूप कहलाता है। इस संबंध में डॉ। भोलानाथ तिवारी का कहना है कि भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम सोचते हैं तथा अपने विचारों को व्यक्त करते हैं।

भाषा शब्द संस्कृत की भाष धातु से बना है जिसका अर्थ है बोलना। अगर बोलने की बात करें तो भारत में हिन्दी बोलने वालों की संख्या सर्वाधिक है। यही हमारे देश की प्रमुख भाषा है। हिन्दी की लिपि देवनागरी है जो एक वैज्ञानिक लिपि है। इन्हीं सब कारणों से 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को राजभाषा का सम्मानित पद दिया गया और संविधान में संवैधानिक मान्यता प्राप्त 18 भाषाओं में हिन्दी भाषा को भी शामिल किया गया, लेकिन बड़े दु:ख की बात है कि इतना सब होने पर भी हमारी हिन्दी राष्ट्रभाषा का दर्जा न पा सकी और आज भी संघर्षरत है।

क्षेत्रीय बोली शौरसैनी अपभ्रंश से विकसित हिन्दी भाषा की कई उपभाषाएँ हैं जिसमें एक नाम है पश्चिमी हिन्दी। इसकी भी कई बोलियाँ हैं जिसमें एक बोली है खड़ीबोली। यह खड़ीबोली हिन्दी ही उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की लेखन और बोलचाल की भाषा है। अगर साफ तौर पर कहें तो लेखन की भाषा और बोलचाल की भाषा में फर्क होता है। बोलचाल का बेतरतीब लहजा ही बोली का रूप धारण करता है जो बाद में भाषा भी बन सकता है। फिलवक्त में बता दूँ कि भाषा का क्षेत्र बहुत व्यापक होता है जबकि बोली एक सीमित क्षेत्र में बोली जाती है। एक भाषा के अंतर्गत कई बोलियाँ और एक बोली के अंतर्गत कई उपबोलियाँ हो सकती हैं। बोली का संबंध ग्राम या मंडल से होता है। बोली को तभी तक बोली कहा जाता है जब तक कि उसे साहित्य में महत्व प्राप्त न हो। बोलियों के बनने का प्रमुख कारण भौगोलिक होता है। इसी वजह से मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र के बोलचाल के लहजे को मालवी बोली के नाम से जाना जाता है। मालवी में कहा गया है कि **बारा कोस पे बानी बदले पाँच कोस पे पानी**।

वर्तमान में मालवा विन्ध्य पर्वत श्रेणी के उत्तर में फैला एक विस्तृत पठार है। इसके अंतर्गत सम्पूर्ण पश्चिमी मध्यप्रदेश और उसके सीमावर्ती पूर्वी राजस्थान के कुछ जिले शामिल हैं जहाँ मालवी बोली बोली जाती है। इसकी सीमारेखा को लेकर मालवा क्षेत्र में एक दोहा प्रचलित है।।

इत चम्बल उत बेतवा मालव सीम सुजान

दक्षिण दिसि है नर्मदा यह पूरी पहचान

वस्तुत: अवन्ती जनपद (उज्जैन) में मालवगण की सत्ताा होने के कारण यह क्षेत्र मालवा कहलाया। यही कारण है कि मालवी का केंद्र भी उज्जैन और इंदौर ही है। इस क्षेत्र में आदर्श मालवी बोली जाती है। हालाँकि मालवी की कुछ उपबोलियाँ भी हैं जैसे रजवाड़ी, सोंधवाड़ी, उमठवाड़ी और भीली। मालवी बहुत ही मीठी बोली है। इसमें काफी मात्रा में लोक-साहित्य रचा गया है। कथा-वार्ता, गाथा, गीत, नाट्य, पहेली और लोकोक्ति के माध्यम से मालवा की संस्कृति को समझा जा सकता है।

अभी हम सिर्फ लोकोक्ति की बात करते हैं। अगर भाषा की समृद्धि और सभ्यता का विकास देखना है तो वह मुहावरों, लोकोक्तियों और कहावतों में देखा जा सकता है। मुहावरा (IDIOMS) मूलत: अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है बातचीत या अभ्यास जबकि लोकोक्ति (PROVERB) का अर्थ है जनसामान्य द्वारा प्रयोग में लाया जानेवाला कोई परम्परागत कथन। कहावत (PHRASE) है कही हुई बात, लेकिन हर कही हुई बात कहावत नहीं होती है। जब जीवन के दीर्घकाल के अनुभव को छोटे वाक्यों में कहा जाता है तो वह कहावत कहलाती है। कहावत को ही मालवी में केनावत या ओखाण या केवाड़ा कहते हैं।

सामाजिक जीवन के सुख-दु:ख के तमाम अनुभवों को मालवी की केनावतों या कहें कहावतों में बड़ी खूबसूरती से बयाँ किया गया है। जैसे एक कहावत है **फोड़ा पड़ना** यानी मुसीबत आना।

इसी प्रकार नीति, कृषि, स्वास्थ्य, परम्परा और सामाजिक रीति-रिवाजों पर कई कहावतें मालवा क्षेत्र में समय-समय पर सुनी जा सकती हैं। मालवा क्षेत्र के उन बुजुर्गों को अवश्य ही दाद देना पड़ेगी जिनके व्यापक अनुभव ने आगे की पीढ़ी को जीने की सही राह बताई है। उनके अनुभवों से निकली तमाम कहावतों का थोड़ा आनंद लें।

एक कहावत तो मालवा के सन्दर्भ में ही है। **मालव माटी गहन गंभीर डग-डग रोटी, पग-पग नीर**.

1. **मूर्ख व्यक्ति** को लेकर मालवी बोली में कहावतों का पहाड़-सा खड़ा है। -

अक्कल को ढांढो - निरा गँवार आदमी। अर्थात जिस व्यक्ति में ढांढे (पशु) जितनी बुद्धि हो उसके लिए यह कहावत बोली जाती है।

डाँस, मकोड़ा, अजाण नर टूटे पण छूटे नी - डाँस और मकोड़ा जब शरीर से चिपक जाते हैं तो वे फिर निकलते नहीं हैं चाहे उनके दो टुकड़े क्यों न हो जाएँ। ठीक उसी प्रकार अजाण या मूर्ख व्यक्ति होते हैं जो अपनी जिद में स्वयं का ही नुकसान कर बैठते हैं।

घोंघा बसंत – ऐसा मूर्ख जो अपना भला बुरा न जानता हो।

रामाजी – भोला परन्तु मूर्खतापूर्ण हरकतें करने वाला आदमी।

रामाजी रइग्या नी रेल जाती री – वैसे तो ये मालवी कवि श्री आनंदराव दुबे की कविता का शीर्षक है, लेकिन ये अब एक लोकोक्ति बन गया है। इसमें बताया गया है कि श्री रामाजी यानी वही भोला किन्तु मूर्खतापूर्ण हरकतें करने वाला व्यक्ति रेल के आ जाने पर भी सतर्क नहीं हो सका। आखिरकार ट्रेन चली गई और वह खड़ा ही रह गया। तो जो अपना काम ठीक प्रकार से न कर सके उस तरह के प्राणी के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

गेली ग्यारस – ऐसा व्यक्ति जो ज्ञान शून्य हो। रामाजी टाइप।

गँवार खा मरे के उठा मरे – गँवार व्यक्ति कोई भी काम करे वह स्वयं की हानि तो करेगा ही दूसरे को भी अपने लपेटे में ले लेगा।।

2. बात को **बढ़ा–चढ़ाकर कहने** या **व्यर्थ की डींगें हाँकने** वालों के लिए भी मालवी बोली में कहावतों का खजाना भरा पड़ा है।

ढपोर शंख – इस कहावत को लेकर मालवा क्षेत्र में एक कहानी प्रचलित है जिसमें एक आदमी को कहीं से एक ढपोर नाम का एक शंख मिलता है जो सिर्फ काम पूरा करने या इच्छित वस्तु देने का वादा करता है, किंतु देता कभी नहीं। जब इस प्रकार से कोई ऊँची–ऊँची छोड़ता है तब ऐसे आदमी को ढपोर शंख कहा जाता है।

साहुकारी भरम की बैराँ जात शरम की – साहूकार वही जो पूँजीपति हो, लेकिन कुछ न होते हुए भी जो ऐसा भ्रम फैला कर रखे कि मैं बड़ा साहूकार हूँ उसके लिए यह कहावत सौ टका सही है। वाक्य का वजन बढ़ाने के लिए यहाँ एक बात और जोड़ दी कि बैराँ (स्त्री) वही जिसके पास लाज रूपी गहना हो।

के रांड पटेल – फर्जी पदवी पाने की अभिलाषा। दरअसल गाँवों में पंचायत के प्रमुख को पटेल कहा जाता है और उसका तथा उसकी बातों का बड़ा सम्मान किया जाता है। अब जो व्यक्ति कुछ न होते हुए भी यह चाह रखता है कि सब मुझे पटेल कह कर नमस्कार करें तब ऐसे झूठे आदमी के लिए यह कहावत कही जाती है। मजेदार बात यह है कि इसकी शुरुआत वह अपनी पत्नी से ही करता है। वह उससे कहता है कि तू मुझे पटेल कहा कर।

फाक सुपदंड घोण से की तनखा – अपने आप को किसी बड़े पद पर बताना और मूँछों पर ताव देते हुए घूमना कि मैं ये हूँ मैं वो हूँ जबकि हकीकत यह है कि प्राप्त तनख्वाह से घर चलाना भी मुश्किल हो रहा है। घर में भले ही फाके पड़ रहे हैं, लेकिन शान जो दिखाना है।

उधारी भोई नचावे – भोई एक नाटक कंपनी को कहते हैं जो गाँव–गाँव घूमा करती थी और गाँव का धनी आदमी अपने पैसे से भोई नचवाता था, लेकिन जो व्यक्ति झूठी शान दिखाने के खातिर भोई नचाने के लिए उधार तक ले लेता था तब यह कहावत कही जाती थी। बाद में हर ऐसा व्यक्ति जो दिखावा करे उसके लिए यह कहावत कही जाने लगी।

मरद का दीवाला मसाण में – समाज में स्वयं को प्रतिष्ठित दिखाने के लिए जब कोई व्यक्ति कर्ज में डूब जाता है और चारों तरफ से बुरी तरह फँस जाता है तब कहा जाता है कि मरद का दीवाला मसाण में यानी ये झूठी शान ही उसकी मौत का कारण बनेगी।

मियाँ तो के मियाँ पिंजारा के हम भी मियाँ – यह कहावत व्यक्ति का वृथा स्वाभिमान बताने की ओर संकेत करती है। हैसियत न होते हुए भी श्रेष्ठ होने का भ्रम पाले रखना।

ओछी पूँजी ने अजवाँ में हाथ – यहाँ भी बात वही है यानी आमदनी अठन्नी और खर्चा रुपया।

घर में पड़े फाँका, बाबूजी फरे बाँका – घर में तो खाने तक के लाले पड़ रहे हैं, लेकिन इस बात की चिंता किए बिना ही घर का मुखिया लोगों से स्वयं को मालदार होने का ढिंढोरा पीटता फिरता है। फाँका (कमी) होने के बावजूद बाँका यानी छैल–छबीले बनकर घूमते फिरना।

घर का तो घट्टी चाटे ने पड़ोसी के आटो मेले – यानी हालत तो ऐसी है कि घर के लोगों को जरा भी आटा नसीब नहीं, लेकिन दूसरों को आटा मेलने (दान करने) के वादे किए जा रहे हैं। व्यर्थ की उदारता का दिखावा करने पर उक्त कहावत सटीक बैठती है।

3 व्यक्ति के बुरे काम पर मालवी बोली का अंदाज भी देखें।

चोरी को माल मोरी में –बुरा काम करके कमाया हुआ धन ठीक उसी तरह खर्च हो जाता है जैसे मोरी (बाथरूम) में बहाया गया पानी।

बोयो पेड़ बबूल को तो आम काँ से होय – यानी कर्म ही इतने बुरे हैं कि उसका परिणाम तो बुरा होना ही है। जब दूसरों की राह में कांटे बिछा ढोगे तो फिर उससे भलाई की उम्मीद रखना बेकार ही है।

अपनी माँ के कोई डाकण नी के – प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सभी वस्तुएँ और आदतें प्यारी होती हैं चाहे वे खराब ही क्यों न हों। अर्थात अपनी बुराइयों को नजरअंदाज करना।

माल मामा को ने खटपट भाणजा की – यहाँ यह सन्देश है कि दूसरे की दौलत पर बुरी नजर रखना। इस कहावत को रिश्तेदारी से जोड़ा गया है क्योंकि धोखा हमेशा अपने नजदीक का ही व्यक्ति देता है और मामा भांजा का सम्बन्ध बहुत ही पास का है।

काला भेले गोरो बैठे रंग नी तो गुण तो बदले –इसे कहते हैं संगत का असर। यहाँ काला रंग बुराई और गौरा रंग भलाई का प्रतीक है। यानी बुरे व्यक्ति के भेले (साथ) कोई भी रहे बुराई तो साथ लाएगा ही।

आंधो मूते जग देखे ऊ समझे कोई नी देखे – अपनी बुराई न देखना। हर व्यक्ति यही समझता है कि मुझमें कोई बुराई नहीं है जबकि दूसरों को आप में कई बुराइयाँ दिख जाएँगी।

खजूर से तो खोड़िया ही हिटे – खजूर के पेड़ की पत्तियाँ जब सूख जाती हैं तो वे कड़क और नुकीली हो जाती हैं जो काफी नुकसान पहुँचा सकती हैं। इन्हें ही खोड़िया कहते हैं। हालाँकि ये बात और है कि इन पत्तियों से दैनिक उपयोग की कई चीजें बनाई जाती हैं, लेकिन इसके बुरे पक्ष को आधार बनाकर यह कहावत बनाई गई है जिसका आशय यह है कि बुरे व्यक्ति के पास तो बुराई ही मिलेगी।

डाकण भी एक घर छोड़े है – चाहे कितनी ही बुराइयाँ आप में हों लेकिन मन का एक कोना तो ऐसा जरूर होता है जिसमें भलाई करने का भाव छिपा होता है। या ऐसा कहें कि आप कितने भी बुरे क्यों न हों, लेकिन उसका बुरा तो आप कभी नहीं करेंगे जो आपको अपना समझता हो। यह शायद भ्रम भी हो सकता है।

बाप के बाप नी के तो पड़ोसी के काकाजी कदे केवेगो – यह कहावत ऐसे लोगों के लिए है जो एहसान फरामोश हैं। इतने कि अपने पिता का भी बुरा कर बैठते हैं। जब पिता को नहीं छोड़ा तो दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करने की उम्मीद भी बेकार है।

रांड से रंडवा भला ने टूटी जूती से उबाना भला – चरित्रहीन पत्नी होने से अच्छा है कि कुँवारे रहें और टूटी हुई चप्पल पहनने से अच्छा है कि नंगे पैर ही रहें। कहने का आशय यह है कि तमाम बुराइयों से दूर रहने में ही सबकी भलाई है।

महादेव जी का औगण तो नान्दियो ही जाने – महादेव जी के अवगुण तो नंदी ही जानता है अर्थात हर व्यक्ति में कुछ न कुछ बुराई अवश्य होती है, पर उसकी उन बुराइयों को तो वही जानता है जो उसके नजदीक रहता है।

4. मुसीबत के मारों को लेकर भी मालवी में बहुत कुछ कहा गया है।

नींद बेची ने उजरको मोल लेनो –आगे बढ़कर आफत में पड़ना। बेहतर स्वास्थ्य के लिए नींद बहुत जरूरी है और जब निश्चिंतता होती है तभी नींद आती है। अब जो व्यक्ति सामने से मुसीबत मोल ले ले तो उसका क्या किया जाए। यही कहावत उसके काम की है।

ओखली में माथो देनो – लकड़ी का एक पात्र जिसमें धान कूटा जाता है। जिससे कूटते हैं उसे मूसल कहते हैं और जिसमें कूटते हैं वह कहलाती है ओखली। जब ओखली में धान डलता है तो मूसल उसे कूटना शुरू कर देता है। कोई व्यक्ति जब जानबूझकर मुसीबत में पड़ता है तो कहा जाता है कि ओखली में माथो देनो। वैसे पूरी कहावत तो ये है कि ओखली में माथो दियो तो मूसल से कई डरनो।

बढ़ ले बढ़ी भेरू आयो –जब अचानक से बड़ी मुसीबत आ जाती है तो छोटी मुसीबत को बाय–बाय कहने के लिए ये जुमला कहा जाता है।

दुबला नी रीस घणी – रीस यानी गुस्सा। दुबला व्यक्ति जब मुसीबत में पड़ जाता है तब क्रोध बहुत करता है। यहाँ दुबला का अर्थ सिर्फ शारीरिक रूप से कमजोर ही नहीं बल्कि ऐसा व्यक्ति जो आर्थिक और समाजिक स्तर पर भी कमजोर हो। अपना हक न मिलने पर बार–बार क्रोधित होता रहता है।

दुबला के दो असाढ़ – ऐसा कहा जाता है कि स्वास्थ्य की दृष्टि से आषाढ़ का महीना ठीक नहीं रहता है लिहाजा सेहतमंद आदमी तो कुशल से रह सकता है, लेकिन दुबले व्यक्ति को स्वास्थ्य संबंधी मुसीबतें आ सकती हैं। फिर ऊपर से दो आषाढ़। आशय यह है कि कमजोर व्यक्ति पर मुसीबतों का पहाड़ ज्यादा टूटता है। एक मुसीबत से छूटे नहीं कि दूसरी तैयार।

चमार गंगाजी गयो तो डेंडकी माथा पे धर लायो – सताया हुआ आदमी कहीं भी जाए वह हर जगह सताया ही जाएगा। यहाँ चमार या मोची सबसे ज्यादा सताए हुए व्यक्ति का प्रतीक है। वह जब गंगा जी जैसी पवित्र जगह जाता है तो वहाँ से भी सिर पर मेंडक बैठाकर ले आता है यानी वहाँ से भी मुसीबत साथ ले आता है। अब ऐसे आदमी को मुसीबतों का मारा नहीं कहें तो और क्या कहें?

आग खावे ने अंगारो मूते – जब दूसरों के लिए कोई व्यक्ति बड़ी मुसीबत बनकर खड़ा हो जाए तब ऐसे व्यक्ति के लिए यह कहावत बोली जाती है, लेकिन इस कहावत को तभी सुना गया है जब कोई बच्चा बहुत अधिक शैतानी या मस्ती कर रहा हो।

जे का घर नी हो बाड़ो ओको बड़ो फजीतवाड़ो, जो नी ले बात को आड़ो ओको भी फजीतवाड़ो – यहाँ यह स्पष्ट है कि जिसके घर बाड़ा या कहें बाउंड्रीवाल नहीं होगी उसके पास किसी न किसी प्रकार की मुसीबतें आती ही रहेंगी। उसी प्रकार जो बात का आड़ा नहीं लेगा यानी सबकी हर बात मानने लगेगा तो उसे भी परेशानी तो होगी ही। कहने का तात्पर्य यह है कि न करना भी सीखें।

5. जो **उपकार नहीं मानते** उन्हें आप क्या कहेंगे। जरा देखें।

खाय माटी का ने गीत बीरॉं का गाय –खाते तो माटी यानी पति की कमाई का, पर गुणगान करते है बीरॉं (भाई) का। हैं न एहसान फरामोश।

भाई, भतीजा, भाणजा, बैपारी और सुनार

इनका साथ कित्ताई करो ई नी माने उपकार –यह कहावत है कि कुछ लोग ऐसे नामजद हैं जो कभी उपकार नहीं मानते हैं जैसे सौतेला भाई, भतीजा, भानजा, व्यापारी और सुनार। विदित हो कि कहावतें अनुभवजन्य होती हैं और अनुभव किसी एक व्यक्ति का भी हो सकता है जो गलत साबित किया जा सकता है।

कटी आंगली पे नी मूते – गाँवों में ऐसी मान्यता है कि अगर शरीर पर कहीं कट जाए और खून निकलने लगे तो अपनी ही पेशाब लगा लेने से खून बहना बंद हो जाता है। इसी विज्ञान को आधार बनाकर यह कहावत बनी है शायद, लेकिन इस कहावत का अर्थ है कि संकट में भी साथ नहीं देना।

6. ऐसे व्यक्ति जिनका **अपना कोई व्यक्तित्व नहीं** है और जो सबकी हाँ में हाँ मिलाते हैं। वे निराश न हों उनके लिए भी मालवी कहावतों के माध्यम से बहुत कुछ कहा गया है।

बिना पींदा को लोटो –ऐसा आदमी जिसकी अपनी कोई सोच न हो। जैसे बिना पेंदे का लोटा इधर–उधर लुढ़कता रहता है ऐसे ही बिना व्यक्तित्व का आदमी भी लुढ़कता रहता है। कभी इधर तो कभी उधर।

लाड़ा–लाड़ी दोई ने हँपड़ावे – विवाह समारोह के दैरान कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिनकी रिश्तेदारी दोनों तरफ से होती है। वे लोग इधर भी रस्म अदायगी करते हैं और उधर भी करते हैं तब कहा जाता है कि ये तो दूल्हे को भी हँपड़ाएँगे (नहलाएँगे) और दुल्हन को भी। यानी दोनों तरफ, लेकिन इस कहावत का अर्थ बस इतना ही नहीं है। इसमें उस व्यक्ति की ओर संकेत है जिसका अपना कोई पक्ष न हो। वह दोनों पक्षों की हाँ में हाँ मिलाता है। ऐसी दो कहावतें और हैं जिनका भी भावार्थ यही है। **राम जी की भी जै ने रावण की भी जै** और **भरतपुरी लोटो**।

7. **आलसियों** पर तो क्या खूब कहा है।

धड़ीभर को माथो हिलावे पन जीब से नी बोले – धड़ी माप का एक पैमाना है। एक धड़ी बराबर करीब 10 किलो। किसी प्रश्न के उत्तर में यदि कोई बोलता नहीं है और सिर्फ सिर हिलाता है तब यह कहावत बोली जाती है। क्योंकि तुलनात्मक रूप से सिर का वजन अधिक होता है और जब आप इतना भारी सिर हिला सकते हो तो जबान हिलाने में क्या परेशानी है? दरअसल आलस से भरपूर लोगों के लिए ये कहावत है।

तू राणी मूँ राणी कुन भरे परेंडा से पाणी – सब आलसी। अगर तू रानी है तो मैं भी रानी हूँ अब बता कुएँ से कौन पानी भरेगा? यानी कोई नहीं। किसी को कोई काम करना ही नहीं है।

गाड़ी देखी ने पग भारी होय –जहाँ साधन उपलब्ध होते हैं वहाँ व्यक्ति प्रयत्न नहीं करना चाहता है। जैसे पैदल चलने की बात हो लेकिन वाहन खड़ा हो तो कौन पैदल चलना चाहेगा।

पूछबा वालो कदी नी डोटाए –आजकल तो रास्ता पता करने के लिए गूगल मेप का सहारा लिया जाता है, लेकिन पहले पूछ–पूछकर चलने की परम्परा थी। इसी आधार पर यह कहावत रची गई है। यानी हर गली या हर चौराहे पर बार–बार पूछकर चलने वाला व्यक्ति कहीं भी डोटाता (भटकता) नहीं है।

पूछता–पूछता तो गंगा जी चल्या जाए – यानी पूछ–पूछकर तो गंगाजी तक जा सकते हैं लेकिन अगर पूछने का आलस कर बैठे तो फिर।।

आलस और नींद करसाण के खोवे – किसान के सिर्फ दो ही शत्रु हैं आलस्य और नींद।

8. **लालची** और **संतोषी** लोगों की तो बात ही अलग है।

डाकण बेटा ले के दे – ऐसे लोग जो लोभवश हमेशा लेने का ही मन रखते

हैं देने का कभी नहीं उनके ऊपर ये कहावत चरितार्थ होती है।

लेड़ी खावे कि लावणो बाँट – लेड़ी यानी ऐसी महिला जो लालची हो। उसके मन में कभी भी बाँटने का खयाल नहीं आएगा। सार यह है कि स्वार्थी मनुष्य कभी भी दूसरों का भला नहीं कर सकता है।

भली म्हारी टाटी जे में मिले घी बाटी –संतोषी व्यक्तियों पर यह उक्ति फिट बैठती है। मुझे तो मेरा छोटा–सा घर ही प्यारा है जिसमें घी–बाटी यानी अच्छा खाने को मिल जाता है।

9. **कृषि** और **स्वास्थ्य** पर भी कहावतों की बहार है।

माघ माह जो परे न सीत, महँगा नाज जानियो मीत –इसमें साफतौर पर यह कहा गया है कि यदि माघ (जनवरी) के महीने में पर्याप्त ठण्ड नहीं पड़ी तो अनाज का उत्पादन कम हो जाएगा। अगर ऐसा हुआ तो निश्चित तौर पर महँगाई भी बढ़ जाएगी।

काला बादला जीव डरावे

भूरा बादला पाणी लावे – बहुत अधिक काले बादल सिर्फ डराने का काम करते हैं। बारिश तो हलके भूरे बादल ही करते हैं। यानी **ऊँची दुकान और फीके पकवान।**

चलना भला न कोस बरसात का बेटी भली न एक –पक्की सड़कें आज हैं, लेकिन तब बारिश होने पर कीचड़ में एक कोस चलना भी दुश्वार था। बेटियों का सम्मान आज है, लेकिन तब एक लड़की भी बोझ समझी जाती थी।

हाजी हांडे कई आँकड़ो दे –आँकड़ा एक प्रकार की दवा भी है। जब किसी स्वस्थ आदमी को कोई स्वस्थ रहने के गुर सिखाता है तब यह ऐसा कहा जाता है।

पाणी पीवे धाप नी लागे लू की झाप – गरमी के मौसम में यदि भरपूर पानी पी लिया जाए तो फिर लू लगने का डर नहीं रहता है।

रोग की जड़ खाँसी ने लड़ाई की जड़ हाँसी – आयुर्वेद में कहा गया है कि बिमारी की जड़ खाँसी है। यदि स्वस्थ रहना हो तो खाँसी होते ही उसका उपचार तुरंत करना चाहिए। इसी प्रकार मित्रता या संबंध भंग होने के कई कारणों में प्रमुख है किसी की शारीरिक रचना, कार्य या व्यवहार को देखकर हँसना।

10. नीति संबंधी अन्य केवाड़ा।

i. बिना परिश्रम किए ही श्रेय ले लेने में कैसा संकोच।

खोद–खोद मरे ऊँदरो ने जा बैठे भुजंग – किसी की मेहनत का फल जब किसी और को मिलता है तब ऐसा कहा जाता है। ऐसा अक्सर देखा गया है कि कोई चूहा बड़ी मेहनत से मिट्टी खोद–खोदकर अपने रहने के लिए बिल बनाता है और उसमें जाकर बैठ जाता है भुजंग यानी साँप।**मांडना पे टपकी देनो** – गाँवों में कच्चे घरों को गोबर से लीपने के बाद खड़िया या गेरू से मांडना बनाने की प्रथा आज भी है। यह बड़ी मेहनत का काम है, लेकिन जब मांडना कोई और बनाए और उस मांडने पर टपकी (बिंदु) कोई और लगाए और कहे कि यह मांडना मैंने बनाया है तब यह बात कही जाती है। मतलब यह कि काम का श्रेय कोई और ले ले।

ii.जानते–बूझते संकट में कैसे पड़ते हैं देखिए।

घण जोता, बेटी घणा, गामे गाम उधार

ई अपनी करनी से मरे, इने नी मारे करतार – जिसके पास बहुत अधिक जमीन हो, जिसकी बहुत–सी बेटियाँ हों और जिसने जगह–जगह से उधार रकम ले रखी हो तो ऐसे लोग अपने कर्मों से ही मर जाते हैं इन्हें ईश्वर नहीं मारता है। अपना नुकसान स्वयं कर बैठने पर ऐसा कहा जाता है।

ऐंच के बाँथे पागड़ी खेंच के काटे नुख

बिन घर देखे ब्यावे बेटी ई तो हाथ का करिया दु:ख – बहुत अधिक खींचकर पगड़ी बाँधने, बहुत अन्दर तक के नाखून काटने और बिना घर देखे बेटी की शादी कर देने से बाद कष्ट होता है। इस काम के लिए आप ही दोषी हैं दूसरा नहीं। ऐसा करने से पहले सोचना था।

iii. विवाह कहाँ करें? समझें इन कहावतों से।

बेटी दीजो जान के पानी पीजो छान के – स्पष्ट है कि पानी यदि छानकर पीयेंगे तो वह स्वास्थ्य के लिए उत्ताम रहेगा ठीक उसी प्रकार जिस घर में बेटी का ब्याह करना है उस परिवार को पहले ही देख परख लेंगे तो बाद में फोड़ा नी पड़ेगा।

बड़ा घरे बेटी दी अबे मिलबा का साँसा –कहने का तात्पर्य यह है कि रिश्तेदारी बराबर वालों के साथ करना चाहिए वरना वह दु:ख का कारण बन सकती है।

हाथ जोड़बा से डोकरा नी परने – चाहे कितनी ही मिन्नतें कर लो, पर बुजुर्ग की शादी नहीं हो सकती अर्थात ये कहावत ऐसे व्यक्ति के लिए है जो अयोग्य हो। कितना ही प्रयास कर लो वह अयोग्य ही रहेगा।

iv. अपने कर्तव्य का निबाह करना कितना आवश्यक है इस बात को कहावतों के नजरिये से जानें।

दूध ने पूत नजर हटताँ ही गया – चूल्हे पर गरम करने के लिए रखे हुए दूध और अपने वयस्क होते पुत्र पर से अगर थोड़ी देर के लिए भी नजर हटा ली तो सब गड़बड़ हो जाएगा। दूध उफन कर बाहर आ जाएगा और पुत्र के बिगड़ जाने का अंदेशा है। तात्पर्य यह है कि कर्तव्य पालन में चूक न होने दें।

भड़ जी तो भटा खाए ने दूसरा के परेज बताए – यानी अपनी बात पर खुद ही अमल नहीं करना और दूसरों से उम्मीद करना। ये भी कह सकते हैं कि कोरा ज्ञान बघारना। अपना कर्तव्य भूल दूसरों को उपदेश देते फिरना।

खेती, पाती, बिनती, मोर तणी खुजाल

जो सुख चावे आपणो तो हाथों हाथ संभाल – इस कहावत का भावार्थ यह है कि दूसरों के भरोसे न रहकर अपने कर्तव्य का पालन आप स्वयं ही करें। यह कहावत बहुत ही अनुभवजन्य है। अगर अपनी खेती आपने किसी और के हवाले कर दी तो उसके बिगड़ जाने का अन्देशा है। दूसरा उतनी अच्छी देखभाल नहीं कर सकेगा जितनी आप खुद। मालूम हो कि पहले पत्रों के माध्यम से ही संदेशा पहुँचाया जाता था और कोशिश यही रहती थी कि हमारा पत्र हम ही पोस्ट करें। यदि किसी और को पत्र दे दिया तो हो सकता है वह पोस्ट ही न करे या देर से करे। ऐसे में आपका सन्देश देर से पहुँचेगा। ये भी तो हो सकता है कि वो चिट्ठी खोलकर पढ़ ले। बात लीक हो सकती है। इसी प्रकार है विनती यानी प्रार्थना। यदि ये काम किसी और को दे दिया तो पता नहीं वह किस लहजे में बात करे और आपका काम न हो पाए। अंत में है मोर तणी खुजाल अर्थात पीठ की खुजाल, अगर ठीक जगह पर ही खुजाना हो तो यह काम आप से अच्छा दूसरा कभी नहीं कर पाएगा। इसलिए सुखी रहना हो तो ये सारे काम खुद ही करें।

V. **अन्य महत्वपूर्ण केनावतें**

घणा पटेलिया बगड़े गाम – जहाँ एक से अधिक पटेल अर्थात मुखिया होंगे वहाँ किसी काम के ठीक से होने की संभावना कम है क्योंकि सभी अपनी–अपनी जिद पर अड़े रहेंगे ऐसे में कार्य की कोई ठोस योजना बन ही नहीं पाएगी।

बाप ने तो मारी नी मेंडकी ने बेटो तीरंदाज –जब कोई व्यक्ति अपनी

क्षमता से अधिक या कोई अनूठा काम करना चाहता है तब यह कहावत सामने आती है।

गाड़ी ने लाड़ी देवा की नी वे – गाड़ी और लाड़ी (पत्नी) देने की वस्तु नहीं है। इस बात को संस्कृत में जरा इस तरह से कहा गया है – **लेखनी, पुस्तकम, नारी पर हस्ते न गता गतम।** वर्तमान जीवन शैली को देखते हुए इस लिस्ट में गाड़ी को भी शामिल कर लिया गया है।

आग बिना धर राख तमाकू पाग बिना धर राख झगा
प्रीत बिना धर राख लुगाई रीत बिना धर राख सगा – सब एक दूसरे के पूरक हैं। यदि चिलम में आग नहीं हो तो तम्बाकू किसी काम की नहीं, यदि सिर पर पगड़ी नहीं तो अन्य दूसरे वस्त्रों का कोई महत्व नहीं, ऐसे सगे क्या काम के जो रीत निभाना न जानते हों और वह पत्नी ही क्या जो पति को प्यार न दे सके।

गुड़ खाए ने गुलगुला से परेज करे – मेरे एक मित्र हैं जो बकरा खाते हैं, पर बिना प्याज का। इस कहावत का अर्थ अब आप समझ गए होंगे।

फूट्या करम फकीर का भरी चलम ढुल जाए – भाग्यहीन लोगों के लिए यह कहावत है। कोई कितने ही खजाने के दरवाजे आपके लिए खोल दे, लेकिन अगर आपके भाग्य में नहीं है तो उसमें से आपको कुछ नहीं मिलेगा।

एक दन को पावनो दूसरा दन को पई
तीसरा दन थारी मति काँ गई – सिर्फ एक दिन के लिए जो आता है वह पावना या मेहमान कहलाता है। यदि दूसरा दिन हो जाए तो उसकी कीमत पाई के बराबर की हो जाती है यानी बहुत कम और तीसरे दिन तो उसे पागल ही घोषित कर दिया जाता है।

नीवरो नान्दियो – फालतू, बेकार और निठल्ले व्यक्ति को कहा जाता है।

काण्या ढोली के एकज डंको –जो व्यक्ति अपनी ही जिद पर अड़ा रहे और एक ही बात की रट लगाए रखे तब यह बात कहते है।

बनिया मित्र न वेश्या सती, कागा हंस न गधा जती – यहाँ बनिया किसी जाति का न होकर ऐसे व्यक्ति का प्रतीक है जो कंजूस हो। कंजूस कभी किसी का मित्र नहीं बन सकता है क्योंकि उसका पूरा ध्यान पैसा बचाने में ही लगा रहता है। ऐसा मित्र आड़े वक्त में कभी मित्रता नहीं निभा पाएगा। वेश्या या चरित्रहीन स्त्री भला क्यों सती होने लगी? कौवा कितना ही मलमल के नहा ले वह हंस नहीं बन सकता है और गधा या अनपढ़ कभी साधु नहीं बन सकता है। प्रवचन देने मात्र से कोई साधु नहीं हो जाता है।

भण्या पण गुण्या कोनी – भण्या यानी पढ़ लिख तो लिए पर गुण नहीं के बराबर हैं अर्थात व्यावहारिकता का अभाव।

पइसा अंट ने विद्या कंठ –बैंक का प्रचलन होने से पहले की यह कहावत है कि पैसा वही जो अंट (जेब) में हो और विद्या वही जो कंठस्थ हो। दोनों कब काम आ जाए।

चलनो राह को भले ही फेर हो ने सगो भाई को भले ही बैर हो – आजकल लोग अकसर शार्टकट का उपयोग करते हैं और किसी न किसी मुसीबत में पड़ जाते हैं। उन लोगों के लिए ये कहावत है कि हमेशा सही और सीधे रास्ते पर ही चलना चाहिए चाहे रास्ता कितना ही लंबा क्यों न हो। इसी प्रकार सगे भाई से बढ़कर कोई नहीं हो सकता है चाहे उससे थोड़ा बहुत मनमुटाव ही क्यों न हो।

माँ पे पूत पिता पे घोड़ो घणो नी तो थोड़ो–थोड़ो –यह कहावत थोड़ा वैज्ञानिक आधार लिए हुए है। यहाँ ऐसा माना गया है कि मनुष्य की संतान में अपनी माता के गुणसूत्र पिता की बनिस्बत अधिक होते हैं जबकि इसके विपरीत स्थिति होती है घोड़े की। घोड़े की संतान पिता के गुणसूत्रों के करीब होती है। किसी व्यक्ति की कार्यप्रणाली को देखकर यह कहावत कही जाती थी। हालाँकि जब प्रशंसा करना हो तब भी यही कहावत और जब बुराई करना हो तब भी यही कहावत।

मनक–मनक में आँतरा कोई हीरा कोई काँकरा –प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में अनूठा होता है। कोई बहुत गुणी तो कोई बहुत गँवार।

घरे घर गारा का चूला – कोरोना काल में तो यह बात सौ फीसद सच साबित हो रही है। शब्दार्थ यह है कि हर घर में गारा (मिट्टी) के चूल्हे हैं अर्थात सब की स्थिति एक जैसी ही है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मालवी बोली कि कहावतों का फलक बहुत बड़ा है जिसमें जीवन के हर पहलू को बड़ी संजीदगी से प्रस्तुत किया गया है। जिंदगी में कहीं सुख की छाया है तो कहीं दु:ख की धूप, लेकिन प्यारी–प्यारी इन कहावतों में है इन सबका मिलाजुला संगम।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. व्यक्तिगत शोध के आधार पर।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

भारत में खाद्य सुरक्षा की स्थिति : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. सुनील कुमार चौधरी* डॉ. वन्दना मण्डलोई **

* सहायक प्रध्यापक (अर्थशास्त्र) शासकीय महाविद्यालय, महिदपुर, जिला उज्जैन (म.प्र.) भारत
** अतिथि विद्वान (अर्थशास्त्र) शासकीय महाविद्यालय, दलौदा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – वर्तमान समम में जहां एक और कृषि विकास का विकास तीव्र गति से हो रहा है। वहीं स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार तथा प्रगति में भी तीव्र देखी गई है। हरित क्रांति 1960 के पश्चात भारत खाद्यान्न उत्पादन में जहां आत्मनिर्भर के साथ गरीबी उन्मूलन की दिशा सकारात्मक पहल हुई है वहीं एक ओर सरकारी प्रयास से सभी को खाद्यान्न उपलब्ध कराने का अधिकार प्रदान किया गया है। विगत दशकों से देश में आनाज के भण्डार की क्षमता में निरंतर वृद्धि हुई हैं। वहीं पीडीस प्रणाली से कमजोर परविारों को कम कीमत पर अनाज उपलब्ध कराने की दिशा में सकारात्मक पहल हुई है। किन्तु पिछले वर्षो में भुखमरी तथा कुपोषण की स्थिति सरकार के लिए एक गम्भीर चुनौती बनीं हुई। इस गम्भीर चुनौती में कोविड़-19 महामारी संक्रमण ने देश के समक्ष भयाभय स्थिति निर्मित की हुई है। जिससे भारत के समक्ष खाद्य सुरक्षा की गंभीर स्थिति निर्मित हो गई है। लेकिन भयाभय स्थिति के बाद भी सरकार जवाबदेही के साथ सामाजवादी दृष्टिकोंण के साथ सार्थक प्रयास कर रही है जो कि प्रसशंनीय है। इसके अतिरिक्त बागवानी विकास की प्रगति से खाद्य सुरक्षा की दशा में सकारात्मक स्थिति प्रकट है। इस शोध पत्र के माध्यम से भारत में खाद्य सुरक्षा तथा पोषण की स्थिति का अध्ययन किया गया है।

शब्द कुंजी – खाद्य सुरक्षा, कुपोषण, खाद्य सुरक्षा सूचकांक, पोषण।

प्रस्तावना – भारत के कृषि क्षेत्र की लचीलता इस तथ्य से स्पष्ट है कि कोविड-19 वैश्विक महामारी के भयाभयता के बावजूद कृषि उत्पादन का प्रदर्शन अच्छा रहा है। 2011 की जनगणना के अनुसार देश की लगभग 54.6 प्रतिशत कार्यबल कृषि तथा संबधित कार्य में संलग्न है। जो देश के सकल योजित मूल्य (जीवीए) वर्ष 2019-20 में मौजूदा कीमतो पर लगभग 17.8 प्रतिशत के बराबर है। कोविड-19 की वजह से मानव जीवन गम्भीर चुनौती का सामना कर रहा है जिसमें मानव की जान-पूर्णत: जोखिम में है जिससे देश में मृत्यु दर में तीव्र वृद्धि हुई हैं। इस महामारी के रोकथाम तथा संक्रमण की श्रृंखला को तोड़ने के लिए देश की अर्थव्यवस्था तथा विकास के पहिऐ को रोक कर सम्पूर्ण भारत में लॉकडाउन लगा दिया गया है। जहां एक ओर मानव स्वास्थ्य की विशेष चिंता हो रही हैं। बल्कि व्यक्ति का जीवन तथा जीविका दोनों ही खतरे के काल के मुंह से ग्रस्त होकर सिर्फ चारो ओर मौत का तांडव छाया हुआ है। जिसके कारण देश की अर्थव्यवस्था पर घनघोर अंधकार के बादल छाये हैं। कोविड़-19 के कारण कृषि क्षेत्र में अनेक कठिनाइयों ने कृषि विकास को प्रभावित किया बल्कि अन्य क्षेत्रों के प्रदर्शन को प्रतिकूल ढंग से प्रभावित किया है। इस कारण से जहां लोग भुखमरी के शिकार हो रहे है। वहीं पौष्टिक आहार की उपलब्धता न होने के कारण कुपोषितों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। वहीं मनुष्यों में रोग प्रतिरोधक क्षमता घट रही है। इसमें कमी करने का दूसरा कारण चारों ओर से प्राप्त सामाचार में दिल दहला देने वाले समाचार से नीरसता का वातावरण बना हुआ है जो व्यक्ति के मनोबल को कमजोर करता है। इससे कार्य करने की क्षमता कम हो रही है। इसका एक कारण और देखा गया है कि देश में कोविड़ से संक्रमण की दर लगभग 14 प्रतिशत से अधिक देखी जा रही है। और देश में संक्रमण से बचने के लिए आधारभूत संसाधन, दवाईयों, ऑक्सीजन, अस्पाताल में विस्तर, चिकत्सा सुविधा ने अपनी दम तोड़ दी है। इसलिए आमजन के साथ सरकार के सामने भी कोविड़-19 सबसे बड़ी चुनौती बना हुआ है जो सरकार की व्यवस्था को उजागर कर रहा है और सभी धर्मो में भी अस्पताल और चिकित्सा सुविधा के विस्तार की ओर ध्यान केन्द्रित किया है। चिकत्सकों से परामर्श है कि कोविड़- 19 वायरस के संक्रमण से बचने के लिए श्रृंखला को तोड़ना और मास्क के साथ साफ-सफाई प्रमुख है। संक्रमण से बचने में व्यक्ति की रोग-प्रतिरोधक क्षमता एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। मनुष्य में प्रतिरोधक क्षमता मजबूत करने में कृषि क्षेत्र के साथ बागवानी फसलों की भूमिका महत्वपूर्ण है जो देश में खाद्य सुरक्षा तथा पौष्टिक आहार की उपलब्धता प्रदान करता है।

देश में जनसंख्या के विकास के साथ, दशकों से खाद्य असुरक्षा की चिंताऍं तेजी से उभर रही हैं। वर्ष 2030 तक सतत् विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भूख को समाप्त करने में खाद्य सुरक्षा की स्थापना एक महत्वपूर्ण है। वर्ष 1990-2000 के दौरान लगातार गिरावट के बाद 2015 से कुपोषित लोगों की संख्या में वृद्धि फिर से शुरू हो गई है। ग्लोबल हंगर इंडेक्स वर्ष 2019 में भारत 117 देशों की सूची में 102 वें स्थान पर है जिसमें भारत की रैंक श्रीलंका, नेपाल, बांग्लादेश, और पाकिस्तान से भी खराब है। भारत की 14 प्रतिशत आबादी अल्पपोषित है एवं बच्चों बौनेपन की दर 37.4 प्रतिशत है जबकि विश्व में करीब 69 करोड़ लोग कुपोषित हैं। भारत ने वर्ष 2015 में सतत् विकास के लक्ष्य को 2030 तक पूरा करने का संकल्प लिया है। जिसमें 10 साल में भूख और हर प्रकार का कुपोषण खत्म करना है। कुपोषण पर 2030 तक तय लक्ष्य हासिल करना भारत के लिए नामुमकिन है। भोजन की कमी पूर्व में सूखे और अन्य प्राकृतिक आपदाऍं आदि के कारण उत्पादन में कमी होती थीं किन्तु वर्तमान वैश्वीकरण के कारण खाद्य सुरक्षा

आर्थिक मुद्दा बन गई है। भोजन की भौतिक उपलब्धता और पर्याप्त आपूर्ति अर्थिक पहुंच के संयोजन के फलस्वरूप आर्थिक मापदंडों से प्रभावित होती है। इस खाद्य आपूर्ति प्रणाली को कोविड़-19 के प्रकोप के कारण अब तक के सबसे जोरदार दबाव का सामना करना पड़ा रहा है, जिससे खाद्य आपूर्ति प्रभावित है। और खाद्य सुरक्षा तथा पौषण की स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। यद्यपि पिछले दशक में अकाल और भुखमरी को करारी शिकस्त देकर भारत ने खाद्य सुरक्षा हासिल करने में सकारात्मक उपलब्धी प्राप्त की हुई थी। किन्तु वर्तमान परिदृश्य में लॉकडाउन से खाद्य सुरक्षा पर विपरीत प्रभाव पड़ा हुआ है। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को कम कीमत पर अनाज उपलब्ध कराने के साथ-साथ सामाजिक कल्याण की अनेक योजनओं के माध्यम से विशेष रूप से बच्चों के साथ महिलाओं और आमजन को सुलभ रूप से खाद्यान्न उपलब्ध कराने की दिशा में विधियक 2013 पारित कर, लोगों को भोजन का अधिकारी प्रदान किया गया है। इसके साथ सरकार द्वारा अनेक योजनाओं के माध्य से खाद्य-सुरक्षा की दिशा में कार्य किया जा रहा है। लोगों के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में कृषि अनुसंधान तथा कृषि विकास ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कृषि विविधिकरण की दिशा बागवानी फसलों की भूमिका महत्वपूर्ण है। देश में खाद्य सुरक्षा की दिशा में सकारात्मक स्थिति को दर्शाता है किन्तु पिछले कुछ वर्षो से खाद्य सुरक्षा एक चुनौतिपूर्ण दिखाई दे रहा है। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन के अनुसार खाद्य सुरक्षा का अर्थ है, 'सभी व्यक्तियों की सभी समय पर्याप्त, सुरक्षित और पोषक आहार तक भौतिक, सामाजिक और आर्थिक पहुँच हो और जो उनके सक्रिय तथा स्वस्थ्य जीवन के लिए उनकी आहार आवश्यकताओं तथा भोजन वरीयताओं को भी संतुष्ट करें।'

अध्ययन के उद्देश्य :

1. भारत में खाद्य सुरक्षा की स्थिति का अध्ययन करना।
2. भारत में कुपोषण की स्थिति का विश्लेषण करना।
3. भारत में खाद्यान्न उत्पादन तथा उत्पादकता की स्थिति का अध्ययन करना।
4. भारत में खाद्य सुरक्षा एवं पोषण की समस्या तथा सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध प्रविधि – हमारे द्वारा शोध आलेख में द्वितीयक संमकों का उपयोग किया गया है। जिससे वैश्विक भुखमरी सूचकांक, खाद्य सुरक्षा सूचकांक, के साथ विभिन्न प्रशासनिक विभागों द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट तथा अन्य प्रकाशित दस्तावेजों से समंक प्राप्त किये गये है। इसके साथ ही यह शोध अनुभवजन्य विश्लेषण पर आधारित है। जिसमें हमने विभिन्न तथ्यों तथा समंकों का सांख्यिकीय विधि के माध्यम से विश्लेषण कर निष्कर्ष प्रतिपादित किया हैं।

विश्लेषण तथा परिणाम – भारत में विगत दो दशकों से कृषि क्षेत्र में खाद्यान्न उत्पादन में लगातार तीव्र वृद्धि उत्पादन तथा क्षेत्रफल में हुई हैं। जिससे भारत खाद्यान्न उत्पादन में आत्म निर्भरता की स्थिति की ओर अपने दृढ़ स्थिति को प्रकट कर रहा है। खाद्यान्न उत्पादन में पंजाब, तथा मध्यप्रदेश की स्थिति सबसे अच्छी देखी गई है। कृषि क्षेत्र के समग्र विकास से लोगों की खाद्यान्न संबंधी जरूरतों को पूरा किया जा सकता है। किन्तु जनसंख्या वृद्धि दर की तुलना में खाद्य की स्थिति बहुत ही कमजोर है। वहीं एक ओर बढ़ती आय के कारण लोगों की खाद्य की प्रतिरूप में तीव्र बदलाव हुआ है। जोकि वर्तमान में बागवानी विकास से लोगों को पौष्टिक आहार की दशा में अपनी मजबूत स्थिति की ओर अग्रसर हुआ है। किन्तु इन सबके बावजूद भी देश में खाद्यान्न तथा पौषण की स्थिति बहुत ही अच्छी नही कहा जा सकता है। क्योंकि देश में खाद्यान्न तथा पोषण सुरक्षा के लक्ष्य को पूरा करने में काफी चुनौतियॉं हैं जिसमें वर्तमान समय में वैश्विक महामारी कोविड़-19 के रोकथाम की दिशा में लॉकडाउन एक प्रभावशाली उपाय है किन्तु इससे देश की अर्थव्यवस्था के विकास के पहिये थमने देश में व्यापक मंदी की स्थिति निर्मित होने के कागार पर आ गई है। वहीं देश में गरीब, श्रमहीन, मजदूर तथा आमजन के जीवन पर भुखमरी के बादल छाय है। क्योंकि खाद्य वितरण प्रणाली, उत्पादन, भण्डारण के साथ खाद्य सुरक्षा के लिए चुनौतीपूर्ण बना हुआ है।

विश्व में खाद्य सुरक्षा और पोषण अवस्था संबंधी रिपोर्ट के नवीनतम संस्करण के अनुसार भारत सबसे बड़ी खाद्य असुरक्षित आबादी वाला देश है। खाद्य और कृषि संगठन एवं अतंर्राष्ट्रीय संगठनो के सहयोग से जारी रिपोर्ट में प्रस्तुत अनुमान बताते है कि वर्ष 2014 से 2019 तक खाद्य असुरक्षा का दायरा 3.8 प्रतिशत तक बढ़ गया है वर्ष 2014 के सापेक्ष वर्ष 2019 तक 6.2 करोड़ अन्य लोग भी खाद्य असुरक्षा के दायरे में आ गए है। वहीं वैश्विक महारी कोविड़-19 के कारण आर्थिक मंदी से विश्वभर में लगभग 8-13 करोड़ इस वर्ष भुखमरी के कगार पर पहुँचने की संभावना व्यक्त की गई हैं। रिपोर्ट में स्पष्ट है कि वर्ष 2014-16 में भारत की 27.8 प्रतिशत गंभीर खाद्य असुरक्षा से पीड़ित थी जबकि वर्ष 2017-19 में यह अनुपात बढ़कर 31.6 प्रतिशत हो गई है। वहीं भारत खाद्य सुरक्षा सूचकांक में वर्ष 2020 में 71 वें पायदान पर है। जिसका ओवरऑल स्कोर 56.2 है जबकि सामर्थ्य 55.00, उपलब्धता 64.3, गुणवत्ता और सुरक्षा 59 तथा प्राकृतिक संसाधन और लचीलापन 40.8 हैं। जोकि अन्य देशों की तुलना में बहुत ही गम्भीर स्थिति को दर्शाता है। भारत में खाद्य सुरक्षा की स्थिति को स्पष्ट करने में खाद्यान्न उत्पादन की स्थिति का विश्लेषण करना आवश्यक हो जाता है। क्योंकि खाद्यान्न उत्पादन से ही सभी लोगों को भोजन उपलब्ध कराने की स्थिति सुनिश्चित करना आवश्यक है जोकि यह खाद्य सुरक्षा की स्थिति का प्रमुख घटक है। भारत में खाद्यान्न अनाज की उत्पादन प्रवृति का विश्लेषण निम्न प्रकार से देखा जा सकता है।

तालिका क्रमांक 01 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

आरेख क्रमांक 01 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

तालिका 01 तथा आरेख क्रमांक 01 से स्पष्ट है कि भारत में कृषि क्षेत्र में खाद्यान्न उत्पादन की स्थिति तथा वृद्धि दर की स्थिति का विश्लेषण किया गया है। जिसमें वर्ष 2010-11 से 2019-20 तक की वास्तविक उत्पादन की स्थिति को दर्शाया गया है जबकि 2020-21 तथा 2021-22 की उत्पादन स्थिति का आंकलन किया गया है। इसका कारण है कि केन्द्र सरकार के प्रमुख लक्ष्य सतत् विकास में खाद्यान्न उत्पादन की आत्मनिर्भरता की स्थिति को स्पष्ट किया गया है। उक्त तालिका के अवलोकन में भारत में चावल के उत्पादन में 36.50 फीसदी तथा गेहूॅं के उत्पादन में 35.41 फीसदी की वृद्धि पायी गई है। वहीं कुल खाद्यान्न के उत्पादन में 48.45 प्रतिशत की ही वृद्धि हुई है। अत: वर्ष 2010-11 में कुल खाद्यान्न उत्पादन 244.49 मिलियन टन का उत्पादन हुआ है जो वर्ष 2019-20 में 296.65 मिलियन टन उत्पादन हुआ है जो कि विगत दस में 52.16 मिलियन टन उत्पादन की वृद्धि हुई है। यह वृद्धि दर खाद्यान्न सुरक्षा के लक्ष्य को पूरा करने में पर्याप्त नहीं है। अत: खाद्यान्न उत्पादन की दिशा में सकारात्मक पहल एवं नीतियों के समय पर क्रियांवयन की विशेष आवश्यकता है।

तालिका क्रमांक 02 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

तालिका क्रमांक 02 में भारत में खाद्यान्न अनाज उत्पादन की स्थिति का पूर्वानुमान स्थिति का विश्लेषण किया गया है। जिसमें वर्ष 2050 की स्थिति में भारत में खाद्यान्न उत्पादन का आंकलन किया गया है। क्योंकि सतत् विकास तथा मिलेनियम विकास के लक्ष्य के साथ स्थायी विकास की अवधारणा के लिए खाद्यान्न उत्पादन का आंकलन करना अति आवश्यक हो गया है। क्योंकि देश में बढ़ती खाद्यान्न मांग को पूरा करना केन्द्र तथा राज्य सरकारों के लिए अति–आवश्यक हो जाता है। जिससे सरकार अपनी नीतियों के माध्य से नागरिकों को खाद्यान्न सुरक्षा की ग्यांरटी प्रदान कर आकस्मिक आपदा से बचने के लिए खाद्य सुरक्षा तथा पोषक की अनिवार्यता को पूर्ण कर सकनें में सक्षम हो सकें। उपरोक्त तथ्यों का विश्लेषण के लिए वर्ष 2050 में चावल का उत्पादन 138.95 मिलियन टन, गेहूँ का उत्पादन 179.88 मिलियन टन और कुल खाद्यान्न अनाज का उत्पादन 502.66 मिलियन टन का उत्पादन औसत अनुमानित किया गया है। चूँकि देश में वर्तमान दर के आधार पर खाद्यान्न उत्पादन की स्थिति बहुत ही गंभीर है क्योकि 2050 तक देश में 33.3 करोड़ टन खाद्यान्न उत्पादन की जरूरत को पूरा करने में सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती है। यह चुनौति वर्तमान वैश्विक महामारी ने और भयाभय स्थिति को निर्मित किया है। इस महामारी की स्थिति उभर कर अर्थव्यवस्था को पुन: विकास के पहिए को सुचारू करने तथा भाविष्य की खाद्यान्न सुरक्षा तथा पोषक की स्थिति पूर्ण करने के लिए सरकार को एकीकृत समावेशी नीतियों का क्रियांवयन बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है किन्तु वर्तमान कोविड़ ने सरकार के समक्ष स्वास्थ्य के प्रति समस्त तैयारियों को फैल कर दिया हैं। इसलिए वर्तमान कोविड़ महामारी ने एक नई सीख दी है। क्योंकि इस महामारी के संक्रमण से रक्षा कवच के रूप व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता तथा स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का परिचय कराया है। इसलिए कोविड़ के पश्चात सरकार की नीतियों स्वास्थ्य सुविधा, पौष्टिक आहार के साथ कृषि विकास के साथ खाद्य सुरक्षा की स्थिति को मजबूत करने प्रथम प्राथमिकता रहेगी। क्योंकि वर्तमान चुनौती का सामना करने में कृषि तथा बागवानी विकास की भूमिका महत्वपूर्ण हैं। जो व्यक्ति के पर्यावरणीय विकास के खाद्य सुरक्षा तथा पौष्टिक आहार के साथ रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने तथा कोविड़ संक्रमण से बचने में बागवानी की उपादेयता सर्वोपरि है। जो बागवानी विकास की संभावनाओं को निर्मित करता है।

तालिका क्रमांक 03 :भारत में भुखमरी की स्थिति

Year	India's rank in GHI	Out of total no of countries	Score	status
2000	—	—	38.9	extremely alarming
2006	—	—	37.5	extremely alarming
2012	—	—	29.3	alarming
2020	94	107	27.2	alarming

Source: GHI 2020 report

उपरोक्त तालिका में वैश्विक भुखमरी सूचकांक में भारत की स्थिति को दर्शाया गया है। उक्त तालिका के अवलोकन करने के पश्चात स्थिति स्पष्ट होती है कि भारत खाद्य सुरक्षा तथा पौष्टिक आहार की स्पष्टता को दर्शाता है। वैश्विक भुखमरी सूचकांक 2020 में भारत 107 देशों में 94 वें स्थान पर है। जिसमें भारत में भूख स्तर गंभीर है इस रिपोर्ट के मुताबिक 27.2 स्कोर के साथ भारत भूख के मामले में गंभीर स्थिति में है इसके अतिरिक्त भारत में करीब 14 प्रतिशत लोग कुपोषण के शिकार हैं। चूंकि इस सूचकांक में भारत को श्रीलंका, नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश जैसे देशों से भी पीछे है 107 देशो में से केवल 13 देश ही कुपोषण के मामले में भारत से खराब स्थिति में दर्शाया गया है। रिपोर्ट के अनुसार भारत की 14 प्रतिशत आबादी अल्पपोषित है एंव बच्चों में बौनेपन की दर 37.4 प्रतिशत है। जोकि भारत में भुखमरी की स्थिति सचेत करता है। हालांकि पिछले दो दशक से भारत में भुखमरी की स्थिति में कमी अवश्य आयी है। लेकिन यह कमी अन्य देशों की तुलना बहुत ही नगण्य है। अत: भारत में आज भी असंख्य लोगों के पास पर्याप्त भोजन की उपलब्धता है। दूसरी ओर भारत में बढ़ती खाद्य स्फीति दर 4.94 ने गरीब जनता को भोजन की सुलभ पूर्ति से वंचित किया हुआ है।

तालिका क्रमांक 04 : भारत में खाद्यान्न उपलब्धता की स्थिति (वर्ष 2019 की स्थिति में प्रतिव्यक्ति शुद्ध वार्षिक आनाज की उलब्धता किलोग्राम में)

खाद्यान्न जिंस	उपलब्धता
चावल	69.1
गेंहू	65.2
अन्य अनाज	27.8
कुल अनाज	162.1
दाले	17.5
खाद्य अनाज	179.6

उपरोक्त तालिका में वर्ष 2019 में भारत में खाद्यान्न अनाज की उपलब्धता की स्थिति को स्पष्ट किया गया है। जिसमें चावल 69.1 किलोग्राम प्रतिवर्ष प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त होता है। जबकि कुल अनाज की उपलब्धता 162.1 वार्षिक प्रति व्यक्ति किलोग्राम है। इस स्पष्ट है कि भारत में खाद्यान्न उपलब्ध की स्थिति भारत में बहुत ही चिंताजनक है। यदि इस दिशा पर ध्यान नहीं दिया गया तो भारत में खाद्य सुरक्षा की स्थिति बहुत ही गंभीर स्थिति में है। जो सरकार को चुनौति प्रदान करता है।

खाद्य सुरक्षा से तात्पर्य है कि सभी लोगों को सक्रिय और स्वस्थ्य जीवन बिताने के लिये कभी भी भोजन का अभाव न होने देना। सर्वप्रथम ब्राजील के राष्ट्रपति लुला दॅ सिल्वा ने अपने यहा खाद्य सुरक्षा कानून लागू किया था। इस सफलता ने सारी दुनिया के लिये सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में एक मॉडल देने काम किया। भारत के लिए खाद्यान्न सुरक्षा बेहद जरूरी है। क्योंकि कोई भी व्यक्ति बिना खाये जिंदा नहीं रह सकता है। खाद्य सुरक्षा की स्थिति को कोविड़ महामारी में व्यक्ति भोजन के लिए अपनी जिंदगी को दांव पर लगा दी क्योंकि रोटी ही व्यक्ति जान है तो जहान की स्थिति को स्पष्ट करता है व्यक्ति अपनी मौत से नहीं घबराता हैं लेकिन खाद्यान्न की पूर्ति तथा सुरक्षा बहुत आवश्यक हो जाता है। हालांकि भारत में पिछले चार दशक पहले ही खाद्यान्न आपूर्ति की स्थिति में आत्म निर्भरता प्राप्त कर ली। इसके बावजूद आजी भी देश में 35 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या खाद्यान्न के मामले में असुरक्षित है। किन्तु हरित क्रांति के फलस्वरूप उत्पादन में कई गुणा बढ़ा है। इसके बावजूद जिस तरह हमारी आबादी बढ़ रही है उनके अनुरूप खाद्यान्न का उत्पादन नहीं बढ़ रहा है। जिसके कारण भारत में हर तीसरा बच्चा कुपोषण का शिकार है। और रोज लगभग 10 से 20 करोड़ लोग भूखे सोते है। जो लोकतंत्र राज्य के लिए बहुत खराब स्थिति को प्रकट करता है। इस स्थिति पर प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि हमारी जी.डी.पी. में

पर्याप्त वृद्धि के बावजूद देश में खाद्य असुरक्षा तथा कुपोषण का स्तर अस्वीकार्य रूप से बढ़ रहा है। जोकि एक सबसे बड़े शर्म की बात है।

कुपोषण, विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, कुपोषण किसी व्यक्ति में उर्जा और पौषक तत्वों की कमी, अधिकता एवं असुंतलन को दर्शाता है। सामान्य रूप से तीन समूहों में विभाजित किया जाता है, अल्प पोषण, वजन की अधिकता, सूक्ष्म पोषक तत्व के कारण विटामिन और खनिजों की कमी तथा अधिकता है। वैश्विक पोषण रिपोर्ट 2020 के अनुसार वर्तमान में जिन चार मानकों के ऑकडें उपलब्ध हैं, भारत उनमें से किसी भी लक्षय को नहीं प्राप्त कर सका। रिपोर्ट के अनुसार भारत कुपोषण के मामले में सबसे अधिक स्थानीय असमानता वाले देशो में से एक है। हालॉकि पूर्व में भारत में बच्चों और किशोरों में कम वनज के मामलों की दर में कमी लाने में सफलता प्राप्त की हुई है।

वैश्विक महामारी कोविड़ -19 संक्रमण के दौरान भारत स्वास्थ्य चुनौतियों के अतिरिक्त जिन चुनौतियों का सामना कर रहा है, उनमें से खाद्य सुरक्षा की चुनौती सबसे प्रमुख चुनौतियों में से एक है। तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या, बढ़ते खाद्य मूल्य और जलवायु परिवर्तन का खतरा ऐसी चुनौतियॉं है जिनसे युद्ध स्तर पर निपटे जाने की आवश्यकता है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि 'जो व्यक्ति अपना पेट भरने के लिए जूझ रहा हो उसे दर्शनवाद नहीं समझाया जा सकता है।' यदि भारत को विकसित राष्ट्रों की सूची में शामिल होना है, तो उसे अपनी खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करनी होगी। इसके साथ ही समावेशी शासन, मानव अधिकारों और जवाबदेही पर नए सिरे से ध्यान देने की आवश्यकता हैं। जिसमें खाद्य सुरक्षा, पोषण, के लिए राजनीतिक प्रतिबद्धता बनाने के साथ सामाजिक जवाबदेही के रूप शामिल है। साथ ही राष्ट्रीय कार्यक्रमों, कानून और संवैधानिक ग्यारंटी के संदर्भ में पोषण के अधिकार-आधारित दृष्टिकोण की दिशा के साथ उत्प्रेरित अध्ययनों की विशेष आवश्यकता है तभी सतत विकास की अवधारणा के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

इसके साथ ही लॉकडाउन के दौरान आर्थिक गतिविधियों के सीमित होने कारण बड़ी संख्या में लोगों को पूर्व में संग्रहित खाद्यान्न द्वारा भोजन भी उपलब्ध कराया गया । इस महामारी से उत्पन्न होने वाले खाद्य संकट से निपटने के लिये घरेलू स्तर पर ही नही बल्कि वैश्विक स्तर पर भी प्रयास करने की आवश्यकता है। इसके साथ शासन की खाद्य वितरण प्रणाली को प्रभावशाली बनाने की विशेष आवश्यकता है जिसमें सभी व्यक्तियों को खाद्य सुरक्षा हेतु छः माह का अग्रिम पहुँच कराना सुनिश्चित हो तथा खाद्यान्न की उपलब्धता में वृद्धि करना भी आवश्यकता है।

निष्कर्ष - भारत में हिरत क्रांति जो 1960 में हुई और देश में कृषि उत्पादकता और समग्र खाद्य उत्पादन को बढ़ाने के लिए जिम्मेदारी थी। परिणामस्वरूप, भारत के पास पहली बार अनाज का अधिशेष स्टॉक था, जो सभी लोगों के लिए कैलोरी समर्थन पर राष्ट्रीय फोकस के साथ था विशेष रूप से निम्न आय वर्ग के लोगों के लिए खाद्यान्न सुरक्षा की दशा में प्रयासरत थी। बाद के दशकों में, जैसे-2 अर्थव्यवस्था बढ़ती रही, देश ने गरीबी उन्मूलन की दशा में सकारात्मक प्रभाव रहा है। इसके साथ ही भारत ने वैज्ञानिक प्रगति के साथ स्वास्थ्य की दशा में भी उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की हुई। एक ओर व्यक्तिगत आय स्तर में तीव्र वृद्धि से खाद्यान्न प्रतिरूप में तीव्र गति से बदलाव हुआ है। लेकिन वहीं भारत में कुपोषण की दर बहुत अधिक हैं। वहीं दूसरी ओर कृषि क्षेत्र की उल्लेखनीय प्रगति तथा बम्फर उत्पादन के बाद भी भुखमरी, कुपोषण की संख्या में लगातार वृद्धि दर्ज हुई है। जहां कोविड़ 19 महामारी ने देश में स्वास्थ्य प्रगति की पोल खोल दी। क्योंकि अस्पातालों में जीवन रक्षक दवाईयॉं, बिस्तर, आधारभूत सुविधाएँ के साथ ऑक्सीजन की कमी से हड़कम्प मचा हुआ है। जिससे के परिणाम स्वारूप से स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव के साथ प्रतिरोधक क्षमता की कमी के कारण मृत्यु दर तीव्र वृद्धि हुई है। जिससे चारो तरफ एक चुनौती भरा कदम और निराशा की स्थिति से सभी व्याकुल है। वहीं सरकार के लिए एक गम्भीर चुनौती के सामना करने हेतु अपना प्रयास शतप्रतिशत करने के बाद भी स्थिति नियंत्रित में नहीं हो रहीं है। वहीं दूसरी ओर देश में एक नई चुनौती के तौर पर भारत में खाद्य और पोषण सुरक्षा की स्थिति बनी हुई है। अतः खाद्य सुरक्षा की दिशा में सही तरीके से नीतियों तथा योजनाओं के क्रियान्वयन की आवश्यकता है इसलिए खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने हेतु वितरण प्रणाली, को सुलभ और पहुॅंच की दिशा में कार्य करने की विशेष आवश्यकता है।

References :-

1. *2020 Global Hunger Index: One Decade to Zero Hunger—Linking Health and Sustainable Food Systems*. (2020). 80.
2. Cariappa, A. & et.al. (2021). Impact of COVID-19 on the Indian agricultural system: A 10-point strategy for post-pandemic recovery. *Outlook on Agriculture*, *50*(1), 26–33. https://doi.org/10.1177/0030727021989060
3. Choudhary, S. (2020). *Impact of COVID-19 on agriculture, food security and livelihoods in INDIA*.
4. Dr. Nawaz Ahmed, Dr. N. A. (2013). Major Challenges and Prospects of Food Security System in India. *IOSR Journal of Humanities and Social Science*, *10*(6), 63–68. https://doi.org/10.9790/0837-1066368
5. *Food Security in India: Performance, challenges, and policies*. (n.d.). Retrieved 16 April 2021, from https://oxfamilibrary.openrepository.com/handle/10546/346637
6. Hanbazaza, M. (2021). The Impact of COVID-19 Curfew on Food Security Status, Eating Habits, and Health among Adults Living in Saudi Arabia: *Progress in Nutrition*, *23*(2), Article 2. https://doi.org/10.23751/pn.v23i2.10442
7. Kumar, P., et.al. (2016). *FOOD SECURITY IN INDIA: ISSUES AND CHALLENGES*.
8. Narayanan, S. (2015). Food Security in India: The Imperative and Its Challenges. *Asia & the Pacific Policy Studies*, *2*(1), 197–209. https://doi.org/10.1002/app5.62
9. Narula, A. (2005). *Determinants of Food Inflation in India*. 17.
10. Rana, R. (2021). *Hkkjrh; [kk| lqj{kk dh orZeku fLFkfr (Present status of food security in India-In Hindi)*. Retrieved 16 April 2021,
11. Singh Jaswal, Dr. S. (2014). Challenges to Food Security in India. *IOSR Journal of Humanities and Social Science*, *19*(4), 93–100. https://doi.org/10.9790/0837-194293100
12. Sinha, D. (2021). Hunger and food security in the times of Covid-19.*Journal of Social and Economic Develop - ment*. https://doi.org/10.1007/s40847-020-00124-y

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

13. Summerton, S. A. (2020). Implications of the COVID-19 Pandemic for Food Security and Social Protection in India. *Indian Journal of Human Development*, *14*(2), 333–339. https://doi.org/10.1177/0973703020944585
14. Swinnen, J., & McDermott, J. (2020). *COVID-19 and global food security*. International Food Policy Research Institute. https://doi.org/10.2499/p15738coll2.133762
15. कुशवाहा,प्रति. (2018). भारत में खाद्य सुरक्षा का आर्थिक विश्लेषण. *International Journal of Reviews and Research in Social Sciences*, *6*(3), 305–310.

तालिका क्रमांक 01 : भारत में खाद्यान्न उत्पादन की प्रवृति तथा वृद्धि दर

Production (Million Tonnes)

वर्ष	चावल	गेंहूँ	ज्वार	बाजरा	मक्का	अनाज	दालें	कुल खाद्यान्न अनाज
2010-11	95.98	86.87	7.00	10.37	21.73	226.25	18.24	244.49
2011-12	105.30	94.88	5.98	10.28	21.76	242.20	17.09	259.29
2012-13	105.23	93.51	5.28	8.74	22.26	238.78	18.34	257.12
2013-14	106.65	95.85	5.54	9.25	24.26	245.79	19.26	265.05
2014-15	105.48	86.53	5.45	9.18	24.17	234.87	17.15	252.02
2015-16	104.41	92.29	4.24	8.07	22.57	235..22	16.32	251.54
2016-17	109.70	98.51	4.57	9.73	25.90	251.98	23.13	275.11
2017-18	112.76	99.87	4.80	9.21	28.75	259.60	25.42	285.01
2018-19	116.48	103.60	3.48	8.66	27.72	263.14	22.08	285.21
2019-20	118.43	107.59	4.73	10.28	28.64	273.50	23.15	296.65
CAGR	**36.50%**	**35.41%**	**-3.84%**	**-0.09%**	**21.32%**	**47.04%**	**17.25%**	**48.50%**
2020-21#	102.36	105.86	1.75	9.04	29.68	270.71	24.24	295.00
2021-22 #	114.91	107.82	2.71	8.99	30.70	275.32	25.15	300.47

Source: https://agricoop.nic.in/sites/default/files/FirstEstimate2020-21.pdf,
Note: # Estimated value

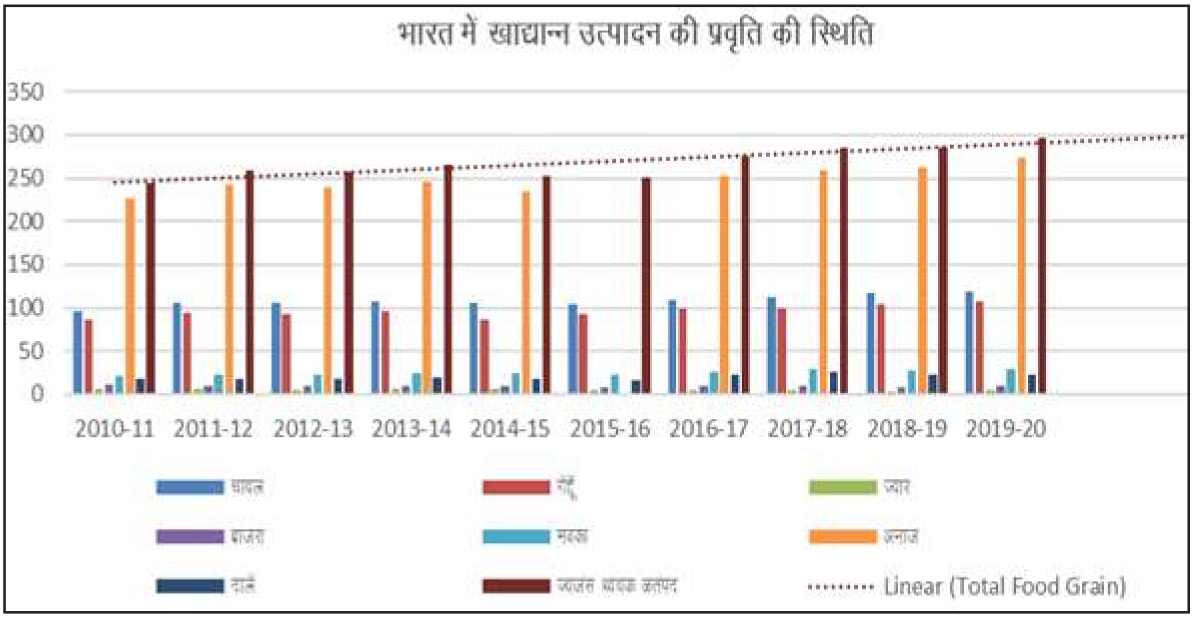

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

तालिका क्रमांक 02 : भारत में खाद्यान्न उत्पादन की पूर्वानुमान प्रवृति आंकलन एवं औसत उपलब्धता (वर्ष 2010-11 से 2019-20 की स्थिति के आधार पर औसत घातांकीय वृद्धि)

Production (Million Tonnes)

वर्ष	चावल	गेंहूँ	ज्वार	बाजरा	मक्का	अनाज	दालें	कुल खाद्यान्न अनाज उत्पादन	प्रति व्यक्ति प्रति दिवस कुल अनाज की औसत उपलब्धता, (ग्राम में)
2023	114.71	109.81	2.48	8.93	31.76	280.00	26.09	306.05	587.0125
2024	115.83	111.83	2.27	8.88	32.85	284.76	27.07	311.72	591.3921
2025	116.81	113.90	2.08	8.83	33.98	289.60	28.08	317.50	595.8044
2026	117.92	116.00	1.91	8.77	35.15	294.52	29.14	323.39	600.2496
2027	118.55	118.14	1.75	8.72	36.36	299.53	30.23	329.39	604.728
2028	118.41	120.32	1.60	8.67	37.62	304.62	31.36	335.50	609.2398
2029	118.77	122.54	1.47	8.62	38.91	309.80	32.54	341.72	613.7852
2030	119.55	124.80	1.35	8.57	40.25	315.07	33.76	348.06	618.3646
2031	121.20	127.10	1.24	8.51	41.64	320.42	35.02	354.52	622.9781
2032	123.80	129.44	1.13	8.46	43.07	325.87	36.33	361.09	627.626
2033	122.96	131.83	1.04	8.41	44.55	331.41	37.70	367.79	632.3086
2034	123.91	134.26	0.95	8.36	46.09	337.04	39.11	374.61	637.0262
2035	124.71	136.74	0.87	8.31	47.68	342.77	40.57	381.56	641.779
2036	125.56	139.26	0.80	8.26	49.32	348.60	42.09	388.63	646.5672
2037	126.48	141.83	0.73	8.21	51.02	354.53	43.67	395.84	651.3911
2038	127.53	144.45	0.67	8.16	52.77	360.55	45.31	403.18	656.251
2039	128.63	147.11	0.62	8.11	54.59	366.68	47.01	410.66	661.1472
2040	129.60	149.83	0.56	8.06	56.47	372.92	48.77	418.28	666.08
2041	130.44	152.59	0.52	8.02	58.41	379.26	50.60	426.03	671.0495
2042	131.17	155.41	0.47	7.97	60.43	385.71	52.49	433.93	676.0561
2043	131.98	158.27	0.43	7.92	62.51	392.26	54.46	441.98	681.1
2044	133.17	161.19	0.40	7.87	64.66	398.93	56.50	450.18	686.1816
2045	134.14	164.17	0.36	7.83	66.89	405.71	58.62	458.53	691.3011
2046	135.12	167.20	0.33	7.78	69.19	412.61	60.82	467.03	696.4588
2047	136.09	170.28	0.31	7.73	71.57	419.62	63.09	475.69	701.655
2048	137.05	173.42	0.92	7.69	74.04	426.76	65.46	484.52	706.8899
2049	137.99	176.62	0.87	7.64	76.59	434.01	67.91	493.50	712.1639
2050	138.95	179.88	0.83	7.59	79.22	441.39	70.46	502.66	717.4772

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

छत्तीसगढ़ की महिलाओ द्वारा आजीविका का साधन लोकनृत्य और गायिकी

श्रीमती गायत्री तिवारी* डॉ. अंजू तिवारी**

* शोधार्थी, डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत
** सहायक प्राध्यापक (इतिहास) डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत

प्रस्तावना – हमारा देश विविधताओ और भिन्नताओ से भरा है। यहाँ चारो दिशाओ में भिन्न-भिन्न जाति, धर्म के लोग निवास करते है। यहाँ हर अंचल के अपने कुछ प्रसिद्द रीति-रिवाज और त्यौंहार होते है। उन्ही में से एक है हमारा छत्तीसगढ़ प्रदेश जहाँ भिन्न-भिन्न जाति धर्म के लोग निवास करते हैं। वैसे ही यहाँ प्रदेश के अपने लोकनृत्य, लोकगीत और लोककथाएँ प्रचलित है।

छत्तीसगढ़ देश के हृदय स्थल पर बसा एक ऐसा प्रदेश है जो अपने अंदर अलौकिक प्राकृतिक सुदंरता और संसाधनो को सहेजे हुए अपने विशाल हृदय में समेटे हुए है। छत्तीसगढ़ एक ऐसा प्रदेश जो लोक साहित्य, लोकगाथाओ और लोककथाओ का भण्डार है जिसके कारण यहाँ की संस्कृति की विरासत जग जाहिर है।

छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्र उत्तार में सरगुजा से लेकर दक्षिण में बस्तर, दंतेवाडा तक यहाँ के लोगो में खान-पान, रहन-सहन में विविधता पाई जाती है, इन विविधताओ का कारण यहाँ पर बसी चालीस से अधिक जनजातियाँ है और सभी जनजातियो के अपने अलग-अलग रीति-रिवाज, लोकगाथाएँ और लोकनृत्य है इन्ही जनजातियो ने हमारी प्रचीन संस्कृति को संजो कर रखा है। इन्होने ही प्राचीन संस्कृति और कथाओ को अपने लोकरूप में ढाल कर जींवत बनाए रखा है और यही आज लोकनृत्य, लोकगीत, लोकगाथाओ के रूप में प्रचलित है।

वर्तमान समय में लोकगीत और लोकगाथाओ के स्वरूप में थोड़ा परिवर्तन हुआ है और यही परिवर्तन के कारण यहाँ के जनजातियो के लोगो का यह आजीविका का साधन बन गया है। आजीविका का साधन होने के साथ-साथ यह मनोंरजन और शिक्षा का भी अच्छा स्त्रोत है। क्योंकि यह हमारी सामाजिक स्थिति को लोगो के सामने प्रकट करता है यहाँ की लोंकगाथाओ में लोकजीवन को काव्य के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। हमारा छत्तीसगढ़ प्राकृतिक सुंदरता, संसाधन की परिपूर्णता और एक खुबसूरत संस्कृति से समृद्ध राज्य है यहाँ की संस्कृति जो लोकगाथाओं, लोकगीतो और परम्पराओ से सरोबार है उसे यहाँ के लोकमानस को हमेंशा के लिए सुरक्षित रखना है।

छत्तीसगढ़ का लोकनृत्य सुआ व छेर-छेरा – छत्तीसगढ़ एक ऐसा प्रदेश है जहाँ कि लोक गीतो और लोक नृत्यो के साथ-साथ लोक गाथाओ और लोक कथाएँ भी लोकजन जीवन में प्रचलित है। छत्तीसगढ़ में हर तीज-त्यौंहारो पर लोकगीतो को गाने की परम्परा है और यह परम्परा छत्तीसगढ़ में सदियो से चली आ रही है। यहाँ अनेक ऐसे लोकनृत्य है जिसमें महिलाएं और पुरुष दोनो भाग लेते है। इन लोकगीतो में छत्तीसगढ़ की संस्कृति को मनभावन रूप से प्रस्तुत किया जाता है।

ऐसे ही यहाँ का प्रसिद्द लोकनृत्य है सुआ, यह छत्तीसगढ़ी लोकनृत्य दिपावली के कुछ समय पूर्व से प्रारंभ किया जाता है यह प्रदेश के उत्तारी और मध्य भाग में धान कटाई के बाद उत्साह से गाया जाता है। जो कि छत्तीसगढ़ी महिलाओ द्वारा प्रस्तुत किया जाता है यह बहुत ही सुंदर नृत्य होता है । इसमें स्त्रियाँ मन के वियोग की व्यथा को नृत्य द्वारा अपने प्रिय तक पहुचाती है एवं नृत्य करने वाली महिलाएं पूर्ण साज-श्रृंगार के साथ नृत्य करती है।

सुआ की तरह छत्तीसगढ़ का एक और प्रसिद्ध लोकगीत है छेर-छेरा जो कि लोक परम्परा के अनुसार प्रतिवर्ष पौष महिने की पूर्णिमा को मनाया जाता है यह गीत किसी कलाकार के द्वारा नही बल्कि सामान्य लोगो द्वारा गाया जाता है। इस लोकगीत में युवक या बच्चे घर-घर जाकर गीत गाते है और नृत्य करते है और अन्न का दान मांगते है और हर घर अन्न या राशी का दान करते है।

छत्तीसगढ़ के ग्रामीण अंचलो में आज भी छेर-छेरा कि यह पंक्ति छेर-छेरा माई कोठी के धान ला हेर-हेरा, सुनाई पडती है। छत्तीसगढ़ की कृषि प्रधान संस्कृति में यह पर्व दान की परम्परा को याद दिलाता है। यहाँ का यह लोक पर्व हमारे समाज की समरसता और सुदृढ़ता को बनाए रखता है।

छत्तीसगढ़ एक ऐसा प्रदेश है जो लोकगाथाओं, लोकगीतो और लोकपर्वो से सरोबार है। यहाँ के संस्कृति में बसे लोकजीवन के हर उत्सवो और पर्वो में अलग ही रंग में संजोकर रखा है यहाँ के ग्रामीण अचंलो में निवासरत यहाँ कि जनजातियो ने अपने रिति-रिवाजो और त्यौंहारो में अपनी प्रचीन परम्पराओ और संस्कृतियो को संभाल कर रखा है इन गामीण लोकमानस के कारण ही आज की नई पीढ़ी प्राचीन परम्पराओ से अवगत् होती है नई पीढ़ी का यह कर्तव्य है कि वह अपने इन संस्कारो और परम्पराओ को संजोकर रखे एवं एक नई पहचान दिलाए।

छत्तीसगढ़ की नृत्यशैली लोरिक चंदा – छत्तीसगढ़ में लोककथाएँ और लोकगाथाएँ प्राचीन समय में घटित घटनाओपर आधारित होती है। जब प्राचीन काल में घटनाओ को सहजने का कोई साधन नही होता था तो लोग उसे गायन शैली में पीढ़ी दर पीढ़ी सुनाते थे। जो आज भी कहानियो के रूप में जीवित है और यही आज वर्तमान समय में लोकगाथा और लोककथा के रूप में प्रचलित होती चली जा रही है। जिसके कारण यहाँ लोकगाथाओ का

अथाह भण्डार है। यहाँ की लोकगाथाएँ अलग ही रंगढ़ग में रची है। जैसे लोरिक चंदा,लोरिक चंदा की गाथा देश के अन्य प्रदेशो में भी गायी जाती है लेकिन वहां इसे चन्दैनी के नाम से जाना जाता है लेकिन यहाँ इस गाथा की गायन परम्परा में स्थानीय विशिष्ठता छलकती है। अनेक साहित्यकारो का यह मानना है कि आरंग और रींवा के मध्य की भूमि जो कि रायपुर जिले के अंर्तगत आती है, लोरिक चंदा के प्रेम की साक्षी है। यह यादव जाति का गौरव गान है।

छत्तीसगढ़ में लोरिक चंदा की तीन शैलियाँ प्रचलित है प्रथम बांस गीत के माध्यम से गायन, द्वितीय चिकारा के माध्यम से और तृतीय लोक नाट्य के रूप में, इसमें लोरिक नायक और चंदा नायिका होती है और इस गाथा में उनकी प्रेम कहानी को गाया जाता है। इसके साथ ही इसमें लोरिक की वीरता और शोर्य के बारे में भी बताया जाता है।

परिवर्तन के दौर में जहाँ कुछ भी परिवर्तन से अछुता नही रहा है चाहे वह व्यवाहारिक जीवन हो या सामाजिक जीवन हो। हमारे संस्कार गीत संगीत तो हमारा लोक साहित्य में बसा है इसमे कैसे परिवर्तन न होता, जैसे छत्तीसगढ़ का महाकाव्य कहे जाने वाले पंड़वानी में समय के साथ परिवर्तन आया है वैसे ही चन्दैनी गायन की पारम्परिक गायन शैली में भी बदलाव आया है। इसकी प्रारंभिक मूल गायन शैली को यथावत् रखते हुए नये लोकगीतो का समावेश किया गया जिसके कारण पंड़वानी की तरह चन्दैनी का भविष्य भी उज्ज्वल प्रतीत होता है। इसका अर्थ यह नही की इसका अतीत उज्ज्वल नही था।

छत्तीसगढ़ की अनुपम कृति भरथरी – छत्तीसगढ़ का लोक साहित्य बहुत विस्तृत है यहाँ प्रचलित लोकगाथा में एक भरथरी भी प्रमुख लोकगाथा है। इसमें राजा भरथरी की कथाओ को गाया जाता है जो कि स्थानीय रंगो से पूर्णत: लिप्त है इसमें संसारिकता से पृथ्क वैराग्य की अधिकता है।

छत्तीसगढ़ में भरथरी गायन परम्परा का प्रारंभ कब हुआ इसका कोई साक्ष्य नही है माना जाता है कि यह प्राचीन काल में साधु–सन्यासियो के विभिन्न स्थानो में यात्राओ के कारण हुआ होगा जो लोक मानस में अपनी वाचिक परम्परा द्वारा सुरक्षित है और आज लोकगाथा के रूप में प्रचलित हो गई।

भरथरी की प्रमुख गायिका सुरुज बाई खांडे जिनकी गायन शैली ने भरथरी के लोक चरित्र को लोकजन में लोकप्रिय बना दिया है।

छत्तीसगढ़ की लोकगाथा पंडवानी – छत्तीसगढ़ में विभिन्न प्रकार की लोंकगाथाएं प्रचलित है जैसे ढोला–मारू, चन्दैनी, पंडवानी, भरथरी, दसमत आदि लेकिन इन सब में सबसे ज्यादा प्रचलित है पंड़वानी।

प्रांरभ में पंडवानी गायन का प्रचलन भागवत भजन की दृष्टि से हुआ था। लेकिन समय के साथ–साथ यह गायन परम्परा बन गई। पंडवानी का गायन महाभारत के लोकरूप में किया जाता है जो कि स्थानीय लोक मान्यताओ और विश्वास पर आधारित होता है। जिसके कारण इसमें विविधता देखने को मिलती है यह आज भी यहाँ के ग्रामीण क्षेत्रो के कंठो में बसती है।

पंडवानी में महाभारत की कथा को काव्यांश और पद्यांश के रूप में बहुत ही सुंदर तरीके से गाया जाता है यह एक ऐसी लोकगाथा है जिसे गायन के साथ–साथ नाट्य रूप में प्रदर्शित किया जाता है इसमें कलाकार कथा को इतने सौन्दर्यपूर्ण रूप से प्रदर्शित करते है जो दर्शको के हृदय में कथा के चित्रण को जीवंत कर देते है।

देश के अनेको स्थानो में महाभारत वहां के स्थानीय रूप में लोक वाचिका के द्वारा सदियो से सुरक्षित है। महाभारत की कथा उन अंचलो के रीति–रिवाज, तीज–त्यौंहारो के कारण अपने मूल रूप में परिवर्तन से स्थानीय हो गई है। महाभारत की कथाए वहां की परम्पराओ को आत्मसात कर पंडवानी के रूप में प्रचलित हो गई।

छत्तीसगढ़ में प्रचलित पंडवानी में महाभारत के पात्र विषेशत: भीम, द्रोपदी और कर्ण है इसमें अर्जुन के स्थान पर भीम के चरित्र पर अधिक बल दिया जाता है और भीम ही महानायक होता है और इसमें भगवान कृष्ण की महिमा का भी गुणगान किया जाता है। मूलत: वेदो में रचित महाभारत यहाँ के पंडवानी में गायी जाने वाली महाभारत से बहुत भिन्न है क्योंकि पंडवानी में प्रचलित महाभारत न सिर्फ ऐतिहासिक घटनाओ का निरूपण ही नही बल्कि लोकजीवन का दर्पण भी होती है। यहाँ का लोक प्रचलित महाभारत की कथा अपने में बहुरंग और विविध स्वरूपो को लिए हुए है और इस लोकचर्चित लोकगाथा को पंडवानी गायको ने लोगो के समक्ष बहुत सुंदर रूप में प्रस्तुत किया है।

पंडवानी में कलाकार महाभारत की कथा को वाद्यो की धुनो पर अपने संवादो की लयबद्धता से नाटकीय रूप प्रदान करते है। इसके अंतर्गत दृष्यो में तत्कालीन घटनाओ को समकालीन घटनाओ से जोंडकर हास्य रूप में प्रस्तुत किया जाता है जो कि दर्शको के लिए मनमोहनीय हो जाता है। पंडवानी में मुख्यत: तम्बुरा और करताल का उपयोग किया जाता है लेकिन समय की आवश्यकता अनुसार इसमें ढोलक, मंजीरा, हारमोनियम का भी उपयोग किया जाने लगा है।

पंडवानी में जीवन के सभी रंगो को गीत, संगीत और अभिनय के माध्यम से परिलक्षित किया जाता है और इसकी यही विशेषता इसे अन्य लोकगाथाओ से अपनी अलग पहचान दिलाती है। पंडवानी में दो शैलियाँ प्रचलित है प्रथम कापालिक और दुसरी वेदमती।

कपालिक शैली का अर्थ है कपोल कल्पित अर्थात जो लोक की स्मृति में विद्यमान है यह पंडवानी गायन की प्राचीन कला है। लेकिन आज के समय में यह कला विलुप्त होती जा रही है। वेदमती शैली शास्त्रों पर आधारित होती है इसके अंतर्गत कलाकार बैठकर गायन करते है। तथा इसमें श्री संबल सिंह द्वारा कृत पद्यरूपित महाभारत की कथा को खड़ी बोली में गायन किया जाता है। लेकिन आज के समय में प्रचलित पंडवानी गायन की कला का स्वरूप प्रांरभ से पृथक है और परिवर्तन प्रकृति का नियम है और इसी परिवर्तन से पंडवानी गायन का स्वरूप और निखर गया है जिसके कारण पंडवानी को देशो–विदेशो में बड़ी उपलब्धि मिली है।

छत्तीसगढ़ में प्रधान जाति जो कि गोंड जनजाति की उपजाति है, और देवार जाति के लोगो ने पंड़वानी को लोगो के दिलो तक पहुँचाया है। जो कि समय के साथ–साथ आज पंडवानी गायन की परम्परा छत्तीसगढ़ में अपने शीर्ष तक पहुँच गई है।

पंडवानी गायन का प्रांरभ छत्तीसगढ़ में झाडूराम देवांगन ने किया था। वे पंडवानी गायन के भीष्म पितामाह माने जाते है। इनका जन्म भिलाई के निकट ग्राम बासिन में वर्ष 1927 में हुआ था। झाडूराम देवांगन ने देश के अतिरिक्त विदेशो में भी पंडवानी गायन का प्रदर्शन किया। छत्तीसगढ़ सरकार ने इन्हे तुलसी सम्मान से सम्मानित किया है।

लक्ष्मी बाई बंजारे पहली महिला जिन्होंने पंडवानी गायन आरंभ किया था। वे वेदमती शैली की गायिका थी इनका जन्म दुर्ग जिले के कातलबोढ़ गांव में हुआ था। वे प्रांरभ में लोक–लाज के कारण पुरुष वेश में प्रस्तुति देती

थी। लक्ष्मी बाई के इस कदम ने महिलाओ को बहुत प्रोत्साहित किया।

समय परिवर्तन के साथ जब लोगो का झुकाव पंडवानी की तरफ से कम होता जा रहा था। यह सिर्फ पुरानी पीढ़ी तक संग्रहित हो रहा था और इसका दायरा सिमटने लगा था। जिस समय इसकी विलुप्त होती जा रही शैली को पद्मश्री, पद्मभूषण, पद्मविभूषण से सम्मानित तीजन बाई ने पुन: जीवित कर दिया। तीजन बाई ने न सिर्फ देश में बल्कि विदेशो में भी पंडवानी गायन कला में अपना परचम लहराया है।

छत्तीसगढ़ की समृद्ध पंडवानी गायकी तीजन बाई – तीजन बाई उन महिला कलाकारो में से है जिन्होंने अपनी इस कला को पहचान दिलाने के लिए बहुत संघर्षो का सामना किया है क्योंकि प्रारंभ में लोककथा गायन केवल पुरूषो तक सीमित था इसमें स्त्री का किरदार भी पुरुष ही निभाते थे। उस समय महिलाओ का नाच–गायन करना सही नही माना जाता था। लेकिन महिलाओ ने पुरूषों के इस सोच को खत्म कर लोकगायन में अपनी नई पहचान बनाई है।

तीजन बाई का जन्म 24 अप्रैल 1956 को दुर्ग जिले के गनियारी गाँव में हुआ था। इनके पिता चुनुकलाल और माता सुखवती थे। तीजन बाई को बचपन से ही गायन का शौक था उन्होंने अपने नाना को महाभारत की कथा का गायन करते देखा था धीरे–धीरे उनकी रूचि इसमें बढ़ने लगी फिर उन्होंने अपने नाना से इसका प्रशिक्षण लिया। 12 वर्ष की आयु में जब उन्होंने पहली बार पंडवानी गायन किया तब उन्हे घर परिवार, समाज से ताने और अपमान मिलने लगा। उन्हे इसके लिए घर से भी निष्काषित कर दिया गया था। वह गांव में झोपड़ी बनाकर रहती थी, पर उनके इस जूनुन को कोई रोक न सका। उन्होंने गायन का और अच्छा प्रशिक्षण उमेंद सिंह देशमुख से लिया और इसमें महारत हासिल की। लोग धीरे–धीरे उन्हे तीज–त्योंहारो पर गायन के लिए बुलाने लगे। जब उन्होंने पहली बार मंच पर प्रस्तुति दी थी तब वह मात्र 13 वर्ष की थी। फिर उन्होंने पंडवानी गायन को ही अपना जीविका का साधन बना लिया लेकिन उस समय पंडवानी गायन के लिए कोई धनराशी नही मिलती थी। इसके कारण उनकी आर्थिक स्थिति ठीक नही थी इस आर्थिक संघर्ष के बावजुद उन्होंने पंडवानी गायन को कभी छोड़ा नही। वरन् इसके साथ–साथ उन्होंने कुछ अन्य काम भी किए। वे लकड़ी का सामान बनाकर बेचा करती थी। इन सबके बावजूद उनके पंडवानी के प्रति समर्पण ने ही उन्हे यश की इन उचाईयो तक पंहुचाया दिया है उनके जीवन में यादगार मोड तब आया जब वह हबीब तनवीर जी से मिली, हबीब तनवीर एक प्रसिद्ध रंगकर्मी थे। उन्होंने तीजन बाई को सुना और प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जी के समक्ष प्रस्तुति के लिए आंमत्रित किया। फिर क्या था उसके बाद वह अपनी जिंदगी की उँचाईयो की सीढ़ियो पर चढ़ती गई। उन्होंने देश–विदेश में कई बड़ी–बड़ी हस्तियो के सामने प्रदर्शन दिया। तीजन बाई ने पहली विदेश यात्रा पेरिस महोत्सव में की थी।

तीजन बाई ने इंग्लैण्ड, फ्रांस, स्विट्जरलैंड जैसे कई देशो में सन 1980 में भारत के राजदूत के रूप में पंडवानी गायन की कला का प्रदर्शन किया है और भारतीय संस्कृति की एक सुंदर धरोहर से वहां के लोगो को अवगत कराया। जो कि देश के लिए बहुत बडे सम्मान की बात है। उन्होंने अपनी कर्मठता और साहस का परिचय देते हुए छत्तीसगढ़ एंव देश में ही नही बल्कि विदेशो में भी पंडवानी गायन की कला से लोगो को रूबरू करवाया है। सरल सहज स्वाभाव और भारी व मधुर आवाज की धनी तीजन बाई में वो जादू था जो नाट्य को विशेष मजबुती प्रदान करता था। उनका प्रभावशाली अभिनय, आवाज और संवाद दर्शको के समक्ष ऐतिहासिक घटनाओ को जींवत करता था। उनका मंच पर प्रदर्शन दर्शको को सम्मोहित कर लेता था।

आज तीजन बाई ने अकेले अपने दम पर विलुप्त होती जा रही सांस्कृतिक धरोहर पंडवानी जैसी कला को बचाए रखा है। वर्ष 1988 में तीजन बाई को पद्म श्री और 2003 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया और इन्हे 1995 में संगीत नाटक अकादमी अवार्ड भी प्राप्त हुआ है सन् 2019 में तीजन बाई को भारत सरकार द्वारा पद्म विभूषण से सम्मानित किया। पद्म विभूषण प्राप्त करने वाली यह छत्तीसगढ़ की प्रथम महिला है यह सम्मान उन्हे पंड़वानी गायन में उत्कृष्ट योगदान के लिए मिला है।तीजन बाई को 27 मई 2003 को डॉ लिट की उपाधि से भारत सरकार द्वारा सम्मानित किया गया है इसके अलावा इन्हे कला शिरोमणि सम्मान और आदित्य बिरला सम्मान से 22 नवम्बर 2003 को सम्मानित किया गया है। वर्तमान समय में भी तीजन बाई भिलाई इस्पात सयंत्र में कार्यरत है। तीजन बाई के महान कार्यो को छत्तीसगढ़ प्रदेश कभी भूल नही सकता।

तीजन बाई के इस प्रोत्साहित कार्य के उपरांत छत्तीसगढ़ में अनेक महिलाओ ने पंड़वानी को अपने व्यवसाय और जीविका के साधन के रूप में अपनाया है। उनमें से प्रभा यादव, कुमारी निशाद, प्रतिमा बारले,अमृता साहु, पूर्णिमा साहु, मीना साहु, रितु वर्मा आदि पंड़वानी गायिकाएं है।

तीजन बाई के नक्से कदम पर चलने वाली मीना साहु ने पंड़वानी में अपने भविष्य को तलाशना शुरू किया। तेली समाज की मीना साहु 13 वर्ष की आयु से पंड़वानी कार्यक्रम में कार्यरत हो गई थी उन्होंने तुलसी कुमार साहु से पंड़वानी का प्रशिक्षण लिया। तुलसी कुमार साहु महाभारत की कथा का गायन करते थे। प्रारंभ में हर पंड़वानी महिला गायक की तरह इन्हे भी समाज से विरोध मिला। लेकिन वे माता–पिता के सहयोग से पंड़वानी में कार्यरत रही। मीना साहु ने तीजन बाई के साथ भी पंड़वानी कार्यक्रम में भाग लिया। तीजन बाई की प्रतिभा और कठिन परिश्रमो के प्रयासो के फलस्वरूप पंड़वानी का स्वरूप प्रारंभ से भिन्न और विस्तृत हो चुका था और छत्तीसगढ़ में पूर्णत: स्थापित भी हो चुका था जिसके परिणाम स्वरूप अनेक महिलाओ ने पंड़वानी का प्रदर्शन करना आरंभ किया जिसमें से प्रभा यादव भी है इन्होंने प्रसिद्ध पंड़वानी गायक झाडुराम देवागंन से विधिवत् शिक्षा ली थी। यह वेदमती शैली की गायिका है और वर्तमान समय में यह झाडुराम देवांगन की परम्परा को आगे बढ़ा रही है।

रितु वर्मा भी पंड़वानी गायिका के रूप में छत्तीसगढ़ में प्रसिद्ध है। यह भी वेदमती शैली की प्रसिद्ध गायिका है इन्होंने विश्व के पद्रंह से अधिक देशो में पंड़वानी गायन का प्रदर्शन किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. व्यक्तिगत शोध के आधार पर।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

टूटता परिवार बिखरता बचपन

प्रो. (डॉ.) अनसूया अग्रवाल, डी. लिट्.*

* प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी) शा. म. व. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महासमुंद (छ.ग.) भारत

प्रस्तावना – मेरे बचपन का जिसमें किस्सा, वह उम्र का बेहतरीन हिस्सा है।

वर्तमान भारत के जिस युग में सांस ले रहे है वह युग विडम्बनाओं का युग है। जीवन पद्धति की जटिलता और बौद्धिक तनाव का युग है। सामाजिक कुंठा और परिवार क्षरण का युग है। श्रेष्ठ विचारों और भावनाओं के अभाव में हमारा मन तप रहा है, दहक रहा है, सुलग रहा है। सोचिए साथियों। आज ईट, पत्थर, सीमेंट, गारों से करोड़ों की लागत से मकान बनाए जा रहे हैं। उसे आलीशान और भव्य रूप देने के लिए तरह- तरह के जतन किए जा रहे हैं। हर कोई शाहजहां बना हुआ है; ताजमहल बनाने की होड़ मची हुई है किंतु उस मकान को घर बनाने के लिए कोई प्रयास नहीं किया जा रहा है। साथियों! ईट गारों से मकान बनाए जा सकते हैं, घर नहीं। मकान घर बनता है, वहां रहने वाले लोगों के आपसी प्रेम, सौहाद्र, समझदारी, और एक- दूसरे की भावनाओं को यथोचित् सम्मान देने से। जहां अपनी कमजोरी हम खुलकर कह सकते हैं, अपने दु:ख दर्द बांट सकते हैं। हमारे कमजोर पलों में जहां हर हाल में लोग मजबूती से खड़े हो। साथियों! रिश्तों की सिलाई अगर भावनाओं से होती है तो टूटना मुश्किल है और यदि स्वार्थ और अहंकार से हुई है तो टिकना मुश्किल होता है। कहते हैं न-

संबंधों की गहराई का हुनर दरख्तों से सीखो-
जड़ों में जख्म लगता है तो टहनियां सूख जाती हैं।

जी हां साथियों बड़ी गाड़ियों में ही सफर अच्छा नहीं होता; सच्चे रिश्ते और अच्छे मित्र साथ हो तो जिंदगी पैदल भी मजेदार होती है। लड़ लो, झगड़ लो, पर परिवार से अलग होने की कभी मत सोचों क्योंकि उन पत्तों की कोई कदर नहीं होती जो शाख से अलग होकर गिर जाते है। रिश्तों में नेटवर्क का होना जरूरी है अन्यथा बाहरी लोग गेम खेलने लगते हैं। और यह भी सच है कि परिवार सिर्फ रक्त संबंधों से नहीं बनता, मुश्किल में थामने वाला 'हर हाथ' परिवार का सदस्य होता है। किंतु आज हम बात कर रहे हैं रक्त संबंधों से बने ऐसे परिवार की; जो अहं की टकराहट या अन्य कारणों से टूट रहे हैं और जहां पल रहा बचपन सिसक रहा है।

इस विषय को आज से लगभग 30 वर्ष पहले मन्नू भंडारी के लिखे बेजोड़ उपन्यास 'आपका बंटी' से समझा जा सकता है। जिसमें एक ओर स्त्री विमर्श को सही धरातल पर समझाया गया है तो दूसरी ओर टूटते परिवार और बिखरते बचपन के मनोविज्ञान को बखूबी उकेंरा गया है। कथानक को पढ़कर कभी लगता है कहानी बंटी की मां शकुन की है तो कभी लगता है कहानी बालक बंटी की है। जिसमें साथ रहते- रहते पति- पत्नी केअहम् की टकराहट इतनी अधिक हो जाती है कि दंपति आपसी तनाव की असहनीयता से मुक्त होने के लिए एक दूसरे से मुक्त हो जाते हैं, लेकिन उनका बच्चा बंटी क्या करे? वह तो समान रूप से दोनों से जुड़ा है, यानि खंडित- निष्ठा उस बच्चे की नियति है। संतान चाहती है कि उसके माता- पिता साथ रहे। एक-दूसरे से लड़े नहीं, पर ऐसा हो नहीं पाता। इन संबंधों के लिए सबसे कम जिम्मेदार है वो संतान किंतु इस ट्रेजेडी के त्रास को सबसे अधिक वही भोगता है। पति- पत्नी के संबंधों की तनाव और चटख संतान की नस- नस में प्रतिध्वनित होती नजर आती है। पति- पत्नी के संबंध विच्छेद की समस्या इस संतान के जीवन को तोड़ कर रख देती है।

अलगाव के बाद संतान माता के पास रहता है। किंतु आज की वो माता चक्की पीस- पीसकर संतान का जीवन बनाने में अपने- आपको स्वाहा कर देने वाली मां तो कदापि नहीं है बल्कि स्वतंत्र, व्यक्तित्व, आकांक्षाएँ और आजीविका के साधनों से दिप्त मां है। शकुन में एक नारी और एक मां का आपसी द्वंद्व रह- रहकर टकराता है। कभी वह अपने उस संतान को माध्यम बनाकर पति से प्रतिशोध लेने का प्रयास करती है तो कभी उस संतान में तन्मय होकर अपनी सार्थकता तलाश करती है। संतान को कभी हथियार के रूप में इस्तेमाल करती है तो कभी अपने एकाकी जीवन के आधार के रूप में। स्थिति तब और दुखद हो जाती है जब बंटी का पिता कहीं और ठिकाना तलाश लेता है। तब स्त्री को भी लगने लगता है कि वो ही क्यों उदास जिंदगी जीये। और वो भी एक नया आशियां बना लेती है। इसका दुष्प्रभाव पड़ता है संतान पर। बच्चा स्वयं को उपेक्षित महसूस करने लगता है, उसे लगता है कि कोई उसकी तरफ ध्यान नहीं दे रहा है; ऐसी स्थिति में वो अपनी हरकतों से मां को दु:ख पहुंचाकर सुख पाने लगता है। उसकी हरकतों से परेशान मां उसे पीटने लगती है। और फिर किसी सामान की तरह उसे पिता के पास भेज दिया जाता है जहां की एक अलग दुनियां और दूसरी मां उसे रास नहीं आती। अंतत: उसकी स्थिति 'धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का' सा हो जाता है। अंत में माता- पिता के होते हुए भी अनाथ की भांति हॉस्टल में जीवन बिताने को उसे मजबूर होना पड़ता है। जिसका आधा मन मां के साथ और आधा मन पापा की याद में खोया रहता है। दो पाटों में पीसते- पीसते टूट जाता है वो। क्या होगा भला उस बच्चे का भविष्य? आपका बंटी के कथानक को मैं यहीं पर छोड़ती हूं क्योंकि अपनी बात कहने के लिए उपन्यास में यहीं तक का सफर तय करना था मुझे। और विचार करती हूं कि इस भासी जहां में क्या अंजाम होता है टूटते परिवार में पलते बचपन का।

पहले तो आया के हाथों पलती- बढ़ती हैं ऐसी संतान। फिर हॉस्टल में अकेले जिंदगी जीते- जीते एकाकी हो जाते हैं और अंत में या तो अपराधिक दुनियां में कदम रखते है या आत्मघाती कदम उठाते हैं या आत्मसम्मान के साथ अपना कद बहुत बड़ा कर लेते हैं। तीसरी स्थिति तो बहुत कम बनती है।

बचपन को संवारने या बिगाड़ने में परिवार की भूमिका बेहद अहम होती है। बच्चा एकल परिवार से है अथवा संयुक्त परिवार से; यह आप बच्चे की संजीदगी और व्यवहार को देखकर जान सकते हैं। आज के बच्चों को देखकर यह भी अंदाजा लग जाता है कि बच्चे के माता- पिता साथ रहते हैं या नहीं, उनके मध्य संबंधों में मधुरता है या नहीं। यह सब इसलिए कि अब बचपन के रूप- रंग और स्थितियां बदल रही है। एक दस साल का बच्चा आत्महत्या जैसी बड़ी और घातक बात न केवल सोंच रहा है बल्कि कर रहा है। कुछ समय पूर्व की यह घटना जनसत्ता में प्रकाशित हुई थी। सिर्फ इसलिए कि उसके माता- पिता साथ हो जाएं और उसका भाई अच्छा जीवन बिता सके। इस तरह की घटना सोंचने को मजबूर करती है; हर एक उस शख्स को......... जिसके बच्चे हैं या जो संवेदनशील है। बचपन तो नादान होता है। अपनी उस नादानी में ही उस मासूम ने अपने लिए मौत को चुन लिया। वह नादां यह न समझ सका कि उसके माता- पिता ने उसे इस दुनियां में लाने को एक औपचारिक सामाजिक जिम्मेदारी ही समझी। यह भी नहीं समझ सका कि उसके मां- बाप के लिए उनका अहं या स्वाभिमान उसके भविष्य और उसकी भावनाओं से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है। 'इंसान की सोंच जब तंग हो जाती है न, तो खूबसूरत जिंदगी भी एक जंग हो जाती है।' यहां भी वही हुआ..........टूटते रिश्तों के दौर ने पति- पत्नी को तो अलग कर दिया लेकिन इस अलगाव और टूटन का असर सिर्फ उन दोनों तक ही सीमित नहीं रह पाया।

बचपन बहुत खूबसूरत होता है। बचपन के स्मरण मात्र से चेहरे पर मुस्कुराहट तैर जाती है किंतु आज का बचपन बदल गया है, यह अत्यधिक संवेदनशील भी हो गया है। बचपन की मासूमियत खो गई है। बचपन के इस बिखराव की अनेक वजहों में एक महत्वपूर्ण वजह टूटते परिवार हैं।

सवाल यह है कि लगातार बचपन का यूं जीवन से बिखराव समाज और परिवार को किस दिशा में ले जाएगा? आने वाली पीढ़ी के लिए रिश्ते, प्यार- दुलार जैसी भावनाओं के क्या मायने रह जाएंगे? यह बचपन एक- दो घरों में नहीं आज के अनेक परिवारों में अलग- अलग संदर्भो में, अलग- अलग स्थितियों में मिल जाएगा। बच्चों की चेतना पर बड़ों के इस संसार का क्या विपरीत प्रभाव पड़ेगा; इन सब बिंदुओं पर सोंचने, मंथन करने का समय है। आगे का मोर्चा हमें और आपको ही सम्हालना है।

यह भी सहीं है कि इस तरह की घटनाओं के उदाहरण अभी कम है। या ऐसी घटनाओं पर अभी दो चार फिल्में बनी है या दो चार उपन्यास/ कहानी लिखे गए हैं। लेकिन विकृतियों की शुरूआत ही उसके पसराव की ओर संकेत करता है। अभी एक बच्चे ने यह कदम उठाया है; कल की तस्वीर कितनी भयावह होगी; कुछ कह नहीं सकते।

संयुक्त परिवार प्रथा भारतीय संस्कृति का हिस्सा रही है। भारत में संयुक्त परिवार की यह प्रणाली बहुत प्राचीन समय से ही विद्यमान रही है। ऐसे परिवारों की बुनियाद का आधार प्यार हुआ करता था। वह भी एक जमाना था जब भरा- पूरा परिवार हंसता- खेलता और चहकता था और एक- दूसरे से जुड़ा रहता था। बच्चे की किलकारी और चंचलता से पूरा मोहल्ला गूंजता था। पैसे भले कम था किंतु उसमें बहुत बरकत होती थी। किंतु आज परंपरागत संयुक्त परिवार तो कहीं दिखाई ही नहीं देते जहां बच्चों और बड़ों को पूरी सामजिक सुरक्षा प्राप्त थी। अब तो परिवार के प्रत्येक सदस्य का एक निजी जीवन होने लगा है। वृद्धों को बोझ समझकर वृद्धाश्रम में पनाह लेने को बाध्य किया जा रहा है। बड़ों को सम्मान देने वाले सम्मानसूचक शब्द डिक्शनरीज की शोभा बन गए हैं तो बच्चों को हॉस्टल में भेजकर कर्तव्यों की इतिश्री समझ ली जा रही है। परिवार की बेपरवाही के शिकार बच्चे अपराधी या आत्मघाती होते जा रहे है। संयुक्त परिवार तो रहे ही नहीं; एकाकी परिवारों में भी टूटन दिख रही है।

मुझे लगता है संयुक्त परिवार आज के समय की महती आवश्यकता है। बहुधा परिवार में स्त्री पुरूष दोनों बाहर का काम करते हैं ऐसे में आपके बच्चे घर पर अकेले नहीं रहेंगे, घर के लोगों का पूरा समर्थन मिलेगा, आप परिवार के साथ सुख- दुख को साझा कर सकते है, बचपन सुरक्षित रहेगा। बच्चों के पालन- पोषण के लिए स्वस्थ वातावरण उपलब्ध हो सकेगा। जिससे वह समाज में घुलमिल जाने के संस्कारों, नीतियों और दायित्वों को सीख पाएगा। साथियों संस्कृति भीतर की चीज है। सभ्यता और संस्कृति में भिन्नता है। सभ्यता यदि जीवन का उन्नत रूप है तो संस्कृति उत्तम रूप। मनुष्य को कदम दर कदम उन्नति की ओर ले जाना सभ्यता का काम है और उसे उत्तम से जोड़े रखना संस्कृति का काम है। जरूरी नहीं कि जो उन्नत हो वह उत्तम भी हो। उन्नति की दौड़ में कभी- कभी उत्तमता का ध्यान छूट जाता है। संस्कृति में संस्कार प्रमुख है और संस्कार का आशय सुधार या परिष्कार ही है जो अंततः श्रेष्ठता या उत्तमता से ही जुड़ता है। किंतु पश्चिमी कल्चर के व्यामोह में फंसा मनुष्य आज उन्नत और उत्तमता के भेद को विस्मृत कर उन्नति तो कर रहा है किंतु उत्तमता से कोसो दूर होता जा रहा है।

इस बारे में सोंचना होगा। हम सब समाधान जानते हैं; ध्यान दें, पहल करें और मिलकर समाधान तक पहुंचे। घर की संतान जो नितांत निर्दोष, निरीह और इस माहौल के कारण स्वयं को असुरक्षित महसूस कर रही है; उसे भयमुक्त करें। उसके बचपन को अपने आंगन में पल्लवित होकर खिलने दें, मकहने दें और अपनी सुगंध बगरागर सबके दिलों को जीतने दे। याद रखिए पिता की जमीन जायदाद नहीं सिर पे उनका हाथ और मां के आंचल की शीतल छांव एक संतान को जीवन के हर धूप से बचा सकती है।

तो आइए साथियों! रिश्तों को शब्दों का मोहताज न बनाएं, अपना कोई छूट रहा हो, नाराज हो तो खुद ही आवाज लगाएं। और रिश्तों को जतायें नहीं निभाए; चाहे दूर हो या पास। वसुधैव कुटुम्बकम् और सर्वे भवन्तु सुखिनः जैसी भावनाएं हमारे भारतीय संस्कृति की देन है। इसका मान बनाए रखें।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. व्यक्तिगत शोध के आधार पर।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

भारत स्वदेशी बनाम आत्मनिर्भर

डॉ. लीला डावर* डॉ. तबस्सुम पटेल**

* सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) शासकीय विक्रम महाविद्यालय, खाचरोद, उज्जैन (म.प्र.) भारत
** सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) शासकीय विक्रम महाविद्यालय, खाचरोद, उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारत के मैड इन इंडिया ब्रांड ना बने बल्कि ग्लोबल ब्रांड के रूप में उभर कर आया हैविदेशी निवेश और भूमंडलीकरण के कारण नहीं बल्कि हमारे संसाधन हमारे वैज्ञानिक और उत्कृष्ट मानव संसाधन के कारण आत्म निर्भरहो रहा है ।विदेशी निवेश के मोह त्याग कर स्वदेशी यानी स्वदेशी संसाधन स्वदेशी उत्पादन, स्वदेशी प्रौद्योगिकी स्वदेशी मानव संसाधनों का कुशल उपयोग करने की मानसिकता अपनाने तथा भारत में आर्थिक विकास को बढ़ावा देने रोजगार के अधिक अवसर तथा विदेशी निवेश को आकर्षित करना तथा रक्षा निवेश को बढ़ावा देना है आज भारत को बुनियादी ढांचे को मजबूत करना किसानों कीआय को दोगुना करना सुशासन, युवाओं के लिए रोजगार के अवसर महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य, भौतिक, वित्तीय पूंजी एवं विकास मानव पूंजी को विकसित करना है। नवाचार और अनुसंधान शोध का विकास करना है भारत में अर्थव्यवस्था, अधोसंरचना, प्रौद्योगिकी संचालित प्रणाली, वाइब्रेट डेमोग्राफी एवं मांग पूर्ति की चेन को बनाए रखना है भारत के उद्देश्य वोकल फार वोकल और लोकल फॉर ग्लोबल का मंत्र दिया गया है स्वदेशी उत्पादन खरीदने के साथ ही गर्व से प्रचार प्रसार करना है भारत आयात नहीं करें बल्कि निर्यातक देश बने देश के पास साधन युवा शक्ति बेहतरीन टैलेंट है जिसे बेस्ट प्रोडक्ट एवं उत्ताम क्वालिटी की वस्तुओं का निर्माण कर सकें सप्लाई चौन को आधुनिक बनाए रखना अर्थात केंद्रिक वैश्वीकरण बना मानव केंद्रित भारत स्वदेशी बनाम निर्भर भारत।

शब्द कुंजी – आत्मनिर्भर राष्ट्र, मेक इन इंडिया।

प्रस्तावना – मेक इन इंडिया का मकसद देश को मैन्युफैक्चरिंग का हब बनाना है देश के औद्योगिक विकास की गति को तीव्र करना तथा लगभग 135 करोड़ जनसंख्या वाले भारत देश को एक विनिर्माण केंद्र में परिवर्तित करके रोजगार का सर्जन करना है ।अर्थव्यवस्था के विकास की रफ्तार बढ़ाने औद्योगिकरण और उद्यमिता को बढ़ावा देने तथा रोजगार के अवसर बढ़ाना है भारत के निर्यात उसके आयात से कम होता है इसी ट्रेड को बदलने के लिए वस्तुओं और सेवाओं को देश में ही बनाने की मुहिम को शुरू करने के लिए मेक इन इंडिया यानी भारत मे बनाओ नीति कार्यक्रम 25 सितंबर 2014 को प्रधानमंत्री के द्वारा शुरू की गई थी

भारत के युवा नौकरी खोजने के बजाय रोजगार पैदा करने वाले बनाने तथा इसके माध्यम से सरकार भारत में अधिक पूंजी, तकनीकी निवेश एवं मानव श्रम का अधिक उपयोग करके वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन अपने देश में करना है भारत को आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने तथा वैश्विक महामारी कोविड-19 से विजय प्राप्त करने के लिए प्रधानमंत्री ने 20 लाख करोड़ रुपए का राहत पैकेज की घोषणा की गई जो देश की सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 10% है इस पैकेज के तहत सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योग के कल्याण के लिए 16 घोषणाएं की गई है गरीबों, श्रमिकों और किसानों की आय दुगनी करने के लिए की गई है इसमें चिकित्सा वस्त्र ,इलेक्ट्रॉनिक, प्लास्टिक, रत्न एवं आभूषण फार्म स्टीकर एवं खिलौने जैसे क्षेत्रों का प्रोत्साहित किया गया।

आत्मनिर्भर भारत के अंतर्गत प्रमुख 5 स्तंभ पर विशेष बल दिया गया है जिसमें अर्थव्यवस्था, बुनियादी ढांचा, प्रौद्योगिकी जनसंख्या एवं मांग एवं आपूर्ति हैं भारत पीपी किट का विश्व का दुसरा बड़ा उत्पादक वैलिडेटर, बिजली क्षेत्र मे ट्रांसलेटर, टावर से लेकर ट्रांसफॉर्म और इंसुलेटर तक देश में ही बनाने पर जोर दिया गया है यह योजना शुरू करने बाद सरकार एफडीआई की सीमा को बढ़ा दिया लेकिन सामरिक महत्तव क्षेत्र जैसे अंतरिक्ष में 74% रक्षा 49% निवेश न्यूज मीडिया 26% विदेशी निवेश के लिए खोला गया है

भारत को एक विनिर्माण हब के रूप में विकसित करने के लिए सरकार विभिन्न देशों को कंपनियों को भारत में छूट देकर अपना उद्योग भारत में लगाने के लिए प्रोत्साहित किया है ताकि आयात बिल कम हो सके तथा रोजगार का सर्जन हो आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए निर्यात एवं विनिर्माण में वृद्धि तथा अर्थव्यवस्था में सुधार सकल घरेलू उत्पाद में सिर्फ 16% का योगदान था जिसे 2020 -2022 में बढ़ाकर 25% करना है सरकार नवाचार एवं उद्यमिता कौशल को बढ़ाकर नई स्टार्ट अप कंपनियों को शुरू करने से 10 करोड़ लोगों को रोजगार मिलेगा तथा अर्थव्यवस्था में चुहमुखी विकास होगा मेक इन इंडिया की शुरुआत होने से भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनी आने के कारण 2015 में भारत ने अमेरिका और चीन को पछाड़कर 63 बिलियन अमेरिकन डॉलर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्राप्त किया 2016 में भारत में लगभग 60 बिलियन डालर का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्राप्त किया नये क्षेत्र भारत में निर्माण के अंतर्गत विनिर्माण, अधोसंरचना तथा सेवा गतिविधियों से जुड़े 25 क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है जिससे सुरक्षा, उत्पादन, बीमा क्षेत्र में मेडिकल उपकरणों का निर्माण तथा रेलवे अधोसंरचना का भी व्यापक पैमाने पर निजी क्षेत्र के लिए खोला गया।

जिसमें प्रमुख 25 क्षेत्र क्षेत्रो के नाम इस प्रकार से है ऑटोमोबाइल अवयव, विमानन, जैव प्रौद्योगिकी, रसायन निर्माण, रक्षा विनिर्माण, इलेक्ट्रॉनिक प्रणालियां, इलेक्ट्रिकल मशीनरी, खाद्य प्रसंस्करण, सूचना प्रौद्योगिकी, बिजनेस प्रोसेसिंग प्रबंधन, चमड़ा, मीडिया और मनोरंजन, खनिज, तेल और गैस, फार्मा स्यूटिलास, बंदरगाह और शिपिंग, रेलवे, नवीनीकरण ऊर्जा, और राजमार्ग, अंतरिक्ष और खगोल विज्ञान, कपड़ा और परिधानों, तापीय उर्जा, पर्यटक और अतिथि कल्याण आदि प्रमुख 25 क्षेत्रों पर विशेष विकास पर बल दिया गया है इन क्षेत्रों के विकास पर ही हमारे देश के आर्थिक विकास संभव है इसके बिना अर्थव्यवस्था की कल्पना नहीं की जा सकती है नई सरकार की नीति के अनुसार 100% एफडीआई उक्त क्षेत्रों में अनुमति दी गई है।

अधोसंरचना के तहत औद्योगिक गलियारा तथा स्मार्ट शहरों का विकास हो उच्च स्तरीय अधोसंरचना के लिए अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी तथा तीव्र गांव में संचार व्यवस्था हो तथा बौद्धिक संपदा अधिकार के लिए बेहतर आधार संरचना एवं शोध ,अनुसंधान गतिविधियों के लिए तीव्र गति से विकास तथा कौशल प्राप्त लोगों को रोजगार प्रदान करना है विनिर्माण क्षेत्र में वृद्धि प्रतिवर्ष 12-14 प्रतिशत वृद्धि करके 2.25 देश में सकल घरेलू उत्पाद जीडीपी विनिर्माण की हिस्सेदारी 16% से बढ़ाकर 25% वृद्धि करना है विनिर्माण क्षेत्र में 100 मिलियन अतिरिक्त रोजगार के अवसर प्रदान करना है शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के गरीबों के लिए उचित कोशल विकास का निर्माण करना है प्रत्यक्ष विदेशी निवेश 2013-2014 मे 16 बिलियन डॉलर से बढ़कर 2015-2016 में 36 बिलियन डॉलर हो गया है विनिर्माण क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश बहुत कम है 2017-2018मे 7 बिलियन डालर है जो सेवा क्षेत्र एफडीआई 23.5 बिलियन डालर है।

आर्थिक पैकेज कुटीर उद्योग ग्रह, लघु उद्योग एवं मझोले उद्योग के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की गई है जिससे करोड़ों लोगों की आजीविका प्राप्त हुई है 800 करोड़ की लोगों को रोजगार मिला आत्मनिर्भर भारत के अंतर्गत भारत में लैंड,लेबर, लिक्विडिटी और ला पर विशेष बल दिया गया है लोकल फॉर वोकल को भी बहुत जोर दिया गया है कृषि और किसानों को स्वावलंबी बनाना ऐसी अर्थव्यवस्था का विकास करना है जिसमें प्राथमिक , द्वितीयक, तृतीयक क्षेत्र का आर्थिक सुधार करना है जिससे राष्ट्रीय आय प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हो सके आ भारत अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए बजट की व्यवस्था की गई है जिसमें 29.87 का पैकेज की घोषणा की गई है इस पैकेज के तहत 800 करोड़ रुपए गरीब कल्याण एवं 11 करोड़ अन्य योजनाएं श्रमिक और कृषि क्षेत्र के विकास के लिए 3.1 लाख करोड़ रुपए एम एस ई सेक्टर पावर सेक्टर के लिए 5.94 करोड़ रुपए एवं 1.92 लाख करोड रुपए मत्स्य एवं पशुपालन और मधुमक्खी पालन के लिए 1.5 लाख करोड़ तथा मनरेगा के लिए 48.100 करोड़ एवं आरबीआई के लिए 800 करोड रुपए की व्यवस्था की गई है जिसमें सभी सड़क विक्रेताओं को रोजगार के लिए लोन दिया गया सभी क्षेत्रों का विकास हुआ जिसमें 11 करोड लोगों को रोजगार मिला है।जिससे आर्थिक गतिविधियां तीव्र हो सके।

कोरोना महामारी से लॉकडाउन के कारण नाई की दुकान मोची की दुकान पान की दुकान धोबी कीदुकान एवं फुटपाथ विक्रेताओं की की व्यापार पर पढ़नेवाले बुरे प्रभावों को कम करने के लिए सरकार ने अल्पकालीन ऋण की व्यवस्था 10000 की आर्थिक मदद की है एक देश में एक राशन कार्ड के अंतर्गत उचित मूल्य की दुकानों एवं सार्वजनिक वितरण प्रणाली से 3 माह का मुफ्त राशन उपलब्ध कराया गया आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत देश में संगठित क्षेत्र असंगठित क्षेत्र एवं गरीब नागरिक को श्रमिक, किसान, मजदूर, पशुपालन, मछवारे ,काश्तकार ,कुटीर उद्योग लघु उद्योग मध्यमवर्ग उद्योग को को लाभ मिले इससे 10 करोड़ मजदूरों को लाभ एम एस ई से जुड़े 11 करोड़ कर्मचारियों को फायदा होगा उद्योग से जुड़े 3.8 करोड़ लोगों को फायदा मिला है तथा वस्त्र उद्योग मे कार्य करने कर्मचारियों को 4500 करोड़ का लाभ प्राप्त हुआ।

निष्कर्ष - मेक इन इंडिया की कंपनियां भारत निर्माण करने के लिए प्रेरित होगी लेकिन विभिन्न प्रकार की चुनौतियां का भी सामना करना पड़ेगा निर्माण करने के लिए सभी सुविधा उपलब्ध नहीं होने से वस्तुओं के निर्माण में परेशानी होगी क्योंकि भारत खराब बुनियादी ढांचा खराब संचालन व्यवस्था भारत का विनिर्माण केंद्र बनाने में रुकावट पैदा होती है लेकिन फिर भी रोजगार के नए अवसर प्राप्त होंगे तथा अर्थव्यवस्था को नई दिशा मिलेगी जिसे वस्तुओं का निर्माण भारत में होगा आयात में कमी आएगी भुगतान संतुलन हमारे पक्ष में होगा निर्यात में वृद्धि होगी तथा सस्ते दामों पर विभिन्न प्रकार की वस्तुएं प्राप्त होगी अर्थव्यवस्था की तेजी से बढ़ेगी भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि, सेवा ,उद्योगों के गठन पर आधारित है। सेवा क्षेत्र की भूमिका महत्वपूर्ण है सकल घरेलू उत्पाद में सेवा क्षेत्र का योगदान 57% है साथ ही कपड़ा हस्तशिल्प वास्तुकला ,दूरसंचार क्षेत्र की संभावना जताई जा रही है जिसमें रोजगार के अवसर बढ़ेंगे तथा देश विकास की ओर अग्रसर होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. www-BBC-Com
2. www-Jagran-Com
3. www-Jagranjosh-Com
4. www-amarujala-com
5. www-livehindustaan-com
6. NDTV & other channels
7. google

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

साहित्यकार नागार्जुन के उपन्यासों में नारी विमर्श

देवेन्द्रसिंह ठाकुर* डॉ. श्रीमती मंजुला जोषी**

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) शासकीय महाविद्यालय, धरमपुरी, जिला- धार (म.प्र.) भारत
** प्राध्यापक (हिन्दी) श. भी. ना. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़वानी, जिला-बड़वानी (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – उपन्यास का अर्थ है- मानव जीवन के निकट मानव जीवन की स्थापना। उपन्यास में मानव जीवन का चित्रण होता है जिसे पढ़कर पाठक मानव जीवन को समझने बुझने का प्रयास करता है। हिन्दी के आरम्भिक उपन्यासों का निर्माण लोकसाहित्य की आधारशिला पर हुआ। कौतूहल और जिज्ञासा के भाव ने इसे विकसित किया। आधुनिक जीवन की विषमताओं, मानव मन की भावनाओं, जीवन की सच्चाईयों का चित्रण ने उपन्यास कथा को जीवन के यथार्थ में प्रवेश कराया।

आरम्भ से ही पुरूषों ने अपने अधिकारों के बल पर स्त्री-पुरूष के संबंधों के बारे में कुछ धारणाएँ निष्चित कर दी थी। इन नियम, कायदो को पुरूषों ने अपने हित में बनाये और सारे के सारे नियम, कायदे, सिद्धांत स्त्रीयों पर थोप दियें ताकि स्त्री को गुलाम बनाकर रखा जा सके। इस प्रकार के नियम, कानून स्त्रीयों के लिए नकारात्मक और दमनकारी रहे। इसलिए नागार्जुन ने अपने उपन्यासों की नारी पात्रों को सशक्त, आत्मविश्वासी, साहसी, निडर और निर्भय बनाया है जो समाज की सड़ी गली परम्पराओं का मुँहतोड़ जवाब दे सके। नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में यथार्थवादी शैली, सामाजिक यथार्थवाद का प्रभावशाली चित्रण किया है यह शैली उन्हे अन्य उपन्यासकारों से अलग करती हैं। नागार्जुन के सभी उपन्यास सामाजिक विषयो पर आधारित है। उनके उपन्यासों में आए सभी नारी पात्र लोक जीवन के विभिन्न सच्चाईयों को प्रमाणित करते है। इन्हीं नारी पात्रों के माध्यम से नागार्जुन ने समाज के राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक सच को उजागर किया है। नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का प्रभावी अंकन किया है। आपने **'बलचनामा', 'रतिनाथ की चाची', 'कुम्भीपाक', 'बाबा बटेसरनाथ', 'इमरतिया', 'उग्रतारा', 'नयी पौध', 'जमनिया का बाबा', 'दुखमोचन'** आदि उपन्यासों में विविध पात्रों के माध्यम से आम जनजीवन और नारी जीवन से जुड़ी अनेक समस्याओं को पाठक के समक्ष उठाया है। जमींदारों के अत्याचार और शोषण से लेकर दहेज की समस्या, अनमेल विवाह, सामाजिक बुराईयों, अंधविश्वास, स्त्री-पुरूष में भेद, ढोंग-पाखण्ड, बेतुके रीति-रिवाज आदि ज्वलंत विषयों को समाज के समक्ष उठाया गया है।

शब्द कुंजी – समाज, संघर्ष, नारीवर्ग, नारी विमर्श।

प्रस्तावना – नागार्जुन के नारी पात्रों को दो वर्गो में रखा जा सकता है- एक वर्ग का नारी पात्र पारम्परिक सामाजिक-सांस्कृतिक रूढ़ियों में पिसता हुआ तथा दूसरा वर्ग का नारी पात्र इन कठिन परिस्थितियों से लड़ता हुआ। नागार्जुन ने अपने उपन्यासों के माध्यम से बताया कि सामाजिक विसंगतियों, कुरीतियों का सबसे पहला शिकार नारी को ही बनाया जाता हैं क्योंकि पुरूष प्रधान समाज में स्त्री को सबसे कमजोर माना गया है। आपने बताया कि किस प्रकार से सभी वर्ग की नारी पात्र सभी प्रकार की सामाजिक और पारिवारिक समस्याओं का डटकर सामना करती हैं। इस तरह नागार्जुन ने सामाजिक कुरीतियों, विसंगतियों और बुराईयों पर करारे व्यंग्य का प्रहार किया है। कहने को तो अभिजात्य और करने का निम्नतर कर्म पर नागार्जुन का व्यंग्य रूपी कोड़ा नहीं छोड़ता। आपका मानना है कि समाज में चारों ओर जो सामाजिक विसंगतियाँ फैली हुई दिखाई देती हैं, उसमें पुरूषों के साथ साथ स्त्रियों की भी भागीदारी होती हैं। यह बात बताकर नागार्जुन ने अपनी समदृष्टि का परिचय दिया है।नागार्जुन की लोक चेतना, पीड़ा रूपी सघन अंधकार में बिजली के समान कौंध् जाती है और यथार्थ का चित्रण कर जाती है। बलचमना कहता है कि तीन पुरखों का हाल तो मुझे भी पता हैं। मैंने मालिकों के जूठन का गुन गाते, उनकी विकट गालियों को प्रेम भाव से सुनते दादी को देखा। रात-दिन की सेवा करते रहने पर भी पाव आध् पाव थुली के लिए माँ किस तरह रिरियाती फिरती थी। स्पष्ट है कि नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में लोक-जीवन की अंतरंग तस्वीरें एकत्र की है। इन उपन्यासों में वही सहज और समस्यामय जीवन है, जिसका साक्षात्कार स्वयं कथाकार नें किया है। तभी उनका लोकजीवन विष्वसनीय और प्रभावपूर्ण हो सका है।

शोध प्रविधि- किसी भी शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए तथ्यों और सामग्री का होना अतिआवश्यक है। विद्वानों द्वारा तथ्यों और सामग्री के संकलन हेतु अनेक विधियाँ बतायी है, जैसे साक्षात्कार, प्रश्नावली, सर्वेक्षण और आसन कार्य विधि आदि। सामग्री संकलन के लिए मैंने नागार्जुन के उपन्यास साहित्य का उपयोग किया। नागार्जुन तथा नारी विमर्श से संबंधित अन्य साहित्यिक पत्र पत्रिकाओं तथा इंटरनेट का सहारा लेकर भी तथ्यों का संकलन किया। हम सब जानते है शोध प्रविधि का चयन विषयानुसार किया जाता है इसलिए मैंने इस शोध कार्य हेतु साक्षात्कार तथा आसन विधि का चयन किया है जो मेरे शोध कार्य के लिए उपयुक्त सिद्ध हुई।

शोध के उद्देश्य- प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य मुख्य रूप से नागार्जुन के उपन्यासों में वर्णित नारी विमर्श का समग्र अध्ययन करना है। नारी विमर्श का सैद्धांतिक विवेचन कर उसके अर्थ और स्वरूप पर प्रकाश डालना है। इस

शोध के माध्यम से नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित समाज के विविध पक्षों का अध्ययन, चिंतन, मनन करके उसमें निहित तत्वों को खोजना भी है। समाज में देश की आधी आबादी के महत्व को प्रतिपादित करना हैं जिसके बिना समाज का विकास होना असंभव हैं।

उपकल्पना- शोधार्थी और पाठक नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित नारी विमर्श की विविध पहलुओं को समझ सकेगें। सामाजिक जीवन में नारी के महत्व को जानकर नारी जाति के प्रति बनी पारम्परिक, दकियानूसी सोच के खोल से बाहर निकलकर एक सम्माननीय दृष्टिकोण अपनायेगें। पाठक जान सकेगें कि एक आदर्श समाज के निर्माण में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं।

नागार्जुन के नारी पात्र- नागार्जुन की प्रगतिशील दृष्टि निम्न वर्ग की स्त्रियों को प्रतिष्ठा प्रदान करती है और उच्चवर्गीय स्त्रियों पर व्यंग्य करती है। नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में समाज के सभी वर्गो से नारी पात्रों को लिया है, जो निरंतर समाज की दकियानूसी परम्पराओं का विरोध करते हुए समाज में अपने लिए एक मुकाम बनाने का प्रयत्न करती है और अंततः सफल होती दिखाई देती है।

'रतिनाथ की चाची' उपन्यास नारी जीवन के विविध समस्यात्मक पहलुओं का उजागर करता है। इसमें आठ-दस साल के मासूम रतिनाथ की विधवा चाची गौरी के जीवन संघर्ष का मार्मिक अंकन किया गया है। उपन्यास में मिथिलांचल की विधवा नारी के नारकीय जीवन का यथार्थ चित्रण करने के साथ ही मिथिला के ग्रामीण जन-जीवन का सजीव चित्रण भी किया गया हैं। बाबा का **'रतिनाथ की चाची'** उपन्यास मानो आज की कथा कह रहा हो। जब गौरी का गर्भ गिराने के लिए आने वाली चमारिन दो टूक कहती है- 'एक बात कहती हूँ। माफ करना बड़ी जातवालों की बिरादरी बड़ी मलेच्छ, बड़ी निष्ठूर होती है मलकाइन। हमारी भी बहू-बेटियाँ राँड हो जाती हैं पर हमारी बिरादरी में किसी के पेट से आठ-आठ, नौ-नौ महीने का बच्चा निकाल कर जंगल में फेंक आने का रिवाज नहीं है। ओह, कैसा कलेजा होता है तुम लोगों का, मइया री मइया।' यह संवाद आज के समाज पर भी सटीक बैठता है। भले ही हम आधुनिक दौर में पहुँच गए हो पर नारी के प्रति हमारी मानसिकता पारम्परिक और रूढ़िवादी ही है।

'रतिनाथ की चाची' उपन्यास की नायिका गौरी एक स्वाभिमानी स्त्री है। पति की मृत्यु के बाद जब उसकी माँ और भाई उसे मायके में ही रहने के लिए कहते है तो वह कहती है-'बाबू ने कुष-तेल-जल लेकर मुझे दान कर दिया, फिर मेरा इस घर में रहना अनुचित नहीं होगा, माँ ? विवाहिता के लिए पितृकुल का अमृत भी पतिकुल के माँड या पीने के साधारण जल की तुलना में तुच्छ है। माँ तभी तो तुमने अपनी नानी के धन पर लात मार दी थी। है न माँ ?'

रतिनाथ की विधवा चाची गौरी का चरित्र भावुकतापूर्ण होते हुए भी संजीदगी से भरा हुआ हैं उपन्यास के अंत तक आते-आते चाची के सारे दोषों और कलंकों का परिमार्जन हो जाता हैं। अंततः वह दया, करूणा और प्रेम की मूर्ति परिलक्षित होती हैं। जयनाथ, रतिनाथ और उमानाथ के प्रति उसका व्यवहार उसकी इन चारित्रिक विशेषताओं का परिचायक हैं। उसकी आँखों में छलकते हुए वात्सल्य के तरल रूप को देखकर रतिनाथ का चेहरा खिल उठता है। रतिनाथ के द्वारा चाची के लिए कहे गए शब्द-'ऐसा लगता है कि दिन से दिन तुम देवता होती चली जा रही हो।' चाची के चरित्र में निहित उदात्तता की ही अभिव्यक्ति है।

'बलचनमा' उपन्यास में उच्चवर्गीय स्त्रियाँ सजधज कर पटरानियाँ बने बैठी रहती है, उनका पारिवारिक काम-काज में सहयोग न के बराबर होता है। इस उपन्यास का नायक बलचनमा निम्नवर्गीय नारी को सचेत करते हुए उच्चवर्गीय नारी पर व्यंग्य करते हुए कहता है कि 'गरीबों के यहाँ यह सब चोंचले नखरे नहीं चलेंगे। हमारी औरतें मजदूरी का दाना खाती है। अपनी माँ-बहनों, बहू-बेटियों के हाथ-पैर हमारे यहाँ सिरिफ छूने-मसलने या नचाने, थिरकने का सामान नहीं हुआ करते। हमारी जिन्दगी का सहारा हैं वे हाथ पैर। नागार्जुन की यह विचारधारा अभिजात वर्ग के लिए एक सीख है। क्षेत्र चाहे जो भी हो सभी दृष्टि की समानता का वैचारिक साहस होना चाहिए। व्यक्ति की ही नहीं कार्य की भी समानता पर बल दिया जाना चाहिए। 'बलचनमा' उपन्यास में परम्परागत धार्मिक विचारों का त्वरित विरोध दृष्टिगत होता है। भूकंप की खेरात पर उसी गांव की विधवा कुन्ती वास्तविकता का वर्णन व्यंग्य के माध्यम से करती है, चांवल के चार दाने छींटकर जैसे बहेलिया चिड़िया को फंसाता है, ठीक उसी तरह से ये दौलत वाले गरजमंद औरतों को परपंच में फंसा मारते है, उनके पास धन भी होता है, और अक्ल भी।

नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में तमाम दृष्टिकोणों से समाज में स्त्री-पुरूष समानता की बात उठाई है। निम्न वर्ग का प्रतिनिधि बलचनमा समाज में व्याप्त कुरीतियों को अभिजात्य वर्ग से आयी हुई बताता है। तमाम स्तरों पर लड़का और लड़की में भेद का विरोध करते हुए बलचनमा कहता है, 'हमारे यहाँ बड़ी जात वाले माँ-बाप के दिल लड़कों के लिए और लड़कियों के लिए और। समाज में व्याप्त कुरीतियों और बुराइयों के लिए उपन्यासकार नागार्जुन अभिजात्य वर्ग को ही ज्यादा दोषी मानते है। नागार्जुन इन विकट सामाजिक परिस्थितियों में परिवर्तन की मांग करते हैं, उनकी मान्यता है कि इन रूढ़ियों, कुरीतियों, बुराईयों और भेदापभेदों का अंत होने पर ही नारी जाति की सामाजिक दषा सुदृढ़ हो सकती हैं। आपने उपन्यासों के माध्यम से समाज को जागरूक करने का प्रयास किया हैं।

नागार्जुन ने अपने सामाजिक उपन्यास **'कुम्भीपाक'** में नारकीय जीवन जीने वाली चंपा और इंदिरा की कहानी को प्रस्तुत किया गया है जिन्हें उपन्यास की नायिका निर्मला नरक से निकालकर आजाद कराती है। निर्मला में विचार करने और उस विचार पर कार्य करने की शक्ति है वह एक निर्भीक, साहसी और बुद्धिमान महिला है जो सामाजिक कुरीतियों का डटकर मुकाबला करती है। इस उपन्यास में समाज में व्याप्त अतृप्त यौनाचार से उत्पन्न व्याभिचार में लिप्त स्त्रियों की दीन-दशा का वर्णन किया है। और हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों पर व्यंग्य करते हुए कहा गया है कि हिन्दुओं के माने हुए नरकों में से एक नरक 'कुम्भीपाक' भी है, जहां मरने के बाद ही मनुष्य जा सकता है। किन्तु समाज में व्याप्त व्यभिचार के कारण यह नरक जीते जी भोगने को मजुबर है, पुरूषों द्वारा अपने मनोरंजन का साधन बनाकर छोड़ी गई स्त्रियाँ तिरस्कृत जीवन जीने के लिये अभिशप्त हैं। इस उपन्यास में समाज में फैली भोग विलास की प्रवृत्ति की ओर संकेत करते हुए बताया गया है कि अभिजात्य वर्ग धन, पद के अहं में व्यभिचार को बढ़ावा देते हैं जिनका शिकार लाचार, बेबस, कमजोर और निम्न वर्ग की स्त्रियाँ होती हैं। उपन्यास में नारी पात्रों द्वारा इस नरक से निकलने और आगे बढ़ने की दृढ़ ईच्छा शक्ति को अभिव्यक्त किया गया हैं।

'उग्रतारा' उपन्यास में बाल विधवा उगनी की कहानी है जो सुंदर और आकर्षक स्त्री है। विधवा होने के बाद समाज के अत्याचारों का सामना निडरता और हिम्मत के साथ करती है। अपने तरीके से जीवन जीने के लिए संघर्ष करते हुए वह प्रेम विवाह कर लेती है। वह आशावादी और आत्मविश्वास

से भरपूर नारी पात्र है जो कभी भी हार नहीं मानती है। उसने न तो विधवा जीवन स्वीकार किया न अनमेल विवाह स्वीकार किया बल्कि प्रियतम से विवाह करके जीवन को एक क्रांतिकारी मोड़ दिया।

'नई पौध' उपन्यास की नायिका बिसेसरी की विवाह समस्या को नागार्जुन अपनी प्रगतिशील चेतना के तहत युवा पीढ़ी के माध्यम से हल करते है। इस उपन्यास में युवाओं की टोली बमपाटी, नायिका बिसेसरी की पहल पर उसके अनमेल विवाह को रोकने के लिए कोई भी कीमत चुकाने को तैयार रहती हैं और इस बमपाटी के युवा कहते है कि गाँव का एक-एक नौजवान पिटते-पिटते बिछ जायेगा, पर ऐसा अनमेल विवाह नहीं होने देगा। नागार्जुन के स्त्री पात्र अत्यन्त ही जुझारू और क्रांतिकारी चेतना संपन्न हैं।

'इमरतिया' उपन्यास में मठ में रहने वाले धूर्त बाबाओं की विकृत काम वासना का वर्णन करते हुए वे कहते है कि काम वासना पुरूष और जानवर में कोई भेद नहीं करती, उसके लिए देह ही महत्वपूर्ण हो जाती है और उसके आगे उसे कुछ ओर नजर नहीं आता हैं। इस उपन्यास की नायिका बहादुर और संवेदनशील स्त्री है, किन्तु बाबा मस्तराम जैसे ठग साधु-संतो के जाल में फंस कर उसका चरित्र अपराधिक हो जाता है। अपराधियों के सानिध्य में रहने के कारण उसमें भी अपराधिक प्रवृत्ति पनपने लगती है और वो भी ठगों के साथ अपराध में लिप्त हो जाती है। जमनियों जैसे मठों का पर्दाफाश करते हुए नागार्जुन ने धर्म, रूढ़ियों और पाखण्ड को अपनी कृतियों में खुब उकेरा है। योगिनी, देवदासी जैसा श्रद्धेय अलंकरण पहनाकर जमनिया मठ पर भी बाबा मस्तराम, सुखदेव, रामजनम, भगौती आदि को प्रसन्न करने के लिये इमरतिया, जलेबिया जैसी स्त्रियाँ चौबीसो घंटे सेवा में हाजिर रहती है। इस उपन्यास में नारी की मजबूरियों का फायदा उठाते ढोंगियों का चित्रण किया गया हैं साथ ही साथ ढोंगियों का पर्दाफाश करने का साहस दिखाने वाली नारी पात्रों का भी प्रभावी चित्रण किया गया हैं।

नागार्जुन की विचारधारा समाज के दोहरे मापदण्ड पर व्यंग्य करती है। नागार्जुन देख रहे है कि यह समाज अर्थ प्रधान है, जिसके पास धन है, उसके लिये कोई कायदा कानून नहीं, वह जो करे वही कायदा और कानून बन जाता है। रतिनाथ की चाची उपन्यास में गरीबों एवं स्त्री पात्रों की पीड़ा और अमीरों पर व्यंग्य दृष्टि गोचर होता है। लेकिन नागार्जुन के नारी पात्र इन शास्त्राकारों से दो-दो हाथ करने को तैयार है। अपने हक के लिए क्रंाति और विद्रोह की चेतना उनमें उत्पन्न हो गई है।

'वरूण के बेटे' उपन्यास में मधुरी नामक गरीब युवा लड़की की कहानी का चित्रण है। वह अपने गाँव के मछुआ लोगों के जीवन संघर्ष का हिस्सा बन कर सहायता करती है। जमींदार और सरकारी अधिकारियों के षड्यंत्र को बेनकाब करने के लिए संयुक्त मोर्चे का गठन करती है। वह संघर्ष करते हुए जेल भी जाती है परन्तु हार नहीं मानती। मधुरी को विवाह के बाद ससुराल वालों के ताने, अन्याय और अत्याचारों को सहना पड़ता परन्तु अति हो जाने पर वह पति का घर छोड़ देती है और राजनीतिक जीवन में प्रवेश करके अपना एक मुकाम बनाकर गाँव वालो की सेवा करती है। इस उपन्यास में नागार्जुन ने स्त्री के सामाजिक दायित्व को बताने का प्रयास किया है। उदार विचारों की धनी मधुरी स्त्री-पुरूष समता की समर्थक है। ये रूपवती नारी अपनी चारित्रिक दृढ़ता और आत्म गौरव का परिचय देती है।

निष्कर्ष- इस प्रकार नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में नारी पात्रों को सशक्त रूप में प्रस्तुत करते हुए बताया कि नारी क्या कुछ नहीं कर सकती यदि वो एक बार ठान ले तो कुछ भी करना मुश्किल नही। नागार्जुन भी अपने नारी पात्रों को भाग्यवादी नहीं बनाना चाहते। उनकी नारी पात्रों को परिवर्तन में विश्वास है क्योंकि परिवर्तन प्रकृति का नियम है। ये नारी पात्र बुद्धिमान, साहसी, चतुर, आत्मविश्वासी, निडर हैं। जो अंधविश्वासों, व्यभिचारों, सामाजिक कुरीतियों तथा बुराईयो के प्रति संघर्ष करती हुई दिखाई देती हैं। सभी उपन्यासों की नारी पात्र बुराईयों का प्रतिकार और विरोध करती दिखाई देती हैं। ये नारी पात्र अपनी असीम करूणा से पाठक के मन में असीम संवेदना उत्पन्न कर देती हैं। इन नारी पात्रों की चारित्रिक विशेषताएं कुछ इस प्रकार हैं कि उपन्यासों के अंत तक आते-आते रूढ़िवादी पाठक परम्परागत कुरीतियों, अंधविश्वासों के प्रति विद्रोही हो जाते है और इस प्रकार उपन्यासकार समाज को संदेश देने के अपने उद्देश्य में सफल हो जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. आधार ग्रंथ : नागार्जुन का उपन्यास साहित्य।
2. डॉ. प्रणव- नागार्जुन की सामाजिक चेतना : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. डॉ. गणेशन- हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. सिंह, डॉ. त्रिभुवन- हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद : हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

खेल द्वारा शिक्षा

डॉ. सोनाली सिंह *

* असिस्टेंट प्रोफेसर (शारीरिक शिक्षा) जैन कन्या पाठशाला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.) भारत

प्रस्तावना - खेल, बच्चे की स्वाभाविक क्रिया है। भिन्न-भिन्न आयु वर्ग के बच्चे विभिन्न प्रकार के खेल खेलते हैं। ये विभिन्न प्रकार के खेल बच्चों के समपूर्ण विकास में सहायक होते हैं। खेल से बच्चों का शारीरिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, संवेगात्मक विकास, सामाजिक विकास एवम् नैतिक विकास को बढ़ावा मिलता है किन्तु अभिभावकों की खेल के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति एवम् क्रियाकलाप ने बुरी तरह प्रभावित किया हैं। अत: यह अनिवार्य है कि शिक्षक और माता-पिता खेल के महत्व को समझें। खेलों के प्रकारों में अन्वेषणात्मक खेल, संरचनात्मक खेल, काल्पनिक खेल और नियमबद्ध खेल शामिल हैं। खेलों में सांस्कृतिक विभिन्नताएं भी देखी जाती हैं। खेलते समय बच्चे अक्सर वयस्कों की नकल करते हैं। इस प्रकार से उपयुक्त व्यवहार और उन भूमिकाओं को सीखते हैं जो कि उन्हें बड़े होकर निभानी होंगी। खेलते हुए परस्पर क्रिया में वे विभिन्न प्रकार के कार्यो, त्यौहारों, धारणाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। खेल से मनुष्य की मनोवैज्ञानिक जरूरतें पूरी होती हैं तथा वह मनुष्य को सामाजिक कौशलों के विकास का भी अवसर देता है। पियाजे के अनुसार खेल बच्चों की मानसिक क्षमताओं के विकास में भी एक बड़ी भूमिका निभाते हैं। पहले चरण में बच्चा वस्तुओं के साथ संवेदन प्राप्त करने व कार्य संचालन करने का प्रयास करता है। दूसरे चरण में बच्चा कल्पनाओं को रूप देने के लिए वस्तुओं को किसी के प्रतीक के रूप में उपयोग करने लगता है। अन्तिम चरण में (7 से 11 वर्ष) काल्पनिक भूमिकाओं के खेलों की तुलना में बच्चा नियमबद्ध खेल (या क्रीड़ाओं) में संलग्न रहता है। खेलों से तार्किक क्षमता व स्कूल सम्बन्धी कौशलों को विकसित होने में मदद मिलती है।

खेल की विशेषताएँ - कोई भी ऐसा कार्यकलाप जिससे बच्चों को आनंद मिलता है, खेल है।एक ही कार्यकलाप किसी के लिए खेल हो सकता है और वही दूसरे के लिए कार्य। उदाहरणत: जब बच्चे कक्षा में सिक्कों को पहचानना सीख रहे हैं तो वह कार्य कर रहे हैं। परन्तु जब वे सब्जी खरीदने और बेचने का खेल खेलते हैं और इस प्रक्रिया से स्वयं ही सिक्कों की पहचान करना सीख जाते हैं तब यह गतिविधि खेल बन जाती है। दूसरा, खेल अपने आप में ही आनंददायक है। खेलने से बच्चों को बहुत संतोष मिलता है। जब बच्ची बार-बार सीढ़ी पर चढ़ती है और उससे कूदती है तो ऐसा वह इसलिए करती है क्योंकि उसे मजा आता है। न तो यह क्रिया वह अपना कौशल दिखाने के लिए कर रही है, न ही ईनाम पाने के लिए। आनंद के साथ-साथ ऐसा करते समय बालिका के शारीरिक और क्रियात्मक कौशलों का अनायास ही विकास हो रहा है जबकि यह उसका उद्देश्य नहीं है। खेल ऐसी क्रिया है जिसमें बालिका स्वेच्छा और खुशी से हिस्सा लेती है। खेल में उसका योगदान सक्रिय होता है।

खेल विकास में सहायक - खेल में बालिका को अपनी रूचि के अनुसार क्रियाएँ चुनने की स्वतंत्रता होती है इस कारण वह ऐसे खेल चुनती है जो उसके लिए न तो बहुत सरल हों न ही बहुत कठिन परन्तु चुनौतीपूर्ण हों। इस प्रकार वह उन चीजों को सीखती है जिन्हें सीखने के लिए वह तैयार होती हैं। इस प्रकार सीखने की प्रक्रिया बोझ न बनकर आनंददायक हो जाती है। साथ ही साथ बच्चे खेल में क्रियाकलाप द्वारा सीखते हैं। ऐसा करने से संकल्पनाओं को अधिक अच्छी तरह समझा जा सकता है। यदि बच्चों को किसी संकल्पना के बारे में केवल मौखिक रूप में बताया जाए और स्वयं करने को मौका नहीं दिया जाए तो वह उसे इतनी अच्छी तरह नहीं समझ पाएंगे। यह बात आपने स्वयं अनुभव भी की होगी। उदाहरण के लिए अपने किसी मित्र के मुख से पकवान बनाने की विधि सुनकर उतना नहीं सीखा जा सकता जितना कि स्वयं पकवान बनाकर। उसी प्रकार अगर आपने राधा को केवल बताया ही होता कि मिट्टी से बना एक छोटा सा टुकड़ा गिरने पर नहीं टूटेगा तो यह लगभग निश्चित है कि राधा को यह बात समझ नहीं आती और वह इस जानकारी में रूचि भी नहीं लेती जूझने से बालिका का आत्मविश्वास बढ़ता है और उसे स्वावलंबी होने का अहसास होता है। जैसे-जैसे बालिका बड़ी होती है वह अन्य बच्चों के साथ खेलती है। उनके साथ खेलते हुए आपस में चीजें बाँटना, नियमों का पालन करना, अपनी बारी की प्रतीक्षा करना सीखती है। इस प्रकार वह अन्य लोगों के दृष्टिकोण को ध्यान में रखना और उनको महत्व देना भी सीखती है।

सामाजिक विकास का एक रूप खेल - पारटेल और अन्य सिद्धान्तकार खेल को सामाजिक आदान-प्रदान के एक रूप की तरह देखते हैं जो सहपाठियों के साथ सहयोगी कार्या में संलग्न होने की बच्चे की विकसित होती हुई क्षमता को उत्ताम भी बनाता है और प्रतिबिम्बित भी करता है। खेल के आरंभिक चरणों में सहपाठियों के साथ आदान-प्रदान लगभग नहीं या बहुत थोड़ा होता है और उस समय सामाजिक कौशलों के प्रयोग में असमर्थता भी दिखती है।आगे चलकर दूसरे के पक्ष से देखने की क्षमता, विभिन्न भूमिकाओं में समन्वय (जैसे एक माँ, एक बच्चा) खेल की विषयवस्तु के बारे में बातचीत और झगड़ों को सुलझाने की सामर्थ्य का विकास होता हुआ दिखाई देता है। खेल में कल्पित और नाटकीय स्थितियां सामान्यत: सामाजिक आदान-प्रदान की अधिक परिपक्व विधियाँ मानी जाती हैं। कुछ शोधकर्ताओं ने

धक्का-मुक्की वाले खेलों को भी सामाजिक दृष्टिकोण से देखा है। धक्का-मुक्की के अन्तर्गत सब तरह के कुश्ती और 'पकड़ो तो जाने' कोटि के खेल शामिल किये जा सकते हैं।

निष्कर्ष - शोधकर्ताओं ने यह जानने की कोशिश की है कि बच्चे और वयस्क अपना काफी समय खेल में क्यों व्यतीत करते हैं। इस बारे में अलग-अलग विचार हैं। कुछ शोधकर्ताओं के मतानुसार खेल और जीवन की समस्याओं और वास्तविकताओं से पलायन है और दुखों को भुलाने का एक माध्यम है। कुछ व्यक्ति खेल को एक विश्रामदायक क्रिया के रूप में भी देखते हैं। अन्य लोगों का दृष्टिकोण यह है कि खेल द्वारा हमारे शरीर की अतिरिक्त ऊर्जा खर्च होती है। बच्चों के खेल के बारे में एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण यह है कि इसके द्वारा बच्चे वयस्कों की भूमिका निभाने के लिए तैयार होते हैं। सभी शोधकर्ता इस बात से सहमत हैं कि बच्चे खेल द्वारा बहुत कुछ सीखते हैं और खेल से विकास को गति मिलती है। अध्ययनों से यह प्रमाणित होता है कि जिन बच्चों को खेलने के अवसर और प्रेरणा नहीं मिलते वे विकास के हर क्षेत्र में पिछड जाते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. सकारात्मकमुक्त ज्ञानकोश विकिपीडिया -काम और खेल- 07रू32, 24 मई 2020
2. https://www-aajtak-in/education/story/students&can&learn&by&these&easy &steps&&301176&2015 06&09

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

एक नई पहल - नई शिक्षा नीति - एन.सी.सी इलेक्टिव कोर्स के रूप में

डॉ. उदय डोलस*

* एनसीसी अधिकारी, चन्द्रशेखर आजाद शा. स्नाकोत्तर महाविद्यालय, सीहोर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना - विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने सभी राज्यों और विश्वविद्यालयों को नेशनल कैडेट कॉर्प्स (एन.सी.सी) को जनरल इलेक्टिव क्रेडिट कोर्स (जी.ई.सी,सी) के तौर पर शामिल करने का निर्देश दिया है। कॉलेजों में एनसीसी की इलेक्टिव कोर्स के रूप में पढ़ाई होगी।

एनसीसी महानिदेशालय के अनुशंसा पर विश्वविद्यालय एवं कॉलेजों में पाठ्यक्रम शुरू करने की पहल की गई है। इसे लेकर सिलेबस की रूपरेखा भी तैयार कर लिया गया है। सिलेबस को 24 क्रेडिट के माध्यम से कुल 6 सेमेस्टर में छात्रों को कोर्स चुनने का मौका दिया जाएगा। पहले दो सेमेस्टर में कुल चार क्रेडिट, तीसरे एवं चौथे में कुल 10 क्रेडिट और 5 वें एवं 6 वें सेमेस्टर में भी कुल 10 क्रेडिट शामिल किया जाएगा। इस कोर्स को चुनने वाले छात्रों को ट्रेनिंग दिया जाएगा।

कोर्स चुनने वाले छात्रों को सफलतापूर्वक ट्रेनिंग पूरा करने पर एनसीसी की तरफ से एनसीसी बी और फिर एनसीसी सी सर्टिफिकेट दिया जाएगा। नई शिक्षा नीति-2020 के तहत नया नियम शैक्षणिक सत्र 2021-22 से लागू होगा। डायरेक्टर जनरल एनसीसी ने कोर्स तैयार करते हुए यूजीसी को भेजा, जिसे अब विश्वविद्यालय के कुलपतियों को भेजा है। कोर्स चॉइस बेस्ड कैडेट सिस्टम यानी सीबीसीएस मोड में रहेगा।

सर्टिफिकेट वाले अभ्यर्थी को मिलता है नौकरी में लाभ - एनसीसी बी सर्टिफिकेट वाले अभ्यर्थी को 10 से 15 प्रतिशत का छूट फोर्स की नौकरी में मिलता है। केंद्र सरकार की सेंट्रल आर्म पुलिस फोर्स में सी सर्टिफिकेट वाले अभ्यर्थी को 5 प्रतिशत और बी सर्टिफिकेट वाले अभ्यर्थी को 3 प्रतिशत छूट नौकरी में मिलता है। विभिन्न राज्य स्तरीय एवं केंद्र स्तरीय परीक्षाओं में एनसीसी वाले अभ्यार्थियों को मेरिट लिस्ट में दो से तीन प्रतिशत का छूट मिलता है।

पाठ्यक्रम से जुड़ने पर एनसीसी के प्रति बच्चों में बढ़ेगी जागरुकता - कॉलेजों में एनसीसी की इलेक्टिव कोर्स शुरू होने से बच्चों के भीतर एनसीसी के प्रति जागरूकता बढ़ेगी। बी और सी सर्टिफिकेट भी कैडेट्स को आसानी से मिल पाएगा। अभी बी सर्टिफिकेट प्राप्त करने के लिए कैडेट्स को कम से कम एक कैम्प और सी सर्टिफिकेट प्राप्त करने के लिए दो कैम्प करना अनिवार्य होता है। एनसीसी की इलेक्टिव कोर्स को करने के पश्चात् सर्टिफिकेट आसानी से मिल पाएगा। इन दोनों सर्टिफिकेट का कैरियर बनाने में काफी योगदान होता है। फोर्स की नौकरी में सी सर्टिफिकेट वाले अभ्यर्थी की लिखित परीक्षा नहीं होती केवल उन्हें शारीरिक परीक्षा से गुजरना होता है।

केंद्र सरकार की नई शिक्षा नीति में एनसीसी को प्रोत्साहन देने के प्रावधान है। इसके तहत यूजीसी और एआईसीटीई ने अब सीबीसीएस के अंतर्गत स्नातक के छात्रों को एनसीसी को वैकल्पिक विषय के रूप में चुनने की मंजूरी दी है। विश्वविद्यालयीन छात्रों को अनुशासित बनाने उनमें एकता तथा देशभक्ति की भावना पैदा करने के लिए यह महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। जल्दी ही कई विश्वविद्यालय वर्ष 2021-22 पाठ्यक्रम में एनसीसी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में शामिल कर सकते हैं। इससे छात्रों में अनुशासन और देशभक्ति की भावना विकसित होगी।

विश्व का सबसे बड़ा वर्दीधारी संगठन है एनसीसी - एनसीसी विश्व का सबसे बड़ा वर्दीधारी संगठन है। इसमें देश के लगभग 15 लाख कैडेट्स पंजीकृत हैं।एनसीसी के मूल पाठ्यक्रम में आने के बाद कैडेटों की मूलभूत शिक्षा को एक नई दिशा भी मिलेगी। शैक्षणिक संस्थान एनसीसी में अधिक रुचि लेंगे तथा कैडेट्स को उचित संसाधन उपलब्ध कराएंगे। एन-सी-सी- का मुख्य उद्देश्य युवाओं में सशक्त चरित्र निर्माण कामरेडशिप, अनुशासन, धर्म-निरपेक्ष दृष्टिकोण, आत्म-विश्वास, टीम-भावना, मूलनिष्ठ समाज, राष्ट्र-निर्माण एवं सेवाभाव के आदर्शों को विकसित करना है। एनसीसी प्रशिक्षण का उद्देश्य युवाओं को जीवन के सभी क्षेत्रों में नेतृत्व गुणों के साथ एक संगठित, प्रशिक्षित और प्रेरित युवाओं का एक ऐसा पूल बनाना है, जो राष्ट्रसेवा एवं राष्ट्र-निर्माण में सदैव अग्रणी रहेंगे चाहे वे किसी भी केरियर का चयन करें। साथ ही, राष्ट्रीय कैडेट कोर युवा भारतीयों को सशस्त्र बलों में शामिल होने हेतु प्रेरित करने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करता है। एनसीसी ने 1948 से राष्ट्र-निर्माण में सतत रूप से महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

एनसीसी कैडेट्स को सैन्य विषय- थ्योरी तथा प्रैक्टिकल भी पढ़ाया जाएगा - जो छात्र एनसीसी कैडेट के रूप में दाखिला लेंगे वह एनसीसी प्रशिक्षण के लिए क्रेडिट बी और सी प्रमाण पत्र के अलावा शैक्षणिक क्रेडिट प्राप्त करेंगे और विभिन्न केंद्रीय और राज्य सरकार की योजनाओं के तहत प्रदान की जाने वाली रोजगार सुविधाओं का लाभ उठा सकेंगे। यूजीसी की गाइडलाइन के अनुसार इस पाठ्यक्रम को 6 सेमेस्टर और 24 क्रेडिट पॉइंट में विभाजित किया गया है इसमें सामान्य विषय, विशेष विषय (सैन्य विषय-थ्योरी तथा प्रैक्टिकल) पढ़ाए जाएंगे। इसके अलावा हथियारों का प्रशिक्षण, मैप रीडिंग, लीडरशिप, व्यक्तित्व विकास, संवाद कौशल, ड्रिल, आर्म्ड फोर्सेज, फिजिकल ट्रेनिंग आदि भी इसमें शामिल हैं।

रोजगार हासिल करने में होगी आसानी – इसके कैंप के माध्यम से कैडेट्स को मैप रीडिंग, युद्ध कौशल, हथियार प्रशिक्षण,आदि सिखा कर उनमें शारीरिक, तथा मानसिक दक्षता विकसित करने के साथ ही आपदा प्रबंधन, राष्ट्रीय सुरक्षा प्रबंधन, निर्णय कौशल तथा समस्याओं का प्रभावी समाधान निकालने के गुर सिखाए जाएंगे। जिससे कैडेट्स को भविष्य में सेना में रोजगार प्राप्त करने में आसानी होगी।अब कैडेट्स के पास कुशल अनुभव के साथ डिग्री भी होगी जिससे उन्हें निजी सुरक्षा कंपनियों में रोजगार पाने में भी आसानी होगी।

छह सेमेस्टर, 24 क्रेडिट – कोर्स में छह सेमेस्टर होंगे, जिसमें 24 क्रेडिट रखे गए हैं। आठ क्रेडिट थ्योरी, 6 प्रैक्टिकल और 10 कैंप के लिए रहेंगे। पहले सेमेस्टर में कैंप के कैडेट तीसरे और दूसरे के पांचवें सेमेस्टर में जोड़े जाएंगे। कोर्स में 82 घंटे लेक्चर और 128 घंटे प्रैक्टिकल के रहेंगे। 38 घंटे सेना से जुड़े विशेष विषय में थ्योरी और 52 घंटे प्रैक्टिकल के होंगे।

राष्ट्रीय कैडेट कोर महानिदेशालय, नई दिल्ली द्वारा भारतीय युवाओं के लिए एनसीसी के पाठ्यक्रम को एक वैकल्पिक विषय के रूप में शामिल करने के लिए अनूठी पहल की गई है। इसके अंतर्गत अब विभिन्न विश्वविद्यालय एवं कॉलेजों में एनसीसी को एक सुनियोजित पाठ्यक्रम के रूप में तैयार किया गया है। जिससे स्नातक परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में अन्य वैकल्पिक विषयों (जैसे विज्ञान,वाणिज्य, कला, विधि, संगीत, आदि) की तरह अब एनसीसी भी एक वैकल्पिक विषय के तौर पर उपलब्ध होगी। एनसीसी पाठ्यक्रम में कुल क्रेडिटो की संख्या 24 होगी जो कि 6 सेमिस्टर में विभाजित है। इसमें सामान्य विषयों के साथ मिलिट्री विषयों (आर्मी, नेवी, एयर फोर्स) की थ्योरी एवं प्रैक्टिकल क्लासेस ली जायेगी तथा एक 10 दिवस का कैंप भी होगा, जिसमें पूरी ट्रेनिंग का सार होगा। विवि व कॉलेजों के प्रोफेसर (ए.एन.ओ) जहां सामान्य विषयों की थ्योरी क्लासेस लेंगे वही एनसीसी इकाइयों के प्रशिक्षित एवं अनुभवी सैनिकगठ (पी.आई.स्टाफ) मिलिट्री विषयों (आर्मी, नेवी, एयर फोर्स) की थ्योरी क्लास एवं प्रैक्टिकल क्लासेस लेंगे। इस समग्र एनसीसी पाठ्यक्रम में वार्षिक प्रशिक्षण शिविर भी शामिल है, जिसमें शामिल होना अनिवार्य है एवं अतिरिक्त क्रेडिट अंक भी दिए गये हैं। अब एनसीसी के पाठ्यक्रम को एक वैकल्पिक विषय के रूप में शामिल करने से छात्रों को संबंधित स्नातक डिग्री/मार्क शीट में समग्र सी.जी.पी.ए में एनसीसी (वैकल्पिक विषय) के अंको को भी दर्शाया जा सकेगा।

एनसीसी पाठ्यक्रम को एक वैकल्पिक विषयों के तौर शामिल करने की पहल का उद्देश्य एनसीसी प्रशिक्षण को और अधिक समग्र और कौशल उन्मुख बनाना है, जिससे अतत: केरियर की संभावनाओं को सुगम बनाया जा सके। मुख्य रूप से पाठ्यक्रम के सफल समापन पर छात्रों को क्रेडिट अंक प्रदान किए जाएंगे, जो उन्हें अपने संबंधित डिग्री के लिए अर्हता प्राप्त करने में भी सक्षम बनायेगा। इसका उद्देश्य से सभी छात्र–छात्राओं में अनुशासन का पालन करने और उनमें देशभक्ति की भावना पैदा करने के लिए एनसीसी में शामिल होने के लिए प्रेरित करना है। यह विशेष रूप से कॉलेजों में अध्ययनरत बी एवं सी सर्टिफिकेट परीक्षाओं में उपस्थित होने वाले क्रेडिटों को एक बड़ा लाभ प्रदान करेगा, जिन्हें दो से पांच साल की प्रशिक्षण अवधि के बाद सम्मानित किया जाता है। अब छात्र–छात्राएं उन संस्थानों में एनसीसी को एक वैकल्पिक विषय के तौर पर अपने पाठ्यक्रम में चयन कर सकेंगे। जिन संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों द्वारा एनसीसी पाठ्यक्रमों को वैकल्पिक विषय के तौर पर शामिल किया गया है। अब ऐसे स्नातक छात्र–छात्राओं को जिन्होंने एनसीसी कैडेट कोर्स (विषय) का चयन किया है, ऐसे क्रेडिटो को बी–सी सर्टिफिकेट के साथ अपने स्नातक पाठ्यक्रम में एनसीसी के भी पूरे क्रेडिट मिलेंगे, जो वर्तमान में उन्हें नहीं मिल रहे हैं। इस आधार पर उन्हें कई चयन परीक्षा में अतिरिक्त अंक मिलेंगे जिस से उन्हें भविष्य में सेना तथा अर्धसैनिक बल और पुलिस में रोजगार पाने में वरियता भी मिलेगी।

प्रस्तावित पहल का आगामी शैक्षणिक सत्र योजनाबद्ध तरीके से कार्यान्वयन किया जा रहा है। राज्य सरकारों से सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त की है अन्य राज्यों की तरह आशा है कि मध्यप्रदेश सरकार एवं समस्त विश्वविद्यालयों भी इसे सकारात्मक रूप से स्वीकृति दें देगी। इसके फलस्वरुप मध्यप्रदेश में भी विभिन्न विश्वविद्यालयों जैसे सांची यूनिवर्सिटी भोपाल, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन, राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय भोपाल, नेशनल लॉ इंस्टिट्यूट यूनिवर्सिटी भोपाल, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय भोपाल, महाराणा छात्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय छतरपुर, मध्य प्रदेश भोज (ओपन) विश्वविद्यालय भोपाल, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर, बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल, अवधेश प्राप्त सिंह विश्वविद्यालय रीवा, डॉ. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय सागर एवं अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय भोपाल जैसे 20 से भी अधिक विश्वविद्यालय के अनेक छात्रों को लाभांवित करेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. व्यक्तिगत शोध के आधार पर।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

गाँधी दर्शन के सामाजिक संरचना की अवधारणा

डॉ. गोपाल सिंह*

* सह-आचार्य (राजनीति विज्ञान) राजकीय महाविद्यालय, सवाई माधोपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – महात्मा गाँधी के समाज सम्बन्धी विचार आधुनिक पश्चिम के समाजशास्त्रियों के विचारों के प्रति प्रतिक्रिया और मानव सम्बन्धी धारणा आवश्यक परिणाम है। महात्मा गॉधी का समाज सिद्धान्त समन्वयवादी है। वह समाज की व्याख्या न तो केवल ईश्वर के आधार पर ही करता है और न मानव निर्मित सिद्धान्त के आधार पर। महात्मा गॉधी के अनुसार समाज व्यक्ति के लिए कृत्रिम नहीं बल्कि स्वाभाविक संस्था है। व्यक्ति का विकास समाज में रहकर ही हो सकता है। उसकी स्वतन्त्रता सामाजिक नियमों के पालन में ही कायम रह सकती है।

इसलिए उन्होनें कहा था– 'मैं व्यक्ति की स्वतन्त्रता को मूल्य देता हूँ परन्तु यह आपको नहीं भूलना है कि मनुष्य सार रूप में सामाजिक प्राणी है। उसने अपनी वर्तमान स्थिति, व्यक्तिवाद के साथ सामाजिक विकास की आवश्यकताओं को अभियोजित करके ही प्राप्त किया है। यदि प्रत्येक कानून को अपने हाथ में ले ले तो उससे अराजकता बढेगी और व्यक्ति अपनी स्वतन्त्रता को कायम नहीं रख सकेगा।' [2]

गॉधी जी ने आदर्श सामाजिक व्यवस्था को अहिंसक समाज अर्थात सत्य और अहिंसा पर आधारित सामाजिक व्यवस्था का नाम दिया।

गॉधी जी कल्पना के आदर्श समाज को एक ऐसी विकेन्द्रित सामाजिक प्रणाली के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें सत्य, अहिंसा, सेवा-भावना, आत्म निर्भरता ओर अपने हितों के स्थान पर दूसरों के हितों के अग्रसर करने की प्रवृति समाज के सभी सदस्यों को अनुप्राणित करें। गॉधी जी का विश्वास है कि ऐसी सामाजिक प्रणाली में अन्याय या शोषण के लिये कोई स्थान हो ही नहीं सकता। इस समाज की संरचना विकेन्द्रीकरण क सिद्धान्त पर आधारित होगी। अत: समाज में भौतिक और आर्थिक असमानताएँ उत्पन्न ही नहीं हो सकेगी। दूसरों के हितों के प्रति अपने स्वार्थ को बलिदान कर देने की लोगों की तत्परता न्याय के आदर्श को समाज में स्वयं प्रतिष्ठित कर देगी।

गॉधी जी के मत में वर्ण व्यवस्था मूलरूप में समाज के सदस्यों की क्षमताओं के अनुसार उनके कर्तव्यों के विभाजन की वैज्ञानिक प्रणाली है। इसका उद्देश्य वर्णो के सदस्यों के मध्य हीनता या श्रेष्ठता के मध्य भेद उत्पन्न करना नही है। [3] उनका मत है कि कर्तव्यों का व्यक्ति की प्रवृति के अनुसार चार भागों मे वर्गीकरण, प्राचीन भारतीय ग्रंथों में प्रतिपादित सिद्धान्त मात्र नही है, अपितु यह एक विश्वव्यापी प्रवृति है। गॉधी जी ने स्पष्ट किया कि ज्ञान का सृजन व विस्तार, सुरक्षा के लिए शक्ति का प्रयोग, धन और सम्पदा का संग्रह ओर वितरण तथा मानव जीवन के निर्वाह के लिए आवश्यक सेवायें जुटाना, मानवीय गतिविधियों का एक सहज वर्गीकरण है। [4]

वर्णव्यवस्था के सम्बन्ध में गॉधी का दृष्टिकोण परम्परावादी नहीं है। उन्होनें वर्गो के अनुसार मनुष्यों के कर्तव्य विभाजन की इस योजना में दो अनिवार्य बातों का ध्यान रखना आवश्यक बताया–

(1) वर्णो का सम्बन्ध, किसी व्यक्ति द्वारा कोई विशेष गतिविधि सम्पन्न करने में उसकी स्वाभाविक दक्षता से है। किसी विशेष वर्ण की सदस्यता को व्यक्ति की सामाजिक श्रेष्ठता या निम्नता का आधार नहीं बनाया जा सकता।

(2) क्षमताओं के अनुरूप विशिष्ट वर्ण की सदस्यता, किसी व्यक्ति को दूसरे वर्गो से बिल्कुल पृथक नहीं कर देती तथा कर्तव्यों का वर्गीकरण, वर्णो के पृथक्करण का आधार नही है, अपितु समस्त वर्णो के सदस्यों वृत्ति को सुनिश्चित करता है। अत: एक वर्ग का सदस्य, दूसरे वर्णो के सदस्यों के कार्यो से प्रति उपेक्षा, उदासीनता या अवहेलना का भाव नहीं रखता क्योंकि अपने वर्ण से जुडे हुये कर्तव्यों का पालन करते हुए वह स्वयं भी दूसरे वर्ग के सदस्यों द्वारा किये गये किसी कार्य पर अनिवार्य रूप से निर्भर रहता है।

गॉधी जी वर्णो के नाम पर असमानता के समर्थक नहीं थें, उनका तो कहना था कि यदि कोई शास्त्र असमानता का समर्थन करता है तो उससे शास्त्र मानना ही उचित नहीं है। उन्होंनें कहा– वर्ण और आश्रम संसार में हिन्दुत्व के महान उपहार है। किन्तु आज मेरी परिकल्पना के वर्ण और आश्रम अस्तित्व में नही है। आश्रम तो बिल्कुल ही समाप्त हो गये है और वर्ण विकृत होकर, विशेषाधिकारों में परिवर्तित हो गये है। ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य होना आज अभिमान का प्रतीक माना जाने लगा है। वर्ण के आधार पर अभिमान का दावा धर्म के विपरित है। यदि वर्ग के आधार पर क्षुद्रों को ही हीन माना जाता है और इसे धर्म का हिस्सा बताया जाता है तो यह सत्य नहीं है। वस्तुत: किसी को हीन या छोटा मानना धर्म नहीं अपितु धर्म का निषेध है। [5]

जन्म वर्ण की सदस्यता का स्वाभाविक आधार किन्तु यदि ब्राह्मण बड़ा होकर ब्राह्मण के कर्तव्य का पालन नहीं करता है तो वह पतित समझा जायेगा तथा यदि कोई अन्य वर्ण का व्यक्ति बड़ा होकर ब्राह्मण ही माना जायेगा भले ही वह इसका स्वयं दावा न करें।

गॉधी जी वर्ण और जाति के मध्य भेद किया और जाति प्रथा के उन्मूलन पर बल दिया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि जाति प्रथा अपने वर्तमान स्वरूप में हिन्दू जाति पर एक कलंक के समान है। [6]

विभिन्न वर्गो की समानता गॉधी जी वर्ण व्यवस्था का मूल आधार है। किन्तु उन्होंने यह स्वीकार किया कि अपने जन्मजात गुणों शारीरिक या क्षमताओं की दृष्टि से व्यक्ति पूर्णत: समान नहीं हो सकते। लेकिन समाज के वर्ण व्यवस्था के माध्यम से व्यक्तियों की बौद्धिक और शारीरिक क्षमताओं में विभिन्नताओं के बावजूद उनके मध्य एक मूलभूत समानता की स्थापना

करना चाहते थे। गॉधी जी इस सम्बन्ध में यह मान्यता स्पष्ट कर देना चाहते है यदि कोई अपनी योग्यता से कुछ ऐसे गुणों का परिचय देता है जो जन्म से उसे प्राप्त नहीं तो ऐसा व्यक्ति कभी भी भौतिक सुखों के लिए या दूसरों के धन्धों पर पैर रखकर चढने के लिए उनका दुरूपयोग नहीं करेगा।

'यदि मेरे पिता एक व्यापारी है और मैं एक सैनिक के गुणों का परिचय देता हूॅ, तो मैं बिना किसी पुरूस्कार के एक सैनिक के रूप में अपने देश सेवा कर सकता हूॅ, किन्तु व्यापार द्वारा जीविकोपार्जन में ही मुझे सन्तोष करना चाहिए।' [7]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि महात्मा गॉधी जिस अहिंसक समाज की कल्पना करते है वह एक सुव्यवस्थित समाज और जहॉ बिना किसी लोभ और मोह के प्रत्येक मनुष्य सादगी के साथ जीवन-निर्वाह करते हुए अपने कर्तव्यों को निभा रहा है।

गॉधी जी ने श्रम की अनिवार्यता के विचार के माध्यम से, समाज निम्न वर्ग की स्थिति का प्रभावशाली ढंग से प्रतिकार कर दिया। उन्होंनें प्रतिपादित किया कि प्रत्येक वर्ग के सदस्य को, अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए आवश्यक साधन स्वयं श्रम करके जुटाने चाहिए। [8]

गॉधी जी ने समाज में स्त्रियों ओर पुरूषों की समानता पर बल दिया। वे एक ऐसे आदर्श समाज की कल्पना करते थे जिसमें स्त्रियाँ, बिना किसी प्रतिबन्ध के सक्रिय भागीदारी निभाएॅ और उन्हें भी पुरूषों के समान अपनी शैक्षणिक, बौद्धिक और नैतिक उन्नति के अवसर प्राप्त हो। उन्होंनें कहा-'मेरे सपनो का स्वराज्य तब तक आवश्यक है जब तक कि भारत की स्त्रियॉ, पुरूषों से कंधे से कंधा मिलाकर अपनी पूर्ण भूमिका नहीं निभायेगी। मैंनें स्वराज्य को रामराज्य के रूप में परिभाषित किया है और रामराज्य की प्राप्ति तब तक नहीं हो सकती जब तक समाज में हजारों सीता नही हो।' [9]

गॉधी ने समाज व परिवार में स्त्रियों को समान अधिकार पर बल दिया तथा सत्ती प्रथा, बाल विवाह व पर्दाप्रथा जैसी कुप्रथाओं के निषेध पर बल दिया।

गॉधी जी का कहना था कि शिक्षा आदर्श सामाजिक प्रणाली की नींव है। उनकी शिक्षा की धारण व्यापक है तथा उसका आभार आध्यात्मिक है। गॉधी के अनुसार सच्ची शिक्षा का अर्थ है, व्यक्ति द्वारा उसके परम तत्व की पहचान और इस ज्ञान को आचरण में उतारने की प्रेरणा, क्षमता ओर तत्परता।[10]

गॉधी जी की शिक्षा मनुष्य के मानसिक शारीरिक व आर्थिक विकास को एक साथ सुनिश्चित करती है। उनकी शिक्षा की धारणा में कोरें अक्षर ज्ञान या बाहरी सूचनाओं के संग्रह का अधिक महत्व नहीं है। उन्होंनें कहा- 'जिसने सत्य और अहिंसा को पूरी तरह जान लिया है, वह भले ही निरक्षर हो, ज्ञानी हो।'

गॉधी जी के अनुसार शिक्षा चरित्र और धर्म में कोई भेद नहीं है। क्योंकि ये तीनो ही आत्म साक्षात्कार के लक्ष्य को प्रेरित करने के लिए व्यक्ति की क्षमताओं का विकास करते है। इस प्रकार उनके लिए शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष है, व्यक्तित्व और चरित्र का निर्माण। उन्होनें घोषणा की कि चरित्र निर्माण ही शिक्षा की सुदृढ़ नींव होती है।

महात्मा गॉधी के स्वयं के विचारानुसार-'मैं भारत के लिए अनिवार्य और नि:शुल्क प्राथमिक शिक्षा के सिद्धान्त का दृढ समर्थक हूॅ। यह उद्देश्य तभी प्राप्त किया जा सकता है, जब हम हर बच्चे को एक उपयोगी व्यवसाय सिखाएॅ और उसका उपयोग शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक क्षमताओं को विकसित करने में करे। इसे दूसरे शब्दों मे यूॅ कह सकते है कि एस बच्चे के शारीरिक अंगो को बेहतर इस्तेमाल ही सके मस्तिष्क के विकास की कुंजी है।'[11]

महात्मा गॉधी चरित्र के विकास को अत्यधिक महत्व देते है। इस बात का समर्थन महात्मा गॉधी के इस कथन से होता है-'मैने हृदय की शुद्धि या चरित्र-निर्माण को सदैव प्रथम स्थान दिया है।' इस कथनों से यह स्पष्ट होता है कि महात्मा गॉधी शिक्षा द्वारा चरित्र के विकास को अत्यधिक महत्वपूर्ण उद्धेश्य के रूप में मानते थे।

महात्मा गॉधी ने शिक्षा के जीविकोपार्जन सम्बन्धी उद्धेश्य को अत्यधिक महत्व दिया था। उनका विचार था कि बालक को किसी एक न एक व्यवसाय में इतनी दक्षता प्रदान करा दी जाए कि वह आत्मनिर्भर हो सके। साथ ही वह समाज का उत्पादक सदस्य हो सके। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर शिक्षा व्यवस्था करने से समाज का आर्थिक विकास भी हो सकता है। व्यक्ति का सच्चा हित समाज के हित में निहित है। इसलिए व्यक्ति के निर्माण के साथ-साथ हमें समाज के निर्माण पर भी ध्यान देना होगा, जो शिक्षा का सबसे बड़ा दायित्व है। [12]

गॉधी जी ने शिक्षा की पश्चिमी पद्धति की आलोचना मुख्यत: इसी आधार पर की कि वह अक्षर ज्ञान और सूचनाओं के संग्रह पर अधिक बल देती हे। तथा नैतिक और आध्यात्मिक पक्षों की उपेक्षा करती है।

अस्पृश्यता का निवारण- गाँधी जी अस्पृश्यता को सामाजिक कलंक की संज्ञा देते थे। सामाजिक न्याय की उनकी संकल्पना में अस्पृश्यता के उन्मूलन का सर्वाधिक महत्व था। वे इसे राजनीतिक स्वतन्त्रता की तुलना में भी अधिक महत्व देते थे। उनकी दृढ़ मान्यता थी कि 'अस्पृश्यता का उन्मूलन किये बिना स्वराज्य की प्राप्ति असंभव भी है, और निरर्थक भी।'

ग्राम स्वराज्य की धारणा राजनीतिक चिन्तन को महात्मा गॉधी ने शासन की संरचना का केवल विकेन्द्रित स्वरूप ही नहीं प्रतिपादित किया बल्कि इसके माध्यम से व्यक्ति के जीवन को नियमित करने वाली संस्था के रूप में राज्य के प्रयोजन व चरितत्र के सम्बन्ध में भी सर्वथा नवीन दर्शन प्रस्थापना की।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ. पुरूषोत्तम नागर: आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, पृष्ठ 438-39
2. महात्मा गॉधी : यंग इण्डिया, भाग- 3, पृष्ठ 474
3. मोहनदास करमचन्द गॉधी: यंग इण्डिया, भाग-3, पृष्ठ 474
4. हरिजन: 28 सितम्बर 1934
5. क्लैक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गॉधी
6. यंग इण्डिया: भाग- 3, पृष्ठ, 385
7. महात्मा गॉधी के अमर विचार, राष्ट्रीय और शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, पृष्ठ 3
8. मोहनदास कर्मचन्द गॉधी: हरिजन, 27 मई 1939
9. महात्मा गॉधी : यंग इण्डिया, 24 नवम्बर 1927
10. डॉ पुरूषोत्तम नागर: आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, पृष्ठ 429
11. हिन्द: 23 मार्च 1925
12. एस.एस.पटेल: एजूकेशन फिलॉसकी ऑफ महात्मा गॉधी, पृष्ठ 57

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

गाँधी चिन्तन में ग्राम स्वराज्य की आर्थिक संरचना की अवधारणा

डॉ. दुलारी राम मीना *

* सह आचार्य (राजनीति विज्ञान) राजकीय महाविद्यालय, सवाई माधोपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – महात्मा गाँधी अर्थशास्त्री नहीं थें, फिर भी उनके समय-समय पर भाषण एवं उनके लिखे लेखों से हमें उनके आर्थिक दर्शन का बोध होता है। गॉधी जी के आर्थिक समस्याओं पर उनके सुझाव समय, आवश्यकता और मानवता की दृष्टि से प्रेरित है। साथ ही वे वास्तविकता और स्वयं के अनुभव पर आधारित है।

यहीं कारण है कि गॉधी जी के आर्थिक विचार बदलते रहे है जहॉ हिन्द स्वराज्य में गॉधी जी के विचार वर्तमान सभ्यता विरोधी, यंत्र विरोधी और पूॅजी विरोधी प्रतीत होते है। और वे ही बाद में उनके विचार व्यवहारोपयोगी और यंत्रों से समझौता करने वाले दिखायी देते है। [1]

आर्थिक विचार– गॉधी जी के आर्थिक विचार प्रश्नों की शास्त्रीय व्याख्याओं पर आधारित नहीं थे तो वस्तुत: नैतिक आस्थाओं को आर्थिक क्षेत्र में लागू करने का प्रयास किया। इसी कारण गॉधी ने विचारों की अपनी पद्धति को 'मानवीय अर्थशास्त्र' की संज्ञा दी। उन्होनें स्पष्ट किया कि आर्थिक सम्बन्धों में सत्य और अहिंसा की प्रयुक्ति मानवीय अर्थशास्त्र का आधार है।

गॉधीजी की स्पष्ट मान्यता है कि आर्थिक सम्बन्धों में सत्य ओर अहिंसा की प्रयुक्ति मानवीय अर्थशास्त्र का आधार है।

गॉधी जी की स्पष्ट मान्यता है कि–'अर्थशास्त्र व नैतिकता' वस्तुत: एक ही अर्थ को व्यक्त करते है। अत: शाश्वत एवं उदार नैतिकता उनके आर्थिक विचारों की आधारशिला है। [2]

गॉधी जी के लिखा–'अर्थशास्त्र सामाजिक न्याय तथा नैतिक आदर्शो की पूर्ति के लिए खड़ा है।'

प्राचीन आदर्श के अनुसार पूॅजी को बढाने वाली गतिविधियों को सीमित करने की आवश्यकता है। इसके सब प्रकार की मौलिक आकांक्षाओं की समाप्ति नहीं हो सकती है। आर्थिक सत्य है। गॉधी जी के अनुसार–'भारत को अमेरिका व यूरोप के देशों के समान भौतिकवादी दौड़ में नैतिकता का अन्त नहीं करना है।' वे पुरूषों, स्त्रियों तथा बालकों की मृत देहों पर खडी होने वाली दैत्यकार चिमनियों तथा फैक्ट्रियों को पसन्द नहीं करते है। उसके अनुसार देश की आर्थिक समृद्धि बढने के साथ-साथ नैतिकता का स्तर दिनोंदिन घटना जा रहा है।

उन्होनें नैतिकता विहिन आर्थिक सिद्धान्तों को य प्राणविहिन' अर्थशास्त्र की संज्ञा दी। उनके शब्दों में 'वह अर्थशास्त्र जो नैतिकता और भावनात्मक पक्षों की उपेक्षा करता है, मोम की मूर्ति की तरह है जो लगती चाहे सजीव हो, किन्तु होती प्राणविहीन है।' [3]

ग्राम स्वराज्य: आर्थिक संरचना – गाँधी जी के विचारों में वास्तविक अर्थशास्त्र यह है कि धन-संग्रह प्रगति के मार्ग में बाधक है। प्रत्येक व्यक्ति को इतना काम मिलना चाहिए कि वह अपनी दैनिक आवश्यकताओं की न्यूनतम पूर्ति अवश्य कर सकें। यह तभी संभव है जबकि जीवन में सम्बन्धित मूलभूत आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन जनता के नियन्त्रण में हो। दैनिक उपयोग की वस्तुऍ उसी प्रकार उपलब्ध हो जैसे ईश्वर द्वारा प्रदत्त हवा और पानी। शोषण की अवहेलना का अर्थ विनाशकारी हो सकता है। यद्यपि गॉधी जी समान वितरण के आदर्श के पक्षपाती है, किन्तु व्यवहारिक दृष्टिकोण से वे समान वितरण के स्थान पर न्यायसंगत वितरण को स्वीकार करते है। [4]

गॉधी जी के आर्थिक विचारों की रूपरेखा कतिपय नैतिक मूल्यों पर आधारित है जिनका विवेचन निम्न प्रकार है:-

1 **समानता–** गॉधी जी दृढ़ मान्यता है कि समानता को सुनिश्चित किया बिना कोई आर्थिक प्रणाली आदर्श नहीं मानी जा सकती। उनके 'मानवीय अर्थशास्त्र' में गरीब-अमीर के बीच भेद को मिटाना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। गॉधी जी ने समानता को सभी व्यक्तियों द्वारा भौतिक सम्प्रदायों के समान मात्रा में स्वामित्व के रूप में नहीं अपितु प्रत्येक व्यक्ति को जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति की समान सुनिश्चितता के रूप में परिभाषित किया है। [5]

गाँधी जी भौतिक साधनों की विलासिता के पीछे मनुष्य की अंधी दौड़ को ही असमानता का मूल कारण मानते थें। अत: उन्होंने समानता की स्थापना के लिए भौतिकवादी दृष्टिकोण को आवश्यक माना। गॉधी जी ने समानता के आदर्श को स्पष्ट करते हुये कहा है कि सामाजिक दृष्टि से सब समान उत्पन्न हुए है अर्थात सबको अवसर की समानता का अधिकार प्राप्त है, किन्तु सबमें क्षमताएँ नहीं होती। कुछ अधिक कमाने की योग्यता रखते हैं कुछ कम।

उनका मत था कि जीवन के दृष्टिकोण में जब स्वार्थ केन्द्रीय तत्व बन जाता है, तब असमानता सामाजिक व्यवस्था का सहज तत्व बन जाता है और शोषण तथा दमन असमानता के साथ जुड़ जाते है। [6] इस प्रकार उन्हें मन में स्वार्थ ही समाज में असमानता, शोषण और दमन का मूल कारण है। वे आर्थिक सम्बन्धों में स्वार्थ वृत्ति का निराकरण करके एक समतामय समाज की स्थापना करना चाहते है। उनके अनुसार यदि कोई वस्तु किसी के पास अनावश्यक होते हुए भी संग्रहित है तो उसे चोरी न मानते हुये चुराई गई सम्पत्ति के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जाना चाहिए।

2 **विकेन्द्रीकरण–** गाँधी जी विकेन्द्रीकरण को हिंसा का प्रतीक मानते है। उनका मत था कि आर्थिक क्षेत्र में विकेन्द्रीकरण ही शोषण और असमानता का मुख्य कारण है। उनकी मान्यता है कि आर्थिक शक्ति के कुछ हाथों मे केन्द्रित हो जाने के कारण पूॅजीपति वर्ग समाज मे उपलब्ध योग्यताओं और संसाधनों का शोषण करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है। अत: उन्होने विकेन्द्रित

अर्थव्यवस्था का समर्थन किया और कहा कि उत्पादन की को अनेक स्थानों पर छोटे पैमाने पर चालू किया जाए, घरो में छोटी-छोटी इकाईयॉ स्थापित की जाये। दूसरे शब्दों में गॉधी जी कुटीर तथा ग्रामीण उधोगों के विकास के पक्ष में थे। विकेन्द्रित व्यवस्था को वे लोकतन्त्र का जीवन रक्त समझते थे। उनका कहना था कि अहिंसात्मक राज्य की स्थापना के लिए कारखाने वाली सभ्यता की कोई आवश्यकता न थी। [7]

अतः गॉधी का मानना है कि विकेन्द्रीकरण के माध्यम से आर्थिक प्रणाली में अहिंसा की प्रतिष्ठा हो सकती है। गॉधी जी उत्पादन, वितरण और उपयोग को विकेन्द्रीत करके आर्थिक समस्याओं का समाधान करना चाहते है। उनके अनुसार एक विकेन्द्रित आर्थिक प्रणाली में, आर्थिक विचारों के निर्णय लेने के क्षमता, उन निर्णयों से प्रभावित व्यक्तियों के हाथ में रहेगी और उत्पादन तथा वितरण किसी व्यक्ति विशेष या वर्ग विशेष के लिए लाभकारी होने के बजाय आम लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति का माध्यम बन जायेगें। विकेन्द्रित आर्थिक प्रणाली में भारी पूँजी के विनियोग की आवश्यकता नहीं होगी। क्योंकि श्रम प्रधान होगा तथा मात्रा में भी सीमित होगा। गॉधी जी ग्राम को आर्थिक विकेन्द्रीकरण की व्यवहारिक इकाई बनाकर, श्रम प्रधान उधोगों द्वारा स्थानीय स्तर पर उत्पादन और वितरण को सुनिश्चित रखना चाहते है। उनकी विकेन्द्रीकृत आर्थिक प्रणली में भारी उधोगों, मशीनीकरण तथा टेक्नोलॉजी की अधिक सार्थकता नहीं होगी। [8]

3 **स्वदेशी-** स्वदेशी की भावना विकेन्द्रीकरण की अनिवार्य शर्त है। मूलरूप में स्वदेशी देशी उधोगों को नया जीवन देने के लिए एक संरक्षणात्मक उपाय और ब्रिटिश सत्ता के विरूद्ध संघर्ष में एक राजनीतिक एवं आर्थिक हथियार था। गॉधी जी ने कहा-'स्वेदशी में स्वार्थ के लिए कोई स्थान नही है अपने विशुद्ध रूप में स्वदेशी सब की सेवा का सर्वोत्तम रूप है। स्वेदेशी का सच्चा समर्थन कभी भी किसी के भी प्रति विरोधी भावनाओं से प्रेरित नहीं होगा। स्वदेशी घृणा का सिद्धान्त नहीं है। यह निस्वार्थ सेवा का सिद्धान्त है जिसकी जडे विशुद्ध अहिंसा या प्रेम में है।' [9]

स्थानीय उत्पादन और स्थानीय उपयोग पर आधारित विकेन्द्रित ढांचा, स्वदेशी के प्रति प्रेम की नैतिक आधारशिला पर ही खडा हो सकता है। स्वदेशी के विचार के नैतिक पक्ष को स्पष्ट करते हुए गॉधी जी ने कहा- 'स्वदेशी' अर्थ के विषय में 'धर्म' को सुनिश्चित करता है।' [10]

स्वदेशी में से उग्र राष्ट्रवाद की भावनाओं को अलग करने से इसे सही परिपेक्ष्य में रखने मे सहायता मिली। जिसके अभाव में मिल मालिक जनता की देश-प्रेम की भावनाओं का शोषण कर रहे थे।

गॉधी जी ने चरखा और खादी को स्वदेशी पर आधारित अर्थशास्त्र के दो प्रभावशाली प्रतीक बताया और कहा कि ये दोनो भारत के हजारों गॉवों मे फैली हुई गरीबी और बेरोजगारी की समस्या का समाधान कर सकते है।

गॉधी जी ने कहा-'शुद्ध स्वदेशी धर्म विदेशी के विरूद्ध नहीं है फिर भी सर्वदेशी नहीं है, क्योंकि ऐसा होना असम्भव है। सबका हित करने की सामर्थ्य व्यक्ति में नही होता है। अतः सबका हित साधने की प्रक्रिया में सामर्थ्य का भी सही उपयोग नहीं हो पाता। सबका हित साधने का उपाय यह है कि अपने पडौस से सोवा का कार्य आरम्भ किया जाये। मेरे लिये सब बराबर है यह कहने का अधिकार उसी को है जिसने पडौस के प्रति अपने धर्म का पालन किया हों। मेरे लिए सब बराबर है। यह कहकर जो पडौसी का तिरस्कार करता है ओर केवल अपने हितों की पूर्ति करता है वह स्वैच्छाचारी है, स्वछन्द है। वह अपने लिये ही जीता है। [11]

गॉधी जी ने स्पष्ट किया कि स्वदेशी का पालन करने में विदेशी के प्रति घृणा या द्वेष का महत्व नहीं है। उनकी मान्यता है कि स्वदेशी-धर्म के प्रति समर्पित कूप-मण्डक नहीं होगा। उसके अनुसार जो चीजें देश में नही बन सकती, उसे विदेशों से मंगा लेने में स्वदेशी के विचार का निषेध नहीं होता।

गॉधी जी के खादी सिद्धान्त के पीछे एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त निहित है और वह है अर्थव्यवस्था की सादगी। गॉधी जी की अर्थव्यवस्था में नैतिक मान्यता सर्वोपरि है और गॉधी जी के अनुसार नैतिक विकास भौतिक आवश्कताओं के बढाये जाने में नही है, बल्कि उस अनावश्यक व्यय को कम करने में है। इसलिए गॉधी जी इच्छाओं को सम्पूर्णतः सीमित कर देना चाहते थे और केवल महत्वपूर्ण आवश्यकताओं पर ही जोर देते है।

4 **कायिक श्रम और सभी व्यवसायों की समानता:-** गॉधी जी सभी व्यवसायों को समान मानते हुए शरीर श्रम के विचार को दिव्य माना और कहा-'ईश्वर ने मनुष्य का निर्माण श्रम द्वारा अपना भोजन प्राप्त करने के लिए किया ओर कहा कि जो श्रम किए बिना खाते है वे चोर है।' [12]

कायिक श्रम की धारणा यह अपेक्षा करती है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने निर्वाह की आवश्यकताएॅ जुटाने के लिए अनिवार्य रूप से भौतिक श्रम करें। इस प्रकार 'कायिक श्रम' की धारणा यह सुनिश्चित करेगी कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी आजीविका तो शरीर-श्रम से अर्जित करें और बौद्धिक क्षमताओं का उपयोग परोपरकार के लिए करें। इस प्रकार 'शरीर श्रम' का विचार समानता ओर सामाजिक सद्भाव दोनों का एक साथ सुनिश्चित करेगा। [13]

महात्मा गॉधी के अनुसार-'भारत में धनी ओर अभिजात वर्ग शारीरिक श्रम से घृणा करता है ऐसी मानसिकता ठीक नहीं है। श्रम की गरिमा स्थापित करना आवश्यक है। सही अर्थो में बौद्धिक विकास के लिए भी शारीरिक श्रम अनिवार्य है।'

श्रम ही हमारे ज्ञान-विज्ञान, नीति-धर्म, कला-साहित्य, जीवन और जगत सभी का निर्धारक है। श्रम ही जीवन है श्रम ही सृष्टि है और श्रम ही संस्कति का आधार है।

5 **संरक्षकता सिद्धान्त-** पूँजीवाद की बुराईयों के अहिंसक प्रतिकार के लिये गॉधी जी ने संरक्षकता का सिद्धान्त प्रस्तुत किया। ट्रस्टीशिप का विचार इस मूल आस्था पर आधारित है कि व्यक्ति अपने बौद्धिक और शारीरिक श्रम के द्वारा जो उपार्जित करते है, उस पर उनका स्वामित्व नहीं होता, अपितु वे तो उसके संरक्षक या प्रन्यासी है। गॉधी जी ने सुझाव दिया कि जिन लोगों के पास धन व सम्पत्ति है, वे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के पश्चात शेष साधनों व सम्पत्ति का सामाजिक हित में उपयोग करें। इस प्रकार 'न्यासिता' का सिद्धान्त स्वैच्छिक आधार पर, साधनों के समाज में न्यास संगत वितरण को सुनिश्चित करना चाहता है। [14]

6 **स्वावलम्बन-** समाज का घटक एक गॉव या लोगो का ऐसा छोटा समूह होना चाहिए जिसकी व्यवस्था हो सके ओर जो आदर्श की दृष्टि से जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं को पूरी करने में स्वयं पूर्ण और आत्मनिर्भर हो। हर गॉव का पहला काम यह होगा कि वह अपनी जरूरत का सारा अनाज ओर कपडो के लिए कपास स्वयं पैदा कर सकें।

खादी का मुख्य काम है हर गॉव को अनाज ओर कपडे के बारे में आत्मनिर्भर बनाना। प्रत्येक गॉव को अपने पैरो पर खड़ा होना होगा। अपनी आवश्कताएॅ स्वयं पूरी कर लेनी होगी, ताकि वह अपना सारा कारोबार स्वयं चला सके। यहॉ तक की सारी दुनिया से अपनी रक्षा स्वयं कर सकें। [15]

गॉधी जी ने स्पष्ट शब्दों मे कहा कि 'भारत की आर्थिक समस्याओं का

समाधान औधोगिक सभ्यता के माध्यम से नही, अपितु ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था के द्वारा ही सम्भव है। गॉधी ने एक ऐसी आदर्श प्रतिमान विकेन्द्रीत ग्रामीण अर्थ व्यवस्था की कल्पना की जिसके मूलमंत्र होंगे- आत्मनिर्भरता ओर विकेन्द्रीकरण।' [16]

विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था – गॉधी जी ने एक ऐसी आदर्श ग्रामीण अर्थव्यवस्था की कल्पना की जिसके मूलमंत्र होंगे- आत्मनिर्भरता और विकेन्द्रीकरण। गॉधी ने स्पष्ट किया कि यह ग्राम प्रधान अर्थ- व्यवस्था लघु एवं कुटी उधोगों पर आश्रित होगी। इस व्यवस्था में उत्पादन के लिए भारी भरकम और आधुनिक मशीनों का आश्रय नहीं लिया जायेगा। अत: उत्पादन अत्यधिक मात्रा में नही होगा और न ही भारी मात्रा में पूँजी के विनियोग की आवश्यकता होगी। इस उत्पादन प्रणाली में पूँजी की तुलना में श्रम की प्रतिष्ठा होगी। अत: उत्पादन शोषण को जन्म नहीं देगा। [17]

गॉधी जी का कहना था कि लघु एवं कुटीर उधोगो पर आधारित अर्थव्यवस्था में उत्पादन मुख्यत: स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होगा। अत: स्थानीय उत्पादन, स्थानीय उपभोग और विवेक सम्मत वितरण, अर्थ व्यवस्था के निर्देशक सूत्र होगे। यह ग्रामीण व्यवस्था उत्पादन की केन्द्रीय प्रणाली से इस अर्थ में भिन्न होगी कि इसमें भारी मात्रा में उत्पादन करने की बजाय उत्पादन की प्रक्रिया में जनता की व्यापक भागीदारी पर बल दिया जायेगा। इस व्यवस्था में उपभोग की प्रवृति पूँजीवादी विलासिता प्रधान पद्धति से इस अर्थ में भिन्न होगी कि इसमें उपभोग को बढाने के लिए व्यक्ति की आवश्यकताओं और विलासिता का अनावश्यक विस्तार नही किया जायेगा। इस व्यवस्था में न्याय संगत वितरण समाजवादी व्यवस्था से इस अर्थ में भिन्न होगा कि न्याय संगत वितरण के लिए राज्य की दमनकारी शक्ति का प्रयोग नहीं किया जायेगा, अपितु उपभोग का स्थानीयकरण ही यह स्वत: सुनिश्चित कर देगा कि उत्पादन का समुदाय की आवश्यकताओं के अनुरूप न्याय संगत वितरण हो क्योंकि उत्पादन ही केन्द्रीकृत नहीं होगा अत: वितरण की जटिलताओं की संभावनाएँ ही नहीं होगी।

इस विकेन्द्रित ग्राम प्रधान अर्थव्यवस्था में श्रम एवं पूँजी के मध्य विवाद नहीं होगे और गरीबी, बेरोजगारी और असमानता की समस्या भी नही होगी। 18 गॉधी जी ने स्पष्ट किया कि इस ग्रामीण अर्थव्यवस्था में विद्युत जैसे साधनों के विरूद्ध नही है, किन्तु उन्होनें यह सुनिश्चित किये जाने पर बल दिया कि विद्युत का उत्पादन यथा संभव स्थानीय हो और उसका प्रबन्ध ग्रामीण समुदाय में ही निहित हो। [19]

ग्रामीण अर्थव्यवस्था के माध्यम से गॉधी जी ऐसे आत्म निर्भर, समुन्नत और सुसंस्कृत ग्रामीण जीवन की कल्पना रखते है जिसमें अभावों, कटुता, घृणा, द्वेष और भौतिक उपलब्धियों की लालसा आदि के लिए कोई स्थान नहीं हो। ग्रामों की आत्मनिर्भरता और विश्व भातृत्व के सम्बन्ध में विचार कुछ असंगत और विरोधाभासपूर्ण प्रतीत हो सकते है। जब श्रीमन्नारायण ने एक दिन सेवाग्राम में गॉधी जी से इस आभासी विरोध का स्पष्टीकरण करने के लिए कहा- तो उन्होनें उत्तर दिया-'भोजन, वस्त्र और आवास की अपनी प्रारम्भिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मुझे दुनियॉ का कोना-कोना छानने की आवश्यकता नहीं है। सेवाग्राम में सादगी और सन्तोष की जिन्दगी व्यतीत करते हुये मैं न केवल समस्त मानवता के साथ, बल्कि अनन्त सत्ता के साथ एकाकार होने की आकॉक्षा रखता हूँ।'

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. एम.के.बोस : एटेडीज इन गॉधीज्म, पृष्ठ 202-03
2. महात्मा गॉधी: यंग इण्डिया, 26 सितम्बर 1924
3. प्यारेलाल का लेख: गॉधी जी की स्वदेशी भावना, पृष्ठ 29
4. महात्मा गॉधी : यंग इण्डिया, 26 सितम्बर 1924
5. प्यारेलाल का लेख : गॉधी जी की स्वदेशी भावना, पृष्ठ 29
6. क्लैक्टेड वर्क्स ऑफ गॉधी : 21 मार्च 1987, पृष्ठ 289
7. डॉ. पुरूषोतम नागर: आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, पृष्ठ 429
8. महात्मा गॉधी : नवजीवन: 11 जुलाई, 1920
9. प्रख्यात गॉधीवादी श्री मन्नारायण के विचार: योजना, अक्टूबर, 1972
10. महात्मा गॉधी: नवजीवन: 11 जुलाई, 1920
11. प्यारेलाल का लेख: गॉधी जी की स्वदेशी भावना, पृष्ठ 29
12. सत्याग्रह आश्रम का इतिहास
13. प्यारेलाल का लेख: गॉधी जी की स्वदेशी भावना, पृष्ठ 29
14. सत्याग्रह आश्रम का इतिहास, 1959, पृष्ठ 40
15. डॉ. रामजीसिंह: गॉधी दर्शन मीमांसा, पृष्ठ 148
16. टुवर्डस न्यू होराइजन्स, 1949, पृष्ठ 8
17. गॉधी जी : हरिजन सेवक, 2 अगस्त 1942 पृष्ठ 243
18. क्लैक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गॉधी खण्ड 48, पृष्ठ 163
19. एम. के गॉधी: इण्डिया ऑफ माई ड्रीम्स, पृष्ठ 356

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

संगीत शिक्षा और गुरु शिष्य परंपरा

शाश्वती श्रीवास्तव *

* शोधार्थी, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – प्राचीन समय से संगीत शिक्षण के लिए गुरु-शिष्य परंपरा से संगीत शिक्षा ली जाती थी, यह परंपरा आवासीय विधि थी जिसमे शिष्य गुरु के साथ रह कर अर्जित किया करता था। शिष्य संपूर्ण तौर पर गुरु के परिवेश में विलीन हो जाता था गुरु से ज्ञान लेने के साथ-साथ गुरु से नैतिक, सामाजिक और व्यवहारिक ज्ञान भी अर्जित करता था। गुरु की शिक्षण पद्धति में जैसे भी गुरु होते थे, शिष्य भी स्वयं को गुरु की परछाई बना लेता था एवं गुरु से शिक्षा लेते समय शिष्य किसी और शैली या संस्कार ग्रहण नहीं करते थे क्योंकि वह गुरु में ही रम जानना चाहते थे, मन- मस्तिष्क संपूर्णतारू गुरु के चरण में होना चाहिए। शिष्य अपनी मेहनत लगन से उस घराने या गुरु परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए तत्पर होते थे। शिष्य जितना गुरु से प्रेम करते थे उतना ही प्रेम शिष्य भी करते थे, गुरु शिष्य को जान लेते थे और उसको उसकी प्रतिभा अनुसार शिक्षा देते थे एवं शिष्य से स्नेह भी करते थे एवम् प्राचीन काल में गुरु को सर्वोपरि माना जाता था एवं उनका स्थान ईश्वर से भी ऊपर रखा गया गुरु ही माता -पिता के समान होते थे वहीं अपने शिष्य को एवं समाज को राह प्रशस्त करते थे भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य परंपरा को श्रीकृष्ण ने 'परंपराप्राप्तम योग' बताया है।
उपनिषदों में- मातृ देवो भव: पितृ देवो भव: आचार्य देवो भव: अतिथि देवो भव:।

शिष्य गुरु के सानिध्य में 5 वर्ष की आयु से ही गुरुकुल चला जाया करता था एवं गुरुकुल की रीति रिवाज नियम कानून को ग्रहण कर सहज और अनुशासित जीवन निर्वाह करता था गुरु का शिष्य पर संपूर्ण अधिकार हुआ करता था जिनके लिए शिष्य को कोई कीमत नहीं देनी होती थी बल्कि उसकी संपूर्ण शिक्षा गुरुकुल से संपन्न होने के बाद गुरु परीक्षा लेते थे जिसे सफलता पूर्ण करने के बाद शिष्य उस परंपरा को आगे आने वाली पीढ़ी को सौंपने के लिए पूर्ण रूप से तैयार हो चुके होते था, जिसे हम (घराने दार गायकी के रूप में जानते हैं -जैसे आगरा घराना ल यकारी के लिए जाना जाता है। ग्वालियर घराना -ख्याल गायकी के लिए जाना जाता है इस घराने की बहू प्रचलित कलाकार मियां तानसेन जो पहले रीवा के राजा रामचंद्र सिंह के दरबार में थे फिर बाद में अकबर दरबार में रहे। जयपुर घराना- गायन सौंदर्यशास्त्र की तकनीकी योग्यता के कारण माना जाता है।इस घराने की प्रचलित गायक केसरबाई केरकर, मोगुबाईकोडीका ,मल्लिकाअर्जुन मनसूर आदि है।इन सभी घरानों की शैली एक दूसरे से भिन्न है, इसलिए उनकी गायन की तकनीक एवं प्रस्तुति करने का रख-रखाव, उस घराने को दिखलाता है। घराना परंपरा गुरु- शिष्य पद्धति के अंतर्गत सीखा गया, एवं पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है।यह घराने दारी की विशेषता आगे बढ़ाने के लिए गुरु और शिष्य दोनों को ही समर्पित होना पड़ता था।जिसका अंत निष्कर्ष उस घराने का अस्तित्व पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाना होता था और जो आज के समय में काफी हद तक समाप्त होता जा रहा है। प्राचीन काल में गुरु शिष्य पद्धति इसलिए भी मजबूती एवं परस्पर प्रेम विश्वास से बंधी रही क्योंकि उस समय की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं प्रशासनिक ढांचा गुरु शिष्य परंपरा को ही सबसे अधिक महत्व देता था जो कि मध्यकाल में शीतल होने लगा एवं संगीत एवं शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन आ गया था।

मध्यकाल में मुस्लिम शासकों का अधिपत्य हो गया था। मुस्लिम शासकों के समय में संगीत के क्षेत्र में कई नई गायन शैलियों का निर्माण हुआ। सूफी संतों ने सामूहिक गायन एवं समाज में धार्मिक वातावरण का प्रचार किया।सबसे महत्वपूर्ण कार्य मध्यकालीन संगीत परंपरा में अमीर खुसरो ने कव्वाली का अविष्कार किया एवं तबला, सितार जैसे वाद्य यंत्रों का निर्माण किया एवं तराना का भी अविष्कार किया। सरपरदा ,सजगिरी ,तिलक, सनम आदि रागों का भी निर्माण किया, समाज में प्रसिद्धि प्राप्त की, जिसके कारण उन्हें गायक की उपाधि से सम्मानित किया गया। इस युग में संगीत की बहुत सारी पुस्तकें लिखी गई जैसे राग दर्पण, फकीर उल्लाह, राग विरोध, रस कोमोदी , राग तरंगिणी, राग तत्व विबोध आदि।

संगीत के प्रति प्रेम मुगल काल में बहुत अधिक देखा गया एवं संगीत का विकास तीव्र गति से हुआ मध्यकाल में शिक्षण पद्धति में भी परिवर्तन आया था इस युग में सभी को समान अधिकार संगीत प्रशिक्षण प्राप्त करने का ना था क्योंकि महिलाओं का पर्दा प्रथा आरंभ हो चुका था एवं जाति वर्गीकरण भी समाज में अपनी जड़ पसार चुकी थी। संगीत शिक्षा अर्जित करने के लिए बड़े घर की महिलाओं के लिए घर पर ही गुरु शिक्षा देने आते थे एवं मध्यवर्गीय महिलाओं में शिक्षा प्राप्त करना उतना सरल नहीं था। संगीत की स्थिति प्राचीन काल से वर्तमान काल तक आते-आते बदल चुकी थी 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद संगीत की शिक्षण पद्धति प्राचीन काल से बिल्कुल अलग तरीके से स्थापित की जा चुकी थी। अब सरकार ने संगीत को प्रोत्साहन देने के लिए राष्ट्रपति पदक 1952, 1953 में संगीत नाटक एकेडमी तथा 1954 में ललित कला अकादमी स्थापित की आकाशवाणी में राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं का आयोजन प्रारंभ किया। संगीतसंगीत की एक नई दिशा या प्रणाली स्थापित करने में भातखंडे जी का महत्वपूर्ण स्थान है आपने था ट्रक वर्गीकरण पद्धति बनाई एवं संगीत नीति पद्धति बनाई संगीत में संबंधित संगीत विद्यालयों कॉलेजों की स्थापना की लखनऊ के

मैरिज म्यूजिक कॉलेज ग्वालियर में माधव संगीत विद्यालय बड़ौदा खोला और जनसाधारण में प्रचलित किया जिसमें संगीत का ज्ञान पाठ्यक्रम एवं घायल दोनों के द्वारा प्राप्त किया जाता था भातखंडे जी ने पुस्तकों का भी निर्माण किया जैसे क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 6 अभिनव राग मंजरी हिंदुस्तानी संगीत पद्धति द शार्ट हिस्टोरिकल सर्वे ऑफ इंडिया एवं विभिन्न समितियों के द्वारा गाई गई रचनाओं को स्वरलिपि बंद करके पुस्तकों में संग्रहित किया भातखंडे जी के शिष्य पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर जी ने भी संगीत के ऊपर 250 पुस्तकें लिखी जैसे संगीत बालबोध भजन अमृतमएहरी आदि और आपके भी बहु प्रचलित शिष्य पंडित ओमकारनाथ ठाकुर और विनायकराव पटवर्धन जी का भी संगीत में एक बहुत बड़ा महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

समय के साथ विद्यालयों में संगीत की स्थिति शिथिल होती चली गई। संगीत का ज्ञान अर्जित करने के लिए शिष्य में भी कुछ विशेषताएं होनी चाहिए जैसे कंठ में मिठास, स्वरों में मधुरता और कोमलता, कंठ में लय भारी हो ,कंठ खुला हुआ हो, जो तीनों सप्तकों को बड़ी सरलता से छू ले। ऐसे विद्यार्थियों को ही संगीत विषय देना चाहिए। परंतु आज विद्यालय महाविद्यालयों में केवल विषय को लेकर परीक्षा पास करना रह गया है। संगीत विषय में पढ़ने के लिए 40–45 मिनट का समय निर्धारित कर दिया गया है। समय के अनुसार संपूर्ण करके संगीत की परीक्षा उत्तीर्ण करना लक्ष्य हो गया है। शिष्य का कंठ नीरस हो, विषय रुचि का ना हो ,जो बेताला हो, जो नाक से गाता हो ,जो दांत पीस के गाता हो ,यह सभी अवगुण भले ही अभ्यार्थियों के पास हो लेकिन फिर भी, बिना परीक्षा लिए उन्हें संगीत विषय दे दिया जाता है।आज विद्यालयों में संगीत की परिस्थिति इसी तरह की हो गई है एवं गुरु भी सिर्फ आय के लिए ही संगीत का प्रशिक्षण विद्यार्थियों को दे रहे हैं क्योंकि आज गुरु और शिष्य का रिश्ता परिवर्तित हो चुका है एवं प्राचीन काल की तरह शुद्ध और निस्वार्थ की श्रेणी से गिरकर लोभ और व्यवसायिक रूप ले चुका है। समय रहते यदि हमने हमारी संगीत धरोहर को संभाल के नहीं रखा तो वह आगे आने वाली पीढ़ी को प्रदान नहीं कर पाएंगे।संगीत हमेशा से ही दिलों को छू लेने वाला रहा है परंतु जो गुरु– शिष्य परंपरा हमारे प्राचीन काल में हुआ करती थी वह सभ्यता आज के समय में विलुप्त होती जा रही है। हम सभी संगीत प्रेमियों का यह कर्तव्य बनता है कि हम हमारे घरानेदारी एवं गुरु –शिष्य परंपरा जो प्राचीन काल से ही हमारी भारतीय संस्कृति में विद्यमान है और आज भी इसका अंश हमारे देश में चला आ रहा है उसको उसकी परंपरा को सीखते हुए हमें हमारी गुरु शिष्य संस्कृति को आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए संभाल के रखनी है एवं संगीत को आगे बढ़ाना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Wikipedia&google
2. www-upboardsolutions-com/class&12& pedagogy &chapter-
3. Jagran Josh-com-

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

पश्चिम ओड़िशा के लोक संस्कृति की वाहक - लोक वाद्य

गोविन्द नाएक *

* शोधार्थी, गंगाधर मेहेर विश्वविद्यालय, सम्बलपुर (ओड़िशा) भारत

प्रस्तावना - भारत एक संस्कृति संपन्न राष्ट्र है। इस देश अनेक संस्कृति का मिलन स्थल है। इस पवित्र भारत भूमि में समय-समय पर अनेक विदेशी शासक आक्रमण किया एवं देश में बस गए। जिससे अनेक पाश्चात्य संस्कृति का समन्वय भारतीय समाज में हुआ। परन्तु यहा की प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा आज भी जीवित है। जिसे हम लोक संस्कृति के रूप में परिभाषित कर सकते है।

लोक संस्कृति से आशय उन मूलभूत तत्व से है, जो यहा के प्राचीन आदिवासी तथा जनजाति की कला, साहित्य, संगीत, परम्परा, आचार-विचार, रहन-सहन, पर्व, आस्था,धर्म आदि का व्यवहार दैनिक जीवन में सदियों से करते आ रहे हैं। लोकगीत, लोक-नृत्य, लोकवाद्य लोक संगीत के अंतर्गत आता है जो संस्कृति के वाहक के समान है। लोक संस्कृति के लिए थ्वसा सवतम शब्द का प्रयोग 1846 ई. में सबसे पहले विलियम जन थर्मस के द्वारा हुआ।

भारत वर्ष के पूर्वी राज्यों में ओड़िशा का स्थान एक संस्कृति संपन्न राज्य के रूप में विदित है। ओड़िशा प्रदेश का स्थापन 1 अप्रैल 1936 को हुआ। वर्तमान ओड़िशा राज्य में कुल 30 जिले है। भौगोलिक स्थिति तथा क्षेत्रियता की इस प्रदेश में अनेक प्रकार की संस्कृति देखने को मिलता है। ओड़िशा राज्य की पश्चिमांचल अर्थात पश्चिम ओडिशा जो वर्तमान दस जिले एवं एक उपखंड को लेकर बना है यथा क्रमश: संबलपुर ,सुंदरगढ़, बरगढ़, देवगढ़, बलांगीर, कालाहांडी, नूवापाड़ा, झारसुगुड़ा, सोनपुर, बौद्ध एवं अनुगूल जिले की आठमलिक उपखंड में प्रचलित लोकगीत, लोकनृत्य, लोकवाद्य की समाहार को लेकर परिष्कृत संगीत बना है जो संबलपुरी लोक संगीत के रूप में पूर्ण रूप से परिचित है।

भौगोलिक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से पश्चिम ओड़िशा अन्य क्षेत्र से पूर्ण रूप से भिन्न है। इस क्षेत्र की लोक जीवन, लोककला, लोकनाटक, लोकभाषा-साहित्य, लोकगीत, नृत्य, और लोक वाद्ययंत्र स्वतंत्र रूप से अलग प्रकार की है। इस विशाल उपखंड में जीवन यापन करने वाले लोगों में से ज्यादा लोग आदिवासी संप्रदाय के हैं। इन लोगों के पारंपारिक यात्रा, पर्व-त्यौहार, व्रत, सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम, देवी-देवता पूजा, लोकगीत नृत्य, वाद्य ओडिशा के सांस्कृतिक और परंपरा को सुदृढ़ एवं समृद्धशाली किया है।

यहा के मूल आदिवासी सदियों से पत्थर, लकड़ी, चमड़े, को आघात कर के शब्द तथा ध्वनि का सृष्टि करते थे। इस वादन के माध्यम से जंगली जानवर से खुद को बचाते हैं। बाद में पत्थर को पत्थर से, लकड़ी को लकड़ी से, हाथों से ताली मारकर नाद शब्द तथा ध्वनि का सृष्टि किए।। इस प्रक्रिया को बार-बार आवृत करने के द्वारा जिस ध्वनि या नाद का व्यवधान सृष्टि हुआ,वह 'ताल' नाम से परिचित हुआ। वर्तमान की शास्त्रीय संगीत, आधुनिक संगीत या लघु संगीत के मूल आधार स्रोत लोक संगीत है। लोक संगीत के लिए पश्चिम ओडिशा का स्थान स्वतंत्र है।

पश्चिम ओडिशा में रहने वाले आदिवासी समुदाय के लोग मनोरंजन, धार्मिक पर्व-त्यौहार, व्रत, यात्रा, कौलिक वृत्ति तथा अनेक विशेष कार्य में विभिन्न प्रकार की लोक वाद्य का व्यवहार करते हैं। आज के इस आधुनिक विज्ञान के युग में भी इस लोक वाद्य का चाहत कम नहीं हुआ है। प्राचीन काल से पश्चिम ओडिशा के आदिवासी संप्रदाय लोक वाद्य वादन करते आ रहे हैं। विशेष करके लोक वाद्ययंत्र में पशु के चमड़े का इस्तेमाल होने के कारण इसे उच्च जाति के लोग छूना पसंद नहीं करते थे। वाद्ययंत्र बजाना निम्न जाति के लोगों का कार्य माना जाता है। वाद्ययंत्र बजाने वाले लोगों को अछुत समझ ते थे। समय की स्रोत में निम्न जाति के लोगों का संपर्क उच्च वर्ग के लोगों के साथ हुआ। यह संपर्क स्थापित होने के कारण आदिवासी संस्कृति जनसाधारण में घुल मिल गई। परवर्ती समय में शिक्षा के विकास के साथ मानवीय चिंताधारा में परिवर्तन हुआ। जो उच्च जाति के लोक वाद्ययंत्र को हीन दृष्टि से देखते थे। बाद में धीरे-धीरे वह लोग भी इससे अनुप्राणित हुए। साथ ही इस क्षेत्र के लोकगीत, लोकनृत्य, लोक वाद्ययंत्र को दैनिक जीवन में अपनाने लगें। प्राचीन काल के जनजाति लोगों द्वारा प्रर्दशित किया हुआ लोक वाद्य को वर्तमान उच्च वर्ग के लोगों द्वारा मंच पर, प्रेक्षागृह, रेडियों तथा दूरदर्शन में प्रर्दशन किया जा रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप पश्चिम ओडिशा की लोक संस्कृति के विकास होने के साथ-साथ इस महान संस्कृति का परिचय देना संभव हो पा रहा है।

लोगों के प्रथा-परंपरा, धर्म-विश्वास,रीति-रिवाज,चाल-ढाल,गीत-नृत्य-वाद्य, कला-स्थापत्य, कहानी, नाटक, लोकोक्ति भक्ति पूजा पद्धति व्रत खान-पान, वेश-भूषा, तंत्र-मंत्र, प्रसिद्ध लौक उक्ति, नाम रखना, आशीर्वाद देना,अभिसाफ, कसम-नियम, अपमान-शुभेच्छा, गृह पूजा आदि लोक संस्कृति अंतर्गत आता है।

हिंदी साहित्य के आलोचक डॉ. सत्येन्द्र जी का कहना हैय ष्लोक मनुष्य समाज की वही वर्ग है, जो संभ्रांत, संस्कार, शास्त्रीयता, पंडिताई और अहंकार से वर्जित एवं परंपरा से जीवित है।डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी 'श्लोक' शब्द की व्याख्या करते हुए कहा है शहर और गांव में रहने वाले वही जनता जिनके व्यवहारिक ज्ञान का आधार पोथी शास्त्र नहीं है, जिनकी वार्तालाप

परिष्कृत, रुचिपुर्ण, और सुसंस्कृत लोगों से अधिक सरल और अकृतिम जीवन यापन करते हैं वह ही लोक है।' मजरूह इस्लाम के अनुसार 'श्लोग' कहने से साधारण किसान, मजदूर, आदिवासी, अविकसित जनता, की गोष्टी को मानते हैं।'लोकरत्न डॉक्टर कुंजबिहारी दास के अनुसार 'श्लोक' शब्द विशेष रूप से व्यापक है, इसका अर्थ सिर्फ सर्वसाधारण जनता से है। कंद, कोल्ह, भुइयां, गण, किसान, ओराम, संताल गदवांग से लेकर गांव और नगर की अशिक्षित, शिक्षित, अर्धशिक्षित जनता तक सभी इसके अंतर्गत आते है।'

पश्चिम ओडिशा की डालखाई, रसरकेली, माएलाजड़,जाईफुल, बजनिया, नचनीया, गलार, सजनी, हलिया, लोरी, आदि प्रमुख गीतों में लोक वाद्य का प्रयोग किया जाता है। वाद्य को सबसे पहले किसके द्वारा बनाई गई आज तक इसका प्रमाण सठिक रूप से प्राप्त जानकारी नहीं मिला है। ठीक उसी प्रकार उपरोक्त लोक गीतों का मूल लेखक आज भी अज्ञात है।

पश्चिम ओड़िशा के लोक वाद्य अनेक प्रकार की है जैसेरू ढोल, नगडा, ताशा, झांज, करताल, काठिया, रामताली, डमरु, काहली, मुरली, धुनकेल, दुलदुली, मृदंग, खजनी, ढाप ,राम काफी, गिनी, केन्दरा, घूघु नंदिया, घुमरा, तमाकोडो आदि है।

1. ढोलरू मुख्य रूप से दो प्रकार की है:

(क) लकडी ढोल (ख) मिट्टी ढोल

लकडी के ढोल एवं मिट्टी के ढोल दोनों 'दंड नृत्य' में एवं श्बाणी बोतलश में अर्थात 'सोहला स्वांग' एवं 'श्लीला स्वांग' नृत्य में व्यवहार किया जाता है। सिर्फ लकड़ी की ढोल से 'डालखाई','नचनिया', नृत्य के साथ विभिन्न प्रकार की संबलपुरी लोकगीत एवं लोक नृत्य में व्यवहार किया जाता है।

2. मृदंगरू साधारणत पांच प्रकार के है:

(क) संचार मृदंग (ख) सम्पदा मृदंग

(ग) संकिरत्न मृदंग (उदंड) (घ) संकिरत्न मृदंग (रंगीन)

(ड.) सबसे छोटा पाला मृदंग

मृदंग का व्यवहार विशेष करके कीर्तन के समय प्रयोग किया जाता है

3. गिनी: (करताल) मुख्य रूप से तीन प्रकार के हैं

(क) उदंड करताल (ख) रंगीन करताल

(ग) पाला गायन करताल

गिनी का व्यवहार विशेष करके कीर्तन और पाला गायन के समय प्रयोग किया जाता है

4. मुरलीरू मुख्य रूप से तीन प्रकार हैंरू-

(क)आड् मुरली (ख) खाड् मुरली (ग) भालू मुरली (बांस)

मुरली बांस से निर्मित है। इसके व्यवहार लोग विभिन्न प्रकार की मांगलिक कार्यक्रम एवं मनोरंजन केलिए करते है । साथ ही अन्य वाद्य में सहायक वाद्य के रूप में भी बासुरी को बजाया जाता है।

5. मांदलरू दो प्रकार के हैं: -

(क) आदिवासी करमा मांदल

(ख) देशी करमा मान्दल

करमा मान्दल करमसानी देवी के पूजा के दौरान बजाया जाता है ।

मनुष्य की मन में बहुत सारी आनंद का संचार हुआ है, वही आनंद रुपांतरित होकर गीत, नृत्य, वाद्य,कला साहित्य, संगीत, हस्त तंत्र, आदि सदाचार की रुप में आत्म प्रकाश हुआ है । संस्कृति युग का वाहक काम किया है। नृत्य, गीत, ताल की संयोजन करने का आंतरिक भाव है।अनुभूति के रस युक्त ध्वनि मनुष्य के प्रकाश उपकरण की तैयारी किया है, जिसको वाद्य यंत्र कहा जाता है। जिसका प्राचीन रूप विचित्र जेसा लगता है। परंतु लकड़ी की टहनी से तैयार किया हुआ लकड़ी खोल की चमड़े का आवरण एक विशेष प्रकार की रूप प्रस्तुत किया है। वाद्य यंत्र लोगों के द्वारा, लोगों के लिए, लोगों के लिए ही सहारा के रूप में सांप्रतिक काल से लोक वाद्य रूप में जुड़ा हुआ है।

प्रकृति की अनुकूल वातावरण प्रवाहित होकर मनुष्य कोमल पशु, हाथी, घोड़ा की आवाज से राग की सर्जन करता है। मृग, मोर आदि अनेक नृत्य प्रिय पशु-पक्षियों से नृत्य का आविष्कार किया है। बॉस से बांसुरी(मुरली) बना कर एक मधुर ध्वनि का सृष्टि किया है।

मनुष्य हमेशा खुद को पूजा पद्धति, नाच गान ,तथा भिन्न प्रकार की वाद्य यंत्र से 'ताल' देकर उत्साहित होते आ रहे हैं। उसके सभी आत्मविश्वास निष्ठा, आत्म शुद्धि ,संकल्प, कल्याणकारी जनचेतना के साथ ह्रदय में सांस्कृतिक परंपरा नसों में नसो में रमकर निकट से देवों के देव महादेव को भी लोक देवता की रूप में स्वीकार किया है। रुद्र डमरू सूत्रों के अनुसार शिव जी के डमरु से 'स्वर' और 'ताल' की उत्पत्ति हुई है। वहीं स्वर और ताल के संयोग से 'नाद' प्रकाशित हुआ।

'नाद' शब्द में 'ना' का अर्थ है 'पवन' और द का अर्थ है 'अग्नि'अर्थात पवन और अग्नि के संयुक्त से 'नाद' ब्रह्म की सृष्टि हुआ है। यह नाद ब्रह्म की उत्पत्ति के लिए लिए समस्त जगत बाकमय है। आंतरिक भाव,रस युक्त ध्वनि के माध्यम से प्रकाश हो रहे उपकरण ही वाद्ययंत्र के रूप में जाना जाता है । ताल के संयोग से संगीत को मापने और वाद्ययंत्र का उद्धाटन एवं संगीत को आकर संपूर्ण प्रधान कर के भाव की अभिव्यक्ति के लिए सहाय होता है । विभिन्न रस के लिए भिन्न-भिन्न वाद्य यंत्र का ताल प्रयोग होता है । उसको अनुसरण करके उसकी सहायता में नृत्य होता है। नृत्य गीत, संगीत क्षेत्र को छोड़ देने से यह लोग जीवन के क्षेत्र में भी भावो की उत्पत्ति करता है,जेसैरू युद्ध क्षेत्र में शत्रु की हृदय में द्धंद और वीर के हृदय में में उल्लास केलिए दूधुभी, नागड़ा, तूरी, ढोल, निशान, आदि वाद्य का प्रयोग होने के साथ वीर वाद्य 'घुमुरा' का भी व्यवहार होता है। किसी भी देवी देवता को प्रसन्न करने के लिए पर्व त्यौहार की शोभायात्रा मैं पंच वाद्ययंत्र ष्दुलदुलीष का प्रयोग पश्चिम ओडिशा में सदियों से चली आ रही है।

पंच वाद्य:- पश्चिम ओड़िशा के लोक जीवन का मुख्य पंच वाद्य है ।ढोल,निसान,तासा,महूरि और झांझ इन पांच वाद्य के समूह से पंच वाद्य बना है। इसके अनेक नाम है, जेसे- डमबजा, गणाबजा, सिंह बजा कहा जाता है। वर्तमान समय में अनेक आधुनिक वाद्य का व्यवहार करके इसे श्दुलदुलीश नाम दिया गया है। यह वाद्य जनमानस में एक अलग पहचान बनाई है। यहा के जनता हर्ष उल्लास, शोक, मनोरंजन, देवी पूजा, विवाह ,आदि विभिन्न कार्यक्रमों में पंच वाद्य को बादन करके खुशी महसूस करते हैं। इन पंचवाद्य की ध्वनि से एक मधुर झंकार के सृष्टि होती है, जो मन को मोहित कर देती है।

किसी के मृत्यु के उपरांत इस क्षेत्र में वाद्य वादन करके उसे स्मशान लिया जाता है। जो हमारे संस्कारों का एक हिस्सा है।

देवी देवता के आरती के समय में लोक वाद्य वादन किया जाता है। वाद्य वादन करके देवी माता को प्रसन्न करने की परम्परा सदियों से चली आ रही है। देवी को प्रसन्न करने के लिए पंच वाद्य का व्यवहार किया जाता है।

मांगलिक कार्यक्रम और विवाह के दौरान पंच वाद्य का वादन को शुभ

माना जाता है। पंच वाद्य के बिना विवाह करना असमंजस जैसा प्रतीत होता है।

मनोरंजन के लिए भी इस क्षेत्र के निवासी वाद्य वादन करके खुद को उत्साहित करते आ रहे हैं। इसको बजाकर विभिन्न प्रकार की पर्व त्योहार का पालन करते हैं। वाद्य की ताल के साथ खुद को समर्पित कर देते हैं। यह पश्चिम उड़ीसा की एक विशिष्ट पहचान है।विभिन्न प्रकार की लोकगीत का मुख्य स्रोत यह वाद्य यंत्र है।

पश्चिम उड़ीसा की संबलपुरी लोक वाद्य में से कालाहांडी की 'घूमुरा'=' लोक वाद्य अत्यंत प्राचीन है। इसको मिट्टी में तैयार करके आग में जलाकर निर्माण किया जाता है। इसके पीछे तरफ एक छोटा सा छेद होता है। इसके सामने गोढी(छीपकली) के चमड़े को गम के सहारे आवरण किया जाता है, और रस्सी के द्धारा बंधा जाता है। घूमुरा वाद्य के लिए पश्चिम ओडिशा के कलाहाडीं जिला प्रसिद्ध है। घुमुरा लोक वाद्य होने के साथ साथ लोक नृत्य भी है। यह एक वीर वाद्य है। योद्धाओं को उत्साहित करने के लिए इस वाद्य का वादन किया जाता है।

ढाप नृत्य गीतों की एक प्रमुख वाद्य है। गोलाकार लकड़ी में निर्मित चमड़े की आवरण किया हुआ वाद्य है। यह वाद्य को बाएं हाथ में पकड़ने के साथ दाएं हाथ में तीनका के सहायता से बादन किया जाता है। ढाप नृत्य केलिए टिटिलागढ प्रसिद्ध है। इसके अलावा और भी अनेक वाद्य है: खजनी,डंमरू,राम काठी, चाप, आदि महत्वपूर्ण है।

समय के स्रोत में वाद्य यंत्र का स्वरूप बदलता दिखाई रहा है। आज के आधुनिक युग में मनोरंजन के अनेक नवीन साधन उपलब्ध हो रहा है। जो प्राचीन लोक वाद्य यंत्र का स्थान ले रहा है। फिर भी आज भी जन-मानस में प्राचीन लोक वाद्य का चाहत कम नहीं हुआ है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पश्चिम ओडिशा कि लोक वाद्य लोगों को एक सूत्र में बांधकर रख पाई है। यह वाद्य परंपरा सदियों से चली आ रही है। जो सभी लोगों को उत्साहित करती आ रही है। इस वाद्य यंत्र की सबसे बड़ी विशेषता यह हे कि सुख-दु:ख, पर्व-त्यौहार, युद्ध, विवाह, तथा अनेक मांगलिक कार्यक्रम के समय इस लोक वाद्य का वादन इस क्षेत्र के लोग अपने दैनिक जीवन में करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. पश्चिम ओडिशा : लोक साहित्य स्वरूप- डॉ. निमाई चन्द पंडा
2. पश्चिम ओडिशा : लोक संस्कृति और लोक साहित्य- डॉ. कृष्ण चन्द्र प्रधान
3. लोक साहित्य की भूमिका- डॉ. कृष्ण देव उपाध्याय
4. लोक साहित्य विज्ञान- डॉ. सत्येन्द्र
5. ओडिआ लोकगीत ओ काहाणी - डॉ. कुंज बिहारी दास

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

नई शिक्षा नीति-2020

डॉ. कलिका डोलस*

* प्राध्यापक (गृह विज्ञान) शासकीय कन्या महाविद्यालय, सीहोर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना - उचित बुनियादी शिक्षा प्राप्त करना भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। सुखी जीवन जीने के लिए तैयार होने के लिए एक बच्चे के विकास में शिक्षा बेहद महत्वपूर्ण तत्व है। 21वीं सदी में 1986 के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बदलाव जुलाई 2020 में हुआ और यह नई शिक्षा नीति 2020 के रूप में सामने आई।

भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली ब्रिटिश प्रतिरूप पर आधारित है जिसकी नींव 1835 में रखी गयी थी। शिक्षा स्तर को उन्नत करने के लिए पहला आयोग 1948-49 में राधाकृष्णन आयोग के नाम से गठित हुआ था। इसके बाद वर्ष 1952 में दूसरा आयोग गठित हुआ इस आयोग को मुदालियर आयोग का नाम दिया गया। इनमें राधाकृष्णन आयोग ने विश्वविद्यालयीय शिक्षा क्षेत्र में काम किया जबकि मुदालियर आयोग ने माध्यमिक शिक्षा पर काम किया। इसके बाद कई शिक्षा आयोग गठित किये गये। शिक्षा आयोगों की शुरूआत ही गलत तरीके से हुई थी क्योंकि पहला आयोग विश्वविद्यालयीय शिक्षा पर विचार करने के लिए गठित किया गया था। जबकि उसे प्राथमिक शिक्षा के लिए यदि गठित किया जाता तो शायद अगले आयोगों की सार्थकता बढ़ती। शिक्षा को व्यावसायीकरण करने की सिफारिश सबसे पहले कोठारी आयोग ने की थी। इस आयोग ने 1964-66 के बीच कार्य किया। देश में यदि शिक्षा को बढ़ावा देना है तो हमें अपनी शिक्षा नीति में भारी बदलाव लाना होगा।

उद्देश्य - नई शिक्षा निति का मुख्य उद्देश्य एक बच्चे को एक कुशल बनाने के साथ-साथ, जिस भी क्षेत्र में वह रुचि रखता हैं, उसी क्षेत्र में उन्हें प्रशिक्षित करना है। इस तरह, सीखने वाले अपने उद्देश्य, और अपनी क्षमताओं का पता लगाने में सक्षम होते हैं। शिक्षार्थियों को एकीकृत शिक्षण प्रदान किया जाना है यानी उन्हें प्रत्येक अनुशासन का ज्ञान होना चाहिए। उच्च शिक्षा में भी यही बात लागू होती है। नई शिक्षा नीति में शिक्षक की शिक्षा और प्रशिक्षण प्रक्रियाओं के सुधार पर भी जोर दिया गया है।

नई शिक्षा नीति 2020 की आवश्यकता - पहले की शिक्षा प्रणाली मूल रूप से सीखने और परिणाम देने पर केंद्रित थी। विद्यार्थियों का आकलन प्राप्त अंकों के आधार पर किया जाता था। यह विकास के लिए एक एकल दिशा वाला दृष्टिकोण था। लेकिन नई शिक्षा नीति एक बहु-विषयक दृष्टिकोण की प्रासंगिकता पर केंद्रित है। जिसका उद्देश्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना है। नई शिक्षा नीति एक नए पाठ्यक्रम और शिक्षा की संरचना के गठन की कल्पना करती है जो छात्रों को सीखने के विभिन्न चरणों में मदद करेगी। शिक्षा को शहरी से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों में सभी तक पहुंचाने के लिए मौजूदा शिक्षा प्रणाली में बदलाव किया जाना चाहिए। यह लक्ष्य 4-गुणवत्ता शिक्षा को पूरा करके स्थिरता को पूरा करने की ओर होगा।

हमारे देश में राष्टीय शिक्षा निति 1986 में बनाई गई थी। और 1992 में संशोधित हो गई थी। तब से लेकर अब तक इस निति में बदलाव हुए इसकी कुछ विशेषताएं है।

1 बचपन की देखभाल
2 शिक्षा का अधिकार
3 स्कूल परीक्षा में सुधार
4 शिक्षक प्रबंधक
5 शिक्षा के क्षेत्र में आई.सी.टी.
6 व्यवसाइक शिक्षा और प्रशिक्षण
7 विकलांग शिक्षा
8 प्रौढ़ शिक्षा
9 रुक जाना नहीं

इस प्रकार अगर शिक्षा के क्षेत्र में कई बदलाव किये गए है, सरकार चाहती है की हमारे देश में कोई भी व्यक्ति अशिक्षित ना हो उसके लिए उसने कई नीतियों का कर्यवरण किया है, इसमें अभी हाल ही में रुक जाना नहीं एक निति बनाई जिसमे उन क्षात्रो के लिए है जो किसी न किसी कारन अपनी पढ़ाई बिच में ही छोड़ देते है या परीक्षा पास नहीं कर पाते है।

सन् 1964 - 1975 तक शिक्षा सम्बंधी आयोग का गठन किया गया जिसमे 1986 में 10+2+3 शिक्षा पद्धति लागू की गई इसे ही हम नई वर्तशिका पद्धति कह सकते है ।इसमें कई पूर्वकालीन शिक्षा संम्बधी विषमताओं को दूर करने का प्रयास किया गया है और नई शिक्षा नीतियों पर प्रकाश डाला गया है ।जो काफी हद तक सफल भी है । इससे पहले 1986 में शिक्षा नीति लागू की गई थी। 1992 में इस नीति में कुछ संशोधन किए गए थे। यानी 34 साल बाद देश में एक नई शिक्षा नीति लागू की जा रही है।

पूर्व इसरो प्रमुख के कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में विशेषज्ञों की एक समिति ने इसका मसौदा तैयार किया था, जिसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में कैबिनेट ने मंजूरी दी।

नई शिक्षा नीति में स्कूल शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक कई बड़े बदलाव किए गए हैं।

नई शिक्षा नीति-2020 की मुख्य बातें - नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति मौजूदा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के स्थान पर 29 जुलाई, 2020 को अस्तित्व में आई। शिक्षा नीति में यह बदलाव कुल 34 वर्षों के अंतराल के बाद किया

गया है। लेकिन बदलाव जरूरी था और समय की जरूरत के अनुसार यह पहले ही हो जाना चाहिए था।

- नई शिक्षा नीति में पाँचवी क्लास तक मातृभाषा, स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाई का माध्यम रखने की बात कही गई है। इसे क्लास आठ या उससे आगे भी बढ़ाया जा सकता है। विदेशी भाषाओं की पढ़ाई सेकेंडरी लेवल से होगी। हालांकि नई शिक्षा नीति में यह भी कहा गया है कि किसी भी भाषा को थोपा नहीं जाएगा।
- साल 2030 तक स्कूली शिक्षा में 100% जीईआर (Gross Enrolment Ratio) के साथ माध्यमिक स्तर तक एजुकेशन फॉर ऑल का लक्ष्य रखा गया है।
- अभी स्कूल से दूर रह रहे दो करोड़ बच्चों को दोबारा मुख्य धारा में लाया जाएगा। इसके लिए स्कूल के बुनियादी ढांचे का विकास और नवीन शिक्षा केंद्रों की स्थापनी की जाएगी।
- स्कूल पाठ्यक्रम के 10 + 2 ढांचे की जगह 5 + 3 + 3 + 4 का नया पाठ्यक्रम संरचना लागू किया जाएगा जो क्रमशः 3-8, 8-11, 11-14, और 14-18 उम्र के बच्चों के लिए है। इसमें अब तक दूर रखे गए 3-6 साल के बच्चों को स्कूली पाठ्यक्रम के तहत लाने का प्रावधान है, जिसे विश्व स्तर पर बच्चे के मानसिक विकास के लिए महत्वपूर्ण चरण के रूप में मान्यता दी गई है।
- नई प्रणाली में प्री स्कूलिंग के साथ 12 साल की स्कूली शिक्षा और तीन साल की आंगनवाड़ी होगी। इसके तहत छात्रों की शुरुआती स्टेज की पढ़ाई के लिए तीन साली की प्री-प्राइमरी और पहली तथा दूसरी क्लास को रखा गया है। अगले स्टेज में तीसरी, चौथी और पाँचवी क्लास को रखा गया है। इसके बाद मिडिल स्कूल याना 6-8 कक्षा में सब्जेक्ट का इंट्रोडक्शन कराया जाएगा। सभी छात्र केवल तीसरी, पाँचवी और आठवी कक्षा में परीक्षा देंगे। 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षा पहले की तरह जारी रहेगी। लेकिन बच्चों के समग्र विकास करने के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए इन्हें नया स्वरूप दिया जाएगा। एक नया राष्ट्रीय आकलन केंद्र श्परख (समग्र विकास के लिए कार्य-प्रदर्शन आकलन, समीक्षा और ज्ञान का विश्लेषण) एक मानक-निर्धारक निकाय के रूप में स्थापित किया जाएगा।
- पढ़ने-लिखने और जोड़-घटाव (संख्यात्मक ज्ञान) की बुनियादी योग्यता पर जोर दिया जाएगा। बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान की प्राप्ति को सही ढंग से सीखने के लिए अत्यंत जरूरी एवं पहली आवश्यकता मानते हुए 'एनईपी 2020' में मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी) द्वारा श्बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान पर एक राष्ट्रीय मिशन की स्थापना किए जाने पर विशेष जोर दिया गया है।
- एनसीईआरटी 8 वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा (एनसीपीएफईसीसीई) के लिए एक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और शैक्षणिक ढांचा विकसित करेगा।
- स्कूलों में शैक्षणिक धाराओं, पाठ्येतर गतिविधियों और व्यावसायिक शिक्षा के बीच खास अंतर नहीं किया जाएगा।
- सामाजिक और आर्थिक नजरिए से वंचित समूहों (SEDG) की शिक्षा पर विशेष जोर दिया जाएगा।
- शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय प्रोफेशनल मानक (एनपीएसटी) राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा वर्ष 2022 तक विकसित किया जाएगा, जिसके लिए एनसीईआरटी, एससीईआरटी, शिक्षकों और सभी स्तरों एवं क्षेत्रों के विशेषज्ञ संगठनों के साथ परामर्श किया जाएगा।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदल कर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है। इसका मतलब है कि रमेश पोखरियाल निशंक अब देश के शिक्षा मंत्री कहलाएंगे।
- जीडीपी का छह फीसद शिक्षा में लगाने का लक्ष्य जो अभी 4.43 फीसद है।
- नई शिक्षा का लक्ष्य 2030 तक 3-18 आयु वर्ग के प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करता है।
- छठी क्लास से वोकेशनल कोर्स शुरू किए जाएंगे। इसके लिए इसके इच्छुक छात्रों को छठी क्लास के बाद से ही इंटर्नशिप करवाई जाएगी। इसके अलावा म्यूजिक और आर्ट्स को बढ़ावा दिया जाएगा। इन्हें पाठयक्रम में लागू किया जाएगा।
- उच्च शिक्षा के लिए एक सिंगल रेगुलेटर रहेगा। लॉ और मेडिकल शिक्षा को छोड़कर समस्त उच्च शिक्षा के लिए एक एकल अति महत्वपूर्ण व्यापक निकाय के रूप में भारत उच्च शिक्षा आयोग (एचईसीआई) का गठन किया जाएगा।
- एचईसीआई के चार स्वतंत्र वर्टिकल होंगे- विनियमन के लिए राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा नियामकीय परिषद (एनएचईआरसी), मानक निर्धारण के लिए सामान्य शिक्षा परिषद (जीईसी), वित पोषण के लिए उच्चतर शिक्षा अनुदान परिषद (एचईजीसी) और प्रत्यायन के लिए राष्ट्रीय प्रत्यायन परिषद (एनएसी)।
- उच्च शिक्षा में 2035 तक 50 फीसद GER (Gross Enrolment Ratio) पहुंचाने का लक्ष्य है। फिलहाल 2018 के आँकड़ों के अनुसार GER 26.3 प्रतिशत है। उच्च शिक्षा में 3.5 करोड़ नई सीटें जोड़ी जाएंगी।
- पहली बार मल्टीपल एंट्री और एग्जिट सिस्टम लागू किया गया है। आप इसे ऐसे समझ सकते हैं। आज की व्यवस्था में अगर चार साल इंजीनियरिंग पढ़ने या छह सेमेस्टर पढ़ने के बाद किसी कारणवश आगे नहीं पढ़ पाते हैं तो आपके पास कोई उपाय नहीं होता, लेकिन मल्टीपल एंट्री और एग्जिट सिस्टम में एक साल के बाद सर्टिफिकेट, दो साल के बाद डिप्लोमा और तीन-चार साल के बाद डिग्री मिल जाएगी। इससे उन छात्रों को बहुत फायदा होगा जिनकी पढ़ाई बीच में किसी वजह से छूट जाती है।
- नई शिक्षा नीति में छात्रों को ये आजादी भी होगी कि अगर वो कोई कोर्स बीच में छोड़कर दूसरे कोर्स में दाखिला लेना चाहें तो वो पहले कोर्स से एक खास निश्चित समय तक ब्रेक ले सकते हैं और दूसरा कोर्स ज्वाइन कर सकते हैं।
- उच्च शिक्षा में कई बदलाव किए गए हैं। जो छात्र रिसर्च करना चाहते हैं उनके लिए चार साल का डिग्री प्रोग्राम होगा। जो लोग नौकरी में जाना चाहते हैं वो तीन साल का ही डिग्री प्रोग्राम करेंगे। लेकिन जो रिसर्च में जाना चाहते हैं वो एक साल के एमए (MA) के साथ चार साल के डिग्री प्रोग्राम के बाद सीधे पीएचडी (PhD) कर सकते हैं। उन्हें एमफिल (M-Phil) की जरूरत नहीं होगी।
- शोध करने के लिए और पूरी उच्च शिक्षा में एक मजबूत अनुसंधान

संस्कृति तथा अनुसंधान क्षमता को बढ़ावा देने के लिए एक शीर्ष निकाय के रूप में नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एनआरएफ) की स्थापना की जाएगी। एनआरएफ का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालयों के माध्यम से शोध की संस्कृति को सक्षम बनाना होगा। एनआरएफ स्वतंत्र रूप से सरकार द्वारा, एक बोर्ड ऑफ गवर्नर्स द्वारा शासित होगा।

- उच्च शिक्षा संस्थानों को फीस चार्ज करने के मामले में और पारदर्शिता लानी होगी।
- एससी, एसटी, ओबीसी और अन्य विशिष्ट श्रेणियों से जुड़े हुए छात्रों की योग्यता को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया जाएगा। छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले छात्रों की प्रगति को समर्थन प्रदान करना, उसे बढ़ावा देना और उनकी प्रगति को ट्रैक करने के लिए राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल का विस्तार किया जाएगा। निजी उच्च शिक्षण संस्थानों को अपने यहां छात्रों को बड़ी संख्या में मुफ्त शिक्षा और छात्रवृत्तियों की पेशकश करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।
- ई-पाठ्यक्रम क्षेत्रीय भाषाओं में विकसित किए जाएंगे। वर्चुअल लैब विकसित की जा रही है और एक राष्ट्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी फोरम (NETF) बनाया जा रहा है।
- हाल ही में महामारी और वैश्विक महामारी में वृद्धि होने के परिणामस्वरूप ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सिफारिशों के एक व्यापक सेट को कवर किया गया है, जिससे जब कभी और जहां भी पारंपरिक और व्यक्तिगत शिक्षा प्राप्त करने का साधन उपलब्ध होना संभव नहीं हैं, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के वैकल्पिक साधनों की तैयारियों को सुनिश्चित करने के लिए, स्कूल और उच्च शिक्षा दोनों को ई-शिक्षा की जरूरतों को पूरा करने के लिए एमएचआरडी में डिजिटल अवसंरचना, डिजिटल कंटेंट और क्षमता निर्माण के उद्देश्य से एक समर्पित इकाई बनाई जाएगी।
- सभी भारतीय भाषाओं के लिए संरक्षण, विकास और उन्हें और जीवंत बनाने के लिए नई शिक्षा नीति में पाली, फारसी और प्राकृत भाषाओं के लिए एक इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रांसलेशन एंड इंटरप्रिटेशन (आईआईटीआई), राष्ट्रीय संस्थान की स्थापना करने, उच्च शिक्षण संस्थानों में संस्कृत और सभी भाषा विभागों को मजबूत करने और ज्यादा से ज्यादा उच्च शिक्षण संस्थानों के कार्यक्रमों में, शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषाध स्थानीय भाषा का उपयोग करने की सिफारिश की गई है।

नई शिक्षा नीति का नजरिया – नई शिक्षा नीति पहले की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का पुनर्मूल्यांकन है। यह नई संरचनात्मक रूपरेखा द्वारा शिक्षा की संपूर्ण प्रणाली का परिवर्तन है। नई शिक्षा नीति में रखी गई दृष्टि प्रणाली को एक उच्च उत्साही और ऊर्जावान नीति में बदल रही है। शिक्षार्थी को उत्तरदायी और कुशल बनाने का प्रयास होना चाहिए।

नई शिक्षा नीति 2020 के फायदे और नुकसान

लाभ :

1. नई शिक्षा नीति शिक्षार्थियों के एकीकृत विकास पर केंद्रित है।
2. यह 10+2 सिस्टम को 5+3+3+4 संरचना के साथ बदल देता है, जिसमें 12 साल की स्कूली शिक्षा और 3 साल की प्री-स्कूलिंग होती है, इस प्रकार बच्चों को पहले चरण में स्कूली शिक्षा का अनुभव होता है।
3. परीक्षाएं केवल 3, 5 और 8वीं कक्षा में आयोजित की जाएंगी, अन्य कक्षाओं का परिणाम नियमित मूल्यांकन के तौर पर लिए जाएंगे। बोर्ड परीक्षा को भी आसान बनाया जाएगा और एक वर्ष में दो बार आयोजित किया जाएगा ताकि प्रत्येक बच्चे को दो मौका मिलें।
4. नीति में पाठ्यक्रम से बाहर निकलने के अधिक लचीलेपन के साथ स्नातक कार्यक्रमों के लिए एक बहु-अनुशासनात्मक और एकीकृत दृष्टिकोण की परिकल्पना की गई है।
5. राज्य और केंद्र सरकार दोनों शिक्षा के लिए जनता द्वारा अधिक से अधिक सार्वजनिक निवेश की दिशा में एक साथ काम करेंगे, और जल्द से जल्द जीडीपी को 6% तक बढ़ाएंगे।
6. नई शिक्षा नीति सीखने के लिए पुस्तकों का भोझ बढ़ाने के बजाय व्यावहारिक शिक्षा को बढ़ाने पर ज्यादा केंद्रित है।
7. एनईपी यानी नई शिक्षा निति सामान्य बातचीत, समूह चर्चा और तर्क द्वारा बच्चों के विकास और उनके सीखने की अनुमति देता है।
8. एनटीए राष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालयों के लिए एक आम प्रवेश परीक्षा आयोजित करेगा।
9. छात्रों को पाठ्यक्रम के विषयों के साथ-साथ सीखने की इच्छा रखने वाले पाठ्यक्रम का चयन करने की भी स्वतंत्रता होगी, इस तरह से कौशल विकास को भी बढ़ावा मिलेगा।
10. सरकार एनआरएफ (नेशनल रिसर्च फाउंडेशन) की स्थापना करके विश्वविद्यालय और कॉलेज स्तर पर अनुसंधान और नवाचारों के नए तरीके स्थापित करेगी।

नुकसान :

1. भाषा का कार्यान्वयन यानि क्षेत्रीय भाषाओं में जारी रखने के लिए 5वीं कक्षा तक पढ़ाना एक बड़ी समस्या हो सकती है। बच्चे को क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाया जाएगा और इसलिए अंग्रेजी भाषा के प्रति कम दृष्टिकोण होगा, जो 5वीं कक्षा पूरा करने के बाद आवश्यक है।
2. बच्चों को संरचनात्मक तरीके से सीखने के अधीन किया गया है, जिससे उनके छोटे दिमाग पर बोझ बढ़ सकता है।

निष्कर्ष – वर्तमान शिक्षा प्रणाली वर्ष 1986 की मौजूदा शिक्षा नीति में किए गए परिवर्तनों का परिणाम है। परिणामस्वरूप परिवर्तन नई शिक्षा नीति का ही नतीजा है। नीति में कई सकारात्मक विशेषताएं हैं, लेकिन इसे केवल सख्ती से ही हासिल किया जा सकता है। लेआउट के लिए केवल विचार काम नहीं करेगा बल्कि कार्यो को कुशलता से करना होगा। इसे शिक्षार्थी और देश के विकास को बढ़ावा देने के लिए लागू किया गया है। नई शिक्षा नीति बच्चों के समग्र विकास पर केंद्रित है। इस नीति के तहत वर्ष 2030 तक अपने उद्देश्य को प्राप्त करने का लक्ष्य है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. व्यक्तिगत शोध के आधार पर।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

नारी सशक्तिकरण में अम्बेडकर का योगदान

डॉ. राजाराम परते *

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) रानी दुर्गावती शासकीय महाविद्यालय, परसवाडा, जिला बालाघाट (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – प्रकृति की अद्‌भुत संरचना है मानव जीवन। इससे भी बड़ा आश्चर्य स्त्री पुरुष की रचना।विधाता ने मानव जीवन की रचना कर पृथ्वीलोक को सरसता प्रदान की है। उसकी दृष्टि में ये दोनों समान हैं। इनमें किसी तरह का कोई भेदभाव नहीं है किन्तु देहवादी नर पुंगवों ने स्त्री को सदियों से कमतर ही माना है। उसकी सदैव उपेक्षा ही की है। उसे घर की चाहरदीवारी में कैद रखा। कभी मर्यादा के नाम पर तो कभी धर्म के नाम पर। स्त्रियों के लिए नये-नये प्रतिबंध गढ़े गये। इस तरह शताब्दियों से नारी को उसके अधिकारों से वंचित रखा गया। आज भी नारी अपने अस्तित्व एवं अधिकारों के लिए संघर्षशील है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय समाज में नारी को सम्मान एवं समान अधिकार दिलाने हेतु अनेक प्रयास किये गये। इस क्षेत्र में डॉक्टर अंबेडकर का योगदान अतुलनीय है। सर्वप्रथम उन्होंने नारी को सशक्त बनाने हेतु भारतीय संविधान की प्रस्तावना में 'हम भारत के लोग' तथा 'इसके समस्त नागरिकों को' लिखकर स्त्री एवं पुरुष के भेदभाव को समाप्त कर समान संवैधानिक अधिकारों की व्यवस्था कर दी। उनका वृहद चिंतन, संविधान में सभी नागरिकों को समान अधिकार दिलाए जाने के साथ-साथ महिलाओं की बराबरी के अधिकारों की वकालत भी करता है, जिसके लिए उन्होंने सन् 1951 में संसद में हिंदू कोड बिल प्रस्तुत किया। यह बिल महिलाओं की मजबूती के लिए तैयार किया गया था। जिसमें विवाह, तलाक, संपत्ति आदि में अधिकार संपन्न बनाने की व्यवस्था की गई थी। हिंदू कोड बिल भारतीय सामाजिक जीवन में महिलाओं की दशा सुधारने में मील का पत्थर बना। डॉक्टर अंबेडकर महिला अधिकारों के बड़े पैरोकार थे। वे नारी शक्ति के संघर्ष, साहस, त्याग और बलिदान से भलीभांति परिचित थे। वायसराय काल में महिलाओं के लिए प्रसूति अवकाश की व्यवस्था कराना, नारी सशक्तिकरण के लिए उठाया गया पहला कदम उल्लेखनीय है।

प्रस्तावना – डॉक्टर भीमराव अंबेडकर एक अद्‌भुत विद्वान, स्वतंत्र विचारक, निर्भीक वक्ता, कुशल राजनीतिज्ञ, महान देशभक्त, सामाजिक क्रांति एवं चेतना के जनक तथा भारत की महान विभूति थे। अंबेडकर की समग्र चिंतन एवं जीवन दर्शन की पृष्ठभूमि में भारतीय समाज की सामाजिक विखण्डनता की मानसिकता थी। भारतीय राजनीतिक चिंतन में डॉक्टर अंबेडकर को न्याय शास्त्री,विधिवेत्ता, संविधान शिल्पी और दलित समाज के हितों का पोषण करने वाला महान व्यक्तित्व माना जाता है। समाज के पददलित वर्ग के उत्थान के लिए जिस समर्पण को दिखाया उसके आधार पर उन्हें भारत का 'लिंकन' और 'मार्टिन लूथर' कहा जाता है।

स्मृतिकाल में भारतीय समाज में नारी सशक्त थी। उसे वेदों की शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था। स्त्रियां ना केवल वेद मंत्रों का उच्चारण करती थी बल्कि वेद की विभिन्न शाखाओं के अध्ययनमें पारंगत एवं उनकी मीमांसा में पटु भी थी। धर्म-दर्शन एवं आध्यात्म में स्त्रियां निपुण थी। जनक एवं सुलभा तथा याज्ञवल्क्य एवं गार्गी आदि के मध्य संवाद इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि प्राचीन काल में महिलाएं स्वतंत्रता पूर्वक पुरुषों से बहस करती थीं। स्पष्ट है कि प्राचीन काल में बौद्धिक एवं सामाजिक जीवन में महिलाएं सशक्त थी।

प्राचीन काल में स्त्रियों का विवाह युवावस्था प्राप्त होने के बाद होता था। उन्हें तलाक के अधिकार भी प्राप्त थे। कौटिल्य ने पुरुषों की भांति स्त्रियों को भी तलाक का अधिकार प्रदान किया था। तलाकशुदा स्त्रियां अपने पति से भरण-पोषण प्राप्त करने की पात्रता रखती थी। संक्षेप में मनु के पूर्व भारतीय समाज में स्त्रियां स्वतंत्र थी। वह पुरुष की दासी नहीं बल्कि सहभागी थी। कालांतर में धीरे-धीरे उनकी दशा खराब होती गई, वह पुरुषों की जीवनसंगिनी नहीं बल्कि दासी बन गई। ऐसा क्यों हुआ ? इसके लिए उत्तरदायी कौन है ?

भारतीय समाज में नारी के पतन के लिए डॉक्टर अंबेडकर मनु को उत्तरदायी मानते हैं। उनका मानना है कि मनु ने वर्गीय हित एवं स्वार्थ से प्रेरित होकर मानव धर्म शास्त्र के रूप में एक ऐसे सामाजिक विधान की रचना की जो समाज में स्त्रियों के पतन का कारण बना। डॉक्टर अंबेडकर की मान्यता थी कि नारी की प्रगति के बिना समाज की प्रगति संभव नहीं है। वे समाज में नारी स्थिति को समाज की प्रगति का मापदंड मानते थे। उन्होंने सदैव नारी संगठन का समर्थन किया। नारी के जीवन में स्वतंत्रता एवं समानता होनी चाहिए यह सिद्धांत ही नहीं बल्कि उनके व्यवहार के नियम थे।

नारी के पतन से समाज का पतन होता है और नारी के उन्नति से समाज की उन्नति होती है। भारत में जब नारी की स्थिति उन्नत थी तब भारतीय समाज भी उन्नति के शिखर पर था, किंतु जब नारी को आत्मविश्वास व आत्मोन्नति से वंचित कर घर की चाहरदीवारी में कैद कर लिया गया तभी से भारतीय समाज भी अंधकार की गर्त में डूब गया। मुंबई में आयोजित महिला सभा को संबोधित करते हुए अम्बेडकर का स्पष्ट मानना था कि 'नारी राष्ट्र की निर्मात्री है,हर नागरिक उनकी गोद में पलकर बढ़ता है, नारी को जागृत किए बिना राष्ट्र का विकास संभव नहीं है। 'रूढ़िगत जर्जर समाज को सुधारने के लिए सर्वप्रथम नारी की दशा को सुधारना आवश्यक था। इसलिए राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर आदि ने नारी की दशा में सुधार

हेतु सती प्रथा निषेध, बाल विवाह निषेध को कानूनी मान्यता प्रदान किए जाने हेतु कार्य किया।

स्वाधीन भारत में नारी को परंपरागत निर्योग्यताओं से मुक्त करने एवं उन्हें पुरुषों के बराबर कानूनी अधिकार दिलाने डॉक्टर अंबेडकर ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उन्होंने नारी को पुरूष के समान स्वतंत्र एवं अधिकार संपन्न बनाने के लिए संविधान में लिंग के आधार पर पुरुष और नारी के बीच सामाजिक भेदों को समाप्त किया। बच्चों एवं स्त्रियों की बिक्री तथा उनसे बेगार लेने पर भी प्रतिबंध लगाया गया। सदियों से उपेक्षित नारी को परंपरागत दासता से मुक्ति हेतु उन्होंने एक व्यापक सामाजिक विधान की रूपरेखा निर्मित की, जिसे 'हिंदू कोड बिल' के नाम से जाना जाता है। 1941 में भारत सरकार ने बी.एन. राव की अध्यक्षता में एक समिति गठित की थी। उस समिति ने देश भर में दौरा करके प्रसिद्ध विचारकों व कानूनविदों के मत एकत्रित कर हिंदू कोड बिल तैयार किया गया था। यह बिल कई बार पुनर्विचार के लिए लौटा दिया गया। अंबेडकर ने उस संहिता का कार्य अपने हाथ में ले लिया। उसका परिष्कार व नवीनीकरण कर प्रस्तुत किया। 10 वर्षो के अथक परिश्रम पश्चात यह सपना साकार हो सका।

हिंदू कोड बिल में कन्या के विवाह की निर्धारित तत्कालीन न्यूनतम आयु में वृद्धि, एक विवाह का अनिवार्य किया जाना, अंतर्जातीय विवाह को मान्यता, स्त्रियों को पुरुषों के समान तलाक अधिकार, तलाकशुदा स्त्री को अपने पति से भरण-पोषण प्राप्त करने का अधिकार, विधवा पुनर्विवाह को मान्यता, स्त्री को पुत्री, पत्नी एवं मां के रूप में पारिवारिक संपत्ति पर अधिकार, स्त्री को गोद लिये जाने एवं गोद लेने के अधिकार आदि का प्रावधान किया गया। बाबा साहब के अद्भुत संघर्ष और त्याग के पश्चात आगे चल कर अलग-अलग अधिनियमों के रूप में हिंदू कोड बिल कानून बना। जिससे समस्त भारतीय समाज की स्त्रियों की द्रुत सामाजिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त हुआ।

निष्कर्ष - समाज में नारी, पुरुष के समान स्वतंत्र एवं अधिकार संपन्न हो इसके लिए अंबेडकर ने अविष्मरणीय कार्य किया। उनके नेतृत्व में बने संविधान में लिंग के आधार पर स्त्री पुरुष के बीच सामाजिक भेदों को समाप्त किया गया। संविधान के माध्यम से बच्चों एवं स्त्रियों की बिक्री तथा उनसे बेगार लेने पर प्रतिबंध लगाया गया। संवैधानिक अधिकारों से सदियों से उपेक्षित नारी को परंपरागत दासता से मुक्ति मिल जाएगी इसमें अंबेडकर को संदेह था। उनका मानना था कि विवाह और संपत्ति पर अधिकार संबंधी प्रचलित कानूनों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए बिना नारी की मुक्ति संभव नहीं है। अपने इस विश्वास को मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने एक व्यापक सामाजिक विधान की रूपरेखा निर्मित की,जिसे हिन्दू कोड बिल के नाम से जाना जाता है। डॉक्टर अंबेडकर के सामाजिक क्षेत्र में किए गए योगदान का पुनर्मूल्यांकन किया जाना आवश्यक है। अंबेडकर को वर्गीय हितों की रक्षा करने वाला नेता मानना उनके प्रति अन्याय करना होगा। उनकी इस छवि से उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं योगदान का वास्तविक मूल्यांकन नहीं होगा। संघर्ष पथ का अटल राही, जो न थका , न रुका न झुका। नारी सशक्तिकरण के लिए उनका संघर्ष बेजोड़ है।भारत में नारी की विमुक्ति एवं सशक्तिकरण में डॉक्टर अंबेडकर का योगदान चिर स्मरणीय रहेगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :-

1' डॉ.अंबेडकर जीवन के अंतिम कुछ वर्ष, नानकचंद रत्तू ,किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली 2017।
2' डॉ.अंबेडकर, सामाजिक -आर्थिक विचार दर्शन,मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल ,2014।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: प्रारंभिक बाल्यावस्था एवं देखभाल की शिक्षा के संदर्भ में शिक्षक शिक्षा की चुनौतियाँ एवं समाधान

डॉ. वीन्द्रजीत कौर अरोरा* डॉ. अंजना पाटनवाला**

* प्राचार्य, रॉयल इंस्टीट्यूट ऑफ मेनेजमेंट एण्ड एडवांस स्टडीज, रतलाम (म.प्र.) भारत
** सीनियर टीचर, अत्रीदेवी शा. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21वीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। यह नीति इस सिद्धांन्त पर आधारित है कि शिक्षा से साक्षरता एवं संख्या ज्ञान जैसी बुनियादी क्षमताओं के साथ उच्चतम स्तर की तार्किक एवं समस्या समाधान संबंधी संज्ञानात्मक क्षमताओं का एवं नैतिक, सामाजिक, भावनात्मक स्तर पर व्यक्तित्व विकास भी हो।

अत: हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान एवं उनके विकास हेतु प्रयास करना इस नीति के मूलभूत सिद्धांतों में से एक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सीखने के परिणामों की वर्तमान स्थिति एवं आवश्यकता के बीच की खाई को पाटने के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) के लिए गुणवत्तापूर्ण सार्वभौमिक प्रावधान शीघ्र उपलब्ध कराने की बात कही गई है। यह प्रावधान सभी बच्चों को शैक्षिक प्रगति में भाग लेने एवं तरक्की के समान अवसर प्रदान करने का सबसे शक्तिशाली माध्यम हो सकता है, क्योंकि बाल्यावस्था की शिक्षा, शिक्षा के अगले स्तरों के लिए नींव का कार्य करती है।

वर्तमान में निजी विद्यालयों में एउउए शिक्षा के प्रयास किये जाते रहे है, किंतु शासकीय विद्यालयों में ECCE शिक्षा की व्यवस्था नहीं होने से अपेक्षाकृत अधिगम स्तर कम पाया जाता है। परिणामस्वरूप निजी एवं शासकीय विद्यालयों में प्राथमिक स्तर पर विभेद देखा जा सकता है। अत: वर्तमान में यह आवश्यक हो जाता है कि एउउए स्तर पर शिक्षा एवं शिक्षण का कार्यक्रम प्रभावी हो।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में 5+3+3+4 ढाँचे में 3 वर्ष के बच्चों के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) की एक मजबूत बुनियाद को शामिल किया गया है तथा सामाजिक, आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के करोड़ों बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण एउउए शिक्षा के सार्वभौमिक प्रावधान को वर्ष 2030 से पूर्व उपलब्ध कराना लक्ष्य रखा गया है। इस हेतु उच्चतम गुणवत्ता के बुनियादी ढाँचे के साथ प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यवस्था हेतु प्रभावी एवं बहुआयामी शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम लागू करना निश्चित ही चुनौतीपूर्ण होगा।

प्रस्तावना – प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल और शिक्षा (ECCE) की अवधारणा – विश्व पटल पर एउउए की चेतना को जन्म देने वाले प्रथम यूरोपियन प्रवर्तक ईसान कमेनियस (1599-1670) के अनुसार- शिक्षा विद्यालय में बालक को दिया जाने वाला प्रशिक्षण मात्र नहीं है, बल्कि वह मनुष्य के समस्त जीवन तथा उसके द्वारा किये जाने वाले सामाजिक समायोजनों को सार्थक ढंग से पूरा करती है। कमेनियस ने पूर्व प्राथमिक शाला को 'माता की गोद' या 'मदर स्कूल' कहा है।

प्रारंभिक बाल्यावस्था की शिक्षा का अर्थ यदि विस्तृत रूप में लिया जाये तो यह शिक्षा औपचारिक विद्यालयीन शिक्षा के पूर्व में ही प्रारम्भ हो जाती है। बालक अपने परिवार में माता-पिता तथा अन्य सदस्यों के सानिध्य में रहकर जो शिक्षा प्राप्त करता है वह प्रारंभिक बाल्यावस्था की शिक्षा (ECCE) के अंतर्गत आती है तथा औपचारिक रूप से ढाई से तीन वर्ष की आयु में विद्यालय से प्रारंभ होती है। इस शिक्षा के अंतर्गत शिशु को स्वस्थ, संस्कारयुक्त एवं परिष्कृत वातावरण में रखकर उसका शारीरिक, मानसिक, नैतिक व सामाजिक विकास करने का प्रयास किया जाता है। सैद्धांतिक ज्ञान देने की अपेक्षा व्यावहारिक ज्ञान देने पर बल दिया जाता है तथा उनमें सामाजिकता की भावना उत्पन्न की जाती है। मात्र ज्ञान देना इसका मुख्य लक्ष्य नहीं है, अपितु खेल-खेल में बालक को उत्ताम शिक्षा एवं उचित व्यवहार की जानकारी देना एवं सर्वांगीण विकास हेतु अवसर प्रदान करना ही इस शिक्षा का लक्ष्य है।

प्रारंभिक बाल्यावस्था की शिक्षा की आवश्यकता एवं उद्देश्य – कोठारी आयोग (1964-66) ने प्रारम्भिक बाल्यावस्था की शिक्षा की आवश्यकता पर बल देते हुए बताया कि 'यह विशेषकर ऐसे बच्चों के शारीरिक, मानसिक एवं भावात्मक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है जिनके घर का वातावरण संतोषजनक नहीं है।'

शिक्षा शास्त्रियों द्वारा प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के विकास की आवश्यकता निम्न प्रकार बताई गई है –

1. अधिकांश घरों में शिक्षा के वातावरण का अभाव।
2. बालक के शारीरिक विकास की आवश्यकता।
3. बालक की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की देखभाल।
4. संयुक्त परिवार प्रथा के अभाव की पूर्ति।
5. वर्तमान अर्थव्यवस्था एवं स्त्रियों का काम पर जाना।
6. प्रारंभिक बाल्यावस्था की शिक्षा का प्राथमिक शिक्षा पर अच्छा प्रभाव (प्राथमिक शाला हेतु तैयारी)

7. भावात्मक विकास।
8. बौद्धिक विकास।
9. वर्तमान शिक्षा की अवहेलना।

प्रारंभिक बाल्यावस्था की शिक्षा के उद्देश्य – शिक्षा आयोग (1964-66) ने प्रारम्भिक बाल्यावस्था की शिक्षा के निम्न प्रमुख उद्देश्य बताये हैं –

1. बालकों में अच्छी स्वस्थ आदतें विकसित करना, उनकी व्यक्तिगत जरूरतों के लिए आवश्यक बुनियादी बातों का विकास करना।
2. आवश्यक सामाजिक व्यवहार, भावात्मक परिपक्वता का विकास करना।
3. वातावरण के सम्बन्ध में बच्चों की बोद्धिक जिज्ञासा को उत्तोजित करना।
4. अपने विचारों और भावनाओं को शुद्ध, स्पष्ट एवं धाराप्रवाह भाषा में प्रकट करने की योग्यता का विकास करना।

प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा की वर्तमान व्यवस्था – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में शिशु देखभाल तथा शिक्षा (Child Care and Education) को बहुत अधिक महत्व दिया गया है। इसमें इसे मानव संसाधन विकास की नीति का एक महत्वपूर्ण निवेश तथा प्रारंभिक शिक्षा को सर्वव्यापी बनाने में सहायक कार्यक्रम के रूप में लिया गया है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा चलाया जा रहा समेकित बाल विकास सेवा कार्यक्रम (Integrated Child Development Services- ICDS) देश का सबसे बड़ा तथा बहुआयामी कार्यक्रम है जो 2 अक्टूबर, 1975 को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के 106 वें जन्मदिन पर शुरू किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत आँगनवाड़ी बच्चों एवं माताओं को समेकित सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए एक मुख्य केंद्र है।

आँगनवाड़ी केन्द्रों में शाला त्याग की दर को कम करने तथा छात्रों को विद्यालय में टिके रहने में सहायता देने के लिए 'शिशु शिक्षा योजना' (Early Childhood Education Scheme) शुरू की गई। संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1992 में 'सभी के लिए शिक्षा' के लक्ष्य हेतु बाल्यावस्था की शिक्षा को खउउड्ड से सम्बद्ध कर दिया गया तथा स्थानीय स्तर पर अधिकाधिक नामांकन में वृद्धि तथा प्राथमिक शिक्षा का सहायक क्षेत्र तैयार करने का लक्ष्य रखा गया। इन आँगनवाड़ी केन्द्रों में अनौपचारिक रूप से पूर्व प्राथमिक शिक्षा दी जाती है।

इन आँगनवाड़ी केन्द्रों में प्राथमिक बाल्यावस्था की शिक्षा हेतु आधारभूत पाठ्यचर्या, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया एवं मूल्यांकन प्रणाली की कोई व्यवस्था नहीं है। साथ ही कार्यकर्ताओं/सहायिकाओं के लिए बाल्यावस्था की शिक्षा प्रदान हेतु न्यूनतम शिक्षक प्रशिक्षण योग्यता का कोई प्रावधान नहीं है।

पूर्व प्राथमिक शिक्षण संस्थाएँ – हमारे देश में पूर्व प्राथमिक शिक्षा हेतु अनेक संस्थाएँ विभिन्न नामों से संचालित होती है –

अ. किंडरगार्टन (K.G.) स्कूल – यह स्कूल फ्रोबेल के खेल के सिद्धान्त के आधार पर चलाए जा रहे हैं, जो प्रायः पब्लिक या कॉन्वेंट स्कूलों, स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ जुड़े हुए है।

ब. मॉण्टेसरी स्कूल – मॉण्टेसरी प्रणाली पर आधारित इन स्कूलों में वैज्ञानिक विधि से निर्मित खेल उपकरणों से शिक्षा दी जाती है। यह विद्यालय अंतर्राष्ट्रीय मॉण्टेसरी एसोसिएशन से जुड़े हुए है तथा स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा संचालित होते है।

स. नर्सरी स्कूल – ये विद्यालय इंग्लैण्ड की मिस मारग्रेट मैकमिलन की प्रणाली पर संचालित है, इन विद्यालयों को व्यक्तिगत रूप से अथवा स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा संचालित किया जाता है।

द. प्री-बेसिक स्कूल – यह विद्यालय गाँधीजी की बुनियादी शिक्षा के सिद्धांत पर आधारित है। ऐसे कुछ स्कूल नई तालीमी संघ, वर्धा द्वारा चलाए जा रहे है। इनके अतिरिक्त 'बालमंदिर', बालवाड़ी तथा बाल शिक्षण मंदिर जैसे पूर्व प्राथमिक शिक्षा केन्द्र इस देश में स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा चलाए जा रहे है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020- प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा हेतु प्रावधान – राष्ट्रीय शिक्षा नीति इस सिद्धांत पर आधारित है कि शिक्षा से न केवल साक्षरता और संख्याज्ञान जैसी बुनियादी क्षमताओं के साथ-साथ उच्चतर स्तर की तार्किक और समस्या समाधान संबंधी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होना चाहिए बल्कि नैतिक, सामाजिक-भावात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास होना चाहिए। सीखने के परिणामों की वर्तमान स्थिति और जो आवश्यक है उनके बीच की खाई को प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और उच्चतर शिक्षा के माधयम से शिक्षा में उच्चतम गुणवत्ता, इक्विटी और सिस्टम में अखंडता लाने वाले प्रमुख सुधारों के जरिये पाटा जाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा हेतु निम्न प्रावधान किए गए है :

1. वर्तमान की 10+2 स्कूली व्यवस्था को 3 से 18 वर्ष के सभी बच्चों के लिए 5+3+3+4 की एक नई व्यवस्था में पुनर्गठित करना प्रस्तावित है, इसमें प्राथमिक शिक्षा में पूर्व प्राथमिक शिक्षा के समावेश की बात कही गई है।
2. नए 5+3+3+4 ढाँचे में 3 वर्ष के बच्चों को शामिल कर प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ECCE) की एक मजबूत बुनियाद को शामिल किया गया है, जिससे आगे चलकर बच्चों का विकास बेहतर हो।
3. प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सार्वभौमिक प्रावधान को वर्ष 2030 से पूर्व उपलब्ध कराया जाये ताकि पहली कक्षा में प्रवेश पाने वाले सभी बच्चे स्कूली शिक्षा के लिए पूरी तरह तैयार हो।
4. एउउए का समग्र उद्देश्य बच्चों का शारीरिक-भौतिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, समाज-संवेगात्मक नैतिक विकास, सांस्कृतिक विकास, संवाद के लिए प्रारंभिक भाषा, साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के विकास हेतु – लचीली, बहुआयामी, बहु-स्तरीय, खेल आधारित, गतिविधि आधारित और खोज आधारित शिक्षा को एउउए में शामिल किया गया है।
5. राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय नवाचार, नवीनतम शोध एवं स्थानीय परम्पराओं को शामिल करते हुए NCERT द्वारा 8 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था की शिक्षा के लिए उत्कृष्ट पाठ्यक्रम एवं शैक्षिक ढाँचा दो भागों में- 0-3 वर्ष के बच्चों के लिए एक सब-फ्रेमवर्क और 3-8 साल के लिए एक अन्य सब-फ्रेमवर्क का विकास किया जाएगा।
6. पूरे देश में विशेषकर सामाजिक-आर्थिक पिछड़े क्षेत्रों में चरणबद्ध

तरीके से उच्चतर गुणवत्ता वाले एउउए संस्थानों की सार्वभौमिक पहुँच सुनुश्चित करना– इसके लिए आँगनवाड़ी केन्द्रों, प्राथमिक विद्यालयों के साथ स्थित आँगनवाड़ी केन्द्रों, प्राथमिक विद्यालयों से संलग्न पूर्व प्राथमिक विद्यालयों, अकेले चल रहे प्री-स्कूल के माध्यम से इसे लागू किया जाएगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020– प्रारंभिक बाल्यावस्था एवं शिक्षा की व्यवस्था शिक्षक शिक्षा का प्रस्तावित स्वरूप – शिक्षक वास्तव में बच्चों के भविष्य को आकार देते हैं, वे शिक्षा व्यवस्था की महत्वपूर्ण कड़ी है। अत: शिक्षकों को उच्चतर गुणवत्ता की सामग्री के साथ बहुआयामी शिक्षण शास्त्र में प्रशिक्षित होना आवश्यक है। वर्तमान में प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र मे ही कुशल प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव है, ऐसे में ECCE स्तर पर गुणवतापूर्ण शिक्षा की व्यवस्था के क्रियान्वयन में व्यावहारिक समस्याएँ भी है। राष्ट्रीय शिक्षा 2020 में प्रारंभिक बाल्यावस्था एवं शिक्षा की व्यवस्था हेतु शिक्षक शिक्षा का प्रस्तावित स्वरूप इस प्रकार है –

1. आँगनवाड़ी केन्द्रों से प्राथमिक स्कूलों में संक्रमण (Transition) को सुचारू बनाने के लिए इन्हें उच्चतर गुणवत्ता के बुनियादी ढाँचे, खेल उपकरण, प्रशिक्षित कार्यकर्ता/शिक्षकों के साथ सशक्त बनाया जाएगा साथ ही स्वास्थ्य के विकास की निगरानी और जाँच परीक्षण एउउए कक्षाओं के छात्रों को भी उपलब्ध कराया जा सके।
2. ECCE शिक्षकों के शुरूआती कैडर को तैयार करने के लिए आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं/शिक्षकों को NCERT द्वारा विकसित पाठ्यक्रम/शिक्षण शास्त्रीय फ्रेमवर्क के अनुसार ECCE में 6 महीने का प्रमाणपत्र एवं एक वर्ष का डिप्लोमा कार्यक्रम द्वारा प्रशिक्षण दिया जाएगा।
3. आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं/शिक्षकों के एउउए प्रशिक्षण को शिक्षा विभाग के क्लस्टर रिसोर्स सेंटर द्वारा मेंटर किया जाएगा। ECCE को आदिवासी बहुल क्षेत्रों की आश्रमशालाओं में भी शुरू किया जाएगा।
4. प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा पाठ्यक्रम की आयोजना और क्रियान्वयन मानव संसाधान मंत्रालय, महिला और बाल विकास विभाग, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय और जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से किया जाएगा तथा एक विशेष संयुक्त कार्यक्रम (Task Force) का गठन किया जाएगा।

प्रारंभिक बाल्यावस्था एवं देखभाल की शिक्षा के लिए शिक्षक शिक्षा की चुनौतियाँ एवं समाधान :

1. अभी तक हम 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा के शत-प्रतिशत लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाए हैं। ऐसे में वर्ष 2030 तक एउउए लागू कर पाना चुनौतीपूर्ण होगा।
   इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु क्षेत्र आधारित मोहल्ला विद्यालय, सामुदायिक सहभागिता, वॉलेंटियर्स पीयर ट्यूटरिंग आदि को बढ़ावा देने के लिए नवीन मॉडल स्थापित करना होगा।
2. प्रारंभिक शिक्षा की सार्वभौमिक पहुँच सुनिश्चित करने के लक्ष्य को हम अभी तक प्राप्त नहीं कर सके हैं, तब ECCE के सार्वभौमिक पहुँच के लक्ष्य की बात करना वास्तविकता से परे है, किंतु आँगनवाड़ी केन्द्रों, झूलाघर, मोहल्ला समितियों आदि के माध्यम से 3 वर्ष तक के बच्चों को चिन्हांकित कर मोहल्ला विद्यालय, वालेंटियर्स आदि के माध्यम से ECCE शिक्षा से जोड़ा जा सकता है। जमीनी स्तर पर समुदाय के सहयोग से बनायी गयी योजनाएँ निश्चित ही शासकीय प्रयासों को गति प्रदान करेगी।
3. पूर्व से स्थापित आँगनवाडी केन्द्र, प्राथमिक विद्यालयों से सम्बद्ध पूर्व प्राथमिक शालाएँ कमजोर अधोसंरचना के साथ रुग्णावस्था में है। ऐसे में इन पर ECCE की जवाबदेही थोप देना, इन्हें कृशकाय कर देगा। इस चुनौती के समाधान के लिए सबसे पहले स्थानीय स्तर पर पूर्व से संचालित संस्थानों की अधोसंरचनात्मक कमी को दूर करना होगा, पश्चात उच्चतर गुणवत्ता के बुनियादी ढाँचे की व्यवस्था करनी होगी। साथ ही कार्यरत मानवीय संसाधनों को प्रशिक्षित कर इन संस्थानों को सशक्त बनाया जा सकता है।
4. ICDS अंतर्गत संचालित आँगनवाडी केन्द्रों का प्रमुख उद्देश्य 0 से 6 वर्ष तक के बालकों के स्वास्थ्य की देखरेख, पोषाहार एवं टीकाकरण की व्यवस्था करना है। ECCE की व्यवस्था करना इनकी स्थापना का उद्देश्य नहीं है।
   इस समस्या के समाधान के लिए आँगनवाड़ी कार्यकर्ता/सहायिका, गाँव वार्ड की शिक्षित बालिकाओं/महिलाओं को स्वैच्छिक आधार पर एउउए शिक्षा हेतु प्रशिक्षण एवं पारिश्रमिक प्रदान कर मानवीय संसाधन की कमी को दूर किया जा सकता है।
5. शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में निहित प्रावधानों के अनुसार शिक्षक-छात्र अनुपात (1:30), गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, शत-प्रतिशत प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता, शत-प्रतिशत नामांकन एवं ठहराव आदि लक्ष्य कोसों दूर हैं। ऐसे वर्ष 2030 तक ECCE को सर्वसुलभ किया जाना चुनौतीपूर्ण है, तथापि इस सार्वभौमिक प्रावधान की प्राप्ति के लिए समयावधि को विस्तार कर वार्षिक योजना को विकेन्द्रित कर प्रत्येक स्तर पर जवाबदेही सुनिश्चित की जाना आवश्यक है, तब ही प्रत्येक बच्चे को शिक्षा जैसी सार्वजनिक सेवा प्राप्त हो सकेगी।
6. प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) की व्यवस्था हेतु प्रशिक्षित मानवीय संसाधन की व्यवस्था करना चुनौतीपूर्ण है। इसके समाधान हेतु एक समान गुणवत्तापूर्ण मानकीकृत बहुआयामी गतिविधियों एवं मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं पाठ्यक्रम को लागू किया जाना समीचीन प्रतीत होता है।

निष्कर्ष – वर्तमान में निजी विद्यालयों में प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) शिक्षा के प्रयास किये जाते रहे हैं, किन्तु शासकीय विद्यालयों में एउउए शिक्षा की व्यवस्था नहीं होने से अपेक्षाकृत अधिगम स्तर कम पाया जाता है तथा बाल्यावस्था के सीखने के सर्वोत्तम वर्ष (मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से) बिना किसी मार्गदर्शन के व्यर्थ गुजार देते हैं।

नई शिक्षा नीति 2020 के 5+3+3+4 ढाँचे में 3 वर्ष के बच्चों के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) की एक मजबूत बुनियाद को शामिल किया गया है, जिससे आगे चलकर बच्चों का विकास बेहतर हो, वे बेहतर उपलब्धियाँ हासिल कर सके और खुशहाल हो, किन्तु सामाजिक, आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के करोड़ों बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ECCE) के सार्वभौमिक प्रावधान को वर्ष 2030 से पूर्व उपलब्ध कराना वर्तमान परिदृश्य में चुनौतीपूर्ण तो होगा, किन्तु यह कदापि असंभव नहीं है। आवश्यकता है कि सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए चुनौतियों का सटीक आकलन कर उन्हें दूर करने का हर संभव प्रयास स्थानीय स्तर पर किया जाये, जिससे मानवीय एवं भौतिक संसाधनों का दोहन एवं प्रबंधन प्रणाली विकसित कर भविष्य

के भारत की मजबूत नींव रखी जा सकती है एवं नई शिक्षा नीति 2020 में वर्णित प्रस्तावों को धारातल पर उतारकर अमलीजामा पहनाया जा सकता है। साथ ही शासन स्तर पर उच्च मानक युक्त शिक्षक शिक्षा की व्यवस्था करना परम आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. भावे, कमला (1983) : पूर्व प्राथमिक शिक्षण सिद्धांत एवं कार्यप्रणाली, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
2. श्रीवास्तव के.एम. (2005) : शैशवकालीन शिक्षा सिद्धांत, स्वरूप एवं शिक्षण, युवराज आफसेट, रीवा।
3. शाला पूर्व शिक्षा सन्दर्शिका – शिशु शिक्षा एवं देखभाल केन्द्र तथा आँगनवाड़ी केन्द्रों के लिए (2006) : राज्य शिक्षा केन्द्र, म.प्र. शासन भोपाल।
4. आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए हैंडबुक (2006) : राष्ट्रीय जनसहयोग एवं बाल विकास संस्थान।
5. जागृति आँगनवाड़ी कार्यकर्ता मार्गदर्शिका (भाग–4) : महिला एवं बाल विकास विभाग, म.प्र. शासन भोपाल।
6. सामर्थ्य (2010) : प्रशिक्षण सन्दर्शिका, राज्य शिक्षा केन्द्र, म.प्र. शासन, भोपाल।
7. https://itpd'ncert'gov'in
8. www'teachersofindia'org

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

झारखंड में भगत परंपरा और टाना भगत आन्दोलन : एक विश्लेषण

नीरज कुमार *

* सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान), शासकीय महाविद्यालय, बिछुआ, छिंदवाड़ा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – हिन्दू धर्म के प्रभाव से झारखंड की जनजातियों में भगत पंथ विकसित हुआ। संयत और पवित्र जीवन-शैली तथा विपदाओं से छुटकारा दिलाने की अलौकिक शक्ति-संपन्न होने की मान्यता के कारण भगतों की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। जिससे जनजातियों में भगत बनने का आकर्षण बढ़ा। ईसाई मिशनरियों और उस समय की परिस्थितियों ने धर्मांतरित नहीं हुए जनजातियों में हीनता की भावना भर दी। भगत परंपरा ने उनको बिना विदेशी धर्म स्वीकार किये अपनी सामाजिक प्रस्थिति सुधारने का अवसर प्रदान किया। इस उद्देश्य को विस्तार देने में टाना पंथ ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और भगत परंपरा को अपने प्राचीन पूर्वजों की देन बताया।

शब्द कुंजी – भगत, टाना भगत, हीनता, धर्मांतरण, सामाजिक सुधार, प्रतिष्ठा, प्रस्थिति।

प्रस्तावना – झारखंड की जनजातियों में भगत या भक्त बनने की परंपरा रही है। शरतचन्द्र राय के अनुसार, उरांवों के बीच भगत पंथ, यदि पहले नहीं तो ईसाई युग के अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में उत्पन्न हो सकता है।[1] भक्ति हिन्दू धर्म में ईश्वर को पाने का एक उपाय है। जनजातियों के भगत परंपरा में हिन्दू धर्म का प्रभाव परिलक्षित होता है। भगत या भक्त भगवान की भक्ति करने वाले को कहा जाता है। भक्ति शब्द की व्युत्पत्ति यभज्' धातु से हुई है, जिसका अर्थ 'सेवा करना' या 'भजना' है, अर्थात् श्रद्धा और प्रेमपूर्वक इष्ट देवता के प्रति आसक्ति।[2] जो मांसाहार का सेवन नहीं करते और पवित्र जीवन जीते है उन्हें भी भगत कह दिया जाता है। भारतीय धार्मिक साहित्य में भक्ति का उदय वैदिक काल से ही दिखाई पड़ता है। भक्ति का तात्विक विवेचन वैष्णव आचार्यों द्वारा विशेष रूप से हुआ है।[3]

छोटानागपुर का क्षेत्र हिन्दुओं के प्रसिद्ध धर्म स्थल पुरी जाने के मार्ग में पड़ता था। यहां उत्तरी भारत से हिन्दू तीर्थयात्री आते थे। ओड़िषा के जगन्नाथपुरी में आदिगुरू शंकराचार्य द्वारा हिन्दुओं के लिए प्रसिद्ध चार मठों में से एक यहां स्थापित है। जगरन्नाथपुरी आते-जाते तीर्थयात्रियों से छोटानागपुर के जनजातियों में हिन्दू धर्म का प्रचार भी हो जाया करता था। एक प्रचलित कथा अनुसार, छोटानागपुर के प्रथम नागवंशी राजा फनी मूकुट राय के माता-पिता बनारस से पुरी के धार्मिक यात्रा पर गये थे। अपनी वापसी पर, वे झारखंड से होकर गुजरे थे।[4] और उसी दौरान छोटानागपुर में फनी मुकुट राय का जन्म हुआ था। भक्ति आन्दोलन जैसे हिन्दू धर्म की कतिपय धाराओं ने भी मुंडा तथा उरांव जैसी जनजातियों को प्रभावित किया। चैतन्य महाप्रभु झारखण्ड से गुजरे और मुंडा क्षेत्र में कार्य करते हुए बिनन्ददास जैसे वैष्णव प्रचारकों ने बहुत सी जनजातियों का धर्मान्तरण किया।[5]

इसी तरह से कई हिन्दू साधु-सन्यासियों के प्रभाव से यहां के जनजातियों में भगत बनने की परंपरा की शुरूआत हुई। लेकिन ऐसा नहीं है कि भगत पंथ पूरी तरह हिन्दू धर्म से ही आयातीत है। प्राचीन जनजातीय परंपरा और कुछ जनजातीय रीति-रिवाजों से संकेत मिलता है कि जनजातीय मानस में भक्ति पंथ का बीज बहुत पहले से रहा था।[6] संयोगवश बिहार के अनेक हिस्सों में 'भगत' शब्द का प्रयोग सयाना या भूत साधना करने वाले जोगियों एवं ऐंद्रजालिक जादू-मंतर करने वालों के लिए भी होता है। किन्तु उरांवों में 'भगत' शब्द उन्हीं लोगों के लिए प्रयुक्त होता है जो भगवद् भक्त संप्रदाय के होते हैं और शुद्ध संस्कारों का परिपालन करते हैं।[7] ऐसे भगत, लोगों पर आयीं विपदाओं, बीमारियों, नजर-गुजर से रक्षा भी करते हैं। मति और देवनरा पेशेवर रूप में आदिवासी समाज में बदनाम थें। इन्हें बूरे आत्माओं को पालने वाला भी माना जाता था। एक भगत अपनी सेवा धार्मिक भावना से और सर्वकल्याण को ध्यान में रखकर देते थे।

जनजातियों में कई तरह के भगत उत्पन्न हुए जिनमें भूईभूट भगत, नेमहा भगत, बच्छीदान भगत, कबीरपंथी भगत, सफाहोर या खरवार आन्दोलन से उत्पन्न भगत और बिरसा मुंडा के आन्दोलन से उत्पन्न बिरसाईत भगत प्रमुख थें। बाद में टाना भगत इस भगत परंपरा का हिस्सा बन गया। टाना भगत पंथ भगत परंपरा में सबसे बाद में आया। इसपर बिरसा मुंडा के आन्दोलन का व्यापक प्रभाव पड़ा था।

छोटानागपुर के उरांवों में भगत पंथ की शुरूआत भुई-फूट भगत से होता हुआ दिखाई देता है जिसमें किसी योग्य व्यक्ति में महादेव का प्रभाव प्रकट होता है। जो पहले से पूजा-पाठ, संयमित और पवित्र जीवन जी रहा होता है। कुछ का मृत आत्माओं से संपर्क स्थापित करने की शक्तियों के साथ जन्म हो सकता है, और कुछ मति से प्रशिक्षण के दौरान महादेव की कृपा प्राप्त कर सकते हैं,लेकिन बहुसंख्यक भगत या सोखा को ऐसी शक्तियों से आशीर्वाद जब प्राप्त हो जाता है तब महादेव -पत्थर अचानक भूमि (भुई-फूट) के नीचे से निकलता है या उसको सपने में या दूरदृष्टि में स्वयं प्रकट होता है या जब वह सुबह सोकर उठता है तो अपने सिर पर रहस्यमयी ढ़ग से जटा बना हुआ पाता है।[8]

शरतचन्द्र राय भगत पंथ के बारे में लिखते हैं कि नए भगत पंथ में मान

मनौवत के स्थान पर श्रद्धेय प्रेम और भक्ति को जगह दिया गया है; और भगत अपने देवकुड़ी या पवित्र देवालय में देवता को प्रतिदिन फूल और मिठाई चढ़ाता है और अपनी स्वयं की भक्ति के प्रतीक के रूप में धूप और घी जलाता है। उसके लिए धर्म एक सार्वजनिक पंथ नहीं है, बल्कि व्यक्तिगत मन की एक निजी अभिवृत्ति और हृदय में आत्मबोध हुए देवता से एक अंतरंग व्यक्तिगत संबंध है।[9] ऐसे भगत परिवार में देखा जाता है कि सामान्यत: शराब और मांस (बकरे के मांस के अलावा) का उपयोग छोड़ देता है और आनुष्ठानिक पवित्रता के निश्चित नियमों का पालन करता है।[10]

भुईफूट भगत की मृत्यु के बाद भी उसके वंशज पवित्रता के नियमों का पालन करते रहते हैं। भगतों को समाज में सम्मान मिलने से और लोग भी भगत पंथ की ओर आकर्षित हुए और कई उरांव ब्राह्मण गुरूओं से नाममात्र का संस्कार करा कर भगत बन गयें, जिन्हें नेमहा भगत कहा जाता है।

बच्छिदान भगत के रूप में पहचाने जाने वाले भगत को अपने पिछले पापों और आनुष्ठानिक अपवित्रता के प्रायश्चित के लिए अपने गोसाई या गुरू को एक बच्छी का दान देना आवश्यक होता है। गुरू-मुख या कान-फूट या कान-फूका भगत भी कहा जाता है क्योंकि गुरू उनके कानों में उनके संरक्षक देवता का नाम फूसफूसाता या फूकता है जो भगत के विशेष भक्ति का वस्तु है।[11] विष्णु भगत कहे जाने वाले भगत विष्णु या श्री कृष्ण को अपने संरक्षक देवता के रूप में स्वीकार करते हैं और सभी तरह के मांस और मछली जिसमें बकरे का मांस भी शामिल है, परहेज करते हैं।[12]

सोलहवीं सदी के प्रसिद्ध संत कबीरदास के मतों को मानने वाले कबीर-पंथी वर्तमान छत्तीसगढ़ राज्य से यहां आयें। झारखंड के उरांवों में सबसे पहले कबीरपंथ को अपनाने वालों में से एक सिसई थाना के जोरिया गांव के ढ़ोला भगत थे। वे 1832-33 के कोल विद्रोह के तुरंत बाद कबीरपंथ को अपनाये थे। उनके कबीरपंथी गुरू कवर्धा मठ के थे।13 कई उरांव इस पंथ की दीक्षा लेकर कबीर-पंथी भगत बन गए। इस पंथ की मान्यता है कि ईश्वर एक है जिसे किसी भी नाम से पुकारों या आराध्य मानो, और उसके वास्तविक आनंद को बलिदानों और कर्मकांडों से नहीं बल्कि देवता की भक्ति या अनुरागी श्रद्धा से प्राप्त किया जा सकता है।[14]

एक और भगत का प्रकार खरवार आन्दोलन से निकला। यह आन्दोलन अपने प्राचीन मूल्यों की पुनर्स्थापना और भू-संपदा से जुड़ी समस्याओं को लेकर शुरू हुआ था। 'धरती-पुत्र की धरती और उसकी उपज के सही हकदार है' की अवधारणा उन्हें प्रेरित करती थी। किन्तु, उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपनाया गया नया मार्ग धर्माधारित एवं अहिंसक था। अपने सूर्य देवता के अतिरिक्त गैर-जनजातीय सिंहवाहिनी दुर्गा के आशीर्वाद को भी उन्हें आवश्यकता थी यद्यपि अन्य देवी-देवताओं को परित्याज्य माना गया। सुअर, मुर्गी को अस्पृष्य तथा सुरापान एवं नृत्य-गायन को अवांछनीय समझा गया। उत्सव-पूजा को कालबद्ध करने के अतिरिक्त उनके उद्देश्यों की भी नूतन व्याख्या की गई। बलि के साथ नैवेद्य का भी संयोग हुआ। आत्मसमर्पण की न्यूनाधिक स्थितियों के अनुकूल सम्पूर्ण आन्दोलन भी श्रेणीबद्ध हो गया। पूर्ण समर्पण वाले 'सफाहोर' कहे गये तो उदासीन 'बाबाजिया' या भिक्षुक कहलाये। बेमन पूजकों को 'मेल बरागर' की संज्ञा दी गई।[15]

धरती आबा बिरसा मुंडा के नेतृत्व में जो बिरसा आन्दोलन हुआ वह हिंसक विद्रोह तो था ही साथ ही यह सुधारवादी आन्दोलन भी था। बिरसा मुंडा ने अपने अनुयायी बनायें और उनमें अपने बिरसाईत धर्म का प्रचार किया। इस पंथ के अनुयायी बिरसाईत भगत कहलाएं। इस पंथ के अनुयायी को मांस-मछली खाना, हंड़िया दारू पीना, चुना-तंबाकू या बीड़ी-भांग का सेवन करना मना है। इसमें व्यक्तिगत स्वच्छता और शुद्धता पर विशेष जोर दिया गया है। बिरसा भगत दूसरे धर्मवालों के साथ खाना-पीना नहीं करते हैं।[16] मुंडाओं को केवल एक भगवान की पूजा करनी थी, उन्हें बोंगाओं अथवा देवताओं के समूह को दिए जानेवाले अपने प्रथागत बलिदानों का परित्याग करना था, किसी तरह के पाशविक भोजन से परहेज करना था, उत्ताम जीवन जीना था, निजी आदतों में सफाई बरतनी थी, और द्विज हिंदू जातियों की शैली में जनेऊ अथवा पवित्र धागे को धारण करना था।[17]

इस तरह हम देखते है कि टाना भगत पंथ के उत्पन्न होने से पहले झारखंड में भगत पंथ की कई परंपरा को अपना लिया गया था। एक भगत को कठिन जीवनचर्या और संयम-नियम का पालन करना पड़ता था। वे साफ-सफाई, खान-पान पर नियंत्रण, पहनावा और भेषभूषा तथा आचरण में परिषुद्धता पर भी जोर देते थे और तपस्वी का जीवन जीते थे जिससे उन्हें समाज में व्यापक प्रतिष्ठा प्राप्त था। वह जनजातीय समाज के लोगों की भलाई के लिए ईश्वर से प्रार्थना और पूजा करता था और समाज या व्यक्ति में आयीं विपदाओं, बीमारियों और दुखों-कष्टों से छुटकारा दिलाने का भी काम करता था। इसलिए भी उसे समाज में सम्मान प्राप्त था। समाज के अन्य लोग भी उस सम्मान को पाने के लिए भगत बनने हेतु आसान और सुलभ तरीकों को भी अपनाने लगे थे। सच्चिदानन्द (1972) सहित अनेक नृ-विज्ञानियों का मत है कि समधा 'भगत आन्दोलन' अपने समुदाय के सदस्यों का सांस्कृतिक उत्थान करके पड़ोसी हिन्दू समाज में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाने का प्रयास था।[18] यह बात सही है कि भगतों का समाज में सम्मानजनक स्थान था जिसे बहुत से उरांव प्राप्त करना भी चाहते थे।

ईसाई धर्म प्रचारक आदिवासियों के परंपरागत धर्म को निम्न कोटि का मानते थें और उनको ईसाई धर्म में लाने का हर संभव प्रयास करते थे। जिससे आदिवासियों में हीनता की भावना घर कर रही थी। रांची जिले के मुंडारी और उरांव गोंवों में सबसे लापरवाह पर्यविक्षक भी कुछ वर्षो से ईसाई-धर्म अपनाये हुए किसी आदिवासी के घर को अपने किसी गैर-ईसाई आदिवासी बन्धु के घर से ईसाई घर के बेहतर साफ-सफाई और उसके संबंधित हर चीज में फैली एक आम स्वच्छता और सुव्यवस्था के अनुसार अलग कर सकता है।[19] जब जनजातियों में ईसाई मिशनरियों का धर्म-प्रचार और धर्मांतरण होने लगा था और कई जनजातीय समुदाय के लोग ईसाई बनने लगे थे तब भगत परंपरा ईसाईयत् के जवाब में या धर्मांतरण रोकने के एक साधन के रूप में भी सामने आया था। एक टाना गुरू के इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि वह विदेशी धर्म को नापसंद करता था। उसने बताया कि ईसाई निम्नत्ताम वर्ग है। भगवान ऐसा कहते हैं।[20]

इसलिए धर्मांतरण से बचने और समाज में प्रतिष्ठा पूर्ण जीवन जीने तथा अपने परंपरागत धर्म के साथ नीभ सकने वाले देशी भगत परंपरा के विभिन्न स्वरूपों को अपनाने की ओर आगे बढ़ें। टाना भगत पंथ भी उरांवों में बढ़ते ईसाई मत में धर्मांतरण रोकने के एक प्रयास के रूप में भी देखा जाता है। टाना भगत आन्दोलन उरांवों में धर्मांतरण रोकने, असंतोषजनक और निम्न सामाजिक स्थिति से उच्च सामाजिक प्रस्थिति को पाने और षोषण से मुक्ति पाने का एक प्रयास था। इसमें काल्पनिक स्वर्णिम अतीत की पुनर्रूस्थान की भावना भी थी।

अप्रैल 1914 में टाना पंथ की शुरूआत हुई। इस पंथ का संस्थापक

जतरा टाना भगत को माना जाता है। ब्रिटिश गुलामी के काल में उरांवों का सामाजिक-आर्थिक षोषण भी व्यापक रूप से हो रहा था। टाना भगत गुरूओं ने जनजातियों की सामाजिक प्रस्थिति को उठाने के लिए सभी को भगत बनाने का रास्ता खोजा। टाना पंथ पर बिरसाईत पंथ का प्रभाव पड़ा था। जीवन शैली में भगतों के जैसा संयम-नियम, परिशुद्धता, पवित्रता को धार्मिक भावना से अपनाने को प्रेरित किया। उनके जीवन में विद्यमान हर वह चीज जो अशुद्ध, अपवित्र और हीन माना जाता था, अनैतिक माना जाता था उसे जीवनचर्या से हटा दिया या निषेध घोषित किया। खानपान, पहनावा-भेषभूषा, धार्मिक-सांस्कृतिक-सामाजिक, आर्थिक क्रियाकलाप आदि सभी क्षेत्रों के लिए भगत के अनुरूप संशोधन कर आचरण नियम स्थापित किए गयें।

उन बातों को रेखांकित कर त्यागने का फैसला किया जो उनकी स्थिति को गिराते थे। गैर आदिवासीयों और जमींदारों के यहां कूली-मजदूरी करने से भी रोका गया। जनजातियों को भूत-प्रेत और प्रेतात्माओं का भय उन्हे हमेषा परेशान करता रहा है। इन्हें और अपने देवी-देवताओं को खुश करने के लिए अनुष्ठान, पूजा-पाठ और बलि जैसे कार्यों में लगना पड़ता था। जिससे उनके सारे बचत खत्म हो जाते थे। मति, ओझा आदि के लिए भी खर्च करना पड़ता था। जिससे वे कर्ज में भी डूब जाते थे। जिसका उनसे फायदा उठाया जाता था। बैठ-बेगार जैसी प्रथा भी प्रचलित हो गई थी।

टाना गुरू ने दावा किया कि धर्मेष (उनके सर्वाच्च देवता) ने उनसे कहा है कि मतियाओं, ओझागिरी और झांड़फूक और खून के प्यासे आत्माओं तथा अन्य देवी-देवताओं को जो पशुओं की बलि मांगने वाले हैं, में अपना विष्वास छोड़ दो। भगवान ने उससे कहा कि सभी तरह के पशु बलि रोको और पषु का मांस एवं दारू पीना और उनके खेतों में हल चलाना छोड़ों जिसका अर्थ गायों और बैलों से क्रुरता है, लेकिन लोगों को गरीबी और अकाल से सुरक्षा देने में असफल।[21] उनका मानना था कि रोहतासगढ़ से छोटानागपुर आने के बाद ही उनकी स्थिति खराब हुई। पहले वे उरागन-ठाकूर कहलाते थे। यहां आकर ही हमलोगों ने निम्न कोटि के आदतों को अपना लिया और अपनी स्थिति खो दी। टाना भगत गुरूओं ने कहा कि यदि उन्हें अपनी पूर्व की सम्मानजनक सामाजिक स्थान प्राप्त करना है तो अपने अतीत के पवित्र धर्म की ओर लौटना होगा। उन्होंने बताया कि उसी धर्म की पुनर्स्थापना विशुद्ध रूप में टाना पंथ के नाम से हुई है। इस तरह उन्होंने स्थापित करने का प्रयास किया कि यह पुनर्रूत्थान है; हमारे पूर्वज भगतों की तरह जीवन जीते थे और हमने दूसरों से सीखकर नहीं बल्कि स्वयं अपने पूर्वजों के तौर-तरीकों को अपनाया है।

निष्कर्ष – भगत परंपरा की शुरूआत आध्यात्मिक उद्देश्य के लिए हुआ। समाज में उन्हें सम्मान प्राप्त हुआ। फिर यह समाज में प्रतिष्ठा पाने का एक साधन और संयमित जीवन का आधार बना। टाना गुरूओं ने उरांवों की सामाजिक स्थिति में सुधार लाने के लिए, उन्हें प्रतिष्ठा दिलाने के लिए भगत परंपरा वाली जीवन शैली को अपनाया लेकिन इसे मजबूती प्रदान करने के लिए और ज्यादा से ज्यादा फैलाव के लिए अपने अतीत के स्वर्णिम गौरव से इसे जोड़कर अपना ही पुनर्रूत्थान बना दिया। इसमें कोई संदेह नहीं कि टाना भगतों की जीवन शैली के कारण उन्हें समाज में प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त हुआ। भगत पंथ को मानने वालों की संख्या भी बढ़ी। लेकिन स्वतंत्रता आन्दोलन में टाना भगतों के शामिल होने से उनकी प्रतिष्ठा में और इजाफा हुआ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. रॉय, शरत् चन्द्र' (2012) : **उरांव रिलीजन एण्ड कस्टम्स** (पुनर्मुद्रित), ज्ञान पब्लिशिंग हाउऊस, नई दिल्ली, पृष्ठ 316
2. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/भक्ति
3. वही'
4. राज सहाय (2017) : **आदिम मुंडा और उनका प्रदेश**, (मूल लेखक : शरत् चंद्र रॉय, 'द मुंडाज एण्ड देयर कंट्री'), आदिवासी वेलफेयर सोसाइटी, जमशेदपुर, पृष्ठ 75
5. नदीम हसनैन (2016) : **जनजातीय भारत** (आठवां संस्करण), जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, पृष्ठ 8
6. शरत् चन्द रॉय : **उरांवन रिलीजन एण्ड कस्टम्स**, पृष्ठ 323
7. नदीम हसनैन : **जनजातीय भारत**, पृष्ठ 283
8. शरत् चन्द रॉय : **उरांवन रिलीजन एण्ड कस्टम्स**, पृष्ठ 303
9. वही, पृष्ठ 308-309
10. वही, पृष्ठ 309
11. वही, पृष्ठ 317-318
12. वही, पृष्ठ 318
13. वही, पृष्ठ 327
14. वही, पृष्ठ 325
15. डॉ0 बी0 वीरोत्ताम (2016) : **झारखंड : इतिहास एवं संस्कृति** (षष्ठम संस्करण), बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, पृष्ठ 330-331
16. कुमार सुरेष सिंह (2017) : **बिरसा मुंडा और उनका आंदोलन** (आवृत्ति), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 178
17. राज सहाय : **आदिम मुंडा और उनका प्रदेश**, पृष्ठ 190
18. नदीम हसनैन : **जनजातीय भारत**, पृष्ठ 283
19. राज सहाय : **आदिम मुंडा और उनका प्रदेश**, पृष्ठ 154
20. शशांक शेखर सिन्हा (2014) : **आदिवासी मूवमेंट एण्ड द पॉलिटिक्स ऑफ दी सूपरनेचुरल इन कॉलोनियल छोटानागपुर**, एनएमएमएल ऑकेजनल पेपर हिस्ट्रि एण्ड सोसाइटी (न्यु सिरीज 53), नेहरू मेमोरियल म्युजियम एण्ड लाईब्ररी, नई दिल्ली, पृष्ठ 33
21. रेखा ओ0 धान (जुलाई 1960) : **द प्रॉबलम्स ऑफ दी टाना भगत**, (वोलूम 2 नं0-1), बुलेटिन ऑफ दी बिहार ट्राइबल रिसर्च इंस्टीट्युट, रांची, पृष्ठ 153

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

वैदिकी शिक्षा पद्धति

डॉ. सविता वशिष्ठ *

* असि. प्रोफेसर (संस्कृत) जैन कन्या पाठशाला (पी.जी.) कॉलेज, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) भारत

प्रस्तावना – वेद का अर्थ ज्ञान होता है, वैदिक कालीन शिक्षा से तात्पर्य उस ज्ञान से है जो वेदों में सुरक्षित है तथा जो उस काल में प्रयोग किया जाता था। भारत की आधारभूत संस्कृति का ज्ञान इन्ही प्राचीन धर्म–शास्त्रों में समाहित है। वैदिक कालीन शिक्षा न तो पुस्तकीय ज्ञान में विश्वास रखती थी और न ही जीवकोपार्जन का साधन थी, यह तो पूर्ण रूप से नैतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान का सोपन थी। तत्कालीन शिक्षा का अर्थ था कि व्यक्ति को इस प्रकार आत्मप्रकाशित किये जाये कि उसका सर्वांगीण विकास हो सके। श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन आदि शिक्षा प्राप्त करने के साधन थे। वेद जो लिखित रूप से संकलित नहीं थे केवल कण्ठस्थीय थे, श्रुति कहलाए। इस प्रकार वैदिक साहित्य में शिक्षा शब्द का प्रयोग विद्या ज्ञान तथा विनय आदि अर्थो में किया जाता था।

प्राचीन भारतीय विद्वानों द्वारा शिक्षा शब्द का प्रयोग व्यापक और सीमित दोनों अर्थो में किया गया है। वैदिक शिक्षा प्रणाली भारत एवं सम्पूर्ण विश्व की सबसे पुरानी शिक्षा प्रणाली में से एक है। इतिहासकारों के अनुसार 2500 ईसापूर्व से 500 ईसा पूर्व तक भारतीय शिक्षा प्रणाली पूर्णरूप से वेदो पर आधारित थी। अत: 2500 ईसा पूर्व से 500 ईसा पूर्व के समय को वैदिक काल के नाम से जाना जाता है। वैदिक काल में शिक्षा ऋषि मुनियों द्वारा प्रदान की जाती थी। अर्थात् ब्राह्मणों द्वारा प्रदान की जाती थी जिस कारण कुछ विद्वानों द्वारा वैदिक शिक्षा प्रणाली को ब्राह्मण शिक्षा प्रणाली भी कहा जाता है।

कुछ विद्वानों का यह मानना था कि ब्राह्मण हिन्दू होते है तथा यह शिक्षा हिन्दुओं द्वारा प्रदान तथा ग्रहण की जाती थी तो उन्होने इस शिक्षा प्रणाली को हिन्दु शिक्षा प्रणाली कहना सही समझा किन्तु इस काल में शिक्षा वेदों पर आधारित थी तो इसे वैदिक शिक्षा पद्धति कहना सही होगा। वैदिक काल को कई भागों में बांटा गया है। जैसे– वैदिक काल, उत्तर वैदिक काल, ब्राह्मणकाल, उपनिषद काल, सूत्र काल, स्मृति काल।

वैदिक काल में शिक्ष्ज्ञा को दो स्तरों में बांटा गया था। प्रारम्भिक शिक्षा, उच्च शिक्षा। प्रारम्भिक शिक्षा व्यवस्था में बच्चों के लिए उनके परिवार के मध्य 5 वर्ष तक सम्पन्न कराई जाती थी। उच्च शिक्षा की शुरुआत उपनयन संस्कार से की जाती थी। यह शिक्षा गुरुकुल में होती थी। गुरुकुल एक गुरु के अन्तर्गत चलता था।

शिक्षा शब्द की व्युत्पत्ति एवं अभिप्राय – मानव की सर्वविध उन्नति का साधन शिक्षा है। जैसी शिक्षा होगी मानव का निर्माण भी नि:सन्देह तद्धत ही होगा। मानव को मानव बनाने वाले अथवा उसमें चिन्तन–शक्ति का आधान करने वाले इस शब्द की निर्मिति स्वादिगणीय आत्मनेपदी सेट् 'शिक्ष् विद्योपादानेय'[1] धातु से 'अ प्रव्यय'[2] तत: स्त्रीत्व की विवक्षा में टाप करने पर होती है। इस प्रकार वह क्रिया जो विद्याग्रहण, शिक्षण अथवा पठन–पाठन में साधक है, वह शिक्षा शब्द से कहा जा सकता है। इसी को परिभाषित करते हुए महर्षि दयानन्द ने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के अन्त में दत्त स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में लिखा है। 'जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मा, जितेन्द्रियतादि की वृद्धि होवे और अविद्यादि दोष छूटें, उसी को शिक्षा कहते है।'[3]

इस प्रकार संक्षेप में कहा जा सकता है कि शिक्षा का उद्देश्य जीवन के चरमोत्कर्षभूत चतुर्थपुरुषार्थ मोक्ष की प्राप्ति के साधन बनने वाले तत्व विद्या का अधिगम है। प्रथमान्तावत यह तभी सम्भव है, जब मानव सही अर्थो में 'मनुभव' की वैदिकी शिक्षा को प्राप्त करें।

शिक्षा और शिष्य का सम्बन्ध वैदिकी परम्परा में उत्कृष्ट कोटि का स्वीकार किया गया है। शिक्षक के सानिध्य में आया शिशु ब्रहमचारी शिष्यभाव से अनुशासित रह कर जीवन की प्रत्येक उपलब्धि को प्राप्त करता है और श्रेष्ठ समाज की आधार शिला रखता है।

वैदिक साहित्य में बताया गया है कि शिक्षक ही समाज के श्रेष्ठ नैतिकमूल्यों का उद्धाहक होता है। वह जैसे समाज का निर्माण करता है, वैसी ही सामाजिक संरचना दृष्टिगत होती है। संस्कृतसाहित्य में शिक्षक के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द इस प्रकार है– विप्र[5], द्विज[6], उपाध्याय [7], उपाध्याय [8], गुरू [9] और आचार्य। इनमें से वैदिक परम्परा में आचार्य और ब्राह्मण शब्द प्रमुखत: प्रयुक्त हुए है। आचार्य शब्द को परिभाषित करते हुए मनु कहते है– 'उपनीय तु य: शिष्यं वेदमध्यापयेद् द्विज:। सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते।।[10] आचार्य यास्क ने भी आचार्य शब्द का निर्वचन करते हुए कहा है कि – 'आचारं ग्राहयति इति आचार्य:।[11] अर्थात् आचार्य वह है जो शिष्यों को सदाचार की शिक्षा ही न दे, अपितु सदाचार का आधान भी करवायें।

धर्म के मुख्य प्रतिपादक वेदों का अध्ययनगुरु (आचार्य) के सानिध्य में ही होता है और उसकी पूर्णता व्यवहार से ही होती है। अत: आचार्य शिक्षार्थी ब्रहमचारी को सर्वप्रथम उपनयन करके अर्थात् अपने पास शौचसहित आचार की शिक्षा देता है।[12] योगसूत्रकार पतंजलि ने शौचसाधना के फल का उल्लेख करते हुए कहा है– 'शौचात् स्वांगजुगुप्सा परैरसंसर्ग:।'[13] शौच साधना के फल का अन्त यहीं नहीं है वे पुन: कहते है–
शौचा', सत्वशुद्धिसौमनस्यैकाग्रयेन्द्रिय – जयात्मदर्शनयोग्यत्वानि च'[15]

शिक्षा प्राप्ति के क्रम में मनुस्मृति में आचरण की शिक्षा को सर्वप्रथम और

अनिवार्य स्वीकार किया गया है, वहां कहा गया है कि आचरण के निर्मल होने के मनुष्य को दीर्घ आयु, अभीष्ट सन्तान, अक्षय धन और अशुभ का विनाश आदि की अनायास प्राप्ति होती है और उसका पतन कभी नहीं होता वह अन्य गुणों के न रहने पर भी आचारवान और श्रृद्धावान होने के कारण सौ वर्षो तक जीवित रहता है।[14] इसके साथ ही मनुस्मृति में कहा गया है कि जो व्यक्ति कल्याणमय आचरण वाला है, नित्य प्रयत्नशील है, अर्थात् आलसी नहीं है, जप और यज्ञ करता है, उसका पतन कभी नहीं होता।[15] इसीलिए शिक्षा प्राप्ति के क्रम में आचार की शिक्षा सर्वप्रथम और अनिवार्य रूप से होनी चाहिए।

वैदिक परम्परा में शिष्य आचार्य का सम्बन्ध अतीव उत्कृष्ट परम्पराओं का निर्वाहक है वहां दोनों में एकत्व की परिकल्पना की गयी है। तैतिरीयोपनिषद में गुरु और शिष्य का सर्वतो भावेन एकत्व प्रदर्शित कर रहा है कि दोनो के ही सामन्जस्य से श्रीवृद्धि, विद्या का प्राबल्य और तेजीवृद्धि होती है-

सह नाववतु सहनौ भुनक्तु सह वीर्य करवाव है।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्धिष्या वहै।। [16]

अथर्ववेद का ऋषि तो द्वैतभाव को भी मिटा आचार्य शिष्य के सम्बन्ध को ऐसे धरातल पर रख देता है, जहाँ आचार्य और शिष्य में भेद ही न हो, वह कह उठता है-

आचार्य उपनययानों ब्रहमचारिणं कृणुते गर्भपन्त:।
तं रात्रीस्तिस्त्र उदरें विभर्ति तं जातं द्रष्टुमभिसयन्ति देवा।। [17]

अर्थात् ब्रह्मचारी को उपनीत कर आचार्य अपने गर्भ के अन्दर रखता है और तीन अन्धकार भरी रात्रियों तक उसे अपने उदर में धारण करता हुआ जब जन्म देता है तो उसे देखने देवों का समूह एकत्रित हो जाता है। ऐसी सुन्दर गुरु और शिष्यों के सम्बन्धों की उपमा विश्व साहित्य के दुलर्भ है। श्रेष्ठ आचार्य और शिष्य संगत हो, क्या अध्ययनअध्यापन करें इसके संकेत भी वैदिक साहित्य में मिलता है। उपर्युक्त तीन रात्रियों से अन्धकार, तपस से तात्पर्य है बुद्धि पर पड़ा अन्धकार रूपी आचरण जब तक नहीं हटता, तब तक ब्रह्मचारी अन्तेवासी ही रहता है। ये विविध अन्धकार कौन-कौन से है, इस विषय में विद्वानों में विभिन्न मत हैं- आचार्य सातवलेकर के अनुसार प्रथम अज्ञान सृष्टिविषयक द्वितीय आत्मविषयक और तृतीय आत्मा व अनात्मा के विषयक है।[18] इनका यावत् यथार्थ ज्ञान न करवा देते तावत् विद्याध्ययन का उद्देश्य पूर्ण नहीं होता। इन्ही में भौतिक और अभौतिक समस्त प्रकार का ज्ञान समाहित हो जाता है। पं0 क्षेमकरण दास विविध तमस से पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोक का समस्त अज्ञान ले उसे निर्मूल करने को कहते है।[19]

यजुर्वेद का प्रसिद्ध मन्त्र है- विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह। अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।'[20] यह मन्त्र द्विविध विधाओं को हृदयगंम करने की बात कहता है। यहां विद्या से तात्पर्य ईश्वर विद्या, ब्रह्मविद्या, आत्मविद्या से है। अविद्या - अनीशविद्या, अनात्मविद्या, प्रकृति या जगत से है। जगत-विद्या अर्थात अविद्या से ऐहिक उत्कर्ष की प्राप्ति होती है। ब्रह्मचारी लौकिक ऐश्वर्यो को बढ़ाने की विद्या को सीखता है इस सृष्टि के प्रपंच को समझता है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि वैदिककालीन शिक्षा नि:शुल्क थी, गुरूकुल में शिष्यों से किसी भी प्रकार का शुल्क नहीं किया जाता था। वैदिक कालीन शिक्षा पर होने वाले व्यय की पूर्ति राज, धनाब्य लोगों भिक्षाटन एवं गुरू दक्षिणा से की जाती थी। वैदिक कालीन शिक्षा द्वारा मनुष्यों का शारीरिक, वैदिक, नैतिक, सांस्कृतिक, व्यवसायिक और आध्यात्मिक विकास किया जाता था। वैदिक कालीन शिक्षा की पाठ्यचर्चा व्यापक थी। वैदिक काल में मनुष्य के प्राकृतिक सामाजिक और आध्यात्मिक तीनों के विकास पर बल दिया जाता था। वैदिक कालीन शिक्ष्ज्ञा के उत्तम शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता था। अनुकरण, व्याख्यान, वाद-विवाद, प्रश्नोत्तर, तर्क, विचार विमर्श, इत्यादि वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक विधियों का विकास किया जा चुका था। वैदिककाल में गुरू और शिष्यों का जीवन अत्यन्त संयमित और अनुशासित था। वैदिककालीन शिक्षा में गुरुकुलों का पर्यावरण अति उत्तम था। वैदिक कालीन शिक्षा उपनयन संस्कार से प्रारम्भ होती थी तथा समावर्तन संस्कार से पूर्ण हो जाती थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. अष्टाध्यायी 3.3.103, गुरोश्च हल:।
2. अष्टाध्यायी 4.1.4, अजाघतष्टाप्।
3. दयानन्दग्रन्थमाला (प्रथम-खण्ड)
4. सा विद्या या विमुक्तये।
5. अमर कोष।
6. ब्राह्मण, क्षत्रिय औश्र वैश्य तीनो वर्णधर्म
7. मनुस्मृति 2.141
8. अमरकोष 2.6.6 उपाध्यायोऽध्यापक:।
9. अमरकोष 2.6.6. मनुस्मृति।
10. मनुस्मृति 2.140, इस श्लोक में आगत द्विज शब्द से ब्राह्मण ही अभिप्रेत है।
11. उपनीय गुरु: शिष्यं शिक्षयेच्छौचमदित:। आचारमग्निकार्यं च सन्ध्योपासनमेव च। (मनुस्मृति 4/156)
12. योगसूच 2/40-41
13. आचाराल्लभते ह्यायुचाराद्दीस्सिता: प्रजा:। (मनु0 21/69)
14. सर्वलक्षणहीनोऽपि य: सदाचारवान्नर:। श्रद्धावानोडनसूयश्च शतं वर्षाणि जीवति।।(मनुस्मृति 4/158)
15. तैतिरीपोपनिषद 2.1.1
16. अथर्वेद 11.4.3
17. सातवलेकरभाष्य, अथर्वेद 11.4.3
18. क्षेमकरजभाष्य, अथर्वेद।
19. यजुर्वेद 40.14

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

श्रमिक अधिकारों में डॉ. अंबेडकर का योगदान: एक अवलोकन

डॉ. रजनी दुबे*

* प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) शासकीय कन्या महाविद्यालय, सागर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – श्रमिकों को सम्मानित करने के लिये 1 मई को अर्न्तराष्ट्रीय मजदूर दिवस मनाया जाता है। देश के भाग्य को आकार देने में श्रम की एक महत्तवपूर्ण भूमिका होती है। डॉ. भीमराव अंबेडकर ने सरकार की श्रमनीति के लिये बुनियादी ढांचे की नींव रखकर श्रम कल्याण के लिये अनेकों उपाय किये। विधेयक 1943 के माध्यम से डॉ. अंबेडकर ने मातृत्व लाभ के साथ महिला श्रमिकों को सशक्त बनाया। डॉ. भीमराव अम्बेडकर से प्रेरित होकर वर्तमान मोदी सरकार ने श्रमिकों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिये कदम उठाये है।

शब्द कुंजी – श्रमिक, कोविड-19, दक्षता, श्रमनीति, श्रम बिरादरी, श्रम संहिता।

प्रस्तावना – श्रमिकों को सम्मानित करने के लिए 1 मई को अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस मनाया जाता हैं। देश के भाग्य को आकार देने में श्रम की एक निर्विवाद भूमिका होती हैं। पुराने समय में मजदूर वर्ग ने अधिक से अधिक कारणों के लिये बलिदान किया हैं। पहले स्वतंत्रता के लिये फिर एक-एक ईंट जोड़कर राष्ट्र का निर्माण किया हैं। कोविड-19 के खिलाफ चल रही लड़ाई में श्रमिक सहित सभी के लिये अस्थाई कठिनाई भी दी हैं, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जीवन को आजीविका से बड़ा होने के रूप में तोला हैं और अब इस संकट को बदलने का खाका तैयार किया हैं। अनुकूलता, दक्षता, समावेष्ता, अवसर और सार्वभौमिकता के माध्यम से श्रमिकों के लिये भारत निर्माण करने के लिये और अधिक अवसर खुलेगें।

कई नेता श्रमिकों लिये एक प्रकाश स्तंभ थे और संविधान निर्माता डॉ. बी. आर. अंबेडकर उनमें से एक थे। गोलमेज सम्मेलन में अवसादग्रस्त वर्गो के प्रतिनिधि के रूप में अंबेडकर ने क्रूर जमींदारों के चंगुल से किसानों को आजाद कराने उनके लिये सब काम करने की स्थिति, जीवित मजदूरी तथा उनकी स्वतंत्रता के लिये आग्रह किया। उन्होंने धार्मिक बुराइयों को दूर करने के लिये भी संघर्ष किया। जिन्होंने गरीबों के लिए जीवन को प्रभावित किया।

उन्होंने भूमिहीन काश्तकारों को और कृषकों और श्रमिकों की जरूरतों और शिकायतों को पूरा करने के लिए 1936 में एक व्यापक कार्यक्रम के साथ इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी (आई. एम. पी.) का गठन किया। 1935 में नवनिर्वाचित भारत सरकार अधिनियम 1935 के तहत बॉम्बे विधानसभा के पहले चुनाव में लड़ाई गई 17 सीटों में से 15 सीटें जीतकर आई. एम. पी. में शानदार सफलता हासिल की। 17 सितंबर 1937 को बॉम्बे विधानसभा के पूना सत्र के दौरान उन्होंने कोंकण में भूमि अवधि की जूरी प्रणाली को समाप्त करने के लिए एक विधेयक प्रस्तुत किया।

डॉ. अंबेडकर ने औद्योगिक विवाद विधेयक (1937) के पेश करने का विरोध किया क्योंकि इतने दिनों की हड़ताल करने के अधिकार को हटा दिया। श्रम मामलों के बारे में उनके ज्ञान को 1942 से 1946 तक वायसराय की कार्यकारी परिषद के श्रम सदस्य के रूप में सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया तथा प्रेषित किया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जब विश्व-व्यवस्था पिछड़ रही थी तब अंबेडकर भारतीय श्रम का मार्गदर्शन कर रहे थे। बदलती अर्थव्यवस्था में उद्योगों के विस्तार के अवसर प्रदान किये। श्रम को उसका बनता हिस्सा नहीं दिया गया था। डॉ. अंबेडकर ने सरकार की श्रमनीति के लिये बुनियादी ढांचे की नींव रखकर श्रम कल्याण के लिये उपाय किये और उनको शुरू किया।

8 नवंबर 1943 को भीमराव अंबेडकर द्वारा पेश इंडियन ट्रेड यूनियन (संशोधन) विधेयक ने नियोक्ताओं को व्यापार संघों को स्वीकार करने के लिए मजबूर किया। 8 फरवरी 1944 को विधानसभा में कोयला खदानों में भूमिगत काम पर महिलाओं के रोजगार पर प्रतिबंध की बहस के दौरान डॉ. अंबेडकर ने कहा-'यह पहली बार है कि मुझे लगता है कि किसी भी उद्योग में समान काम के लिए समान वेतन जो बिना लैंगिक भेदभाव के सिद्धांत साबित किया गया हैं'। यह एक ऐतिहासिक क्षण था मातृत्व लाभ (संशोधन) विधेयक 1943 के माध्यम से उन्होनें मातृत्व लाभ के साथ महिला श्रमिकों को सशक्त बनाया।

26 नवंबर 1945 को नई दिल्ली में आयोजित भारतीय श्रम सम्मेलन को संबोधित करते हुए अंबेडकर ने प्रगतिशील श्रम कल्याण कानून लाने की तत्काल आवश्यकता पर जोर दिया। 'मजदूर अच्छी तरह से समझ सकता है कि इस तथ्य को समझने के लिए ब्रिटिश को श्रम कानून का उचित कोर्ट होने में 100 वर्ष लग गये। कोई तर्क नहीं कि भारत में भी हमें 100 वर्ष लगने चाहिये। इतिहास हमेशा एक उदाहरण नहीं है। अधिक बार यह एक चेतावनी हैं।'

अंबेडकर ने मार्क्सवादी स्थिति को स्वीकार नहीं किया कि निजी संपत्ति का अंत गरीबी और पीड़ा को समाप्त करेगा। बुद्ध या कार्ल मार्क्स के बारे में अंबेडकर लिखते हैं- 'क्या काम्युनिस्ट यह कह सकते हैं कि अपने मूल्यवान अंग को प्राप्त करने में उन्होंने अन्य मूल्यवान सिरों को नष्ट नहीं किया हैं, उन्होंने निजी संपत्ति को तबाह कर दिया यह मानते हुए कि यह एक मूल्यवान अंत हैं, क्या कम्युनिस्ट यह कह सकते हैं कि इसे प्राप्त करने की

प्रक्रिया में अन्य मूल्यवान को नष्ट नहीं किया हैं। अपने अंत की प्राप्ति के लिये उन्होंने कितने लोगों की हत्यायें की हैं। क्या मानव जीवन का कोई मूल नहीं हैं क्या वे मालिक की जान लिये बिना संपत्ति नहीं ले सकते थे।

डॉ. भीमराव अंबेडकर से प्रेरित होकर वर्तमान मोदी सरकार ने श्रमिकों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिये कदम उठाए हैं। उदाहरण के तौर पर प्रधानमंत्री ने वृद्धावस्था में असंगठित मजदूरों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये फरवरी 2019 में प्रधानमंत्री श्रम योजना धन योजना शुरू की थी। श्रम सुविधा पोर्टल जैसे तकनीकी हस्तक्षेप के माध्यम से श्रम कानून के परिवर्तन में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित की जाती हैं। सरकार मौजूदा केंद्रीय श्रम कानूनों के प्रावधानों को चार श्रम संहिताओं- मजदूरी पर श्रम संहिता, औद्योगिक संबंधों पर, सामाजिक सुरक्षा एवं कल्याण तथा स्वास्थ्य और कार्य स्थितियों को सरलीकृत मिश्रित करने तथा तर्कसंगत बनाने के लिए कार्य कर रही हैं। कोविड-19 महामारी द्वारा लाई गई असाधारण परिस्थितियों में श्रम बिरादरी एक विशेष सलामी की हकदार हैं। जैसा कि हम राष्ट्र निर्माण में अनगिनत मजदूरों के असंख्य योगदान को याद करते हैं, श्रममेव जैसी बढ़ती भावना के साथ हमें डॉ. भीमराव अंबेडकर के योगदान को सदैव याद रखना चाहिये।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. भारत में श्रम अधिनियम: प्रो. आर.सी. अग्रवाल प्रका. साहित्य भवन दिल्ली
2. Dr.Ambedkar's Thoughts on Indian Economy Ed.by Dr.C.Muniyan Mayas Pub. New Delhi.
3. हिंदू कोड बिल: इतिहास और संघर्ष, अनिल गजभिये में साहित्य भवन दिल्ली
4. डॉ. बाबा साहब अंबेडकर लेखक धनंजय कीर पापुलर प्रकाशन नई दिल्ली
5. भारत का संविधान : डॉ. बी.आर.अम्बेडर सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली
6. Ambedkar: an Over View, Rupa & Com.New Delhi.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

हिन्दी लेखिकाओं की रचना धर्मिता एवं आधुनिकता (कहानी के विशेष संदर्भ में)

डॉ. विजयलक्ष्मी पोद्दार *

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) एम.के.एच.एस. गुजराती गर्ल्स कालेज, इन्दौर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – साहित्य की दृष्टि से रचनाकार का मानस संवेदना, कल्पना, सौन्दर्य, चेतना एवं अभिव्यंजना, शक्ति की दृष्टि से साधारण व्यक्ति की अपेक्षा कुछ विशेष होता ही है। अनुभूति एवं संवेदनाओं का स्तर स्त्री एवं पुरूषों में लगभग समान या प्राय: स्त्रियों में अधिक होता है। लेखक हो या लेखिका या फिर कवि अथवा कथाकार चाहे जो हो उसके लिये अपने युग और जीवन, परिवेश को देखने की मौलिक दृष्टि और उसे महसूस करने की व्यापक संवेदनशीलता की अपेक्षा की जाती है और इसी के द्वारा उसकी रचना की सार्थकता भी बढ़ती है।

विषय विवेचना – आज साहित्य की रचनात्मकता के केन्द्र में भी स्त्री–विमर्श की चर्चा है। पश्चिम में वर्जीनिया कुल्फ, पर्ल एस बक, सिमोन–द–बुआ ने स्त्री–विमर्श को परिभाषित किया तो भारतीय उपमहाद्वीप में भी कई लेखिकाओं ने इस संदर्भ में कीर्तिमान रचे हैं। तसलीमा नसरीन, अरूधति रॉय भुंप्पा लाठी, अमृता प्रीतम, नासिरा शर्मा, मालती जोशी, ज्योत्सना, फहमीदा रियाज, ताहिरा नादिर, शोभा डे, पद्मा सचदेव, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, मृदुला गर्ग, राजकुमार अमृत कौर, अजित कौर, इंदु जैन, मैत्रेयी पुष्पा, चित्रा मुद्गल, राजी सेठ, अर्चना वर्मा, कात्यायनी, नवनीता दास सेन, स्नेहलता चट्टोपाध्याय, गगन गिल जैसी लेखिकाओं ने स्त्री अनुभव, यौनावेग, संत्रास, शोषण, संघर्षों की सशक्त अभिव्यक्ति देती हुए अपनी आवाज बुलंद की हैं। आवारा मसीहा प्रभाकर माचवे और महान बंगाली उपन्यासकार शरद चट्टोपाध्याय ने विल्हेम राईश के सैक्स एकॉनामी (1964) और कट मिलेट के सेक्स पालिटिक्स (1969) से बहुत पहले 'नारीदेर मूल्य' (नारी का मूल्य, 1914) में इस महामंत्र का उद्घोष किया था कि नारी का सतीत्व ही नहीं उसका नारीत्व भी महान है। आधुनिक नारी के व्यक्तित्व को शरतचन्द्र ने जितनी गहराई से उजागर किया है वह बेमिसाल है। उनकी पुस्तकें नारी सशक्तिकरण के दौर में प्रेरक मार्गदर्शक बन सकती है। 'पिछले दशकों के साहित्य में काफी बदलाव आ गया है। परम्परा का टूटना कोई बुरी बात नहीं है, वस्तुत: पुरानी, परम्परा का टूटना ही नई परम्परा का बनना भी है महिला साहित्यकारों में आधुनिक बोध से प्राय: यह भ्रम होता है कि महिलाओं की आधुनिकता स्त्री–पुरूष की बराबरी के बोध तक ही सीमित है। नारी मुक्ति का आव्हान डी आधुनिकता का लक्षण है। 'नारी मुक्ति' का भी बहुत सीमित अर्थ लगाया जाता है कि पुरूष प्रधान समाज के अनुशासन से मुक्ति ही नारी मुक्ति है। जबकि नारी मुक्ति का सही अर्थ यह कदापि नहीं है कि वह उच्चश्रृंखल हो जाये या अपना शील सौजन्य छोड़ दें। वह अपने अधिकार और कर्तव्य दोनों की पहचान कर सके और एक स्वस्थ्य नागरिक बन सकें, तभी वह आधुनिक कहीं जायेगी, तभी आधुनिकता स्त्री और पुरूष की अलग–अलग खंडित नहीं होगी आधुनिक बोध का अर्थ है, मानव के जीवन मूल्यों का परीक्षण करते रहना। इसके साथ ही यह भी शर्त रहती है यह जांच या परीक्षा पहले से किसी की दी हुई है तो वह फिर से स्वयं के जांच की अपेक्षा रखती है, नहीं तो दूसरे की आधुनिकता रूढीग्रस्तता बनकर रह जाती है ।भारतीय समाज में अधिकांश लोगों के मन में आधुनिक होने का अर्थ पश्चिमी होना है और पश्चिमी होने का अर्थ तक को ही अंतिम कसौटी मानना है। उत्पादन एवं उपभोग की वृद्धि को ही विकास का मापदण्ड मानना है। प्राय: लोग भूल जाते है कि हर समाज की आधुनिकता उस समाज की परिस्थितियों से उत्पन्न होती है। इसलिये कुछ न कुछ विशिष्ठ अवश्य होती है। 'भारतीय समाज में यदि मानवीय संबंधों को व्यक्ति की गरिमा से जोड़ते हुए पवित्रता देने का प्रयत्न है तो यह हमारे समाज की आधुनिकता है।' आधुनिकता तो एक होती है, वह स्त्री की भी होती है, पुरूष की भी, नारी के अधिकार की बात करना पुरूष की आधुनिकता का लक्षण है। समस्या नहीं होती है। महिला होने के नाते वह सामाजिक व्यवस्था के उन पाशों को सबसे अधिक भंजनीय मानती है, जो उसको जकड़े हुए है, उस हद तक तो उसकी पहचान अलग होती है किन्तु उस वक्त तक महिला साहित्यकार की समग्र पहचान नहीं होती जब तक कि महिला साहित्यकार अपना महिला भाव छोड़कर साहित्य भाव से सोचे, तब तक यह आधुनिकता अधूरी रहती है। भारत की महिला साहित्यकारों में कुछ तो शहरीपन को आधुनिकता का पर्याय मानकर चलती है और यह बात आधुनिकता के बाहरी लक्षणों औद्योगिकरण, नगरीकरण, तकनीकीकरण, शहरीकरण आदि में भले ही आते है परन्तु उनका भीतरी लक्षण यह सब नहीं है। परिवार का टूटना और बिखरना अपने आप में आधुनिकता नहीं है द्य जब तक कि उसके टूटने का अहसास मानीवय संबंधों के स्वरूप पर विचार करनें के लिए विवशन करता हो द्य इस प्रकार स्त्री–पुरूष के संबंधों की जटिलता के निदान के संबंध में भी बात की जा सकती है। पर तभी जब कि यह निदान मानवीय करूणा को अवश्य याद रखता हो। इस तरह तकनीकी विकास के कारण सुलभ हुई नयी सुविधाओं से घर आधुनिक नहीं हो जाता।

आधुनिकता की रात अकेलेपन की राह है। आधुनिकता पर हम यदि बहस रें तो इस पक्ष को भी लेना चाहिए कि अकेलापन भीड़ का अकेलापन नहीं है भीड़ में भी अपनी–अपनी सुरक्षा में व्यस्त रहते हुए व्यक्ति का अकेलापन होता है। यह अकेलापन भीड़ को अपने से अलग देखते हुए अकेलेपन का अनुभव होता है। 'जिन महिला लेखिकाओं ने अपने समाज की हजारों स्त्रियों की निस्पन्दता से खीचकर प्रतिकार का न सही, नकार का

मानक धारण किया है, उन्होंने ही आधुनिक बोध सही मायनें में जगाया है।' यहां मैं ऐसी ही हिंदी की कथा लेखिकाओं की चर्चा करना चाहूंगी। 'पहली बार उषा प्रियंवदा की 'वापसी' (1960) को लेकर चाय के कप में आधुनिकता का सैलाब आया तथा एक बवंडर उठा।' इस तरह छठे दशक की महानिं में आधुनिकता को खोजा और पाया गया। आधुनिकता के बोध को लेकर नई-कानी आंदोलन को उषा प्रियवंदा की कहानी 'वापसी' के आधार पर बकायदा चलाया गया। उषा प्रियंददा की इस कहानी 'वापसी' में इंसान किस तरह अपने परिवेश से कट जाता है कि उसे परायेदपन, अजनबीपन तथा बेगानापन का बोध होनें लगता है। इसमें आधुनिकता को निरूपित किया गया है। उषा प्रियंददा आधुनिक प्रमुख लेखिकाओं में से है, आज के नारी जीवन में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात जो परिवर्तन आये है और जिन मूल्यों को आत्मसात करने तथा परम्परागत मूल्यों को अस्वीकार करने के लिए आज की नारी व्याकुल हो रही है, उसके क्या-क्या परिणाम हुए है, वह उषा प्रिंयवदा की कहानियों में बड़ी सुक्ष्तता के साथ मुखरित हुए है। दूसरे ढंग की उनकी वे कहानियाँ है जिनमें पति-पत्नि संबंधों की आधुनिक परिवर्तित संदर्भो में व्याख्या है। 'जिंदगी और गुलाब के फूल' (1961), 'एक कोई दूसरा' (1966), 'कितना बडा झूठ' (1972) आदि कहानी संग्रह है।

मन्नू भंडारीजी की कहानियाँ आधुनिकता बोध एवं वैवाहिक चेतना से अनुप्रमाणित है, उनकी कहानियाँ पारिवारिक जीवन, पति-पत्नी के संबंधों एवं आधुनिक प्रेम तक सीमित है। आधुनिकता एवं स्वतंत्रोत्तर नारी जीवन में हुए परिवर्तनों पर उन्होंने व्यंग्य पूर्ण प्रहार किए है। 'रानी मा का चबूतरा' घर, इंसान, कील और कसक, तीसरा आदमी, घुटन आदि ऐसी कहानियाँ है जिनमें आधुनिकता एवं नारी के विभिन्न परिपार्श्व भी स्पष्ट हुए है। 'सुधा अरोडा' की कहानियों में भी आधुनिक युग के शहर के युवक एवं युवतियों की परेशानियाँ है। इन्हें कहने में न केवल वह कलागत तटस्थता का परिचय देती है, बल्कि आधुनिकता के उस बोध का भी जो मोह और उसके भंग की स्थिति का है। इसके अलावा चाहे अनीता आलेक की 'लाल परांदा' हो, अन्चविता अग्रवाल की 'अंधेरे में' कहानी है जिनमें आधुनिकता का बोध पहले दौर का है। जिसे हर लेखिका ने अपने निजी परिवेश में स्वीकारा है। समकालीन लेखिका कहानीकारों में निरूपमा सेवती की 'संक्रमण' दीप्ति खंडेलवाल की 'क्षितिज' आदि कहानियों में भी आधुसनिकता बोध दर्शाया गया है। मंजुल भगत की 'अनारों' में यह आधुनिकता बोध देखनें को मिलता है। 'टूटा हुआ इन्द्रधनुष' तथा 'लेडी क्लब' नामक इनकी लंबी कहानियों में फैशन और दिखावे की पश्चिम की नकल की हुई संस्कृति को आधुनिकता माननें वाली स्त्रीयों पर तीखा प्रहार किया है। आज की नारी की यही त्रासदी है।

मृणाल पाण्डेय की कहानियों में आधुनिक लेखिका की ईमानदारी, सच्चाई से देखनें को मिलती है, जो जैसा है वह वैसा ही स्वीकार करनें की सच्चाई और उसके प्रति किसी आदर्श स्थिति का पूर्वाग्रह या दबाव न होना यह उनका ईमानदार आधुनिकता बोध है। 'मृणाल पाण्डेय' एक महिला कथाकार के नाते 'शरण्य की और' (1970) कहानी में आधुनिक युवती की उस समस्या को लेती है जो तलाक के पहले की है याने वर के वरण की है और इनमें आधुनिकता का जो बोध उजागर होता है वह महिला कहानीकार की सीमा के लिए हुए है।

अन्त में महिला साहित्यकारों की कुछ विशेष समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट करना चांहूगी। भारत का पुरूष लेखक महिला लेखिकाओं को प्रोत्साहन की दृष्टि से देखता है और कभी-कभी अतिशय प्रोत्साहन भी देता है व उसके मूल्यांकन में अतिरंजन भी करता है। इससे महिला लेखिकाओं को बहकनें की संभावना अधिक रहती है। यदि उनकी साहित्यकार के रूप में सही परख हो तो उनकी रचना शीलता के लिए यह एक स्वस्थ वातावरण होगा, पर ऐसा नहीं है। दूसरी समस्या यह है कि महिला लेखिकाओं से यह अपेक्षा की जाती है कि वह केवल महिलाओं के बारे में ही लिखे, जैसा कि संपूर्ण जीवन से उसका कोई संबंध ही नहीं है उसे अलग कोटी का प्राणी मान लिया जाता है। किसी पुरूष लेखक से कोइ यह नहीं पूछता कि लेखक और आपके गृहस्थ जीवन में कोई वैषम्य तो नहीं है, परन्तु महिला लेखिकाओं से अवश्य पूछा जाता है मानोकि महिला को लिखना ही घर गृहस्थी में बवंडर है यह स्थिति स्वस्थ लेखन के लिए हितकारी नहीं है। एक और बड़ी समस्या यह है कि उनकी तुलना महिला लेखिकाओं से की जाती है, यह नहीं सोचते कि लिखना तो विधाता का दिया हुआ वरदान है और लिखने वाला मन तो स्वयं ही स्त्रीमन होता है, जिनमें कोमल संवेदनशीलता होती है। बिना नारी चित्ता के साथ एकाकार हुए कोई रचना की ही नहीं जा सकती। इसलिये महिला लेखिकाओं को इस हीन ग्रंथी से स्वयं को मुक्त करना चाहिए तभी साहित्य मात्रा का स्तर ऊँचा होगा।

संदर्भ :-

1. मधुमति : अगस्त 4985 संपादक - प्रकाश आतुर
2. मधुमति : अगस्त 4985 संपादक - प्रकश आतुर
3. स्वतंत्रोत्तार हिंदी साहित्य का इतिहास - कहानी - डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
4. विश्वभारती पत्रिका : विद्या बिन्दु मिश्र, पृष्ठ 22
5. हिन्दी कहानी एक नई दृष्टि - इन्द्रनाथ मदान
6. आधुनिकता और सर्जनात्मक साहित : डॉ. इन्द्रनाथ मदान आधुनिकता और कहानी पृष्ठ 445

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. आधुनिकता और सर्जनात्मक :डॉ. इन्द्रनाथ मदान साहित्य
2. हिंदी कहानी नई दृष्टि : इन्द्रनाथ मदान
3. स्वतंत्रोत्तर हिंदी साहित्य का इतिहास :डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, राजाल एण्ड संस
4. आधुनिकता बोध और आधुनिकीकरण : डॉ. रमेश कुंतल मेघ
5. हिंदी लेखिकाओं की श्रेष्ठ कहानियाँ : योगेन्द्र कुमार लल्ला श्रीकृष्ण राष्ट्रभाष प्रकाशन नई दिल्ली
6. मन्नू भंडारी का साहित्य : किशोर शिरोडकर विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर
7. श्रेष्ठ कहानियाँ :मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन अंसारी मार्ग, दरियागंज
8. महिला उपन्यासकारों की : डॉ. शशिप्रभा वर्मा प्रकाशक विद्याविहार, 106,/154, गांधी नगर, कानपुर
9. महिला उपन्यासकारों की :डॉ. शशि जेकब प्रकाशक जवाहर रचनाओं में वैचारिकता पुस्तकालय सदर बाजार मथुरा

पत्र पत्रिकाऐं :-

1. संचेतना :- जून 4974, कान्हाजीसिंह तोमर का लेख 'कथा लेखिकाओं का रचना संसार'
2. विश्वभारतीय पत्रिका : संपादक : रामसिंह तोमर (महिला साहित्यकारों के साहित्य में आधुनिकबोध, विद्याबन्धु सिंह, पृ. 22)
3. मधुमति : अगस्त 4985, संपादक : प्रकाश आतुर

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

वैश्विक महामारी में जनसंचार माध्यमों पर विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. संगीता कालरा*

* एम. के. एच. एस गुजराती गर्ल्स कॉलेज, इंदौर (म.प्र) भारत

प्रस्तावना – जनसंचार के माध्यम से संपूर्ण विश्व को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सूचना प्राप्त हो रही है। दूरदर्शन विश्व के दिग्दर्शन करवा रहा है तथा रेडियो श्रव्य के माध्यम से एवं प्रिंट मीडिया लिखित रूप से पाठकों को महत्वपूर्ण सामग्री पहुंचा रहे हैं। कंप्यूटर के द्वारा इंटरनेट की उपलब्धि सामाजिक संजालो (सोशल मीडिया) से व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक रूप से संदेश प्रेषित एवं प्राप्त किए जा रहे हैं। जनसंचार के साधन विशाल पैमाने पर सूचना व मनोरंजन क्षेत्र में कार्य को पूर्ण कर रहे हैं। जनसंचार के माध्यमों पर शोध करने से पूर्व जनसंचार का अभिप्राय एवं कार्य शैली एवं महत्व जानना आवश्यक है। जनसंचार से तात्पर्य व्यक्तिवादिता का अंत करना, इसे ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार इस तरह परिभाषित किया गया है 'जन का अभिप्राय पूर्ण रूप से व्यक्तिवादिता का अंत है स्पष्ट है कि जन शब्द व्यापक अर्थ रखता है।' जनसंचार दो शब्दों से मिलकर बना है जन संचार, जन से तात्पर्य व्यक्ति से और संचार अर्थात संप्रेषण होना यह संप्रेषण सदियों से प्रत्येक क्षेत्र में होता आ रहा है। जनसंचार से अभिप्राय जनसमूह हेतु विशिष्ट सूचनाएं संप्रेषित अथवा संचारित की जा रही है।जनसंचार क्रियात्मक रूप से कार्य करता है, प्रतिपुष्टि उसे सर्वेक्षण करने पर ज्ञात होती है। इसका कारण जनसंचार प्रतिक्रियात्मक प्रक्रिया करने में असमर्थ है। डी.एस. मेहता जनसंचार के शब्दों में इससे इस तरह परिभाषित किया है 'जनसंचार का अर्थ सूचना जनसंचार माध्यमों पर जैसे रेडियो, दूरदर्शन और चलचित्र द्वारा सूचना ,विचार और मनोरंजन का प्रचार प्रसार करना है।' उपरोक्त परिभाषा से यह ज्ञात होता है कि जनसंचार के माध्यम विशाल पैमाने पर सूचनाओं विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुंचाते हैं एवं व्यक्तिवादिता का अंत कर एकात्मक एवं समरूप के दृष्टिगत कार्य करते हैं।

उपयोगिता– वर्तमान में जनसंचार के माध्यम आधुनिक तकनीकी क्षेत्र की देन है। जनसंचार के एकपक्षीय मार्ग के साधन दूरदर्शन ,रेडियो, प्रिंट मीडिया विशाल समूह को जोडे हुए हैं अर्थात जनसंचार के माध्यम जन समूह में सूचनाओं को प्रेषित करते हैं एवं जनसाधारण को विश्व में घटित घटनाओं एवं परिवर्तन से निरंतर अवगत करवाते रहते हैं। तकनीकी साधनों के विकास से सूचनाएं द्रुत गतिमान होकर जनसमूह के बीच पहुंचती है। संपूर्ण जगत को जन संचार के माध्यमों ने उड़ान दी है, जिसकी कल्पना पुरातन युग में मानव जाति करती थी, जिसका उल्लेख धर्म शास्त्रों एवं साहित्य क्षेत्र में किया गया है। शास्त्रों में लिखी यह उक्ति 'वासुदेव कुटुंबकम' आज वर्तमान परिदृश्य में सार्थक और सटीक चरितार्थ होती है। राजनीति, धार्मिक क्षेत्र, शिक्षा व सांस्कृतिक क्षेत्र तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्षेत्र में जनसंचार माध्यमों का अमूल्य योगदान है।

विश्लेषण– प्रस्तुत शोध पत्र में वैश्विक महामारी कोविड–19 में जनसंचार के माध्यम दूरदर्शन, रेडियो, समाचार पत्र की भूमिका का सकारात्मक एवं नकारात्मक दृष्टिकोण से विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जा रहा है।जनसंचार के माध्यमों पर विश्लेषण करने का उद्देश्य यह है कि वैश्विक महामारी कोविड–19 में जन संचार के माध्यमों पर अहम जिम्मेदारी रही और इस महामारी में जनसंचार माध्यम की भूमिका निर्वाह सकारात्मक रहा अथवा नकारात्मक कौन सा पक्ष अधिक प्रबल रहा? इस पर विश्लेषणात्मक अध्ययन करना अति आवश्यक है।

सकारात्मक दृष्टिकोण– वैश्विक महामारी में संपूर्ण विश्व के देशों में त्राहि–त्राहि मची थी मृत्यु का तांडव नृत्य चल रहा था। विश्व के समग्र राष्ट्रों की सरकारें इस विनाश लीला के दृश्यों को देखकर द्रवित व लाचार थी, विश्व स्वास्थ्य संगठन इस बीमारी की कोई दवा नही होने के कारण साधारण जन को निर्देश वह अनुपालन करवाने हेतु प्रयास कर रहे थे, प्रशासन चिकित्सक सभी इस संकटकालीन युद्ध में बहादुर सिपाही की तरह मुकाबला कर रहे थे। विश्व के सभी देशों एवं राज्यों की सीमाएं सील कर दी गई, यात्राएं रोक दी गई।सभी वाहनों को प्रतिबंधित कर दिया गया लॉकडाउन लगा दिए गए साधारण जन जब घरों में मजबूर एवं बेबस होकर कैद हो गए थे। उस समय एकमात्र सहारा जनसंचार के माध्यम ही रहे, जो प्रशासन एवं जनता के बीच एक सेतु बनकर महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे थे। यदि जन संचार के माध्यमों के सभी पत्रकार, रिपोर्टर अपनी जान जोखिम में डालकर विश्व में घटित घटनाओं के प्रत्यक्ष दर्शन न कराते अथवा सूचना एकत्रित कर प्रसारित ना करते तब साधारण जन आदिमानव अथवा पाषाण युग की तरह गुफाओं (घरो) में अनभिज्ञ बनकर निवास कर रहा होता।

संपूर्ण जगत से संपर्क टूटने पर प्रधानमंत्री, विश्व स्वास्थ्य संगठन जनता से संपर्क नहीं कर पाते उन्हें मार्गदर्शन नहीं दे पाते तथा निर्देशों का पालन भी नहीं करा पाते।जन संबोधन इस विकराल आपदा में आवश्यक था, जिसकी भूमिका जनसंचार के माध्यमों ने बखूबी निभाई। जनसंचार के सभी माध्यम वैश्विक महामारी के वीभत्स दृश्यों एवं भयानक स्थिति से जनता को अवगत करवा रहे थे। मृत्यु दर अथवा स्वस्थ होने वाले आंकड़ों की जानकारी भी एकत्रित कर प्रसारित कर रही थी।यदि साधारण जन स्थिति का जायजा लेने घरों से बाहर निकलते तब कई व्यक्ति संक्रमित हो जाते एवं मृत्यु दर चौगुना होने की संभावना थी। दूरदर्शन प्रत्यक्ष रूप से दृश्यों का अवलोकन करवा रहे थे, जो बड़े–बड़े नेता एवं अभिनेता भी घटनास्थल पर पहुंचकर नहीं कर सकते थे। समाचार पत्र प्रिंट मीडिया पाठकों को सूचनाएं

पहुंचा रहे थे तथा रेडियो श्रव्य के माध्यम से तथा इंटरनेट प्रदत्ता सामाजिक संजालें(सोशल मीडिया) व्यक्तिगत रूप से संदेशों, शोक संदेशों व श्रद्धांजलि, संवेदनाएं प्रेषित कर रहे थे। जनसंचार के माध्यमों ने अपना दायित्व बखूबी निभाया है । जनसंचार के माध्यम से ही विश्व को सूचना प्रसारित की गई है, व मजबूर व साधारण जनता के मसीहा बनकर जानकारियों के द्वारा अपराधी तत्वों के द्वारा नकली दवाइयां एवं इंजेक्शनों बेचने पर प्रशासन को कार्यवाही करवाने में सहयोग करते रहे । मरीजों के परिजनों को भी सचेत कर समाज व देश को अमूल्य योगदान दिया।

नकारात्मक दृष्टिकोण– वैश्विक महामारी कोविड–19 में विशाल जनसमूह सूचना एवं मार्गदर्शन हेतु जन संचार के माध्यमों पर निर्भर रहा। जनता एवं प्रशासन के बीच लॉकडाउन में जो जन संपर्क टूट गया था। उसमें गतिविधियों को संचालित एवं सूचनाओं को विस्तारित करने का कार्य जनसंचार के माध्यम बने हुए थे ,परंतु इस भयावह स्थिति में भी जनसंचार के माध्यम खबरों को सनसनीखेज बनाना एवं टिप्पणियों तथा परिचर्चा के माध्यम से दहशतनुमा बना रहे थे। बुजुर्ग एवं कमजोर व्यक्ति सनसनी घटनाओं को बारंबार देखने से निराशाग्रस्त हो रहे थे ।आत्मविश्वास की कमी से भी कई व्यक्तियों ने मानसिक व शारीरिक पीड़ा को झेला है, परिजनों के जाने का गम उन्हें विचलित कर रहा था। वही घटनाओं पर परिचर्चा के माध्यम से भविष्य में अनुमानकर्ता के समाज में एक निराशावादी माहौल बना रहे थे।

निष्कर्ष– प्रस्तुत शोध पत्र में सकारात्मक व नकारात्मक पक्ष दृष्टिकोण के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि वैश्विक महामारी कोविड–19 में जन संचार के माध्यमों का उद्देश्य साधारण जन को विश्व की स्थिति से परिचित करवा कर उनके परिणामों को दर्शाना तथा करोना की दवा संबंधी अनुसंधानओ से अवगत करवाना, प्रशासन एवं जनता के बीच संपर्क बनाए रखना तथा जनसंचार के माध्यमों से साधारण जन को निर्देशों का पालन करवाना तथा मार्गदर्शन करना। जनसंचार के माध्यमों ने समाज में देश के प्रति जो दायित्व था। उसे अदा करने में बखूबी भूमिका निभाई है। समाज एवं देश में जनता में आत्मविश्वास बनाए रखने एवं हौसला बुलंद करने का का कार्य भी किया है। वैश्विक महामारी में सकारात्मक दृष्टिकोण अधिक प्रबल रहा है। घटनाओं एवं टिप्पणियों परिचर्चाओं की पुनरुक्ति इसका नकारात्मक पक्ष रहा। परंतु सकारात्मक पक्ष को दृष्टिकोण में रखते हुए वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जनसंचार के माध्यमों ने अपना अमूल्य योगदान दिया है।

सुझाव– जनसंचार के माध्यम से प्रसारित सूचनाओं का अवलोकन सभी समाज के वर्ग एवं उम्रदराज व्यक्ति भी करते हैं अत: सूचनाओं के परिणाम को दृष्टिगत रखकर सूचनाओं की टिप्पणी एवं परिचर्चा करने का प्रयास किया जाना चाहिए। साधारण जन का मानसिक संतुलन बना रहेगा तभी वह आपदाओं का सामना कर सकेगा। उन पर जीत हासिल कर सकेगा। जनसाधारण सूचनाएं एवं जानकारी अवश्य प्राप्त करें परंतु सीमित समय में क्योंकि जनसंचार माध्यम समाचारों को बारंबार इसलिए प्रसारित करता है कि कोई दर्शक सूचना प्राप्त करने में वंचित ना रह गया हो वह कभी भी प्राप्त कर सकता है ।उसके लिए उसे इंतजार करने की आवश्यकता ना हो दर्शकों को यह सुझाव है कि जनसंचार द्वारा सूचना प्राप्ति के पश्चात मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं। प्रयुक्तकर्ता स्वयं अपनी मानसिक स्थिति का ध्यान रखते हुए जनसंचार के माध्यम से प्रसारित खबरों पर विचलित ना हो । मानव को ईश्वर प्रदत्त यह गुण मिला है कि वह अपनी प्रवृत्ति जिस तरफ प्रयुक्त करना चाहे कर सकता है अत: जन संचार के माध्यमों से प्रसारित सूचनाओं को ग्रहण करने की क्षमता पर ध्यान रखें और मानसिक संतुलन तथा आत्मविश्वास को बनाए रखें।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. संचार और फोटो पत्रकारिता– डॉ. रमेश मेहरा
2. भारत में जनसंचार और प्रसारण मीडिया– डॉ. मधुकर ले ले

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

ब्रिटिश काल का कला घोटाला

अरविन्द कुमार *

* सहायक अध्यापक (कला) लोनी इंटर कॉलेज, लोनी, गाजियाबाद (उ.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारत को कभी 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था। कहने की आवश्यता नहीं कि इस सोने की चिड़िया के पंख नोचने के लिए अनेक बाहरी आक्रांता शिकारी बनकर यहाँ आते रहे। इन शिकारियों में इस्लामिक आक्रांता अधिक थे। क़भी तुग़लक, क़भी गज़नी, क़भी ख़िलजी और कभी मुग़ल। सबने अपने-अपने तरीक़े से इस सोने की चिड़िया के पंख नोचे। इरादा तो ब्रिटिश शिकारियों का भी यही था, लेकिन एक शिकारी के मुंह से दूसरे शिकारी को निवाला छीनना, जान जोख़िम में डालने जैसा होता है, अत: ये भेष बदलकर आए। शिकारी बनकर नहीं बल्कि व्यापारी बन कर; और व्यापार की आड़ में इन्होने अपना शिकारी वाला जाल बिछा दिया। करना तो इन्हे भी शिकार ही था, लेकिन इनका तरीका अलग था। बहुत बार तो यह तरीका इतना अलग होता था कि शिकार को भी इसमें अपनी प्रतिष्ठा दिखाई पड़ती थी। ऐसा ही एक तरीका था सुविधा शुल्क लेकर भारतीय नवाबों के यथार्थवादी आदमकद चित्र बनवाना। सबसे पहले तो भारतीय नवाबों और राजा महाराजों में इन आदमकद चित्रों को प्रतिष्ठा का प्रयाय बनाकर पेश किया गया और जब हर नवाबज़ादा इन्हे अपनी प्रतिष्ठा और मूंछ से जोड़कर देखने लगा तो इन चित्रों की मुंह मांगी क़ीमत वसूल की गयी। यह सोने की चिड़िया के पंख नोचने का व्यापारिक तरीका था जिसनें हिन्दुस्तान के असंख्य चित्रकारो को बेरोजगार कर दिया और उनके हिस्से की आय का सैंकड़ों गुणा धन इन ब्रिटिश व्यापारियों और इनके द्धारा बुलाये गए ब्रितानी चित्रकारों की झोली में चला गया। ब्रिटिश व्यापारियों की लूट का यह नायाब तरीका कुछ हद तक विभिन्न क्षेत्रों हो रहे आजकल के घोटालो की तरह था जिसका विश्लेषण करने पर इसमें एक बड़े कला घोटाले की बू आती है।

शब्द कुंजी – ब्रिटिश व्यापारी, ब्रिटिश कलाकार, भारतीय नवाब, आर्ट एडिक्शन, कला घोटाला।

प्रस्तावना – 2016 में प्रकाशित शशि थरूर की पुस्तक '**एन एरा ऑफ डार्कनेस : दि ब्रिटिश एंपायर ऑफ इंडिया**' में मैकाले का जिक्र करते हुए बताया गया है कि, '**उसने ईस्ट इंडिया कम्पनी के पदाधिकारियों को 'नवाब' की उपाधि दी थी और ऐसा इसलिए क्योंकि वे भारत से तरह-तरह की लूट का माल अपने वतन ब्रिटेन ले जाते थे तथा वहाँ ऐशोआराम की ऐसी जिंदगी बशर करते थे कि वहाँ के लॉर्ड भी इन तथाकथित नवाबों की होड़ नहीं कर पाते थे।**' इस शान-ओ-शौकत नें इन तथाकथित ब्रिटिश अधिकारियों को निरा अंधा और अमानवीय बना दिया था। उदाहरण के लिए, एक स्थान पर मैकाले नें भारत के प्रथम वास्तविक गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स की नीति के विषय में भी स्पष्ट कहा है कि, 'कम्पनी के कुछ अफसरों के काले-कारनामे तो बेहद अमानवीय हैं'। ब्रिटिश अधिकारियों के ऐश-ओ-आराम की इसी अमानवीय भूख नें इस तथाकथित कला घोटाले की बिसात बिछाई।

भारतीय कला और संस्कृति का दमन – भारतीय कला और संस्कृति के दमन का प्रमुख कारण मैक़ाले की नीति को माना जाता है। उसने अपने विश्लेषण से यह जान लिया था कि जब तक भारत की कला और संस्कृति का दमन नहीं किया जायेगा तब तक भारत पर राज नहीं किया जा सकता। उसकी एकता और अखंडता को नहीं तोड़ा जा सकता। अपनी परम्पराओं से विमुख और विरक्त व्यक्ति पर राज करना आसान होता है। अत: सबसे पहले 'फूट डालो, राज करो' की नीति अपनाई गयी। फिर किस तरह इसी नीति को अपनाकर ब्रिटिश व्यापारियों नें यहाँ अपना आधिपत्य स्थापित किया यह किसी से छिपा नहीं है। किन्तु, इन व्यापारियों का मन इतने से भी न भरा। यहाँ के बचे-खुचे राजा महाराजाओं एवं नवाबों की संपत्ति पर इनकी आंखे सदा गड़ी रहीं। इस दौलत को हथियाने के लिए इन्होने तरह-तरह के हथकंडे अपनाए। सबसे पहले हमारे यहाँ की तमाम चीजों को तुच्छ और विदेशी चीजों को उच्चकोटि का साबित करने की मुहिम छेड़ी गयी। अंग्रेजी जानने वाले, अंग्रेजी बोलचाल, अंग्रेजी चालढाल और अंग्रेजी पहनावे वाले व्यक्तियों को ज्यादा तवज्जो दी जाने लगी। धीरे-धीरे छोटी से छोटी अंग्रेजी चीज का महत्व बढ़ गया और देशी चीजें तुच्छ समझी जाने लगीं। कमोबेश चित्रकला की भी यही स्थिति रही।

वैसे आज भी स्थिति बदली कहाँ है? कुछ मायनों में तो आज भी स्थिति ज्यों की त्यों है। आज भी हम भारतीय भाषा, भारतीय शिक्षा, भारतीय पहनावे और भारतीय खान-पान के मुकाबले अंग्रेजी भाषा, अंग्रेजी शिक्षा, अंग्रेजी पहनावे और अंग्रेजी खान-पान को ही अधिक महत्व दे रहे हैं। बहरहाल, उस समय यह किसी नशे की लत की तरह था, ख़ासकर राजसी परिवारों के लिए। जिसके चलते अनेक राजसी परिवारों और नवाबों नें बे-इंतिहा दौलत पानी की तरह बहा दी। पर दरअसल, वह एडिक्शन या शान-शौकत का मुद्दा नहीं था बल्कि ब्रितानी व्यापारियों का सोच-समझकर रचा गया एक षड्यंत्र था। जिसके चलते हम अपनी कला और कलाकारों को तुच्छ और अंग्रेजी कला और कलाकारों को उच्च समझने लगे। जिसका परिणाम यह हुआ कि हमने अपने कलाकारों को तो काम देना बंद कर दिया किन्तु विदेशी कलाकारों पर हमने अंधाधुंद धन वर्षा आरंभ कर दी। जिससे भारतीय

कला और कलाकारों की स्थिति तो दयनीय होती चली गयी किन्तु विदेशी कलाकारों के लिए हिन्दुस्तान सोने का अंडा देने वाली मुर्गी बन गया।

भारत में विदेशी कलाकारों का आगमन – जैसा कि सर्वविदित है कि भारत में आधुनिक कला का उदय पश्चिमी कलाकारों के भारत आगमन के साथ माना जाता है। जिसकी शुरुआत ब्रिटिश इंडिया कंपनी के सहयोग से भारत में धनार्जन की दृष्टि से आए ब्रिटिश कलाकारों से होती हैं। अट्ठारहवीं-उन्नीसवीं शताब्दी में ऐसे सैंकड़ों पश्चिमी कलाकार भारत आए जिनका एक मात्र उद्देश्य यहाँ के नवाबों और राजघरानों के लिए चित्र बनाकर ज्यादा से ज्यादा धन बंटोरना था। ऐसे कलाकारों में मुख्य रूप से टिली केटिल, जॉर्ज विलिसन, जॉन थॉमस सेटोन, कैथेरीन रीड, विलियम होजेज, जॉर्ज फेरिंग्टन हॉर्नीब्रूक, जोहान जोसफ़ ज़ोफ़नी, आइरिश पेंटर थॉमस हिक्की, ओजियस हम्फ्रे, जॉन अलफॉउंडर, आर्थर विलियम डेविस, जॉन स्मार्ट, जी. टी. विग्ने, एमिली ईडन, ऑगस्तो सोफ़्त, फ्रैंज विंटर हाल्टर, थॉमस डेनियल, और विलियम डेनियल, आदि व्यक्ति चित्रकार एवं भू-चित्रकार थे। इन विदेशी चित्रकारों की यथार्थवादी शैली में बनें आदमक़द चित्रों ने भारतीय शाही एवं नवाबी घरानों में ब्रिटिश कला शैली के प्रति रुचि उत्पन्न कर दी। जिस कारण यहाँ के कलाकार उपेक्षा के शिकार होने लगे अथवा उनसे भी इस नवीन कला शैली जैसी ही अपेक्षाएं की जानें लगी। जिसके फलस्वरूप, शनै-शनै, भारतीयों का अपनी ही कला-संस्कृति के प्रति मोह भंग होने लगा, तैल रंगों की चमक और आदमक़द शबीह चित्रों के आकर्षण, पाश्चात्य तौर-तरीकों और वेश-भूषा नें भारतीय शाही घरानों को मोह लिया था। इसी के साथ भारतीयों के दिमाग़ में धीरे-धीरे यह भी ठूंस-ठूंस कर भर दिया गया था कि भारतीय कला, भारतीय कला-सामग्री एवं भारतीय तकनीक, यहाँ तक कि हर भारतीय सामान, विदेशी चीजों के मुकाबले बहुत ही निम्न कोटि का है। इसके भयंकर परिणाम सामने आते हैं, जैसे कि भारतीय कलाकार एवं कला-रसिक, ज़मींदार, नवाब, शासक एवं धनाढ्य वर्ग के लोग अपनी देशी वस्तुओं, कलाकृतियों एवं कला-सामग्री के प्रति उदासीन होकर महंगा विदेशी सामान रखनें अथवा ख़रीदनें को ज्यादा तवज्ज़ो देने लगे और धनाढ्य वर्ग के लोग ब्रिटिश कलाकारों से अपने आदमक़द चित्र बनवाना अपनी शान समझने लगे। धीरे-धीरे शाही-घरानों और राजाश्रय प्राप्त चित्रकारों पर इनके मालिकों या आश्रयदाताओं की निर्भरता कम होने लगी, यही नहीं इनके मेहनताने एवं सुख-सुविधाएं भी कम कर दी गयी। परिणामत: इन कलाकारों के काम की मांग बहुत कम हो गयी और अधिकांश चित्रकार अत्यंत दयनीय स्थिति में पहुँच गये। यह स्थिति तब और भी ख़तरनाक हो जाती है जब भारत पूरी तरह कंपनी के अधिकार में आ जाता है क्योंकि इस समय ईस्ट इंडिया कम्पनी के पदाधिकारी बेरोजगार अथवा आश्रयहीन हो चुके भारतीय कलाकारों से मन-माफ़िक़ चित्रांकन कराते हैं और मेहनतानें के रूप में उन्हें किसी चित्रकार का नहीं वरन दिहाड़ी मज़दूरों की तरह मेहनताना देते हैं। यह एक तरह से भारतीय कला-संस्कृति पर किया गया एक कुठराघात था जिसमें ये लोग सफल रहे। यही नहीं, अपनी कला अथवा पाश्चात्य कला के प्रचार-प्रसार के लिए ये लोग भारत में अपने कलाकारों को व्यापारिक दृष्टि से आमंत्रित करते हैं और भारतीयों के मन में बनाई विदेशी कला की छवि को जमकर भुनाते हैं।

कमीशन का खेल – जैसा कि पूर्व में बताया जा चुका है कि 1760 से 1900 ई0 तक भारत में ऐसे पचासों कलाकार आते हैं और कलाकृतियों के बदले भारतीयों से मुंह-मांगी क़ीमत भी वसूल करते हैं। इनकी कला को बढ़ावा देने के लिए कंपनी के अधिकारी इन्हे मोटी रक़म देकर इनसे चित्र ख़रीदते थे ताकि भारत में इनकी ख्याति बढ़े और यहाँ के धनाढ्य वर्ग एवं शाही घरानो से इन चित्रकारों को मोटी कमाई हो सके। यह सब उस कमीशन अथवा सुविधा शुल्क के लिए भी होता था जो भारत से की गई कमाई के एवज में इन कलाकारों को कंपनी को देना होता था। इसके बदले में कंपनी इन कलाकारों को सुरक्षा, आवास, परिवहन एवं ग्राहक मुहैया कराती थी।

ब्रिटिश अधिकारियों का कला घोटाला – कंपनी की मिलीभगत से उपरोक्त तथाकथित ब्रिटिश चित्रकार भारत से ख़ूब धन बटोरतें हैं। इस खुली लूट का अंदाजा लगाने के लिए हम एक संदर्भ लेते हैं, जोकि लगभग 1786 ई0 का हैं। **लॉर्ड कार्नवालिस** जिसे चार्ल्स कार्नवालिस अथवा मार्क्स कार्नवालिस भी कहा जाता था, 1786 में भारत आया था। यह 1793 तक बंगाल का गवर्नर जनरल रहा। **लॉर्ड कार्नवालिस के एक व्यक्तिचित्र (चित्र 1)** पर इसके चित्रकार '**आर्थर विलियम डेविस**' को 21,000 रूपये दिए गए अथवा दिलवाए गए थे, यह 1786 ई0 से 1790 ई0 के बीच की बात है, संभवत: 1786 ई0 की। कलाकारों का एक बहुत बड़ा वर्ग आज भी ऐसा है जिसे अपने बेहतरीन और बड़े चित्र के लिए भी 21,000 रूपये नहीं मिलते। कला क्षेत्र के अनेक पुरस्कार ऐसे हैं जिनकी इनामी राशि आज भी 21,000 रूपये से कम है। आज भी हमारे देश में करोड़ों लोग ऐसे हैं जो महीने भर की मेहनत में भी 21,000 रूपये नहीं कमा पाते। इन तमाम बातों के बावजूद आज बेशक यह रक़म बहुत बड़ी नहीं लगती लेकिन आज से 230 वर्ष पहले यह रक़म कितनी बड़ी रही होगी? इसकी गणना आज के हिसाब से करके देखते हैं :

अगर हम यह मान लें कि यह घटना 1786 ई0 की ही है तो 2020 तक इस घटना को 234 वर्ष पूरे हो जाते हैं इस स्थिति में यह रक़म क़रीब 5272.7 करोड़ रूपये बैठती है। लेकिन अगर यह माना जाए कि यह घटना 1786 ई0 की न होकर 1790 की है, तब भी तत्कालीन 21,000 भारतीय रुपयों का वर्तमान मूल्य करीब 4098.6 करोड़ रूपये बैठता है (गणना एफ.डी. कैलकुलेटर से की गयी है, मूल रकम 21,000 रूपये, 6.5 प्रतिशत वार्षिक ब्याज की दर से, 230 वर्ष के लिए)। इतनी बड़ी रकम आज तक के कला इतिहास में किसी भी कलाकार को अदा नहीं की गयी। यह विश्व के किसी चित्रकार को या फिर किसी कलाकृति के लिए अदा की गयी अब तक की सर्वाधिक क़ीमत से भी बहुत अधिक है।

विकिपीडिया पर उपलब्ध विश्व की सबसे महंगी कलाकृतियों के

विषय में पढ़ा जा सकता है। सबसे महंगी कलाकृति का वर्तमान विश्व-रिकॉर्ड लिओनार्दो द विंन्सी की कलाकृति **सल्वाटोर मुंडी (चित्र 2)** के नाम है जिसकी वास्तविक क़ीमत **450.3 मिलियन डॉलर (क़रीब** 3190 **करोड़ रूपये)** है अर्थात उपरोक्त चित्र की क़ीमत लियोनार्डो की पेंटिंग से लगभग 900 करोड़ रूपये ज्यादा है। विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा भी लगभग **3000 करोड़** रूपये में बनकर तैयार हो गयी अर्थात 'स्टेचू ऑफ यूनिटी' को बनाने में भी इतना पैसा ख़र्च नहीं किया गया जितना पैसा हम भारतीयों नें अपनी शान-ओ-शौकत का ढिंढ़ौरा पीटने के लिए अपने यथार्थवादी शबीह चित्रों पर ख़र्च किया। आप स्वयं तुलना करके देख सकते हैं कि भारत को किस हद तक लूटने की साज़िश रची गई थी। अग़र इन्ही तथाकथित 21,000 रुपयों को 7 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर से देखें (जैसा कि कई बैंक 7 प्रतिशत की दर से भी ब्याज दे रहे हैं अथवा एन.एस.ई. जैसे किसी विकल्प का चयन करने पर) तो यह रक़म करीब **11249.5 करोड** रुपए बैठती है। यह तो केवल एक कलाकार की एक कलाकृति का ब्यौरा है। अगर सभी कलाकारों की आय का ब्यौरा इकट्ठा किया जाये तो यक़ीनन चौंकाने वाले परिणाम सामने आयेंगे। दुनिया इसे चाहे जिस रूप में देखती हो लेकिन मैं इसे सोच समझकर किए गए एक कला घोटाले के रूप में देखता हूँ।

निष्कर्ष - यक़ीन करना मुश्किल है किन्तु सत्य यही है कि इतना धन तो यहाँ से बैंक घोटाला करके भागने वाले '**विजय माल्या**', '**नीरव मोदी**' और '**मेहुल चोकसी**' भी नहीं ले जा पाये जितना ये विदेशी कलाकार यहाँ से ले गए। नि:सन्देह भारत 'सोने की चिड़िया' रहा होगा, तभी तो अनेकानेक आक्रांताओं नें विविध प्रकार से इस चिड़ियाँ के पंख नोचने की युक्तियाँ निकालीं। कभी सीधे-सीधे आक्रमण करके, तो कभी व्यापारी बनकर, कभी इसे इसी की कला-संस्कृति से दूर करने के षड्यंत्र रचकर। बहरहाल यह तो तय है कि यहाँ के लोगों में पाश्चात्य कला के प्रति मोह उत्पन्न कराना किसी षड्यंत्र से कम न था अगर ऐसा न होता तो, न तो 'टॉमस रो' जैसे लोगों की दाल यहाँ आसानी से गल पाती और न भारत अपनी कला-संस्कृति की अमूल्य धरोहर के प्रति उदासीन होकर पाश्चात्य कला के फेर में पड़ता। तब भारतीय कला की दशा-दिशा कुछ ओर ही होती। क्योंकि तब शायद भारतीय कला सैंकड़ों सालों की अवनति और ठहराव से बच जाती।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. अग्रवाल, डॉ. गिर्राज किशोर : आधुनिक भारतीय चित्रकला, संजय पब्लिकेशन्स, आगरा, 2015, पृ.सं., 11
2. चतुर्वेदी, ममता : समकालीन भारतीय कला, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2012, पृष्ठ 4-12
3. Tharoor, Shashi : An Era of Darkness : The British Empire in India, Aleph Book Company, 2016
4. https://en.wikipedia.org/wiki/List_of_most_expensive_paintings
5. https://en.wikipedia.org/wiki/Thomas_Babington_Macaulay
6. https://en.wikipedia.org/wiki/Charles_Cornwallis,_1st_Marquess_Cornwallis
7. https://en.wikipedia.org/wiki/Statue_of_Unity

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

कोविड-19 लॉकडॉउन का भारत की प्रमुख नदियों पर प्रभाव

देवेन्द्र धुर्वे *

* सहायक प्राध्यापक (भूगोल) शासकीय महाविद्यालय, जैतहरी, जिला-अनूपपुर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश - आज संसार जिस कोरोना महामारी से पीड़ित है उसका मूल वजह मानव के द्वारा अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए विकास के नाम नगरीकरण, औद्योगिकीकरण, हरित क्रांति एवं वैश्विकरण जैसे कार्यो से प्रकृति व जल संसाधनो का अविवेकपूर्ण दोहन कर रहा है। जिसके फलस्वरूप जीव-जन्तु और वातावरण पर कार्बनडाईआक्साईड की मात्रा मे वृद्धि और जल मे ऑक्सीजन की मात्रा मे कमी तथा नदी जल की गुणवत्ता का हास हुआ हैं। जिससे हमारे देश की अधिकांश नदिया प्रदूषित हो चुकी है।

जल के बिना जीवन की कल्पना करना नामुमकिन है जो मानव अपनी आदतों, तथा जीवन शैली मे परिवर्तन कर प्रकृति के साथ संतुलन करेगा। वही सफल और स्वच्छ जीवन का भागी होगा।

शब्द कुंजी - कोरोना वायरस, लॉकडाउन,संसाधन, प्रमुख नदियॉ, गुणवत्ता, प्रकृति, मानवीय गतिविधियॉ, ऑक्सीजन, प्रभाव।

प्रस्तावना - वैश्विक महामारी के दौरान जहॉ मानव जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है वही इसके विपरीत कोविड-19महामारी की चैन को तोड़ने हेतु लॉकडाउन का प्रभाव पर्यावरण व भारतीय नदियों पर सकारात्मक बदलाव दिखाई दे रहा है। लॉकडाउन की वजह से भारत मे उपस्थित सतही जल (नदियो व नहरों) की गुणवत्ता मे वृद्धि एवं जल प्रदूषण मे कमी आई है।मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति कि लिए मानव द्वारा प्राकृतिक संसाधनों में सतही जल का अविवेकपूर्ण अति दोहन करने के फलस्वरूप प्रकृति को काफी हद तक क्षति पहुँची है। लेकिन विकासशील देश भारत द्वारा इस नुकसान की भरपाई की गति एकदम धीमी पड गई है।प्रकृति हमें हर बार इस गंभीर त्रुटि को सुधारने एवं प्राकृतिक संतुलन को बनाये रखने का संकेत देती रही है। कि हमारे चारों ओर का प्राकृतिक वातावरण स्वच्छ और मानवीय वातावरण संतुलन की अवस्था में हो। लेकिन मानवीय तकनीकी व बौद्धिक क्षमता के कारण मनुष्य अपनी सीमा लांघ रहा है। जो एक चिन्तनीय विषय है। विश्व व्यापी नोबल कोरोना वायरस महामारी जिसे सार्स-कोव2 भी कहा जाता है। इसका उदगम चीन के वूहान शहर से उत्पन्न होने वाला वायरस कहा गया लेकिन उदगम संबंधी इसकी पुष्टि हेतु जॉच कार्यवाही चल रही है।यह वायरस ने न केवल भारत को अपनी चपेट मे लिया अपितु सम्पूर्ण विश्व इस समय कोरोना वायरस के प्रकोप से गुजर रहा है। कोविड- 19 महामारी द्वारा देश के कोने-कोने के गांवो को अपनी गिरफत मे ले लिया है। जिसके बढ़ते दुष्प्रभाव को रोकने के उद्देश्य से माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा 22 मार्च को राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन की घोषणा की गई। जो तीन दिनपश्चात 25 मार्च से21 दिन का लगातार लॉकडाउन रहा। जिसके पष्चात लॉकडाउन अवधि में आवश्यकता अनरूप, वृद्धि की गई। जिस वजह से अत्यावश्यक पुलिस, चिकित्सा अधिकारी/कर्मचारी, नगर निगम, बैंक इत्यादि संस्थानों व कार्यों को छोड़कर अन्य सभी औधोगिक व मानवीय गतिविधियों और वाहनों की आवाजाही में पूर्णत: प्रतिबंध के कारण जिन्दगी मानो ठहर सी गयी। इस दरमियान यह देखा गयाकी लॉकडाउन अवधि में नदियों व नहरों के जल पर क्या प्रभाव पड़ा।

शोध पत्र का उद्देश्य एवं विधि :

1. सतही जल पर कोविड-19 लॉकडाउन के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. प्रमुख नदियों के जल गुणवत्ता का प्री लॉकडाउन और लॉकडाउन अवधि के दौरान तुलनात्मक अवलोकन करना।

शोध पत्र हेतु ऑनलाईन सर्वे द्वारा प्राथमिक आकड़े एवं द्वितीयक आकड़ों के आधार पर पर विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र- शोध पत्र हेतु भारत की वृहत प्रमुख नदियों में से गंगा, यमुना,कावेरी,गोदावरी,महानदी,तथानर्मदा नदियों के जल का बायोआक्सीडेन्ट डिमांड के आधार पर उनकी विवेचना प्रस्तुत की गई है।

वैष्विक महामारी का भारतीय प्रमुख नदियॉ पर प्रभाव- मानव सभ्यता के उदगम व विकास नदियों के समीप ही हुआ है, ऐसे साक्ष्य मिलते हैं। किसी स्थान पर जल की उपलब्धता, विकास का संकेत है। जबकि इसके अभाव में जीवन का अंत है। मानव की औघोगिकीकरण, हरितक्रान्ति एवं विकास की अवधारणा जैसी महत्वकांक्षाओं ने विगत दशकों की विविध क्रियाकलापों के परिणामत: सतही जल का दोहन कर जल को प्रदूषित किया है।परन्तु इस महामारी की वजह से लॉकडाउन ने मानवीय गतिविधियों को अवरूद्ध करके एक संदेश दिया है। यदि मनुष्य समुचित प्राकृतिक संसाधनों का कुछ अंतराल से दोहन करेगा तो प्रकृति अपने प्रदूषित नदियों को अपने आप स्वच्छ व पुर्नजीवित करने की शक्ति रखती है ।इसलिए हमें अपनी संकुचित सोच एवं विकास की गति में उचित लगाम लगाने की आवश्यकता है।

सकारात्मक प्रभाव के निम्न बिन्दु उल्लेखित है- कोविड-19 महामारी के लॉकडाउन के दौरान हमने देखा कि इसके सामाजिक व आर्थिक प्रभाव नकारात्मक रहे परंतु यदि पर्यावरण व जलसंसाधन पर ध्यान केन्द्रित किया जाये तो सभी अनावश्यक गतिविधियों के अवरूद्ध होने से प्रकृति के शांत

स्वभाव वाले वातावरण की उपलब्धता ने क्षतिको भरने व अपनी पूर्व अवस्था पाने के लिए कार्यरत थी। जिसके कारण भारत की कुछ नदियों के जल गुणवत्ता केआकड़ो का विश्लेषण में लॉकडाउन के पूर्व व लॉकडाउन के दौरान की स्थिति इस सारणी के माध्यम से प्रस्तुत की गई है।

तालिका नं 01 (अगले पृष्ठ पर देखे)

तालिका नं 01 के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कावेरी नदी के जल की बीओडी मे अधिकतम 90.5 से 96.97 प्रतिशत का सुधार पाया गया है। गोदावरी मे लगभग 65 प्रतिशत से 78.74 प्रतिशत तथा यमुना मे लगभग 42 से 66.67 प्रतिशत जल गुणवत्ता मे सुधार देखा गया साथ ही न्यूनतम जल गुणवत्ता मे सुधार गंगा नदी जलमे देखा जा सकता है।

उक्त आकड़ो की पुष्टि हेतु ऑनलाईन सर्वे के द्वारा देश के विविध राज्यों से सम्मिलित हुए 155 उत्तरदाताओ ने उत्तर दिया है। जो कि प्राथमिक आकड़े है। इसमे 82.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसारकोरोना काल के दौरान जल (नदी, झरना,तालाब इत्यादि) संसाधन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। जिससे 78 प्रतिशत लोगो ने माना है कि जल स्त्रोतो के स्वच्छता एवं गुणवत्ता सम्बन्धी सुधार हुए है तथा 17.5 प्रतिशत उत्तरदाता ने नकारात्मक प्रभाव का भी जिक्र किया है।

तालिका नं 02 : कोरोना महामारी काल के दौरान प्रतिदिन हाथ धोने मे जल का उपयोग कितनी बार करते है-

क्र.	प्रतिदिन जल उपयोग की आकृति संख्या	उत्तरदाता का उत्तर
1	चार बार	16
2	छः बार	23
3	दस बार	16
4	दस के अधिक बार	100
	योग	155

स्त्रोत : ऑनलाईन सर्वे प्राथमिक आकड़े।

कोविड-19 वायरस संक्रमणसे बचाव हेतु हाथो को प्रतिदिन स्वच्छ पानी से दिन मे बार-बार हाथ धोने व बाहर से आने के पश्चात नहाने की सलाह डॉक्टर द्वारा दी जा रही हैं। तालिका नं 02 के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि 64 प्रतिशत लोगो ने अपनी सहमति से इस महामारी के कारण घरो मे उपभोग किया जाने वाला घरेलू जल का प्रतिदिन उपयोग दस से अधिक बार किया जाता है। जिसके कारण 45 प्रतिशत अन्य दिनों की अपेक्षा जल उपभोग वृद्धि हुई है।पर्यावरण और जल प्रदूषण को दूर करने के लिए 40 प्रतिशत लोगो ने अपील की है कि अधिक प्रदूषण उत्पन्न करने वाले औद्योगिक ईकाईयो को प्रतिवर्ष 1 माह के लिए बंद रखना चाहिए ताकि नदियॉ अपनी स्वच्छता एवं गुणवत्ता सम्बन्धी पुर्नभरण कर सकें।

निष्कर्ष एवं सुझाव- उपर्युक्त अध्ययन अवलोकन के उपरांत हम इस निष्कर्ष पर पहुचते है किप्राथमिक एवं द्वितीयक आकड़ो के अध्ययन से स्पष्ट है कि कोरोना महामारी के दौरान नदी जल के आक्सीजन लेवल गुणवत्ता मे सुधार हुआ है। साथ ही इसके अतिरिक्त भी विविध घटको मे सकारात्मक बदलाव आया है।जिस कारण आवासीय उद्योग व मानवीय गतिविधियों एवं यातायात साधनों के बंद होने से पर्यावरण मे जल, वायु व ध्वनि प्रदूषण मे कमी के साथ पशु-पक्षी भी स्वछंद उड़ान भरकर विचरण कर रहे है। लेकिन सवाल यह है कि यह बदलाव,क्या जलवायु परिवर्तन संबंधी प्रभाव केसंघर्ष के लिए हम तैयार है?,क्या हम पर्यावरण अनुकूलन जीवन शैली अपनाने के लिए तैयार है?।

पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगो को संसाधनो का समुचित उपयोग व अपनी आदतो मे बदलाव लाने की आवश्यकता है। साथ ही जल का कोरोना काल मे उपयोग मे वृद्धि दर्ज की गई है। जो एक गम्भीर चिंता का विषय भी है। साथ ही पर्यावरण और विकास का संतुलन पर भी हमे कोरोना बीमारी के निवारण के जैसे ही गंभीरता से सोचना होगा और उसका शीघ्र निराकरण आवश्यक होगा। जैसे हमारे पूर्वज हमे धरती सौपकर गये थे।हमे धरती को उससे भी अधिक सुंदर और स्वच्छ रखने के लिए दृढ संकल्पित होना होगा ताकि हम समुचे भावी जीव-जगत को गुणवत्तापूर्ण वातावरण उपलब्ध करा सकें।

कोरोना काल में चिकित्सा अपशिष्ट व घरेलू अपशिष्ट का अम्बार लग रहा है जो एक चिंता का कारण है। मेडिकल अपशिष्ट के उपचार करने हेतु संयंत्र लगाये जाये साथ ही घरेलू जल का उपयोग आवश्यकता अनुसार किया जाये ताकि ज्यादा से ज्यादा जल को बचाया जा सके। हर वर्ष लगभग 1 माह का पर्यावरण लॉकडाउन लगाया जाना चाहिए। मानव ने अपने फेफड़ो की रक्षा हेतु लॉकडाउन लगाया जिससे उसे फायदा तो हुआ उसी प्रकार प्रत्येक वर्ष पर्यावरण लॉकडाउन के द्वारा प्रकृति के फेफड़ो को भी फायदा पहुचे और प्राकृतिक आक्सीजन का संतुलन बना रहे, इसके लिए अधिक से अधिक वृक्षारोपण कर धरती को हरा-भरा बनाना होगा।

1. वर्तमान मे कोरोना से ज्ञात होता है कि प्रकृति अपना स्वयं क्षतिपूर्ति कर सकती है और वायु व ध्वनि का शुद्धिकरण करने मे भी सक्षम है।
2. हमे दैनिक जीवन शैली मे पर्यावरण की स्वच्छता हेतु संसाधनो के दोहनों के प्रति सकारात्मक सोच एवं अपनी आदतो मे बदलाव की आवश्यकता है।
3. व्यवसायिक, सामाजिक एवं आर्थिक सभी तरह से प्रकृति के प्रति सदैव सकारात्मक सोच रखते हुए जमीनी स्तर पर संतुलन बनाये रखे तभी मानव जीवन सफल हो सकेगा।
4. जल संसाधनो के संबंध मे उपलब्धता का आकलन कर उन्हें स्वच्छ और हमेशा निर्मल टिकाउ रखने के लिए हमे सिद्धांतो को आधार मानकर प्रतिबद्ध रहना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. गुर्जर राम कुमार, जाट.बी.सी. (2013) -'जल संसाधन भूगोल', रावल पब्लिकेशन, जयपुर।
2. सिंह सतनाम,(2008)-'संसाधन भूगोल', यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन दरियागंज, नई दिल्ली।
3. गौतम, डॉ अलका (2005)-'संसाधन एवं पर्यावरण', शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
4. कुरूक्षेत्र पत्रिका (जून 2019)-'ग्रामीण भारत के लिए पीने का पानी', सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली।
5. योजना पत्रिका (जुलाई 2016)-'अनमोल जल संसाधन', सूचना भवन सीजीओ काम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली।
6. सेन्ट्रल पॉलूसन कन्ट्रोल बोर्ड,मिनिस्ट्री ऑफ इन्वायरमेन्ट फारेस्ट एण्ड क्लाइमेट चेन्ज परिवेश भवन ईस्ट,अर्जुननगर ,नई दिल्ली दिनांक 23 दिसंबर 2020।

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

वेबसाइट सर्च :-

1. hhttps://www.india.com/hindi-news/special-hindi/world-environment-day-2020-coronavirus-lockdown-makes-the-environment-clean-coronavirus-lockdown-caused-massive-changes-in-the-environment-4048226/
2. hhttps://www.amarujala.com/columns/blog/coronavirus-in-india-lockdown-positive-impact-on-environment
3. hhttps://hindi.indiawaterportal.org/content/laaen kadaauna-sae-saapha-hao-rahai-gangaa-nadai/content-type-page/1319335556
4. hhttps://www.orfonline.org/hindi/research/controlled-and-restrained-behavior-is-necessary-to-save-the-environment-after-lockdown-67875/
5. hhttps://www.downtoearth.org.in/hindistory/pollution/water-pollution/water-quality-improved-in-rajasthan-due-to-lockdown-71443
6. Oneline survey response link-https://docs.google.com/spreadsheets/d/1IAjUgymdomjr IBgjo_PHB0KgY9M9C9LsoU7XlY2gqTo/edit#gid= 1684507119
7. hhttps://cpcb.nic.in/
8. https://hindi.indiawaterportal.org/content/kaoraonaa-sae-khadaa-hao-sakataa-haai-bhaisana-jala-sankata/content-type-page/1319335510
9. https://www.patrika.com/kolkata-news/lock-down-impact-the-water-of-the-ganges-becomes-clean-5994780/

तालिका नं 01 : नदीवार बायोलॉजिकल आक्सीजन डिमांड (मिली ग्रामप्रतिलीटर में)

क्र.	नदी का नाम	पूर्व लॉकडाउन		लॉकडाउन दौरान	
		मार्च 2020(BoD mg/l)		अप्रैल 2020(BoD mg/l)	
		न्यूनतम	अधिकतम	न्यूनतम	अधिकतम
1	गंगा	1	4.6	BDL 0.6	5.5
2	यमुना	BDL 0.6	7.8	BDL 0.4	6.1
3	कावेरी	1.5	7.5	1	2
4	गोदावरी	1.4	8.8	1.2	6.2
5	महानदी	BDL 0.3	2.4	BDL 0.2	1.6
6	नर्मदा	BDL 0.3	1.9	BDL 0.4	1.2

स्त्रोत : सेन्ट्रल पॉलूसन कन्ट्रोल बोर्ड,मिनिस्ट्री ऑफ इन्वायरमेन्ट फारेस्ट एण्ड क्लाइमेट चेन्ज परिवेष भवन ईस्ट,अर्जुननगर ,नई दिल्ली दिनांक 23 दिसंबर 2020।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

कम्प्यूटर और हिन्दी भाषा

डॉ. विनय शर्मा *

* सहायक प्राध्यापक, प.म.ब.गुजराती वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी कहा जाता है अर्थात् मनुष्य कभी अकेला नहीं रह सकता। उसे अपना जीवन-यापन करने के लिए समाज की धारा में प्रवाहित होना अनिवार्य है। अपनी इसी विशेषता के चलते मनुष्य आज इस मुकाम पर है। लेकिन इस मुकाम तक आने के लिए मनुष्य को विभिन्न कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा है। जैसे आदिकाल में मनुष्य केवल अपना भोजन प्राप्त करने के लिए शिकार आदि एवं रहने के लिए गुफाएँ तलाशने तक ही सीमित था, परन्तु जैसे-जैसे उसने भोजन एवं निवास में स्थायित्व प्राप्त किया उसका ध्यान अन्य पहलुओं पर केन्द्रित होने लगा। इनमें सबसे प्रमुख है सामाजिक जीवन।

पहले मनुष्य अकेला रहता था, परन्तु धीरे-धीरे उसे अन्य मनुष्यों के साथ रहने की आवश्यकता महसूस हुई। जिसे पूरा करने के लिए वह धीरे-धीरे परिवार के रूप में परिवर्तित हुआ, फिर समुदाय और फिर समाज। इस सीढ़ी तक पहुँचने के लिए सर्वप्रथम उसे अपने भावों को दूसरों तक पहुँचाने की समस्या आई। कोई मनुष्य क्या चाहता है ? क्या होना चाहिए ? कैसे होना चाहिए ? आदि विचार या भावनाएँ वह दूसरों तक कैसे पहुँचाए, इसके लिए कोई एक सशक्त माध्यम की आवश्यकता पड़ी। विभिन्न समुदायों ने अपने-अपने निर्माण के लिए एक भावनात्मक एवं विचारात्मक माध्यम का उपयोग किया। जिसे बोली कहा गया और फिर धीरे-धीरे अनेक समुदायों के आपस में मेल से इन बोलियों का जो एक मिश्रित रूप उभरा उसे भाषा कहा गया।

'भाषा विचारों एवं भावनाओं के आदान-प्रदान का एक सशक्त माध्यम है। जिसमें विभिन्न बोलियों, ईशारों, चिन्हों आदि का समावेश होता है।'

किसी भाषा का विस्तार एक समृद्ध एवं सुदृढ़ समाज का निर्माण करता है। इसलिए भाषा अत्यंत महत्वपूर्ण माध्यम मानी गयी है क्योंकि जितने अधिक मनुष्य किसी एक भाषा का इस्तेमाल करेंगे उस समाज का विस्तार उतना अधिक माना जाएगा।

वर्तमान में विश्व में अनेक भाषाएँ उपयोग में लाई जा रही है। परन्तु सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत को माना गया है। भारत में वर्तमान में लगभग 1682 भाषाओं का उपयोग किया जा रहा है परन्तु भारत में सर्वाधिक उपयोग की जाने वाली भाषा हिन्दी है। अत: इसे राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया गया है।

हिन्दी भाषा का स्वरूप – हिन्दी भाषा का प्रादुर्भाव सबसे प्राचीन भाषा 'देवनागरी' से हुआ। जिसे देवों की भाषा भी कहा जाता है। संस्कृत एवं देवनागरी सहित अनेक प्राचीन भाषाओं जैसे – उर्दू, अरबी, फारसी आदि भाषाओं से मिलकर हिन्दी भाषा अस्तित्व में आई। हिन्दी भाषा अपने आरंभकाल में देवनागरी के रूप में प्रयोग में लाई जाती थी।

हिन्दी अपने आप में समृद्ध एवं सुदृढ़ भाषा है। इसके दो रूप व्यवहार में लाए जाते हैं एक मानक हिन्दी एवं दूसरा व्यावहारिक हिन्दी। मानक हिन्दी से आशय है शुद्ध हिन्दी। इसे एक परिभाषा के रूप में कह सकते है कि मानक भाषा किसी भाषा के उस रूप को कहते हैं जो पूरे क्षेत्र में शुद्ध मानी जाती है तथा जिसे उस प्रदेश का शिक्षित और शिष्ट समाज अपनी भाषा का आदर्श रूप मानता है और प्राय: सभी औपचारिक अवसरों पर यथासाध्य उसी का प्रयोग करता है। इस प्रकार मानक हिन्दी औपचारिक हिन्दी के रूप में ही प्रयुक्त होती है। जैसे – पत्र पत्रिकाओं की भाषा, अनुवाद, विज्ञान तथा शासन के कामकाज में इसका प्रयोग किया जाता है, जबकि व्यावहारिक हिन्दी प्राय: बोलचाल तथा साहित्य की भाषा होती है।

कम्प्यूटर – अर्थ, इतिहास, कार्य एवं उपयोगिता : जैसे-जैसे मनुष्य ने विकास किया नित-नई तकनीकों का उद्‌भव होने लगा। इसी के अंतर्गत एक ऐसी तकनीक विकसित हुई जिसने लगभग मनुष्य जीवन को चुनौती दे दी है। इस तकनीक का नाम है कम्प्यूटर। 'कम्प्यूटर एक ऐसी इलेक्ट्रानिक डिवाईस है, जो डाटा को इनपुट के रूप में लेता है और उस पर प्रोसेसिंग करके आउटपुट के रूप में उपयोगी सूचना प्रदान करता है।'

वर्तमान समय में कम्प्यूटर हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका है जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में कम्प्यूटर का प्रवेश हो चुका है। कम्प्यूटर का प्रमुख कार्य उपयोगकर्ता से सूचनाएँ एवं निर्देश प्राप्त कर, उस पर क्रियान्वयन कर उपयोगकर्ता को इच्छानुसार उपयोगी परिणाम देगा।

वर्तमान में जो कम्प्यूटर युग हमारे सामने उपस्थित है उसका प्रादूर्भाव आज से लगभग 3000 वर्ष पूर्व चीनी विद्वानों ने शीघ्र गणना करने के लिए एक यंत्र के अविष्कार के साथ किया। इस यंत्र को 'अबेकस' कहा गया। अबेकस ही आज के कम्प्यूटर आ आधार बना। कालांतर में सन् 1642 में फ्रांस के गणितज्ञ ब्लेज पॉस्कल ने एक मैकेनिकल डिजिटल केलक्यूलेटर का अविष्कार किया। सन् 1800 में जॉर्ज बूल ने द्विआधारी पद्धति पर बूलीय बीजगणित की खोज की। सन् 1804 में जोसेफ मेरी जक्कार्ड ने पंच कार्ड के उपयोग से स्वचालित करघे का निर्माण किया। सन् 1833 में चार्ल्स बैवेज ने एक यांत्रिक कम्प्यूटर एनालिटिकल इंजन बनाया। सन् 1888 में हर्मन होलरिथ ने यू.एस. की जनगणना के लिए एक पंचकार्ड सिस्टम का अविष्कार किया। सन् 1896 में होलरिथ ने टेबुलेटिंग मशीन कंपनी की स्थापना की। सन् 1939 में जॉन एटनसॉफ ने पहले विशिष्ट उद्देश्यीय इलेक्ट्रॉनिक डिजिटल कम्प्यूटर का निर्माण किया। सन् 1944 में हॉवर्ड ए.आईकिन ने मार्क-1 नाम

का डिजिटल कम्प्यूटर बनाया। इसी श्रृंखला में सन् 1948 में ट्रांसिस्टर की खोज हुई। सन् 1971 में पहले माईक्रोप्रोसेसर का निर्माण हुआ। सन् 1975 में सजंपत नाम का पहला कम्प्यूटर आया। सन् 1990 में इंटरनेट का उपयोग प्रारंभ हुआ।

इस प्रकार विभिन्न ऐतिहासिक अविष्कारों का निष्कर्ष से जिस एक सम्पूर्ण उपकरण का निर्माण हुआ वह कम्प्यूटर कहलाया एवं जिसके बिना आज के युग में जीवन की कल्पना अधूरी है।

चूँकि कम्प्यूटर एक अत्यंत तेजगति से कार्य करने वाली इकाई तो है ही साथ ही इसमें परिणामों की शुद्धता, स्वचालन की प्रकृति, संग्रहण क्षमता जैसी अभूतपूर्व विशेषताओं के कारण ही आज कम्प्यूटर के उपयोग का दायरा अत्यंत विस्तृत है। आज लगभग सभी क्षेत्र जेसे - शिक्षा, व्यवसाय, मनोरंजन, प्रकाशन, वैज्ञानिक, परिवहन, कृषि, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा, शासकीय, गैर-शासकीय एवं निजी क्षेत्र आदि में इसका उपयोग हो रहा है।

कम्प्यूटर में हिन्दी भाषा की उपयोगिता एवं आवश्यकता : चूँकि भारत एक विकासशील देश है इसलिए यहाँ नवीन तकनीकों का उपयोग एवं अविष्कार किया जाता रहा है। भारत में कम्प्यूटर क्रांति के प्रणेता पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गाँधी हैं। जिन्होंने भारत में कम्प्यूटर के उपयोग को भारत में बढ़ावा देने के प्रयास कर सूचनाप प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। धीरे-धीरे पूरे भारत देश में कम्प्यूटर का उपयोग होने लगा और आज हमारा देश भी विकसित देशों की भाँति नवीन तकनीकों के उपयोग में सक्षम हो गया है। यहाँ तक कि भारत ने 'परम' नामक सुपर कम्प्यूटर का निर्माण कर इस क्षेत्र में दुनिया में अपनी धाक जमा ली।

आज कोई भी भाषा कम्प्यूटर से दूर रहकर लोगों से जुड़ी नहीं रह सकती। कम्प्यूटर के विकास के आरंभिक काल में अंग्रेजों को छोड़कर विश्व की अन्य भाषाओं में कम्प्यूटर पर प्रयोग की दिशा में बहुत कम ध्यान दिया गया, जिसके कारण जनसामान्य में यह गलत धारणा फैल गई कि कम्प्यूटर अंग्रेजी भाषा के सिवाए किसी दूसरी भाषा में काम नहीं कर सकता, किन्तु यूनिकोड (it provides a unique number for every character) के पर्दापण के बाद स्थिति बहुत तेजी से बदल गई।

जैसा कि भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी है। अत: यहाँ की जनसंख्या के एक बड़े भाग द्वारा हिन्दी का उपयोग किया जाता है और ऐसा कि हम जानते हैं कि कम्प्यूटर का अविष्कार अन्य देशों के वैज्ञानिकों द्वारा किया है जिन्होंने इसे अपने देश की आवश्यकता एवं महत्व के अनुसार अविष्कृत किया है। जिससे इसका भारत में उपयोग काफी समस्यापूर्ण था। फिर भी भारत में वैज्ञानिकों ने इस अविष्कार में महत्वपूर्ण परिवर्तन कर इसे हमारे देश की आवश्यकता के अनुरूप बनाया।

आज हिन्दी में सजाल (Websites), चिट्ठे (Blogs), विपत्र (Email), गपशप (Chat), खोज (Web Search), सरल मोबाइल संदेश (SMS) तथा अन्य सामग्री उपलब्ध है। वर्तमान में इंटरनेट पर हिन्दी में संगणन के संसाधनों की भी भरमार है और नित नए कम्प्यूटिंग उपकरण आते जा रहे हैं। हिन्दी से संबंधित जानकारियों की हजारों वेबसाईट्स, शब्दकोष, साफ्टवेयर्स, फोन्टस, ब्लॉग्स, लिपि परिवर्तन के साधन इत्यादि आज कम्प्यूटर के क्षेत्र में आसानी से उपलब्ध है। वर्तमान में अधिकांश हिन्दी के प्रतिष्ठित समाचार-पत्र इंटरनेट पर उपलब्ध हैं।

कम्प्यूटर में हिन्दी भाषा : समस्याएँ एवं संभावनाएँ : जैसा कि हम जानते हैं कि भारत एक विकासशील देश है अर्थात् आज भी हमारे देश में अनेक ऐसी विपरीत परिस्थितियाँ मौजूद हैं जो किसी देश के पूर्ण विकास में बाधक साबित होती हैं जैसे - अज्ञानता, जनसंख्या का आकार, गरीबी इत्यादि। भारत की जनसंख्या का एक बड़ा भाग गाँवों में निवास करता है और भारत के गाँव आज आजादी के 60 वर्ष पश्चात् भी अभावग्रस्त हैं।

01. **अज्ञानता** : यहाँ मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताएँ जैसे - शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन आदि ही पूरी नहीं हो पाती है। हमारे देश का एक बड़ा तबका निरक्षर है। जिस कारण यहाँ किसी नई क्रांति का लागू होना एक दीवास्वप्न लगता है। इसी कारण कम्प्यूटर का उपयोग आज भी भारत में पूरी तरह साकार रूप नहीं ले पाया है। इसका एक प्रमुख कारण भाषा की अज्ञानता भी है।

02. **जागरूकता का अभाव** : वर्तमान में शहरों में ही कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति लोग जागरूक दिखते हैं क्योंकि वे अंग्रेजीदां होते हैं। जबकि गाँवों में अभी लोग इतने सजग नहीं हो पाए हैं। यहाँ हम यह कहना चाहेंगे कि कम्प्यूटर में हिन्दी भाषा का उपयोग अब होने लगा है, लेकिन इसे हम प्रशासनिक स्तर पर कम्प्यूटर में हिन्दी के प्रचार-प्रसार की कमी कहें या लोगों में जागरूकता का अभाव, जो भी हो गाँव अभी इस मामले में पीछे ही हैं। कोई भी काम शहरों में कम्प्यूटर के द्वारा सहजता से किया जा सकता है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में इस प्रगति का अभाव है। इसके पीछे कई कारण एक तो पर्याप्त संसाधनों का न होना तथा ग्रामीणों में मशीनों के प्रति उत्सुकता की कमी।

03. **भाषा की समस्या** : अभी भी लोग यह समझते हैं कि अंग्रेजी के बिना कम्प्यूटर का संचालन नहीं किया जा सकता हैं इस भ्रम के कारण कम्प्यूटर का प्रयोग करने से अधिकांश लोग बचते हैं। जबकि अब भाषा की समस्या तो रही ही नहीं, क्योंकि कम्प्यूटर में तमाम भाषाओं का बेहतर तरीके से समामेलन हो गया है।

04. **तकनीकी समस्या** : यह बात सच है कि तकनीकी समस्या अभी बरकरार है। आज भी भारत में लोग कम्प्यूटर पर अधिकांश कार्य अंग्रेजी भाषा के माध्यम से ही सम्पन्न कर रहे हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि कम्प्यूटर संचालन के लिए ऑपरेटिंग सिस्टम (Operating System) की आवश्यकता होती है और आज भी अधिकांश ऑपरेटिंग सिस्टम अंग्रेजी भाषा पर आधारित हैं। जिसके कारण भारत में कम्प्यूटर संचालन समस्यापूर्ण है।

कम्प्यूटर के बिना अब किसी देश का भविष्य उज्जवल हो ही नहीं सकता है। यह हमारे जीवन का अनिवार्य हिस्सा बन गया है। जो भी समस्याएँ इसको लेकर बताई गई है उनका निदान यथासंभव किया जा सकता है और इसमें कम्प्यूटर ही हमारी मदद करेगा। रहा अज्ञानता का प्रश्न, तो वह कम्प्यूटर की समस्या नहीं है। इसके लिए बच्चों को सम्पूर्ण ज्ञान मिले ऐसी व्यवस्थाओं की आवश्यकता है, जो कि व्यक्तिगत, सामाजिक या प्रशासनिक स्तर पर की जा सकती है। सभी तंत्रों को मिलकर जनसामान्य में कम्प्यूटर एवं हिन्दी भाषा के उपयोग के प्रति जागरूकता लाना होगी। लोगों की कम्प्यूटर में हिन्दी के प्रयोग के लिए विभिन्न माध्यमों से प्रेरित करना होगा। उन्हें यह बताना होगा कि आप किसी भी प्रकार की जानकारी या कार्य को कम्प्यूटर पर हिन्दी भाषा में प्राप्त कर सकते हैं। हमें कम्प्यूटर संचालन में जो भाषा संबंधी तकनीकी समस्याएँ आती हैं उन्हें भी हम हमारे कम्प्यूटर वैज्ञानिकों के माध्यम से दूर कर इसे जन-जन के उपयोग की वस्तु आसानी से बना सकते हैं। साथ ही प्रशासनिक स्तर पर हम यह कर सकते हैं कि अधिकांश

प्रशासनिक कार्य इंटरनेट पर हिन्दी भाषा में उपलब्ध कर, जनता को सुविधा प्रदान कर सकते हैं, इससे अधिक-से-अधिक लोग इससे जुड़ सकेंगे।

अन्त में हम यह कह सकते हैं कि भारत में कम्प्यूटर और हिन्दी भाषा दोनों के एकीकृत विकास में काफी संभावनाएँ हैं, जो विश्व स्तर पर एक क्रांति के रूप में उभरेंगी एवं कम्प्यूटर और हिन्दी का समामेलन भारत के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. व्यक्तिगत शोध के आधार पर।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

बैकों की वित्तीय स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन (चयनित बैंक के संदर्भ में)

छाया शाक्य *

*शोधार्थी, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारतीय बैंकिंग उद्योगों का नेतृत्व सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक 80 प्रतिशत बाजार की हिस्सेदारी के साथ कार्य करते है। वर्तमान इस शोध अध्ययन में वर्ष 2013-14 से 2016-17 की अवधि के लिए वित्तीय अनुपात के आधार पर उद्योगों के औसत के साथ आईडीबीआई बैंक के वित्तीय प्रदर्शन की तुलना करना है। इस शोध अध्ययन के दौरान यह पाया गया है कि आईडीबीआई बैंक की समग्र स्थिति और परिसंपत्तियों का रोजगार उद्योग के औसत अनुरूप रहा है। इसके अलावा अंशधारकों के कोष और कासा का रोजगार का रोजगार जो कि बेलपत्र की तुलना में कम रहा है। यह अनुपात हमें बैंक को इंगित करता है कि बैंक को अपनी जमा राशि में सुधार करना चाहिए जो कि सस्ता कोष प्रदान करता हो जिससे बैंक अपनी वित्तीय स्थिति को मजबूत कर सकें।

शब्द कुंजी – कासा, आईडीबीआई बैंक, लाभप्रदता अनुपात, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, अंशधारकों का कोष।

प्रस्तावना – भारतीय अर्थव्यस्था ने अशांत वैश्विक अर्थव्यवस्था को जन्म दिया है। जो कि एक तरह से मजबूत और अनुशासित अर्थव्यस्था के रूप में उभरी हुई है। यह कई नीतिगत पहलुओं को नियमित रूप से घोषित करने के साथ साथ एक बडे परिवर्तन के कगार पर है। हमारे भारत की अर्थवस्था में बुनियादी तौर पर बढे हुए खर्चे तथा निरंतर आर्थिक सुधारों ने भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास को बढावा दिया है। जिससे यह संकेत मिलता है कि भारत का बैंकिंग क्षेत्र भी मजबूत विकास के लिए तैयार है क्योंकि तेजी से बढता हुआ व्यवसाय अपनी ऋण जरूरतों के लिए बैंकों का रुख करेगा।

भारतीय बैंकिंग प्रणाली में सार्वजनिक क्षेत्र के 19 बैंक और निजी क्षेत्र के 27 बैंक शामिल हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक 80 प्रतिशत बैंक व्यवसाय का नियंत्रित करते है। जिनके परिणामस्वरूप निजी क्षेत्र के बैंकों को तुलनात्मक रूप से बाजार में कम हिस्सा मिलता है।

वाणिज्यिक बैंकों की मुख्य धनराशि उधार देने के साथ-साथ भुगतान तरलता और साख मध्यस्थता की सेवाएं प्रदान करने के लिए जमा राशि स्वीकार कर रही हैं। वित्तीय संरचना की नींव भारतीय अर्थव्यवस्था के स्वास्थ्य और विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। शोध अध्ययन के दौरान हमें ज्ञात हुआ है कि वित्तीय विकास के लिए वित्तीय मध्यस्थ और बाजार दोनों ही जरूरी होते हैं क्योंकि शहरी वित्तीय निवेश के लिए महत्वपूर्ण रूप से बैंक जमा, अंश और प्रतिभूतियाँ हैं।

किसी भी व्यवसाय या बैंकिंग क्षेत्र के अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी वित्त होती है क्योंकि बिना वित्त के व्यापार करना असंभव है।

हितधारक बैंकों की वित्तीय स्थिति को मापने का कार्य करते हैं अर्थात् फर्म का व्यवसाय या बैंकिंग क्षेत्र की भविष्य की कमाई का अनुमान लगाते हैं।

वित्तीय संरचना बैंकों व किसी भी फर्म व कंपनी के देनदारियों और उनके समता के बीच संतुलन को दर्शाते है इसके विपरीत ही पूँजी संरचना, समता और दीर्घकालीन देनदारियों के बीच संतुलन संबंध को दर्शाते है। वित्तीय संरचना में फर्म के ऋण की समानता की तुलना करने के लिए अधिक संवेदनशील माना जाता है। यह कार्यशील पूँजी संरचना का तात्पर्य समाना अंश और दीर्घकालीन अवधि के ऋण के संयोजन में होता है। आईडीबीआई बैंक का पूरा नाम भारतीय औद्योगिक विकास बैंक है। इस बैंक का गठन सन् 1964 में भारतीय अधिनियम 1964 के तहत एक वित्तीय संस्था के रूप में हुआ था। भारत सरकार द्वारा 22 जून 1964 गठन करने के बाद 1 जुलाई 1964 को इसकी स्थापना की गयी थी। यह बैंक भारतीय रिजर्व बैंक की सहायक संस्था के रूप में कार्य 19 फरवरी 1976 से आरंभ कर दिया था।

आईडीबीआई बैंक वर्ष 2004 में वाणिज्यिक बैंक के रूप में शामिल युवा सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में से एक बैंक जानी जाती हैं। आईडीबीआई बैंक ने अपने ग्राहकों को व्यक्तिगत बैंकिंग व वित्तीय समाधान प्रदान करती है। 31 मार्च 2017 को 481613 करोड़ रूपये रहा।

भारत सरकार के पास 73.98 प्रतिशत अंशधारकों की हिस्सेदारी है। भारतीय जीवन बीमा निगम अंश का प्रतिशत 16.48 जो 2016 14.37 तथा यह अनुमानित है।

यह शोध पत्र बैंकिंग क्षेत्र की प्रतिस्पर्द्धा को ध्यान में रखते हुए सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक व आईडीबीआई बैंक के वित्तीय स्थिति की जाँच करता है। इस शोध अध्ययन व पत्र को चार खण्डों में विभाजित किया है।

प्रथम खण्ड में चयनित बैंकों की वित्तीय स्थिति, की पृष्ठभूमि की चर्चा करता है। द्वितीय खण्ड बैंकों की वित्तीय संरचना व साहित्य, फर्मो पर इसका प्रभाव पड़ा उसको दर्शाता है। तृतीय खण्ड़ चयनित बैंकों की कार्यप्रणाली व उद्देश्यों को दर्शाता है। अंतिम खण्ड इस शोध पत्र के समापन अनुभाग के परिणामों को दर्शाता है।

शोध साहित्य का अवलोकन – साहित्य का अध्ययन करने से शोधकर्त्ता

को ऐसी पद्धत्तियों और प्रविधि का ज्ञान हो जाता है जिससे शोधार्थी को शोध पत्र को लिखने में आसानी हो जाती है इसीलिए शोधपत्र लिखने में आसानी हो जाती है इसीलिए शोधकर्त्ता को पूर्व अवलोकन करना चाहिए। कुछ शोध पत्रों निम्नानुसार हैं-

1. **खान, मुहम्मद (2016)** इन्होंने अपने शोध पत्र में वर्ष 1986 से लेकर वर्ष 2016 तक अमेरिकन बैंकों की होल्डिंग कंपनियों के निष्कर्ष तरलता और जोखिम के बीच के संबंधों की जाँच करते हुए यह नतीजे पर पहुँच की बैंक का आकार पूँजीगत बजट आमतौर पर बैंकों को अधिक जोखिम लेने से सीमित करते हैं।

जब उनके पास तरल संपत्तियों में जोखिम कम हो अर्थात् इनके शोध पत्र के अध्ययन से हमें पता चला है कि बैंकों को अपनी तरल संपत्तियों को सही तरीके से उपयोग करना चाहिए जिनसे लाभप्रदत्ता में जोखिम की संभावना कम हो सके।

2. **सेंगर, कविता (2012)** इन्होनें अपने शोध अध्ययन में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की वित्तीय प्रदर्शन विशेष रूप से ध्यान दिया है। यह शोध पत्र बैंकों की वित्तीय दक्षता और विकास दर पर आधारित है। इस शोध में अध्ययन भारतीय बैंकिंग प्रणाली के अंतर्गत कई चुनौतियों का सामना किया गया है। इसके अलावा इनके द्वारा शोध अध्ययन में निजी क्षेत्र के नए एवं पुराने बैंकों के बारे में बताया गया है कि बैंकों की कार्य प्रणाली कैसी हो? तथा नए प्रकार की जमाएं और अग्रिम की स्कीम का विश्लेषण भी किया गया है।

3. **रॉस, एट अल (2007)** इन्होनें अपने शोध अध्ययन में बैंकों के वित्तीय अनुपातों के बारे में बताया है इनके द्वारा चयनित शोध पत्र में बैंकों के अनुपातों को दर्शाया गया है कि अधिकांश शोधकर्त्ता आमतौर पर बैंक या किसी भी कंपनी की वित्तीय स्थिति का विश्लेषण करने के लिए वित्तीय अनुपात के चार समूहों को दशति है जैसे कि लाभप्रदता, सॉल्वेंसी, तरलता और गतिविधि इन चारों अनुपात में विभाजित करते हुए उनका विश्लेषण करते हैं।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :

1. शोध अध्ययन में चयनित बैंकों की वित्तीय प्रदर्शन की जाँच और तुलना करना।
2. औद्योगिक औसत के साथ ही आईडीबीआई बैंक की लाभदायकता की जाँच करना।

शोध अध्ययन की पद्धति एवं प्रविधि – वर्तमान अध्ययन 2012-13 से 2016-17 की अवधि के लिए आईडीबीआई बैंक एवं भारतीय स्टेट बैंक की वार्षिक रिपोर्ट से एकत्रित किए गए द्वितीयक समंका पर आधारित है। सार्वजनिक क्षेत्र के बडे बैंक भारतीय स्टेट बैंक जो कि निफ्टी 50 पर सूचीबद्ध है। आईडीबीआई बैंक के वित्तीय प्रदर्शन की तुलना करने के उद्देश्य से उद्योग औसत के (प्रॉक्सी) के रूप माना जाता है। बैंकिंग व्यवसाय और वित्तीय प्रदर्षन के रूझानों का विश्लेषण और उनकी तुलना के लिए अनुपात विश्लेषण लागू किया गया।

अंशधारिता कोष – अंशधारक कोष वह कोष होता है जो किसी भी व्यवसाय या बैंक की पूँजी और भंडार से बनाया जाता है। जिसके अंतर्गत व्यवयसाय व बैंकों के लाभ के भागीदारी का अंश होता है जो लाभ कमाने पर बैंक अपने अंशधारकों को उस लाभ का हिस्सा देती है। उसे अंशधारक कहा जाता है। इसके अंतर्गत भंडार में हुए लाभ बैंक के प्रदर्शन की स्थिति को दर्शाता है क्योंकि भंडार निधि वह निधि होती है जो बैंक के लाभ से अलग रखी जाती है। आईडीबीआई बैंक के अंशधारकों में प्रतिवर्ष वृद्धि देखी गई है जबकि आँकडों के अनुसार अतिरिक्त कोष में कमी रही है।

विगत वर्षों की तुलना में आईडीबीआई और भारत के सबसे बडे बैंक भारतीय स्टेट बैंक के अंशधारिता कोष का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। जिसमें तालिका के आँकडे बताते हैं कि आईडीबीआई बैंक की अंश पूँजी भारतीय स्टेट बैंक की तुलना में लगभग दो गुनी से अधिक है। इसके पश्चात हम बात करते हैं भारतीय स्टेट बैंक का अतिरिक्त कोष में लगातार वृद्धि दिखाई पडती है जबकि आईडीबीआई बैंक के अतिरिक्त कोष में पहले के तीन वर्षों में वृद्धि किंतु उसके पश्चात गिरावट होने लगती है। दोनों ही बैंकों के अंशधारका कोष में वृद्धि हो रही है। भारतीय स्टेट बैंक का अंशधारक कोष आईडीबीआई बैंक की तुलना में लगभग पाँच गुना अधिक है।

तालिका क्रमांक – 1 : आईडीबीआई बैंक की अंशधारिता कोष

(रूपये करोड़ में)

वर्ष	अंश पूँजी	अतिरिक्त कोष	अंशधाकर कोष
2013	1332.75	18139.73	19473.25
2014	1603.94	20322.08	21926.47
2015	1603.96	21050.08	22654.26
2016	2058.82	20055.15	22113.97
2017	2058.82	15087.09	22563.65

स्त्रोत- वार्षिक रिपोर्ट

तालिका क्रमांक – 2 : भारतीय स्टेट बैंक की अंशधारिता कोष

(रूपये करोड़ में)

वर्ष	अंश पूँजी	अतिरिक्त कोष	अंशधाकर कोष
2013	687.03	98199.65	98883.68
2014	746.57	117535.68	118585.25
2015	746.57	127691.65	128438.22
2016	776.28	143498.16	144274.44
2017	797.35	187488.71	188286.06

स्त्रोत- वार्षिक रिपोर्ट

उत्तोलन अनुपात – उत्तोलन अनुपात एक ऐसा अनुपात होता है जिसमें अंश और ऋणधारकों के द्वारा की गयी निधियों की सापेक्ष धनराशि को मापता है। इस शोध पत्र में वर्तमान अध्ययन के लिए ऋण अुनपात को चुना गया है।

ऋण अनुपात – यह अनुपात किसी भी व्यवसाय या बैंक की संपत्ति अनुपात के लिए ऋण के रूप में जाना जाता है। यह अनुपात बैंक व कंपनी के वित्तीय उत्तोलन को मापता है। जिससे भविष्य में ऋण का भुगतान करने में फर्म की क्षमता का निर्धारण होता है। ऋण अनुपात की गणना कुल परिसम्पत्तियों में से कुल देनदारियों का विभाजित किया जाता है। कम ऋण अनुपात को इसमें अच्छा माना जाता है। तालिका क्रमांक 3 में 0.94 ऋण अनुपात को दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक – 3 : आईडीबीआई बैंक का ऋण अनुपात

(करोड़ रूपये में)

वर्ष	**कुल दायित्व**	**कुल सम्पत्तियाँ**	**ऋण अनुपात**
2013	301532.49	322768.51	0.93
2014	305357.33	328996.63	0.93
2015	331713.47	356030.57	0.93
2016	346650.34	374372.13	0.93
2017	339204.26	361767.90	0.94
औसत	324891.58	348747.15	0.93

कासा (CASA) अनुपात – यह अनुपात बैंकों व किसी भी कंपनी के वर्तमान और बचत खाते के लिए उपयोग किया जाता है। कासा अनुपात कुल जमा के लिए और सेविंग खाते की जमा राशि के अनुपात को दर्शाता है। उच्च कोटि का कासा अनुपात बैंक की बेहतर परिचालन क्षमता के लिए कम लागत वाले कोष की उपलब्धता को दर्शाता है।

तालिका क्रमांक – 4 : चयनित बैंकों का कासा अनुपात

(प्रतिशत में)

क्र.	**वर्ष**	**आईडीबीआई बैंक**	**एसबीआई बैंक**
1	2013	25.11	46.50
2	2014	25.62	44.43
3	2015	25.06	42.88
4	2016	25.96	43.84
5	2017	31.45	43.49

उपरोक्त तालिका क्रमांक 4 में आईडीबीआई बैंक का कासा अनुपात वर्ष 2013 में 25.11 प्रतिशत था जो कि वर्ष 2017 में बढ़कर 31.45 प्रतिशत हो गया जबकि एसबीआई का कासा अनुपात वर्ष 2013 में 46.50 प्रतिशत था जो वर्ष 2017 में 43.49 प्रतिशत हो गया। आईडीबीआई बैंक की तुलना में एसबीआई का कासा अनुपात काफी अच्छा रहा है।

लाभदायक अनुपात – यह अनुपात लाभ मार्जिन अनुपात के रूप में जाना जाता है। लाभदायकता या लाभप्रदता अनुपात का उपयोग किसी भी कंपनी व्यवसाय या बैंक के समग्र प्रदर्शन के मूल्यांकन के लिए उपयोग किया जाता है। इस अनुपात द्वारा व्यवसाय व बैंक की लाभदायक के मामले में कितना अच्छा प्रदर्शन कर रही हैं। इस अनुपात के द्वारा ज्ञात कर सकते हैं। अंशधारकों और उधारकर्त्ताओं द्वारा उपयोग की गई की पूँजी का प्रयोग करने कंपनी की दक्षता को दर्शाता है। लाभदायकता अनुपात एक प्रकार से सामान्य विधि है जो कि किसी भी व्यवसाय व बैंकों के प्रदर्षन को मापने के लिए उपयोग की जाती है।

इस शोध पत्र में बैंकों की लाभदायकता को जानने के लिए इन अनुपातों का उपयोग किया गया है। जो इस प्रकार हैं जैसे – नेटवर्थ पर वापसी, संपत्ति पर वापसी, शुद्ध लाभ मार्जिन और कार्यशील कोष पर परिचालन लाभ अनुपात आदि वर्तमान में शोध पत्र के लिए चुने गए हैं।

तालिका क्रमांक – 5 (अगले पृष्ठ पर देखे)

औद्योगिक औसत अनुपात वर्ष 2013 से 2017 तक

1.	नेटवर्थ पर वापसी	-	-5.606
2.	संपत्ति पर वापसी	-	-0.246
3.	शुद्ध लाभ मार्जिन	-	-3.362
4.	कार्यशील कोष का परिचालन लाभ	-	1.788

स्त्रोत – वार्षिक रिपोर्ट

गतिविधि अनुपात –यह अनुपात एक ऐसा होता है जो टर्नओवर अनुपात के रूप में जाना जाता है टर्नओवर अनुपात का अर्थ है किसी भी कंपनी, व्यवसाय अथवा बैंक की संपत्ति की बिक्री में परिवर्तन होने वाली संख्या से है। वर्तमान में इस शोध अध्ययन के लिए संपत्ति टर्नओवर अनुपात का चयन किया गया है।

संपत्ति टर्नओवर अनुपात – यह अनुपात परिसंपत्तियों और बिक्री के बीच संबंध को दर्शाता है। परिसंपत्ति टर्नओवर बिक्री उत्पन्न करने के लिए अपनी संपत्ति का उपयोग करने में किसी भी व्यवसाय व बैंकों की दक्षता को मापता है। इस अनुपात में उच्च कोटि के अनुपात को अच्छा माना जाता है क्योंकि उच्च संपत्ति टर्नओवर अनुपात यह दर्शाता है कि कंपनी या बैंक की सफलतापूर्वक बिक्री करने के लिए अपनी संपत्तियों का उपयोग कर रही हैं। **तालिका 6** में दिए गए आईडीबीआई बैंक की परिसंपत्तियों के कारोबार के अनुपात को दर्षाता है कि इस शोध अध्ययन अवधि के दौरान में 0.08 को बनाए रखा है तथा औद्योगिक के औसत के साथ साथ ताल मेल खाता है।

तालिका क्रमांक – 6 : परिसंपत्ति टर्नओवर अनुपात

वर्ष	**2013**	**2014**	**2015**	**2016**	**2017**
परिसंपत्ति टर्नओवर अनुपात	0.08	0.08	0.08	0.08	0.07

निष्कर्ष – आईडीबीआई बैंक की सॉल्वेंसी स्थिति और परिसम्पत्तियों के रोजगार उद्योग के औसत अनुरुप है। अंशधारकों के कोष और कासा का रोजगार जो बेलपत्र की तुलना में अपेक्षाकृत कम है। आईडीबीआई बैंक में दिए गए उपरोक्त तालिका के आँकडों के आधार के अनुसार यह बताता है कि इन क्षेत्रों में बैंक को ध्यान देना होगा। इसके अलावा आईडीबीआई बैंक का शुद्ध लाभ मार्जिन यह बताता है कि बैंक में मुनाफे की दर घट रही है जो औसत दर से काफी कम है।

बैंक की इस स्थिति को देखते हुए यह सुझाव निकला है कि आईडीबीआई बैंक को अपनी संचालन स्थिति में सुधार करना होगा। इसके अलावा आईडीबीआई बैंक को अपनी जमा राशि में भी सुधार करना चाहिए जो कि सस्ता कोष प्रदान कराती है। जिससे आईडीबीआई बैंक की वित्तीय स्थिति और सुदृढ़ हो सके।

उपरोक्त आँकड़ों से ज्ञात हुआ है कि आईडीबीआई बैंक सम्पत्ति पर वापसी गिरावट की प्रवृत्ति दिखा रहा है जो उद्योग के औसत के साथ की गयी तुलना को दर्शाता है। अत: आईडीबीआई बैंक को अपनी सम्पत्ति के उपयोग में अधिक से अधिक ध्यान देना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. अवकिरण, एन. के. (1995), डवलपिंग एन इंस्ट्रूमेंट टू मेजर कस्टमर सर्विस क्वालिटी इन ब्रांच बैंकिंग। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बैंक मार्केटिंग 12(6), पेज न. 10-18.
2. हो, सी. एंड झू, डी (2004), परफॉर्मेंस मेजरमेंट ऑफ ताइवानस कॉमर्शियल बैंक्स, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ प्रॉडक्टिविटी एंड परफॉर्मेंस मैनेजमेंट, 53(5), पेज न. 425-434.
3. डुंकेन, ई. एंड इलियट, जी. (2004), एफेशियंशी, कस्टमर सर्विस एंड फायनेशियल परफॉर्मेंस अमांग, आस्ट्रेलियन फायनेशियल

इंस्टीट्यूशन्स. दी इंटरनेशलन जर्नल ऑफ बैंक मार्केटिंग 106, पेज न. 783-804
4. ई, जॉर्डन एंड के, नटराजन, वित्तीय बाजार एंव सेवायें, हिमालय प्रकाशन हाउस, पेज न. 3-6
5. मायर, कॉन, फायनेषियल इंस्टीट्यूशन्स एंड मार्केट, 2ई. ऑक्सफॉर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस पेज न. 129-131.
6. देसाई, बंसत बैंक और संस्थाओं का प्रबंधन,(2010), हिमालय प्रकाशन हाउस, 2ई. पेज न. 193-202.
7. भारतीय रिजर्व बैंक, भारत में बैंकों के प्रदर्शन एवं प्रवृत्ति पर प्रतिवेदन वर्ष 2007-2008 से 2016-2017 तक।
8. मूर्ति, डी. के. एंड वेनुगोपाल, भारतीय वित्तीय प्रणाली, आई. के. अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशन हाउस प्रा.लि. न्यू दिल्ली, (2006) पेज न. 2
9. कुमार, प्रबोध (1985), आर्थिक विकास एवं बैंकिंग,
10. सुब्रहमणयम, एन. के.(1985), भारत में आधुनिक बैंकिंग दीप एवं दीप प्रकाशन, न्यू दिल्ली, पेज न. 54
11. मिथानी, डी. एम. (2008), मुद्रा, बैंकिंग, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं सार्वजनिक वित्त, हिमालय प्रकाशन हाउस मुम्बई पेज न. 224
12. भारतीय स्टेट बैंक की वार्षिक रिपोर्ट वर्ष - 2012-2013
13. भारतीय स्टेट बैंक की वार्षिक रिपोर्ट वर्ष - 2013-2014.
14. भारतीय स्टेट बैंक की वार्षिक रिपोर्ट वर्ष - 2014-2015.
15. भारतीय स्टेट बैंक की वार्षिक रिपोर्ट वर्ष - 2015-2016.
16. भारतीय स्टेट बैंक की वार्षिक रिपोर्ट वर्ष - 2016-2017.
17. आईडीबीआई बैंक की वार्षिक रिपोर्ट वर्ष - 2012-2013.
18. आईडीबीआई बैंक की वार्षिक रिपोर्ट वर्ष - 2013-2014.
19. आईडीबीआई बैंक की वार्षिक रिपोर्ट वर्ष - 2014-2015.
20. आईडीबीआई बैंक की वार्षिक रिपोर्ट वर्ष - 2015-2016.
21. आईडीबीआई बैंक की वार्षिक रिपोर्ट वर्ष - 2016-2017.

Links :-

a. https://money.rediff.com/companies/IDBI-Bank-Ltd/14040004/ratio
b. https://www.capitalmarket.com/Company-Information/Financials/Balance-sheet/State-Bank-of-India/1375
c. hhttps://www.moneycontrol.com/financials/idbibank/balance-sheetVI/IDB05

तालिका क्रमांक - 5 : आईडीबीआई बैंक की लाभदायकता अनुपात

(प्रतिशत में)

वर्ष	नेटवर्थ पर वापसी	संपत्ति पर वापसी	शुद्ध लाभ मार्जिन	कार्यशील कोष का परिचालन लाभ
2013	9.66	0.58	7.50	2.10
2014	5.11	0.34	4.21	2.06
2015	3.85	0.24	3.10	1.96
2016	-16.57	-0.97	-13.06	1.60
2017	-30.08	-1.42	-18.56	1.22

स्त्रोत- वार्षिक रिपोर्ट

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

जनसंख्या प्रक्षेपण : ग्वालियर सम्भाग के जिला मुख्यालय नगरों की जनसंख्या का प्रक्षेपण वर्ष 2020

डॉ. महिमा राठौर* डॉ. आर.के. श्रीवास्तव**

*शोधार्थी (भूगोल) विक्रम विश्वविद्यालय,उज्जैन (म.प्र.) भारत
** प्राध्यापक (भूगोल) शासकीय महाविद्यालय, पिपलियामंण्डी, मंदसौर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – नगर विकास एक सतत् गतिविधि है जिसे नियोजन के सिद्धांतों के अनुरूप नियोजन की प्रक्रिया के द्वारा क्षेत्रीय एवं स्थानीय सन्दर्भ में नगर के विभिन्न आयामों में विकास के दबाव को दृष्टिगत रखते हुए नगरवासियों के आर्थिक विकास एवं उन्नत जीवन स्तर की प्राप्ति की अपेक्षा की जाती है। बढ़ती जनसंख्या एवं सघन विकास के अनुरूप आधुनिक, सार्वजनिक सुविधाओं का अभाव रहता है। इसी अभाव एवं वर्तमान उद्देश्य की पूर्ति करने हेतु जनसंख्या का आंकलन कर भूमि उपयोग, सुगम परिभ्रमण संरचना एवं मूलभूत अधोसंरचना का सुनियोजित विकास किया जाता है।

नगर की भावी वृद्धि व विकास को विभिन्न कारक प्रभावित करते हैं[1], जैसे उद्योग, वाणिज्य एवं व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक आधारभूत कारकों की उपलब्धता का अध्ययन करने एवं योजना बनाने हेतु नगर की जनसंख्या का पूर्वानुमान के लिए सांख्यिकी विधियों का प्रयोग कर जनसंख्या प्रक्षेपण ज्ञात किया जाता है। प्रस्तुत शोध में ग्वालियर सम्भाग के जिला मुख्यालय नगरों की जनसंख्या प्रक्षेपण विधि द्वारा वर्ष 2020 की जनसंख्या का आंकलन किया गया है।

प्रस्तावना – भविष्य सम्बंधी जनसंख्या गणना में पर्याप्त अनिश्चितता रहती है, मृत्युक्रम, उर्वरता, विवाह तथा देशांतरण में परिवर्तन लाने वाली शक्तियों के सम्बंध में हमारा ज्ञान अपूर्ण है तथा किसी संदेहास्पद तत्व के प्रभाव को निश्चित रूप से आंकना सम्भव नहीं है।[2] यदि भूतकाल के सम्बंध में हमारा ज्ञान पूर्ण भी हो जाए तो भी भविष्य आवश्यक रूप में अनिश्चित ही रहेगा। अत: पूर्ण सत्यता के साथ भविष्यवाणी करना न तो सम्भव है और न कभी सम्भव रहेगा। प्रक्षेपण तो कुछ मान्यताओं के आधार पर परिकलन की एक विकसित विधि मात्र है। जनसंख्या प्रक्षेपण, व्यापारिक पूर्वानुमान का ही एक विशिष्ट रूप है जिसमें वर्तमान एवं भूतकालीन जनसंख्या और जनसंख्या दरों के आधार पर कुछ भविष्य के सम्बंध में उपकल्पनाएं हैं अथवा मान्यताओं के आधार पर जनसंख्या प्रक्षेपण ज्ञात किया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र : प्रस्तुत शोध में अध्ययन क्षेत्र के रूप में ग्वालियर सम्भाग के 5 जिला मुख्यालय नगरों यथा ग्वालियर, दतिया, शिवपुरी, गुना एवं अशोकनगर को लिया गया है। (तालिका क्रमांक 1 देखें अंतिम पृष्ठ पर)।

अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक परिचय : प्रस्तुत शोध में अध्ययन क्षेत्र के रूप में ग्वालियर सम्भाग के 5 जिला मुख्यालय नगरों को लिया गया है, जो क्रमश: ग्वालियर, दतिया, शिवपुरी, गुना एवं अशोकनगर हैं। इन नगरों की भौगोलिक स्थिति ग्वालियर नगर 26°12' उत्तरी अक्षांश तथा 76°18' से पूर्वी देशान्तर पर स्थित है तथा इस नगर का भौगोलिक क्षेत्रफल 173.68 वर्ग किलोमीटर है। दतिया नगर राज्य के उत्तरी भाग में 25°28' उत्तरी अक्षांश तथा 26°20' पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। इस नगर का भौगोलिक क्षेत्रफल 6.64 वर्ग किलोमीटर है, शिवपुरी नगर 26°25' उत्तरी अक्षांश व पूर्वी 77°49' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 81.11 वर्ग किलोमीटर है। गुना नगर 24°39' उत्तरी अक्षांश तथा 77021' पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 45.75 वर्ग किलोमीटर है तथा अषोकनगर 24°0' उत्तरी अक्षांश तथा 74°21' पूर्वी देशान्तर पर स्थित है तथा इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 4.43 वर्ग किलोमीटर है।

उद्देश्य : ग्वालियर सम्भाग के जिला मुख्यालय नगरों में विभिन्न आधारभूत सुविधाओं एवं योजना बनाने हेतु नगर की जनसंख्या का जनगणना वर्षो के मध्य जनसंख्या का पूर्वानुमान हेतु सांख्यिकी विधियों (ज्यामितीय माध्य विधि एवं अंक गणितीय विधि) का प्रयोग कर वर्ष 2020 की जनसंख्या का आंकलन किया गया है।

विधि तंत्र : अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या प्रक्षेपण हेतु द्वितीयक आंकड़े जनगणना वर्ष 2001-2011 तक जनगणना पुस्तिका से लिए गए हैं तथा इन आंकड़ों के आधार पर दो सांख्यिकी विधियों का उपयोग कर 2020 की जनसंख्या का आंकलन किया गया है। वर्ष 2020 की जनसंख्या प्रक्षेपण हेतु आधार वर्ष 2011 को माना गया है, जिसे निम्न सूत्र द्वारा प्राप्त किया गया है।

1) ज्यामितीय माध्य विधि :- $Pn=Po(1+\frac{r}{100})^n$

अंकगणितीय विधि :- $Pn=Po+n\bar{x}$

जनसंख्या प्रक्षेपण हेतु उक्त दोनों विधियों से प्राप्त परिणाम तालिका क्रमांक 2 में प्रस्तुत किए गए हैं। (देखें तालिका क्रमांक 2 में अंतिम पृष्ठ पर)

आंकड़ों का विश्लेषण : तालिका क्रमांक 2 से स्पष्ट है कि ग्वालियर सम्भाग के जिला मुख्यालय नगरों की जनसंख्या अंकगणितीय विधियों के अनुसार 1276199 तथा ज्यामितीय विधि के अनुसार 2056648 है। इसी प्रकार शेष नगर दतिया की जनसंख्या क्रमश: 191502 तथा 188694 है। गुना में क्रमश: 320112 तथा 371098 है। शिवपुरी में क्रमश: 327589

तथा 386185 है एवं अषोकनगर में क्रमश: 142951 तथा 171237 है। अनुमानित जनसंख्या सम्बंधी प्राप्त आंकड़े अग्रलिखित दोनों सांख्यिकी विधि से प्राप्त किए गए हैं।

निष्कर्ष – प्रस्तुत शोध अध्ययन में सांख्यिकी विधियों का प्रयोग कर वर्ष 2020 जनसंख्या का आंकलन किया गया है। निष्कर्षानुसार ग्वालियर सम्भाग के जिला मुख्यालय नगरों में ग्वालियर नगर में वर्ष 2011 से 2020 तक जनसंख्या वृद्धि दर अंकगणितीय विधि से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार 19.35 प्रतिशत वृद्धि दर प्राप्त हुई है। उसी प्रकार शेष नगर गुना में 76.9 प्रतिशत, दतिया में 90.35 प्रतिशत, शिवपुरी में 82.01 प्रतिशत तथा अशोकनगर में 74.69 प्रतिशत वृद्धि दर सम्बन्धित आंकड़े प्राप्त हुए हैं।

आंकड़ों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकी विधियों से प्राप्त आंकड़ों की सत्यता परखने हेतु महानगर सम्बंधी अनुमानित जनसंख्या सम्बंधी आंकड़ों का अध्ययन किया गया है जिसमें ग्वालियर नगर की जनसंख्या वर्ष 2020 के अनुसार 1378000 अनुमानित जनसंख्या है जिससे यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि जनसंख्या प्रक्षेपण हेतु प्रयोग में लाई गई दोनों विधियों में से अंकगणितीय विधि द्वारा प्राप्त आंकड़े वेबसाइट द्वारा प्राप्त आंकड़ों के अधिक निकट है।

सुझाव – ग्वालियर सम्भाग के जिला मुख्यालय नगर होने से विभिन्न योजनाओं को क्रियान्वित करने हेतु दो जनगणना वर्ष के मध्यकाल (10 वर्ष) की जनसंख्या सम्बंधी समंकों की प्रतीक्षा करने के स्थान पर जनसंख्या प्रक्षेपण विधियों के द्वारा जनगणना वर्ष के मध्य वर्षों के आंकड़े प्रक्षेपण विधि द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं, जिनके आधार पर सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं को सुचारू रूप से व्यावहारिकता में लाने में सहायक हो सकते हैं। जिला मुख्यालय नगरों में जनसंख्या की आवश्यकता को पूरा करने की चुनौती झेल रहे हैं। इसका मुख्य कारण इन नगरों के आसपास के ग्रामीण जनसंख्या नगरों में रोजगार की तलाश में आते हैं और यहीं बस जाते हैं, इसके अतिरिक्त जिला मुख्यालय नगरों में शिक्षा, चिकित्सा, बाजार में वस्तु क्रय-विक्रय के लिए आते हैं, जिससे इन नगरों की आधारभूत सुविधाओं पर अतिरिक्त बोझ आ जाता है। जनसंख्या प्रक्षेपण विधि द्वारा प्रतिवर्ष की जनसंख्या का आंकलन कर योजनाएं बनाना, उन्हें सुचारू रूप से लागू करना अति आवष्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. तिवारी रामकुमार (2015) : 'जनसंख्या भूगोल', प्रथम संस्करण, प्रवालिका पब्लिकेशन इलाहबाद, पृ.क्र. 101.
2. जिला सांख्यिकी पुस्तिका (2011)
3. http:uou.ac.in/maec-109.
4. https://www.macrotrends.net/cities/21262/gwalior/population.

तालिका क्रमांक 1: ग्वालियर सम्भाग के जिला मुख्यालय नगरों का भौगोलिक परिचय (2011)

क्र.	नगर	भौगोलिक क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर में)	जनसंख्या	जनघनत्व
1	ग्वालियर	173.68	1069276	6156
2	दतिया	6.64	100284	15103
3	शिवपुरी	81.11	179977	2218
4	गुना	45.75	180953	3955
5	अशोकनगर	4.43	81828	18471

स्त्रोत : जिला सांख्यिकी पुस्तिका (2011)

तालिका क्रमांक 2: ग्वालियर सम्भाग के जिला मुख्यालय नगरों की जनसंख्या वर्ष 2001-2011 एवं प्रक्षेपित जनसंख्या (2011)

क्र.	नगर	जनसंख्या वर्ष		प्रक्षेपित जनसंख्या	
		2001	2011	ज्यामितीय विधि	अंकगणितीय विधि
1	ग्वालियर	827026	1069276	2056648	1276199
2	दतिया	82772	100284	188694	191502
3	शिवपुरी	146892	179977	386185	327589
4	गुना	137175	180953	371098	320112
5	अशोकनगर	57705	81828	171237	142951

स्त्रोत : जिला सांख्यिकी पुस्तिका (2001 एवं 2011)

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की जीवन शैली का अध्ययन

डॉ. इंद्रजीत सिंह भाटिया *

* सहायक प्राध्यापक (शिक्षा) सेंट स्टीफंस महाविद्यालय, रतलाम (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – हम अपनी लाइफ किस तरह जीते है। ये काफी हद तक तय करता है की हम लाइफ में कितने Healthy और Wealthy होंगे और लाइफ को जीने का तरीका है लाइफस्टाइल यानि जीवनशैली। हमारी लाइफस्टाइल में हमारे खाने, सोने, जागने, मनोरंजन करने, एक्सरसाइज करने से लेकर पहनावे तक सब कुछ शामिल है जो हमारी जिन्दगी की दिशा और दशा दोनों तय करते है. समस्याओ से निपटने, रिकवरी करने, तनाव से बचने और लाइफ में क्वालिटी को विकसित करने के लिए एक पॉजिटिव लाइफस्टाइल का होना काफी जरुरी है। लेकिन तेजी से बदलते माहोल में लोगो की जीवनशैली में काफी बदलाव आया है जिससे कैंसर, डिप्रेशन, हार्ट डिजीज, डिप्रेशन, स्ट्रेस, डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर, मोटापा, आँखों में दिक्कत, सर दर्द जैसी समस्याएँ काफी ज्यादा देखी जा सकती है।

इन सभी समस्याओ से निपटने के लिए आज हम पूरी तरह से दवाइयों पर निर्भर है जिससे परेशानियाँ सिर्फ कुछ समय के लिए गायब हो जाती है लेकिन पूरी तरह से खत्म नही हो पाती। क्योकि असल में समस्या हमारे रहन सेहन के तरीके में है। इसलिए एक स्वस्थ और सकरात्मक जीवन के लिए एक सकारात्मक जीवनशैली का होना बहुत जरुरी है।

खराब जीवनशैली तनाव और अवसाद के मुख्य कारण है। पॉजिटिव लाइफस्टाइल चिंता और तनाव से लड़ने के लिए सबसे ज्यादा जरुरी है। इससे मनोविज्ञानिक शक्ति मजबूत होती है और मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि होती है।

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों कि जीवन शैली के विभिन्न प्रकारों जेसे स्वास्थ्य केन्द्रित जीवनशैली, शेक्षिक उन्मुख जीवनशैली, सामाजिक उन्मुख, करियर उन्मुख जीवनशैली, परिवार उन्मुख जीवनशैली, चलन सम्बन्धी जीवनशैली, प्राचीन जीवनशैली, भारतीय जीवनशैली, और पाश्चात्य जीवनशैली का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

शब्द कुंजी – अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, स्वास्थ्य केन्द्रित जीवनशैली, शैक्षिक उन्मुख जीवनशैली, सामाजिक उन्मुख, करियर उन्मुख जीवनशैली, परिवार उन्मुख जीवनशैली, चलन सम्बन्धी जीवनशैली, प्राचीन जीवनशैली, भारतीय जीवनशैली, और पाश्चात्य जीवनशैली आदि।

प्रस्तावना – जीवन की परिस्थितियां,आवश्यकताएँ व प्राथमिकताएँ सदेव परिवर्तित होती रहती हैं और यह परिवर्तन प्रत्येक अवस्था पर लागू होता है जिसमे सर्वाधिक संवेदनशील कही जाने वाली किशोरावस्था के लिए परिवर्तन कि प्रक्रिया अत्यंत प्रभावपूर्ण होती है। भारत में किशोरों की जीवनशैली बदलती दुनिया के साथदसाथ नया मोड़ ले रही है। बालक क्या खाता है ? क्या पहनता है ? क्या खेलता है ? किनके साथ रहता है ? कब कितना और केसे पढ़ता है ? उसकी क्या आदतें हैं ?उसकी पसन्द–नापसंद क्या है एवं इनके प्रति उसके विचार क्या हैं ? यह सभी बातें बालक कि जीवनशैली को दशार्ति हैं। जीवनशैली शब्द का प्रयोग प्रसिद्ध आस्ट्रियन मनोविश्लेषणवादी मनोवैज्ञानिक अल्फ्रेड ऐडलर(1870 –1937)द्धारा किया गया।

जीवनशैली अंग्रेजी के दो शब्दों स्पमि तथौ जलसम से मिलकर बना है जिसका अर्थ होता है जीवन को आगे बढ़ाना (Way one leads his/her life).

Dictionary Reference-com के अनुसार 'आदतें, द्रष्टिकोण, पसंद, नेतिक–मूल्य, आर्थिक स्तर आदि मिलकर किसी व्यक्ति या समूह की जीवनशैली का निर्माण करते हैं।'

Business Dictionary-com के अनुसार 'किसी भी व्यक्ति, परिवार तथा समाज के रहने या जीवन जीने का वह ढंग जिसमें वह शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तथा आर्थिक वातावरण के साथ दैनिक आधार पर समन्वय स्थापित करने की कोशिश करता है, जीवनशैली कहलाता है।' विकीपीडिया के अनुसार 'जीवनशैली किसी भी व्यक्ति, समूह या संस्कृति के जीवन कि जटिल विधि है।'

साहित्य की समीक्षा – ओमर अब्द एल ह कदर, मारवा एवं आतिया मोहम्मद , फातिया (2013),'द रिलेशनशिप बिटवीन लाइफ स्टाइल, जनरल हेल्थ एंड एकेडमिक स्कोरस ऑफ नर्सिंग स्टूडेंट्स' नामक अध्ययन किया। इस अध्ययन के उद्देश्य थे । नर्सिंग विद्यार्थियों में स्वस्थ व अस्वस्थ आदतों का पता लगाना, विद्यार्थियों की अस्वस्थ आदतों का सामान्य स्वास्थय पर प्रभाव देखना व सामान्य स्वास्थय का अकादमिक अंकों पर प्रभाव देखना। न्यादर्श के रूप में 150 नर्सिंग विद्यार्थियों का चयन किया गया। जाँच हेतु स्व निर्मित प्रश्नावली और न्थ्रोपोमेटरिक मेजरमेंट का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में यह पाया गया कि स्वास्थ्य स्तर, स्वास्थ्य आदतों व

अकादमिक अंकों के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध था। विद्यार्थियों की अस्वस्थ आदतों का उनके स्वास्थ व अकादमिक अंकों पर भी प्रभाव पाया गया। वाणी एम. और लक्ष्मी डी. (2013),'अ क्रॉसकल्चरल लाइफस्टाइल ऑफ कॉलेज स्टूडेंट्स' विषय पर शोध किया। इस अध्ययन के उद्देश्य थे कॉलेज जाने वाले विद्यार्थियों कि जीवन शैली का अध्ययन करना , जगह व लिंग के आधार पर जीवन शैली का अध्ययन करना। न्यादर्श के रूप में पश्चिम बंगाल व छतीसगढ़ में कॉलेज जाने वाले 160 विद्यार्थियों का चयन किया गया। विद्यार्थियों की जीवन शैली का अध्ययन करने हेतु लाइफ स्टाइल स्केल टेस्ट का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में यह पाया गया कि छतीसगढ़ में रहने वाले कॉलेज विद्यार्थियों कि जीवन शैली प.बंगाल के विद्यार्थियों कि तुलना में बेहतर थी। इसी प्रकार शहरी लड़कियों की जीवन शैली ग्रामीण लड़कियों और शहरी व ग्रामीण लड़कों से बेहतर थी।

पंकज एस. सुवेरा व सुनील एस. जादव (2014),'अ कम्परेटीव स्टडी ऑफ द लाइफ स्टाइल अमंग अरबन एन्ड रूरल एजुकेटेड अनअम्प्लाइड प्युपिल' इस शोध का उद्देश्य था ग्रामीण व शहरी शिक्षित बेरोजगारों कि जीवन शैली कि तुलना करना। न्यादर्श के रूप में 100 ग्रामीण शिक्षित बेरोजगार और 100 शहरी शिक्षित बेरोजगारों को लिया गया। यह अध्ययन गुजरात के बनासकांठा जिले में किया गया। आंकड़े एकत्रित करने हेतु डाटाशीट एवं लाइफ स्टाइल स्केल का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में यह पाया गया कि शिक्षित बेरोजगारों की जीवन शैली पर जगह और लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की विभिन जीवन शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की जीवन शैलियों का उनकी सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं:-

1. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की स्वास्थ्य केन्द्रित जीवन शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शेक्षिक उन्मुख जीवन शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की सामाजिक उन्मुख जीवन शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की करियर उन्मुख जीवन शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की परिवार उन्मुख जीवन शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
6. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की चलन सम्बन्धी जीवन शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
7. समान सामाजिक आर्थिक परिस्थिति के अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की जीवन शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

जनसंख्या और न्यादर्श – वर्तमान अध्ययन में रतलाम जिले की शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया।

पाँच शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 150 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से न्यादर्श के रूप में किया गया। इनमें 80 विद्यार्थी अनुसूचित जाति से और 70 विद्यार्थी अनुसूचित जनजाति से लिये गए।

शोध उपकरण – जीवन शैली के मापन हेतु लाइफ स्टाइल स्केल (एस.के.बाबा एवं एस.कौर 2010) स्केल और स्व: निर्मित एवं मानकीकृत जीवन शैली परिचायक प्रपत्र (प्रशनावली) का प्रयोग किया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण : –

तालिका क्रमांक 01 : अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की स्वास्थ्य केन्द्रित जीवन शैली के प्राप्तांकों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन और t का मान

जीवन शैली	अनुसूचित जाति (N=80)		अनुसूचित जनजाति (N=70)		t का मान
	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमान विचलन	प्रमाणिक	
स्वास्थ्य केन्द्रित	18.50	3.19	18.55	3.79	0.087 NS

NS= सार्थक नहीं

उपरोक्त सारणी में प्रस्तुत t के मान का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी समूहों द्वारा प्राप्त मध्यमानों का अंतर 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है । परिणाम के विश्लेषण से स्पष्ट है कि स्वास्थ्य केन्द्रित जीवन शैली के प्रसंग में दोनों ही समूहों में समरूपता है । अत: परिकल्पना 01 को स्वीकृत किया जाता है ।

तालिका क्रमांक 02 : अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शेक्षिक उन्मुख जीवन शैली के प्राप्तांकों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन और t का मान

जीवन शैली	अनुसूचित जाति (N=80)		अनुसूचित जनजाति (N=70)		t का मान
	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमान विचलन	प्रमाणिक	
शेक्षिक उन्मुख	25.61	4.55	23.31	4.45	3.10**

**p< .01

उपरोक्त सारणी में प्रस्तुत t के मान का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी समूहों द्वारा प्राप्त मध्यमानों का अंतर 0.01 स्तर पर सार्थक है । परिणाम के विश्लेषण से स्पष्ट है कि स्वास्थ्य केन्द्रित जीवन शैली के प्रसंग में दोनों ही समूहों में सार्थक अंतर है । अत: परिकल्पना 02 को अस्वीकृत किया जाता है ।

तालिका क्रमांक 03 : अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की सामाजिक उन्मुख जीवन शैली के प्राप्तांकों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन और t का मान

जीवन शैली	अनुसूचित जाति (N=80)		अनुसूचित जनजाति (N=70)		t का मान
	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमान विचलन	प्रमाणिक	
सामाजिक उन्मुख	16.58	4.55	14.25	3.45	3.56**

**p< .01

उपरोक्त सारणी में प्रस्तुत t के मान का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी समूहों द्धारा प्राप्त मध्यमानों का अंतर 0.01 स्तर पर सार्थक है। परिणाम के विश्लेषण से स्पष्ट है कि सामाजिक उन्मुख जीवन शैली के प्रसंग में दोनों समूहों में भिन्नता हैं। अत: अनुसूचित जाति के विद्यार्थी, अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की तुलना में सामाजिक उन्मुख जीवन शैली अपनाने वाले हें क्योंकि उनके मध्यमान का मान अधिक है अत: परिकल्पना 02 को अस्वीकृत किया जाता है।

तालिका क्रमांक 04 : अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की करियर उन्मुख जीवन शैली के प्राप्तांकों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन और t का मान

जीवन शैली	अनुसूचित जाति (N=80)		अनुसूचित जनजाति (N=70)		t का मान
	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमान विचलन	प्रमाणिक	
करियर उन्मुख	20.13	2.44	21.00	2.34	1.01 NS

NS= सार्थक नहीं

उपरोक्त सारणी में प्रस्तुत t के मान का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी समूहों द्धारा प्राप्त मध्यमानों का अंतर 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। परिणाम के विश्लेषण से स्पष्ट है कि करियर उन्मुख जीवन शैली के प्रसंग में दोनों ही समूहों में समरूपता है। अत: परिकल्पना 03 को स्वीकृत किया जाता है।

तालिका क्रमांक 05 : अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की परिवार उन्मुख जीवन शैली के प्राप्तांकों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन और t का मान

जीवन शैली	अनुसूचित जाति (N=80)		अनुसूचित जनजाति (N=70)		t का मान
	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमान विचलन	प्रमाणिक	
परिवार उन्मुख	13.49	2.08	13.58	2.27	0.25 NS

NS= सार्थक नहीं

उपरोक्त सारणी में प्रस्तुत t के मान का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी समूहों द्धारा प्राप्त मध्यमानों का अंतर 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। परिणाम के विश्लेषण से स्पष्ट है कि परिवार उन्मुख जीवन शैली के प्रसंग में दोनों ही समूह सामान हैं। अत: परिकल्पना 04 को स्वीकृत किया जाता है।

तालिका क्रमांक 06 : अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की चलन सम्बन्धी जीवन शैली के प्राप्तांकों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन और t का मान

जीवन शैली	अनुसूचित जाति (N=80)		अनुसूचित जनजाति (N=70)		t का मान
	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमान विचलन	प्रमाणिक	
चलन सम्बन्धी	20.85	5.89	23.05	6.01	2.25**

**p< .01

उपरोक्त सारणी में प्रस्तुत t के मान का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी समूहों द्धारा प्राप्त मध्यमानों का अंतर 0.01 स्तर पर सार्थक है। परिणाम के विश्लेषण से स्पष्ट है कि चलन सम्बन्धी जीवन शैली के प्रसंग में दोनों समूहों में भिन्नता हैं। अत: अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थी, अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की तुलना में चलन सम्बन्धी जीवन शैली में श्रेष्ठ हें क्योंकि उनके मध्यमान का मान अधिक है। अत: परिकल्पना 06 को अस्वीकृत किया जाता है।

तालिका क्रमांक 07 : अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की जीवन शैली प्रारूप का वरीयता क्रम सरल

जीवन शैली	अनुसूचित जाति (N=80)		अनुसूचित जनजाति (N=70)	
	वरीयता क्रम	मध्यमान	वरीयता क्रम	मध्यमान
प्राचीन	प्रथम	19.50	प्रथम	12.55
भारतीय	द्वितीय	6.44	द्वितीय	6.69
पाश्चात्य	तृतीय	2.54	तृतीय	5.20

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि दोनों ही समूहों में वरीयता क्रम समरूप है अर्थात अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों में परम्परागत भारतीय जीवन शैली प्रथम वरीयता पर है। वरीयता क्रम के दूसरे और तीसरे स्तर पर क्रमश: आधुनिक भारतीय और पाश्चात्य जीवन शैलियां हैं। इस प्रकार दोनों ही समूहों के विद्यार्थियों की जीवन शैली प्रारूपों में समरूपता है।

तालिका क्रमांक 08 : उच्च सामाजिक आर्थिक परिस्थिति समूह के अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की जीवन शैली के प्राप्तांकों के मध्यमान और प्रमाणिक विचलन

जीवन शैली	अनुसूचित जाति (N=80)		अनुसूचित जनजाति (N=70)		t का मान
	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमान विचलन	प्रमाणिक	
प्राचीन	17.35	3.35	10.20	7.05	7.75**
भारतीय	4.68	2.44	4.96	3.39	0.57NS
पाश्चात्य	1.89	1.05	4.96	2.60	9.21**

**p< -01

NS= सार्थक नहीं

उपरोक्त सारणी में प्रस्तुत ज के मानों का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि इनमे से एक को छोड़कर बाकि जीवन शैलियों के सन्दर्भ में विद्यार्थी समूहों द्वारा प्राप्त मध्यमानों का अंतर 0.01 स्तर पर सार्थक है। परिणामों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थी अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की तुलना में प्राचीन भारतीय जीवन शैली अपनाने वाले हें क्योंकि उनके मध्यमान का मान अधिक है जबकि आधुनिक भारतीय जीवन शैली के प्रसंग में दोनों ही समूह समान हैं। अत: परिकल्पना 03 को आंशिक रूप से अस्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष :

1. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की स्वास्थ्य सम्बन्धी जीवन शैली के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात दोनों समूहों की स्वास्थ्य सम्बन्धी आदतें ,व्यवहार ,विचार और पसंद – नापसंद लगभग सामान हैं।
2. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शेक्षिक उन्मुख जीवन शैली के मध्य सार्थक अंतर है अर्थात अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों में शेक्षिक उन्मुख जीवन शैली अधिक पाई गई है।
3. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की सामाजिक उन्मुख जीवन शैली के मध्य सार्थक अंतर है अर्थात अनुसूचित जाति के विद्यार्थी अन्य समूह कि तुलना में अधिक सामाजिक हैं।
4. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की करियर उन्मुख जीवन शैली के मध्य सार्थक अंतर नहीं है अर्थात दोनों समुहों की अपने करियर कि प्रति सोच एक सामान है।
5. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की परिवार उन्मुख जीवन शैली के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात दोनों समूहों की अपने परिवार के प्रति सोच लगभग सामान है।
6. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की चलन सम्बन्धी जीवन शैली के मध्य सार्थक अंतर है अर्थात अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों में चलन सम्बन्धी जीवन शैली, अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है।
7. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों में अर्थात दोनों ही समूहों में जीवन शैली का वरीयता क्रम समरूप है।
8. अनुसूचित जनजाति उच्च वर्गीय विद्यार्थी पाश्चात्य जीवन शैली में उच्च स्तर के हैं किन्तु परम्परागत भारतीय जीवन शैली पर निम्न स्तर के हैं।

   आधुनिक भारतीय जीवन शैली में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के दोनों ही विद्यार्थी समूह समरूप हैं
9. अनुसूचित जाति उच्च वर्गीय विद्यार्थी, अनुसूचित जनजाति उच्च वर्गीय विद्यार्थियों की तुलना में प्राचीन भारतीय जीवन शैली में उच्च स्तर के हैं किन्तु पाश्चात्य जीवन शैली में निम्न स्तर के हैं।
10. अनुसूचित जनजाति उच्च वर्गीय विद्यार्थी पाश्चात्य जीवन शैली में उच्च स्तर के हैं किन्तु प्राचीन भारतीय जीवन शैली पर निम्न स्तर के हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. पंकज एस. सुवेरा व सुनील एस. जादव (2014), 'अ कम्परेटीव स्टडी ऑफ द लाइफ स्टाइल अमंग अरबन एन्ड :रल एजुकेटेड अनअम्प्लाइड प्युपिल' Retrived from http://www-indianjournals-com/ijor-asp\ target-ijor:ajrbem & volume-4&issue-5&article-031 06 feb- 2016
2. ओमर अब्द एल द कदर, मारवा एवं आतिया मोहम्मद , फातिया (2013), 'द रिलेशनशिप बिटवीन लाइस्टाइल,जनरल हेल्थ एंड एकेडमिक स्कोरस ऑफ नर्सिग स्टूडेंट्स' Retrieved From http://article-sapub-org/10-5923-j-phr-20130303-05-html 11 sept- 2014
3. वाणी एम. और लक्ष्मी डी. (2013), अ क्रॉसकल्चरल लाइफस्टाइल ऑफ कॉलेज स्टूडेंट्स जरनल ऑफ कम्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च 2013. 30(2).
4. श्रीवास्तव, सुहासिनी (2002), 'हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों और जीवन शैलीयों का तुलनात्मक अध्ययन' पी.एच–डी.लखनऊ विश्वविद्यालय।
5. सिंह,पी (2001), सामाजिक मूल्यों का अवशोषण, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष20,अंक1।
6. सिन्हा,एम.,युनुस,एस.(2000), वैल्यू एंड पर्सनालिटी डिसपोजीशान ऑफ यूनिवर्सिटी टीचर्स, क्लासिक पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली।
7. फॉक्स, डी. जे.(1979),द रिसर्च प्रोसेस इन एजुकेशन,न्यूयाकर्रू हाल्ट राइनहार्ट एंड कंपनी।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

जयशंकर प्रसाद का 'कामायनी कृत' जीवन दर्शन

डॉ. सूर्य प्रकाश नापित*

* सह आचार्य (हिन्दी) शहीद कैप्टन रिपुदमन सिंह राजकीय महाविद्यालय, सवाई माधोपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – दर्शन का सामान्य अर्थ है 'देखना' किन्तु दर्शन तथा सामान्य देखने में बहुत अन्तर होता है। किसी वस्तु का सूक्ष्म निरीक्षण ही दर्शन कहलाता है। ब्रह्म क्या है, आत्मा क्या है, जगत क्या है एवं माया क्या है इन सभी प्रश्नों का समाधान करने के लिए ही दर्शन की उत्पति हुई है। प्रसाद जी आनन्दवादी कवि थे, आत्मा को उन्होंने आनन्द स्वरूप माना है। इसी आत्म स्वरूप ज्ञान कराने के लिए वेदान्त एवं शैव दर्शन के सारभूत तत्वों की अभिव्यक्ति कामायनी में की गई है। प्रत्यभिज्ञ दर्शन कामायनी का प्राण तत्व है, प्रसाद जी का सारा परिवार शैव दर्शनों में से कश्मीर के प्रत्यभिज्ञ दर्शन को ही अत्यन्त पुष्ट और प्रबल मानता था। स्वयं प्रसाद जी सुंधनी साहु की दुकान पर सुरती का कार्य करते रहते थे और शहर बनारस आने जाने वाले व्यक्तियों से वेद, संहिता आदि धार्मिक पुस्तकें मंगवाकर अध्ययन भी करते रहते। इससे स्पष्ट होता है कि प्रसाद जी का भी शैव दर्शन की ओर अधिक झुकाव था। कामायनी की आधी से अधिक रचना भी उन्होंने सूंधनी साहू के कारखाने में सुरति-कला का कार्य करते हुए की थी।

वस्तुत: कामायनी पर शैव दर्शन का पूर्ण रूपेण प्रभाव रहा है और कामायनी प्रसाद जी के जीवन की पुर्नरचना है इसमें प्रत्यभिज्ञ दर्शन निम्नांकित रूपों में अभिव्यक्त हुआ है यथा :-

1. **आत्मा –** प्रत्यभिज्ञ दर्शन में आत्मा को महाचेतना के रूप में स्वीकार किया गया है। जो सदैव ही अपने अक्षुण्य प्रभाव द्वारा स्थिरता बनाए रखती है- 'कर रही लीला मय आंनद, महाचिति सजग हुई सी व्यक्त। विश्व का उन्मीलन अभिराम, इसी में सब रहते अनुरक्त' वही (महाचिति) इस विश्व के क्रिया-कलापों विविधताओं में मूल प्राण रूप है। और सदैव ही स्वेच्छा से निर्माण और विनाश करती रहती है- 'काम मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम। तिरस्कृत कर उनको तुम भूल बताते हो असफल भव धाम'। और यही महाचेतना आत्मा रूप में इच्छा, ज्ञान और क्रिया है। इस त्रिकोण के मध्य बिन्दु तुम शक्ति विपुल क्षमता वाले थे। एक-एक को स्थिर ही देखो, इच्छा ज्ञान क्रिया वाले थे। इसी को कवि ने चेतनता के नाम से भी अभिव्यक्त किया है- 'चेतनता एक विलसती आनन्द अखण्ड घना था'। यह ब्रह्म शंकर के वेदान्त से सर्वथा भिन्न है। कामायनी में मनु शिवरूप हो जाते हैं और श्रद्धा शक्ति रूप। इसमें शिव शक्ति की परिकल्पना शैव दर्शन की ही भाँति आनन्द सागर और उसकी तरंगावली के रूप में की गई है- 'चिरमिलित प्रकृति से पुलकित वह चेतन रूप पुरातन। निज शक्ति तरंगायित था, आनन्द अम्बुनिधि शोभन'। इस भाँति प्रसाद जी ने आत्मा को महाचेतना, शिवशक्ति, इच्छा-ज्ञान-क्रिया की भांति माना है।

2. **जीव –** कामयनी में जीव या मनुष्य के प्रतीक रूप में मनु है। प्रत्यभिज्ञ दर्शन में जीव को त्रिमल और षड़कंचुको से आवृत आत्मा कहा गया है। प्रसाद जी ने इन सभी गुणों से परिपूर्ण मनु की स्थापना की एवं मनु को आत्म विस्मृति के कारण इधर उधर भटकाते रहते हैं। उनकी यह स्थिति आणव है। निर्वेद सर्ग में इसका उल्लेख भली भाँति प्रकट हो जाता है। निर्वेद से रहस्य तक उसकी स्थिति शाक्त रहती है जिसमें भेदाभेद बुद्धि की प्रधानता रहती है। मनु के शिव रूप होकर अखण्ड आनन्दमय हो जाना ही शांभव स्थिति है, जिसमें केवल अभेद बुद्धि प्रधान है। स्वप्न शाप जागरण भस्म हो इच्छा ज्ञान मिल लय थे। दिव्य अनाहत पर निनाद में श्रद्धायुत बस मनु तन्मय थे।

3. **जगत-** कामायनी में प्रत्यभिज्ञ दर्शन के प्रभाव स्वरूप सृष्टितत्व को महाचेतना की इच्छा का परिणाम कहा गया है – 'काम मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम'। सृष्टि का उद्‌भव मूल शक्ति के द्वारा ही होता है प्रसाद जी ने इसे प्रेमकला की संज्ञा प्रदान की है- 'यह लीला जिसकी विकस कली वह मूल शक्ति थी प्रेम कला' और यह सारा जगत उस महाचिति के लीला मय आनन्द की ही अभिव्यक्ति है इसी कारण सब लोग इसी में अनुरक्त होते जाते हैं- 'कर रही लीलामय आनन्द महाचिति, सजग हुई सी व्यक्त, विश्व का उन्मीलन अभिराम इसी में सब होते अनुरक्त'। प्रत्यभिज्ञ दर्शन में इस सृष्टि के निर्माण का मूल कारण है माया और माया उस परमात्मा या परमशिव की एक शक्ति विशेष है। 'घूम रही है यहाँ चतुर्दिक चलचित्रों की संसृति छाया। जिस आलोक बिन्दु को मेरे वह बैठी मुसक्याती माया'। जगत विषयक प्रसाद जी की मान्यता शैव सिद्धान्त पर आधारित है और वेदान्त के अद्वैतवाद से सर्वथा भिन्न है। जगत का ईश्वर के साथ अभेद या आभास सम्बन्ध है। इस जगत के विकास में 36 तत्वों की परिकल्पना की गयी है। इनमें प्रथम पाँच शिव, शक्ति, सदाशिव, ईश्वर, शुद्धविद्या, परमेश्वर की शक्ति के विकसित रूप हैं। माया, काल, नियति, विद्या, राग, कला, पुरूष, प्रकृति, बुद्धि, अहंकार, मन, आँख, हाथ, कान, नाक, मुँह, जिह्वा, त्वचा, पैर, लिंग, गुदा, पाँच तन्मात्राएं, अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध और पाँच स्थूल भू तत्व आकाश, वायु, पृथ्वी, जल एवं अग्नि है, ये सभी 36 तत्व कामायानी में यथा स्थित प्रयुक्त हुए है।

4. **आनन्दवाद-** आनन्दवाद प्रसाद जी की जीवन दृष्टि है जो कामायनी के माध्यम से दृष्टिगत होती है। साथ ही कश्मीरी शैवमत एवं प्रत्यभिज्ञ दर्शन इच्छा, ज्ञान, क्रिया, से ओत-प्रोत है। जिसे प्रसाद जी ने भारतीय शास्त्रों के माध्यम से नहीं अपितु अपने जीवन दर्शन के आधार पर व्याख्यायित किया है। यह उनकी दार्शनिक विवेचना न होकर व्यवहारिक साधना है जिसका विकास सम्पूर्ण जीवन जगत के साथ हुआ है। यह एक प्रकार का व्यवस्थित दर्शन है जो मूलत: भारतीय दर्शन है और इसमें आध्यात्मिक पक्ष प्रबल होकर

सामने आता है। इसके तत्व दर्शन को ब्रह्म, माया, जीव, जगत, पुरूष और प्रकृति आदि बिन्दुओं के आधार पर व्याख्यायित किया जा सकता है।

5. **समरसता या सामरस्य-** समरसता में जब आत्मा परमात्मभाव को प्राप्त होकर पूर्णत: शिव रूप हो जाती है तब उसे समरसता कहते है उस समय योगी यह समझने लगता है कि न मैं हूँ, न कोई और, न ध्येय ही यहां विद्यमान है, उसका मन आनन्द में लीन होकर समरसता को प्राप्त कर जाता है। नित्य समरसता का अधिकार उमड़ता कारण जलधि समान।

कामायनी में समरसता तीन रूपों में पायी गई है:-

1. **समाज की समरसता-** जिसके कारण सारस्वत प्रदेश ध्वंस हुआ

'वह विज्ञानमयी अभिलाषा, पंख लगाकर उड़ने की
जीवन की असीम आशाऍ, कभी न नीचे मुड़ने की'।

2. **व्यक्ति की समरसता-**

'हृदय की अनुकृति बाह्य उदार एक लम्बी काया उन्मुक्त
मधु पवन क्रीड़ति ज्यों शिशु साल सुसोभित हो सौरभ संयुक्त।
X X X X X
नारी तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत नग पगतल में
पीयूष श्रोत सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में'।

3. **प्रकृति पुरूष की समरसता -**

'तुम भूल गये पुरूषत्व मोह में कुछ सत्ता है नारी की
सरमसता का है सम्बन्ध बनी अधिकार और अधिकारी की
समरस को जड़ या चेतन X X Xआनन्द अखण्ड धना था'।

समरसता का तत्व उनके जीवन में पूर्णत: घुल चुका था, उनके सुपुत्र श्री रत्नशंकर प्रसाद यह मानते हुए कहते है कि कामायनी में विश्व जननी का मानव पुत्र के प्रति आदेश इसी सत्य को उद्धटित करता है 'सबकी समरसता का प्रचार मेरे सुत सुन माँ की पुकार'। स्वयं प्रसाद जी अपने कर्त्तव्यों के प्रति साहित्यिक हो अथवा व्यवसायिक वे समानरूप से सचेष्ट थे। आधी कामायनी की रचना और कितनी ही स्फुट रचनाऍ उन्होंने सुंधनी साहू के कारखाने में सुरती बनाने का काम करते हुए पूर्ण की थी। जहाँ पर शिव और शक्ति का सामरस्य होता है, वहाँ आनन्द प्राप्ति होती है, शैवागमों में इसे सतचिदानंद प्राप्ति कहते हैं। कामायनी में समरसता व्यक्ति, समाज और प्रकृति तथा पुरूष के सामरस्य के आधार पर दिखाई पड़ती है। व्यक्ति सामरस्य में प्रमाता-प्रमेय-अर्न्तमुखी एवं बर्हिमुखी प्रवृत्तियॉ एवं इच्छा ज्ञान क्रिया का सामरस्य समाज सामरस्य में नर-नारी का, अधिकार-अधिकारी, शासक-शासित का और व्यक्ति-समाज का सामरस्य और प्रकृति तथा पुरूष समरसता में जड़ चेतन का, ब्रह्म और जगत का सामरस्य प्रमुख है। उदाहरण स्वरूप-अशांति, एवं चंचलता के समय मनु की दुर्गति होती रहती है और वे साहसिकता की खोज में भटकते फिरते हैं। कई बार प्रमाता कर्ता के रूप में अहंकार भी होता है तो कभी प्रमेय कर्म को ही सब कुछ मानकर अभिलाषित होते हैं।

बाह्य वस्तुओं की माया-मरीचिका मनु को भटकाती रहती है जिसे 'प्राप्त करने के लिए खोजता फिरता मैं इस हिमगिरि के अंचल में'। और फिर 'किन्तु सकल कृतियों की अपनी सीमा है हम ही तो' मनु का प्रारम्भिक जीवन बर्हिमुखी था, परिणाम स्वरूप जीवन अन्धगति से परिचालित था। बाद में प्रतिक्रिया स्वरूप निर्वेद सर्ग के बाद अन्तर्मुखी होकर दिव्य ज्ञान प्राप्त करते हैं। श्रद्धा के सहयोग से इच्छा, ज्ञान, क्रिया के द्वारा स्थायित्व की प्राप्ति करते हैं।

समाज के सामरस्य में व्यक्ति का नर नारी रूप में सामरस्य जिसमें कामवृति जीवन की मनोवृति मानी गयी है। नर की एकान्तिक होने पर 'तुम भूल गये पुरूषत्व मोह में कुछ सत्ता है नारी की'। की भाँति चेतावनी आवश्यक हो जाती है। सारस्वत प्रदेश में व्यक्ति एवं समाज तथा शासन और शासित के साहचर्य के बिना ही तो विप्लव की स्थिति उत्पन्न हुई। समरसता सम्बन्ध बनी अधिकार और अधिकारी की, समरस ये जड़ या चेतन ओर समरस अखण्ड आनन्द वेश में समाज के साथ प्रकृति का सामरस्य भी परिलक्षित होता है।

6. **परमाद्धयता-** अखण्ड आनन्द की भावना इसी में विद्यमान है। जहाँ द्धैत हो वहाँ आनन्द कैसा ? द्धैत की भावना मिटाकर ही आनन्द की प्राप्ति सम्भव है 'नीचे जल था ऊपर हिम था एक तरल था एक सघन, एक तत्व की ही प्रधानता कहो उसे जड़ या चेतन'। और 'मैं' 'तू' का ज्ञान अज्ञान है 'हम अन्य व और कुटुम्बी, हम केवल एक हमी है, तुम सब मेरे अवयव हो, जिसमें कुछ नहीं कमी है।'

7. **स्वरूप का अभिज्ञान-** अखण्ड आनन्द भाव के लिए अहं का ज्ञान आवश्यक है और जीवनानुभव के बाद आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है- 'सब भेद भाव भुलाकर दु:ख-सुख को दृश्य बनाता, मानव कह रे। यह मैं हूँ, यह विश्व नीड़ बन जाता'। 'अपने स्वयं को विश्व भर में एकात्म रूप में देखना एवं अपने स्वरूप का अभिज्ञान ही जीवन की परम् साधना है-'प्रतिफलित हुई सब आँखे, उस प्रेम ज्योति विमला से, सब पहचाने से लगते, अपनी ही एक कला से।'

8. **सौन्दर्य साधना -**' सच्ची सौन्दर्य साधना' तपन में शीतल मंद बयार की भाँति होनी चाहिए उस साधना से परम् शिवत्व के दर्शन होते हैं- ' बिखरी अलकें ज्यों तर्क जाल .... समरस थे जड़ या चेतन, सुन्दर साकार बना था, चेतनता एक विलसती आनन्द अखण्ड बना था।' और मांसल सी आज हुई थी हिमवती प्रकृति पाषाणी, इस लास रास में विह्वल थी हँसती सी कल्याणी।

9. **महाचेतना -** कामायनी का प्रतिपाद्य मानव को जीव की सीमित व्यक्तिगत तथा आत्मचेतना से ऊपर उठाकर व्यापक सार्वजनिक तथा विश्व चेतना की और अग्रसर कर समरसता की स्थिति में प्रतिस्थापित करने से महाचेतना को परम आनन्द प्रसाद की प्राप्ति होती है 'मैं की कोरी चेतनता सबको ही स्पर्श किए सी, सब भिन्न-भिन्न परिस्थितियों की है मादक घूँट पीये सी' .... कर रही लीला मय आनन्द .... चेतनता का भौतिक विभाग कर जग को बाट दिया विराग' वैज्ञानिक विकास एवं आध्यात्मिक विकास की स्थिति में समानता लाने के लिए भी महाचेतना शक्ति रूप में सक्रिय हो उठती है।

10. **श्रद्धाभावना -** श्रद्धा द्वारा ही मानव जगत में सामरस्य की स्थिति बनाई जा सकती है। श्रद्धा-भावना की प्रतीक है, आनन्द वाद के ताने बाने में उसका महत्वपूर्ण स्थान है 'दया' माया-ममता लो आज, मधुरिमा लो अगाध विश्वास। हमारा हृदय रत्ननिधि स्वच्छ तुम्हारे लिए खुला है पास।' के माध्यम से श्रद्धा भाव प्रकट होता है।

11. **व्यापक आनन्द भावना -** सर्व कर्म, सर्व ज्ञान-विज्ञान का अभीष्ट-आनन्द प्राप्ति ही है। यह सृष्टि, लीला परम् ऐश्वर्य उस परम अखण्ड आनन्द की मात्र अभिव्यक्ति ही है। 'तप ही नहीं केवल जीव सत्य ','नित्य नूतनता का आनन्द किए है परिवर्तन में टेक। ' परिवर्तन, चंचलता गति भौतिक अथवा शरीर जन्य आनन्द की परिचायक है। आत्मिक ज्ञान ही मानव का साध्य होना चाहिए। आत्मरत और आत्मकेन्द्रित आनन्द क्षैणिक और दु:ख में पर्यवसित होने वाला होता है। यदि जीवात्मा उचित कर्मों में सदा लीन रहेगी तो वह विजयी और शक्तिशाली होती हुई मंगलमय वृद्धि एवं सुख समृद्धि को प्राप्त कर सकती है। यह भी आनन्द की ही एक स्थिति है। आनन्द भूमि पर

पहुंचने पर ज्ञान, क्रिया इच्छा का ही समन्वय हो जाता है। आनन्द प्राप्ति करने के लिए हृदय एवं बुद्धि का समन्वय आवश्यक है।' समरस थे जड़ या चैतन सुन्दर साकार घना था .....

12. **नियतिवाद** – प्रसाद जी ने नियति को भाषा योग वशिष्ठ की भाँति नियामिका शांति रूप में ग्रहण किया है 'नियति मचाती कर्म चक्र यह तृष्णा जनित ममत्व वासना, पाणिपादमय पंचभूत की यहाँ हो रही है उपासना।' इस नियति के कारण ही देव सृष्टि का ध्वंस और मनु के द्वारा सृष्टि निर्माण एवं विकास हुआ अत: यह उद्‌भव स्थिति एवं संहार कारिणी है। प्रलयोपरान्त मनु ने नियति के एकान्त शासन को मनु की विवशता के रूप में स्वीकार किया। 'उस एकान्त नियति शासन में चले विवश धीरे-धीरे '।

नियति के कारण ही मनु विलासी, अभिमानी और उच्छृंखल बनते हैं, काम तृप्ति हेतु श्रद्धा एवं इड़ा के पास जाते हैं। अपने आप को चिर स्वतन्त्र समझने लगते हैं। नियति का कार्य समाज और व्यक्ति के मध्य सामंजस्य पैदा करना है, नियति आत्मा पर नियंत्रण करने वाली है। जब यह जीव शिव तत्व की ओर उन्मूख होने लगता है तो नियति के शासन के कठोर बन्धनों से स्वत: ही दूर होता जाता है – ' निराधार है किन्तु ठहरना हम दोनों को आज यहीं हैं, नियति खेल देखूं न सुनो अब इसका अन्य उपाय नहीं है।'

13. **स्वातन्त्रयवाद** – प्रत्यभिज्ञ दर्शन में चित् को स्वतन्त्र माना गया है वह स्वेच्छा से विश्व का निर्माण, स्थेर्य, संहार, तिरोधान, अनुग्रह आदि कार्य करती है-' कर रही लीलामय आनन्द महाचिति सजग हुई सी व्यक्त, विश्व का उन्मीलन अभिराम, इसी में सब होते अनुरक्त '।

अन्य दर्शनों का प्रभाव –

1. **बौद्ध दर्शन का दु:खवाद** – बौद्ध दर्शन में दु:खवाद का प्रचार किया गया है, वहाँ संसार को दु:खमय माना गया है यही विचारधारा कामायनी में भी यत्र तत्र बिखरी पड़ी है – 'विषमता की पीड़ा से व्यक्त, हो रहा स्पंदित-विश्व महान, यही दु:ख सुख विकास का सत्य यही भूमा का मधुमय दान। '

2. **क्षणिकवाद** – यह भी बौद्ध धर्म का एक अंग है। इसमें संसार के साथ-साथ आत्मा को क्षणिक एवं परिवर्तनशील माना गया है। चिंता सर्ग में मनु के समक्ष भीषणतम् समस्याएँ प्रकट होती है। तो उसे सब कुछ क्षणिक प्रतीत होता है – 'मृत्यु अरी चिर निद्रे तेरा अंक हिमानी-सा शीतल, तू अनन्त में लहर बनाती काल जलधि की सी हल चल।' .... जीवन तेरा क्षुद्र अंश है, व्यक्त नील धन माला में। सौदामिनि संधि सा सुन्दर क्षणभर रहा उजाला में। '

3. **करूणा** – यह बौद्ध धर्म के व्यापक तत्वों में से एक है। महायान सम्प्रदाय के अनुसार जिसमें प्रज्ञा के साथ महाकरूणा का भाव रहता है। वह बुद्ध बन जाता है। इस तत्व की प्राप्ति होते ही स्वयं की परिधि का इतना विस्तार हो जाता है कि सभी उसके अपने लगने लगते है। 'दया माया ममता लो आज, मधुरिमा लो अगाध विश्वास, हमारा हृदय रत्ननिधि स्वच्छ, तुम्हारे लिए खुला है पास, बनो संसृति के मूल रहस्य तुम्ही से फेलेगी यह बेल'। आदि।

4. **परमाणुवाद** – कामायनी में न्याय वैशेषिक के परमाणुवाद की ओर भी संकेत हुआ है। वह कहते है कि मूल शक्ति अपने आलस्य का परित्याग करके सृष्टि का सृजन करने को जैसे ही उद्धत हुई वैसे ही अणु परमाणु सब दौड़ पड़े और विद्युत कण पारस्परिक आकर्षण के कारण लीन हो गए।

'वह मूल शक्ति उठ खड़ी हुई अपने आलस का त्याग किए, परमाणु बाल
सब दौड़ पड़े, जिसका सुन्दर अनुराग लिए। एवं ....
वह आकर्षण वह मिलनहुआ, प्रारम्भ माधुरी छाया में,
जिसको कहते सब सृष्टि बनी, मतवाली अपनी माया में।'

5. **भौतिकतावाद** – इस दर्शन का मूल आधार संसार में जो कुछ दिखाई देता है। वह सब भौतिक पदार्थ है एवं गति के द्वारा ही उत्पन्न हुआ है। विश्व निर्माण में द्रव्य का हाथ है और इसी से समस्त भौतिक पदार्थ मानव शरीर, मन आदि का निर्माण हुआ है। संसार में जो कुछ दृश्यमान है भौतिकतावाद का ही परिणाम है। यह सिद्धान्त कार्लमार्क्स एवं हीगेल के आधार पर प्रसाद जी ने प्रभावित होकर प्रयुक्त किया है। भारतीय दर्शन के आधार पर यह सिद्धान्त चार्वाक के सिद्धान्त पर आधारित है या उसके निकट है। जल प्लावन की ऐतिहासिक घटना इसी आधार पर घटी है। यथा-

'बिछुडे तेरे सब आलिंगन, पुलक स्पर्श का पता नहीं
मधुमय चुबंन कातरताएँ, आज न मुख को सता रही।'

भौतिकतावाद के आधार पर सारस्वत प्रदेश की स्थापना, वर्ग संघर्ष, क्रान्ति एवं श्रम विभाजन एवं नगरीय उन्नति दृष्टव्य है। प्रसाद जी भौतिकतावाद पर आध्यात्मिक वाद की विजय दर्शाना चाहते थे लेकिन प्रत्यभिज्ञ दर्शन से प्रभावित प्रसाद समरसता की ओर चलते हुए आनन्दवाद की ओर चले गये।

6. **प्रकाश का सिद्धान्त** – प्रकाश के सिद्धान्त के आधार पर कामायनी में स्पष्ट किया है कि प्रकाश तरंग युक्त एवं कम्पनशील होता है –

'व्यक्त नील में चल प्रकाश का
कम्पन सुख बन जाता था।'

7. **वायुमण्डल का सिद्धान्त** – ज्यों-ज्यों वायुमण्डल में मनुष्य ऊपर उठता जाता है त्यों-त्यों 'ऑक्सीजन' का प्रभाव कम होता जाता है। ऊपर ठंडक होती है तथा जीवन के चिन्ह नहीं मिलते है-

'नीचे जल धर दौड़ रहे थे
सुन्दर सुरधनु माला पहने
कुंजर सदृश्य इठलाते
चमकाते चपला के गहने।'

अधिक ऊपर शीत पवन ही शेष रहता है साँस अवरूद्ध होने लगती है। 'लौट चलो इस वात चक्र से, मैं दुर्बल अब लड़ न सकूँगा। श्वास रूद्ध करने वाले इस शीत पवन से अब लड़ न सकूँगा। '

8. **पैत्रिक योग्यता का सिद्धान्त** – बच्चों में माता-पिता के गुण पाए जाते है। कामायनी के मानव में श्रद्धा, एवं मनु दोनों के ही गुण विद्यमान हैं-यह तर्कमयी तू श्रद्धामय, तू मननशील कर कर्म अभय।

9. **अद्वैत दर्शन** – अद्वैत दर्शन कामायनी में प्रारम्भ से प्रतिस्थापित हुआ है आत्मा में ही ईश्वर की सत्ता है, ईश्वर सर्व व्यापक है –

' नीचे जल था उपर हिम था एक तरल था एक सघन
एक तत्व ही की प्रधानता कहो उसे जड़ या चेतन।'

10. **सांख्य दर्शन** – सांख्य दर्शन के आधार पर मनु में सत, रज, तम तीनों ही गुण विद्यमान पाए जाते हैं।

इस भांति कामायनी में शैव दर्शन, प्रत्यभिज्ञ दर्शन, बौद्ध दर्शन, न्यायवेशेषिक, वैज्ञानिक आदि विभिन्न दर्शनों एवं सिद्धान्तों का समावेश हुआ है। किन्तु प्राथमिकता प्रत्यभिज्ञ दर्शन को ही मिलते है जिसके अनुसार आनन्दवाद की स्थापना करना प्रसाद जी का प्रमुख लक्ष्य रहा है।

संदर्भ सूत्र :-

1. कामायनी – जयशंकर प्रसाद भूमिका एवं मूल पाठ से

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

गाँधी चरित हिन्दी काव्य

हृदा नाग*

* पीएचडी शोधार्थी, गंगाधर मेहर विश्वविद्यालय, संबलपुर (ओडिशा) भारत

प्रस्तावना - साहित्य का व्यक्ति पर और व्यक्ति का साहित्य पर प्रभाव पड़ता है। यह अवश्य है की इतिहास में ऐसे महान व्यक्तियों की संख्या कम है जो अपने देश की जनता व साहित्य को प्रभावित करते हैं। गाँधी की गणना उन्ही महापुरुषों में की जाती है।

भारतीय इतिहास का 1919 से 1948 तक का काल गाँधी युग से जाना जाता है। उस समय सम्पूर्ण भारत गाँधीमय हो गया था। भारत के ही नहीं बल्कि विश्व के इतिहासकारों ने एक मत से गाँधी को उस युग के सबसे महान व्यक्ति के रूप में आँका है। ऐसी स्थिति में ऐसे विराट व्यक्तित्व वाले गाँधी का हिन्दी कविता पर प्रभाव पड़ना न तो कोई आश्चर्यजनक बात है और न ही बहुत महत्वपूर्ण, बल्कि स्वाभाविक है।

आश्चर्य वाजपेयी जी का कहना है- कोई ऐसा विराट- विभ्राट काव्य हिन्दी-जगत ने अभी नहीं दिया है जो गाँधी के महान जीवन को बेबाक सुरक्षित कर सके। अत: जितना हम हिन्दी बालों ने किया है उसके बाबजूद गाँधी के कृतकार्य को बोझ हम पर लदा हुआ है।

विषय दृष्टि के अनुसार देखने से यह पता चलता है कि हिन्दी काव्य की एक अच्छी संख्या हमारे सम्मुख आती है, जिसमें गाँधी के चरित्र का आकलन हुआ है। जिसमें गाँधी जी को नायक के रूप में वर्णन किया गया है, ऐसी काव्यकृतियाँ हिन्दी में अनेक हैं। 'जननायक': रघुवीर शरण 'मित्र', 'गाँधीचरित मानस': विद्याधर महाजन, 'तुम बन गये राम': नटवरलाल 'सनेही', 'महामानव': ठाकुर गोपालशरण सिंह, 'अब बहु जन से सब जन हिताय': जगदीश नारायण सिन्हा, 'गाँधीचरित': महेशचंद्र प्रसाद और 'विश्व ज्योति बापू': डॉ. दिनेश ये ऐसी प्रबंध रचनाये हैं जिनमें गाँधी के कार्य और विचार पर प्रकाश डाला गया है। पन्त के 'लोकायतन' में भी गाँधी के विचार-दर्शन पर प्रचुर प्रभाव पड़ा है। खंडकाव्यों में 'बापू': सियाराम शरण गुप्त, 'बापू': रामधारी सिंह 'दिनकर', 'गाँधी गौरव': गोकुलचंद्र शर्मा, आदि की रचना दिखने को मिलता है।

'खादी के फूल' रूपन्त तथा बच्चन, 'सूत की माला': बच्चन, 'रक्त चंदन': नरेन्द्र शर्मा, 'वंदना के बोल': हरिकृष्ण प्रेमी, 'गाँधी का पुनर्जन्म : प्रफुल्लचंद्र पट्टनायक और 'पर आँखे नही भरी': शिवमंगल सिंह 'सुमन'-ये कुछ ऐसे काव्य संग्रह है जिनमें गाँधी को रचनाकार ने अपने लेखन के माध्यम से स्मरण किया है।

इनके अतिरिक्त इस युग का बहुत सारा काव्य ऐसा है जिसमें गाँधी का विचार और आदर्श प्राणधारा की तरह बह रहा है। हिन्दी के रचनाकारों ने हिन्दी काव्य में राष्ट्रवाद, आदर्शवाद,समाजवाद,अछूत तथा नारी समस्यापारक काव्य हिन्दी काव्य पर छा जाता है इसलिए उसे हम गाँधी का प्रभाव कहेंगे। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', गायप्रसाद शुक्ल 'सनेही', मैथिलीशरण गुप्त,सियारामशरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान के जरिए हिन्दी काव्य में गाँधी विचारधारा की प्रतिष्ठा प्रारंभ हुई उसने छायावादी काव्य के सम्पूर्ण काव्य में गाँधी दर्शन देखने को मिलती है।

आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी जी ने कहा है 'इस व्यापक राष्ट्रीय जागृति की हलचल में ही हमारा साहित्य पनपा और फुला-फला है।' डॉ. नगेन्द्र कहते हैं की 'राजनीति में जिन प्रवृतियों ने गाँधीवाद को जन्म दिया करीब-करीब वैसा ही प्रवृतियों द्वारा साहित्य में छायावाद का प्रादुर्भाव हुआ। डॉ. नामवर सिंह मानते हैं कि 'राजनीतिक ढंग से जो कार्य गाँधीवाद ने किया,साहित्यिक ढंग से वही कार्य छायावाद ने किया।'

रघुवीर शरण 'मित्र' ने 'जननायक' नाम से एक प्रबंध काव्य की रचना की है। इस काव्य को महाकाव्य कोटी में रखा जा सकता है। इकतीस सर्गों में रचित यह प्रबंध शास्त्र- विहित मान्यताओं को ध्यान में रखते हुआ लिखा गया है। इसमें कथा-विधान, सर्ग-उपस्थापन और छंद परिवर्तन का यथोचित विधान किया गया है तथा ओजमण्डित प्रवाह पूर्ण भाषा में गाँधी के चरित्र को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। कवि ने गाँधी के धैर्य, साहस, सयंम और आश्चर्यकारी प्रभाव को सामने रखते हुए उनमें देवत्व की प्रतिष्ठा किया है। प्रबंध के भूमिका में रघुवीर शरण जी ने लिखा है-' इतिहास उनके चरोणों से बदला है, पीड़ा को उनके प्राणों से शांति मिली है, मृतकों को उनकी वाणी ने जीवन दिया है और दासता को उस मुक्त की महिमा से मुक्ति मिली है। उनमें अदभूत चमत्कार था। उनकी वाणी के स्पर्श से मृतक भी बोल उठे।' रघुवीर जी ने कहा है-

'जिनकी चरण -धूलि चंदन है, दीपक, उनके चरणों में जल।
जिनकी पूजा में प्रसाद है , वाणी, उनके मंदिर में चल ।।'

कवि में इस कोटी की श्रद्धा इसलिए है कि गाँधी वह संग्रह है जहाँ अनेक धाराएँ मिलकर एक हो जाती हैं। इसलिए वह चाहते हैं कि मेरी कविता का मुखवरण वही, उसी संगम पर हो: -

'जहाँ अनेक एक में मिलते, काव्य-कला उस संगम पर गा।।'

इस काव्य का समापन भी ऐसी ही संभ्रम संवलित शब्दावलि में हुआ है: -

'दृष्टियाँ नग चूमती हैं, चिटियाँ पग चूमती हैं।'

विद्याधर महाजन ने गोस्वामी तुलसीदास के रामचारित की रूप रेखा और रचना-शैली का अनुशरण करते हुए 'गाँधी चरित मानस' नाम से एक प्रबंध काव्य की रचना की है। ब्रजभाषा के माध्यम से दोहा-चौपाई छंद में

परिलिखित यह ग्रंथ आठ सोपानों में गाँधी को राम जैसी ही सत्य पुरुष और संकल्प- सुस्थिर दिखाया गया है। नटवरलाल 'सनेही' द्वारा विरचित प्रबंध काव्य- 'तुम बन गये राम' कवि की काव्य प्रतिभा का उत्तम उदाहरण है। गाँधी के जीवन की प्रत्येक छोटी -बड़ी घटना को इस काव्य ग्रंथ के अट्ठारह अध्याय में समेटने का प्रयास किया गया है। गाँधी का जीवन चरित्र नर में नारायणत्व की सिद्धि का उदाहरण है। वे अकाम कर्मरित लोकमंगलकामी अध्यात्म परायण है। राम उनकी राम उनकी साँस-साँस में रचा -बसा और अंतिम साँस का सहचर है। इन तथ्यों की ओर संकेत करते हुए कवि कहता है : -

'साँसों के सुरभित मनकों पर,तुम राम-राम रटते अकाम।
अहरह अणु-अणु अभिनंदनीय, बापू , तुम ही बन गये राम।'

सन् 1952 में ठाकुर गोपालशरण सिंह 'जगदालोक' नाम से एक प्रबंध रचना की। इसके नायक 'बापू' हैं। यह रचना 20 सर्गों में वर्णन है। गाँधी के जन्म से लेकर उनके दाह-संस्कार तक की सभी मुख्य घटनाएँ इस ग्रंथ में वर्णन किया गया है।

श्री जगदीशनारायण सिन्हा द्वारा रचित 'अब बहु जन से सब जन हिताय' एक प्रबंध रचना है। जगदीशनारायण जी ने महात्मागाँधी के चरित्र को महानायक रूप में वर्णन किया है। गाँधी के जीवन दर्शन कवि पर अधिक प्रभाव पड़ा है। इसलिए वह उन आदर्शों और तथ्यों के उद्घाटन में अधिक रम सका है। इस काव्य की भाषा सहज-सरल है। कवि स्वयं स्वीकार किया है कि मेरी रचना में कोई काव्यात्मक सौंदर्य है वह गाँधी का है।

श्री महेशचंद्र प्रसाद कृत 'गाँधीचरित' में धर्मनीति,राजनीति,युद्धनीति और देशभक्ति के परिप्रेक्ष्य में गाँधी के व्यक्तित्व का वर्णन हुआ है। इस रचना से रचनाकार के संबंध में यह तथ्य सामने आता है कि कवि संस्कृत का गंभीर ज्ञान का ज्ञाता है। संस्कृत के उत्स ग्रंथों,धर्मशास्त्रों,स्मृतियों और महाकाव्यों की छाया इस रचना में बहुत सरलता से देखि जा सकती है। डॉ. अरविन्द जोशी 'गाँधी-चरित' को महाकाव्य स्वीकार किया है।

डॉ. दिनेश द्वारा रचित 'विश्व ज्योति बापू' को भी भाव,भाषा और विषय-विन्यास की दृष्ठि से एक गंभीर प्रबंध मान सकते हैं। खंड काव्यों में सियारामशरण गुप्त कृत 'बापू' में गाँधी युग-पुरुष हैं। उनका आविर्भाव धरती का मंगल प्रभात है। गाँधी आत्मा की ज्योति से विभाजित हैं। उन्होंने कर्म का मंत्र प्रदान किया है। 'दिनकर' की दृष्ठि से गाँधी महामानव थे। दिनकर जी ने गाँधी के विषय में कहा है-

'बापू मैं तेरा समयुगीन, है बात बड़ी पर कहने दे,
लघुता को भूल तनिक गरिमा के, महासिन्धु में बहने दे।।'

कवि के अनुसार बापू उन महापुरुषों में से हैं जिनकी आवाज सुनकर समय रुक जाता है, जिनके आदेश पर इतिहास झुक जाता है। दिनकर जी के 'बापू' काव्य को समीक्षात्मक दृष्ठि से देखने पर यह स्वत: सिद्ध होता है कि कवि ने अपनी प्रतिभा के शिखर पर आरूढ हो, श्रद्धा के अतल श्रोत से रस खींचकर गाँधी के चरणों में अर्घ्य देने का सक्षम प्रयत्न किया है।

गोपालचन्द्र शर्मा कृत 'गाँधी गौरव' काव्य में गाँधी-चरित को वर्णन करने में सफल हुए हैं। इनके अतिरिक्त पंत,बच्चन,नरेंद्र शर्मा,हरिकृष्ण प्रेमी, शिवमंगल सिंह 'सुमन' आदि श्रेष्ठ रचनाकारों ने शक्ति और श्रद्धा के साथ गाँधी चरित्र को उभारा है।

अत: यह कहा जा सकता है कि गाँधी एक युग है, एक संस्कृति है,इतिहास है, गाँधी स्वयं एक इतिहास है और गाँधी अपने युग के रचनाकारों लिए हंसों के मानसरोवर है। गाँधी जी को जितना भी वर्णन किया जाए उनको वर्णन करके रचना के माध्यम से समेटा नही जा सकता कियोंकि गाँधी का विचारधारा ही अमृत सामान सागर है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. जननायक, रघुवीरशरण मित्र।
2. विश्व ज्योति बापू, डॉ. दिनेश।
3. गाँधी गौरव, गोपालचन्द्र शर्मा।
4. गाँधीचरित, महेशचंद्र प्रसाद।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Higher Education in Rural Areas of India

Dr. Sonia Chandani *

*Asst. Professor, MKHS Gujrati Girls College, Indore (M.P.) INDIA

Introduction - Higher education is the backbone of the modern society. It has the power to transform human beings into human resources. Along with primary and secondary education higher education is also an instrument to build future generation. In India majority of the higher educational institutions are urban centric. .Even most of the higher educational institutions in rural India lack quality. As a result of that rural population are deprived. Under certain circumstances it is seen that gross enrolment ratio is very poor in these rural areas. The situation is even worse for female population in regard to gross enrolment ratio.

Education is one of the most powerful instrument for reducing poverty and inequality of society.. Education is the key to enhance India's competitiveness in the global economy. Thereforeensuring access to quality education for all, in particular for the poor and rural population, is central to the economic and social development. The rapid expansion of higher education system -has-brought-several-pertinent-issues-related-to-the-standards ofits-quality and-equal-availability of higher education facilities to all the categories of people of the society. India is a country with severe economic and social inequalities. There are some families with children rolling in wealth on one hand, while on the other, people strive of hunger.

in India a large number of populations fall under middle class family and lower middle class families. At the same time lower economy class families also exist in large numbers. Now, when a large number of families and their youth are struggling hard to fulfill their basic needs, they naturally have to compromise with the higher education specially the youth of rural and remote

it is observed in India, higher education institutions are mostly located in cities, main towns etc., where it is not possible for all the youth to stay away from their families as they may be the only bread earner of their families. Apart from this poor communication &transportation system of the rural areas also hinders equal access of higher education. The most important problem in the higher education system in India is the lack of quality of the institutions in rural areas. The quantitative expansion is not adequate. The inequalities among the institution located in rural area and urban area are quite remarkable.

The institutions of higher education located in rural and socio-economic backward areas are lacking in the implementation of best practices in higher education and quality. There are number of colleges located in remote, rural, backward and hilly areas, striving to achieve excellence. In these colleges the student's enrolment is from the socio-economic backward families. Most of the students are the first generation tearners of higher education. More than 70% of the students are scholarship holders as they are belonging to socio-economic backward families. There are no criteria for admission in the college, any students seeking higher education; who has passed the last qualifying examination, can enroll his name. The colleges are bound to enroll them, because they were established for these students. They were established with the objectives to provide education to these economically, socially and educationally weaker section of the society. In the assessment and accreditation by NAAC, such colleges get poor grades only because of the high dropout rates. The high dropout rate of the students in such colleges is a most important problem, which is to be solved.

Equity is at the heart of a good educational system. We don't have equity." Kapil Sibal. The Indian Higher Education system is characterized by a large rural- urban and gender divide. Gross Enrollment Ratio (GER) in rural India is estimated to be about 7%, while urban areas have a GER of about 23%. India's GER shows significant variability across regions. Though the current rural-urban disparity in access to higher education opportunities is trending towards continuous shrinking, however this disparity is still very clear.

The National Knowledge Commission chaired by Sam Pitroda has recommended setting up of 1500 universities in the country. This was done with the objective of extending the benefits of education to all the people of our country eligible for the same. The UGC in a report released in early part of 2010 has identified 374 districts of the country as educationally backward districts. This number as compared to the total nos, of 650 district of the country amounts to approximately 60% of the districts.

Educationally Backward Districts in India - The rural urban divide continues as urban GER is about three times higher

(23.79) than the rural (7.51). For women it is four times higher (22.56 for urban as compared to 5.67 for rural) whereas for urban men it is about twice and half higher than the rural men, the corresponding figures being 24.77 for urban and 9.28 for rural. Analysis of about 111 Universities and 3,492 colleges assessed by the NAAC indicates that the deficiencies in availability of human resources in terms of quantity and quality teachers and physical and other infrastructural facilities caused qualitative gaps between 'A' and 'C grade Universities and colleges. The higher educational institute of rural areas are lacking behind in different aspects as compared to the institutes of urban areas which leads to lower grading by NAAC. The percentage of colleges with libraries, computer centers, health centers, sport facilities, hostels, guest houses, teacher's housing, canteens, common rooms, welfare schemes, gymnasiums, auditoriums, and seminar rooms are much higher in case of high quality colleges as compared with the low quality ones.

Similarly, high quality colleges are better placed with regard to academic indicators, which include higher student-teacher ratios, number of permanent teachers or teachers with PhD degrees, books per student, books and journals per college, and students per computers etc. Thus, if low quality colleges are to be brought at parity with high quality ones; a substantial improvement in the physical and academic infrastructure is necessary in the higher educational institutions located in remote areas. The colleges located in rural areas have their own specific patterns of student's attendance in the classroom. Specially in rural areas more than 50% of the students use to remain absent in the classroom during the sowing season in the fields as they are from the farmers families and the land-less labors families; and again in the season of harvesting the classrooms use to be vacant. The annual teaching plans prepared by the teachers are not much helpful to carry out the process of teaching and evaluation in practice.

Problems :

1. **Lesser Number of Institutes:** In comparison to the number of higher education institution present in urban areas i.e., cities or towns, there are very few institutions in rural areas of India. Technical higher educational institutions are very rarely established in the rural areas.
2. **Access:** The Gross Enrolment Rate (GER), measures, the access level by taking the ratio of persons in all age groups enrolled in various programs to total population in age group of 18 to 23. The access to higher education for all eligible in the country is a major issue before the policy makers.
3. **Equity:** On one hand GER stands low for the overall population, while on the other there are large variations among the various categories of population based on urban or rural habitation and rich and poor. Due to regional disparity in economic development and uneven distribution of institutions of higher education, the higher education is not equally available to the different sections of the society.
4. **Limitation of Quality:** The higher educational institutions suffer from large quality variation in so much so that a NASSCOM- Report-2005 has said that not more than 15per cent of graduates of general education and 25-30per cent of Technical Education are fit for employment. First, the quality norms of which are not comparable with international standards can't be maintained by the higher educational institute of rural areas. Secondly, the enforcement process is not stringent. Further political interference and corruption dilute the role and impact of these intuitions in ensuring the desired quality standards.
5. **Cost of Education:** One of the main factors of lower enrolment in rural area is the cost of education. Technical education sometimes only a dream for most of the students of rural areas where the people are mostly dependent on agriculture. Even sometimes it is seen that normal higher education expenses cannot be afforded by some of the families coming under lower middle class tag.
6. **Higher Teacher-student Ratio:** Student teacher ratio is one of the indicators used to describe the quality of education received in any education unit, be it in a city or in any rural areas of the country. UGC has recommended an ideal ratio of 1:30 for the general undergraduate courses. Unfortunately, because of lesser no of educational institutes in rural areas, more and more students are bound to enroll and the teacher-students ratio does vary to the standard so far as quality education is concerned.
7. **Privatization:** In India both public and private institutions operate simultaneously. In the year 2000-01, out of 13,072 higher education institutions, 42 per cent were privately owned and run catering to 37 per cent of students enrolled into higher education. Since providing grant-in-aid to private colleges is becoming difficult, they sometimes not able to maintain the minimum standard of quality education. The quality of education in these private colleges is very uneven. Many of the colleges because of shortage of funds are not able to hire well deserving and quality teachers which at times create a problem for the students to face. Apart from it some institutions do not have proper infrastructure like quality laboratory. But on the other side of the coin we actually could see there are some private colleges which have strived to enhance their standards and some of them rank better than many Government run colleges today which is not accessible for all.
8. **Misuse of Grants:** UGC provides financial assistance to the universities and colleges for various developmental activities. But the same fund is hardly seen to be properly utilized. Specially, in rural areas where the local bodies are not so strong, the guardian of the students are not so conscious about the proper use of financial assistance, administrative bodies takes the advantage of it.

Reference:-

1. Personal Research.

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Inculcation of Value System/Ethics Among Students

Dr. Kavita Chandani*

***Assistant Professor (Commerce) M.K.H.S. Gujarati Girls College, Indore (M.P.) INDIA**

Abstract - Society demands a university education grounded on ethical principles. Education in ethics values is responsibility of universities but will not be viable unless also adopted by directly responsible agents, the teachers who work with the students.

When most people think about a curriculum, they think about math, science, social studies, and language courses. Seldom do I hear or read about moral values being part of educational curricula in the modern world.

This creates a unique problem. Neglecting to teach moral values alongside academic concepts in schools/colleges is hurting our students and causing problems in society. If an individual doesn't learn moral values as they develop, how will they be able to discern the difference between right and wrong? Moreover, if they develop poor ethics and no moral values, they could harm society.

The goal of incorporating moral values into education is to ensure that, upon graduation, students not only have the knowledge and skills needed to work and succeed, but also the compassion and emotional wherewithal to be a part of a safe, peaceful, and cooperative society.

Introduction - Education in its general sense is a form of learning in which knowledge, skills and habits of a group of people are transferred from one generation to next through teaching, training, research.

By education, moral values can be improved, especially students. I think education is the best way to teach people about moral values.

Education is the most important invention of mankind. It is more important than his invention of tools, machines, space craft, medicine, weapons and even language, because language too was the product of his education. Man without education would still be living just like an animal.

It is education, which transformed man from a mere "two-legged animal" into human. Education is a lifelong process which continuous from womb tomb. Education is a tool for total development of human, if any aspect of human personality is ignored, it can result very adversely. Without imparting ethics and values in education human development will be incomplete.

Why isMoral Values necessary?As educators, we should all advocate the teaching of moral values in our colleges for the following reasons.

1. To Prepare Our Children for Their Future Roles in Society - The acquisition of knowledge in school/college is only one goal of education. Another primary goal of education should be enabling students to gain moral values. Our children will need both knowledge and morality to prepare themselves to be good friends, parents, colleagues, coworkers, and citizens in society.

2. Because Many Parents Aren't Teaching Moral Values - If all parents were teaching their children moral values at home, it would not be necessary for the schools to do this work. The sad fact is that a lot of kids are not learning the difference between right and wrong from their parents. Some parents can only spend a few hours with their children every week due to their busy workdays. In many families, there is only one parent present and no other role models for kids to follow. Some children don't have parents at all.

3. To Provide an Alternative to the Violence and Dishonesty Students See Around Them - Every day, students are exposed to violence, dishonesty, and other social problems in the media and the real world. How many times have we heard about school shootings? How often are students caught cheating on exams? How often do we read about bullying in schools and fights between gangs? If moral values were taught in schools, perhaps we would have fewer of these problems.

4. To Counter the Bad Influences in Society - Unfortunately, many of the role models young people look up to set bad examples. These bad examples can range from sexual misconduct to the degradation of women to the advocacy of violence to the condoning of using dishonesty to succeed.

Ethics for students: teaching methods & principles - Honesty and integrity are the two main features for reaching success. They result in high productivity, personal growth,

and, finally, a good reputation. Democracy is built on moral principles and laws of justice. If you want to advance moral development, you have to follow ethical rules. The role of the educators is to convey these thoughts to students.

7 Important Moral Values Students Should Learn - It would serve society well if the following seven moral values were taught to students in colleges.

1. **Unconditional Love and Kindness -** In most cases, if you love someone, they will love you back. This, however, is not the real meaning of love. Love should be unconditional. With more love in the world, kindness will follow and replace cruelty. Students must learn that spreading love—not hate—will bring them happiness and success in their adulthood.
2. **Honesty -** Students must be taught that dishonesty and cheating are wrong and will get them nowhere in the future. As a student, one is only hurting oneself by cheating. Dishonesty, even if effective in the short term (e.g., cheating on a test), will eventually catch up to a person and end with negative consequences in the long term (e.g., being unable to pass an entrance exam for a college class due to having cheated on tests in related subject matter).
3. **Hard Work -** When I was young, I learned that success was 1 percent inspiration and 99 percent perspiration. Nowadays, many students want to cheat and cut corners in their studies because they are lazy and don't place any value on hard work. This thinking must change. Those who are truly successful know that the work they put into something largely determines what they get out of it. If students learn to see hard work as an opportunity rather than an obstacle, they will be far happier working toward their goals as adults.
4. **Respect for Others -** Unfortunately, in our highly competitive, dog-eat-dog society, many people tread on others to get ahead in life. Respect for others should include respecting different religions, races, sexes, ideas, and lifestyles. When we lift those around us instead of putting them down, we all have a better experience. Students need to learn that their successes will not be built on others' failures.
5. **Cooperation -** To achieve a common goal, all people must work together. If this is not done, a few people may profit, but everyone else will suffer. I still believe in the motto, "united we stand and divided we fall." Healthy competition can help people to innovate, but to be truly successful as a society, we must cooperate first and foremost.
6. **Compassion -** Compassion is defined as being sensitive to the needs of other people. If there were more compassion in the world, there would be far less hunger, conflict, homelessness, and unhappiness. If students were better educated in empathy, each new generation would have a greater chance of remedying the ills of society.
7. **Forgiveness -** As a Christian, I have learned that Jesus Christ taught us to forgive our enemies and the people who hurt us. In my experience, this idea rings true regardless of one's faith or lack thereof. In most cases, anger is caused by an unwillingness to forgive. There would be less violence and fighting in schools if students could learn this moral virtue.

Ethical responsibilities of college professors in encouraging ethical behavior of their students - Professors are responsible for the development of moral character of their students. By their example, as well with the help of well-organized work in this regard, they help young people to develop ethical skills including ethical reasoning. Here are some recommendations on how they can do it.

#1 Create an ethical environment - The best way to teach moral values is to set a good example. Professors should evaluate the students' knowledge and skills honestly.

I. The test questions must reflect materials that have been studied during the course. It is not honest to include too complicated tasks that go beyond the curriculum.
II. The system of knowledge assessment must be clear and transparent. Obviously, a professor has to be unbiased while putting marks for essays, case studies, coursework, and other academic papers.

#2 Discuss ethical issues with students - Professors should explain ethical rules and their impact on moral development, academic success, and advancing their career.

Use examples - For instance, one can remind students of the unacceptability of plagiarism. Firstly, it is not honest to steal content and say that it is yours. Any text is the result of intellectual effort, and it has its value. The authors and writers have property rights on it and deserve to restrict access to it when others want to pass it off as their own work. When you copy someone's materials, you break copyright law. Secondly, professors evaluate student's individual effort, but not his/her possibility to find and copy someone's ideas. Thus, the plagiarism issue is a matter of academic dishonesty.

Prove the importance of ethics - Professors should emphasize that ethical behavior, above all, contributes to a good reputation. The image of a decent person is highly appreciated in the modern world. However, one can spend years to earn it but it doesn't take long to lose it. One mistake and all you fought to develop is gone in an instant. That is why ethics is a point of self-development and moral awareness. One needs to follow ethical standards to boost individual progress but not to avoid punishment or lower grades.

Teach students to make ethical decisions - Apart from college assignments, professors can discuss life situations with young people too. For instance, it could be a historical episode, a political event, a fact from the latest news, etc. Measured discussions in a classroom setting are quite helpful as they give a real picture of the situation.

People always need to make decisions, and sometimes the choice is extremely challenging. However, students must realize that it all starts with ethics. It is the basis for constructive solutions and long-term relations.

#3 Prevent, detect, and react to unethical cases in the

classroom - Reflections on ethics are not enough to encourage students' ethical behavior. One needs practical actions too. So, professors have to organize the learning process in accordance with moral rules.

1. The distance between desks must be enough to prevent students from cheating when they write a test.
2. The tests should be conducted in the presence of the professor.
3. Electronic devices (phones, tablets, smartwatches, etc.) must be forbidden during the test.
4. It is convenient to use modern software to find plagiarism in students' papers. Opt for a professional online service for this purpose and buy a premium account for quick checks.
5. Professors can give individual tasks. In this case, students have fewer temptations for cheating and plagiarism.
6. It is a good idea to teach students to paraphrase texts. Thus, they learn to formulate their thoughts and come up with unique plagiarism-free essays.
7. Professors should respond to academic dishonesty properly. Depending on the seriousness of the case, it could be a lower grade, one more assignment, an additional task, etc.

Conclusion - If our major motto in this 21st century is to achieve "Sustainable Development" and continue with that , than without including value education to adult individual that would remain as a distant possibility Love for brotherhood and surroundings can only help to control negative externalities, we often talk about literature of economics, while an era of consumerism isdemonstrating selfish preference ,we urgently need an altruist approach from every economic agent to save our nation from its forthcoming danger. Therefore, value education in Higher Education Institutes should be given adequate importance in restricting the existing education policies. Then only we can think for a better tomorrow in this already endangered crisis accentuating country.

Reference :-

1. Personal Research.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Consumer Satisfaction Level towards Eco- Friendly Products

Dr. Pooja Chouksey* Dr. Sonam Kulkarni Jaiswal**

*Asst. Professor, M.K.H.S. Gujarati Girls College, Indore (M.P.) INDIA
** Asst. Professor, M.K.H.S. Gujarati Girls College, Indore (M.P.) INDIA

Abstract - The green movement has been expanding rapidly in the world. With regards to this consumers are taking responsibility and doing the correct things. Today, many companies have accepted their responsibility to protect our environment. So, products and production process become cleaner. More companies introduce green products and it helps to change the polluted world. "Go green", because they realize that they can reduce pollution and increase profits at the same time. Green marketing is a creative opportunity to innovate in ways that make a difference and at the same time achieve business success. The main objective of this study is to know the Consumer Satisfaction Level towards Eco- Friendly Products. The study in addition will also try to investigate the awareness and perception of consumers regarding the green products and tries to look into the consumer beliefs and attitude on environment protection and their purchasing behavior of eco friendly products.
Keyword - Eco-friendly Products, Green Consumer, Perception, Environmentally Marketing.

Introduction - Environmentally friendly or environment-friendly, (also referred to as eco-friendly, nature-friendly, and green) are sustainability and marketing terms referring to goods and services, laws, guidelines and policies that claim reduced, minimal, or no harm upon ecosystems or the environment. Environmental marketing is somewhat new concept which evolves in recent years. But Marketing is the holistic approach towards identifying and satisfying need and wants of consumer and potential consumer. Environmental Marketing means manufacturing and marketing of those products and services which are manufactured through green processes.

"Environmental marketing" refers to green products which is environmentally safe or does not create any threat to environment. Several activities are involved in green marketing which includes product modification, packaging and advertising. (Mishra & Sharma, 2010)[4]. Environmental marketing is the process of developing products and services and promoting them to satisfy the customers who prefer products of good quality, performance and convenience at affordable cost, which at the same time do not have a harmful impact on the environment. It includes a broad range of activities like product modification, changing the production process, modified advertising, change in packaging, etc., aimed at reducing the harmful impact of products and their consumption and disposal on the environment.

Eco-Friendly Products - Eco-friendly products are "products that do not harm the environment whether in their production, use or disposal". In other words, these products help preserve the environment by significantly reducing the pollution they could produce. Eco-friendly products can be made from scratch, or from recycled materials. This kind of product is easily recognizable as it is, in most cases, labelled as such. Some people think that it requires lot of time, effort and money to make a home eco-friendly. The truth is that there are lots of eco-products that you can start using right now which can help you to reduce waste and make this planet a better place to live.

The products manufactured through green technology causing no environmental hazards are called green products or environment friendly products. Promotion of green technology and green products is necessary for conservation of natural resources and sustainable development. Some characteristics of green product are given below:-

1. Products those are originally grown.
2. Products those are recyclable, reusable and biodegradable.
3. Products containing recycled contents, non-toxic chemical.
4. Products that do not harm or pollute the environment.
5. Products that will not be tested on animals.
6. Products that have eco-friendly packaging, refillable containers.

FMCG sector is considerably a large sector in economy which has become immensely conscious about eco-friendlyliness. As society become more with environmental pollution and unethical business practices, both consumer and business organizations are concerned with the prevention

of the presume nature of the environment. As a result there is a shift in the buying behavior of the individual; hence they prefer products which are environmentally friendly to those which are environmentally harmful. This transformation has made business organizations to address society's "new" concerns. Organizations are now aware of the fact that only adopting green in the core of their strategy they can survive in the present competitive era.

The FMCG sector is one of the growing industries that have concern about the green marketing issues. Most of the marketing practitioners use green elements as powerful marketing tools. Studies on environmental trends and green marketing have multiplied in recent years and point to growing consumer awareness. However, a better understanding of consumer behavior towards green marketing is necessary especially in FMCG sector.

Research Objectives:

1. To find out the Consumer Perception towards environment friendly FMCG products.
2. To study the Consumer Buying Behaviour and level of satisfaction towards green products.

Literature Review

Patnaik et al in their Study the consumer attitude towards green FMCG products are correlated with price, product, place, awareness, brand knowledge, pre-purchase and post purchase behaviour. Nowadays people are careful about their daily product like cosmetics, baby products, body care, food etc. The quality of the products is the most important factor that influences the purchase of green FMCG products.

Pandey et al this research study took place in Delhi NCR Region, researcher analyze the consumer's attitude towards organic food products. In India the concept of eco-friendly food is still in the primary stage. The marketer must create awareness through advertisement and publicity of organic food product, so that the market size of organic food products is increased. The researcher study showed that most of the consumers were aware about the organic food products like better in quality, better in taste, food products free from pesticides, purchased by the publicity through word of mouth. But most of the consumer said that organic foods products are not easily available in market places, more expensive and the information related to eco-friendly foods products is very limited.

Katait an innovative study analyzed the Consumer behavior towards green products of FMCG, the authors found that consumers are becoming more concerned and aware about the environment friendly products. Many companies are doing their best by adopting Green Production Process. Consumer attitude is well affected by their product attributes, product knowledge and existing culture.

Unnamalai conducted a study on consumer Attitudes towards Green Fast Moving Consumer Goods with Special Reference to Tiruchirapalli Town. The usage and awareness of green FMCG products is very low among the peoples. Most of the people have no knowledge about the eco-friendly products. But majority of people are having consciousness about the eco-friendly environment and they are trying to save earth from pollution.

Yusuf et conducted a study on consumer attitude and perception towards green products. consumers has awareness about the implication of global warming, harmful impact of pollutants, non biodegradable solid waste etc, both consumer and marketer are switching to eco-friendly products and most of companies have accepted their responsibility not to waste the natural resources and not to harm the environment. Samples were selected through random sampling, near about 70 college going students participated in the research. For this sample statistical analysis Pearson correlation was used.

Kumar et al this study aimed to gain knowledge about consumer behaviour towards organic products Consumption and Market potential of the Organic food products. The results concluded that marketing of organic product is very poor and demand for organic product is increases, most of the consumer prefer organic food product. The major reasons are organic food producer are low, sufficient market facility is not there, lack of awareness, few number of shops and so on. But if farmer and government give interest to improve production of organic food product as well as quality, good packaging and market system, it helps to get better standard of living farmer and it helps to government and also it healthy to environment.

Research Methodology

Data Collection - This study is mainly based on the information and data obtained from the primary sources. To analysis of consumer perception towards eco-friendly products a well framed closed ended questionnaire was filled by the respondents and the findings are presented as figures and facts found during the analysis. Statistical techniques were used with the help of Statistical Package for Social Sciences (SPSS) for hypothesis testing.

Hypothesis Testing

Consumer Satisfaction Level towards Eco- Friendly Products.

H_0 : Age has no significant effect on consumer satisfaction level towards eco- friendly products.

H_1 : Age has an effect on consumer satisfaction level towards eco- friendly products.

Applying One-Way ANOVA using IBM SPSS statistics 21.0 Software

Table 1 (see in next page)

The mean of each group in Descriptives table, it can be concluded that there is homogeneity of variances.

Test of Homogeneity of Variances

Table 2 : Test of Homogeneity of Variances for Consumer Satisfaction Level towards Eco- Friendly Products with respect to age of the respondents

FQ TOTAL

Levene Statistic	df1	df2	Sig.
.952	3	436	.416

According to Levene's Test for homogeneity of Variances, if significance value of Levene's Test for Homogeneity of Variances test is more than 0.05 then there is homogeneity of variances.

Here, significance value of Levene's Test for Homogeneity of Variances test is 0.416 which is more than 0.05. Hence there is homogeneity of variances.

Table 3 : ANOVA Test Statistics for Consumer Satisfaction Level towards Eco- Friendly Products with respect to age of the respondents

ANOVA

FQ TOTAL

	Sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig.
Between Groups	3.965	3	1.322	.494	.686
Within Groups	1165.589	436	2.673		
Total	1169.555	439			

From the ANOVA table the Sig. value is 0.686 which is more than 0.05. Hence null hypothesis (H0) is accepted. So it can be concluded that age has no significant effect on consumer satisfaction level towards eco- friendly products

Finding - Age has no significant effect on consumer satisfaction level towards eco- friendly products. Different age groups of consumers are equally satisfied with the eco-friendly products. Customers have a positive perception towards environmentally friendly products. Most of the respondents considered that it's important to them that the products they use do not harm the environment and they considered themselves as environment friendly attitude.

Conclusion - On the basis of my research I have concluded that the people have awareness about the eco-friendly products and they show a positive attitude towards Environmental marketing and green products. But we should try to increase the awareness level into another extent. Which means a wide variety of eco-friendly products is available today. But the customer's awareness needs to be created properly about benefits, labels used and availability of such products to increase its consumption. Price is the attribute that consumers reflect on when making a green purchasing decision. Consumers are less likely to purchase green products because they are more expensive. So efforts should make to reduce the price of eco-friendly products. Constant efforts should be taken by Government, NGOs, Educational institutions, Business houses and society at a large to create awareness among the consumers to promote eco-friendly buying behaviour.

References :-

1. A. Patnaik and S. K. Pradhan, "A Study on consumer attitude towards green FMCG Products," International Journal of Scientific Development and Research, vol. 1, no. 12, pp. 83-91, 2016.
2. A. Pandey and P. Misra, "Consumer's Attitude Towards Organic Food Products with Reference to Delhi NCR," International Journal of Research and Analytical Reviews, vol. 3 , no. 21, pp. 2349-5138, 2016.
3. S. K. Katait, "Consumer behaviour towards green products of FMCG," International Journal of Commerce and Management Research, vol. 2, no. 8, pp. 43-4, 2016.
4. T. Unnamalai, "A Study on Consumer Attitudes towards Green Fast Moving Consumer Goods (FMCG) With Special Reference to Tiruchirapalli Town," International Journal of Engineering and Management Research, vol. 6, no. 4, pp. 380-389, 2016.
5. S. Yusuf and Z. Fatima, "Consumer Attitude and Perception towards Green Products," The International Journal of Indian Psychology, vol. 2, no. 3, pp. 140-146, 2015.
6. S. Kumar AD and H. M. Chandrashekar, "A Study On Consumers Behavior Towards Organic Food Products In Mysore City," International Journal of Management Research, vol. 5, no. 11, pp. 1082-1091, 2015.

Table 1 : Age descriptives for Consumer Satisfaction Level towards Eco- Friendly Products.

Descriptives

FQ TOTAL

	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error	95% Confidence Interval for Mean		Minimum	Maximum
					Lower Bound	Upper Bound		
30-40 years	154	12.2143	1.57582	.12698	11.9634	12.4652	8.00	16.00
41-50 years	63	12.3492	1.51507	.19088	11.9676	12.7308	9.00	16.00
51-60 years	121	12.3636	1.63809	.14892	12.0688	12.6585	9.00	16.00
60 and above years	102	12.4608	1.78371	.17661	12.1104	12.8111	8.00	17.00
Total	440	12.3318	1.63222	.07781	12.1789	12.4848	8.00	17.00

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

भारतीय आयकर अधिनियम द्वारा दी जा रही रियायतें व छूटों से वेतनभोगी करदाताओं में बचत की बढ़ती प्रवृत्ति का अध्ययन

डॉ. वीनस शाह* डॉ. सविता अग्रवाल**

* सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) एम.के.एच.एम.गुजराती कन्या महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत
** सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) एम.के.एच.एम.गुजराती कन्या महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – आम भारतीय मानसिकता के अनुरूप ही इन्दौर शहर के वेतनभोगी करदाता (कर्मचारी) में सामान्य रूप से बचत की प्रवृत्ति है तथा वह अपने भविष्य के लिय चिन्तित रहता है साथ ही वह निरन्तर अपने जीवन स्तर में सुधार भी चाहता है इसी कारण वह बचत का सहारा लेता है। सामान्यत: प्रत्येक व्यक्ति द्वारा बचत की जाती है परन्तु बचत की राशि को विनियोग करने का सबका तरीका भिन्न होता है। कई महिला व पुरूष वेतनभोगी कर्मचारी अपनी बचत को सामान्य तौर से विनियोग करते है तथा कुछ कर्मचारी आयकर की दृष्टि से बचत का विनियोग करते है। इन्हीं सभी पहलुओं का शोध-पत्र में विस्तार से अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना – वेतनभोगी करदाता अपनी बचत की राशि को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से अथवा अपनी बचत अधिकतम आय व लाभ अर्जित करने के उद्देश्य से विनियोजन का सहारा लेता है तो वह सामान्य तौर बचत का विनियोग कहलाता है। मनुष्य की सामान्य प्रवृत्ति है कि वह अपने द्वारा कमाई गई राशि सरकार को कम से कम आयकर के रूप में देना पड़े इसका भरपूर प्रयास करते है। इसके लिए आयकर अधिनियम द्वारा दी जा रही रियायतें व छूटों का प्रयोग कर आयकर में बचत का प्रयास करते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य– प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन के उद्देश्य निम्नानुसार है–

1. वेतनभोगी करदाताओं में बचत की प्रवृत्ति का अध्ययन करना।
2. भारतीय आयकर अधिनियम द्वारा दी जा रही रियायतें व छूटों का वेतनभोगी करदाताओं की बचत पर असर।

अध्ययन की विधि– शोधार्थी द्वारा शोध में प्राथमिक व द्वितीयक दोनों समंकों को समुचित उपयोग किया गया है। प्राथमिक समकों का संग्रह प्रश्नावली के माध्यम से किया गया है। द्वितीयक समंकों को विषय से सम्बन्धित पुस्तकों के माध्यम से एकत्रित किया गया है ताकि अध्ययन के सही निष्कर्ष तक पहुँचा जा सकें। इसके लिए सांख्यिकी पद्धतियों में बहुगुणी सहसम्बन्ध का प्रयोग कर परिकल्पना की सत्यता की जाँच की गई।

अध्ययन की परिकल्पना– प्रस्तुत शोध पत्र में एक शून्य और एक वैकल्पिक परिकल्पना स्थापित की गई है जो इस प्रकार है–

H_{01} : भारतीय आयकर अधिनियम द्वारा दी जा रही रियायतें व छूटों से वेतनभोगी करदातओं में बचत की प्रवृत्ति नहीं बढ़ी है।

H_{02} : भारतीय आयकर अधिनियम द्वारा दी जा रही रियायतें व छूटों से वेतनभोगी करदातओं में बचत की प्रवृत्ति बढ़ी है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के दौरान यह भी देखा गया कि आयकर में छूट प्राप्त करना भी वेतनभोगी करदाता के लिए बचत तथा विनियोग का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य होता है। वेतनभोगी करदाता अपनी बचतों को उन योजनाओं में निवेश करने का प्रयास करते हैं, जिससे उन्हें प्रतिफल में ब्याज के अलावा आयकर के भुगतान में छूट भी प्राप्त हो सकें। वेतनभोगी करदाताओं में बचत की प्रवृत्ति का विकास करने के उद्देश्य से भारतीय आयकर अधिनियम की धारा 80 के अंतर्गत कुछ योजनाओं को नामांकित किया गया है। जिनमें निवेश करने पर आयकरदाता को आयकर भुगतान में छूट प्राप्त हो सकती है।

वेतनभोगी करदाता अपनी बचत को आयकर अधिनियम द्वारा दी जा रही रियायतों व छूटों का लाभ लेने की दृष्टि से निम्नांकित योजनाओं में विनियोग करते हैं–

1. जीवन बीमा प्रीमियम
2. स्थगित वार्षिकी
3. प्रॉविडेंट फण्ड में अंशदान
4. सार्वजनिक भविष्य निधि में जमा
5. राष्ट्रीय बचत प्रमाण-पत्र
6. म्यूचुअल फण्ड में जमा

इत्यादि ऐसी योजनाऐं जिसमें पुरूष व महिला वेतनभोगी करदाता अपनी बचत विनियोग कर आयकर में बचत करने का प्रयास करते हैं।

शोधार्थी द्वारा शोध-पत्र के अध्ययन में इन्दौर क्षेत्र के 500 वेतनभोगी करदाताओं का सोच-समझ के आधार पर चयन कर उनसे एक प्रश्नावली भरवाई गई। जिसमें प्रश्नों के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया कि वेतनभोगी करदाता द्वारा बचत को सामान्य रूप से किन विनियोग योजना में विनियोजित करते हैं या आयकर में छूट प्राप्त करने के उद्देश्य से विनियोग करते हैं। किन-किन विनियोग योजना में विनियोग करते हैं किन-किन रियायतों व छूटों का प्रयोग करते हैं। इन सभी प्रश्नों के उत्तर प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त हुए और समस्य प्राप्त आंकड़ों की तालिका बनाकर विष्लेषणात्मक अध्ययन किया गया।

निष्कर्ष – प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया व उससे प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर शोध पत्र में स्थापित परिकल्पना की सत्यता की जाँच के लिए सांख्यिकी की बहुगुणी सहसम्बन्ध परीक्षण (टेस्ट) पद्धति का प्रयोग किया गया।

परिकल्पना का सत्यापन–

H_{01} : भारतीय आयकर अधिनियम द्धारा दी जा रही रियायतें व छूटों से वेतनभोगी करदाताओं में बचत की प्रवृत्ति नहीं बढ़ी है।

H_{12} : भारतीय आयकर अधिनियम द्धारा दी जा रही रियायतें व छूटों से वेतनभोगी करदाताओं में बचत की प्रवृत्ति बढ़ी है।

आयकर प्रावधान एवं बचत की प्रवृत्ति के बीच में कार्ल पियर्सन सहसम्बन्ध गुणांक (R) का मूल्य 0.415 है, जो कि P value 0.000 पर है जो कि वैध है एवं इनका मान 0.005 से कम है। अत: यह निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि भारतीय आयकर अधिनियम 1961 के आयकर प्रावधानों में दी जा रही रियायतें व छूटों और वेतनभोगी करदाता की बचत प्रवृत्ति में मॉडरेट सम्बन्ध है। इसके पश्चात् आयकर प्रावधान व वेतनभोगी करदाता की बचत की प्रवृत्ति का एनोवा के माध्यम से परीक्षण किया गया साथ ही उनका माध्य प्रतिगमन निकाला गया। अपरिवर्तनशील कारक व निर्भय चर की स्थापना कर उनका विश्लेषण तालिकाओं की सहायकता से किया गया।

बहुगुणी सहसम्बन्ध गुणांक R = 0.415 जो कि दो चरों के बीच रेखीय सहसम्बन्ध गुणांक बताता है, इनका संबंध मॉडरेट है, R^2 गुणांक की व्याख्या है, जो बहुगुणी सहसंबंध गुणांक का वर्गमान है।

समायोजित R^2 = 0.173 परिवर्तित R^2 0.171 है और यह मान चरों की संबंधों की प्रगाढ़ता को स्पष्ट करता है। गुणांक का निर्धारण R^2 जो कि 0173 है। इस तरह प्रतिशत का बदलाव यदि निर्भर चर (वेतनभोगी कर्मचारियों में बचत की प्रवृत्ति) में है, तो स्वतंत्र चर (आयकर अधिनियम में दी जा रही रियायतें व छूट) की वजह से है।

एनोवा तालिका किसी भी निर्भर घर में परिवर्तन होने का संकेत देता है, एनोवा तालिका से स्पष्ट होता है कि सभी मॉडल्स के लिए शून्य परिकल्पना (भारतीय आयकर अधिनियम द्धारा दी जा रही रियायतें व छूटों से वेतनभोगी करदाताओं में बचत की प्रवृत्ति नहीं बढ़ी है) को अस्वीकृत किया जाता है। साथ ही वैकल्पिक परिकल्पना (भारतीय आयकर अधिनियम द्धारा दी जा रही रियायतें व छूटों से वेतनभोगी करदाताओं में बचत की प्रवृत्ति बढ़ी है) को स्वीकृत किया जाता है तथा वे मॉडल दर्शाते हैं कि शून्य (0) मूल्य से 1 की तरफ है, साथ ही 5 प्रतिशत लेबर ऑफ सिग्नीफिकेंट यह बाता है कि मॉडल गुणांक की सार्थकता शून्य से निम्न है।

अन्य शब्दों में, समग्र प्रतिगमन की ढाल एवं रेखीय लाईन भी शून्य नहीं है ओर इसी कारण यह कहा जा सकता है कि-

गुणांक की सहायता से प्रतिगमन समीकरण स्पष्ट किया गया है, जो निम्नलिखित है-

आयकर प्रावधान = 44.221+ .637 बचत की प्रवृत्ति

उपरोक्त समीकरण वितरण प्रतिगमन विश्लेषण की आवश्यकता को पूर्ण करता है।

इस प्रकार भारतीय आयकर अधिनियम द्धारा दी जा रही रियायतें व छूटों का प्रयोग कर वेतनभोगी करदाताओं में बचत की प्रवृत्ति बढ़ी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. रिसर्च मथ्डोलॉजी एंड टैक्निक्स, सी.आर. कोठारी,वेली इस्टर्न लिमिटेड, 2011
2. शोध प्रविध एवं क्षेत्रीय तकनीक,डॉ. बी.एम. जैन,रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर
3. सांख्यिकीय के सिद्धान्त जे.एल. भारद्धाज, समप्रकाश एण्ड सन्स
4. कर नियोजन एवं प्रबन्ध श्रीपाल सकलेचा,सतीश प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, अनित सकलेचा,2013-14
5. आयकर विधि एवं व्यवहार, डॉ. एच.सी. मेहरोत्रा, साहित्य भवन पब्लिकेशन 2012

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Recent Advances in Biofuel Production Technology - A Comprehensive Review

Dr. Rashmi Ahuja*

***Professor (Chemistry) Govt. MVM, Bhopal (M.P.) INDIA**

Abstract - The world is presently confronted with the twin crisis of fossil fuel depletion and environmental degradation. The research for alternative fuels which promises a harmonious correlation with sustainable development, energy conservation, efficiency and environment preservation has become highly pronounced in present context. The fuels of bio-origin can provide a feasible solution to this worldwide petroleum crisis. Gasoline and diesel driven automobiles are the major sources of greenhouse gases emission. Scientists around the world have explored several alternative energy resources like biomass, biogas, primary alcohols, vegetable oils and bio diesel. These alternative energy resources are highly environment friendly but need to be evaluated on case to case basis for their advantages and specific application. Some of these fuels can be used directly while some other needs to be formulated to bring the relevant properties closer to conventional fuels. The objective of this paper is to provide an overview of the oil industries, review technologies available to process oil and residue into biofuels and summarize the challenges that should be resolved for future development. In biofuel production processes the extraction technique is the key technology with respect to energy consumption and product value. In this review recent advances related to extraction process are discussed.

Introduction - The term biofuel referred to as solid, liquid or gaseous fuels that are predominantly produced from bio-renewable or combustible-renewable feed stocks. Liquid biofuels are important for the future because they replace petroleum fuels. Biofuels are generally considered as offering many properties, including, sustainability and reduction of greenhouse emission, regional developments, social structure and agricultural security of supply.

A key area of innovation identified at this stage of research is the possibility of using bioenergy, crops as alternative fuels, although it is technically possible to meet the biofuel directive target from domestic feedstock. Because of petrol energy saving, emission standards of diesel exhaust gases, hazardous substances requirement toughening as well as carbonic oxide exhaust emission control, it is the need of the hour to find how to reduce the negative influence of heat engine over the environment. The most important operation of biodiesel technical processing from fat and oils were studied.

Liquid fuels can be made by refining a range of biomass materials including oil rich and sugar rich crops, such as oil seed rap and sugar beet biomass that consists mainly plant cell walls, macro and micro algae or material that would now be discarded as waste. This can include animal byproducts as well as waste wood and other resources.

Over the last decades, the palm oil industry has been going rapidly due to increasing demand for food, cosmetics and hygienic products. Aside from producing palm oil the industry generates a huge quantity of residues which can be processed to produce biofuel. Driven by the necessity to find an alternative and renewable fuel resource, numerous technologies have been developed and more are being developed to produce palm oil waste into biofuels.

Non-conventional energy resource is used all over the world. Biodiesel is the best alternative source of fuel in future. The biodiesel is defined as monoalkyl esters of long chain fatty acids derived from renewable feed stocks. Due to similar properties to diesel it can be used as natural substitute for petroleum diesel. It has a potential to reduce harmful emissions, so biodiesel can be a suitable replacement fuel for petroleum diesel fuel CI engine. Traditional feed stocks are edible oils, seeds, rap seeds, sunflower oil, soybean oil, palm oil, olive oil, cotton seed oil and beef tallow.

Biofuel Production Processes - There are many potential methods for utilizing vegetable oils as fuel for diesel engine like dilution, blending, pyrolysis, emulsification and transesterification. Besides above named, there are certain other methods which can be employed for this purpose and these include-

1. Base catalyzed transesterfication
2. Acid catalyzed esterification
3. Enzyme catalysis

4. Hydroprocessing
5. Supercritical methanol process

Transesterfication is a chemical reaction where triglyceroide is reacted with alcohol in the presence of catalyst to produce alkyl esters and it is a reversible reaction in which one ester is converted into another by interchange of ester group with an alcohol in the presence of a base.

The major extraction methods are classified as conventional solvent extraction, physical supported solvent extraction, novel extraction and supercritical fluid extraction.

Advantages of biofuel

1. It does not require any engine modification except replacing some fuel lines on older engines
2. It can be blended in any proportions with petroleum diesel fuel
3. High cetane number and excellent lubricity
4. Can be made from waste oil and animal fat
5. High energy return and displace petroleum based fuels
6. It reduces lifecycle of greenhouse gas emission
7. It improves air quality and has positive impact on human health
8. It improves engine operation and easy to blend

Findings and Conclusion - The rate of awareness regarding biofuels amongst people is almost negligible but they were keen to shift to biodiesel if given a chance. Indian petroleum industry has an immense market potential for biodiesel. Shifting to renewable resources is the need of time in today's scenario. The concern of fossil fuel depletion and environmental issues has increased general interest in studies on the development of sustainable fuels. Among sustainable and renewable energies biofuels appear to be the most promising and attractive and relative research has been expanding along with an exceptional growth of scientific knowledge.

References :-

1. Improvement of production technology of liquid biofuels from technical fats and oils, Mikhail Mushtruch, etal., Pg. 377-386 (2020)
2. Extraction techniques in sustainable biofuel production, Penghi Kiyoshi, Sakuragi, Hisao Makino- Fuel processing technology. Pg. 193, 295-303 (2019)
3. Mapping biofuel field- a bibliometric evaluation of research output, X-Yaoyang, WB Boeing- Renewable and sustainable energy reviews 2013 Elsevier
4. Environmental chemistry, S. Manahan, 2017 taylofrancis.com
5. Recent advancements in biological conversion of industrial Hemp for biofuel and value added products. A Ji, L Jia.- Fermentation 2021, mdpi.com

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

देवगढ़ ठिकाने का भौगोलिक -ऐतिहासिक परिचय

श्रीमती वर्षा चुण्डावत* डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत**

* सहायक आचार्य (भूगोल) राजकीय महाविद्यालय,देवगढ़, राजसमन्द (राज.) भारत
** सहायक आचार्य (इतिहास) संगम विश्वविद्यालय,भीलवाडा (राज.) भारत

प्रस्तावना - विविधताओं से भरे इस विश्व में विभिन्न क्षेत्रों का भूगोल उसका स्थानीय इतिहास बनाता है। वहां की प्राकृतिक सरंचना का प्रभाव उसके दैनिक गतिविधियों, राजनैतिक विधि विधानों तथा आर्थिक सरंचना पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। 'भूगोल' आर्थिक संरचना को अत्यधिक प्रभावित करता है और अर्थ व अन्य संसाधन ही किसी राजनीतिक इकाई के विस्तार व सृजनता के निर्धारक होते हैं।

मेवाड़ राज्य की भौगोलिक स्थिति - आर्यावर्त या भारतवर्ष में राजपूताना का इतिहास गौरवपूर्ण दृष्टि से स्मरण किया जाता रहा है। भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी-पश्चिमी भाग में स्थित राजस्थान का दक्षिण-पश्चिम भू-भाग 'मेवाड़' है जो कि मेवाड़ राज्य के रूप में प्रसिद्ध रहा है और समय के साथ-साथ कई विभिन्न नामों से अभिहित किया जाता रहा है। द्वितीय शताब्दी ई. में यह 'शिवि' जनपद के नाम से प्रसिद्ध था तो बाद में 'प्राग्वाट' नामकरण से। संस्कृत शिलालेखों एवं पुस्तकों में इसे 'मेदपाट' नाम से भी संबोधित किया गया है, जिसका अर्थ मेव या मेरों का देश होता हैं। इतिहास के विभिन्न कालों में इस राज्य की सीमाएँ घटती-बढ़ती रही है, किन्तु राजस्थान में विलीनीकरण से पूर्व मेवाड़ राज्य राजस्थान के दक्षिणी भू-भाग में $23^{0}49'$ से $25^{0}28'$ उत्तर अक्षांश और $73^{0}1'$ से $75^{0}49'$ पूर्व देशान्तर के बीच फैला हुआ था। इसका क्षेत्रफल 2043.626 (12691 वर्ग मील) वर्ग कि.मी. था। क्षेत्रफल की दृष्टि से तत्कालीन राजस्थान अथवा राजपूताना का पांचवां बड़ा राज्य था। इसके उत्तर में अजमेर-मेरवाड़ा, पश्चिम में जोधपुर और सिरोही, दक्षिण-पश्चिम में गुजरात का ईडर, दक्षिण में डूंगरपुर, बांसवाड़ा और प्रतापगढ़, पूर्व में बूंदी व कोटा तथा मध्य प्रदेश का नीमच क्षेत्र सम्मिलित है। उत्तर-पूर्व में देवली की छावनी के पास जयपुर का क्षेत्र है। मेवाड़ राज्य के मध्य में स्थित ग्वालियर का परगना 'गंगापुर' जिसमें दस गांव थे तथा आगे पूर्व में इन्दौर का परगना नंदवाय या नंदवास आ गया था जिसमें 29 गांव थे।म वर्तमान में भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, राजसमन्द एवं उदयपुर जिलों के भू-क्षेत्र मेवाड़ के रूप में पहचाना जाता है।

देवगढ़ नगर की स्थापना एवं ठिकाने का अभ्युदय - राजस्थान का मेरवाड़ा एवं मेवाड़ का देवगढ़-मदारिया परगना भी चुण्डावतों के विशेषत: देवगढ़ ठिकाने के सांगावत चुण्डावतों के इतिहास का पर्याय रहा है। मेवाड़ के राजसमन्द एवं भीलवाड़ा जिले में स्थित रहा देवगढ़-मदारिया क्षेत्र एवं यहां स्थित चुण्डावतों (गुहिलोत सिसोदियों)के ठिकानों जैसे देवगढ़ व नीमझर, झानगढ़, भगवानपुरा, पारड़ी, दौलतगढ़, लसानी आदि का इतिहास यहां के भूगोल से अत्यधिक प्रभावित रहा है।

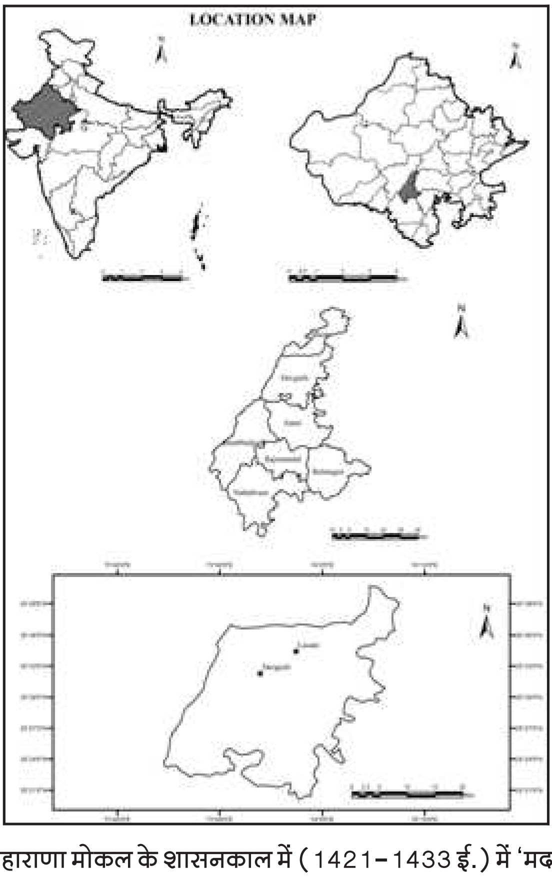

मेवाड़ महाराणा मोकल के शासनकाल में (1421-1433 ई.) में 'मदारिया' (माल्या का बास) मेवाड़ राज्य का महत्वपूर्ण शासन केन्द्र था जहां राजस्थान के लोक देवता संत बाबा रामदेव की कृपा से महाराणा कुंभा का जन्म हुआ था।म मदारिया की पहाड़ी पर स्थित गढ़ एवं गढ़ के नीचे स्थित शिखरबंद चामुण्डा माता का मन्दिर 15वीं शताब्दी ई. में मदारिया की महत्वपूर्ण राजनैतिक स्थिति को दर्शाते है। मेवाड़ महाराणा लाखा (1381-1421 ई.) के ज्येष्ठ पुत्र रावत चुण्डा के वंशज रावत द्वारकादास चुण्डावत (सांगावत) ने विक्रम संवत् 1726 वैशाख शुक्ल पंचमी शनिवार (सन्

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

1669) को 'देवगढ़' की स्थापना की। देवगढ़ जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, देवनगरी या देवताओं का गढ़ अर्थात् अरावली पर्वतमाला की गौरम एवं सांड माता की पहाड़ियों के मध्य बसा पठारी क्षेत्र जहाँ प्राचीन इतिहास और संस्कृति का अनूठा संगम देखा जा सकता है।मदेवगढ़ व मदारिया के मध्य 12 किमी. की दूरी है। इस प्रकार यह क्षेत्र देवगढ़ कस्बे की स्थापना के साथ ही देवगढ़–मदारिया कहलाया जाने लगा क्योंकि दोनों ही केन्द्र राजनैतिक सत्ता के परिचायक रहे हैं।

देवगढ़ ठिकाने की भौगोलिक स्थिति – विश्व की प्राचीन अरावली पर्वतमाला जो कि राजस्थान के लगभग मध्य में से विकर्ण के रूप में निकलती हुई राज्य को लगभग दो भागों में बांटती है। इसी शैलमाला के उत्तर पूर्व में देवगढ़ 25°30' उत्तरी अक्षांश से 25°45' अक्षांश तथा 73°45' पूर्वी देशान्तर से 74°00' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इस क्षेत्र की समुद्र तल से औसत ऊँचाई 638 मी. (2093फीट) है। यह क्षेत्र अरावली पर्वतमाला के अपरदित कठोर पठारीमभाग जिसे 'पिड्मॉण्ट' के नाम से भी जाना जाता है। यह क्षैत्र पूर्व में छोटी–छोटी चट्टानों, पश्चिम में कामलीघाट (कालीघाटी) दक्षिण में नाथद्धारा घाट तथा उत्तर में अजमेर–मेरवाड़ा द्वारा स्पष्ट सीमांकित है। लम्बे समय तक अपरदन के कारण कठोर चट्टानी भाग सुदूर विस्तृत छोटे–छोटे टीलों के रूप में दिखाई देता है ऐसे पिडमोंट भू–आकृति के नाम से जाना जाता है। कामलीघाट का दर्रा देवगढ़ ठिकाने के इतिहास व भूगोल में अपना उल्लेखनीय स्थान रखता है।

देवगढ़–मदारिया क्षेत्र राजस्थान के राजसमंद जिले की देवगढ़ तहसील का भाग है। यह अरावली श्रेणी की गोद में खारी नदी के किनारे राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या पर स्थित कामलीघाट चौराहे से 4 किलोमीटर दूरी पर पूर्व की ओर स्थित है। इसके उत्तर पश्चिम में टॉडगढ़–रावली का समृद्ध वन क्षेत्र है जो वन्य जीव का समृद्ध मगरांचल है। यह क्षेत्र चुण्डावतों की जागीरदारी में रहा। यहाँ की प्राकृतिक अवस्थिति ने इसे हमेशा सुरक्षा कवच की भांति सुरक्षा प्रदान की है।

इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया में देवगढ़ ठिकाने के जागीरी क्षेत्र अर्थात् देवगढ़–मदारिया परगना एवं आंजना मठ के संदर्भ में निम्नलिखित विवरण प्राप्त होता है '.......Chief town of an estate of the same name in the state of Udaipur, Rajputana, situated in 25°32' N. and 73°55' E., close to the Merwara border and about 68 miles north by north east of Udaipur City. The town is walled, and contains a fine palace with a fort on each side of it. Three miles to the est, in the village of Anjna, is a monastery of the Natha sect of devotees. The population of Deogarh in 1901 was 5,384 of whom about 68 per cent were Hindus and 19 percent Jains. The estate consists of the town and 181 villages, and is held by one of the first-class nobles of Mewar, styled Rawat, who belongs to the Chondawat family of the Sesodia Rajputs. The annual income is about Rs. 120000 and a tribute of Rs. 5710 is paid to the Darbar......'

देवगढ़ ठिकाने की जलवायु, जनसंख्याँ, तालाब, जंगलात–पहाड़ियाँ (नाले,घाटे व झरने), खनिज,फसलें एव नगर नियोजन – इस क्षेत्र में समशीतोष्ण जलवायु मिलती है जोकि स्वास्थ्यवर्धक है। यहां वर्षा का औसत 652.5 मिमी. है। यहां वर्ष भर की कुल 90 प्रतिशत वर्षा जून से सितम्बर के मध्य में हो जाती है। इसके आस–पास का क्षेत्र कृषि उत्पादन की दृष्टि से समृद्ध है। पश्चिमी भाग में संग्राम सागर स्थित है। कस्बे के धरातल का ढाल दक्षिण–पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर है। कस्बे में खारी नदी दक्षिण–पश्चिम से उत्तर–पूर्व की ओर बहती है। राघव सागर में जल आवक क्षेत्र दक्षिणी भाग से है। गर्मियों में यहां का अधिकतम तापमान 450सेल्सियस व सर्दियों में न्यूनतम तापमान 1.80 सेल्सियसरहता है। पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण यहां गर्मी के मौसम में काफी गर्मी रहती है तथा इस मौसम में चलने वाली शुष्क हवाओं की वजह से मौसम असहनीय हो जाता है। यह शुष्क तापक्रम कभी–कभी 450 सेल्सियस से भी ऊपर पहुंच जाता है। जून माह में दक्षिणी–पश्चिमी मानसून के इस क्षेत्र में प्रवेश करने से तापमान में काफी कमी आ जाती है, किन्तु सितम्बर के मध्य तक मानसून की विदाई के पश्चात पुन: तापमान शनै: शनै: बढ़ने लगता है।मकेवल दक्षिणी–पश्चिमी मानसून अवधि में हवा में आर्द्रता 70 प्रतिशत या अधिक रहती है। शेष अवधि में हवा सामान्यत: शुष्क रहती है। गर्मी के मौसम में आर्द्रता 20 प्रतिशत या इससे भी कम हो जाती है। गर्मी के मौसम में हवाएं दक्षिण–पश्चिम से उत्तर–पूर्व की ओर चलती हैं, किन्तु सर्दी के मौसम में यहां उत्तर–पूर्वी हवाएं चलती हैं।

देवगढ़ में गढ़ की दीवार पर दिखा पैंथर का जोड़ा

देवगढ़.(राजसमंद)| राजसमंद जिले में देवगढ़ कस्बे से सटे गोकुलगढ़ में मंगलवार को नर-मादा पैंथर का जोड़ा दिखा। गढ़ के वीरभद्रसिंह ने बताया कि पैंथर का जोड़ा दो-तीन दिन से यहां देखा जा रहा है। उन्होंने इसकी सूचना वन विभाग के अधिकारियों को दी। वन विभाग के एसीएफओ नरेंद्रसिंह वन कर्मचारियों के साथ यहां पहुंचे। इन्हें कोई नुकसान न पहुंचाए इसके लिए वन विभाग ने गढ़ के आसपास गार्ड लगा दिए हैं। बुधवार को गार्ड और बढ़ाने की बात कही जा रही है।

देवगढ़ में वन्य जीवम

प्रवासी पक्षियों का आगमन, वन विभाग ने शुरू की गणना

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

देवगढ़–मदारिया सहित मंगरा–मेरवाड़ा क्षेत्र में करीबन 18000 एकड़ में जंगल है। इन जंगलों में धावड़ा, खेर, खेजड़ा, बेर, शीशम, नीम, ढाक, पीपल, बड़, आम, ईमली, महुआ, बबूल, सेमल, गूलर, धामण आदि वृक्ष है। इन जंगलों में गोंद, घास, फल, ईंधन की लकड़ी आदि प्राप्त होते हैं। बाघ, चीते, भेड़िये, जरख, हिरण, सूअर, खरगोश, गीदड़, लोमड़ी, बन्दर आदि जानवर इन जंगलों में पाये जाते हैं। जहाँ अंग्रेजों के समय में राजा व सामंत वर्ग ब्रिटिश अधिकारियों के साथ शिकार खेला करते थे और यहां होली पर ऐहड़ा (सामूहिक शिकार) भी खेलते थे।

राघव सागर तालाब में देशी व विदेशी जलीय पक्षियों का जमघट बना रहता है जो कि यहाँ आने वाले पर्यटकों के लिए कौतुहल का विषय होता है।

कोमन रोज फिंच चिड़िया

उल्लू और कोचर से बचने बांस के हरे पेड़ों में गुजारती है रात

देवगढ़ क्षेत्र में साउथ इंडिया से आई गुलाबी चिड़िया अफगानिस्तान की तरफ लौटी

भास्कर न्यूज | देवगढ़

देवगढ़ क्षेत्र में हरियाली क्षेत्र होने से इन दिनों कोमन रोज फिंच (गुलाबी चिड़िया) वापस अफगानिस्तान की ओर लौट रही है। प्रकृति प्रेमी और पूर्व राजघराने के सदस्य वीरभद्र सिंह चूंडावत ने बताया कि कोमन रोज फिंच (गुलाबी चिड़िया) जो साउथ इंडिया की ओर से आती है। सर्दी में ये देवगढ़ में हरे भरे पेड़ों पर रहती है जो वापस अफगानिस्तान, बलूचिस्तान, कजाकिस्तान की ओर लौट रही है। इसके साथ ब्लेक हैडेड (बंटिंग) नाम चिड़िया भी साथ आती है। उल्लू और कोचर से बचने के लिए यह चिड़िया बांस के हरे पेड़ों में रात गुजारती है।

देवगढ़ . क्षेत्र में एक पेड़ पर बैठी कोमन रोज फिंच नामक चिड़िया।

राघव सागर तालाब में प्रवासी पक्षियों के विचरण का दृश्य –

राघो सागर तालाब

इस क्षेत्र में राघव सागर, जसवंत सागर, संग्राम सागर, बामणिया तालाब, शोपुरी नाला, दौलपुरा नाला आदि जल स्रोत स्थित हैं।म जो पेयजल एवं सिंचाई सुविधाएं प्रदान करते हैं। खारी नदी बीजराल की पहाड़ियों से उद्धाटित होकर देवगढ़ (मदारियां) क्षेत्र के तीनों ओर बहते हुए यहां के जल स्तर को बढ़ा देती हैं। ये नदी राजस्थान की मुख्य खारी नदी है जो इस क्षेत्र की भी सबसे बड़ी नदी है। लगभग 80 किमी. बहने के पश्चात् देवली (टोंक) के निकट यह त्रिवेणी संगम बनाते हुए तीसरी जयपुर की डाई नदी से मिलती है।म इस नदी के प्रवाह क्षेत्र में सघन वनस्पति पाई जाती है एवं इस नदी के कारण ही यहां सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता बढ़ी है जिसका प्रभाव यहां की कृषि पर स्पष्ट परिलक्षित होता है। यहां अन्य सहायक नदियों में 'छोटी नदी' एवं 'दौलपुरा नाला' (उपर्युक्त प्रथम पंक्ति में उल्लिखित दौलपुरा नाले से भिन्न) भी प्रमुख जल स्रोत है।

इस क्षेत्र में मुख्यतया अभ्रक, ग्रेनाइट, सॉप स्टोन, माईका, मेग्नासाइट, फेल्सपार मार्बल, ग्रेफाइट, ऐस्बेस्ट्स व पट्टियों की खानें है। कालागुमान के पास पहले पन्ने की खान थी।

2011 ई. में देवगढ़ कस्बे की जनसंख्या 17604 दर्ज की गई। देवगढ़ तहसील का लसाणी कस्बा जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा कस्बा है जहाँ 2011 ई. में जनसंख्या 4712 रही। देवगढ़ का लिंगानुपात प्रति 1000 व्यक्तियों पर 1005 स्त्रियाँ रहीं। वहीं जनसंख्या वृद्धि दर 17.3 प्रतिशत रही है। उक्त आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि देवगढ़ मदारिया शिक्षा, चिकित्सा एवं आधारभूत सुविधाओं से सम्पन्न है। भविष्य में इसके अच्छे परिणाम सामने आएंगे।

Deogad google earth map

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. चन्दन सिंह खोखावत, मेवाड़ का मैराथन महाराणा प्रताप का विजय युद्ध, पृ.सं. 16–17, चिराग प्रकाशन, उदयपुर, 2016
2. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग–2,

राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2006, पृ.सं. 1

3. के.डी. एर्सकीन, गजेटियर ऑफ दी उदयपुर स्टेट, पृ.सं. 6 अजमेर, 1908,
4. सं. सत्यपाल सिंह चुण्डावत थाणा, हेमेन्द्र सिंह सांरगदेवोत, खुशाल सिंह दौलतगढ़, चुण्डा स्मारिका, पृ.सं. 90, चुण्डा स्मृति संस्थान, भीलवाड़ा, 2017;राजेन्द्र शंकर भट्ट, महाराणा कुंभा, पृ.सं. 16, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, 2008J;
5. जे.एस.खरकवाल, एच. चौधरी, विष्णु माली, मदारिया, ए मिडाइवल सेटलमेंट(ए ब्रिफ रिपोर्ट, अनपब्लिशड)पृ.सं. 1-2, 8-9, साहित्य संस्थान, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर, 2015-2016ई.मदारिया के गढ़ एवं मन्दिर के स्थापत्य के सन्दर्भ में विस्तारपूर्वक विवरण प्राप्त होता है।
6. देवगढ़ की तवारीख, पृ.सं. 15 (प्रताप शोध प्रतिष्ठान संग्रह), उदयपुर; सम्पादक मण्डल जग मोहन तंवर, हरिसिंह चौहान, धर्मसिंह राजपुत, मनोज भारद्वाज, देवगढ़ दर्शन (पत्रिका), पृ.सं. 16, नगर पालिका मण्डल, देवगढ़, 2015
7. दैनिक भास्कर, स्मृति स्मारिका, मेरा प्यारा देवगढ़, पृ.सं. 9, दैनिक भास्कर कार्यालय, देवगढ़, 2017, ई. द्वितीय संस्करण
8. शर्मा एण्ड शर्मा, राजस्थान का भूगोल, पृ.सं. 31, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2016
9. अर्थ, गुगल वेबसाइटस से प्राप्त स्थलाकृतिक मानचत्रि सं. G43N14
10. माजिद हुसैन, भूगोल पारिभाषिक शब्द संग्रह, पृ. सं. 13, टाटा मेक्ग्रा हिल्स, नई दिल्ली, 2010
11. अर्थ गुगल, विकिपीडिया, देवगढ़ मास्टर प्लान, (2009-2032) से उपलब्ध मानचित्रों से
12. देवगढ़ मास्टर प्लान (2009-2032), पृ.सं. 4-6, नगर नियोजन विभाग, राजस्थान, जयपुर, 2009.
13. मेजर के. डी. अर्सकीन, आई. ए, इम्पेरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया, प्रोविंशियल सीरिज राजपुताना, पृ.सं. 134
14. देवगढ़ मास्टर प्लान (2009-2032) पृ.सं. 4-5, नगर नियोजन विभाग, राजस्थान, जयपुर, 2009
15. देवगढ़ मास्टर प्लान (2009-2032) पृ.सं.5,नगर नियोजन विभाग, राजस्थान, जयपुर, 2009
16. hhttps://www.facebook.com/Kamal.sheikh786/photos/a.399344630187382/1241546745967162
17. ठा प्रेम सिंह चौहान, रावत राजपुतों का इतिहास, पृ.सं. 15; प्रेमसिंह चौहान, मगरा मेरवाड़ा संस्थान, राजसमन्द, 2011
18. hhttps://www.facebook.com/Kamal.sheikh786/photos/a.527179017403942/1877877439000753
19. hhttps://www.facebook.com/Kamal.sheikh786/photos/a.527179017403942/2601245936663896
20. देवगढ़ मास्टर प्लान (2009-2032) में उपलब्ध मानचित्रों का विश्लेषण
21. शर्मा एण्ड शर्मा, राजस्थान का भूगोल, पृ.सं. 79, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2016
22. देवगढ़ मास्टर प्लान (2009-2032) में उपलब्ध मानचित्रों का विश्लेषण
23. शर्मा एण्ड शर्मा, राजस्थान का भूगोल, पृ. 228; सम्पादक मण्डल, औंकारेश्वर पानेरी, शिवलाल सेन, प्रेमदास वैष्णव, हरिसिंह चौहान, विकास पथ (पत्रिका), पृ.सं. 7, नगर पालिका मण्डल, देवगढ़, 2007
24. सेंसस ऑफ इंडिया 2011

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में भारतीय संस्कृति का योगदान-एक अध्ययन

प्रो. रीटा शर्मा * खेम चन्द **

* प्राचार्य, श्री अग्रसेन स्नात्तकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, सी.टी.ई. केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर (राज.) भारत
** शोधार्थी,कॅरियर पांईट विश्वविद्यालय, कोटा (राज.) भारत

प्रस्तावना – वर्तमान में मानव की प्राथमिक आवश्यकता रोटी, कपड़ा और मकान के साथ-साथ शिक्षा भी बन गई है। अत: मानव के सभ्य, सुसंस्कृत जीवन के लिए शिक्षा अपेक्षित है। शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। भारतीय वेद कहते है 'विद्या ददाति विनयम' अत: बालक के सर्वांगीण विकास हेतु श्रैष्ठ, चरित्रवान, बुद्धिमान, कुशल तथा कर्त्ताव्यनिष्ठ शिक्षक की अपेक्षा होती है। शिक्षक को राष्ट्र का निर्माता बताया गया है। भारतीय संस्कृति में शिक्षक का स्थान सर्वोपरि स्वीकार किया गया है।

संत कबीर गुरू की महत्ता स्पष्ट करते हुए कहते है कि

'गुरू गोविन्द दोउ खडे .कांके लागु पांय।
बलिहारी गुरू आपने गोविन्द दियो बताय।।'

अर्थात् गुरू का स्थान भगवान से भी पहले बताया है। अत: समाज शिक्षक में उन सभी गुणों की अपेक्षा करता है जिन गुणों को अपनाकर बालक अपना सर्वांगीण विकास कर सकें।

शिक्षक के ऊपर बालक के सम्पूर्ण विकास का दायित्व होता है। अत: उसका दायित्व है कि वह बालकों को एक सभ्य नागरिक के रूप में विकसित करें। अत: आवश्यकता है कि प्रथमत: शिक्षक में सांस्कृतिक, सामाजिक, प्रजातांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष मूल्यों का विकास हों। इस हेतु समय-समय पर भारत सरकार द्वारा शैक्षिक आयोगों का गठन किया गया एवं शिक्षक प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम सुनियोजित किया गया।

अध्यापक शिक्षा के क्षैत्र में माध्यमिक शिक्षा आयोग (1953), कोठारी शिक्षा आयोग (1964-66), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1999), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005), राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (2007), यशपाल समिति रिपोर्ट (2009), अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या की रूप रेखा (2009), न्यायमूर्ति वर्मा समिति रिपोर्ट (2012) नई शिक्षा नीति (2020) आदि समितियों एवं आयोगों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के निर्माण में भारतीय संस्कृति का महत्व स्पष्ट करते हुए भारतीय शिक्षा आयोग का कथन है 'शिक्षा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अनिवार्य सुधार इसको रूपान्तरित करने, इसको जीवन के साथ सम्बन्ध बनाने का प्रयास करने, लोगों की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुरूप बताने तथा राष्ट्र के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक धरोहर का संप्रेक्षण है। अत: अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का समावेश आवश्यक एवं अपेक्षित है।'

अध्यापक शिक्षा से अभिप्राय – सामान्यत: शिक्षा से तात्पर्य अध्यापक के लिए शिक्षा है अर्थात् एक समक्ष, आत्मनिर्भर, अनुशासित, चरित्रवान आदि गुणों से युक्त अध्यापक विकसित करने हेतु आवश्यक है कि अध्यापक को सुनियोजित शिक्षा द्वारा प्रशिक्षित किया जाए जिससे उत्ताम एवं कुशल तथा योग्य शिक्षक का व्यक्तित्व विकसित हो।

अत: कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के लिए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सरल एवं सुगम बनाने के लिए तथा विद्यार्थियों को भावी जीवन हेतु तैयार करने के लिए अध्यापकों के प्रशिक्षण एवं शिक्षा की व्यवस्था की जाती है।

अध्यापक शिक्षा की भूमिका तथा कार्यो में समय के साथ-साथ परिवर्तन होते रहते है। इनमें से कुछ परिवर्तन प्रत्यक्षात्मक होते है, जैसे कक्षा में विद्यार्थियों के साथ शिक्षक से सम्बन्ध/वर्तमान में शिक्षक की भूमिका कुछ नवीन निर्माण करने वाले निर्माता की है, अत: अध्यापक शिक्षा में गहन सैद्धान्तिक पक्ष के साथ-साथ उचित व्यावसायिक पक्ष भी होना आवश्यक है।

अध्यापक शिक्षा के उद्देश्य –

1. सामाजिक संरचना, कार्य एवं अन्त:क्रिया का ज्ञान।
2. विद्यालय के संगठन एवं प्रशासन का ज्ञान।
3. बाल मनोविज्ञान का ज्ञान।
4. शिक्षण विधियों का विकास।
5. शिक्षण व्यवसाय के प्रति स्वस्थ एवं सकारात्मक दृष्टिकोण।

अध्यापक शिक्षा में संदर्भित दक्षता, संकल्पनात्मक दक्षता, विषयवस्तु दक्षता, सम्प्रेषण दक्षता, प्रबन्धन दक्षता, अभिभावक, सहकार्य दक्षता, समाज के प्रति प्रतिबद्धता, आजीविका के प्रति प्रतिबद्धता तथा मूलभूत मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता का क्षेत्र शामिल है।

वर्तमान भारतीय अध्यापक शिक्षा में निम्नलिखित कमियाँ देखी जा सकती है :

1. सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक अध्ययन के पाठ्यक्रम में कृत्रिमता।
2. मूलभूत सुविधाओं का अभाव।
3. अपर्याप्त वित्तीय प्रबन्ध।
4. व्यावसायिक विकास प्रबन्ध का अभाव।
5. विद्यालय में अलगाव की समस्या।
6. नियुक्ति एवं चयन की समस्या।

अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम की संरचना – विद्यालय प्रभावकारिता में

अध्यापक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है, अत: अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम की संरचना में निम्नलिखित का होना आवश्यक है :-

1. भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक विशेषताओं का ज्ञान।
2. शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति विकसित हो।
3. शिक्षण कुशलता का विकास।
4. वर्तमान बालक की आवश्यकतानुसार ज्ञान का संवर्धन।
5. आधुनिकता का समावेश।
6. कुशल प्रशिक्षण।

सेवा पूर्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम – अध्यापक को शिक्षित-प्रशिक्षित करने के लिए प्राय: अनेकानेक विषयगत ज्ञान एवं अनुभवों को व्यवहृत करना होता है। पूर्व सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा के माध्यम से भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों के प्रति सचेतना को विकसित किया जाना जरूरी माना जाता है, वहीं दूसरी और भावी अध्यापक-अध्यापिकाओं में शिक्षण दक्षता और प्रतिबद्धता के विकास को भी महत्वपूर्ण माना जाता है।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (NCTE) नई दिल्ली के द्वारा पूर्व सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा के माध्यम से जिन अध्यापकीय गुणों को समृद्ध करना आवश्यक माना गया है, वे हैं शिक्षकीय गुणों को समृद्ध करना आवश्यक माना गया है, वे हैं – शिक्षण उद्यमगत दक्षता हेतु प्रतिबद्धता और मान्यता आदि द्वारा अन्त: एवं बाह्य मूल्य विकसित करना, अधिगम साधनों का चयन, संगठन और उपयोग करना, व्यक्तिगत विकास शोध, मूल्य प्रतिबद्धता और मूल्य संचरण के प्रति अनुभूति का विकास करना संस्कृति और व्यक्ति तथा संस्कृति और शिक्षा के मध्य अन्तर्सम्बन्ध को समझना, समुदाय की महत्वाकांक्षा और अपेक्षाओं को समझना आदि।

आधुनिक समय में पूर्ण सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के लिए एक व्यापक और व्यावहारिक दृष्टिकोण को अपनाने की आवश्यकता है।

पूर्व सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम की अवधारणा यह है कि बिना किसी औपचारिक और बहुआयामी शिक्षण प्रशिक्षण के अध्यापक या अध्यापिका व्यापक दायित्व एवं कर्त्तव्य का पालन करने की शक्ति एवं कुशलता का अर्जन नहीं कर सकते।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् ने ऐसे पाठ्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की है, जो भारतीय परम्परा और राष्ट्रीय लक्ष्यों की उपलब्धि के अनुकूल सिद्ध हो सके। इस पाठ्यक्रम में सिद्धान्त तथा प्रायोगिक दोनों पक्षों के मध्य समांकलन को अधिक आवश्यक माना गया तथा अध्यापकों के लिए बहुविध शैक्षिक अनुभव की व्यवस्था को स्वीकार किया गया है।

भारतीय संस्कृति की अवधारणा – भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वप्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति है। अन्य देशों की संस्कृतियाँ तो समय की धारा के साथ नष्ट होती रही है किन्तु भारत की संस्कृति आदि काल से ही अपने परम्परागत अस्तित्व के साथ अजर अमर बनी हुई है। इसकी उदारता तथा समन्वयकारी गुणों ने अन्य संस्कृतियों को समाहित तो किया किन्तु अपने अस्तित्व के मूल को सुरक्षित रखा है। इसीलिए पाश्चात्य विद्वान अपने देश की संस्कृति को समझने हेतु भारतीय संस्कृति को पहले समझने का परामर्श देते है।

भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ –

1. प्राचीनता
2. निरन्तरता
3. लचीलापन एवं सहिष्णुता
4. ग्रहणशीलता
5. आध्यात्मिक एवं भौतिकता का समन्वय
6. अनेकता में एकता
7. विश्व बंधुत्व।

जवाहर लाल नेहरू 'संस्कृति कुछ ऐसी चीज का नाम हो जाता है जो बुनियादी और अन्तर्राष्ट्रीय है। फिर भी संस्कृति के राष्ट्रीय पहलू भी होते हैं और इसमें कोई संदेह नहीं है कि राष्ट्रों ने अपना विशिष्ट व्यक्तित्व तथा अपने भीतर कुछ ढंग के मौलिक गुण विकसित कर लिए है।'

शिक्षा पाठ्यक्रम में भारतीय संस्कृति का योगदान – अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में भारतीय संस्कृति का योगदान निम्नलिखित बिन्दुओं में देखा जा सकता है–

1. अध्यापक शिक्षा के उद्देश्य निर्धारण।
2. अध्यापकीय कुशलता विकसित करने में।
3. आध्यात्मिक और आत्मिक विकास।
4. विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास।
5. व्यक्तित्व निर्माण।
6. भारतीय संस्कृति का संवर्द्धन।
7. शिक्षा का आदर्शीकरण।
8. नैतिक चरित्र का निर्माण।
9. राष्ट्रीय भावना का विकास।
10. शिक्षा के आधुनिकीकरण में सहायक।
11. अन्तर्राष्ट्रीकरण सद्भावना का विकास।

शिक्षा एवं संस्कृति एक सिक्के के दो पहलू है शिक्षा का विकास उस राष्ट्र की संस्कृति को दर्शाता है। शिक्षा संस्कार पैदा करती है। संस्कारों के निर्माण में माता-पिता, समाज के साथ-साथ शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

रायबर्न के अनुसार,'शिक्षा एक त्रिधुर्वीय प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी एवं शैक्षिक पाठ्यक्रम को सम्मिलित किया जाता है।'

शिक्षक सम्पूर्ण शैक्षिक व्यवस्था की प्रमुख धुरी है अत: उसमें प्रशिक्षित गुणों का समुचित विकास आवश्यक है। इसलिए शिक्षक को सेवा पूर्व प्रशिक्षक की व्यवस्था दी गई है। अध्यापक के प्रशिक्षण हेतु निर्धारित पाठ्यक्रम में भारतीय संस्कृति के तत्तवों को सम्मिलित करके एक परिपक्व अध्यापक का निर्माण किया जा सकता है। वर्तमान शिक्षक व्यवस्था में शिक्षकों में हो रही व्यवसाय के प्रति अरूचि, शिक्षण कौशल का अभाव, संसाधनों का अभाव, समायोजन की कमी, आदि समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है।

अत: निष्कर्षत: हम कह सकते है कि शिक्षकों में पूर्ण व्यक्तित्व एवं शिक्षण कुशलता का विकास करने में भारतीय संस्कृति अपना मूलभूत योगदान देती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. व्यक्तिगत शोध के आधार पर।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Critical Analysis of Reservation Policy

Puja Nagar *

*Assistant Professor (Visiting Faculy) School of Study in Law, Ujjain (M.P.) INDIA

Abstract - Reservation is a burning issue in the political and sociological scenario of India which affects every section of the society and divides it into many parts, just like Varna system. Reserved category is concerned for maintaining reservation; at the same time unreserved category is concerned about its continuance. Political parties take advantage of divided ideology, and use it to increase their vote bank at the time of election. Reservation should have come to end by now, however it is still active in a slightly changed form. Reservation over a period of time has created tension, dissatisfaction and division among the reserved and unreserved category and the same will aggregate with time. Today the society should be reintroduced to the basic philosophy for which the foundation of reservation was built.

Key words - Reservation, Varna system, Category, Society, Ideology, Philosophy.

Introduction - The origin of reservation lies in the constitutional frame work which is based on varna, while it got flourished in the society as medium of upliftment of the deprived class. However the reservation to the large extent has failed to overcome discrimination in the society based on caste system. The varna system provides the basic structure and foundation for the reservation policy in the constitution. Presently talking about reservation is unavoidable but when it comes to its utility, agony of the past supports its existence.

The Upper caste people have nurtured Varna system to impose their superiority over the society and restrained the upliftment of the respective lower caste in the society. At present politician are nurturing reservations for their personal and political gain.

The reservation for ST and SC are placed respectively in the house of people and legislative assembly under article 330 and 332.However there was no provision of reservation on social and economic grounds in fundamental constitution. Further there was no provision for backward classes but politician using reservation as a vote bank issued executive order on 13 august 1990 and reserved 27 percent seat in government services for backward classes based on the Mandal Commission report. Now total reservation is 50 percent. thereafter movements started to join OBC classes on the basis of backwardness among castes in which Jat and Gurjar movement are prominent. In continuance ten percent reservation for upper caste on basis of economic, deepens the roots of reservation and deviate the reservation from its main purpose.

The main objective of reservation is to bring the exploited section into the main stream of the society by giving extra benefit and facilities. This extra benefit was initially for ten years but the same was extended over the years.

Here it is not question about its existence but also it is time for contemplation towards the very objective of reservation. It is irony of Indian society that they have forgotten that reservation is tool not an aim.

The reason behind reservation

The Varna system - The main reason of reservation is Varna system- which divides Indian society into four classes- Brahaman, Kshatriya,Vashya and Shudra. Prior to independence,people of each class used to do their own work. If the person who belonged to Shudra Varna had ability of doing the work of another class; even then he couldn't do it. The varna system has affected the social, economic, political and cultural system of India.

Even today people of Shudra Varna are being discriminated in rural areas. Reservation is shadow of Varna, though it is not such an exploitative system.

Legal reason - The Preamble of Indian constitution establishes a socialist, secular and democratic republic. Right to equality mentioned under article 14 describes two type of equality

1) Equality before law
2) Equal protection of law

Equality before law describes that every person is equal before the law state shall not any kind of discrimination. Reservation can be achieved in the principle of equal protection of law. It means each person is equal in a class. Handicapped person can't be compared with physically sound person in the same way a class which has been deprived of human values for thousands of years can't be compared to a person of upper class.

Legal Provision - Reservation is such provisions provided by Indian constitution to the disadvantaged section, on socio-economic and educational grounds that ensure their representation in the Indian politics and educational system. Further the backward classes are not defined in the constitution; article 340 empowers the President to appoint a commission to investigate condition of socially and educationally backward classes and adduce reports. There was no provision for reservation on social and educational grounds in the original constitution. Although article 330 and 332 reserved seats for SC and ST category in house of people and legislative assembly respectively. Article 15(4),15(5),15(6), 16(4) A, 16(4) Band 16(6) has been incorporated through amendments in the constitution. The provision related to reservation as follows-

Article 14:- Equality before law,

Article15:- Prohibition of discrimination on grounds of religion, race,casts, sex or place of birth.

Article 16:-Equality of opportunity in matters of public employment.

The Role of Judiciary - Judiciary has played a very important role in interpreting reservation policy from time to time. In February 2020, the Supreme Court observed- in the recent case of DravidaMunnetrakazhagam V/S Union of India and ors ,Mukeshkumar V/S Uttrakhand- that "the reservation is not fundamental right". Reservation is an enabling provision of state to give it or not. It depends on the capacity of the state.

Even in past Hon'ble Supreme Court has interpreted reservation policy in many cases. In the very first case the apex court had declared the decision to grant the reservation in educational institutions null in the case of Madras vs. Champak Dorain. The effect of this decision has been ceased to end by adding one more clause 15(4) in the constitution. Reservation was given to OBC based on the recommendation of the Mandal Commission. It has been challenged in case of IndraSahni V/S Union of India (1992) Supreme Court observed that the caste based reservation is valid but it should not be more than 50 percent in total. Yet some state has crossed 50 percent limitation of reservation. Supreme Court introduced some guiding principle in above case regarding reservation. They are –

The basis of reservation will be caste.

OBC reservation is valid only after eliminating creamy layer.

Reservation shall be given only in initial appointments and not in promotion.

Reservation shall not be more than 50 percent.

Classification between backward class and more backward class is valid.

Critical Analysis - Reservation flourished in a long span of time. It is the result of that social order that has exploited the social and economic interests of a section of society, by cutting it from the mainstream for thousands of years and deprived it from human dignity.

The Varna system is based on the ideology, which has been incorporated by every class of people in their lives. This ideology divides people into classes and groups according to his or her deeds (karma). Any flaw doesn't appear in it. It becomes defective when karma is determined not according to merit but according to birth. Reservation was brought to fill the gap of inequality prevalent in the society which was also fair. Seventy four years after independence reservation became the pawn of politics. The purpose of reservation was to end inequality. Today we will find only few people, in that class, are taking advantage of reservation; while on the other side unreserved category is disturbed. Despite having qualification they are not able to give their service to the society and nation. It affects the social and economic progress of our country. This has undoubtedly raised some questions-

1) Although reservation proved to be helpful in the advancement of a particular class, but has reservation uplifted that particular class equally?
2) Are we revisiting the past through reservation?
3) Has it strengthened the caste system at the social level?
4) Is reservation permanent arrangement?

Suggestion - In the present circumstances, there is a need for a re-ideological churn on reservation. Reservation was brought to coordinate, not to divide. We cannot abolish reservation abruptly but we can move towards ending it by following measures-

1. Fifty percent limitation of reservation should be followed strictly.
2. Don't give reservation to third successive generation.
3. The principle of creamy layer should be applied strictly.
4. The principle of creamy layer shall be introduced in ST, SC category.
5. Don't give reservation in promotion.
6. More economic resources and training shall be provided to the reserved category in order to promote self-employment.
7. The reservation shall be reviewed in terms of economic, social and educational status of the reserved category and accordingly the reservation.
8. The observation or the interpretation made by the Hon'ble Supreme Court shall not be over ruled by the legislative assembly to appease the vote bank.
9. Policy shall be restructured to provide its benefit to the deprived people within the reserved category.

For the proper use of reservation above measures should be implemented in which, it proves to be a milestone in the upliftment of the society after that reservation should cease to exist. Only then we will be able to build a society where the person is identified by his ability, not on the basis of any caste, religion or class.

Bibliography :-

Books :

1. Panday, Jainarayan 2013, Consitutional Law of India,Central Law Publication.
2. Tripathi Dr.G.P.2018 Constitutional Law –New Challenges ,Central Law Publication
3. BasuDurga Das 24th Edition Introduction to the Constitution of India, Lexis Nexis.

Article :

1. Shah, Akash.Critical Analysis on Reservation Policy in India-Legal Services India.
2. Mishra Nitesh, February17, 2019 Revised: An Analysis of Reservation in India (lawtimes journal.in)
3. Mishra shailee, 21 July, 2020, Recent Approach of the Supreme Court of India on Reservation available at: wwwJurist.org/commentary>2020/07
4. Jeenger Kailashjul, 13 2020 The Supreme Court must note that reservation is fundamental right.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

सोशल मीडिया में हिन्दी का बढ़ता प्रयोग

डॉ. सुषमा शाही *

* सहायक प्राध्यापक, एम.के.एच.एस., गुजराती कन्या महाविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – वर्तमान समय में सोशल मीडिया जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन चुका है। यह एक अपरंपरागत माध्यम है। यह एक विशाल नेटवर्क है, जो कि सारे संसार को जोड़े रखता है। लोकप्रियता या सूचना के प्रसार में सोशल मीडिया एक बेहतरीन प्लेटफॅार्म है। एक समय था जब सोशल मीडिया पर ज्यादातर अंग्रेजी भाषा का ही प्रयोग होता था और यह हिन्दी भाषियों के लिए सोशल मीडिया की राह में एक बाधा की तरह देखा जाता था। दुनिया की तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली हिन्दी भाषा ने सोशल मीडिया के मंच पर दस्तक देकर अपने अस्तित्व को और भी बुलंद रूप से स्थापित किया है।

प्रस्तावना – वर्तमान सदी इंटरनेट और वेब मीडिया वाली सोशल मीडिया की सदी बन गई है। एक वक्त था जब सिर्फ प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्रचलित थी। पर इंटरनेट के प्रादुर्भाव ने अपने तरीके से समाज को प्रभावित करना प्रारंभ किया। यह कहा जा सकता है कि रेडियो और टेलीविज़न के बाद इंटरनेट के बढ़ते प्रचलन से आई संचार क्रांति ने सोशल मीडिया को जन्म दिया है। कभी मीडिया जन समूह तक सूचना, शिक्षा और मनोरंजन पहुँचाने का सरल और सक्षम साधन हुआ करते थे। वहीं आज के 3 जी और 4 जी के दौर में यही काम अब सोशल मीडिया करने लगा है।

सरल भाषा में समझे तो सोशल मीडिया एक प्रकार से विश्व के विभिन्न कोनों में बैठे उन लोगों से संवाद करने का सशक्त माध्यम है जिनके पास इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है। यह पारस्परिक संबंध के लिए इंटरनेट या अन्य माध्यमों द्वारा निर्मित आभासी समूहों को संदर्भित करता है। इसने विष्व को जैसे जीमित कर दिया है। आज विष्व में लगभग 200 सोशल नेटवर्किंग साइट्स हैं जिनमें फेसबुक, ट्विटर, आरकुट, लिंक्डइन, इंस्टाग्राम आदि लोकप्रिय हैं, जो हर क्षेत्र में काम कर रही हैं। प्राय: इन सभी लोकप्रिय सोशल साइट्स पर उपयोग की जाने वाली विभिन्न भाषाओं में हिन्दी ने भी अपना वर्चस्व बना लिया है।

शोध का उद्देश्य – प्रयोग सोशल मीडिया पर हिन्दी भाषा के बढ़ते प्रयोग का विश्लेषण करना।

सोशल मीडिया में बढ़ता हिन्दी का प्रयोग – सोशल मीडिया पर हिन्दी के प्रवेश से पहले जुलाई, 2003 में हिन्दी विकिपीडिया का आरंभ हुआ था। 2003 में ही हिन्दी (भारतीय बहुभाषायी) लिनक्स ऑपरेटिंग सिस्टम मिलन आया और हिन्दी वर्तनी जाँच सुविधा युक्त माइक्रोसॉफ्ट का ऑफिस सुइट हिन्दी इंटरफेस युक्त संस्करण 1.1 भी आया। इसी तरह इंटरनेट पर हिन्दी की उपलब्धता से हिन्दी ब्लॉगों का पदार्पण हुआ और साथ ही जी-मेल के जरिये हिन्दी में ई-मेल की सुविधा भी आ गई। मार्च 2007 में गूगल समाचार सेवा हिन्दी में प्रारंभ होने के बाद से हिन्दी के अनेक सॉफ्टवेयर उपलब्ध हो जाने और हिन्दी समर्थन वाले वर्चुअल कीबोर्ड के आने से आम लोगों के लिए हिन्दी का प्रयोग बहुत आसान हो गया।

वर्तमान में सोशल मीडिया पर सक्रिय लोग अब हिन्दी भाषा का प्रयोग भी न केवल खुलकर बल्कि गर्व के साथ करते हैं। इससे पहले सोशल मीडिया पर अंग्रेजी का प्रयोग कई लोगों के लिए सिर्फ जरूरत या मजबूरी हुआ करती थी, लेकिन अब हिन्दी का प्रयोग, हिन्दी प्रेमियों के लिए प्राथमिकता और गर्व का विषय बन गया है।

सोशल मीडिया पर हिन्दी भाषा को और भी विस्तारित करने का कार्य किया ब्लॉगर्स ने। हिन्दी में ब्लॉग लिखने वालों की संख्या विगत कुछ वर्षों में लगातार बढ़ी है। वहीं हिन्दी ब्लॉगिंग के जरिये ऐसे लोगों को विचारों की अभिव्यक्ति का बेहतरीन मंच मिला, जिनके लिए भाषा की रूकावट थी। हिन्दी भाषा को सोशल मीडिया पर हाथों हाथ लिए जाने का एक कारण यह भी है, कि हिन्दी भाषा अभिव्यक्ति का एक सशक्त और वैज्ञानिक माध्यम है। इससे भावों को समझने मे असुविधा का सामना नहीं करना पड़ता और लिखी गई बात पाठक तक उसी भाव में पहुँचती है, जिस भाव के साथ उसे लिखा गया है। हिन्दी के तीव्र विस्तार का ग्राफ सोशल मीडिया पर मौजूद हिन्दी प्रेमी वर्ग की ओर इशारा करता है, जो लगातार वृद्धि कर रहा है। यह हिन्दी भाषा की सुगमता, सरलता और समृद्धता का ही परिणाम है, कि विश्व स्तर पर आज हिन्दी, सोशल मीडिया के मंच पर स्वयं को सुशोभित कर पाई है, और लोगों द्वारा पसंद भी की जा रही है।

कुछ वर्ष पूर्व तक विश्व में 80 करोड़ लोग हिन्दी समझते, 50 करोड़ बोलते और 35 करोड़ लिखते थे, लेकिन सोशल मीडिया पर हिन्दी के बढ़ते इस्तेमाल के चलते, अब अंग्रेजी उपयोगकर्ताओं में भी हिन्दी का आकर्षण बढ़ा है और इन आँकड़ों में भी तेजी से वृद्धि हुई है। वर्तमान में भारत, विश्व का तीसरा सबसे बड़ा इंटरनेट उपयोगकर्ता है, जिसका श्रेय हिन्दी भाषा को भी जाता है। दरअसल भारत की आबादी का एक बड़ा तबका हिन्दी भाषा के प्रति सबसे अधिक सहज है और सोशल मीडिया से जोडने में हिन्दी का सबसे बड़ा योगदान है।

सोशल मीडिया पर हिन्दी भाषा के विस्तार की गति का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि अप्रैल 2015 तक देश में सोशल मीडिया का इस्तेमाल करने वालों की संख्या 14.3 करोड़ रही, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में

उपभोक्ताओं की संख्या पिछले एक-दो साल में 100 प्रतिशत तक बढ़कर ढ़ाई करोड़ पहुँच गई जबकि शहरी इलाकों में यह संख्या 35 प्रतिशत बढ़कर 11.8 करोड़ रही।

आजकल जब लगभग हर चीज को सोशल मीडिया में उसकी उपस्थिति से नापा जा रहा है। प्रत्येक संख्या, व्यक्ति, सरकार, कंपनी, साहित्यकर्मी से समाजकर्मी तक और नेता से अभिनेता तक को सोशल मीडिया में उसके वजन, प्रभाव और लोकप्रियता की कसौटी पर तौला जा रहा है। जहाँ तक हिन्दी भाषा की बात है, भाषा के दो प्रमुख आयाम हैं। एक, उसका शुद्ध भाषिक आयाम जिसमें उसके शब्दों, वाक्य रचना, व्याकरण, शब्दकोश आदि पर ध्यान रहता है। दूसरा, भाषा का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक संदर्भ जिसमें उसके इन संदर्भों में प्रयोग, परिवर्तनों, अर्थों, प्रभावों आदि पर ध्यान होता है। आज संसार की लगभग हर भाषा पर सोशल मीडिया के प्रभाव को महसूस किया जा रहा है, उसे समझने की कोषिष हो रही है। प्रचलित कुछ साइटों में फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम आदि लोकप्रिय साइटों पर उपयोग की जाने वाली विभिन्न भाषाओं में हिन्दी भाषा ने अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। मैसेजिंग सेवा ने तो हिन्दी में धूम मचा रखी है। यूनिकोड जैसे फॅान्ट के आ जाने से इंटरनेट पर हिन्दी को उसके सही 'देवनागरी' स्वरूप में लिखना-पढ़ना आसान हो गया है। आज सोशल मीडिया पर हिन्दी का प्रभाव ही है जो हिन्दी सरलीकरण के लिए अनेक कार्य हो रहे हैं, जैसे- गूगल मानचित्र हिन्दी में देखना, हिन्दी वाईस सर्च आदि आ जाने से सोशल मीडिया पर हिन्दी का प्रयोग काफी हद तक बढ़ गया है।

निष्कर्ष - आज ये स्वीकार करने में किसी को कोई हिचक नहीं होगी कि, सोशल मीडिया की वजह से हिन्दी की पहुँच में अतिशय विस्तार हुआ है। सोशल मीडिया एक जनक्रांति की तरह हिन्दी के लिए संभावनाऐं लेकर आयी है। हिन्दी को और भी विस्तार देने का श्रेय हिन्दी ब्लॉगर्स को जाता है। हिन्दी ब्लॉगर्स ने पिछले कुछ ही सालों में हिन्दी को इस देश से निकालकर दूसरे देश की सीमाओं में बखुबी पहुँचाया ही नहीं बल्कि अहिन्दी पाठकों को भी हिन्दी की खूबसूरती से परिचित करवाया। सोशल मीडिया से अनेक संभावनाऐं जागी हैं और हम आशान्वित भी हुये हैं। परंतु इसके साथ ही साथ हमें हिन्दी को सजाने और संवारने के लिए भी सदैव सजग रहना होगा। एक रिपोर्ट के अनुसार केवल भारत में फेसबुक और ट्विटर पर सक्रिय भारतीय सदस्यों की संख्या क्रमश: 100 मिलियन और 33 मिलियन के पार है। हिन्दी के परिप्रेक्ष्य में देखें तो एक सुखद तथ्य यह है कि भारत में 28% सर्च क्वेरी यानि पूछताछ वॉयस के माध्यम से होती है। हिन्दी वायस सर्च क्वेरी में प्रतिवर्ष 400% की वृद्धि हो रही है।

सोशल मीडिया पर हिन्दी के बढ़ते प्रयोग को देखते हुए गूगल जैसी कंपनियाँ भी हिन्दी भाषियों को आकर्षित करने की कोशिश कर रही है। ट्विटर के अनुसार वर्ष 2011 में यूज़र्स की संख्या 10 करोड़ पहुँच जाने पर कंपनी ने अपनी वेबसाइट पर हिन्दी इनपुट की व्यवस्था की थी।

जिस तरह से आज समाज के हर वर्ग ने सोशल मीडिया को अपनी स्वीकृति दी है उससे पूरी संभावना है कि आने वाले समय में हिन्दी की स्वीकार्यता और उपयोगिता बड़े पैमाने पर और बढ़ेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. इंडिया टुडे
2. दैनिक समाचार पत्र
3. रविन्द्र प्रभात: सामाजिक मीडिया और हम
4. संचिता सिंह: सोशल मीडिया की संभावनाएँ

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

हिन्दी भाषा एवं साहित्य का अन्त: सम्बन्ध

डॉ. मुकेश भार्गव *

*संविदा सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) तुलनात्मक भाषा एवं सस्कृति अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – भाषा के बारे में कुछ भी कहना, अपनी छाया को पकड़ना है। यह कहना ठीक होगा कि हम उसकी छाया हैं अपना यथार्थ उसमें गढ़ते हैं अपने को उसमें और उसके द्वारा अपने आपको परिभाषित करते हैं।[1] भाष् धातु से व्युत्पन्न भाषा शब्द का सामान्य अर्थ है कहना या बोलना। भाषा जितनी शब्द व्यापी होती है उतनी ही रूप और भाव व्यापी भी। सृजन में वह कभी संगीत लगती है, कभी चित्रकला, कभी कोलाज, कभी पैराडी तो कभी शून्य। वह ध्वनि भी है, अक्षर भी, शब्द भी, वाणी भी। सृजन लिखित हो या वाचिक वह भाषा में ही सम्भव है। जन्म के बाद सर्वप्रथम हमारे पास क्या आता है ? सम्भवत: जन्म के बाद और जन्म के पूर्व सर्वप्रथम जो चीज आती है वह है भाषा [2] आकृतियों का एक समग्र संसार तो जन्म के साथ ही हमारे आस–पास उग आता है।

भाषा बड़ा ही व्यापक एवं महत्वपूर्ण शब्द है। मानव जीवन में भाषा का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा हमारे जीवन के साथ इस प्रकार घुल–मिल गई है कि एक क्षण के लिए भी हम उसे अपने से अलग नहीं कर सकते। अवसर विशेष पर भाषा के महत्व का अनुभव लगता है। अबोध बच्चे को किसी वस्तु के लिए छटपटाते देख अथवा किसी गूंगे को हाथ के संकेत से अपने भावों की अभिव्यक्ति में कठिनाई को देखकर हमें भाषा की उपयोगिता का सहज ज्ञान हो जाता है। भाषा ही हमारी सभ्यता का आधार है। मनुष्य एवं अन्य जीवों में मुख भेद भाषा का ही हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक क्रियाकलापों के लिए हमारो पास भाषा ही एक मात्र साधन है। मनुष्य एक विवेकेशील प्राणी है। विवके ही मनुष्य को पशु अलग कतरा है। इस विचार विनिमय का साध भाषा ही है। भाषा एक सामाजिक वस्तु है भाषा देश की राष्ट्रीय चेतना का प्रधान साधन है। भाषा राष्ट्र निर्माण के कार्य में सहायक सिद्ध होती है। जिस राष्ट्र की भाषा जितनी उन्नत एवं समृद्ध होगी, वह राष्ट्र उतना ही श्रेष्ठ समझा जायेगा। प्रत्येक मनुष्य अपने व्यवहार के लिए कम अथवा अधिक भाषा का सहारा लेता है। भाषा के बिना किसी भी व्यक्ति को नित्य प्रति के कार्य संचालन में बड़ी कठिनाई होती है। भाषा के महत्व पर विचार करते हुए श्री साठे ने लिखा है – 'मनुष्य के निजी जीवन में खुराक, पानी तथा हवा का जो स्थान है वही स्थान मनुष्य के सामाजिक जीवन में भाषा का है।'

भाषा : आत्म उत्खनन अथवा आत्म–अन्वेषण का सबसे सक्षम आयुध भाषा है। भाषा मनुष्य की देह का अदृश्य अंग है जो उसे आत्म दृष्टि देता है भाषा और आत्म बोध का यह सम्बन्ध मनुष्य को समस्त जीव–जन्तुओं से अलग एक अद्वितीय श्रैणी में ला खड़ा कर देता है। विद्वानों ने भाषा की परिभाषा इस प्रकार दी है– 'भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली–भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार स्पष्टता से समझ सकता है। (कामता प्रसाद गुरू) जगत का अधिकांश व्यवहार बोलचाल अथवा लिखा–पढ़ी से चलता है, इसलिए भाषा जगत कि व्यवहार का मूल है। जिस ध्वनि समुच्चय द्वारा मनुष्य किसी वस्तु के संबंध में अपने भावों या विचारों को प्रकट करता है, उसे भाषा कहते हैं।' 'उस सार्थक शब्द समूह को भाषा कहते है, जिसमें हम अपनी बात सही–सही दूसरों को समझा सकते है। स्वीट के अनुसार, क्रियावन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है।' भोलानाथ तिवारी के अनुसार, 'जिस साधन से हम अपने विचार या भाव दूसरों तक पहुँचा सके वह भाषा है।' आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा के अनुसार– 'उच्चारित ध्वनि संकेतों की सहायता से भाव या विचार की पूर्ण अभिव्यक्ति भाषा है।'

साहित्य : 'साहित्य भाव: तत साहित्यम्' के अनुसार साहित्य ज्ञान राशि का संचित कोष है। 'साहित्य' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है (स+हित) अर्थात् जिस रचना में सभी का हित हो वही साहित्य है। 'साहित्य' शब्द 'सहित शब्दों से उत्पन्न है। अतएव धातुगत अर्थ करने पर साहित्य शब्द में मिलने का एक भाव दृष्टिकोण होता है। वह केवल भाव का भाव के साथ, भाषा का भाषा के साथ, ग्रन्थ का ग्रन्थ के साथ मिलन है। यही नहीं, वरन् यह बतलाता है कि मनुष्य के साथ मनुष्य का अतीत के साथ वर्तमान का, दूर के साथ निकट का, अत्यन्त अंतरंग योग साधन साहित्य के अतिरिक्त और किसी के द्वारा संभव नही है। जिस देश में साहित्य का अभाव है उस देश के लोग सजीव बंधन से बंधे नही, विच्छिन्न है।'

साहित्य शब्द व्युत्पत्ति : उत्तम भाषा में व्यक्त किये हुए जन समाज के उत्तमोत्तम विचार संग्रहित होकर साहित्य का रूप धारण करते हैं। साहित्य शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के सहित शब्द से हुई है। सहित का अर्थ है विविध वस्तुओं का एकीकरण। कुछ व्यक्ति इसका अर्थ कल्याण सहित मानते हैं। अत: साहित्य अर्थात् संग्रह के भाव को ही साहित्य कहते हैं। साहित्य का क्षेत्र बड़ा व्यापक है। धर्म दर्शन, विज्ञान और काव्य (जिसमें गद्य, पद्य, नाटक, उपन्यास, आख्यापिका आदि हैं) राजनीतिक, अर्थशास्त्र आदि जितना वाड्मय है सब साहित्य के अन्तर्गत समाहित है। संकुचित दृष्टिकोण से साहित्य काव्य का पर्याय है। साहित्य मानव समाज के विचारों का आगार है और विचारों के द्वारा ही समाज का कार्य सम्भव है हमारे विचार भाषा का परिधान पहनकर समाज के सम्मुख आते हैं और सक्रिय हो उसकी गति को निश्चित करते हैं। इसके द्वारा मानव जीवन की अभिव्यक्ति और 'सम्पूर्ण

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

ज्ञान की चेतना का बोध होता है। मनुष्य अनन्त होता हुआ भी शान्त है, पूर्ण होता हुआ भी अपूर्ण है। पूर्णता और अपूर्णता की स्थिति एक साथ नहीं रह सकती है। इस अपूर्णता से पूर्णता का बिन्दु से सिन्धु की साधना में, साहित्य एक स्थायी सम्पत्ति के रूप में मानव को प्राप्त हुई है। साहित्य जीवन के विकास का चरम सौपान है। साहित्य के द्वारा ही हम शेष सृष्टि के साथ रागात्मक सम्बन्ध स्थापित करने में समर्थ होते हैं। साहित्य जिस प्रकार प्रेम, क्रोध, करूणा, घृणा आदि मनोवेगों या भावों पर ज्ञान चढ़ाकर उन्हें तीक्ष्ण कर देता है, उसी प्रकार जगत के नाना रूपों और व्यापारों के साथ हमारा उचित सम्बन्ध स्थापित करता है। साहित्य पाठक या मन का संस्कार एवं परिष्कार का उसकी रूचि को उदात्ता बनाता है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना साहित्य के द्वारा ही आती है। 'साहित्य चिरनवीन भी है और चिरन्तन भी। हम उसे प्राचीन और नवीन का तारतम्य निरूपित करने में एकमात्र समर्थ पाते है। जातियों के वास्तविक इतिहास को सुरक्षित रखने का साधन साहित्य के अतिरिक्त और क्या है ? राष्टों के जीवन की उन्नति और अवनति, आशायें और आकांक्षायें साहित्य में ही चित्रित मिलती है। समष्टि रूप में साहित्य मानवता का दर्पण है। भिन्न-भिन्न जातियाँ उत्पन्न हुई और नष्ट हुई आज उनकी कृतियों का पता तक नहीं है, परन्तु साहित्य में वे अब भी अपना अस्तित्व बनाए हुए है। मनुष्य समाज वास्तव में साहित्य मानवता का दर्पण है। समस्त मतों की विवेचना के बाद साहित्य शब्द को परिभाषा के 'पाश' में बांधना दुष्कर है। यद्यपि भिन्न-भिन्न विद्वानों ने साहित्य की परिभाषा भिन्न-भिन्न प्रकार से की है किन्तु कोई भी परिभाषा पूर्ण नहीं की जा सकती। संस्कृत में निरूपित साहित्य की परिभाषाएँ -

1) **कुन्तक -** वक्रोक्ति जीवितकार कुन्तक ने साहित्य की व्याख्या इस प्रकार की है, 'साहित्यमनयों शोभाशालिताम् प्रति काव्यसो, अन्यूनानतिरिक्तत्वम् मनोहारिण्यवस्थिति।' अर्थात् 'साहित्य वह है जिसमें शब्द और अर्थ दोनों की परस्पर रूपधार्मय मनोहारिणी श्लाघनीय स्थिति हो।'

2) **भर्तृहरि: -** जो व्यक्ति, संगीत, साहित्य तथा कला विहीन है वह पशु के समान है केवल उनमें पूंछ और सींग नही होते 'साहित्य संगीत कला विहीन: साक्षात पशु: पुच्छ विषाणहीन:।'

3) **राजशेखर -** राजशेखर ने साहित्य शब्द का प्रयोग इस प्रकार किया है। 'शब्दार्थ योर्ययावत्सह भावेन साहित्य विद्या' अर्थात् वह विद्या जहाँ शब्द और अर्थ का यथा योग्य सहयोग रहता है साहित्य विद्या है। हिन्दी विद्वानों द्वारा निरूपित साहित्य की परिभाषाएँ -

1. **महावीर प्रसाद द्विवेदी -** ज्ञान राशि के संचित कोष का नाम ही साहित्य है।

2. **मुंशी प्रेमचंद -** 'साहित्य की बहुत सी परिभाषाएँ दी गई है पर मेरे विचार से उसकी सर्वोत्तम परिभाषा' जीवन की आलोचना है। चाहे वह निबंध के रूप में हो, चाहे कहानी के या काव्य के उसे हमारे जीवन की व्याख्या करनी चाहिए।

3. **जयशंकर प्रसाद -** काव्य या साहित्य आत्मा की अनुभूतियों का नित्य नया रहस्य खोलने में प्रयत्नशील है।

अंग्रेजी में दी गई साहित्य परिभाषाएँ -

1) **मैथ्यू आर्नल्ड -** मैथ्यू आर्नल्ड ने साहित्य को जीवन की व्याख्या माना है।

2) **इन्साईक्लोपीडिया ब्रिटानिका की परिभाषा -** इस प्रमाणिक कोष के अनुसार 'साहित्य एक व्यापक शब्द है, जो यथार्थ परिभाषा के अभाव में सर्वोत्तम विचार की उत्तमोत्तम लिपिबद्ध अभिव्यक्ति के लिए व्यवहृत हो सकता है।'

आज साहित्य शब्द अनेक अर्थ में व्यवहृत होता है। अंग्रेजी में 'लिट्रेचर' शब्द का जो अर्थ है, हिन्दी में वही अर्थ आज साहित्य देने लगा। (साहित्य भारत के सिद्धान्त सरोजिनी मिश्रा)

भाषा और साहित्य का संबंध - भाषा और साहित्य दोनों ही महत्वपूर्ण उपादान है। इन दोनों के बीच घनिष्ठ अधिकार आधेय संबंध भी है, बिना भाषा के साहित्य संभव नहीं है। भाषा साहित्य की कला साम्री है। भाषा के अनेक सामाजिक उपयोग है। इसका एक ललित उपयोग साहित्य रचना भी है। भाषा का साहित्यगत उपयोग विशिष्ट है। अन्य जगत तो भाषा अभिव्यक्ति या प्रेषण का माध्यम होती है और साहित्य में इसका उपयोग रचना या निर्माण की सामग्री के रूप में होता है। साहित्य के रूप में पूनर्गठित भाषा आस्वाद की प्रक्रिया को जन्म देती है। आस्वाद व्यापार मानसिक है और भाषा व्यवहार बाह्य इन दोनों का संयोजन साहित्य देता है। यह एक सांस्कृतिक विडम्बना ही मानी जाएगी कि स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व एक सामान्य हिन्दी भाषी का अपने साहित्य और उसके लेखक से भावनात्मक सम्बन्ध आज से कहीं अधिक गहरा और अर्थपूर्ण था। हिन्दी भाषा केवल विचारों का माध्यम नही, स्वाधीन चेतना का प्रतीक है प्राय: कहा जाता है कि भारत के अनेक भाषाओं में विभाजित होने से उसके साहित्य का स्वर और स्वरूप उस रूप में अखंडित समग्रता प्राप्त नहीं कर पाता, जितना हम यूरोपीय देशों के एक भाषी मोनोलिथिक साहित्य में देख पाते है, भाषा साहित्य को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पोषित करती है विभिन्न भाषाओं के भीतर एक ही सांस्कृतिक धारा प्रवहमान होती है। 'सर्वे भवन्तु सुखिन' यह साहित्य की मूलभूत चेष्टा रही है, और यहीं हमारी संस्कृति का मूल भाव भी है। भाषा और साहित्य का सम्बन्ध एक दूसरे पर आधारित है। एक के अस्तित्व के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं है यदि भाषा के बिना साहित्य अपना रंग रूप आकार धारण नहीं कर सकता तो साहित्य के अभाव में भाषा की उपादेयता एवं अस्तित्व ही व्यर्थ हो जाते हैं। यदि साहित्य को चित्र कहा जाए तो भाषा उस चित्र निर्माण का कैनवास और रंग तूलिका कहे जाएंगे। भाषा के माध्यम से साहित्य अपना रूप धारण करता है, तो साहित्य भाषा को सार्थक बनाता है। कुछ लोगों को जो थोड़ा-सा साहित्य पढ़ लेते है उन्हें यह भ्रान्ति हो जाती है कि वे भाषा और साहित्य सब कुछ जान गए हैं। ज्ञान ग्रहण करने के मामले में भाषा औ साहित्य दो अलग-अलग चीजें हैं, और दक्षता दोनों में वांछित है। जबकि वास्तविक स्थिति यह है कि जब तक भाषा पर किसी का अच्छा अधिकार नही वही साहित्य को नही समझ सकता। भाषा साहित्य की अभिव्यक्ति है वे एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। एक से अभाव में दूसरे की स्थिति नगण्य होकर रह जाएगी। एक मिटेगा तो दूसरा उसके पहले समाप्त हो जाएगा और यदि एक खड़ा होगा तो दूसरा उसके पास ही दिखाई देगा। भाषा यदि शरीर के तो साहित्य उसका प्राण। दूसरी और भाषा रहित साहित्य शून्य की स्थिति को प्राप्त कर लेता है। साहित्य को रूप प्रदान करने वाले भाषा के तत्व है- विचार भाव कल्पना शैली शब्द भण्डार का सटीक प्रयोग आदि। इनके अभाव में साहित्य अस्तित्व नहीं प्राप्त कर सकता, परन्तु इनकी अपनी तब तक कोई स्वतंत्र सत्ता भी नहीं जब तक इसमें साहित्य के कमनीय कुसुम न गूंथ दिए जाए। नि:सन्देह साहित्य, भाषा पर आश्रित भी है और उसका आश्रयदाता भी है। वास्तविकता यह है कि शब्दों की स्वतंत्र रूप से तब तक

कोई सत्ता नहीं, जब तक वे वाक्य के ताने बाने में पिरो नहीं दिये जाते। जब वे शब्द रत्न वाक्य के गहने में गढ़ दिये जाते हैं। चमत्कार उत्पन्न करने की क्षमता उसमें आ जाती है। तभी वह साहित्य कहलाने लगता है। भाषा की सही समझ साहित्य की समझ में सहायक होती है। भाषा भावों व विचारों की जननी और उनकी वाहिका है यह विचारों के आदान-प्रदान का महत्वपूर्ण साधन है भाषा के चार कौशल है- सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। यह सभी साहित्य को व्यापक रूप प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष - भाषा और साहित्य में गहरा पारम्परिक संबंध है। भाषा एवं साहित्य दोनों सामाजिक है समाज के लिए दोनों का समान रूप से उपयोग और महत्व है। एक साहित्य का विद्वान अपने को भाषा का भी विद्वान माना है। कारण, किसी भी भाषा का उत्कृष्ट स्वरूप उसके साहित्य से ही बनता है। भाषा का संबंध साहित्य से है। अत: दोनों में पारस्परिक संबंध रहने के पश्चात् भी भाषा और साहित्य में अन्त: संबंध स्थापित होता हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. हिन्दी भाषा का प्रयोजन मूलक स्वरूप - साहित्य (पृष्ठ संख्या 89), भवन, इलाहाबाद
2. व्यावहारिक राजभाषा आलोकरस्तोगी, नई दिल्ली (पृष्ठ संख्या 142)
3. भाषा और समाज - रामविलास शर्मा, रामकमल प्रकाशन (पृष्ठ संख्या 82) दिल्ली।
4. हिन्दी भाषा का विकास - गोपाल राय अनुपम प्रकाशन, पटना (पृष्ठ संख्या 65)
5. हिन्दी साहित्य की भूमिका - हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल (पृष्ठ संख्या 82), प्रकाशन दिल्ली
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास - रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी (पृष्ठ संख्या 75) सभा, काशी
7. हिन्दी साहित्य का उद्‌भव और विकास - हजारी प्रसाद द्विवेदी (पृष्ठ संख्या 85) बिहार राष्ट्र भाषा परिसर पटना
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस (पृष्ठ संख्या 95) दिल्ली।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Comparative Study of Education Patterns and Challenges of Students with Special Needs In Higher Education Institutes of U.S. Nagar & Nainital

Sagheer Ahmad*

***Researcher Education, Monad University, Hapur (U.P.) INDIA**

Introduction - People with disabilities form a significant part of the world population. The exact numbers are hard to discern due to suspected underreporting and differences in the definition of disability between countries, and cultures (Yeo and Moore, 2003). It is estimated that approximately 650 million people of global the population, or ten per cent of the total population, live with disability. It is also estimated that approximately 80 per cent of the global population living with disability live in developing countries (Price, 2003; UN, 2006). The global prevalence of disability and impairment is expected to rise due to factors such as increase in population, ageing, accidents, malnutrition, conflict, HIV and advancements in medical treatment which preserves and prolongs life (Thomas, 2005a). The experience of people with disability varies depending on their personal circumstances, availability of resources and other external factors. Similarly, students with disabilities represent an emerging population in higher education institutions, whose perceptions and experiences of higher education are ultimately shaped by their socio-cultural experiences, the existing of environment, and the availability of specific facilities, required by them. Despite notable progress in legislations and policies for these students in higher education institutions, many of them still face various challenges in completing their studies successfully. Unfortunately it was also found that there is a dearth of research studies in the Indian context. This study aims to explore factors or barriers which affect the social and educational experience of students with disabilities in higher education institutions in Uttarakhand, India.

Background of The Study - In the present chapter, the terms disability and education were conceptualised in a global context. A brief discussion of the growth of higher education and status of students with disabilities in higher education in Indian context has been presented. The subsequent chapter, Review of Literature, has been presented in a systematic manner; clarifying the concepts related to these students and issues in higher education. It also presents research review on various aspects of the subjects and also other stakeholders in this study. This extensive review of literature provides a base for the conceptualisation of the research problem. The review consists of both Western and Indian studies carried out in this area of research. The third chapter is devoted to methodological aspects, namely, the plan and implementation of the study. The background of the study presents the rationale for the study followed by objectives, theoretical and conceptual framework, and research questions in this study. This is followed by research design, study area, sampling method, data collection and analysis procedures. The next four chapters (4, 5, 6, 7, 8, 9 and10) describe the results of the study along with a brief discussion of the findings. The discussions are based on comparing and contrasting the findings of the present study with those of earlier studies, observations made in western and Indian settings. As an adjunct to the last chapter which deals with the favourable and hindering factors responsible for the creation of inclusive environment in higher education institutions and implications for policy, and practice as well as suggestions for future studies are stated. The appendices present the references, as well as tools, of the current study.

Operational Definitions - Operational definition of key concepts means that terms must be defined by the steps or operations used to measure them. Such a procedure is necessary to eliminate confusion in meaning and communication (Burns, 2000). The concepts are:

1. Awareness of special needs: In this study, awareness regarding students with disabilities includes understanding of the policies, special needs and problems to enable them to have better educational experiences and any other information in relation to students with disabilities.
2. Attitude: In the present study, attitude is defined in terms of positive or negative views and response of the teachers, students, towards students with disabilities.
3. Disclosure: In the current study, disclosure means giving information to the researcher, the communication of information about disability by students with concerned

authorities, staff and students in higher education institutions.

4. Social relations and life: In this study, the relations these students have among themselves within and outside the education institutions, including those with family, peers without disabilities, teachers and staff.

Delimitation of the study - During the last three decades, there has been a movement from segregated education through integration to a point where inclusive education is central to education of children and youth with special needs (Hegarty, 2001). Several recent United Nations polices have proclaimed that the rights of all persons are to be valued equally and provided with equal educational opportunities in mainstream institutions (Avramidis, Bayliss, and Burden (2000). It includes the UN Convention on the Rights of the Child (1989), the UN Standard Rules for the Equalization of Opportunities for Persons with Disabilities (1993), and the UNESCO Salamanca Statement (1994).

Since there has been a growing concern providing inclusive education to children and youth with disabilities in many countries all over the world, the movement to guarantee equal educational opportunities for such students in India has also gained momentum. The importance of education for children with special needs in India has been brought into a sharper focus when several national and international Acts, namely, the Integrated Education for the Disabled Child (IEDC), 1974; National Policy on

Research Questions:

1. How far are the higher education institutions in Uttarakhand aware of the policies and schemes which have been introduced by Government of India and UGC for students with disabilities?
2. What are the policies implemented by higher education institutions for supporting students with disabilities?

Research Design - A research design is the plan, the structure, and strategy of investigation to obtain answers to the research questions- the plan is the overall scheme or programme of research (Baker, 1994). The present study is exploratory in nature. To answer the research questions posed in this study, the researcher used a mixed method approach which is a procedure for collecting, analysing and mixing or integrating both quantitative and qualitative data at different stages of the research process within a single study (Creswell et al, 2003). The combination of the two methods provides the researcher with multiple ways of looking at a complex problem. On one hand, the quantitative method allows for deductive thinking, scientific testing of hypothesis, standardised data collection from a large number of respondents and statistical analysis. On the other hand, the qualitative method puts emphasis on inductive thinking, an exploration of complex issues in depth and breadth, building of models and theory, using descriptive materials from different types of data (e.g. in-depth interviews and focus groups) and analysis (Johnson and Onwuegbuzie, 2004).

The main rationale for mixing both types of data in the present study was that neither quantitative nor qualitative methods are sufficient by themselves to capture the trends and details of situations such as the factors which facilitate or hinder the educational advancement of students with disabilities in higher educational institutions in Uttarakhand . Quantitative and qualitative methods complement each other and provide a more complete picture of the research problem (Tashakkori and Teddlie, 1998). Mixed methods provide a more complete picture of the research problem. When used in combination, quantitative and qualitative methods, multiple methods, or triangulation, reflect an attempt to secure an in-depth understanding of the phenomenon. Triangulation is not a tool or a strategy of validation, but is an alternative to validation (Fielding and Fielding, 1986). Using multiple methods, empirical findings, perspectives and observers in a single study is best understood as a strategy that adds breadth and depth to any investigation (Flick, 1992).

Area of the study - There are 13 District in all Uttrakhand and I studied for my research paper I got a major problem of disabled student into district like Udham Singh nagar and Nainital. I collected data from the student interview by a questioner one by one. Due to a limit a time and finance and I selected a limited student like 100 out of 50 girls and 50 boys from higher education institutions of Uttrakhand.

Sampling Strategy - For conducting the survey, to select the universities, the researcher used purposive sampling. The criteria for selecting the universities were based on inclusion and exclusion criterion. For example, well established universities which have been established before the year 2003 as well as those universities offering courses on higher education that is MA, M.Phil, and PhD courses were included.

Data Collection - I collected data from students studying in different colleges and universities of uttrakahand and its distt. Udham Singh Nagar and Nainital. Student of class B.A., M.A., B.Ed., & B.Tech. etc. I gave them a questioner paper for answering yes or no for their field and their problems about education and disabilities at all. Student gave answers by their own mind and decision.

(a). The remaining 13 (Group5 = 6 + Group6 = 7) respondents were from State University (b). There were 14 (36%) females and 25 (64%) males. All focus group discussions were audio-recorded. The focus groups were set up in a discussion mode to facilitate dialogue and conversation among the respondents. Each group discussion was for approximately 30 minutes. All the FGDs were conducted in the student‘s classrooms in the evening after the classes. Considerable time was spent on rapport building to make the respondents feel active and friendly. A tape recorder was used to record the FGDs after obtaining their consent.

The researcher first explained the importance of the study to the University management and only after taking their permission, data was collected. Before each interview,

the purpose of the study was explained to the prospective respondent. It was also made clear to all respondents that they could withdraw if they were not comfortable. This process was followed before interviewing students with disabilities, students and teachers. The interviews were conducted mostly in Telugu with a few in English depending on the understanding level of the respondents. Those conducted in Telugu were later translated into English by the researcher. Utmost care was taken to make the entire process as transparent and open as possible for all the respondents in this study.

Result:

1. The result of my this study I found the student's with special needs have a problem of finance and resources in Institutes of Uttarakhand.
2. The problem of disability is barrier to learn and to seek the main resources of happy life.
3. I found during my study many students are not able to get higher education due to their poorness and income of their family.
4. Many student's of higher education take admission in higher education Institute of Uttarakahnd but break down in mean time due to their disability problem.
5. Hence we can say there are a great affects on the student's of higher education institute of Uttrakahand due to the problem of disability and poorness.

References :-

1. Aggarval, J. C. (1981). Theory and Principle of Education: Philosophical and Sociological Bases of Education. Publisher, Vikas Publication House, U.P, India.
2. Akinleye G. A. (2001). Early Childhood Education: Guide for Parents and Teachers. UNAD Journal Education, Vol. 2 (1) October; 45.
3. Allard, W.G. (1987). Keeping LD students in college. Academic Therapy, 22 (4), 359-365.
4. Alston, P. (2005). Ships Passing in the Night: The Current State of the Human Rights and Development Debate Seen Through the Lens of the Millennium Development Goals, Human Rights Quarterly, Vol. 27, pp. 755-829.
5. Altbach & D. B. Johnstone (Eds.). (1963). The Funding of Higher Education: International Perspective. Garland Publishing, New York.
6. Alur, M. (2002). ¯Special Needs Policy in India , in S.Hegarty and M. Alue (eds),
7. Education and Children with Special Needs: From Segregation to Inclusion. Uttarakhand : Sage.
8. Amsel, R., and Fichten, C. S. (1988). Effects of contact on thoughts about interaction with students who have a physical disability. Journal of Rehabilitation, Vol. 54 (1), pp: 61-65.
9. Anderson-Inman, L., Knox-Quinn, C., & Szymanski, M. (1999). Computer-supported studying: Stories of successful transition to postsecondary education.
10. Career Development for Exceptional Individuals, Vol. 22 (2), pp: 185-212.
11. Angadi, Mallikarjun & Koganuramath, Muttayya (2009). ICT Facilities and Services at M. K. Tata Memorial Learning Centre for Visually Challenged. Proceedings of 7th International Caliber, Inlflibnet Centre, Ahmedabad.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Role of Press and Media in the Indian Democracy in Present Times

Dr. Rashmi Tandon Mishra*

***Professor (Political Science) Govt. Mahakoshal Arts & Commerce (Auto.) College, Jabalpur (M.P.) INDIA**

Abstract - The Indian Press and Media has always played a very important role in the Indian democracy. As fourth Pillar of the Govt. its role has increased tremendously, especially in the last a few decades. Talking of the increasing scope of Media and Press one has to admit that it has turned out to be one of the biggest instruments to be used by the governments and seasoned politicians. The Press & Media has, in reality, become a King-maker. Worth mentioning is the new trend on the part of the Press and Media to convert itself into a Court, inviting public representatives from different fields and experts. This might be termed as M^2 - "Media's Monopoly". It tends to focus more on the Elite of the society. Therefore, it's of utmost necessity that the press should not deviate itself from the set of norms and ethical principles. To guide humanity and for the sovereignty of our Nation there are certain issues which need to be "handled with utmost care like Integrity and Unity of the nation, role of our Defence forces, the issue of Terrorism, role of the Judiciary, relations with Neighboring countries and Super Powers, role of the Corporate world, present role of the Government in controlling the ongoing pandemic Covid-19, its Vaccination campaign, Global warming, Increasing Population, Industrialization and Exploitation of natural resources; It has helped to create awareness on the above issues and encouraged Tree Plantation, Energy and Water Conservation, conservation of Natural Resources, Retaining Environmental and Ecological Balance, Development of Rural areas & Tourism Industry, promoting the spirit of Nationalism and Patriotism. Hitler had once cynically commented that "Parliaments are nothing but gossip shops and Parliamentary are but gossip mongers" we have to admit that this Parliamentary form of Government also has its drawbacks. Nevertheless, these may be turned, molded into the right and constructive direction, with the Right Attitude, The Right Education, Righteousness on the part of Judiciary and Legislative, Impartial and a vigilant Press & Media, vibrant Nationalism efforts can be channelized to make India a stronger, healthier and happier India.

Introduction - The Indian Press and Media has always played a very important role in the Indian democracy. As fourth Pillar of the Govt. its role has increased tremendously, especially in the last a few decades. The Governments have become extremely conscious about the role of Press & Media in creating public awareness. Economic advancement and increasing Globalization has contributed a lot in bringing about several changes in our lives.

Role of press and Media has been astoundingly creative and change provoking, so much so that it succeeded in changing complete scenario in the past Lok Sabha and Vidhansabha Elections. It obviously goes to say that these affects have been both positive and negative in their impact. But this is certainly true that Newspapers and Means of Communication like Radio T.V. and Internet have the capacity of reaching the people in a few seconds. All important events whether National or International reach them directly, creating public awareness, so important and a basic criteria for the success of a Democracy. All walks of life, be it social, political, religions cultural, economical, educational are effected tremendously. These Instruments of Democracy have also been very effective in unwrapping big stories and scamps related to corruption; in fact many times, drawing attention of the governments and helping them, as obvious from the past a few events, to catch and punish the guilty. It must be admitted that the Role of Press and Media has never been that much effective as of now. One cannot imagine one's life without them. Reading newspaper and Watching T.V. are important and very old customary habits of our daily routine.

Talking of the increasing scope of Media and Press one has to admit that it has turned out to be one of the biggest instruments to be used by the governments and seasoned politicians. One cannot overlook the important tie-ups of some very famous media and news channels with some political parties and groups. They are used by the governments to show "filtered information "to the people, only that news is allowed to reach the people, which is favourable to the govt., the rest of the news is not made public.

Watching the role of media nowadays one cannot deny the fact that the process of formation of Governments and fighting elections is very much influenced by them. The Press & Media is, in reality a King-maker having the daring to push into the very personal lives of people in the name of investigation and even creating an environment which forces the lawmakers and the Judiciary to bring matters into its purview pass orders for the required action. Certainly the Press & Media has turned out to be the biggest weapon to create public awareness and Public opinion so vital and necessary for a Democracy.

In fact, at times, its role seems limitless. It cannot be denied that we do not have strong rules and regulations for checking the Media from crossing it's obvious limits. Media in particular has turned out to be so powerful that in today's date it has the strength to either raise a person, a party or any institution to maximum heights of popularity or to destroy them completely. It has enabled people, the common man in particular, to interact with the most powerful man, be it an industrialist, a politician, a film star, any social worker or any administrative bureaucrat and learn about their views and their journey to success. This has definitely helped in creating a healthy communication between the two poles, so essential for our Democracy. One can definitely say that the press has certainly played a positive role in last a few years and contributed in developing a healthy environment in our society, raising the voice of the common man, making the law makers more concisions and open to the demands of the needy.

An increase in the usage of means of communication like mobile, internet and facebook has certainly transformed the entire socio-political scenario worldwide and brought several changes in one's level of thinking and understanding and living standards. It is an undisputed fact that with free access to e-libraries and e-literature, people are coming across new aspects in all fields of knowledge and this has helped in new researches and discoveries. These new developments have also affected the press and media, thereby increasing its potential to affect our lives and our whereabouts; so much so that the difference between personal individual, social and political lives has almost vanished, creating a deep impact on our social and political norms. The press and media can often be seen gossiping over personal, eating, dressing habits of Celebrities and the powerful Elite, instead of focusing on the grave National issues. Undoubtedly, our fourth pillar has its own negative and positive aspects to its credit. Napoleon Bonaparte's historic comment seem relevant and worth mentioning. "An honest Newspaper is more dangerous than an enemy's army battalion". Certainly Media and Press has its own advantages and disadvantages worth analyzing.

Focusing on unwanted and unimportant Social issues seemed to be the order of the day for the Press and Media in the recent past. Love affairs of celebrities, their dining habits, promotion of films at very low, often cheap standards, are often given more importance than national issues even good and recognized newspapers and magazines can be seen making fun of some very important events or creating mountains out of molehills, while debating for hours on some very petty issues. Many a times the television and newspaper can be seen to serve rotten garbage to the public just to gain false popularity and TRP. Who can forget the recent scandal in this very field in which many well reputed news channels and their directors, people like Arnab Goswami Director of the Republic Channel were almost behind bars and could escape only on the grounds of the violation fundamental right of speech and expression through the Apex Court. The entire episode ended up bringing to light the fact that some rules and regulations need to framed for regulation of press and media also looking at the present scenario of corruption, which has seeped into the very roots of our social and political setup Surprisingly at times one can see news flashing on screen, news very sensitive for the nation, being dealt with in such a manner as to increase danger to its Unity and Integrity especially while talking of our mutual relations with our Neighbours; also carelessly dealing with very confidential and sensitive matters, creating nuisances on caste and communal grounds, creating fear in the society, encouraging selfishness and unwanted competition in the economic sphere etc. many a times, issues of Naxalism and Terrorism are used clearly to divert the public attention from sensitive issues.

Worth mentioning is the new trend on the part of the Press and Media to convert itself into a Court, inviting public representatives from different fields and experts to narrate their views on untoward incidents and then stating its opinion - much before the police and investigation agencies. This might be termed as M^2 - "Media's Monopoly". Of course there is another aspect to the entire scenario because the interviews held by the Press and Media prove useful to the governmental machinery and those in Industry to understand concerning matters better in a guiding torch. In the list of recently quoted examples is the much debated issues of Sushant Singhs murder or suicide, the ongoing Kisaan Andolan; Aarushi's Murder case; Nithari Hatyakand; the much debatable Vikas Dubey's encounter in U.P., Unaao murder case etc. etc.

Similarly another issue which needs to be pointed out is the tendency on the part of Media to add different flavours to incidents and jumping to conclusions before police investigations are over before the police and judiciary during investigation, even to the extent of indirectly helping the criminals and the guilty to save their faces. Needless to say the Role of Press and Media ought to be framed according to the need of the hour and social and political interests of the nation.

To sum up things, what is required is that the Media must concentrate on facts and figures instead of wasting its time and that of the public on worthless discussions. Such fruitless manoeuvres not only tar the image of the media in

public but also put a question mark on the authenticity of the news and means. Its well said that "incomplete knowledge is more dangerous than real knowledge".

Yet another thing which goes against the Press and Media is that it tends to focus more on the Elite or the so-called much well-off sector of the society, Celebrities their social circle, food and dressing habits, love affairs, so to say from the smallest to the biggest incident adding new flavours, spice and mint. Needless to say the common man who idolizes these "Celebs" and worships their maneuvers, tends to follow them blindly, setting a new trend in society.

Definitely the impact of the news published through media is both heart moving and brain storming. Therefore, it's of utmost necessity that the press should not deviate itself from the set of norms and ethical principles that are meant to be followed in the wake of public law and order and general welfare of society.

To guide humanity and for the sovereignty of our Nation there are certain issues which need to be "handled with utmost care like integrity and unity of the nation, role of our Defence forces on the borders, the issue of Terrorism, role of the Judiciary, measures taken to secure relations with Neighboring countries and with Super Powers, role of the Corporate world, present role of the Government in controlling the ongoing pandemic Covid-19, its Vaccination campaign etc. It is expected of the Media to deal with these issues in such a manner as to maintain its independent, truthful and transparent role to trust create a positive impact on the society so that the confidence of the people is retained.

Similarly, statements of various political leaders on communal violence, defence matters, communal, linguistic and regional differences are often twisted and churned in a wrong may so as to attract public attention without realizing their negative impact on the political and social careers and on the law and order situation of the society. Issues like Ram Janm bhuomi. Babri Masjid, Triple Talaq, Art 370, 35A, Surgical Strikes, role of the minorities and Policy of Reservation are some such matters which need to be highlighted and at the same dealt time with in just the right manner so as strike a between social justice, invoking public awareness and administrative competance in the context of pursuing our National Interests.

However, Inspite of all these drawbacks as stated earlier regarding the impact of media on the general public, one has to admit that we cannot dream of our lives without Press & Media. It will not be irrelevant to say that our Indian Democracy is a Welfare Democracy only because of the role played by it amongst other factors.

The Press & Media has certainely played an extensive role in creative public awareness, in carrying important information about various governmental measures that aim in promoting public welfare; in encouraging public participation, in all domestic national and international issues. All this has increased transparency - something which had been missing all these years in the past and educated the general masses on their fundamental Rights and Duties, so much so that the Judiciary realized the necessity to make new laws and introduce amendments in the existing ones, looking at the complex and difficult social and political scenario. The Press and Media has also contributed immensely in diverting people's attention to yet other most important and challenging issues before humanity i.e. Global warming, Increasing Population, Industrialization and Exploitation of natural resources; the latter has not only resulted in dramatic climatic and geographical changes but also has penetrated the ozone layer which in turn, has led to several cancerous diseases and natural calamities. The press & Media has helped to create awareness on the above issues and encouraged Tree Plantation, Energy and Water Conservation, conservation of Natural Resources, Retaining Environmental and Ecological Balance etc.

Similarly, our Tourism Industry has also increased by leaps and bounds as some very attractive tourist sports have been bought to picture fetching foreign currency, increasing exports of local market products at international level and also promoting exchange of cultural practices.

Another feather in its cap is its important contribution in increasing the Rural and Village Development by fetching valuable information to the villagers on new scientific and technological advancements and research in the field of farming and rural production. Certainely the Indian Green and White Revolution has won acclaim across all International borders, Thanks again to our lively Media and Press also for awakening and promoting the spirit of Nationalism and Patriotism especially in the young generation by releasing historical and religions documentaries and imbibing respect for our traditions, morals and conventions.

The Press and Media has gone a long way in creating public opinion against several social abuses like parda pratha, castism, dowry pratha, child marriage, widow remarriage, untouchability, teen talaq pratha, baby girl foeticide etc., also raising is voice strongly against Child Abuse and Women Exploitation. Today the modern woman is more confident, self independent, educated, ambitions, aware of her rights and open to challenges in all fields.

In addition to this, may be added yet another contribution of press and Media in combating international problems like Terrorism on one hand and National problem like Naxalism on the other hand. Gathering important and rare information from various corner, alerting the public on various issues and saving humanity many a times from mishaps through speedy and intensive reporting and quick action taken by police army and investigating agencies and even by Judiciary in rare cases.

Globalization has introduced competition to the Indian markets and the Press and Media has helped the Indian farmers, industrialists and traders to stand firmly in the international market through new, improved advanced technology products and sound strategies. Travelling abroad, visiting new places and doing new researches is something

so very common to us like it was never before. Ending on a positive note, I would like to add that it is high time we realized the importance of a Democracy like ours Everything has two sides to it and like Hitler had once cynically commented that "Parliaments are nothing but gossip shops and Parliamentary are but gossip mongers" we have to admit that this Parliamentary form of Government also has its drawbacks. Nevertheless, these may be turned, moulded into the right and constructive direction, with the Right Attitude, The Right Education, Righteousness on the part of Judiciary and Legislative, Impartial and a vigilant Press & Media, vibrant Nationalism efforts can be channelized to make India a stronger, healthier and happier India.

References :-

1. Newspapers and T.V. Channels
2. Thesis on "Role of Press and Media in India" by Dr. Shivendra Singh, Guest Faculty in Govt. MACC College, Jabalpur.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

अवधी और भोजपुरी लोकगीतों में संस्कार विधान

डॉ. वन्दना अग्निहोत्री *

* प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी) माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – हमारी प्राचीन संस्कृति से देखा जाये तो मानव को संस्कारित करने की परिधि नि:सीम है। आध्यात्मिक, शारीरिक और मानसिक शुद्धि के साथ ही संस्कार मनुष्य के भावी जीवन को प्रगतिवान बनाने मे सहायक होते है। कहा जाता है कि हिन्दुओं के समस्त कर्म ही उनके संस्कार हैं और हमारे सभी कर्म देवताओं को समर्पित होते है। संस्कारों के माध्यम से हम इन्हीं कर्मो को शुद्ध और सुसंस्कृत रूप से करने की प्रतिज्ञा करते हैं। व्यक्तित्व के विकास का प्रथम सोपान संस्कार और आश्रम व्यवस्था से आरंभ होता है। संस्कारों की यह प्रक्रिया जन्म के पहले से ही प्रारभ हो जाती है और मृत्यु पर्यन्त तक चलती रहती है। ''संस्कार का अर्थ है किसी वस्तु को ऐसा रूप देना, जिसके द्धारा वह अधिक उपयोगी बन जाये।''[1]

''धर्मशास्त्रों में संस्कारों की संख्या 16 मानी गई है। जिनमें प्रमुख हैं– गर्भाधान, पुंसवन, सीमान्तोनयन, विष्णु बलि, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चोल, उपनयन, चाखेद व्रत, समावर्तन और विवाह''[2] इनमें से भी कुछ संस्कारों को ही जीवन में सम्पन्न किया जाता है। सदियों से जो हमारी परम्परा के रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी चला आ रहा है वही संस्कार है। संस्कार हमारे अन्दर समाये हुए हैं। लोकगीत चूँकि लोकजीवन का प्रतिबिम्ब होते हैं अतएव हमारे समस्त संस्कारों का लोकगीतों में वर्णन मिलता है।

हिन्दू धर्म में मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक सोलह संस्कारो का विधान है, किन्तु इनमें तीन संस्कार प्रमुख है।– (1) जन्म (2) विवाह (3) मृत्यु

जन्म के गीत:– अपने मन के उत्साह को आनंद को मनुष्य संगीत के माध्यम से व्यक्त करता है। जन्म के गीत भी कई प्रकार के है–

1. सोहर, पुंसवन, रोचना, पालना, कठुला, झुनझुना, खेलावना, बधाई, लवारी, छठी।
2. मुंडन 3. कर्णछेदन 4. अन्नप्राशन 5. यज्ञोपवीत बरूआ, पदप्रक्षालन, भीखी, धानगीत, तेल, उबटन, माई–मंतरा, मांडव गीत, नहछू, नहावन, पियरी।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, इसलिए किसी के भी दु:ख और सुख से समाज जुड़ा हुआ होता है। भारतीय संस्कृति में नारी की पूर्णता मातृत्व में मानी गई है। पुत्र वंश को आगे बढ़ाता है, पिण्डदान करता है, इसलिए हर स्त्री पुत्र को जन्म देना चाहती है। सोहर में इन्ही आशाओं–आकांक्षाओं का वर्णन मिलता है।

सोहर को मंगलगीत भी कहा जाता है। यह पुत्र जन्म के अवसर पर गाये जाते है। तुलसी का 'रामलला–नहछू' सोहर छन्द में लिखा अवधी का सुन्दर काव्य है। सोहर बहुत कम सुनने को मिलते हैं। सबसे पहले जो सोहर गाया जाता है ''कवने रामा। पुतवा के पूता भाए, अरे धरती आनंद भई ''रामा कवने रामा।'' धेरिया जुडानी हो, दुनउ कुल तारी हो। अर्थात् पुत्र जन्म से स्त्री ने मायके और ससुराल दोनों को तार दिया है।

स्त्री के गर्भवती होने पर उसकी जो खाने की इच्छा हो, उसे खिलाने का प्रयास किया जाता है। जिसे दाहेद कहा जाता है।

''सोने के टिकुली दुलहिनी रानी उनुकि ठुनकि बोले। राजा हमरे हबुसि कै साधि हबुसि लै आवउ।।[3] दुल्हन अपने पति से ठुनकते हुए कहती है कि उसे हबुसि (हरे गेहूँ या जौ की बाली के भुये हुए दाने) खाना है वह लाओ। पाँचवे या सातवें माह में मायके से स्त्री के लिए 'सधौरी' आती है, जिसमें अनेक प्रकार की मिठाईयाँ, फल, वस्त्र, और आभूषण रहते है। स्त्री उसका इन्तजार करती है।

ऐसा माना जाता है कि यदि उसकी इच्छाओं को पूर्ण नहीं किया गया तो बच्चे की लार टपकती है। इच्छाओं का दमन मानसिक अस्वस्थता का कारण होता है।

भोजपुरी के इस गीत में पति अपनी गर्भवती पत्नी से पूछ रहा है कि तुम्हे क्या खाना अच्छा लगता है।

''कवन–कवन फलवा मन भावै, कहिना समुझावहु हो।
भातवा त भावैला धानहि केरा, दलिया रहरि केरा हो।
ए प्राभु फलवा त भावैला, मछलिया मांसु तीतिले केरा हो।
ए प्राभु फलवा त भावैला, नींबुआ, करेला, नरियल भावैला हो।''[4]

पत्नी बताती है उसे धान का भात, अरहर की दाल, रोहू मछली तीतिर का माँस, नींबू, केला और नारियल खाना अच्छा लगता है।

लोक–विश्वास है कि नारियल, केला और संतरा खाने से बालक सुन्दर पैदा होता है। बाहर से आए ससुर बहू से पूछते है–

''बाहिरे से आए हैं ससुर त बहुआ से पूछै हों,
बहुआ कवन–कवन फल खाइब होरिल बड़ा सुन्दर हो।
नींबू भी खाएब, नारंगी भी खाएब
ससुर फोरि–फोरि खाएब नारियल होरिल बड़ा सुन्दर हो।''

गर्भस्थ शिश का पुंसवन संस्कार किया जाता है।

''पुंसवन का आभिप्राय सामान्यत: उस धर्म से था। जिसके अनुष्ठान से पु–पुमान (पुरूष) सन्तति का जन्म हो। इस अवसर पर ऋचाओं में पुमान अथवा पुत्र को उल्लेख किया गया है। तथा वे पुत्र जन्म का अनुमोदन करती है।''[6]

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

अवधी और भोजपुरी दोनों ही बोलियों में सोहर गीतों के विषय लगभग समान ही है- पुत्र की कामना, बन्ध्या स्त्री की देवी देवता से मन्नत, व्रत-उपवास, पति के अनुचित सम्बन्ध, ससुराल में लड़ाई-झगड़े, ननद का बधाई लाना, छटी पूजना, छटूलना लाना, नेग माँगना, पुत्र जन्म के बाद सास-ससुर, ननद सबको नेग देना।

सर्वप्रथम देवी के गीत गाये जाते हैं ताकि देवी के आषीर्वाद से सभी कार्य निर्विध्न सम्पन्न हो जायें।

''छोटिनी बहिनि सितल रानी गोडवा घुंघर सोहे हो।
माता ठाडी जमुनवा के तीर त गोडिया पुकोरे हो।
अरे-अरे गोडिया बेटोना नवरिया लइकै आवहु हो।
मोरी लसकरि पार उतारौ मैं देसवा देखन जाबौ हो।
का तुहूँ देसवा देखन जाबू देसवा भिआवन हो।
माता घर-घर हनिगै केवरिया त लोगवा दुखित भए हो।
जातै केवरिया खुलउबै दियना बरउबै हो।
गोडिया गरबी के गरब नेवरबै दुखवा नेवजबै हो।।''

पुत्र-प्राप्ति की कामना स्त्रियों में प्रबल होती है। सोहर गीतों में बन्ध्या स्त्री की भावनओं का कारूणिक और मनोवैज्ञानिक चित्रण मिलता है। एक अवधी गीत देखिए-

सन्तान के बिना घर सूना है, स्त्री दासी से उसका बालक थोड़ी देर के लिए माँगती है, दासी कहती है तेल नमक तो उधार मिल सकता है, लेकिन गोद का बालक नहीं। रानी लकड़ी का पुतला बनाकर उसे तेल-काजल कर उलटती-पलटती है ताकि वह रोये और उसकी आवाज सुनकर घर में सोहर हो।

''राजा के दुअरे एक चेरिया, चेरिया बालक लिए हो।
चेरिया अपन बालक हमैं देहु मैं जिय समझावहुँ हो।
नोनवा तो मिलइ उधरवा अउर रानी तेलवा हो।
रानी कोखियॉ के कवन उधार चहत नाही पावै हो।
तेलवॉ लगावैं बुकवना नयन भरि काजर हो।
रानी उलटि-पुलटि पुतरी चुमै पुतरिया नाहीं विहंसे हो।
अरे-अरे काठ के पुतरिया तू रोइ सुनौतिव हो।
पुतरी सुनते नगर कर लोग बझिन घर सोहर हो।''[5]

निसंतान स्त्री इतनी दु:खी हो जाती है कि गंगा में डूब जाना चाहती है। पुत्र का वरदान देने पर वह पियरी चढ़ना चाहती है।

'गंगा गहवरि पियरी चढ़उबै होरिल जब होहि हैं हो।' पुत्र जन्म के बाद ननद बधावा लाती है, सोहर गाती है और नेग में हार माँगती है। न देने पर वह रोती हुई चली जाती हैं। भोजपुरी गीत देखिए:-

'' ए भउजी हमरा के देबू दान हरसि घरवा जाइब हो।
माँगहु ए ननदी मांगहु मांगी के सुनावह हो।
ननदी जो कुछ तोरा हिरदा समाऊ से होरे कछु मांगहु हो।
भउजी बाबा के दीहल हरवा से हो हम मांगीले हो।
देवौ मैं ए ननदी दे बौं नाक कै नथियवा झुलनी संगै हो।
ननदी एक मैं ना दैवो आपन हार-हार हमरा बाबा के हो।
रोवत जाले ननदिया बिलखात भयनवा हो।
आगा जाला भइया सत पाछे से भतीजवा हो।
उड़िये चढल सीता जाली ननद के मनावन हो।
भले कइलु ए भउजी भले कइलु भले चलि अइलू नु हो।
दरसन आपन देखबलु हमार मन राखेल हो।''

ननद अपनी भाभी से गुलवदना (गले का हार) माँगती है, ऐसा गीत अवधी में भी मिलता है।

''लेबइ तोहार गुलवदना भउजी।
गइया न लेबइ भंइसिया न लेबइ।
लेंबइ अगिल हर बरदा हे भउजी।''

सरिया गीत पुत्र के जन्म छठी, पसनी, मुण्डन तथा छेदन हर अवसर पर गाये जाते हैं। ये विनोदपूर्ण होते है, जिन्हे सुनने में आनंद मिलता है।

''एक ओरी खेलै कवन रामा रनिया कवन रानी।
कौने सजन की बिटिया जितेऊँ जितेऊँ करै हो।
जितेऊँ मैं ढल सरवरिया, कमर कटरिया।
साहेब जितेऊँ मैं लहुरि ननदिया त अपनैं बिरन कहैं।''

स्त्री कहती है पासे के खेल में मैने ढाल, तलवार और कमर की कटारी को जीत लिया है, अपने भाई के लिए छोटी ननद को भी जीत लिया है। सरिया के ऐसे विनोदपूर्ण संवाद से घर, परिवार पास-पडोस सभी दूर प्रसन्नता की लहर फैल जाती है।

''सासु जे आवैली गवइत, ननद बजवइत रे।
ललना गोतिनि आवैली, बिसाधल गोतिन के घर सोहर, हो।
सासु लुटावेंली रूपया स ननदी हरियोर।
सासु के दिहिल चुनरिया त ननदि पियरिया हू रे।''

पुत्र के जन्म लेने पर सास-ननद गाते बजाते आती हैं, रूपये। मोहरें लुटाती हैं। वह भी उन्हें चुनरी और पियरी देकर अपना फर्ज पूरा करती है।

लोकगीतों में गर्भवती स्त्री की भी भावनाओ का सुन्दर मनोवैज्ञानिक रूप दिखाई देता है।

''कब मोरे लाल के जनमवा होइहै,।
कब मोरे लाल कलेवना मांगी है।
कब मोरे लाल के बियहवा होई हैं।
अहो लाल घर आंगन भरि है।''

अपने पुत्र-जन्म का लेकर स्त्री सोचती है कब जन्म होगा, कब बालक कलेवा मांगेगा, कब विवाह योग्य होगा, और मेरा आंगन भरेगा। बालक के जन्म लेने पर परिवार में आंनद छा जाता है। ननद नेग के रूप में कंगन मांगती है और भाभी भी खुशी के साथ कंगन देती है।

''भाभी जो तोहरे होरिला जनमि है कंगना हम लेबै हो।
यहु वचन फुरी है ननद गोसाईन।
ननदी कंगना कै जोट पछेलिया बेसरि पहिरउबै हो।
होत बिहान पह फाटत होरिला जनम लिये हो।''

पुत्र जन्म में दाई की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है वह नाल कटाई का भरपूर नेग लेती है।

'' सोने के हंसियवा नरवा छीनो परतिया नहवावो हो।
धगरिन रूपवा के सुपवा ओलारो मोतिन केर आखत हो।''

बालक का जन्म होता है तो नाई रोचना लेकर मामा के घर जाता है। सोहर में ऐसे रोचना के गीत भी गाए जाते है वन मे पुत्र जन्म के बाद सीता अयोध्या में राजा दशरथ कौशल्या और लक्ष्मण सबको रोचना भेजती है, किन्तु राम को नहीं पहुँचाती क्योंकि उन्होने उसे घर से निकाल दिया था।

''जो पूत होतेव आजोधिया में राजा दशरथ घर हो।
राजा दशरथ पटना लुटवेत कउसिल्या रानी अभरन हो।

अरे-अरे नग्र के नउवा बेगेह चले आवौ हो।
नउवा रगि रगि पिसउ हरदिया रोचना पहुँचावौ हो।
पहिला रोचन राजा दशरथ दुसर कौशिल्या रानी हो।
राम तीसरा रोचन लक्षिमन देवरा रमैया न जनाएव हो।''

इस गीत में सीता के मन की पीड़ा और दर्द छलकता हुआ दिखाई देता है। पुत्र की मंगल कामना के लिए कुलदेवी कुलदेवता की पूजा परिवार के बड़े बुजुर्ग करते है बालक के माता-पिता उन्हें प्रसन्नतापूर्वक नेग देते है।

''सोने के टिकुली बनवाय दय सलोने राजा।
सासूजी आइ देवता मनाई।
देवता मनौनी पियरी दे द्या सलोने राजा।''

बालक की माँ को सौंठ, अजवाइन, गुड, जीरा आदि। खिलाया जाता है जो उसके अच्छे स्वास्थ और बच्चे के दूध के लिए होता है यह कार्य जेठानी करती है उसे नेग में हार दिया जाता है।

''जेठानी जी आई पिपरी पिसाई।
पिपरी के पिसौनी तिलरी दै द्या सलौने राजा।''

जन्म के छठेदिन छठी माता की पूजा की जाती है। इसी दिन बच्चे की बुआ सतिया बनती है। इस नेग को लेकर मीठी तकरार के गीत भी मिलते है।

''ननदी जी आई कजरा लगाई।
कजरा के लगौनी कंगना दै द्या सलौने राजा।''

माँ और बच्चे को लेकर पूरे परिवार में उत्साह और आनंद छाया रहता है। सभी उनकी मंगल कामना करते है। लोकगीतो में पुत्र के जन्मोत्सव के गीत मिलते हैं।

मुण्डन:- जन्म के पहले, तीसरे या पाँचवे वर्ष में बच्चो का मुण्डन किया जाता है। मुण्डन किसी देवी-देवता के मंदिर में किया जाता है। मुण्डन के समय बुआ बालों को एक बडी आटे की लोई में या आँचल में लेती है, उन्हे नीचे नहीं गिरने देती है फिर बालो को लोई में लपेटकर नदी में प्रवाहित किया जाता है इस समय भी सोहर गाये जाते हैं। साथ ही सर्वप्रथम देवी के गीत गाये जाते है। यह माना जाता है कि देवी शक्ति की प्रतीक है और वे बच्चे की समस्त आसुरी शक्तियों से रक्षा करेगीं। साथ ही अन्य देवी-देवता के गीत, बधाई भी गाई जाती है। मुण्डन के गीतो में इस संस्कार पर किये जाने वाले क्रिया-कलापो का वर्णन मिलता है।

''मोतियन चौक पुराए न लालजी केर मुंडना
चंदन पटुली-डराएन लालजी केर मुंडना
चौक ललन बैठाइन लालजी केर मुंडना
दादी उनकी लटुरी मुंडावै
बाबा उनके खर्चे दाम लालजी केर मुंडना।''[8]

कनछेदन:- मुंडन के बाद, बच्चे का कनछेदन संस्कार किया जाता है। इसके गीतो में उन सभी रस्मो का वर्णन होता है जो छेदन के अवसर पर की जाती है। अधिकतर मुंडन के गीतो को ही छेदन में बदलकर गाया जाता है। इसमें भी परिवार रिश्तेदार और गाँव के लोग शामिल होते है।

अवधी का कनछेदन के समय का गीत जिसे सुजिया भी कहते हैं

''को मोरे सुजिया गठावै तो मोतिया पुरावै।
धरै सोनरवा के हाथ छेदावे गभुआरे।
आजी उनकै जंध बैठारै तौ छेदनु करावैं।
सोने के टंकवा उतारै तौ मैया तुम्हारी।
धरै सोनरवा के हाथ छेदावै गभुआरे।''[9]

बालक के कान छिदाने का कहने पर उसके दादा, ताऊ, चाचा कहते है सोने की बाली बनवाने के बाद छेदन करेगें।

''बाबा हमरौ जग निचकान करौ कन छेदन हो।
बेटा सोने की बाली बनवइवै करब तोहरा छेदन हो।
बेटा बड़े-बड़े लड्डू बनवइबै करब तोहरा छेदन हो।
बेटा द्धारे हलवाई बइठइबै करब तोहरा छेदन हो।''[10]

अन्नप्राशन:- अन्नप्राशन संस्कार को अवध क्षेत्र में 'पसनी' कहा जाता है। जब बच्चे को पहली बार अन्न खिलाया जाता है तब सोहर गीत ही गाए जाते, हैं क्योकि अन्नप्राशन के गीत अलग से बहुत कम मिलते है। एक गीत ऐसा गाया जाता है।

''आजु मोरे लीपन पोतन औ अन्नप्राशन हो।
सासु अरगन नेवतेव परगन नैहर सासुर औ।
अजियाउर औ ननियाउर हो।
सासू एक नाहीं आए बिरन भैया कैसे जियरा बाँधौं हो।
सासू छतिया जे मोरी घहरानी मैं केहिं उठि भैटो हो।
दुआरे घोडा हिंहियाने पथर घहराने हो।
बहुआ मिलि लेहु भइया बैदने सा सोहर अब सुनौ सगुन पर बैठो हो।''[11]

अन्नप्राशन संस्कार में अनेक मन्त्रो से अन्न की पूजा की जाती है। शिशु को छः माह पश्चात् पचनेवाला आहार दिया जाता है। इस संस्कार से उसे अन्न खिलाने की शरूआत होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका-डॉ. रामजी उपाध्याय-प्र.- 105,105
2. वही
3. अवधी लोकगीत- कृष्णदेव उपाध्याय- प्र. 05
4. भोजपुरी ग्रामगीत- कृष्णदेव उपाध्याय- पृ. 430
5. भोजपुरी लोगीतों में करूण इस- दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह- पृ. 39
6. अवधी का लोक साहित्य-सरोजनी रोहतगी- पृ. 152
7. सम्बन्धियों के माथे पर लगाये जानेवाले हल्दी चदंन के तिलक को रोचना कहते है।
8. ग्राम साहित्य-भाग- 1,2,3- सम्पादक-रामनरेश त्रिपाठी
9. वही
10. वही
11. वही

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

The Impact of Consumer Digital Literacy on Digital Banking (with Special Refrence to Bilaspur District)

Swati Pandey* Dr. Premshankar Dwivedi**

* Research scholar, Dr. C.V. Raman University Kota, Bilaspur (C.G.) INDIA
** Supervisor, Dr. C.V. Raman University Kota, Bilaspur (C.G.) INDIA

Abstract - This research study has been undertaken for the purpose of exploring the current state of affairs of electronic banking service usage among semi urban consumers. The familiarity and adoptability of technology by a common semi urban consumer was explored during this research work. The purpose was to understand the semi urban customers' perception, intention and usage of electronic banking services and those factors that may impact their consumer behavior towards usage of these e-banking services.
Key word- Consumer Digital Literacy, Digital Banking, electronic banking services and e-banking services.

Introduction - In a bid to accomplish the stated objectives, the research study was undertaken through two different approaches. The first approach used was exploratory in nature, wherein, to understand about the related phenomenon the important stake holders were met with and relevant information was sought from them. For example, in order to comprehend the overview of present state of affairs among semi urban consumers towards use of electronic banking services, the Lead Bank Managers (LDM) of the concerned districts were met, who further facilitated the meeting with coordinators of Financial Literacy and Credit Counseling Centers (FLCCs). The FLCC coordinators discussed about the research objectives and gave lot of relevant information/ expert advice on the subject matter and also on how to proceed further in order to obtain relevant and valid responses from the local population. They also facilitated the services of local Banking Correspondents (BC) for collection of responses of people.

These meetings with the above mentioned stake holders gave great insights into the subject matter related to our research objectives. After having executed the exploratory approach to gain the useful insights, the research study entered into the descriptive approach, wherein the study was carried out by obtaining responses of electronic banking customers in Bilaspur district of Chhattisgarh. Within this district, the respondents in semi urban areas were approached with the help of Business correspondents of lead public sector banks in those areas and their responses were taken on a well structured questionnaire. The questionnaire was developed after a careful and thorough literature review in the related area.

The literature review was initially conducted to provide a sound theoretical background to the research study. Since the research work was primarily concerned with the psychological/ behavioral aspects of consumer behavior, various theories were studied. For the studies involving consumer behavior towards usage of new technology the Technology acceptance Model (TAM), which has been in application among contemporary researchers for studying and analyzing consumer acceptance of new and emerging technologies, was found suitable to adapt for the current research work. The TAM model was studied along with its varied applications in different research works. After having collected information on different factors that were considered by different researchers in present times, to be used with the TAM model, the suitable ones were picked up for use while designing the questionnaire in the current research work, after proper consultations with the relevant stake holders.

In order to ensure the quality of communication the original questionnaire was translated into Hindi language, so that the respondents could read and understand the questions and statements properly and correctly. Also in order to remove any possible error in responses, the questionnaire were filled up by the Banking correspondents themselves during a one to one interaction with the respondents. This way the responses of total 100 respondents were taken, which were subjected to the statistical analysis with the help of suitable statistical tools. The analysis of responses was categorized into following sections:

1. Descriptive analysis of the target respondents with respect to their demographic background.
2. Examination of adoption of e-banking channels and

usage of e-banking services by consumers.

3. Analysis on statistical differences among demographic variables with respect to the proposed factors influencing respondents' behavior towards usage of electronic banking services.

4. Hypotheses testing for determining the role of factors in influencing the respondents' behavior towards usage of electronic banking services.

5. Development of model showing impact of different factors on usage behavior of consumers towards e-banking services.

The Descriptive analysis provided with the information about the respondents in terms of their gender, age, education, income, occupation and e-banking usage experience. Further, the statistical significant differences were examined among the respondents with respect to the behavioral factors that influence their use of electronic banking services. The results showed that there is a strong need to work towards increasing the use of electronic banking services especially among the females. Since females have perceived trust towards these services, enhancing the comfort experience will certainly boost the actual usage of electronic banking services among the female consumers. Further, during the age group based analysis, it was found that that people who are in their elderly ages do have more psychological barriers in their mind towards use of electronic banking services.

The Educational background based analysis revealed that the perceived usefulness towards electronic banking services prompted the consumers to use these services, irrespective of their educational background. However, people with higher educational background found e-banking services more favorable to them in comparison with people from lower educational background. The outcome of occupational analysis suggested the need to provide special focus on people in farming occupation, while devising the policies and promotional campaigns for encouraging use of electronic banking services. Finally usage experience based analysis suggested that the duration of experience of e-banking service usage plays a positive role in determining the actual current usage as well as future intention to use these services. The results implied that if consumers could carry on using the new technology based services for longer duration of time, most of the psychological barriers will fade away in the due course of time.

The results of hypotheses testing helped in devising a model suitable for semi urban set up in Bilaspur district in the state of Chhattisgarh towards adaptation of electronic banking services by the residents. Out of seventeen hypotheses, which were initially proposed, only thirteen hypotheses could be proved to be correct based on the responses obtained from the e-banking customers. The revised model explaining consumer behavior towards usage of electronic banking services suggested that different underlying factors considered for the study do impact the actual usage of e-banking by the consumers, directly or indirectly. However, some of the factors did not exert their influence, unlike proposed earlier, during the process of adaptation to the new technology, like the personal innovativeness characteristic, attachment motivation and perceived risk were those factors that did not influence the perceived usefulness of consumers. Also the social influence did not directly impact the intention of consumers to use the electronic banking services in future, though it worked indirectly through affecting the perceived usefulness of consumers.

Conclusion- The revised model explaining consumer behavior towards usage of electronic banking services may also be called as electronic banking adoption model, dedicated to semi urban consumers of Bilaspur district in Chhattisgarh. This model suggests that the Technology Acceptance Model (TAM), which has been widely adopted by the research fraternity in the area of new technology acceptance by consumers, also holds true in the semi urban set-up of Bilaspur district in Chhattisgarh, with some suitable variations added into it.

Lastly, the role of banking institutions into spreading financial and digital literacy was discussed. It was found that the public sector lead bank institutions are working towards improving financial and digital literacy in the semi urban areas under their districts, through their FLCCs, which further needs to be intensified by taking on board the branch level employees and Business Correspondents in collaborated manner.

References :-

1. Iyengar, J. & Belvalkar, M. (2010), the online banking usage pattern among Indian consumers.
2. Dasgupta et al. (2011), use of extended TAM model.
3. Jain & Tiwari (2011), the prevailing scenario on internet banking in India.
4. Sharma (2011), consumer adoption of electronic payment services.
5. Aboelmaged and Gebba (2013), the adoption of mobile banking with the help of TAM and TPB models.
6. Malik and Gulati (2013), the perception of banks and customers towards adoption of technology.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

एनएसएस अमृत महोत्सव जुलाई -2021 के उपलक्ष्य में अंग्रेजी से उर्दू में अनूदित 'स्व. श्री जॉन कीट्स' की रचना 'ऑड टू ऑटम'

डॉ. सेहबा जाफरी *

* सेज यूनिवर्सिटी, भोपाल (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना - पतझर की हवा के नाम

ऐ पतझरी हवा! , ऐ सूरज की सहेली !
ओ धुंध में पली , पके फलों की थैली
बन में नुमायाँ है तू कुछ ऐसे कि चार सूँ
पत्तों में तुम, फूलों में तुम , बूटो में ख़ूबरू
छप्पर पे दौड़ती हुई मौसम की सब्ज बेल
पके हुए ये सेब तेरी साजिशों के खेल
ये मैदान ये मेवे , यूं मेहरानो मेहरबाँ
ये शहद के धारों के लिए, फूलों के होंठ वां
कायम रहें ये हिद्दतें, कहे मधुमक्खियों की अठखेली
ऐ पतझरी हवा! , ऐ सूरज की सहेली ....

(2)

किसने नहीं देखा तेरा जलवा खलिहानों में ?
गल्ले की बरकतों में , खुशबूओं में, बागानों में!
बलखाती तेरी जुल्फें , अलमस्त जवानी ये
महुआ से बहकते झौंके, अधलिखी कहानी ये
हँसिए सी हंसी से मिटकर , अधकतरी रियाजों में
बेवरवाह सी बैठी तुम ! फूलों की बयाजों में
अलमस्त उनींदे से दहकानो में , किरणों में
शरे शीरीं के झागों में , कल कल से झरनो में
हर सिम्त है तू छाई , ऐ रास रसीली !
ऐ पतझरी हवा! , ऐ सूरज की सहेली ....

(3)

कित सूं हैं नजारा ए रंगीं और नगमे बहारां ?
ठहरे हुए बादल वो , वो मौसम का इशारा !
है तुझको कहाँ फुर्सत ! तू उनकी भला सुध ले !
तेरे अपने तराने हैं , आलाप जो तू खुद ले !
वादी में ढलते झरने और शाम की लाली में
गुनगुन में पतिंगों की, सरकंडों की खुशहाली में
मेमनो की संगत कर तू चिड़ियों संग गाती है
गौरैया की तानों संग तू दफ भी बजाती है
झींगुर की बजी झांझर, तू रक्स की रुत खेली
ऐ पतझरी हवा! , ऐ सूरज की सहेली ....

मेहरान -प्रेम भरे , वां -खुले , हिद्दत- ऊष्मा, रेयाज -क्यारी , बयाज -बही, दहकान -किसान, शीरीं -मीठा , सिम्त-तरफ

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Laws Relating to Crime Against Women

Dr. Sarita Dehariya Mehra*

***Assistant Professor, Motilal Nehru Law College, Khandwa (M.P.) INDIA**

Abstract - "To call woman the weaker sex is a libel. It is man's injustice to woman if by strength is meant brute strength then indeed is women less brute then man. if by strength is meant moral power than woman is immeasurably man's superior. has she not more self-sacrificing. has she not greater powers of endurance has she not greater courage? without her man could not be. If non violence is the law of our being the future is with woman. Who can make a more effective appeal to the heart than women?"

Introduction - Crime Against Women is worldwide epidemic. It may take different forms depending on history culture. background, and experiences but it causes great suffering for women, their families and communities in which they live. It is often imbedded in concepts of Gender and the roles of men and women that are considered the "norm" in given culture at a given time and it is manifested in efforts to exert power and control over women's bodies and lives.

Crime against woman is one of the most regular and prevalent Human Rights violations. It is rooted in gendered social structures rather than individual and random acts. it cuts across age socioeconomic educational and Geographic boundaries affects all societies and is a major of obstacle to ending gender in equality and discrimination globally. the United nations defines crimes against women as "any act of gender-based violence that results in ,or is likely to results in, physical sexual or physic logical harm or suffering to women including threats of such acts "coercion or arbitrary deprivation of liberty, whether occurring in public or in private life".

Objectives of the study :-

1. To know and analyses the present crime trend rapidly increasing against women in India.
2. To explore the main course in increasing the crimes against women in India.
3. To understand the existing law in India pertaining to combat such crimes.
4. To know where the government machinery is failed to control the same.

Meaning of crime against women- The meaning of crime is defined as direct or indirect physical or mental cruelty to women. Crime which are specifically "directed against women" and in which the "women s are victims" are termed as crime against women. Crimes against women are of various types as crimes involving sex for economic gains including prostitution, keeping of brothel seduction, wrongful confinement, trafficking, dowry extortion murder, crimes relating to women's property which includes dishonest misappropriation, criminal breath of trust, extortion, robbery and murder, crimes in relation to sex including outraging the modes of women, use of criminal force, assault, kidnapping, abduction wrongful confinement, rape ,trafficking, adultery, murder, other immoral acts injurious to the society and other injurious acts against women.

Crimes under the Indian penal code :

- **Rape(sec.376 Ipc):-** Rape is the fastest growing crime in India compared to murder, robbery and kidnapping. According to the report of National Crime Records Bureau (NCRB), every 60 minutes, two women are raped in this country. There are several kind of rape, a) Custodial rape- This kind rape was made more punishable than rape committed by other person not having any custody of woman. b) Rape on a pregnant woman - Rape on a pregnant woman is heinous kind of rape. Where rape committed by a man. On a pregnant woman of any age, it is serious in nature, so it is put in several category of rape. c) Rape on a girl under twelve years - Rape of a girl under twelve years is a heinous kind of rape and is against the whole society. It should not occur in the defeat of humanitarian. It is duty of every member of society to stop such kind of abuse. d) Gang rape - Gang rape is also heinous kind of rape. Where a women is raped by one or more in a group of persons acting in furtherance of their common intention, each of the persons shall be deemed to have committed gang rape. e) Rape by husband - Sexual intercourse by a man with his wife, is not rape, if the wife is above 15 years age. Where the wife is below 15 years but above the age of 12 years, and sexual intercourse is made by her husband it amounts to rape.

● **Kidnapping and abduction(sec.363-373 Ipc):-** According to UN, ¯the illicit and clandestine movements of persons across national borders, largely from developing countries and some countries with economically in transition, with the end goal of forcing women and girl children into sexually or economically oppressive and exploited situation for profit of recruiters ,traffickers and crime syndicates, as well as other legal activity related to trafficking such as forced domestic labour, false marriage clandestine employment and false adoption.

● **Dowry Death:-(sec.304B Ipc):-**Dowry remains the major reason for discrimination and injustice towards women in India. When dowry demands are not met, it precipitates into serious consequence for the young bride. The Dowry Prohibition Act of 1961 marks the first attempt by the Government of India to recognize dowry as a social evil and to curb its practice. However, it is ridiculous to see that even among highly educated sections, the articles of dowry are proudly exhibited in the marriage as a status symbol. The dowry abuse is increasing in India. Dowry is one of those social evils that no educated woman will own up with pride, still many are adhering to it.

● **Cruelty to women(sec.498-A Ipc):-** was introduced in the year 1983 to protect married women from being subjected to cruelty by the husband or his relatives. A punishment extending to 3 years and fine has been prescribed. The expression "cruelty" has been defined in wide terms so as to include inflicting physical or mental harm to the body or health of the woman and indulging in acts of harassment with a view to coerce her or her relations to meet any unlawful demand for any property or valuable security. Harassment for dowry falls within the sweep of latter limb of the section. Creating a situation driving the woman to commit suicide is also one of the ingredients of "cruelty".

● **Molestation(sec.354 Ipc):-** Molestation is a form of a sexual crime and is considered as one of the serious issues. This term has nowhere been defined in the Indian Law. As defined literally, it means that there is a sexual force upon somebody without any consent. This victim can be a child, an adult, irrespective of an age. It can include- forcefully having a sexual contact, showing pornography to any person without any comments, passing sexual verbal comments or any such kind of a behavior where there is no approval or consent[1]. It has a very wide meaning and cannot be given a comprehensive definition. Though the Indian Law does not define 'molestation' but it still has provisions to protect a women's dignity. Sections 294, 354, 355 and 509 of Indian Penal Code, 1860 provide for outraging someone's modesty.

● **Sexual Harassment(sec.509 Ipc):-** According to UN - Sexual harassment is any behavior of a sexual nature that is unwelcome, offensive, or embarrassing to the individuals exposed to the behavior, or that creates a hostile or intimidating work environment. Sexual harassment includes sexual assault, unsolicited requests for sexual favors, requests for sexual favors linked to implied threats or promises about career prospects, unwanted physical contact, visual displays of degrading sexual images, sexually suggestive conduct, or offensive remarks of a sexual nature. Sexual harassment may occur between persons of opposite sexes or of the same sex. While typically it involves a pattern of behavior, it can take the form of a single incident; and it may be directed toward a group or toward a particular person.

● **Important of girls (sec.366-B Ipc):-** Whoever imports into India from any country outside India or from the state of Jammu and Kashmir any girl under the age of twenty one years with intent date she may be, knowing it to be likely that she will be , forced or seduced to illicit intercourse with another person, shall be punishable with imprisonment which may extend to ten years, and shall also be liable to fine.

Related case:-

1. **Nirbhaya gang rape :-** On 16 December 2012, a 23-year-old medical student was brutally gang-raped and assaulted by six men in a moving bus in Delhi. The incident resulted in a massive outrage among citizens followed by several protests across the country. Four of the accused were convicted. While one other accused was found hanging inside his prison cell, the last juvenile accused is currently behind bars.
2. **Shakti mills case :-** A photojournalist in Mumbai was gang-raped by five men at Shakti Mills Compound on August 22, 2013. She was accompanied by a male colleague. Two of the accused were juveniles who were convicted and have been sent to reformation house. The other three were convicted.
3. **Badaun sisters rape and death :-** Two Dalit girls, who were cousins aged 14 and 15, went missing on May 27 last year and were found hanging from a mango tree the next day in Badaun village in Uttar Pradesh. The victims were allegedly raped. Five of the accused were arrested by the police which included a police constable.
4. **Pachauri molestation case :-** The director of The Energy and Resources Institute (TERI) was accused of sexual harassment in 2015 by a 27-year-old woman who had worked with him at TERI. The complainant, who is still an employee of TERI, recounted the alleged harassment she faced in the two years she worked at the organisation. In the wake of her statement, a former colleague has now alleged that he sexually harassed her when she worked with him ten years ago.
5. **Tarun Tejpal molestation issue :-** The former editor of Tehelka was accused of sexual harassment by a colleague in late 2013.The well-known editor and sting journalism specialist was also been accused of evading the police after allegedly committing the crime. The 2,846-page charge-sheet filed in February 2014 charged Tejpal with rape, sexual harassment and outraging the modesty of his female colleague on two consecutive days in the elevator of a five-star hotel in North Goa.

6. Suryanelli :- A 16-year-old girl, who went missing from her school hostel in Munnar in January 1996, was taken to various places in Kerala and Tamil Nadu by the convicts. She was travelling about 3000 km during a 40-day ordeal when she was raped by over 40 persons,including then Union Minister P. J. Kurien. In April 2014, the 24 accused, who had been acquitted earlier, were held guilty of gang rape by Kerala high court.

7. Guwahati molestation incident :- A teenage girl was stripped and molested by a gang in full public view in Guwahati in 2012.The incident occurred in front of a bar at Christian Basti on the Guwahati-Shillong Road.A video of the assault taken by a TV channel and uploaded on YouTube sparked a nationwide outcry. 16 men were identified as accused with the help of the video.

8. Uber rape case :- A 27-year-old woman was allegedly raped by the driver of the Uber cab she had hired to go back to her home in Northwest Delhi's Inderlok. The woman, who works in a finance company in Gurgaon, was returning home after having dinner with her friends. Following this, Delhi government banned Uber taxis in the state.

9. Rohtak gang rape case :- A mentally-challenged Nepalese woman was gang-raped in Rohtak, Haryana in February this year. Eight men have confessed to the brutal crime while the ninth is still at large.

10. Park street gang rape :- A 37-year old woman was raped at gunpoint in a car early on February 6, 2012, by five young men who picked her up from Park Street in Kolkata. The police, in its charge sheet, named five men, of which three are behind bars. Two others, including the prime accused, are yet to be arrested.

Constitutional provision for women are as under:

1. Equality before law for women (Article 14)
2. The State not to discriminate against any citizen on grounds only of religion, race, caste, sex, place of birth or any of them (Article 15 (i))
3. The State to make any special provision in favour of women and children (Article 15 (3))
4. The State to direct its policy towards securing for men and women equally the right to an adequate means of livelihood (Article 39(a)); and equal pay for equal work for both men and women (Article 39(d))
5. To promote justice, on a basis of equal opportunity and to provide free legal aid by suitable legislation or scheme or in any other way to ensure that opportunities for securing justice are not denied to any citizen by reason of economic or other disabilities (Article 39 A)
6. The State to make provision for securing just and humane conditions of work and for maternity relief (Article 42)
7. The State to promote with special care the educational and economic interests of the weaker sections of the people and to protect them from social injustice and all forms of exploitation (Article 46)
8. The State to raise the level of nutrition and the standard of living of its people (Article 47)
9. To promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India and to renounce practices derogatory to the dignity of women (Article 51(A)(e))
10. Not less than one-third (including the number of seats reserved for women belonging to the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes) of the total number of seats to be filled by direct election in every Panchayat to be reserved for women and such seats to be allotted by rotation to different constituencies in a Panchayat (Article 243D(3))
11. Not less than one- third of the total number of offices of Chairpersons in the Panchayats at each level to be reserved for women (Article 243 D (4))
12. Not less than one-third (including the number of seats reserved for women belonging to the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes) of the total number of seats to be filled by direct election in every Municipality to be reserved for women and such seats to be allotted by rotation to different constituencies in a Municipality(Article 243 T (3))
13. Reservation of offices of Chairpersons in Municipalities for the Scheduled Castes, the Scheduled Tribes and women in such manner as the legislature of a State may by law provide (Article 243 T (4)

Provisions in other legislations :

- **Factories act 1948 :-** under this Act, a woman cannot be forced to work beyond 8 hours and prohibits employment of women except between 6 A.M. and 7 P.M.
- **Maternity benefic act 1961 :-** A Woman is entitled 12 weeks maternity leave with full wages.
- **The dowry prohibition act 1961 :-** Under the provisions of this Act demand of dowry either before marriage, during marriage and or after the marriage is an offence.
- **The equal remuneration act of 1976 :-** This act provides equal wages for equal work: It provides for the payment of equal wages to both men and women workers for the same work or work of similar nature. It also prohibits discrimination against women in the matter of recruitment.
- **The child marriage restrain act of 1976 :-** This act raises the age for marriage of a girl to 18 years from 15 years and that of a boy to 21 years.
- **Pre - natal diagnostic techniques act , 1994 :-**
- **Indian penal code ,1860 :-** Section 354 and 509 safeguards the interests of women.
- **The medical termination of pregnancy act 1971:-** The Act safeguards women from unnecessary and compulsory abortions.
- **The Criminal law (Amendment) ,act 2013 :-** (Nirbhaya Act) Is an Indian legislation passed by the Lok Sabha on 19 March 2013, and by the Rajya Sabha on 21 March 2013, which provides for amendment of Indian Penal

Code, Indian Evidence Act, and Code of Criminal Procedure, 1973 on laws related to sexual offences.

- **73rd and 74th constitutional amendment act :-** reserved 1/3rd seats in Panchayat and Urban Local Bodies for women.
- **The national commission for women act 1990 :-** The Commission was set up in January, 1992 to review the Constitutional and legal safeguards for women.
- **The protection of human rights act,1993 :-**
- **Protection of women from domestic violence act, 2005 :-** This Act protects women from any act/conduct / omission/commission that harms, injures or potential to harm is to be considered as domestic violence. It protects the women from physical, sexual,emotional, verbal, psychological, economic abuse and also marital rape.
- **Protection of women against sexual harassment at workplace bill, 2010 :-** on November 4, 2010, the Government introduced protection of Women against Sexual Harassment at Workplace Bill, 2010, which aims at protecting the women at workplace not only to women employee but also to female clients, customer, students,research scholars in colleges and universities and patients in hospitals. The Bill was passed in Lok Sabha on 3.9.2012.
- **Saxual Harassment of Women at Workplace (Prevention , Prohibition and Redressal) act ,2013 :-** Is a legislative act in India that seeks to protect women from sexual harassment at their place of work. It was passed by the Lok Sabha (the lower house of the Indian Parliament) on 3 September 2012.
- **Section 376 A :-** if a person committing the offence of sexual assault, "inflicts an injury which causes the death of the person or causes the person to be in a persistent vegetative state, shall be punished with rigorous imprisonment for a term which shall not be less than twenty years, but which may extend to imprisonment for life, which shall mean the remainder of that person s natural life, or with death.

The crimes identified under the special laws(SLL) :- Although all laws are not gender specific, the provisions of law affecting women significantly have been reviewed periodically and amendments carried out to keep pace with emerging requirements. Acts which have special provisions to safeguard women and their interests are ;

1. The Employees State Insurance Act, 1948
2. The Plantation Labour Act, 1951
3. The Family Courts Act, 1954
4. The Special Marriage Act, 1954
5. The Hindu Marriage Act, 1955
6. The Hindu Succession Act, 1956 with amendment in 2005
7. Immoral Traffic (Prevention) Act, 1956
8. The Maternity Benefit Act, 1961 (Amended in 1995)
9. Dowry Prohibition Act, 1961
10. The Medical Termination of Pregnancy Act, 1971
11. The Contract Labour (Regulation and Abolition) Act, 1976
12. The Equal Remuneration Act, 1976
13. The Prohibition of Child Marriage Act, 2006
14. The Factories (Amendment) Act, 1986
15. Indecent Representation of Women (Prohibition) Act, 1986
16. Commission of Sati (Prevention) Act, 1987
17. The Protection of Women from Domestic Violence Act, 2005

Conclusion - Violence against women in its various forms is a violation of human rights, the very nature of which deprives women of their ability to enjoy fundamental freedoms. It is a serious obstacle to equality between women and men. Violence against women remains hidden in the culture of silence. The causes and factors of violence against women include entrenched unequal power relations between men and women that foster violence and its acceptability, aggravated by cultural and social norms, economic dependency, poverty and alcohol consumption etc. In India, where the culprits are largely known to the victim, the social and economic "costs" of reporting such crimes are high. General economic dependence on their families and fear of social ostracization act as significant disincentives for a woman to report any kind of sexual violence or abuse. Therefore the actual incidence of violence against women in India is probably much higher than the data suggests and because of this most of the women s are experiencing violence and living its consequences.

There is need to break the silence and ensure that violence against women is not just a woman s issue but primarily a political, social, economic and cultural issue that concerns men as well. While men represent the majority of perpetrators of violence against women, they have an important role to play in preventing and combating violence against women. Because of their role models as fathers, husbands, brothers, and sons, men and young boys should be part of the solution and thus be involved in eliminating violence against women. If men felt involved, they should help promote changes in attitudes among other men. It is not women or men working alone to end gender-based violence that yields the best results. It is the partnership between them that has the greatest impact and reach.

"Violence against women continues to persist as one of the most heinous, systematic and prevalent human rights abuses in the world. It is a there at to all women, and an obstacle to all our efforts for development, peace, and gender equality in all societies. Violence against women is always a violation of human rights; it is always a crime; and it is always sun acceptable. Let us take this issue with the deadly seriousness that it deserves." **- Ban Ki moon, United Nations Secretary**

References :-

1. The dowry prohibition act 1961.

2. The Criminal law (Amendment) ,act 2013 .
3. Sexual Harassment of Women at Workplace (Prevention ,Prohibition and Redressal) act ,2013 .
4. Protection of women from domestic violence act, 2005.
5. Section 376A criminal law amendment act,2013.
6. Indecent Representation of Women (Prohibition) Act, 1986.
7. Indian penal code - surya narayan mishra, Ratan lal & Dhiraj lal, Dr.N.P Paranjape.
8. Hindu law - R.K Agrawal, Mulla, Dr.U.P.D Keshri.
9. Constitution - Dr.jai narayan pandey,P.M.Bhkshi,Durga Das Basu.
10. Women & criminal law - Dr.Basanti lal babel, farhat khan.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

The Theme of Childhood in the Literature of Ruskin Bond

Dr. Shailendra Kumar Chourasia*

***Asst. Professor (English) Bhagat Singh Govt P.G.College, Jaora, Distt. Ratlam (M.P.) INDIA**

Abstract - Ruskin Bond unlike other has developed a different path while writing for the children. His characters do have innocence alive. Cultural and social historians have a beneficial device with inside the document created with the aid of using youngster's books. The simple, obvious pix portrayed with the aid of using him for the younger are regularly an aware distillation of a youngsters psyche. They reveal the degree to which the society retained features of the childhood; they illustrate how the so called a developed supremacy myth infected the mainstream collective consciousness in of the society.
Key Words- Childhood, Supermacy, psyche.

Introduction - Children's literature as a genre has not received much attention from the academic world in India up till now. Ruskin Bond for the first did an attempt to look at the shape of writing for children from the twentieth century onwards, and to question the political and cultural context in which it takes place. It is difficult for children's literature to seperate from the history of childhood; for the child was created through texts and tales he or she studied, heard and told back. Bond's literature shows children finding worlds within the book and the society where he lives in the world.

Fables are very popular in India. In India the tradition of fables is very ancient. The beat examples are the fables of Panchtantra and Betal Pachisi. Bond's fables are slightly different from the traditional mode of narration. He seems closer to the spirit of Kipling's Mawgli, who lives in perfect harmony with nature and animals which is essential for their survival. Bond aims to spread love and understanding among all creatures of the world and children are the most active recipients of his vision. They are very quick in making friends. Small objects like a flower, a marble stone, a flute, a coin or some beads may serve to initiate their friendship. Bond brings a unique insider's perspective when describing the lives of simple rural or small-town people. Yet, his stories are also universal. Having lived through the colonial, postcolonial, and post- Independence phases of Indian life, and having traveled extensively in India, he is equally at ease with East and West, north Indian and south Indian, maharajahs and beggars, students and tongawallahs ("drivers of horse-drawn carriages"). He writes in the novella "*Delhi Is Not Far*":

"Ours is a land of many people, many races; their diversity gives it colour and character. For all Indians to be alike would be as dull as for all sexes to be the same, for all human beings to be normal" (421).

By getting afflicted with the writing for adults, Bond had turned to the writing for children. He was influenced with the short stories written by Rudyard Kipling and E. M. Forster. Writing children's stories also became a means by which Bond vicariously fulfilled his own needs and longings as a child, refashioning his unhappy and disrupted childhood into a secure and joyous time. He writes in *Scenes from a Writer's Life* that "I don't suppose I would have written so much about childhood or even about other children if my own childhood had been all happiness and light" (4). The introduction to "*The Night Train at Deoli"* also outlines Bond's approach to writing for children:

In writing for children one has to adopt a less subjective approach; things must happen, for boys and girls have no time for mood pieces. So this kind of writing does help me to get away from myself. At the same time, because I have so strong an empathy with children, I can enter into their minds when I am writing about them. As children we are all individualists; it is only as we grow older that we acquire a certain grey similarity to each other. (No page.)

Bond spent his early years of childhood in Jamnagar where he was more exposed to Indian culture than the average British child in India. He grew up around the little princes and princesses, but he was equally comfortable with his Indian cook, ayah, and gardener, unconcerned with the barriers of caste or social station. His favorite book was Lewis Carroll's *Alice's Adventures in Wonderland*, which gave him "a better appreciation of the absurdities of life" (Scenes 5).

Bond fictionalized his childhood experiences in the novella "*Once upon a Monsoon Time"* and the short story "*The Room of Many Colours*," which is actually the first half of the novella, covering the protagonist's life in Jamnagar. The story projects a romantic or charmed view of childhood in which the protagonist (whose mother has left) is brought up in the loving, nurturing arms of his father, ayah, and gardener. There is a timelessness to the atmosphere of the palace and large garden, and the most ordinary activity is like a magical adventure to the young child. Even climbing up the spiral staircase to the mad Rani's ("queen's") tower to present her the nosegay made by the gardener is like a heroic adventure. His father informs him that she is actually a princess who went mad because of her frustrated love for a commoner, whom she was not allowed to marry; the child wonders if it is the gardener, Dukhi.

Bond has had a room to appeal to childhood curiosity by extending the frame of reference, but they do not have the option of degrading a child's sense of self.

One of the traditional tasks of children's literature has been to produce its readers as good citizens, a closely linked task. Bond's children's literature is a narrative in which the central child character, expelled from an original home by decisions or behavior of powerful adults. Bond believes that the child and the adolescent are no longer locked into passive roles on the stage of past. This is perhaps why the meetings are often brief, accidental and unforeseen, although inevitable. Children need to be reflected in order to affirm their ownself and communication. They also need windows through which they can see a variety of differences. It is a social institution which reflects our society in general.

Culture and values operate on the every part and in the deep structures of our world. Intricately woven into the social landscapes in which we live, culture is all around us; a part of who we are and how we operate. It is outside on our society where we belong and inside ourselves. It is part of the way the world operates. It couldn't be closer to home or further away. Bond represents the close portrayal of Indian culture and its multi- coloured image. According to Bond, this portrayal means many things as it is important to specify how things are defined in our life. It is about the social processes or mechanisms composing lives. Like a psychologist, it sometimes comforts our inner love nerve and, on the other hand, captures the exciting effect of the spine. Scary Stories These stories deal with the very common pattern of stories from a grandmother in an Indian home that she tells to young children in their infancy. The significance of this work lies in its slice-of-life portrayal of ordinary characters in small-town India. By his skilled artistry the character becomes very vital and close to our heart. Many distinguishing traits of Bond's fiction become apparent in this novella. The big city represents Bond's dissatisfaction with the fast-paced life that he believes is not in tune with the environment. He writes in "*Scenes from a Writer's Life"* that "I don't suppose I would have written so much about childhood or even about other children if my own childhood had been all happiness and light" (4). The introduction to *"The Night Train at Deoli"* also outlines Bond's approach to writing for children:

In writing for children one has to adopt a less subjective approach; things must happen, for boys and girls have no time for mood pieces. So this kind of writing does help me to get away from myself. At the same time, because I have so strong an empathy with children, I can enter into their minds when I am writing about them. As children we are all individualists; it is only as we grow older that we acquire a certain grey similarity to each other. (No page.)

Bond's view of childhood is quite different from the harsh reality portrayed in his adolescent novels, where the protagonists are victims of adult failure, economic and social problems, or incompatible marriages. The fictional world of the child is a time of summer, a carefree age of mischief and fun. He sees dignity in the daily experiences and in the unpretentious lifestyle of the people who live in the small Himalayan towns and villages.

In the story, "A Photograph," the protagonist finds an old photograph that reveals a different side of Grandmother. Although Grandmother does not admit it is her childhood picture, he recognizes the defiant body language and the devilish smile to be hers. Grandmother says that the girl was wicked, because she refused to be confined to her narrow Anglo-Indian world but would sneak off into the bazaar to eat Indian snacks, would refuse to dress in conventional clothing, and would swim in the canal like a tomboy. The protagonist learns just as much about freedom, enjoyment of nature, and not following conventions blindly from Grandmother as from Grandfather. *The Hidden Pool* and *Grandfather's Private Zoo* set forth all the important themes that will ripple through Bond's future works for children: duality of nature, conservation of animals, importance of trees, and crosscultural friendships. Bond extended his vision of childhood as an age of pranks and fun to include other Indian children. Some of the stories in *The Road to the Bazaar* Bond focus on the friendships, quarrels, and simple fears and triumphs of a group of boys and one girl (Koki) who live in a small town that resembles the Dehra of Bond's childhood

Bond's work seems fundamental in the development of young adult and children's literature in India. He places great importance on good books for young readers, and his stories express empathy for children, respect for their intelligence, and faith in their ability to shape the future. He enjoys writing for children and being with his young readers. Although shy and reserved by nature, when in the midst of children he can enthrall a large audience with jokes about his name "Bond," give advice on how to nurture their writing skills, and answer their many questions.

References :-

1. Khorana, Meena. *The life and works of Ruskin Bond.* PraegerPublishers, Westport. United States.2003

2. Soma Banerjee, “Ruskin Bond,” in Reference Guide to Short Fiction, ed. by Noille Watson (Detroit: St. James Press, 1994),
3. “Delhi Is Not Far.” *Delhi Is Not Far: The Best of Ruskin Bond.* New Delhi: Penguin, 1994.
4. *The Lamp Is Lit: Leaves from a Journal.* New Delhi: Penguin, 1998.
5. *Time Stops at Shamli and Other Stories.* New Delhi: Penguin, 1989.
6. *Our Trees Still Grow in Dehra.* New Delhi: Penguin, 1991.
7. *Scenes from a Writer’s Life: A Memoir.* New Delhi: Penguin, 1997.
8. *“The Room on the Roof” and “Vagrants in the Valley”: Two Novels of Adolescence.* New Delhi: Penguin, 1993.
9. Khorana, Meena. Introduction. *The Indian Subcontinent in Literature for Children and Young Adults: An Annotated Bibliography of English-Language Books.* Westport, CT: Greenwood, 1991.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

The Portrayalof Borders and Boundaries in *The Hungry Tide*

Dr. Shailendra Kumar Chourasia *

***Asst. Professor (English) Bhagat Singh Govt P.G.College, Jaora, Distt. Ratlam (M.P.) INDIA**

Introduction - Amitav Ghosh is arguably one of the most significant contemporary Indian English writers. He is a writer who travels and re-maps the world, drawing connections across the boundaries of modern nation-states. It is in this erasure and redrawing of cultural and political lines that divide and unite that the special quality of Amitav Ghosh's novels lies. Almost all his works, fictional or non-fictional, examine the role of borders and boundaries. G.J.V. Prasad aptly remarks:

Ghosh weaves together a pluralistc [sic] and self reflexive view of the world – one that challenges the smugness of accepted narratives and points of view and the certainties of postcolonial borders and well as generic boundaries. (56)

The very popular fiction *The Hungry Tide* (2004) by Amitav Ghosh is a multilayered, subtle and complex novel. This one is about a place, a very special that is a part of the coast of India. The extensive archipelago of tiny islands and labyrinthian waterways known as the Sundarbans, stretching from India to Bangladesh. This little known tide country offers no visible borders between the river and the sea, and sometimes not even between land and water. The region is named after the Sundari tree, as the mangrove is locally called. It is an area of islands that appear and disappear, sometimes overnight, sometimes over many years. In this precarious place, people try to eke out an existence, along with man-eating tigers, crocodiles, and the ever-present dense mangroves that appear as soon as the land is undisturbed for a short period of time. By this murky existence Ghosh artistically presents the theme of crossing borders.

In this widely read novel Ghosh has depicted the borders and boundaries between outsider and insider, rich and poor, and powerful and powerless. Along with these borders and boundaries he also deals with the borders and boundaries of language, religion and social class. The notion of border and boundary is somewhere direct on the one hand and characterized by symbols on the other.

Ghosh shows clear distinction between outsider and insider. This outsider-insider paradigm is based on geographical and cultural attitudes of the characters. Kanai, Piya and Refugees are depicted in this novel as outsiders. Whereas Fokir, Moyna, Nilima, Nirmal, Kusum and Horen as insiders.

Kanai Dutt is a linguist who runs a translation bureau in Delhi. Ghosh placed him as an outsider, "Kanai was the one other 'outsider' on the platform. . ." (4). At the age of forty he comes back to Lucibari to read the journal left by his uncle Nirmal during the last days of his life at Morichjhâpi. Kanai comes back Lucibari to just read that journal. He has nothing to do with the culture and environment of Lucibari so he is regarded as an outsider.

Piyali Roy, the Indian-American cetologist is another outsider. She is studying the rare Irrawaddy dolphin that lives in the waters of the Sunderbans. ". . . she knew no Bengali: *ami Bangla janina*" (4). She has lost her identity and thinks of herself simply as a scientist and researcher, working without emotion in solitude and physical discomfort, and in regions where she knows neither the customs nor the language. So she is also regarded as an outsider.

The other outsiders were the refugees who crossed over from East Pakistan in the forties and fifties. They were forcibly kept in refugee camp in Central India. In 1978 a group of refugees fled from the camp. And come to the islands of Morichjhâpi in the Sundarbans with the intention of settling there. But they were outsiders so they were evicted by government in May, 1979.

Fokir, Moyna, Kusum, Horen are the characters who are insiders in the Sundarbans. Fokir is Kusum's son. After the death of Kusum in that massacre, he is looked after by her distant relative, Horen. Fokir grows up to be an illiterate fisherman, but he knows and lives the ways of the waters and the wildlife of the Sundarbans. And he always remains an insider. Like Fokir, Moyna is also brought up in that particular land and marries with Fokir. Though Kusum went to Dhanbad in search of her mother and married there, but she returned back after the death of her husband. So she is also called an insider.

Nirmal and Nilima do not belong to that place; they first came to Lucibari in 1950. Nirmal taught English Literature in Calcutta. Nilima was a student in one of his classes.

Though belonging to a high profile society she chose Nirmal as her husband and married him in 1949. Due to some circumstances they come to Lucibari. They decided to spend a couple of years on that island. There Nirmal joined a school, and Nilima founded a union which was later named as Badabon Development Trust. Both Nirmal and Nilima accepted and assimilated the culture and manner of living of that island and turned gradually into insiders.

Bangladeshi refugees, along with Kusum, Fokir, Moyna and Horen are presented in this novel as powerless and Government, Nature, wild animals as powerful. Ghosh has minutely drawn the line between the powerful and powerless as the line reversed in some circumstances. In West Bengal, left Front government was in power, when the refugee settlers were evicted forcibly from the island. They were helpless before the power of government. They have no food to eat, no water to drink. There was no one to help them because, ". . . anyone suspected of helping them was sure to get into trouble" (122).

The people of the islands are also powerless over the powers of wild animals such as tigers, snakes and crocodiles. The powerless, impoverished and poor people become easy prey for these wild creatures. These powerless people do not have a voice. They can not make themselves heard and understood, and no one pays attention to their plight.

Nature also plays its role as powerful, as the island is under constant threat from cyclones and tides. But if nature is a destroyer it also acts as defence for the survivors. The Mangroves forest ". . . served as a barrier against nature's fury, absorbing the initial onslaught of cyclonic winds, waves and tidal surges" (286). If they were not present in the islands, the tide country would have drowned long before.

Kanai of course is a powerful in material sense, as he is a businessman has ample wealth and knowledge. On the other hand Fokir is poor materially, he never thinks that he is poor, he is rich in himself. Kanai feels himself superior to Fokir, his, ". . . voice as he was speaking to Fokir: It was the kind of tone in which someone might address a dimwitted waiter. . ." (210). Here he acts as powerful before powerless Fokir. But when Fokir takes Kanai to the island where his power of knowledge, language and wealth is of no use, ". . . the power line dividing the translator (Kanai) and the translated (Fokir) is reversed" (Mahanta 99). Here Kanai so powerless that though he belonged to urban and 'civilized' world uses such obscene words, "'*shala, banchod, shuorer bachcha*'" (326).

Unlike Fokir, Kusum and Kusum's mother are powerless creatures. The powerful Dilip Choudhary, takes Kusum's mother and sells her somewhere in Calcutta. Kusum is luckily saved by Horen. Moyna also belongs to powerless community though she is very ambitious. There was no school in her village so she walked every day to another village to complete her school education. Her parents marry her off with illiterate Fokir who made his livelihood by catching crabs. But she did not give up her idea of education, and joins the trust and takes training in hygiene, nutrition, first aid and midwifery, and works as full fledged nurse in the hospital and becomes powerful.

Through the concept of borders and boundaries Ghosh has raised some grave questions. One of them is the border line that divides the human life and animal life. The Left Front government of West-Bengal forcibly evicted the Bangladeshi settlers from Morichjhâpi. In that brutal eviction hundreds were killed, their homes were burnt; there was no value of human life. Kusum in *The Hungry Tide* is one of the dispossessed at Morichjhâpi struggling against the government's attempts to remove them from their settlement. Kusum narrates her struggle to Nirmal:

> … the worst part was not the hunger or the thirst. It was to sit here, helpless, and listen to the policeman making their announcements, hearing them say that our lives our existence, was worth less than dirt or dust. "This island has to be saved for its trees, it has to be saved for its animals, it is a part of a reserve forest, it belongs to a project to save tigers, which is paid for by people from all around the world."…. Who are these people. I wondered, who love animals so much that they are willing to kill us for them? (262)

What is underscored here is the casual way in which the refugees' lives are dealt with by the government because it links "development" with foreign aid. It is an irony that men were killed by men for saving animals. It was a reality, a tragic occurrence that actually took place in that island, and not merely a fictitious narration of an imaginary event.

The same fact is underscored again when Piya sees a tiger being killed by the villagers for having harmed humans and livelistock. Piya is greatly upset by the killing and in a shocking display of insensitivity to human life condemns the killing of the tiger: "Every where in the world dozens of people are killed everyday – on roads, in cars, in traffic. Why is this any worse?"(301). This is what prompts Kanai to give the most telling statement in the whole novel:

> … it was people like you… who made a push to protect the wildlife here, without regard for the human costs. And I'm complicit because people like me – Indians of my class, curry favour with their Western patrons. (301)

The suffering of an animal overshadowed Piya's emotions. Although there are more tigers in captivity in America, Piya can still talk "emphatically" about "preserving" species and keeping them in habitat and also about nature "intended". She is of the view that the intention of nature is most important for every being, for it keeps them alive. If this killing goes on continuously no other species will remain. Since it is very hard to cross the imaginary line that separates human life from animal life, there is need for a boundary that demarcates between animal life and the human life.

Reality is very far from utopia, it is what one can feel and experience whereas the imagination can take one to utopia. Ghosh in this novel under scrutiny draws a distinct line between reality and utopia through the characters of Sir Daniel and Nirmal. A Scotsman, Daniel MacKinnon Hamilton,

comes to colonial India to seek his fortune. In Calcutta he joins a company. While his sailing in P & O lines he chances upon the islands of the Sundarbans. “When the Scotsman looked upon the crab-covered shores of the tide country, he saw not mud, but something that shone brighter than gold” (49). Without understanding the land and guided by civilizational paradigms, he asks: “why is this valuable soil allowed to lie follow?” (50). The island was totally unsuitable for human settlement, as it is subject to catastrophic famines, floods and storms. It is inhabited by tigers, crocodiles, snakes and several thousand of the country’s destitute. In this land he decided to set up a Marxist utopian human settlement, where all people would be treated as equals. His attempt was to establish a casteless, classless human society and impose his view of man – nature relationship on the Sundarbans. Hamilton’s utopian settlement could never really succeed because he had ignored the historical realities of class. In fact Hamilton was merely an English colonizer and he also lacked the required knowledge of the land and its people. Barry Lopez notes, “The more superficial a society’s knowledge of the real dimensions of the land it occupies, the more vulnerable the land is to exploitation, to manipulation for short term gain”.

Hamilton’s failure, his ignorance of history and nature, is replicated in the case of Nirmal. Nirmal aligns himself with the dispossessed refugees of Morichjhâpi in order to realize his dream of changing the world through revolution. Nirmal fails because like Hamilton, he too functions on ideologies that ignore local history, society and nature. His revolution ignores the larger historical reality of the partition which had produced the refugees at Morichjhâpi. Nirmal also forgets that he is in a land where people exhausted themselves in their struggle to exist. Taking neither historical reality nor natural factors into account and functioning on the dictum “revolution or nothing”, Nirmal looks like a misfit. Like Hamilton Nirmal also dreamt of a society where: “…men and women could be formers in the morning poets in the afternoon and carpenters in the evening” (53). He believes that all this can be achieved by “revolution”. Both the men failed because they ignored the reality regarding historical circumstances of the people and their natural terrain. It is a universal truth that one can not succeed by closing one’s eyes to reality, imagination may help but one has to cross the imaginary line that isolates reality and imagination.

The novel under consideration is also a record of the border that is present between ignorance and knowledge. Those who cross the borders of ignorance can achieve knowledge. But this border may be misleading as it is difficult to draw a line between ignorance and knowledge. Sometimes ignorance works as knowledge and knowledge as ignorance. Kanai as a translator-cum-interpreter has the knowledge of six languages. He takes the job of narrating Nirmal’s journal in English which is how the Morichjhâpi incident is communicated to the reader. He also takes the responsibility, at a later stage of translating Fokir and other local people to Piya. At one point Piya asks Kanai to explain the content of a traditional song that Fokir is chanting. Kanai replies: “You asked me what Fokir was singing and I said I couldn’t translate it: it was too difficult. And this was a history that is not just his own but also of this place, the tide country” (354). Thus despite his sound knowledge, Kanai becomes ignorant. Fokir is an illiterate person; his ignorance shapes his knowledge about nature. He never shows his knowledge. Through him Ghosh articulates the primary subaltern concern of being heard. In an interview with Chitralekha Basu, he comments:

… Fokir is almost completely speechless and that’s exactly the issue I wanted to address. These are the circumstances becoming increasingly prevalent around the world. How do people who have very little words communicate with the rest of the world? There is such a gap.

Fokir though usually silent, has a strong communion with nature. Nature is an integrated part of his personality. When asked by Kanai how he “learnt about these things”, he replies: “I can not remember a time when I didn’t know about this place; back when I was very little long before I had even seen these islands and these livers, I had heard about Garjontola from my mother” (307). The illiterate Fokir’s reply, which speaks of a certain holistic idea about life and the man-nature relationship, is in stark contrast to Piya’s fractured and faulty ideas about nature although it is part of her profession. Fokir saves her from drowning, from a crocodile and in the end from a tide. Piya’s scientific knowledge proves to be of no use; it is the Fokir’s natural knowledge that saves Piya.

The novel shows that in love like in nature it is the maladjusted who is rejected, the adjusted accepted. Ghosh also beautifully presents the border between the rejected and the accepted. Sir Daniel, Nirmal and Kanai also rejected by nature because they did not understand the laws of nature. Saswat S. Das aptly remarks, “Kanai’s fall, in a literal sense, indicates nature’s way of rejecting those who rush into its fold without understanding its law, which is one of perpetual change and transformation” (235). Love also follows the same rule. Between Nirmal and Horen Kusum chooses the latter. Again, Piya and Moyna intrinsically know that Fokir’s worth is more than Kanai’s. Moyna, in spite of her dissatisfaction with Fokir’s unworthy ways, recognizes his well-adjusted inner core and chooses to live with him. In this way Moyna crosses the border.

Ghosh in this novel delineates the theme of border crossing not only through his characters but also by through symbols. The most significant and interesting one is the cult of Bon Bibi, which has been handed down through the generations, through the oral tradition of story and song. When Fokir, Tutul along with Piya go to Garjontola, where Piya sees a small shack a “leaf thatched alter or shrine”(152). It reminds her of her mother’s *puja*-table, but the images inside do not resemble any Hindu god. There is an idol of Bon Bibi and Shah Jangoli along with a tiger. Fokir and his son

perform a ceremony and offer some leaves and flowers in front of the idols:

… Piya recognized a refrain that sounded like 'Allah'. She had no thought to speculate about Fokir's religion, but it occurred to her now that he might be Muslim. But no sooner had she thought this, than it struck her that a Muslim was hardly likely to pray to an image like this one. What Fokir was performing looked very much like her mother's Hindu *pujas* – and yet the words seemed to suggest otherwise". (152)

The strange coexistence of the name of Allah with *puja*-type gestures is a sign of crossing border between both the communities, Hindus and Muslims. Novelist and Critic Khushwant Singh speaks in this respect in his review of this novel: "scheduled caste Hindus subscribing to a faith which is happy blend of Islam and tribal Hinduism".

In this novel Ghosh has also employed the symbol of dolphin to suggest the idea of crossing border. The Gangetic dolphin, Orcaella *brevirostris* attracted Indian – American cetologist Piya, who comes to Sundarbans crossing so many physical boundaries. Saswat S. Das rightly remarks, "Piya chases dolphins, who carry her always across fixed boundaries…" (235). For studying rare dolphin in Sundarbans she also crosses social cultural barriers. Piya's lack of knowledge of her mother tongue, which is also the local language of Sundarbans, and lack of local knowledge makes her engage the services of Fokir for her research. This research also involves Kanai who takes the charge of translating the Fokir and local body to Piya. Through the interaction between Piya, Kanai and Fokir and through their predicaments and their pasts, Ghosh explores the idea of rejection of borders or religion, class, language and gender. In this heart touching novel all the characters reveal the theme of border crossing. Nilima is the only person who manages to conduct life and work successfully throughout the novel. She lives in precarious balance, with the awareness that all her life's work can be claimed by nature in a matter of minutes. She is aware that,

". . . building something is not the same as dreaming of it: building is always a matter of well-chosen compromises" (214). She crosses the borders, as she sees the suffering and exploitation of women of that island that appalled her. So she decides to establish a "Mohila Sangothon" – the women's union. By establishing this union she wants to help the poor, needy, downtrodden women of that island. She also crosses the cultured boundary when she comes to know the relationship between Kusum and her husband and treats her husband normally.

Nirmal also crosses the border as he helps the Morichjhâpi settlers by teaching their children. His soft corner for Kusum shows his idea of crossing border of class. Such border is also crossed by Piya when she finds herself falling in love with Fokir. In this regard Christopher Rollason truly remarks, "If Nirmal as a Marxist believed in a rapprochement across class barrier that could bring him and Kusum together on some level, a generation later Piya repeats this pattern with Kusum's son Fokir" (6). She ones again crosses the border as she decides to make her home in Lucibari and to help the widowed Moyna and Tutul while she continues her research work. Kanai also crosses border, as he gives up his earlier lifestyle in Delhi to return to his roots in Calcutta, to rediscover his lost love of language, and to Piya. In this context Banibrata Mahanta notes: "It signifies a symbolic relocations of the earlier positions of Kanai and Piya and symbolizes a return to native traditions, away from borrowed constructs of knowledge" (104).

The "hungry tide" as a symbol of natural forces, serves to reject the hegemonic constructs of border present between superior culture and ways of life. The tide serves to put things in perspective. The tide kills the Fokir. It is like a punishment from Nature because Fokir helped a foreign element to enter in that island where one who ventures there with an impure heart will not return alive. The tide which kills Fokir changes Kanai and Piya too. They realize the insignificance of border and boundary present between science and religion. They also realize that science can not stand up before the fury of nature. The tide also exposes the transitory nature of human constructs posited against elemental forces. If also shows the relevance of those things that are relegated as unfit for the demands of the new world order. The tide is thus, an agent of nature, which leaves in its wake the realization for a need for dialogue with the indigenous culture of the world. It is clear from the above discussion that tide (nature) erases the notions of border and boundary and allows everyone to live freely.

The Hungry Tide is an elemental rather than an epic novel. It does not privilege the human position in the world as readers may rightly anticipate, and certainly not the intelligence of one class (the educated) over that of another (represented by the fisherman). Although the story begins with such differences, there is a marvellous symmetry between different perspectives and the borders of class, gender and nation are crossed, with the implicit rejection of borders and boundaries.

In this brilliant piece of work, Ghosh grapples with big questions- the collision between human beings and their habitat, the daily struggle of living and insensitive theories of justice that think nothing of sufferings. Environmental decline in Sundarbans is also a serious question raised by Ghosh. Ghosh himself says:

. . . one of the things that strikes you so much is the real paucity of bird life. You hardly see any birds at all. . . . In years past, when you went to the mudflats, they would be covered with crabs. Now, the crabs have just vanished. Similarly, the Sundarbans was named after a kind of tree called the sundari tree. These trees have become incredibly rare; you hardly ever see them these days. (Interview with Hasan Ferdous and Horst Rutsch)

In this novel Ghosh not only succeeds in telling a great story that is woven in to the local community, customs and

environment, he also crosses the border, as he makes dexterous use of the local words and incorporates them into the text. Through such works Ghosh is also creating spaces within the English literary world for expression of the multilayered and multicultured complexities of indigenous peoples.

References :-

1. Barat, Urbashi. "Home and the World: Remembering Home in Amitav Ghosh's *The Shadow Lines." Crossing Borders*. Agra: B. S. Sharma & Brothers, 2005. 95-109
2. Das, Saswat S. "Home and Homelessness in *The Hungry Tide*: A Discourse Unmade." *Indian Literature*. Ed. Nirmal Kanti Bhattacharjee. Sept-Oct, 2006:179-85.
3. Ghosh, Amitav. *The Hungry Tide*. New Delhi: Harper Collins Publishers, 2004. All the textual citations are taken from this edition.
4. "Interview with Chitralekha Basu." *The Statesman*. July 25, 2000.
5. "Interview with Hasan Ferdous and Horst Rutsch." 26 Jun. 2007. <http://www.un.org/Pubs/chronicle/2005/issue4/0405p48.html >
6. GJV Prasad - Amitav Ghosh: Critical Perspectives, 2003, S McClintock.
7. Lopez, Barry. Qtd. in Nancy Cook, "What is Ecocriticism." 2005. 30 Jun. 2007. <http:/www. Asle/umn.edu/index.html>
8. Mahanta, Banibrata. "Foregrounding the Local : Nature Language and Human Enterprise in Amitav Ghosh's *The Hungry Tide*." *The Indian Journal of English Studies*. Ed. Bijay Kumar Das. Vol. XLIV 2007: 97-105.
9. Rollason, Christopher. "In Our Translated World': Transcultural Communication in Amitav Ghosh's *The Hungry Tide*." 2004. 28 Jun. 2007.<http://www.seikilos.com.ar/ghosh.pdf>
10. Singh, Khushwant. "Legendary Writer." Rev. of *The Hungry Tide*. *Deccan Herald*, 14 Aug. 2004. 29 Jun. 2007 <http://www. deccanherald.com/deccanherald/aug142004/edst.asp>.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Depiction of Udasis of Baba Nanak in the Wall Paintings of Punjab

Dr. Rupali Razdan*

***Head (Fine Arts) Lyallpur Khalsa College for Women, Jalandhar (Punjab) INDIA**

Introduction - "Punjab", the land of five rivers is not only known for its history and its jovial and celebratory culture but is also known for art that includes frescoes and murals. Although, the Sikh belief against image worship left very little scope for the development of visual arts yet the wall paintings remain to be the benchmark craft styles across the state and were painted on the gateways, ceilings and walls of the buildings.

About wall paintings in ancient Punjab, we have no evidence that has survived. Percy Brown spoke of the possibility of some kinds of mural decoration on the edifices of the Indus valley civilization. Similarly, Charles Fabri felt that such kind of possibilities can be there if the excavations are conducted more carefully in future.[1]

The documented history of painting in the Punjab dates to at least the 16th century, when the region was part of the Mughal Empire. Its concrete evidence has come down to us from the walls of Lahore Fort painted during the times of Emperor Akbar.[2] Side by side in the hill states the great Pahari (literally of the hills) style of painting was flourishing. At first, the rulers of these Hindu Kingdoms employed families of artists to produce works free from all sign of Mughal influence and later, in a more intermingled style from the late 17th century to 18th century.

At the end of 18th century, Maharaja Ranjit Singh appeared on the scene. He was a true son of the soil, has been considered as one of the most outstanding personalities of Asia. Despite the political confusion and disorder that this century saw in Punjab on such a vast scale, the art of wall painting flourished under the Sikhs, especially under the powerful and well organized kingdom of Maharaja Ranjit Singh.[3]

As Sikhism had royal patronage in Maharaja Ranjit Singh's reign, the Sikhs began to devote themselves to magnificence and splendour of their shrines. Many countries and nobles, big landlords or Jagirdars went to the extent of getting certain portions of the walls painted as an act of dedication. Maharaja Ranjit Singh himself, who was a liberal patron of arts, commissioned painter to decorate the walls and panels of the Golden Temple at Amritsar. He also got his palace at Wazirabad (now in Pakistan) and Lahore fort painted with murals illustrative of the religion of the Sikhs.[4]

Themes that are recognizably 'Sikh' include sets of idealized portraits of the ten Sikh Gurus and Sikh martyrs. Paintings or drawings illustrating the Janamsakhis of Guru Nanak DevJi, the traditional and much revered account of the life and travel (Udasis) of the founder of the faith Guru Nanak, were the main dominating subject matter of the same.[5] It is believed that during Guru Nanak DevJi's time people of the world suffering out of hatred, fanaticism, false hood and hypocrisy. The world had sunk in wickedness and sin. So he decided that he had to travel and educate and press home the message of Almighty Lord. So he set out on his mission for the regeneration of humanity on this earth. Most of his journeys (Udasis) were made on foot with his companion Bhai Mardana. He travelled in all four directions – North, East, West and South. For one year, he spread his message of peace, compassion, righteousness and truth to the people in and around his home. After that, Guru Ji undertook his missionary journeys (Udasis) to the far away places of Ceylon (Sri Lanka), Mecca, Baghdad, Assam, Tashkand, India, Bangladesh, Pakistan, Tibet, Nepal, Bhutan, South-West China, Afghanistan, Iraq, Iran, Saudi Arabia, Egypt, Israel, Jordan, Syria, Kazakhstan, Turkmenistan, Uzbekistan and many more. Number of these travels of Guru Ji were painted by the fresco painters of Punjab on the walls of many Gurudwaras, Samadhs, Akharas and Thakurdwarasetc on commission. These all were done by the famous fresco painters named by Naqqash in Mohraqashi technique.[6]

Today, there are many other such references of frescoes in written records which describe works no longer surviving. Much has disappeared, some only due to natural causes. For example dampness, saltpeter, vegetation each did their work. The newly installed marble or copper slab, dedicatory in character, covered walls in many a Sikh Shrine thus covering murals that originally embellished them. Some of the works on the walls were damaged by devotees rubbing against walls. For example, accounts of travels made by Baba Nanak were once there on the walls of Gurudwara Sahib Singh Bedi in Una (H.P.)[7] which were no more there

when these were visited.[8] But few places are still having the frescoes as an account of travels (Udasis) by first Sikh Guru, Baba Nanak which are as under:-

1. Gurudwara Baba AtalRai Sahib, Amritsar.
2. Gurudwara Baba Bakala, Distt. Amritsar
3. GurudwaraPothimal, Guru Harshai
4. BalaNandAkhara, Amritsar
5. DeraUdasian, Jamsher, Jalandhar

In Gurudwara Baba AtalRai Sahib, Amritsar there is a complete depiction of Guru Nanak DevJi's life which are called as JanamSakhis for example frescoes on his birth, marriage ceremony, Udasis including Sakhi Bhai Lalo at SayyidpurEminabad (now in Pakistan) where he taught the lesson to Malik Bhago that it is better to earn little money with honestly than to amass a huge wealth by devious and crooked means.[9] The same subject is painted on one of the wall of Gurudwara Baba Bakala also.

At Baba Atal, Amritsar

At Baba Bakala Near Batala

Though there are number of travels painted on the walls which all cannot be discussed in the research paper, few of them which are famous in people are as under:

SakhiKurukshetra where Baba Ji taught people that one should give charity often and have a bath everyday but one should not have a mistaken belief of fear from the demons.[10]

At Baba AtalGurudwara, Amritsar

During his visit to Coimbatore (Tamil Nadu), Baba Ji and Mardana met with Kauda, the cannibal. Whom Babaji with his gracious and holy right of the divinity made him realize his guilty and he fell on his feet and begged for mercy.[11] This Sakhi is depicted both on the wall of Baba AtalRai Sahib Gurudwara as well as on the wall of Baba BakalaGurudwara

At Baba AtalRai Sahib, Amritsar

At Baba Bakala Near Batala

His another journey of Mecca is depicted both in Gurudwara Baba AtalRai Sahib as well as in Samadh of Baba Mohar Singh, Tanda, through which Guru Nanak taught a lesson to all and Rukandin (the priest of the Kaaba) that God does not live in one place. He lives everywhere.[12]

At Gurudwara Baba AtalRai Sahib, Amritsar

The depiction of his (Udasis) travel to HasanAbdal near north west of Rawalpindi in Pakistan is also beautifully painted on the walls of Baba AtalRai Sahib Gurudwara as well as Baba Bakala, Batala in which Guru Ji is shown stopping the on rushing stone with his palm which was thrown by valiKandhari on him in jealous as Guru Ji picked up one stone and a stream of water immediately issued forth to fulfill the thirst

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

of Mardana. Infact this water came out from the Vali's tank which dried up. Seeing this ValiKandhari fell at the feet of the Guru and begged for forgiveness. The Guru expressed, those who live so high, should not be heart like a stone.[13]

At Samadh of Baba Mohar Singh, Tanda

At Baba AtalRaiGurudwara, Amritsar

At Baba Bakala, Batala

Guru Ji also travelled to TillaJogian which is southwest of Jhelum city in Punjab, Pakistan. Here he met Guru Goraknath, the founder of the sect of Kanphatta (pierced ears) Jogis.[14] Frescoes related to this travel is painted on the walls of Gurudwara BabaAtalRai Sahib Amritsar, PothimalaGurudwara at Guru Harshai, BalaNandAkhara Amritsar and on the wall of DeraUdasian in Jamsher Village, Jalandhar.[15]

What we see in Punjab and Haryana in the form of wall paintings today, thus, it may be fare to conclude, is only a small part of what must once have been there. It is necessary that steps should be taken by the government or by some artlovers to preserve the rich heritage of Punjab which is in the form of frescoes in the architecture of Punjab. Though, INTECH is doing a lot to save and preserve such art sites, it is suggested that we should consider a virtual museum of frescoes of Punjab, where photographs of the frescoes could be put on the internet and be accessible to all. The virtual museum would evoke interest and that would bring a spotlight on this literally dying art.

References:-

1. Kang , Kanwarjit Singh ,MittiAppoAppni, "Arsee Publishers, Chandini Chowk", Delhi 1985, Pg. 21
2. Mcleod, W.H., 'Popular Sikh Art', Oxford University hess, Oxford, New York, 1991, Pg. 8
3. Ibid.
4. Kang, Kanwarjit Singh, "Wall paintings of Punjab and Haryana", Atma Ram & Sons (H.O.) Kashmere Gate, Delhi, 1985, Pg. 22
5. Goswamy, B.N. Marg, "A Matter of Taste: some notes on the context of painting in Sikh Punjab," Marg Publications, Bombay, 1981, Pg. 63
6. Kang ,Kanwarjit Singh ,Wall paintings of Punjab", Publication Bureau, Punjabi University, Patiala 1988. Pg. 35-40.
7. Souvenirs on S.G. Thakur Singh, Indian Academy of fine arts, Amritsar.
8. Mcleod, W.H. 'Popular Sikh Art'. Pg. 14
9. Visited 26.01.2002.
10. Kirpal Singh ,JanamSakhiParampara ,Punjabi University Patiala
11. Ibid , Page no. 342-344
12. Ibid ,Page no. 259-260and 85
13. Ibid ,Page no. 280-282
14. Ibid ,Page no. 109-112
15. Ibid ,Page no.294-298
16. visited in 2002.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

A Study of Problems and Possibilities in the Field of Eco-Tourism (Special Reference to Jabalpur)

Mrs. Archana Sane *

*Research Scholar (Commerce) Rani Durgavati University, Jabalpur (M.P.) INDIA

Abstract - Jabalpur the city of art, culture ,tradition, nature and glorious history .This city is a witness of changing the society and civilization of human. In this research paper we are going to touch the untouch aspects of eco tourism in this research work we will discuss same kinds of tourism in Jabalpur . we will analyse the problems of ecotourism in Jabalpur city .Though eco tourism is called responsible tourism in these days because now tourist are being more aware and responsible for mother nature. In this study we will try to understand the role of government in eco tourism, we will try to understand the problems of tourist during ecotourism, we will also find out ,Is eco tourism is a good medium of employment ?And Is eco tourism is a successful means of development in Jabalpur ?

Introduction - Tourism has proved to be an engine of growth in many economies in the world. It provides for the generation of income, wealth and employment, and helps in the sustainable development of remote areas. Tourism has proved to have negative impacts as well as the positive ones. It is criticized for contaminating indigenous culture. This takes the form of changing values, resulting in social maladies like drug addiction, child prostitution, etc. A far more widespread negative impact is caused by mass tourism in environmentally fragile areas like mountains, hills, deserts and coastal regions. Due to heavy tourist traffic in some areas, the cultural and environmental assets of the community are under threat. Although this phenomenon is not widespread in India, there is a need to take note of the possible negative influences of tourism so that timely reservation action can be taken and irreparable loss avoided. In India, tourism provides direct and indirect employment to millions of people. It also contributes a reasonable sum to the country's Gross National Product (GNP). Its contribution to the economies of states like Rajasthan, Goa and Kerala are significant. Although beginning to be understood for its potential to provide for development in India, tourism still remains a sector that needs serious attention.

Definition of Tourism - Science Tourism is a global business it has become necessary to define an internationally accepted definition of tourist. World tourism organization (W.T.O.) defines only foreigner who spends not less than 24 hours and not more than six months in a country other than his / her native country and stay in Hotels and Spends Money in their own currency. A foreigner who comes and works in a country to make earning or to study in the Universities is not a tourist for all practical purpose.

"Tourism is a collection of activities services and industries which deliver a travel experience comprising transportation, accommodation eating and drinking establishment, retail shops, entertainment business and other hospitality services provided for individuals or group travelling away from home.

The sum of the phenomena and relationships arising from the interaction of tourist's business suppliers, host government and host communities in the process of attracting and hosting these tourists and other visitors". ("Macintosh and Goeldner")

"Tourism comprises the activities of person travelling to and staying in places outside their usual environment for not more than one consecutive year for leisure, business and other purpose." ("World Tourist Organization")

Introduction of Jabalpur Tourism - Jabalpur is one of the most famous cities in Madhya Pradesh and also known as the cultural capital of the state. Acharya Vinoba Bhave has given name as Sanskardhani to Jabalpur. The area of the district is 5198 km with population of 2463289 as of 2011 it is located in the Mahakoushal region of Madhya Pradesh. Now a day's tourism is improving in the city. City is becoming attraction for tourist places like Dhuadhar waterfall, Bhedaghat, Gwarighat , chousath yogini Temple. Jain mandir, Madhiyaji, Madhiyaji , Madan Mahal Fort, Balancing Rock, Dumna Nature Park, Bargi Dam, Rani Durgavati Museum, Kachnar City etc.

Pilgrimage Tourism - There are many pilgrimage places in Jabalpur like Tripur Sundari, Bada Jain Mandir, Chousath Yogini. The Chousath yogini Temple in Bhedaghat also called the Golaki Math (circular lodge) is one of the yogini temples but exceptionally it has shrines for 81 rather than

the usual 64 yogini temples.Hanumantal, Bada Jain Mandir is a 17th century Jain Temple that appears like a fortress with numerical shikharas. The temple has 22 shrines (vedies) making it the largest independent Jain temple in India

Historical Tourism: - Madan Mahal Fort - Madan Mahal is a Suburban area of Jabalpur famous for the historical Durgavati fort. The area also has a railway station named; Madan Mahal which is situated in Jabalpur Town. It was more of a manned post on vigil for invaders now enveloped in the shroud of history the fort dates back to 11th century A.D. The fort is well associated with Rani Durgavati eventually died fighting with the Mughals and is hailed as a martyr in Indian history. She also builds numerous temples and tank scattered around Jabalpur chiefly around her Garha principality.

Leisure tourism: - Dhuadhar falls The word Dhuadhar is derived from two Hindi words Dhua (smoke)+ Dhar (flow) meaning a waterfall. Where we get smoke flow like feeling by water vapors or the smoke case.The Dhuadhar fall is located on Narmada river in Bhedaghat village and are 30 meters high. The Narmada river making its way through the world-famous marble rocks narrows down then plunges in waterfall known as Dhuadhar . The plunge which creates a bouncing mass of mist is so powerful that it's roar is heard from a far distance.

In this reseach paper we will analyse eco tourisum in jabalpur city.

Ecotourism - Eco tourism is a form of tourism visiting fragile pristine and usually protected areas. Intended as a low impact and after small scale alternative to standard commercial tourism. Ecotourism is entirely a new approach in tourism. Ecotourism is a preserving travel to natural areas to appreciate of the environment taking care not to disturb the integrity of the ecosystem. While creating economic opportunities that make conservation and protection off natural resources advantages to the local people.

Dumna Nature Reserve Park: An Ecotourism place in Jabalpur- The Dumna Nature Reserve of Jabalpur is an ecotourism place. And it is a spread over nearly 1800 acres of forested land on plateau about 40 meters above Jabalpur town. It was transferred to the municipal committee of Jabalpur by the provincial government to act as the water catchment area of Khandari lake.

creepers, grasses The forest is dry deciduous type, typical of central India mixed forests. It is home to many species of native trees, plants, shrubs, herbs. The park boosts of diverse ecosystems, wood lands, grasslands and wetlands. Dumna has a resident population of a Leopards nearly 2000 deer – Cheetal, Four-hornet antelope, Jungle cat, Rusty Spotted Cat, Wild Boar, Crocodile and more than 300 bird species both migrant and resident have been recorded from Dumna.

It is an ecotourism site open to the public located in Madhya Pradesh. It includes a dam, wild animals including chital wild boar, porcupine, Jackals and many species of birds inhabit the park. A children's park and a restaurant are available. A hanging bridge tent platform, rest house, fishing platform toy train and boating are other attractions at the nearby Khandari, Dam, Activities in the water such as bathing swimming are prohibited due to presence of crocodiles.

Objectives of the Research - Jabalpur is an important tourism city in Madhya Pradesh and central India. Notable sites in Jabalpur include Hanumantal, Bada Jain Mandir, Madan Mahal Fort, Dhuadharfall, Chousath yogini, Shiv Statue in Kachnar City and Dumna nature park is an ecotourism site open to the public which is located in Jabalpur.

There are some important objectives for this research work: -

1. To develop awareness of ecotourism in Jabalpur city.
2. To find possibilities of ecotourism in Jabalpur.
3. To find problems of ecotourism in Jabalpur.
4. To explore the tourism market in Jabalpur.

Review of Literature - For this current result of the research literature survey involves a comprehensive review of published and unpublished work from the secondary sources of data available in the relevant area of study.

For This research work, I study different types of Research papers, research work, Magazines, newspaper and reports through which we can justify the topic.

A study of problems and possibilities in the field of ecotourism. Special reference in Jabalpur.

1. Ahila R. etc. 2013 "Role of Hotel industry in the promotion of tourism" published by discovery publishing house Pvt. Ltd. Showing the importance of promotion in tourism industry.
2. Balyani Rohit 2010 "Ecotourism and sustainable development in India" Published by Sarup book publishers Pvt. Ltd. According to this work author is contributing to forest and animal protection
3. Badan B.s. Etc 2007 "Tourism planning and Development" published by commonwealth publishers where the author suggested about planning is an essential factor for achieving successful development and management in any field.
4. Bhatiya A.K. 1983 "Tourism development and practices" published by stealing publishers Pvt. Ltd. New Delhi, in this book author explained principles of tourism

development.

5. Dupuis Stella 2008 "The yogini temples of India in the pursuit of a mystery travel notes Varanasi" published by pilgrims publishing in the book author discussed about chousath yoginis historical importance

Research Methodology - Research is composed by two words Re and Search which means to search again for new facts or to modify order ones in a new branch of knowledge for the present study information collected from both primary and secondary sources.

Primary data collected by conducting personal interviews with local tourist, tourist from outside and some shopkeeper. For this purpose, a questionnaire was circulated. Secondary data collected from the records, generals, Performance budget, newspaper, department, books and etc.

Hypothesis - The research a study of problems and possibilities in the field of ecotourism special reference to Jabalpur has been done on the basis of following hypothesis.

H_0 There is no a significant relation between ecotourism and market growth in Jabalpur.

H_1 There is significant relation between ecotourism and market growth in Jabalpur.

Sample Size - For this research work I visited to some tourist places and took interview of 50 to 100 tourists. I tried to understand their opinion about eco-tourism and their valuable suggestions to improve tourism market in Jabalpur. In this research work, suggestions have been made by the local people through questionnaires based on which the following conclusions have been obtained which are presented through the diagrams.

Hypothesis Testing - In this research work for Hypothesis testing, I applied chi-square test throughout sample size in 100.

Chi-square test - The Chi-square test of independence determines whether there is an association between categorical variables (i.e., whether the variables are independent or relatable) It is a nonparametric test. This test is also known as Chi-square test of association. This test utilized a contingency table to analyze the data. A contingency table also known as a cross-tabulation, crosstab or two-way table is an arrangement in which data is classified according to two categorical variables.

The categories for one variable appear in the rows and the categories for the other variable appear in columns. Each variable must have two or more categories.

Each cell reflects the total count of cases for a specific pair of categories.

Hypothesis

H_0 There is no significance relationship between possibility of business market growth in Eco-tourism in Jabalpur.

H_1 There is significance relationship between possibility of business market growth in Eco-tourism in Jabalpur.

H_0 "{variable 1} is dependent of [variable 2]

H_1 "{variable 1} is not dependent of [variable 2]

||OR||

H_0 "{variable 1} is not associated with [variable 2]

H_0 "{variable 1} is associated with [variable 2]

Data analysis:- In this research work after analyzing eco-tourism in Jabalpur city. I found that tourism and Local people are aware about eco-tourism. They know that eco-tourism is a necessary tourism to prevent nature and wildlife. Nowadays eco-tourism is called responsible tourism where tourist is understanding their responsibilities towards nature and nation.

Jabalpur is a developing city from last five years Jabalpur is changing tremendously. Dumna Nature Park, Payali, Sangram Sagar Lake are the popular eco-tourist places in Jabalpur.

According to data collection we are making and analysing from follwing chart.

Do you find possibilities of business market growth in Ecotourism in Jabalpur?

Yes	80%
No	20%

80% people said that they find business market growth in eco-tourism in Jabalpur 20 % people said that they do not find business market growth in ecotourism.

For this research work for the sample size 100 I use chi-square test for hypothesis testing.

Calculation of Chi-square Test

Particular	F_0	F_e	F_0-F_e	$(F_0-F_e)^2$	x^2
Yes	80	50	30	900	18
No	20	50	-30	900	18
					36

$x^{2=(F}{}_0$- $F_e)^2/F_e$

$_=$ $(80-50)^{2/}50$ $(20-50)^{2/}50$

$_=$ $(30)^2/50$ $= (-30)^2/50$

=900/50 =900/50

=18 =18

F_0- Observed Frequency

F_e- Expected Frequency

X^2- Chi square

H0 = F0 "' Fe

H1 = F0 = Fe

r=2

c=1

df= n-1

df = 2-1

df = 1

For degree of freedom at 5 % level of significance the table value of chi-square is 3.84 while the calculated value of chi square is 36 which is higher than table value hence hypothesis "H0" is rejected it means the alternative hypothesis "H1" There is significant relationship between eco-tourism and market growth is accepted.

Findings:

1. Government plays significant and pivotal role for the development of tourism.
2. Eco Tourism is abridging the new horizon of employment.
3. People are aware about eco-tourism and they admitted

that nature can be saved by eco-tourism

4. Tourist are facing some problems in Eco-tourism like high expenses.
5. Eco-tourism is a successful mean of economic development.
6. Tourism is helping to improve opportunities in Jabalpur.
7. It has been found that Eco tourism approaches the innovative development and opportunities in Jabalpur tourism sector in future.

Suggestion:

1. Government has to do more promotional activities for Eco-tourism.
2. There is a need to make some new tourism policies to increase Eco-tourism.
3. Government and local bodies can try to make Eco-tourism less expensive.
4. Eco-tourism is protecting our mother nature,for protect the nature tourist have to be educated & guided properly.
5. Government should take care of tourist places and must maintain it properly.

Conclusion - The research work A study of problems and possibilities in the field of eco-tourism (Special reference to Jabalpur) could be a mile stone for the tourist, authorities and those people who are directly or indirectly related to tourism business because Eco tourism is very necessary for the prevention of the environment and world. Jabalpur is an important tourism city in Madhya Pradesh and Central India. Notable Sites in Jabalpur include Hanumantal, Bada Jain Mandir, Madan Mahal Fort and Shiva Statue at Kachnar city. The world-renowned tiger reserves like Kanha National Park, Bandhavgarh National Park, Pench National Park can be easily visited from Jabalpur sprawling over an area of 1088 hectares. Dumna natural reserve park is an eco-tourism site overside the city limits where one can explore the rich flora and fauna of the region. Many adventure and recreational activities such as fishing, bird watching and walking are also performed here. There is also a small children's park with boating facilities and toy train rides in addition to a restaurant and some guest resort and tent house for accommodation purposes.

The goals of ecotourism are to help the environment preserve natural resources as well as help the local communities and economies. Government has to do more promotional activities for ecotourism.

Ecotourism is an industry that stands to make a lot of money from tourists that are seeking environmentally friendly vacations or ecologically friendly activities. The money from ecotourism could be used to preserve nature, wildlife, species and earth's natural resources as well as help local people with access to civilization and education.

Through This research paper it proves that Jabalpur city is having possibilities to develop eco-tourism.

References :-

1. Acharya Ram, - Tourism and cultural heritage of India (1930) R.B.S.A. Publication, Jaipur, India
2. Akhter J.- Tourism Management in India, Aashirwad Publication, Jaipur (1995)
3. Bhatiya A.K.: - Tourism in India Stating Publication New Delhi
4. Bramwell, B. (1993). Tourism and the environment: challenges and choices for the 1990s Journal of Sustainable Tourism, 1993
5. Dr Vipin Acharya, Dr. Vijaya Shrivastava, Ku. Nidhi Asthana Agrawal Research methodology Publications Agra
6. Jain Ashu: tourist satisfaction and development: A case study or Jabalpur
7. Simmons, D. (1994). Community participation in tourism planning. Tourism management, 15(2)

Webliography :-

1. www.ecoindia.com/ecotourisminIndiahtml
2. www.ecotourisumindia.com
3. www.indiawildlifeinfo.com
4. www.incredible.com
5. www.tourmyindia.com/blog
6. www.yatra.com

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

A Study of Travel and Tourism

Mrs. Aarti Verma *

*Research Scholar, School Of Commerce, DAVV, Indore (M.P.) INDIA

Abstract - Tourism is travel for pleasure; also the theory and practice of touring, the business of attracting, accommodating, and entertaining tourists, and the business of operating tours. Tourism may be international, or within the traveler's country. The World Tourism Organization defines tourism more generally, in terms which go "beyond the common perception of tourism as being limited to holiday activity only ", as people "traveling to and staying in places outside their usual environment for not more than one consecutive year for leisure, business and other purposes".

Tourism can be domestic or international, and international tourism has both incoming and outgoing implications on a country's balance of payments. Today, tourism is a major source of income for many countries, and affects the economy of both the source and host countries, in some cases being of vital importance.

Tourism is an important, even vital, source of income for many countries. Its importance was recognized in the Manila Declaration on World Tourism of 1980 as "an activity essential to the life of nations because of its direct effects on the social, cultural, educational, and economic sectors of national societies and on their international relations." Tourism brings in large amounts of income into a local economy in the form of payment for goods and services needed by tourists, accounting for 30% of the world's trade of services, and 6% of overall exports of goods and services. It also creates opportunities for employment in the service sector of the economy associated with tourism.

Keywords- Travel, Leisure, Employment, Economics.

Introduction - Tourism as an industry has been travelling with the wild pace of technological advancements and aboard are people from different places and cultures interacting with increasing ease….since, the globe had been shrunk into a village.

Unlike our predecessors, we can affordably and in a shorter time travel across the world in large numbers comparatively safe. Tourism being one of the biggest and fastest growing industries globally, its benefits and the challenges, keenly observed by governments affects the economic, socio-cultural, environmental and educational resources of nations.

The positive effects of tourism on a country's economy include the growth and development of various industries directly linked with a healthy tourism industry, such as transportation, accommodation, wildlife, arts and entertainment. This brings about the creation of new jobs and revenue generated from foreign exchange, investments and payments of goods and services provided. Though improvements in the standard of living of locals in heavily visited tourist destinations is usually little or non-existent, inflation of the prices of basic commodities, due to visiting tourists, is a constant feature of these areas.

The nature of the world economy dictates that it's mostly people from developed nations who travel as tourist to the developing ones, much more than do people from developing nations visit as tourist the developed ones. This results in a downward stream of cultural influences that in cases have proven to be detrimental, as they were not in cohesion with the environment, economy and culture of these hosts, who cannot in that same capacity exchange influences. For example, it is common knowledge that most tourist destinations are plagued with prostitution; this has had dire consequences for the culture, economy and health of these tourist coveted nations, but is reported to be a major boost for tourism.

The environment can be greatly affected by tourism in cases where the attraction is a vista of nature's beauty, visits of people in large numbers could mean huge amounts of treading and pollution of materials such as plastic waste, bottles, which in the long run could be disruptive to the habitats of both faunal and floral life. Assessments into the capacity of people an area can safely bear environmentally, security and facility-wise are important in the protection and preservation of these vistas beaming with nature's beauty. The responsibility falls on hosts, who must make it a point to inform and educate visitors on acceptable behaviours and dangers posed by going against the advised codes of conduct, such as disposing waste haphazardly.

Significance of tourism - Tourism is an important, even

vital, source of income for many countries. Its importance was recognized in the Manila Declaration on World Tourism of 1980 as "an activity essential to the life of nations because of its direct effects on the social, cultural, educational, and economic sectors of national societies and on their international relations."

Tourism brings in large amounts of income into a local economy in the form of payment for goods and services needed by tourists, accounting for 30% of the world's trade of services, and 6% of overall exports of goods and services. It also creates opportunities for employment in the service sector of the economy associated with tourism.

The service industries which benefit from tourism include transportation services, such as airlines, cruise ships, and taxicabs; hospitality services, such as accommodations, including hotels and resorts; and entertainment venues, such as amusement parks, casinos, shopping malls, music venues, and theatres. This is in addition to goods bought by tourists, including souvenirs, clothing and other supplies.

Modern day tourism - Many leisure-oriented tourists travel to seaside resorts at their nearest coast or further apart. Coastal areas in the tropics are popular both in the summer and winter.

Winter tourism - St. Moritz, Switzerland became the cradle of the developing winter tourism in the 1860s; hotel manager Johannes Badrutt invited some summer guests from England to return in the winter to see the snowy landscape, thereby inaugurating a popular trend. It was, however, only in the 1970s when winter tourism took over the lead from summer tourism in many of the Swiss ski resorts. Even in winter, up to one third of all guests (depending on the location) consist of non-skiers.

Major ski resorts are located mostly in the various European countries (e.g. Andorra, Austria, Bulgaria, Bosnia-Herzegovina, Croatia, Czech Republic, Cyprus, Finland, France, Germany, Iceland, Italy, Norway, Latvia, Lithuania, Poland, Serbia, Sweden, Slovakia, Slovenia, Spain, Switzerland, Turkey), Canada, the United States (e.g. Colorado, California, Utah, Montana, Wyoming, New York, New Jersey, Michigan, Vermont, New Hampshire) Lebanon, New Zealand, Japan, South Korea, Chile, and Argentina.

Mass tourism - Mass tourism developed with improvements in technology, which allowed the transport of large numbers of people in a short space of time to places of leisure interest, so that greater numbers of people could begin to enjoy the benefits of leisure time.

In Continental Europe, early seaside resorts include: Heiligendamm, founded in 1793 at the Baltic Sea, being the first seaside resort; Ostend, popularised by the people of Brussels; Boulogne-sur-Mer and Deauville for the Parisians; Taormina in Sicily.

In the United States, the first seaside resorts in the European style were at Atlantic City, New Jersey and Long Island, New York.

Adjectival tourism - Adjectival tourism refers to the numerous niche or specialty travel forms of tourism that have emerged over the years, each with its own adjective. Many of these have come into common use by the tourism industry and academics.[40] Others are emerging concepts that may or may not gain popular usage. Examples of the more common niche tourism markets include:

Recent developments - There has been an up-trend in tourism over the last few decades,[vague] especially in Europe, where international travel for short breaks is common. Tourists have a wide range of budgets and tastes, and a wide variety of resorts and hotels have developed to cater for them. For example, some people prefer simple beach vacations, while others want more specialised holidays, quieter resorts, family-oriented holidays or niche market-targeted destination hotels.

The developments in technology and transport infrastructure, such as jumbo jets, low-cost airlines and more accessible airports have made many types of tourism more affordable. The WHO estimated in 2009 that there are around half a million people on board aircraft at any given time. There have also been changes in lifestyle, for example some retirement-age people sustain year round tourism. This is facilitated by internet sales of tourist services. Some sites have now started to offer dynamic packaging, in which an inclusive price is quoted for a tailor-made package requested by the customer upon impulse.

Sustainable tourism - "Sustainable tourism is envisaged as leading to management of all resources in such a way that economic, social and aesthetic needs can be fulfilled while maintaining cultural integrity, essential ecological processes, biological diversity and life support systems." (World Tourism Organization)

Sustainable development implies "meeting the needs of the present without compromising the ability of future generations to meet their own needs." (World Commission on Environment and Development, 1987)

Sustainable tourism can be seen as having regard to ecological and socio-cultural carrying capacities and includes involving the community of the destination in tourism development planning. It also involves integrating tourism to match current economic and growth policies so as to mitigate some of the negative economic and social impacts of 'mass tourism'. Murphy (1985) advocates the use of an 'ecological approach', to consider both 'plants' and 'people' when implementing the sustainable tourism development process. This is in contrast to the 'boosterism' and 'economic' approaches to tourism planning, neither of which consider the detrimental ecological or sociological impacts of tourism development to a destination.

However, Butler questions the exposition of the term 'sustainable' in the context of tourism, citing its ambiguity and stating that "the emerging sustainable development philosophy of the 1990s can be viewed as an extension of the broader realization that a preoccupation with economic growth without regard to its social and environmental

consequences is self-defeating in the long term." Thus 'sustainable tourism development' is seldom considered as an autonomous function of economic regeneration as separate from general economic growth.

Ecotourism - Ecotourism, also known as ecological tourism, is responsible travel to fragile, pristine, and usually protected areas that strives to be low-impact and (often) small-scale. It helps educate the traveler; provides funds for conservation; directly benefits the economic development and political empowerment of local communities; and fosters respect for different cultures and for human rights.Take only memories and leave only footprints is a very common slogan in protected areas.[46] Tourist destinations are shifting to low carbon emissions following the trend of visitors more focused in being environmentally responsible adopting a sustainable behavior.

Pro-poor tourism - Pro-poor tourism, which seeks to help the poorest people in developing countries, has been receiving increasing attention by those involved in development; the issue has been addressed through small-scale projects in local communities and through attempts by Ministries of Tourism to attract large numbers of tourists. Research by the Overseas Development Institute suggests that neither is the best way to encourage tourists' money to reach the poorest as only 25% or less (far less in some cases) ever reaches the poor; successful examples of money reaching the poor include mountain-climbing in Tanzania and cultural tourism in Luang Prabang, Laos.

Recession tourism - Recession tourism is a travel trend which evolved by way of the world economic crisis. Recession tourism is defined by low-cost and high-value experiences taking place of once-popular generic retreats. Various recession tourism hotspots have seen business boom during the recession thanks to comparatively low costs of living and a slow world job market suggesting travelers are elongating trips where their money travels further. This concept is not widely used in tourism research. It is related to the short-lived phenomenon that is more widely known as staycation.

Medical tourism - When there is a significant price difference between countries for a given medical procedure, particularly in Southeast Asia, India, Eastern Europe and where there are different regulatory regimes, in relation to particular medical procedures (e.g. dentistry), traveling to take advantage of the price or regulatory differences is often referred to as "medical tourism".

Educational tourism - Educational tourism is developed because of the growing popularity of teaching and learning of knowledge and the enhancing of technical competency outside of classroom environment. In educational tourism, the main focus of the tour or leisure activity includes visiting another country to learn about the culture, study tours, or to work and apply skills learned inside the classroom in a different environment, such as in the International Practicum Training Program.

Creative tourism - Creative tourism has existed as a form of cultural tourism, since the early beginnings of tourism itself. Its European roots date back to the time of the Grand Tour, which saw the sons of aristocratic families traveling for the purpose of mostly interactive, educational experiences. More recently, creative tourism has been given its own name by Crispin Raymond and Greg Richards,[49] who as members of the Association for Tourism and Leisure Education (ATLAS), have directed a number of projects for the European Commission, including cultural and crafts tourism, known as sustainable tourism. They have defined "creative tourism" as tourism related to the active participation of travellers in the culture of the host community, through interactive workshops and informal learning experiences.

Meanwhile, the concept of creative tourism has been picked up by high-profile organizations such as UNESCO, who through the Creative Cities Network, have endorsed creative tourism as an engaged, authentic experience that promotes an active understanding of the specific cultural features of a place.

Experiential Tourism - Experiential travel (or "immersion travel") is one of the major market trends in the modern tourism industry. It is an approach to travelling which focuses on experiencing a country, city or particular place by connecting to its history, people, food and culture.

The term "Experiential Travel" is already mentioned in publications from 1985 - however it was discovered as a meaningful market trend much later.

Dark tourism - One emerging area of special interest has been identified by Lennon and Foley (2000) as "dark" tourism. This type of tourism involves visits to "dark" sites, such as battlegrounds, scenes of horrific crimes or acts of genocide, for example: concentration camps. Dark tourism remains a small niche market, driven by varied motivations, such as mourning, remembrance, education, macabre curiosity or even entertainment. Its early origins are rooted in fairgrounds and medieval fairs.

Social tourism - Social tourism is the extension of the benefits of tourism to disadvantaged people who otherwise could not afford to travel for their education of recreation. It includes youth hostels and low-priced holiday accommodation run by church and voluntary organisations, trade unions, or in Communist times publicly owned enterprises. In May 1959, at the second Congress of Social Tourism in Austria, Walter Hunziker proposed the following definition: "Social tourism is a type of tourism practiced by low income groups, and which is rendered possible and facilitated by entirely separate and therefore easily recognizable services".

Doom tourism - Also known as "Tourism of Doom," or "Last Chance Tourism" this emerging trend involves traveling to places that are environmentally or otherwise threatened (such as the ice caps of Mount Kilimanjaro, the melting glaciers of Patagonia, or the coral of the Great Barrier Reef) before it is too late. Identified by travel trade magazine Travel Age West

editor-in-chief Kenneth Shapiro in 2007 and later explored in The New York Times, this type of tourism is believed to be on the rise. Some see the trend as related to sustainable tourism or ecotourism due to the fact that a number of these tourist destinations are considered threatened by environmental factors such as global warming, overpopulation or climate change. Others worry that travel to many of these threatened locations increases an individual's carbon footprint and only hastens problems threatened locations are already facing

Advantages of Tourism - Now-a-days tourism is the most flourishing and largest industry in India. Growing very rapidly it employs millions of people in India. It is a travel based recreation provides relief from daily routine of monotonous life – a change in place, climate.

Tourism helps in the development of economy of a country. It helps in the overall GDP development of a country. It helps the local people to get in touch with the people and country.

Tourism gives opportunity to people of various cultures to assimilate together.

People belonging to various cultures meet together and understand each other. This gives them an opportunity to build respect for each others.

The tourists spends helps the the local people can earn their livelihood.

Disadvantages of Tourism - Tourism may cause disruption in socio-economic, cultural setup of a country.

It may also lead to environmental hazards such as environmental pollution due to use of cigars, plastic bags.

In order to attract more tourists and earn more profits sprawling resorts are built cutting down thousands of casuarinas trees beside sea beaches. These resorts destroy both scenic beauty of the place by paying no attention to local architecture and ecology.

As a result of indiscriminate construction of high rises provision of water supply and waste disposal facilitate many fatal ends.

Overuse of natural wealth is a serious problem, tourist overuse of mountain trails resulting in abundance in dumping of waste products, food tins etc.

Damage to wildlife parks is a visible phenomenon, ground vegetation remain devastated under tourists' shoes, food habits of animal impaired ultimately landscape loses scenic beauty.

Tourism may have damaging socio-cultural effects. Local people demean themselves to earn more or imitate alien culture, new life styles, foreign culture.

Once the natural beauty and manmade beauties are lost tourism loses its charm and attraction and will collapse. So today environment friendly or green tourism are being introduced by tourism industries.

So we should keep tourism within planned limits and try to avoid ecological imbalance and health hazards. Tourism must not play havoc with traditions and protected societies. New technique, high-teach communication may bring cultural setbacks, degradation to preserved communities.

Conclusion - Stability of nation is necessary for development of tourism industry. Political disturbances hamper tourism. India can reap benefits from this industry, can add to own coiffure, earn foreign money if tourists are attracted to Buddhist stupas, Hindu temples, Mughal, Rajput palaces, forts, and victory towers, rock-cut caves, elaborately laid our gardens.

Throughout our beautified country there are many thousands of attractions such as glaciers, snow capped peaks, lower hill stations, wild life sanctuaries, deep rain forests, formidable desert in Rajasthan, sea beaches immense in number in east, west, southern parts.

Adventure sports i.e. trekking, skating, rafting in turbulent rivers, gliding, canoeing, mountaineering are other attractive attributes available here. Galore of cultu4ral differences resultant in varieties of cuisines to please diverse tongues, textiles, artifacts, handicrafts pleasing eyes are other gifts.

In spite of all these share of Indian tourism is only a small portion of the world tourism industry. So we must use all potentialities by proper planning, financing acquiring experience, packaging marketing, and boosting creativity, make outstanding appeal to travelers and seek help from private entrepreneurs.

References :-

1. Jump up ^ "tourism". Oxford English Dictionary (3rd ed.). Oxford University Press. September 2005. (Subscription or UK public library membership required.)
2. Jump up to: a b "UNWTO technical manual: Collection of Tourism Expenditure Statistics" (PDF). World Tourism Organization. 1995. p. 10. Retrieved 26 March 2009.
3. Jump up to: a b "International tourism challenged by deteriorating global economy" (PDF). UNWTO World Tourism Barometer (World Tourism Organization) 7 (1). January 2009. Retrieved 17 November 2011.
4. Jump up to: a b "UNWTO World Tourism Barometer Interim Update" (PDF). UNWTO World Tourism Barometer (World Tourism Organization). August 2010. Retrieved 17 November 2011.
5. Jump up to: a b c "International tourism receipts surpass US$ 1 trillion in 2011" (Press release). UNWTO. 7 May 2012. Retrieved 15 June 2012.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

विद्यानिवास मिश्र का निबंध साहित्य

डॉ. शिप्रा वर्मा *

* असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी) डॉ. बी0 आर0 अम्बेड़कर राजकीय महाविद्यालय, अनौंगी, कन्नौज (उ.प्र.) भारत

शोध सारांश – विद्यानिवास मिश्र जी की साहित्यिक प्रतिभा बहुमुखी है। उन्होने साहित्य की अनेक विधाओं में अपनी प्रतिभा का आश्चर्यजनक परिचय दिया है। मिश्र जी यद्यपि पश्चिमी साहित्य और संस्कृति से परिचित थे उनका भारतीय संस्कृति से अत्यंत लगाव है। यही कारण है कि भारतीय अन्तर्मन से लिखे गये उनके निबंध हमारे साहित्य की विरासत है। उनका मानना था कि साहित्य में हित की भावना होती है और जो साहित्य मंगल कामना नहीं कर सकता वह व्यर्थ है। अपने निबंधों के माध्यम से वे यही बात सिद्ध करते प्रतीत होते है। प्रारम्भ में उन्होने कहानियाँ लिखीं। निबंध लेखन 1944 से प्रारम्भ हुआ और यही साहित्य साधना हमारी परम्परा और संस्कृति की परिचायक भी बनी। मिश्र जी के व्यक्तित्व में चिन्तन और कर्म का उचित संयोग है। इसी कारण उनके कृतित्व में उनके व्यक्तित्व की अनुभूति होती है। मिश्र जी वास्तविक अर्थो में संस्कृति प्रेमी साहित्यकार हैं। वे एक ललित निबंधकार, प्रखर आलोचक, गम्भीर चिन्तक, अच्छे कवि, प्रबुद्ध शिक्षक के रूप में हमारे समक्ष आते हैं।

प्रस्तावना – विद्यानिवास मिश्र जी ने साहित्य के क्षेत्र में सबसे अधिक सफलता निबंध के क्षेत्र में पायी है। मिश्र जी के लगभग पैंतिस निबंध संग्रह प्रकाशित हुये हैं। उनके निबंध संग्रहों का परिचय इस प्रकार दिया जा सकता है–

1. छितवन की छाँह :– इस निबंध संग्रह में निबंधकार के व्यक्तिगत जीवन की घटनाओं का भी आधार लिया गया है। 'हरसिंगार' शीर्षक में हरसिंगार का मानवीकरण किया गया है। 'गऊ चोरी' में भूमि, राजनीतिक तथा साहित्यिक चोरी पर क्षोभ व्यक्त किया गया है। 'सांझ भई', 'बसंन्त न आवई', 'जमना के तीरे-तीरे' निबंध में ऋतु वर्णन के साथ-साथ विभिन्न साहित्यकारों की स्मृतियों का भी चित्रण किया है। 'सख धर्ममय अस रथ जाकै' में राम के चरित्र की महानता का वर्णन है। 'दिया टिमटिमा रहा है' में भारत के ग्रामीण जीवन की विषमताओं का चित्रण है। उनके निबंध संग्रह के बारे में कहा जा सकता है 'छितवन की छाँह के सर्वथा मौलिक, व्यक्तिनिष्ठ किन्तु भारतीय जीवन की अजस्र परम्परा से संयुक्त निबंधों में लेखक ने जिस शैली का प्रयोग किया है, वह सांस्कृतिक आकलन की सर्वथा मौलिक पद्धति है।'[1]

2. कदम की फूली डाल :– प्रस्तुत संग्रह में शतकिन्जलिक्त कुसुम के अक्षय सौंदर्य तथा सौभाग्य की पूर्णता दिखाई गयी है। जिसमें इसकी आराधना तीन सोपानों में की गयी है। पहला है भ्रमण जिसके अन्तर्गत विन्ध्य भूमि के सौंदर्य दर्शन से आकलित अनुभव संग्रहित है। दूसरा है चिंतन जिसमें साहित्य के कुछ तात्कालिक प्रश्नों की जिज्ञासा है तीसरा है स्वप्न जिसमें बौद्धिक धरातल से उपर उठकर अन्त:करण अपनी भावभूमि में पहुँच कर आश्वस्त हो गया है।

3. तुम चंदन हम पानी :– यह विद्यानिवास जी का श्रेष्ठ निबंध संग्रह है। इसमें विविध विषयों पर लिखे गये निबंध है। 'कर्मयोग शास्त्र', 'कला शक्ति और शिव'; 'शिव जी की बारात', 'बौद्धवतारेय, 'मुरली का टेर', 'नम: शिवाय', 'हल्दी दूब और दधि अच्छत', 'तुम चंदन हम पानी' आदि निबंध हैं। इन शीर्षकों से ही स्पष्ट हो जाता है कि ये अपने भीतर पररपरा और संस्कृति को समेटे हुये हैं। मिश्र जी ने स्वयं कहा है– 'मेरे यह निबंध तीन प्रकार के है– भारतीय संस्कृति की मूल मान्यताओं पर लिखे गये निबंध, भारतीय संस्कृति के आराध्यों पर लिखे गये निबंध और भारतीय मांगलिक प्रतिकों पर लिखे गये निबंध।'[2]

4. आँगन का पंछी और बनजारा मन :– 'आँगन का पंछी' निबंध में आत्मव्यंजना है। 'पार्थिव धर्म' निबंध में धर्म की विवेचना है। 'आम्रमंजरी' निबंध में बसंत ऋतु के संदर्भ को आधार बनाया गया है। यफूल तथा पात' शीर्षक में नवीन विचारों के माध्यम से पूर्ववर्ती विचारों को आत्मसात किया गया है। 'नया दौर' व्यंग्यात्मक निबंध है। 'ये विपथाएँ' में साहित्यकारों से अपनी अस्मिता की रक्षा हेतु आवाहन किया गया है। इसके अतिरिक्त 'सदा आनन्द रहे ऐहि हारे', 'डयोढे दर्जे का खातिमा', 'नर-नारायण', 'मेरी रूमाल खो गई' इत्यादि अन्य रोचक निबंध हैं।

5. मैने सिल पहुचाई :– 'आहुति दो, आहुति की बेला है' निबंध चीनी आक्रमण के प्रसंग में लिखा गया है। जिसमें मिश्र जी ने ओजस्वी वाणी में लिखा है 'जिसकी पितृ भूमि पर दूसरे काबिज हो जायें, उस पुत्र के उत्पन्न होने से क्या लाभ है ? और उसे मरने से ही क्या हानि' ?[3], 'शब्द वाहिनी तमसा', 'आदर्शो का द्वन्द्ध' में देश के प्रति दायित्व बोध है। 'धान-पान' और 'नीली लपटे' ललित निबंध हैं। 'आँचलिक मित्रों से' में आँचलिक कथाकारों पर व्यंग्य किया गया है। 'भ्रमरानंदी रस वादी' नयी कविता के विचित्र स्वर पर लिखा गया व्यंग्यात्मक निबंध है।

6. मेरे राम का मुकुट भीग रहा है :– 'मुकुट मेखला और नुपुर' में हिमालय को भारत का मुकुट, विंध्याचल को मेखला तथा सागर को नुपुर माना गया है। 'अमर कंटक की सालती स्मृति' में अमर कंटक की यात्रा करते हुए वहाँ के सौदर्य का वर्णन किया गया है। 'राष्ट्रपति की छाया में' राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद की विंध्य प्रदेश की यात्रा के स्मरण है। 'होइ के शिला चन्द्रमुखी' निबंध में खजुराहो के वास्तविक सौंदर्य का वर्णन है। 'मेघदूत का संदेश'

शीर्षक निबंध में मेघदूत का विवेचन है। 'खामोशी की झील' एक दार्शनिक निबंध कहा जा सकता है। 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' में लोकगीत की एक पंक्ति को आधार बनाया गया है– 'मोरे राम के भीजै मुकुटवा, लछमन के पटुकवा, मोरि सीता के भीजै सेनुखा, तै राम घर लौटहिं।'[4]

7. बसंत आ गया पर कोई उत्कंठा नहीं :– 'परम्परा : आधुनिक भारतीय संदर्भ' में बुद्धिजीवियों द्वारा परम्पराओं को पुराना समझे जाने पर चिंता व्यक्त की गयी है। 'नयी पीढी की बेचैनी: भारतीय संदर्भ' में नयी एवं पुरानी पीढी के मध्य के वैचारिक विभेद को दर्शाया गया है। 'विश्वद्यिालय और न्यायालय' में विश्वविद्यालयों पर हावी राजनीतिक सत्ता के बढते प्रभाव पर विचार–विमर्श किया गया है। 'तटस्थता की अब गुन्जाइश नही' निबंध में आम चुनावों के बाद उभरने वाली परिस्थिति और समस्याओं को उजागर किया गया है। 'बसंत आ गया पर कोई उत्कंठा नही' में युगीन जीवन परिस्थितियों में व्याप्त उदासीनता पर निबंधकार ने क्षोभ व्यक्त किया है। मिश्र जी ने कहा है कि 'आज धर्म, श्रद्धा, विश्वास, आस्था, भरोसा, आशा शब्द से लगते है, वास्तविकता में ये मर चुके हैं।'[5]

8. कौन तू फुलवा बीनन हारी :– इसके समर्पण लेख में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी गयी है। 'कौन तू फूलवा बीनन हारी' इस संग्रह का प्रथम निबंध है। इसमें प्रेम और सौंदर्य के सूक्ष्मता के साथ विराटता के भी दर्शन होते है। 'गाते–गाते खेल' में लोकगीतों के माध्यम से खेले जाने वाले खेलों का वर्णन है। 'तीन नदियाँ तीन देश' में भारतीयता का दर्शन दिखाई देता है। 'भारतीय कौन' में भी भारतीयता के वास्तविक स्वरूप को दर्शाया गया है–'भारत सही मायने में एक भाव धारा है जो हर पानी में गंगा का आहवन करती है ऐसी गंगा जो अभिशप्त प्रेतों को तारने के लिये ही शंकर के जटाजूट से उतरती है, जो हर आदमी में चैतन्य की सम्भावना देखती है, हर काठ में चिंगारी देखती है, दूर आकाश के तारों में आत्मीयता की सम्भावना देखती है।'[6]

प्रस्तुत निबंध संग्रह मिश्र जी के प्रमुख संग्रहों में आते है उनका रचना साहित्य विराट है इसी क्रम में उनके निबंधों का वर्गीकरण भी किया जा सकता है। समाज सम्बंधी निबंधों की कड़ी में 'नयी पीढी की बेचैनी : भारतीय संदर्भ में', युद्ध और व्यक्तित्व', 'मैं अंधेरे में कतरा रहा हूँ', 'कटीले तारों के आर–पार' आदि निबंध हैं। समाज के विविध पक्षों की विवेचना इन निबंधों में की गयी है।

सांस्कृतिक निबंधों के अर्न्तगत 'जनमानस में राम', 'स्वाधीनता धूप का पानी', 'अग्र पुरूष', 'बसंत न आवै', 'भारतीय संस्कृति और समन्वय' प्रमुख हैं। संस्कृति मिश्र जी के निबंधों का मूल तत्व है। संस्कृति के विषय में उनका कथन है–'संस्कृति एक प्रकार की संस्कारात्मक परिणति है।'[7]

धर्म दर्शन से सम्बंधित निबंध सनातन परम्परा को दर्शाते है। उनके अनुसार 'वस्तुत: भारतीय मूल के सभी धर्मो के मूल्य, मान्यतायें और आदर्श एक रूप है। इन सभी ने भारतीय दर्शन, आध्यात्म या संस्कृति के मूल भूत तत्वों, मानकों और आदर्शो को अपनाया है।'[8] इस वर्ग के निबंधों में मुख्यत: 'शेफाली झर रही है', 'पूर्णमद: पूर्णमिदम्', 'नर–नारायण', 'राधा माधव हो गयी', 'जीवन अपनी देहरि पर' को स्थान दिया जा सकता है।

हास्य–व्यंग्यात्मक निबंधों में 'चिडिया रैन बसेरा', 'भ्रमरानंद के पत्र', 'भ्रमरानंद का पचड़ा', 'दादुर वक्ता भये', 'काठ के उल्लू का क्या करे' आदि हैं। वैचारिकता के साथ–साथ हास्य–व्यंग्य की छटा भी उनके निबंधों में दिखाई देती है। 'काठ के उल्लू का क्या करें' में वे लिखते है–'अपने देश में उल्लू बुद्धि का प्रमाण तो नहीं है। हाँ लक्ष्मी का वाहन है और लक्ष्मी की प्राप्ति में सहायक है तो यह भी मानना चाहिए कि उसमें धन कमाने की बुद्धि तो होगी– विशेषकर उस धन को कमाने की जो काला धन कहा जाता है, जो रात के अंधेरे में ही प्रकाश फैलाता है।'[9]

मिश्र जी के निबंध कथ्य की दृष्टि से विविधतापूर्ण है उनकी साहित्य साधना का क्षेत्र व्यापक है। उन्होने समाज, संस्कृति, धर्म, दर्शन जैसे विभिन्न विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है। अत: कहा जा सकता है कि उनका साहित्य पटल अति विशाल है और लोक कल्याणकारी है। वे भारतीय परम्परा का समर्थन करने वाले आधुनिक निबंधकार है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास, चतुर्दश भाग : डॉ0 विजेन्द्र स्नातक
2. तुम चंदन हम पानी, विद्यानिवास मिश्र; पृ0 11
3. मैने सिल पहुँचाई, विद्यानिवास मिश्र; पृ0 16
4. मेरे राम का मुकुट भीग रहा है, विद्यानिवास मिश्र; पृ0 105
5. बसंत आ गया पर कोई उत्कंठा नहीं, विद्यानिवास मिश्र; पृ0 135
6. कौन तू फुलवा बीनन हारी, विद्यानिवास मिश्र; पृ0 65
7. संचारिणी, विद्यानिवास मिश्र; पृ0 15
8. अमृतपुत्र, सं कुमुद शर्मा; पृ0 268.
9. भ्रमरानन्द का पचड़ा, विद्यानिवास मिश्र; पृ0 50

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Right to Free Legal Aid

Dr. Anuradha Tiwari *

*Principal, Dr. K.N.K. Law College, Ratlam (M.P.) INDIA

Introduction - Free Legal Aid means not a financial assistance but legal assistance :- which means giving free legal services to the poor and needy who are unable to afford the services of an advocate for the conduct of a case or a legal proceeding in any court, tribunal or before an Judicial authority.

Legal services provided free of cost or at State cost: - As per Directive Principle of State Policy State shall ensure that provide legal aid to the poor people Thereby, to achieve the social justice goals. The legislature enacted Special Act for it namely, Legal **Services Authorities Act 1987**.

Who is unable to afford the service of a lawyer to conduct legal proceedings or case in the court of law, tribunal, and forum or before any other authority? :- India is a nation where the majority of its population is under privileged, and many of them come under the BPL as many as 23.6% of the total population of India is living below the purchasing power party.

World Bank in 2011 released these data based on 2005's PPP (Purchasing Power Party).

Therefore for such people, it gets impossible to fight for their rights and stand on an equal fitting with their counterparts in the courtroom.

Significance: -

1. **The preamble of the Indian constitution basically aims to secure justice – socio economic and political –** When Indian society seeks to meet the challenge of socio economic inequality by its legislation and with the assistance of the rule of law, it seeks to achieve economic justice without any violent conflict. The idea of welfare state postulates unceasing pursuit of the doctrine of social justice.
2. **The machinery of administration of Justice easily accessible: - Justice P.N. Bhagwati** stated that legal aid means providing an arrangement in the society which makes the machinery of administration of Justice easily accessible and in reach of those who have to resort to it for enforcement of rights given to them by law.
3. **Duty of Welfare State U/DPSP:- According to** Article 38(1) :- The State shall secure the operation of the legal system promotes justice, on a basis of equal opportunity, and shall, in particular, provide free legal aid, by suitable legislation or schemes or in any other way, to ensure that opportunities for securing justice are not denied to any citizen by reason of economic or other disabilities.

In the case of Hussainara Khatoon vs. State of Bihar, it was held that if any accused is not able to afford legal services then he has a right to free legal aid at the cost of the state.

Statutory Provisions:-

1. **Arrange to provide free legal aid to those who cannot access justice due to economic and other disabilities. Art.39 A of the Constitution of India.**
2. **Article 39**– A **Constitution of India**: - It is the duty of the State to see that the legal system promotes justice on the basis of equal opportunity for all its citizens. It must therefore arrange to provide free legal aid to those who cannot access justice due to economic and other disabilities.
3. **Legal aid to the accused at State cost: - Sec. 304 of Code of Criminal Procedure, 1973.**
4. **Section 304 of Code of Criminal Procedure, 1973:-** Where, in a trial before the court of Session, the accused is not represented by a pleader & where it appears to the court that the accused has not sufficient means to engage a pleader, the court shall assign a pleader for his defence at State cost**.**
5. **In Khatri II Vs. State of Bihar, (1981) 1SCC; 1981 SCC (Cri) 228; 1981 Cri. LJ 470:-** The Constitutional duty to provide free legal aid arises from the time; the accused is produced before a Magistrate for the first time and continues whenever he is produced for remand.
6. **Right to Appeal Art. 142 of the Constitution r/w Articles 21 and Art. 39- A of Indian Constitution: -** A person entitled to appeal against his/her sentence has the right to ask for a counsel, to prepare and argue the appeal. (**Madav Hayavadanrao Hoskot Vs. State of Maharashtra (1978)3 SCC 544)**
7. **Free Legal aid to eligible candidate U/Sec 12 of LSAA 1987 -** the National Legal Services Authority of India was established on 9th Nov. 1995 U/ the Authority of Legal Services Authorities Act 1987. Its purpose is to provide free legal services to eligible candidates.

For example Services offered by the Legal Services Authority are

1. Payment of court and other process fee;
2. Charges for preparing, drafting and filing of any legal proceedings;
3. Charges of a legal practitioner or legal advisor;
4. Costs of obtaining decrees, judgments, orders or any other documents in a legal Proceeding;
5. Costs of paper work, including printing, translation etc.

Duty of Police: - According to Sec 41 B & Art. 22(1) & (2) In Sheela Barse V. State of Maharashtra it was held that the police must inform the nearest Legal Aid Committee about the arrest of a person immediately after such arrest. **Art 22 are meant to afford the earliest opportunity to the arrested person to remove any mistake, misunderstanding in the minds of the arresting authority &, also to know exactly what the accusation against him is so that he can exercise the second right, namely of consulting a legal practitioner of his choice & to be defended by him.**

Duty of Magistrate :- The Magistrates and sessions judges must inform every accused who appears before them and who is not represented by a lawyer on account of his poverty that he is entitled to free legal services at the cost of the State.

In **SukhDas Vs. Union Territory of Arunachal Pradesh (1986) 2 SCC 401; 1986 SCC (Cri) 166)** Failure to provide legal aid to an indigent accused, unless it was refused, would vitiate the trial. It might even result in setting aside a conviction and sentence.

List of Persons, who is entitled to get free legal aid? - Any person, who is:

1. A member of the scheduled castes or tribes;
2. Any person belonging to the SC ST suffering from natural calamity,
3. industrial worker,
4. Children,
5. Women
6. insane person,
7. Physically handicap,
8. Mentally disabled;
9. Persons in custody, In custody, including protective custody;
10. Those having annual income less **than Rs 1 lakh.**
11. A victim of trafficking in human beings or beggar;
12. A victim of mass disaster, ethnic violence, caste atrocity, flood, drought, earth quake,
13. Facing a charge which might result in imprisonment; (**Khatri II Vs. State of Bihar, (1981) 1SCC); and**
14. Unable to engage a lawyer and secure legal services on account of reasons such as poverty, indigence situation;
15. In cases of great public importance;
16. Special cases considered deserving of legal services.

Grounds of rejection of application:-If applicant -

1. Has adequate means to access justice;
2. Does not fulfill the eligibility criteria;
3. Have no merits in his application requiring legal action.

Legal Aid will not be available: - Cases for which legal aid is not available:

1. Cases in respect of defamation, malicious prosecution, contempt of court, perjury etc.
2. Proceedings relating to election;
3. Cases where the fine imposed is not more than Rs.50/-;
4. Economic offences and offences against social laws;
5. Cases where the person seeking legal aid is not directly concerned with the proceedings
6. And whose interests will not be affected.

Withdrawal of legal services withdrawn- The legal services committee can withdraw the services if,

1. The aid is obtained through misrepresentation or fraud;
2. Any material change occurs in the circumstances of the aided person;
3. There is misconduct, misbehavior or negligence on the part of the aided person;
4. The aided person does not cooperate with the allotted advocate;
5. The aided persons appoints another legal practitioner;
6. The aided person dies, except in civil cases;
7. The proceedings amount to misusing the process of law or of legal service.

Conclusion - Legal aid is prescribed, the provision of assistance to the people who are unable to afford legal representation and access to the court system.

It is regarded as central providing access to justice by ensuring equality before law.

Above mentioned Constitutional Articles describes the development of legal aid and its principle like

1. Right counsel
2. Right to reasonable, fair & just procedure.
3. Right to be heard. U/Art 32 of Indian Constitution

Reference:-

1. Personal Research.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Need & Importance of Freedom of Speech and Expression in India

Priyanka Sarkar* Dr. B.K. Yadav**

* Research Scholar, Om Sterling Global University, Hisar (Haryana) INDIA
** Research Guide and Dean, Om Sterling Global University, Hisar (Haryana) INDIA

Introduction - The Constitution of India guarantees freedom of speech and expression to all citizens. It is enshrined in Article 19(1)(a) .The Right of freedom of Speech and Expression implies that every citizen has the rights to express his views, opinions, belief, and convictions freely by mouth, writing, printing or through any other methods.

The supreme court held the freedom of Speech and Expression includes the protection of certain rights regarding freedom of speech etc. Article 19 in the Indian constitution gives us the freedom of speech and expression with some reasonable restrictions under as follows:

It should not affect the security of the State, friendly relations with foreign States, public order, decency or morality, or in relation to contempt of court, defamation or incitement to an offense. Nothing in sub-clause of the said clause shall affect the operation of any existing law in so far as it imposes, or prevent the State from making any law imposing, in the interests of the general public, reasonable restrictions on the exercise of the right conferred by the said sub-clause, and, in particular, nothing in the said sub-clause shall affect the operation of any existing law in so far as it relates to, or prevent the State from making any law relating to it.

Freedom of expression has been humanity's yearning in times ancient and modern. Similarly, censorship or reasonable restrictions are also ancient and universal phenomenon. The founders of Indian constitutions are aware about co-existence of conflicting Right and Restrictions and enacted Article 19 with clear mention of Reasonable restrictions. This has further evolved with progressive judgements of Indian Judicial System. The freedom of expression cannot be absolute in an orderly society and this raises crucial issues of the permissible limits of restrictions on freedom of expression. Such issues involve consideration of the nature of the restriction, its scope and extent, its duration and the presence or absence of an efficacious corrective machinery to challenge the restriction. Generally it is the judiciary which performs the task of reconciling freedom of expression with certain imperatives of public interest such as national security, public order, public health or morals, and individual rights such as the right to reputation and the right of privacy. The crux of the matter is whether censorship is ever justifiable and, if so, in what circumstances. In India Judiciary has taken enormous effort to ensure delicate balance between Freedom of Speech and Expression and Reasonable restriction. It has pronounced several land mark judgements.

Elements:

1. This right is available only to a citizen of India and not to foreign nationals.
2. The freedom of speech under Article 19(1) (a) includes the right to express one's views and opinions at any issue through any medium, e.g. by words of mouth, writing, printing, picture, film, movie etc.
3. This right is, however, not absolute and it allows Government to frame laws to impose reasonable restrictions in the interest of sovereignty and integrity of India, security of the state, friendly relations with foreign states, public order, decency and morality and contempt of court, defamation and incitement to an offence.
4. This restriction on the freedom of speech of any citizen may be imposed as much by an action of the State as by its inaction. Thus, failure on the part of the State to guarantee to all its citizens the fundamental right to freedom of speech and expression would also constitute a violation of Article 19(1) (a).

Article19(1)(a)

According to Article 19(1)(a): All citizens shall have the **right to freedom of speech and expression.**

1. This implies that all citizens have the right to express their views and opinions freely.
2. This includes not only words of mouth, but also a speech by way of writings, pictures, movies, banners, etc.
3. The right to speech also includes the right not to speak.
4. The Supreme Court of India has held that participation in sports is an expression of one's self and hence, is a form of freedom of speech.
5. In 2004, the SC held that hoisting the national flag is also a form of this freedom.

6. Freedom of the press is an inferred freedom under this Article.
7. This right also includes the right to access information because this right is meaningless when others are prevented from knowing/listening. It is according to this interpretation that the **Right to Information (RTI)** is a fundamental right.
8. The SC has also ruled that freedom of speech is an inalienable right adjunct to the right to life (Article 21). These two rights are not separate but related.
9. Restrictions on the freedom of speech of any citizen may be placed as much by an action of the state as by its inaction. This means that the failure of the State to guarantee this freedom to all classes of citizens will be a violation of their fundamental rights.
10. The right to freedom of speech and expression also includes the right to communicate, print and advertise information.
11. This right also includes commercial as well as artistic speech and expression.

Importance Of Freedom Of Speech And Expression - A basic element of a functional democracy is to allow all citizens to participate in the political and social processes of the country. There is ample freedom of speech, thought and expression in all forms (verbal, written, broadcast, etc.) in a healthy democracy.

Freedom of speech is guaranteed not only by the Indian Constitution but also by international statutes such as the Universal Declaration of Human Rights (declared on 10th December 1948), the International Covenant on Civil and Political Rights, the European Convention on Human Rights and Fundamental Freedoms, etc.

1. This is important because democracy works well only if the people have the right to express their opinions about the government and criticise it if needed.
2. The voice of the people must be heard and their grievances are satisfied.
3. Not just in the political sphere, even in other spheres like social, cultural and economic, the people must have their voices heard in a true democracy.
4. In the absence of the above freedoms, democracy is threatened. The government will become all-too-powerful and start serving the interests of a few rather than the general public.
5. Heavy clampdown on the right to free speech and free press will create a fear-factor under which people would endure tyranny silently. In such a scenario, people would feel stifled and would rather suffer than express their opinions.
6. Freedom of the press is also an important factor in the freedom of speech and expression.
7. The second Chief Justice of India, M Patanjali Sastri has observed, *"Freedom of Speech and of the Press lay at the foundation of all democratic organizations, for without free political discussion no public education, so essential for the proper functioning of the process of Government, is possible."*
8. In the Indian context, the significance of this freedom can be understood from the fact that the Preamble itself ensures to all citizens the liberty of thought, expression, belief, faith and worship.
9. Liberal democracies, especially in the West, have a very wide interpretation of the freedom of speech and expression. There is plenty of leeways for people to express dissent freely.
10. However, most countries (including liberal democracies) have some sort of censorship in place, most of which are related to defamation, hate speech, etc.
11. The idea behind censorship is generally to prevent law and order issues in the country.

The Need To Protect Freedom Of Speech - There are four justifications for freedom of speech. They are:

1. For the discovery of truth by open discussion.
2. It is an aspect of self-fulfilment and development.
3. To express beliefs and political attitudes.
4. To actively participate in a democracy.

Restriction On Freedom Of Speech - Freedom of speech is not absolute. Article 19(2) imposes restrictions on the right to freedom of speech and expression. The reasons for such restrictions are in the interests of:

1. Security
2. Sovereignty and integrity of the country
3. Friendly relations with foreign countries
4. Public order
5. Decency or morality
6. Hate speech
7. Defamation
8. Contempt of court

The Constitution provides people with the freedom of expression without fear of reprisal, but it must be used with caution, and responsibly.

Freedom of Speech on Social Media - The High Court of Tripura has held that posting on social media was virtually the same as a fundamental right applicable to all citizens, including government employees. It also asserted that government servants are entitled to hold and express their political beliefs, subject to the restrictions laid under the Tripura Civil Services (Conduct) Rules, 1988.

In another significant judgment, the HC of Tripura ordered the police to refrain from prosecuting the activist who was arrested over a social media post where he criticized an online campaign in support of the Citizenship Amendment Act (CAA), 2019 and warned people against it. The High Court held that these orders are in line with the very essence of the Indian Constitution.

Hate Speech - The Supreme Court of India had asked the Law Commission to make recommendations to the Parliament to empower the Election Commission to restrict the problem of "hate speeches" irrespective of, whenever made. But the Law Commission recommended that several

factors need to be taken into account before restricting a speech, such as the context of the speech, the status of the maker of the speech, the status of the victim and the potential of the speech to create discriminatory and disruptive circumstances.

Freedom of Speech in Art - In relation to art, the court has held that "the art must be so preponderating as to throw obscenity into a shadow or the obscenity so trivial and insignificant that it can have no effect and may be overlooked."

There are restrictions in what can be shown in cinemas and this is governed by the Cinematograph Act, 1952 by the Censor Board in India.

Safeguards for Freedom of Speech and Expression under Article 19(2)

The Constitution of India guarantees freedom of speech and expression to all its citizens, however, these freedom are not absolute because Article 19 (2) of the constitution provides a safeguard to this freedom under which reasonable restrictions can be imposed on the exercise of this right for certain purposes. Safeguards outlined are discussed below- Article 19(2) of the Indian constitution allows the state to make laws that restrict freedom of speech and expression so long as they impose any restriction on the –

1. The state's Security such as rebellion, waging war against the State, insurrection and not ordinary breaches of public order and public safety.
2. Interest id Integrity and Sovereignty of India – this was added by the 16th constitutional amendment act under the tense situation prevailing in different parts of the country. Its objective is to give appropriate powers to impose restrictions against those individuals or organizations who want to make secession from India or disintegration of India as political purposes for fighting elections.
3. Contempt of court: Restriction can be imposed if the speech and expression exceed the reasonable and fair limit and amounts to contempt of court.
4. Friendly relations with foreign states: It was added by the First Amendment Act, 1951 to prohibit unrestrained malicious propaganda against a foreign-friendly state. This is because it may jeopardize the maintenance of good relations between India and that state.
5. Defamation or incitement to an offense: A statement, which injures the reputation of a man, amounts to defamation. Defamation consists in exposing a man to hatred, ridicule, or contempt. The civil law in relating to defamation is still uncodified in India and subject to certain exceptions.
6. Decency or Morality – Article 19(2) inserts decency or morality as grounds for restricting the freedom of speech and expression. Sections 292 to 294 of the Indian Penal Code gives instances of restrictions on this freedom in the interest of decency or morality. The sections do not permit the sale or distribution or exhibition of obscene words, etc. in public places. However, the words decency or morality is very subjective and there is no strict definition for them. Also, it varies with time and place.

Need of these Safeguards of Freedom of Speech & Expression

1. In order to safeguard state security and its sovereignty as a speech can be used against the state as a tool to spread hatred.
2. To strike a social balance. Freedom is more purposeful if it is coupled with responsibility.
3. Certain prior restrictions are necessary to meet the collective interest of society.
4. To protect others' rights. Any speech can harm a large group of people and their rights, hence reasonable restrictions must be imposed so that others right is not hindered by the acts odd one man.

Right To Information - As mentioned before, the right to information is a fundamental right under Article 19(1). The right to receive information has been inferred from the right to free speech. However, the RTI has not been extended to the Official Secrets Act.

Reasonable Restriction On The Basis Of Land Mark Judgement - The freedom of speech & expression is subject to reasonable restrictions and Supreme Court of India has included following aspect in the meaning of reasonable restriction

A. Security of the state
B. Friendly relation with foreign state
C. Public order
D. Decency and morality
E. Contempt of court
F. Incitement to an offence
G. Sovereignty and Integrity of India

Conclusion - Reasonable restrictions can be imposed on the freedom of speech and expression, in the interest of the security of the State. The term security of state has to be distinguished from public order. For security of state refers to serious and aggravated forms of public disorder, example rebellion, waging war against the state [entire state or part of the state], insurrection etc. In the case of People's Union for Civil Liberty y versus Union of India AIR 1997 SC 568 public interest litigation (PIL) was filed under Article 32of the Indian Constitution by PUCL, against the frequent cases of telephone tapping. The validity of Section 5(2) of The Indian Telegraph Act, 1885 was challenged. It was observed that "occurrence of public emergency" and "in the interest of public safety" is the sine qua non for the application of the provisions of Section 5(2). If any of these two conditions are not present, the government has no right to exercise its power under the said section. Telephone tapping, therefore, violates Article 19(1) (a) unless it comes within the grounds of reasonable restrictions under Article 19(2).

1. The right of freedom of Speech and Expression available to ONLY citizen. 2. It is not only granted by Indian constitution but also various international conventions like Universal declaration of Human rights, International convention on Civil and Political Rights. 3. It includes Freedom of Press, Freedom of Commercial Speech, Right to

Broadcast, Right to Information, Right to Criticize, Right to expression beyond national boundaries, Right not to speak or Right to silence is also included in the Right to speech and expression. 4. This right is subject to reasonable restrictions stated under Article 19 (2) and elaborated and pronounced by various SC judgments. For example sovereignty and integrity of India, security of the state, friendly relations with foreign states, public order, decency and morality and contempt of court, defamation and incitement to an offence. 5. Public order, a ground of reasonable restriction, is different from Law and order. 6. Right to information, a major enactment is result of progressive judicial decision with respect to Article 19 (1) (a). 7. It is one of the most basic elements of a healthy, open minded, and flourishing democracy,

References:-

1. Kundali kumara swamy and others vs state of A.P.and others on 26 April ,1991
2. M.L Krishnamurthy and others vs the district revenue officer on 4 April. 1989
3. Muniammal vs vadamalai om 9 August, 1996
4. CASE SUMMARY:Human rights, human lives: a guide to the Human Rights Act for public authorities.
5. The Constitution of India, part III, Fundamental Rights
6. All Answers ltd, ‘Freedom of Speech and Expression’ (Lawteacher.net, July 2021)

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Restrictions on Freedom of Expression in India

Loknath Paul* Dr. B.K. Yadav**

* Research Scholar, Om Sterling Global University, Hisar (Haryana) INDIA
** Research Guide and Dean, Om Sterling Global University, Hisar (Haryana) INDIA

Introduction - There are certain grounds on which the Constitution of India introduces restrictions. Article 19 (2) of Indian Constitution empowers the State to instill reasonable restrictions on the following grounds:

1. Security of the State;
2. Friendly Relation with Foreign States;
3. Public Order;
4. Decency and morality;
5. Contempt of court;
6. Defamation;
7. Incitement to offence;
8. Integrity and Sovereignty of India.

1. Security of the State - Under Article 19 (2) some reasonable restrictions can be imposed on freedom of speech and expression in the interest of Security of the state. As it is of great importance and the government has the power to put restrictions on the activities which affect the security of the state. Consequently, freedom of speech and expression with regard to an individual, if he is impelling or promoting the commission of a crime, for example, are matters which would undermine State security. Restrictions can be put on that individual.

In the case of *P.U.C.L v. Union of India* the PIL was filed under Article 32 of the Indian Constitution by PUCL regarding phone tapping. The validity of Section 5 (2) of the Telegraph Act was challenged in this case. Section 5 (2) states the essential elements which need to be fulfilled for the application of the Section is in the interest of public safety and any occurrence of public safety. The government has no right to exercise their power in the said Section if any of these two conditions are not fulfilled. Telephone tapping is violating Article 19 (1) of the Indian Constitution, until and unless it comes under the grounds of restrictions under Article 19 (2).

2. Sovereignty and Integrity of India - This ground was added to Article 19 (2) by the Constitution (16th Amendment) Act, 1963, as it is the foremost duty to maintain the sovereignty and integrity of India. This imposes a restriction on freedom of speech and expression and does not permit anyone to challenge the sovereignty of India. It restricts everyone from saying something causing threat to the integrity of India.

3. Friendly relations with Foreign States - A state can impose a restriction on freedom of speech and expression if it affects the friendly relations with other States. It was added to the constitution of India by the (1st amendment) Act, in 1951 It is to be noted that no other constitution in the world has a similar provision in it.

4. Public Order - The Constitution (1st Amendment), Act, 1951 also added this ground to the constitution, so as to meet the circumstances emerging from the Supreme Court's decision. In the case of *Romesh Thapar v. State of Madras* the Supreme Court held that the public order is different from the security of the state and from the law and order. Also, seen in the case of local breaches of public order there are no grounds for imposing restrictions on public order. The Supreme Court said that public order is an expression of the public peace, public safety and tranquillity. In this case, there was a ban on a Journal by the law in the State of Madras in the interest of public order. The court held that the restrictions imposed by the government were only on the grounds mentioned in Article 19(2). So, in this case, the decision was taken by the Supreme court and the expression "public order" was added to Article 19 (2) to impose certain restrictions on the freedom of speech and expression.

5. Decency and Morality - The words decency and morality are defined in Section 292 to Section 294 of IPC. It empowers the government to put certain restrictions on freedom of speech and expression under this. These sections of IPC restrict the distribution or sale of obscene books etc. in public.

6. Contempt of Court - The right to freedom of speech and expressions don't allow anyone to contempt of court. Reasonable restriction can be imposed on freedom of speech and expression. Contempt of court is defined in Section 2 of Contempt of Courts Act, 1971. It covers both civil contempt and criminal contempt as well. But, now Indian Contempt Law was amended in the year 2006 and it added to make truth as a defence.

7. Defamation - Article 19(2) imposes a restriction on a person to prevent him from making a defamatory statement which defames the reputation of another person. A person is

known by his/her reputation in the society, so the constitution puts restrictions on freedom of speech. Defamation is a crime under Section 499 and Section 500 of IPC. Right to freedom of speech and expression doesn't give any person an absolute right. It doesn't give a right to a person to hurt any other person's reputation.

8. Incitement to an Offence - The Constitution (1st Amendment Act), 1951 added the incitement to an offence ground. The right to freedom of speech and expression prohibits people from committing an offence. The word Offence is defined in the General Clause Act which states that offence is an act or omission done by a person and is punishable by any law for the time being in force.

It is very evident from the above analysis that these grounds contained in Article 19 (2) are concerned about the national security of India and the interest of society. The grounds such as the sovereignty of India, the security of the states, public order and friendly relation with foreign states are concerned with national security. Whereas grounds related to it in the interest of society are decency and morality, contempt of court, defamation and incitement to an offence.

Freedom of press - The freedom of press is implicit in the right to freedom of speech and expression. It gives rights to share and propagate their views through television, radio or through print media. With objects and perspectives, the Preamble of the Indian Constitution guarantees to all citizens, freedom of thought, love, expression and belief. The established importance of the ability to speak freely comprises in the Preamble of Constitution and is changed as a basic and human right in Article 19(1)(a) as "the right to speak freely and to express".

- *Union of India v. Association of Democratic Reforms*

The Supreme Court held that the uneven data, disinformation, deception and non-information, all similarly make an uninformed citizenry which makes democracy a joke. The right to speak freely and to express incorporates the right to give and receive information which includes freedom to hold opinions.

- ***Romesh Thapar v. State of Madras -*** In this case, the Hon'ble Court held that the freedom of press is a part of freedom of speech and expression. It was observed that the Freedom of Speech and of Press lay at the foundation of all democratic organizations, for without free political discussion, no public education, so essential for the proper functioning of the process of Government, is possible. In this case, the state puts a restriction on entry and circulation of the English Journal named as 'Crossroad'. Journal is printed and published in Bombay, which is banned by the State of Madras. The court held that to be a violation of freedom of speech and expression without circulation of a journal, mere publication of it is of little value.
- ***Indian Express Newspapers v. Union of India -*** In this case the Court held that the press plays a very important role in the democratic machinery. In the present free world, the opportunity of press is the core of social and political intercourse. The press has now expected to do the job of the teacher making formal and non-formal instruction conceivable in an enormous scope especially in the developing world, where TV and different sorts of communication are not as yet accessible for all areas of the society. The motivation behind the press is to advance the public interest by distributing realities and assessments without which a popularity based electorate [Government] can't make responsible decisions. Papers being purveyors of news and perspectives having an orientation on open organization all the time conveys material which would not be satisfactory to Governments and different authorities.
- ***Brij Bhushan v. State of Delhi -*** In this case the Supreme Court struck down the validity of order for forcing pre-censorship on an English Weekly of Delhi which coordinated the editorial manager and publisher of a paper to submit for scrutiny, in copy, before the production, every single common issue, all the issues and news and perspectives about Pakistan, including photos, and kid's shows, on the ground that it was a limitation on the freedom of the press.

Freedom of expression and social media - Social media contains basically web and cell phone-based instruments for sharing and talking information. It mixes innovation, broadcast communications, and social association and gives a stage to convey through words, pictures, movies, and music. Online networking incorporates electronic and mobile technologies used to transform communication into interactive dialogue.

The Internet and Social Media has become an essential specialized instrument through which people can practice their privilege of freedom of expression and exchange their thoughts and information. In the previous years, a growing moment of individuals around the globe individuals upholding for change, equity, correspondence, the responsibility of the incredible and regard for human rights. In such developments, the Internet and Social Media have frequently assumed a key job by empowering individuals to connect and exchange information in a split second and by introducing a feeling of solidarity. It is seen that the right to freedom of speech and expression is perceived as a principle directly in whatever medium it is practiced under the Constitution of India. Furthermore, in the light of the developing utilization of web and online life as a mode of practicing this right, access to this medium has likewise been perceived as a fundamental human right.

Everyone has the right to freedom of opinion and expression; this right includes freedom to hold opinions without interference and to seek, receive and impart information and ideas through any media and regardless of frontiers. Article 19 (1) of the Constitution of India likewise gives to the residents of India the right to freedom of speech and expression. This freedom implies the option to communicate one's feelings and conclusions freely by

speech, composing, printing, pictures or some other mode. It also includes the right to propagate or publish the views of other people. Article 19(2) provides certain grounds for imposing reasonable restrictions on this right. Only content that falls within these parameters as authorized by law could legitimately be considered "objectionable". Rather than defining a new category of "objectionable speech", what therefore would be useful is to assess all of India's laws and policies as they relate to freedom of expression against these standards set by the Constitution. This would ensure that the distinction between content that is socially objectionable and that is legally objectionable remains firmly in place, as it should be.

In the case of Anuradha Bhasin V Union of India, the petitioner challenged the internet shutdown in the state of Jammu and Kashmir. The Court held that the "freedom to access the internet" is a fundamental right and it is protected under Article 19 (1) (a); the freedom of speech and expression of the Indian Constitution. The requests of suspending the internet were put on hold under the Internet Suspension Rules were dependent upon judicial review, the court, however, avoided considering the shutdown in the Union Territory as illegal.

Should freedom of expression have limits?

Right to freedom is a very comprehensive domain whereby citizens are entitled to be free with regard to their movement, occupation, assemblies etc. But as it is said that a right of one should not hinder the right of another. Moreover, everyone has a duty towards the state, one should use Freedom of expression in a way that it should not provoke any person or incite violence. Similarly, with every right so conferred has a consequence if its domain is not circumscribed. Hence, this right is not absolute but comes with certain restrictions. The restrictions that are in coherence with the national interest can be illustrated as-

Security of State, Friendly relations with foreign states, Public Order, Decency and Morality, Contempt of Court, Defamation, Incitement to an offence, Sedition.

While having an overview of these restrictions it is evident that the intention of the legislature by giving a right to freedom is to look after others interest as well, including state and individuals. Had these restrictions been not imposed it would be highly chaotic for the courts to balance the rights amongst different entities of the State. The rights and duties go hand in hand and never be looked through different visions. For example, my right to freedom of speech cannot take away the dignity of some other individual, hence defamation as a restriction comes to the rescue. In a healthy democracy, it is very essential to keep a bay with people's rights. Courts in India have several times come into being for interpretations and reasonable application wherever there is a conflict. Without restrictions being imposed these rights will lose their value and every individual or state entity will lose the boundary they live in and encroach upon others' rightful enjoyment.

Conclusion - Every citizen of India enjoys the rights of freedom of speech and expression guaranteed under Article 19 (1) (a) of the Constitution of India. Expressing one's opinions or views through speech is the right of every individual. It is not limited to only expressing one's views through words but an individual has a right to circulate those views or opinions in writing, through advertisements or through audiovisuals. Right to freedom of speech and expression also comprises the right to information, right to press, right to broadcast, right to commercial speech. Reasonable restrictions can be imposed on the right to freedom of speech and expression under Article 19 (2) of the Indian Constitution. The rights granted under Article 19 is not an absolute right. They can be restricted in case of national security and in the interest of society.

References:-

1. The Constitution of India, part III, Fundamental Rights
2. All Answers ltd, 'Freedom of Speech and Expression' (Lawteacher.net, July 2021)
3. https://www.lawteacher.net/free-law-essays/constitutional-law/freedom-of-speech-and-expression-constitutional-law-essay.php?vref=1> accessed 21 July 2021
4. *The case of Brij Bhushan v. State of Delhi*(AIR 1950 SC 129),
5. *The case Indian Express Newspapers v. Union of India*
6. The Constitution (First Amendment) Act, 1951.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Emergence of Cyber Crimes During Covid 19 Pandemic

Shounak Bhattacharjee* Dr. B.K. Yadav**

* Research Scholar, Om Sterling Global University, Hisar (Haryana) INDIA
** Research Guide and Dean, Om Sterling Global University, Hisar (Haryana) INDIA

Introduction - The COVID-19 pandemic was a remarkable, unprecedented event which altered the lives of billions of citizens globally resulting in what became commonly referred to as the *new-normal* in terms of societal norms and the way we live and work. Aside from the extraordinary impact on society and business as a whole, the pandemic generated a set of unique cyber-crime related circumstances which also affected society and business. The increased anxiety caused by the pandemic heightened the likelihood of cyber-attacks succeeding corresponding with an increase in the number and range of cyber-attacks.

The pandemic of COVID-19 and the imposed lockdown, has led to more people to be confined at home with many more hours to spend online each day and increasingly relying on the Internet to access services, they normally obtain offline.

The dangers of cyber-crime have been there for many years, but the increase in the percentage of the population connected to the Internet and the time spent online, combined with the sense of confinement and the anxiety and fear generated from the lockdown, have provided more opportunities for cybercriminals to take advantage of the situation and make more money or create disruption. It is important to note that some more vulnerable segments of the population, such as children need to spend more time online for services such as schooling. This seismic change in how we live our lives and use the Internet has prompted a proliferation of e-crimes.

Common cybercrime techniques, such as phishing, have seen a spike. Phishing is the fraudulent practice of inducing individuals to reveal personal information, such as passwords and credit card numbers through fake websites or emails. New data gathered by Google and analyzed by Atlas VPN, a virtual private network (VPN) service provider, is shedding more light on the scope of this. According to the report, in January, Google registered 149k active phishing websites. In February, that number nearly doubled to 293k. In March, though, that number had increased to 522k – a 350% increase since January.

Review of Previous Cases/Reports/ Research:

Dr. Harjinder Singh Lallie is an Associate Professor at the University of Warwick and a visiting academic at the University of Oxford. Harjinder holds a Ph.D. in cyber security, an M.Phil, an M.Sc., and a BSc. Harjinder has more than twenty years of teaching experience and currently leads the M.Sc.Cyber Security and Management degree. Harjinder's research focuses on the area of complex cyber-attack modeling, digital forensics and the use of AI in digital forensics.

He has published numerous research papers in the world's top cyber security journals. Harjinder has held numerous conference committee memberships; he acts as an external examiner and has conducted a number of national and international institutional reviews. Recently, he acted as consultant to the International Atomic and Energy Agency (IAEA) at the United Nations in Vienna.

Dr Lynsay A. Shepherd is a Lecturer in Cybersecurity and Human-Computer Interaction at Abertay University, Dundee, and works within the School of Design and Informatics. Lynsay holds a Ph.D. in Usable Security, an M.Sc. in Internet Computing, and a B.Sc. (Hons) in Computing. Lynsay's research interests currently focus on the human aspects of cybersecurity, examining end-user security behaviour, and exploring methods to improve security awareness.

Dr Jason R. C. Nurse is an Associate Professor in Cyber Security in the School of Computing at the University of Kent, UK and the Institute of Cyber Security for Society (iCSS), UK. His research interests include security risk management, corporate communications and cyber security, secure and trustworthy Internet of Things, insider threat and cybercrime. Jason was selected as a Rising Star for his research into cybersecurity, as a part of the UK's Engineering and Physical Sciences Research Council's Recognising Inspirational Scientists and Engineers (RISE) awards campaign. Dr Nurse holds a Ph.D. in cyber security, an M.Sc. in Internet Computing and a B.Sc. in Computer Science and Accounting.

Report Of Delhi Police: The Delhi Police has registered more than 600 cases and arrested over 300 people in connection with Covid-related crimes, officials said on Saturday. According to the data shared by police, 109 cases of alleged hoarding and black-marketing of oxygen cylinders

and corona virus drugs were registered between 13 April and 18 May. While 492 cases of alleged cheating of people on the pretext of providing them Covid-related help were lodged during the same period, police said.

A total of 312 people have been apprehended, they said, adding most of the arrests were made outside the national capital. Police have blocked around 300 bank accounts and more than 900 phone numbers. The cheated amount recovered during this period would be in crores, they said. A total of 3,152 items, including 557 Remdesivir injections, 808 oxygen concentrators, 537 fire extinguisher cylinders, 683 pulse oximeters and 288 oxygen cylinders have been seized, they said.

The data will be updated as the Delhi Police and Cyber Cell helplines continue to receive several calls every day about these scams, police said. The Delhi Police Crime Branch, Cyber Prevention Awareness and Detection (CyPAD) and district cyber units have been working on these cases. Teams have been sent to several states in order to arrest the accused, police said.

Recently, police caught four people from Bihar for allegedly duping people across the country on the pretext of providing oxygen cylinders and concentrators.

The accused cheated more than 300 people under the guise of helping them. Police have seized three bank accounts which the gang used for transactions worth over Rs 1.30 crores.

TRAINIG AND ARRANGEMENT: Amid the COVID-19 pandemic, over 1,300 Delhi Police personnel have been trained to tackle cyber-crime through video-conferencing. Measures were taken to pay attention to the urgent need for awareness to handle common online frauds such as phishing and social media frauds.

As per the details available, the process was a part of the Police force' decisive measures against crime. According to the news agency *ANI* report, Delhi Police Cyber Cell Deputy Commissioner of Police Anyesh Roy said, Delhi Police had organised cutting-edge digital platform techniques to detect online crime for close to 1,300 personnel.

During the lockdown period between April and July 2020, with increased dependence on the virtual world amid the corona virus pandemic, the city saw a two-fold increase in cybercrime such as cases of extortion by morphing videos of people (especially related to sexual conduct).

To keep an eye on the cyber world crime, Delhi Police Cyber Cell took measures against cyber crimes at multiple levels through their three-tiered cyber investigation structure and handled web frauds.

During the second wave of COVID-19, in which India has witnessed a near-collapse of its public healthcare system, citizens have become victims of phishing (fraudulent websites were projected as COVID-19 resources or leads for hospital beds/oxygen cylinders), online sales of counterfeit drugs and bank fraud through fake donation links, including sham versions of the 'PM CARES Fund'.

Action Taken By The Police:

Over 1,000 Delhi Police personnel trained to tackle cyber-crime amid pandemic Teams of the Delhi Police apprehended cyber-criminals from far-off states such as Telangana, Maharashtra, Bihar, Jharkhand, Rajasthan, West Bengal, etc despite movement restrictions amid the pandemic. The force took measures against cyber crimes at multiple levels through their three-tiered cyber investigation structure and handled common online frauds such as phishing, social media frauds. (I Stock photo/Representative Image)

In light of the upward trend in cybercrimes throughout the Covid-19 pandemic, about 1,300 personnel of the Delhi Police have been trained through video-conferencing as part of the Police force' decisive measures against crime.

Teams of the Delhi Police apprehended cyber-criminals from far-off states such as Telangana, Maharashtra, Bihar, Jharkhand, Rajasthan, West Bengal, etc despite movement restrictions amid the pandemic. "Multiple sessions were conducted for police personnel on Internet Protocol Detail Record (IPDR) analysis, crypto-currency fraud investigations, illegal call centre investigations and investigation of frauds using new financial instruments (UPI, QR Code),"

The force took measures against cyber crimes at multiple levels through their three-tiered cyber investigation structure and handled common online frauds such as vishing, social media frauds.

Steps/measures taken so far by the Govt. : In 2020, the Central government set up the Indian Cyber Crime Coordination Center ('I4C'), consisting of seven distinct agencies including the National Cybercrime Reporting Portal, Forensic Laboratory and the Threat Analytics Unit. The severity of the problem was clearly brought out by the fact that as of February 28, 2021, the I4C reporting portal (www.cybercrime.gov.in) had already received 3,17,439 reports of cyber crime incidents and 5,771 FIRs.

The portal also provides for a Citizen Financial Cyber Frauds Reporting and Management System for immediate prevention of money loss, along with a designated helpline number - 155260. A special cyber crime reporting system has also been launched this year by the Bengaluru Police, whereby victims of financial fraud can make a complaint on a designated phone number and the police will register the reported case as a Cybercrime Incident Report (CIR). The said CIR is referred to a particular control room, which will coordinate with the Reserve Bank of India (RBI) to freeze the beneficiary's accounts within a short period of two hours. Enforcement agencies such as state police departments have also been holding awareness workshops for their personnel to address common online frauds that have increased during COVID-19, including specific sessions on Internet Protocol Detail Record (IPDR) analysis and crypto currency fraud. Public alerts and advisories have been issued by the government for citizens to beware of counterfeit products, phishing attacks and spread of misinformation

during the pandemic.

Courts are also cognizant of the urgent need for stringent action. Recently, while considering an SLP against an order dismissing the anticipatory bail plea of a petitioner accused of theft of software and illegal copying of database and source code, the Supreme Court remarked that in cases of hacking and data theft, offences under the Indian Penal Code will also be invoked in addition to the penal provisions of the Information Technology Act, 2000 (IT Act).

The Jharkhand High Court also sought a reply from the RBI for devising a mechanism to track and recover fraudulent money, while hearing a PIL seeking to curb the growth of cyber crimes in the State that is home to the Netflix-famous phishing scams in Jamtara district. Earlier this month, the Delhi High Court rejected the anticipatory bail application of an accused in a fake call centre fraud case, while observing that *"...the entire conspiracy and the manner in which various data of the victims were collected and the money trail pursuant to the cheating is required to be unearthed."*

Although Courts are coming down on criminals with a heavy hand, the existing provisions do not seem to create adequate deterrence, due to minimal penalties in comparison with the scale of crime as well as problems in enforcement and prosecution against anonymous infringers.

The way forward - The current challenges present an opportunity for the country to develop a robust multi-lateral system to fight against cyber crime. The need of the hour is targeted improvements to law and enforcement, in order to safeguard India's critical information infrastructure and protect citizens from the pitfalls of digitization. In this Endeavour, the forthcoming National Cyber Security Strategy (NCSS), 2021 will be a crucial piece for the government to align the country's outdated cyber crime policy with the rapid growth of technology.

However, the NCSS 2021 must adopt a pro-active, rather than a reactive approach, in reducing vulnerabilities and minimizing damage from incidents of cyber crime. The focus should be on creating transparent, centralized systems to ensure smooth coordination between State agencies and easy access for victims. Strong emphasis also needs to be placed on increasing accountability of officials in following up complaints in order to address the low complaint-to-FIR conversion rates of cyber crime in India.

The dramatic increase in the rates of cyber crime is also partly attributable to the inadequacy of the legal framework in delegitimizing such activities. The face of cyber crime has undergone transformational change in the last few years. Thus, a re-look at the ability of the Information Technology Act, 2000 to address the nuances of cyber security, as well as accommodate newer technologies like quantum computing and artificial intelligence, is the way forward.

The indispensable role of the private sector in prevention and mitigation of cyber crime cannot be ignored either. It is imperative that businesses priorities digital security as well as protection of their data and intellectual property. Accordingly, immediate attention must be brought on revamping security policies to minimize breach and allocating higher budgets for investment in anti-fraud technologies. Companies must periodically conduct risk assessments and disseminate updated information on best security practices to their personnel. Considering that India has witnessed a significant boost in cyber security ventures/start-ups, partnerships with such tech enterprises would also be crucial in the fight against cyber crime.

The pandemic has altered the world in more than a few ways. As we move towards the peak of digital transformation, it is critical to address the underlying concerns before they become intractable. The multiplying rates of cyber crime over the course of the last one year have revealed the inadequacies of our digital infrastructure and the framework to catch perpetrators of cyber crime, providing the 'perfect storm' to take targeted action for a secure tomorrow.

Conclusion:

- **Online Scams and Phishing -** Threat actors have revised their usual online scams and phishing schemes. By deploying COVID-19 themed phishing emails, often impersonating government and health authorities, cybercriminals entice victims into providing their personal data and downloading malicious content. Around two-thirds of member countries which responded to the global cybercrime survey reported a significant use of COVID-19 themes for phishing and online fraud since the outbreak.
- **Disruptive Malware (Ransom ware and DDoS) -** Cybercriminals are increasingly using disruptive malware against critical infrastructure and healthcare institutions, due to the potential for high impact and financial benefit. In the first two weeks of April 2020, there was a spike in ransom ware attacks by multiple threat groups which had been relatively dormant for the past few months. Law enforcement investigations show the majority of attackers estimated quite accurately the maximum amount of ransom they could demand from targeted organizations.
- **Data Harvesting Malware -** The deployment of data harvesting malware such as Remote Access Trojan, info stealers, spyware and banking Trojans by cybercriminals is on the rise. Using COVID-19 related information as a lure, threat actors infiltrate systems to compromise networks, steal data, divert money and build botnets.
- **Malicious Domains -** Taking advantage of the increased demand for medical supplies and information on COVID-19, there has been a significant increase of cybercriminals registering domain names containing keywords, such as "corona virus" or "COVID". These fraudulent websites underpin a wide variety of malicious activities including C2 servers, malware deployment and phishing. From February to March 2020, a 569 per cent growth in malicious registrations, including malware and phishing and a 788 per cent growth in high-risk registrations were detected and reported to INTERPOL by a private sector partner.

References:-

1. File image of Delhi Police personnel. Reuters
2. https://atlasvpn.com/blog/google-registers-a-350-increase-in-phishing-websites-amid-quarantine/
3. https://www.interpol.int/en/News-and-Events/News/2020/Preventing-crime-and-protecting-police-INTERPOL-s-COVID-19-global-threat-assessment
4. https://www.commissariatodips.it/da-sapere/per-i-cittadini-e-i-ragazzi/internet-rischi-e-minacce/index.html
5. https://www.weforum.org/agenda/2020/03/covid-19-cyberattacks-working-from-home/
6. https://hbr.org/2020/03/will-coronavirus-lead-to-more-cyber-attacks
7. Delhi News Reporter

****

Marketing Strategies of Indian Automobile Companies: A Case Study of Maruti Suzuki India Limited

Dr. Prasann Jain* Sanjay Payasi**

*Associate Professor, SIRT - E, Sagar Group of Institutions, Bhopal (M.P.) INDIA
** Associate Professor, Anand Institute of Management, Bhopal (M.P.) INDIA

Abstract - In the present genuine period, the word 'Strategy' is particularly basic for all business affiliations. As of now, affiliations started understanding that customer unconventional and powerful advancing strategies accept a pivotal part to turn into a productive pioneer. Nonetheless globalization has opened the entrances of chances for all, the market is at this point amassed for certain dark risks and part of the challenge. Because of this resistance, an advancing procedure should target being novel, differential-production, and advantage-making. To get stand-out and differential advantages, an affiliation should be inventive in its publicizing framework. Today due to imaginative exhibiting methodology Maruti Suzuki has gotten the fundamental and greatest dealer of cars in India. The association has accepted diverse Brand arranging, Advertising, Distribution methods to get the market. Two or three remarkable extraordinary procedures fuses Teacher in addition to Scheme, 2599 arrangement, Change your life campaign. The objective of this paper is to focus in on various promoting methods of Maruti Suzuki India Ltd.
Keywords- Strategy, Marketing Brand Promotion, Distribution Policies.

Introduction - The vehicle-delivering industry in India follows right back to 1948. Around then there were just three associations delivering explorer vehicles for instance Chief Autos in Mumbai, Hindustan Engines (HM) in Kolkata, and Standard Engines Items India in Chennai. In the early years, the Indian vehicle Industry faced a couple of challenges and blockades to improvement considering the way that in those days vehicle manufacturing was reliant upon restrictive obligation structure, serious approving, and confined streets for an expansion. In view of the shortfall of challenge from the outset, the expenses of vehicles were incredibly high. Likewise, the customers expected to keep things under control for a broad time frame for the vehicle.

Before Autonomy India was considered as a business opportunity for imported vehicles. During the 1950s the presence of Goodbye Engines, Mahindra and Mahindra, and Bajaj Auto provoked reliably growing vehicle creation in India. In 1953 the public authority of India and the private region dispatched tries to make an auto section delivering industry to supply to the vehicle business. Prior to the completion of the 1970s, immense changes in the vehicle business were seen. After 1970 the auto business started to grow, in any case that advancement was basically dictated by bicycles, ranch haulers, and business vehicles.

In 1983, the public authority of India made a limitation with Suzuki Engine Company of Japan to make insignificant cost vehicles in India. The Maruti 800 which is at this point known completed the mechanical office of Maruti Udyog Restricted in December 1983 and changed India's vehicle industry just as the way in which people drove and journeyed. During the 1990s through headway drives India made ready for all of the countries and in 1993, the public power followed up its movement measures with fundamental abatements in the import commitment on vehicle parts. Today the Indian vehicle market has a mix of colossal local vehicle players like Goodbye Engines, Mahindra and Mahindra, Bajaj, Saint Motocorp, Ashok Leyland, and huge overall beasts including Suzuki, Honda, BMW, Audi, DaimlerChrysler, Volvo, Hyundai, Toyota, Nissan, General Engines and Passage, etc.

Review Of Literature

- P Krishnaveni in her article focuses on the current nuances and some provisional plans of Maruti Suzuki India Ltd. The article furthermore highlighted the distinctive advancement of association like the introduction of Electronic power Directing (EPS), show of unparalleled nature of 16*4 hyper-tech engines.
- Exim bank's occasional paper highlighted that the overall money-related crisis of the year 2008 has made a hazardous condition across various regions, which has compelled countries and dares to research their future strategies. The paper moreover raised that the Indian car industry holds basic expansion for advancement, both in the local market, where the vehicle entrance level is on the

lower side when appeared differently in relation to world ordinary and in the worldwide market, where India could arrange itself as an amassing focus.

· Rajkumar Gautam and Sahil Raj, in their investigation paper, depicted the circumstance of the vehicle space of the world and India. In their paper, they have inspected that the globalization cooperation has impacted the region in all of the spaces of gathering, bargains, singular investigation, and headway and financing. They moreover contemplated that, to address the troubles introduced by globalization the Indian vehicle creators need to ensure inventive progress, fitting exhibiting procedures, and adequate customer care analysis system in their affiliations.

· Sumit Jain and Dr.R.K.Garg, in their investigation paper, depicted the current circumstance of the vehicle business and hardships looking by Industry. They pointed that, the associations need to abridge thing lifecycles to react to the suppositions for individualizing and speedy changing buyer demands with innovative things, and the coordination of essential assistants with more noteworthy commitment into the value fasten should be fortified.

Profile Of Maruti Suzuki India Limited - Maruti Suzuki India Limited (in the past known as Maruti Udyog Ltd) is an auxiliary of Suzuki Motor Corporation, Japan, and has been the head of the Indian vehicle market for more than twenty years. Maruti Suzuki upset the business and put the country on wheels. Since its origin, Maruti is credited with having catalyzed and driven the modernization of the Indian traveler vehicle industry. Over its 26 years of excursion, Maruti Suzuki changed itself from a fruitful Public Sector Company (PSU) to a lively and recorded Multi-National Company (MNC), supported its administrative role, and stayed beneficial regardless of intense contest. On October 2, 1982, the organization marked the permit and joined an endeavor concurrence with Suzuki Motor Corporation, Japan.

It was the first organization in Quite a while to mass-produce and sell in excess of 1,000,000 vehicles. In the year 1983, the organization began its creations and dispatched Maruti 800. In the year 1987, the organization forayed into the unfamiliar market by trading the main part of 500 vehicles to Hungary. In the year 2005 organization dispatched a world key vehicle model famously known as Maruti Suzuki Swift which hit the Indian vehicle market.

Today Maruti Suzuki has constructed a solid deals organization of 600 outlets spread more than 393 towns and urban areas. The upkeep support is offered to the clients through 2628 studios spread more than 1200 towns and urban areas.

Performance Of Maruti Suzuki India Limited

A. The Sales trend of Maruti Suzuki from year 2011 to 2019 is illustrated in Figure 1

From the above bar chart it is observed that in the 2019 Maruti Suzuki's sales was 86020 Crore which is 6.02 % more than March 2018.

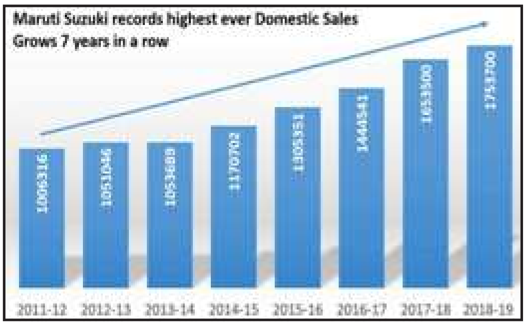

Fig 1, Source: Siam Mint Research Database (2011-2019) (Rs.in Crore)

I. Marketing Strategies Of Maruti Suzuki India Limited - In earlier days when the market was overpowered by only a few of brands like Minister and Chief Padmini, Maruti Suzuki India Restricted entered the Indian market with the different frameworks. The arrangement of the association was to offer an insignificant, present-day, and eco-accommodating vehicle. Maruti conveyed its first Maruti 800 vehicle on 14 December 1983 to fulfill the dreams of Indian customers and transformed into the market boss. Since 1983 till date, Maruti Suzuki has consistently offered a couple of choices to the buyer. As a result of strong competitors today Maruti Suzuki trusts in Innovative Marketing Methodologies. With the advancing requirements, requirements, and necessities of customers and markets, Maruti Suzuki is changing their Brand Situating, Publicizing, and Conveyance system.

II. Brand Positioning Strategy Of Maruti Suzuki India Limited - Brand Situating is the most principal thought in a brand's system. Brand Situating is moreover associated with managing a brand's importance. Today a couple of brands of vehicles are arranging themselves on the features like Value, Solace estimations, Security, Mileage, etc as of now, Maruti Suzuki followed an especially fruitful multi-division procedure to get the different parts of the market with different transformations of its brands. About brand arranging Mayank Pareek says that Maruti Suzuki confides in examination, and before dispatching a thing the Maruti bunch does an expansive investigation on the prerequisites of the customer. Maruti endeavor to fathom the customer's demography and cerebrum examination to arrange a brand. Moreover, the association follows the thoughts made by existing customers.

III. Promotional Strategy Of Maruti Suzuki India Limited - Every association is a significant or little necessities a creative restricted time framework in light of the fact that extraordinary missions will overall gigantically influence the social occasion of the thing. Maruti Suzuki India Ltd has a significant line-up of vehicles in its stable and has been exceptionally intense about propelling all of its vehicle brands. With an assumption to look with the awful challenge and due to declining segments of the general business, in 2006 Maruti Suzuki cut the expenses of relatively few models like Cart R, Omni, and Maruti 800

because Maruti acknowledged very well that the Indian customer is incredibly fragile about cost and this worth cut will accommodate for the association. In Jan 2015 to attract customers, Maruti inferred that a few of its corporate assets in Delhi including Maruti's gathering plant and children's park should be progressed. With an assumption to propel road prosperity and successful driving, the association held carnivals' sporadically at IDTR.

In 20016, to attract customers Maruti Suzuki dispatched appealing endeavors like Change Your Life . The association similarly offered vehicle assurance for One rupee so to speak. In this mission, the customers were drawn nearer to record the underside and engine number of their vehicles on the segment construction and expected to react to the request. In this test, the champs were picked by a draw of bundles and were equipped for favors worth Rs.50 million.

In 2016, Maruti introduced the 2599 proposal under which by paying an EMI of Rs. 2599 for seemingly forever after a forthright portion of Rs.40000, a purchaser could buy a Maruti 800. In 2016 Maruti introduced the Teacher notwithstanding's arrangement, in a limitation with SBI. In this arrangement, the bank offered lessened speeds of income for instructors who were enthusiastic about buying another vehicle.

Rural India is rapidly emerging as a focal locale in the country's economy. Maruti understood that there is a remarkable potential in rural business areas and in-country exhibits, the backings of appraisal makers offset an informed objective Judgment.

Considering this reality, Maruti Suzuki dispatched a panchayat to plan for such appraisal makers which covers the town Sarpanch, subject matter experts, and educators in government organizations, country bank authorities wherein an extra markdown are given to make a sell. As a piece of a customer interfacing with the framework and to attract the potential customers Maruti facilitated distinctive melas wherein close by the flavor is added by figuring everything out regular social activities like Gramin Mahotsava are coordinated around the year. As a piece of restricted time approach, Maruti Suzuki progressed fast and various brands through supporting distinctive live undertakings (Moving shows) like Dance India Dance.

IV. Advertising Strategy Of Maruti Suzuki India Limited - Advancing is one piece of brand building. Whenever Maruti dispatched any brand, it maintained that brand with an ad campaign. Maruti's publicizing endeavors included TVCs, Radio and Print promotions, Retail area, Versatile headways, web exhibiting, Outside progressions. Maruti's publicizing strategy is based both on fostering its corporate picture and propelling its vehicles. Maruti's missions highlighted different pieces of its vehicles, including eco-benevolence, looks, space, etc

In the last piece of the 1990s, Maruti's publicizing endeavors were managed by Lowe India (later known as Lowe Lintas and Accomplices, India) and Rediffusion DY&R. While publicizing related to Regard, Zen and Baleno were dealt with by Lowe India and the advancement mission of Maruti 800, Vagabond, Omni and Cart R were dealt with by Rediffusion. With an assumption to propel all brands feasibly, in 2016 Maruti decided to assign Capital Publicizing.

In 2018, Maruti Suzuki thought about a creative advancement that became standard for its straightforwardness and clear message. In this advancement, one youth plays with his toy vehicle and when the father asked him, he answers, Kya karoon daddy petrol khatam nahi hota'. This commercial depicted the eco-invitingness of Maruti Suzuki.

V. Distribution Strategy Of Maruti Suzuki India Limited - Spread is a huge advancing mix. In earlier days the clients used to book for a vehicle and keep it together for longer than a year to truly get it. Similarly, the possibility of Showrooms was non-existent. A significantly more horrible thing was the state of the after bargains organization. With an objective to change the present circumstance and to offer better help to customers, Maruti moved forward. To obtain the high ground, Maruti Suzuki encouraged an exceptional assignment association. Before long the association has a business association of 802 concentrations in 555 towns and metropolitan regions and offers support sponsorship to customers at 2740 studios in excess of 1335 towns and metropolitan networks.

The fundamental objective behind setting up the enormous allotment network was to show up at the customers even in distant areas and pass on the aftereffects of the association. The association has formed the Vendor locales and the possibility of competition among these merchants has been accomplished. Irregularly corporate picture campaigns in all organizations are finished. In 2017, to extend the resistance the association did a method for its sellers to fabricate their advantage levels. Extraordinary distinctions were sometimes given by associations for arrangements of excellent orders. Maruti Suzuki had offered an opportunity to merchants to make more advantages from various streets like exchange vehicle cash and security organizations.

In 2016, Maruti started a drive known as Non-Stop Maruti Express Roadway'. As a piece of this drive, Maruti made 255 customer care outlets close by 21 highway courses by 2017-18. In like manner, with a means to offer fast help with less time Maruti had offered an Expedited Administration Office. In the year 2018, Maruti had close around in excess of 2,500 country merchant bargains pioneers, among the full scale 15,000 dealer bargains bosses.

Conclusion - The auto market today is especially amazing and ferocious with an extent of players and things. There are various purposes behind the imperative advancement of the Indian explorer vehicle Industry. A segment of these is the straightforward openness of vehicle finance, the engaging speed of interest, and invaluable parts. In the present awful contention, it is genuinely difficult to persevere. The firm

challenge has obliged producers to be inventive and open to customer demands and needs. Maruti Suzuki India Restricted is the primary association in the Indian Auto-region which includes perceptible spots as a result of its inventive imperative exhibiting, restricted time, and Brand arranging, advancing methodology. In the current circumstance, the accomplishment of the association lies in getting sorted out and revamping the advancing approaches and consistent progression of things and organizations.

References :-

1. Bhargava R.C, Assembling a Dream , The Maruti Story, Collins Business (HarperCollins Publishers), 13, 2010.
2. Siam Mint Research database (Fig. No.1)
3. Dr. Karim Rahat, Marketing Strategy of Maruti Suzuki India Limited, International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR), – JUNE 2019
4. Dr. Lokhande M.A., Vishal Sunil Rana, Marketing Strategies of Indian Automobile Companies: A Case Study of Maruti Suzuki India Limited, Pratibha: International Journal Of Science, Spirituality, Business And Technology (IJSSBT), 2013
5. Fatma Gauhar & Kumari Ela, Marketing Strategies Of Maruti Suzuki Limited, International Journal of Application or Innovation in Engineering & Management (IJAIEM), 2013
6. Maruti Suzuki India Ltd, Annual Report 2018-19, retrieved from www.marutisuzuki.com.
7. www.articlebase.com (article)

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Impact of Human Resource Management (HRM) Practices on Employee Performance

Sanjay Payasi* Dr. Shaizal Batra**

*Associate Professor, Anand Institute of Management, Bhopal (M.P.) INDIA
** Associate Professor & Director, Vidhik Institute of Management, Bhopal (M.P.) INDIA

Abstract - Studies on HRM practices at different levels have been an area of interest for researchers for several decades because of the expansion of the industries and innovative practices which enable an organisation to retain and utilise the Human resource effectively. As the 21st century has seen a tremendous growth in the service sector especially the telecommunication industry where the service providers were growing it is crucial for the organisations to retain and care for their employees and to improve their competitive advantages. Samples were collected using questionnaire from 100 employees in order to test the hypothesis. Regression analysis was done using SPSS to find out the impact of independent variables on employee performance. It was found that there was a significant relationship and impact of training and compensation plans on employee performance whereas employee participation had less impact on employee performance.
Key words- Human resource Management, Training, compensation, employee participation.

Introduction - Impact of human resource management practices on organizational performance has been a widely researched area for years. Results of studies, from developed countries to developing countries, have been time and again showing that HR practices have significant impact on organizational performance Human resource practices are organizational tools that can be used to attract and retain the best brain in order to achieve organization objectives. In this scenario, this research examined the impact of certain HR practices on employee performance.

Research objective- The main purpose of the study was to identity the impact of HR practices on Employee performance.

Literature review

The impact of human resource management on the performance of a company has come into limelight and as such it has become an area that requires paying more attention to in the field of (HRM). According to few studies, some human resource practices will have a positive impact on a company's performance while numerous researchers suggest that more conceptual and practical approach is important on these works (Delery & Shaw, 2001; Von Krogh, Ichijo, & Nonaka, 2000; Wright & Boswell, 2002). Although, recently employees in an organization are seen as the most important asset possessed by an organization however, their impact is felt by only a few organizations (Davenport & Pruzak, 2000; Schein, 2006; Syed-Ikhsan & Rowland, 2004). There has been an increase in the experimental studies that examines the influence of some practices of (HRM) on performance of employees (Becker & Huselid, 2006; Bowen & Ostroff, 2004). One can come across various HR practices that can influence the performance of an organization on their own or when merged with others. However, the result cannot be easily interpreted (Ahmad & Schroeder, 2003). In order to examine the influence of HR practices on performance of employees, which is also related to organizational growth, it may be necessary to recognize the HR practices that are recommended by Pfeffer (1998) in which the literature explains that one can expect its influence on employee performance.

Training and Employee development - Training is done to create change by initiating a new employee into the culture of the organization. It involves new employees acquiring new skills or improving their skills in order to implement change that is needed by an organization. Training is not sufficient enough to motivate work force. But it is an important tool that an organization can use to achieve its long-term goals (Laird, Holton III, & Naquin, 2003). Training given to employees is done as an agreement to maintain culture of the organization and also to be productive which in turn will result in earning reward and awards. Training also plays an important role in employee performance as the skills acquired during the training will be the major part of the employee life-cycle in an organization (Cardon & Stevens, 2004). Training as a tool will help an employee to upgrade his knowledge and technicality and improves his performance in the organization (Castilla, 2005). Training plays an important role in motivating employees to take part in organized projects, to willingly support programs that will improve the organization and to do their best in order to see that

organizational goals are achieved (Bolman & Deal, 2011). When employees are trained, it will be easy for organizations to achieve their set goals (Linderman, Schroeder, Zaheer, & Choo, 2003).

H1: There is a significant relationship between training and development practices and employee performance.

Performance Appraisal - Performance appraisal is used by organizations to evaluate employees' efforts so as to reward them for the efforts (Collins and Clark, 2003). Performance appraisal was found to have both direct and indirect effect on administrative performance of employee and the feedback obtained from performance appraisal activities, usually conducted at least once annually can help to improve administrative processes (Collins and Clark, 2003).

H2: There is a significant relationship between Performance Appraisal and employee performance.

Data collection - The data is collected through survey questionnaire. As this study is about the HRM and performance to understand the impact Quantitative approach was adopted. Rational for the selection of close-ended questions instead of conduct interviews is to find the relationship between variables and comparisons between the respondents (Brayman& Bell, 2007).

The data used for the study were obtained from both Primary and Secondary Data sources. The Primary sources include direct information collected through administration of questionnaires in order to gain insight into the research topic. The secondary data sources include journals, textbooks and other related publication both online and offline. Data were gathered through administering of questionnaires to employees of various organizations . The entire questions in the questionnaires were structured and some of the questions were intended to test hypothesis that were previously formulated in the study.

The questionnaire designed for this study has two sections which include; the first section that consists of normal scale questions which involve demographic information of respondents. The information was later converted into percentage to ease analysis. And the second section that consists of 5-point Likert Scales questions with 5 options to choose from. The options are provided for respondents to show the rate at which they agree or disagree with the questions. The options answer provided for the questions start with 1 – which stands for "Strongly Agree", followed by 2 – which represents "Agree", the next is 3 – which stand for "Neutral", followed by 4 – which represents "Disagree" and ends with 5 – that stand for "Strongly Disagree".

Population - The company has a total workforce of 26,629 employees as at 2013. Therefore, is almost impossible for this study to conduct survey on all the company's employees. Hence, this study adopted a convenient sampling method to select sample from the total population to conduct the research. The sample size for the study was 100 employees. The respondents were chosen based upon their willingness and convenience to respond to the survey and the sample size was arrived after rejections on incompletion.

Data analysis - The data gathered was analysed using the statistical analysis software. The Statistical Package for Social Sciences (SPSS) version 21 was used to analyse the data collected. The SPSS software was used to perform descriptive statistics such as correlation analysis, regression analysis, and to compare the differences in the regression coefficient. Pearson's Correlation Co-efficient was adopted for data analysis approach. The method was used to test the relationship between HR practices and performance of employees.

Demographic Analysis - 51% of the respondents are female for as compared to male (49%). This shows that there are more females workers compared with the male workers. The average age of respondents is above 40 years old accounted for 2.0%, fewer than 25 years old accounted for 23.5%, above 25 years old accounted for 50.0%, and above 36 years old accounted for 24.5%. The highest qualification is Master degree and only 3.9% of the respondents got that. Bachelor degree holders are the highest respondents with 43.1%, follow by Diploma with 34.3%, HSC 15.7% and HSC 2.9%. Respondents who have spent less than 1 year at work accounted for 35.3%, above 3 years accounted for 40.2%, above 4 years accounted for 22.5%, above 7 years accounted for 1.0% and more than 10 years also accounted for 1.0%.

Hypothetical testing:

H_1: There is a significant relationship between training and development practices and employee performance.

Model	Sum of Squares	D F	Mean Square	F	Sig.
Regression	6.002	1	6.002	7.607	.003a
Residual	69.253	99	.693		
Total	75.255	100			

In the ANOVA table, the significance was found to be 0.003. This can be interpreted as the relationship between training and employee performance is significant. This result proves that there is relationship between employee training and employee performance.

H2: There is a significant relationship between Performance Appraisal and employee performance.

ANOVA

Model	Sum of Squares	D F	Mean Square	F	Sig.
Regression	6.002	1	12.023	12.369	.000
Residual	69.253	99	.617		
Total	75.255	100			

The value of significant of the model from ANOVA is 0.000. This shows that the relationship between performance appraisal and employee performance is statistically significant.

Discussion and Conclusion - This study was undertaken with the basic objective of identifying the impact of HR practices on employee performance. Three major HR

practices were chosen for study after review of literature and conducting a study on HR practices. Three hypotheses were developed which focussed on identifying the impact of Training, performance appraisal and Employee participation on employee performance. The findings of the regression analysis proved that there was a significant relationship between training on employee performance. It was found that Performance appraisal has moderate influence on the performance and employee participation in decision making has least influence on the performance.

This study results match with Tahir (2006) findings where he revealed that training, compensation and performance appraisal are highly significant in employees' efficiency and effectiveness. Likewise, the findings from this research are in line with the results from Singh (2004) where it is revealed that Training and compensation have significant influence on organization and employees' performance. This finding is also relating with this study results. This study results are also the same with the findings revealed by Sultana et al. (2012) where it is showed that employee training helps to develop organization performance, take a vital role in improving employee performance as well as increasing productivity and eventually helps to place organizations in the best position to face competitive challenges and stay on top.

Limitations and future study - There are also many limitations of this study which includes; First, the study is only limited to single area, So the results of this study can only be used for further research in telecom industry at different levels. Secondly the HR practices discussed in this study are very short in numbers. These HR practices are taken from the research work already done by different researchers and according to the predominant HR practice, hence there are several other practices which could be focussed in future studies.

References:-

1. Ahmad, S., & Schroeder, R. G. (2003). The impact of human resource management practices on operational performance: recognizing country and industry differences. *Journal of Operations Management, 21*(1), 19-43.
2. Bae, J., & Lawler, J. J. (2000). Organizational and HRM strategies in Korea: Impact on firm performance in an emerging economy. *Academy of Management Journal, 43*(3), 502-517.
3. BARNEY, J., & Hesterly, W. (2006). 1.3 Organizational Economics: Understanding the Relationship between Organizations and Economic Analysis. *The SAGE handbook of organization studies*, 111.
4. Becker, B. E., & Huselid, M. A. (2006). Strategic human resources management: where do we go from here? *Journal of management, 32*(6), 898-925.
5. Bharadwaj, A. S. (2000). A resource-based perspective on information technology capability and firm performance: an empirical investigation. *MIS quarterly*, 169-196.
6. Bolman, L. G., & Deal, T. E. (2011). *Reframing organizations: Artistry, choice and leadership*: Jossey-Bass.
7. Bowen, D. E., & Ostroff, C. (2004). Understanding HRM–firm performance linkages: The role of the "strength" of the HRM system. *Academy of management review, 29*(2), 203-221.
8. Cardon, M. S., & Stevens, C. E. (2004). Managing human resources in small organizations: What do we know? *Human resource management review, 14*(3), 295-323.
9. Carlson, D. S., Upton, N., & Seaman, S. (2006). The Impact of Human Resource Practices and Compensation Design on Performance: An Analysis of Family Owned SMEs. *Journal of Small Business Management, 44*(4), 531-543.
10. Castilla, E. J. (2005). Social Networks and Employee Performance in a Call Center1. *American Journal of Sociology, 110*(5), 1243-1283.
11. Collins, C. J., & Clark, K. D. (2003). Strategic human resource practices, top management team social networks, and firm performance: The role of human resource practices in creating organizational competitive advantage. *Academy of Management Journal, 46*(6), 740-751.
12. Collins, C. J., & Smith, K. G. (2006). Knowledge exchange and combination: The role of human resource practices in the performance of high-technology firms. *Academy of Management Journal, 49*(3), 544-560.
13. Combs, J., Liu, Y., Hall, A., & Ketchen, D. (2006). How much do high performance work practices matter? A meta analysis of their effects on organizational performance. *Personnel Psychology, 59*(3), 501-528.
14. Compton, R. L., Morrissey, W. J., Nankervis, A. R., & Morrissey, B. (2009). *Effective recruitment and selection practices*: CCH Australia Limited.
15. Core, J. E., & Larcker, D. F. (2002). Performance consequences of mandatory increases in executive stock ownership. *Journal of Financial Economics, 64*(3), 317-340.
16. Creswell, J. W., & Clark, V. L. P. (2007). *Designing and conducting mixed methods research*: Wiley Online Library.
17. Davenport, T. H., & Short, J. E. (2003). Information technology and business process redesign. *Operations management: critical perspectives on business and management, 1*, 1-27.
18. Delery, J. E., & Shaw, J. D. (2001). The strategic management of people in work organizations: Review, synthesis, and extension. *Research in personnel and human resources management, 20*, 165-197.
19. Dwyer, L., & Kim, C. (2003). Destination competitiveness: determinants and indicators. *Current issues in tourism, 6*(5), 369-414.

20. Hawken, P., Lovins, A. B., & Lovins, L. H. (2010). *Natural capitalism: the next industrial revolution*: Earthscan.
21. Hayton, J. C. (2003). Strategic human capital management in SMEs: An empirical study of entrepreneurial performance. *Human Resource Management, 42*(4), 375-391.
22. Kaplan, R. S., & Norton, D. P. (2000). *Having trouble with your strategy? Then map it*: Harvard Business School Publishing Corporation.
23. Laird, D., Holton III, E. F., & Naquin, S. S. (2003). *Approaches To Training and Development: Revised and Updated*: Basic Books.
24. Langley, G. J., Moen, R., Nolan, K. M., Nolan, T. W., Norman, C. L., & Provost, L. P. (2009). *The improvement guide: a practical approach to enhancing organizational performance*: John Wiley & Sons.
25. Lee, J.-N. (2001). The impact of knowledge sharing, organizational capability and partnership quality on IS outsourcing success. *Information & Management, 38*(5), 323-335.
26. Martocchio, J. J., & Joe, M. (2004). *Strategic compensation: A human resource management approach*: Pearson Education India.
27. Mayson, S., & Barrett, R. (2006). The 'science 'and 'practice 'of HRM in small firms. *Human resource management review, 16*(4), 447-455.
28. Nelson, B. (2012). *1501 Ways to Reward Employees*: Workman Publishing.
29. Paul, A. K., & Anantharaman, R. N. (2003). Impact of people management practices on organizational performance: analysis of a causal model. *International Journal of Human Resource Management, 14*(7), 1246-1266.
30. Pettigrew, A. M., Woodman, R. W., & Cameron, K. S. (2001). Studying organizational change and development: Challenges for future research. *Academy of Management Journal, 44*(4), 697-713.
31. Pfeffer, J. (1998). The human equation. *Boston, MA*.
32. Porter, M. E. (2000). Location, competition, and economic development: Local clusters in a global economy. *Economic development quarterly, 14*(1), 15-34.
33. Publishing, V. H. (2007). *IT service management: an introduction*: Van Haren Publishing.
34. Roberts, J. A., Hann, I.-H., & Slaughter, S. A. (2006). Understanding the motivations, participation, and performance of open-source software developers: A longitudinal study of the Apache projects. *Management science, 52*(7), 984-999.
35. Rynes, S. L., Gerhart, B., & Minette, K. A. (2004). The importance of pay in employee motivation: Discrepancies between what people say and what they do. *Human Resource Management, 43*(4), 381-394.
36. Schein, E. H. (2006). *Organizational culture and leadership* (Vol. 356): Wiley. com.
37. Syed-Ikhsan, S. O. S., & Rowland, F. (2004). Knowledge management in a public organization: a study on the relationship between organizational elements and the performance of knowledge transfer. *Journal of knowledge management, 8*(2), 95-111.
38. Tata, J., & Prasad, S. (2004). Team self-management, organizational structure, and judgments of team effectiveness. *Journal of Managerial Issues*, 248-265.
39. Tedjokusumo, H., & Setyorini, H. (2011). THE GROWTH STRATEGIC AFTER FINANCIAL CRISIS IN INDONESIA TELECOM SERVICES INDUSTRY YEAR 2008-2009. *Global Network-International Journal of Business, Management and Accounting, 4*(1).
40. Teece, D. J. (2000). *Managing Intellectual Capital: Organizational, Strategic, and Policy Dimensions: Organizational, Strategic, and Policy Dimensions*: Oxford University Press.
41. Wright, P. M., & Boswell, W. R. (2002). Desegregating HRM: A review and synthesis of micro and macro human resource management research. *Journal of management, 28*(3), 247-276.
42. Zivnuska, S., Kacmar, K. M., Witt, L., Carlson, D. S., & Bratton, V. K. (2004). Interactive effects of impression management and organizational politics on job performance. *Journal of Organizational Behavior, 25*(5), 627-640.
43. Zubko, K. C., & Sahay, R. R. (2010). *Inside the Indian Business Mind: A Tactical Guide for Managers: A Tactical Guide for Managers*: ABC-CLIO.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का लिंगवार प्रभाव

प्रहलाद मटोरिया *

* शिक्षा विभाग महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर (राज.) भारत

शोध सारांश – उच्च व स्वच्छ विद्यालय वातावरण में सम्पन्न शिक्षा ही विद्यार्थियों में शैक्षिक विकास के साथ-साथ सांस्कृतिक, व्यावसायिक, सामाजिक तथा नैतिक विकास में गतिशील बना जागरूकतालाती हैं। जिससेजीवन के प्रति उदार दृष्टिकोण विकसित होता हैं।प्रस्तुत शोध पत्र में हनुमानगढ़ जिले के रावतसर तहसील के सरकारी उच्च मा. विद्यालयों के विद्यार्थियों का उच्च व निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि का लिंगवार प्रभाव देखने का प्रयास किया गया हैं। जिसमें शोध के न्यादर्श का चुनाव यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया हैं। न्यादर्श के रुप में 240 विद्यार्थियों का चयन कर इन्हें दो समूह में रख कर परीक्षण किया गया हैं, प्रयोगात्मक समूह व नियंत्रित समूह। आँकड़ों के एकत्रीकरण के लिए शोधकर्ता द्वारा विद्यालय वातावरण मापनी परीक्षण प्रपत्र को काम में लिया गया। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया हैं। उच्च व निम्न विद्यालय वातावरण के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की क्या स्थिति हैं? इसके विभिन्न उद्देश्यों के पश्चात् परिकल्पनाओं के आधार पर यह शोधकार्य **डॉ.अशोक कुमार मोदी** के निर्देशन मेंआगे बढ़ाने का प्रयास किया गया हैं।

शब्द कुंजी–उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी, शैक्षिक उपलब्धि, सहयोगी अधिगम विद्यालय वातावरण।

प्रस्तावना – शिक्षा एक ऐसा पद हैं जिसका उपयोग प्राचीन काल से होता आ रहा हैं। प्राचीन काल में गुरु एवं शिष्य या दूसरे शब्दों में यह कहा जाए कि ज्ञानी एवं अज्ञानी के बीच ज्ञान के लेन-देन की सुव्यवस्थित प्रक्रिया को शिक्षा कहा जाता था। वैदिक काल में बालकों को गुरुकुल में जाना पड़ता था। ये गुरुकुल नदी अथवा झरने के किनारे स्थित होते थे। इनका भौतिक वातावरण इस प्रकार व्यवस्थित रहता था कि वह बालकों के आध्यात्मिक विकास में सहायक हो सके। जनपद से दूर प्रकृति का खुशहाल रुप बालक को आध्यात्मिक विकास की ओर अग्रसर करता था। पवित्रता, प्रसन्नता सर्वत्र विद्यमान रहती थी। उत्तर वैदिक काल में ये बड़े-बड़े गाँवों और तीर्थ-स्थानों के पास निर्मित होने लगे।इस काल में गुरु को अपने शिष्यों को कुछ आवश्यक तथ्यों को कंठस्थ कराना पड़ता था। इस तरह की शिक्षा देने में शिष्य की आयु, रूचि एवं योग्यता आदि पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया जाता था। शिक्षक का कर्तव्य शिष्य को मात्र सूचना देना होता था। स्पष्टत: इस तरह की शिक्षा बाल-केन्द्रित न होकर ज्ञान-केन्द्रित होती थी। शिष्य चाहे बालक हो या वयस्क उसे एक ही तरह की शिक्षा दी जाती, जिसका परिणाम यह था कि बालक या शिष्य का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता था। परंतु आधुनिक काल में शिक्षा का यह अर्थ पूर्णत: समाप्त हो गया हैं। आज शिक्षा का अर्थ व्यक्तियों के सर्वांगीण विकास के लिए एक निरंतर चलनेवाली ऐसी प्रक्रिया हैं जिसके द्वारा व्यक्ति में निहित क्षमताओं का सही-सही उपयोग विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में किया जाता हैं। सर्वांगीण विकास से तात्पर्य व्यक्ति के मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक या नैतिक विकास करना हैं। इसके साथ-साथ पारिवारिक परिस्थितियों, विद्यालय वातावरण व व्यक्तिगत विभिन्नता का भी गहरा प्रभाव पड़ता है। इस प्रभाव के कारण ही विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च होती हैं, इसी कारण विद्यार्थियों के अपने वातावरण से सन्तुलित संबंध कैसे होगें? उनका मानसिक स्तर कैसा होगा? यह जाना जाता हैं।

अध्ययन की आवश्यकता–उन्नीसवीं शताब्दी की शुरूआत से ही शिक्षा के सभी स्तरों पर प्रत्येक प्रकार के परीक्षणों का प्रयोग हो रहा हैं। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सर्वप्रथम फिशर महोदय ने वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का सूत्रपात किया। शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन, व्यक्तित्व परीक्षणों के अलावा बुद्धि परीक्षणों से तात्पर्य उन परीक्षणों से हैं, जो विद्यार्थियों के ज्ञान, बोध, कौशल आदि का मापन करते हैं। इसके अलावा आज परीक्षणों की सफलता के लिए विद्यालयों के वातावरण को भी देखा जाने लगा हैं क्योंकि उच्च व निम्न वातावरण बालक के व्यक्तित्व में पूरी तरह सहायक होते हैं।उच्च वातावरण में बालक की बुद्धि-लब्धि उच्च होती हैं उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च होती हैं। अत: प्रयोग द्वारा यह पता लगाना आवश्यक समझा गया कि क्या कक्षा 11 स्तर पर विद्यालय वातावरण द्वारा शैक्षिक उपलब्धि को सहयोगी अधिगम अनुदेशन समान रुप से प्रभावित करता हैं। क्या निम्न विद्यालय वातावरण तथा उच्च विद्यालय वातावरण के विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति सहयोगी अधिगम से स्वाध्ययन करने या परम्परागत विधि से कक्षागत शिक्षण प्राप्त करने वाले इन्हीं स्तरों के अधिगन्ताओं की शैक्षिक उपलब्धि से उच्च होती हैं। क्या सहयोगी अधिगम प्रणाली से छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर हैं। तथा विद्यालय वातावरण सहयोगी अधिगम से अध्ययन करने वाले छात्र-छात्राओं का अभिवृत्ति स्तर कैसा होगा।क्या उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का लिंगवार प्रभाव पड़ता है? इन प्रश्नों के उत्तर खोजनें

के लिए शोधकर्ता ने निम्नांकित प्रकरण पर शोध करने की आवश्यकता को समझा और 'उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का लिंगवार प्रभाव' विषय पर शोध पत्र लिखने का निश्चय किया।

समस्या कथन–उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का लिंगवार प्रभाव–

शब्दावली–

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी– कक्षा–9 से कक्षा–12 तक संचालित वे विद्यालय जिनमें राजस्थान बोर्ड का प्रशासन चलता जो उच्च माध्यमिक विद्यालय के नाम से जाने जाते हैं। 1968 में एक नीति के उद्देश्य में 10 + 2 + 3 की प्रणाली को स्वीकार किया गया था। यहां तात्पर्य कक्षा 11 में अध्ययनरत विद्यार्थियों से है।

शैक्षिक उपलब्धि–शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ विभिन्न विद्यालयों विषय में विद्यार्थियों के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं मनोगत्यात्मक योग्यता से हैं। मानवीय क्षेत्र में विकास शिक्षा के द्वारा ही संभव हो सकता हैं। शैक्षिक परिवर्तन नागरिक को सरल व मानसिक जीवन को उच्च बनाने में समर्थ होते हैं। इसलिए बौद्धिक शक्ति के उपयोग से निश्चित समय में व्यक्ति को जो ज्ञान दिया जाता हैं वह ग्रहित ज्ञान ही शैक्षिक उपलब्धि कहलाती हैं।

सहयोगी अधिगम–यह एक शैक्षणिक प्रस्ताव है जिसका उद्देश्य कक्षा गतिविधियों को सैद्धांतिक और सामाजिक अधिगम अनुभव करवाना है। विद्यार्थियों को आपसी सहयोग करते हुए समूह में कार्य करने के लाभ से परिचित करवाने के अलावा भी सहयोगी अधिगम में अनेकों गुण है। इसे सकारात्मक परस्पर निर्भरता का स्वरुप भी कहा जाता।

विद्यालय वातावरण–विद्यालय वातावरण के अन्तर्गत उन सभी तथ्यों का समावेश होता हैं जो विद्यालय के वातावरण को स्वच्छ रखने, बालकों में स्वस्थ जीवन व्यतीत करने की आदतों के निर्माण में सहायक सिद्ध होता हैं। विद्यालयी वातावरण निर्माण करने में पास–पड़ोस, भवन का प्रकार, खेल के मैदान,स्वच्छता, वायु, जल, मिट्टी, प्रकाश की व्यवस्था तथा फर्नीचर आदि का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता हैं।

उद्देश्य:

1. सहयोगात्मक अधिगम आव्यूह का उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. सहयोगात्मक अधिगम आव्यूह का उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. सहयोगात्मक अधिगम आव्यूह का उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण में नियंत्रण और प्रयोगात्मक समूहों में लिंगवार प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना:

1. सहयोगात्मक अधिगम आव्यूह का उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं हैं।
2. सहयोगात्मक अधिगम आव्यूह का उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं हैं।
3. सहयोगात्मक अधिगम आव्यूह का उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण में नियंत्रण और प्रयोगात्मक समूहों में लिंगवार सार्थक अन्तर नहीं हैं।

न्यादर्श– प्रस्तुत शोध के न्यादर्श का चुनाव यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। न्यादर्श के रुप में 240 विद्यार्थियों को चुना गया हैं।

अध्ययन का क्षेत्र:

1. यह अध्ययन केवल हनुमानगढ़ जिले के 5 उ. मा. विद्यालयों तक ही सीमित हैं।
2. इस अध्ययन में उपरोक्त विद्यालयों के केवल कक्षा 11 के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रुप में शामिल किया गया हैं।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या – इस शोध का उद्देश्य विद्यार्थियों में सहयोगात्मक अधिगम आव्यूह का उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण के छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि का लिंगवार भी प्रभाव का पता लगाना था। शोधकर्ता द्वारा पूर्व में निर्धारित किये गये उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के अनुसार परीक्षण में प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण किया गया जो इस प्रकार हैं–

सहयोगात्मक अधिगम आव्यूह का उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में तुलना– सहयोगात्मक अधिगम आव्यूह का निम्न व उच्च उपलब्धि स्तर के विद्यालय वातावरण के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को देखने के लिए पाँचों विद्यालयों के अंकों के अन्तर के आधार पर विद्यार्थियों के लिये पृथक–पृथक मध्यमान एवं मानक विचलन निकाल कर **टी–मान** की गणना की गई जिन्हें क्रमश: सारणी क्रमांक– 1में दर्शाया गया हैं। नियंत्रित समूह व प्रयोगात्मक समूह के अर्न्तगत ही विद्यार्थियों के समूह निर्माण किए गये।

सारणी क्रमांक–1 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

सारणी –1 में सहयोगात्मक अधिगम आव्यूह के प्रभाव को उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण के छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि को देखने के लिए नियंत्रित समूह व प्रयोगात्मक समूह के अन्तर्गत नियंत्रित समूह में (निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण) **टी** का मान 2.463 प्राप्त हुआ। उसी प्रकार प्रयोगात्मक समूह में (निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण) **टी** का मान 1.606 प्राप्त हुआ। इन दोनों समूह (नियंत्रित व प्रयोगात्मक समूह) के निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण में **टी-मूल्य** क्रमश: 0.116 व 0.415 हैं जो 28 **df** पर 0.05 स्तर के सारणी मान 2.048 से कम हैं। अत: शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है एवं यह निष्कर्ष निकाला जाता हैं कि सभी विद्यालयों के छात्रों के पूर्व परीक्षण के तहत उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को देखने में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

सारणी क्रमांक–2 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

सारणी –2 में सहयोगात्मक अधिगम आव्यूह का प्रभाव को उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण के छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि को देखने के लिए नियंत्रित समूह व प्रयोगात्मक समूह के अन्तर्गत नियंत्रित समूह में (निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण) **टी** का मान 2.139 प्राप्त हुआ। उसी प्रकार प्रयोगात्मक समूह में (निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण) **टी** का मान 1.905 प्राप्त हुआ। इन दोनों समूह (नियंत्रित व प्रयोगात्मक समूह) के निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण में **तह–मूल्य** क्रमश:46.411 व 24.372 हैं जो 29**df** पर 0.01 स्तर के सारणी मान

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

2.763 से कहीं अधिक हैं। अत: शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है और यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि विद्यालयों के छात्रों के पश्च परीक्षण के तहत उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक रुप से वृद्धि हुई हैं।

सहयोगात्मक अधिगम आव्यूह का उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं हैं।

सारणी क्रमांक-3 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

सारणी -3सहयोगात्मक अधिगम आव्यूह का प्रभाव को उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण के छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि को देखने के लिए नियंत्रित समूह व प्रयोगात्मक समूह के अन्तर्गत नियंत्रित समूह में (निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण) **टी** का मान 2.965 प्राप्त हुआ। उसी प्रकार प्रयोगात्मक समूह में (निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण) **टी** का मान 1.172 प्राप्त हुआ। इन दोनों समूह (नियंत्रित व प्रयोगात्मक समूह) के निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण में **टी-मूल्य** क्रमश:0.569 व 1.032 हैं जो 28**df** पर 0.05 स्तर के सारणी मान 2.048 से कम हैं। अत: शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है एवं यह निष्कर्ष निकाला जाता हैं कि सभी विद्यालयों के छात्राओं के पूर्व परीक्षण के तहत उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को देखने में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

सारणी क्रमांक-4 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

सारणी क्रमांक-4 में सहयोगात्मक अधिगम आव्यूह का प्रभाव को उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण के छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि को देखने के लिए नियंत्रित समूह व प्रयोगात्मक समूह के अन्तर्गत नियंत्रित समूह में (निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण) **टी** का मान 2.384 प्राप्त हुआ। उसी प्रकार प्रयोगात्मक समूह में (निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण) **टी** का मान 1.964 प्राप्त हुआ। इन दोनों समूह (नियंत्रित व प्रयोगात्मक समूह) के निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण में **टी-मूल्य** क्रमश:42.033 व 20.956 हैं जो 29**df** पर 0.01 स्तर के सारणी मान 2.763 से कहीं अधिक हैं। अत: शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है और यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि विद्यालयों के छात्राओं के पश्च परीक्षण के तहत उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक रुप से वृद्धि हुई हैं।

सहयोगात्मक अधिगम आव्यूह का उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यालय वातावरण में नियंत्रण और प्रयोगात्मक समूहों में लिंगवार सार्थक अन्तर नहीं है- सहयोगात्मक अधिगम आव्यूह को नियंत्रण और प्रयोगात्मक समूहों में विद्यालयवार और लिंगवार आँकडे पाँचों विद्यालयों से प्राप्त कर निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण व उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण अंकों के आधार पर गणना की गई जिन्हें क्रमश: सारणी क्रमांक-5 में दर्शाया गया हैं।

सारणी क्रमांक-5: नियंत्रण और प्रयोगात्मक समूहों में विद्यालयवार और लिंगवार सरल वितरण

	नियंत्रण समूह		प्रयोगात्मक समूह		
	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	कुल
निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण	42	41	45	38	166
उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण	19	18	19	18	74
कुल	61	59	64	56	240

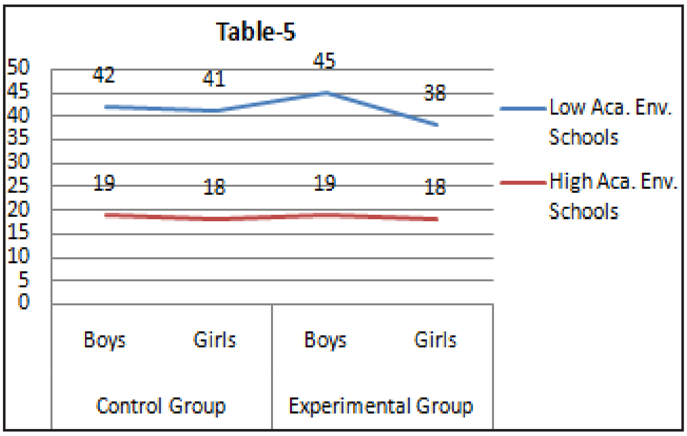

आरेख सं. 4.21 नियंत्रण और प्रयोगात्मक समूहों में विद्यालयवार और लिंगवार की चित्रमय प्रस्तुती

व्याख्या- प्रस्तुत शोध पत्र में यह देखा गया कि विद्यालयों के प्रभाव का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर क्या स्थिति हैं? तथा यह प्रभाव लिंगवार भी देखने का प्रयास किया गया हैं। इसके विभिन्न उद्देश्यों तद्उपरान्त परिकल्पनाओं के आधार पर यह शोध कार्य आगे बढ़ाया गया। आँकड़ों को इकट्ठा करने तथा विश्लेषण करने के दौरान शोधकर्ता के समक्ष कई बातें आयी, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि विद्यालय वातावरण का छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में प्रभाव पड़ता हैं। यह अन्तर देखने के लिए विद्यार्थियों को विद्यालय वातावरण मापनी से संबंधित **स्वनिर्मित प्रप्त्र** पूर्व परीक्षण के रुप में दिया गया। इसके पश्चात् समूह को (नियंत्रित व प्रयोगात्मक समूह) शिक्षण दिया गया। शिक्षण कार्यविधि के पश्चात् पश्च परीक्षण के तहत पुन: इसी प्रक्रिया को दोहराया गया। पूर्व व पश्च परीक्षणों की तुलना करने पर यह ज्ञात हुआ कि विद्यालय वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता हैं।

निष्कर्ष- प्रस्तुत शोध पत्र में संकलित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं-

1. पूर्व परीक्षण में प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह की उच्च व निम्न विद्यालय वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया।
2. पश्च परीक्षण में प्रायोगिक समूह की शैक्षिक उपलब्धि, नियंत्रित समूह की शैक्षिक उपलब्धि से उच्च पायी गयी।
3. प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की सक्रिय रुप से सीखने की विधि द्वारा विषय के प्रति रुचि विकसित हुई।

सुझाव:

1. विद्यालय वातावरण में शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के लिए सभी विद्यालयों में 'सक्रिय रहकर सीखने की विधि' से कक्षा अध्यापन प्रक्रिया हो।
2. विद्यालय का वातावरणे स्वच्छ व खुला होना चाहिये। प्रत्येक कक्षा स्तर पर विद्यार्थियों के समूह बनाये जाये जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी आपस में चर्चा कर समस्या का हल ढूढें।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1 **Agrawal, J.C. (1978),** "The Progress of Education Free In India", Arya Book Depot New Delhi

2 **Emmer, T. and Gerwells, M. (2002).** Cooperative learning in elementary classrooms: Teaching practices and lesson characteristics. The Elementary School Journal, 103 (1), 75-92.

3 **Jantli,R.T.(1988).** Relationship between teacher behaviour,pupils,personality and pupils growth out comes,Fifth survey of researches in education,vol.1 Pg.86.

4 **Johnson, D.W, & Johnson, R.T.(1987).** Learning together and alone: Cooperative, competitive, and individualistic. Engiewood Cliffs, NJ: Prentice Hall.

5 **Johnson, D. W. & Johnson R. T. (1999).** Learning Together and Alone: Cooperative,Competitive, and Individualistic Learning (5th ed.). Boston: Allyn and Bacon.

6 **Lou, Y., et al. (2000).** Effects of within-class groupings on student achievement: An exploratory model. The Journal of Educational Research, 94 (2), 101-112.

सारणी क्रमांक-1 : छात्रों के पूर्व परीक्षण अंकों के आधार पर विद्यालयवार तुलना

	नियंत्रित समूह		प्रयोगात्मक समूह		नियंत्रित व प्रयोगात्मक समूह	
	निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण	उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण	निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण	उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण	टीमूल्य के लिए निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण	टीमूल्य के लिए उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण
मध्यमान	14.36	12.79	14.31	13.21		
मानक विचलन	1.76	3.21	2.25	3.03		
संख्या	42	19	45	19		
टीमूल्य	2.463		1.606		0.116	0.415
Sig	0.05		n.s.		n.s.	n.s.

नोट-विद्यालय परीक्षण प्रारुप में औसत से कम अंक प्राप्त करने वाले चार विद्यालयों को कम अंक प्राप्त करने वाले विद्यालयों के रुप में एक साथ लिया गया था। केवल एक विद्यालय (विद्यालय नं.5) जो कि विद्यालय परीक्षण पर काफी अधिक अंक प्राप्त करता हैं जिसे उच्च विद्यालय के रुप में लिया गया हैं।

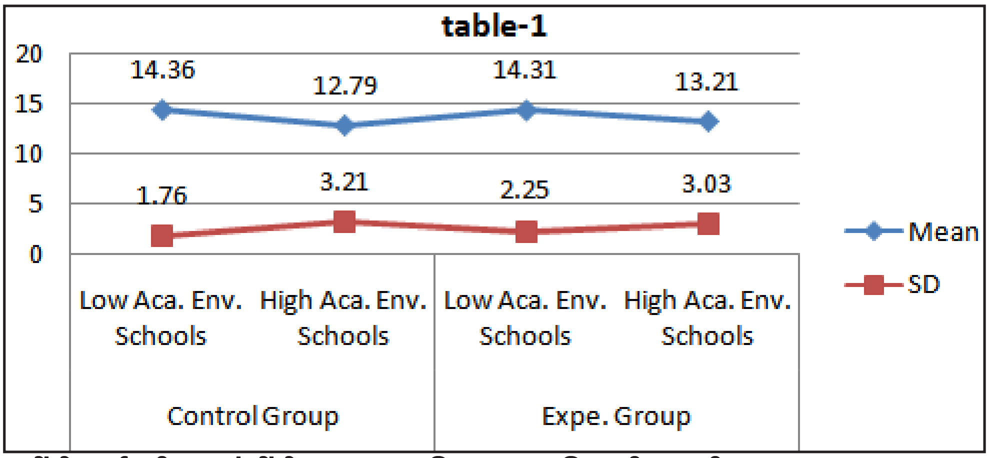

छात्रों के पूर्व परीक्षण अंकों के आधार पर विद्यालयवार चित्रमयी प्रस्तुती

सारणी क्रमांक-2 : छात्रों के पश्च परीक्षण अंकों के आधार पर विद्यालयवार तुलना

	नियंत्रित समूह		प्रयोगात्मक समूह		नियंत्रित व प्रयोगात्मक समूह	
	निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण	उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण	निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण	उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण	टीमूल्य के लिए निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण	टीमूल्य के लिए उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण
मध्यमान	15	13.79	35.18	33.95		
मानक विचलन	1.62	2.78	2.39	2.30		
संख्या	42	19	45	19		
टीमूल्य	2.139		1.905		46.411	24.372
Sig	n.s.		n.s.		0.01	0.01

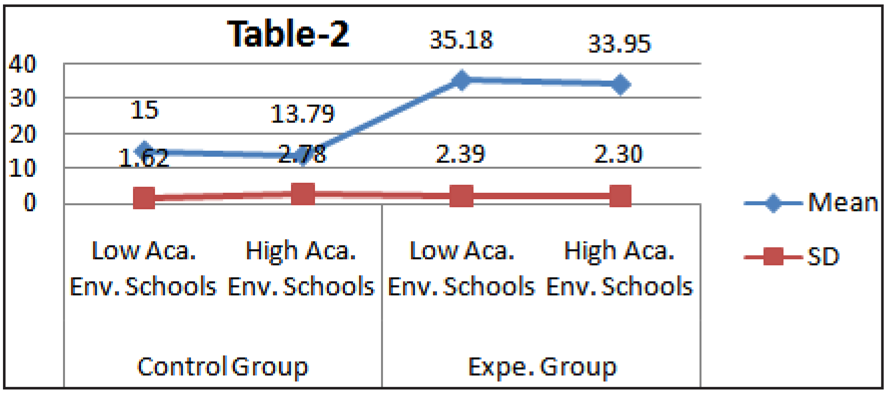

छात्रों के पश्च परीक्षण अंकों के आधार पर विद्यालयवार चित्रमयी प्रस्तुती

सारणी क्रमांक-3 : छात्राओं के पूर्व परीक्षण अंकों के आधार पर विद्यालयवार तुलना

	नियंत्रित समूह		प्रयोगात्मक समूह		नियंत्रित व प्रयोगात्मक समूह	
	निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण	उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण	निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण	उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण	टीमूल्य के लिए निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण	टीमूल्य के लिए उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण
मध्यमान	14.78	13	15.05	14.11		
मानक विचलन	1.48	3.16	2.56	3.29		
संख्या	41	18	38	18		
टीमूल्य	2.965		1.172		0.569	1.032
Sig	0.05		n.s.		n.s.	n.s

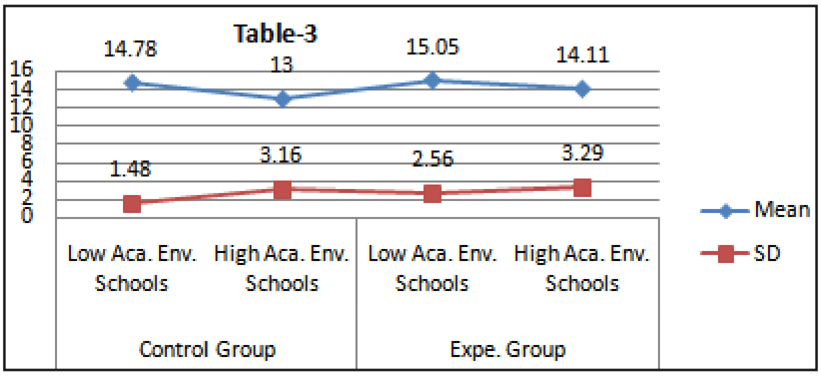

छात्राओं के पूर्व परीक्षण अंकों के आधार पर विद्यालयवार चित्रमयी प्रस्तुती

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

सारणी क्रमांक-4 : छात्रों के पश्च परीक्षण अंकों के आधार पर विद्यालयवार तुलना

	नियंत्रित समूह		प्रयोगात्मक समूह		नियंत्रित व प्रयोगात्मक समूह	
	निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण	उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण	निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण	उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण	टीमूल्य के लिए निम्न उपलब्धि विद्यालय वातावरण	टीमूल्य के लिए उच्च उपलब्धि विद्यालय वातावरण
मध्यमान	15.17	13.67	35.42	34		
मानक विचलन	1.61	3.25	2.53	2.52		
संख्या	41	18	38	18		
टीमूल्य	2.384		1.964		42.033	20.956
Sig	0.05		n.s.		n.s.	n.s.

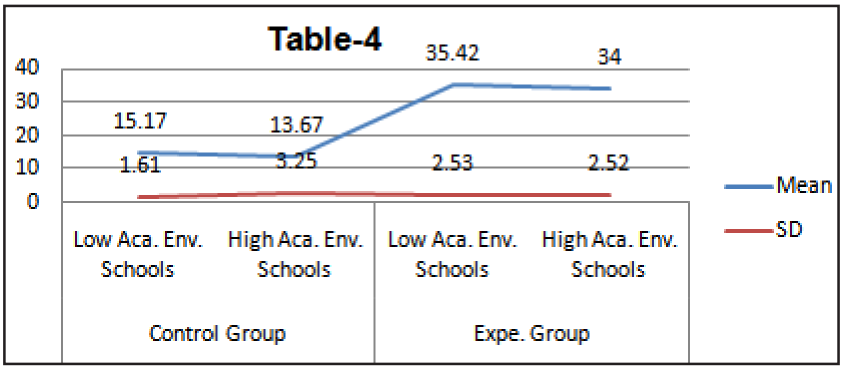

छात्राओं के पश्च परीक्षण अंकों के आधार पर विद्यालयवार चित्रमयी प्रस्तुती

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

समाजीकरण में विभिन्न सामाजिक संस्थाओं की भूमिका

डॉ. हरिचरण मीना*

* एसोसिएट प्रोफेसर, समाज शास्त्र विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सवाई माधोपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति को विभिन्न सामाजिक सरोकारों का ज्ञान कराया जाता है। यह व्यक्ति की आजन्म प्रक्रिया है। विभिन्न समाजों में बच्चों को विभिन्न संस्थाओं द्वारा सामाजिक मूल्यों से अवगत कराने के अलग अलग तरीके हैं। समाजीकरण में परिवार, पड़ोस, मित्र मंडली, शिक्षण संस्थाओं, धार्मिक संस्थाओं, व्यावसायिक संस्थाओं इत्यादि संस्थाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। समाजीकरण के माध्यम से ही बच्चे को सामाजिक प्राणी बनाया जाता है। समाजीकरण समाज की परम्पराओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तरित करताहै। समाजीकरण समाज की संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने का काम करता है। यह प्रक्रिया बच्चों को अनेक प्रकार के दायित्वों से अवगत कराती है तथा उनका निर्वाह करने में उनकी मदद करती है।समाजीकरण की प्रक्रिया को जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक भागों में बांट कर देखा जा सकता है। जब बच्चा जन्म लेता है तो वह सर्वप्रथम माता-पिता के सम्पर्क मे आता है फिर परिवार के सम्पर्क मे आता है। जन्म से लेकर बचपन तक की समाजीकरण प्रक्रिया प्राथमिक समाजीकरण कहलाती है। इसलिए समाजीकरण में विभिन्न सामाजिक संस्थाओं की भूमिका का अध्ययन सामाजिक अनुसंधान की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है।

शब्द कुंजी – सतत प्रक्रिया, पीढ़ी, संस्थाएं, पड़ोस, साधक, लोथला, दहेलीज, किशोरावस्था, युवावस्था, सहानुभूति, संवेदना, शिष्टाचार, लोकाचार, मित्र मंडली, सर्वांगीण विकास।

प्रस्तावना – समाजीकरण व्यक्ति को सामाजिक प्राणी बनाने की सतत प्रक्रिया है जो जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती रहती है। शिशु जन्म के समय न सामाजिक होता है और न ही असामाजिक। शिशु केवल हाड मांस का एक लोथला मात्र होता है जिसे जैसा समाजीकरण मिलता हैं वह उसी प्रकार का बन जाता है। समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति को सांस्कृतिक संस्कारों द्वारा एक सामाजिक प्राणी बनाया जाता है। बच्चा समाजीकरण के माध्यम से उस समाज की मान्यताओं, रीति-रिवाजों तथा संस्कृति की जानकारी प्राप्त करता है समाजीकरण समाज की संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने का काम करता है। इस प्रक्रिया द्वारा बच्चें को अनेक प्रकार के दायित्वों से अवगत कराया जाता है तथा उनका निर्वाह करने में उनकी मदद करती है। समाजीकरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को जोड़ने का काम करता है। समाजीकरण का अभिप्राय व्यक्ति को समाज द्वारा स्वीकृत एवं मान्यता प्राप्त व्यवहार सीखाने की प्रक्रिया से है।

समाजीकरण की प्रक्रिया को जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक भागों में बांट कर देखा जा सकता है। जब बच्चा जन्म लेता है तो वह सर्वप्रथम माता-पिता के सम्पर्क मे आता है फिर परिवार के सम्पर्क मे आता है। जन्म से लेकर बचपन तक की समाजीकरण प्रक्रिया प्राथमिक समाजीकरण कहलाती है। इस अवधि में बच्चों को भाषा, ज्ञान, बोल-चाल तथा दूसरो से कैसे व्यवहार करता है, किसे क्या सम्बोधन करना है यह सभी प्रकार का व्यवहार सिखाया जाता है। इस अवधि में अबोध बालक अपने परिवार तथा परिवेश से भाषा की जानकारी प्राप्त करता है तथा आरम्भिक व्यवहार सीखता है। इस अवधि में ही आगे के जीवन में सीखने की प्रक्रिया की नीव पड़ती है। यह प्राथमिक समाजीकरण समाज की मूल संस्कृति तथा उसके विचारों से बच्चें को अवगत कराता है। इस अवधि में बच्चें के अन्तर्मन में मूल्यों तथा विचारों का ढाँचा तैयार होता है।

जब बच्चा बचपन की दहलीज लाँघकर किशोरावस्था में प्रवेश करता है तब उसके समाजीकरण का दूसरा चरण आरम्भ होता है इस दौरान समाजीकरण की प्रक्रिया में परिवार के साथ-साथ विद्यालय तथा मित्र समूहों का योगदान भी आरम्भ हो जाता है। विभिन्न माध्यमों द्वारा विभिन्न प्रकार के सामाजिक सम्पर्क होते है जो बच्चें को नैतिक मानदंडो, रीति रिवाजों तथा विभिन्न प्रकार के सामाजिक एवं सांस्कृतिक सिद्धान्तों की जानकारी देने में सहयोग करते है।

जब बच्चा किशोरावस्था से वयस्कावस्था की ओर अग्रसर होता है तो उसे लैंगिग भेद का भी आभास होता है तथा समाजीकरण द्वारा ही लैंगिक भूमिकाओ की जानकारी प्राप्त होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार लैंगिक चेतना आने पर मनुष्य में स्त्री या पुरूष की विशेषताएं निर्मित होने लगती है। लैंगिक चेतना स्त्री व पुरूष के रूप में सामाजिक दायित्वों का बोध कराती हैं इस अवधि में बच्चा लैंगिक आधार पर रहन सहन, पहनावा, वेशभूषा इत्यादि को सीखता है।

जब कोई बच्चा वयस्क हो जाता है तो उसे नई प्रकार की भूमिकाओं में अपने आप को ढालने के लिए प्रयास भी समाजीकरण की ही अवस्था कहलाती है। पति, पत्नी, कर्मचारी या व्यवसायी इत्यादि अनेक प्रकार की नई भूमिकाओं का समाजीकरण इस अवस्था में होता है। उसी के अनुसार इन भूमिकाओं का निर्वाह करना सीखता है।

समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से आवश्यकता अनुसार व्यक्ति नए नए व्यवहारों तथा विचारों को अपने जीवन में शामिल करना सीखता है।

यह प्रक्रिया जीवन के अन्तिम दम तक जारी रहती है। प्रोढ़ अवस्था में समाजीकरण के नये व्यवहार को सीखने की प्रक्रिया चलती रहती है। नई प्रस्थिति एवं भूमिकाओं के अनुसार नया व्यवहार समाजीकरण के माध्यम से सीखा जाता है। पारम्परिक समाजों में परिवार के महत्वपूर्ण मामलों में वृद्ध लोगों का पूरा दखल रहता है। उम्र बढ़ने के साथ-साथ स्त्री और पुरूष दोनों प्रकार के वयस्क इस प्रकृति पर जोर देते रहते हैं। परन्तु आधुनिक युग में अनेक परिवारों में वृद्धों का प्रभाव घटा है। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि आधुनिकता के दौर में वृद्धजन परिवारों पर से अपनी पकड़ खो चुके है। आज भी महत्वपूर्ण मामलों में उनकी महत्वपूर्ण सलाह ली जाती है। जिस प्रकार वयस्क अपने बच्चों को कुछ न कुछ सिखाने में लगे रहते है वैसे ही वृद्ध जन भी अपने से कम आयु के लोगों से बहुत कुछ सीखते है। अर्थात समाजीकरण की प्रक्रिया दूतरफी प्रक्रिया है जिसमें हरेक कोई एक-दूसरे से कुछ ना कुछ सीखता रहता है।

समाजीकरण की प्रक्रिया में विभिन्न सामाजिक संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रहती है। समाजीकरण की प्रक्रिया परिवार तक ही समिति नहीं है। बड़ी संख्या में ऐसे समूह तथा संस्थान मौजूद है जिनमें व्यक्ति अपने समाज और समूदाय की संस्कृति सीखते है। माता-पिता एवं परिवार समाजीकरण की सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है। बच्चा जन्म के समय सबसे पहले माँ के सम्पर्क में आता है। माँ ही उसकी साधक नेता होती है। समाजीकरण की प्रक्रिया की शुरूआत बच्चों के जीवन में माता से आरम्भ होती है। माँ के बाद पिता एवं परिवार के अन्य सदस्यों से बच्चों का सम्पर्क होता है। माता-पिता एवं परिवार से ही बच्चा आधार भूत मूल्य जैसे प्यार, स्नेह, ममता, संवेदना, सहानुभूति, शिष्टाचार तथा लोकाचार आदि सीखता है। संयुक्त परिवारों में माता-पिता के साथ-साथ चाचा-चाची, दादा-दादी, ताई-ताऊ, चचेरे भाई-बहिन इत्यादि पारिवारिक सदस्य भी बच्चों के समाजीकरण में अपना योगदान देते है। इन सभी का बच्चे के समाजीकरण में महत्वपूर्ण योगदान होता है।परिवार में बच्चे विभिन्न सांस्कृतिक मूल्यों के बीच बड़े होते है और उन्हे विभिन्न मूल्यों, शिष्टाचारों एवं आस्थाओं को अपने आप में समाहित करने का अवसर मिल जाता है। पारिवारिक समरसता और विषमता का भी बच्चे के विकास पर पूरा प्रभाव पड़ता है।

पीटरसन का मानना है कि बाल्यकाल में माता-पिता या अभिभावकों से बार-बार दूर किया जाना तथा घर बदलना भी बच्चो के मन पर दुष्प्रभाव डालते है। ऐसे में उन्हें नई परिस्थितियों व परिवेशो के साथ तालमेल बिठाने में कठिनाई आती है। ऐसे में बच्चें एवं किशोर तनावग्रस्त हो जाते है। पारिवारिक झगड़ो एवं कलहों का भी बच्चे के जीवन पर दुष्प्रभाव पड़ता है। वे बच्चे जिन्हें अपने परिवार से स्थाई सहयोगात्मक तथा अनुकूलता से भरा वातावरण मिलता है वे उन बच्चों की तुलना में अच्छा विकास करते है जिन्हें पारिवारिक उथल-पुथल व अनिश्चय के वातावरण में जीना पड़ता है। भौतिक संसाधन, माता-पिता का संरक्षण, पारिवारिक अनुकूलता तथा सहयोगात्मक वातावरण बच्चों के समाजीकरण में विशेष भूमिका निभाते है।

बच्चो के जीवन में हम उम्र साथियों व मित्रों का भी समाजीकरण में विशेष योगदान होता है। एक दूसरे को समझने, परस्पर सहयोग करना, समानता इत्यादि का व्यवहार मित्रों के द्वारा ही सीखा जाता है। आरम्भ में साथियों के समूह पारिवारिक स्तर पर तथा घर के आस-पास रहने वाले बच्चों को मिलाकर बनते है। जब बच्चे युवा होने लगते है तब वे अपने लिंग के बच्चों के साथ मित्रता करने लगते है और मित्र मंडली बन जाती है। जो बच्चे मित्र मंडलियों में शामिल हो जाते है वे परिवार के सदस्यों की तुलना में मित्रों के साथ ज्यादा समय बिताते है। बुकोव्स्की का कहता है कि जब बच्चे आपस में मिल नही पाते है तो सोशल मिडिया आदि के माध्यम से परस्पर सम्पर्क बनाए रखते है। बालपन के दिनों के साथियों से मिलने वाले अनुभव बच्चों के दैनिक जीवन पर विशेष प्रभाव डालते है। इन दिनों बच्चे एक दूसरे से मिलकर रहने, चिढ़ाने, सूचनाओं के आदान-प्रदान, सहयोग, सुरक्षा, पुरस्कार, खुशियां तथा परेशान करने व नुकसान पहुंचाने जैसे मनोभावों से परिचित हो जाते है। कई बार बच्चे साथियों की बूरी संगति भी सीख जाते है। जैसे धुम्रपान, नशा,शराब पीना इत्यादि जो कि बच्चे के नकारात्मक समाजीकरण के अन्तर्गत आता है।

बच्चों के जीवन में विद्यालय का भी समाजीकरण में महत्वपूर्ण योगदान होता है। विद्यालय समाजीकरण का प्रथम औपचारिक माध्यम है जो बच्चे के जीवन में विचारों तथा शिष्टाचारों का संचार करता है। बच्चे विद्यालय के अन्तर्गत कक्षा में एक विशेष अनुशासन में रहना सीखते है। वे विद्यालय के नियमों व परम्पराओं का पालन करते है तथा कक्षा में पढाये जाने वाले अध्यायों को आत्मसात करने के लिए परिश्रम करते है। अपने शिक्षकों का आदर करना सीखते है तथा उनका कहना भी मानते है। शिक्षकों की सकारात्मक एवं नकारात्मक भूमिकाओं का बच्चों के जीवन पर सीधा प्रभाव पड़ता है। शिक्षकों का कार्य केवल अध्यापन तक ही सीमित नहीं होता है। बल्कि बच्चों का सर्वागीण विकास भी विद्यालय के माध्यम से होता है शिक्षकों के द्वारा ही बच्चे सांस्कृतिक मूल्यो से अवगत होते है इस स्तर पर बच्चों के समाजीकरण मे शिक्षकों की भूमिका उल्लेखनीय होती है।

फ्रोंस का तर्क है कि अधिकतर बच्चों के लिए शिक्षक ही दूसरे समाजीकरण के माध्यम होते है। समाजीकरण के प्रथम चरण तथा द्वितीय चरण के बीच ऐसी स्थिति में कोई अंतिम रेखा नही खींची जा सकती। यदपि विद्यालय और उसमें पढ़ाये जाने वाले पाठ्यक्रम तथा वहाँ होने वाली गतिविधियां समाजीकरण के दूसरे चरण में ही आते है जबकि आरंभिक अवस्था का संख्या ज्ञान तथा अक्षर ज्ञान प्राथमिक समाजीकरण में आता है। बड़े शिक्षण संस्थान बच्चों को अपने औपचारिक शिक्षण कार्यक्रमों के अलावा कुछ और भी सिखाते है जो बच्चों के विकास में विशेष रूप से सहयोगी होता है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि विद्यालयों की भूमिका भी बच्चों के समाजीकरण व उनके समुचित विकास मे उतनी ही महत्वपूर्ण होती है जितनी कि परिवार की भूमिका। महाविद्यालय भी युवाओं के समाजीकरण मे अपनी भूमिका निभाते है। इस स्तर पर बच्चें अपने भविष्य के रोजगार में लगने की उम्मीद से महाविद्यालय मे प्रवेश लेते है तथा यहाँ पर रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रमों का अध्ययन करते है तथा विभिन्न प्रकार के युवाओं के सम्पर्क के द्वारा सांस्कृतिक तत्वों का आदान प्रदान करते है। भविष्य की जिम्मेदारियों के लिए परिपूर्ण होने में महाविद्यालय का समाजीकरण भी उल्लेखनीय होता है। यह कहा जा सकता है कि शिक्षण संस्थानों का समाजीकरण में उल्लेखनीय योगदान होता है।

व्यक्ति के समाजीकरण में संचार मिडिया की भूमिका भी उल्लेखनीय है। संचार मिडिया में रेडियो, दूरदर्शन, समाचार पत्र, पत्रिका, मिडिया पोर्टल, टेलीविजन, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, फेसबुक, ट्विटर, व्हाटसअप, वेबसाइट आदि के माध्यम आते है। व्यक्ति के जीवन से संचार माध्यमों का तेजी से प्रभाव पड़ता है। फ्रूड का तर्क है कि इस इलेक्ट्रॅानिक मिडिया के युग में बच्चों को सीखने के विभिन्न प्रकार के नए नए अवसर प्राप्त होते है। इससे बच्चो के

सीखने का दायरा बहुत बढ़ गया है। अब प्रथम व दूसरे चरणों के समाजीकरण के लिए बच्चे परिवारों तथा सखा मंडली आदि पर निर्भर नहीं रह गए है। उनका यह भी कहना है कि समकालीन सामाजिक सत्य व मिथक अब मिडिया के माध्यम से हम तक पहुंचाए जाने लगे है। आधुनिक दौर में सोशल मिडिया यह साबित कर चुका है कि सूचनाओं के माध्यम किस प्रकार हमारे जीवन को प्रभावित करते है। उदाहरण के लिए फेसबुक के माध्यम से पेश की जानी वाली सामग्री हमारी रूचियों, पहचानो, सम्पर्क बढ़ाने की चाहतों को ठोस आधार प्रदान कर रही है। सूचना व सम्पर्क के अन्य माध्यमों की तुलना में कुछ वर्षो से टेलीविजन पर दिखाए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रम जैसे सीरियल, फिल्में, कार्टून, समाचार, संगीत, फैशन, खाद्य सामग्री, विविध प्रकार की ऐतिहासिक और भौगोलिक जानकारियाँ सभी आयु वर्ग के लोगों को प्रभावित करती है। प्रोटेट के अनुसार टेलीविजन द्वारा हिंसा से जुड़ी घटनाओं को बड़ा चढ़ाकर दिखाया जाना समाज में उग्रता का वातावरण पैदा कर रहा है।

बच्चों को दिखाए जाने वाले कार्टून कार्यक्रम तथा सीरियल हिंसा की घटनाओं से भरे होते है। बच्चे टेलीविजन पर दिखाई जाने वाली हिंसा को गंभीरता से नहीं लेते परन्तु फिर भी इस बात की पूरी संभावना रहती है कि वे बच्चों में असुरक्षा की भावना बिठा सकते है। इसके अलावा कुछ गीत, फिल्में तथा हिंसा युक्त विडियों गेम्स भी बच्चों के मन पर बुरा प्रभाव डालते है। उदाहरण के लिए नीड फॉर स्पीड, बर्न आउट, रोड रैश, पब्जी जैसे विडियो गेम्स भले ही खेल में जीतने वालों को पुरस्कार देते हो लेकिन वे ताबड़तोड स्पीड से गाड़ी चलाने वालो की प्रकृति को उकसाने का काम करते हैं यद्यपि संवेदना उत्पन्न करने वाले सुपर मारियो सनशाइन जैसे गेम्स भी टेलीविजन पर दिखाए जाते है जो कि बच्चों के सहानुभूति तथा दूसरों की सहायता से करने जैसे संस्कार डाल सकते है इस प्रकार समाज में मिडिया भी हमारे चारों ओर पसरे विश्व को समझ पैदा कराते हुए समाजीकरण में विशेष भूमिका निभाता है।

निष्कर्ष– निष्कर्ष रूप मे कहा जा सकता हैं कि समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति को विभिन्न सामाजिक सरोकारों का ज्ञान कराया जाता है। यह व्यक्ति की आजन्म प्रक्रिया है।समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से आवश्यकता अनुसार व्यक्ति नए नए व्यवहारों तथा विचारों को अपने जीवन में शामिल करना सीखता है। यह प्रक्रिया जीवन के अन्तिम दम तक जारी रहती है। समाजीकरण की प्रक्रिया में विभिन्न सामाजिक संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रहती है। समाजीकरण की प्रक्रिया परिवार तक ही समिति नहीं है। बड़ी संख्या में ऐसे समूह तथा संस्थान मौजूद है जिनमें व्यक्ति अपने समाज और समूदाय की संस्कृति सीखते है। माता–पिता एवं परिवार समाजीकरण की सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है। इसके साथ साथ पडौस, मित्रमंडली, शिक्षण संस्थाएं, आर्थिक संस्थाएं, राजनीतिक संस्थएं इत्यादि का भी व्यक्ति के समाजीकरण मे महत्वपूर्ण योगदान होता हैं।व्यक्ति के समाजीकरण में संचार मिडिया की भूमिका भी उल्लेखनीय है। संचार मिडिया में रेडियो, दूरदर्शन, समाचार पत्र, पत्रिका, मिडिया पोर्टल, टेलीविजन, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, फेसबुक, ट्विटर, व्हाटसअप, वेबसाइट आदि के माध्यम आते है। व्यक्ति के जीवन से संचार माध्यमों का तेजी से प्रभाव पड़ता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:–

1. अब्राहम, एम.एफ.'कंटेम्परी सोशियोलॉजी ऐन इंस्ट्रकशन टू कॉन्सेप्ट्स एंड थेओरिएम, एडिशन द्वितीय',ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी 2014 पृ. 68
2. बुकोव्सकी, डब्ल्यू.एम.अल, 'सोशलाईजेशन एंड एक्सवेरिएंसेस विथ पीअर्स' इन ग्रसेफ, जे.ई. एंड हेस्टिंग्स, पी.डी. हैडबुक ऑफ सोशलाईजेशन थ्योरी एण्ड रिसर्च – 1915 पृ. 228
3. बिल्टोन, टी, 'इंट्रोडक्टरी सोशियोलॉजी' मैकमिलन प्रेस लिमिटेड लंदन 1981 पृ. 119
4. गिड्डेन्स, ए.अल. 'इंट्रोडक्शन टू सोशियोलॉजी' 19 एडिशन, डब्लू डब्लू नोर्टन एंड कंपनी न्यूयार्क 2017 पृ. 232
5. कैनेडी, डी.बी. एंड केर्वर.ए.'रीसोशलाइजेशन एन अमेरिकन एक्सपेरिमेंट' बिहविओरल पब्लिकेशन न्यूयार्क 1973 पृ. 98
6. पेटरसन, सी.जे. एट अल 'सोशलाइजेशन इन दी कॉन्टेक्स्ट ऑफ फैमिली डाइवर्सिटी' इन ग्रसेफ, जे.ई.एंड हेस्टिग्स, पी.डी. हैंसबुक ऑफ सोशलाइजेशन ब्योरी एंड रिसर्ज 2015 पृ. 206
7. गुप्ता,एम.एल. एवं शर्मा,डी.डी. 'समाजशास्त्र का परिचय' साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा 2004 पृ.स. 149

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

उच्च प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के जीवन में ऑनलाइन शिक्षा से मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन पर होने वाले प्रभावों का अध्ययन

अभिलाषा कुमावत *

* (रिसर्च स्कॉलर) पैसिफिक एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी ,उदयपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – दुनिया भर में लॉकडाउन के चलते सभी स्कूलों को भी बंद कर दिया गया है। भारत के स्कूलों में मार्च में परीक्षाएं हो जाती हैं और अप्रैल में फिर से नयी कक्षाएं शुरू हो जाती हैं लेकिन स्कूल बंद होने के कारण इस बार बच्चों की पढ़ाई नहीं हो पाई है। इस समस्या का खासकर प्राइवेट स्कूलों ने डिजिटल माध्यम से बच्चों को शिक्षा देने का उपाय निकाला जिसमें ऑनलाइन क्लासेस वाट्सएप ग्रुप बना कर बच्चों को पढ़ाया जा रहा है। लेकिन इन माध्यमों में जो पठन सामग्री बनाई गयी है या भेजी जा रही है वो बच्चों को ध्यान में रखते हुये नहीं बनाई गयी है। ऑनलाइन शिक्षा से तात्पर्य अपने स्थान पर ही इंटरनेट व अन्य संचार उपकरणों की सहायता से प्राप्त की जाने वाली शिक्षा से है।

ऑनलाइन शिक्षा के विभिन्न रूप हैं, जिसमें वेब आधारित लर्निंग, मोबाइल आधारित लर्निंग या कंप्यूटर आधारित लर्निंग और वर्चुअल क्लासरूम इत्यादि शामिल हैं। आज से जब कई वर्ष पहले ऑनलाइन शिक्षा की अवधारणा आई थी, तो दुनिया इसके प्रति उतनी सहज नहीं थी, परंतु समय के साथ ही ऑनलाइन शिक्षा ने संपूर्ण शैक्षिक व्यवस्था में अपना स्थान बना लिया है।

ऑनलाइन शिक्षा का अर्थ – ऑनलाइन शिक्षा का अर्थ इन्टरनेट से सूचना प्रदान करने से कहीं ज्यादा है। ई-शिक्षा उन सभी चीजों तथा प्रक्रिया को अपने अन्दर समाहित करती है जो इलेक्ट्रॉनिक माध्यम का उपयोग व्यवसायिक शिक्षा को सुचारू रूप से प्रस्तुत करते हैं। ऑनलाइन शिक्षा शब्द का प्रयोग एक ऐसे ढांचे के रूप में किया जाता है जो लगभग सभी इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों (इन्टरनेट, इंट्रानेट, एक्सट्रानेट, कृत्रिम उपग्रह प्रसारण, ऑडियो विडियो, इंटरैक्टिव टेलीविजन, सी-डी इत्यादि) को पेशेवर शिक्षा को विद्यार्थीयों तक बड़े ही रोचक तरीके से पहुंचाता है। ऑनलाइन शिक्षा शब्द का प्रयोग कई जगहों पर किया जाता है जैसे ऑनलाइन शिक्षा, कंप्यूटर आधारित शिक्षा, सूचना जाल आधारित शिक्षा, सूचना जाल संसाधन आधारित शिक्षा, नेटवर्क सहयोगी शिक्षा, कंप्यूटर समर्थित सहयोगी शिक्षा। ऑनलाइन शिक्षा हमारी कक्षा व्यवस्था का ही विकसित रूप है, सिर्फ अन्तर यही है कि यहाँ पर शिक्षा को विद्यार्थी की सुविधा के अनुसार बनाया जा रहा है। वह अपने द्वारा निश्चित किए गए समय पर, अपनी गति से सीख सकता है।

ऑनलाइन शिक्षा के जरिये कोई भी विद्यार्थी, शिक्षक तथा अन्य सूचना तथा विचारों का आदान प्रदान करते हुए एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। यदि किसी विद्यालय के नजरिये से देखा जाए तो सभी के पास ज्यादा अवसर रहते हैं

ऑनलाइन शिक्षा की विशेषता :

1. ऑनलाइन शिक्षा की सबसे बड़ी विशेषता ये है कि छात्र अपनी सहूलियत के हिसाब से किसी भी समय और कहीं पर भी अपना शैक्षिक कार्य कर सकते हैं अर्थात इस शैक्षिक व्यवस्था में समय और स्थान की कोई पाबंदी नहीं है।
2. ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से छात्र वेब आधारित स्टडी मटीरियल को अनिश्चित काल तक एक्सेस कर सकते है और बार-बार देख कर इसके जटिल पहलुओं को समझ सकते हैं।
3. ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से पढ़ाई करना काफी हद तक कम लागत वाली होती है क्योंकि छात्रों को पुस्तकें या किसी दूसरे स्टडी मटीरियल पर पैसा खर्च नहीं करना पड़ता है।
4. ऑनलाइन शिक्षा इंटरनेट और कंप्यूटर कौशल का ज्ञान विकसित करता है जो विद्यार्थियों को अपने जीवन और करियर के क्षेत्र में आगे बढ़ने में मदद करेगा।
5. ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से छात्र नए कौशल सीखने पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा की राह में चुनौतियाँ :

1. बिना आत्म अनुशासन या अच्छे संगठनात्मक कौशल के अभाव में विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा मोड में की जाने वाली पढ़ाई में पिछड़ सकते हैं।
2. खराब इंटरनेट कनेक्शन या पुराने कंप्यूटर, पाठ्यक्रम एक्सेस करने वाली सामग्री को निराशाजनक बना सकते हैं।
3. भारत में बेहतर इंटरनेट कनेक्टिविटी का अभाव व इंटरनेट की कम गति ऑनलाइन शिक्षा की राह में सबसे बड़ी चुनौती है।
4. वर्चुअल क्लासरूम में प्रैक्टिकल या लैब वर्क करना मुश्किल होता है।
5. भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी क्षेत्रों की भांति विद्युत व्यवस्था का अभाव है, जो ऑनलाइन शिक्षा में रुकावट बन सकती है।

ऑनलाइन शिक्षा उपयोगिता – शिक्षा किसी व्यक्ति के विकास और समुदाय की समृद्धि के लिए भी योगदान देती है। ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली कई संचार मोड का उपयोग करके, शिक्षकों और छात्रों दोनों को विचारों और जानकारी का आदान-प्रदान करने, दुनिया भर में कहीं-भी काम करने की

अनुमति देती है। ई-लर्निंग दूरस्थ शिक्षा का एक रूप है, जहां शिक्षक के पास ट्यूटर की भूमिका कम होती है और उसकी शिक्षा में छात्र का योगदान सामान्य अध्ययन की स्थिति से अधिक होता है।ऑनलाइन शिक्षा कंप्यूटर-आधारित अनुकूली परीक्षण प्रदान करती है और वैकल्पिक शिक्षा और विचारों को बढ़ावा देती है। यह छात्रों, शिक्षकों, माता-पिता, पूर्व छात्रों, कार्यकर्ताओं और संस्थानों और सांख्यिकीय प्रतिक्रिया द्वारा निरंतर सुधार के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करता है। ऑनलाइन शिक्षा छात्रों, शिक्षकों, स्कूलों और विश्वविद्यालयों को मापने, रैंक करने, छात्रों के सर्वांगीण विकास को पुरस्कृत करने के लिए एक सतत ग्रेडिंग प्रणाली प्रदान करती है।

मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ एवम परिभाषाए – स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास करता हैं। मानसिक स्वास्थ्य मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए बालक का विकास कुंठित हो जाता है या रुक जाता है मानसिक अस्वस्थता कहलाता है। हमारे जीवन में मानसिक स्वास्थ्य का महत्व शारीरिक स्वास्थ्य से कहीं कम नहीं है। मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति ही अपने परिवार एवं विद्यालय का वातावरण व्यवस्थित रूप से समायोजित कर पाता है। जिस बालक का व्यवहार असामान्य होता है वह मानसिक रूप से अस्वस्थ होता है, किंतु थोड़ी-थोड़ीबात पर बालको का झुंझला जाना बालक के मानसिक रूप से अस्वस्थ होने का परिणाम है। बालकों के लिए मानसिक रूप से स्वस्थ होना आवश्यक

क्रो एवं क्रो 'मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान वह विज्ञान है जिसका संबंध मानव कल्याण से है और जो मानव संबंधों के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करता है।'

मानसिक स्वास्थ्य की विशेषताएं :

1. मानसिक विकास अर्थात समझने की शक्ति,स्मरण शक्ति, कल्पना करने की शक्ति, तर्क करने की शक्ति तथा बुद्धि आदि के विकास को शैक्षिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण स्वीकार किया जाता है।
2. मानसिक स्वास्थ्य के बिना बालकों की योग्यता का उचित विकास संभव नहीं है।
3. बच्चों की बुद्धि रुचि एवं मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता था। उस समय शिक्षा पूर्णतया अध्यापक केंद्रित थी किंतु अब शिक्षा का केंद्र बालक बन गया है। उसकी मानसिक स्थिति रुचि एवं अन्य योग्यता के अनुसार योग्यताओं को आधार मानकर पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है।

समायोजन का अर्थ – व्यक्ति अपने विकास में ऐसी परिस्थितियों का सामना करता है, जो उसकी इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति में बाधक होती हैं उदाहरणार्थ-एक छात्र शिक्षा समाप्ति करने पर हवाई सेना में जाना चाहता है, लेकिन उसका स्वास्थ्य और माता-पिता का हठ उसे लक्ष्य प्राप्त नहीं करने देता। इसके उपरान्त उसमें असन्तोष, मानसिक तनाव, व्यवहार में अस्थिरता आदि असामन्यताए उत्पन्न होने लगती हैं। अब वह हवाई सेना में न जाकर वायुयान ऑफिस में अच्छा ऑफीसर बनने का लक्ष्य निर्धारित करता है। यदि वह इस लक्ष्य में सफल हो जाता है। तो परिस्थिति के प्रति उसका समायोजन माना जायेगा। पर यदि उसे इसमें सफलता नहीं मिलती तो उसमें कुसमायोजन उत्पन्न हो जाता है। अत: जब व्यक्ति अपने व्यवहार की गतिशीलता का प्रयोग आवश्यकताओं की पूर्ति और आत्म-पुष्टि के लिये करता है तो इसे समायोजन की प्रक्रिया कहा जाता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह अंत समय तक समाज में ही रहना चाहता है वह उसी समय अधिक प्रसन्न दिखाई देता है जबकि वह स्वयं की रूचि पसंद और अभिवृत्ति वाले समूह को प्राप्त कर लेता है। इस व्यावहारिक गतिशीलता का नाम ही समायोजन है। जब व्यक्ति अप्रसन्न दिखायी देता है तो यह उसके व्यवहार का कुसमायोजन होता है। समाजीकरण की प्रवृत्ति इसकी द्योतक है कि वह जीवन को सरल बनाने के लिये कुछ व्यक्तियों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने का प्रयत्न करता है। वह उस समूह का अंग बन जाता है। तथा प्राय: उसकी मान-मर्यादा, रीति-रिवाज और बाह्य तथा आन्तरिक नियमों का पालने करने लगता है। वह अपने जीवन को समाज के परिवेश के साथ समायोजित करने का प्रयास करता है और इसके पश्चात् वह अपने व्यवहार में सामाजिक स्तर के अनुसार आंशिक अथवा पूर्ण परिवर्तन करता है। जैविक व्यवहार की गतिशीलता को सामाजिक मान्यता या सामाजिक अमान्यता ही उसकी समायोजन एवं कुसमायोजन की द्योतक होती है।

समायोजन की परिभाषाएँ

बोरिंग, लैंगफैल्ड एवं बैल्ड के अनुसार, 'समायोजन वह प्रक्रिया है,जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में सन्तुलन रखता है।'

गेट्स एवं अन्य के शब्दों में, 'समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच सन्तुलित सम्बन्ध रखने के लिये अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।'

संबंधित साहित्य का अध्ययन – संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधान कार्य उचित दिशा में एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता है। संबंधित साहित्य का अध्ययन किसी अनुसंधान के लिए सैद्धांतिक पृष्ठभूमि तैयार करता है। अनुसंधान की समस्या से संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषो, अभिलेखों और प्रकाशित शोध प्रबंध एवं पत्र पत्रिकाओं से है। जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने में अहम कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। इसके महत्व को स्पष्ट करते हुए **गुड ,बार यतथा स्केट्स** ने लिखा है।

कि'एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रहे सिद्धांत संबंधी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे उसी प्रकार शिक्षा के प्रति जिज्ञासु छात्र अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले अनुसंधानकर्ता के लिए भी क्षेत्र से संबंधित सूचना एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।'

प्रस्तुत समस्या पर शोध करते समय शोधकर्ता ने कथित व अन्य शोध समस्याओं का अध्ययन किया जिसका विवरण निम्नवत है

1. विदेशों में हुए मानसिक स्वास्थ्य समायोजन एवं मूल्यों पर आधारित शोध कार्य

1. **थॉमसन, एमी (2012)** 'विद्यार्थियों को प्रभावित करने वाले शिक्षकों के व्यक्तित्व लक्षण' विषय पर शोध कार्य। किय
2. **सोसरियो,सिबेलो. (2004)** ने आसपास के वातावरण का किशोरों के शैक्षिक मूल्य एवं विद्यालय प्रयासों पर प्रभाव जानने के लिए अन्वेषने किया
3. **ये,जिपेक्ग.(2003)** यह जयपुर जी पैक जी पर कब दीपक ने समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया
4. **लिम्स पालस्ट्रीट एच.प्रविल एवं हेम्पटन जे.डब्लू (2002)** इनके अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि 300 से अधिक संख्या वाले विद्यार्थियों के माध्यमिक विद्यालयों में शैक्षिक समायोजन संबंधी समस्याएं विद्यालय के

आकार व वर्ग पर भी प्रभावित होती है

5. **जी. एनत्र. बारबायस** (2006) 'निर्देशन कार्यक्रम क्रम का भावात्मक विकास पर प्रभाव का अध्ययन।'

भारत में हुए मानसिक स्वास्थ्य समायोजन एवं मूल्यों पर आधारित शोध कार्य

1. **राजश्री** (2016) 'जीवन मूल्य: समायोजन का आधार।' उद्देश्य में पाया गया कि कार्यरत महिलाओं के जीवन मूल्यों तथा समायोजन के विविध पक्षों का अध्ययन करना तथा कार्यरत महिलाओं के विविध जीवन मूल्य एवं समायोजन के विविध क्षेत्रों के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

2. **सिंह महीपाल** (2015) 'सावेगिक बुद्धि के संदर्भ में किशोर विद्यार्थियों की दुश्चिंता, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।'

3. **कोचरगोकर एस.एल**(2012) 'रिटायडमेंट : अ स्टडी इन रिलेशन टू एंनिषीटी स्ट्रेस एडजस्टमेंट एंड लाइफ सेटीसफेक्शन' प्रस्तुत शोध में सेवानिवृत्ता पूर्व एवं पश्चात मनोविज्ञान एवं सामाजिक परिवर्तनों के अध्ययन एवं मनोसामाजिक कारक, व्यक्तित्व और समायोजन के मध्य संबंधों का अध्ययन किया।

4. **कालू राम रसिया** (2011) 'आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर व समायोजन का अध्ययन' आवासीय विद्यालय के समग्र विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का अध्ययन करना आवासीय विद्यालय के समग्र के कुल 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

5. **नंदा ए एन** (2008) ने 'किशोर बालिकाओं की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओ व उनका समायोजन का अध्ययन।'पर शोध कार्य किया इस अनुसंधान द्वारा समायोजन संबंधी निम्न समस्याएं पाई गई।

अध्ययन की आवश्यकता – कोविड–19 महामारी के कारण जनजीवन पूर्ण रूप से प्रभावित हो रहा है किसी भी व्यक्ति की स्थिति को ऊपर उठाने के लिए शिक्षा सबसे अच्छा साधन है परंतु शिक्षा भी इस महामारी के कारण रुक सी गई है जिससे विद्यालयों द्वारा ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा दिया गया है। इससे विद्यार्थियों की शिक्षा को निरंतर किया जा सके। ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी एक निश्चित समय पर अध्यापक द्वारा ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी को एक निश्चित समय पर अध्यापक द्वारा पढ़ाया जा रहा है। इससे विद्यार्थी के मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन पर असर दिखाई दे रहा है। अभिभावकों को भी उचित साधन उपलब्ध कराने में कठिनाई उत्पन्न हो रही है। इससे अध्यापन कार्य प्रभावित हो रहा है।इस संदर्भ में वर्तमान शिक्षा वर्तमान अध्ययन को सुचारू करने के लिए योजना बनाई गई।

अध्ययन का क्षेत्र – वर्तमान समय में कोविड–19 के कारण मानव जीवन में चारों ओर मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। विद्यार्थी को ऑनलाइन शिक्षा दी जा रही है जिसके कारण विद्यार्थी में मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित व्यवहार की अनेक समस्याएं दिखाई देती है जैसे समझने की शक्ति, स्मरण शक्ति, कल्पना करने की शक्ति, तर्क करने की शक्ति आदि के विकास को शैक्षिकदृष्टि से अत्यंत प्रभावित हुए हैंऑनलाइन शिक्षा से विद्यार्थियों में मनोरंजन औरसांस्कृतिक क्रिया कलाप पूर्ण प्रतिबंध हो गए हैं। घरों की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण आर्थिक चिंता भी बढ़ गई है। विद्यार्थी को सहानुभूति वातावरण नहीं मिल पा रहा है। उचित रूप से कक्षा कार्य व गृह कार्य नहीं मिल पा रहा है।अनुशासन का भी पूर्ण अभाव है।

शैक्षिक दृष्टि से – विद्यार्थी का सर्वोपरि लक्ष्य उत्ताम शिक्षण प्राप्त करना है जिससे उसका सर्वांगीण विकास हो सके। कोविड–19 महामारी के कारण निरंतर शिक्षण कार्य प्रभावित हो रहा है। वर्तमान परिस्थितियों में इसके प्रभावों को कितना और कैसे सुधारा जा सके ऐसे ही विचार बिंदुओं में 'विद्यार्थियों के जीवन मूल्य में ऑनलाइन शिक्षा से मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन पर होने वाले प्रभावों का अध्ययन कर पता लगा सकेंगे।'

आर्थिक दृष्टि से – मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों के लिए कक्षा के लिए उपयोगी उपकरण लैपटॉप, स्मार्टफोन, नेटवर्क आदि आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जिन परिवारों का आर्थिक पक्ष मजबूत नहीं है वह उसे उपलब्ध कराने में सक्षम नहीं हो पा रहे हैं।

विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से – स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ ही बालक की जन्मजात शक्तियों का विकास करना है। शिक्षा से ही व्यक्ति सही रूप में चिंतन करना सीखता है। शिक्षा व्यक्तियों का निर्माण करती है शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है। जो जीवन पर्यंत चलती रहती है। शिक्षा के द्वारा ही बालक का सर्वांगीण विकास संभव है।

शोधकर्ता की दृष्टि से – संबंधित साहित्य के अध्ययन से यह पता चलता है कि मानसिक स्वास्थ्य, मूल्य और समायोजन पर तो बहुत शोध कार्य हुए हैं। परंतु ऑनलाइन शिक्षा के विषय पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। अत: यह विद्यार्थियों के जीवन में ऑनलाइन शिक्षा से मानसिक स्वास्थ्य मूल्य एवं समायोजन पर होने वाले प्रभाव को लिया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य – प्रस्तुत शोध कार्य के निम्न उद्देश्य है –

1. ऑनलाइन शिक्षा से विद्यार्थियों की प्रभावशीलता का पता लगाना।
2. ऑनलाइन शिक्षा से मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. ऑनलाइन शिक्षा से विद्यार्थियों पर पड़ने वाले समायोजन का अध्ययन करना।
4. ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिभावकों की जागरूकता का पता लगाना।
5. ऑनलाइन शिक्षा से विद्यार्थियों के समक्ष आने वाली कठिनाइयों का पता लगाना।
6. ऑनलाइन शिक्षा से अभिभावकों के समक्ष उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों का पता लगाना।

परिकल्पनाएँ:

1. ऑनलाइन शिक्षा की प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. विद्यार्थियों के मध्य सकारात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि – शोध अध्ययन में शोधकर्ताओं ने अनुसंधान हेतु निम्न शोध विधि प्रयोग में ली गई

1. सर्वे विधि से विद्यार्थियों के जीवन में ऑनलाइन शिक्षा से अभिभावकों को आने वाली कठिनाइयों का पता लगाना
2. विद्यार्थियों के जीवन में ऑनलाइन शिक्षा का प्रश्नावली विधि के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन का पता लगाना।
3. इसमें साक्षात्कार भी किए जाएंगे ऑनलाइन शिक्षा वाले अभिभावकों को साक्षात्कार में सम्मिलित किया जाएगा।

उपकरण – अनुसंधान में निम्न आंकड़ों को सम्मिलित किया गया

मानकीकृत | स्वनिर्मित

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी तकनीकी:

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी टेस्ट

परिसीमन

प्रस्तुत शोध उदयपुर जिले तक ही सीमित है

1 बड़गांव 2 पंचायत समिति 3 गिर्वा

क्षेत्र – उच्च प्राथमिक कक्षाओं तक ही सीमित है।

स्तर – प्रस्तुत शोध कार्य निजी विद्यालय तक ही सीमित है

लिंग – प्रस्तुत शोध कार्य निजी विद्यालय के छात्र छात्राओं को सम्मिलित किया गया है

न्यादर्श :

1. उदयपुर जिले के उदयपुर शहर, बड़गांव, गिर्वा के 10–10 विद्यालय का चयन किया जाएगा।
2. प्रत्येक विद्यालयो के 10 विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा।
3. प्रत्येक विद्यालय से 2 अध्यापक का भी चयन किया जाएगा।

न्यादर्श 300 विद्यार्थियों

150 छात्र — 150 छात्राए

शोध प्रतिवेदन योजना – अनुसंधान एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जो निश्चित सोपानों के अन्तर्गत सम्पन्न होती है अतः शोधकर्ता द्वारा शोधकार्य को पूर्ण करने के लिए निम्नलिखित चरणों का अनुसरण किया गया है।

प्रथम परिच्छेद (अध्ययन आकल्प) – इस परिच्छेद में प्रस्तावना, समस्या कथन, अध्ययन के उद्देश्य, समस्या का औचित्य, समस्या का परिसीमन, न्यादर्श चयन, विधि, प्रविधि, उपकरण एवं पारिभाषिक शब्दावली का वर्णन किया जाएगा

द्वितीय परिच्छेद (संबधित साहित्य का अध्ययन) – इस परिच्छेद में शोध समस्या से संबंधित साहित्य का अध्ययन, देश एवं विदेशो में हुए कार्यो का अध्ययन एवं उनके निष्कर्ष प्रस्तुत किये जाएगे।

तृतीय परिच्छेद (विधि प्रविधि सांख्यिकी उपकरण एवं न्यादर्श) – इस परिच्छेद में समस्या के अध्ययन हेतु प्रयुक्त विधि, प्रविधि, उपकरण एवं न्यादर्श चयन के कारण एवं मानसिक स्वास्थ्य समायोजन प्रभावशीलता से संबंधित तथ्यों का विश्लेषण एवं निष्कर्ष निकाल सकेंगे।

चतुर्थ परिच्छेद (दत्त संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या) – इस परिच्छेद मे मानसिक स्वास्थ्य समायोजन, सहित लिखा जाएगा। ऑनलाइन शिक्षा का मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन की जानकारी प्राप्त कर उनकी वर्तमान में प्रासंगिकता। ऑनलाइन शिक्षा पर आधारित विद्यालयों का पता लगाकर वर्तमान में प्रासंगिकता ज्ञात करना।

पंचम परिच्छेद (सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव) - इस परिच्छेद में शोध का सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव प्रस्तुत किये जाएगे एवं अग्रिम शोध हेतु सुझाव भी दिये जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Sujala Watve(2004)'A study of teacher effectiveness on student academic achivement in federal government college in logos state.'
2. Vellaisamy, M.(2004)&'Effectiveness of multimedia approach in teaching science at upper primary level'
3. सौरभ पंजवानी (2009) 'इफेक्ट ऑफ इंटीग्रेटिंग डिजिटल क्लासरूम विद टेक्स्ट बुक स्कैंस इन द क्लासरूम'
4. विनोद माहेश्वरी (2008) 'स्टडी ऑफ यूटिलिटी एंड इफेक्टिवेनेस ऑडियो विजुअल ऐड्स इन सेकेंडरी लेवल' एम एड . उदयपुर मोहनलाल सुखड़िया यूनिवर्सिटी
5. एस पाठक ए .(2003) 'शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र' जयपुर राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी
6. जे.सी.(2002) 'एजुकेशन रिफॉर्म्स इन इंडिया फॉर ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी' नई दिल्ली शिप्रा पब्लिकेशन
7. शर्मा राजकुमारी चाइल्डहुड एंड ग्रोइंग अप
8. hhttp://hiwikipedid.org/wiki
9. wwww.ncert.nic.in
10. hhttp://www.digitalclassroom.in
11. hhttp://www.csus.edu/atcs/tools/training/tutoriales.stm
12. hhttp://www.education.guardian.com
13. wwww.abdulkalam.com
14. hhttp://smarttech.com/classroom-suit
15. www.encyclopedia.com

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

साँची के बौद्ध स्मारकों में बुद्ध का जीवन दृष्य

डॉ. एकता पाल *

* सहायक प्राध्यापक (इतिहास) डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना - साँची का स्तूप जिला रायसेन मध्यप्रदेश में स्थित है साँची विदिशा से दक्षिण में 10 किमी और भोपाल से 45 किमी की दूरी पर स्थित है, यह स्थल मध्य रेलवे के इटारसी -दिल्ली रेलवे लाइन पर स्थित है, साँची की खोज जनरल डायर ने की थी,सन् 1891 ई में कनिंघम एवं एफ सी मैशी ने उत्खनन कराया था, 1912-1919 तक मार्शल ने यहाँ उत्खनन कराया एवं स्तूप का संरक्षण किया। यहाँ कई बौद्ध स्मारक हैं, जो तीसरी शताब्दी ई पू से बारहवी शताब्दी के बीच के काल के हैं। बौद्ध स्मारकों के लिये प्रसिद्ध साँची का पर्यटन की दृष्टि से भी अपना विशिष्ट महत्व है। यहाँ स्थित स्तूप मंदिर, स्तंभ, विहार, चैत्यालय इस बात का प्रमाण हैं कि प्राचीनकाल में साँची बौद्ध धर्म के प्रचार और शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। साँची का क्रमबद्ध इतिहास अशोक के समय से ही प्राप्त होता है। प्राचीन विदिशा नगरी के सम्पर्क में आने पर अशोक ने उसके पूर्व, पश्चिम तथा दक्षिण की पहाड़ियों पर अत्यंत रमणीक स्थान चुने और बौद्ध त्रिपिटाकाचार्यो के लिये विहारों और अस्थि पूजा के लिये स्तूप-समूहों का निर्माण कराया।

सॉची को तीसरी शती ई. पू. में वेदिसगिरि या चेतियगिरि कहा गया तथा दूसरी- पहली शती ई पू में काकणाव या काकणाय कहते थे। गुप्तकाल में साँची को काकनादबोट श्रीमहाविहार कहा जाता था। 9वीं शती ई में साँची को वोटश्रीपर्वत कहा जाता था, जो भवभूति के मालतीमाधव में उल्लिखित श्रीपर्वत हो सकता है। महावंश के अनुसार अशोक जब उज्जयिनी का राजा था, तब उसने विदिशा के एक प्रतिष्ठित सेठ की कन्या शाक्य कुमारी देवी के साथ विवाह किया। देवी धार्मिक प्रकृति की थी। संभवत: उसके आग्रह पर ही अशोक ने विदिशा के आसपास बौद्ध स्मारकों के निर्माण का निश्चय किया। उन्होंने पहाड़ी पर एक स्तूप, एक विहार का निर्माण एवं एक एकाष्म स्तंभ स्थापित कराया। उनका मानना था कि, बौद्ध धर्म की शिक्षा के लिये एकान्त स्थल जरूरी है। इस दृष्टि से साँची उपयुक्त स्थान था।[1] विश्व में बौद्ध धर्म का सबसे पहले प्रचार साँची से ही प्रारम्भ हुआ था। सम्राट अशोक के पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा साँची से ही बोधिवृक्ष की शाखा लेकर श्रीलंका गये थे। सॉची के बौद्ध स्मारक यूनेस्को द्वारा निर्मित विश्व धरोहर सूची में शामिल हैं।

साँची के स्तूप,स्तंभ, विहार, चैत्यालय, मंदिर, संघाराम को पुरातत्व भाषा में बौद्ध स्मारक कहा जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में इन बौद्ध स्मारकों में उत्कीर्ण बुद्ध के जीवन से संबंधित उन पक्षों को रेखांकित करने का प्रयास है,जिनसे बुद्ध का पूरा जीवन परिवर्तित हो गया था। महात्मा बुद्ध के जीवन से संबंधित मुख्य रूप से चार घटनायें हैं-**जन्म, महाभिनिष्क्रमण, सम्बोधि,तथा धर्मचक्रप्रवर्तन।** साँची के बौद्ध स्मारकों में ये सभी दृष्य देखने को मिलते हैं।

बौद्ध धर्म के प्रवर्तक एक क्षत्रिय राजकुमार थे, इनका नाम सिद्धार्थ था। सिद्धार्थ के पिता शुद्धोधन कपिलवस्तु गणराज्य के राजा थे। इनकी माता मायादेवी कोलिय गणराज्य की राजकुमारी थी। बोधिसत्व(बोधि अथवा परम ज्ञान के लिये प्रयत्नशील) का जन्म वैषाख पूर्णिमा के दिन 563 ई. पू. में लुम्बिनी में हुआ था। सिद्धार्थ के जन्म के सातवें दिन बाद माता महामाया का देहान्त हो गया। परिणामस्वरूप उनकी मौसी महाप्रजापति गौतमी ने उनका पालन पोषण किया। धर्मानंद कोसाम्बी के अनुसार, गौतमी और उसकी बडी बहिन मायादेवी अज्जन शाक्य की कन्यायें थीं। दोनों बहनों का विवाह शुद्धोधन के साथ हुआ था। जातक निदान कथा में लिखा गया है कि मायादेवी ने बोधिसत्व को शाल वृक्ष के नीचे जन्म दिया था। ललितविस्तार में गौतम का जन्म प्लक्ष वृक्ष के नीचे हुआ बताया है।[2]

पूर्वी तोरण द्वार के उत्तरी स्तम्भ पर मायादेवी के स्वप्न का दृष्य अंकित है, इस दृष्य में मायादेवी कपिलवस्तु में दाईं करवट निद्रामग्न हैं, उन्हें स्वप्न में दिखाई देता है कि बोधिसत्व श्वेत हाथी के रूप में उनकी कोख में प्रवेश कर रहे हैं। (चित्र 1) दक्षिणी तोरण द्वार के समक्ष बुद्ध के जन्म के दृष्य को प्रदर्शित किया गया है, द्वार के मध्य और निचले सिरदलों के बीच पूर्वी स्तम्भ पर मायादेवी विशाल कमल पर विराजमान हैं। उत्तरी तोरण द्वार के समक्ष ऊपरी और मध्यवर्ती सिरदलों के बीच में मायादेवी खडी हैं, उनका बायाँ हाथ जंघा पर है। यहाँ उन्हें हाथी घडों से स्नान करा रहे हैं। जल की मोटी धारा माया पर पड रही है। माया को दिखाये जाने वाले दृष्यों में उनके ऊपर छत्र अंकित किया गया है तथा उनके हाथ में कमल है। छत्र बोधिसत्व की उपस्थिति एवं कमल मायादेवी के देवीत्व का प्रतीक है। अश्वघोष ने अपने बुद्धचरित तथा सौदरानन्द ग्रन्थों में मायादेवी को शची, पदमा एवं पृथ्वी तथा स्वर्ग की देवी माया के समकक्ष माना है।

'तस्येन्द्रकल्पस्य बभूव पत्नी...।
पदमेव लक्ष्मी: पृथिवीव धीरा मायेति नाम्नानुपमेव माया।'[3]
तस्य देवी नृदेवस्य माया नाम तदाभवत्।
वीतक्रोधतमोमाया मायेव दिवि देवता।

महाभिनिष्क्रमण- अंगुत्तर निकाय से ज्ञात होता है कि गौतम बुद्ध का जीवन बाल्यकाल में सुख प्रेम तथा विलासिता में व्यतीत हुआ था। राजा शुद्धोधन ने

राजकुमार को सांसारिक सुखों में बाँधे रखने हेतु स्वस्थ व सुन्दर दास - दासियों को नियुक्त कर रखा था। 16 वर्ष की आयु में गौतम का विवाह यशोधरा के साथ सम्पन्न हुआ। ज्योतिषियों के अनुसार गौतम के पिता बुद्ध के आने वाले सन्यास जीवन के विषय में भलीभाँति जानते थे इसलिये दुख, पीड़ा, रोग तथा विषमताओं से गौतम को अनभिज्ञ रखने के लिये उसके उपयोग के लिये तीन मौसमो के लिये तीन महलों का निर्माण कराया था। किन्तु ये सारे प्रयास गौतम को बाँधने में विफल रहे।

मज्झिम निकाय से ऐसा ज्ञात होता है कि एक दिन गौतम बुद्ध जब महल से विहार के लिये निकले तो उन्होंने एक रोगी, एक वृद्ध, एक शव तथा एक प्रसन्नचित्त साधु को देखा। गौतम के लिये यह नया दृष्य था। उनके सारथी से उन्हें ज्ञात हुआ कि रोग, दुख, जरा और मृत्यु जीवों के सामान्य अनुभव हैं और इनसे केवल साधु ही मुक्ति पा सकता है। उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि संसार में अनिवार्य दुखों से निवृत्ति का मार्ग ढूंढना अत्यंत आवश्यक है। पत्नी और पुत्र को छोड़कर गौतम ज्ञान की खोज में निकल पड़े। यह घटना अभिनिष्क्रमण या महाभिनिष्क्रमण कहलाता है। उनके गृहत्याग के तीन कारण थे- 1.अपने आप्तों द्वारा एक-दूसरे से लड़ने के लिये शस्त्र धारण किये जाने से उन्हें भय लगा। 2. घर अड़चनों और कूड़े-कचरों की जगह है, 3. ऐसा लगा कि स्वयं जन्म, जरा, भरण, व्याधि और शोक से सम्बद्ध होते हुये उसी प्रकार की वस्तुओं पर आसक्त होकर वहीं रहना चाहिये।

'दक्षिणी तोरणद्वार के पृष्ठभाग के ऊपरी सिरदल के पश्चिमी सिरे पर गौतम के गृहत्याग का दृष्य आलेखित है। उत्तरी तोरण द्वार के पश्चिमी स्तम्भ पर ऊपर से दूसरे फलक में कपिलवस्तु के द्वार से छत्र वाहक खाली रथ लिये जा रहा है। (चित्र-2) इसी रथ पर बैठकर बोधिसत्व ने चार बार कपिलवस्तु के बाहर उद्यान देखने के लिये भ्रमण किया था। इन्हीं चार निमित्तों में उन्हें रोगी, वृद्ध, मृतक और सन्यासी दिखाई दिये थे। इन निमित्तों को देखकरही उन्हें जीवन से विरक्ति हो गई और उन्होंने सांसारिक सुखों का त्याग कर दिया।'[4] बोधिसत्व या बुद्ध का मनुष्य रूप इन तोरणद्वारों में कहीं नहीं मिलता। उनकी उपस्थिति को प्रतीकों के माध्यम से दिखाया गया है। जैसे- खाली रथ, खाली घोड़े, व सारथी से यही प्रतीत होता है कि बोधिसत्व उन पर सवार हैं। इस दृष्य में राजमहल के दास-दासियों को उपस्थित दिखाया है तथा एक सेवक बोधिसत्व के चरण पादुका लिये खड़ा है। पूर्वी तोरण द्वार के सम्मुख भाग में बीच के सिरदल पर यह दृष्य विस्तार से अंकित है। (चित्र-3)

सम्बोधि- गृहत्याग के पश्चात् गौतम कठोर तपस्या करने लगे। अन्न जल का त्याग कर दिया। उनका शरीर क्षीण होने लगा। जब इस तपस्या का कोई लाभ नहीं मिला तो उन्होंने तपस्या भंग कर दी। उरुवेला में निरंजना नदी के किनारे सुजाता नामक एक ग्रामीण कुलीन युवती ने खीर खिलाई। इसी स्थान पर गौतम पुन: सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हेतु तपस्या करने लगे।सात दिन और सात रातों के निरंतर ध्यान के परिणामस्वरूप गौतम को सांसारिक दुखों का कारण और उससे विमुक्ति का साधन प्राप्त हो गया। रात्रि के प्रथम पक्ष में उन्होंने पूर्व जन्मों की स्मृतिरूपी पहली विद्या प्राप्त की। रात्रि के मध्य भाग में दिव्य नेत्र प्राप्त किये, रात्रि के तृतीय पक्ष में उन्होंने प्रतीत्यसमुत्पाद का ज्ञान प्राप्त किया। उन्हें पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हुई, इसलिये वे बुद्ध कहलाये। जिस पीपल वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई उसे बोधिवृक्ष कहा गया।

'दक्षिणी तोरण द्वार के सम्मुख भाग में ऊपरी और मध्य सिरदल के बीच पूर्वी स्तम्भ पर यह दृष्य उत्कीर्ण है। सुजाता बायें हाथ में खीर तथा दायें हाथ में जल भरा कमण्डल लिये बोधिवृक्ष के दाईं ओर खड़ी है। बाईं ओर परिचारिका दोनों हाथों से एक थाल बोधिवृक्ष की ओर बढ़ा रही है। इसके बाजू में हाथ जोड़े एक पुरुष खड़ा है।'[5] उत्तरी तोरण द्वार के पृष्ठभाग में मध्य सिरदल के दृष्य में भी सुजाता खीर और जल लिये हुये है। चित्र- 4। पूर्वी तोरण द्वार के दक्षिण स्तम्भ पर, ऊपर से दूसरे फलक में सम्बोधि का विस्तृत दृष्य है। पश्चिमी तोरण द्वार के दक्षिणी स्तम्भ के भीतरी भाग पर ऊपर सम्बोधि का दृष्य है। नीचे नीरांजना नदी के किनारे बोधिसत्व की छह वर्ष की तपस्या का दृष्य है। यहाँ बुद्ध को चौकी तथा सिंहासनों के प्रतीकों द्वारा दिखाया गया है।

धर्मचक्र प्रवर्तन- महात्मा बुद्ध अब बुद्धत्व को प्राप्त कर चुके थे। वे समस्त मनुष्यों को सत्य से अवगत कराना चाहते थे, जिससे वे सही मार्ग पर चल सकें। बुद्ध ने अपना पहला उपदेश सारनाथ में पंचभद्रवर्गीय भिक्षुओं अन्नकोदय, भप्प, मद्य, अस्यी या अस्यपि तथा महानाय को दिया। बुद्ध के पहले उपदेश को 'धर्मचक्रप्रवर्तन' कहा गया। दक्षिणी तोरण द्वार के पश्चिमी स्तम्भ के सिरे पर निचले सिरदल के नीचे धर्मचक्र प्रवर्तन का दृष्य है। स्तम्भ के ऊपर एक बड़ा धर्मचक्र है। धर्मचक्र की धार पर त्रिरत्नों का अलंकरण है। चक्र के ऊपर छत्र है। उपासक-उपासिकायें हाथ जोड़े स्तम्भ के दोनों ओर खड़े हैं। उनके सामने स्तम्भ के दोनों ओर कई हिरण हैं। इसी कारण उस स्थान को 'मृगदाव' कहते हैं। इसी तोरण द्वार के पश्चिमी स्तम्भ पर ये दृष्य अंकित हैं। पूर्वी तोरण द्वार के दक्षिणी स्तम्भ पर भी धर्मचक्र का दृष्य अंकित है। धर्मचक्र प्रवर्तन के प्रतीक चक्र और हिरण का आरम्भ इसी तोरण से होता है।

इसी प्रकार उत्तरी तोरण द्वार के पूर्वी स्तम्भ के सम्मुख भाग पर बुद्ध के चमत्कार का दृष्य अंकित है। बुद्ध ने श्रावस्ती में अनेक चमत्कार दिखाये थे। 'संकाष्य चमत्कार के दृष्य में बुद्ध स्वर्ग के तैंतीस देवताओं को उपदेश दे रहे हैं। इसे देवावतार भी कहते हैं। भरहुत में तीन सोपान दिखाने का प्रयत्न किया गया है।'[6] 'उत्तरी तोरण द्वार के पश्चिमी स्तम्भ के भीतरी भाग पर ऊपर से दूसरे दृष्य में वैशाली चमत्कार का दृष्य प्रदर्शित है। इस दृष्य में एक बन्दर अपने हाथों में मधुपात्र (शहद) लेकर बुद्ध की ओर बढ़ रहा है। बुद्ध को शहद देने के पश्चात् वह प्रसन्नता में नाच रहा है।'[7] चित्र-5। 'पूर्वी तोरण द्वार के दक्षिणी स्तम्भ के भीतरी भाग में उरुवेला ग्राम में ब्राह्मणों के धर्म परिवर्तन का दृष्य है। उस समय अनेक ब्राह्मणों ने बुद्ध के प्रभाव में आकर बौद्ध धर्म ग्रहण किया था।'[8]चित्र-6।

महात्मा बुद्ध 45 वर्षों तक परिभ्रमण करके बौद्ध धर्म का प्रचार करते रहे। राजगृह जाने पर बिम्बिसार से मिले, यहीं पर सारिपुत्र और मोग्गलायन भी उनसे मिले। बौद्ध धर्म के प्रचार में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया। बुद्ध कपिलवस्तु पहुँचकर सौतेले भाई नन्द और पुत्र राहुल को बौद्ध भिक्षु बनाया। शाक्य राजा भद्रिक और सुदास नामक ब्राह्मण ने राजगृह में बौद्ध धर्म ग्रहण किया। बुद्ध महिलाओं के संघ में प्रवेश के विरुद्ध थे, किन्तु आनन्द के प्रार्थना करने पर बुद्ध ने गौतमी व यशोधरा को संघ में प्रवेश दिया था। बुद्ध जब अपने भ्रमण काल में पावाग्राम आये तो उन्होंने चुन्द लुहार के घर पर भोजन ग्रहण किया था, इसके पश्चात् उन्हें पेचिश शुरू हो गया। अंतिम समय का आभास होते ही बुद्ध ने आनंद से कहा- 'जिस दिन मुझे संबोधि ज्ञान प्राप्त हुआ उस दिन मिली हुई और आज मिली हुई भिक्षायें समान हैं, ऐसा तुम चुन्द लुहार को कहकर संतुष्ट करो।'[9] 80 वर्ष की अवस्था में 483 ई. पू. में बुद्ध की मृत्यु हो गई। बुद्ध की मृत्यु की घटना को महापरिनिर्वाण कहा जाता है।'उत्तरी तोरण द्वार के पश्चिमी स्तम्भ के भीतरी भाग पर ऊपरी दृष्य

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

में कुषीनारा के मल्लों का प्रदर्षन है। बुद्ध की अस्थियों का एक भाग लेकर मल्लों ने नेपाल की तराई में मुकुटबन्धन नामक स्तूप बनवाया एवं स्तूप की पूजा अर्चना की।'[10] चित्र-7।

कुशीनारा में बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात् अस्थियों का विभाजन किया गया था। पश्चिमी तोरण द्वार के पृष्ठभाग के ऊपरी सिरदल पर यह दृष्य है, इस दृष्य में एक भाग लेकर मल्ल लोग हाथियों और घोड़ों पर सवार होकर बुद्ध की अस्थियों को सिर पर रखकर शालवृक्ष की ओर बढ़ रहे हैं। 'पश्चिमी तोरण द्वार के उत्तरी स्तम्भ के भीतरी भाग पर उत्कीर्ण दृष्य में बुद्ध के अस्थि-अवशेषों को नाव द्वारा गंगा पार कराया जा रहा है।'[11] इसमें सपक्षषार्दूल-मत्स्य नौका का दृष्य है। इस प्रकार की नौका को मुक्तकल्पतरू की मध्यमंदिर नौका कहा गया है। बुद्ध के अस्थि अवशेषों को अनेक स्थानों पर स्तूपों के रूप में स्थापित किया गया है। ये स्तूप बौद्ध धर्म के महान केन्द्रों के रूप में विकसित हुये हैं। जिन दिनों बौद्ध धर्म में मूर्ति पूजा निषेध थी, उन दिनों ये स्तूप बौद्ध धर्म मानने वालों के लिये आस्था के प्रतीक थे और आज भी हैं। 'जब बुद्ध का महापरिनिर्वाण मल्लों के देश कुशीनगर में हुआ तो वैशाली के छवि, अल्लकप के बुलि, राजगृह के अजातशत्रु, कपिलवस्तु के शाक्य, कुशीनगर के मल्ल, पावा के मल्ल, रामग्राम के कोलिय ने उनकी अस्थियों को ले जाकर अपने-अपने राज्यों में स्तूप निर्मित करवाये। मान्यता है कि अशोक ने अपने शासनकाल में इन स्तूपों को खुलवाया और उन अस्थियों से 84 हजार स्तूपों का निर्माण करवाया। इनमें साँची स्तूप भी सम्मिलित है।'[12] बौद्ध स्मारक उन्हीं स्थलों पर निर्मित हुये जो बुद्ध के जीवन की घटना से संबंध रखते हैं। जैसे लुम्बिनी जहाँ बुद्ध का जन्म हुआ, बोधगया जहाँ बुद्ध ने सम्यक ज्ञान सम्बोधि प्राप्त की थी। सारनाथ जहाँ बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था। श्रावस्ती यहाँ बुद्ध ने चमत्कार दिखाया था। कुशीनगर यह बुद्ध की परिनिर्वाण भूमि है। राजगृह (राजगिर) यहाँ बुद्ध कई बार आये। संकाष्य (बसन्तपुर)यहाँ बुद्ध त्रायत्रिंष लोक से आये थे, वैशाली यहाँ बुद्ध का आगमन तीन बार हुआ था, नालन्दा बड़गाँव यहाँ बुद्ध कई बार आये। इसी प्रकार साँची, गिरनार, धोंक, सिद्धसर, तलाज, सान्हा, वल्लभी, काम्पिल्य, भज, कोण्डाणे, पितलखोरा, अजन्ता, बेदसा, नासिक, जुन्नर, कार्ले, कान्हेरी, गोवा, अमरावती, नागार्जुनकोण्डा, नागपट्टम, श्रीमूलवासम, काच्ची भी बौद्ध महत्व के स्थल हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. लॉ,हिस्टारिकल्स ज्योग्राफी, फुटनोट 4, महाबोधिवंश, पृ. 98-110
2. डॉ. सत्यनारायण दुबे, शरतेन्दु-बौद्ध एवं जैन धर्म तथा दर्षन, पृ. 17
3. अष्वघोष-बुद्धचरित खण्ड 1, पृ. 1 नोट 2
4. वैद्य-ललितविस्तार, पृ. 135
5. मार्शल फूशे-द मान्यूमेन्ट्स ऑफ साँची, भाग 1 पृ. 11
6. वैद्य-अवदानशतकम्, पृ. 216, कनिंघम, स्तूप ऑफ भरहुत चित्र 18
7. वाट्र्स के ऑन युवान च्वांग्स् ट्रैवल्स-भाग-2 पृ. 65
8. कष्यप, दीघनिकाय (2) पृ. 88
9. डॉ. सत्यनारायण दुबे, शरतेन्दु-बौद्ध एवं जैन धर्म तथा दर्शन, पृ. 20
10. भास्करनाथ मिश्र-साँची पृ. 39
11. मार्शल फूशे-द मान्यूमेन्ट्स ऑफ साँची, भाग 2 फलक 65
12. विनय कुमार तिवारी-सॉची, पृ. 4

चित्र-1 पूर्वी तोरण द्वार, उत्तरी स्तम्भ, मायादेवी का स्वप्न, बुद्ध का कपिलवस्तु में आगमन का दृश्य

चित्र-2 उत्तरी तोरण द्वार, चार निमित्तों का दर्शन और बुद्ध का महाभिनिष्क्रमण

RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

चित्र–3 पूर्वी तोरण द्वार,महल की दास–दासियाँ बोधिसत्व के चरण पादुका लिये खडे हैं

चित्र–4 दक्षिणी तोरण द्वार, सुजाता हाथ में खीर एवं जल भरा कमण्डल लिये खड़ी है, बुद्ध को सम्बोधि का दृष्य

चित्र–5 उत्तरी तोरण द्वार, पश्चिमी स्तम्भ, वैशाली चमत्कार

चित्र–6 पूर्वी तोरण द्वार, दक्षिणी स्तम्भ, जटिल ब्राह्मणों की दीक्षा

चित्र–7 उत्तरी तोरण द्वार पश्चिमी स्तम्भ, मल्लों की चैत्यवंदना

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

New Dimensions & Restrictions of Freedom of Speech and Expression in India

Prithwish Chakraborty* Dr. B.K. Yadav**

*Research Scholar, Om Sterling Global University, Hisar (Haryana) INDIA
** Research Guide and Dean, Om Sterling Global University, Hisar (Haryana) INDIA

Introduction - God has given wonderful gift of speech to the mankind to express each other. Through speech a human being conveys his thoughts, sentiments and feeling to others. Freedom of speech and expression is thus a natural right, which a human being acquires on birth. It is, therefore, a basic right. "Everyone has the right to freedom of opinion and expression; the right includes freedom to hold opinions without interference and to seek and receive and impart information and ideas through any media and regardless of frontiers" proclaims the Universal Declaration Of Human Rights (1948). The people of India declared in the Preamble of the Constitution, which they gave unto themselves their resolve to secure to all the citizens liberty of thought and expression. This resolve is reflected in Article 19(1) (a) which is one of the Articles found in Part III of the Constitution, which enumerates the Fundamental Rights.

Man as rational being desires to do many things, but in a civil society his desires have to be controlled, regulated and reconciled with the exercise of similar desires by other individuals. The guarantee of each of the above right is, therefore, restricted by the Constitution in the larger interest of the community. The right to freedom of speech and expression is subject to limitations imposed under Article 19(2).

Public order as a ground of imposing restrictions was added by the Constitution (First Amendment) Act, 1951. Public order is something more than ordinary maintenance of law and order. Public order in the present context is synonymous with public peace, safety and tranquility.

Scope of Freedom and Speech: Article 19(1)(a) of Indian Constitution says that all citizens have the right to freedom of speech and expression. Freedom of Speech and expression means the right to express one's own convictions and opinions freely by words of mouth, writing, printing, pictures or any other mode. It thus includes the expression of one's idea through any communicable medium or visible representation, such as gesture, signs, and the like. This expression connotes also publication and thus the freedom of press is included in this category. Free propagation of ideas is the necessary objective and this may be done on the platform or through the press.

This propagation of ideas is secured by freedom of circulation. Liberty of circulation is essential to that freedom as the liberty of publication. Indeed, without circulation the publication would be of little value. The freedom of speech and expression includes liberty to propagate not one's views only. It also includes the right to propagate or publish the views of other people; otherwise this freedom would not include the freedom of press.

Freedom of expression has five broad special purposes to serve:

1) It helps an individual to attain self-fulfillment.
2) It assists in the discovery of truth.
3) It strengthens the capacity of an individual in participating in decision-making.
4) It provides a mechanism by which it would be possible to establish a reasonable balance between stability and social change.
5) All members of society would be able to form their own beliefs and communicate them freely to others

In sum, the fundamental principle involved here is the people's right to know. Freedom of speech and expression should, therefore, receive generous support from all those who believe in the participation of people in the administration. It is on account of this special interest which society has in the freedom of speech and expression that the approach of the Government should be more cautious while levying taxes on matters of concerning newspaper industry than while levying taxes on other matters.

Explaining the scope of freedom of speech and expression Supreme Court has said that the words "freedom of speech and expression" must be broadly constructed to include the freedom to circulate one's views by words of mouth or in writing or through audiovisual instrumentalities. It therefore includes the right to propagate one's views through the print media or through any other communication channel e.g. the radio and the television. Every citizen of this country therefore has the right to air his or their views through the printing and or the electronic media subject of course to permissible restrictions imposed under Article 19(2) of the Constitution.

Freedom to air one's view is the lifeline of any democratic institution and any attempt to stifle, suffocate or gag this right would sound a death knell to democracy and would help usher in autocracy or dictatorship. The modern communication mediums advance public interest by informing the public of the events and development that have taken place and thereby educating the voters, a role considered significant for the vivacious functioning of a democracy. Therefore, in any setup more so in a democratic setup like ours, broadcasting of news and views for popular consumption is a must and any attempt to deny the same must be frowned upon unless it falls within the mischief of Article 19(2) of the Constitution.

The various communication channels are great spreaders of news and views and make considerable impact on the minds of readers and viewers and our known to mould public opinion on vitals issues of national importance. The freedom of speech and expression includes freedom of circulation and propagation of ideas and therefore the right extends to the citizen to use the media to answer the criticism leveled against the views propagated by him. Every free citizen has undoubted right to lay what sentiments he pleases. This freedom must, however, be exercised with circumspection and care must be taken not to trench on the rights of other citizens or to jeopardise public interest.

New Dimensions Of Freedom Of Speech And Expression: Government has no monopoly on electronic media: The Supreme Court widened the scope and extent of the right to freedom of speech and expression and held that the government has no monopoly on electronic media and a citizen has under Art. 19(1)(a) a right to telecast and broadcast to the viewers/listeners through electronic media television and radio any important event. The government can impose restrictions on such a right only on grounds specified in clause (2) of Art. 19 and not on any other ground. A citizen has fundamental right to use the best means of imparting and receiving communication and as such have an access to telecasting for the purpose.

Commercial Advertisements: The court held that commercial speech (advertisement) is a part of the freedom of speech and expression. The court however made it clear that the government could regulate the commercial advertisements, which are deceptive, unfair, misleading and untruthful. Examined from another angle the Court said that the public at large has a right to receive the "Commercial Speech". Art. 19(1)(a) of the constitution not only guaranteed freedom of speech and expression, it also protects the right of an individual to listen, read, and receive the said speech.

Telephone Tapping: Invasion on right to privacy : Telephone tapping violates Art. 19(1) (a) unless it comes within grounds of restriction under Art. 19(2). Under the guidelines laid down by the Court, the Home Secretary of the center and state governments can only issue an order for telephone tapping. The order is subject to review by a higher power review committee and the period for telephone tapping cannot exceed two months unless approved by the review authority.

Freedom of Press: The fundamental right of the freedom of presses implicit in the right the freedom of speech and expression, is essential for the political liberty and proper functioning of democracy. The Indian Press Commission says that "Democracy can thrive not only under the vigilant eye of legislature, but also under the care and guidance of public opinion and the press is par excellence, the vehicle through which opinion can become articulate." Unlike the American Constitution, Art. 19(1)(a) of the Indian Constitution does not expressly mention the liberty of the press but it has been held that liberty of the press is included in the freedom of speech and expression. The editor of a press for the manager is merely exercising the right of the expression, and therefore, no special mention is necessary of the freedom of the press. Freedom of press is the heart of social and political intercourse. It is the primary duty of the courts to uphold the freedom of press and invalidate all laws or administrative actions, which interfere with it contrary to the constitutional mandate.

Right to Information: The right to know, 'receive and impart information has been recognized within the right to freedom of speech and expression. A citizen has a fundamental right to use the best means of imparting and receiving information and as such to have an access to telecasting for the purpose. The right to know has, however, not yet extended to the extent of invalidating Section 5 of the Official Secrets Act, 1923 which prohibits disclosure of certain official documents. One can conclude that 'right to information is nothing but one small limb of right of speech and expression.

Grounds of Restrictions: Clause (2) of Article 19 contains the grounds on which restrictions on the freedom of speech and expression can be imposed-

1) **Security of State:** Under Article 19(2) reasonable restrictions can be imposed on freedom of speech and expression in the interest of security of State. The term "security of state" refers only to serious and aggravated forms of public order e.g. rebellion, waging war against the State, insurrection and not ordinary breaches of public order and public safety, e.g. unlawful assembly, riot, affray. Thus speeches or expression on the part of an individual, which incite to or encourage the commission of violent crimes, such as, murder are matters, which would undermine the security of State.

2) **Friendly relations with foreign states:** This ground was added by the constitution (First Amendment) Act, 1951. The object behind the provision is to prohibit unrestrained malicious propaganda against a foreign friendly state, which may jeopardize the maintenance of good relations between India, and that state. No similar provision is present in any other Constitution of the world. In India, the Foreign Relations Act, (XII of 1932) provides punishment for libel by Indian citizens against foreign dignitaries. Interest of friendly relations with foreign States, would not justify the suppression of fair criticism of foreign policy of the Government.

It is to be noted that member of the commonwealth including Pakistan is not a "foreign state" for the purposes of this Constitution. The result is that freedom of speech and expression cannot be restricted on the ground that the matter is adverse to Pakistan.

3) Public Order: This ground was added by the Constitution (First Amendment) Act. 'Public order' is an expression of wide connotation and signifies "that state of tranquility which prevails among the members of political society as a result of internal regulations enforced by the Government which they have established."

Public order is something more than ordinary maintenance of law and order. 'Public order' is synonymous with public peace, safety and tranquility. The test for determining whether an act affects law and order or public order is to see whether the act leads to the disturbances of the current of life of the community so as to amount to a disturbance of the public order or whether it affects merely an individual being the tranquility of the society undisturbed.

4) Decency or morality: The words 'morality or decency' are words of wide meaning. Sections 292 to 294 of the Indian Penal Code provide instances of restrictions on the freedom of speech and expression in the interest of decency or morality. These sections prohibit the sale or distribution or exhibition of obscene words, etc. in public places. No fix standard is laid down till now as to what is moral and indecent. The standard of morality varies from time to time and from place to place.

5) Contempt of Court: Restriction on the freedom of speech and expression can be imposed if it exceeds the reasonable and fair limit and amounts to contempt of court. According to the Section 2 'Contempt of court' may be either 'civil contempt' or 'criminal contempt.'

6) Defamation: A statement, which injures a man's reputation, amounts to defamation. Defamation consists in exposing a man to hatred, ridicule, or contempt. The civil law in relating to defamation is still UN codified in India and subject to certain exceptions.

7) Incitement to an offence: This ground was also added by the constitution (First Amendment) Act, 1951. Obviously, freedom of speech and expression cannot confer a right to incite people to commit offence. The word 'offence' is defined as any act or omission made punishable by law for the time being in force.

The Need To Protect Freedom Of Speech - There are four justifications for freedom of speech. They are:

1. For the discovery of truth by open discussion.
2. It is an aspect of self-fulfillment and development.
3. To express beliefs and political attitudes.
4. To actively participate in a democracy.

Conclusion: From this article it can be easily concluded that right to freedom of speech and expression is one of the most important fundamental right. It includes circulating one's views by words or in writing or through audiovisual instrumentalities, through advertisements and through any other communication channel. It also comprises of right to information, freedom of press etc. Thus this fundamental right has a vast scope.

From the above case law analysis it is evident that the Court has always placed a broad interpretation on the value and content of Article 19(1)(a), making it subjective only to the restrictions permissible under Article 19(2). Efforts by intolerant authorities to curb or suffocate this freedom have always been firmly repelled, more so when public authorities have betrayed autocratic tendencies.

It can also be comprehended that public order holds a lot of significance as a ground of restriction on this fundamental right. But there should be reasonable and proper nexus or relationship between the restriction and achievement of public order. The words 'in the interest of public order' include not only utterances as are directly intended to lead to disorder but also those that have the tendency to lead to disorder.

In the case of Brij Bhushan v. State of Delhi (AIR 1950 SC 129), the validity of censorship previous to the publication of an English Weekly of Delhi, the Organizer was questioned. The court struck down the Section 7 of the East Punjab Safety Act, 1949, which directed the editor and publisher of a newspaper "to submit for scrutiny, in duplicate, before the publication, till the further orders, all communal matters all the matters and news and views about Pakistan, including photographs, and cartoons", on the ground that it was a restriction on the liberty of the press. Similarly, prohibiting newspaper from publishing its own views or views of correspondents about a topic has been held to be a serious encroachment on the freedom of speech and expression.

In India, the press has not been able to exercise its freedom to express the popular views. In Sakal Papers Ltd. v. Union of India,] the Daily Newspapers (Price and Page) Order, 1960, which fixed the number of pages and size which a newspaper could publish at a price was held to be violative of freedom of press and not a reasonable restriction under the Article 19(2). Similarly, in Bennett Coleman and Co. v. Union of India, the validity of the Newsprint Control Order, which fixed the maximum number of pages, was struck down by the Court holding it to be violative of provision of Article 19(1)(a) and not to be reasonable restriction under Article 19(2). The Court struck down the plea of the Government that it would help small newspapers to grow.

References:-

1. The Constitution of India, part III, Fundamental Rights
2. All Answers ltd, 'Freedom of Speech and Expression' (Lawteacher.net, July 2021)
3. https://www.lawteacher.net/free-law-essays/constitutional-law/freedom-of-speech-and- xpression-constitutional-law-essay.php?vref=1> accessed 21 July 2021
4. The case of Brij Bhushan v. State of Delhi(AIR 1950 SC 129),
5. The case Indian Express Newspapers v. Union of India
6. The Constitution (First Amendment) Act, 1951.

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Amorous Relationship in the Novels of Chetan Bhagat

Vijaylaxmi Sathe*

***Research Scholar, Mansarovar Global University, Bhopal (M.P.) INDIA**

Introduction - Prevalent fiction the categories to which Bhagat's novels have a place has been defined in various routes in Western English-dialect feedback throughout the last 50 years. Mainstream fiction is defined by what it isn't: "writing." It is for the most part defined by its appear differently in relation to literary novel. While literary fiction means to hold up a mirror to human condition, prominent fiction intends to entertain, excite and comfort the pursuers. Most critics transparently or verifiably stick to the accompanying claims: Whereas "writing" is apathetic regarding (if not derisive of) the commercial center, original and mind boggling, prevalent fiction is straightforward, erotic, overstated, energizing, and equation based. "Literary" essayists invest decades obsessing about each sentence, while kind hacks create another soft cover every year, to be "devoured" in air terminals and quickly disposed of (Gelder 12-15). Well known fiction is defined by a wide and changed readership that has a place with an average or lowbrow category. The word 'well known' stems from a legitimate and political term that originally signified "having a place with the general population" (Williams, 198). However, in its historical move to current use the word presently signifies 'all around preferred', "conveys a solid pejorative sense identifying with its ramifications of 'selling out to pick up support". (Williams, 198) A prevalent novel as indicated by J.A. Cuddon is the one that has wide readership having a place with center or "tacky" category. Such a novel "may not have much literary merit." According to him, "Numerous a blockbuster, historical novel, novel of sensation, spine chiller and novel of adventure have been so depicted." to give some examples, some Western well-known authors are Agatha Christie, J.K. Rowling, Barbara Cartland, Erle Stanley Gardener, Sir Arthur Conan Doyle, Dan Brown, and Nicholas Sparks and so on.

In the first place the romantic tale of Hari and Neha in Five Point Someone, the way they meet out of the blue resembles mainstream bolly-wood motion picture. Hari, while running, meets with a mishap to Neha's auto. In spite of the fact that it's anything but a noteworthy mischance, Hari puts on a show to be harmed. Along these lines, Neha drops him at his inn. This is the way their connection begins. Like a regular sensational romantic tale he soon comes to realize that Neha is the little girl of his strict HOD, Prof. Cherian. Hari on her first date with Neha tries to make move at the exact second when she is dismal talking about her dead sibling. He considers, "I thought about whether I could take a risk and hold her arm… " He him-self regrets over his however and composes, "… how shallow I was. She was altogether chocked up and everything, except whatever I could consider was whether I could make my turn" (46) Hari gets erotic about her in the second date with her when she is having her dessert, "A pink tongue dashing out to get some softened frozen yogurt from achieving the ground had confused me." He gets lost each time she touches his hand. "I adored it when she touched me in at any rate, that is the means by which denied or debased I was… " Bhagat's saint are not perfect and don't put stock in perfect love. Hari is by all accounts excessively enthusiastic about kissing Neha. He says, "Well, you know how she is. So damn ill humored constantly, once in a while she is all cuddly, holds my hand, and acts comfortable at the motion pictures. In any case, when I take a stab at something, she stops me and gives me these addresses on how she is a not too bad young lady I should figure out how to act." He even confesses that he doesn't need pleasant and not too bad young lady. He trusts, "Pleasant individuals are totally exhausting… They don't give you a chance to kiss them."Hari even uses a few techniques to kiss her lips. He takes after Ryan's recommendation, "Give her the figment that you couldn't care less then as soon her mouth goes to the cheek, snap once and move your lips there. This is the best way to kiss great Indian ladies." But he can't make it. Like a conventional bolly-wood courageous woman Neha resists and says, "Were you attempting to kiss me on the lips?... Hari, you know I am not into that… Because this isn't right. This riches everything. Since it feels off-base. You are not a young lady. You won't get it." Unlike conventional romantic tale, kiss doesn't occur normally out of flood of emotions, however Hari wants to kiss. Hari all the time needs to drain the minute and endeavors to kiss her. When she is tanked with him on insti rooftop, he communicates his want, "Again our mouths were millimeters away. She tilted her head sideways. Is it safe to say that she would kiss me? Or then again rather,

was she-in addition to two-glasses-of-vodka going to kiss me?"

Maybe this is Bhagat's endeavor to demonstrate the sexual action among the youngsters as a characteristic and very practical. At whatever point they get chance they enjoy physical freedom. Bhagat has realistically indicated how by the course of time, lovers begin hating each other. Lovers who can't live without each other at first feel hard to endure each other after some time. Bhagat steadfastly captures the photo of the present lovers who intitially sit with entwined fingers, clearly profoundly in love, young lady giggles at whatever the kid says, kid arranges the most expensive thing in the menu. This senseless delusion is broken by the course of time when they begin battling on senseless issues. Priyanka and Shyam, after some course of time of their relationship, choose to meet on one condition – that they would not battle, no habitual pettiness, no sarcastic remarks and no judgmental comments. Shyam is in question that Priyanka would dump him. She continues saying Shyam that her mom constrains her to wed a rich person however where it counts she likewise concurs with her mom. She discusses her mom's insistence to wed a rich person each time she meets Shyam and requests that he gain ground in vocation. She says, "I need somebody doing great in his profession." Career and settled life turn into her need to love by then. They begin discovering issues with each other. They talk however don't communicate. This prompts their separate of their four years of romance.

Three Mistakes of My Life exhibits the socially unacceptable love story of Govind with his closest companion Ishaan's sister, Vidya. Govind, a topper in science, is asked by his companion Ishaan to instruct Mathematics to his sister Vidya. Govind's love for Vidya isn't worthy because of two reasons. To begin with, Vidya is his closest companion's sister and second, Vidya is his understudy. It is Vidya who steps up each time in their relationships. Despite the fact that Govind continues keeping away from her each time, he feels struggle inside between his psyche and heart from the earliest starting point. Chetan Bhagat has flawlessly depicted the way Vidya gets Govind's extravagant. Whenever Ishaan, Govind and Omi are at Ali's place persuading his dad for cricket-training, they are offered nourishment. Ish and Govind severs a similar chapatti. Govind considers, "His long finger helped me to remember his sister's. Damn, I needed to show her again following day." Govind has a blended feeling when he says above words. His business mind doesn't care to show her for nothing and his heart helps him to remember her fingers. When he leaves the room in the wake of showing Vidya on the second day of their training, his heart begins beating quicker in an issue whether to inform Ishaan concerning his intend to go to book shop with Vidya or not. He feels remorseful for his intend to go to book shop with his companion's sister. He removes rapid steps to move from Ishaan's sight. He gazes at her lips and quickly admonishes himself. Indeed, even at the book shop he doesn't care for a retailer looking at her. At the point when, in an eatery, Vidya proposes Govind for fellowship, he rejects the proposition for being her instructor and her sibling's closest companion. Be that as it may, following couple of minutes, her typical mitigating touch energizes him and he feels desire to investigate her face once more. However his still, small voice constrains him to swing to pizza instead. That demonstrates the ascent of desire for Vidya where it counts in his heart. He gets interest for Vidya yet his morals stop him. Vidya's straight to the point conduct gets Govind open his heart and offer his life. Govind, ordinarily a practical and saved person, educates Vidya everything regarding his life i.e. about his marketable strategies, new shop, how he extended his business through offering educational costs and instructing, Ishaan's irritating propensity for offering markdown to children and Omi's ineptitude. He himself says, "I had opened up more than I at any point needed to anybody in my life". It is Vidya who drives their relation to suggest level. She requests that Govind oil her hair while he seeks showing her and Govind takes after her guidelines.

2 States is about love between Krish, a Punjabi kid and Ananya, a Tamilian young lady and troubles they look in persuading their folks for their marriage. Like all Bhagat's past novels, the love depicted in *2 States* is practical and lacking idealism. Krish and Ananya progress toward becoming companions at IIM. Bhagat has realistically depicted the way contemporary love issue begins with physical relation. Krish is unobtrusive in conversing with her however his considerations uncover about his aims, "For what reason would any person need to be just companions with young ladies? It resembles consenting to be close to a chocolate cake and never eat it. It resembles sitting in a dashing auto however not driving it. Just weaklings do that." They begin contemplating together in her room in a month or thereabouts. He tries to profess to approve of 'simply companions' deal. In any case, his musings uncover his aims, "Each time I gazed upward from my book, I saw her face. Each time I saw her face, needed to grab her face and kiss her." He can scarcely center around ponders. While they are as one, he continues gazing at her lips, inquiring about methods for kissing her.

Ananya, as the greater part of the champions in Bhagat's novels, is striking and steps up with regards to love relations. Krish can't think about together with Ananya as her negligible nearness gets up warms feelings in him. Krish, being blank, begins evading Ananya to conceal his emotions. It is Ananya who steps up with regards to go to his room (Boys' lodging!) to clear the issue. Krish communicates his enjoying for her exclusive when Ananya goes to his space to clear the issue and powers him to express him-self. Like all Bhagatian courageous women, Ananya is more dynamic in relationship than her male-partner. Indeed, even Krish's proposition on Ananya's power is aloof, "I can't be simply companions. I am certain some folks can be companions with young ladies. I can't. Not with

you… I know you are out of my association and I don't merit you and whatever so extra me all that and… " On her urging, Krish communicates totally by proposing her to be couple with him. Krish's proposition is again not ideal; it communicates desire rather love. He says:

Revolution 2020 is an entangled love triangle of three beloved companions Gopal, Raghav and Aarti. Gopal begins feeling for her when they turn fifteen. Among these three, Aarti and Gopal have further relationship and they consider Raghav to be a companion, however not a nearby one at first. She thinks about Gopal her closest companion and proclaims to him, "Raghav is just a companion. I converse with him since you are near him." She watches over Gopal and asks each night whether he has taken his supper. Gopal begins to look all starry eyed at her yet Aarti isn't sure of her feelings for Gopal.

Sex prevails in all love relations in Bhagat's fictions. At the point when Aarti embraces Gopal to calm him as he is vexed because of his disappointment in AIEEE, Gopal tries to convey his mouth near her. She pushes him back by saying, "Don't… You will ruin our fellowship… Don't' misunderstand me. You have been my closest companion for a considerable length of time. In any case, I've revealed to you before… I don't see you that way." Like Bhagat's different novels, the love narrated amongst Gopal and Aarti isn't platonic. Like Hari in Five Point Someone, Gopal deliberately tries to kiss her when she is attempting to support him for his disappointment in exam. Indeed, even Aarti is by all accounts confounded about Gopal in light of the fact that she pushes him back when he tries to kiss however she carries on with him relatively like a lover. In spite of the fact that she knows Gopal's intensions of getting physical, she carries on like her better half and goes for Gopal's shopping as he is moving to Kota for a year. She says, "In the event that I came to Kota with you, I'd cook for you consistently."Such articulations additionally confound Gopal about her feelings for him. He considers, "The photo of her cooking in my kitchen flashed in my mind. For what reason does Aarti make proclamations like these? What am I expected to say?"Even Gopal imagines that she sends befuddling signals, "For what reason do young ladies send confounding signs? She had repelled me on the watercraft a few days ago. However she comes to shop with me for boring garments holders and don't give me a chance to pay. She calls me three times each day to check on the off chance that I've had my dinners. Does she watch over me or not?"

Bhagat has realistically demonstrated the phases of Indian love. At first kid begins enjoying a young lady however the young lady continues saying that they are simply great companions. After some days, young lady too falls for the kid. This is the thing that occurs in the vast majority of Bhagat's love stories in his novels. Say for example, Neha, in Five Point Someone, at first thinks about Hari his companion, later on he turns out to be great companion and after that a lover. Vidya, in Three Mistakes of My Life, considers Govind a companion, at that point a go down companion and later on begins to look all starry eyed. Ananya, in 2 States, at first begins with Krish as a companion and afterward great companion and after that experiences passionate feelings. Aarti, in *Revolution 2020*, is Gopal's cherished companion. Gopal feels for her. She too carries on like a lover. However, when Gopal tries to kiss her, she drives him back and affirms that they are simply companions. At the point when Gopal prevents Aarti from holding his elbow in view of individuals around, she again affirms, "We are simply okay companions." Typically all the young men despise the term 'just companion'. For what reason might any kid want to be only companion with a young lady? Hari, Krish and Gopal too loathe this term. Young men are constantly intrigued by being more than companions. Gopal, Hari and Krish are no exceptions.

Every one of Bhagat's novels contains a sexual scene. Gopal books a room in a lodging where Aarti works. Aarti wouldn't fret remaining in her room however she is in relation with Raghav. She decides to remain there for entire night however Gopal has cautioned her that he may kiss. She likewise specifies, "If my sweetheart discovers… That I am in another man's space for so many hours, he will kill me." she isn't average Indian young lady compose. She wouldn't fret taking beverage with Gopal in the inn room. She discovers his sweetheart Raghav boring as he doesn't drink much. She wouldn't fret chatting with Gopal about thing young lady's boob work. She discloses it to Gopal, "Boob work. To settle your boobs, make them greater." Such talks from Aarti stuns Gopal. She discusses boob occupations since she feels good with Gopal however he isn't her sweetheart. She says, "You are my closest companion… I can absolutely act naturally with you." Gopal keeps up separate while being with her in the room yet Aarti steps up and rests in Gopal's lap while viewing a motion picture in the room. Gopal hesitatingly puts his hand on her temple and delicately strokes her hair. She doesn't question. Gopal's fantasy of being with her is by all accounts winding up evident. He states, "I couldn't think about her a more joyful minute than this in my life up until now." Gopal communicates his feelings without precedent for his life after so many years and says, "Will you flee again?...

Run now in the event that you need to… Because on the off chance that you remain for some time in my life and afterward go… " The impact of wine manages to open up their heart. She even confesses that she feels desolate in life as "Raghav has no time. My folks can't perceive any reason why I need to work. They can't comprehend why DM's little girl needs to trudge." The motion picture closes with a kissing scene and Gopal states, "I don't' know whether the scene persuaded us or the wine or the face that I believed I won't not get another possibility. I hung over Aarti. She gazed toward me in astound. In any case, she didn't challenge. Just gazed." She wouldn't fret when Gopal begins kissing her. Truth be told, following two moment, she too

begins reacting. Yet, with every move of Gopal, she dissents verbally yet underpins by physical reaction. At every one of Gopal's turn, she continues saying, "This isn't right" however she wouldn't fret about his moves. At the point when Gopal scopes to her bosom, she dissents verbally. Gopal expresses, "I quiets her down with another kiss. She wriggled a bit, yet I continued kissing her. She began to react. Moderate at to start with, at that point coordinating lastly outpacing me." Her verbal challenge is appeared differently in relation to her physical moves when she says, "This isn't right, Gopal" and in the meantime chomps Gopal's lower lips. At the point when Gopal pulls at her finish to take it off, Gopal composes, "'Don't, Gopal!' she whispered yet raised her arms to make my activity less demanding." She ends him one last time when Gopal comes to down to unfasten her pants by saying, "I have a kid friend" But soon surrenders her dissent and expels pants herself. The entire scene of sex between them demonstrates Aarti's befuddled personality and her confused securities with two men. Her commitment with Raghav prevents her from being with Gopal. In any case, soon the desire overwhelms the commitment and gives an approach to surrender to Gopal.

In spite of the fact that sex rules the love relations in Bhagat's novels, the feelings of lovers for each other can't be overlooked. Sex is overwhelming however by all account not the only enthusiasm of Bhagat's characters. After sex with Aarti, Gopal feels one with her. The life after that remaining parts no longer the same. The love making just magnifies his love for Aarti. He expresses, "They say men withdraw after sex. In any case, I needed to draw her nearby, cuddle and keep her with me until the end of time."

Not with standing, befuddled Aarti gets annoyed after sex about the way that she is focused on Raghav. She feels remorseful for tricking Raghav. Her feelings have changed however she is embarrassed about engaging in sexual relations with Gopal on the grounds that she is focused on another person. She begins getting into Gopal however her heart chomps her for swindling Raghav. Bit by bit, she decides to be with Gopal however thinks that its hard to break this news to Raghav. Sex turns into the outflow of their love and not only the drive when Aarti goes to Gopal's new cottage out of the blue.

Bhagat's novels describe ordinary Bollywood love stories where lovers confront troubles after beginning romance. Shakespeare has said in Mid Summer Night's Dream, "The course of genuine romance never ran smooth." It is consistent with every one of Bhagat's fictions. Be that as it may, aside from *Revolution 2020*, every one of Bhagat's novels end cheerfully. In *Three Mistakes of My Life*, Govind's answer to Chetan Bhagat's ask for help to transform the story into his own next book, "I just like stories with cheerful closure" presumably alludes to Bhagat's own style of composing novels with glad consummation. Every one of his novels end joyfully. Say for example, in *Five Point Someone*, Hari gets into inconvenience when his Prof. Cherian comes to think about Hari's undertaking with his little girl, Neha. Prof. Cherian tries everything to ruin Hari's vocation. He doesn't give decent evaluations in his subject, affronts him much of the time, expels him from the school and tries his best that he doesn't land position. Whenever Hari and his companions are discovered taking inquiry paper from Cherian's office, Hari utilizes Neha's name and says to the disciplinary council that it was Neha who gave him the key of her dad's office. Normally Neha gets disappointed and quits conversing with Hari. Hari's sorrow knows no bound because of nonattendance of Neha in his life. He tries calling her however she hangs up the call the minute she hears the voice from Hari. She supposes Hari has utilized her. However like ordinary love stories, she gets persuaded after a few endeavors from Hari. Hari thinks that its hard to leave IIT after assembly as he landed a position in Bombay and he needs to avoid Neha. They meet before Hari's flight to Bombay, discusses practical methods for being in touch. While in Bombay he states, "God – I missed her – her hair, her giggle, her eyes, her holding my hands and everything else. Beyond any doubt I missed Ryan and Alok too, however it was not the same. I pined for Neha." In One Night at the Call Center Shyam's absence of conservative ability and the insistence of Priyanka's mom to get a very much settled prep make inconvenience in their love life. They break up with each other following four years of their romance. In any case, toward the end they again draw near to each other and choose to wed. In *Three Mistakes of My Life* Chetan Bhagat has narrated the troubles lovers need to look in India particularly when one begins to look all starry eyed at his closest companion's sister. It is against the morals of Indian men to hit on closest companion's sister. At the point when Ishaan comes to think about Govind's undertaking with his sister Vidya, he hits Govind hard. He breaks all the relation with Govind. Govind considers his love one of his greatest oversights of life that leads him to submit suicide. Be that as it may, he is spared in his suicide endeavor and toward the end Ishaan acknowledges Govind's relation with Vidya. In *2 States* the genuine struggle of the Krish, a Punjabi kid and Ananya, a Tamilian young lady, starts when they proclaim their decision of their marriage to their folks. Krish isn't acknowledged in Ananya's family because of his North Indian having a place and Ananya isn't invited in Krish's family because of her North Indian having a place. Notwithstanding when Krish and Ananya effectively get endorsement from each other's families, the individuals from both the families are not happy with each other. They create resentment for each other to a degree that their relationship is at the skirt of fall. Notwithstanding, Krish's dad tackles the issue toward the finish of the novel and the love story gets the glad closure with their marriage with the endorsement of their folks. In spite of the fact that the lovers in Bhagat's novels are practical about their relation, engage in sexual relations previously marriage, break up in the middle of and fix up once more, their actual feelings for each other can't be denied. To fulfill

the well known taste, Bhagat's all love stories end joyfully.

The affectability of Bhagat's courageous women bids to the essence of mass. The women in Bhagat's novels are not run of the mill Indian writes. They are modern young ladies working with male partners. They talk like young men. They wouldn't fret calling names before their male partners. They step up with regards to their love life. They don't sit tight for their male partner to make a move. Dissimilar to normal Indian save women, they are expressive about their contemplations and feelings. Legends in his novels infrequently take initiatives in their love relations. Not at all like customary novels, have women in his fictions generally pursued the men. Say for example, it is Neha, in Five Point Someone, who steps up with regards to giving a lift to Hari from when their relation starts. It is Neha who approaches Hari out for frozen yogurt, next time for a film. It is again Neha who requests that Hari kiss her on her birthday. In the novel One *Night @ the Call Center*, Priyanka initiates and communicates her desire of engaging in sexual relations with Shyam. She drives Shyam inside the Qualis and opens few catches of his shirt. Boldly she asks Shyam whether he has condom. In Three Mistakes of My Life, Vidya pursues Govind. The relation would not have been conceivable, had Vidya not taken intense moves at each phase from dating to sex. Govind reacts to Omi in this way, "I didn't hit on her. She hit upon me". Ananya's sudden kiss, in *2 States*, places Krish into stun. It is because of her initiative that their romance starts. Regardless of being in relation with Raghav, Aarti in *Revolution 2020* keeps giving responsive signs to Gopal. She wouldn't fret when Gopal kisses her however she was conferred with Raghav. Bhagat's women step up with regards to the romance. They steer forward the romance until the point that it changes over into the commitment of living fellowship.

Reference :-

1. Personal Research.

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

The Impact of COVID 19 on CSR and Philosophy of Marketing

Dr. Swati Mathur *

*Associate Professor, Anand Institute of Management, Bhopal (M.P.) INDIA

Abstract - In this article, we offer some underlying assessment on how the Covid-19 pandemic can inûuence the improvements of CSR and showcasing. We contend that the Covid-19 pandemic offers an extraordinary chance for organizations to move towards more veritable and genuine CSR and add to tending to press worldwide social and natural difficulties. We additionally talk about some possible headings of how customer moral dynamic will be moved because of the pandemic. In our conversation of advertising, we layout how we think showcasing is being accepted by this pandemic and how we think this will change, the setting of promoting as well as how associations approach their essential advertising efforts. We end the paper with distinguishing various possibly productive examination topics and headings.

Introduction - While scholastics like us are as yet occupied with our standard exploration exercises, we are figuring out how to conform to another reality and method of work (and life, however the limit is reduced during lockdown) with online gatherings with partners, research understudies, and obviously 'dauntingly' web based instructing. Likewise, we need to do this with minimal earlier notice or preparing. Presumably perhaps the main approaches to adapt to this lockdown to stay away from any crumbling of mental and actual prosperity is to exploit the circumstance to reflect on something that we love the most in our exploration, for our situation corporate social responsivity (CSR) and promoting.

What we cannot deny is that the world has changed. Like other worldwide occasions with planetwide sway, Covid-19 might actually change how we see the world, the manners by which we think, and how we lead our lives. In any case the human misfortune of lost lives, broken families, and scarred networks, the financial and social changes brought about by a pandemic driven lockdown will comprise a social inheritance which will live long in our recollections and those of people in the future. The aggravation is close to home, enthusiastic, mental, cultural, monetary, and social; and it will leave scars. In many respects, we see Covid-19 as undifferentiated from that which Taleb (2008) calls a 'Dark Swan Event'– a stunning occasion that changes the world (as likewise additionally noted simultaneously by various creators and editors – see for instance Grech, 2020; Mazzoleni, Turchetti, and Ambrosino, 2020). While Taleb (2008) his investigation featured those human reactions to such shocks incline toward basic converse expectation. That is, consequential convulsions that change societies occur, individuals inside those stunned societies very quickly excuse such occasions by reflecting that they might have been anticipated and likely kept away from. Is Covid-19 an illustration of this – we suspect as much? After Covid-19 the world won't be something very similar and regardless various prophetically calamitous motion pictures, trick scholars, and political sharks, we can't however assist with trusting that future pandemics can be kept away from in the event that we gain proficiency with the exercises, we really want to think ought to have been learned before Covid19.

The effect of Covid-19 on the worldwide economy is probably going to be un precedented since the 1930s Great Depression (Euronews, 2020). Thusly, likely the Covid-19 pandemic addresses perhaps the most significant natural changes in the advanced advertising history, which might actually significantly affect corporate social responsivity (CSR), buyer morals, and essential promoting theory. The momentary effect of Covid-19 is promptly and efiortlessly felt, because of the far reaching lockdown and social separating measures glob partner. Be that as it may, the pandemic will end, it is now set to have enduring significant financial, social, political, and social effects. In this paper, we examine some primer thoughts on how this pandemic can infiuence the field of CSR and promoting theory. As far as CSR, we will examine its effect on CSR openings and patterns, and shopper morals. As far as showcasing, we will zero in on its expected ramifications on the center promoting ideas, the setting of advertising, and promoting methodology.

The effect on corporate social obligation and shopper morals.

Corporate Social Obligation - Coronavirus presents difficulties to firms and associations concerning CSR. It has been accounted for that some firms/retailers have attempted to exploitative from this emergency. To control the possible wide spreading of profiteering, in the UK for instance its opposition guard dog, the Competition and Markets Authority (CMA), set up an uncommon taskforce to take action against organizations profiting from the pandemic by infiating costs or making deceiving claims about items (Butler, 2020a, b). Unavoidably this emergency has put organizations under test for its obligation to moral business direct and CSR. Some might contend that the financial strains, both present moment and long haul, brought about by the flare-up could significantly pushed firms to seek after transient additions, at times even through extortion and offense, and lessen long haul CSR speculation, presumably because of absence of slack assets and mounting pressure for endurance.

Luckily, we have seen that many organizations not just have opposed exploitative business work on during this emergency, yet additionally have proactively occupied with different CSR exercises, especially those that can ofier quick assistance and help to the fight against the infection. Without a doubt, the current pandemic ofiers a wide scope of significant freedoms to those with a more careful and intuition way to deal with CSR. For instance, UK fabricating organizations changed their industrial facilities to deliver ventilators, individual defensive gear, hand sanitizer, etc, with some of them giving, rather than selling, these items. Broadcast communications monster Vodafone acquainted free access with limitless versatile information for a considerable lot of its compensation month to month clients and redesigned its weak compensation month to month clients to limitless information ofier free of charge (BBC, 2020a). Grocery stores in the UK have assigned opening times specifically for the old and NHS laborers, and gave Easter eggs and general food to food banks and beneficent associations (Fairshare.org.uk, 2020; Lindsay, 2020). The UK tea brand PG tips collaborated with Reengage (a magnanimous association expecting to handle the issues of social detachment and forlornness for more established individuals) to prepare volunteers to call the most seasoned in the UK during the lockdown (Jones, 2020). Organizations gave their unique business crusade broadcast appointment to advance great aims. Banks postponed revenue on overdrafts throughout some stretch of time. Furthermore, the rundown goes on.

A firm's veritable and bona fide CSR will construct more grounded compatibility among its clients and the overall population, as they have developed solid assumption from driving brands, especially their great brands, during the current emergency as to their efiorts in com bating the infection. Buyers would feel pleased with their brands helping their representatives, giving cash and hardware during the emergency. The bond set up between the brand and purchaser during this emergency time can be more significant and enduring than during "tranquil" times. Subsequently, Covid-19 pandemic ofiers incredible freedoms for organizations to effectively draw in with their CSR methodologies and plans. Nonetheless, the pandemic has pushed numerous firms bankrupt, and if not extremely close to fall. It is turning out to be significantly more critical to get what drives some firms to be more moral and socially mindful, especially when assets are limited and endurance is under danger. What are the institutional and administration factors?

Coronavirus pandemic has uncovered and exacerbated some imbued social issues, like destitution and imbalance. The overall account is that Covid-19 doesn't separate as far as the clinical truth that individuals from difierent segment foundations are similarly vulnerable to the sickness. Notwithstanding, Covid-19 segregates as there are developing information showing that individuals from BAME foundations are bound to get the infection and become genuinely sick or even pass on from it (Booth, 2020; Butcher and Massey, 2020). Numerous clarifications past clinical terms have been ofiered. The vast majority of these clarifications address reality that there is as yet more significant level of disparity in the created world as far as abundance, wellbeing, instruction, etc. This ofiers significant openings for CSR. Organizations should zero in a greater amount of their efiorts on handling social issues on these fronts during this skillet demic just as over the long haul. The United Nation (UN) has settled on a decision for efiorts to construct more comprehensive and feasible post Covid-19 economies that are stronger in confronting worldwide difficulties, like pandemics, environment changes, and others, rather than returning to the world as it was previously (UN.org, 2020).

Consumer Ethics - Exemplary systems of moral dynamic pressure the joint effect of individual and situational/relevant components (Ford and Richardson, 1994; Treviño, 1986). Individual components can incorporate buyer character characteristics, virtues, moral personality, verifiable ethical quality convictions, etc. Situational/context oriented components can be issue attributes, social infiuences, bunch and intergroup elements, etc. The Covid-19 pandemic, as a phenomenal situational and context oriented factor, has significant suggestions for the comprehension on purchaser moral dynamic during the pandemic just as possibly post pandemic over the long haul. During the pandemic, various buyers are grounded to their homes with restricted outer access aside from the web, because of lockdown and other social removing measures. Customer dynamic can be unreasonable during emergencies like current pandemic, as confirmed by storing of food, drugs, cleanliness and sterilization items, and even bathroom tissues from one side of the planet to the other. Some may contend that, alarm purchasing (incl. accumulating) is the completely levelheaded buyer conduct during emergencies like this with a significantly undeniable degree of vulnerability (Lufkin, 2020).

By and by, it appears to be that customer dynamic is as of now determined absolutely without anyone else interest and feelings, like dread, outrage, and nervousness. This has constrained the stores to take measures like proportioning and assigning opening times for key laborers and seniors. Then again, buyers have shown numerous philanthropic practices during the pandemic, including opposing frenzy purchasing a lot food for weak occupants (e.g., over 70s) (Guardian, 2020). Accordingly, this emergency ace vides an astounding chance to analyze the exchange between per sonal and situational/logical factors in infiuencing purchaser moral choice, including the components identifying with the nature and continuous circumstances of the pandemic at the relevant level, and individual variables, for example, customer character difierences, reasonableness, and buyer feelings like dread, uneasiness, enmity, and good feelings like expectation.

The pandemic has given freedom and time to the purchasers to refiect on the essential importance of utilization and the effect of their utilization on themselves as well as on others and the overall society and the climate. Prior to the pandemic, buyers in the created world have underestimated how their fundamental necessities, like food and sanctuary, can be effortlessly met through the wide accessibility of different items and administrations that can assist with addressing those requirements. In reality buyers were “spoilt” with “decision over-burden”. In addition, utilization is likewise determined by purchasers’ quest for labor and products that can assist with meeting their higher social (e.g., social having a place and confidence) and self-completion needs (Maslow, 1943). The pandemic stunned customers with the thought and surprisingly a profoundly plausible reality that their essential requirements probably won’t be met as in food and fundamental necessities probably won’t be accessible to them. While in the created world, essential buyer needs are still prone to be met, there will be a few changes as far as how shoppers appreciate and esteem those requirements being met. At a similar time it adjusts customers’ point of view on the best way to seek after higher social and self-completion needs. There is probably going to be a significant shift towards dependable and prosocial utilization as in buyers deliberately refiect on the most proficient method to devour and make item/brand decisions to be more capable to themselves, others, the general public, and the climate.

The pandemic is showing buyers something new that we are bury associated as far as the effect of our item/image decisions, in this way we ought to be aware of those decisions. Purchasers will be bound to pass judgment on themselves or others to frame an essential assessment of ones’ self-ideas (shopper character) in light of their mindful utilization and prosocial item/brand decisions (He, Li, and Harris, 2012). As such, shoppers’ more significant level of social and self-completion needs will be bound to be met by their capable and prosocial conduct as purchasers. Albeit mindful and prosocial purchasers will turn into a bigger shopper section; the pandemic will develop a difierent buyer fragment that spotlights on intuition decadent gratification. Coronavirus pandemic is an aggregate awful mishap for some, purchasers, causing them physical, mental, and enthusiastic bothers and damages. A few customers can react to it with an adapting technique that increases desperation to seek after the charming experience of fulfilling their passionate and tactile necessities. Postponing gratification in such manner will be viewed as less alluring because of more elevated level of apparent vulnerability about what’s to come. The two portions have suggestions for advertising, especially socially mindful showcasing, which ought to expect to advance socially capable utilization and opposing the compulsion to exploit purchasers’ requirement for intuition libertine gratification.

What is the effect on supportable the travel industry and travel utilization? Given that travel industry area represents 10% of the world GDP and occupations, the effect on moral shopper conduct can’t be overlooked (Weforum.org, 2020). The quick effect is phenomenally extreme with most planes grounded, vacationer destinations shut, and lodgings/ eateries shut, because of the social separating estimated presented universally. Notwithstanding, what are the medium-term and long haul impacts? In the medium-term, there could be a flood in utilization, when buyers can’t hold on to escape their homes and visit places, travel, and eat outside. An elective estimate is that there may be a sluggish return, because of delayed customer dread of the infection and wellbeing and security concerns. A more significant inquiry is how does the pandemic move dependable and reasonable the travel industry and travel utilization? During the post pandemic time, will purchasers confine their movement either for recreation or business? How might limit travel adversely sway on those firms and individuals generally depending on the success of this area? Would customers have to turn to their own ethical decisions when choosing whether, when and how to travel? Given that a ton of us has shockingly found and wonderfully encountered the efiectiveness of online gatherings and telephone calls, it would be exceptionally conceivable that a large number of us will attempt to keep this recently discovered fortune by limiting business voyages. On the relaxation front, comparably almost certainly, more individuals will, prior to booking the following travel, pose inquiries, for example, regardless of whether that movement is fundamental and what are the nearby and homegrown other options, as more individuals are moving towards more dependable and economical utilization.

Another space of customer moral dynamic subject to the infiuence of Covid-19 pandemic is the thought of purchasing homegrown versus unfamiliar items. As noted before, the interruption of the worldwide store network additionally powers and urges shoppers to purchase neighborhood produce and privately made items, in the event that they can or on the other hand if nearby produce/items are for the most part accessible. In spite of a solid call for

worldwide solidarity, fortitude, and participation in finding answers for this pandemic, the current pandemic has effectively caused some significant international pressures, which are showing their suggestions through the flood of patriot suppositions of shopper conduct, purchaser hostility — buyer negative inclinations toward items from a specific outside country because of aversion toward the nation and its kin (Harmeling, Magnusson, and Singh, 2015), and customer ethnocentrism—accepting that it isn't fitting or good to purchase items from far off nations (Ma, Yang, and Yoo, 2020; Sharma, Shimp, and Shin, 1994). The issue of purchasing homegrown versus unfamiliar items isn't just essentially an issue of accessibility, quality, and cost, however an issue identifying with buyer morals in the feeling of whether is the right (or wrong) thing to do. The Covid-19 pandemic will catalyze a restored interest in this field. More examination should be directed to explore the patterns of buyer patriotism, ethnocentrism, ill will, and how they sway on shopper moral dynamic.

Another likely region with an expansion in utilization is wellbeing and health. The prompt expansion in buy and utilization relates sustenance and clinical items, for example, nutrient enhancements, pain killers, fever reducers, etc, that have direct connection to the novel Covid. The really fascinating inquiry is how much purchasers movements to more utilization of wellbeing and health items over the long haul. Will customers for the most part become more wellbeing awareness in their item decisions? Given the solid proof that wellbeing and fit individuals are more averse to be seriously sick with the infection (O'Connor, 2020), we anticipate a solid shift towards wellbeing and health utilization, in the food and nourishment areas, yet additionally in the fitness area. In like manner, this ofiers significant advertising openings. For showcasing researchers, more scholastic consideration ought to be paid to understanding the variables infiuence wellbeing and health utilization. For strategy creators, the postcrisis period will be a once in a lifetime chance for administrative offices and other wellbeing associations to advance solid utilization and item decision.

In total, it is obvious that Covid-19 pandemic is affecting buyer moral dynamic during the pandemic. Given that the pandemic is probably going to keep going for a significant timeframe on a worldwide scale, its effect is probably going to be enduring get-togethers dish demic anyway it will end. Shoppers have developed a few propensities, especially identifying with progressively striking job of the moral measurement in their dynamic, a portion of the

The impact on marketing philosophy – In discussing the plethora of ways in which Covid-19 has changed our disciplines and practices, marketing is an interesting study. We believe that the efiects of Covid-19 have been profound and pervasive so to structure our review, we explore how the pandemic has altered the core marketing concepts, the context of marketing, and marketing strategies.

Conclusions and future research directions - In this article, we have ofiered some underlying musings on how the continuous Covid-19 pandemic infiuences CSR, buyer morals, and promoting reasoning. This pandemic ofiers extraordinary freedoms for firms to effectively take part in different CSR drives during the emergency, and conceivably catalyze another period of CSR advancement over the long haul. For buyers, the moral component of customer choice has gotten striking during the pandemic, which is additionally liable to move buyers towards more mindful and prosocial utilization. Such changes appear liable to be reflected by firms and associations. Major changes to our lives will afiect our convictions, mentalities, and sentiments with the goal that sharp advertisers will adjust their arrangements and systems to refiect. Will there be a longstanding resurgence in the social advertising idea and more capable business directions? We trust so. Whatever the progressions in appears to be almost certain that the manners in which advertising has worked in the past should change and will do to meet the new reality.

We finish up this article by asking our scholarly networks to participate in thorough examination on the accompanying exploration questions. Albeit the quick effect of Covid-19 pandemic is by all accounts clear, what could be the drawn out sway on CSR and shopper moral dynamic? What are the chances and difficulties for CSR over the long haul post Covid? Will the transient change in buyer propensity prompts long haul supported shift of purchaser moral conduct, if yes how? How might Covid-19 change our showcasing reasoning? Will a result of this pandemic be an expanded in partnership of social and cultural issues into our driving methods of reasoning? As far as client conduct there is an earnest need to investigate how residents, clients, and buyers reacted (both emphatically and adversely) to differing lockdown limitations. Changes to practices likely could be clear, (for example, in traveler decisions and the transition to internet shopping and amusement) yet adjustments to perspectives, values, convictions are probably going to be inconspicuous. Additionally, while Covid-19 drove area, firm, and authoritative advancement, research is need to investigate the drivers of effectiveness and to detail which changes will demonstrate beneficial in the long haul.

References :-

1. Anwar Y. and El Bassiouny N. (2020) Marketing and the Sustainable Development Goals (SDGs): A Review and Research Agenda. In: Idowu S., Schmidpeter R.,ZuL. (eds)The Future of the UN Sustainable Development Goals. CSR, Sustainability, Ethics & Governance.Springer,Cham.
2. BoothR. (2020) ,'BAME groups hit harder by Covid-19 than white people, UK study suggests', The Guardian, accessible at: https: //www.theguardian.com/world/ 2020/apr/07/bame groups hit harder covid19 than white people uk,accessed18April,2020.
3. Butcher B. & MasseyJ. (2020), 'Are ethnic minorities

being hit hardest by coronavirus?', The BBC, accessible at: https://www.bbc.co.uk/ news/uk 52219070, accessed 18April,2020.

4. Butler,C.(2020). 'How to survive the pandemic', Chatman House: The World Today, 17thApril, accessible at:https://www.chathamhouse.org/publications/twt/ how survivepandemic,Accessed19thApril2020.
5. Butler,S.(2020),'New UK task force to crack down on coronavirus profiteers',The Guardian, accessible at:https://www.theguardian.com/business/2020/mar/20/ new uk task force to crack down on coronavirus profiteers,accessed18April,2020.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

किशोर श्रमिक : हमेशा आपके आस-पास, लेकिन क्यों (शिवपुरी शहर के संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

गौरव आर्य *

* शोधार्थी, महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – प्रस्तुत शोध में मध्य प्रदेश के शिवपुरी नगर के किशोर श्रमिकों के श्रम क्षेत्र में आने के कारणों को समझने का प्रयास किया गया है। इस शोध पत्र में अन्वेषणात्मक एवं वर्णात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए फुटकर दुकानों, छोटे होटलों, ढाबों, चाय की दुकानों आदि पर कार्यरत 12-18 आयु वर्ग के 100 किशोर श्रमिकों को सर्वेक्षित किया गया है। प्रस्तुत शोध हेतु तथ्यों का संकलन शोधकर्ता द्वारा साक्षात्कार-अनुसूची, अवलोकन, व्यक्तिगत अध्ययन तथा अनियमित साक्षात्कार प्रविधियों के माध्यम से किया गया है। अध्ययनोपरांत यह ज्ञात हुआ कि किशोर श्रमिकों के परिवारों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति दयनीय, माता-पिता की कार्य करने में असमर्थता एवं अशिक्षितता, पढाई में मन कम लगना, पैसे कमाने की चाह आदि के परिणामस्वरूप किशोरों को असंगठित क्षेत्र में कार्य करने के लिए बाध्य होना पड़ा।

शब्द कुंजी – किशोर श्रमिक, असंगठित क्षेत्र, किशोरावस्था, बालश्रम।

प्रस्तावना – किसी भी राष्ट्र के लिए उसकी सबसे बड़ी संपत्ति उसके बच्चे होते हैं। बच्चे ही उस देश के भविष्य के निर्माता होते हैं। अत: बच्चों को उस राष्ट्र का पिता कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी (ताहेर, 2006)। संयुक्त राष्ट्र संघ के वैश्विक जनसंख्या प्रोस्पेक्टस 12 के अनुसार वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत में किशोरों की जनसंख्या सर्वाधिक है। भारतीय जनगणना 2011 के अनुसार 10 से 19 आयु वर्ग के व्यक्तियों को किशोर माना गया है। जिनकी भारत में कुल जनसंख्या 253.2 मिलियन (कुल जनसंख्या का 20.9 प्रतिशत अर्थात प्रत्येक पांच व्यक्ति में से एक) है (जनगणना,2011)।

मानव जीवन की यात्रा विभिन्न चरणों अथवा अवस्थाओं से होकर गुजरती है। इसमें एक जीवंत अवस्था किशोरावस्था है। प्रस्तुत अध्ययन में किशोर श्रमिकों की इस (12-18) आयु सीमा का निर्धारण भारतीय सन्दर्भ में उनके शारीरिक एवं मानसिक विकास और आवश्यकताओं के आधार पर किया गया है। जिसे पुन: दो वर्गों यथा 12-15 वर्ष (बाल्यावस्था) एवं 15-18 वर्ष (किशोरावस्था) में विभाजित किया गया है। यह आयु सीमा विभिन्न भारतीय अधिनियमों में क्रमश: बच्चों एवं युवाओं के लिए न्यूनतम एवं अधिकतम आयु सीमा के रूप में स्वीकृत है।

किशोरावस्था एक संक्रमण अवस्था है, जो बाल्यावस्था एवं युवावस्था के मध्य का चरण है। अलग-अलग देशों में किशोरावस्था की आयु के संदर्भ में मत भिन्नताएं देखने को मिलती है। कुछ देशों में किशोरावस्था की आरंभिक आयु 12 वर्ष (जमैका में) से 18 वर्ष (बांग्लादेश में) के मध्य पाई जाती है। तो वहीं इसकी समाप्ति अथवा अंतिम आयु सीमा 24 वर्ष (जमैका में) से लेकर 35 व 40 वर्ष (बांग्लादेश व पाकिस्तान में) के मध्य तक पाई जाती है (कुमार, 2014)। यदि भारतीय संदर्भ में देखें तो भारतीय जनगणना में किशोरों को 10-19 वर्ष के आयु वर्ग में परिभाषित किया गया है। जबकि भारत सरकार की ही राष्ट्रीय युवा नीति में उन्हें 13-19 वर्ष के आयु वर्ग के रूप में एवं दर्शाया गया है। किशोरावस्था की आरंभिक एवं अंतिम आयु सीमा निर्धारण के संदर्भ में सदैव समस्त विश्व के कानून विशेषज्ञों, समाजशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों एवं शरीर विज्ञानियों के मध्य विवाद का विषय बना रहा है। अत: जनगणना एवं सांख्यिकी के उद्देश्यों के लिए अभी तक वैश्विक स्तर पर किशोरावस्था की कोई भी सर्वमान्य परिभाषा नहीं पाई जाती है।

किशोरावस्था एक व्यक्ति के जीवन का समयकाल है ना कि कोई निश्चित समयावधि। यह बचपन से प्रोढ़ता की ओर एक संक्रमण काल है और यह सामाजिक एवं असामाजिक प्रोढ़ के निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाता है। इसका आरंभ प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अलग-अलग समय पर होता है। सामान्य शब्दों में किशोरावस्था एक बालक के परिपक्व होने की अवधि होती है। इस समयावधि में उसकी आवश्यकताएं बहुत तेज़ी से बदलने लगती है और शारीरिक एवं मानसिक विकास में नित नए परिवर्तन आते हैं — विभिन्न प्रकार की भावनाओं एवं कल्पनाओं के विकास की शुरुआत होती है — जिसके माध्यम से वह नए एवं उच्च आदर्शों का चुनाव करता है (खान, 2009)। और किशोरावस्था में ही उसके पूरे भविष्य की रूपरेखा निर्धारित हो जाती है। परंतु पारिवारिक आर्थिक तंगी, शिक्षा से दूरी आदि उसे इस सुकुमार आयु में ही असंगठित क्षेत्र में कार्य करने के लिए विवश कर देती है। इस अध्ययन में ऐसे ही किशोर श्रमिकों के कार्य करने के विभिन्न कारणों को जानने का प्रयास किया गया है।

असंगठित क्षेत्र – इस क्षेत्र में उन संस्थानों को रखते हैं जो फैक्टरी अधिनियम 1948 के अंतर्गत नहीं आते हैं अर्थात जो बिजली का उपयोग नहीं करते और 20 से अनधिक लोगों को रोजगार देते हैं।

उद्देश्य – किशोर श्रमिकों के असंगठित श्रम क्षेत्र में कार्य करने के कारणों का अध्ययन करना।

अध्ययन का महत्व – किसी भी देश के भविष्य का सपना उसके बच्चों के

द्वारा पूरा किया जाता है। परंतु आने वाले इन भविष्य निर्माताओं का एक बहुत बड़ा हिस्सा भूख, गरीबी, कुपोषण, शोषण, अशिक्षा, अधिकारों से वंचित एवं उत्पीड़ित है। किशोर की आयु के प्रति सरकार की विभिन्न नीतियों में कहीं भी एकरूपता देखने को नहीं मिलती है। जहाँ भारतीय जनगणना में किशोरों को 10-19 आयु वर्ग में चिह्नित किया है तो वहीं राष्ट्रीय युवा नीति में 13-19 आयु वर्ग के व्यक्तियों को किशोर माना गया गया है। और राष्ट्रीय बाल संरक्षण अधिनियम 2005 में 0-18 आयु वर्ग के व्यक्तियों को बच्चों की श्रेणी में रखा गया है। अत: प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से भारतीय सन्दर्भ में किशोरों का एक निश्चित आयु वर्ग निर्धारित किया जा सके एवं किशोर श्रमिकों के हो रहे शोषण एवं उनके उन्नयन के लिए सरकार के द्वारा ठोस कदम उठाये जाये।

शोध पद्धति - प्रस्तुत शोध की प्रकृति अन्वेषणात्मक तथा वर्णनात्मक है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु प्राथमिक तथ्यों को व्यक्तिगत अध्ययन, साक्षात्कार-अनुसूची, अवलोकन तथा अनियमित प्रविधियों के माध्यम से संकलित किया गया है। द्वितीयक तथ्यों के लिए शोध पत्रों, समाचार पत्र-पत्रिकाओं, संबंधित पुस्तकों, प्रतिवेदनों तथा प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध-प्रबंधों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक तथ्य संकलन के प्रमुख उपकरण साक्षात्कार अनुसूची के प्रयोग के साथ-साथ व्यक्तिगत साक्षात्कार, अवलोकन तथा अनियमित साक्षात्कार प्रविधियों का भी प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में समग्र शिवपुरी नगर का असंगठित क्षेत्र सम्मिलित है जिसमें फुटकर दुकानों, छोटे होटलों, ढाबों, मरम्मत (रिपेयरिंग) की दुकानों आदि पर कार्यरत किशोरों को सम्मिलित किया गया है। व्यवसायों के चयन का प्रमुख आधार उनका लघु स्वरूप, निम्न तकनीकी का प्रयोग, श्रमिक व न्योक्ता के मध्य बिचौलियों की भूमिका आदि था।

समग्र की आधिकारिक जानकारी के अभाव के कारण प्रतिदर्श के चयन का आधार 'स्क्वायर ग्रिड पद्धति' है। जिसमें शिवपुरी नगर के भूभाग को ग्रिड्स में विभाजित करके उन्हें क्रम से एक के बाद दुसरे ग्रिड का चयन कर उसमें आने वाले व्यवसायो में कार्यरत 12 से 18 वर्ष तक के किशोरों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। किशोरों की यह न्यूनतम व अधिकतम आयु सीमा (12-18 वर्ष) को विभिन्न भारतीय अधिनियमों जैसे भारतीय संविधान, चिलड्रन एक्ट 1933, एमप्लॉयमेंट ऑफ चिल्ड्रेन एक्ट 1938, फैक्ट्री एक्ट 1948 आदि को धयान में रखते हुए निर्धारित की गयी है। जिसे पुन: दो वर्गों यथा 12-15 वर्ष एवं 15-18 वर्ष में विभाजित किया गया है। ताकि विश्लेषण को अधिक सुगम बनाया जा सके और बाल श्रमिक व किशोर श्रमिक के मध्य की गतिकी को अधिक बेहतर तरीके से समझा जा सके।

आंकड़ों का विश्लेषण - प्रस्तुत अध्ययन को अधिक उपयोगी एवं विश्वसनीय बनाने के लिए, सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों को क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित करके निम्न सारणी में प्रस्तुत किया गया हैं।

सारणी 1 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

1. प्रस्तुत शोध के लिए 100 किशोर श्रमिकों का चयन किया गया है। जिन्हें दो आयु वर्गो क्रमश: 12-15 वर्ष, जिसमें 38 उत्तरदाता है एवं 15-18 वर्ष, जिसमें 62 उत्तरदाता है, में विभाजित किया गया है। उत्तरदाताओं की औसत आयु 15.58 वर्ष है। इस अध्ययन में उन किशोर श्रमिकों को ही शामिल किया गया है, जो 12 वर्ष की आयु तो पूर्ण कर चुके थे परंतु 18 वर्ष की आयु से कम थे।
2. सर्वेक्षित उत्तरदाताओं में सर्वाधिक एक तिहाई अनुसोचित जाति के थे। 20.00 प्रतिशत उत्तरदाता अनुसूचित जनजाति के, 11.00 प्रतिशत अन्य पिछड़ा वर्ग के एवं 3.00 प्रतिशत सामान्य श्रेणी के किशोर श्रमिक पाए गए।
3. सर्वेक्षित उत्तरदाताओं में सर्वाधिक 80.00 प्रतिशत हिन्दू धर्म के एवं 20.00 प्रतिशत इस्लाम मतावलंबी थे। धर्म ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि सर्वेक्षण के दौरान कोई भी उत्तरदाता किसी अन्य धर्म यथा सिख, इसाई, जैन या बौद्ध का अनुयायी नहीं पाया गया।
4. उपर्युक्त सारणी के अनुसार कुल उत्तरदाताओं में अधिकांश लगभग 90.00 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षित, जिनमें 58.00 प्रतिशत माध्यमिक स्तर शिक्षित, 16.00 प्रतिशत प्राइमरी, 11.00 प्रतिशत हाई स्कूल एवं 5.00 प्रतिशत ही इंटरमीडिएट तक की शिक्षा प्राप्त कर चुके थे। जबकि मात्र 9.00 प्रतिशत उत्तरदाता अशिक्षित एवं शेष उत्तरदाता ही साक्षर पाए गए। यहां साक्षर से तात्पर्य उत्तरदाता के द्वारा अपने हस्ताक्षर करने एवं थोड़ा बहुत पढ़ने में सक्षम होने से है।

i. उत्तरदाताओं से परिचर्चा के दौरान यह ज्ञात हुआ कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने पढ़ाई छोड़ दी थी या सिर्फ नाम के लिए ही पढ़ रहे थे। पढ़ाई छोड़ने के मुख्य कारणों में परिवार में व्याप्त गरीबी, पढाई में मन ना लगना, स्कूल में किया गया दुर्व्यवहार आदि था। परिणास्वरूप अधिकांश को उनके अभिभावकों द्वारा असंगठित क्षेत्र में कार्य पर लगा दिया गया एवं कुछ स्वयं की मर्जी से इस क्षेत्र में आये क्योंकि उन्हें पैसे कमाने की चाह थी।

5. उपर्युक्त सारणी के अनुसार सर्वाधिक 74.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पिता कार्य करते थे जबकि शेष उत्तरदाताओ के पिता कार्य करने में असमर्थ थे। साथ ही कुछ उत्तरदाताओं के पिता की मृत्यु हो चुकी थी। वहीं सर्वेक्षित 40.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं की माता श्रम करती थी जबकि 60.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं की माता घरेलु कार्य ही करती थी।
6. सर्वेक्षित सर्वाधिक 54.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पिता अशिक्षित थे जबकि शेष उत्तरदाताओं के पिता बहुत ही कम शिक्षित अर्थात प्राइमरी स्कूल तक ही शिक्षित थे। वहीं 74.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं की माता अशिक्षित थी जबकि शेष उत्तरदाताओं की माताएं कम ही शिक्षित थी।
7. यहां परिवार की मासिक आय के संदर्भ में दर्शाए गए आंकड़ों में उत्तरदाता की आय भी सम्मिलित है। उपर्युक्त आंकड़ों के अनुसार लगभग 90.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवारों की मासिक आय रु10,000 कम ही पायी गयी। जबकि मात्र 3.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार की मासिक आय ही रु 20,000 से अधिक थी (उत्तरदाताओ की मासिक आय परिवार की कुल मासिक आय में से हटाकर)। अत: सर्वेक्षित सभी उत्तरदाताओं के परिवार की औसत मासिक आय रु10,900 पायी गयी।
8. सर्वेक्षण के दौरान किशोर श्रमिकों को भिन्न-भिन्न कार्यस्थलों में विभिन्न प्रकार के कार्यों में संलग्न पाया गया, जिसे अध्ययन की सरलता के लिए 4 वर्गो में विभाजित किया गया है। जिसमें दुकानों पर कार्य करने वालों में चाय की दुकान, होटल, ढाबा आदि, मजदूरी में बेलदारी-पल्लेदारी, गोदाम और वेयर हाउस का कार्य, मेकैनिक शॉप में

इलेक्ट्रीशियन, मोटर बाइंडिंग, मशीनी कार्य आदि, कौशल संबंधी कार्यों में फर्नीचर शॉप, टेलरी, आदि कार्यस्थलों पर श्रम करने वालों को सम्मिलित किया गया है।

i. उपर्युक्त सारणी का सूक्ष्म विश्लेषण करने पर यह पाया गया कि 12-15 एवं 15-18 आयु वर्ग के सर्वाधिक क्रमश: 58.00 प्रतिशत एवं 50.00 प्रतिशत किशोर श्रमिक दुकानों पर कार्यरत थे। जबकि मजदूरी एवं अस्थाई कार्य करने वाले किशोर श्रमिक सबसे कम (15 -15 प्रतिशत) पाए गए। चूँकि मजदूरी अत्यधिक शारीरिक श्रम का कार्य है, इसलिए इसमें 12-15 आयु वर्ग का कोई भी किशोर श्रमिक नहीं पाया गया।

9. सर्वाधिक लगभग 68.00 प्रतिशत किशोर श्रमिक इसलिए असंगठित क्षेत्र में कार्य कर रहे थे क्योंकि उनके परिवार को अधिक धान की आवश्यकता थी। जबकि लगभग 10.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का पढ़ाई में मन ना लगने के कारण कार्य कर रहे थे एवं 14.00 प्रतिशत किशोर सिर्फ इसलिए कार्य कर रहे थे क्योंकि उनके माता-पिता कार्य करने में असमर्थ थे। 11.00 प्रतिशत किशोर श्रमिकों पैसा कमाने की चाह के कारण भी कार्य कर रहे थे।

10. सर्वेक्षण में पाया गया कि सभी उत्तरदाताओं के आस-पास के सभी किशोर इसी प्रकार से असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वाले थे।

निष्कर्ष एवं सुझाव - मध्य प्रदेश के शिवपुरी शहर के किशोर श्रमिकों पर किये गए अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश किशोर श्रमिक 15-18 आयु वर्ग के अनूसूचित जाति एवं हिन्दू धर्मावलम्बी थे। इनमे सर्वाधिक उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी। माता पिता का अशिक्षित होना एवं असंगठित क्षेत्र में कार्य करना किशोर श्रमिकों के सवेतन कार्य करने के मुख्य कारण रहे है। हमारे प्रतिदिन के जीवन कई बार असंगठित श्रम क्षेत्र जैसे किराने की दुकानों, चाय की होटलों आदि जैसी जगहों में किशोर श्रमिकों के कार्य करने के कुछ मुख्य कारण इस प्रकार हैं -

1. किशोर श्रम का मुख्य कारण गरीबी है। गरीबी के कारण माता-पिता अपने बच्चों को पढ़ा नहीं पाते परिणामस्वरूप उनसे असंगठित क्षेत्र में श्रम करने के लिए भेज देते हैं।
2. माता-पिता की नशे एवं जूए की लत तथा लापरवाही की वजह से वे अपने बच्चों को स्कूल भेजने के बजाय परिवार की आमदनी बढ़ाने के लालच में सवेतन श्रम करवाते हैं।
3. माता पिता का अशिक्षित होना भी किशोर श्रम को बढ़ावा देता है। क्योंकि अशिक्षित माता-पिता किशोर श्रम से उनके बच्चे पर पड़ रहे प्रभाव के बारे में कोई ज्ञान नहीं होता तथा उन से वे लगातार मजदूरी करवाते हैं। सामान्य शब्दों में कहे तो वे बच्चो को अपनी कमाई का साधन मानते हैं।
4. किशोर श्रमिकों का पढाई में मन ना लगना एवं उनकी पैसे कमाने की चाह उन्हें असंगठित क्षेत्र में कार्य करने हेतु प्रेरित करती है।
5. परिवारों का बड़ा अथवा अधिक सदस्यों का पाया जाना भी किशोर श्रम के मुख्य कारणों में शामिल है।
6. सस्ते श्रम के लालच मे कुछ दुकानदार, फैक्ट्री मालिक आदि किशोरों से काम करवाते हैं, ताकि उन्हें कम मजदूरी देकर अधिक उत्पादन हो सके एवं नियोक्ता को अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके।
7. सामाजिक तथा आर्थिक रुप से पिछड़ापन भी किशोर श्रम का मुख्य कारण है। सामाजिक रूप से पिछड़े माता-पिता अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए नहीं भेजते हैं तथा उन्हें बाल मजदूरी के दलदल में फंसा देते हैं जो आगे चलकर किशोर श्रमिक कहलाते हैं।
8. बहुत से परिवारों मे नशे, बिमारी या अपंगता के कारण कोई कमाने वाला नही होता है, वहाँ परिवार के भरण-पोषण का एकमात्र आधार किशोरों द्वारा मजदूरी ही रह जाती है।

इस समस्या का समाधान करने के लिए सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों एवं स्वयंसेवी संस्थाओं को मिलकर कार्य करना चाहिए एवं जनमानस में पहल कर जागरूकता का प्रसार करना चाहिए। यदि केंद्र एवं राज्य सरकार इन किशोरों के लिए आवासीय विद्यालय बनवा कर उन्हें शिक्षा के साथ-साथ व्यावसायिक शिक्षा भी दे एवं उनसे कुछ सवैतनिक कार्य करवा कर उनकी मौद्रिक सहायता करे तो किशोरों के असंगठित क्षेत्र में हो रहे शोषण को रोका जा सकता है और वे राष्ट्र के विकास में भी योगदान दे सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. **खान, अयूब एवं सुमिता अयूब (2009)**, फीमेल एडोलेसेंट वर्कर - फेसलैस एंड फेटलैस, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
2. **ताहेर एम.ए. (2006)**, चाइल्ड लेबर इन ढाका सिटी; डाईमेनशंस एंड इम्प्लीकेशंस, संगाती प्रिंटर्स, ढाका।
3. **खान, अयूब (1993)**, ए साईको सोशल स्टडी ऑफ़ मेल एडोलसेंट वर्करस इन द अनओर्गेनाईज़ड सेक्टर : विथ स्पेशल रेफरेंस टू ग्रेटर ग्वालियर, म.प्र., थीसिस, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर म.प्र.।
4. **कुमार, संजय (2014)**, साइज़, ग्रोथ एंड कम्पोजीशन ऑफ़ एडोलसेंट एंड यूथ पापुलेशन इन इंडिया, विज्ञान भवन, नई दिल्ली।
5. **आई.एल.ओ. (2013)**, फोकस ओन चाइल्ड एंड एडोलसेंट डोमेस्टिक वर्कर इन देल्ही एंड रांची, इंडिया इंटरनेशनल प्रोग्राम ओन द एलिमिनेशन ऑफ़ चाइल्ड लेबर, आई.एल.ओ।
6. **दासगुप्ता, ए. एवं सेन आर.के. (2003)**, प्रोब्लम्स ऑफ़ चाइल्ड लेबर इन इंडिया, नई दिल्ली, दीप एंड दीप पब्लिकेशन।
7. **ओयेबामीजी, ओ. (2020)**, चाइल्ड लेबर एंड एग्रीकल्चरल प्रोडक्टिविटी, म्हम यूनिवर्सिटी, टर्की।
8. **बरुआह, अरुणिमा. (जनवरी 2003)**, चाइल्ड एब्यूज, नई दिल्ली, Ess Ess पब्लिशर्स।
9. **महंती, नीति. (2005)**, एजुकेशनल रिहैबिलिटेशन ऑफ़ रैग पिकर्स चिल्ड्रेन्स इन सीमापुरी : ए ड्रीम कम ट्रू. नई दिल्ली, इंटर इंडिया पब्लिकेशन।
10. भारतीय जनगणना, 2011

सारणी 1 : आंकड़ों का विश्लेषण

चर	कुल उत्तरदाता		विभाजन		
		मापदंड	12-15 आयु वर्ग	15-18 आयु वर्ग	कुल
आयु	100		38	62	100
जाति	100	सामान्य	0	3	33
		अनुसूचित जाति	29	37	66
		अनुसूचित जनजाति	7	13	20
		अन्य पिछड़ा वर्ग	2	9	11
धर्म	100	हिन्दू	26	54	80
		मुस्लिम	12	8	20
		अन्य	0	0	0
शिक्षा	100	अशिक्षित	6	3	9
		प्राइमरी	11	5	16
		माध्यमिक	21	37	58
		हाई स्कूल	0	11	11
		इंटरमीडिएट	0	5	5
		साक्षर	0	1	1
पिता कार्य करते हैं?	100	हाँ	30	44	74
		नहीं	8	18	26
माता कार्य करती हैं?	100	हाँ	15	25	40
		नहीं	23	37	60
पिता की शिक्षा	100	अशिक्षित	22	32	54
		शिक्षित	19	27	46
माता की शिक्षा	100	अशिक्षित	28	46	74
		शिक्षित	12	16	28
परिवार की कुल मासिक आय	100	रु5000 - रु10,000	14	38	52
		रु10,000 - रु15,000	22	18	40
		रु15,000 - रु20,000	2	4	6
		रु20,000 से अधिक	0	2	2
कार्य की प्रकृति	100	मजदूरी	0	16	16
		मैकेनिक शॉप	7	10	17
		दुकानों पर कार्य	22	31	53
		अंशकालिक कार्य (पार्ट-टाइम वर्क)	9	6	15
कार्य करने का कारण?	100	परिवार को अधिक धन की आवश्यकता	35	48	83
		माता-पिता कार्य करने में असमर्थ	1	7	8
		पढ़ाई में मन नहीं	7	10	17
		पैसे कमाने थे	4	10	14
क्या तुम्हारे घर के पास भी बच्चे कार्य करते हैं	100	हाँ	38	62	100
		नहीं	0	0	0

नोट : परिणाम प्रतिशत के आधार पर निकला गया है।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Non Verbal Communication Through Bioindicators

Miss Nikita Rai* Dr. Jaya Sharma Dr. Sehba Jafri*****

*B.Sc. (Agriculture) SAGE University, Bhopal (M.P.) INDIA
** SAGE University, Bhopal (M.P.) INDIA
*** SAGE University, Bhopal (M.P.) INDIA

Abstract - Non verbal Communication is an important part of plant's life. They think, feel, listen and express too. Super species like many beneficial micro-organisms and plants can even indicate about the climatic conditions, natural disasters and even the upcoming status of monsoon with the help of nonverbal communication. The technique of nonverbal communication they use is so simple and natural that they can act as a mediator between environment and humans. They can also notify about the presence of air pollutants and can facilitate the estimate of the frequency of the occurrence of damaging levels of air pollution and the aerial distribution of air pollution with respect to time and geographic areas. They play a very vital role in the other living organisms by using the techniques of nonverbal communications. The small units of eco system such as planktons, secondary animals and microbes can get great benefits of natural nonverbal communications. This may also be beneficial to screen the health of the natural ecosystem in the environment. These silent communicators of the nature are used for assessing environmental health and bio-geographic changes taking place in the environment. Each organic entity inside a biological system provides an indication regarding the health of its surroundings.

The Present paper is a small effort to show the use and benefit of nonverbal communication in the bio indicators for the observation of rapid changes in the nature.

Key Words- Bio-indicators, Memory, Touch, Feel, Histone, Signals, Nonverbal Communication.

Introduction - Nonverbal Communication is a natural phenomenon. It means employing the signs to communicate a message. That may happen by following steps:

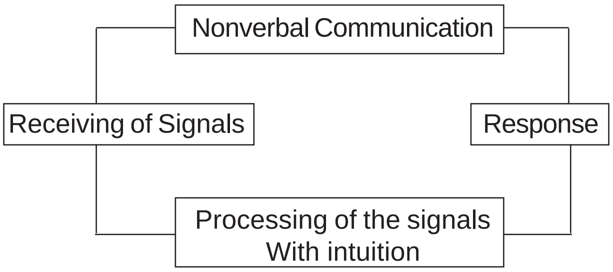

Figure: Communication Model for Nonverbal Communication

Non-verbal communication skill is the master stroke of life. Because "Heard melodies are sweet/ but those unheard are sweeter" (John Keats) and our 93% of recognized communication happens non-verbally on daily basis. "Several studies confirm that only 7% of messages are conveyed through words, 55% through non-verbal elements, and 38% from certain vocal elements or through signals". To understand how people get various forms of non-verbal communication, it is necessary to see the events take place around us by which we recognize the signals in the form of opportunities. These signals may be categorized by:

1. Tone and Touch
2. Noises
3. Gestures /Posture
4. Expressions
5. Pauses

The signals during nonverbal communication may occur in different forms. The plants are well aware about these signals. Daniel Chamovitz, (Director: Manna Center for Plant Biosciences - Tel Aviv University) writes in his book, "What a Plant Knows" "A plant can see, smell and feel. It can mount a defense when under siege, and warn its neighbors of trouble on the way. A plant can even be said to have a memory." It also indicates that a plant has the power to feel, to think and to communicate the messages. It has its specific "neuroscience".

Traditionally, we consider the human being "intelligent" and think that plants do not have the same but we do not observe that the plant can communicate about the direction of water inside the soil, they have intelligence to sense the sunlight; they can tell us the direction of air stream, they can oppose the natural disaster for us; they have power to indicate about the micro organisms around them; they are natural cleaner of atmosphere and even they can save us

from many environmental dangers including pandemic attacks by natural adoptability. Learning from experience is something we can see in them. If a plant feels the dangerous (or not favorable) direction for growth, he changes it exclusively like a higher organism.

Use of Memory for Communication: Dr. Michael Borg, A research Scientist of "Sir Gregor John Mendel Institute of Molecular Plant Biology (GMI) of the Austrian Academy of Sciences", with Dr. Frédéric Berger, worked over plants memory for a long time. He further came to the conclusion that like humans, plants have "epigenetic memory" but it functions in a different way. Instead of remembering any person they remember the presence of any condition. Many plants, for example, sense and remember prolonged cold during winter to ensure that they flower in spring. "This occurs by modifying specialized proteins called Histones, which are important for packaging and indexing DNA in the cell."

This Histone modification can cause a specific paring of DNA which accumulates the genes to control the flowering. It indicates the plant to turn off the memory of flowering during cold conditions. It also helps in transmission of turn on message faithfully from cell to cell so that plants may remember that winter is over and the spring season is the right time which allows them to flower. This change into plants communicates us about the changing of weather.

Plants cannot talk but they can communicate. The studies of university of Western Australia on sensitive plants reveal that the plants like *Mimosa* close its leaves in response to nonverbal touching signals. Lotus starts closing through observing the position of sunlight; repeatedly being exposed under the sun, office-time communicates about the day state and in a stressful situation that may cause them harm leaves of croton shrink. This concludes that plants can feel, think, communicate and learn very quickly through situations. They indicate the time by stopped curling their leaves (which takes precious energy) in response to imbuing "alarmed" but not harmed, showing they had learned that, in this scenario, leaf-closing was a waste of time. What's more, when they will be exposed to the same "scary" situation after a month? The plants will not bother closing their leaves in response, demonstrating they had "remembered" that earlier lesson they'd learned.

The emotions, principles, and messages of nature can be received by the humans in the expressive signals from the Plants and their natural world. This natural world sometimes communicates the ideas of poems, sometimes stories and other works by which we decorate our literary world. The writers, poets and even painters receive information from nature by collecting the symbols expressed by nature and they create the best works of art by evolving it with human emotions.

Writers like Walt Whitman, Emily Dickinson and Ralph Waldo Emerson express how nature communicates with humans in many of their works. Wordsworth expresses the role and meaning of nature in human lives and Emily Dickinson sees nature as an idle for perfection. She expresses this in her poem "'Nature' Is What We See". "Nature is what we know — /Yet have no art to say — So impotent Our Wisdom is/To her Simplicity". The message of this poem is that all humans are surrounded by nature yet no art or skill has the level of perfection that the nature has ("The Empirical Imagination of Emily Dickinson." pp. 144–148.).

The plants cannot talk but they can communicate. Man finds the symbols in nature and he relates his life to the way nature works. The poems capture the main reason for finding meaning in plants. The plants teach us the meaning of life.

Some of the moral lessons taught by plants are explicitly expressed by the poets and writers symbolically. They see the plants as a force of unity and focuses on their connection with humans. Walt Whitman's "The Nature" is the best example of this in which "Whitman focuses on the behavior of the grass, its waving, 'uttering', motion, which in combination with its now-perceived tongue like shape and tongue like darkness of color, calls to mind another of the grass's properties, one it shares with every other object of the universe" ("Walt Whitman's Theory of Nature" pg.199). His doctrine of nature exposes our connection to nature throughout the poem. He exposes each particle of human body is related to something else. For example in the poem, the grass is related to everything in the universe.

In this way, the natural world makes people understand relations, indirectly it teaches humans empathy and sympathy. The way the natural world is constructed acts as its way of communication.

Conclusion: Nonverbal Communication in plants is an interesting topic since the time of Charles Darwin. It proves that several non verbal techniques play an important role in plants' life. Every organism without any network of neurons is bound to forget everything that happens with it, but unlike brainless organisms, plants have the memory. They remember the memories of spring days and wait for them during the adverse days. They show the nonverbal happiness by shaking themselves; they can release electrical signals to show the response of their posture and gesture. They understand love, care and happiness, and they show the signs of distress or poor health by their body language. They can expose many stress factors such as change into temperature, disease, her bivory and injury by taking a pause during the growth. Therefore, in order to respond or be ready for any kind of physiological state, they need to develop some sort of system for their survival in the moment and/or for the future. **Plant communication**

References:-

1. Brantley, R. E. *The Empirical Imagination of Emily Dickinson.* The University Press: Chicago
2. Borg, Michael, *A research on Molecular Plant Biology,* Gregor John Mendel Publishers: Australia.1917
3. **Daniel Chamovitz, *What a Plant Knows*** Scientific. Farrar, Straus and Giroux: America 2020

4. Hergesheimer, Joseph. *"The Bright Communication"*, Linda Publication: London 2010
5. Kepner, Diane. *Walt Whitman's Theory of Nature*, Duke University Press: Ithaca .1979
6. Palmer, William. J. *New theories in communication.* St. Martin Publishers: New York 1948
7. Tilak, Raghukul. *Selected Poems of Johns Keats*, White Rose Publishers: Agara.1985
8. Thompson, N.I. *The latest Survey of English communication.* Infra publishers: Hongkong 1992
9. http://formatcomunicacion.com/VerbalAndNonverbal/verbal-and-nonverbal-communication-in-business

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

कवि प्रदीप के राष्ट्रीय गीत और संवेदना

संदीप सिद्ध *

* शोधार्थी, हिन्दी अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – कवि प्रदीप जी देशभक्त है, राष्ट्रीय चेतना के कवि है। देश की परतंत्रता से उन्हें अत्यन्त कष्ट था। वे सम्पूर्ण भारतीय समाज का हित चाहते थे। उनकी हार्दिक अभिलाषा थी कि समाज से जाति, वर्ग, वर्ण का भेद-भाव समाप्त हो जाये, सारा समाज एक हो जाये, सब सबल और सशक्त बने, अपनी संकीर्णताओं से उसे मुक्ति मिले ताकि भारत एक सम्प्रभुता सम्पन्न शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभरे, अन्य देशों के लिये प्रेरणा का स्त्रोत बने, एक महाशक्ति के रूप में विश्वमंच पर उदित हो तथा अपने प्राचीन वैभव को, गुरूत्व को सम्मान को आदर्श को, प्रतिष्ठा को पुन: प्राप्त करे। उनके गीतों में यही सशक्त ध्वनि प्रतिध्वनित हुई है। राष्ट्रहित, विश्वहित की कामना उनके गीतों में मुखरित हुई है। उनकी लेखनी अपने देश एवं समाज से संबंधित विषयो पर बहुत स्वाभाविक रूप से चली है। कवि प्रदीप के गीत आज भी जब सुनाई देते है। तो सारे वातावरण में एक स्फूर्ति संचरित हो जाती है। प्रदीप जी की रचनाओं के साथ देश प्रेमियों ने स्वाधीनता संग्राम की लडाई लडी। प्रदीप जी की अनेक रचनाओं ने कभी हमें प्रसन्न किया, कभी रूलाया, तो कभी जीवन को समझने की नई दृष्टि दी हैं।

प्रस्तावना – भारत अपनी प्राचीन ऐतिहासिक गौरवमयी पृष्ठभूमि लेकर सदैव आगे बढ़ा है। प्राचीन काल से ही कवियों ने अपनी सशक्त लेखनी से जन-जन के हृदय में देश के कण-कण के लिये अनुराग की भावना को जागृत किया है।

राष्ट्र को ही मातृभूमि माना गया है राष्ट्रीय चेतना और देशभक्ति कवि प्रदीप के गीतों के अत्यंत प्रिय विषय रहे है। प्रदीप जी ने स्वतंत्रता संग्राम को अपनी आँखो से देखा था और वे उससे बहुत प्रभावित एवं प्रेरित थे जिसका स्पष्ट प्रभाव उनके गीतों में झलकता है। प्रदीप जी फिल्मी दुनिया के देशभक्ति, प्रधान गीतों के बादशाह है। जिस तरह डूबकर अंतर्मन की गहराई से प्रदीप जी ने देशभक्ति एवं राष्ट्रीय चेतना के गीत लिखे है वैसी फिल्मी जगत में दूसरी मिसाल नहीं है।

राष्ट्र वीरो के प्रशस्ति गीत और संवेदना – संयम, धैर्य, बल, पराक्रम, त्याग और सत्यनिष्ठा के गुणों से समन्वित भावना का नाम है वीरता। वीरता जीवन के विभिन्न पक्षो और क्षेत्रो में परिलक्षित होती है। यह युद्ध में, धर्म में, कर्म में, दान में आदि अनेक क्षेत्रों में दिखाई देती है। वीरता के कार्य करने वालों को वीर के नाम से संबोधित किया जाता है। अपने देश के लिए जो व्यक्ति हँसते-हँसते अपना जीवन त्याग देते है, देश की आन-बान की रक्षा के लिए जो मर-मिटते है, देश की सुरक्षा के हित अपना सर्वस्व लुटा देने वाले व्यक्ति को सच्चा देशभक्त और वीर कहा जाता है। हमारे देश में ऐसे वीरो की एक सुदीर्घ परम्परा रही है। जिनका साहित्यकारों ने यश-गान अपनी रचनाओं में किया है। प्रदीप जी ने भी देशभक्तों एवं देश के वीरों का प्रशस्ति-गान किया है। गाँधीजी की वन्दना और प्रशस्ति में हजारों कवियों ने रचनाएँ लिखी है परंतु प्रदीप जी ने इस गीत के बराबरी का अन्य गीत ढूँढे नहीं मिलता है। इसका उदाहरण दृष्टव्य हैं।

**''दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल
सबरमती के संत तूने कर दिया कमाल
आँधी में भी जलती रही गाँधी तेरी मशाल
साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल
धरती पे लड़ी तूने अजब ढंग की लड़ाई
दागी न कभी तोप न बंदूक चलाई
दुश्मन के किले पर भी न की तूने चढ़ाई
वाह रे फकीर खूब करामात दिखाई
चुटकी में दुश्मनों को दिया देश से निकाल
साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल।''**

महाराष्ट्र सरकार ने एक फिल्म शिवाजी पर बनाई थी। 'शेर शिवाजी' (1981)। इसके गीत प्रदीप जी ने लिखे थे। प्रदीप जी का गीत पाँच भागो में है परन्तु सभी का विषय शिवाजी ही है। प्रस्तुत गीत में प्रदीप जी ने शिवाजी के साहसिक कारनामों का उल्लेख करते हुये उनकी देशभक्ति एवं वीरता को प्रणाम किया है। उदाहरण दृष्टव्य है-

**''महाराष्ट्र के शेर शिवाजी हर-हर महादेव
महाराष्ट्र के शेर शिवाजी-तुम थे धुरन्धर वीर
धन्य-धन्य तुम, तुमने बदल दी भारत की तकदीर
धन्य शिवाजी धन्य तुम, धन्य शिवाजी धन्य तुम
हे इतिहास पुरूष पराक्रमी महाबली रणधीर
धन्य-धन्य तुम, तुमने बदल दी भारत की तकदीर।''**

भारत के स्वतंत्रता-संग्राम के इतिहास में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। ऐसे नेताजी की प्रशस्ति का गान प्रदीप जी ने नेताजी की जीवनी पर बनी फिल्म 'नेताजी सुभाषचन्द्र बोस' (1996) में किया है। उक्त गीत की पंक्तियाँ इस प्रकार है।

**''सुनो रे सुनो देश के हिन्दू मुसलमान
सुनो बहन, भाई सुनो, नौजवान
ये सुभाष की कथा इसमें है बड़ी व्यथा**

इसमें कही आग है, और कही तूफान
सुनो रे सुनो देश के हिन्दू मुसलमान।''

इलाहाबाद के अलफ्रेड पार्क में अंग्रेजो से लडते हुए चन्द्रशेखर आजाद शहीद हुए थे। वे तन, मन, धन से क्रांतिकारी थे, देशभक्त थे एवं क्रांतिकारियों के गुरू थे। उनकी शहादत पर पूरा देश रोया था। आजाद की शहादत पर प्रदीप जी ने लिखा था:-

''वह इस घर का एक दिया था
विधि ने अनल स्फुलिंगो से उसका वसन सिया था
जिसने अनल लेखनी से अपनी गीता का लिखा प्राक्कथन
जिसने जीवन भर ज्वालाओं के पथ पर किया पर्यटन
जिसे साथ भी दलितों की झोपडियो को आबाद करूँ मै
आज वही परिचय विहीन सा पूर्ण कर गया अनन्त के शरण।''

वर्ष 1962 में चीन ने भारत के साथ विश्वासघात किया और भारत पर आक्रमण करके हजारों वर्ग किलोमीटर जमीन हड़प ली। इस लड़ाई में जन एवं धनबल का नुकसान हुआ तथा देश की अस्मिता को बहुत आघात लगा। इस लड़ाई में हजारो जवान शहीद हुए। इन शहीदों की याद में प्रदीप जी एक गैर फिल्मी गीत लिखकर स्वयं अमर हो गये। उक्त गीत की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार है।

''ऐ मेरे वतन के लोगों, तुम खूब लगा लो नारा
यह शुभ दिन है हम सबका, लहरा लो तिरंगा प्यारा
पर मत भूलो सीमा पर वीरों ने है प्राण गँवाये
कुछ याद उन्हें भी कर लो, जो लौट के घर न आये
ऐ मेरे वतन के लोगों, जरा आँख में भर लो पानी
जो शहीद हुए है उनकी, जरा याद करो कुर्बानी।''

राष्ट्र प्रेम के गीतों में संवेदना – जिसे अपने देश से प्रेम होगा उसे अपनी धरती के कण-कण से प्रेम होगा। वह देशवासियों का दु:ख-दर्द अपना दु:ख-दर्द समझेगा। प्रदीप जी को अपने देश, देश की धरती, भारतीय संस्कृति, धर्म दर्शन और विश्वासों पर अगाध आस्था रही है। यह आस्था उनके अनेक फिल्मी, गैर फिल्मी गीतों में सजीवता और जीवन्तता से व्यक्त हुई है। राष्ट्रीय चेतना के फिल्मी गीतों में उनके गीतों का विशिष्ट स्थान है। प्रदीप जी फिल्मी दुनिया के देशभक्ति प्रधान गीतों के बादशाह है। उन्होंने अन्तर्मन की गहराई से देशभक्ति एवं राष्ट्र प्रेम के गीत लिखे है।

फिल्म जागृति (1954) के गीत प्रदीप जी ने लिखे थे इस फिल्म के एक राष्ट्र भक्ति गीत ने पूरे देश में राष्ट्र भक्ति को जागृत करने का कार्य किया। उक्त गीत की निम्न पंक्तिया दृष्टव्य है-

''आओ बच्चों तुम्हे दिखाएँ झाँकी हिन्दुस्तान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्
उत्तर में रखवाली करता पर्वतराज विराट है
दक्षिण में चरणों को धोता सागर का सम्राट है
जमुना जी के तट का देखो, गंगा का ये घाट है
बाट-बाट पे हाट-हाट में यहाँ निराला ठाट है।
देखो ये तस्वीरें अपने गौरव की अभिमान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्।''

नेताजी की जीवनी पर प्रदर्शित फिल्म नेताजी सुभाषचन्द्र बोस (1966) में प्रदीप जी ने अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम एवं श्रद्धा प्रकट की है। पंक्तिया दृष्टव्य है।

''जन्मभूमि माँ मै यहाँ, तु वहाँ, तुझसे दूर जा रहा मै जाने कहाँ
भाग्यवश मैने जो है खो दी, याद आती वो तेरी गोदी
छू सका न चरन, माँ करना क्षमा, जन्मभूमि माँ
ये जो अपने बीच है दूरी, ये है माँ किस्मत की मजबूरी
तु तो है जननी मेरी आत्मा, जन्मभूमि माँ।''

बच्चों पर एक फिल्म प्रदर्शित हुई थी अनमोल सितारे (1982) इस फिल्म के माध्यम से प्रदीप जी ने देशप्रेम को निम्नलिखित पंक्तियों में व्यक्त किया है।

''अपने हिन्दुस्तान के, सुन्दर आसमान के
हम अनमोल सितारे है, हम अनमोल सितारे
भारत माता के है दुलारे हम सारे के सारे
हम अनमोल सितारे, हम अनमोल सितारे
गाँधी नेहरू की ये धरती, इसे सलाम हमारा, वन्दे मातरम्
शिवा, प्रताप, सुभाष की भूमि, इसे प्रणाम हमारा, वन्दे मातरम्।''

प्रदीप जी अपने देश की पावन गंगा नदी की कल्याणकारिता के प्रति नतमस्तक है। इसी श्रद्धाभाव से अभिभूत होकर प्रदीप जी ने पौराणिक फिल्म 'हर-हर गंगे' (1968) में हिमालय की बेटी गंगा को भगवान का वरदान कहा है। उक्त पंक्तिया इस प्रकार है।

''भारत के लिये भगवान का एक वरदान है गंगा
सच पूछो तो इस देश की पहचान है गंगा
अपने उज्जवल इतिहास का गौरव-गान है गंगा
सच पूछो तो इस देश की पहचान है गंगा। हर हर गंगे।''

प्रदीप जी ने फिल्मों के अतिरिक्त भी उसी अवधि में देशभक्ति के गीत लिखे है। यद्यपि उनके फिल्मों में आने के बाद उनके गैर फिल्मी गीतों की संख्या कम है। ऐसे एक देशभक्ति के गीत का शीर्षक है 'अपना देश बचाओ'। उक्त गीत की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार है।

''आज हिमालय तुम्हें पुकारे, देश के युवको आओं
जगह-जगह पर आज है खतरा
अपना देश बचाओ, अपना देश बचाओ
सावधान, सावधान रहना सावधान
ओ भारत के नौजवानो सावधान
होने वाला है तुम्हारा फिर से इम्तहान
ओ भारत के नौजवानों सावधान।''

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में प्रदीप जी के जन्मभूमि संबंधी प्रेम के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि उन्हें भारतभूमि जो उनकी जन्मभूमि है, प्राणों से अधिक प्यारी है। यह उनकी क्रीडा भूमि है, लीला भूमि है, पालन-पोषण की भूमि है, विकास की भूमि है, विश्वास की भूमि है, कर्म की भूमि है, धर्म की भूमि है, उनके जीवन-मर्म की भूमि है। उनकी मन: स्थिति और मानसिकता इसी श्लोक का पारायण करती प्रतीत होती है।

''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।''

निष्कर्ष – प्रदीप जी के देशभक्ति एवं राष्ट्रीय चेतना के गीतो के अध्ययन से यह बिल्कुल स्पष्ट होता है कि उनकी लेखनी अपने देश एवं समाज से संबंधित विषयों पर बहुत स्वाभाविक रूप से चली है। ये उनका बहुत ही प्रिय विषय है और इसीलिये वे देशभक्ति एवं राष्ट्रीय चेतना के गीतों के सम्राट है।

प्रदीप जी भारतीयों को सबल और सशक्त बनाना चाहते थे ताकि भारत एक सम्प्रभुता सम्पन्न शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभरे, अन्य देशों के लिये प्रेरणा का स्त्रोत बने, एक महाशक्ति के रूप में विश्वमंच पर उदित हो तथा अपने प्राचीन वैभव को, सम्मान को, आदर्शो को, प्रतिष्ठा को पुन: प्राप्त करे। उनके गीतों में यही सशक्त ध्वनि प्रतिध्वनित हुई है। मानवता, जन कल्याण, विष्वहित की कामना उनके गीतों में मुखरित हुई है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. अवस्थी डॉ. दिनेशचन्द्र, 'कवि प्रदीप का हिन्दी साहित्य में अवदान', भारत बुक सेण्टर, लखनऊ, 2012,
2. http//www.kavi pradeep.com (एक दीप कवि प्रदीप)
3. http//www.kavita kosh.org| kavi pradeep

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

वर्तमान परिदृष्य में युवाओं का पारंपरिक व ऑनलाइन खरीदारी के प्रति जागरूकता का अध्ययन

रितु चौहान *

* शोधार्थी (गृहविज्ञान) मानसरोवर ग्लोबल यूनिवर्सिटी, भोपाल (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – वर्तमान परिदृष्य में युवाओं का पारंपरिक व ऑनलाइन शॉपिंग के प्रति खरीदारी आज भी जारी है। ऑनलाइन शॉपिंग का संबंध ई-कामर्स से है। उत्पादों या सेवाओं को खरीदने का कार्य इंटरनेट पर ऑनलाइन शॉपिंग के रूप में माना जाता है। ऑनलाइन शॉपिंग के आगमन के बावजूद पारंपरिक खरीदारी अभी भी प्रचलित है, लेकिन इस बात को लेकर विवाद रहा है कि इनमें से कौन बेहतर है।

प्रस्तावना – नेटवर्किंग और मोबाइल उपकरणों के विकास के बाद ऑफलाइन जानकारी को ऑनलाइन प्रतिबंधित करने की तकनीक व्यापक रूप से संचालित की जा रही है। उसी तरह लोग अपनी उपस्थिति हर जगह प्रदर्षित करना चाहते है। खासकर जब वह कपड़ों की बात करता है। अलग-अलग कपड़े पहनते है। दिनचर्या में 1 दिन में कपड़े दूसरे पहनने से परहेज करते है। पारंपरिक खरीदारी व ऑनलाइन खरीदारी का चलन भी बढ़ा है। कपड़ों के साथ अन्य एसेसरीज का भी चलन बढ़ा है सभी पहनावे को एक दूसरे से पूर्ण करते है।

ऑनलाइन शॉपिंग इंटरनेट पर उत्पादों और सेवाओं को खरीदने की गतिविधि है। यह खरीदारी का एक बहुत ही सुविधाजनक तरीका है। आप कहीं भी किसी भी समय पर चीजे खरीदने के लिए तैयार हो सकते हैं आपको बस एक विशिष्ट वेबसाइट या अमेजन ऑनलाइन शॉपिंग साइट्स आदि से खोज करना है और अपने क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, या कैश ऑन डिलीवरी के माध्यम से भुगतान कर निर्धारित समय सीमा में आपको अपना सामान डिलीवर हो जाता है।

जब हम 'खरीदारी' शब्द सुनतें हैं तो सबसे पहले बाजार की पारंपरिक खरीदारी का ही विचार आता है यानी, दुकानों पर जाकर उनसे सामान खरीदना। पारम्परिक खरीददारी में कपड़े, जूते आदि को देखकर छू कर सामान को खरीदा जा सकता है एक ही दिन में सामान घर ले जा सकते है।

जहॉं ऑनलाइन शॉपिंग और ट्रेडिशनल शॉपिंग अपने-अपने स्तर पर है वर्तमान परिदृष्य में इंटरनेट ऑनलाइन का चलन इतना बढ़ता जा रहा है कि युवा वर्ग हर वक्त मोबाइल, टेबलेट, कम्प्युटर आदि पर इंटरनेट का उपयोग करता दिखाई दे रहा है। वही कपड़े खरीदने की बात आती है तो फैशन और पारंपरिक दोनों ही चीजों में विचार बढ़ जाता है कि पारंपरिक बाजार में खरीददारी करें या ऑनलाइन खरीददारी करें। ऑनलाइन खरीददारी के बाद भी पारंपरिक खरीदारी अभी भी प्रचलित है। लेकिन इनमें बेहतर कौन सी है आज भी विचारणीय है।

उद्देश्य –

1. वर्तमान परिदृष्य में युवाओं का पारंपरिक खरीददारी व ऑनलाइन खरीददारी के प्रति जागरूकता ज्ञात करना।
2. वर्तमान परिदृष्य में युवाओं का पारंपरिक व ऑनलाइन पर खरीददारी में प्रभावशीलता ज्ञात करना।

वर्तमान परिदृष्य में ऑनलाइन खरीददारी और पारंपरिक खरीददारी फायदे और नुकसान :

1. ऑनलाइन खरीददारी के साथ आपके पास उत्पादों के विभिन्न विकल्प उपलब्ध होते हैं। कपड़ों से लेकर, जूतों, पर्स और अन्य उत्पादों में सब कुछ बस एक ही क्लिक की दूरी पर यह सब उपलब्ध होता है।
2. आप दिन के किसी भी समय खरीददारी कर सकते है। ऑनलाइन शॉपिंग 24/7 घंटे आपकी सेवा में होता है।
3. कोई नगद भुगतान करने का दबाव नहीं होता है। कैश ऑन डिलीवरी, क्रेडिट कार्ड और गूगल पे आदि से भी भुगतान किया जा सकता है।
4. आपकी खोज को संतुष्टि प्रदान करने के लिए वह आप की आवश्यकता के अनुरूप करने के लिए बहुत सारे फिल्टर उपलब्ध है।

ऑनलाइन खरीदारी का नुकसान :

1. ऑनलाइन शॉपिंग में परिधान की गुणवत्ता और कपड़े की जांच करना कठिन है।
2. ऑनलाइन शॉपिंग में उत्पाद का सही समय पर डिलीवर ना हो पाना भी एक दिक्कत होती है।
3. ऑनलाइन शॉपिंग में परिधान को ट्राई करने की उपलब्धता नहीं होती है। जिससे उसे बदलाने आदि कारकों का सामना करना पड़ता है।
4. साइबर अपराध के बढ़ने के कारण आप इंटरनेट पर भी ज्यादा भरोसा नहीं कर सकते है व्यक्तिगत जानकारी क्रेडिट कार्ड के विवरण आदि का दुरूपयोग होने का जोखिम होता है।

पारंपरिक खरीदारी के लाभ :

1. दुकानों में जाने और नए कपड़ों को खरीदने का मजा ही कुछ और होता है।
2. पारंपरिक खरीदारी में आप परिधान को जांच सकते है उसका बारीकी से निरीक्षण कर सकते है।

3. परिधानों को उसी समय खरीद कर घर ला सकते है।
4. माप में किसी प्रकार की दिक्कत आने या अन्य कोई दिक्कत होने के कारण से दुकान पर जाकर तत्काल बदला जा सकता है।

पारंपरिक खरीदारी के नुकसान :

1. पारंपरिक खरीदारी में एक दुकान से दूसरी दुकान पर जाना पड़ता है। इससे समय का नुकसान और थकान भी अधिक होती है।
2. ऑफलाइन खरीदारी में डिस्काउंट कम ही प्राप्त होता है। कभी – कभी यदि मिलता भी है तो कुछ ही समय के लिए होता है।
3. वर्तमान में महामारी के चलते भीड़ भाड वाली जगहों पर पारंपरिक खरीदारी करना मुष्किल हो जाता है।

निष्कर्ष – वर्तमान समय में ऑनलाइन खरीदारी और पारंपरिक खरीदारी दोनों ही प्रचलित है। व्यक्ति ऑनलाइन खरीदारी को घर या कहीं से भी शॉपिंग कर सकता है। एक ही समय में अलग–अलग वेबसाइट के माध्यम से विभिन्न वेरायटी के परिधान विभिन्न किमतों में उपलब्ध होती है, वही पारंपरिक खरीदारी में परिधान को देखकर, छू कर, ट्राई करके भी देखा जा सकता है। जैसा की अध्ययन से पता चलता है कि ऑनलाइन खरीदारी और पारंपरिक खरीदारी में से बेहतर कौन है यह अभी भी विचार के रूप में बना हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Bo Dai,Sandra Forsythe,Wi-Suk Kwon (2014). THE IMPACT OF ONLINE SHOPPING EXPERIENCE ON RISK PERCEPTIONS AND ONLINE PURCHASE INTENTIONS: DOES PRODUCT CATEGORY MATTER?,Journal of Electronic Commerce Research, VOL 15, NO 1, 2014.
2. Saravanan, S., & Devi, K. B. (2015). A study on online buying behaviour with special reference to Coimbatore City. International Journal of Commerce, Business and Management, 4(1), 988-995.
3. Al-Debei, M. M., Akroush, M. N., & Ashouri, M. I. (2015). Consumer attitudes towards online shopping. Internet Research, 25(5), 707–733. doi:10.1108/IntR-05-2014–0146 [Crossref], [Web of Science ®], [Google Scholar]
4. Charumathi, D., & Rani, S. S. (2017). An empirical study on consumers buying behaviour towards online shopping. Clear International Journal of Research in Commerce & Management, 8(10).
5. Mohammad Anisur RahmanORCID Icon, Md. Aminul IslamORCID Icon, Bushra Humyra Esha, Nahida Sultana & Sujan Chakravorty, (2018)Consumer buying behavior towards online shopping: An empirical study on Dhaka city, Bangladesh Article: 1514940 | Received 11 Feb 2018, Accepted 17 Aug 2018, Accepted author version posted online: 31 Aug 2018, Published online:08 Oct 2018
6. Adjaino.Victor, June (2019).SHOPPERS' EXPERIENCE WITH TRADITIONAL AND ONLINE SHOPPING IN BENIN CITY https://www.researchgate.net/profile/Victor-Adjaino
7. Dr.Kushwah. Vigg. Silky and Singh. Anjali (2019). Traditional Shopping to Online ShoppingA Study of the Paradigm Shift in Consumer Behaviour ISSN 2348-2869 Print© 2019 Symbiosis Centre for Management Studies, NOIDA, Journal of General Management Research, Vol. 6, Issue 1, January 2019, pp. 1–13
8. Aggarwal. Bharti 1, Kapoor. Deepa 2(2020).A Study on Influence of COVID-19 pandemic on customer's online buying behavior, MDIM Business ReviewVolume: I, Issue II, Dec. 2020Page No-41-47 © 2020 MDIMISSN (Online) 2564-8555,https://www.mdim.ac.in/journal-issues
9. Jain.rachna, sharma.shukha,(2020). Determinant of customer satisfaction in online shopping, Maharshi Dayanand University, Research Journal ARTS 2020, vol.19(1),pp 51-66, ISSN. 0972-706x.
10. Halan,D.(2020).Impact of COVID-19 on online shopping in India. Retrieved 30 July 2020,fromhttps://retail.economictimes.indiatimes.com/re-tales/impact-of-covid-19-on-online-shopping-in-india/4115Daniela Coppola, Jul 14, 2021.
11. Statistics and facts about global e-commerce.https://www.statista.com/topics/871/online-shopping/#topicHeader__wrapper

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Seven Steps Around The Fire: A Play of Mahesh Dattani Against Dehumanized Approach Towards Eunuchs

Jyoti Pandey*

***Research Scholar (English) Veer Bahadur Singh Purvanchal University, Jaunpur (U.P.) INDIA**

Introduction - Mahesh Dattani is one of the promising Indian English playwrights voicing for the marginalized victims through the experimental fragmentary settings in his theatres. Dattani has a close eye on the surrounding social issues and tries to highlight them through his plays. His plays are fascinating because he presents the dynamics of moral and personal choices while focusing on human relationship. He is much attached to the unprivileged sections of the society and portrays their pictures before his audience so that they can understand the real condition of them. ***Seven Steps Around the Fire***, a prominent play of Dattani, in it he gives his voice to Hijras to articulate the humility, pain and sufferings they are facing in society and he criticizes the dehumanized approach of people towards eunuchs.

Dattani polemical work ***Seven Steps Around the Fire*** revolves around the third gender which is the community of eunuchs and their existence on the fringes of Indian milieu. Dattani brings a fresh perspective on the lives of hijras in the play and ushers us in a new era. He asserts that eunuchs are also made of flesh and blood and they also have body and soul, so despite all the negatives associated with their lives by the 'respected class', they are after all as kind ,as loving, and as considerate as the people of other established genders. Through the character of Uma, a Ph.D. scholar in Sociology, the wife of the superindent of Police Suresh Rao, Dattani attempts to raise the compassion of human beings towards hijra community. Uma, as a mouth spokesman of the playwright Dattani, has projected her as the ambassador of modern Indian women who fights against the so-called hollow traditional ethos and questions the patriarchal hegemony.

In this play, Dattani has pitted Hijras against the powerful elite class of the society. Subbu, the son of a powerful minister, Mr. Sharma, secretly marries a beautiful eunuch Kamala. But this relationship is not acceptable to the family of Subbu. In order to get rid of Kamala, she is immolated and the charge of murder is leveled against another Hijra Anarkali. This murder case is to be investigated by Uma Rao, who is determined to unveil the mystery of Kamala's murder. She appears as an instrument of awakening and, therefore she takes the responsibility to articulate the mute voices of eunuchs and to expose the community of elitists that drags them to the margin. Through the character of Uma, Dattani shows his sympathy towards eunuchs, the oppressed sections of society, whereas their dance and singing is considered auspicious on occasion of wedding ceremony or childbirth as they are regarded to be bestowed with the power to procreative capacity to the newly married couple or newly infants, but any warm and close relationship with them will be a matter of disrespect, dislike and the public anger. Pointing out the aim of Dattani's plot construction of the play ***Seven Steps Around the Fire***, Dr. Beena Agrawal asserts: "Dattani in the process of engineering the current of Indian drama by bringing it closer to the real-life experiences tried to articulate the voice of the oppressed sections of the society whose identity is shrouded in the cover of myths and social prejudices. They have been dragged in darkness, doomed to survive in perpetual silence bearing the oppressive burden of hegemony of the elitist class. Dattani within the framework of dramatic structure tries to investigate the identities of those who occupy no space in social order". In fact in the play "Dattani appears to be as a reformist"-Ghauri Shanker Jha

The miserable plight if Hijras is shown from the first appearance of Anarkali on the stage. When Uma requests Munuswamy, the assistant of Suresh to arrange a meeting with Anarkali, he says: "why do you want to bring shame to your family, Madam? I beg you go home." But Uma is much determind to meet Anarkali and even go to any extent to save 'her' from the clutches of Hostile forces. Anarkali is fed up of false sympathy and avoids to have a conversation with Uma. After knowing that Uma belongs to the family of Deputy Commissioner of Police, Anarkali pleads Uma to release her. Munuswamy behaves rudely to her and ask the prisoners to beat her.

Uma gets so much disturbed with all this that she begins to think about their identity and present condition. Uma mentions in the play, ***"perceived as lowest of the low, they yearn for family and love"***. Like her, we should also treat them like human beings who crave for family and love.

UMA-nobody seems to know anything about them. Neither do they. Did they come to this country with Islam, or are they a part of our glorious Hindu tradition? Why are they so obsessed with weddings and ceremonies of childbirth?

It is Uma who always believes in the innocence of Anarkali and finally proved it. But eunuch themselves cannot speak the truth because no one will trust them and make arrest for the actual murderer. They do not have any existence in common man's life except on two occasions. Anarkali has described her life in simple words to Uma.

Anarkali- what is there to tell? I sing with other hijras at weddings and when a child is born. People gives us money otherwise I will put a curse on them. (laughing) as if God is on our side. (Smoking.)

Apart from picturizing the life of hijras, Dattani presents the true that can be seen in the characters of Subbu and Kamla. Subbu has deep compassion for Kamla and she also has the same feelings for him. They get married secretely at a remote temple but it is unacceptable for Subbu's father who has a high reputation in society and can not bear a hijra as a part of his family. He represents the hypocritical world that can do anything to save his position in society. He planned a conspiracy to get rid of his son from the love net of Kamla and made arrangements for her death. But even after death, he was unable to remove Kamla from his son's life. He settles Subbu's wedding with a girl from reputed family but the true love can never be suppressed. After performing the wedding rituals with that girl,Subbu could imagine the presence of Kamla among dancing hijras. He visualizes the aura of light from where Kamla is calling him.

While they dance, Subbu comes forward looking at them. He looks away to see a vision of Kamla dancing on another level. The music builds to a crescendo. Kamla opens her arms wide.

Subbu cannot resist his emotions anymore and yearns to join her in another world. He kills himself to meet his true love Kamla in an eternal world where no one can separate them. Dattani has beautifully described the harmony of these pious souls.

A surreal spot on Kamla . Music, Subbu joins her. Subbu embraces Kamla. They kiss as the music builds up. The light on them stays as they freeze as in a picture frame.

The fact is not only Mr. Sharma, but in general too, our society will not accept the wedding of a hijra to a common man. Through his character, Dattani reflects the socio-political issues of present day. Hijras are deprived of the right of the marriage and having love with person of their own choice. Kamla has to bear the consequences of being in love with a man from reputed family.

Moreover the theme of betrayal is weaved skillfully among tension and happening on the stage. It is used to show the hollowness in human relations. Mr. Sharma betrays his son by killing Kamla and hiding this truth from him. Even Subbu's close friend Salim cheats him by supporting his father in keeping Kamla away from Subbu. Uma who love love Suresh betrays him to support Anarkali. She borrows money from her father for the bail of Anarkali but lies to Suresh that she needed that money to buy an exclusive gift for Subbu. She even does not inform him about her visits to champa and ministers's house and make excuses every time. Suresh also does not do justice to his job. He did a false arrest of Anarkali because there was no one else and helps Mr. Sharma in removing all the evidences against him.

Seven Steps Around the Fire does hold up a mirror before the society. But what it reveals is something unusual. It is the love-affair between a man and a hijra leading to marriage. In it Dattani has addressed to the audience the question of eunuchs for introspection and self-evaluation against dehumanized approach towards eunuchs. In this way Dattani has brought a bold theme related to eunuchs who are neglected, deserted, and abused sections of society. That's why Bijay Kumar Das ,in his book ***Form and Meaning in Mahesh Dattani's plays***,has pointed out that "Dattani has done a good job by introducing a new theme to Indian English Drama. Conservatives and social activists should not turn a blind eye to reality

Thus, in the play Seven Steps Around the Fire Mahesh Dattani, emphasizing on the condition of eunuchs in the society. has highlighted the search of identity of eunuch as well women like Uma. He tries to draw audience's attention to the corruption in our system and hypocrisy of highly reputed people. He pinpoints how they can use and spoil the life of eunuchs for their benefits such as eunuchs. In this way Dattani stands up hear as the champion of the human rights of a minority- the hijra, and once again distinguishes himself as a humanist. Uma's voice-over in the drama is basically a study "to show their (the hijra's) position in society." Hence, by presenting such themes in theatre he bitterly criticizes the dehumanized outlook of people towards eunuchs, and he provides an inimitable identity to Indian English Drama.

References :-

1. Agarwal, Beena. Mahesh Dattani's Plays: A New Horizon in Indian Theatre. Jaipur: Book Enclave, 2011. Print.
2. Chaudhuri, Asha Kuthari. Mahesh Dattani. New Delhi: Foundation Books Pvt. Ltd., 2005. Print.
3. Das, Bijay Kumar. Form and Meaning in Mahesh Dattani's Plays. New Delhi: Atlantic. 2008. Print.
4. Dattani, Mahesh. "Seven Steps Around the Fire." Collected Plays Vol. I. New Delhi: Penguin, 2005. 3-42. Print.
5. George, Miruna. "Constructing the Self and the Other: Seven Steps Around the Fire and Bravely Fought the Queen." Mahesh Dattani's Plays: Critical Perspective. Ed. Angelie Multani. New Delhi: Pencraft International, 2007. 145-155. Print.

6. Jha, Gauri Shankar. Current Perspective in Indian English Literature. New Delhi: Atlantic. 2006. Print. Joshipura, Parnav. A Critical Study of Mahesh Dattani's Plays. New Delhi: Sarup Books Publishers Pvt. Ltd., 2009. Print.
7. Mortimer, Jeremy. A Note on the Play. Collected Plays of Mahesh Dattani. New Delhi: Penguin Books, 2005. 3-4. Print.
8. Multani, Angelie. Mahesh Dattani's Plays: Critical Perspectives. New Delhi: Pencraft International, 2007. Print.
9. Parsad, Amar Nath. The Dramatic World of Mahesh Dattani: A Critical Exploration. New Delhi: Sarup Books Publishers Pvt. Ltd., 2009. Print.
10. Tiwari, Shubha. Contemporary Indian Dramatist. New Delhi: Atlantic. 2007. Print

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

उज्जैन संभाग में उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र. के उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो के उपरांत उद्यम प्रारंभ करने वालो की आर्थिक स्थिति का अध्ययन

डॉ. रूपचंद चौहान *

* एम.कॉम., पी-एच.डी. 397, महात्मा गाँधी मार्ग नयापुरा, बडनगर, जिला उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश - नये-नये अभिक्रम प्रारम्भ करना और नयी-नयी चुनौतियों को स्वीकार कर अवसरो में बदलने वाले उद्यमी एक ओर तो स्वयं अपनी भाग्य लिपि सँवारते है तो दूसरी ओर राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि के महायज्ञ में अपना योगदान करते है। उद्यमी के कार्य व्यापक एवं चुनौतीपूर्ण होते है। इस कारण बिना जानकारी एवं मार्गदर्शन के उद्यम प्रारंभ करना मुश्किल कार्य है। इसके लिए आम आदमियो को जो उद्यम प्रारंभ करने के इच्छुक है उन्हे प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र., उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो के माध्यम से आम आदमियो को प्रशिक्षण प्रदान कर उद्यम की ओर अग्रसर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। उद्यम प्रारंभ करने से एक ओर तो स्वरोजगार प्राप्त होता है साथ ही आर्थिक स्थिति में सुधार भी होता है। क्या उज्जैन संभाग में उद्यमिता विकास केन्द्र के उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो के उपरांत उद्यम प्रारंभ करने वालो की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। इस शोध पत्र में उज्जैन संभाग में उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र. के उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो के उपरांत उद्यम प्रारम्भ करने वालो की आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया गया है।

शब्द कुंजी - उद्यमिता विकास, उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम, उद्यमी, आर्थिक स्थिति।

प्रस्तावना - वर्तमान युग में उद्यमी को आर्थिक विकास का कर्णधार माना जाता है। उद्यमियो की क्रियाओ के द्धारा ही राष्ट्र के आर्थिक विकास का चक्र गतिमान होता है। उद्यमी प्रत्येक अर्थव्यवस्था का मुख्य कार्यकर्ता होता है, क्योकि अर्थव्यवस्था की गाडी उसके बिना नही चल सकती है। वास्तव में वह आर्थिक प्रगति का संतुलन चक्र है। शुम्पीटर ने अपने आर्थिक विकास के सिद्यांत में उद्यमी की भूमिका को केन्द्रीय माना है।

उद्यमी किसी भी उद्योग की आधारशिला एवं प्रमुख स्तम्भ होता है। कोई भी व्यक्ति बिना जानकारी एवं मार्गदर्शन के अभाव में उद्यम प्रारंभ नही कर सकता है। इसके लिए उन्हे प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। आम आदमियों को प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन देने के लिए अनेक संस्थाएँ कार्य कर रही है उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र. उन्ही में से एक है।

उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र., उद्यमिता एवं उद्यमशील क्रियाओ को बढावा देने के लिए अपने विभिन्न उद्देश्यो को लेकर लगातार प्रयासरत है। मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ मे कई ईकाइयों-क्षेत्रीय कार्यालय एवं जिला कार्यालय के रूप में अपनी संरचना को विकसित किया है। इसका प्रमुख कार्य भावी उद्यमियों की पहचान करना, इनको बढावा देना और प्रशिक्षण प्रदान करना, कार्यरत उद्यमियों की कार्यप्रणाली में सुधार के लिए प्रशिक्षण व सलाह देना तथा उद्यमियो के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करना आदि है।

उज्जैन संभाग में उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र., उद्यमिता विकास विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो के माध्यम से उद्यमिता विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उज्जैन संभाग में उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र. द्धारा शोध अवधि वर्ष 2008-09 से 2012-13 तक आयोजित उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो में कुल 707 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया जिसमें से 284 द्धारा उद्यम प्रारंभ किया गया।

इस शोध पत्र में उज्जैन संभाग में उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र. के उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो के उपरांत उद्यम प्रारंभ करने वालो की आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया गया है।

पूर्व साहित्य की समीक्षा :

1. ओमप्रकाश शर्मा (2003) ने 'शाजापुर जिले में उद्यमिता की स्थिति का मूल्यांकन' शोध कार्य में नव उद्यमियों की ईकाइयों का अध्ययन कर बताया कि ये इकाईया अत्यंत लघु आकार की होती है। परिवार के सदस्य ही इसमे कार्य करते है। लाभ अत्यंत न्यून मात्रा में होता है। जिससे भावी विकास संभव नही है।
2. डॉ. जी. विजय भारती, सी. शिवारामी रेड्डी, डॉ. पी. मोहन रेड्डी, पी हरिनाथ रेड्डी (2011) ने 'इन्टरप्रिन्योरशिप डेवलपमेन्ट-ए केस स्टडी ऑफ ए विलेज इन वाय.एस.आर. डिस्ट्रिक्ट' शोध पत्र में उद्यमियो की सामाजिक आर्थिक स्थिति, उद्यमिता को प्रभावित करने वाले तत्वो और अपने प्रतिष्ठानों को विकसित करने में उद्यमियो को होने वाली समस्याओ का अध्ययन किया है।

शोध का उद्देश्य - उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो उपरांत उद्यम प्रारंभ करने वालो की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना :

Ha - उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो उपरांत उद्यम प्रारम्भ करने वालो की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

Ho – उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो उपरांत उद्यम प्रारम्भ करने वालो की आर्थिक स्थिति में सुधार नही हुआ है।

शोध अध्ययन प्रणाली – प्रस्तुत शोध पत्र में उज्जैन संभाग में उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र. के उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो के उपरांत उद्यम प्रारंभ करने वालो की आर्थिक स्थिति का अध्ययन कर यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि उद्यम प्रारंभ करने वालो की आर्थिक स्थिति में कहाँ तक सुधार हुआ है। समस्त अध्ययन के लिए उज्जैन संभाग में उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र. द्वारा वर्ष 2008-09 से 2012-13 तक आयोजित विभिन्न उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो के उपरांत उद्यम प्रारंभ करने वालो में से 20 प्रतिशत का दैव निदर्शन की लॉटरी प्रणाली के आधार पर चयन किया गया है। चयनित उद्यम प्रारंभ करने वालो की संख्या को तालिका में दर्शाया गया है।

चयनित उद्यम प्रारंभ करने वालो की जानकारी

वर्ष	उद्यम प्रारंभ करने वालो की संख्या	चयनित उद्यम प्रारंभ करने वालो की संख्या (20 प्रतिशत)
2008-09	25	05
2009-10	43	09
2010-11	56	11
2011-12	54	11
2012-13	106	21
योग	284	57

उपरोक्त चयनित उद्यम प्रारंभ करने वालो से साक्षात्कार अनुसूची के आधार पर आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया गया।

सांख्यिकी विधि – चयनित परिकल्पना का सांख्यिकी तकनीक काई वर्ग (X^2) से परीक्षण किया गया है।

प्रदत्तो का विश्लेषण – उद्यमशील क्रियाओ के क्रियान्वयन के पश्चात आर्थिक स्थिति का आंकलन किया जाता है क्योकि आर्थिक स्थिति से ही उद्यम की सफलता/असफलता का अनुमान लगाया जा सकता है। उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो के उपरांत उद्यम प्रारम्भ करने वालो की आर्थिक स्थिति को (सर्वेक्षित उद्यम प्रारंभ करने वालो के आधार पर) तालिका क्रं. 01 में दर्शाया गया है।

तालिका क्रं. 01 : उद्यम प्रारम्भ करने वालो की आर्थिक स्थिति की जानकारी

आर्थिक स्थिति	सर्वेक्षित उद्यम प्रारंभ करने वालो की संख्या	प्रतिशत
सुधार हुआ	54	94.74%
सुधार नही हुआ	03	05.26%
योग	57	100%

स्त्रोत :- प्रत्यक्ष सर्वेक्षण के आधार पर

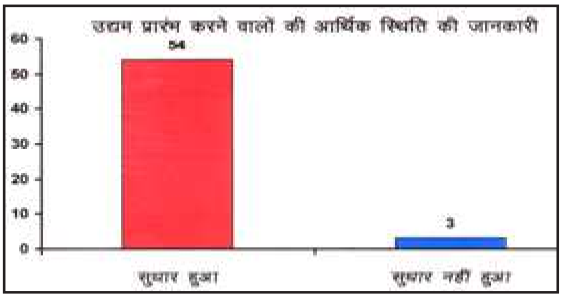

उपरोक्त तालिका क्रं. 01 से स्पष्ट होता है कि उज्जैन संभाग में सर्वेक्षित कुल 57 उद्यम प्रारंभ करने वालो में से 54 (94.74 प्रतिशत) के द्वारा आर्थिक स्थिति में सुधार होना बताया गया है तथा 03 (05.26 प्रतिशत) के द्वारा आर्थिक स्थिति में सुधार नही होना बताया गया है।

इस प्रकार सर्वेक्षित उद्यम प्रारंभ करने वालो में से आर्थिक स्थिति में सुधार नही होने वालो की तुलना में आर्थिक स्थिति में सुधार होने वालो का प्रतिशत अधिक है।

परिकल्पना का परीक्षण – उक्त परिकल्पना का परीक्षण तालिका क्रं. 01 के अनुसार किया गया है। आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ अथवा नही हुआ वाले उत्तरदाताओं के मध्य संबंध देखा गया है।

Ha –उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो उपरांत उद्यम प्रारम्भ करने वालो की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

Ho –उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो उपरांत उद्यम प्रारम्भ करने वालो की आर्थिक स्थिति में सुधार नही हुआ है।

तालिका 02 : उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो उपरांत उद्यम प्रारम्भ करने वालो की आर्थिक स्थिति

Chi-square tests

	value	df	Asymp. Sig.
Pearson chi-square	8.141[a]	1	.004

उपर्युक्त परिकल्पना के संबंध में 10 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर एक स्वातन्त्र संख्या के लिये x^2 का सारणी मूल्य x^2t= 2.706 है तथा x^2 का परिमाणित मूल्य x^2C = 8.141 प्राप्त होता है।

अर्थात् 2.706 < 8.141 या $x^2t < x^2C$ इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है। अर्थात दोनो गुणो में संबंध है। स्पष्ट है कि उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो उपरांत उद्यम प्रारंभ करने वालो की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

निष्कर्ष – उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो उपरांत उद्यम प्रारंभ करने वालो की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है क्योकि प्रत्यक्ष सर्वेक्षण में आर्थिक स्थिति में सुधार होने वालो के द्वारा बताया गया कि पूर्व की मासिक/वार्षिक आय की तुलना में उद्यम प्रारम्भ करने के पश्चात् मासिक/वार्षिक आय में वृद्धि हुई है। उद्यम प्रारंभ करने वालो को नवप्रवर्तन, व्यवसाय विस्तार, उत्पाद विविधिकरण आदि पर विशेष ध्यान देना चाहिए। साथ ही प्रमुख जोखिमो मांग प्रतियोगिता, मूल्य, औद्योगिकी, फैशन, सामाजिक परिस्थितियों में परिवर्तन, शासकीय नीतियों का भी पूर्व नियोजन एवं निर्धारण करना चाहिए। ताकि अधिकतम लाभ के साथ आर्थिक स्थिति में ओर अधिक सुधार हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ. जैन एवं शर्मा (2011), 'उद्यमिता के मूलाधार', रमेश बुक डिपो, जयपुर
2. डॉ. गंगेले एवं जैन (2009), 'उद्यमिता विकास', म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
3. ओमप्रकाश शर्मा, (2003), 'शाजापुर जिले में उद्यमिता की स्थिति का मूल्यांकन' (शोध प्रबंध), विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन
4. डॉ. जी. विजय भारती, सी शिवारामी रेड्डी, डॉ.पी. मोहन रेड्डी, पी. हरिनाथ रेड्डी (2011), 'इन्टरप्रिन्योरशिप डेवलपमेंट-ए केस स्टडी

ऑफ ए विलेज इन वाय एस आर डिस्ट्रिक्ट' (शोध पत्र), इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन कामर्स, इकॉनामिक्स एण्ड मैनेजमेंट, वाल्युम नं. 1, इश्यु नं. 7, (नवम्बर) ISNN No. 2331-4245
5. रूपचंद चौहान (2016), 'उज्जैन संभाग में उद्यमिता विकास में उद्यमिता विकास केन्द्र (CEDMAP) के योगदान का अध्ययन' (शोध प्रबंध), विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन
6. उद्यमिता समाचार पत्र, उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र., भोपाल
7. स्वरोजगार मार्गदर्शिका, उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र., भोपाल

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

A study of Service Quality in Health Care Industry

Dr. Sandeep Singh* Dr. Juhi Kamakoty**

* Professor (Management) Acropolis Faculty of Management & Research, Indore (M.P.) INDIA
** Professor (Management) Acropolis Faculty of Management & Research, Indore (M.P.) INDIA

Abstract - This paper attempts to study the service quality of 5 major health care providers of central India. Standard Servqual scale has been employed to gather reponses. The data has been subjected to principal component analysis and the perception expectation gap has been studied across the demographic profile of the patients. There are 5 factors of service quality that have been extracted from 250 responses on patients perception of service quality. It is found that the Reliability, Empathy & Responsiveness differs across gender; Assurance & Responsiveness differs across Age; Responsiveness differs across income. The results have been reported and managerial implications are delineated.

Keywords - Service Quality, SERVQUAL, SERVPERF, Hospitals, RATER.

Introduction - The economies all over the globe are changing very fast. The component of service sector is increasing almost in every economy of world-however the magnitude of growth of services may differ. We can make the general statement "more developed the economy more is the contribution of service sector in its GDP". Thus the service sector is the lifeline for the social and economic growth of a country. The main reason for the growth of the service sector is due to the increase in urbanization, privatization, liberalization and globalization.

Globalization and liberalization has created both opportunities and challenges for hospital to continually deliver the superior quality of services. With this fast developing world economy and global market place, it has become imperative for the hospital to find new ways to create and deliver value to customers through the effective management of services. These dynamic market pressures have led to increased emphasis on reengineering internal business processes and working more collaboratively with customers (patients and their attendants) and internal suppliers (Medical, Para-medical and admin staff etc) for better integrate planning and operations throughout as a means to improve service and reduce costs. Hospitals have realized that the way to sustained growth is rooted through service quality.

Researchers and Practitioners have a general acceptance of relations of service quality with business performance, lower costs, customer satisfaction and profitability. It may be noted that, service quality may be difficult to measure objectively compared to the technical quality for manufactured goods and therefore it remains a relatively elusive and abstract construct.

In this paper Service Quality of health care units has been studied across central India. Various important dimensions of service quality have been identified and their managerial implications have been discussed. Servqual(Parsuramn, 1985, 1988) model is applied to measure service quality

Literature Review

Due to typical nature of the services it has attracted much attention of scholars. Literature is fraught with definitions, models and metrics on service quality (Seth *et al*., 2005). Yet there is no single or unique model or metrics of service quality that may be applied universally to all service situations. Plethora of research concentrates on developing diverse models of service specific to some situation in terms of nature, set up, and outcome. Having defined the model, defining the antecedent, factors and consequences of service quality is next in progression. This is further followed by development of measurement instrument, validation and findings. While on one extreme, researchers have focused on developing a model for every situation, on the other extreme of this continuum, researchers have attempted to develop a unique model of service quality that may be applied to evaluate service quality in all service settings. Research efforts have thus resulted in a good number of models on service quality that may be used in different situation to evaluate service quality. The models may be categorized as generic or specific model, IT based models, gap based models, expected value model, performance based model and so on. While each model is unique, it has its own share of critiques.

One of the most accepted and contradicted model of service quality is Servqual (Parasuraman *et al*., 1985). It is

a gap based model that measures service quality as the gap between consumer perceptions of service received and expected. The gap is measured across five dimensions of service quality Reliability, Assurance, Tangibility, Empathy and Responsiveness. The service quality may be more than satisfactory, satisfactory or less than satisfactory depending on the magnitude and direction of this gap. This scale identifies the critical variables, lends help in designing improvement strategies and optimizes the efforts required to improve service quality. While many of the scholars and practitioners have readily accepted Servqual, a cohort of scholars has vociferously criticized the gap concept. They emphasize that service quality is the perception of service received by the customer. They have gone to prove the superiority of performance only model Serfperf over the gap based model (Cronin & Taylor, 1992).

The service industries most targeted by researchers for studying service quality are the Banking, Aviation, Telecom, Hospitality etc. However when it comes to health care sector , there is a dearth of systematic and organized literature on service quality. Service quality has been studied by various scholars across hospitals and clinics but the studies are fragmented and localized and do not offer any generalized inferences

Over the years researchers have gathered substantiate evidence and developed various theories and models of service quality in Healthcare. HealthCare service quality is multidimensional. Its multi dimensionality of healthcare quality was supported by Griffith *et. al*.(2002). Lim and Tang (2000) emphasized that in the healthcare industry, hospitals provides the same type of service, but they do not provide the same quality of service. Service quality can therefore be used as a strategic differentiation weapon to build a distinctive advantage which competitors would find difficult to copy.

One of the peculiarities of service quality literature that exists pertaining to hospitals , is that most of the work employs Servqual to measure the quality dimensions. The literature is replete with various factors of service quality for hospitals / health care settings but surprisingly not many researchers have explored beyond identifying the service quality factors.

Lehtinen and Lehtinen (1985) present a study on patient's perception. They present a holistic view on how to measure monitor and operationalise customer perceptions of service quality in thcare organization. John (1989) discuss that there are four dimensions of healthcare service quality viz. the curing dimensions, the caring dimensions, the access dimensions and the physical environment dimensions. Reidenbasch and Sandifer (1990) developed an instrument based on the original ten-dimension question developed by Parsuraman etc (1985). In this patient's service need were analyses by examining the differing perceptions of services held by patients in three basic hospital service settings: emergency room service, impatient services (IPD) and outpatients service (OPD). Differential impacts were noted in all the three hospital settings. Babakus and Glynn (1992), Bowers *et. al.* (1994), Youssef & Nel (1996), Bovaird *et. al.* (1995), and Lim and Tang (2000) conducted similar studies to measure service quality. Jabnoun and Chaker (2003) compared the service quality rendered by private and public hospital in the UAE. Rao *et. al*. (2006) conducted a study in Primary health centers, community health centers, districts hospital and female district hospital in the state of Uttar Pradesh in North India.Five dimensions of perceived quality were identified medicine availability, medical information staff behavior doctor behavior, and hospital infrastructure

Raghuyamshi *et. al.* (2003) conducted a study in Surat to determine the hierarchy of the service related factors influencing the utilization of malaria service and to compare the urban health centre's (UHCs) run by the Surat Municipal .A.A.J. hendriks, E.M.A. Smets, M.R. Vrielink3, S.Q. Van Es and J.C.J.M.De haes (2006) conducted a research to investigate to what extent personality is associated with patient satisfaction with hospital care. A sizeable association with personality would render patient satisfaction invalid as an indicator of hospital care quality.

Thus it can be concluded form literature review that medical service quality needs to be explored beyond just identifying the factors. There is a need to take up these various factors and study them across different service settings . When it comes to measuring service quality , Servqual is the most popular tool. On account of it's universality it can be cutomised to any service setting. Thus in this research paper the authors have measured the service quality of five different hosptital of central Indore using Servqual construct. The identified factors have then be taken up and analyzed across a spectrum of setting to get valuable iunputs. For practical reasons the study is limited to five hospitals of Indore

Research Methodology - A through secondary research had been conducted to identify the gap in literature. Various journals, news, reports, conference papers have been studied from 1980 to 2020 to develop a continuum of understanding of the topic.

Once the gap had been identified , It was decided to measure service quality across hospitals by employing Servqual. Sevqual scale had been customized across health care setting to capture the data from patients. or their attendants on a seven point Likert scale (strongly disagree to strongly agree).. The questionnaire also captured demographic variables like age, income, gender etc. It was developed in Hindi as well as English. . A pilot study was undertaken first in order to determine whether the questionnaire and the scaled are easily understood by responded to by the patients and attendants.

The data for the present study was personally collected by the researchers with the help of well structured Questionnaire. This was preceded with the detailed debriefing of the respondent patients/attendants' in hospitals.Five hospitals were selected for data collectiobn. The criteria for

selection was as under

1. The patient's base is large. (They cater to almost 50% population of Indore)
2. Have advanced Medical facility.
3. Are easily approachable to people of Indore.
4. Number and type of facilities offered are similar to other hospitals.

A sample of 250 responses was collected using convenience sampling. Data analysis was done using R s/w. Intially the data was checked for anomalitie and missing values. Once the data was clean, it was put to factor analysis. The extracted factors were analyzed across demographic variables. The hospitals were classified into two categories Big and Small on the basis of Bed capacity. Two hospitals qualified in Big category out of 5. 't' test and anova analysis was applied to study the perception expectation gap in the five extracted service quality factors across gender, age, education, income . The findings were then reported along with managerial implications.

Data Analysis - Total sample size was 250, out of which 46 were missing values which were eventually imputed using regression method. Out of 250 respondents 52.8% were male and 47.2% were female. About 40% of the respondents were below 30 years, 17% between 30-40 years, 14.4% between 40-50 years and 28% were above 50 years. Qualification wise 62.4% were undergraduates, 31.6% were graduates and 6% were post graduates. On Income basis 58.8% were below 1 lacs, 36.4 were between 1 – 2.5 lacs, and only 4.8% were above 2.5 lacs per year.

Before subjecting the data for Factor Analysis, Bartlett test was carried out to assess the factorability of the data. The Kaiser-Meyer-Olkin Measure of Sampling Adequacy is a statistic that indicates the proportion of variance in your variables that might be caused by underlying factors. : KMO values between 0.8 and 1 indicate the sampling is adequate. KMO values less than 0.6 indicate the sampling is not adequate and that remedial action should be taken. Output showed Kaiser-Meyer-Olkin Measure of Sampling Adequacy of 0.85 (Chi-Square of 2756.602) clearly indicating that data if fit for factorization.

Scree Plot shown below highlights that 5 factors explain most of the variance, which is in accordance with Parasuraman findings. These 5 factors accounts for 69.44% of variance in data.

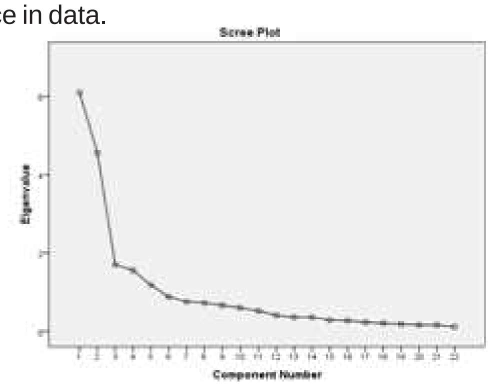

Fig.1 . Scree Plot

Table 1:Variance of Factors Extracted

S.	Factor	Extracted Variance %
1	Tangibility	25.8%
2	Reliability	22.5%
3	Responsiveness	8.09%
4	Assurance	7.34%
5	Empathy	5.60%
	Cummulative Variance Explained	69.44%

Factor Analysis showed that Item 1 through 4 loaded on Factor 1 referred to as Tangibility, items 5 through 9 loaded on Factor 2 referred to as Reliability, items 10 through 13 loaded on factor 3 referred as Responsiveness, item 14 through 17 loaded on factor 4 referred as Assurance and lastly items 18 through 22 loaded on 5^{th} factor called as Empathy. Reliability analysis carried out showed all factors have Cronbach Alpha of above .70, which is quiet in keeping with international standards, therefore a summated scale was created for all Factors and named accordingly for both Perception and Expectation.

Table 2: Reliability of Factors Extracted

S.	Factor	Cronbach Alpha
1	Tangibility	0.849
2	Reliability	0.829
3	Responsiveness	0.699
4	Assurance	0.840
5	Empathy	0.85

Gap was studied by taking the difference between Perception and Expectation summated scale. Positive value indicated patients perception about hospital services are higher than what they expected and negative value showed just the opposite. Thereafter descriptive statistics was carried out for the acquired factors as shown below in table. Output in the table clearly shows that data is normally distributed with Skewness near zero and Kurtosis well below 3.0 (with low standard errors)

Table 3 (see in last page)

Descriptive statistics of mean of gap across Gender for RATER (Reliability, Assurance, Tangibility, Empathy, and Responsiveness) shows for Males its (-0.68,-0.915,-0.63,-0.91,-0.97) and for female (-0.71,-0.50,-0.57,-1.14,-1.10). Mean of gap across various age group shows that for patients below 30 years of age (-0.80,-0.36,-0.52,-0.88,-0.58), patients between 30-40 years (-0.61,-0.40,-0.56, -0.69,-1.12), between 40-50 years patients the mean is (-0.58,-0.72,-0.70,-1.3,-1.68), and for patients above 50 years (-0.69,-1.03,-0.72,-1.29,-1.30). Similarly the mean for patients response on gap between Big hospitals are (-0.88,-0.91,-0.88,-1.07,-0.69) and for and Small hospitals are (-0.59,-0.41,-0.43,-0.98,-1.26). When mean was analyzed across patients education qualification- undergraduates showed (-0.74,-0.75,-0.73,-1.00,-1.01) gap, while the mean gap for graduates was (-0.69,-0.43,-0.48,-1.12,-0.98) and the mean gap for post

graduates was (-0.38,-0.13,-0.08,-0.69,-1.60). Similarly mean gap between perception and expectation when calculated based on annual income showed that patients with annual income less than 1 lacs (-0.78,-0.62,-0.72,-0.99,-0.78), patients with income between 1-2.5 lacs (-0.60,-0.62,-0.42,-1.11,-1.3) and for the upper income group with income above 2.5 lacs (-0.55,-0.47,-0.81,-0.76,-1.45)

Paired t test carried on the gap of all 5 factors categorized on Gender showed significant difference (as all p values <0.000, df = 249). Paired t test on factors categorized on hospital size (viz Big or Small) also showed significant difference (as all p values <0.000, df = 249).

To test the mean difference across more than 2 categories ANOVA analysis was carried out on the factors categorized by age. Levene test of homogeneity showed insignificant (p values >0.05) for all factors except Responsiveness (p value = 0.006). ANOVA result was insignificant for all factors (p values >0.05) except Responsiveness (p value = 0.001) and Assurance (p value = 0.002). Welch and Brown-Forsythe Robust Test of Equality of Means showed significant for all factors except Responsiveness and Assurance (p value <0.05).

To test the mean difference across Annual Income ANOVA analysis was carried out on the factors categorized by income. Levene test of homogeneity showed insignificant (p values >0.05) for all factors except Responsiveness (p value = 0.022). ANOVA result was insignificant for all factors (p values >0.05) except Responsiveness (p value = 0.013). Welch and Brown-Forsythe Robust Test of Equality of Means showed significant for all factors except Responsiveness (p value <0.05), but Welch was significant for Tangibility though Brown-Forsythe test showed insignificant (p value <0.05)

To test the mean difference across education qualification ANOVA analysis was carried out on the factors categorized by education qualification. Levene test of homogeneity showed insignificant (p values >0.05) for all factors except Responsiveness (p value = 0.004) and Assurance (p value = 0.16). ANOVA result was insignificant for all factors (p values >0.05) except Tangibility (p value = 0.032) and Assurance (p value = 0.043). Welch and Brown-Forsythe Robust Test of Equality of Means showed significant for all factors except Assurance (p value <0.05).

Discussion & Implications - It is seen from the analysis in previous section that all factors are significantly different across gender.

In case of females the gap between perception and expectation score is higher in Reliability, Empathy and Responsiveness. This implies that there is a need for service providers to have a different strategy for females. They need to keep up with the services promised and ensure timeliness, good record keeping. They should be more prompt in the service and should give due care in handling the female patients. The staff should be sensitized towards this.

For Age the gap between perception and expectation score is higher for patients above 40 years of age in Assurance and Responsiveness. These findings imply that the health providers should take into account this difference while recruitment and training of medical and administrative staff.

For Annual income the gap between perception expectation score is more in case of patients in middle and higher income brackets on Responsiveness. It is to be construed by the health providers that people with affluence need more of attention and information. Hospitals that target this income group should be willing to give that extra attention to the patients.

For Education the gap between perception expectation score is more in case of less educated patients on Tangibility and Assurance. This means that for people coming from that startum , the health clinics should be equipped with proper facilities and resources to loop them in.

In Big hospitals the gap between perception expectation score was higher on all factors except Responsiveness. It means that patients perceive the Big hospitals as less on Tangibility, Reliability, Empathy and Assurance. So the hospitals that fall in this category need to work on designing infrastructure, delivery of services, and recruitment and training of staff likewise.

Conclusion - The above research work on service quality in health care industry corroborates that service quality is a relative concept. The expectation and perception of quality differs across the spectrum of populace. There are 5 factors of service quality that have been extracted from 250 responses on patients perception of service quality. The service quality gap (perception- expectation) is then investigated across demographic profile of the patients. The significant results have been reported along with managerial implications for the same.

References :-

1. Parsuraman, A., Zeithmal, V. A. and Berry, L. L. (1985), "A conceptual model of service quality and its implications for future research", *Journal of Marketing*, Vol .49 No. 3, pp. 41-50
2. Parsuraman, A., Zeithmal, V. A. and Berry, L. L. (1988), "SERVQUAL: A multiple item scale for measuring consumer perception of service quality", *Journal of Retailing*, Vol 6.4 No. 1, pp. 12-37
3. Seth, N., Deshmukh, S. G. and Vrat, P. (2005), "Service quality models: a review", *International Journal of Quality & Reliability Management*, Vol. 22 No. 9, pp. 913-949
4. Cronin, J. J. Jr. and Taylor, S. A. (1992), "Measuring service quality: a re-examination and extension", *Journal of Marketing,* Vol. 6, pp.-55-68
5. Griffith, J. R, Alexander, J. A; Warden; G. L. (2002) , " Measuring comparative hospital performance / Practitioner response"), *Journal of Healthcare Management;* Vol. 47.No . 1, pp. 41-57.
6. Cheng Lim, P. and Tang, N.K.H. (2000), "A study of patients' expectations and satisfaction in Singapore hospitals", *International Journal of Health Care Quality*

Assurance, Vol. 13 No. 7, pp. 290-299

7. Lehtinen, U., and Lehtinen, J.R., (1985),"Service Quality: a Study of Quality Dimensions", paper read at Second World Marketing Congress, University of Stirling, Scotland.
8. John, Joby 1989. Perceived quality in health care service consumption: What are the structural dimensions? In Jon M. Hawes and John Thanopoulos (eds), Developments in marketing services, (pp. 518–521). Orlando, FL: Academy of Marketing Science.
9. Redienbach,E and Sandifer, S.B. (1990) "Exploring perceptions of hospital operations by a modified SEVQUAL approach" *Journal of Healthcare marketing*, Vol. 49 pp.441-450.
10. Babakus.E and Glynn M.W. (1992) "Adopting the SERVQUAL scale to hospital services: An empirical investigation", H*ealth Services Research*, Vol. 26 No.6, pp. 767-786.
11. Bowers, M.R. Swan, J.E, Hoehler & Willaim.F. (1994) "What attributes determine quality and satisfaction with healthcare services?", *Healthcare Management Review*, Vol.19, pp.40- 49.
12. Youssef, F. and Nel, D. (1996), "Healthcare quality in NHS Hospitals" *International Journal of healthcare Quality assurance,* Vol. 9 No. 1, pp. 15-28.
13. Jabnoun, N. and Chaker, M. (2003), "Comparing the quality of private and public hospitals", *Managing Service Quality: An International Journal*, Vol. 13 No. 4, pp. 290-299.
14. Rao K.D. , Peters, D. H., Bandeen, R. K., (2006) , " Towards patient-centered health services in India— a scale to measure patient perceptions of quality.*" Int J Qual Health Care,* Vol. 18 No 6 pp. 414-21.
15. Raghuyamshi, Y. & Desai, V. & Kumar, P. . (2003), "Comparison of Public and Private Malaria Services: Implication for Improving the Quality Perception Among the Users from a Low Socio-Economic Locality of Surat", *Indian Journal of Community Medicine*. Vol3 No1 pp.28-38.
16. Hendricks, A. A. J., Vrielinks , M. R. ,Van, S. Q. & De Haes, J. C. J. M., (2006), " Is personality a determinant of patient satisfaction with hospital care?". *A International Journal for Quality in Health Care 2006*; Vol. 18 No. 2, pp. 152–158

Table 3: Descriptive Statistics of perception expectation gap

	Sample Size	Min	Max	Mean	Standard Deviation	Skewness	Std Error	Kurtosis	Std. Error
Tangibility	250	-4	3.75	-0.616	1.06517	-0.157	0.154	2.407	0.307
Reliability	250	-3.6	2.4	-0.707	0.99219	-0.572	0.154	0.481	0.307
Responsiveness	250	-6	3.25	-1.038	1.62067	-0.73	0.154	0.91	0.307
Assurance	250	-6	2.25	-0.614	1.19697	-0.824	0.154	2.101	0.307
Empathy	250	-4.6	2	-1.025	1.40516	-0.015	0.154	-0.648	0.307

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

उज्जैन संभाग में उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र. के उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो के उपरांत उद्यम प्रारंभ नही करने वालो द्वारा उद्यमिता नही अपनाने के कारणो का अध्ययन

डॉ. रूपचंद चौहान *

* एम.कॉम., पी-एच.डी. 397, महात्मा गाँधी मार्ग नयापुरा, बडनगर, जिला उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश - उद्यमी उत्पन्न नही होते, बनाये जाते है। उद्यमियो का निर्माण करने के लिए सरकार एवं निजी संस्थान विशेष रूप से प्रयत्नशील है। विभिन्न प्रयासो के बावजूद उद्यमियो की पूर्ति सदैव कम हो पाती है। उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र., उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो के माध्यम से आम नागरिको को प्रशिक्षण प्रदान कर उद्यमिता ओर ओर अग्रसर करने का कार्य कर रहा है। फिर भी उद्यम प्रारंभ करने वालो की तुलना में उद्यम प्रारंभ नही करने वालो की संख्या अधिक है। अधिकांश उद्यम प्रारम्भ नही करने वालो द्वारा किस कारण उद्यम प्रारंभ नही किया गया। इस शोध पत्र में उज्जैन संभाग में उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र. के उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो के उपरांत उद्यम प्रारंभ नही करने वालो द्वारा उद्यमिता नही अपनाने के कारणो का अध्ययन किया गया है।

शब्द कुंजी - उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम, उद्यम, उद्यमिता।

प्रस्तावना - उद्यमिता का विकास माननीय संसाधनो पर निर्भर होता है। गरीबी, निम्न आय एवं उत्पादकता जैसे घटको के कारण व्यक्ति की जोखिम उठाने की शक्ति बहुत कम होती है। व्यक्ति जोखिम उठाने की बजाय नौकरी या राजकीय सेवा को अधिक प्राथमिकता देते है इस कारण अधिकांश देशो में उद्यमियों की कमी होती है जबकि देश के आर्थिक विकास में अहम भूमिका के कारण सदैव उनकी माँग बनी रहती है।

उद्यमिता जोखिम एवं साहस का कार्य है जिसे प्रत्येक व्यक्ति नही कर सकता है। उद्यमिता समाज की आर्थिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरण जन्य स्थिति से निर्मित और विकसित होती है इसीलिए तो यह कहा जाता है उद्यमी उत्पन्न नही होते, बनाये जाते है। विकास प्रयासो के बावजूद उद्यमियों की पूर्ति सदैव कम हो पाती है।

उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो के उपरांत कुछ प्रशिक्षणार्थियों द्वारा उद्यम प्रारंभ किया जाता है और कुछ प्रशिक्षणार्थियों द्वारा उद्यम प्रारंभ नही किया जाता है। उद्यमिता नही अपनाने के पीछे कुछ कारण होते है जैसे - व्यक्तिगत, सामाजिक, व्यावसायिक, एवं सहायता प्रणाली इत्यादि।

उज्जैन संभाग में उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र. द्वारा शोध अवधि वर्ष 2008-09 से 2012-13 तक आयोजित उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो में कुल 707 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया जिसमें से 423 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा उद्यम प्रारंभ नही किया गया।

इस शोध पत्र में उज्जैन संभाग में उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र. के उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो के उपरांत उद्यम प्रारंभ नही करने वालो द्वारा उद्यमिता नही अपनाने के कारणो का अध्ययन किया गया है।

पूर्व साहित्य की समीक्षा :

1. फॉवर माइकल वी.डी. बोगार्ड, एस. जे. ने 'पिछडे वर्ग के उद्यमी तथा विकसित उद्यमियों का अध्ययन' शोध पत्र में बिहार के रांची जिले में पिछडे वर्ग के उद्यमी तथा विकसित उद्यमियों का अध्ययन कर बताया कि आदिवासी उद्यमियों को उद्योग की स्थापना में बहुत अधिक कठिनाईयों का सामना करना पडता है। इसलिये वे कभी उद्योग स्थापना के विषय में नही सोचते है। शासन तंत्र द्वारा प्रशिक्षित उद्यमियों को पर्याप्त सुविधाएं नही देने से भी उद्यमिता असफल होती है।
2. डॉ. जी. विजय भारती, सी. शिवारामी रेड्डी, डॉ. पी. मोहन रेड्डी, पी हरिनाथ रेड्डी (2011) ने 'इन्टरप्रिन्योरशिप डेवलपमेन्ट-ए केस स्टडी ऑफ ए विलेज इन वाय.एस.आर. डिस्ट्रिक्ट' शोध पत्र में उद्यमियो की सामाजिक आर्थिक स्थिति, उद्यमिता को प्रभावित करने वाले तत्वो और अपने प्रतिष्ठानों को विकसित करने में उद्यमियो को होने वाली समस्याओ का अध्ययन किया है।

शोध का उद्देश्य - उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो के उपरांत उद्यम प्रारंभ नही करने वालो द्वारा उद्यमिता नही अपनाने के कारणो का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना - उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो के उपरांत उद्यम प्रारम्भ नही करने वालो द्वारा उद्यमिता नही अपनाने का प्रमुख कारण बैंक ऋण की अनुपलब्धता है।

शोध अध्ययन प्रणाली - प्रस्तुत शोध पत्र में उज्जैन संभाग में उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र. के उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो के उपरांत उद्यम प्रारंभ नही करने वालो द्वारा उद्यमिता नही अपनाने के कारणो का अध्ययन कर यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि अधिकांश उद्यम प्रारंभ नही करने वालो द्वारा किस कारण उद्यम प्रारंभ नही किया गया तथा सबसे कम उद्यम प्रारम्भ नही करने वालो द्वारा किस कारण उद्यम प्रारम्भ नही किया

गया। समस्त अध्ययन के लिए उज्जैन संभाग में उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र. द्वारा वर्ष 2008-09 से 2012-13 तक आयोजित विभिन्न उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो के उपरांत उद्यम प्रारंभ नही करने वालो मे से 20 प्रतिशत का दैव निदर्शन की लॉटरी प्रणाली के आधार पर चयन किया गया है। चयनित उद्यम प्रारंभ नही करने वालो की संख्या को तालिका में दर्शाया गया है।

चयनित उद्यम प्रारंभ नही करने वालो की जानकारी

वर्ष	उद्यम प्रारंभनही करने वालो की संख्या	चयनित उद्यमप्रारंभ नही करने वालो की संख्या(20 प्रतिशत)
2008-09	30	06
2009-10	63	13
2010-11	84	17
2011-12	80	16
2012-13	166	33
योग	423	85

उपरोक्त चयनित उद्यम प्रारंभ नही करने वालो से साक्षात्कार अनुसूची से प्राप्त जानकारी के आधार पर उद्यमिता नही अपनाने के कारणो का अध्ययन किया गया है।

प्रदत्तो का विश्लेषण - चयनित उद्यम प्रारंभ नही करने वालो से प्राप्त जानकारी के आधार पर उद्यमिता नही अपनाने के निम्नलिखित कारण सामने आए है। सर्वेक्षित उद्यम प्रारंभ नही करने वालो द्वारा उद्यमिता को नही अपनाने के कारणो को तालिका क्रं. 01 में दर्शाया गया है।

तालिका क्रं. 01 : सर्वेक्षित उद्यम प्रारंभ नही करने वालो द्वारा उद्यमिता को नही अपनाने के कारणो की जानकारी

उद्यमिता नही अपनाने के कारण	संख्या	प्रतिशत
बैंक ऋण की अनुपलब्धता	46	54.12%
नौकरी को प्राथमिकता	21	24.71%
विद्यमान उद्यम	07	08.24%
स्थानीय स्तर पर माँग का अभाव	05	05.88%
कच्चे माल और मशीनो की अनुपलब्धता	04	04.70%
पारिवारिक कारण	02	02.35%
योग	85	100%

स्त्रोत :- प्रत्यक्ष सर्वेक्षण के आधार पर

उपरोक्त तालिका क्रं. 01 से स्पष्ट होता है कि उज्जैन संभाग में सर्वेक्षित कुल 85 उद्यम प्रारंभ नही करने वालो में से 46 (54.12 प्रतिशत) के द्वारा बैंक ऋण की अनुपलब्धता, 21 (24.71 प्रतिशत) के द्वारा नौकरी को प्राथमिकता, 07 (08.24 प्रतिशत) द्वारा विद्यमान उद्यमो, 05 (05.88 प्रतिशत) के द्वारा स्थानीय स्तर पर माँग का अभाव, 04 (04.70प्रतिशत) के द्वारा कच्चे माल और मषीनो की अनुपलब्धता तथा 02 (02.35 प्रतिशत) के द्वारा पारिवारिक कारणो से उद्यम प्रारंभ नही किया गया।

इस प्रकार सर्वेक्षित कुल 85 उद्यम पारम्भ नही करने वालो में से सर्वाधिक 46 (54.12 प्रतिशत) के द्वारा बैंक ऋण की अनुपलब्धता के कारण तथा सबसे कम 02 (02.35 प्रतिशत) के द्वारा पारिवारिक कारणो से उद्यम प्रारम्भ नही किया गया।

सर्वाधिक बैंक ऋण की अनुपलब्धता के कारण उद्यम प्रारम्भ नही करने वालो को तालिका क्रं. 02 में दर्शाया गया है

तालिका क्रं. 02 : बैंक ऋण की अनुपलब्धता के कारण उद्यम प्रारंभ नही करने वालो की जानकारी

उद्यम का प्रकार	संख्या	प्रतिशत
उद्योग	26	56.52%
व्यवसाय	05	10.87%
सेवा/तकनीकी	15	32.61%
योग	46	100%

स्त्रोत :- प्रत्यक्ष सर्वेक्षण के आधार पर

उपरोक्त तालिका क्रं. 02 से स्पष्ट होता है कि उज्जैन संभाग में सर्वेक्षित कुल 85 उद्यम प्रारंभ नही करने वालो में से 46 के द्वारा बैंक ऋण की अनुपलब्धता के कारण उद्यम प्रारंभ नही किया गया। जिसमें उद्योग में 56.52 प्रतिशत, व्यवसाय में 10.87 प्रतिशत तथा सेवा/तकनीकी व्यवसाय में 32.61 प्रतिशत द्वारा बैंक ऋण की अनुपलब्धता के कारण उद्यम प्रारंभ नही किया गया।

इस प्रकार व्यवसाय तथा सेवा/तकनीकी व्यवसाय की तुलना में उद्योग में उक्त कारण से उद्यम प्रारंभ नही करने वालो का प्रतिशत अधिक है।

सबसे कम पारिवारिक कारणो से उद्यम प्रारंभ नही करने वालो को तालिका क्रं. 03 में दर्शाया गया है।

तालिका क्रं. 03 : पारिवारिक कारणो से उद्यम प्रारंभ नही करने वालो की जानकारी

उद्यम का प्रकार	संख्या	प्रतिशत
उद्योग	01	50%
व्यवसाय	-	-
सेवा/तकनीकी	01	50%
योग	02	100%

स्त्रोत :- प्रत्यक्ष सर्वेक्षण के आधार पर

उपरोक्त तालिका क्रं. 03 से स्पष्ट होता है कि उज्जैन संभाग में सर्वेक्षित कुल 85 उद्यम प्रारंभ नही करने वालो में से 02 के द्वारा पारिवारिक कारणों से उद्यम प्रारंभ नही किया गया। जिसमें उद्योग में 50 प्रतिशत तथा सेवा/तकनीकी व्यवसाय में 50 प्रतिशत द्वारा पारिवारिक कारणों से उद्यम प्रारंभ नही किया गया।

इस प्रकार उद्योग तथा सेवा/तकनीकी व्यवसाय में उक्त कारण से उद्यम प्रारंभ नही करने वालो का प्रतिशत बराबर है तथा सर्वेक्षित उद्यम प्रारंभ नही करने वाले में से किसी के भी द्वारा व्यवसाय प्रारंभ नही करने का कारण पारिवारिक कारणो को नही बताया गया।

परिकल्पना की पुष्टि - उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो के उपरांत उद्यम प्रारंभ नही करने वालो द्वारा उद्यमिता नही अपनाने का प्रमुख कारण बैंक ऋण की अनुपलब्धता है, परिकल्पना सत्य प्रतीत होती है क्योकि सर्वेक्षित कुल 85 उद्यम प्रारंभ नही करने वालो में से सर्वाधिक 46 द्वारा बैंक ऋण की अनुपलब्धता को उद्यम प्रारंभ नही करने का कारण बताया गया। बैंक ऋण की अनुपलब्धता के कारण कुल 46 उद्यम प्रारंभ नही करने वालो में से 26 (56.52 प्रतिशत) द्वारा उद्योग में, 05 (10.87 प्रतिशत) द्वारा व्यवसाय में, 15 (32.61 प्रतिशत) द्वारा सेवा/तकनीकी व्यवसायों में

उद्यम प्रारंभ नही किया गया।

निष्कर्ष - उद्यमिता विकास केन्द्र द्वारा आयोजित उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमो के उपरांत उद्यम प्रारंभ नही करने वालो द्वारा उद्यमिता नही अपनाने के विभिन्न कारण बताए गए। इनमे बैंक ऋण की अनुपलब्धता, नौकरी को प्राथमिकता, विद्यमान उद्यमो, स्थानीय स्तर पर माँग का अभाव, कच्चे माल और मशीनो की अनुपलब्धता तथा पारिवारिक कारणो को प्रशिक्षण उपरांत उद्यम प्रारंभ नही करने का कारण बताया गया है। सर्वाधिक बैंक ऋण की अनुपलब्धता के कारण उद्यम प्रारम्भ नही करने वालो द्वारा प्रमुख कारण ग्यारंटर की अनुपलब्धता को बताया है क्योकि बैंक बिना ग्यारंटर के ऋण नही प्रदान करती है। सबसे कम पारिवारिक कारणो से उद्यम प्रारंभ नही करने वालो द्वारा प्रमुखत: पारिवारिक आकांक्षाएँ एवं दबाव, पारिवारिक जिम्मेदारी तथा कमजोर आर्थिक स्थिति को बताया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ. जैन एवं शर्मा (2011), 'उद्यमिता के मूलाधार', रमेश बुक डिपो, जयपुर।
2. कोठारी, मिश्रा एवं साहू (2009), 'उद्यमिता विकास', रमेश बुक डिपो, जयपुर।
3. फॉवर माडकल, वी.डी. बोगार्ड, एस. जे, 'पिछडे वर्ग के उद्यमी तथा विकसित उद्यमियों का अध्ययन' (शोध पत्र)।
4. डॉ. जी. विजय भारती, सी शिवारामी रेड्डी, डॉ.पी. मोहन रेड्डी, पी. हरिनाथ रेड्डी (2011), 'इन्टरप्रिन्योरशिप डेवलपमेंट-ए केस स्टडी ऑफ ए विलेज इन वाय एस आर डिस्ट्रिक्ट' (शोध पत्र), इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन कामर्स, इकॉनामिक्स एण्ड मैनेजमेंट, वाल्युम नं. 1, इश्यु नं. 7, (नवम्बर) ISNN No. 2331-4245
5. रूपचंद चौहान (2016), 'उज्जैन संभाग में उद्यमिता विकास में उद्यमिता विकास केन्द्र (CEDMAP) के योगदान का अध्ययन' (शोध प्रबंध), विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन।
6. उद्यमिता समाचार पत्र, उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र., भोपाल।
7. स्वरोजगार मार्गदर्शिका, उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र., भोपाल।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Critical Evaluation of Online Teaching Learning Process During Covid-19

Dr. Lubhawani Tripathi *

*Associate Professor (Education)Gulab Bai Yadav Smriti Shiksha Mahavidhayalaya, Borawan, Khargon (M.P.) INDIA

Abstract - COVID-19 has dramatically reshaped the way global education is delivered. Due to Pandemic millions of learners were affected due to the closure of educational institutions, which resulted in the largest online movement in the history of education. As a result of the abrupt move away from classrooms in many parts of the world, educational institutions were forced to quickly adopt virtual and digital techniques. During the lockdown time of the Covid-19 pandemic the entire educational system, from basic to tertiary level, has collapsed not just in India but around the world. Thanks to advanced technology, students can now take classes from the comfort of their homes. While online education was once thought to be inferior to traditional classroom teaching , this image has now evolved as the use of technology has grown and has become a larger and larger element of the traditional academic curriculum. But, like two sides of a coin, even with the most advanced technology, there are certain advantages and disadvantages of online education that we've covered in this research paper.

Introduction - Covid-19 was first identified in December 2019 in Wuhan, China. Lock down and stay-at-home strategies were devised as necessary actions to control the transmission of this disease. Public care strategies included washing hands, wearing face masks, social distancing and avoiding mass gatherings. covid-19 affected the whole education system. The closure of school and educational institutions has affected approximately 94% of the world's student population and 99% in low and lower middle income countries.

Objectives - The objective of the study is to critically evaluate the online teaching learning process during covid-19.

Online teaching learning - Today online learning is the latest and most popular form of distance education within the past decade. It has a major impact on postsecondary education and the trend is only increasing.

Online learning is education that takes place over the internet. It is often referred to as E-learning among other terms however online learning is just one type of distance learning. Typically any learning taking place …. Not in a traditional classroom is termed as distance learning.

Online teaching is the process of educating others on virtual platforms. This type of teaching involves live classes, video conferencing, webinars and other online tools. The online applications are developed and designed to facilitate easy learning and better understanding. Online education is an instructional delivery process that includes any learning that takes place via the internet. Online learning enables educators to communicate by enrolling in traditional classroom courses and assisting those who need to work on their own schedule at their own pace.

Tools and Techniques of online learning

1. **Google meet –** Google meet is a video communication service developed by Google. It is used for conducting online live video classes. Google meet is available for free to everyone at the meet. Google com and IOS or android. It supports a maximum of 250 participants for interactive sessions and 1, 00,000 participants for live streaming.
2. **Google Classroom-** Google classroom is a free web service developed by Google. For schools that aim to sample, create, distribute and grade assignments. Google classroom integrates docs, sheets, slides, and calendar into a cohesive platform to manage student teacher communication.
3. **Zoom –** zoom is a cloud based video communications app that allows us to set up virtual video and audio conferencing, webinars, live chats, screen-sharing and other collaborative capabilities.
4. **Microsoft Teams –** Microsoft Teams team is a proprietary business communication platform developed by Microsoft. Microsoft Teams team is a chat based workspace that combines instant messaging, voice, video, calling and file sharing. Microsoft Teams team enables users to be more productive by using different office apps they are familiar with like word excel PowerPoint, one note, Share point and more- right within the platform.

5. Webinar jam, testmoz, Edmondo,leded and Google forms-There are websites for the purpose of creating classes, conducting tests and exams, distributing study materials and scheduling assignments. These can be used for group chats and discussion with students. These are all available for free with a limit.

6. Whatsapp – whatsapp is an American freeware, Cross-Platform centralized instant messaging and voice-over- IP service owned by Facebook. It allows users to send text messages and voice messages, make voice and video calls and share images, documents, user location and other content.

7. Telegram- Telegram is a free and open source, Cross platform, cloud-based instant messaging software. This service also provides end-to-end encrypted video calling, file sharing and other features.

Advantages of online learning - There are following advantages of online learning.

1. Efficiency- online learning offers teachers an efficient way to deliver lessons to students. Online learning has a number of tools such as videos, PDFs, Podcasts and teachers can use all these tools as a part of their lesson plans. By extending the lesson plan beyond traditional Textbooks to include online resources, Teachers are able to become more efficient educators.

2. Accessibility of time and place- Another advantage of online education is that it allows students to attend classes from any location of their choice, it also allows schools to reach out to a more extensive network of students, Instead of being restricted by geographical boundaries. Additionally online lectures can be recorded, archived, and shared for future references. This allows students to access the learning material at a time of their choice.

3. Affordability- Another advantage of online learning is reduced financial costs. Online education is more affordable as compared to physical learning. This is because online learning eliminates the cost points of student transportation, student meals and most importantly real estate, additionally all the course or study materials are available online, thus creating a paperless learning environment which is more affordable while also being beneficial to the environment.

4. Improved student attendance- since online classes can be taken from home or location of choice there are fewer chances of students missing out on lessons.

5. Suits a variety of learning styles- Every student has a different learning journey and a different learning style. Some students are visual learners, while some students prefer to learn through audio. Similarly, students thrive in the classroom and other students are solo learners who get distracted by large groups.

The online learning system with its range of options and resources. Can be personalized in many ways. It is the best way to create a perfect learning environment suited to the needs of each student.

Disadvantages of online learning :

1. Inability to focus on screens- For many students, one of the biggest challenges of online learning is the struggle with focusing on the screen for a long period of time with online learning, there is also a greater chance for students to be easily distracted by social media or other sites. Therefore, it is imperative for the teachers to keep their online classes engaging and interactive to help students stay focused on the lesson.

2. Technology issues- Another key challenge of online classes is internet penetration has grown in leaps and bounds over the past few years. In smaller cities and towns, a consistent connection with decent speed is a big problem. Without a consistent internet connection for students or teachers. There can be a lack of continuity in learning for the child; this is detrimental to the education process.

3. Sense of isolation – students can learn a lot from being in the company of their peons. However in an online class there are minimal physical interactions between students and teachers. This often results in a sense of isolation for the students in this situation it is imperative that the school allow for other forms of communication between the students peers, and teachers this can include online messages, Email and video conferencing that will allow for conferencing that will allow for face to face interaction and reduce the sense of isolation.

4. Teacher Training- online learning requires teachers to have a basic understanding of using digital forms of learning. However this is not always the caseoften, teachers have a minimal understanding of technology, and sometimes they don't even have the necessary resources and tools to conduct online classes.

To combat this, it is important for schools to invest in training teachers with the latest technology updates so that they can conduct their online classes seamlessly.

5. Manage screen time- many parents are concerned about the health hazards of having their children spend so many hours staring at a screen. This increase in screen time is one of the biggest concerns and disadvantages of online learning. Sometimes students also develop bad posters and physical problems due to staying hunched in front of the screen.

A good solution to this would be to give the students plenty of breaks from the screen to refresh their mind and their body.

Conclusion - The spread of covid-19 pandemic poses a great threat to humanity. To reduce the covid-19 virus, the educational institutions were forced to switch to online learning as a viable mode for teaching learning process. In the last year the demand for online learning rose to a great extent. Online learning now has a global standard. It is beneficial for both teachers and students during the covid-19 crisis. Therefore, research on advantages and disadvantages of online learning needs to be done.

References:-

1. R.Gowda, G k Ayush " A study on advantages and disadvantages of online teaching during covid-19 with special references to Mangalore university students." https://www.researchgate.net/publication/346647732.
2. https://econictimes.indiatimes.com/tech/internet/covid-19-indian-internet-infra-not-prepared-for-shift-to-online-teaching-learning-says-qs
3. http://www.google.com
4. https://zoom.us
5. https://www.cisco.com

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

खरगोन जिले के धार्मिक और ऐतिहासिक पर्यटन नगर महेश्वर का एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ. सुरेश अवासे *

* सहायक प्राध्यापक (भूगोल) शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – मध्य प्रदेश को भारत का हृदय प्रदेश कहा जाता है। यहां के दर्शनीय स्थल अपनी विविधाता के लिए प्रसिद्ध है। यहां के सांस्कृतिक ,ऐतिहासिक, धार्मिक, पर्यटन और भौगोलिक परिवेश ने प्रदेश को पर्यटन स्थल के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान दिलवाई है। पुरातत्व एवं पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत समृद्व इस प्रदेश में ऐसा कोई जिला नहीं होगा जहां दर्शनीय या पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान ना हो परंतु कई जिले ऐसे हैं यहां के पर्यटन स्थलों से पर्यटक आज भी अनजान है। यहां पर्यटन के विकास की अपार संभावनाएं हैं।

पर्यटन, धर्म ,इतिहास ,सभ्यता और सांस्कृति है। राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय उद्योग है पर्यटन मानव जाति की एकता और मात्र भाव की आधारशिला है। पर्यटन धार्मिक, ऐतिहासिक ,तीर्थ मेले त्योहार ऐतिहासिक ,स्मारक प्राकृतिक स्थल वन प्राणीयो के संरक्षित क्षेत्र बड़े-बड़े बांध विशाल औद्योगिक क्षेत्र एवं आधुनिक नगर आदि भी पर्यटन के प्रमुख आकर्षक केंद्र है। खरगोन जिला आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण आदिवासी सांस्कृतिक भी मध्य प्रदेश की धारोहर है। इन पिछड़े क्षेत्रों में आवागमन की सुविधा एवं टूरिस्ट कॉटेज वह अच्छे होटलों की सुविधा ना होने के कारण पर्यटन का विकास नहीं हो पाया है।

प्रस्तावना – पर्यटन प्राचीन काल से ही मानव समाज में प्रचलित रहा है, समय के साथ इसमें अप्रत्याशित विकास हुआ है। आधुनिक मानव जीवन में पर्यटन ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आजकल पर्यटन किसी व्यक्ति की कल्पना तक सीमित नहीं है। आधुनिक युग में, इसे एक उद्योग माना जाता है। दुनिया के अधिकांश देश पर्यटन उद्योग के विकास के लिए कदम उठा रहे हैं। पर्यटन का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। यह आपके राज्य या देश के विभिन्न स्थानों से शुरू होकर पृथ्वी की सतह पर कहीं भी यात्रा करने के लिए पर्याप्त है। पर्यटन के परिणाम स्वरूप, विभिन्न स्थानों के साथ प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित होता है। इसलिए यह पर्यटकों के ज्ञान और दृष्टिकोण को समृद्ध करता है। विभिन्न स्थानों और देशों की यात्रा करने से उस सब स्थान के सभ्यता, संस्कृति, सामाजिक रीति-रिवाजों आदि का सटीक ज्ञान प्राप्त होता है। इन सबका लाभ पर्यटकों को मिलता है। इसलिए, पर्यटन देशों के बीच प्रेम, सद्भावना, भाईचारे और दोस्ती को बढ़ाकर शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को बढ़ावा देता है। विभिन्न स्थानों की यात्रा करने से पर्यटकों को बहुत अधिक मानसिक संतुष्टि मिलती है। बहुत सी नई जगहों और चीजों को देखकर और अजनबियों के संपर्क में आने से इंसान के मन को खुशी मिलती है। पर्यटन द्वारा विभिन्न स्थानों में आर्थिक स्थिति और राजनीतिक स्थिति के बारे में विचार बनाता है। इससे पर्यटकों के आर्थिक विकास और राजनीतिक चेतना का विकास होता है। पर्यटन धर्म के प्रचार और राजनीतिक जागरूकता बढ़ाने में मदद करता है।

पर्यटन शिक्षा और अनुसंधान के लिए आवश्यक है। साहित्य, भूगोल, इतिहास आदि का अध्ययन करने के लिए पाठ्यपुस्तकें पर्याप्त नहीं हैं। तो इन सभी विषय में प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने के लिए पर्यटन की आवश्यकता है।आप ताजमहल के बारे में चाहे जितनी भी जानकारी इकट्ठा कर लें, जब तक आप उस जगह की यात्रा नहीं करते हैं तब तक आपको उस जगह के बारे में पर्याप्त ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते।पर्यटन शिक्षा प्रणाली से निकटता से जुड़ा हुआ है। पर्यटन के परिणामस्वरूप, एक छात्र का ज्ञान बढ़ता है और उसका सामाजिक दृष्टिकोण बदल जाता है। यह उसकी मानसिक शक्ति के विकास को गति देता है। किसी भी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक या वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए पर्यटन की आवश्यकता होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रासंगिक अनुसंधान के बारे में विस्तृत जानकारी एकत्र करने के लिए विभिन्न स्थानों की यात्रा करना आवश्यक है।आधुनिक युग में पर्यटन उद्योग का विकास पर्यटन को एक उद्योग माना जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि विभिन्न पर्यटन स्थलों का विकास होने से यह बहुत सारे पर्यटकों को आकर्षित करेगा नतीजतन, यह अप्रत्यक्ष रूप से राज्य या देश के आर्थिक विकास में योगदान देगा।इसलिए आज दुनिया भर के कई देश पर्यटन उद्योग के विकास पर ध्यान दे रहे हैं। हमारे देश भारत के पास इसके लिए एक विशेष विभाग है। पर्यटन हमारी प्राचीन संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। सामाजिक, सांस्कृतिक,धार्मिक आर्थिक ,ऐतिहासिक आदि दृष्टि से इसका बहुत ही महत्व है। वर्तमान में पर्यटन से रोजगार के अवसर पैदा करने राष्ट्रीय एकता और अंतरराष्ट्रीय सद्भावना को बढ़ावा मिलता है। पर्यटको के चलते स्थानीय दस्तकारी तथा सांस्कृतिक गतिविधियों को भी प्रोत्साहन मिलता है। पिछले तीन दशकों से भारत में पर्यटन में अधिक वृद्धि हुई है। भारत की इस विशाल भूमि में मौसम ,जलवायु ,प्राकृतिक सुंदरयता ,भौगोलिक स्वरूप वन्य प्राणी एवं जीव अधिक की बहुत ही विभिन्नता है। यहां पर्यटकों तथा अनुसंधानकर्ताओं के साहसिक उत्साहवर्धाक खोज के लिए असीमित

संभावनाएं विद्यमान है। प्रत्येक व्यक्ति अनभिज्ञता की जानकारी/ खोज वर्जित स्थानों का ज्ञान एवं छिपे रहस्य की तरह आकर्षित होना धार्मिक स्थानों के दर्शन से आंतरिक शांति प्रसन्नता का आभास होता है।

अध्ययन क्षेत्र – खरगौन जिला मध्यप्रदेश के दक्षिणी पश्चिमी सीमा पर स्थित है। 21 अंश 22 मिनिट – 22 अंश 35 मिनिट (उत्तर) अक्षांश से 74 अंश 25 मिनिट –76 अंश 14 मिनिट (पूर्व) देशांश के बीच यह जिला फैला है। इसका क्षेत्रफल लगभग 8030 वर्ग कि0मी0 है। इस जिले के उत्तर में धार, इंदौर व देवास, दक्षिण में महाराष्ट्र, पूर्व में खण्डवा, बुरहानपुर तथा पश्चिम में बड़वानी है। नर्मदा घाटी के लगभग मध्य भाग में स्थित इस जिले के उत्तर में विंधयाचल एवं दक्षिण में सतपुड़ा पर्वतश्रेणियां हैं। जिले का क्षेत्रफल 8030 वर्ग किलोमीटर एवं जनसंख्या 1872413 है ।और जिले की भाषा एवं बोली हिंदी निमाड़ी गुजराती बरेली भाषा प्रमुख हे। नर्मदा नदी जिले में लगभग 50 कि0मी0 बहती है। कुंदा तथा वेदा अन्य प्रमुख नदियां हैं। देजला–देवड़ा, गढ़ी गलतार, अंबकनाला तथा अपर वेदा प्रमुख सिंचाई परियोजनाएं हैं। महेश्वर पनबिजली तथा सिंचाई योजना नर्मदा पर बनी तीन प्रमुख पनबिजली व सिंचाई योजनाओं में से एक है। खरगौन जिला मुख्यालय के अक्षांश व देशांश क्रमश: $21^{0}49'18''$ (उत्तर) तथा $75^{0}37'10''$ (पूर्व) हैं। यह शहर औसत समुद्र सतह से लगभग 258 मीटर (+9 मीटर) की ऊंचाई पर है।

पर्यटन के मुख्य उद्देश्य – पर्यटन देश में सामाजिक सास्कृतिक आर्थिक एवं धार्मिकता को बढ़ावा देने और राष्ट्रीयता को मजबूत करने के उद्देश्यों की पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रोजगार सर्जन में इसका बड़ा योगदान है।

1. ज्ञान पिपासा शांत करने हेतु ऐतिहासिक स्थल भ्रमण करना।
2. जीवन में ऊब या एकरसता मिटाने हेतु या भौतिक, मानसिक व आध्यात्मिक एकरसता मिटाने हेतु पर्यटन करना।
3. रोजमर्रा की दौड़ –भाग की जिंदगी से निजात पाने हेतु।
4. अन्य समाज –संस्कृति से मिलने हेतु या दूसरे समाज –संस्कृति की जानकारी लेने हेतु।

धार्मिक और एतिहासिक पर्यटन नगर महेश्वर का परिचय– महेश्वर का पूर्व नाम महिष्मति है आज का महेश्वर एक विकसित पर्यटन स्थल है, मध्यप्रदेश शासन द्वारा पवित्र नगरी का दर्जा प्राप्त है द्य लेकिन वस्तुत: महेश्वर देवी अहिल्या बाई होलकर की कुशल शासन कला , धार्मिकता और बुद्धिमत्ता का जीता जागता गवाह है। नौका विहार के लिए सुंदर नौकाएं हैं, स्वच्छ और पवित्र नर्मदा नदी है, स्नान के लिए सुंदर व्यवस्थित घाटों की श्रंखला है। अनेकानेक शिवालय और मंदिरों की श्रंखला के कारण ही महेश्वर को गुप्तकाशी भी कहा जाता है। मध्य प्रदेश के खरगोन जिले में स्थित महेश्वर को मध्य प्रदेश के सर्वाधिाक सुन्दर नगरों में से एक माना जाता है। भारतीय सभ्यता के भोर में महेश्वर, जिसका नाम उस काल में महिष्मती था। एक अत्यन्त गौरवपूर्ण नगरी थी जो कि राजा कार्तिवर्जुन की राजधानी थी। पवित्र नर्मदा के सुरम्य तट पर स्थित इस नगरी का उल्लेख रामायण एवं महाभारत जैसे अत्यन्त प्राचीन महाकाव्यों में पाया जाता है। महेश्वर के मन्दिर तथा किले, जिनकी प्रतिच्छाया नर्मदा के जल में झिलमिलाती रहती है। शाश्वत लालित्य के अनुपम उदाहरण हैं! वर्तमान में महेश्वर एक पर्यटन स्थल होने के साथ ही साथ अपने हाथकरघा उद्योग के लिए भी जाना जाता है और यहाँ की माहश्वरी साड़ियाँ अत्यन्त प्रसिद्ध हैं!

इतिहास महेश्वर का इतिहास 4000 साल से भी अधिक पुराना माना जाता है। सत्ता में आने पर अकबर ने सन् 1601 में यहाँ किले का निर्माण किया। अठारहवी शताब्दी में होल्कर वंश की रानी अहिल्या बाई यहाँ की शासक बनीं जिन्होंने, उस काल में शेष भारत में अशान्ति होने के बावजूद भी, यहाँ शान्तिपूर्वक शासन किया। रानी अहल्या बाई होल्कर ने अपने शासन काल में महेश्वर में अनेक भव्य मन्दिरों और घाटों का निर्माण करवाया। महेश्वर किला पर्यटकों के लिए सबसे बड़ा आकर्षण केन्द्र है। इस किले में रानी अहिल्या बाई की जीवन्त मूर्ति पर्यटकों को सबसे अधिक लुभाती है। यहाँ पर एक पुरातात्विक संग्रहालय भी है। महेश्वर में अनेक भव्य मन्दिर हैं जिनकी वास्तुकला अनुपम और अत्यन्त आकर्षक हैं। कालेश्वर मन्दिर, राजराजेश्वर मन्दिर, अखिलेश्वर मन्दिर आदि यहाँ के प्रमुख मन्दिर हैं।

धार्मिक पवित्र नर्मदा नदी और एतिहासिक पर्यटन नगर महेश्वर

महेश्वर का किला – प्राचीन भारतीय निर्माण कला युद्ध कौशल और रक्षा नीति का एक उत्ताम उदाहरण है महेश्वर का किला। लगभग 2 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र को सुरक्षा देने वाले इस किले के निर्माण का समय 4 थी से पांचवी शताब्दी के मध्य का आका जाता है है। किले के वर्तमान स्वरूप का निर्माण 17 से 18 शताब्दी के मध्य का माना जाता है। अब यह किला अनेक स्थानों से टूट फूट गया है अनेक स्थानों पर किले की नींव दीवारे गायब है पर आज की स्थिति बताती है कि यह किला निर्माण के समय में आती सुदृढ़ रहा होगा। छोटे बड़े पांच मुख्य द्वार अन्य किलो की भांति इसमें बड़े दरवाजे द्वारपालों के कक्ष और लगभग 20 बुर्ज वाले इस किले से अपनी प्राचीरो से तोप, तीर, बंदूक इत्यादि चलाने के लिए इसे सुसज्जित किया था। प्राचीर पर पांच फुट चौड़ी पैदल पट्टी बनी हुई है। किले के अंदर ही सारे महत्वपूर्ण देखने लायक स्थान है राजवाड़ा, अहिल्या देवी का पूजन स्थान (सोना का झूला) राजराजेश्वर मंदिर इत्यादि। रानी अहिल्याबाई होलकर का एक मनमोहक और बेहद खूबसूरत महल हुआ करता था इसीलिए इसे होलकर किला या रानी के किले के नाम से जाना जाता है। यह किला रानी अहिल्याबाई फुल कर के निवास स्थान के साथ–साथ उनका प्रशासनिक मुख्यालय था। वर्तमान में इस किले को विश्राम गृह में बदल दिया गया है जिसका प्रबंधन इंदौर के अंतिम महाराजा राजकुमार शिवाजी राव खोल कर के पुत्र करते हैं। यह महल मराठा वस्तु कला का अद्भुत नमूना है जो महेश्वर के प्रमुख पर्यटक स्थल में शुमार है और पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। जो पर्यटक यहां आना चाहते हैं उन्हें प्राचीन समय की झलक देखने का आश्वासन दिया जा सकता है क्योंकि यह महल प्रतिष्ठित है और इतिहास को आपने आश्चर्यजनक और आकर्षक तरीके से वापस लाने के लिए प्रसिद्ध है। महेश्वर अपने जिला मुख्यालय खरगोन से लगभग 40 किलोमीटर है य जबकि मध्य भारत के मुख्य व्यवसायिक केंद्र इंदौर से 90 किलोमीटर है य ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग के पश्चिम में महेश्वर लगभग 55 किलोमीटर है, जबकि महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग उज्जैन से इसकी दूरी लगभग 150 किलोमीटर है।

महेश्वर का किला

निष्कर्ष – अपने भारत देश में पर्यटन उद्योग एक बहुत बड़ा उद्योग है। क्यों देश के अर्थव्यवस्था को विकसित करने वाले प्रमुख स्रोतों में से एक है। इसीलिए सरकार में इस पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने के लिए कई सारे कदम उठाए हैं। जिसमें कई सारे अभियान भी शामिल है जैसे कि अतुल्य भारत योजना अतिथि देवो भव योजना जिस कारण भारत देश में पर्यटन का विकास हुआ है जिससे भारत के अर्थव्यवस्था में लाभ हुआ है। पर्यटन एक देश में आने और आने के लिए दुनिया भर में कई आंगतूको को आक्रोशित कराता है और आमंत्रित करता है। यह एक देश की आर्थिक प्रगति में भी मदद करता है और रोजगार भी पैदा करता है। पर्यटन भी पर्यटन सांस्कृतिक आदान–प्रदान के लिए एक बढ़िया तरीका है। इसीलिए हार देश को बटन को जितना संभव हो सके उतना ही प्रोत्साहित करना चाहिए क्योंकि पर्यटन हमें तलाशने और वह दुनिया की सुंदरता की खोज करने की सुविधा देता है। इन छुपे हुए क्षेत्रों में पर्यटन स्थलों की जानकारी को उभार कर पर्यटक होता पहुंचाने से इन स्थानों का महत्व और अधिक बढ़ जाएगा। इन पर्यटन स्थलों के माध्यम से लोगों को अधिक रोजगार प्राप्त होगा पर्यटन स्थलों को जीवित रखने के लिए इनका संरक्षण एवं विकास करना बहुत आवश्यक है।

सुझाव – महेश्वर उत्सव समारोह इसके उत्ताम उदाहरण है इन अवसरों पर आपदा प्रबंधन एवं स्वच्छता पर विशेष धयान दिया जाना चाहिए। वर्तमान समय में कोरोना जैसी विषम परिस्थिति में यह सावधानियां और भी अधिक आपेक्षित है। यह पर्यटन उद्योग के विकास में आमजन की भूमिका का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है। जन जागरूकता अभियानों प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से जन जागरूकता एवं जनभागीदारी को बढ़ाने के प्रयास किए जाने चाहिए पर्यटकों के लिए आचरण संबंधित नियमों को सूचना पटल पर लगाना होगा तथा साथ ही गाइड बस ऑटो रिक्शा चालकों को दुकानदारों पुलिस विभाग के कर्मचारियों को पर्यटकों के साथ सम्मानजनक एवं सहयोगी व्यवहार करने हेतु प्रेरित करना होगा आती देवो भव का भाव इसे विस्तार देने हेतु उपयोगी होगा। चौराहों स्मारको चिड़ियाघर के जानवरों को आमजन द्वारा गोद लेने हेतु जो योजनाएं यहां संचालित है वैसा रानी है इन के माध्यम से पर्यटन उद्योग के क्षेत्र में जनभागीदारी बढ़ाकर यदि शासन एवं आमजन के सामंजस्य से का कार्य किया जाए तो निसंदेह रूप से यहां इस उद्योग का भविष्य उज्जवल है।

पर्यटन के विकास के लिए महत्वपूर्ण सुझाव :

1. आवागमन के साधनों को सुगम बनाया जाए।
2. पर्यटकों के लिए न्यूनतम शुल्क पर टूरिस्ट कॉटेज बनाई जाए।
3. धार्मिक स्थलों पर पुख्ता सुरक्षा इंतजाम हो।
4. पर्यटन स्थलों पर सांस्कृतिक एवं धार्मिक आयोजन किया जाए।
5. पर्यटन स्थलों पर साफ सफाई का विशेष धयान रखा जाए।
6. पर्यटन ओ को शासन द्वारा प्रचार प्रसार किया जाए।
7. नदियों के किनारे महिलाओं के लिए स्नान घर की व्यवस्था की जाए।
8. पर्यटन स्थलों के किनारे दुकाने ना लगाने दिया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. डॉ. हरिमोहन सांस्कृतिक पर्यावरण और पर्यटन तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली
2. खत्री पर्यटन भूगोल प्रकाशन भोपाल

3. India.gov.in Khargone District
4. http://hi.wikpedia.org
5. शोधकर्ता द्वारा महेश्वर का भ्रमण किया गया।
6. यात्रा प्रबंधन संस्थान महेशवर से प्राप्त जानकारी।
7. व्यास, आर. के.– पर्यटन उद्‌भव एवं विकास।
8. शर्मा, वैदेही– भारतीय अर्थव्यवस्था में पर्यटन की भूमिका।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

वर्ष 2014 से वर्तमान काल तक भारत की विदेश नीति का अध्ययन

आशुतोष सिंह *

* शोध छात्र (राजनीति विज्ञान) रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – वर्ष 2014 में भारत में हुए सत्ता परिवर्तन के पश्चात वैश्विक स्तर पर बढ़ता भारत का कद इस बात का परिचायक है कि भारत की विदेश नीति भारत के हितों को ध्यान में रखते हुए सही दिशा में कार्यन्वित है। जबकि वर्ष 2013 को भारत के प्रतिष्ठित समाचार पत्रों ने विनाशक और खराब वर्ष की संज्ञा दी थी। 2014 के बाद और वर्तमान समय तक भारत की विदेश नीति में आये व्यापक परिवर्तन के कारण अब भारत को काफी लाभ भी मिल रहा है। इसमें नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। दक्षिण एशिया हो या अन्य पड़ोसी देश जिनके साथ रिश्ते एक समय ठंडे बस्ते में चले गए थे या मृत प्राय हो गए थे 2014 के बाद उनमें नई जान फूंकी गयी है। इजरायल जैसे देश के साथ आज भारत के संबंध बहुत अच्छे हैं। वही सऊदी अरब और या संयुक्त अरब अमीरात जैसे इस्लामिक देश उनके साथ भी भारत के संबंध सक्रिय विदेश नीति के कारण आज मजबूत हैं। रूस के साथ नजदीकियां बढ़ रही है वहीं अमेरिका के साथ भी संबंधो में प्रगाढ़ता आयी है। जापान के साथ कई समझौतों और सहयोग के आधार पर संबंध स्थापित करके उत्कृष्ट विदेश नीति का उदाहरण दिया गया है। केवल चीन और पाकिस्तान के साथ भारत के संबंध बिगड़े हुए चल रहे हैं। लेकिन ये भी उतना ही सत्य है की भारत इन दोनों देशों को हर स्तर पर यथोचित प्रतिक्रिया दे रहा है। आतंकवादी घटनाओं का मुहतोड़ जबाब सर्जिकल स्ट्राइक्स या एयर स्ट्राइक्स से आज का भारत दे रहा है। चीन को भी हर प्रकार से मुहतोड़ जबाब दिया जा रहा। ब्रिटेन के साथ भारत अपने अच्छे संबंधो को और अधिक मजबूत करने के लिए प्रयासरत है। नरेंद्र मोदी सरकार का दुनिया को भारत के वसुधैव कुटुंबकम ध्येय मंत्र के आधार पर साधने का प्रयास जारी है। इस शोध पत्र में वर्ष 2014 से वर्तमान समय तक देश में शासन करने वाली नरेंद्र मोदी सरकार की विदेश नीति का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

शब्द कुंजी – भारतीय विदेश नीति, भारत, 2014से वर्तमान समयतक, वैक्सीन मैत्री, सर्जिकल स्ट्राइक, एयर स्ट्राइक,विश्व योग दिवस।

प्रस्तावना – अपने देश का हित सर्वोपरि है, प्रत्येक देश इसी विचार से अपनी विदेश नीति की योजना, निर्माण और कार्यन्वयन करता है। इसी कारण बदलते वैश्विक परिवेश और समय के साथ साथ देशों की विदेश नीति भी बदलती रहती है।भारत की विदेश नीति भी देशहित सर्वोपरि के सिद्धांत पर ही आधारित रहती है और समय समय पर इसमें क्रांतिकारी बदलाव भी देखने को मिलते हैं। दुनिया भर में यदि भारत की स्थिति का अवलोकन किया जाए तो यह एक विशाल भूखंड और विशाल जनसंख्या और आपार संभावनाओं वाला देश है। यह दुनिया का सबसे युवा देश है जिसकी 65 प्रतिशत से अधिक आबादी युवा है।

अपने विशाल आकार और क्षमताओं के कारण इसकी विदेश नीति का वैश्विक राजनीति पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।

वैश्विक स्तर पर अनेक विषयों पर अपना प्रभाव बनाये रखने की भारत की अपनी ही एक लम्बी परंपरा रही है साथ ही इसका सांस्कृतिक इतिहास भी गौरवपूर्ण रहा है। अपने पडोसी देशों के साथ साथ सुदूर के देशों के साथ भारत के संस्कृति आधारित और व्यापारिक संबंध रहे हैं। यही कारण है कि दुनिया के अनेक देशों में भारत की गौरवपूर्ण संस्कृति के प्रतीक आज भी मिलते हैं।[1]

1990 के दशक में भारत की विदेश नीति में अनेक परिवर्तन आये। जिनके परिणामस्वरुप अनेक प्रकार की वैश्विक प्रतिक्रियाओं के बाबजूद भारत वैश्विक मंच पर परमाणु हथियार सम्पन्न देश बना। लेकिन वर्ष 2010 के बाद एक कालखंड ऐसा भी आया जब टाइम्स ऑफ़ इंडिया जैसे भारत के प्रतिष्ठित अखबार 2013 में अपने कॉलम में लिखने लगे कि 'वर्ष 2013 बहुत लंबे कालखंड में भारत का सबसे विनाशकारी विदेश नीति वर्ष रहा है।'[2]

यह भी एक परिवर्तन था और कदाचित तत्कालीन UPA सरकार के भ्रष्टाचार में लिप्त होने की घटनाओं का प्रभाव था। लेकिन वर्ष 2014 में भारत के सत्ता परिवर्तन हुआ और नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में NDA की सरकार बनी। सरकार बनते ही शुरू हुआ एक नया कालखंड जो वर्तमान समय तक जारी है। कुछ विद्वान् इसे 'मोदी युग' की संज्ञा भी देते हैं।यह बात दुनिया का हर प्रत्येक नीति विशेषज्ञ मानता है कि भारत की चाल ढाल वैश्विक और घरेलू स्तर पर वर्ष 2014 के बाद बदली है और यह बदलाव आगे बढ़ते समय के साथ वर्तमान कोविड-19 काल तक जारी है। जहाँ किसी समय भारत गुटनिपेक्षता का द्योतक था आज वही भारत अपने राष्ट्रहित को ध्यान में रखते हुए दुनिया के सभी देशों के साथ कदम से कदम मिलाकर काम करने लगा है। एक समय पाकिस्तान और चीन भारत के लिए बड़ी चुनौती माना जाता था, लेकिन आज भारत अपनी प्रखर विदेश नीति और राजनितिक नेतृत्व के मजबूत इरादों के कारण इन दोनों देशों को उनकी ही भाषा में समझाने को उद्यत है। मई 2014 में देश में सत्ता परिवर्तन होने के बाद नरेंद्र मोदी ने देश के प्रधानमंत्री का पद संभाला[3] और तबसे भारत की विदेश नीति में व्यापक परिवर्तन हुए हैं और नवीन ऊर्जा का संचार भी हुआ है। इसी श्रृंखला में नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2019 में 30 मई को देश की बागडोर फिर से

संभाली[4] और यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं है भारत की जनता को उनकी आंतरिक और बाह्य (विदेश) नीति से बहुत आशाएं हैं। नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री का पद संभालने के पश्चात विदेश नीति के क्षेत्र में जिस व्यापक स्तर पर काम हुआ है, वह उनके पूर्ववर्तियों के कार्यकाल की तुलना में बहुत ज्यादा है। यही कारण है कि सरकार के घोर आलोचक भी इस बात को सहर्ष स्वीकार करते हैं कि नरेंद्र मोदी के सत्ता में आने के बाद भारत की विदेश नीति में बहुत परिवर्तन आया है। इस बात में कोई संशय नहीं है कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में वर्तमान सरकार ने बहुत अल्प समय में भारत की विदेश नीति पर एक सुस्पष्ट और गहरी छाप छोड़ी है तथा भारत को विश्व की एक बड़ी और महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में खड़ा करने की अपनी मंशा और नियत का प्रकटीकरण किया है।इस शोध पत्र में हम वर्ष 2014 से वर्तमान समय तक भारत की विदेश नीति का अध्ययन करने का प्रयास करेंगे।

अध्ययन क्षेत्र

वर्ष 2014 से वर्तमान समय तक भारत की विदेश नीति – विश्व बहुत तेज गति से आगे बढ़ रहा है। इसलिए इस तीव्र गति के साथ सामंजस्य बनाये रखने के लिए भारत जैसे विशाल देश की विदेश नीति भी त्वरित सक्रिय, आवश्यकतानुसार लचीली और व्यावहारिक होनी चाहिए और कदाचित यह ऐसी है भी। विगत सात वर्षों में नरेंद्र मोदी ने अपने कर्तृत्वों से वैश्विक स्तर और चलने वाली व्यवस्था में भारत के स्तर और भूमिका को परिवर्तित करने का हरसंभव प्रयास किया है। अपने उद्यमों से नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार ने विश्व को यह आभास कराया है कि ये नया भारत है और इसकी क्षमता अथाह है और यह नया भारत वैश्विक स्तर पर चलने वाली व्यवस्थाओं और उनकी विशिष्ट प्राथमिकताओं को परिभाषित करने और उनके संरक्षण की मंशा और सामर्थ्य रखता है।विश्व में भारत की क्या भूमिका हो सकती है, उस संबंध में नरेंद्र मोदी सरकार ने हर प्रश्न चिन्ह का समाधान करने का प्रयास जारी रखा हुआ है। भारत अपनी उदार और वसुधैव कुटुम्बकम् ध्येय वाक्य पर आधारित संस्कृति की उदार शक्ति का प्रकटीकरण वैश्विक स्तर पर करने के लिए उद्यत खड़ा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों के पश्चात डिप्लोमैटिक स्तर पर भारत की नई छवि का वैश्विक स्तर पर निर्माण करने के कार्य में तेजी आयी। नरेंद्र मोदी के ऐसे ही प्रयासों के अंतर्गत भारत की वास्तविक शक्ति 'योग और अध्यात्म' को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा और स्वीकार्यता मिली साथ ही पूर्ववर्ती सरकारों की तुलना में विदेशों में बसे प्रवासी भारतीयों को भारत के नजदीक लानेपर विशेष बल दिया गया।

आज के भारत पर अगर ध्यान से दृष्टि डालें तो ज्ञात होता है कि 2014 के बाद भारत के आत्मविश्वास बढ़ा है और इसी बढ़े हुए आत्मविश्वास के कारण आज भारत वैश्विक स्तर पर एक नई और महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह स्पष्ट हो गया है कि अब भारत बीमारू देश बनकर नहीं रहने वाला बल्कि दुनिया का नेतृत्व करने की क्षमता रखता है।

पहले के समय में भारत अपनी विदेश नीति को लेकर बड़े संतुलित तरीके से अपने हितों को बनाये रखने की चेष्टा में किसी भी प्रकार रिस्क लेने कतराता था अर्थात भारत हमेशा 'डिफेंसिव मोड' में रहता था। लेकिन 2014 के बाद से भारत अब किसी भी प्रकार जोख़िम उठाने को भी उद्यत रहता है। पिछले कई दशकों से भारत एक संतुलित और सतर्क विदेश नीति का अनुसरण करता आया है। लेकिन अब वैश्विक स्तर पर 'ग्रेट पावर गेम' में अब भारत तेज़ी से कदम बढ़ाने और बड़ी भूमिका पाने के लिए उद्यत खड़ा है[5]या यूँ कहे भारत ने अपनी मंशा जाहिर कर दी है।जहां तक भारत के सामरिक और रणनीतिक हितों का संबंध है, नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार एक पृथक मार्ग का अनुसरण कर रही है। भारत के हितों का संरक्षण और संवर्धान भारत सरकार दुनिया के दूसरे छोटे बड़े देशों के साथ अपनी साझेदारी बढ़ाकर और संबंधो को प्रगाढ़ करके कर रही है।

2014 से वर्तमान समय तक हर प्रकार से और हर पक्ष से भारत की विदेश नीति की गतिविधियों पर यदि विश्लेषणात्मक दृष्टि डाली जाए तो यह तथ्य मुखर होकर सामने आता है कि इस कालखंड में भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी वैश्विक स्तर पर बहुत सक्रिय रहे हैं जबकि उनके पूर्ववर्ती इस मामले में थोड़ा संकुचित रहते थे। उनकी इस सक्रियता को एक अच्छा उदाहरण यह है कि उन्होंने अपने पूर्ववर्ती प्रधानमंत्रियों की तुलना में अधिक विदेश यात्राएँ की। उनकी इन यात्राओं का समय समय पर और परिस्थितिनुसार भारत को लाभ भी मिल रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बहुत से ऐसे देशों में भी गए जहाँ पिछले कई दशकों से भारत का कोई भी प्रधानमंत्री नहीं गया था। उदाहरण के लिए उन्होंने वर्ष 2015 में कनाडा और संयुक्त अरब अमीरात की यात्रा की और इन देशों के साथ भारत के संबंधो को सुदृढ़ करने की दिशा में प्रयास किया। जहाँ तक दक्षिण एशिया के अपने निकट के पड़ोसी देशों से संबंध का प्रश्न है, नरेंद्र मोदी ने मई 2014 में अपने प्रधानमंत्री पद के शपथ-ग्रहण समारोह में दक्षिण एशिया के देशों के अपने समकक्ष नेताओं को आमंत्रित करके सहयोग और मजबूत संबंधो पर आधारित भारत की भविष्य में होने वाली विदेश नीति का स्पष्ट संकेत दे दिया था।[6]

वर्ष 2015 में ही नरेंद्र मोदी ने श्रीलंका की यात्रा की।चीन की साम्राज्यवादी चालों के कारण इस कालखंड में श्रीलंका, मालद्वीप और नेपाल जैसे देशों के भारत के संबंधो छुटपुट उतार चढ़ाव देखा गया है लेकिन कुलमिलाकर इन देशों के साथ भारत के संबंध संतुलित हैं। जहाँ तक 1947 से भारत के लिए नासूर बने हुए देश पाकिस्तान के साथ भारत के संबंधो का प्रश्न है तो इसमें बहुत ज्यादा उथल पुथल देखी गयी है। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार ने शुरूआत में तो पाकिस्तान के साथ बड़ी उदारता और गर्मजोशी दिखाई यहाँ तक कि दिसंबर 2015 में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पाकिस्तान की आकस्मिक यात्रा भी की थी और तत्कालीन पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ से भेंट की थी।[7]

लेकिन बाद में पाकिस्तान की हरकतों और उसके द्वारा भारत में संचालित आतंकवादी गतिविधियों के कारण पूर्ववर्ती सरकारों की तरह ही नरेंद्र मोदी सरकार के संबंध भी पाकिस्तान के साथ बिगड़ते चले गए। इसी दौर में पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादियों ने भारत के राज्य जम्मू-कश्मीर पर आतंकी हमले तेजी से शुरू कर दिये और नियंत्रण-रेखा पर भी सेनाओं के बीच लगातार घातक झड़पें होने लगीं। वर्ष 2019 में भारत के संबंध पाकिस्तान के साथ बहुत ज्यादा खराब हो गए क्योंकि पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादियों ने जम्मू-कश्मीर के उरी और पुलवामा में बड़े हमले किये जिसमें भारत के कई सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए थे। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि सैनिकों की शहादत व्यर्थ नहीं जायेगी गुनाहगारों से पूरा हिसाब लिया जाएगा। आतंकवाद के इस अमानवीय कुकृत्य का बदला लेने के लिए भारत ने सर्जिकल स्ट्राइक की और उसके कुछ समय बाद भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान की सीमा के भीतर घुसकर उसके द्वारा संरक्षित और संवर्धित आतंकी शिविरों पर एयर स्ट्राइक की और पाकिस्तान के विरुद्ध आक्रामक विदेश नीति का अनुसरण किया। इसके साथ ही नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने पाकिस्तान के साथ दुनिया

को यह संदेश भी दिया था कि 'हम किसी को छेड़ते नहीं और अगर कोई हमें छेड़े तो हम उसे छोड़ते भी नहीं। यह नया हिन्दुस्तान है जो घर में घुसकर मारेगा।'[8,9]

इस कालखंड में नरेंद्र मोदी सरकार ने पाकिस्तान के अलावा अपने अन्य सभी निकट के पड़ोसी देशों के साथ एक संतुलित और समान विदेश नीति का पालन किया है। भारत-पकिस्तान के खराब संबंधो के कारण पिछले लम्बे अरसे से SAARC के केवल एक ही शिखर सम्मेलन का आयोजन हो पाया है भारत पाकिस्तान के खटास भरे संबंधो के कारण इस दिशा में होने वाली प्रगति फ़िलहाल अभी अवरोधित है।अपनी पूर्ववर्ती सरकारों की तुलना में नरेंद्र मोदी सरकार ने मॉरीशस और सेशेल्स जैसे सुदूर और छोटे देशों की यात्रा करके हिंद महासागर क्षेत्र में रणनीतिक तौर पर उत्कृष्ट कार्य किया और इस क्षेत्र में विशेष प्रगति की। इसके अतिरिक्त भारत सरकार IROA के साथ भी समन्वयपूर्वक बहुत सी गतिविधियों में एक साथ कार्य करती रही। नरेंद्र मोदी सरकार ने दक्षिण पूर्व एशिया को लेकर भारत की पुरानी विदेश नीति में सकारात्मक संशोधन किये और उनके फलस्वरूप भारत की 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' का प्रादुर्भाव हुआ।[10]

जहाँ तक भारत चीन संबंधो का प्रश्न है और उन संबंधो की परिणीति को लेकर भारत की विदेश नीति का अवलोकन करें तो हमने ज्ञात होता है कि उसमें बहुत अधिक ट्विस्ट, खतरनाक मोड़ और उतार चढ़ाव आये हैं। नरेंद्र मोदी सरकार के प्रथम कार्यकाल के शुरू में काफी सकारात्मक और सहयोगपूर्ण वातावरण निर्मित हुआ था लेकिन पाकिस्तान की ही तरह चीन की हरकतों और सीमा संबंधी विवादों के कारण दोनों देशों के संबंध मार्ग से भटके हुए हैं। चीन के साथ सीमा को लेकर नरेंद्र मोदी सरकार के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति अत्यंत सतर्क और मुखर रही है। लेकिन डोकलाम की घटना के बाद दोनों देशों के संबंध बहुत ज्यादा कड़वे हो गए। इसी के परिणामस्वरूप भारत ने बैल्ट ऐंड रोड फ़ोरम की महत्वपूर्ण बैठक में प्रतिभाग नहीं लिया और CPEC को लेकर भारत ने चिंता भी प्रकट की थी। लेकिन नरेंद्र मोदी सरकार ने चीन के साथ अपने संबंध सुधारने और बेहतर बनाने के लिए वर्ष 2018 में चीन के वूहान शहर में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ एक अनौपचारिक शिखर वार्ता की थी।

नरेंद्र मोदी सरकार के इस कालखंड में अमेरिका के साथ भारत के संबंध काफी मजबूत और प्रगाढ़ हुए और इस दिशा में भारत की विदेश नीति सतत कार्यान्वित है। वर्ष 2016 से इन दोनों देशों के संबंधो में मजबूती का दौर शुरू हुआ और इसी के कारण दोनों देशों की सेनाओं के बीच लॉजिस्टिक सपोर्ट और सेवाओं को और सुदृढ़ और सुगम बनाने के उद्देश्य से भारत और अमेरिका के बीच लॉजिस्टिक्स एक्सचेंज मैमोरेंडम ऑफ़ ऐग्रीमेंट[11] हुआ तत्पश्चात वर्ष 2018 में रक्षा प्रणालियों को उन्नत बनाने के प्रयोजन से संचार अनुकूलता और सुरक्षा समझौता (कॉमकोसा)[12] हुआ था। इन समझौतों के परिणामस्वरूप भारत और अमेरिका के बीच महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदारी और अधिक संवर्धित हुई।

शुरूआती दौर में रूस के साथ भारत के संबंध कुछ शुष्क थे। लेकिन उसी कालखंड में भारत और जापान के संबंधो में काफी प्रगाढ़ता दिखाई दी। वर्ष 2014 के बाद से जापान और भारत के बीच रणनीतिक स्तर और आपसी साझेदारी के क्षेत्र में एक स्वर्णिम अध्याय की शुरुआत हुई थी और इसके साथ साथ न्यूक्लिअर ऊर्जा और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण प्रगति हुई। जहाँ तक खाड़ी के देशों के साथ भारत के संबंधो का प्रश्न आता है तो यह कहा जा सकता है कि खाड़ी के देशों के साथ भारत के रिश्ते पहले की तुलना में मजबूत हुए हैं। इसी कालखंड में भारत और इज़राइल के संबंधो में गर्मजोशी देखी गयी और बहुत लम्बे समय बाद भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इज़राइल की यात्रा भी की थी। आज इज़राइल और भारत कृषि और प्रौद्योगिकी और रक्षा के क्षेत्र में मिलकर काम कर रहे हैं। वैश्विक मंच पर भारत की नवीन और मज़बूत स्थिति का प्रथम और सुस्पष्ट संकेत यही था कि वर्ष 2019 में इस्लामिक सहयोग संगठन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करने के लिए भारत को आमंत्रित किया गया था इसके साथ ही सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात जैसे खाड़ी देशों के साथ भारत के संबंधो ने नई परिभाषा लिखी और यह संबंध सतत मजबूत होते जा रहे हैं।भारत के योग को संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच से वैश्विक स्तर पर प्रचारित करना और 21 जून को विश्व योग दिवस के रूप में मान्यता दिलवाना नरेंद्र मोदी सरकार की सक्रिय विदेश नीति का ही परिणाम है। यह सत्य है की वर्ष 2014 से भारत की विदेश नीति इंडिया फर्स्ट, मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भर भारत आदि कई उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान समय तक वैश्विक मंच पर अच्छा प्रदर्शन कर रही है। वर्ष 2019 में अचानक प्रकट हुई कोरोना महामारी ने जब पूरी दुनिया को अपने संक्रमण से पीड़ित किया, जिसके कारण सम्पूर्ण विश्व की गति रुक गयी थी और अभी भी पूरा विश्व मंद गति से आगे बढ़ रहा है। उस भयानक कालखंड में भी नरेंद्र मोदी सरकार द्वारा इस महामारी से भारत की सुरक्षा करते हुए दुनिया के देशों के साथ पूर्ण सहयोग करने का सराहनीय कार्य किया गया। जब कोरोना की वैक्सीन भारत में निर्मित हुई तो भारत ने दुनिया के देशों की मदद करने के लिए 'वैक्सीन मैत्री' मिशन चलाया गया। जिसके अंतर्गत दुनिया के बहुत से देशों को भारत ने वैक्सीन और आवश्यक दवाइयां तथा उपकरण उपलब्ध कराये। ऐसे ही उद्यमों के कारण ब्राज़ील के राष्ट्रपति ने नरेंद्र मोदी सरकार का धन्यवाद करने के लिए एक ट्वीट किया था जिसमें एक फोटो अपलोड की गयी थी जिसमें भगवान हनुमान संजीविनी बूटी लेकर जा रहे थे।[13] इसी विदेश नीति के परिणाम स्वरुप वर्ष 2021 में भारत में आयी कोरोना की दूसरी लहर के समय दुनिया के अनेक देश भारत के सहयोग करने के लिए खड़े हुए। और भारत तथा उसकी विदेश नीति के कारण दुनिया के देशों के साथ मजबूत हुए संबंधो के फलस्वरूप सहयोग का यह कार्य सतत चल रहा है। लेकिन विदेश नीति के कारण उत्पन्न हुई सकारात्मकता के बावजूद वैश्विक स्तर भारत के लिए अनेक चुनौतियां भी हैं। जिनके समाधान के लिए हमारी विदेश नीति निर्माताओं और सरकार को बहुत से कार्य करने होंगे।

निष्कर्ष - वर्ष 2014 में भारत में हुए सत्ता परिवर्तन के बाद भारत की चाल ढाल लगभग सभी क्षेत्रों में बदली है। 2014 से वर्तमान समय तक भारत की विदेश नीति में भी व्यापक स्तर परिवर्तन हुए हैं और अपनी संतुलित विदेश नीति के कारण भारत ने वैश्विक स्तर पर अब अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। आज भारत वैश्विक स्तर पर बड़ी भूमिका निभाने के लिए तैयार खड़ा है। दूसरे शब्दों में कहें तो अब भारत किसी दूसरे देश के पीछे चलने वाला या दूसरे देशों द्वारा बनाये गए नियमों के अनुसार चलने वाला भारत नहीं है बल्कि अब भारत दुनिया के देशों को आत्मविश्वास के साथ अपना संदेश देने में सक्षम है। भारत की सक्षम विदेश नीति का परिणाम है कि वर्ष 2014 के बाद से वर्तमान समय तक FDI के क्षेत्र में भारत ने विशिष्ट उपलब्धि हासिल की है। दक्षिण एशिया के देश हो या खाड़ी के देश हो सबके साथ भारत के संबंध मजबूत हुए हैं। केवल पाकिस्तान और चीन के साथ समस्या

बनी हुई है। लेकिन ये भी सत्य है की नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार इन दोनों देशों के छल कपट का यथावत उत्तार दे रही है। ये भारत की विदेश नीति का ही परिणाम था जब भारत ने पाकिस्तान पर सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक किया था तो दुनिया के देशों ने भारत के इस कदम का बचाव किया था। रूस के साथ शुष्क रहे भारत के संबंध अब नरेंद्र मोदी और पुतिन की जुगलबंदी के फलस्वरूप सुदृढ़ हो रहे हैं इसी कारण रूस ने नरेंद्र मोदी को वर्ष 2019 में रूस के सर्वोच्च नागरिक सम्मान दी आर्डर ऑफ़ सेंट एंड्रू दी एपोस्टल से सम्मानित किया था। 2014 से वर्तमान समय तक भारत और अमेरिका के संबंध भी नई उंचाईयों पर पहुंचे हैं विशेष तौर पर डोनाल्ड ट्रम्प के कार्यकाल में। कुल मिलकर वर्ष 2014 से वर्तमान समय तक विदेश नीति को लेकर नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार सजगता और सतर्कता के साथ कार्य कर रही है और इसी कालखंड में भारत ने कई उपलब्धियां हासिल की है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. खेर, अंजना, भारत की विदेश नीति: स्वतंत्रता प्राप्ति से वर्तमान तक, रिव्यु ऑफ़ रीसर्च, वॉल्यूम 10, 2021, पृष्ठ 1-2
2. https://timesofindia.indiatimes.com/blogs/Globespotting/2013-has-been-india-s-most-disastrous-foreign-policy-year-in-a-very-long-time/
3. https://www.indiatoday.in/elections/story/narendra-modi-prime-minister-of-india-swearing-in-ceremony-cabinet-ministers-194543-2014-05-26
4. https://www.thehindu.com/elections/lok-sabha-2019/narendra-modi-swearing-in-ceremony-live-updates/article27325933.ece
5. पंत, व्ही हर्ष, तनेजा, कबीर, लुकिंग बैक लुकिंग अहेड: फॉरेन पॉलिसी इन ट्रांजीशन अंडर मोदी, आब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन, 2019, पृष्ठ 4-5
6. https://www.thehindu.com/news/national/in-a-first-modi-invites-saarc-leaders-for-his-swearingin/article6033710.ece
7. https://www.thehindu.com/news/modi-stuns-all-with-surprise-stopover-in-lahore-following-unannounced-stop-in-kabul/article8029007.ece
8. https://www.youtube.com/watch?v=OTk3wrYGEtk
9. https://www.youtube.com/watch?v=wK959PGe05Y
10. https://pib.gov.in/newsite/PrintRelease.aspx?relid=133837
11. http://www.indiandefencereview.com/news/india-and-the-us-sign-the-logistics-exchange-memorandum-of-agreement-lemoa/
12. https://www.mea.gov.in/bilateral-documents-hi.htm?dtl/32227/Joint_Statement_on_the_Second_IndiaUS_2432_Ministerial_Dialogue
13. https://www.india.com/hindi-news/world-hindi/jair-bolsonaro-thanks-pm-narendra-modi-for-covid-19-vaccinr-share-lord-hanuman-image-and-tweet-this-4351 385/

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

बैतूल जिले की कृषि उत्पादकता एवं फसल स्वरुप में परिवर्तन का विश्लेषण - उन्नीसवीं सदी की प्रमुख नीतियों के अंतर्गत नवीन आर्थिक नीति के प्रभावों के विशेष सन्दर्भ में

जगेन्द्र धोटे *

* सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) शासकीय महाविद्यालय, भैंसदेही, बैतूल (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना - उन्नीसवी शताब्दी की शुरुआत से लेकर वर्तमान तक कृषि विकास हेतु विभिन्न कृषि विकास नीतियां लागु की गई जिनका प्रभाव बैतूल जिले की कृषि उत्पादकता एवं फसलों के स्वरुप पर पडा है। प्रत्येक कृषि नीति का क्षेत्र विशेष की जलवायु एवं कृषि गहनता के आधार पर फसल स्वरुप एवं उत्पादकता पर भिन्न भिन्न प्रभाव होते है प्रस्तुत शोध पत्र में उन्नीसवी सदी की शुरुआत से लेकर अब तक बैतूल जिले की कृषि फसलों के स्वरूप एवं उत्पादकता आदि पर समय समय पर लागु की गई कृषि आर्थिक नीतियों के प्रभाव को बताया गया है उन्नीसवी सदी के शुरुआत से लेकर 1990 तक की अवधि में फसल स्वरुप एवं कृषि उत्पादकता में जो परिवर्तन हुयें है उनका नवीन आर्थिक नीति के लागु होने के पश्चात् की अवधि में फसल स्वरूप एवं उत्पादकता में परिवर्तनों की तुलनात्मक व्याख्या की गई है।

शब्द कुंजी - उत्पादकता, फसल स्वरूप, नवीन आर्थिक नीति।

बैतूल जिले की कृषि उत्पादकता एवं फसल स्वरुप विश्लेषण - बैतूल जिले की प्रमुख फसलो के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि जिले में उगाई जाने वाली प्रमुख फसलों में से अधिकांश फसले उन्नीसवी शताब्दी की शुरूआत में भी लोकप्रिय थी जिसमें अनाज फसलो के अंतर्गत - ज्वार की फसल सर्वाधिक प्रचलित थी इसके अतिरिक्त, कोदो कुटकी, धान, मक्का, गेहूं आदि फसले भी बोई जाती थी। दलहन फसलों में -तुअर की फसल अधिक प्रचलित थी इसके अतिरिक्त उड़द, मुंग, मोठ तथा चना आदि फसले भी बोई जाती थी। तिलहन फसलों में मूंगफली की फसल सर्वाधिक प्रचलित थी इसके अतिरिक्त, तिल, जगनी या रामतिल ,अलसी आदि फसले भी बोई जाती थी, इन फसलो के अलावा गन्ना एवं कपास भी बैतूल जिले की प्रमुख फसले रही है। फलों में चीकू मिर्च- मसाले आदि का उत्पादन भी किया जाता था। बैतूल जिले की भैसदेही तहसील में खामला ग्राम के पास प्राकृतिक रूप से काफी के उत्पादन हेतु अनुकूल जलवायु होने के कारण यहाँ काफी की रोबस्ता प्रजाति आसानी से उगाना संभव है।

यहाँ काफी रोपण कार्य का प्रारंभ एक अंग्रेज सेंट बिल्फोर्ड द्वारा सन 1918 में किया गया था उनके द्वारा खामला पहाड़ी क्षेत्र में 208 एकड़ का पहाड़ीयों से घिरा एक क्षेत्र चुना गया तथा उसका नाम बिल्फोर्ड स्टेट रखा।[1]

उन्नीसवी शताब्दी की शुरुआत में बैतूल जिले में कृषि कार्यों परंपरागत कृषि उपकरणों का प्रयोग किया जाता था। कृषि क्षेत्र में धीरे धीरे सुधार हुआ तथा कृषि में नवीन तकनिकी एवं उपकरणों का प्रयोंग होने लगा कृषि विकास नीतियों के माध्यम से कृषि के विकास को गति मिली जलवायु, मिटटी आदि प्राकृतिक कारकों की दृष्टि से उन्नीसवी शताब्दी में बोई जाने वाली अधिकांश फसले वर्तमान में भी बोई जाती है। जिले में फसल स्वरुप तथा फसलो के बोये जाने वाले क्षेत्रफल में परिवर्तन हो चूका है। जिसके अंतर्गत फसलों के उत्पादन , उत्पादकता आदि में भी परिवर्तन आये है।

विभिन्न वर्षों में बैतूल जिले की प्रमुख फसलों के अंतर्गत क्षेत्रफल (000 एकड़ में)

वर्ष	धान/ चावल	ज्वार	मूगफली	तुअर / अरहर	गेहू	चना
1920 - 21	17.9	121.1	1.0	18.3	131.4	50.8
1930 - 31	20.6	187.0	11.5	28.8	178.8	53.4
1940 - 41	29.6	172.1	15.7	28.9	171.5	72.6
1950 - 51	42.4	168.9	33.2	41.2	111.5	73.4
1960 - 61	51.3	173.7	56.9	79.8	161.3	93.9

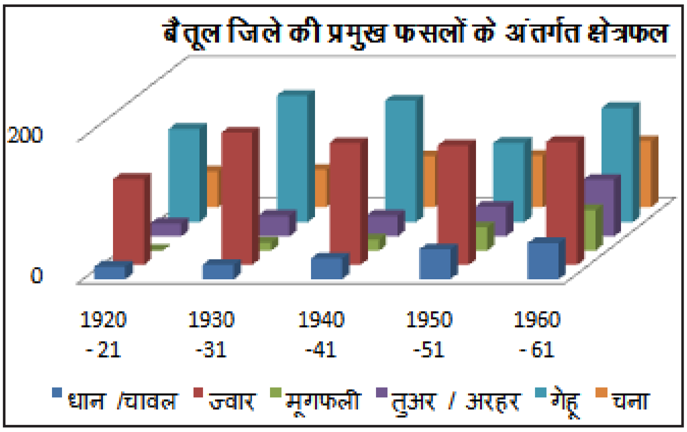

उपर्युक्त सारणी में वर्ष 1920 -21 से लेकर वर्ष 1960-61 तक विभिन्न वर्षों में बैतूल जिले की प्रमुख फसलों के बोये जाने वाले क्षेत्रफल को दर्शाया गया है वर्ष 1920 - 21 की स्थिति में गेहू 131.4 हजार एकड़ में बोया

जाता था 1960 – 61 में गेहू का क्षेत्र बढकर 161.3 एकड़ हो गया वर्ष 1920 – 21 की स्थिति में ज्वार 121.1 हजार एकड़ में बोया जाता था 1960 – 61 में जिसका क्षेत्र 173.7 एकड़ हो गया इसी प्रकार वर्ष 1920 – 21 की तुलना में वर्ष 1960–61 में धान ,मूंगफली ,चना ,तुअर आदि फसलो के बोये जाने वाले क्षेत्रफल में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

उन्नीसवी शताब्दी की प्रारंभ मूंगफली की फसल के अंतर्गत कोई क्षेत्र नहीं था वर्ष 2012 –13 में प्रारंभ की गई इस फसल का क्षेत्र कुछ सौ एकड़ तक ही रहा किन्तु वर्ष 1920 –21 में उसमे तेजी से वृद्धि हुई।[2]

विभिन्न वर्षों में बैतूल जिले में प्रमुख फसलों की उत्पादकता (किग्रा /हेक्टेयर में)

वर्ष	धान/ चावल	ज्वार	मूगफली	तुअर / अरहर	गेहू	चना
1920 –21	223. 4637	–	–	–	332. 9528	–
1930 –31	509. 7087	415. 7754	–	–	647. 3714	–
1940 –41	363. 1757	415. 4561	–	371. 9723	540. 8163	337. 4656
1950 –51	271. 2264	322. 6761	466. 8675	266. 9903	567. 3913	418. 9373
1960 –61	648. 1481	777. 2021	786. 4675	795. 7393	540. 9175	327. 476

उपर्युक्त सारणी में वर्ष 1920 –21 से लेकर वर्ष 1960–61 तक विभिन्न वर्षों में बैतूल जिले में प्रमुख फसलों की उत्पादकता को दर्शाया गया है जिले में वर्ष 1920 –21 की स्थिति में धान की उत्पादकता 223.4637 किलोग्राम /हेक्टेयर थी जो कि वर्ष 1960–61 में बढकर 648.1481 किलोग्राम /हेक्टेयर हो गई इसी प्रकार वर्ष 1920 – 21 की तुलना में वर्ष 1960 – 61 में ज्वार , गेहूं ,मूंगफली ,चना, तुअर आदि फसलो के बोये जाने वाले क्षेत्रफल में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

हरित क्रांति के लागु होने के पश्चात् विभिन्न वर्षों में बैतूल जिले में अधिक उत्पादकता वाली प्रमुख फसलों की उत्पादकता (किलोग्राम /हेक्टेयर में)

वर्ष	धान	गेहूँ	मक्का	मूंग- फली	तुअर	ज्वार
1971-72	1007. 435	825. 8258	855. 1724	542. 5532	596. 206	787. 1826
1975-76	826. 3666	677. 5701	980. 7692	608. 6957	654. 0698	483. 5165
1980-81	508. 1522	1074. 653	567. 2515	491. 5254	304. 918	734. 1935
1986-87	654. 8673	1247. 126	529. 1005	491. 5254	409. 4203	484. 225
1989-90	908. 8146	1130. 841	1589. 189	820. 8955	693. 5484	922. 7405
1990-91	1054. 983	1101. 987	1111. 702	803. 2787	726. 7442	764. 1791

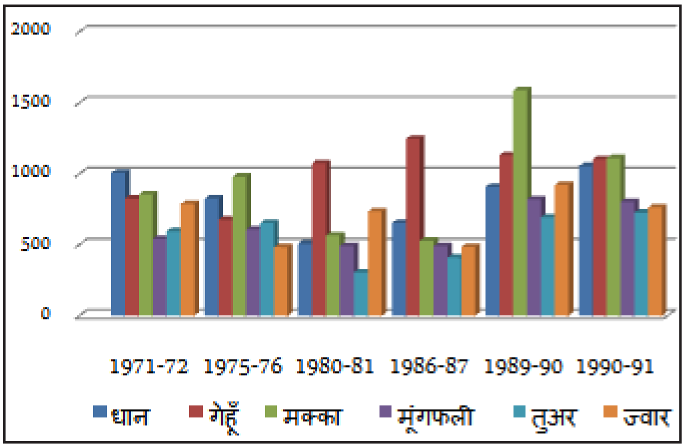

हरित क्रांति के लागु होने के पश्चात् बैतूल जिले में फसलो की उत्पादकता में परिवर्तन का अध्ययन – हरित क्रांति के दौरान रासायनिक उर्वरको दवाईयों एवं उन्नत बीजों का प्रयोग अधिक मात्रा में किया गया था स जिले में वर्ष 1960–61 स्थिति में धान की उत्पादकता 648.1481 किलोग्राम /हेक्टेयर थी जो कि हरित क्रांति के आने के बाद वर्ष 1971 – 72 में बढकर 1007.435 किलोग्राम / हेक्टेयर हो गई उत्पादकता में यह उल्लेखनीय वृद्धि हरित क्रांति का प्रभाव माना जा सकता है किन्तु वर्ष 1971–72 से लेकर वर्ष 1990–91 तक विभिन्न वर्षों में धान की उत्पादकता में उतार चढाव की स्थिति रही है।

गेहू की उत्पादकता वर्ष 1960–61 स्थिति में 540.9175 किलोग्राम /हेक्टेयर थी जो बढकर वर्ष 1971–72 में 825.8258 किलोग्राम/हेक्टेयर हो गई तथा वर्ष 1971–72 से लेकर वर्ष 1990–91 तक विभिन्न वर्षों में गेहू की उत्पादकता में वृद्धि की पृवृत्ति रही है। जबकि मूंगफली की उत्पादकता 1960–61 की तुलना में 1971–72 में घट गई तथा वर्ष 1960–61 स्थिति में तुअर की उत्पादकता 795.7393 किलोग्राम/हेक्टेयर थी जो हरित क्रांति के पश्चात् वर्ष 1971–72 में घटकर 596.206 किलोग्राम / हेक्टेयर हो गई इसी प्रकार ज्वार की उत्पादकता 1960–61 की तुलना में 1971–72 में अपरिवर्तनीय रही वर्ष 1971–72 से लेकर वर्ष 1990–91 तक विभिन्न वर्षों में ज्वार की उत्पादकता में विशेष परिवर्तन नहीं आया।

नवीन आर्थिक नीति के लागु होने के पश्चात् बैतूल जिले की अधिक उत्पादकता वाली फसलो की उत्पादकता

(किलोग्राम /हेक्टेयर में)

वर्ष	धान	गेहूं	सरसों	तिल	कपास	गन्ना	मक्का
2005	1015	1730	900	165	395	5125	1518
2006	1125	1750	950	200	450	5500	1450
2007	1107	1613	878	300	450	4554	1365
2008	1108	1661	956	341	495	4489	1406
2009	1099	1621	973	353	525	4554	1286
2010	1483	1232	838	363	530	3583	1610
2011	1658	2106	1157	524	722	3905	1456
2012	2158	2396	1150	512	520	5639	1874
2013	2324	2010	1019	315	450	5073	1037
2014	2432	2161	1100	320	460	5850	1995
वर्ष 20	140	25	22	94	16	14	31

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

05 की तुलना मे कमी /वृद्धि प्रतिशत में							

नवीन आर्थिक नीति के लागु होने पश्चात के वर्षों में फसलो की उत्पादकता में परिवर्तन का विश्लेषण – जिला सांख्यिकी कार्यालय से प्राप्त आकड़ो के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि नवीन आर्थिक नीति के लागु होने के पश्चात की समयावधि के दौरान विभिन्न वर्षो में जिले में उन्नत बीजों का वितरण, बीज प्रतिस्थापन उर्वरक खपत आदि बढ़ते क्रम में रहे है। जिले में जैविक खेती के रकबे में भी वृद्धि हुई है जैविक कृषि करने वाले कृषको की संख्या में वृद्धि हुई है, जैविक कीटनाशकों का उपयोग, जैविक बीजोपचार औषधियों का उपयोग,नाडेप खाद,आदि की खपत में वृद्धि हुई है कम्पोस्ट खाद का उपयोग कम होने लगा है। वर्ष 1990 –91 की तुलना में विभिन्न आर्थिक नीतियों के लागु होने के पश्चात् वर्ष 2005 में धान की उत्पादकता में परिवर्तन नहीं आया तथा वर्ष 1990 –91 की स्थिति में जिले में धान की उत्पादकता 1054.983 किलोग्राम / हेक्टेयर थी वर्ष 2005 की स्थिति में धान की उत्पादकता 1015 किलोग्राम /हेक्टेयर थी जो कि वर्ष 2014 में बढकर 2432 किलोग्राम /हेक्टेयर हो गई तथा वर्ष 1990 –91की स्थिति में जिले में गेहूं की उत्पादकता 1101. 987 किलोग्राम / हेक्टेयर थी वर्ष 2005 की स्थिति में गेहूं की उत्पादकता 1730 किलोग्राम / हेक्टेयर थी जो कि वर्ष 2014 में बढकर 2161 किलोग्राम / हेक्टेयर हो गई इसी प्रकार वर्ष 1990 –91 की स्थिति में जिले में मक्का की उत्पादकता 1111.702 किलोग्राम /हेक्टेयर थी वर्ष 2005 की स्थिति में मक्का की उत्पादकता 1518 किलोग्राम /हेक्टेयर थी जो कि वर्ष 2014 में बढकर 1995 किलोग्राम /हेक्टेयर हो गई। इसी प्रकार सरसों, तिल, कपास, गन्ना आदि फसलो की उत्पादकता में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

इस प्रकार बैतूल जिले की प्रमुख फसलों में धान,गेहूं, सरसों,तिल, कपास,गन्ना,मक्का आदि फसलो की उत्पादकता में वृद्धि हुई है अत: कृषि आर्थिक नीतियों के इन फसलो पर सकारात्मक प्रभाव हुए है इसके अलावा विश्लेषण से यह भी ज्ञात होता है कि 2005 से लेकर 2014 के मध्य सोयाबीन की उत्पादकता में वृद्धि की पृवृत्ति रही है मात्र वर्ष 2013 एवं 2014 में ही सोयाबीन की उत्पादकता कम रही है। वर्ष 2005 से लेकर 2014 के मध्य उड़द, तुअर, मुंग, ज्वार,चना, मसूर आदि फसलों की उत्पादकता में कमी आई है।

एक शताब्दी की समयावधि में बैतूल की कृषि उत्पादकता का विश्लेषण – एक शताब्दी की समयावधि में कृषि विकास का विश्लेषण करने हेतु 1920 –21 से 2014 तक के जिले में फसलोत्पादन के आंकड़ो का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि वर्तमान में जिले की प्रमुख फसल धान जिसकी उत्पादकता वर्ष 1920 –21 में 223.4637 किलोग्राम / हेक्टेयर थी जो वर्ष 1960–61 में 648.1481 किलोग्राम / हेक्टेयर हो गयी तथा 1971 –72 में 1007.435 किलोग्राम / हेक्टेयर हो गयी तथा वर्ष 2014 में 2432 किलोग्राम /हेक्टेयर हो गयी अत: वर्ष 1920 –21 की तुलना वर्ष 2014 में धान की उत्पादकता में लगभग दस गुना की वृद्धि हो गयी है इसी प्रकार जिले की प्रमुख फसल गेहू जिसकी उत्पादकता वर्ष 1920 –21 में 332.9528 किलोग्राम / हेक्टेयर थी जो वर्ष 1960–61 में 540.9175 किलोग्राम / हेक्टेयर हो गयी तथा 1971 –72 में 825.8258 किलोग्राम / हेक्टेयर हो गयी तथा वर्ष 2014 में 2161 किलोग्राम/हेक्टेयर हो गयी अत: वर्ष 1920 –21 की तुलना वर्ष 2014 में धान की उत्पादकता में लगभग दस गुना की वृद्धि हो गयी है इसी प्रकार अन्य फसलो की उत्पादकता में भी वृद्धि हुई यह कृषि विकास नीतियों की सफलता की ओर इंगित करती है।

निष्कर्ष – समय समय पर लागु की गई कृषि विकास नीतियों एवं कार्यक्रमों का बैतूल जिले की कृषि अर्थव्यवस्था के अंतर्गत फसलों की उत्पादकता एवं फसल स्वरुप में परिवर्तन भी परिलक्षित हुए है। उन्नीसवी शताब्दी के प्रारंभ के वर्षो में ज्वार बैतूल जिले की प्रमुख खाद्य फसल थी अत: ज्वार प्रमुख रूप से बोई जाती थी। उन्नीसवी शताब्दी के प्रारंभ के वर्षो में मूंगफली की फसल जिले में बोई जाने वाली नवीन फसल थी। वर्तमान में सोयाबीन की फसल जिले की प्रमुख तिलहन फसल हो चुकी है तथा प्रमुख खाद्यान्न फसल के रूप गेहूं उगाया जाता है हरित क्रांति का बैतूल जिले की कुछ फसलो जैसे गेहूं , धान आदि पर सकारात्मक रूप से पड़ा है तथा तुअर, मूंगफली की उत्पादकता में गिरावट आई है तथा कुछ फसले है जिनकी उत्पादकता पर हरित क्रांति का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। नवीन आर्थिक नीति के पश्चात् बैतूल जिले की विभिन्न फसलों की उत्पादकता पर सकारात्मक प्रभाव पड़े है तथा नकारात्मक प्रभाव का प्रतिशत कम पड़े है इस प्रकार कहा जा सकता है कि समय समय पर लागु की गई कृषि आर्थिक नीतियों के अंतर्गत नवीन आर्थिक नीति के लागु होने के पश्चात समय समय पर लागु की गई कृषि नीतियों का बैतूल जिले की विभिन्न फसलों की उत्पादकता पर व्यापक तथा सकारात्मक प्रभाव पड़े है तथा एल.पी.जी. के नकारात्मक प्रभाव कम पड़े है। वर्तमान में भी बैतूल जिले की कृषि अर्थव्यवस्था के सुधार एवं विकास की आवश्यकता है जिसके माध्यम से यहाँ कृषि एवं कृषि से सम्बंधित क्षेत्रो का भी विकास किया जा सके तथा कृषको की आय में वृद्धि कर जीवन स्तर को सुधारा जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. भारतीय गजेटियर, जिला –बैतूल ,गजेटियर संचालनालय संस्कृति विभाग ,म.प्र. भोपाल 1990 पेज क्र. 126
2. भारतीय गजेटियर, जिला – बैतूल ,गजेटियर संचालनालय संस्कृति विभाग ,म.प्र. भोपाल 1990 पेज क्र. 118
3. कृषि सांख्यिकी 1972, 1976, 1981, 1988
4. मध्यप्रदेश की आधारभूत सांख्यिकी 1987–88 से 1991–92
5. जिला सांख्यिकी पुस्तिका जिला बैतूल 1990
6. कृषि उपसंचालक कार्यालय , बैतूल
7. http//mpkrishi-mp-gov-in

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

छत्तीसगढ़ राज्य के कृषि विकास में सहकारी बैंक के ऋण की मांग एवं ऋण की वसूली का विश्लेषण

उपेन्द्र कुमार साहू* डॉ. प्रेम शंकर द्विवेदी **

* शोधार्थी (वाणिज्य) डॉ. सी वी रमन् विश्वविद्यालय, करगी रोड़, बिलासपुर (छ.ग.) भारत
** सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) डॉ. सी वी रमन् विश्वविद्यालय, करगी रोड़, बिलासपुर (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – सहकारी कृषि बैंक साख प्रदान करने वाली ऐसी संस्था है, जो भूमि के बंधक पर किसानों को उचित ब्याज दर पर पर्याप्त मात्रा में दीर्घकालीन ऋण प्रदान करती है तथा ऋण को आसान किश्तों में चुकाने की छूट होती है। सहकारी बैंको के द्वारा किसानों को अल्पकालीन, मध्यमकालीन, दीर्घकालीन ऋणों की सुविधा उपलब्ध है,खेतीहार किसानों को इस प्रकार के ऋणों की आवश्यकता होती है। किसानों के द्वारा अल्पकालीन, मध्यमकालीन, दीर्घकालीन ऋणों में उनकी कुछ आवश्यकताएँ ऐसी भी होती है, जो एक वर्ष में प्रारंभ होकर एक ही वर्ष में समाप्त हो जाती है। अपनी इन आवश्यकताओं के लिए उन्हें अल्पकालीन ऋणों का प्रयोग किसानों के द्वारा घरेलू व्ययों की पूर्ति करने तथा बीज, खाद आदि के लिए किया जाता है। किसानों को मध्यमकालीन ऋणों की भी आवश्यकता होती है, जिसकी अवधि दो से पांच वर्ष की होती है। किसानों के द्वारा इस ऋण का प्रयोग बैल, गाय, अच्छे कृषि यंत्र खरीदने, कुओं की मरम्मत कराने आदि के लिए किया जाता है तथा किसानों को फसली कार्यो के अतिरिक्त कुछ अन्य दीर्घकालीन आवश्यकताओं जैसे नलकूप लगवाने, कृषि यंत्र खरीदने एवं बंधक भूमि को छुडाने के लिए दीर्घकालीन ऋणों की आवश्यकता होती है। इस प्रकार के ऋणों की आवश्यकता को आज का किसान इसलिए भी और अधिक महसूस करने लगा है, क्योंकि वह भूमि एवं कृषि के विकास में अधिक ध्यान देकर अपनी आय में वृद्धि करना चाहता है। उपरोक्त कार्य में सहकारी कृषि बैकों की भूमिका महत्वपूर्ण रहती है। यह बैंक किसानों को अल्पकालीन, मध्यमकालीन, दीर्घकालीन ऋण प्रदान करते है।

शब्द कुंजी – सहकारी बैक, ऋण की वसूली व मांग, अग्रिम ऋण, ई–बैकिंग, कृषि समितियो।

प्रस्तावना – वर्तमान समय में भारत में विविध बैंकिग प्रणाली प्रचलित है, भारत देश में मुख्य रुप से वाणिज्यिक बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक तथा सहकारी बैंक शामिल है। ये सभी बैंक वित्त के संसाधन को एकत्रित करने और आंबटित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। बैंक धन एकत्रित व बैकिंग कार्य करने के अलावा सामाजिक तथा समावेशीय बैंकिंग के रुप में कार्य करते है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व सहकारी बैंक सन् 1904 के अधिनियम के तहत् साख समितियों की स्थापना के लिए प्रावधान में किया गया था। 19 वीं सदी से ही यह बैंक किसानों को पर्याप्त मात्रा में तथा समय–समय पर सस्ता ऋण प्रदान करता है। सर्वप्रथम सहकारी बैंक 1906 में उत्तरप्रदेश में एक प्राथमिक समिति के रुप में स्थापित हुआ किन्तु, वास्तविक सहकारी बैंक की स्थापना मध्यप्रदेश व बिहार में हुआ जो कि आज तक भारतीय समाज की सेवा के लिए तत्पर्य है। अनेक विवादो के बावजूद यहां बैक सीमित ग्राहक व संचालन क्षेत्र, व्यापार का छोटा स्वरूप, राजनीतिक हस्तक्षेप के बावजूद यहां बैंक विभिन्न समाजों को अपनी सेवा दे रहे है।

छत्तीसगढ़ राज्य के कृषि विकास में सहकारी बैंक की भूमिका एवं कार्यप्राणी सराहनीय है। छत्तीसगढ राज्य सहकारी बैंक मर्यादित का छत्तीसगढ में कृषि विकास को बढावा देने तथा वित्त पोषण की सहायता में प्रमुख योगदान है। छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर ही निर्भर है, क्योकि इस क्षेत्र में कुल आबादी का 85 प्रतिशत से अधिक हिस्सा कार्य पर लगा हुआ है। जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग विभिन्न योजनाओं द्वारा कृषि को बढावा देने और वित्त पोषण करने के लिए, व्यवसाय और व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस अध्ययन का उद्देश्य दुर्ग जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित बैंक के ऋण की मांग व ऋण की वसूली का विश्लेषण करना है। शोध के अध्ययन में वर्णनात्मक व विश्लेषणात्मक अध्ययन है। अध्ययन में पाया गया है कि जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग ने वर्ष (2012–13 से 2018–19) की अवधि के दौरान अच्छा प्रदर्शन किया है, किन्तु बैंक के सामने बहुत सारी चुनौतियाँ भी है। जैसे समुचित विकास को बनाये रखना, कुशल व ईमानदार कर्मचारी का प्रबंधन करना, पेपर बैंकिग को ई–बैकिंग में बदलना और राज्य में कार्यरत अन्य बैंकों के प्रतिस्पर्धा पर काबू पाना, निरन्तर अपने उद्देश्य को प्राप्त करना और विकास क्षमता को बनाए रखना आवश्यक होता है।

एक परिचय – कुशल बैकिंग प्रणाली को किसी भी अर्थव्यवस्था के आर्थिक विकास के लिए बुनियादी आवश्यकता के रूप मे मान्यता प्राप्त है। सहकारी साख के ढ़ाँचे में केन्द्रीय सहकारी बैंक की स्थिति परम महत्व की है, वे राज्य सहकारी बैंक और स्तरीय प्राथमिक कृषि समितियो के बीच महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करते है । भारत की बैंकिग प्रणाली एक बड़े नेटवर्क के शाखाओ के रूप में प्रदर्शित की जाती है। व्यावसायिक बैंको द्वारा अपनी ऋण नीतियाँ इस प्रकार नही बनायी गयी थी। जिससे कृषि के क्षेत्रो में पर्याप्त मात्रा में ऋण सुविधाएँ प्राप्त हो सके। अत: कृषि कार्यो के लिए ऋण की

आवश्यकता थी। जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग (छ.ग.) बैंक सामान्य ऋण नीति का उद्देश्य सम्पूर्ण समाज की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए सहकारितात्मक एवं आधुनिक व्यावसायिक आर्थिक दृष्टिकोण से आर्थिक क्रियाओ के लिए वित्त एवं ऋण प्रदान करना है। यह बैंक विशेष रुप मे विकासशील एवं उन्पादोन्मुख दृष्टिकोण रखते हुए ग्रामीण क्षेत्र के उस कमजोर वर्ग को संस्थागत वित्तीय सुविधाएँ उपलब्ध करता है। जिन्हे अभी तक ऐसी संस्थागत वित्तीय सुविधाएँ उपलब्ध नही हो सकती है। 19वीं शताब्दी की शुरुआत से ही सहकारी बैंको को किसानो को पर्याप्त समय पर तथा सस्ते ऋण प्रदान करते व उन्हे ऋणदाताओ के चंगुल से बचाने के लिए राज्य नीति के उपकरण के रुप मे स्थापित किया गया था। सहकारी ऋण की समस्याओं और संभावनाओ का अध्ययन करने के लिए 1915 मे मैक्लेगन समिति की नियुक्ति कि गयी थी। इस समिति की सिफारिशो पर (साख व्यवस्था का ढ़ाचा) ऋण के लिए सहकारी समितियों का संगठन बनाया गया था।

आकृति क्र.-1

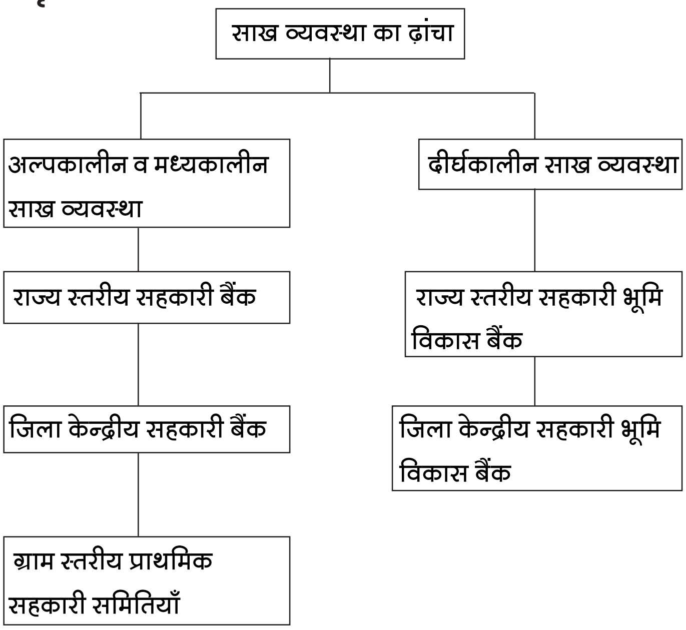

सहकारी ऋण की समस्याओं और संभावनाओ के लिए सन् 1915 मे समिति का निर्माण किया गया। अल्पकालीन व मध्यकालीन साख व्यवस्था हेतु राज्य स्तरीय सहकारी बैंक (राज्य स्तर पर कार्य) तथा जिला केन्द्रीय सहकारी बैंक (जिला स्तर पर कार्य) व ग्राम स्तरीय प्राथमिक सहकारी समितियाँ (ग्राम स्तर पर कार्य) निंरतर कार्य करते रहते है। दीर्घकालीन साख व्यवस्था हेतु राज्य स्तरीय सहकारी भूमि विकास बैंक तथा जिला केन्द्रीय सहकारी भूमि विकास बैंक कार्य करते है।

भारत में सहकारी बैंकिग की भूमिका - भारत मुख्य रूप से एक कृषि प्रधान देश है। हालंकि हाल ही में क्षेत्रीय क्षेत्र में कृषि विकास और परिवर्तन प्राथमिक क्षेत्र, माध्यमिक क्षेत्र में अभी भी अधिकांश लोग कृषि में लगे हुए है और इसकी संबधित गतिविधियां सहकारी बैंक के एक वित्तीय इकाई है, जो अपने संबधित सदस्यों से है, जो कि एक ही समय में अपने बैंक के स्वामी और ग्राहक होते है। सहकारी बैंक अधिकांशत: एक ही स्थानीय तथा पेशेवर समुदाय से संबंधित व्यक्तियों द्वारा बनाए जाते है। सहकारी बैंक अपने सदस्यों को (ऋण, जमा, बैंकिग) आदि की सुविधा प्रदान करते है। सहकारी बैंकिग में खुदरा बैंकिग शामिल है। शहरी इलाको में छोटे पैमाने पर उद्योग, स्व-रोजगार, उपभोक्ता ऋण, व्यक्तिगत ऋण, गृह ऋण आदि आने वाली वाणिज्यिक बैंकिग सेवाएँ भी शमिल है।

सहकारी संगठन की आवश्यकता - विभिन्न व्यापारिक संगठनों में व्याप्त बुराइयों को दूर करने, पूँजीवादी अर्थव्यवस्था को कमजोर करने, व्यापार में आवश्यक मध्यस्थतों को प्राप्त करने के उद्देश्य से सहकारी संगठन की आवश्यकता महसूस की गई जो सहकारीता समानता के सिध्दांत पर आधारित है। पूँजी व श्रम के मध्य खाई (अन्तर) को कम करने के उद्देश्य से भी सहकारिता के आवश्यकता को स्वीकार किया गया। सहकारीता का मूल मंत्र (सिध्दांत) सेवा एवं सहयोग की भावना को बढ़ाना है, इस कारण ही विश्व में सहकारिता संगढ़नों को पर्याप्त समर्थन प्राप्त हो रहा है, जिनसे इनकी लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। भारत जैसा गरीब व विकासशील राष्ट्र के लिए जहाँ गरीब व अशिक्षित जनता का शोषण हो रहा है, वहाँ सहकारिता का विशेष महत्व है।

सहकारी बैंक की पृष्ठभूमि - सहकारी बैंकों ने भारत देश में 100 से अधिक वर्ष पूरे कर लिए है। सहकारी बैंकों का इतिहास 1904 से चला आ रहा है। सन् 1904 में केवल साख समितियों की स्थापना के लिए प्रावधान किया गया था। लेकिन 1904 से 1953 तक सहकारी बैंक का विकास निराशाजनक रहा। सन् 1954 में अखिल भारतीय ग्रामीण साख सर्वे कमेटी ने सहकारी बैंक की व्यवस्था में परिवर्तन के सुझाव दिये थे, प्रथम पंचवषीय योजनाकाल में सहकारी बैंकों के पुर्नगठन की योजना बनायी गयी, किन्तु उस द्वितीय योजनावधि में कड़ाई से लागू किया गया था।

जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग छत्तीसगढ़ - छत्तीसगढ़ क्षेत्र का सहकारी बैंक की स्थापना के अंतगर्त दुर्ग जिला को-आपरेटिव सेन्ट्ल एंड मार्टगेज बैंक लिमिटेड दुर्ग का रजिस्ट्रेशन क्रमांक-17 दिनांक 19 अक्टूबर 1911 को किया गया। 14 व्यक्तियों की समितियों से पंजीयन का कार्य पूर्ण किया गया, 1 जुलाई सन् 1965 को एक बार पुन: बैंक का नाम डिस्ट्रिक्ट सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक लिमिटेड दुर्ग रखा गया। 3 दिसम्बर 1979 को एक बार फिर से नाम परिवर्तित करके जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग रखा गया।

शोध अध्ययन के उद्देश्य - किसी भी शोध कार्य में सफलता का सार्थक परिणाम प्राप्त करने हेतु शोध का पूर्ण तथा निर्धारित लक्ष्य का होना अत्यंत आवश्यक है। जिसके आधार पर शोध कार्य को एक व्यापक गति प्रदान की जाती है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य निम्न है:-

1. बैंक द्वारा ऋण की मांग एवं ऋण की वसूली का वर्ष 2012-13 से 2018-19 तक का विश्लेषण करना है।
2. हितग्राहियों द्वारा की जाने वाली ब्याज अदायगी व ऋण अदायगी एवं डूबत ऋणों का अध्ययन करना।
3. बैंकों के माध्यम से हितग्राहियों को प्रदान की जाने वाली अल्पकालीन, मध्यमकालीन एवं दीर्घकालीन कृषि ऋण योजनाओं का आंकलन करना।

शोध प्रविधियाँ - अध्ययन से यहां मापने का प्रयास किया गया है, कि जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग छत्तीसगढ़ के ऋण की मांग व

ऋण की वसूली का विश्लेषण करना है। अध्ययन एक प्रांसगिक समंक है, जिसे संबधित बैंक की वार्षिक रिपोर्टो, पत्रिकाओ, दस्तावेजो और अन्य प्रकाशित जानकारी से एकत्रित किया गया है। प्राथमिक स्त्रोत के अंतर्गत प्रश्नावली तैयार किया गया, उत्तरदाताओं का साक्षात्कार, सैम्पलिंग करना, चयनित हिग्राहियों से संपर्क किया गया। अध्ययन में वर्ष 2012-13 से वर्ष 2018-19 तक 7 वर्षो की अवधि शामिल है।

प्रस्तावित शोध की अध्ययन पद्धति - प्रस्तावित शोध की अध्ययन पद्धति निम्नलिखित भागों में विभक्त है।

1. **अध्ययन क्षेत्र का चुनाव** - सहकारी बैंकों के विशेष संदर्भ में।
2. **अध्ययनगत इकाई** - प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययनगत इकाई के रूप में दुर्ग जिले के अंतर्गत कर्मचारी वर्ग के विचारों का विश्लेषण, प्रबंध वर्ग के विचारों का विश्लेषण, प्रशासक वर्ग के विचारों का विश्लेषण, हितग्राहीयों के विचारों का विश्लेषण।
3. **उत्तरदाताओं की प्रकृति** - उत्तरदाताओं की प्रकृति के अंतर्गत प्रश्नावली तैयार करके करके उनके उत्तरों की जांच करके निश्चित निष्कर्ष पर शोध करना।
4. **उत्तरदाताओं का चुनाव** - प्रस्तावित अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिला के अंतर्गत कृषि विकास में सहकारी बैंकों का चुनाव बहुस्तरीय निर्देशन के द्वारा किया गया है। जिसके अंतर्गत जिले के कुल तीन विकासखण्डों (दुर्ग, धमधा, पाटन) में से 500 व्यक्तियों का चुनाव दैव निर्देशन के द्वारा किया।
5. **तथ्य संकलन की पद्धति, प्रविधि एवं उपकरण** - प्रस्तावित शोध कार्य हेतु तथ्यों का संकलन दो प्रकार से किया।

1. **प्राथमिक समंक**
2. **द्वितीयक समंक**

प्राथमिक समंक - प्राथमिक तथ्य वे मौलिक सूचनाएं या आंकड़े होते हैं, जो कि शोधकर्ता वास्तविक अध्ययन स्थल में जाकर विषय या समस्या से संबंधित व्यक्तियों से अनुसूची की सहायता से स्वयं एकत्रित करता है। ये वे आंकड़े होते हैं जिन्हें शोधकर्त्ता प्रथम बार एकत्र करता है।

1. इस शोध कार्य में प्रथम समंक के संकलन के लिए प्रश्नावली का प्रयोग किया है।
2. छत्तीसगढ राज्य के कृषि विकास में दुर्ग जिला सहकारी बैंकों, प्रबंधक व संचालक समिति से मिलकर समंकों को एकत्रित किया।

द्वितीयक समंक - वे समंक होते है जिनका संकलन पहले से किसी व्यक्ति या संस्था द्वारा किया जा चुका है और अनुसंधानकर्त्ता उन्हें प्रयोग में लता है। अनुसंधान करते समय यह निश्चित करना पड़ता है, कि मौलिक सामग्री एकत्रित करनी है या प्रकाशित या उपलब्ध सामग्री में से ही कार्य अग्रेषित किया जायेगा। इसके अंतर्गत अध्ययन क्षेत्र के छत्तीसगढ़ के कृषि विकास में सहकारी बैंकों की कौन-कौन से भूमिका से संबंधित विभिन्न शासकीय प्रपत्र व दस्तावेज, विभिन्न शोध पत्र पत्रिकाओं, समाचार पत्रों में से समय-समय पर प्रकाशित तथ्य शामिल है।

आंकड़ों का विश्लेषण - प्रस्तुत शोध में लिये गये उद्देश्यों की पूर्ति हेतु विभिन्न सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया है। इसका वर्णन इस प्रकार से है। सहसंबंध गुणांक प्रमुख रूप से ऋण की मांग व ऋण की वसूली के संबंध की व्याख्या करने हेतु सरल सहसंबंध गुणांक की गणना से किया गया। इस हेतु प्रयुक्त सूत्र इस प्रकार है -

$$r = \frac{\Sigma dxdy}{\sqrt{\Sigma dx^2 \times \Sigma dy^2}}$$

जहाँ

r = सरल सहसंबंध गुणांक
$\Sigma dx2$ = x श्रेणी के विचलन के वर्ग का योग
$\Sigma dy2$ = y श्रेणी के विचलन के वर्ग का योग
$\Sigma dxdy$ = x एवं y श्रेणी के विचलन के वर्ग का गुणनफल का योग

शोध अध्ययन का क्षेत्र - शोध कार्य में शीर्षक चयन के पश्चात् अध्ययन क्षेत्र का चयन किया जाता है। अध्ययन के परिणाम को सुनिश्चित करने, समय और संसाधनों की कमी के कारण, अध्ययन को कुछ सीमाओं तक सीमित किया गया है। इनमें से कुछ का उल्लेख यहाँ किया गया है ,ताकि अध्ययन के निष्कर्षो को उचित परिप्रेक्ष्य में समझा जा सके। यहाँ अध्ययन (दुर्ग,धमधा,पाटन) के सहकारी बैंको के द्वितीय समंक जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग (छ.ग.) की वार्षिक रिपोर्टो से लिया गया है।

सारणी 1 दुर्ग जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक (छ.ग.) ऋण की मांग एवं ऋण की वसूली

क्रं.	वर्ष	ऋण की मांग	ऋण की वसूली	बकाया ऋण	वसूली प्रतिशत
1	2012-13	424.42	222.42	202.00	52%
2	2013-14	477.28	341.28	136.00	71%
3	2014-15	510.55	109.85	400.70	21%
4	2015-16	601.08	275.95	325.13	45%
5	2016-17	672.48	342.18	330.30	50%
6	2017-18	814.83	509.20	305.63	62%
7	2018-19	977.72	723.46	254.26	73%

स्त्रोत :- (जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग छ.ग. का वाषिक प्रतिवेदन वर्ष 2012-13 से वर्ष 2018-19 तक)

आरेख 1 ऋण की मांग एवं ऋण की वसूली

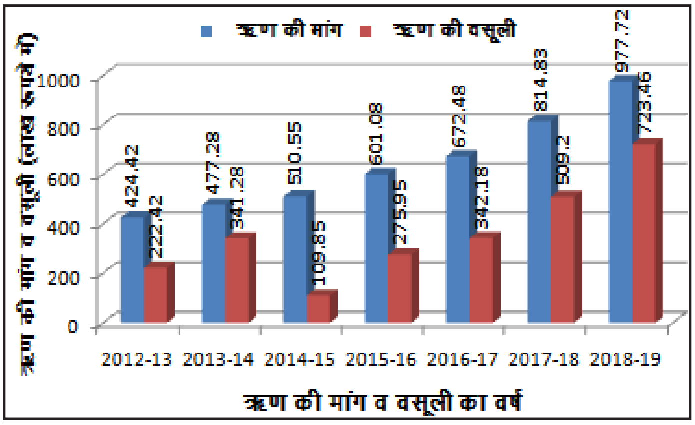

स्पष्टीकरण - इस प्रकार उपयुक्त सारणी 1.1 से यह ज्ञात हो रहा है, कि 2012-13 में कुल ऋण की मांग 424.42 लाख रूपये थी। जिसमें से ऋण की वसुली 222.42 लाख रूपये हो सकी है, तथा अभी भी 202.00 लाख रूपये बाकाया है। इस प्रकार ऋण की मांग एवं ऋण की वसुली का प्रतिशत देखा जाये तो यहां 52 प्रतिशत था। उपयुक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है, कि कुल ऋण की मांग तथा ऋण की वसूली में वृद्धि हो रहा है। वर्ष 2013-14 में कुल ऋण की मांग 477.28 लाख रूपये थी, जिसमें से ऋण की वसुली

341.28 लाख रूपये हो पाया है। तथा अभी भी 136.00 लाख रूपये बकाया है। इस प्रकार ऋण की मांग व ऋण की वसुली का प्रतिशत देखा जाये तो गत् वर्ष कि तुलना में इस वर्ष में वृद्धि हो रहा है, जो कि 71 प्रतिशत था। उपयुक्त सारणी से स्पष्ट है, कि ऋण की मांग तथा ऋण की वसूली में वृद्धि हो रहा है। परन्तु वर्ष 2014-15 में ऋण की मांग 510.55 लाख रूपये परन्तु ऋण की जो वसूली है, वह 109.55 लाख रूपये कि कमी पाया गया है, बकाया ऋण भी इस वर्ष 400.70 लाख रूपये है, जो अधिक है। अत: इस उपयुक्त सारणी से देखा जाये तो इसकी मांग व वसुली की प्रतिशत 21 प्रतिशत ही रहा है। इसके बाद वाले वर्षो में लगातार वृद्धि देखने को मिला है, वर्ष 2015-16 फिर एक बार ऋण की मांग 601.08 लाख रूपये था। जिसका वसूली कार्य 275.95 लाख रूपये था, और बकाया 325.13 लाख रूपये है। इस प्रकार ऋण की मांग व ऋण कि वसुली का प्रतिशत देखा जाये तो यहां 45 प्रतिशत था। इस प्रकार अध्ययन अवधि में यहां पाया गया कि ऋण की मांग तथा ऋण कि वसूली में वृद्धि हुई है। वर्ष 2016-17 की तुलना में 45 प्रतिशत से वृद्धि होकर 50 प्रतिशत हो जाता है, जिसका सीधा व प्रत्यक्ष संबंध ऋण की वसूली पर हुआ है, तथा वर्ष 2017-18 में 62 प्रतिशत की वृद्धि होती है। जो कि वर्ष 2018-19 में 73 प्रतिशत की वृद्धि होती है। जिससे यहां स्पष्ट होती है, कि दुर्ग जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग छत्तीसगढ़ में ऋण की मांग तथा ऋण की वसूली एवं बकाया ऋण में वृद्धि हो रहा है, जो कि दुर्ग जिला के आर्थिक विकास में हुई प्रगति का महत्वपूर्ण परिचालक है।

ऋण की मांग एवं ऋण की वसूली की राशि को लेकर सांख्यिकी विधि ये यह सह-संबंध गुणांक की गणना करते हुए ऋण की मांग एवं ऋण की वसूली के बीच में सह-संबंध प्रदर्शित किया गया है।

ऋण की मांग का औसत **ऋण की वसूली का औसत**

$$\bar{x} = \frac{\Sigma x}{N} \qquad \bar{y} = \frac{\Sigma y}{N}$$

$$\bar{x} = \frac{4478.36}{7} \qquad \bar{y} = \frac{2524.34}{7}$$

$$\bar{x} = 639.765 \qquad \bar{y} = 360.62$$

$$r = \frac{\Sigma dxdy}{\sqrt{\Sigma dx^2 \times \Sigma dy^2}}$$

जहाँ -

$$r = \frac{216563.47}{\sqrt{236788.88 \times 243590.82}}$$

$$r = \frac{216563.47}{\sqrt{57679597446}}$$

$$r = \frac{216563.47}{240165.77}$$

$$r = 0.90$$

निष्कर्ष - भारत गांवो का देश है एवं छत्तीसगढ को धान का कटोरा की संज्ञा दी गयी अर्थात प्रदेश में खेती एवं किसानों को प्रमुखता दी गयी है। अध्ययन से स्पष्ट है कि यदि सह-संबंध गुणांक से 0.75 के मध्य होने पर यह उच्च कोटि का 1 धनात्मक सहसंबंध प्रदर्शित करता है। इस प्रकार ऋण की मांग व ऋण की वसूली के मध्य 0.90 का सहसंबंध है। जो यह प्रदर्शित करता है, कि ऋण की मांग के अनुरूप प्रतिवर्ष ऋण की वसूली में भी वृद्धि हो रहा है। जिसमें यह स्पष्ट होता है, कि जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग (छ.ग.) बैंक को वितरित किये गये ऋण में से अधिक से अधिक वसूली प्राप्त होता है, अर्थात् आगे आने वाले वर्षो में भी ऋण के मांग के अनुरूप ऋण उपलब्ध कराकर उसकी वसूली की जायेगी, जो कि आर्थिक विकास में हुई वृद्धि का परिचायक सिद्ध होता है।

कृषि विकास एक पद्धति है,जिसके द्वारा ग्रामीण क्षेत्र के निर्धन और गरीब लोगों की सहायता की जाती है। सहकारी बैंको के द्वारा दिए जाने वाले ऋणों से अधिक कृषकों, खेतीहार मजदूरी और श्रमिक वर्ग के लोगो को इन सुविधाओं से लाभान्वित होते है। जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित द्वारा फसल ऋण कृषकों को यथा समय और आसानी से प्रदान किया जा रहा है। बैंक का उद्देश्य कृषि कार्यो के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना है तथा कृषकों को आत्मनिर्भर बना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. अग्रवाल.,एम.आर,(वर्ष1981),प्रबंध लेखाकन, नेशनल पब्लिशिंग, नई दिल्ली
2. बुन्देल.,शंकर प्रताप सिंह,(वर्ष1998),दीर्घकालीन कृषि साख का आर्थिक महत्व, लैण्ड बैंक जर्नल
3. छत्तीसगढ राज्य का आर्थिक सर्वेक्षण,(वर्ष 2011),आर्थिक एवं सांख्यिकीय, दुर्ग जिला
4. गुप्ता.,डॉ..एस.पी,(वर्ष1991),प्रंबधकीय लेखाविधि, साहित्य भवन, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रब्यूटर्स प्रा.लि. आगरा
5. गुप्ता.,डॉ.शिवभूषण,(वर्ष1998),कृषिअर्थशास्त्र, एस.बी.पी.डी. पब्लिशिंग हाउस, आगरा
6. गुप्ता.,डॉ.ओ.पी.,बैंकिग विधि एवं व्यवहार, साहित्य भवन, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रब्यूटर्स प्रा.लि.आगरा
7. गुप्ता.,डॉ.बी.पी.,सहकारिता के सिद्धान्त एवं व्यवहार, रमेश बुक डिपो, जयपुर
8. जैन.,डॉ.बी.एम,(वर्ष1989),रिसर्च मथडोलॉजी, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर संस्करण
9. जैन.,पी.सी,(1989),सहकारिता, रिसर्च पब्लिकेशन, नई दिल्ली
10. जिला परिचय- एक दृष्टि में, जिला सांख्यिकी कार्यालय, दुर्ग
11. जैन.,डॉ.एस.सी.,(वर्ष1889),शोध पद्धतियां एवं साख्यिकिय तकनीक, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल
12. करीम.,अब्दुल एवं अन्य,(वर्ष2001),वित्तीय लेखांकन, साहित्य भवन, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रब्यूटर्स प्रा.लि.आगरा
13. कुलश्रेष्ट.,डॉ.आर.एस,(वर्ष2000),वित्तीय प्रबंध, साहित्य भवन आगरा
14. कपिल.,डॉ.एच.के,(वर्ष1991),अनुसंधान विधियां, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा
15. कोठारी प्रो., एसएल कोठारी डॉ. मिलिंद.,(वर्ष 1990),बैंकिंग विधि एवं व्यवहार, साहित्य भवन आगरा
16. माथुर.,डॉ.बी.एस,(वर्ष1992),को-आपरेशन, साहित्य भवन आगरा

17. मेहता.,डॉ.बी.के,(वर्ष1997),अंकेक्षण के सिद्धान्त, साहित्य भवन, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर प्रा.लि.आगरा
18. माथुर.,डॉ.बी.एस,(वर्ष2001),भारत में सहकारिता, साहित्य भवन , पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर प्रा.लि.आगरा
19. मिश्रा पी.,(वर्ष1991),बैंकिंग विधि एवं व्यवहार, साहित्य सदन आगरा
20. मेहता डॉ. बी.के.,(वर्ष1997),अंकेक्षण, साहित्य पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर प्रा.लि. आगरा
21. पुरी.,वी.के.एवं मिश्र.एस.के,(वर्ष1998),भारतीय अर्थव्यवस्था, हिमालय पब्लिशिंग हाउस, मुम्बई
22. पांडेय आर.एम.दुबे प्रभाकर.,(वर्ष 1991),मुद्रा एवं बैंकिंग के तत्व, साहित्य सदन आगरा
23. ऋणनिति- जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित, दुर्ग 2012-13 से 2018-19
24. शर्मा.हरिशचन्द्र.शर्मा.राजकुमार.,(वर्ष1995),बैंकिग विधि एवं व्यवहार, साहित्य भवन आगरा
25. शुक्ला., डॉ.एस.एम.एवं सहाय,डॉ.शिवपूजन,(वर्ष2001),सांख्यिकी के सिद्धान्त, साहित्य भवन पब्लिकेशन ,आगरा
26. वार्षिक प्रतिवेदन,जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग छ.ग. 2012-13 से 2018-19

ऋण की मांग एवं ऋण की वसूली का सांख्यिकी विश्लेषण

क्रं.	वर्ष	ऋण की कुल मांग			ऋण की कुल वसूली			
		X	dx (x-x)	dx^2	y	dy (y-y)	dy^2	dx.dy
1	2012-13	424.42	-215.3	46354.09	222.42	-138.2	19099.24	29754.46
2	2013-14	477.28	-162.4	26373.76	341.28	-19.3	372.49	314.32
3	2014-15	510.55	-129.2	16692.64	109.85	-250.8	62900.64	32403.36
4	2015-16	601.08	-38.7	1497.69	275.95	-84.7	7174.09	3277.89
5	2016-17	672.48	+32.7	1069.29	342.18	-18.4	338.56	-601.68
6	2017-18	814.83	+175.0	30625.0	509.20	+148.6	22081.96	26005.0
7	2018-19	977.72	+337.9	114176.41	723.46	+362.8	131623.84	122590.12
	N=7	Σx = 4478.36	Σdx = 0	Σdx^2 = 236788.88	Σy=2524.34	Σdy = 0	Σdy^2 = 243590.82	Σdxdy =216563.47

$$r = \frac{\Sigma dxdy}{\sqrt{\Sigma dx^2 \times \Sigma dy^2}}$$

जहाँ

r = ऋण की मांग व वसूली का सरल सहसंबंध गुणांक
x = ऋण की मांग
dx = ऋण की मांग का माध्य से विचलन
dx^2 = विचलनों का वर्ग
y = ऋण की वसूली
dy = ऋण की वसूली का माध्य से विचलन
dy^2 = विचलनों का वर्ग
dxdy = ऋण की मांग व ऋण की वसूली के विचलनों का गुणनफल

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

ग्राम पंचायतों की कार्य शैली का मूल्यांकन

शिवराज सिंह राठौड़ *

* शोधार्थी, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – ग्राम पंचायत एक कार्यकारिणी संस्था है। इसके द्वारा विकास कार्यों का क्रियान्वयन किया जाता है। ग्राम पंचायत में सभी धर्म, जाति, वर्ग, लिंग एवं संप्रदाय के लोग सम्मिलित रहते है। हर वर्ग का प्रतिनिधित्व इसमें होता है। परन्तु अभी भी ग्राम पंचायतों में सुधार की आवश्यकता है। ग्राम सभा में लोगों की भागीदारी बढ़ाने की जरूरत है। लोगों को राजनीतिक रूप से सजग एवं उनकी अभिरूचि बनाना आवश्यक है। तभी हम ग्राम पंचायतों को एक सफल संस्था के रूप में देख पायेगे। अभी ये संस्थाएँ अभिजन वर्ग के हाथों में है। सरपंच द्वारा ही ग्राम पंचायत का संचालन किया जाता है। शेष पंचायत सदस्य मात्र दर्शक होते है।

शब्द कुँजी – ग्राम पंचायत, ग्राम सभा, सरपंच, जनप्रतिनिधि।

प्रस्तावना – स्वतंत्रता का मुख्य ध्येय सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक रूप से स्वतंत्रता प्राप्त करना है। भारत को स्वतंत्रता प्राप्ति को 74 वर्ष व्यतित हो गये है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 40 में पंचायतों के गठन का कहा गया है। सच्चे लोकतंत्र की स्थापना तभी मानी जाएगी जब समाज के अंतिम व्यक्ति की भागीदारी सत्ता में होगी। सत्ता तक पहुँच अंतिम वर्ग के लोगों की होना चाहिए। लोकतंत्र में लोक का आशय जनता से है। और तंत्र का आशय व्यवस्था से है अर्थात ऐसी शासन व्यवस्था जिसकी बागडोर जनता के हाथ में हो। जनता के द्वारा कानून निर्माण का कार्य हो जनता के द्वारा कानून का क्रियान्वयन हो तथा जनता के द्वारा उनके कार्यों की समीक्षा की जाये। तभी हम कह सकते है कि यह वास्तविक लोकतंत्र है। भारत में वास्तविक लोकतंत्र के दर्शन हमें पंचायत राजव्यवस्था में देखने को मिलते है। पंचायत राज व्यवस्था भारत में प्राचीन काल से विद्यमान है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात पंचायत राज की स्थापाना पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा राजस्थान के नागौर जिले से 2 अक्टुबर 1959 से की थी। सन् 1994 में 73 वें संविधान संशोधन अधिनियम 1993 के द्वारा इस व्यवस्था को संवैधानिक मान्यता प्राप्त हो गई। तब से लेकर वर्तमान समय तक इस व्यवस्था ने कई किर्तिमान स्थापित किए है। इस व्यवस्था से समाज का हर वर्ग जुड़ता जा रहा है। पंचायत राजव्यवस्था में ग्राम पंचायत सबसे निचला पायदान है। गांव के सभी लोग भागीदारी करते है। इस संस्था की कार्य करने की अपनी शैली है। इसका विवेचन एवं मूल्यांकन प्रस्तुत शोध पत्र में वर्णित किया गया है।

73वाँ संविधान संशोधन अधिनियम 1993 – 73वें संविधान संशोधन विधेयक को सर्वप्रथम 72वाँ संविधान संशोधन अधिनियम के तौर पर संसद में लाया गया था। 1992 में 72वाँ संविधान संशोधन विधेयक 73वाँ संविधान संशोधन हो गया। 24 अप्रैल 1993 से इस विधेयक ने कानून का रूप धारण कर एवं लगभग सम्पूर्ण भारत में इसे लागू कर दिया गया। (चन्द्रशेखर : 2000–7) इस कानून को संविधान के अंतर्गत अध्याय 9 जोड़ा गया है। इस अध्याय में कुल 16 अनुच्छेदों को सम्मिलित किया गया है। ये अनुच्छेद 243 'क' से लेकर 243 'ण' तक वर्णित है। इस अधिनियम के द्वारा संविधान में 11वीं अनुसूची को जोड़ा गया है। इस अनुसूची में पंचायतों के कार्यों का वर्णन किया गया है। संविधान की 11वीं सूची के विषय इस प्रकार है। कृषि विस्तार, सहित कृषि, भूमि सूधार, भूमि समकेन और मिट्टी संरक्षण, लघु सिंचाई, जल प्रबंधन और जल विकास, पशुपालन, डेयरी और पोल्ट्री, मत्स्यपालन, सामाजिक वानिकी और कृषि वानिकी, लघु वनोपज, लघु उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, खादी ग्रामीण और कुटीर उद्योग, ग्रामीण आवास, पीने का पानी, ईंधन और चारा, सड़क पुलिया, पुल, फेरी, जलमार्ग और संचार के अन्य साधन, ग्रामीण विद्युतीकरण, बिजली वितरण, गैर परम्परागत उर्जा स्त्रोत, गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम, शिक्षा, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा सहित, तकनीकी प्रशिक्षण और व्यावसायिक शिक्षा, वयस्क एवं अनौपचारिक शिक्षा, पुस्तकालय, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, बाजर एवं मेले, स्वास्थ्य और स्वच्छता, अस्पताल, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र एवं औषधालय सहित, परिवार कल्याण, महिला एवं बाल विकास, समाज कल्याण, विकलांग और मानसिक रूप से मंद के कल्याण सहित, कमजोर वर्गों का कल्याण, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, समुदाय व्यवस्था का रखरखाव इत्यादि। (सिसोदिया : 2011–6)

73वें संविधान संशोधन अधिनियम के द्वारा त्रिस्तरीय पंचायत राज व्यवस्था की स्थापना की गई। जिला स्तर पर जिला पंचायत, मध्य स्तर पर जनपद पंचायत तथा ग्राम स्तर पर ग्राम पंचायत। तीनों स्तर की पंचायतों में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति एवं महिलाओं के लिए स्थानों का आरक्षण की व्यवस्था की गई है। पंचायत राज संस्था का 5 वर्ष का कार्यकाल होता है। इस अधियम के द्वारा राज्य निर्वाचन आयोग तथा राज्य वित्त आयोग के गठन का प्रावधान किया गया है। राज्य वित्त आयोग पंचायत राज संस्थाओं को वित्त प्रबंधन में सहायता करता है। पंचायत द्वारा एकत्रित करो एवं शुल्क का वितरण करता है। राज्य निर्वाचन आयोग पंचायतों के निर्वाचन सम्पन्न करना, निर्वाचन नामावली, निर्वाचनों का अधिक्षण, निर्देशन

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

जैसे कार्यों को करता है। (म.प्र. पंचायत राज अधिनियम 1993)

ग्राम पंचायतों की कार्यशैली - ग्राम पंचायत ग्रामीण स्थानीय स्वशासन की कार्यपालिका संस्था होती है। यह संस्था ग्राम सभा द्वारा अनुमादित कार्यों का क्रियान्वयन करती है। ग्राम पंचायत विकास कार्यों हेतु समिति का गठन करती है एवं इन समिति में कार्यों का बँटवारा कर देती है। ये समितियाँ अपने कार्य क्षेत्र के अन्तर्गत आँवटित कार्य का पर्यवेक्षण, निरिक्षण का संचालन, मुल्यांकन इत्यादि कार्य सम्पन्न करती है एवं अपने कार्यो का प्रतिवेदन ग्राम सभा के पटल पर रखती है। हमने ग्राम पंचायतों के कार्य शैली मुल्यांकन करने हेतु मध्यप्रदेश के शाजापुर जिले के अन्तर्गत जनपद पंचायत शाजापुर एवं जनपद पंचायत कालापीपल की 10-10 ग्राम पंचायतों का सर्वे किया इसके अन्तर्गत हमने प्रत्येक पंचायत से तीन महिला एवं तीन पुरूषों का साक्षात्कार किया। इस प्रकार से कुल 120 उत्तरदाताओं से तथ्य एकत्रीत किये है। जिसका वर्णन निम्न तालिका में किया गया है।

तालिका 1 - ग्राम पंचायत कार्यशैली का आंकलन

क्र.	ग्राम पंचायत की कार्यशैली	हाँ	नहीं
1.	ग्राम सभा में भाग लेते है ?	27 (22.5)	93 (77.5)
2.	ग्राम सभा में अपना पक्ष रखते है ?	17 (14.16)	10 (8.33)
3.	हितग्राही का चयन ग्राम सभा द्वारा होता है ?	23 (19.16)	04 (3.33)
4.	ग्राम पंचायत की योजनाओं का लाभ लेने में समस्या आती है ?	15 (12.5)	105 (87.5)
5.	ग्राम पंचायत के कार्यो के क्रियान्वयन से संतुष्ट है ?	31 (25.83)	89 (74.16)
6.	ग्राम पंचायत में विकास कार्य हुए है?	29 (24.16)	91 (75.83)

स्त्रोत प्राथमिक सर्वेक्षण आँकड़े।

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 22.5 प्रतिशत लोग ग्राम सभा की बैठकों में भाग लेते है। जबकि 77.5 प्रतिशत लोग ग्राम सभा की बैठको में भाग नहीं लेते है। इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश लोग ग्राम सभा की बैठकों में नदारत रहते है। ग्राम सभा जहाँ ग्राम पंचायत की समस्याओं की प्राथमिकता द्वारा निदान किया जाता है। यदि लोगों की भागीदारी ग्राम सभा में इतनी कम रहेगी तो ग्राम सभा की सारी शक्ति कुछ अभिजनों के हाथों की कठपुतली बनकर रह जाएगी। मात्र 14.16 प्रतिशत लोग ग्राम सभा में अपना पक्ष रखते है। 22.5 प्रतिशत उपस्थित लोगों में से 8.33 प्रतिशत ग्राम सभा में अपना पक्ष नहीं रख पाते है। 22.5 प्रतिशत उपस्थित लोगों में से 19.16 प्रतिशत लोगों का मानाना है कि ग्राम सभा शासन की योजनाओं का लाभ प्रदान करने हेतु हितग्राहियों का चयन करती है। तथा 3.33 प्रतिशत लोगों का मानना है कि ग्राम सभा हितग्राहियों का चयन नहीं करती है। ग्राम पंचायत के सदस्य उसी ग्राम पंचायत क्षेत्र के निवासी होते है। इन लोगों से गाँव के सभी निवासी परिचित रहते है। इस कारण योजना का लाभ लेने में इन लोगों को समस्या नहीं आनी चाहिए। यही संकेत हमारी तालिका के आँकडे कर रहे है। 12.5 प्रतिशत लोगों का मानना है कि ग्राम पंचायत द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जबकि 87.5 प्रतिशत लोगों का मानाना है कि ग्राम पंचायत द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ लेने में उन्हें किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं आती है। 25.83 प्रतिशत लोग ग्राम पंचायत के कार्यों से संतुष्ट है तथा 74.16 प्रतिशत लोग ग्राम पंचायत के कार्यो से संतुष्ट नहीं है। 24.16 प्रतिशत लोगों का मानना है कि उनकी ग्राम पंचायत में विकास हुआ है। जबकि 75.86 प्रतिशत लोगों का मानना है कि उनकी ग्राम पंचायत में विकास नहीं हुआ है।

निष्कर्ष - उपर्युक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्राम सभाओं में लागों की भागीदारी नाममात्र की है। ग्राम सभा की समस्त शक्तियों का प्रयोग सरपंच, पंचायत सचिव एवं ग्राम के अभिजन वर्ग के हाथों में रह गई है। ग्राम पंचायत में अपात्र को कई योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है। विकास नाममात्र का हुआ है। साथ ही योजनाओं का लाभ लेना आसान हुआ है। धीरे-धीरे लोगों की भागीदारी में वृद्धि हो रही है। तथा समाज के हर वर्ग को सत्ता में भागीदारी सुनिश्चित हुई है। ग्राम सभा समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करती है। ग्राम पंचायत धन के मामले में पूरी तरह राज्य सरकार के ऊपर निर्भर रहती है। उसकी स्वयं की आमदनी बहुत कम है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. चन्द्रशेखर बी.के.(2000): भारतीय प्रशासन साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा
2. सिसोदिया, यतीन्द्र सिंह एवं आशीष भट्ट (2011) : मध्यप्रदेश म.प्र. पंचायत राज व्यवस्था विविध आयाम म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल
3. मध्यप्रदेश पंचायत राज एवं ग्राम स्वराज अधिनियम 1993

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

कोरोना काल में शिक्षा व्यवस्था

डॉ. शशिकिरण नायक* डॉ. रोहिणी त्रिपाठी **

* प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) सरोजनी नायडू शासकीय कन्या महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत
** अतिथि विद्वान (अर्थशास्त्र) माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – कोरोना वायरस को महामारी घोषित विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने किया है। कोविड-19 का संक्रमण बहुत जल्दी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। इसलिए इस वायरस से बचाव के लिए सरकार द्वारा सावधानी की सलाह दी जा रही है।

कोरोना वायरस एक ऐसा संक्रमण है जिसमें व्यक्ति को सर्दी-जुकाम और सांस लेने जैसी समस्याऐं हो सकती है। यदि किसी व्यक्ति को कोरोना हुआ है तो वायरस उस व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में बहुत जल्दी चला जाता है। इसलिए इससे बचने के लिए सामाजिक दूरी रखने की सलाह दी जा रही है। सरकार सामाजिक दूरी बनाऐ रखने पर जोर दे रही है ताकि इस वायरस से बचा जा सके। यही कारण है कि पूरे देश में लॉकडाउन किया गया है।

इस महामारी से बचने के लिए सरकार द्वारा एक नया (App) 'आरोग्य सेतु' का निर्माण किया गया है, इस 'आरोग्य सेतु' ऐप में हमारे घर मोहल्ले व आस-पास से लेकर 2-4 किमी तक में जो भी व्यक्ति संक्रमित हो उसके बारे में बताया जाता है, इससे हमे यह पता चलता है कि वहां वह व्यक्ति संक्रमित है और हम और ज्यादा सावधानी रखते है।

इस बीमारी के लक्षण की बात करें तो यह एक सामान्य सर्दी-जुकाम या निमोनिया जैसा होता है। इस वायरस का संक्रमण होने के बाद बुखार, जुकाम सांस लेने में तकलीफ नाक बहना और गले में खराश जैसी समसयाएँ होती है। यह वायरस एक से दूसरे व्यक्ति में बहुत आसानी से फैलता है, इसलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरती जा रही है। 'यह वायरस दिसम्बर 2019 से पहले चीन में सामने आया था और जब यह बड़ी तैजी से दूसरे देशों में भी पहुंच रहा है।'

हमारे सामने एक बहुत ही बड़ा उदाहरण है इस कोरोना वायरस को लेके। महान अभिनेता श्री अमिताभ बच्चन जी भी इस महामारी से सकंमित हुऐ थे, जिन्होनें हमें कोरोना वायरस से बचने के उपाय बताए थे। वे खुद इस सकंमण से पिड़ित हुए थे। इससे हमें यह पता चलता है कि यह वायरस गरीब-अमीर नहीं हर एक व्यक्ति को हो सकता है और यह एक गम्भीर बिमारी है, हमें इससे सतर्क रहना अत्यन्त ही आवश्यक है।

सबसे ज्यादा अगर कोरोना का असर हुआ है, तो वह है शिक्षा व्यवस्था। शिक्षा हमारे जीवन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है कोरोना के चलते शिक्षा अच्छे से नहीं हो पा रही है, यहां तक कि स्कूल में 10वीं के पेपर भी जिसमें हिन्दी अंग्रेजी नही हो पाए और मजबूर होकर सरकार को अन्य 4 विषय के पेपर में ही रिजल्ट घोषित करना पड़ा। अत: 12वीं के बाद शिक्षक छात्र-छात्राओं को अन्य परेशानियों का सामना करना पड़ा है, छात्र-छात्राओं को कॉलेज लेने में ज्यादा समय लगा और इसके चलते कुछ तो कॉलेज भी नहीं जा सके और अन्य छात्रों को भी (COVID-19) के कारण पढ़ाई करने में समस्या आ रही है।

महाविद्यालय में ऑनलाइन पढ़ाई कराई जा रही है, हम सभी विद्यार्थी में शिक्षकों को आदर्श मानते है और ऑनलाइन पढ़ाई से शिक्षक को ओर भी महान मानने लगे। क्योंकि शिक्षक ने ऑनलाइन पढ़ाई शुरू करा के करोड़ों बच्चों के भविष्य को खराब होने से बचाया है।

कोरोना वायरस का प्रभाव आज सम्पूर्ण विश्व पर पड़ रहा है। दुनिया भर के लगभग 190 देश इसकी चपेट में आए है।

प्राथमिक हो या माध्यमिक या उच्च शिक्षा छात्रों का पठन पाठन बुरी तरह से प्रभावित हुआ है। कुछ बड़े संस्थान जैसे आईआईटी, आईआईएम, एमिटी यूनिवर्सिटी एवं अन्य ने ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली का इस्तेमाल कर अपने छात्रों का सहयोग करने की पूरी कोशिश की है, परन्तु ऐसे संस्थान गिनती के है। हमारी एमिटी यूनिवर्सिटी में सभी प्रोफेसर प्रतिदिन ऑनलाइन ऐप्स के माध्यम से अपने सभी छात्रों से बात करते है, उनका मार्गदर्शन करते है।

भारत जैसे युवा देश जिसमें छात्रों की संख्या इतनी अधिक हो यह स्थिति चिंता जनक है। उच्च शिक्षा पर इसके प्रभाव को लगभग हर हिस्से में देखा जा सकता है।

ऑनलाइन शिक्षा को करोना काल में एक मजबूरी के रूप में देखा जा रहा है, कल सकते है कि यह समय की मांग है। महामारी के दौरान शारीरिक दूरी बनाए रखने की स्थिति में ऑनलाइन शिक्षा ही ठीक रही है, हालांकि इसकी फिजिकल स्कूल और क्लास से कोई तुलना नहीं है अच्छी तरह सीखने के स्तर पर ऑनलाइन शिक्षा कॉलेज की कक्षा की जगह नहीं ले सकती है। ऑनलाइन शिक्षा ग्रामीण भारत की पहुंच से बहुत दूर और अव्यावहारिक है।

कोरोना के दबाव के कारण कॉलेजों में डिजिटल माध्यम का प्रभाव लंबे समय तक रहनें वाला है। कोरोना से हटकर भी देखा जाए तब भी भारत जैसे गरीब देश में ऑनलाइन शिक्षा की जरूरत आ गई है, क्योंकि बड़ती जनसंख्या और जनता की अपेक्षाओं के अनुरूप हमारे पास पर्याप्त स्कूल कॉलेज उपलब्ध नहीं है। नर्सरी और प्राइमरी कक्षाओं में दाखिले के लिए भी पूरे देश में अफरा-तफरी मची रहती है। ऑनलाइन के विकल्प से स्कूलों पर दबाव भी कम होगा और अभिभावकों एवं बच्चों के लिए अपने-अपने ढंग से पढ़ने-पढ़ाने की स्वतंत्रता भी अर्थात् स्कूल कॉलेज में दाखिले की अनिवार्यता खत्म हो जाएंगी। भारत में वेसे ही इतनी आबादी है और इतनी गरीबी है जिसके चलते हम ठीक

से कॉलेज में दाखिला नहीं ले पाते। उस पर यह कोरोना काल में ऑनलाइन पढ़ाइ कराई जा रही है, जिसमें 70 प्रतिशत जनसंख्या ऑनलाइन पढ़ाई का लाभ नहीं ले पा रही है, जिससे की बच्चों की पढ़ाई पर प्रभाव पड़ रहा है।

कोरोना वायरस को लेकर लोगों में एक अलग ही बेचैनी देखने को मिली है। मेडिकल स्टोर्स में मास्क और सैनेटाइजर की कमी हो गई है, क्योंकि लोग तेजी से इन्हें खरीद रहे है।

कोरोना संक्रमण की शुरूआत चीन में 2019-20 में हुई थी। भारत में संक्रमण का पहला मामला 26 फरवरी 2020 को पाया गया था, 2020 को भारत में इसके फैलने की पुष्टि हुई थी। 09 अप्रेल 2021 तक इस वायरस से भारत में 1,29,28574 मामलों की पुष्टि की है जिसमें 1,66,862 लोगों की मृत्यु हुई है।

कोरोना तो साक्षात चीनी महामारी है। इसका मुकाबला इसके चुनौती मानकर ही किया जा सकता है। यह हमारे जीवन का सबसे दुखद दुर्भाग्य पूर्ण समय है कि हम अपनों के अंतिम दर्शन तक नहीं कर पा रहे हैं। जिन्होंने हमें जीवन के पथ पर चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो या सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र हो मार्गदर्शन देकर सही रास्ते पर चलना सिखाया, गुरू के रूप में संभलना सिखाया, हमेशा हम सब पर स्नेह आशीष का वरदहस्त रखा, प्रेरणा स्त्रोत बनें, दुख में ढांढस बंधाया, अंतिम समय में उन्हें हम कांधा भी नहीं दे पा रहे है। इस कठिन समय में एक के बाद एक महान व्यक्तित्व हमसे दूर जा रहा है। हमारें समय का यह सबसे भीषणतम दौर है। कोरोना से बचने हेतु दिए गये महत्वपूर्ण निर्देशों का पालन करते हुए ही हम अपने छात्र-छात्राओं को सुरक्षित सामाजिक शिक्षा व्यवस्था के साथ बढने हेतु दृढ़ संकल्पित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. नईदुनिया- समाचार पत्र
2. दैनिक भास्कर- समाचार पत्र
3. पत्रिका- समाचार पत्र

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

पृष्ठ पग ऑन ड्राईव प्रहार क्षमता पर खिलाडी के मानसिक प्रशिक्षण के प्रभाव का अध्ययन

अंशुल शर्मा * डॉ. अखिलेश कुमार सिंह **

* शोधार्थी, एस. के. डी. विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़ (राज.) भारत
** सहायक प्राध्यापक, एस. के.डी. विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़ (राज.) भारत

शोध सारांश – किसी भी कार्य या खेल में मनुष्य शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार से कार्य करता है जिसका व्यक्ति की मानसिक क्षमता तथा संतुलन उत्तम होता है वह अपने कार्य को शीघ्र तथा अच्छी प्रकार कर लेता है। खेल में भी वह बात उतनी ही प्रभावी है। साधारणतया खेल की तकनीक व जटिलताओं का प्रशिक्षण हर स्तर पर होता है। जैसे – जनपद, राज्य, राष्ट्र तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर परन्तु मानसिक प्रशिक्षण पर अभी बहुत कम ध्यान दिया जाता है। हाँ कुछ अध्ययन अब प्रत्येक खेल में किये जा रहे है तथा खिलाडियों को मानसिक रूप से प्रशिक्षित भी किया जा रहा है। इस अध्ययन में भी यही प्रयास किया गया है जिसमें मुजफ्फरनगर जनपद के 45 खिलाडियों को 15-15 के तीन दलों में बांटा जिनमें से एक दल को शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार से प्रशिक्षित किया। दूसरे दल को केवल शारीरिक रूप से प्रशिक्षित किया परन्तु तीसरे दल को कोई प्रशिक्षण नहीं दिया गया। यह अध्ययन खिलाडियों की पृष्ठ पग पर ऑन ड्रॉईव की क्षमता पर किया गया जिसका परिणाम सकारात्मक पाया गया। बिना प्रशिक्षण वाले खिलाडियों की क्षमता में कोई वृद्धि नहीं पाई गई।

शब्द कुंजी – मानसिक प्रशिक्षण, खेल क्षमता, ऑन ड्राईव प्रहार, ध्यान केन्द्रीकरण।

प्रस्तावना – क्रिकेट के खेल में बल्लेबाज का अधिक महत्व होता है क्योंकि रन उसी को बनाने होते है जो जीत व हार का कारण होते है। दूसरे बल्लेबाज गेंद की दिशा व गति के आधार पर बल्लेबाजी करता है। कई बार उसे आगे बढ़कर खेलना होता है तो कई बार पीछे। पीछे खेलते समय बल्लेबाज तीन दिशाओं में गेंद पर प्रहार कर भेज सकता है। जैसे सीधा प्रहार, ऑन ड्रॉईव प्रहार तथा ऑफ ड्राईव प्रहार। किसी भी प्रकार का प्रहार करते समय बल्लेबाज को अपना ध्यान गेंद की दिशा तथा गति पर केन्द्रित कर निर्णय लेना होता है तथा शरीर व ध्यान को स्थिर रखना पडता है। इसके साथ व शारीरिक तथा तकनीकी रूप से भी सक्षम होना आवश्यक है। इसके लिए प्रत्येक स्तर के खिलाडी को प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है जो प्राय: सभी स्तरों पर दी जा रही है। तकनीक की जानकारी तथा उसका अभ्यास भी खेल में उतना ही आवश्यक है तभी उत्कृष्ट खेल का प्रदर्शन किया जा सकता है। खिलाडी प्राय: खेलते समय मानसिक थकान का अनुभव भी करते है, उससे सामंजस्य बिगड जाता है। अत: खिलाडी के मस्तिष्क को भी खेल के पूर्व अभ्यास की आवश्यकता को अनुभव किया जाने लगा तथा कुछ स्तरों पर खिलाडी मानसिक प्रशिक्षण भी दिया जाने लगा। इस अध्ययन में जनपद स्तर पर क्रिकेट खिलाडियों को पृष्ठ पग पर ऑन ड्राईव प्रहार की क्षमता विकसित करने के लिये उन्हें मानसिक रूप से भी प्रशिक्षित किया गया तथा उसका प्रभाव खेल दक्षता पर देखा गया।

सामग्री एवं विधि:

सामग्री – मुजफ्फरनगर जनपद के महाविद्यालयों के 45 खिलाडियों को 15-15 के तीन दलों में बांट दिया। उनमें से एक दल को शारीरिक प्रशिक्षण के साथ मानसिक रूप से भी प्रशिक्षित किया गया। दूसरे दल को केवल शारीरिक रूप से प्रशिक्षित किया तथा तीसरे दल को किसी भी प्रकार का प्रशिक्षण नहीं दिया गया।

तकनीक के प्रशिक्षण में खिलाडी पृष्ठ पग पर जाकर ऑन ड्राईव प्रहार के बारे में बताया गया तथा अभ्यास कराया गया। यह अभ्यास सप्ताह में तीन दिन कराया जाता था। यह अध्ययन बारह सप्ताह तक किया गया था।

विधि :

मानसिक प्रशिक्षण– प्रथम दल के 15 खिलाडियों को केन्द्रीय हाल में ले जाकर पहले पांच मिनट तथा शरीर को गर्म करने के लिए या हल्के व्यायाम कराये जाते थे। फिर किसी भी आसन में बैठकर अपना ध्यान मस्तक के एक बिन्दु पर केन्द्रित करने को कहा जाता था। प्रशिक्षक खिलाडियों को उन बातों का ध्यान करने को कहता था जो खिलाडी खेल के समय करते हैं जैसे:-

1. खेल के समय गेंद की गति व दिशा पर ध्यान देना।
2. अपने द्वारा लगाये गये उत्तम प्रहारों को याद करना।
3. ऑन ड्राईव पर किये प्रहारों व तकनीक का ध्यान करना।
4. गेंद पर किस प्रहार पहुंच की तथा बल्ले से प्रहार किया।

इसके पश्चात् शवासन में लिटा कर 4-5 गहरी श्वास लेने को कहना तथा शरीर को शिथिल करना। इस अवस्था में निम्न बातों पर ध्यान लगाना।

1. उत्तम प्रहार,
2. सशक्त रक्षण
3. उत्तम हवाई तथा भूमि प्रहार
4. ऑन ड्राईव के सभी प्रहार,
5. वातावरण व दर्शकों की उपस्थिति का ध्यान

ये क्रियायें खेल के पूर्व 30-40 मिनट तक कराई जाती थी फिर जाल

लगाकर खेल का अभ्यास कराया जाता था।

योग्यता परीक्षण – खिलाडियों की खेल दक्षता का परीक्षण एक प्रशिक्षण के पूर्व तथा बाद में 4, 8 तथा 12 सप्ताह बाद किया गया था जो तीन प्रशिक्षकों द्वारा कर उनके औसत अंक खिलाडी को दिये जाते थे। अंकों का आधार निम्न बातें थी।

1. पृष्ठ पग क्रिया तथा सामंजस्य अंक:-1 - 10 तक
2. गेंद को बल्ले पर लेना अंक:- 1 - 10 तक
3. गेंद को सही समय व स्थान पर भेजने की योग्यता अंक:-1 - 10 तक
4. रक्षण तथा ऑन ड्राईव प्रहार अंक:- 1 - 10 तक
5. पृष्ठ पग पर खेलने व रक्षण की क्षमता अंक:- 1 - 10 तक

सांख्यिकी विश्लेषण– सभी खिलाडियों के प्राप्त अंकों का ANOVA (प्रसरण विचरण) द्वारा विश्लेषण किया गया तथा F का मान ज्ञात किया गया।

परिणाम तथा आंकडों का विश्लेषण:-

पृष्ठ पग पर ऑन ड्राईव प्रहार – तीनों दलों के सभी 15 सदस्यों के अंकों का योग, उनके वर्ग तथा औसत अंक सारिणी-1 में दिये गये है। मानसिक व शारीरिक रूप से प्रशिक्षित खिलाडियों के अंक प्रशिक्षण के पूर्व से लेकर 4, 8 व 12 सप्ताह के परीक्षण तक क्रमश: 441, 457, 470 तथा 478 थे तथा औसत अंक 29.40, 30.46, 31.33 तथा 31.86 थे। संकलित अंकों का औसत 30.76 था। शारीरिक रूप से प्रशिक्षित खिलाडियों अंक उसी अवधि में क्रमश: 411, 431, 461 तथा 489 थे। उनके अंकों का औसत मान 27.40, 28.73, 30.73 तथा 32.60 था। संकलित औसत 29.86 था। कंट्रोल दल के खिलाडियों के अंक 418, 413, 416 तथा 418 थे तथा औसत अंक 27.86, 27.53, 27.73 व 27.86 थे। संकलित अंकों का औसत 27.75 था सांख्यिकी विश्लेषण (ANOVA) का प्रसरण सारिणी-2 में दिया गया है। इसमें F का मान ट्रॉयल तथा सब्जैक्ट के मध्य df 3, 14 पर प्रथम दल का 12.59 तथा 15.07 है। द्वितीय दल का 281.43 तथा 173.89 है जबकि कंट्रोल दल का 0.942 व 143.31 है। नियंत्रित दल को छोड कर F का मान 0.05 स्तर के सारिणी मान से अधिक है।

विश्लेषण – आंकडों के आधार पर हम कह सकते है कि मानसिक व शारीरिक रूप से प्रशिक्षित खिलाडियों के अपने खेल में अन्य दो दलों की अपेक्षा लगातार वृद्धि की है। दूसरे दल ने भी अकों में वृद्धि की परन्तु नियंत्रित दल के खिलाडी पूर्व की भांति ही खेले। मानसिक एकाग्रता खेल की दक्षता में भी विकास करती है साथ ही शारीरिक क्षमता में वृद्धि करती है। इसी प्रकार के परिणाम शोधकर्त्ताओं को अन्य खेलों में भी प्राप्त किये है। अब तो मानसिक प्रशिक्षण अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर भी दिया जाने लगा। (रेनसन आदि : 2008, स्ट्रेच आदि 2000, कोई आदि, 2010, तलिम आदि, 2010, केविन आदि, 2017, जोनस्टोन आदि, 2014; नील आदि, 2016)।

इससे यह सिद्ध होता है कि किसी भी खेल में तकनीक व शारीरिक प्रशिक्षण के मानसिक भी खेल के सुधार के लिए आवश्यक है।

सारिणी 1, 2 (अगले पृष्ठ पर देखे)

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. रेनसन, सी0ए0, गर्वेट, ए0एफ0, किंग, एम0ए0 पटेल, एन0 तथा ओसलीवन, पी0वी0 (2008), द रिलेशनशिप बिटविन बालिंग एक्शन, क्लासीफिकेशन एण्ड थ्री डाइमैंशनल लोअर ट्रंक मोशन इन फास्ट बालर्स इन क्रिकेट, जर्नल ऑफ स्पोर्टस साईंस, 26(3), 267-276।
2. स्ट्रैच, आर0ए0, वार्टलैट, आर0 तथा डेविड, के0. (2000), ए रिव्यू ऑफ बैटिंग इन मैन्स क्रिकेट, जर्नल ऑफ स्पोर्ट्स साईस, 18(12), 931-949।
3. फोर्ड, पी0आर0, लो0जे0, मैक रोबर्ट, ए0पी0 तथा विलियम्स, ए0एम0 (2010), डवलपमैंटल एक्टीविटीज दैट कन्टीन्यू टू हाई एण्ड लो पर्फोरमेंस बाई इलाईट क्रिकेट बैटर्स व्हेन रिकोग्नाईजिंग टाईप ऑफ डिलिवरी फ्रॅाम बालर्स, एडवांस पोस्टयूरल व्यूज, जर्नल ऑफ स्पोर्टस एक्सरसाईज साईकोलॉजी, 32(5), 638-654।
4. तालिफ, एम0एस0, प्रिम एस0के0 तथा गे0जे0 (2010), अपर बाडी मसल स्ट्रैंग्थ एण्ड बैटिंग पर्मोमैन्स इन क्रिकेट बैटसमैन, जर्नल ऑफ स्ट्रैंग्थ एण्ड कन्डीशनिंग रिसर्च, 20(2), 3484-3487।
5. कोबन, डी0, स्लोबगोब, सी0एल0 तथा होलसन, सी0एन0 (2012), सैल्फ सफिसियंस एण्ड सोशल स्पोर्ट ऑफ एकेडमी क्रिकेटर्स, साउथ अफ्रीकन जर्नल फॉर रिसर्च इन स्पोर्टस फिजिकल एजुकेशन एण्ड रिक्रियेशन, 24(2), 27-39।
6. जोन स्टोन, जे0ए0, मिशैल, ए0सी0, ह्यूज जी0, वाटसन, टी0, फोर्ड, पी0 तथा गैरेट, ए0 टी0 (2014), दू एथलैटिक प्रोफाइल ऑफ फास्ट बालिंग इन क्रिकेट, ए रिव्यू, जर्नल ऑफ स्ट्रैंग्थ कोड रिसर्च, 28(15), 1465-1473।
7. नील, आर0, बाऊल्स, एच0सी0, फ्लेमिंग एस0 तथा हानहन, एस0 (2016). द एक्सपीरियंस ऑफ कम्पीटीशन स्ट्रैस एण्ड इमोशन्स इन क्रिकेट, द स्पोर्टस साईकोलॉजी, 30(1), 76-78।

सारिणी 1– क्रिकेट खिलाडियों द्वारा पृष्ठ पग ऑन ड्राईव प्रहार द्वारा प्राप्त अंक तथा औसत अंक

परीक्षण अंतराल	मानसिक व शारीरिक प्रशिक्षण दल–1			शारीरिक प्रशिक्षणदल–2			कंट्रोलदल–3		
	अंक	अंकों का योग	औसत अंक	अंक	अंकों का योग	औसत अंक	अंक	अंकों का योग	औसत अंक
प्रशिक्षण पूर्व	441	194481	29.40	411	168921	27.40	418	174724	27.86
चार सप्ताह बाद	457	208849	30.46	431	185761	28.73	413	170569	27.53
आठ सप्ताह बाद	470	220900	31.33	461	212521	30.73	416	173056	27.73
बारह सप्ताह बाद	478	228484	31.86	489	239121	32.60	418	174724	27.86
संकलित अंक	1846	3407716	30.76	1792	3211264	29.86	1665	277225	27.75

सारिणी 2 – क्रिकेट खिलाडियों के प्राप्त अंकों का प्रसरण विश्लेषण (ANOVA) द्वारा f का मान

प्रसरण के स्त्रोत	मानसिक व शारीरिक प्रशिक्षण–दल–1	शारीरिक प्रशिक्षण–दल–2	कंट्रोल दल–3
ट्रॉयल के मध्य	12.59	281.43	0.942
सब्जैक्ट के मध्य	15.07	173.89	143.81

f का 0.05 स्तर पर सारिणी मान
df 3,14 पर 2.522
df 14,42 पर 1.66

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Effects of Plyometric Training on Selected Fitness Variables of Handball Players at University Level of State Punjab

Karamjit Kaur* Dr. Rajesh Kaswan**

*Research Scholar, S.K.D. University, Hanumangarh (Raj.) INDIA
** Associate Professor, S.K.D. University, Hanumangarh (Raj.) INDIA

Abstract - The purpose of the study was to determine whether 4 weeks of plyometric training can enhance male handball players were selected randomly from the department of Physical Education and Sports Punjabi University of Patiala, Punjab. These players were divided into two group namely experimental group also known as plyometric training group (50) and control group (50). The male handball players are aged between 19-25 years will be considered as the total population of the study. The plyometric training group performed one session per day of five days week for four weeks of plyometric training program and the other group i.e. is control group did not perform any plyometric training program.

To find out the effect of plyometric training on Vertical Jump, Medicine Ball Throw – Both Hand and Star Run of university handball players. The data collected were analyzed by using Descriptive Statistics and Analysis of Co-Variance (ANCOVA) Wherever the F- ratio was found significant then a follow up of Least Significant Difference (L.S.D) Post Hoc test was applied. The level of significance was set at 0.05.

Introduction - A good fitness level gives everything up to final signal of the players. Physical activity in the adolescent population seems to have reached a plateau and in certain cases has even begun to decrease (Health Canada 1999; Stephens, 1998).

Handball is a quick physical contact Olympic team sport that requires jumping, running, sprinting, throwing, faking, hitting, blocking, pushing and pulling. Plyometric training is a popular method by which players may enhance strength and explosiveness. Generally plyometric training is the very good way which is accepted to giving strength and speed to react quickly during the playing time. Counter attacks and powerful defending are the key parts of high tempo of today's game. Now days in modern Handball players are faster, stronger and have better endurance than ever before. Handball is a multi dimensional and dynamic sport that includes speed, strength, and agility and reaction ability. The various positions will also specific fitness requirements.

Plyometric training is the key to developing maximal explosive power and speed of movement, which in turn is the key element involved in sports. By doing various plyometric exercise you can increase your performances greatly.

Subjects and variables - For the purpose of the study 100 male players of University level of state Punjab having age range of 19 to 25 years were selected randomly. The subjects were laid down into two groups namely plyometric group (50) and control group (50). The subjects gave their willingness to participate in this study. The physical fitness data were obtained from handball court which is available in the Department of Physical Education and Sports, Punjabi University Patiala Punjab to measure explosive strength, and agility and reaction ability. Simple random sampling was used as a sampling technique. The measurement for variables was took in the beginning (pre test) and after four weeks time period (post test).

Statistical technique - The data collected were analyzed by using Descriptive Statistics and Analysis of Co-Variance (ANCOVA) Wherever the F- ratio was found significant then a follow up of Least Significant Difference (L.S.D) Post Hoc test was applied. The level of significance was set at 0.05.

The results pertaining to analysis of data between Dependent Variables (Vertical Jump, Medicine Ball Throw – Both Hand, Star Run) and Independent Variable (Plyometric Training) Descriptive Statistics and analysis of Co-Variance (ANCOVA). Wherever the F- ratio was found Significant then a follow up of Least Significant Difference (L.S.D) Post Hoc test was applied. The level of significance was set at 0.05. The data pertaining to the results of analysis of students have been presented through the tables.

Table-1 (See in last page)

F ratio needed for significance at 0.05 level of significance = df (2, 97) = 3.09, df (2, 97) = 3.09. The analysis of co-variance for vertical jump indicated that the resultant F-ratio of 1141.704 was insignificant in case of pre-test means from which it is clear that the pre-test mean does not differ significantly and that the random assignment of subjects to the experimental group was quite successful. The difference between the adjusted posts means was found significant as the Obtained F-ratio was 265.65. The F-ratio needed for significance ($p<0.05$) with 2, 97 degree of freedom is 3.09 at 0.05 level of significance. Thus, mean significant difference exits between plyometric training group and the control group in relation to vertical jump. Since the differences were found to be significant in case of vertical jump, the Least Significant Difference post-hoc test was applied in order to determine the significant differences between paired means of vertical jump.

Table-2 (see in last page)

Table 2 shows that the adjusted post-test mean difference on plyometric training group and Control group are 0.058 and -0.058respectively. The values are greater which shows significant differences at .05 level of confidence.

Table-3 (see in last page)

The analysis of co-variance for medicine ball throw – both hand indicated that the resultant F-ratio of 955.691was insignificant in case of pre-test means from which it is clear that the pre-test mean does not differ significantly and that the random assignment of subjects to the experimental groups was quite successful. The difference between the adjusted posts means was found significant as the obtained F-ratio was .793. The F-ratio needed for significance ($P < 0.05$) with 2, 97 degree of freedom is 3.09at 0.05 level of significance. Thus, mean significant difference Exits between plyometric training group and the control group in relation to medicine ball throw – both hand. Since the differences were found to be significant in case of medicine ball throw – both hand, the Least Significant Difference post-hoc test was applied in order to determine the significant differences between paired means of medicine ball throw – both hand.

Table-4 (see in last page)

Table 4 shows that the adjusted post-test mean difference on plyometric training group and Control group are 0.032 and -0.032respectively. The values are greater which shows significant differences at .05 level of confidence.

Table-5 (see in last page)

The analysis of co-variance for star run indicated that the resultant F-ratio of 364.008 was insignificant in case of pre-test means from which it is clear that the pre-test mean does not differ significantly and that the random assignment of subjects to the experimental groups was quite successful. The difference between the adjusted posts means was found significant as the obtained F-ratio was 2.376. The F-ratio needed for significance ($P < 0.05$) with 2, 97 degree of freedom is 3.09at 0.05 level of significance. Thus, mean significant difference exits between plyometric training group and the control group in relation to star run. Since the differences were found to be significant in case of star run, the Least Significant Difference post-hoc test was applied in order to determine the significant differences between paired means of star run.

Table-6 (see in last page)

Table 6 shows that the adjusted post-test mean difference on Plyometric Training group and Control group are -0.045 and 0.045 respectively. The values are greater which shows significant differences at .05 level of confidence.

Discussion - The purpose of the study was to determine the Effect of plyometric Training on selected fitness variables of handball players at university level of state Punjab.

Results of this study have shown that there was significant difference exit between plyometric training group and control group in relation to vertical jump, medicine ball throw-both hand, and star run. Results of the presented study are completely supported by other similar studies.

The previous conducted studies (Harre 1973, Subramaniam 1981, Yesis and Fredricks 1986, Bath 1985) show non- significant effect on arm strength. But the present study shows positive improvement on both arm medicine ball throw performance.

Dr. Akwinder Kaur(2018) studied on "Impact of plyometric and SAQ training on physical fitness indices of handball players" he find out the difference among various groups (Plyometric, SAQ & Control group) of Agility variable 'ANCOVA' test was applied at 0.05 level of significance. The results showed that experimental groups (Plyometric & SAQ) of handball players enhance the performance of agility as compare to control group.

Dr. J. Golda; Dr. J. Glory Darling Margaret (2018) studied on "Combined effect of various training on speed and muscular strength among athletes" they was concluded that speed and muscular strength of athletes were improved due to combined training.

References:-

1. Arazi, H,. and Asadi, A. and Roohi, S. (2014). Enhancing muscular performance in women: compound versus complex, traditional resistance and plyometric training alone. J. Muscoskel. Res. 17,1-10.
2. Attene G. Improvement neuromuscular performance in young basketball players: plyometric vs. technique training. J Sports Med Physical Fitness 2015; 55:1-8.
3. Bath, M.S. (1985): "Effects of specific training program on performance in selected skills on Performance in selected skills on passing and shooting in relation to recent changes in rules of basketball". Unpublished Master's thesis NIS, Patiala.
4. Chilly MS, Hermassi S, Aouadi R, Shepherd RJ. Effects of eight weeks in-season plyometric training on upper and lower limb performance of elite adolescent handball players. J Strength Cond Res, 2014; 28: 1401-1410.
5. de Villarreal ES, Kellis E, Kreamer WJ Izquierdo M.

Determining variables of plyometric training for improving vertical jump height performance: A meta-analysis J Strength Cond Res, 2009; 23: 495-506.
6. Gray, R.K. et al. (1962): "A factorial investigation of speed, power isometric strength, anthrop- metric measures in the lower limb" Res., Quarterly, 37 (4): 553-569.
7. Hammami, M., Gaamauri, N., Aloui, G., Shepherd, R.J., and Chelly, M.S. (2019). Effects of combined plyometric and short sprint with changes- of- direction training on athletic performance of male U-15 hamdball players. J Strength Cond. Res.33,662-675. doi:10.1519/JSC.0000000000002870.
8. "Handball India" sports in India.Handball in India.com. Archived from the original on 6 September 2011. Retrieved 5 August 2011.
9. Khalifa R, Aouadi R, Hermassi S, Chelly MS, Jlid MC H bacaha Ho, Costagna C. Effects of plyometric training program with or without added load on jumping ability in professional basketball players 2013;43:7-15.
10. Lenhert M, Hulka K, Maly T, Fohlar J, Zohalka F. The effects of six weeks of plyometric training program 0n explosive strength and agility in professional basketball players 2013; 43: 7-15.
11. Makaruk H, Czaplicki A, Sacewicz T, Sadowski J. The effects of single versus repeated plyometrico on landing biomechanics and jumping performance in men. Bio/ Sport, 2014; 31 (1): 9-14.
12. Rowland, B.J. (1970): "Handball is a complete guide". Faber and Faber, London. P-25-26.
13. Singh Bal, B., Jeet Kaur, and Singh, D. (2011). Effects of a short-term plyometric training program of agility in young basketball players. Bwaz. J. Biomotrocity 5, 271-278.
14. Thomas, J.P. (1964): "Physical conditioning and training for soccer players". Let us coach soccer, P. 152.
15. USA Team Handball. (2016, August 31). Rio 2016 Handball was the most popular after football. Retrieved September 12, 2016 from the USA Team Handball website: http://www.teamusa-org/ USA- Team Handball/ News/ 2016/August/31/Rio-2016
16. Vaczi M, Toller J, Meszler B, Juhasz I, Karsai I. Short-term high intensity plyometric training program improves strength, power and agility in male soccer players, 2013; 36:17-26.
17. Wilkerson, G.B., Colston, M.A., Short., N.I., Neal, K.L., Hoewischer, P.E., and Pixley, J.J. (2004). Neuromuscular changes in female collegiate athletes resulting from a plyometric jump training program. J. Athletes Training 39, 17-23.
18. Young, W (1992): Sprint bounding and the sprint bound index. Strength and conditioning Journal, 14; 18-21

Table-1 : Analysis of co-variance of the means of Plyometric Training group and Control group of University Handball Players in relation to Vertical Jump

Source	Type III Sum of Squares	Df	Mean Square	F	Sig.	Partial Eta Squared
Group	.081	1	.081	265.654	.000	.733
Vertical Jump Pre	.349	1	.349	1141.704	.000	.922
Error	.030	97	.000			
Total	604.889	100				
Corrected Total	.417	99				

a. R Squared = .929 (Adjusted R Squared = .927)*Significant at 0.05 level of significance

Table-2 : L.S.D Post Hoc Test for the differences between adjusted post-test paired means of vertical jump

(I) Group		Mean Diffe -rence (I-J)	Std. Error	Sig.[b]	95% Confidence Interval for Difference[b]	
					Lower Bound	Upper Bound
Plyometric Training Group	**Control group**	.058*	.004	.000	.051	.065
Control group	Plyometric Training Group	-.058*	.004	.000	-.065	-.051

Based on estimated marginal means
*. The mean difference is significant at the .05 level.
b. Adjustment for multiple comparisons: Least Significant Difference (equivalent to no adjustments).
*Significant at 0.05 level of significance

Table-3 : Analysis of co-variance of the means of Polymeric Training group and Control group of University Handball Players in relation to medicine ball throw – both hand

Source	Type III Sum of Squares	Df	Mean Square	F	Sig.	Partial Eta Squared
Group	.008	1	.008	.793	.375	.008
Medicine ball Throw Both Hand pre	20.396	2	10.198	955.691	.000	.952
Error	1.024	96	.011			
Total	6371.760	100				
Corrected Total	21.424	99				

a. R Squared = .952 (Adjusted R Squared = .951)
*Significant at 0.05 level of significance
F = Ratio needed for significance at 0.05 level of significance = df (2, 97) = 3.09, df (2, 97) = 3.09

Table-4 : L.S.D Post Hoc Test for the differences between adjusted post-test paired means of medicine ball Throw – both hand

Group		Mean Diffe -rence (I-J)	Std. Error	Sig.[b]	95% Confidence Interval for Difference[b]	
					Lower Bound	Upper Bound
Plyometric Training Group	Control group	.032*	.021	.125	-.009	.073
Control group	Plyometric Training Group	-.032	.021	.125	-.073	.009

Based on estimated marginal means
*the mean difference is significant at the 0.05 level
Adjustment for multiple comparisons: Least Significant Difference (equivalent to no adjustments)
*Significant at 0.05 level of significance

Table-5 : Analysis of co-variance of the means of Plyometric Training group and Control group of University Handball Players in relation to star run

Source	Type III Sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig.	Partial Eta Squared
Group	.001	1	.001	2.376	.127	.024
Star Run Pre	1.950	2	.975	3645.008	.000	.987
Error	.026	96	.000			
Total	15819.566	100				
Corrected Total	1.976	99				

a. R Squared = .987 (Adjusted R Squared = .987)
* Significant at 0.05 level of significance
F = Ratio needed for significance at 0.05 level of significance = df (2, 97) = 3.09, df (2,97) = 3.09

Table-6 : L.S.D Post Hoc Test for the differences between adjusted post-test paired means of star run

Group		Mean Diffe -rence (I-J)	Std. Error	Sig.[b]	95% Confidence Interval for Difference[b]	
					Lower Bound	Upper Bound
Plyometric Training Group	Control group	-.045*	.003	.000	-.052	-.039
Control group	Plyometric Training Group	-.045*	.003	.000	.039	0.052

Based on estimated marginal means
*the mean difference is significant at the 0.05 level
Adjustment for multiple comparisons: Least Significant Difference (equivalent to no adjustments)

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Impulsive excitation of mechanoluminescence in g-irradiated $Mg(VO_3)_2$: Ce phosphors

Vikas Gulhare* S.J. Dhoble R.S. Kher*****

*Department of Physics, Govt. G. N. A. P. G. College, Bhatapara (C.G.) INDIA
** Department of Physics, R. T. M. Nagpur University, Nagpur (Mh.) INDIA
*** Department of Physics, Govt. Mahamaya College, Ratanpur (C.G.) INDIA

Abstract - Present paper reports the mechanoluminescence of Ce doped $Mg(VO_3)_2$ samples. $Mg(VO_3)_2$ samples having different concentration of Ce were prepared by solid state diffusion method and ML was excited impulsively by dropping a load on to the sample. ML intensity increases with increasing concentration of dopant, irradiation dose and mass of the load. The ML emission in Mg $(VO_3)_2$: Ce samples attributed to $^5d_1$ to $^4f_1$ transitions of Ce^{3+}.
Keywords- Mechanoluminescence (ML), Solid state reaction and characterization.

Introduction - Mechanoluninescence (ML) is a type of luminescence induced during any mechanical action on solids. The alkaline earth vanadates have been the subject of extensive research as these phosphors have many industrial uses as x-ray screen image converters and lamp materials.(1) The trivalent europium doped vanadates have attracted a great deal of interest for use as a red phosphor in colour television.(2) Many efficient lasers are developed in vanadate host crystals in recent years. (3-7) Recently, rare earth doped vanadates have been identified as a potential successor.(8) Not much is known about the ionising radiation effect on the lasing and other properties of vanadates.(9)

Defects in YVO_4 : Eu^{3+} powder prepared by solid state diffusion have been studied by thermoluminescence and fluorescence measurement.(10) Defect accumulation was noted to be strongly dependent on the level of gamma exposure. Photoluminescence, thermoluminescence and electron spin resonance of doubly doped YVO_4 : Pb^{2+}, Eu^{3+} was studied by Nirwan et al.(11) The ML properties of Mg $(VO_3)_2$:Ce has not been studied so far. The present paper reports the impulsive excitation of ML in Ce doped magnesium vanadate phosphors.

Experimental Details - Pure and Ce^{3+} doped Mg $(VO_3)_2$ phosphors of different impurity concentrations were prepared by solid state diffusion method. Analar grade (99.9% pure) powders were used as starting materials. To prepare Mg $(VO_3)_2$, Mg $(NO_3)_2$. $6H_2O$ and NH_4VO_3 (ammonium metavanadate) were mixed thoroughly in 1:1 mole proportion. In case of doped samples, desired amount of impurity Ce_2O_3 (from .05% to 10%) were added to above mixture and then transferred to porcelain crucibles. These powders were annealed in a resistive furnace by slowly raising the temperature to about 400°C for fours hours in air and to heating up 650°C for 12 hour . After each annealing step, the powders were quenched at room temperature.

Pure and doped samples of magnesium vanadates were exposed to gamma rays by using a ^{60}Co source. The ML glow curves were recorded by the routine ML unit. Five milligrams of sample was used every time for recording the glow curve. The ML was excited impulsively by dropping a fixed mass of load on to the sample. The luminescence was monitored by a RCA-931 photomultiplier tube positioned below the transparent lucite plate. The PMT was connected to storage oscilloscope. The ML spectra were recorded using a series of optical band pass filter.

Results - Fig. (1) Shows the time dependences of ML intensity of Mg $(VO_3)_2$: Ce samples having different concentration of Ce and irradiated with g-rays for 45 minute. ML intensity initially increases with increasing concentration Ce, attains an optimum value for 0.1 mole % doped samples, then decreases with further increase in concentration of dopant. What have also found that two distinct peaks are observed in the ML glow curve of Mg $(VO_3)_2$: Ce (0.1 mole %) samples.

Fig. (2) Shows that the ML intensity increases with increasing mass of the load on to the sample.

Fig. (3) Shows the dependence of ML intensity on g-dose given to the sample. ML intensity increases with g-dose and seems to saturate for higher g-dose.

Fig. (4) Shows the ML spectra of g-irradiated Mg $(VO_3)_2$: Ce sample. Broad emission band is observed with peak intensity around 470 nm.

Discussion - Mechanoluminescence is one of the method for studying radiation effects in solids. In the present investigation we have observed that two distinct peaks are observed in the ML intensity vs. time curve of Mg $(VO_3)_2$: Ce

(0.1 mole %) sample and only one peak appears in the ML glow curve of other sample. The presence of impurities enhances the generation/recombination of luminescence centers, defects etc. The ML emission intensity depends upon the number of populated traps and the recombination of probability of trapping and recombination sites. Figure 2 and 3 show that the Mg $(VO_3)_2$: Ce is less sensitive to gamma exposure and it is relatively difficult to excite luminescence by mechanical deformation. Mg $(VO_3)_2$: Ce shows broad emission band extending from 450 to 600 nm and centered at 470 nm. This broad emission may be attributed to $^5d_1$ to $^4f_1$ transition of Ce^{3+} ion.

Conclusion - The Mg $(VO_3)_2$: Ce is less sensitive to g-ray exposure and it is relatively difficult to excite luminescence by mechanical deformation.

References :-

1. B.N. Mahalley, S.J. Dhoble, R.B. Pode, G. Alexander. Appl. Phys. A. 70, 39-45 (2000).
2. R.C. Ropp : Luminescence and the solid state (Elsevier Amsterdam 1991), p. 330.
3. T. Taira, A. Mukai, Y. Nozawa, and T. Kobanyashi : Optics letters, 16, 1995 (1991)
4. T. Hayashi, S.Hanihara, and N. Yamaguchi, NEC Tech. J. (Japan) 44, 75 (1991).
5. H. Saito, S. Chadda, R.S. F. Chang, and N. Djeu, optics letters 17, 189 (1992).
6. M. Yu. Nikalskii, A.M. Prokhorov, T.A. Shcherbakov, N., V. Kravtsov, O.F. Nanli, and V.V. Firov, Quantum Electronics (USA) 23, 999 (1993).
7. J.E. Bernard, V.D. Lokhnygn, and A.J. Alcock, Optics letters 18, 2020 (1993).
8. R.B. Pode, A.M. Band, H.D. Juneja, S.J. Dhoble. Phys. Stat. Sol. (a) 157, 493 (1996).
9. R.B. Pode, A.M. Band, H.D. Juneja, S.J. Dhoble. Phys. Stat. Sol. (a) 157, 493 (1996).
10. R.B. Pode and S.J. Dhoble. J. Phys. D: Appl. Phys. 31, 146-150.
11. F.M. Nirwan, T.K. Gundu Rao, P.K. Gupta and R.B. Pode. Physica. States Solidi (a), 198 (2), 447-456.

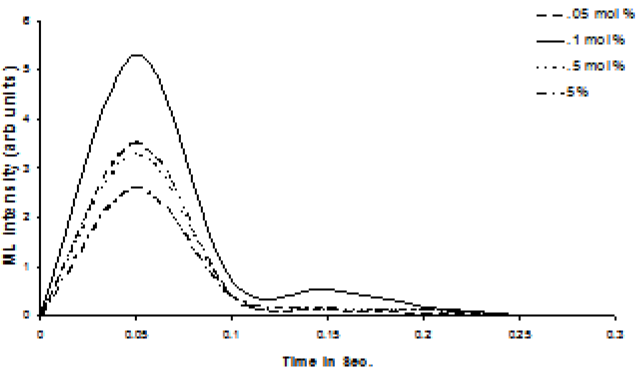

Fig. 1 Time dependence of ML intensity of γ-irradiated Mg $(VO_3)_2$: Ce samples (γ-irradiation 45 minute)

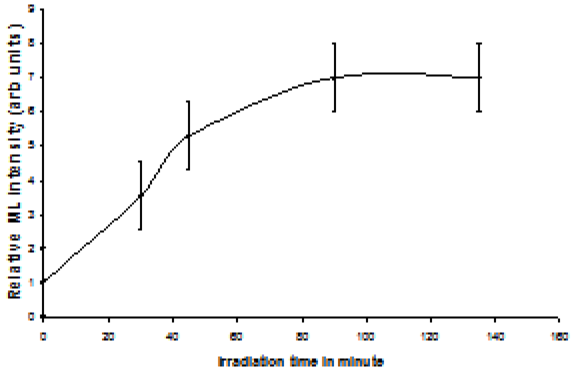

Fig. 3 Dependence peak ML intensity of Mg $(VO_3)_2$: Ce (0.1mol%) samples on γ-dose.

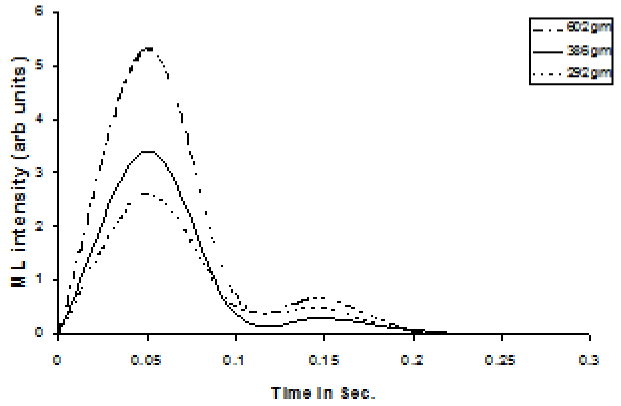

Fig. 2 Time dependence of ML intensity of γ-irradiated Mg $(VO_3)_2$: Ce sample. (γ-irradiation 45 minute)

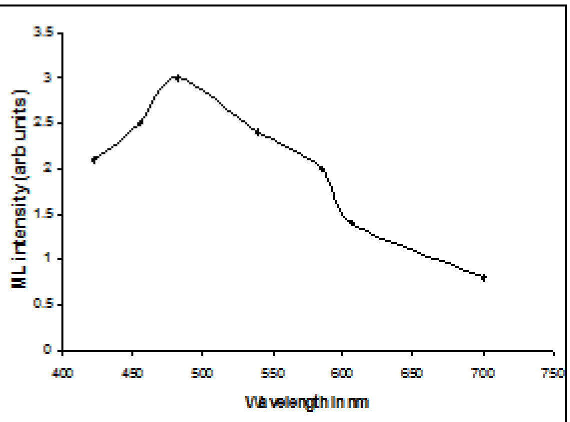

Fig. 4 ML Spectra of γ-irradiated Mg $(VO_3)_2$: Ce (0.1 mol%) sample.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

विकासाचे निर्देशांक एक आढावा

डॉ. एस. यु. अनपट *

* सहायक प्राध्यापक, सि. जे. पटेल महाविद्यालय, तिरोडा, जिल्हा- गोंदिया, राष्ट संत तुकडोजी महाराज नागपूर विद्यापीठ, नागपूर (महा.) भारत

शोध सारांश – आर्थिक विकास संकल्पना अतिशय व्यापक आहे. एखादा देशाचा विकास कितपत झाला आहे. हे आर्थिक विकासाच्या निर्देशांकावरून लक्षात येते. प्रस्तुत संशोधन लेखात आर्थिक विकास निर्देशांकाचा आढावा घेण्यात आलेला आहे. यामध्ये जीवनमानाचा भौतीक गुणवत्ता निर्देशांक, मानव विकास निर्देशांक, बहुआयायी दारीद्रयता निर्देशांक लिंग विकास निर्देशांक यांची प्रामुख्याने विचार करण्यात आलेला आहे. या सर्व निर्देशांकामध्ये देशाच्या उत्पन्न या घटकाबरोबरच उत्पन्नेत्तर घटक ही तेवढेच महत्वाचे मानले आहे. शेवटी कोणत्याही विकासाचा अंतिम केंद्रबिंदू मानव हाच आहे. मानवाचा समतोल विकास साध्य करायचा असेल तर संख्यात्मक घटकाबरोबरच गुणात्मक घटकाचा विचार महत्वाचा असतो. म्हणून आर्थिक विकासाला मानवी चेहरा देण्याच्या दृष्टीकोनातून या सर्व निर्देशांकाची भूमिका अतिशय महत्वाची आहे. या सर्व निर्देशांकामध्ये देशाच्या उत्पान्न घटकाबरोबरच मानवी आरोग्य, शिक्षण व व्यक्तीचा राहणीमानाचा दर्जा यांना विशेष महत्व देण्यात आलेले आहे.

प्रस्तावना – आर्थिक विकास हा सध्याच्या आधुनिक युगाचा चर्चेचा विषय झाला आहे. विकासाच्या या स्पर्धेमध्ये प्रत्येक देश दुसऱ्या देशाच्या पुढे जाण्यासाठी सतत प्रयत्नषील असतो. परंतु या ठिकाणी असा प्रश्न निर्माण होतो की, एखादया देशाचा विकास होत आहे किंवा नाही हे कसे ठरवावे ? विकासाचे निर्देशक कोणते ? याविषयी अर्थ तज्ञामध्ये मोठया प्रमाणात मतभेद आहेत. निरनिराळया अर्थतज्ञांनी आर्थिक विकासाच्या मापनाकरीता वेगवेगळे निर्देशक सुचविले आहेत. त्याचा आढावा या संशोधन लेखामध्ये घेण्याचा प्रयत्न केलेला आहे.

आर्थिक विकास ही व्यापक कल्पना आहे. आर्थिक विकास ही एक सापेक्ष संकल्पना असल्यामुळे विकासाचा एक निश्चित मापदंड ठरविणे अत्यंत कठीण आहे.

आर्थिक विकासामध्ये देशाच्या राष्ट्रीय उत्पन्नाचा व दरडोई उत्पन्नाचा विचार केला जातो. त्याच बरोबर मानवीय घटकांचा गुणवत्तापूर्वक विकास याचा विचार केला जातो.

कोणत्याही विकासाचा केंद्रबिंदू मानव हाच असतो. भौतीक, आर्थिक, सामाजिक, राजकीय व अध्यात्मिक प्रगतीचा अंतिम लाभार्थी माणूसच असतो. अशा प्रगतीतून माणसाचे कल्याण झाले नाही तर ती प्रगती अर्थशून्य ठरते. आर्थिक विकासाने मानवाचा विकास साधला गेला तरच आर्थिक प्रगती खऱ्या अर्थाने फलदायी झाली असे मानता येते.

विकासाचे निर्देशक खालीलप्रमाणे आहेत.

1) जीवनमानाचा भौतीक गुणवत्ता निर्देशांक –

जीवनमानाचा भौतीक गुणवत्ता निर्देशांक सर्वप्रथम मॉरिस डी मॉरिस यांनी 1979 मध्ये विकसित करण्याचा प्रयत्न केलेला आहे. त्यांना न्यून विकसित देशामध्ये असे दिसून आले की, त्या ठिकाणी आर्थिक वृद्धीमध्ये थोडया फार प्रमाणात वाढझाली असली तरी तेथील जनतेच्या जीवनमानाचा दर्जा उंचावलेला नव्हता तसेच सर्वसामान्य जनतेच्या मुलभूत गरजा ही पूर्ण झालेल्या नव्हत्या म्हणून विकासाचं मापन करण्यासाठी उत्पन्नेत्तर (Non income) निर्देशांक तयार करण्यात आला त्यांनी त्यांच्या अभ्यासासाठी तीन निर्देशांक निवडले व त्याच्या आधारे एक संयुक्त निर्देशांक तयार केला त्यालाच जीवनमानाचा भौतीक गुणवत्ता निर्देशांक असे म्हणतात.

जीवनमानाच्या भौतीक गुणवत्ता निर्देशांकाचे प्रामुख्याने तीन घटक आहेत ते पुढीलप्रमाणे

1. सरासरी आयुर्मान – सरासरी आयुर्मान म्हणजे जन्माच्या एका वर्षानंतर देशातील नागरीक किती वर्ष जीवन जगतात याची सरासरी होय. एखादया देशाने चांगले सरासरी आयुर्मान प्राप्त केले असेल तर ते महत्वाचे समजले जाते. मग ते आयुर्मान चांगल्या वैद्यकिय सोयीमुळे किंवा चांगल्या आहारामुळे प्राप्त झालेले असो त्या फारसे महत्व नाही.

2. बाल मृत्युदर – बाल मृत्यु दराचा संदर्भ जन्माला आल्यानंतर एका वर्षाच्या आंत मृत्यू होणे होय. जो जन्माला येतो त्याचा मृत्यू अटळ आहे. परंतु ज्यांनी जन्म घेतला त्याचा मृत्यू बाल्यावस्थेत व्हावयास नको ही गोष्ट सामान्यपणे स्वीकारली जाते.

3. मुलभूत साक्षरता – एखादा देश साक्षरतेचा उच्चतर दर प्राप्त करीत असेल तर ते महत्वाचे समजले जाते. मग तो साक्षरता दर औपचारीक किंवा अनौपचारीक पध्दतीने प्राप्त केलेला असला तरी चालेल.

यातील प्रत्येक घटकाला वेगवेगळया देशासाठी 1 ते 100 पर्यंत क्रमवारी (Rating)देण्यात आली उदा. एखादया देशात अपेक्षित आयुमर्यादा जास्तीत जास्त आहे तर त्यासाठी 77 हा आकडा वापरण्यात येईल आणि किमान मर्यादा 1 एवढी मानली अशाच प्रकारे बाल मृत्यू वमूलभूत साक्षरता या दोन्ही निर्देशांकाचे किमान व कमाल मर्यादा निर्धारीत करून निर्देशांक काढले जातात. अशा प्रकारे या तीन घटकांना समान भार देऊन प्रत्येक निर्देशांक तयार केला जातो. आणि या तीन निर्देशांकाची सरासरी काढून एक संयुक्त निर्देशांक तयार केला जातो. या प्रमाणे जर कोणत्याही देशाची सरासरी निर्देशांकामध्ये वृद्धी होत असेल तर त्यास आर्थिक विकासाचे प्रतिक समजले जाते. यावरून त्या देशातील जनतेच्या भौतीक जीवनमानात वृद्धी

होत आहे. हे लक्षात येते.

अर्थातच या निर्देशांकामुळे असे सिध्द होते की, लोकांच्या जीवनात दिर्घायुष्याची अपेक्षा असते त्यांना साक्षर होण्याची ही आवड असते. जेणेकरून शिक्षणाद्धारे जीवनामध्ये वेगवेगळया संधी मिळवून जीवन सर्वागाने समृध्द करता येते.

2. मानव विकास निर्देशांक – मानवी विकासाच्या बहुविध पैलूंचा विचार करून संयुक्त राष्ट्र विकास संघाने (United Nation Development Programme) 1990 मध्ये आर्थिक विकासाचा महत्वाचा मापदंड म्हणून मानव विकास अहवाल सर्वप्रथम प्रकाशित केला. तसेच मानव विकास निर्देशांक विकसित करण्यात 1998 चे नोबेल पारितोशिक विजेते अमर्त्य सेन आणि अर्थतज्ञ महबूब उल हक यांचाही महत्वाचा पुढाकार आहे.

मानव विकासाची संकल्पना – मानव विकास निर्देशांकामध्ये राष्ट्रीय उत्पादनापेक्षा देशातील लोकांच्या क्षमता व योग्यता यांच्या विकासावर भर दिला आहे. दीर्घ आयुष्य आणि स्वास्थपूर्ण जीवन या एक प्रकारच्या क्षमता आहेत. लिहीण्या वाचण्याची योग्यता ही सुध्दा एक क्षमता आहे. वाढत जाणाऱ्या क्षमता व योग्यतेमुळे निवडीचा विस्तार होतो. निवडीचा विस्तार हेच विकासाचे लक्षण आहे.

यु.एन.डी.पी. द्धारे 1997 मध्ये प्रकाशित मानव विकास अहवालात मानव विकासाची संकल्पना स्पष्ट केली आहे.

मानव विकास ही अशी प्रक्रीया आहे की ज्याद्धारे सामान्य लोकांच्या निवडीचा विस्तार करून कल्याणाची उच्च पातळी गाठली जाऊ शकते.

कोणत्याही देशातील सामान्य लोकांच्या किमान पुढील तीन अपेक्षा असतात.

1. दीर्घ व स्वास्थपूर्ण जीवन घालविणे.

2. ज्ञान संपादन करणे 3. चांगले राहणीमान प्राप्त करण्यासाठी आवश्यक साधने प्राप्त करणे. याशिवाय काही लोकांच्या दृष्टीने आणखी काही अपेक्षा असू शकतात. त्यात आर्थिक, सामाजिक व राजकीय स्वातंत्र्य, स्वाभिमान व मानवधिकाराची हमी इत्यादीचा समावेश होतो. हे सर्व मानव विकासासाठी आवश्यक घटक आहे. कारण त्यांच्याशिवाय दुसऱ्या संधी प्राप्त करणे यामध्ये अडथळा निर्माण होतो. 1997 च्या मानव विकास अहवालात विकासाची संकल्पना स्पष्ट करतांना असे म्हटले आहे की, केवळ उत्पन्न मिळविणे ही एक निवड आहे, ती महत्वाची सुध्दा आहे. परंतु ते संपूर्ण जीवनाचे सार नाही. उत्पन्न एक साधन आहे, तर मानव विकास एक ध्येय आहे.

मानव विकास निर्देशांकामध्ये खालील तीन योग्यतांचा अभ्यास केला आहे.

1. सरासरी आयुर्मान (Life Expectany) – या ठिकाणी सरासरी आयुर्मान म्हणजे जन्मापासून ते मरेपर्यंत आयुष्य होय. याचा अर्थ जन्माला आलेले नविन मूल किती वर्ष जगू शकते. त्याची सरासरी होय.

2. शैक्षणिक प्राप्ती (Educational Attainment) - या घटकाचे मोजमाप दोन भागात केले आहे.

अ. प्रौढ साक्षरता ब. संयुक्त नामांकन अनुपात

अ. प्रौढ साक्षरता दर (Adult Literacy Rate) - 15 वर्ष किंवा त्यापेक्षा जास्त वयाच्या व्यक्ती ज्या आपल्या दैनंदिन जीवनात लहान लहान आणि सरळ वाक्ये समजू शकतात, वाचू शकतात आणि लिहू शकतात. त्यांना प्रौढ साक्षर असे म्हणतात. याचा अर्थ शिक्षित व्यक्तीमध्ये वाचण्याची आणि लिहीण्याची योग्यता असली पाहीजे. एखादी व्यक्ती केवळ स्वाक्षरी करू शकते. परंतु त्याच्यामध्ये लिहीण्या–वाचण्याची योग्यता नसेल तर त्याला साक्षर म्हणता येणार नाही.

ब. संयुक्त नामांकन अनुपात(Combined Enrolment Ratio) – संयुक्त नामांकन अनुपात म्हणजे कोणत्याही शैक्षणिक पातळीवर ज्यांची नावे नोंदविली आहेत अशा विद्यार्थ्यांची संख्या होय. यात वयाची कोणतीही अट नाही. शैक्षणिक पातळीचा अर्थ प्राथमिक, माध्यमिक व महाविद्यालयीन पातळीवर दिले जाणारे शिक्षण होय. संयुक्त नामांकन अनुपात म्हणजे शिक्षण घेणाऱ्या लोकांचे एकूण लोकसंख्येशी असलेले प्रमाण होय. संयक्त नामांकन अनुपात जास्त असेल तर जीवनाची पातळी उच्च आहे असे समजले जाते.

शैक्षणिक पातळीचा निर्देशांक काढतांना प्रौढ साक्षरता दराला 2/3 भार आणि संयुक्त नामांकन अनुपाताला 1/3 भार दिला जातो. म्हणून शैक्षणिक प्राप्ती निर्देशांकाचे आगणन पुढीलप्रमाणे करता येते.

$$EAI = 2/3\ ALR + 1/3\ CER$$

3. जीवनमान – जीवनमानाचे मापन करण्यासाठी वास्तविक दरडोई सकल देशी उत्पादन विचारात घेतले जाते. कोणत्याही व्यक्तीला दिर्घायुष्य आणि ज्ञान प्राप्ती याशिवाय काही वस्तु मिळविण्याची इच्छा असते. या सर्वांची गणना करणे कठीण असते. चांगले जीवन जगण्यासाठी संसाधनाची आवश्यकता असते. दरडोई उत्पन्न हे संसाधनाचे साधे व सोपे माप असते. कारण हे आंतरराष्ट्रीय स्तरावर तुलना करण्याच्या दृष्टीने योग्य समजले जाते.

परंतु त्यासाठी निरनिराळया देशातील दरडोई उत्पन्न एका समान मापात आणणे आवश्यक आहे. म्हणून दरडोई उत्पन्न रूपयामध्ये दिले असेल तर ते प्रथम क्रयशक्ती समता डॉलर मध्ये बदलावे लागते.

निर्देशकांचे सामान्यीकरण – मानव विकास निर्देशांकामध्ये केवळ सकारात्मक घटकाचाच वापर केला जात आहे. त्यामुळे घटक निर्देशकांची गणना करण्यासाठी आपण केवळ एकाच सुत्राचा वापर करू शकतो.

$$\text{घटक निर्देशक} = \frac{\text{वास्तविक मूल्य} - \text{न्यूनतम मूल्य}}{\text{महत्तम मूल्य} - \text{न्यूनतम मूल्य}}$$

वरील सुत्रावरून सरासरी आयुर्मान, शैक्षणिक प्राप्ती आणि जीवनमान या तिन्ही घटकाचे निर्देशक काढता येतात.

3. बहुआयामी दारिद्रयता निर्देशांक – आर्थिक विषमता हे दारीद्रयाचे एक प्रमुख कारण होय. ज्यावेळी समाजात आर्थिक विषमता अस्तित्वात असते. त्यावेळी समाजातील मूठभर लोकांकडे संपत्तीचा फार मोठा वाटा असतो आणि बहुसंख्य लोकांकडे संपत्तीचा फार कमी वाटा असतो. ज्या लोकांकडे संपत्तीचा फार मोठा वाटा असतो, तो श्रीमंत वर्ग होय आणि ज्यांच्याकडे संपत्तीचा फार कमी वाटा असतो तो गरीब किंवा दरीद्री वर्ग होय. समाजामध्ये गरीब वर्ग मोठया संख्येने अस्तीत्वात असून त्यांना जीवनावश्यक गरजांच्या पूर्ततेकरीता फार मोठा संघर्ष करावा लागत आहे.

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रमाद्धारे 1997 मध्ये प्रकाशित केलेल्या मानव विकास अहवालात प्रथमच मानव दारीद्रयता निर्देशांक समाविष्ट करण्यात आला. समाजात पसरलेल्या दारीद्रयासंबंधी संपूर्ण माहिती प्राप्त करण्यासाठी या निर्देशांकाद्धारे जीवनात समतेच्या आड येणाऱ्या विविध घटकांचा संयुक्त निर्देशांक प्रस्तुत करण्यात आला. 2009 च्या मानव विकास अहवालात मानव दारीद्रयता निर्देशांकाचे आगणन करण्यासाठी मानव विकास निर्देशांकाचे जे तीन घटक होते तेच विचारात घेण्यात आलेत. परंतु

हया तीन्ही घटकातील निर्देशक मात्र नकारात्मक स्वरूपाचे होते. मानव दारीद्रयता निर्देशांकाचे घटक व त्यांचे निर्देशक पुढीलप्रमाणे निश्चित करण्यात आलेत.

1. स्वास्थ्य (आरोग्य) यात वयाच्या 40 वर्षेपर्यंत जिवंत न राहण्याची (म्हणजे मृत्यूची) संभाव्यता
2. शिक्षण - प्रौढ निरक्षरता दर
3. जीवनमान-

i) पिण्याचे शुध्द पाणी न वापरणारी लोकसंख्या

ii) वयानुसार कमी वजन असलेल्या मुलाचे सरासरी वजन

मानव दारीद्रयता निर्देशांकामध्ये स्वास्थ्य, शिक्षण व जीवनमानाचा अभ्यास करतांना व्यापक प्रमाणावर ज्या कमतरता किंवा वंचितता आढळून आल्यात त्या व्यक्त करण्यासाठी संपूर्ण देशांचा सरासरीचा वापर करण्यात आला. त्यात विशिष्ट व्यक्ती, कुटुंब किंवा लोकांची संयुक्त वंचन स्थिती व्यक्त करण्याची क्षमता नव्हती. ही समस्या दूर करण्यासाठी 2010 च्या मानव विकास अहवालांत मानव दारीद्रयता निर्देशांकाऐवजी बहुआयामी दारिद्रयता निर्देशांक स्वीकारण्यात आला.

बहुआयामी दारिद्रयता निर्देशांकची गणना करण्याकरीता मानव विकास निर्देशांक मध्ये समाविष्ट असलेले 1) स्वास्थ्य (आरोग्य) 2) शिक्षण व 3) जीवनमान हे तीन घटक विचारात घेण्यात आलेत. परंतु दारीद्रयाचा सखोल अभ्यास करण्यासाठी या तिन्ही घटकांना एकूण 10 निर्देशांकामध्ये विभाजित करण्यात आलेत. सर्व निर्देशक मानव दारीद्रयता निर्देशांकाप्रमाणेच नकारात्मक स्वरूपाचे होते. MPI करीता महत्तम गुण 100 टक्के ठेवण्यात आले. हे गुण तिन घटकामध्ये समान प्रमाणात विभाजीत करण्यात आलेत. म्हणजे प्रत्येक घटकाकरीता 33.3 टक्के गुण ठेवण्यात आलेत. आरोग्य आणि शिक्षणासाठी प्रत्येकी दोन निर्देशक घेण्यात आलेत व जीवनमानाकरीता सहा निर्देशक ठेवण्यात आलेत. अशाप्रकारे दारीद्रयाच्या विविध आयामाचा अभ्यास करण्याकरीता एकूण 10 निर्देशक घेण्यात आलेत.

2016 च्या मानव विकास अहवालात 102 देशांच्या बाबतीत बहुआयामी दारीद्रयता निर्देशांकाचे अंदाज दिले आहेत. त्यावरून लक्षात येते की, त्या देशातील जवळ-जवळ 150 कोटी लोकसंख्या बहुआयामी दारीद्रयात खितपत पडली आहे. मध्यम व निम्न मानव विकास गटातील देशामध्ये तर अर्ध्यापेक्षा जास्त लोकसंख्या बहुआयामी दारीद्रयाच्या परिस्थितीत जगत आहे. सर्वात वाईट स्थिती नाईजर या देशाची आहे. तेथे 2012 मध्ये 89.8% लोकसंख्या बहुआयामी दारीद्रयाने प्रभावित होती. त्यापैकी 73.5% लोकसंख्या ही अत्याधिक दारीद्रयाच्या दलदलीत फसली होती.

दरडोई दररोज 1.90 डॉलरचा उपभोग खर्च ही आंतरराष्ट्रीय दारीद्रय रेषा आहे. हया दारीद्रय रेषेनुसार भारतात 2015-2016 मध्ये 21.2% लोकसंख्या दारीद्रय रेषेखाली जीवन जगत होती.

4. **लिंगाधारीत विकास निर्देशांक** - 995 च्या मानव विकास अहवालात लिंगाधारीत विकास निर्देशांकाची संकल्पना सर्वप्रथम मांडण्यात आली. हा निर्देशांक प्रो. अमर्त्य सेन, सुधीर आनंद आणि मेघनाद देसाई या तीन भारतीय अर्थशास्त्रज्ञानी विकसित केला.

जेव्हा एकूण मानव विकासातील स्त्री-पुरूषांचा सापेक्ष वाटा आपण बघतो. तेव्हा स्त्री-पुरूषादरम्यानची विषमतेची दरी अधोरेखित होते. जीवनाच्या सर्वच क्षेत्रात जगभरात स्त्रियांना पुरूषांच्या तुलनेत विकासाच्या संधी कमीच मिळाल्या आहेत. म्हणून या अनुषंगाने संधी लाभातील तफावत किती आहे ? आणि एकूणच स्त्री-पुरूष विषमतेच्या मापनासाठी GDI चा उपयोग केला जातो.

लिंगाधारीत विकास निर्देशांकाचे तीन घटक आहेत ते खालीलप्रमाणे-

1) स्त्रियांचे जन्मापासूनचे सरासरी आर्युमान
2) स्त्री साक्षरता व एकूण नामांकन अनुपात.
3) स्त्रियांचे दरडोई उत्पन्न.

वरील तीन घटक विचारात घेऊन लिंग विकास निर्देशांक काढता येतो. हा निर्देशांक मानव विकास निर्देशाकाबरोबर असेल तर याचा अर्थ देशात लिंग विषमता अस्तित्वात नाही किंवा लिंग समानता आहे असा घेतला जातो. परंतु लिंग विकास निर्देशांक हा मानव विकास निर्देशांकापेक्षा कमी असेल तर या दोन्हीमध्ये जितके अंतर असेल तितकीच जास्त लिंग विषमता अस्तीत्वात आहे असे समजले जाईल.

लिंगाधारीत विकास निर्देशांकाचा वरील तिन्ही घटकांना समान भारांक देऊन त्यांच्या आधारे एकत्रित लिंगाधारीत विकास निर्देशांक काढला जातो. अर्थातच निर्देशांकाद्धारे स्त्रियांना आरोग्य सेवा, शिक्षण व आर्थिक संधी यामध्ये पुरूषांच्या तुलनेत किती संधी मिळते याचा विचार केला जातो. 2016 च्या मानव विकास अहवालात नार्वे हा सर्वाच्च लिंगाधारीत विकासाचा देश ठरला आहे. तर नायजेरिया हा सर्वात कमी देश ठरला आहे. तर भारताचा 105 वा क्रमांक आहे.

एकूणच GDI वरून असे लक्षात येते की, 1995 नंतर जरी स्त्रियांचा आर्थिक व सामाजिक दर्जा उंचावला असला तरी देखील अद्यापही अनेक क्षेत्रात स्त्रियांना त्यांचा न्याय्य वाटा मिळालेला नाही. केवळ विषमतेची दरी काही प्रमाणात कमी झाली आहे.

निष्कर्ष :

1) मॉरिस डि मॉरिस यांना जीवनमानाच्या भौतीक गुणवत्ता निर्देशांकाच्या अभ्यासावरून न्यून विकसित देशामध्ये असे दिसून आले की, त्या ठिकाणी आर्थिक वृद्धीमध्ये थोडया फार प्रमाणात वाढझाली असली तरी तेथील जनतेच्या जीवनमानाचा दर्जा उंचावलेला नव्हता तसेच सर्वसामान्य जनतेच्या मुलभूत गरजा ही पूर्ण झालेल्या नव्हत्या म्हणून विकासाचं मापन करण्यासाठी जीवनमानाचा भौतीक गुणवत्ता हा उत्पन्नेत्तर निर्देशांक तयार करण्यात आला.
2) जीवनमानाच्या भौतीक गुणवत्ता निर्देशांकामध्ये सरासरी आयुर्मान, बाल मृत्युदर आणि मुलभूत साक्षरता या सामाजिक घटकांना विशेष महत्व देण्यात आल्याचे दिसून येते.
3) जीवनमानाच्या भौतीक गुणवत्ता निर्देशांकामुळे असे सिध्द होते की, लोकांच्या जीवनात दिर्घायुश्याला फार महत्व आहे. त्यांना साक्षर होण्याची ही आवड असते. जेणेकरून शिक्षणाद्धारे जीवनामध्ये वेगवेगळया संधी मिळवून जीवन सर्वांगाने समृध्द करता येते.
4) मानव विकास निर्देशांक हा विकासाचा समतोल साधणारा निर्देशांक आहे.
5) मानव विकास निर्देशांकामध्ये आर्थिक दारीद्रया बरोबरच मानवी दारीद्रय मोजण्याचा प्रयत्न केलेला आहे.
6) मानव विकास निर्देशांकामध्ये मानवी जीवनात उत्पन्न हा घटक महत्वाचा आहे. परंतु त्याबरोबरच दिर्घायुश्य व शिक्षण हे घटक देखील

महत्वाचे आहे. कारण विकासाचा अंतिम हेतू मानव विकास हाच आहे. मानवाचा सर्वांगीण विकास व्हायचा असेल तर त्याच्या जीवनात दिर्घायुशी असणे महत्वाचे वाटते. आणि दुसरी गोष्ट म्हणजे ज्ञान संपादन करणे हे देखील महत्वाचे असते. कारण जीवनात भौतीक सुखाचा पुरेपूर उपभाग घ्यायचा असेल तर त्यासाठी व्यक्तीला प्रत्येक गोष्टीचे परिपूर्ण ज्ञान असेणे महत्वाचे आहे.

7) प्रस्तुत सर्व निर्देशांकावरून असे दिसून येते की, विकासाचा योग्य मापदंड म्हणजे मानव विकास निर्देशांक हाच आहे.

8) बहुआयामी दारीद्रयता निर्देशांकमध्ये विशिष्ट देशातील लोकांचे दारीद्रय मोजण्यात आले. हे दारिद्रय मोजत असतांना व्यक्तीचे आरोग्य व शिक्षण आणि राहणीमानाचा दर्जा हे घटक विचारात घेण्यात आले.

9) लिंगाधारीत विकास निर्देशांकाद्धारे स्त्रियांना आरोग्य सेवा, शिक्षण व आर्थिक संधी यामध्ये पुरूषांच्या तुलनेत किती संधी मिळतात याचा विचार करण्यात आलेला आहे. मानवाचा समतोल विकास साधायचा असेल तर स्त्री-पुरूष समानता हे देखील तेवढेच महत्वाचे आहे.

10) लिंगाधारीत विकास निर्देशांकावरून असे लक्षात येते की, आजच्या युगात स्त्रियांचा आर्थिक व सामाजिक दर्जा उंचावला असला तरी देखील अनेक क्षेत्रात स्त्रियांना त्यांचा न्याय्य व समान वाटा मिळालेला नाही केवळ विषमतेची दरी काही प्रमाणात कमी झाली आहे.

11) जागतिक पातळीवर स्त्रियांचा देशाच्या राष्ट्रीय उत्पन्नातील वाटा बहुतांष देशात आजही कमीच असल्याचे दिसून येते.

थोडक्यात वरील सर्व निर्देशांकावरून असे दिसून येते की, विकासाला मानवी चेहरा देण्याचा प्रयत्न करण्यात आलेला आहे.

References :-

1. Coldough Christopher (April 1993) " Human Development towards in the 1990's" published by Institute of Development studies, at the University of Sussex (Brightton BNIGRE) England.
2. Dalal K. L. (1991), " Human Development An Indian perspective" Vikas publishing House Pvt. Ltd. New Delhi.
3. Datt R. Sundharam K.P.M. (2006), Indian Economy" S chand and Company Ltd. New Delhi.
4. Haq Mahbub – Ul (1996) "Reflection on Human Development" Oxford University Press Delhi.
5. Kate Raworth and David Stewart (2003) "Critiques of the Human Development Index; A Review" in Reading in Human Development, Fukuda parr and A.K. Shivakumar, Oxford UniversityPress New Delhi.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

बी.एड.स्तर पर आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियों में एड्स के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

श्रीमती सरोज सिंह हाडा*   श्रीमती कीर्ति राज राव **

* निर्देशक, बी.सी.जी. शिक्षा महाविद्यालय, देवास (म.प्र.) भारत
** शोधकर्ता, बी.सी.जी. शिक्षा महाविद्यालय, देवास (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – बी.एड. स्तर पर आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियों में एड्स के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन।

प्रस्तावना – शिक्षा की प्रक्रिया सामाजिक है दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि व्यक्ति को सामाजिक वातावरण में अत्यधिाक लाभप्रद ढंग से शिक्षा दी जाती है किसी व्यक्ति में अभिवृत्तियों तथा रुझानों का विकास समाज के जीवन की निरंतरता द्धारा ही संभव है इनका विकास प्रत्यक्षत: विश्वासों, संवेगों तथा ज्ञान के माध्यम से संभव नहीं है।

जॉन ड्यूटी – सभी शिक्षा का प्रारंभ समय होता है जब व्यक्ति प्रजाति की सामाजिक चेतना में भाग लेता है।

लॉज – बच्चा अपने माता पिता को और छात्र अपने शिक्षकों को शिक्षित करता है करते बात जो हम कह कहते हैं , सोचते हैं या करते हैं हमें किसी प्रकार भी दूसरे व्यक्तियों द्धारा की सोची या की गई बात से कम शिक्षित नहीं करती है। इस व्यापक अर्थ में जीवन शिक्षा है और शिक्षा जीवन है।

शिक्षा का एक महत्वपूर्ण कार्य है मानव प्रकृति और मित्र का प्रशिक्षण आज सभ्य कहलाने वाले मानव की प्रकृति और चरित्र का पतन हो चुका है। पिछले दिनों विश्वयुद्ध इसके ज्वेलंत प्रमाण है। इन युद्धों में मानव ने जितने भी अमानवीय पाश्विक कार्य किए हैं उनके उदाहरण इतिहास में मिलने कठिन है। यदि मानव सभ्यता को भावी विनाश से बचाया जाना है तो मानव की प्रकृति और चरित्र में सुधार किया जाना अनिवार्य है।

हमारे समाज में किशोर बालकों में नशीले पदार्थों का सेवन करना आम बात हो गई है। यह जानते हुए कि इन पदार्थों का सेवन करना काफी हद तक घातक है लेकिन आज का युवा वर्ग इनका सेवन करता है और अनेक प्रकार की घातक संक्रमित बीमारियों से ग्रसित हो जाती है इसका इलाज होना नामुमकिन हो जाता है जो इस प्रकार है– कैंसर, क्षय, स्वाईन फ्लू, अतिसार इत्यादि लेकिन आज समाज के लिए सबसे बड़ा चुनौतीपूर्ण रोग है – एड्स। एड्स एक घातक एवं लाइलाज बीमारी है इसके प्रति जागरूकता पैदा करके इसके प्रसार को रोका जा सकता है। छात्र किसी भी देश का भावी मानव संसाधान है , देश का भविष्य आज के छात्रों पर निर्भर है एक जागरूक छात्र स्वयं तो सक्षम होता है , साथ ही अपने परिवार एवं समाज में भी जागरूकता लाता है, वह स्वयं एड्स जैसे घातक रोग से बच सकता है साथ ही अपने दोस्तों एवं अन्य संबंधित संबंधियों को भी इससे बचाने के लिए जागरूक करता है। अत: छात्रों का एड्स के प्रति जागरूक होना आवश्यक है। कम शिक्षित एवं ग्रामीण एवं आदिवासी क्षेत्र में छात्रों को एड्स के प्रति जागरूक होना और अधिक आवश्यक हो जाता है ऐसे क्षेत्रों में संचार के साधनों का पर्याप्त अभाव एवं शिक्षा की कमी तथा सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े होने के कारण एड्स जैसी बीमारी के बारे में बहुत कम जागरूकता पाई जाती है इस बीमारी का इलाज ग्रामीण क्षेत्र होने से पर्याप्त इलाज नहीं हो पाता है ऐसी स्थिति में एड्स जैसी बीमारियों के बारे में जागरूकता बहुत आवश्यक है।

घातक यौन रोग मनुष्य को लग जाना बहुत सरल है रोगाणुओं पर आधारित यह महा रोग जिस मनुष्य को लग जाता है उसका मृत्यु पर्यंत पिछला करता है। शरीर से प्राण चाहे निकल जाए किंतु इस रोग का घातक विषाणु HIV निर्जीव शरीर में भी शव के साथ रहता है। इस रोग के विषय में विज्ञान ने प्रमाणित किया है कि इसका मृत्यु के अतिरिक्त कोई और उपचार नहीं है। ऐसी स्थिति में एड्स जैसे बीमारियों के बारे में जागरूकता बहुत आवश्यक है। समाज के लिए स्वस्थ व्यक्तियों का होना आवश्यक है , समाज व्यवस्था तभी सुचारू रूप से चल पाएगी जो व्यक्ति सामाजिक मानसिक एवं आर्थिक रूप से सुखी एवं संपन्न हो जब समाज के सदस्य ही विभिन्न रोगों से ग्रसित होंगे तो स्वाभाविक एक ही यह समाज भी रुग्ण हो जाएगा परिणाम स्वरूप सारी सामाजिक व्यवस्था ही ध्वस्त हो जाएगी।

विश्व अन्य जानलेवा रोगों जैसे कि कैंसर , क्षय , स्वाईन फ्लू , अतिसार इत्यादि का सामना कर रहा है, जिनको मिटाया भी जा सकता है लेकिन आज हमारे सामने सबसे बड़े चुनौतीपूर्ण रोग है एड्स।

अन्य रोग मुख्य रूप से छोटी उम्र के एवं बूढ़े लोगों को शिकार बनाते हैं लेकिन एड्स आदमी तथा महिला को आर्थिक रूप से उत्पादक सालों ने ही उन पर हमला करता है इस तरह समग्र देश के विकास की संभावना के सामने वह खड़ा करता है?

जब हम अच्छे स्वास्थ्य की बात करते हैं तो केवल निरोगी होना अच्छे स्वास्थ्य की दशा नहीं कहीं जाएगी, अपितु शारीरिक मानसिक बौद्धिक एवं सामाजिक रुप से संपन्न व्यक्ति है स्वस्थ कहा जाएगा तभी अरस्तू ने कहा है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।

ग्राउड के अनुसार – स्वास्थ्य शिक्षा से अभिप्राय, स्वास्थ्य संबंधी ज्ञान को किस प्रकार शिक्षा पद्धति द्धारा उचित व्यक्तिगत एवं सामाजिक व्यवहार के तरीके में बदला जा सकता है। इस संदर्भ में छात्रों में एड्स के प्रति पर्याप्त

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

जागरूकता महत्वपूर्ण हो सकती है। इस हेतु मैंने b-ed स्तर पर मैं आवासीय एवं गैर आवासीय छात्रों में एड्स के प्रति जागरूकता का स्तर जानने के लिए शोध कार्य आरंभ किया जा रहा है।

अध्ययन का औचित्य – वर्तमान समय में समुचे विश्व के सामने चिंतनीय समस्या है एड्स। वास्तव में एड्स एक अवस्था है जोकि HIV के पश्चात होती है HIV एक ऐसा वायरस है जो सिर्फ मानव द्वारा मानव में ही फैलता है, अर्थात इस महामारी को फैलने में हम स्वयं ही जिम्मेदार हैं। निष्कर्षो से यह सिद्ध हो चुका है कि एड्स के फैलने का प्रमुख कारण संक्रमित सुई से, संक्रमित रक्त चढ़ाने से, संक्रमित माता से व मुख्य रूप से इस बीमारी को बढ़ावा असुरक्षित यौन संबंध ही है। इसका प्रतिशत लगभग 86% है अर्थात एड्स असुरक्षित यौन संबंध ही है।

भारत सरकार ने मध्यप्रदेश को भी अति संवेदनशील श्रेणी में रखा है। शासन की नई योजनाओं एवं मीडिया के द्वारा एड्स संबंधी जानकारी प्रसारित किए जाने के कारण आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियों को एड्स की जानकारी तो है लेकिन प्रायोगिक तौर पर विद्यार्थी इसके प्रति जागरूक है या नहीं है, इसके अध्ययन की आवश्यकता है।

ऐसी स्थिति में इन आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियों में इस विषय के प्रति गंभीरता एवं जागरूकता के अध्ययन की बहुत अधिक आवश्यकता है।

समस्या कथन –बी.एड. स्तर पर आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों में एड्स के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन।

पारिभाषिक शब्द –

1. आवासीय – वे विद्यार्थी जो छात्रावास में रहकर अध्ययन करते हैं वह आवासीय विद्यार्थी कहलाते हैं।

2. गैर आवासीय – विद्यार्थी जो अपने परिवार के साथ रहकर विद्यालय में अध्ययन करते हैं वे गैरआवासीय विद्यार्थी कहलाते हैं।

3. एड्स – किसी व्यक्ति के HIV positive होने से उनके प्रति कार्य क्षमता कम हो जाती है तथा कुछ वर्षों में व्यक्ति एड्स की अवस्था में पहुंच जाता है , तथा उसकी मौत हो जाती है।

एड्स का अर्थ – Aqiored immue deficiency syndrame अर्थात किसी अन्य के द्वारा प्राप्त किया लक्षणों का संग्रह जो शरीर की प्रतिरोधा आत्मकता को कम कर देता है।

4. जागरूकता – किसी विषय के प्रति सचेत व सुनते रहने की प्रक्रिया जागरूकता कहलाती है यहां आवासीय व गैर आवासीय विद्यार्थियों को एड्स के प्रति जागरूकता से है।

अध्ययन के उद्देश्य – मेरे शोध में एड्स एवं उसके प्रति जागरूकता के अध्ययन का उद्देश्य निम्नानुसार है –

1. छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों में एड्स जागरूकता व अध्ययन करना।
2. छात्रावास में न रहने वाले विद्यार्थियों का एड्स जागरूकता का अध्ययन करना।
3. छात्रावास में रहने वाले एवं छात्रावास में न रहने वाले विद्यार्थियों की एड्स जागरूकता की तुलना करना।

परिकल्पना – परिकल्पना में समस्या उत्पत्ति के कारण सत्य के खोज की प्रक्रिया और समस्या के कारणों एवं परिणामों का पूर्व संकलन समाविष्ट रहता है प्रस्तुत शोध की परिकल्पना निम्नानुसार है –

1. b-ed स्तर के विद्यार्थियों में एड्स शिक्षा के अभाव एवं एड्स के प्रति भ्रांति पूर्ण दृष्टिकोण पाया जाता है।
2. विद्यार्थियों में शिक्षा द्वारा शारीरिक विकास के प्रति जागरूकता में वृद्धि होती है।
3. किशोर शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों की मादक पदार्थो के प्रति जागरूकता में वृद्धि होती है।
4. एड्स शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों की मादक पदार्थो के प्रति जागरूकता में वृद्धि होती है।

सीमांकन – विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन की एम.एड. उपाधि हेतु लघु शोध किया गया है जिसका कार्य क्षेत्र छात्रावास (आवासीय) में रहकर अध्ययन करने वाले विद्यार्थी तथा महाविद्यालय में अध्ययन करने वाले (गैर आवासीय) विद्यार्थियों में एड्स के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया जाएगा।

शोध विधि – सर्वेक्षण विधि द्वारा।

न्यादर्श – शोधकर्ता ने शोध के लिए न्यादर्श हेतु छात्रावास के 20 आवासीय विद्यार्थियों का चयन तथा कल्याण बी.एड. के 20 गैर आवासीय विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा।

उपकरण – प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षणात्मक अध्ययन किया जाएगा। सर्वेक्षणात्मक अध्ययन में साक्षात्कार एवं प्रश्नवाली ही कारगर होती है स्वनिर्मित के द्वारा हम विस्तृत क्षेत्र की सूचनाएं प्राप्त कर सकते हैं।

उपयुक्त विशेषताओं एवं सीमाओं को ध्यान में रखकर प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित प्रश्न वाली के द्वारा तथ्यों का पता लगाकर वस्तु स्थिति को स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा। अत: शोधकर्ता द्वारा निर्मित प्रश्न वाली इस शोध का उपकरण होगी।

प्रदत्त संकलन प्रक्रिया – चुकि अध्ययन सर्वेक्षणात्मक है इसलिए आवासीय व गैर आवासीय विद्यार्थियों में एड्स के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन शोधर्थी द्वारा निर्मित प्रश्न वाली प्रशासित की जाएगी। प्रश्नवाली को जांचने के पश्चात ही (सकारात्मक) प्रतिक्रिया को प्रदत्तों के रूप में शोध कार्य के लिए प्रयुक्त किया जाएगा।

प्रदत्त विश्लेषण – प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण t परीक्षण एवं रेखा चित्र द्वारा किया जाएगा।

शैक्षिक उपयोगिता :

1. विद्यार्थियों के शारीरिक स्वास्थ्य पर बल दिया जा सकता है।
2. विद्यार्थियों को एड्स के प्रति जागरूक होने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।
3. एड्स की जानकारी देकर विद्यार्थियों के जीवन में निहित मूल्यों से अवगत कराया जाएगा।
4. विद्यार्थी समाज से व परिवार से प्राप्त ज्ञान का जीवन में निर्वहन कर सकेंगे।

निष्कर्ष :

1. बी.एड. स्तर पर आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियों में एड्स के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं स्वीकृत किया गया।
2. यौन संक्रमण से होने वाली लाइलाज बीमारी के बारे में आवासीय विद्यार्थियों व गैर आवासीय विद्यार्थियों समान जानकारी रखते हैं।
3. एड्स बीमारी फैलने के कारण असुरक्षित यौन संबंध से संदर्भित रक्त से तथा मां से नवजात शिशु दोनों प्रकार के विद्यार्थियों से समान जानकारी

रखते हैं।

4. एड्स से बचने के लिए एचआईवी जांच करनी चाहिए की जानकारी समान पाई गई है।
5. छात्रों में एड्स के होने की समयावधि, एड्स की रोकथाम एवं उपचार तथा एड्स ग्रस्त व्यक्ति की देखभाल में जन सामान्य की भूमिका के क्षेत्रों में एक समान जानकारी है।
6. एड्स ग्रसित विद्यार्थी व्यक्ति के साथ व्यवहार और उसकी देखभाल व प्यार से रहने का एक समान निष्कर्ष निकाला है।
7. ART व AIDS शब्दों के नाम की जानकारी आवासीय विद्यार्थियों की तुलना में गैर आवासीय विद्यार्थियों को अधिक ज्ञान है।
8. रक्त चढ़ाते समय रक्त की जांच व रक्त ग्रुप का ज्ञान की जानकारी में आवासीय विद्यार्थियों का प्रतिशत अधिक है।
9. एड्स के प्रति जागरूकता के तीन क्षेत्रों में विद्यार्थियों को जागरूक होना है।

अ. एड्स से संबंधित अंधविश्वास।
ब. एड्स के होने की समयावधि।
स. एड्स की रोकथाम एवं उपचार।

शैक्षिक उपयोगिता :

1. विद्यार्थियों के शारीरिक स्वास्थ्य पर बल दिया जा सकता है।
2. विद्यार्थियों को एड्स के प्रति जागरूक होने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।
3. एड्स की जानकारी देकर विद्यार्थियों के जीवन में निहित मूल्यों से अवगत कराया जाएगा।
4. विद्यार्थी समाज से व परिवार से प्राप्त ज्ञान का जीवन में निर्वाहन कर सकेंगे।
5. विद्यार्थियों के शारीरिक स्वास्थ्य पर बल दिया जा सकता है।

आगामी अध्ययन हेतु सुझाव – शोध अध्ययन के आधार पर शोधकर्ता ने विद्यार्थियों हेतु कुछ सुझाव दिए हैं –

1. बी.एड. स्तर में स्वास्थ्य विभाग द्वारा एड्स से बचाव व रोकथाम पर सेमिनार का आयोजन करना चाहिए।
2. बी.एड. स्तर पर एड्स बीमारी से बचाव व जागरूकता का पाठ्यक्रम में समावेश करना चाहिए।
3. जिले स्तर पर संचालित छात्रावासों में स्वास्थ्य विभाग की ओर से एड्स संबंधी जागरूकता व बचाव जानकारी का प्रचार प्रसार करना चाहिए।
4. एड्स संबंधित अंधविश्वासों, भ्रामक मान्यताओं से अपने अभिभावकों, मित्रों व अपने समाज को मुक्त रखने के लिए प्रचार प्रसार करना चाहिए।
5. एड्स रोगी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाएं तथा सहानुभूति, सहयोग से उसके समक्ष पेश आए।
6. बी.एड. स्तर पर एड्स के प्रति जागरूकता विषय पर निबंध व अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन करना चाहिए।
7. विद्यार्थियों को यह समझना चाहिए कि एड्स ग्रसित व्यक्तियों के प्रति समाज व परिवार का व्यवहार, प्रेम, सद्भावना व सहयोग पूर्ण होना चाहिए।
8. बी.एड. स्तर पर एड्स दिवस 1 दिसंबर को प्रत्येक जिले में प्रभाव फैरी व प्रदर्शन का आयोजन करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. किशोरावस्था शिक्षा में कौशल विकास एनसीईआरटी एवं राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल 2006।
2. एचआईवी/ए आई डी एस तथा यौन संक्रमित रोगों से बचाव प्रशिक्षण संदर्भिका मध्य प्रदेश राज्य नियंत्रित समिति भोपाल 2003।
3. सामर्थ्य– शिक्षण सामग्री मध्य प्रदेश राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल 2006।
4. शिक्षा मनोविज्ञान – प्रो. राममूर्ति अंकित पब्लिकेशन नई दिल्ली।
5. मंदसौर दर्शन – स्टैंड प्रकाशन मंदसौर 2004।
6. शिक्षा मनोविज्ञान – पीडी पाठक विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 1972।
7. शिक्षा मनोविज्ञान – डॉ एस एस माथुर विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 2005 ।
8. शिक्षा मनोविज्ञान – सुरेश भट्नागर, आर लाल बुक डिपो मेरठ 1999।
9. पोषण , स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा – एच एस शर्मा (राधा प्रकाशन आगरा)
10. स्वास्थ्य शिक्षा – शैरी जीपी (विनोद पुस्तक प्रकाशन आगरा)
11. स्वास्थ्य दर्शन – रविंद्र दुबे (अग्रवाल प्रकाशन आगरा)

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

महामारी को इंगित करती साहित्यिक कृतियाँ

डॉ. डी.पी. चन्द्रवंशी *

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) शासकीय जे.एम.पी. महाविद्यालय, तखतपुर, जिला-बिलासपुर (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – महामारी संक्रामक बीमारियाँ वर्तमान से नहीं अपितु युगों से न केवल मानव जाति के वरन् संपूर्ण जीव-जगत को प्रभावित करती रही हैं। साहित्य चाहे वह भारतीय साहित्य हो या विश्व साहित्य वे अपने समय के महामारियों को उल्लेखित अवश्य किये हैं। कतिपय लेखक और उनकी रचनाएँ इस प्रकार है-

पाश्चात्य साहित्यकार

लेखक		**रचनाएँ**
• डेनियल डेफो	-	अ जर्नल ऑफ द प्लेग इयर (1722)
• एडगर एलन पो	-	द मास्क ऑफ द रेड डेथ (1842)
• मैरी शैली	-	द लास्ट मैन (1886)
• अल्बर्ट कामू	-	प्लेग (1947)
• माइकल क्रिस्टन	-	द एड्रोमेड स्टेन (1969)
• स्टीफन किंग	-	द स्टैण्ड (1978)
• रिचर्ड प्रेस्टन	-	द हाट जोन (1994)
• खोसे सारामायो	-	ब्लाइंनेस (1995)
• जिम क्रेस	-	द पेस्ट हाउस (2007)
• डैन ब्राउन	-	इंफर्नो (2013)

भारतीय साहित्यकारों के साहित्य इस प्रकार हैं जिसमें महामारियों के उल्लेख मिलत हैं-

साहित्यकार		**कृतियाँ**
• मास्टर भगवान दास	-	प्लेग की चुड़ैल (1902)
• रवीन्द्रनाथ	-	अर्धचंद्र (1913)
• सूर्यकांत त्रिपाठी निराला	-	कुल्लीभाट (1918)
• शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय	-	गृहदाह (1919)
• डॉ. राही मासूम रजा	-	आधा गाँव (1947)
• फणीश्वर नाथ रेणु	-	मैला आँचल (1954)
• केशव प्रसाद मिश्र	-	कोहबर की शर्त (1965)
• नरेश मेहता	-	उत्तर कथा दो खंड में (1989 व 1985)
• कमलकांत त्रिपाठी	-	पाहीघर (1991)

प्रस्तावना – महामारी किसी एक मोहल्ला, गाँव, नगर, प्रांत, देश या द्वीप को प्रभावित नहीं करती अतिपु संपूर्ण मानव जगत को दुष्प्रभावित करने वाली सुरसा रूपी काल है। यह समाज को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यावसायिक, क्रीड़ास्पर्धा आदि को अपनी चपेट में लेकर इनको अनिश्चितता के गर्त में ढकेल देती है। यह उस विषकन्या प्रेयसी की तरह है जिसका चुम्बन, आलिंगन या स्पर्श ही अस्तित्व के लिए विनष्ट कारक है। पूर्व की साहित्यिक कृतियाँ जो कि महामारी को इंगित करती है अद्यतन समय को भी दृष्टिगोचर करती परिलक्षित होती है।

हम केवल साहित्य के माध्यम से ही महामारी से भिज्ञ थे। पर आज कोविड-19 कोरोना से साक्षात् होने पर ज्ञान चक्षु खुल गये। अतीत में विज्ञान के अल्प विकास काल में हमारे पूर्वजों ने कैसे अपने आपको बचाया, संभाला और महामारियों से डटकर सामना करते हुए विजय पताका लहराया। मानव अपने जिजीविषा के कारण इस महाविनाशक संक्रमण से बचे हैं।

इतिहास के पन्नों को उलटकर देखें तो अपने समय के इतिहासकार, साहित्यकार, संगीतकार, फिल्मकार सभी ने इस विभीषिका की भयावहता का रोचक, मार्मिक, हृदयविदारक चित्रण किया है। इस प्राणघातक समय में

लोगों के धैर्य, साहस व कर्तव्यनिष्ठा भी हमें नतमस्तक करने को मजबूर करता है। आज कोविड-19 कोरोना काल में भी यहीं देखने को मिल रहा है। जो आज कोरोना योद्धा के नाम से मानव जाति की रक्षार्थ अपने प्राणोत्सर्ग निर्भय होकर अविरल कर्तव्यलीन हैं।

विश्व विख्यात फ्रांसीसी उपन्यासकार अल्बर्ट कामू ने अपने उपन्यास 'प्लेग' में बताया है कि कैसे कोई महामारी जो अदृश्य है प्रत्यक्ष तौर से दुनिया में हमला करता है और कितना जानलेवा हो सकता है। लोगों के खुशहाल जीवन को कितना बदरंग कर देता है। 'प्लेग' उपन्यास को एक अंश इस प्रकार है, हर किसी को पता है कि महामारियों के पास दुनिया में लौट आने का रास्ता होता है, फिर भी न जाने क्यों हम उस चीज पर यकीन नहीं कर पाते हैं।'[1]

मानव इस विश्वास से लबरेज होता है कि ये जो महासंकट महामारी का है, उससे हम वापसी करेंगे फिर भी मन के किसी कोने में मौत का खौफ़ विद्यमान रहता है कि कहीं मैं इसका शिकार तो नहीं होऊँगा। इस महामारी में जहाँ कुछ लोग महामानव का परिचय देते हुए सहायता दिखाते हैं तो कुछ हृदयहीन बनकर मौका परस्त, खुदगर्ज होकर एक का ग्यारह बनाने में भी नहीं चुकते हैं।

सुप्रसिद्ध कोलंबियाई कथाकार गाब्रिएल गार्सिया मार्केस ने यलव इन द टाइम ऑफ कॉलेरा' में स्पष्ट किया है कि एक ओर महामारी से खत्म होते जीवन की दास्ताँ है तो दूसरी ओर प्रेम के लिए जीवन को बचाने की कश्मकश।'

इतिहास साक्षी है महामारी ने किसी परिवार को समूल अपने आगोश में लेकर जनशूल्य कर दिया तो किसी ग्राम या नगर को जन आँकड़ों में परिवर्तन कर दिया। गुरूदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर ने यपुरातन भृत्य' नामक काव्य रचना में उल्लेखित किया है कि कैसे एक भृत्य अपने स्वामी की देखभाल करते हुए स्वयं चेचक की चपेट में आकर काल कवलित हो जाता है।

मास्टर भगवान दास 'प्लेग की चुड़ैल' कहानी में प्लेग महामारी से ही कहानी का आरंभ किया है। कहानीकार के शब्दों में 'गत वर्ष जब प्रयाग में प्लेग घुसा और प्रतिदिन सैकड़ों गरीब और अनेक महाजन, जमींदार, वकील, मुख्तार के घरों के प्राणी मरने लगे तो लोग घर छोड़कर भागने लगे यहाँ तक कि डॉक्टर भी दूसरे शहरों को चले गये।'[2]

पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र ने वीभत्स कहानी में इन्फ्लूएन्जा के विध्वंशक आतंक को चित्रित किया है। कहानी का नायक सुमेरा भी महामारी की वजह से से मृत्यु का वरण कर लेता है।

शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय ने उपन्यास 'गृहदाह' में नोखा (बिहार) के प्लेग महामारी का उल्लेख किया है।

महाप्राण निराला की आत्मकथा 'कुल्लीभाट' में 'फ्लू' महामारी का जिक्र किया है। वास्तव में यह स्पेन से फैला हुआ 'स्पेनिश फ्लू' था जिसने समूचे विश्व के करोड़ों लोगों को अपना शिकार बनाया था। इस महामारी ने निराला जी की पत्नी, एक वर्षीय पुत्री, पारिवारिक सदस्यों, रिश्तेदारों को उनसे विलग कर दिया। हिमालय की पहाड़ियों से लेकर मैदानी इलाकों को भी अपनी चपेट में स्पेनिश फ्लू ने ले लिया।

राजिन्दर सिंह बेदी की कहानी 'क्वारनटीन' अंग्रेजी राज की प्लेग महामारी पर आधारित है कथाकार लिखते हैं 'प्लेग तो खतरनाक थी ही, मगर क्वारनटीन उससे भी ज्यादा खौफनाक थी। लोग प्लेग से उतने परेशान नहीं थे जितने क्वारंटीन से।'[3]

व्यक्ति चाहे कितना भी सम्मान या सम्पन्नता प्राप्त कर ले जब लोगों को अनायास किसी घटना से मृत्यु को गले लगाता देख ले तो उसे यह संसार सारहीन लगता है। 'क्वारटीन' के कथाकार लिखते है, 'उस वक्त मेरा गला सूख गया। भागू की मरती हुई बीवी और बच्चे की तस्वीर मेरी आँखों में खींच गई। हारों के बोझ से मुझे मेरी गर्दन टूटती हुई मालूम हुई और पैसों के बोझ से मेरी जेब फटने लगी। और ..... इतनी इज्जत हासिल करने के बावजूद मैं बे-तौकीर होकर इस कद्र-शनास दुनिया का मातम करने लगा।'[4]

रेणु जी ने 'पहलवान की ढोलक' कहानी में मलेरिया, हैजे के विकराल रूप का चित्रण किया है। वहीं हिन्दी का पहला आँचलिक उपन्यास 'मैला आँचल' में महामारी हैजा का उल्लेख करते हुए रेणु जी लिखते हैं 'मंगलादेवी ने हैजा के समय रात-रात भर जागकर रोगियों की सेवा की और खुद बीमार पड़ी तो उसे पास बैठने वाला भी को नहीं।''[5]

'कोहबर की शर्त' उपन्यास में केशव प्रसाद मिश्र ने पूर्वी उ.प्र. के दो गाँव बलिहार और चौबेछपरा के नायक-नायिका चंदन-गुंजा जिन्होंने तिनका-तिनका पाई-पाई जोड़कर घर बनाया महामारी में कैसे उजड़ गया कारूणिक रूप से दिखाया गया है।

नरेश मेहता ने उत्तरकथा उपन्यास में मालवा अंचल के हैजे का हृदयद्रावक घटना का चित्रण किया है।

कमलकांत त्रिपाठी ने पाहीघर उपन्यास में हैजा से हुई मौतों का उल्लेख किया है।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि महामारी की विनाश लीला आज की नहीं अपितु सदियों से चली आ रही एक पिशाची है। जिनका द्वंद्व सदा से मानव के साथ होता रहा है, जिसमें अन्तोगत्वा विजय तिलक मानव के मस्तक पर लगता आया है। आज चाहे यूरोपीय, एशियाई, अमेरिकी या लैटिन अमेरिका या फिर आफ्रीकी देश हो कोविड-19 कोरोना से हाहाकार कर रहे हैं। पर लाखों जीवन के अंत होने पर भी समूचा विश्व 'टीका' का आविष्कार कर इससे लोहा ले रहा है। आज हम महामारी पर विजय प्राप्त करने एक कदम आगे बढ़ चले हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. अल्बर्ट कामू 'प्लेग' उपन्यास 10 जून 1947, पेंगुइन बुक्स इंडिया प्रा.लि. दिल्ली
2. मास्टर भगवान दास 'प्लेग की चुड़ैल' कहानी प्रारंभिक पंक्ति सरस्वती पत्रिका इण्डियन प्रेस प्रयाग (1902)
3. राजिन्दर सिंह बेदी, कहानी-क्वारनटीन (1940) जिसका अनुवाद (हिन्दी में) संजीव कुमार द्वारा किया गया है। का अंतिम अनुच्छेद।
4. फणीश्वर नाथ रेणु 'पहलवान की ढोलक'- कहानी साप्ताहिक पत्रिका विश्वामित्र में 11 दिसम्बर 1944 को प्रकाशित।
5. फणीश्वर नाथ रेणु - 'मैला आँचल' 1954 राज कमल प्रकाशन प्रा.लि. 1954 राजकमल पेपर बैक्स आठवाँ संस्करण 1992।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Education and Human Values : Looking Back and Thinking for the Future

Dr. Kuldeep Singh Tomar *

*Assistant Professor (Education) Tridev College of Education, Muzaffarnagar (U.P.) INDIA

Introduction - Education is the full development of all the innate powers of a child. Nothing is thrust into his mind by force from outside. It develops the child physically, mentally, emotionally and socially. Education is important from various points of view. Its field of activity is so wide that all activities and experiences are embraced in its sphere of work. Essentially it is a process of development of the latent inherent capacities of a child. It suplimates the animal basic instincts in a child to socially useful activities, habits of thinking and It also inculcates in a child higher moral and social ideals together with spiritual values, so that he is able to form a strong character useful to his own self and to the society of which he is an integral part. It cuturises the child promoting social and refined patterns of behavior. It also develops all his intellectual and emotional powers, so that he is able to meet the problems of life squarely and solve themselves successfully. It develops the social qualities of service, fellow-feeling, inspiring the child to lay down all, even his life, for the glory and prosperity of his country Education infuses in the child a spirit of dynamic citizenship which eggs him on in the service of his nation keeping in consideration the international understanding and well-being of humanity as a whole.

Values- Values are emotional judgement Generated feelings. Values are not related to truth which inherently in verification-oriented values do not have epistemological validity and relevance, and are related to axiology and aesthetics. Value judgement differ from intellectual judgement as they are judgemental in nature and not epistemological. Values may be result-oriented truth may be. not. Etymologically, value singnifiesquatily, and make a thing, concept or individual important, useful and worth going in for. At other hand, or at the empirical level, anything that satisfies human wants is a value. Philosophical, value signifies neither a thing nor an individual, but is a concept, a thought, an underlying idea, which may vary or, even differ from place to place, time to time. These are representative of philosophical ideology which may find frutism in favourable environment and conditions. In other words value as a concept which is acceptable by the sub-conscious mind, is understood by all and perceived by the individual". Actually,a value is preference as well as the conception of the preferable. Value is a conception of the desirable.

The values are concept, not feeling. Value embody and express feelings, but they are more than feelings. Values exists in the mind independently of self-awareness or public affirmation. A value does not have to explicitly announced or put into practice to qualify as a value.ValueOften from a part of frame of judgement without man's conscious knowledge or deliberate choosing. Values are also criteria for judging degree of good and bad, right and wrong, or praise or blame. Values are simple, the presence or absence of these characteristic. Values are unique verbal concept relate to the worth given to specific kinds of objects, acts and conditions by individuals and groups.

Moral education means an ethical education that helps choose the right path in life. It comprises some basic principles such as truthfulness, honesty, charity, hospitality, tolerance, love, kindness and sympathy. Moral education makes one perfect.

Swami Vivekananda said of Education: "Education is the manifestation of perfection already in man..."

Values have transformative energy. As aspirations, values create visions for the future. As self-activists, living example is " larger than life" both to themselves and others thus easing value performance in real-time. The transformative capacity of having values means the power to "change your world," your construal of inner thoughts and feelings, how you made sense of the environment of people and social events. Your values shape–for better or worsegood behaviors that improve the lives of everyone around. Values are what you fell and believe to be true, your knowledge, understanding, and wisdomliving a life of vitality.

Values differ from "principles."Values are personal beliefs and opinions with less precise universal "right-wrong" meaning. Values offer one a sense of general guidelines. Principles, by contrast, are more socially planned. They are universally recognized as real standards. Typically, people perceive them as valid rules and laws with more unambiguous

right -wrong connotations. People choose and may change their values but abide by conventional, more externally imposed principles of social propriety. Principles are clear-cut, explicit constraining rules and codes of conduct that guide choices of governing right and wrong behaviors. Principles determine what is proper and structure moral evaluations and legal systems. Principles are rooted in values.

The Five Human Values - Human values make life worthwhile, noble, and excellent, and are those qualities that lie within the human personality, waiting to be drawn out and translated into action. SathyaSai Education is based on five human values: Truth, Right Conduct, Peace, Love, and Non-violence. Drawing out these five inherent human values develops good character.

Human values are fundamental to human existence and are integral to any society. They are universal and are inherent in all human beings and are inter twined with the cultural and spiritual aspects of life. Human values-based education, therefore, is complimentary to values based education. Bringing out and nurturing of the human values in children during the formative years will result in caring and responsible adults in the future. Bringing out human values in adults is an internal motivator that reinforces good character, morality and ethics, resulting in caring and responsible citizens.

The Human Values in Education - Human values cannot be taught, they have to e brought out from within the learner. It has been a mistake in the past, where teacher have been teaching morality, ethics, values, good character etc. as subjects. Learner can memorize them and can pass examinations, but they fail to put them into practice in their daily life. There seems to be a general decline in morality throughout the world. Transformation of the person cannot take place by mere teaching, but can be achieved through self-realization when the values come out from within the learner. In such cases, there is a direct experience of the human values in the life of the learner.

References :-

1. Apte, D.G. (1961), Our Educational Heritage, Acharya Book Depot, Baroda.
2. Chopra, R.K. (2001), 'Code of Professional Ethics for Teachers : Some Reflections', The Primary Teachers, April, NCERT, New Delhi.
3. Durkheim, Emile (1953), Professional Ethics and Civic Morals, Routledge and Kegan Paul Ltd., London.
4. Gandhi, M.K. (1922, 1927 & 1935), Young India, Vol. I, II and III, Ganesan, Madras.
5. MHRD (1986 & 1992), National Policy on Education, Department of Education, Government of India, New Delhi.
6. NCERT (1997), Code of Professional Ethics for Teaches, New Delhi.
7. NCERT (2001), 'Report of Conference of Teachers Organizations on Code of Professional Ethics for Teachers', DTEE, New Delhi.
8. NCTE (1996), Professional Status of Teachers, National Council for Teacher Education, New Delhi.
9. Peters, R.S. (1971), Ethics and Education, George Allen Unwin Ltd., London.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

मध्यप्रदेश की सहरिया जनजाति की मूल समस्या गरीबी से अशिक्षा की ओर

डॉ. विजय सिंह *

* सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) शा. गणेश शंकर विद्यार्थी महाविद्यालय, मुंगावली, जिला अशोकनगर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा मध्यप्रदेश के उत्तरी पूर्वी अंचल क्षेत्र में करने वाली विशेष पिछडी जनजाति की अशिक्षा और गरीबी से संबंधित अध्ययन पर प्रकाश डाला गया है। जिसमें यह अध्ययन किया गया है कि गरीबी और अशिक्षा दोनों ही इस जनजाति की बदहाल स्थिति के लिए जिम्मेदार है। यदि इस जनजाति के सर्वागींण विकास के लिए प्रयास किया जाये तो शिक्षा तथा गरीबी उन्मूलन की योजनाएं एक साथ संचालित करने की आवश्यकता है।

सहरिया जनजाति की सामान्य जानकारी – उल्लेखनीय है कि सहरिया जनजाति राज्य की उन जनजातियों में से एक है जिन्हें भारत सरकार ने अन्य जनजातियों की बराबरी के स्तर तक लाने के लिये विशेष रूप से पिछडी जनजाति माना है।[1]

सहरिया जनजाति मध्यप्रदेश के शिवपुरी, श्योपुर, गुना, अशोकनगर, मुरैना और ग्वालियर सहित अधिकांश जिलों में बसे हुये हैं। 2011 की जनगणना में इनकी जनसंख्या 6 लाख 14 हजार है। जो राज्य की अनुसूचित जनजातियों का 4.01 प्रतिशत है।[2]

शैक्षिणिक स्थिति – उत्तरी-पर्वूी अंचल क्षेत्र में शोधार्थी द्वारा सहरिया जनजाति की शैक्षिणिक स्थिति का अध्ययन किया गया, जिसमें अंचल के 25 सहरिया जनजाति सदस्यो का सर्वेक्षण किया गया, जिनमे न्यूनतम आयु 18 वर्ष से 55 वर्ष की आयु सीमा तक के सदस्यों को शामिल किया गया। प्राप्त जानकारी से विधित होता है कि सहरिया जनजाति के बच्चे स्कूल में दाखिला लेकर कुछ समय शाला जाने के बाद पडाई छोड देते हैं। जब यह तथ्य निकल कर सामने आया तो शोधार्थी की जिज्ञासा हुई उस कारण को जानने की, कि आखिर ऐसी कौन - सी समस्या है जिसके कारण स्कूल में दाखिले के कुछ समय बाद ही बच्चों को पडाई छोडना पडती है। गहराई से अध्ययन किया गया तो वजह निकलकर सामने आई कि सहरिया जनजाति के परिवारों का मुख्य व्यवसाय मजदुरी है। मजदूरी को मुख्य रुप से तीन प्रकारों में बांटा जा सकता है जिसमें नम्बर 1. जिस क्षेत्र में निवास करते है। उस स्थान पर या फिर आसपास , 2. किसी साहूकार के खेतों पर बंधुआ मजदूर बनकर, 3. अन्यत्र किन्ही जगहों पर कुछ समय के लिये पलायन करके, कुल मिलाकर उन्हे अपने जीवनोपार्जन के लिये मजदूरी पर निर्भर रहना रहता है। और मजदूरी के लिए यदि वे पहली स्थिति में अपने निवासरत क्षेत्र में ही कही मजदूरी के लिए जाते है तो वों सुबह 07 बजें अपना खाना बनाकर सपरिवार निकल जाते है। और शाम को लगभग 07 बजे तक उनका वापस घर आना हो पाता है। इस स्थिति में यदि वे अपने बच्चे को स्कूल में पडने के लिए छोड देते है तो स्कूल समय के बाद उनकी देखरेख की समस्या बनी रहती है जिसके कारण सहरिया परिवार अपने बच्चे की सुरक्षा की द्रष्टि से बच्चों को अपने साथ ले जाती है और उनकी बडाई बाधित हो जाती है। दूसरी स्थिति में यदि वे किसी साहूकार के यहाँ बंधुआ बनकर मजदूरी करते है तो ज्यादातर वह साहूकार उनके परिवार को अपने खेतो पर रखता है। जो कि स्कूल से काफी दूरी पर स्थित होते है। और तीसरी स्थिति में वे कुछ समय के लिए अपने परिवार सहित पलायन करके कही अन्य जगह जाते हैं तब भी बच्चें का स्कूल बाधित हो जाता है। और इसी तरह धीरे - धीरे बच्चे बडे होकर मजदूरी में लिप्त हो जाते है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि सहरिया जनजाति के व्यक्तियों में निरक्षरता का स्तर सबसे ऊँचा है।[3]

आर्थिक स्थिति – संसार की सभी जनजातियों में आर्थिक संगठन का सम्बन्ध अपने सीमित साधानों के द्वारा आजीविका की आवश्यकता को पूर्ण करने से होता है। आदिवासी समाजों में भी अर्थव्यवस्था का एक स्पष्ट रूप विद्यमान हैं तथा इसका सम्बन्ध एक विशेष पर्यावरण में सीमित साधनों के द्वारा आवश्यकताओं की पूर्ती से है। जनजातियों की अर्थव्यवस्था अन्य समाजों से अलग होती है। क्योंकि अधिकतर जनजातियाँ प्रकृति पर निर्भर रहती हैं व अपने उपभोग के लिये उत्पादन भी स्वयं करते हैं। लेकिन समय के साथ जनजातियों की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन आया है वे सभ्य समाज के सम्पर्क में आने के कारण मुद्रा का प्रयोग करने लगे हैं। शोध क्षेत्र में अधिकांश सहरियों का मुख्य व्यवसाय मजदूरी ही है। सहरिया जनजाति की विभिन्न समस्याओं में से मूल समस्या गरीबी है और वो भी इस पैमाने तक कि यदि वे मजदूरी न करें तो अपने परिवार का पेट भरने के लिए दो जून की रोटी की व्यवस्था भी न कर सके तथा गरीबी के साथ - साथ एक बडी समस्या बेरोजगारी भी है। कुछ लोग कृषि कार्य भी कर रहे हैं, लेकिन फिर भी उन्हें वर्षभर रोजगार प्राप्त नहीं होता है। परिवार के भरण-पोषण के लिये यह मजदूरी व कृषि कार्य के अलावा लकड़ी काटना, वन सामग्री, शहद, तेंदूपत्ता आदि गाँव में बेचकर आय प्राप्त करते हैं, लेकिन सेठ-साहूकार व दलालों द्वारा इनका शोषण किया जा रहा है। सरकार ने इनके आर्थिक सुधार के लिये अनेक प्रयास किये हैं लेकिन वे उन तक नहीं पहुँच पाते हैं। इनका प्रमुख

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

व्यवसाय कृषि कार्य व मजदूरी है, जिससे बहुत कम आय प्राप्त होती है और परिवार का भरण–पोषण करना अत्यन्त कठिन हो जाता है। उपरोक्त विवरण के आधार से उत्तरदाताओं का मुख्य व्यवसाय मजदूरी ही है। किसी भी उत्तरदाता ने किसी अन्य कार्य को अपना मुख्य व्यवसाय नहीं बताया है।[4]

सहरिया जनजाति की समस्याएँ – जनजातियों के बदलते हुए परिवेश में विभिन्न जनजातियाँ आज अनेक ऐसी समस्याओं का सामना कर रही हैं जिनका कुछ समय पहले तक उनमें पूर्ण अभाव था। जनजातियों की समस्याएं इतनी विविधतापूर्ण है कि इनकी कोई सामान्य सूची नहीं बनाई जा सकती है। सहरिया जनजाति की प्रमुख समस्या गरीबी है, यही इनके पिछड़ेपन का प्रमुख कारण है। ये कठिन श्रम करने के बाद भी अपने जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ती करने में असमर्थ हैं। दूसरी प्रमुख समस्या ऋणग्रस्तता की है, जनजातियों में इसका रूप बहुत ही व्यापक व गम्भीर है। एक बड़ी संख्या में जनजातीय लोग ऋणों के बोझ से दबे हुए हैं। शोध क्षेत्र में सहरिया जनजाति अनेक समस्याओं से ग्रसित है जैसे गरीबी, बेरोजगारी, ऋणग्रस्तता, कृषि भूमि की कमी, अस्वस्थ वातावरण, चिकित्सा की कमी, शिक्षा की कमी, आवास की समस्या, आवागमन के साधानों की कमी, बिजली–पानी की व्यवस्था, उच्च वर्ग द्वारा शोषण आदि हैं। इसके अलावा इनके अशिक्षित होने के कारण इन्हें कानून की जानकारी नहीं है। यह लालच में आकर मतदान का सदुपयोग नहीं करते हैं। जिससे सही उम्मीदवार का चयन नहीं हो पाता है। सरकारी सहायता भी कागजों में सिमट कर रह जाती है। शोध क्षेत्र में सहरिया जनजाति को स्वयं के लिये चलाई जाने वाली योजनाओं की जानकारी तक नहीं है तो वे लाभ कैसे प्राप्त करेंगे ? [5]

सुझाव एवं निष्कर्ष – इस हेतु शासन को इनके रोजगार हेतु सार्थक प्रयास करने चाहिए जिससे इन्हे मजदूरी के लिए दर – दर भटकना न पडे व एक परिवार के कम से कम एक व्यक्ति को स्थानीय स्तर पर स्थाई रोजगार की व्यवस्था करना चाहिए जिससे ये अपने बच्चे को स्थानीय स्कूल में पडा सके तथा उनकी देखरेख कर सके। और जब ये प्राथमिक स्तर पर अपने बच्चों को शिक्षा प्राप्त करवाने में सक्षम हो सकेगें तो निश्चित ही फिर वे मजदूरी की और अग्रसर न होते हुए अपने भविष्य के निर्माण में लग जाऐगें।

इस प्रकार हम निष्कर्ष रुप में कह सकते है कि समस्या कोई बडी नही होती है बस उसका सही तरीके से समाधान करने की इच्छा शक्ति हमारे अंदर होना चाहिए तथा द्रण संकल्पित होकर सहरिया जनजाति के उत्थान हेतु प्रयास किया जाये तो इनके जीवन में बदलाव जरुर आयेगा तथा यह जनजाति भी हमारे देश को आगे बडाने में अपना योगदान देगी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची:-

1. पी.आर. नायडू– भारत के आदिवासी, राधा पब्लिकेशन। पृ. 62
2. 2011 की जनगणना से प्राप्त आँकडों के अनुसार।
3. उत्तरदाताओं के बच्चों का दाखिले के बाद स्कूल छोडने का कारण से।
4. उत्तरदाताओं के परिवारों की आर्थिक स्थिति की जानकारी से।
5. उत्तरदाताओं के जीवन यापन से संबंधित समस्याओं से।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

भारत में हरित क्रान्ति का मूल्यांकन

डॉ. जयराम सोलंकी *

* सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) शासकीय गणेश शंकर विद्यार्थी महाविद्यालय, मुंगावली, जिला अशोकनगर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – भारत मे हरित क्रान्ति चतुर्थ योजना से पूर्व इसका जन्म हुआ तब से इस विषय पर वाद–विवाद चला आ रहा है। सम्पूर्ण परिवर्तन को क्रान्ति कहा जाता है। भारत में पिछले अनेक वर्षो से खाद्यन्न समस्या जटिल रही है 1965–66 से खेती मे सुधार के कार्यक्रम उन्नत बीज, आधुनिक खाद,यंत्रीकरण आदि हाथ में लिए गए। इससे खाद्यय तथा अन्य कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इसे हरित क्रान्ति का नाम दिया गया। बडे किसानों की माली हालत में सुधार हुआ,कारगर कृषि नीति की फिर भी आवश्यकता है। इसमे खेति उद्योग में परिवर्तन का विचार भी सम्मिलित है। अभी हरित क्रान्ति में बहुत कुछ होना शेष है। हरित क्रान्ति कृषि उत्पादन तथा उत्पादिता में उस तीव्र वृद्दि से है जो देश में थोडे समय में अधिक मात्रा में ऊॅची उपज वाले बीजो एवं रासायनिक खादों के प्रयोग के फलस्वरुप हुई है। इसमे बीज और खाद के संयोग को सफल बनाने के लिए इसमे सम्बधित अन्य आवश्यक साधनो को जुटाया जाता है। कृषि विकास के लिए इन सब साधनो को एक साथ उपलब्ध कराने के कार्यक्रम को '**एकमुश्त कार्यक्रम**' **कहा जाता है।** हरित क्रान्ति के प्रमुख तत्व 'अधिक उपज देने वाले बीज' तथा खाद रहे है। परन्तु इसके अलावा कृषि मशीनीकरण, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार, कीटनाशक दवाओं का प्रयोंग आदि भी हरित क्रान्ति में महत्वपूर्ण तत्व माने गए है।

हरित क्रान्ति के उद्देश्य:– लघु अवधि के लिये : दूसरी पंचवर्षीय योजना के दोरान भारत में भुखमरी की समस्या को दूर करने हेतु हरित क्रान्ति शुरु की गई थी।

1. **दीर्घ अवधि के लिये–** दीर्घकालिक उद्देश्यों ग्रामीण विकास औद्योगिक विकास पर आधारित समग्र कृषि का आधुनिकीकरण – बुनियादि ढॉचें का विकास, कच्चे माल कि आपूर्ति आदि शामिल थे।
2. **रोजगार –** कृषि और औद्योगिकी दोनों क्षेत्र के श्रमिंको को रोजगार प्रदान करना।
3. **वैज्ञानिक अध्ययन–** स्वस्थ पौधों का उत्पादन करना, जों अनुकुल/ विषम जलवायु और रोगों का सामना करने में सक्षम हो। कृषि का वैश्वीकरण: गैर –औद्यौगिक राष्ट्रो में प्रोद्ययोगिकी का प्रसार करना और प्रमुख कृषि क्षेत्रों में निगमों कि स्थापना को प्रोत्साहित करना। जैव–प्रोद्ययोगिकी के प्रयोग से दूसरी हरित क्रान्ति भारत में पहली हरित क्रान्ति के बाद उत्पन्न हुई परिस्थितियों एवं वातावरण में आकर ले रही है। इसके कुछ उद्देश्य पहली हरित क्रान्ति के समान है जबकि कतिपय दूसरे इससे पूरी तरह भिन्न है। हरित क्रान्ति के जिन उद्देश्य में पहली हरित क्रान्ति के उद्देश्यों से समानता है।

हरित क्रान्ति के प्रमुख तत्व –भारत में हरित क्रान्ति के तत्व निम्न है:

1. हरित क्रान्ति में अधिक उपज देने वाली किस्मों का विकास करना।
2. हरित क्रान्ति के अन्तर्गत बहु–फसली कार्यक्रम भी शामिल है।
3. हरित क्रान्ति का एक प्रमुख तत्व उर्वरको के प्रयोग मे वृद्धि करना है।
4. हरित क्रान्ति में सिंचाई सुविधाओं का विस्तार करना।
5. कृषि क्षेत्रों में ओजारों एवं मशीनों का प्रयोंग भी हरित क्रान्ति का ही अंग माने जाते है।
6. सुखे क्षेत्रों में कृषि उत्पादन बढाने के लिए सूखा प्रतिरोधी तथा जल्दी पकने वाली फसलों का विकास करना।
7. भारत में 1965–66 के बाद से इस कार्यक्रम में विशेष तेजी आई है।

शोध कार्य के उद्देश्य–कृषि परिस्थितिकी का विश्लेषण करना ताकि इस अध्ययन के माध्यम से कृषि योजनाकर्ता, सामाजिक कार्यकता, प्रशासक एवं व्यक्ति जो क्षेत्र के कृषि विकास योजना संलग्न है लाभार्वित होकर क्षेत्र के विकास के लिए उचित योजना बना सके। प्रस्तुत शोध पत्र में यह भी अनुमान लगाने का प्रयास किया गया कि कृषि के आधुनिक आदानों से कितना लाभ हुआ है और भविष्य में कृषि उत्पादन व कृषि उत्पादकता पर प्रभाव का अध्ययन करना। कृषि विकास संतुलन की पिछली प्रवृतियों के आधर पर वर्तमान में कृषि विकास के स्तर का मापन करना। आधुनिक कृषि आदानों के असंतुलित प्रयोग से बढ रही पर्यावरणीय समस्याओं के लिए कृषि पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएं– कृषि क्षेत्र में हुए अनुसंधान कार्यो से नई कृषि तकनीकों के विकास आधुनिक कृषि आदान उन्नत बीज, रासायनिक खाद और फसलों कों बीमारिया से बचाने हेतु पोधे संरक्षण औषधियों की जानकारी एवं उपयोग तथा आधुनिक कृषि आदानों के प्रयोग आदि कृषि आधुनिकीकरण कि ओर अग्रसर हो रही है। अध्ययन क्षेत्र में भोगोलिक परिस्थितियों की प्रतिकुलता एवं विभिन्नता होते हुए भी कृषि पारिस्थितिकी में कृषि के आधुनिकीकरण में प्रभावशाली तत्व कृषि है।

हरित क्रान्ति का मूल्यांकन– हरित क्रान्ति देश में भारी वाद–विवाद का विषय बना हुआ है। भारत में हरित क्रान्ति के सीमित विस्तार व मिश्रित प्रभावों को देखकर कभी–कभी यह प्रश्न उठाया जाता है कि क्या भारत में हरित क्रान्ति पूर्णतया प्राप्त की जा चुकी है, किसी भी निष्कर्ष पर पहुचने से पूर्व निम्नलिखित तथ्यों पर ध्यान देना आवश्यक है–

1. हरित क्रान्ति केवल गेहू की फसल तक ही सीमित रही है। इसी के उत्पादन तथा उत्पादिता में आश्चर्यजनक रुप से वृद्धि हुई है। जहॉ

तक चावल व मोटे अनाज की फसलों का प्रश्न है, इनके उत्पादन व उत्पादकता में कोई विशेष क्रान्तिकारी परिवर्तन नजर नही आता है।

2. हरित क्रान्ति का विस्तार बहुत थोडी भूमि तक हुआ है। देश के उन भागों में जहॉ सिंचाई सुविधाएँ उपलब्ध नही है जो कि कुल कृषि भूमि का लगभग 70 प्रतिशत भाग है, यहॉ हरित क्रान्ति नही आयी है। कृषिगत भूमि के बहुत थोडे भाग में ही अधिक उपज वाले बीजों का प्रयोग किया गया है। सूखे क्षेत्रों इस क्रान्ति का कोई प्रभाव नही हुआ है। इसी प्रकार यह क्रान्ति देश के कुछ भागों, जैसे-पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश आदि में ही देखने को मिलती है।
3. हरित क्रान्ति के लाभ केवल बडे किसानों को ही मिले है तथा बडे एवं छोटे किसानों की आय विषमताओं में वृद्धि हुई है। उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि भारत में अभी पूर्ण रुप से हरित क्रान्ति नही आई हैं, अभी इस दिशा में और प्रयास करने की आवश्यकता है।

हरित क्रान्ति की सफलता के सुझाव :

1. इस कार्यक्रम का चावल व अन्य फसलों की खेती में शीघ्र से शीघ्र विस्तार किया जाए। जैसा कि हमने देखा कि इस क्रार्यक्रम का चावल की खेती पर बहुत कम प्रभाव पडा हैं। कुल खाद्यान्न अधीन क्षेत्र का 35.6 प्रतिशत चावल के अधीन है तथा 22.6 प्रतिशत गेहू के अधीन है। अतः चावल कृषि विकास की दर में सर्वाधिक महत्वपूर्ण फसल है। यदि हरित क्रान्ति गेहू की तरह चावल में भी आई होती तो भारत अब तक खाद्यान्न के संम्बध में आत्मनिर्भरता की स्थिति में पहुच चुका होता। अतः इस कार्यक्रम को चावल की खेती में तेजी से फैलाया जाना आवश्यक हैं। इसी प्रकार गैर -खाद्यान्न फसलों को भी हरित क्रान्ति के प्रभावी क्षेत्र में शामिल किया जाना आवश्यक है।
2. भारत में सिंचाई सुविधाओं का विस्तार किया जाए क्योंकि असिंचित क्षेत्रों में अधिक उपज देने वाली किस्मों का पूरा लाभ उठाना संम्भव नही होता हैं। छोटी सी सिंचाई परियोजना:जैसे-कुए और तालाब को बढावा देकर सिंचाई सुविधाओं में वृद्धि की जा सकती हैं।
3. जिन क्षेत्रों में सिचाई सुविधाए बढाने की सम्भावना नही है वहॉ पर शुष्क भूमि कृषि का तेजी से प्रसार किया जाए।
4. नवीन कृषि नीति का प्रयोग इस ढग से किया जाए कि इसका लाभ छोटे तथा सीमांत किसानों को भी प्राप्त हो।इसके लिए आवश्यक है कि भूमि सुधार कार्यक्रमों को प्रभावशाली ढग से क्रियाविंत किया जाय तथा छोटे किसानों को कृषि वित एवं कृषि प्रधान साधन उपलब्ध कराये जाएॅ। इसके अतिरिक्त सहकारी कृषि के द्वारा भी छोटे किसानों को लाभान्वित किया जा सकता है।
5. कृषि के यंत्रीकरण के फलस्वरुप जो बेरोजगारी उत्पन्न हो उसे कुटीर एवं लघु उघोगों द्वारा दूर करने के प्रयास किये जाने चाहिए है।

संदर्भ ग्रन्थ सुची:-

1. दत्त,रुद्र एवं सुन्दरम, के. पी. एम (2010): भारतीय अर्थव्यस्वथा , एस चन्द एंड कम्पनी लि.नई दिल्ली।
2. योजना (मासिक पत्रिका), मानव ससाधन एवं विकास मंत्रालय, नई दिल्ली
3. हरिनारायण विश्वकर्मा ,किसानों कों ऋण प्राप्ति के संस्थागत स्त्रोत कुरुक्षेत्र ,नवम्बर ,2014,
4. अर्थशास्त्र श्रीमति सौम्या शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी खजूरी बाजार इंदौर
5. भारतीय अर्थव्यस्था मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी रविन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग,बानगंगा,भोपाल

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Modern Ghazal Singing Poets Of Rajasthan (Rajasthan Ke Modern Gazal Writers)

Dr. Shaheen Afroz*

***MDS University, Ajmer (Raj.) INDIA**

Objective :
1. Information about new ghazal writers of Rajasthan.
2. Information about the writing techniques of new ghazal writers of Rajasthan.
3. Some samples of new Ghazal writers of Rajasthan Ghazal.

1. Arshad Abdul Hameed

Name: Arshad Hassan Khan Father's Name: Abdul Hameed Khan Majidi
Literary Name: Arshad Abdul Hameed Year of Birth: April 2
Place of birth: Tonk

Introduction - After doing MA in Urdu, under the supervision of Rifat Akhtar, P. HD's And entered government service as an Urdu teacher. They have been reciting poems since the 5th century. Kalam has been published in Indo-Pak magazines since 1959. Arshad Abdul Hameed in 1985.

The beginning of this was to have an effect of modernity on his poetry. Because this was the heyday of modern poetry, Arshad Abdul Hameed's study is extensive. Therefore, he is well acquainted with the tradition of ghazal and that is why his ghazal has come to the fore. Which he and his contemporary poets have called the latest ghazal. His ghazals are considered as good ghazals. Arshad Abdul Hameed has written ghazals as well as poems and couplets. But he is basically a ghazal poet. These days he is based in his hometown of Tonk and is teaching at Government College. A few years ago, an Urdu magazine called "Intikhab" was published by Tonk, but due to unfavorable circumstances only two or three issues could be published and then this magazine was closed. You are a student of Ibn Ahsan Bazmi. The tone of Arshad Abdul Hameed's poetry is very latest. They have a new style, and a new way of thinking. His poetry is a mirror of emotions. They have to go down in the cells of grief along with the grief of caste. But this level of concern has not been maintained everywhere. There is no shortage of such poems which have been recited merely on the basis of eloquence and ingenuity.

He has the salient features of modern poetry, including the fear of loneliness, the sense of the presence of unknown things, the facelessness, the fear of words being empty. With his unique and distinctive accent, he has caught everyone's attention. His style is beautiful and captivating.

Example words:

What Zafar Faridi brought to my journey
That all my relationships were strained
The weather needs colors
And the colors need a perfume envelope
My eyes also want your destination
You also need a dream come true
Ashti also sees blood in her head
He even looks at me with envy
This pearl sea doesn't give me that
He sees my courage, my quest
Sipah-e-Barg-e-Samar has gathered, Arshad
But the heart also sees growth
Suffering is of high value, happiness is of such value
We, the servants, are in your name. What to take from Hajj and Wisal?

2. Aziz Aazad

Name: Abdul Aziz Surname: Azad
Literary Name: Aziz Azad
Year of Birth: March 8
Fathers Name: Master Naseeruddin

Introduction - He was educated first at Sadul High School and then at MM School. He passed MA in History from Rajasthan University in 1967. He writes poetry in both Hindi and Urdu and is extremely popular in both circles. His two collections of Kalam Devanagari script have come to light under the titles Omar Bas Nind Si (1983) and Bhare Hoye Ghar Ka Sanata (1998). You have tested the nature of each genre. One of your songs titled "Sanawan Mein Sargam" has crossed the borders of India. It has been translated into many foreign languages. A collection of Urdu songs is in print. You are a lecturer in Sadul School. Many of your lyrics are published in magazines and journals. There have also been broadcasts and telecasts from radio stations and TV.

Example words:

Where did I go in wanting to find you?
I met him for the first time on that day, the day I landed in myself

Lips are craving for laughter
What a curse this is for this century
There is shame in your eyes
That is enough in this age
People give the truth like charity
They ask for life as a gift
Don't go blind as soon as you change your mind
Raising the eyelids of the weak is also rebellion
So how many have been deceived for your sake
We are very sorry to come to your city, man

3. Shameem Bikaneri

Name: Mohammad Hanif
Nickname: Shamim
Year of Birth: November 8, 1941
Place of Birth: Igor
Father's name: Allah Bakhsh

Introduction - Your family has been a family of tastes. Your elder brother Muzaffar Hussain has a good knowledge of Urdu poetry and Islamic studies. Mozuni also has a temperament. Sometimes even lions say. How could Shamim Bikaneri, born in such an environment, save himself from poetry? He received his early education in the Madrasa of Haji Ghulam Farid Sahib Imam of Jamia Bikaner Mosque. Later in Jamia Madrasa he studied Urdu with Hafiz Ghulam Rasool Sahib Shad Jami. Passed the matriculation examination from Sadul Higher Secondary in 1959. You started reciting poetry even before you read poetry, but before you came to the field of poetry, you also read well to the teachers. The words of Iqbal, the words of Ghalib and the Shahnameh of Islam were as if they had been forgotten. He received the honor of being a student in poetry from the late Din Muhammad Sahib Mastan. You've been innovating from the beginning. Therefore, innovation and rarity in the word are present in many ways, it is not an exaggeration. You don't even have a name. He has been reciting regular mushairas since 1959 and has also recited regular mushairas outside Bikaner. They are recited in Tarnam and are well liked. You are employed by the power board. Hazrat Mastan announced you as his successor in the All India Mushaira in honor of Mastan held on December 3, 2014 in Mohalla Beheshtian.

Example words:

Who drew this line in the same courtyard?
You belong there and we belong here
The rotation of time will make you nervous and tired
Life will deviate from its principles
As soon as they come, the skill of living will come
As you go, you will hesitate to die
It is his nature to give thick shadows
Somewhere its nature leaves the tree
Red twilight fire and liver blood
All together, your request was filled with vermilion

4. A. D. Rahi

Name: Allah Din
Nickname: Rahi
Father's Name: Mr. Karim Bakhsh
Date of Birth: January 1, 1982
Place of birth: Jodhpur

Introduction - He completed his primary education at home. After passing Adib Kamil and Higher Secondary examinations from Jamia Aligarh, he started teaching at the local Ishaqiya Secondary School. He has been there ever since. I also worked. Rahi Sahib has been reciting poems since. In the beginning, he showed his words to Naseem Parbat Sri. A short selection of Rahi Sahib's words has come to light in Devanagari under the name of "Body of Ice", which has been published by Amit Prakash Jodhpur. Rahi Sahib has sincerely welcomed every poetic experience and has been successful in many places. Apart from ghazal, poem, field, duet, he has also shown his essence in genres like free ghazal, trilogy, trinity etc. He has participated in many All India Mushairas. T. æÌÔ And your word is broadcast on the radio. Rahi Sahib has a clear and fearless personality. Rahi Sahib's poetry started on June 7. Rahi's personality keeps the literary atmosphere of Jodhpur alive.

Example words:

There is no blame on you
How did you get out of this world?
Life is like the promise of a loved one
When we tested both of them, the loyalty turned out to be less
I am very afraid of the people of your city
Look at the one who walks around for a wet picture
His face is a book but
Don't read it in front of everyone
You are enlightened man
Then why the chain of darkness
The playful fairy eats the snake in the air
Like a trail on a trail
I have never felt the slightest touch in the past
Don't open the door

References:-

1. Mentioned Poets of Odepur. By Shahid Aziz, page 89
2. Ghazal-singing poets of Rajasthan. From Abdul Hai, page 56
3. Mentioned poets of Odepur. By Shahid Aziz, page no 49-51
4. Mentioned Poets of Tonk. From Shamim Tonki, page no 24-26
5. Mentioned poets of Bikaner. From Abdul Aziz Azad, Pages: 83-85
6. Tankeed-e-shairi jodhpur (Sheen kaaf Nizaam), page no 73-76

✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲✲

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Emerging Issues in High Rise Buildings : Geo-Technical Aspects

Er. Yagyesh Narayan Shrivastava *

*Contractual Teacher, Department of S.W..E. College of Agricultural Engineering, J.N.K.V.V., Jabalpur (M.P.) INDIA

Abstract - High rise buildings are emerging as a solution to the increasing housing problems in mega cities as well as in medium cities. Started from Egypt and Rome, nowadays high rise buildings are becoming common in London, New York, Shanghai, Hong Kong, Dubai. Rate of growth is increasing at a faster rate. These buildings are now common in Indian Mega cities like Delhi, Mumbai, Ahemadabad, Banglore etc. Looking to the Increasing Population some Geotechnical problems have emerged after the Bhuj earthquake in 2001.In Ahemadabad alone 69 buildings collapsed. Earlier in Earthquake of Tobe (Japan) in 1995 large numbers of multistory buildings were damaged. The major issues are 1. Building was built in soft soil (i) Absence of foundation raft or Pile, (ii) Liquefaction in sandy soil & high water table area, (iii) Soft first story, (iv) Bad structural system, (v) Heavy water tank on the roof (vi) Foundation damage of adjacent buildings. These issues affect the seismic safety of a high rise buildings & should be dealt with greater seriousness in accordance with earthquake code IS:1893, updated in 2002. Soil exploration is important. A review of all these issues in Indian context is presented in this paper.

Introduction - It is to be noticed that 59% of the geographical area of the country falls under seismic zone III-V. Earthquakes large in magnitude and devasting in nature are frequently visiting India.This needs a great care in design of structures both above and below ground particularly with this latest built environment of High Rise Buildings (H.R.B.).

This is observed and reported that attention paid to the structure above the ground but under ground or geo technical aspects are fully ignored, while there are several cases of geo-technical failure during earthquakes, like building sank evenly / unevenly as reported in Ahmadabad, Bairagarh Bhopal and Assam etc.

ISSUES

Inadequacy and Ignorance of Building Codes - If building design codes are considered, Indian standard code, IS:1893 updated in 2002 addresses the issues related to earthquake behaviour of R.C. buildings. But classification of soil properties is not proper in this code as reported by Choudhury (2010).He stated that the code describes the soil classification in just three major categories viz hard-rock, stiff soil and soft soil with some information about the ranges of standard penetration test (SPT) blow count number (N) but SPT is suitable for only cohesion less soil but not for cohesive soil. To avoid the limitation of particular test specific result the world wide design codes have re-classified (for example NEHRP 1997 in USA) and need to be revised in India also.

This is also observed that instead of going for soil exploration at the building site at sufficient points, generalized recommendations for that area are considered, while underground conditions vary completely from place to place within the same locality.

Thus, the ground and sub-soil which are major-risk factor in high rise construction do not get proper consideration; even the existing codes are also not followed.

Improper Foundation - Foundation is the interface between the load bearing structure of the high rise building and the ground.The job of foundation is to transfer the high building loads safely with little deformation to the ground. This most important part is not cared as seen in Ahmadabad during earthquake of (2001).

On the other side H.R.B. with proper foundation are serving successfully like "Treptower" (121m high) based on a combined pile raft foundation in Berlin, Germany, Commerzbank (299 m high) based on pile foundation in Frankfort Germany.

Ignorance of Site Soil Conditions - It is observed that H.R.B./ tall buildings are constructed on the soft soil and high water table area, as found in buildings constructed on soft soil in Ahmadabad sank or tilted due to liquification. Similarly, buildings constructed on expansive soil of Bairagarh Bhopal suffered badly. On the other hand no damage was caused to 225 m high T.V. tower located

in Katanga area of Jabalpur as it is constructed with proper site considerations.

Soft First Story or Ground Story - This is observed that ground story of high buildings is kept open i.e. with no walls.In such buildings the dynamic ductility demand during the probable earthquakes gets concentrated in the soft story and the upper story tend to remains elastic. This effect cause severe damage to ground story and little damage to upper stories.Such cases are observed and reported by Jain et.al (1997) during Jabalpur earthquake of 1997.A five storied building, Himgiri Apartments had ground story damage. Shear failure of columns, opening of transverse ties and buckling of longitudinal reinforcement bars occurred. More interesting observation was in Sneha Nagar Jabalpur, where two identical buildings same aged were situated named Naland Apartment and Ajanta Apartment. Open ground story of Ajanta Apartment got damaged while filled ground story of Nalanda Apartment had no damage. Similar observations were found in Youth Hostel building, Jabalpur (1997), Kachchh (2001), Bhuj (2001).

Unsimilar Adjacent Buildings - This a common character of almost all high buildings. Generally two adjacent buildings are unsimilar i.e. are of different heights with floors at different levels with inadequate separation. Severe damage, even collapsing was seen under earthquake shaking in such buildings as they vibrate out of phase with earth other.

Bed structural system heavy water tanks on the roof are other important issues which caused damage during earthquakes.

Conclusion - All these issues should be considered and given due attention to have safe and better built environment of HRB in India. Detailed site investigations should be made compulsory. Its detailed report and proposed foundation should be mentioned in map, presented for approval. Raft and piled raft foundations are being proved good for high rise buildings.

References:-

1. Arslan Ulvi (2014) Geotechnical aspects of the planning and construction of high rse buildings. *Web page,s* pp 51-61.
2. Choudhury D. (2010) Integrity of sub-structural systems during earthquake: Indian and International perspective. *Tech Science Press, SL,* Vol.3, No.2, pp 155-170.
3. Jain S.K. (1997) Some observations on engineering aspects of the Jabalpur earthquake of 22 May 1997. *EERI News letter, Vol. 32, No.2.*

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हिंदी काव्य-कृतियों में राष्ट्रीय चेतना के स्वर

कांचन शेंदुर्णीकर *

* शोधार्थी, माता जीजाबाई स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय मोती तबेला, इंदौर (म. प्र.) भारत

शोध सारांश - इक्कीसवीं सदी में परिस्थितियाँ अति वैज्ञानिकता व अतिबौद्धिकता की चेतना व मूल्य आत्मसात करने लगीं। नैतिक मूल्यों व सद्‌भावों को दाँव-पेंच, भ्रष्टाचार, उपभोक्तावाद व दोहरी मानसिकताओं ने विस्थापित कर दिया। यह मूल्य-विचलन का दौर कहलाया। ऐसी परिस्थितियों से साहित्य भी अछूता नहीं रहा। इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक में काव्य व कवियों के व्यापक विस्तार का अध्ययन कर ज्ञात होता है कि इस काल में एवं आनेवाली समयावधि में एक ही समय में काव्य की कई पीढ़ियाँ एक साथ विद्यमान थीं। जितने कवि थे, उनसे कहीं अधिक साहित्य की वैचारिक छवियाँ थीं। प्रस्तुत शोध में इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक अर्थात् 2001 से 2010 तक की कालावधि में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त काव्य-कृतियों में राष्ट्रीय चेतना के स्वरों का अध्ययन किया जाएगा।

शब्द कुंजी - इक्कीसवी सदी, साहित्य अकादमी पुरस्कार, प्रथम दशक, राष्ट्रीय चेतना, भौगोलिक चेतना, धार्मिक चेतना, लिंग निरपेक्ष चेतना, सांस्कृतिक अखंडता, जनवादी मानवीय चेतना।

प्रस्तावना - इक्कीसवीं सदी में परिस्थितियाँ शनै: - शनै: अति वैज्ञानिकता व अतिबौद्धिकता की चेतना व मूल्य आत्मसात करने लगीं। नैतिक मूल्यों व सद्‌भावों को दाँव-पेंच, भ्रष्टाचार, उपभोक्तावाद व दोहरी मानसिकताओं ने विस्थापित कर दिया। यह मूल्य-विचलन का दौर कहलाया। ऐसी परिस्थितियों से साहित्य भी अछूता नहीं रह सकता था। इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक में काव्य व कवियों के व्यापक विस्तार का अध्ययन कर ज्ञात होता है कि इस काल में एवं आनेवाली समयावधि में एक ही समय में काव्य की कई पीढ़ियाँ एक साथ विद्यमान थीं। जितने कवि थे, उनसे कहीं अधिक काव्य के पार्श्व में साहित्य की वैचारिक छवियाँ उपस्थित थीं।

राष्ट्रीय चेतना के अध्ययन सक पूर्व राष्ट्र वास्तव में क्या है? यह जानना आवश्यक है। राष्ट्र एक सहसंबंध है, समूह है, कुलक है। राष्ट्रीय चेतना एक विशिष्ट भावना व संचेतना है। सर्वप्रथम राष्ट्रीय चेतना अथवा मूल्य समझने हेतु राष्ट्र का स्वरूप जान लेना आवश्यक है। ''डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार भूमि, भूमिवासी, जन-संस्कृति तीनों के सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूप बनता है। भूमि अर्थात् भौगोलिक एकता, जन अर्थात् जन-गण की राजनीतिक एकता और जन-संस्कृति अर्थात् सांस्कृतिक एकता तीनों के समुच्चय का नाम राष्ट्र है।''[1]

अतएव स्पष्टतया राष्ट्रीय चेतना के तार जन-गण की स्वतंत्रता, राजनीतिक एकता, धार्मिक-सांस्कृतिक अखंडता एवं सभी व्यवहारों के एकमात्र लक्ष्य समृद्धि एवं विकास की ओर जानेवाले चिंतन से जुड़ते हैं। देशभक्ति राष्ट्रीय चेतना की व्यापकता का एक अंग है परंतु वस्तुत: राष्ट्रीय चेतना न कोरी राजनीति है और न कोरी देशभक्ति। राष्ट्रीय चेतना राष्ट्र के सदस्यों में पाई जानेवाली सामुदायिक भावना है जो मानवता की मिट्टी में संगठन की जड़ें सुदृढ़ करती है।

हिंदी काव्य साहित्य में राष्ट्रीय चेतना उद्‌भम काल से ही भिन्न-भिन्न स्वरूपों में उपस्थित है। कवियों के राष्ट्रीय धारा से जुड़े साहित्य के सृजन के पीछे तात्कालीन आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों का महत्वपूर्ण हाथ रहा है। आदिकालीन रासो-काव्य से चली आ रही परंपरा ने भक्तिकाल में राष्ट्रीय चिंतन का स्वरूप बदला और कबीर के निराकार ब्रह्मोपासना के निष्पक्ष उच्चादर्श ने राष्ट्रीय चेतना में नवजागृति संचारित की। इसके साथ ही तुलसी का समन्वयक, लोकरंजक व लोकरक्षक साहित्य, मीरा जीवन के आदर्श में उपस्थित स्त्री चेतना एवं रूढ़िवादिता का विरोध और सूर के कर्मयोगी कृष्ण व उनकी लीलाओं से आध्यात्मिक चेतनाओं के संचार ने मानवतावादी दृष्टिकोण की मिट्टी को उर्वर किया। रीतिकाल में यह कार्य भूषण के काव्य ने किया। आधुनिक काल में भारतेंदु, मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर, बालकृष्ण शर्मा नवीन ने राष्ट्रीयता के परचम को जनवादी स्तर पर फहराया। छायावाद की राष्ट्रीय चेतना भावनात्मक एवं अनुभूतिपरक थी। परंतु जैसे-जैसे काल बीत रहा था, कवि कर्म में कठिनाइयाँ बढ़ रही थीं, कवियों की समाज के प्रति ज़िम्मेदारी बढ़ रही थी और राष्ट्रीय चेतना में भी परिवर्तन हो रहा था। बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक के कवियों ने इक्कीसवीं सदी के युवाओं का मार्गदर्शन किया। पाठकों का भी प्रोत्साहन उन्हें प्राप्त हुआ। इस मूल्य पतन एवं असहिष्णु काल में एक और प्रोत्साहन है जो सतत काव्य जगत में कवियों के योगदान को प्रेरित करता आ रहा है और वह प्रोत्साहन है ''पुरस्कार''। साहित्य के क्षेत्र में कई पुरस्कार काफी समय से व्यापक एवं नवीन सृजन आयामों को प्रोत्साहित कर रहे हैं। जिनमें से एक है ''साहित्य अकादमी पुरस्कार''।

प्रस्तुत शोध में इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक अर्थात् 2001 से 2010 तक की कालावधि में जिन काव्य-कृतियों को साहित्य अकादमी पुरस्कार

प्राप्त हुआ है, उन काव्य-कृतियों में राष्ट्रीय चेतना के स्वरों का अध्ययन किया जाएगा। अध्ययन में राष्ट्रीय चेतना के प्रमुखत: चार बिंदुओं पर लक्ष्य किया जाएगा - भौगोलिक चेतना, जन-गण की धर्म व लिंग निरपेक्ष चेतना, सांस्कृतिक अखंडता एवं जनवादी मानवीय चेतना।

इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक (2001 से वर्ष 2010) में चार काव्य-कृतियों को साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुए[2], जिनके नाम हैं -

काव्य-कृति का नाम	**कवि का नाम**	**पुरस्कार प्राप्ति का वर्ष**
दो पंक्तियों के बीच	राजेश जोशी	2002
दुष्चक्र में स्रष्टा	वीरेन डंगवाल	2004
संशयात्मा	ज्ञानेंद्रपति	2006
हवा में हस्ताक्षर	कैलाश वाजपेयी	2009

पुरस्कृत चारों ही काव्य-कृतियों के कवियों के लेखन में यद्यपि तुलना नहीं की जा सकती परंतु राष्ट्रीय चेतना के तार एवं राष्ट्र के यथार्थ के स्वरूप का यथोचित वर्णन इन कवियों के काव्य को जोड़ता है।

- **भौगोलिक चेतना** - देखा जाए तो भौगोलिक एवं राजनीतिक एकता ही भारत को एक राष्ट्र रूप में स्थापित करने का कार्य करती है।''जिस तरह भारत की एकता एक आदर्श, एक विचार, एक प्रतिबद्धता, एक स्वप्न है, ठीक उसी प्रकार भारतीय समाज एक यूटोपिया* या काल्पनिक पद है। भौगोलिक और राजनैतिक दृष्टि से ही भारत को एक देश कह सकते हैं, वरना अपनी अपरंपार विविधता, विषमता, भेद और अनंत वर्गों, समूहों और संप्रदायों के कारण यह किसी भी ओर से एक देश की अवधारणा को सिद्ध नहीं कर पाता।''[3]

'हवा में हस्ताक्षर' की कविता 'उद्‌भावना' में कैलाश वाजपेयी इसी क्रम में कहते हैं -

''नगर नाम और भी बहुतेरे हो सकते हैं,
इक्कीसवीं सदी की शुरूआत पर
सोच-सोचकर बेहाल हूँ
कहाँ जन्मता मैं कि होने की तृष्णा
हो जाती निरबंसिया।'' [4]

भौगोलिक सीमाओं में गाँव भी आते हैं, कस्बे और शहर भी। परंतु परिस्थिति के मारे गाँव कहीं छूटते जाते हैं। इसलिए ज्ञानेंद्रपति कहते हैं -

'' मिट गए मैदानोंवाला गाँव,
X X X X X X
गाँव ने शहर बनने की राह में
अपना मैदान मार लिया है। '' [5]

देश की भौगोलिक स्थितियाँ भले पृथक हों परंतु परिसिथतियाँ समान रहती हैं। शहर की गलियों की बात करते कवि की कविता इसी भाव से और गहरी हो जाती है। राजेश जोशी की इन कविताओं का उदाहरण लिया जा सकता है -

''बहुत आँकी - बाँकी और चककरदार थीं हमारे शहर की गलियाँ,
कुछ गलियों के रास्ते तो आसमान से होकर निकलते थे। '' [6]
''तंगहाली के दिनों में भी गलियों ने कभी ,
हमें शर्मिंदा नहीं किया,
दंगों के बीच अपने घरों तक पहुँचने के रास्ते दिए
उन्होंने हमें
उन्हीं की बनिस्बत शहर कभी बेगाना नहीं लगा हमें।'' [7]

राजेश जोशी का भोपाल से ये लगाव अपरिहार्य है परंतु इन पंक्तियों को पढ़कर व्यक्ति चाहे किसी भी प्रदेश या शहर का हो जुड़ाव महसूस करेगा ही। वे अपनी एक कविता 'खोड़ला गाँव'** में बड़े सहज भाव से हमारी उस रीत को सामने लाते हैं जहाँ हमें अन्न- पानी देने वाला हमारा गाँव, हमें गढ़ने वाली हमारी मिट्टी का नाम लेना बुरा माना जाता है। परंतु इसमें भी सार्थकता ढुंढ वे उस धरती का धन्यवाद ज़रूर करते हैं।

''जिसने सबसे कठिन दिनों में मेरा साथ दिया
मुझे नौकरी दी
मेरी रोटी पानी का इंतज़ाम किया
उस गाँव का नाम मत पूछो
उसका नाम नहीं लिया जाता '' [8]

धरती के विषय में वीरेन डंगवाल का कहने का एक अपना ही नया व अनूठा तरीका है -

''धरती मिट्टी का ढेर नहीं है अबे गधे
दाना-पानी देती है वह कल्याणी है
गुटरू-गूँ कबूतरों की, नारियल का जल
पहिये की गति, कपास के हृदय का पानी है।'' [9]

राजेश जोशी की 'प्रतिनिधि कविता' की भूमिका में सुधीर रंजन सिंह 'यूटोपिया के अंत ' [10]और उससे मोहभंग की बात करते हैं। वीरेन डंगवाल की 'जो शहर कहीं था ही नहीं ' कविता के छ: भाग कुछ-कुछ इसी तरह के शहर की याद दिलाते हैं -

''कहीं नहीं था वह शहर
जहाँ मैं रहा कई बरस जाना प्रेम,
अतीव सुंदर
उस कहीं नहीं शहर में
X X X X X X X
तभी मैंने जाना
कुछ पाए बग़ैर भी मुमकिन है सुख।
तभी मैंने जाना
हम जैसों के लिए भी बनी है पृथ्वी'' [11]

कवियों को केवल गाँवों के शहर पलायन या शहरों की चकाचौंध ही नहीं परंतु देशवासियों के देश से पलायन की समस्या भी परेशान करती हैं - 'राग परदेसिया' में कैलाश वाजपेयी कहते हैं -

''डफली भी उसी की है
राग भी उसी का
तुम्हें सिर्फ़ गाना है
गाना सही-सही दी गई तर्ज पर
भले गले में कफ़ घरघराए स्वदेशी का''[12]

- **जन-गण की धर्म व लिंग निरपेक्ष चेतना** - जैसा कि हम सदियों से सुनते आ रहे हैं ''भारत में विविधता में एकता का स्थापत्य है।'' पर क्या ज़मीनी हक़ीक़त भी यही है ? वास्तविकता यह है कि हम अब भी जूझ रहे हैं वर्ग संघर्ष, सांप्रदायिकता, लिंग संघर्ष से। ''असहिष्णुता'' इस शब्द का उपयोग एवं उपभोग दोनों ही अपने चरम पर है।

इस वैमनस्य ने कवि का मन व्याकुल तो किया ही होगा। परंतु हाल की साहित्य प्रवृत्ति की यथा घटना - तथा लेखन की प्रवृत्ति के कारण राष्ट्रवाद या राष्ट्रीय चेतना के स्वरों के टूटन की आवाज़ एवं बारंबार उनके जुड़ने की

आस जगाता कवि इस विषय को भी गंभीरता से निभाता दिखाई देता है। चयनित पुरस्कृत कृतियों में भी यत्र-तत्र इसके उदाहरण प्राप्त होते जाते हैं।

''पर यह कैसा समाज हमने रच डाला है
इसमें जो दमक रहा, शर्तिया काला है
वह क़त्ल हो रहा, सरेआम चौराहे पर
निर्दोष और सज्जन, जो भोला-भाला है।'' [13]

राजेश जोशी समाज की संरचना में उपेक्षित तबके के लिए 'इत्यादि' शब्द रखकर उनकी व्यथा कुछ इस प्रकार कही है -

''कुछ लोगों के नामों का उल्लेख किया गया था जिनके ओहदे थे
बाकी सब इत्यादि थे
X X X X X X
इत्यादि हर जगह शामिल थे पर उनके नाम कहीं भी
शामिल नहीं हो पाते थे
इत्यादि बस कुछ सिरफिरे कवियों की कविता में
अक्सर दिख जाते थे।'' [14]

शायद ये वही कवि हैं जो राष्ट्र चिंतन में अपने कविकर्म में कुछ दायित्व भार का अनुभव करते हैं। भेदभाव चाहे धार्मिक हो, आर्थिक या समाजिक हो अथवा लैंगिक उनसे विरोध किए बिना रहा नहीं जाता। किस प्रकार स्त्री के प्रति लोगों का नज़रिया आज भी अपमानजनक है 'संशयात्मा' में ज्ञानेंद्रपति द्वारा लिखी इन पंक्तियों में देखा जा सकता है -

''वे जो 'सर' कहाते हैं, धड़-भर हैं
उनकी शोध छात्राओं से पूछ देखा''[15]

इसीलिए वीरेन डंगवाल भी अपनी कविता में एक स्थान पर कहते हैं -

''क्या देह बनाती है माँओं को?
क्या समय? या प्रतीक्षा ? या वह खुरदुरी राख
जिससे हम बीन निकालते हैं अस्थियाँ ?''[16]

धर्म-भेद के प्रति कवि कैलाश वाजपेयी कहते हैं -

''गर्भाशय पटरानी का हो या नौकरानी का
एक-सी सुविधा उपलब्ध बीज को
नहीं कहीं कोई छल छंद, कपट झूठ या दुराव।
दिक्कत तो पैदा होती तब, नवजात के बाहर आते ही
अलग-अलग क़िस्म के , बेहद बेहुदे धर्म वर्ग वर्णभेद
भेदभाव''[17]

- **सांस्कृतिक चेतना** - जैसे कपड़ों गहनों के पुराने फ़ैशन लौट के आने का समय है उसी तरह जीवन जीने के सलीकों व संस्कृति के लिए भी यही कहा जा सकता है। आज जो समाज की दशा हो चली है, उम्मीद की किरण जगाए रखने के लिए हमें पुरानी संस्कृति को उसकी रुढ़ियों से अलग कर अपनाना होगा। तभी इस संत्रास व टूटन वाले समय में कुछ बचाना सरल हो पाएगा।

'दो पंक्तियों के बीच' संग्रह में कवि अपनी कविता 'बचाना' में इसी ओर इंगित कर रहे हैं -

''बची है यह दुनिया
कि कोई न कोई, कहीं न कहीं बचा रहा है हर पल
कुछ न कुछ जो ज़रुरी है।
X X X X X
अब खिरनी वाले मैदान की ढहती जा रही पुरानी इमारतों की
मरम्मत की जा रही है पुराने सलीक़े से।'' [18]

भारतीय पुरातन संस्कृति स्वयं से पहले दूसरों का ध्यान रखना एवं उनका विचार करना सिखाती है। इसी सीख को अपनी 'अर्द्धरथी' शीर्षक वाली कविता में ज्ञानेंद्रपति कुछ इस तरह प्रभावी ढंग से कहते दिखाई देते हैं -

''जीवनयुद्ध में किसी और की जय के लिए अंततः मरना जिसकी नियति'' [19]

वीरेन डंगवाल अपने अलहदा तरीकों में पोस्टकार्ड के बहाने भूली जा चुकी संस्कृति की महत्ता समझाते हैं -

''हम पोस्टकार्डों की महिमा के गीत गायेंगे
इस मलीन समय में
उन्हें भी गिनो उम्मीद दिलानेवाली चीज़ों में'' [20]

- **मानवीय चेतना** - आज के निर्दयी संवेदनहीन समय में भी यूँ तो साहित्यकार उम्मीद की छोटी से छोटी किरणों को भी सहेजने का प्रयास करते हैं, परंतु ऐसा करते हुए भी वे समय के यथार्थ से अपना मुँह नहीं चुराते। वे अपने साहित्य में मानवता, मानवीय संवेदनाओं पर हो रहे प्रहारों को पाठकों के सामने उतनी ही निर्दयी वास्तविकता से रखने का प्रयत्न करते हैं, जैसी वे हैं।

'' 'इतने मरे'
यह थी सबसे आम, ख़ास ख़बर
छापी भी जाती थी
सबसे चाव से
जितना खून सोखता था
उतना ही भारी होता था
अख़बार।''[21]

मानवता युद्ध के विरुद्ध है। राजनीति का निवाला बनकर मानवीयता की संवेदना को उजाड़ना कहाँ तक सही है? हम किस हक़ से स्वयं को सुसभ्य कहलाते हैं?

''सुसभ्य हैं हम, सचमुच?
फावड़ों से नहीं, बमों-मिसाइलों से रौंदते इस पृथ्वी को
बारुदी धुएँ से उधेड़ते वायुमंडल
खाँसती-हाँफती-काँपती मानवता किस ओर ताके'' [22]

ऐसा ही कुछ कवि कैलाश वाजपेयी कहते हैं अपनी कविता 'मुंबई ब्लास्ट' में' -

''पृथ्वी की कोख में मरोड़ से
मलबा हो गई
पलभर में इमारतें।
फटे काग़ज़ों की लाखों चिंदियाँ
उड़ चलीं हवाओं में फर-फर
जैसे कहर के कबूतर,
दह गई बेशुमार देहें भीतर कहीं'' [23]

संवेदनाओं का बंजर, मानवता की फसल नहीं उगा सकता। आम जीवन के दृश्यऔर बिंब भी इसी तर्ज पर अब बदल गए हैं। 'दो पंक्तियों के बीच' संग्रह में एक कविता है 'दृश्य और बिंब', जो इसी ओर इंगित करती है। कविता मे एक घटना के द्वारा बताया गया है कि किस तरह दूसरों को डराने-धमकाने में आनंद की अनुभूति करने वाले विकृत मानसिकता के लोग भी इस दुनिया में हैं।

''एक सिनेमा घर के सामने छूटी हुई जगह में

एक नए मॉडल की चमचमाती कार
एक विकलांग बच्चे को डरा रही है
x x x x x x
ड्राइवर मुस्कुरा रहा है
और आसपास खड़े तमाशबीन अंदर ही अंदर डर रहे हैं
तरस खा रहे हैं,पर हँस रहे हैं
यह एक दृश्य है
जे हमारे समय के बिंब में बदल रहा है'' [24]

निष्कर्षतया जैसा कि प्रेमचंद की यह उक्ति कहती है –''हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा, जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो, जो हममें गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे, सुलाए नहीं, क्योंकि अब और ज़्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।'' [25] इसी उक्ति को सार्थक करते हुए चयनित पुरस्कृत काव्य संग्रहों में राष्ट्रीय चेतना के स्वर मुखर हैं। भौगोलिक चेतना हो अथवा सांस्कृतिक अखंडता, रुढ़ियों-पाखंड का विरोध हो अथवा धर्म-वर्ण-लिंग के भेद-भाव। सभी के काव्य में मानवता को सर्वोपरि स्थान दिया गया। यद्यपि सभी कवियों ने अपनी-अपनी शैली में वर्तमान का सच उकेरा है परंतु कहीं न कहीं अच्छे समय और अच्छे कर्मों की उम्मीद को बुझने न देने का भी बीड़ा उठाया है, जो हम उन सभी चयनित काव्य संग्रहों के काव्यों में देख सकते हैं। यद्यपि संग्रहों में कवि अभी अपने काल के मरहमों पर हल्दी लगाने वाले चिकित्सक से अधिक अपने काल के गायक के रुप में सफल दिखाई देते हैं। परंतु इस तरह भी वे काव्य द्धारा समाज की विसंगतियों की ओर इशारा कर उनकी दुरुस्ती में सहायक ही माने जाएँगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. 'हिंदी साहित्य का वृहत् इतिहास' (सप्तम भाग) संपादक - डॉ. भगीरथ मिश्र, नागरी प्रचारिणी सभा, प्रथम संस्करण, संवत् 2029
2. Sahitya academy.gov.in, मुख्य पृष्ठ, पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, पुरस्कार विजेताओं की सूची
3. 'कविता की समकालीन संस्कृति', भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृष्ठ 70-71
4. हवा में हस्ताक्षर, कैलाश वाजपेयी, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ-12
5. संशयात्मा, ज्ञानेंद्रपति, राधाकृष्ण प्रकाशन, पृष्ठ-17
6. दो पंक्तियों के बीच, राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-67
7. दो पंक्तियों के बीच, राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-70
8. दो पंक्तियों के बीच, राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-64
9. दुष्चक्र में स्रष्टा, वीरेन डंगवाल, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-113
10. प्रतिनिधि कविता, राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-8
11. दुष्चक्र में स्रष्टा, वीरेन डंगवाल, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-68-69
12. हवा में हस्ताक्षर, कैलाश वाजपेयी, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ-50
13. दुष्चक्र में स्रष्टा, वीरेन डंगवाल, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-14
14. दो पंक्तियों के बीच, राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-13
15. संशयात्मा, ज्ञानेंद्रपति, राधाकृष्ण प्रकाशन, पृष्ठ-196
16. दुष्चक्र में स्रष्टा, वीरेन डंगवाल, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-51
17. हवा में हस्ताक्षर, कैलाश वाजपेयी, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ-106
18. दो पंक्तियों के बीच, राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-66
19. संशयात्मा, ज्ञानेंद्रपति, राधाकृष्ण प्रकाशन, पृष्ठ-41-42
20. दुष्चक्र में स्रष्टा, वीरेन डंगवाल, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-42
21. दुष्चक्र में स्रष्टा, वीरेन डंगवाल, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-92
22. संशयात्मा, ज्ञानेंद्रपति, राधाकृष्ण प्रकाशन, पृष्ठ-103
23. हवा में हस्ताक्षर, कैलाश वाजपेयी, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ-16
24. दो पंक्तियों के बीच, राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-90
25. 'कविता की समकालीन संस्कृति', भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृष्ठ 52

* **यूटोपिया** – एक आदर्श समुदाय या समाज का एक नाम जो कि 1516 में सर थॉमस मोर द्धारा लिखी गई पुस्तक ''ऑफ द बेसट स्टेट ऑफ ए रिपब्लिक एंड ऑफ द न्यू आइलैंड यूटोपिए '' में उपयोग किया गया, जिसमें अटलांटिक महासागर के एक काल्पनिक टापू के बिल्कुल उत्कृष्ट लगने वाले सामाजिक-राजनैतिक कानूनी तंत्र का वर्णन किया गया है।

** **खोइला गाँव** – मान्यता के अनुसार ऐसा दुर्भाग्यशाली गाँव जिसका नाम लेने से अपसगुन होता है।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

आधुनिक शिक्षा प्रणाली और भारतीय संविधान का विश्लेषनात्मक अध्ययन

डॉ. पूजा नागर *

* विजिटिंग फैकल्टी (विधि) विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – जिस तीव्र गति से भारत के सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक परिदृश्य में बदलाव आ रहा है उसे देखते हुए यह आवश्यक है कि हम देश की शिक्षा प्रणाली की पृष्ठभूमि, उद्देश्य, चुनौतियाँ, संकट एवं संवैधानिक प्रावधानों का गहन अवलोकन करें। शिक्षा शब्द अपने आप में बड़ा व्यापक है। जन्म से मृत्यु पर्यन्त तक हम अनेक वस्तुओं, व्यक्तियों, संस्थाओं एवं विचारों के सम्पर्क में आते हैं, जिससे प्रतिक्षण नवीन अनुभव प्राप्त होते हैं। इन अनुभवों से हमारे व्यवहार में परिवर्तन आते हैं। इन अनुभवों को प्राप्त करने की प्रक्रिया शिक्षा ही होती है।

शिक्षा संस्कारों की धरोहर है, इसे कोई चुरा नहीं सकता। यह वह सम्पति है जो सरस्वती के भण्डार की तरह बाँटने से बढ़ती है। बालकों के लिए शिक्षा का प्रबंध करना, शिक्षण संस्थाओं की स्थापना करना राज्य का दायित्व है। हमारे सांस्कृतिक भारत में गुरूकुलों में आत्मनिर्भर और नैतिक आदर्शों की शिक्षा देने की व्यवस्था थी। प्राचीन भारत में अधिकारों से अधिक कर्त्तव्यों पर जोर दिया जाता था।

प्रस्तावना –'विद्या विनयेन सोभते' शिक्षा व्यवस्था ऐसी हो जो, व्यक्ति को मनुष्य बनाए, पाश्चात्य अनुकरण की शिक्षा व्यवस्था में बालकों को संस्कारमूलक शिक्षा प्राप्त नहीं हो रही है। बालक कच्ची मिट्टी की तरह होते है। बचपन में ही उनको जैसा बनाओं वैसा बनते है, किन्तु दुर्भाग्य का विषय तो यह है कि न तो बालकों को घर पर संस्कार मिलता है और न स्कूलों में। राष्ट्र के भविष्य की नींव वर्तमान के बालकों पर निर्भर करती है। इसलिए बालकों का सर्वांगीण विकास, सुधार की शिक्षा का प्रबंध पालकों और सरकार को करना चाहिए तभी युवाओं में ज्ञान, चरित्र और एकता स्थापित हो सकेगी।

सन् 1835 ई. में जब वर्तमान शिक्षा प्रणाली की नींव रखी गई थी तब लार्ड मेकाले ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि अंग्रेजी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य भारत में प्रशासन के लिए बिचौलियों की भूमिका निभाने तथा सरकारी कार्य के लिए भारत में विशिष्ट लोगों को तैयार करना है। किसी भी राष्ट्र अथवा समाज में शिक्षा सामाजिक नियंत्रण, व्यक्तित्व निर्माण तथा सामाजिक व आर्थिक प्रगति का मापदण्ड होती है। भारत की शिक्षा प्रणाली ब्रिटिश प्रतिरूप पर आधारित है।

शिक्षा ही एकमात्र साधन है जो मानव को सभी प्रकार के निर्णय लेने में मदद करती है। शिक्षा ही मानव के जीवन को सफल बनाने का एकमात्र साधन है। इसके बिना जीवन की कल्पना संभव नहीं। हताश युवा गरीबी और बेरोजगारी से रोज- रोज पारिवारिक ताने, सामाजिक ताने से परेशान जल्द अमीरी के स्वप्न संजोने में लग जाते हैं और अपराधिकता से नाता जोड़ लेते हैं। जिससे स्वयं का अहित तो होता है, बल्कि समाज व राष्ट्र का भी जाने-अनजाने अहित करने से नहीं कतराते हैं।

शिक्षा का उद्देश्य, अनुशासन, आदर-सत्कार की भावना, नम्रता और चरित्र का निर्माण होता है, जो मानव का सर्वोपरि धन है। दया, क्षमा, संतोष, सहानुभूति, आत्मसंयम, परोपकार, स्वदेश शक्ति आदि का ज्ञान होना आज के विद्यार्थियों के लिए बहुत आवश्यक है क्योंकि विद्यार्थी ही किसी समाज या राष्ट्र की रीढ़ की हड्डी होते हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि – प्राचीन भारत में शिक्षा वैदिक रूप से प्राप्त की जाती थी। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के माध्यम से वैदिककाल में शिक्षा एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा पवित्र स्थान प्राप्त किये हुए थी। वैदिककाल से लेकर मध्यकाल तक भारतीय शिक्षा के आधार स्तम्भ गुरूकुल थे। वे गुरूकुल इतने उच्च और श्रेष्ठ थे कि इनकी विशेषताओं का प्रभाव पश्चिम देशों पर भी पड़ा। अति प्राचीन काल में शिक्षा मानव मस्तिष्कों में आंदोलन करती आ रही है।

भारत में गुरूकुल की शिक्षा से छात्र सम्पूर्णता लिये समाज में अपना जीवनयापन करते थे। आदर्श व्यक्ति के रूप में जाने जाते थे। समाज की व्यवस्था के अनुरूप कार्यो को करने की प्रेरणा शिक्षा से प्राप्त होती थी। आदर्श व्यक्ति निर्माण में शिक्षा का अपना एक विशेष योगदान रहा है। चन्द्रगुप्त, अशोक होल्कर, वनों से हमें शिक्षण व्यवस्था की जानकारी प्राप्त होती है। शंकराचार्यो के द्वारा आश्रम व्यवस्था से स्थापित चारों मठों में भी संस्कृत शिक्षा के द्वारा व्यक्ति विकास की जानकारी आत्मस्वलाम्बि निर्माण की प्रेरणा देती है।

आज ब्रिटिश शासन ने शिक्षा के क्षेत्र में युग परिवर्तन का कार्य किया। अंग्रेजी शिक्षा भारत के लिए एक अनुपम देन है। वुड के आदेश पत्र ने सम्पूर्ण भारत में क्रमबद्ध शिक्षण संस्थाओं का क्रियान्वयन किया। ब्रिटिश शासन की स्थापना के बाद अंग्रेजी शिक्षा ने भारत में नवजागरण का कार्य प्रारंभ किया। अंग्रेजी शिक्षा भारत के लिए महान है, जिससे भारतीय समाज में आधुनिकीकरण हुआ। जिस समय ब्रिटिश शासन की स्थापना हुई; उस भारत में शिक्षा और समाज दोनों की बड़ी सोचनीय स्थिति थी।

मानव द्वारा आदिकाल से ही ज्ञान का संचय किया जा रहा है। प्रत्येक

पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी द्वारा कुछ ज्ञान विरासत से प्राप्त होता है और कुछ वह स्वयं अर्जित करता है। मानव की प्रत्येक पीढ़ी से सीखने की प्रक्रिया की सहायता से और हस्तांतरण द्वारा ज्ञान की वृद्धि होती है। शिक्षा का तात्पर्य पुस्तकीय ज्ञान और पढ़ने-लिखने से लिया जाता है जबकि वास्तविक शिक्षा का तात्पर्य सभी प्रकार के ज्ञान के संग्रह तथा मानव के चहुमुखी विकास से है। प्राचीनकाल में जहाँ नांलदा एवं तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों ने शैक्षिक वातावरण का सृजन किया वहीं दूसरी ओर तपस्वी मनिसियों द्वारा आश्रमों में शिष्यों के व्यक्तित्व निर्माण का कार्य सम्पन्न किया जाता रहा। उस समय शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यावसायिक दक्षता के साथ-साथ धार्मिक, अध्यात्मिक, नैतिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी दक्षता प्राप्त करना था। भारत में आधुनिक उच्च शिक्षा अंग्रेजों की देन है। उच्च शिक्षा सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिवर्तन शक्तिशाली माध्यम है। देश के आर्थिक विकास में उच्च शिक्षा अपना योगदान अनुसंधान श्रेष्ठ उत्पादकों एवं योग्य प्रबंधकों के रूप में देती है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली का उद्भव और विकास कम्प्यूटर के साथ हुआ। कम्प्यूटर ने शिक्षा के क्षेत्र में जितनी तेजी से विकास किया उतनी तेजी से दुनिया में दूसरा कोई विकास नहीं हुआ। ई-शिक्षा ने पलक झपकते ही दुनिया के एक काने से दूसरे कोने में पहुँचा दिया। आधुनिक शिक्षा ने औपनिवेश्विक ढाँचे को सुचारू रूप से चलाने के लिए सस्ते मानव उपकरण तैयार किये, जिससे औपनिवेश्विक दौर में शिक्षा से रोजगार के नये अवसर आ सके।

जॉन डीवी के अनुसार -'शिक्षा व्यक्ति की उन सभी आंतरिक शक्तियों का विकास है जो उसे वातावरण के नियंत्रण में अपने को समर्थ बनायेगी तथा उसकी सभी संभावनाओं की प्राप्ति करायेगी।'

स्वतंत्र भारत - भारतीय संविधान सन् 1947 की स्वतंत्रता के बाद 26 जनवरी, 1950 को देश का संविधान लागू हुआ। संविधान के अनुच्छेद 45 में 14 वर्ष तक के बालकों के लिए नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का प्रबंध करने का राज्य का कर्त्तव्य माना गया है।

स्वतंत्रता के पश्चात् सन् 1948 में डॉ सर्वपल्ली राधा कृष्ण की अध्यक्षता में नियुक्त विश्व विद्यालय शिक्षा आयोग के अनुसार शिक्षा व्यवसायिक, उच्च स्तर एवं नये ज्ञान की प्राप्ति जीवन के उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयत्न करें तथा सुविधाओं की व्यवस्था करना विश्वविद्यालय का कार्य होना चाहिये।

कोठारी आयोग 14 जुलाई 1964 को 'विश्वविद्यालय अनुदान आयोग' के प्रधान प्रोफेसर डी. एस कोठारी की अध्यक्षता में शिक्षा-आयोग की नियुक्ति की, उस समय के तात्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्ण ने अपने सन्देश में कहा 'मेरी यह हार्दिक इच्छा है। कि कमीशन शिक्षा के सब पहलूओ प्राथमिक, विश्वविद्यालय और टेक्निकल की जॉच करे और ऐसे सुझाव दे, जिनसे हमारी शिक्षा व्यवस्था को अपने सभी स्तरो पर उन्नति करने में सहायता मिले।'

राज्य ने बालकों की शिक्षा पर ध्यान न देकर देश में प्रौढ़ शिक्षा की योजना प्रारम्भ की। राज्य ने संविधान के अनुच्छेद 45 के अपने दायित्व पर ध्यान न देकर देश में प्रौढ़ शिक्षा को प्रारम्भ किया। क्या प्रौढ़ शिक्षा की जगह अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा को प्रारम्भ नहीं किया जा सकता था? राज्य का प्रौढ़ शिक्षा को प्रारंभ करने का प्रयास पेड़ के पत्तों पर पानी डालने का काम हुआ। पौधों को हरा-भरा बनाये रखने के लिए पत्तों पर नहीं बल्कि उनकी जड़ों में पानी डालना पड़ता है। प्रौढ़ शिक्षा में खर्च किये गये धन का यदि बालकों की शिक्षा में उपयोग होता तो राष्ट्र को अधिक लाभ होता। पूर्ण साक्षरता के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए प्रौढ़ शिक्षा की योजना बुरी नहीं थी, किन्तु उससे पहले अनिवार्य और प्राथमिक शिक्षा का राज्य को प्रबंध करना था, क्योंकि यदि बालक अनपढ़ रह जाते हैं तो फिर वह साक्षरता कहाँ हुई।

शिक्षा के अधिकार को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए संसद ने शिक्षा के विषय को राज्य सूची, समवर्ती सूची की प्रविष्टि 25 में जोड़ा है। केन्द्र सरकार ने सी.बी.एस.सी.पाठ्यक्रम को स्वीकार कर पूरे देश में इसे लागू किया। शिक्षण संस्थाओं को विभिन्न प्रकार के अनुदान भी दिये जाते हैं। इसी कड़ी में केन्द्र सरकार द्वारा नवोदय विद्यालय चलाये जाते हैं।

शिक्षा गारण्टी - शिक्षा गारण्टी योजना तथा वैकल्पिक शिक्षा में जो बच्चे स्कूल नहीं जा रहे हैं उनको प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराना, जो बालक स्कूल छोड़ चुके हैं, उनको वापस लाने के लिए स्कूल वापसी शिविरों का आयोजन करना और उनके लिए ब्रिजकोर्स चलाना।

भारतीय संविधान में शिक्षा का अधिकार - भारतीय संविधान के भाग 3 में मौलिक अधिकारों से संबंधित प्रावधान किये गये है, इन अधिकारों में अनुच्छेद 21 में प्राण और दैहिक स्वतंत्रता के अधिकार को संरंक्षित करता है। यह सभी अधिकारों में श्रेष्ठ है। 86 वें संविधान संशोधन द्वारा अनुच्छेद 21 (क) जोड़कर शिक्षा के अधिकार को मूल अधिकार बना दिया गया। अनुच्छेद 21 (क) यह उपबंधित करता है कि 'राज्य ऐसी रीति से जैसा कि विधि बना कर निर्धारित करे छ: से चौदह वर्ष की आयु के सभी बच्चों के लिए नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध करेगी।'

अनुच्छेद 45-बालकों के लिए नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का उपबन्ध - राज्य इस संविधान के प्रारंभ से 10 वर्ष की अवधि में सभी बालकों को 14 वर्ष की आयु पूरी करने तक नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा देने के लिए उपबंध करने का प्रयास कर सकेगा। राज्य ने इस कर्त्तव्य की पूर्ति लम्बे समय तक नहीं की। मोहिनी जैन और उन्नीकृष्णन के मामलों में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 14 वर्ष तक के बालकों को अनिवार्य और नि:शुल्क शिक्षा देने का अधिकार अनुच्छेद 21 की व्यक्तिगत स्वतंत्रता में निहित माना। बाद में जनता की माँग पर संसद ने संविधान में 86 वां संविधान संशोधन 2002 किया और अनुच्छेद 21 (ए) और अनुच्छेद 51 (ए) (के) संविधान में जोड़कर 6 से 14 वर्ष तक के बालकों के लिए अनिवार्य और नि:शुल्क शिक्षा का मौलिक अधिकार बनाया।

अनुच्छेद 21 (क) - के अनुसार राज्य विधि बनाकर 6 वर्ष की उम्र से 14 वर्ष तक की उम्र के बालकों को नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा देगा, किन्तु 14 वर्ष के बाद राज्य का दायित्व उसकी आर्थिक सीमा पर निर्भर करेगा।

अनुच्छेद 51 (ए) (के) - संविधान में संशोधन कर अनुच्छेद अनुच्छेद 51 (ए) (के) जोड़ा गया जो निर्धारित करता है कि 6 से 14 वर्ष तक के बालकों को स्कूल भेजना पालकों का कर्त्तव्य होगा। 6 वर्ष से 14 वर्ष तक बालकों का नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का मौलिक अधिकार प्राप्त हुआ है और बालकों को स्कूल में भेजने का कर्त्तव्य भी बना दिया है किन्तु अब इसके क्रियान्वयन की जिम्मेदारी सरकार की है। सरकार इस संबंध में प्रयासरत् है किन्तु इसके लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है।

बालकों का नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम

2009 – संविधान संशोधन 86 वां द्वारा शिक्षा को मौलिक अधिकार बना देने के बाद केन्द्र सरकार ने बालकों को नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार 2009 पारित किया और एक अप्रैल 2010 को इसे लागू किया। अनिधियम में केन्द्र और राज्य सरकारों का प्रत्येक 6 वर्ष से 14 वर्ष तक के बालकों को नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा देने का दायित्व माना। संक्षेप में नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा नहीं देने पर सरकार के विरूद्ध वाद चलाया जा सकता है।

मोहनी जैन बनाम कर्नाटक राज्यम – इस मामले में उच्चतम न्यायालय ने यह अभिनिर्धारित किया कि शिक्षा का मूल अधिकार अनुच्छेद 21 में प्राण और दैहिक स्वाधीनता में निहित है। न्यायालय ने अनुच्छेद 21 का निर्वहन कर इस ओर सबका ध्यान आकर्षित कर प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता के अधिकार में शिक्षा के अधिकार को अनिवार्य बना दिया।

उन्नी कृष्णन बनाम आन्ध्रप्रदेश राज्य – इस मामले में यह प्रश्न पुन: न्यायालय के समक्ष विचारार्थ आया उच्चतम न्यायालय ने मोहनी जैन में दिये निर्णय को नही माना कि सभी नागरिकों कों शिक्षा का अधिकार प्राप्त है। न्यायालय ने यह निर्णय दिया कि अनु. 21 में शिक्षा का अधिकार एक मूल अधिकार है राज्य की स्थिति को देखते हुये केवल एक विशेष आयु छ: वर्ष से चौदह वर्ष बालको के लिये ही प्रदान किया जा सकता है। इसके लिये नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिनियम, 2009 पारित किया। इस अधिनियम के पारित हो जाने से अब शिक्षा का अधिकार छ: वर्ष से चौदह वर्ष के बालकों के लिये एक अधिकार बन गया।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली – आज की आधुनिक शिक्षा कों ई–शिक्षा का नाम दिया गया है, ई–शिक्षा का अर्थ इन्टरनेट से सूचना प्रदान करने से कही ज्यादा है, ई–शिक्षा उन सभी प्रक्रिया कों अपने अन्दर समाहित की है जों इलेक्ट्रानिक माध्यम का उपयोग व्यवसायिक शिक्षा कों सुचारू रूप से लागू करते है। ई–शिक्षा शब्द का प्रयोंग एक ऐसे ढॉचे के रूप में किया जात है जों लगभग सभी इलेक्ट्रानिक माध्यमों (इन्टरनेट, इन्ट्रानेट, एक्सट्रानेट, कृत्रिम उपग्रह प्रसारण, ऑडियो, विडियो, इन्टरेक्टिव टेलीविजन, सी.डी. इत्यादि।) को पेशेवर शिक्षा को विद्यार्थियों तक बड़े ही रोचक तरीके से पहुँचाया है। जैसे– (1) ऑनलाईन शिक्षा (2) कम्प्यूटर आधारित शिक्षा (3) सूचना जाल आधारित शिक्षा (4) सूचना जाल संसाधन आधारित शिक्षा (5) नेटवर्क सहयोगी शिक्षा (6) कम्प्यूटर समर्थित शिक्षा (7) ऑनलाईन परीक्षा आदि को कहा गया है। ई–शिक्षा हमारी कक्षा व्यवस्था का ही विकसित रूप है यहां पर शिक्षा की सुविधा के अनुसार बनाया जा रहा है। आज कम्प्यूटर क्रांति ने सम्पूर्ण विश्व को एकसूत्र में बाँध दिया। इन्टरनेट ने तो शिक्षा के प्रचार–प्रसार में बड़ी ही अहम भूमिका निभायी है।

इन्टरनेट – भारत में शिक्षा को संविधान की समवर्ती सूची में रखा गया है अर्थात् केन्द्रीय शासन एवं राज्य सरकारें दोनों इसके संदर्भ में स्वतंत्र है। इसके कुछ गुण भी है तो कुछ दोष भी। केन्द्रीय शासन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (U.G.C. Act 1956) के माध्यम से उच्च शिक्षा को नियमित करता है। केन्द्रीय विश्वविद्यालयों एवं मान्य वि.वि. को शत–प्रतिशत अनुदान मिलता है। परंतु राज्य सरकारों के विश्वविद्यालयों को, जो संख्या में अधिक है, केन्द्र प्राय: पंचवर्षीय योजनाओं के अंतर्गत विकास के लिए ही राशि उपलब्ध कराता है। संधारण खर्च विभिन्न राज्य स्वयं वहन करते है। अनेक राज्य सरकारें संधारण राशि का पूरा भार वहन करने में कठिनाई का अनुभव करती है जिससे उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट आती है। महाविद्यालयों में कुछ शासकीय होते है तो कुछ अशासकीय। अनेक अशासकीय महाविद्यालयों को केन्द्र एवं राज्यों से अनुदान प्राप्त होता है, परंन्तु कुछ को बिल्कुल नहीं। अल्पसंख्यक समुदाय की संस्थाओं के प्रबंधन में कुछ रियायतें भी है। स्वतंत्रता के बाद शिक्षा का प्रसार तेजी से हुआ, प्रौद्योगिकी का सहयोग लिया गया। धर्म–निरपेक्षता का जोर एवं प्रौद्योगिकी के बाहुल्य के कारण शिक्षा मंदिर का 'मनुष्य' बाहर हो गया एवं शिक्षण संस्थायें व्यवसायिक होने लगी और नैतिक मूल्यों का ह्रास होने लगा।

ऑनलाईन शिक्षा – कोविड–19 आपदा में स्कूल, कॉलेज एवं शिक्षण संस्थाएं बंद होने से ऑनलाईन शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। आपदा से जहां एक ओर विनाश आया है वहीं दूसरी ओर नयी खोज, आविष्कार और नई जीवन शैली अपनाने के सुनहरे अवसर भी प्राप्त हुए हैं। आज ऑनलाईन शिक्षा विद्यार्थी के दरवाजे पर पहुँच गयी है। जैसे– गूगल, मीट जूम, स्काइप, व्हाट्सएप एवं विडियो कॉल के माध्यम से विद्यार्थी घर बैठे शिक्षा को प्राप्त कर रहे। शिक्षक लेपटॉप, कम्प्यूटर, टेबलेट या स्मार्टफोन का उपयोग ऑनलाईन अध्यापन कार्य में कर रहे हैं। जिससे लाखों बच्चे लाभान्वित हो रहे हैं।

ऑनलाईन शिक्षा से लाभ :

1. ऑनलाईन माध्यम से दिये गये व्याख्यान को छात्र सेव कर पुन: देख व सुन सकते हैं।
2. स्कूल, कॉलेज एवं शैक्षणिक संस्थाओं में आने–जाने वाले समय एवं परिवहन खर्च की बचत हो रही है।
3. आर्थिक रूप से कमजोर परिवार के छात्र शिक्षा के साथ नौकरी कर अपना खर्चा निकाल सकते हैं।

निष्कर्ष – प्राचीनकाल से ही भारत शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान का गढ़ कहा जाता है। शिक्षा मानव के चहुँमुखी विकास एवं देश के विकास में सहायक सिद्ध हुई है। कम्प्युटर ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति लायी है। नई टेक्नोलॉजी से छात्र वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर रहे। आधुनिक शिक्षा से कम समय में अधिक लोगों को शिक्षित किया जा रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी से पुरी दुनियाएक सूत्र में सिमट गयी है। वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 'मेक इन इंडिया' एवं 'डिजिटल इण्डिया' का नारा सफल होता नजर आ रहा है।

सुझाव :

1. आर्थिक रूप से कमजोर सभी विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा नि:शुल्क दी जानी चाहिए।
2. कम्प्यूटर की शिक्षा प्राथमिक स्तर पर नहीं जानी चाहिए। बच्चों के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है।
3. आधुनिक संयंत्र के माध्यम से उच्च शिक्षा ऑनलाईन शिक्षा को अनिवार्य किया जाना चाहिए।
4. सरकारी नीतियों में ऑनलाईन शिक्षा का प्रारूप रोजगार देने योग्य होना चाहिए।
5. शिक्षा का पाठ्यक्रम प्रति पाँच वर्षों में परिवर्तित किया जाना चाहिए।
6. शिक्षा में पाठ्यक्रम जोड़ने के लिए योग्य समिति का गठन किया जाना चाहिए।
7. शिक्षा कानून 2009 में सभी वर्ग के छात्रों को 12वीं तक नि:शुल्क शिक्षा उपलब्ध की जानी चाहिए।

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

8. हायर सेकण्डरी स्तर से इंटर्नशिप प्रारंभ की जानी चाहिए।
9. उच्च शिक्षा में कम्प्यूटर को अनिवार्य शिक्षा में शामिल किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रथ सूची :-

1. डॉ. जय नारायण पाण्डेय, भारत का संविधान, प्रकाशक – सेन्ट्रल लॉ एजेन्सी, इलाहाबाद छियालिसवाँ संस्करण : 2013, पेज नं. 236, 301, 302, 419, 434
2. डॉ. पी.डी. शर्मा. भारत में शिक्षा स्तर, समस्यायें एवं मुद्दे, प्रकाशक–श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2 प्रथम संस्करण : 2016 पेज नं. 188, 189, 249. 305, 335, 337, 364
3. डॉ. सियाराम यादव, पाठ्यक्रम एवं भाषा (भाषा–2) प्रकाशक श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा –2 प्रथम संस्करण: 2016, पेज नं. 62, 64, 66, 70, 74, 85, 86,
4. प्रो. डॉ. एन.आर. लबाना – शिक्षा पर कानून – इण्डिया पब्लिशिंग कम्पनी – प्रथम संस्करण : 2014
5. आचार्य दुर्गादास बसु – भारतीय संविधान – सेन्ट्रल लॉ एजेन्सी
6. डॉ. एस.के. कपूर – मानव अधिकार – सेन्ट्रल लॉ एजेन्सी

Website :

1. https://www.education.gov.in
2. https://www.illinaisrepartcard.com
3. https://www.nces.ed.govs
4. https://www.in.linkedin.com
5. https://www.hi.vikaspedia.in
6. https://www.indiankanoon.org

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

A Study on Small Scale Industry: With Special Reference to Jammu & Kashmir

Dr. L. N. Sharma* Mohd Rafi Malla Dr. Imtiyaz Rashid Lone*****

*Dean, Vikram University, Ujjain & HOD (Commerce) Govt. P.G. College, Neemuch (M.P.) INDIA
** Research Scholar, Vikram University, Ujjain (M.P.) INDIA
*** Research Scholar, Vikram University, Ujjain (M.P.) INDIA

Abstract - Small scale industries (SSI) refer to those small entrepreneurs who are engaged in production, manufacturing orservice at a micro scale. Small scale industries play a focal role in the economic and social development of J & K India in thepost-independence era. Small scale industries constitute the backbone of a developing economy with its effective, efficient,flexible and innovative entrepreneurial spirit.Round the world SSI units have been accepted originator of economicgrowth and for promoting equitable development. The contribution of SSIs to the j & k Indian economy in terms ofemployment generation, reducing regional imbalances, promoting inter-sectorial linkages, magnifying exports andfostering equitable economic growth potential has been quite marvellous. The SSI sector has the prospective to spread industrialgrowth round the country and can be a considerable associate in the progress of comprehensive growth. The present Studyof SSIs has received many responses from various economists. The performance of the small-scalesector has a direct impact on the growth of the overall economy in terms of number of units,production, employment and exports. It may help to understand its role in the economicdevelopment of the country.The paper attempts to discuss the role of small scale industries indeveloping the economy and explore the various problems faced by it.
Keywords- Small Scale Industries, SSI, Economic growth, GDP, Economic, Developing, Development, Industries.

Introduction - Small Scale industries have played a very important role in the development of country. Thegovernment in its budget normally emphasizes on the contribution of the small and medium scale enterprises. The role of small-scale industries has always been supported in a country like India with various opinions such as employment, equality, latent resource, trickling effect, insurance against social tension, distributive effect, creation of social eco system and decentralization etc. The other arguments in favour of small-scale industries are making provision for self-employment and capital formation and they are skill light, import light and quick yielding. Analysis of the data on SSIs has received different responses from different economists in different studies, right from one of the earliest studies in1961. The performance of the small-scale sector has a direct impact on the growth of the overall economy. The performance of the small scale sector in terms of parameters like number of units, production, employment and exports will help to understand its role in the economic development of the country.

Meaning of Small Scale Industries: Small Scale Industries (SSI) are those industries in which the manufacturing, production and rendering of services are done on a small or micro scale. These industries make a one-time investment in machinery, plant, and equipment, but it does not exceed Rs.10 crore and annual turnover does not exceed Rs.50 crore.Essentially the small scale industries are generally comprised of those industries which manufacture, produce and render services with the help of small machines and less manpower. These enterprises must fall under the guidelines, set by the Government of India.

The SSI's are the lifeline of the economy, especially in developing countries like India. These industries are generally labour-intensive, and hence they play an important role in the creation of employment. SSI's are a crucial sector of the economy both from a financial and social point of view, as they help with the per capita income and resource utilisation in the economy. The examples and Ideas of Small Scale Industries are as under:

1. Water bottles
2. Leather belt
3. Small toys.

Review of Literature

Berna (2001), in his study entitled, "Entrepreneurship in Madras State" highlighted the main characteristics found in the entrepreneurs such as capital, experience of business, technical knowledge and family background. These factors alone promote the growth of entrepreneurship.

Singh Nagendra (2002), in his article entitled, "Type of Entrepreneurship" has focused the growth of indigenous entrepreneurship after independence in the country as a whole. The contribution of both public and private sectors, including large scale and small scale enterprises for economic development, is discussed and evaluated.

Gholam Ali (1999), in his study entitled, "Help makes small scale industries viable" revealed that big and small industries have their share in the development of a nation and the prosperity of its masses. A balance must be struck in the development of these industries. The thrust on the development of SSI through successive Five year plans and Government Policies had helped this sector. Mecrory, in his study entitled, "Latent Industrial Potential", suggested policies for improving the utilization of resources in the small industrial sector.

Research Methodology: The present study of the small scale industries of J & K is based on primary and secondary data. The primary data has been collected through the questionnaires.Secondary data extracted from various books, magazines, newspaper, journals, websites and company sources. Instructed personnel interviews would be conducted in order to check the reliability of secondary data. There are various tools and a technique has been used for the examination of the financial position used by the small scale industry, such as tabulation, charts, etc.

The present research work sample is 120 Small Scale Industries of Jammu and Kashmir India.

Objectives of the Study:

1. To study the employment opportunities generated with of help of Small scale industries.
2. To identify and analyze the problems faced by the existing industries and suggest their solutions.
3. To assess the availability of various resources and skills in the State for their effective use for industrial development.

Hypotheses of the Study:

Ho_1: There would be no significant difference in the current ratio of selected Small Scale Industries of Kashmir Division during the period of the study.

Ho_2: There would be no significant difference in the quick ratio of selected Small Scale Industries of Kashmir Division during the period of the study.

Ho_3: There would be no significant difference in the Net Cash Flows of selected Small Scale Industries of Kashmir Division.

Role and Growth Performance of Small Scale Industries in Jammu and Kashmir: In a non-industrial nation like India, Limited scope Business venture assumes a critical part in monetary advancement of the country. These businesses, all around speak to a phase in monetary progress from customary to current innovation after globalization. The variety in temporary nature of this cycle is reflected in the variety of these enterprises. A large portion of the limited scale businesses utilize basic abilities and apparatus. Other than assuming monetary part in the nation, Small Scale Industries, on account of their exceptional financial and authoritative attributes, likewise assume social and political part in neighbourhood work creation, adjusted asset usage, pay age and in assisting with advancing change in a steady and serene way. The investigation of business is fundamental not exclusively to take care of the issue of mechanical turn of events yet additionally to tackle the issues of joblessness, unequal territories improvement, grouping of monetary force and redirection of benefits from conventional roads of speculation. In this scenery, the current examination endeavors to get bits of knowledge to audit, to sum things up, the advancement of the idea of business venture, the meaning of limited scope undertakings and furthermore to consider the limited scale business venture in Kashmir.

After the freedom the public authority of India dispatched the cycle of industrialization as a cognizant and purposeful arrangement of monetary development in mid-fifties. The public authority perceived the critical commitment to industrialization to make the improvement cycle "as a base for the development for the essential area, as a reactant specialist for the advancement of framework, as an animate to age of innovations through Research and development endeavors... What's more, as a development multiplier".

In the advanced time all the areas of the economy need to fill in sync. Between sectorial consistency guarantees that no single area can thrive without the advancement of different areas. Yet, Industrialization is one such cycle which can drive development in different areas of the economy too. Getting this, the horticultural economies have been changing themselves into present day mechanical economies by following the cycle of Industrialization. In India, which till autonomy (and even today) was predominately an agrarian economy, is presently turning out to be modern economy by following the cycle of industrialization where different areas of the economy are additionally being created. Contrasting pre-autonomy period and the advanced time, India has halfway changed itself from conventional agrarian economy into a cutting edge modern economy. All the constituent conditions of India, are endeavouring to build up their modern areas. This might not have been conceivable without legitimate rules gave through different mechanical strategies directly from 1948 till now.

Table No. 1 (see in last page)
Table No. 2 (see in last page)
Chart No. 1 (see in last page)

Interpretation: The above table shows that the current ratio in all the years for all the industry groups taken together varies from 1.28 to 18.7. The trend of the industry is in a decreasing trend. And the average of the industries is also is in a decreasing trend. This indicates a worsening solvency position. And the industries are operating on high risk factor. Under pressure of payment of current liabilities, they will be weak and vulnerable. In the engineering industries group the

ratio exceeded the standard limit of 2but showed a decreasing trend. In chemical industries the ratios was below 1:1. This means that the industry financed major portion of their current assets through current liabilities.

Ho_1: There would be no significant difference in the current ratio of selected Small Scale Industries of Kashmir Division during the period of the study.

Table No. 3:

ANOVA Analysis Current Ratio:

Sources of Variations	SS.	Df	MS	F	F Crit.
Between Groups	0.96	04	0.24	1.5	2.87
Within Groups	3.14	20	0.16		
Total	4.10	24			

Source: Survey Field:

Interpretation: The above table indicates the calculated value of "F". The calculated value of "F" is '1.5' which is less than the table value of "F". The table value of "F" at '5 %' level of significance is '2.87'. It indicated that the null hypothesis is accepted. So, it indicates that there is no significant difference in the current ratio of selected small scale industries of Kashmir Division.

Conclusion: Small scale industries have been careful as the engine of economic growth and promotion of equitable development. The major advantage of the sector is its employment potential at low capital cost. The labour intensity of the SSI sector is much higher than that of the large enterprises. The role of small industries in the economic and social development of the country is well established. The sector is a nursery of entrepreneurship, often driven by individual creativity and innovation. The author suggests that besides the growth potential of the sector and its critical role in employment generation of Jammu and Kashmir (J & K) state. It also contributes to the Gross State Domestic Product (GSDP) that is, it contributes 12.55% to GSDP. The study is significant in the sense that the state of Jammu and Kashmir is relatively a backward region of the country both economically and educationally and thus the research work presented a good setting for investigation to know about what is the performance of SSIs in J & K and how some sort of self-employment and income have generated SSIs and what are the challenges that these industries face.

References:-

1. Rural small scale Industry in the peoples Republic of China. 1967, Berkeley: University of California press.
2. Mitsuru Yamazaki. 1968, Japan s community based industries: A case study of small industry. Jokyo: Asian productivity organization.
3. Grabam Bannock. 1969, The Economics of small firms: Return form the wilderness. Oxford: Basil Blackwell.
4. Ministry of Commerce and Industry, Report of the Japanese Delegation, Government of India, New Delhi, 1961.
5. Graham Bannock, the Economics of Small Firms: Return from the Wilderness. Ox ford: Basil Blackwell, 1981.
6. Rao, V.K.R.V (1965), "Small Scale and Cottage Industries", Chaitanya Publishing House, New Delhi, p.107.
7. Berna. 2001, Entrepreneurship in Madras state, Yojana, April 30, Vol. 35, No. 7, pp. 6-7.
8. Singh Nagendra. 2000, Types of Entrepreneurship, Yojana, May 16-31, Vol. 32, No. 9, pp. 37-49.
9. People .T.S. 1997, spatial, "Diversification of Manufacturing Industries in Uttar Pradesh, Luck now," Geri Institute of Development studies.
10. Gholam Ali. 1999, Help makes small scale Industries viable, Yojana Oct. 15 ,Vol. 31, No. 12, pp. 12-17.
11. Banujam .K.V. 1998, Poverty Alleviation through Rural Industrialisation Kurukshetra, Indian Journal of Rural Development, Vol. XXXIII. Oct.1, pp. 51-53.

Chart No. 1

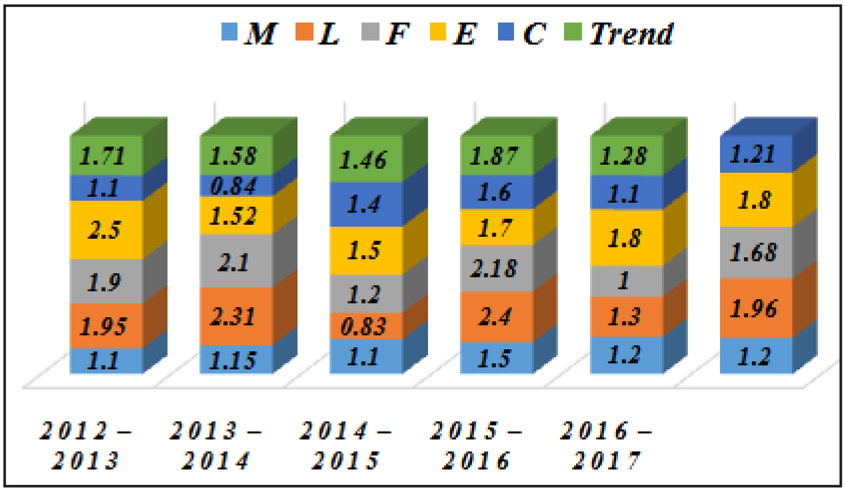

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Table No. 1 : Number of SSI Units registered with the Directorate of Industries & Commerce Kashmir/Jammu (2012 – 2015)

S.	Districts	2012 – 2013		2013 – 2014		2014 – 2015	
		Units	Employ.	Units	Employ.	Units	Employ.
01	Anantnag	4560	19871	4688	20314	4853	20473
02	Kulgam	226	1159	265	1316	315	1349
03	Pulwama	2997	14344	3086	15003	3216	15058
04	Shopian	169	715	182	787	212	799
05	Srinagar	10313	49961	10462	50931	10642	51075
06	Ganderbal	202	1128	235	1378	280	1404
07	Budgam	4297	29076	4358	29645	4438	29715
08	Baramulla	4369	18015	4446	18518	4566	18582
09	Bandipora	199	786	240	968	285	1010
10	Kupwara	1917	6744	1970	6978	2040	7038
11	Leh	977	2776	982	2819	994	2839
12	Kargil	692	1970	706	2042	731	2061
13	Jammu	10671	73121	10765	74139	10823	74634
14	Samba	179	2513	206	2892	239	2937
15	Udhampur	3920	10969	3928	11046	3933	11766
16	Reasi	08	75	10	82	13	103
17	Doda	1741	4328	1748	4361	1759	4417
18	Kishatwar	18	108	22	124	25	131
19	Ramban	11	68	13	81	16	113
20	Kathua	4969	21240	5024	22153	5070	22643
21	Rajouri	1596	4352	1606	4481	1616	4501
22	Poonch	1711	3875	1718	3953	1722	4032
	Jammu &Kashmir	55742	267194	56660	274011	57788	276680

Source: Digest of statistics, 2017 – 2018:

Table No. 2: Number of SSI Units registered with the Directorate of Industries & Commerce Kashmir/Jammu (2015 – 2018)

S.	Districts	2015 – 2016		2016 – 2017		2017 – 2018	
		Units	Employ.	Units	Employ.	Units	Employ.
01	Anantnag	4912	20771	4940	20959	4990	21233
02	Kulgam	344	1478	352	1538	363	1598
03	Pulwama	3281	15529	3336	15931	3433	17095
04	Shopian	218	818	221	830	230	887
05	Srinagar	10787	52000	10912	52799	11041	54015
06	Ganderbal	309	1559	333	1725	356	1919
07	Budgam	4490	29984	4532	30243	4570	30611
08	Baramulla	4619	18929	4646	19106	4685	19554
09	Bandipora	332	1331	337	1369	339	1398
10	Kupwara	2080	7279	2114	7626	2161	7848
11	Leh	1025	3026	1038	3104	1048	3186
12	Kargil	757	2209	767	2272	779	2341
13	Jammu	10942	76081	11064	77224	11175	78518
14	Samba	279	3392	312	3900	343	4155
15	Udhampur	3938	11808	3963	12081	3966	12102
16	Reasi	14	107	20	149	23	219
17	Doda	1766	4456	1769	4469	1774	4478
18	Kishatwar	30	179	34	208	38	240
19	Ramban	17	120	19	138	20	210
20	Kathua	5108	23428	5148	24072	5188	24825
21	Rajouri	1623	4547	1638	4686	1646	4796
22	Poonch	1725	4047	1728	4095	1731	4120
	Jammu &Kashmir	58596	283105	59223	288524	59899	295348

Source: Digest of statistics, 2017 – 2018:

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Trends of Urbanization and Urban Sprawl Growth Centre in Udaipur City in Rajasthan

Varsha Chundawat *

*Research Scholar (Geography) Mohanlal Sukhadia University, Udaipur (Raj.) INDIA

Abstract - The changing Indian economy over the past few decades has led to rapid growth of urban population. For the increasing population, the land around the city is being converted into housing. At the same time, industrial expansion has taken place near the cities to provide employment opportunities for the growing population. Infrastructural facilities are being expanded in the city. To reduce the pressure of urban population, it is very necessary to build growth centers outside the cities. In the present paper, due to the rapid expansion of the city due to urbanization in Udaipur district of Rajasthan state, the development of Umra and Dabok Goodley Growth Center has been highlighted to reduce the increasing pressure on the resources.
Keywords- Urbanization, growth centres, urban sprawl, Population Density, development.

Introduction - With the arrival of industrialisation 200 years ago, urban expansion, often known as urbanisation, surged dramatically. Large numbers of individuals were migrating to cities at the period in pursuit of work in industrial units. However, the greatest rapid expansion has occurred in the last 50 years. In 1950, just roughly a third of the world's population lived in cities; by 2030, that number is predicted to rise to nearly two-thirds. The majority of this urbanization is occurring in Asia, Africa, and Latin America (United Nations, 2011).The term "urbanisation" refers to the transition from a traditional rural economy to a modern industrial one. It is the gradual concentration of the population in urban areas (Daveis, 1967). The bulk of the world's population lives in cities in the twenty-first century (Miller, 2003). The term "urban sprawl" has a difficult time being defined (Angel et al., 2007; Bhatta, 2010). Even though precise definition of urban sprawl is debatable, most agree that it is defined by an unregulated and haphazard pattern of growth (Sudhira and Ramachandra, 2007).The dispersal of redevelopment on discrete tracts separated from neighboring places by vacant land is known as Urban sprawl (Ottensmann, 1977).

The term "sprawl" refers to a fragmented development along highways and in rural areas (Theobald, 2001). Urban sprawl has resulted in the loss of agricultural land, green areas, surface water bodies, ground water shortage, and degradation of the environment (Grimm et al., 2000).Low-density (radial) sprawl, ribbon sprawl, and leapfrog sprawl are the three major types of sprawl development (Barnes et al., 2001).

Geographical Characteristics - The district comprises into subdivisions and tehsils for administrative and development purposes (sub-districts). The district of Udaipur comprises 2479 villages, 2471 of which are inhabited and 8 of which are deserted. In comparison to the 2001 Census, 301 new villages and 8 new census towns have been established in the Udaipur district.There are 11 sub-divisions within the district of Udaipur. Each of the sub-divisions is led by a Sub-divisional Officer (SDO) / Magistrates, who are in charge of enforcing the law and maintaining order in their areas.In the Udaipur district, there are 11 Tehsil headquarters, each of which has a Tehsildar as an administrative officer who works in accordance with the Land Record System to serve rural farmers and landowners and is responsible for keeping track of revenue concerns in their particular tehsils (CGWB, 2013).Udaipur district is divided into eleven tehsils, with Girwa tehsil having the most villages (325), and Lasadiya tehsil having the least (114) (Census of India, 2011).

Umarda planning zone (73°44'22.381"E & 24°34'6.169"N to 73°49'44.639"E & 24°27'28.93"N) is in the Girwa Tehsil of Rajasthan's Udaipur district. It is 14 kilometres from the Girwa sub-district headquarters and 14 kilometres from the Udaipur district headquarters. Umarda is also a gram panchayat, according to 2009 statistics. The village covers a total area of around 6017 hectares. Udaipur, Nathdwara, Rajsamand, Ramngarh are the nearby Cities to Umarda.

Gudli-Dabok planning zone (73°47'19.463"E & 24°41'2.551"N to 73°55'19.66"E & 24°33'51.81 1"N) is in the Mavli Tehsil of Rajasthan's Udaipur district. It is 15 kilometres from the Udaipur district headquarters. Gudli-Dabok is also a gram panchayat, according to 2009 statistics. The village covers a total area of around 8719 hectares. Udaipur, Nathdwara, Rajsamand, Ramngarh are the nearby Cities to Gudli-Dabok.

RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

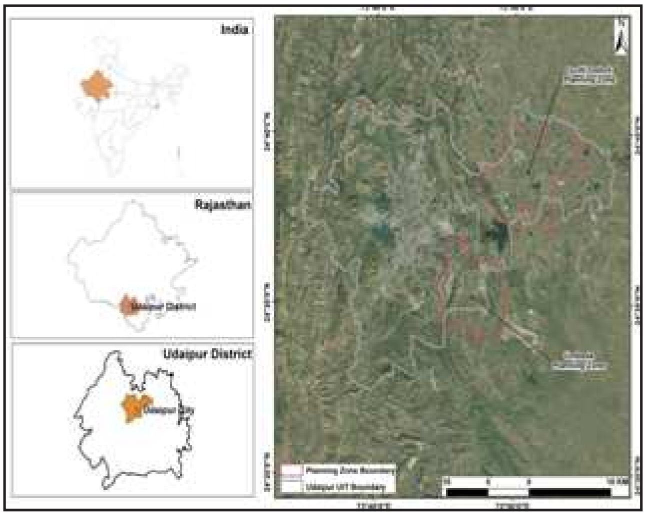

Rajasthan's urban population grew from 1.48 million in 1901 to 17.05 million in 2011. It shows that the total number of people living in cities in Rajasthan has increased by more than eleven times in the last eleven decades. While the rate of expansion of rural and urban populations has been nearly same, the level of urbanization (urban population as a percentage of total population) could not even be doubled. From 14.41 percent in 1901 to 24.87 percent in 2011, Rajasthan's urbanization rate has been steadily increasing.It's worth noting that between 1901 and 1941, Rajasthan had significantly higher levels of urbanization than the rest of India. In 1901, 14.41 percent of Rajasthan's population lived in urban areas, compared to 10.84 percent in India. In 1941, the percentages for Rajasthan and India were 14.67 percent and 13.86 percent, respectively. Rajasthan's level of urbanization was on par with the rest of India in 1951, but from 1961 onwards, it fell behind the rest of India in terms of urbanization.In 2011, over 31.16 percent of India's population lived in urban regions, but just 24.87 percent of Rajasthan's population did. Rajasthan had a share of urban population of 24.87 percent in 2011, which was lower than the national average of 31.16 percent. Urbanization's spatial patterns are the result of several interconnected changing processes. Economic, technological, demographic, social, cultural, and political dynamics all play a role in these developments. Economic factors are at the heart of the forces that drive and influence urbanization. Variation in these factors causes urbanization patterns to vary spatially(Table 1).

Table 1: Level of urbanization, 1901 - 2011

Census Year	Level of Urba -nization (%)	Census Year	Level of Urban ization (%)
1901	14.41	1961	16.18
1911	12.87	1971	17.40
1921	13.37	1981	20.49
1931	14.15	1991	22.39
1941	14.67	2001	24.52
1951	17.10	2011	24.87

Source: Census of India

Table 2: Spatial variation in the levels of Urbanization

S.	Level of Urban -ization (%)	District
1	More than 40%	Kota, Jaipur and Ajmer
2	24.1 – 40%	Ganganagar, Churu, Bikaner, Jodhapur
3	16.1 – 24.0%	Jhalawar, Alwar, Chittaurgarh, Bharatpur, Hanumangarh, Udaipur, Sawai Madhopur, Bundi, Sirohi, Dhaulpur, Baran, Nagaur, Bhilwara, Tonk, Pali, Jhunjhunu, Sikar
4	8.4 – 16.0%	Dausa, Jaisalmer, Karauli, Rajsamand
5	<8.3%	Jalore, Pratapgarh, Banswara, Barmer, Dungarpur

Source: Census of India, 2011

Rajasthan's urban population has grown more than elevenfold over the last eleven decades, from 1.48 million in 1901 to 17.05 million in 2011. While there has been minimal difference in the growth rates of rural and urban populations, the amount of urbanization could not even be doubled. Rajasthan's urbanization rate has been steadily increasing since 1901, rising from 14.41 percent to 24.87 percent in 2011. Between 1901 and 1941, the level of urbanization in Rajasthan remained substantially higher than the rest of India. Rajasthan's level of urbanization was on par with the rest of India in 1951, but the state fell behind after that.The proportion of urban residents to the state's overall population increased from 14.67 percent in 1941 to 17.1 percent in 1951. At the time of the country's partition, millions of migrants from the princely states of Sind, Baluchistan, and Bahawalpur sought safety in Rajasthan. Rajasthan had a share of urban population of 24.87 percent in 2011, which was lower than the national average of 31.16 percent. Rajasthan has a lower level of urbanization than the neighboring states. In 2011, there is a great deal of variety in the levels of urbanization in Rajasthan.

Among the historical and cultural elements, tourism has played an important role in Rajasthan's urbanization development, contributing 8% of the state's GDP. Tourist attractions in Jaipur, Udaipur, Jodhpur, Bikaner, and Chittorgarh have resulted in a lot of tourist infrastructure development, which has accelerated the urbanization process.The contribution of migrants to urbanization has increased over the decades, with 16.4 percent of all migrants in Rajasthan settling in urban areas between 1971 and 1980, rising to 22.4 percent between 1981 and 1990, and then climbing to 25.4 percent between 1991 and 2000.This trend can be seen in all of the state's districts, while the contribution of migrants to urbanization varies. The number of migrants relocating to metropolitan regions is relatively high in some districts, but not so much in others.

Population Density - The number of people living per square kilometer of land is referred to as population density. The district's population density of roughly 196 people per square

kilometer. Land is a limiting element in the growth process. The average population density of Gudli-Dabok Planning Zone is calculated as 630 personsper square kilometeras per 2011 Census data. Previously, these places were rural communities with the majority of the people concentrating in one residential area (Abadhi) and the remainder being either agricultural land or vacant ground.The maximum population density is estimated as Joonawas village (1452person per square kilometer), followed by Dhooni Mata(1235person per square kilometer), Bajajnagar (1230person per square kilometer). The lowest population density was calculated as 110 person per square kilometer in Nahar Magra, followed by Ordi (123 person per square kilometer), Rebariyon Ki Dhani (242 person per square kilometer) (Figure 1).Moreover, the maximum density is concentrated in south and east of the study area and the lowest population density is observed in the north of the study area.

In Umarda urban planning area, the average population density was calculated as 242 personsper square kilometer.The maximum population density is estimated as Kalarwas village (644person per square kilometer), followed by Kanpur (295 person per square kilometer), and Umarda (285 person per square kilometer).The lowest population density was calculated as 71peopleper square kilometerinParaya Ki Bhagal, followed by Parola (111 person per square kilometer), Kheda Kanpur (121 person per square kilometer) (Figure 1). Moreover, the maximum density is concentrated in west of the study area and the lowest population density is observed in the east of the study area.

References :-

1. Barai and Vijyalakshmi (1997): Impact on Medium Sized Towns in the Development of the Bangalore Metropolitan Cities in Diddee, J. (eds.) India n Medium Towns, Rawat Publications, 216-31.
2. Brueckner, J.K. 2000. Urban Sprawl: Diagnosis and Remedies. International Regional Science Review, 23(2): 160–171.
3. Kundu, A. (2012): Migration and Exclusionary Urbanization in India, Jawaher Lal Nehru University, New Delhi.
4. Kundu, A., Pradhan, B. K., Subramanian, A. (2002). Dichotomy or Continuum Analysis of Impact of Urban Centres Periphery, Economic and Political Weekly, 5039-46.Available at: http://www.jstor.og/stable/ pdf plus/4412965.pdf
5. Limtanakool, et al. (2007): A Theoretical Framework and Methodology for Characterizing National Urban Systems on the basis of Flows of People: Empirical Evidence for France Germany, Urban Studies, 44 (11), 2123-45.Available at: http://dx.doi.org/10.1080/00420980701 518990.
6. Lynch, K. (2005): Rural-Urban Interaction in the Developing World, Routledge Taylor and Francis Group, London and New York.
7. Master plan of Udaipur (2011-2031): Urban planning department of Rajasthan, Jaipur.
8. Maktav, D. and Erber, F.S. (2005) Analysis of Urban Growth Using Multi-Temporal Satellite Data in Istanbul. Turkey International Journal of Remote Sensing, 26, 797-810.http://dx.doi.org/10.1080/01431160512331316784
9. Ramchandran. R (2013): Urbanization and Urban System in India, Published by Oxford University Press, New Delhi.
10. World Bank 2015. East Asia's Changing Urban Landscape: Measuring a Decade of Spatial Growth. Washington, DC: The World Bank. DOI: 10.1596/978–1-4648–0363-5

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

A Study of Market Efficiency and its Causal Impact on Investors' Behaviour

Dr. Atul Dubey *

*Assistant Professor, IPER, Bhopal (M.P.) INDIA

Abstract - This paper tries to analyze market efficiency and its impact on the investor's behaviour. Efficient market implies that first and foremost there are no market imperfections, ready availability of information and the market price is bias free and evaluation of true value of investment is possible. It is important to bring forth how an efficient market can impact the investor's behaviour and responses. It also elaborated the causes of irrationality amongst the investors.
Keywords- Market Efficiency, Information, Irrationality, Investors' behaviour.

Introduction - The rational approach led to development of concept of efficient market. Theoretically modern portfolio theory played a vital role in suggesting conventional wisdom relating to investment decision making. The efficient market hypothesis was developed in 60's by Eugenefaima of the Chicogo University. Accordingly it was considered that financial markets are efficient and investors make decision rationally. Efficient market is one where the market price is bias free and estimate of the true value of the investment is possible. Implicit in this derivation are as follows. This concept is based upon a number of approaches as observed by Statman[1]"Standard finance is the body of knowledge built on the pillars of the arbitrage principle of Miller and Modgilani, The portfolio principles of Markowitz,the capital asset pricing theory of Sharpe, Linter and Black and the option pricing theory of Black Scholes and Merton". These approaches are extremely systematic and deemed markets to be efficient. The traditional finance paradigm holds some suppositions about the 'Individuals Behaviour' that should be possessed by the economic agent. (TeremedAshomo-economist in modern finance literature) So that the financial market can be mould and studied.

Pre-requisite Conditions of Market Efficiency:

1. It is the actions of investors, which make market efficient and provide the basis for a scheme to beat the market and earn excess returns.
2. It is argued that there is no possibility of beating the market in an efficient market and then requiring profit-maximizing investors to constantly seek out ways of beating the market and thus making it efficient.This is contradictory.
3. If markets were, in fact, efficient, investors would stop looking for inefficiencies, which would lead to markets becoming inefficient again.
4. It makes sense to think about an efficient market as a self-correctingmechanism, since the investors find them and trade on them which will make it efficient.

However behaviourally experts foundthat instead of rationality, psychological emotion play an important role in making investment decision. In fact if every investor makes rational decision then there will be no speculation or bubbles.

(a) Market efficiency does not require that the market price be equal to true value at every point in time. It requires that errors in the market price be unbiased.
(b) Any deviations from true value are random, implies that there is an equal chance that stocks / assets are under or over valued at any point of time, and that no variable can be observable for these deviations.
(c) If the deviations of market price from true value are random, it follows that no investor should be able to consistently find under or overvalued stocks/ assets using any investment strategy.

Investor's Perception of Market Efficiency:

1. Definitions of market efficiency have to be specific not only about the market but also for the investor.
2. It is extremely unlikely that all markets are efficient to all investors, but it is entirely possible that a particular market (for instance, Bombay Stock Exchange) is efficient with respect to the average investor.
3. It is also possible that some markets are efficient while others are not, and that a market is efficient with respect to some investors and not to others.
4. Market efficiency assumes all information, public as well as private, is reflected in market prices. It would also imply that no investor even with precise information will beable to beat the market.

Implications of market efficiency - An immediate and direct implication of an efficient market is that no investors

should be able to consistently beat the market using a common investment strategy. Since in theory all information is distributed equally .In case this happen insider trading, surprise bankruptcy would never take place. One must remember that this does not find place,in reality and personal preference and personal ability also play role. An efficient market would also carry very negative implications for many investment strategies and actions that are taken for granted and there may be deviations from the expected returns in the short term. It should be clear that the expected returns from any investment will be consistent with the risk of that investment over the long term.

Interrelation between Market efficiency and rationality - The practical experience of investor and research by behavioural financial scientist show that the market is not completely efficient .This itself challenges the total rationality on the part of investor. There are examples of blunders committed by investors. One can observe a number of biases and anomalies e.g.: bias, believe, cognitive, overcharge, convention, cultural compulsion and disagreement, manipulation, heuristic etc. (**Fama, et al. in 1969)**[2]pointed out that in the real world markets cannot be absolutely efficient or inefficient. It means the markets are always essentially mixture of both.

Heuristic, social, irrationality, mental accounts, reductionism, selective attention, commitment and confirmative are important factors which influence Investment behaviour in a big way.One is always influenced by heuristic commitment andconfirmation, greed, fear, hope, play a vital role in influence Investment behaviour of investor.

Role of information on Market Efficiency - The classical wealth maximization theory is important since it considered the investor's behaviour along with other consideration. Public information influences the investment behaviour during the decision process. A number of researchers have acknowledged the role of information. **Epstein (1994)**[3]attempted to examine the demand for socio economic information by an investor. Additional information reduces the possibility of error in estimating profit or loss. Some researcher'sthat (**Merikas et al. 2003**)[4] have observed that the economic criteria along with other variable influence the behaviour of investor. On the one side behaviour finance researcher argue that psychological factor which include biases and preferences play dominant role. In influencing investor behaviour**(Lim 2006)**[5]has opposed this approach considering that such investor end up poor return on investment. However as **Brown and cliff**[6] observed that investors sentiment cannotbe neglected since, they influence the behaviour of investor. **Fischer and Gerhardt (2007)**[7]feel that the role of financial advisor is important.

Thus it is obvious that one single factor cannot be identified as the influencing one, since human nature is complex and investors are not homogeneous group. Thus various factors influence the decision of an investor which is reflected through his behaviour.

Causes of irrationality - Interestingly economic science started with the basic assumption of irrationality and technically an investor is supposed to behave rationally to maximize return on his investment. However in practise rationality is mostly absent in the behaviour of an investor and business people too. Scientist and psychologist found that at times our biology works against our rationality. It is obvious that while making investment an investor takes financial risk. In such a case physical body and brain should function as a unit. However, this does not happen and for various reasons investor either become over confident or sub confident and take a position with ever worsening risk reward trade-offs. Here, the importance of behaviour scientist becomes crucial. In the process the investor becomes what behavioural economist call a sophisticate that is who understands his irrationality and attempts to cope with it. This irrational behaviourappears to be natural and one needs to build his own coping system. Some of the factors are as under:

1. ***Analyse the problem:***Many times it is not the market which is a problem. It is the person who creates these problems by feeling good and right about the market when it may not be.
2. ***Past experience:***Because of a number of factors an investor overlooks his track record. Here he is guided by various non economic factors.
3. ***Overlooking guidelines:***Although an investor is interested in securing maximum return yet he behaves irrationally being influenced by either his own perception or publicity through word of mouth.
4. ***Natural behaviour:***The perception of investor is influenced by various factors,such as his personal characteristics, other's suggestion, publicity, advertisement or guidance. Under the influence of these factors together his behaviour emerges from his natural reaction and he is guided by his inner voice which may result into unexpected profit or loss.

Therefore financial behavioural experts feel that at times it is not the skill of investment but it is the investment behaviour which matters in a big way.

Conclusion - Some behavioral finance analyst believe that efficient maret hypothesis is momentum investing and a combination of technical and fundamental analysis that claims that vertainprice patterns persist over time. The second thought is which believes that investors are guided by psychology more than by rationality and efficiency. And the third is basically the fundamental analysis, which holds that certain valuation ratios predict outperformance and underperformance in future periods. Thus, conclusively it can be said that a difference between market efficiency and perfect pricing exists; the market however often misprices securities, at least in the short run but an investor cannot know before the fact when mispricing will occur.

References:-

1. Statman, Meir and D. Caldwell (1987). "Applying Behavioural Finance to Capital Budgeting: Project Terminations." Financial Management (Winter):7-15.
2. Fama, E.F., L. Fisher, M.C. Jensen and R. Roll, (1969). "The Adjustment of Stock Prices to New Information", International Economic Review, 10 (1), 1-21.
3. Epstein, M.J.(1994). "Social Disclosure and the Individual Investor", Accounting, Auditing and Accountability Journal, Vol.4, pp. 94-109.
4. Merilkas,A.,and Prasad,D. (2003). Factors influencing Greek investor behavior on the Athens stock exchange. Journal of Business, Vol.66
5. Lim, Sonya Seongyeon. (2006). Do investors integrate losses and segregate gains? Mental accounting and investors trading decisions. Journal of Business, 79 (5): 2539-2573.
6. Brown, G.W. and Michael T. Cliff. (2004). Investors Sentiment and the Near-term Stock Market. Journal of Empirical Finance, 11 (1): 1-27
7. Fischer, Rene, and Ralf Gerhardt. (2007). Investment Mistakes of Individual Investors and the impact of Financial Advice. Working Paper. European Business School, London.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

भीष्म जी के नाटकों में ऐतिहासिकता

डॉ. तृष्णा शुक्ला *

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) प.म.ब. गुजराती विज्ञान महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – इतिहास एक तथ्यात्मक विधा है। साक्ष्य के आधार पर एकत्रित तथ्य उसके मेरुदंड है, इसी तथ्य का यथासंभव ठीक उसी रूप में प्रस्तुत करना, जिसमें यह घटित हुए हैं इतिहास का सबसे बड़ा कर्तव्य है। भारतीय नाट्य साहित्य का अपना एक समृद्ध इतिहास रहा है भीष्म जी द्वारा रचित ऐतिहासिक नाटकों में हानूश, कबीरा खड़ा बाजार में, रंग दे बसंती चोला एवं आलमगीर उल्लेखनीय है। हानूश बहुचर्चित पहला ऐतिहासिक नाटक है। चेक इतिहास की छोटी-सी घटना हानूश की आधार कथा है। ''चेकोस्लोवाकिया की पहली घड़ी बनाने वाले मिस्त्री 'हानूश' की यह कहानी कलाकार की दुर्दमनीय- सिसृच्छा और उसकी निरीहता को रूपायित किया है तो दूसरी ओर धर्म एवं सत्ता के गठबंधान के साथ सामाजिक शक्तियों के संघर्ष को मार्मिक अभिव्यक्ति दी है। क्रांति, सृजन, मनुष्य और उसके भविष्य में विश्वास नाटक का मूल बिंदु है। हानूश कलाकार के परिवार की आर्थिक स्थिति बदतर है उसे इस अर्थाभाव की वजह से राज्य सत्ता से अपमानित, दंडित होना पड़ता है। हानूश ऐतिहासिक नाटक नहीं है वह मानवीय पीड़ा दुख त्रासदी को प्रकट करता है। साहनी जी का दूसरा नाटक 'कबीरा खड़ा बाजार में' कबीर के मूल्यवान व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने वाली चर्चित करती है। बेपरवाह, दृढ़ और उग्र, मस्तमौला कबीर का व्यक्तित्व सदियों से भारतीय मन और मनीषा को प्रभावित करता रहा है। पांच सौ वर्षों से कबीर के पद भारतीयों की जुबान पर है। हिंदू-मुस्लिम की धार्मिक कट्टरता, ऊंच-नीच का भेदभाव, कुप्रथाओं का विरोध कबीर ने किया। भीष्म जी के ऐतिहासिक नाटकों की श्रृंखला में 'रंग दे बसंती चोला', जब ब्रिटिश कालीन हुकूमत अपनी जड़ें भारत में जमा कर उसे परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ती हैं। जलियांवाला बाग हत्याकांड में डायर द्वारा हिंसक कृत्य किया जाता है। डायर द्वारा खेले गए इस हत्याकांड का विभित्स रूप का स्वतंत्र भारत में नहीं खेला जाता है? आज भी सरहद पार जाने के लिए दोनों कौमों की आवाम को इन आतंकियों के आतंक का निशाना बनना पड़ता है। साहनी जी का ऐतिहासिक नाटकों श्रृंखला में अंतिम नाटक 'आलमगीर' है। नाटक में चर्चित मुगल सल्तनत के तख्तो ताज पर भाइयों के बीच आपसी मतभेद को चित्रित किया है। सत्ता एवं हुकूमत के जुनून में अंधा औरंगजेब कितना क्रूर भाई था। निष्कर्षत: भीष्म जी ने सही अर्थों में ऐतिहासिक नाटकों को कथ्य के माध्यम से समकालीनता को चित्रित किया है नाटकों में देश की आत्मा बोलती है।

प्रस्तावना – इतिहास एक तथ्यात्मक विधा है। साक्ष्य के आधार पर एकत्रित तथ्य उसके मेरुदंड है, इसी तथ्य का यथासंभव ठीक उसी रूप में प्रस्तुत करना, जिसमें यह घटित हुए हैं इतिहास का सबसे बड़ा कर्तव्य है। उन्हें किसी प्रकार भी तोड़ना-मरोड़ना इतिहास के वास्तविक स्वरूप के एकदम प्रतिकूल है। इतिहासकार, तथ्यों की छानबीन कर एक स्वरूप निर्मित करता है। नाटककार, इतिहास का आश्रय लेकर पात्रों को सचिव बनाने तथा घटना को घटित होते हुए दिखाने के लिए काल्पनिक पात्रों की सृष्टि करता है। जब नाटककार अतीत और वर्तमान को एक साथ रख कर देखता है, तब उसकी दृष्टि-भिन्न होती है और वह अपने लक्ष्य के अनुसार इतिहास के खंडहर पर अपने भवन का प्रारूप तैयार करता है। उसमें छोटी छोटी सी घटनाएं भी अपनी संभावनाओं के साथ प्रस्तुत की जाती है। रचनाकार अतीत और वर्तमान दोनों में जीता है और उन कमियों की ओर भी संकेत करता है जो महान शक्तियां बड़े-बड़े साम्राज्य को छिन्न-भिन्न कर देने के लिए जिम्मेदार होती हैं। एच बटरफील्ड ने, ''ऐतिहासिक कथा को अतीत को व्यक्त करने का एक मार्ग माना है।'' [1]

''सामान्य अर्थ में इतिहास का संबंध इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तियों और उनके क्रियाकलापों से है तो संस्कृति का संबंध मानव सभ्यता के चिरंतन शाश्वत सत्य से है। इन इतिहास मुल्क संस्कृति प्रधान नाटकों के कथानक भारतीय इतिहास के प्राचीन लोगों से चुने गए हैं किंतु उनकी मूलवर्तिनी धारा अप्रतिहत गति से प्रवाहित होती रही है। नाटक कारों ने इन्हीं चिरंतन शक्तियों को प्रसिद्ध पात्रों के क्रियाकलापों द्वारा प्रतिपादित एवं पुनर्स्थापित करने का प्रयत्न किया है।'' [2]

भारतीय नाट्य साहित्य का अपना एक समृद्ध इतिहास रहा है भीष्म जी द्वारा रचित ऐतिहासिक नाटकों में हानूश, कबीरा खड़ा बाजार में, रंग दे बसंती चोला एवं आलमगीर उल्लेखनीय है। हानूश बहुचर्चित पहला ऐतिहासिक नाटक है। चेक इतिहास की छोटी-सी घटना हानूश की आधार कथा है।

''सन 1960 के आसपास भीष्म साहनी जब चेकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग गए तो उनके मित्र निर्मल वर्मा ने उन्हें हानूश कि वह मीनार घड़ी दिखाई जिसके विषय में वहां तरह-तरह की कहानियां प्रचलित थी। कहानी भीष्म जी के मन में लगातार उमड़ती रही।'' [3]

''चेकोस्लोवाकिया की पहली घड़ी बनाने वाले मिस्त्री 'हानूश' की यह कहानी कलाकार की दुर्दमनीय- सिसृच्छा और उसकी निरीहता को रूपायित किया है तो दूसरी ओर धर्म एवं सत्ता के गठबंधन के साथ सामाजिक शक्तियों के संघर्ष को मार्मिक अभिव्यक्ति दी है। कलाकार के जिन पारिवारिक तनाव

का अंकन हानूश में है वह आज भी उतने ही सच है जितने पांच शताब्दी पहले थे।'' [4] हानूश में एक साधारण कुफ्कुलस आज के माध्यम से समकालीन समाज में कलाकार की वास्तविकता को चित्रण किया है। हानूश मनुष्य है ,कलाकार है, भावुक है, उसके हृदय में प्रतिशोध की आग जलती है। घड़ी जो परिश्रम से बनाई पुरस्कार में उसे अंधा कर दिया। क्या वह इस नियति को यूं ही झेल ले? घड़ी की टिक-टिक उसकी एक-एक श्वास का साथ देती है। वह जानता है कि पहले कौन बंद होती है, घड़ी या उसकी श्वास? किंतु अंतत: घड़ी बंद होने पर वह अंधी आंखों से गाड़ी सुधार लेता है। ''रुक जाता है मुड़कर घड़ी की टनटन सुनता है उसकी अंधी आंखों में आंसू चमकता है और मुस्कुराता है कि सबसे बड़ी बात यही है कि आविष्कार जीता रहे।'' [5] क्रांति, सृजन, मनुष्य और उसके भविष्य में विश्वास नाटक का मूल बिंदु है। ''सुपरिचित कवि और आलोचक अशोक वाजपेई भी स्वीकार करते हैं, ''इस देश की अनेक महान प्रतिभाएं अभाव में गुजर गई और अपने स्वाभिमान की रक्षा की सरकारी सहायता की तमाम घोषणा और मदद के वादों के बावजूद प्रतिभाओं ने अभाव के आने या तो विध से पलायन किया है या फिर दम ही तोड़ दिया है।''[6]

हानूश में परिवार की आर्थिक तंगी से ग्रस्त होकर कात्या के संवाद कलाकार के परिवार की आर्थिक दयनीय हालत से अंतर्मन को झकझोर देते हैं। वह क्रोधित होती है, अपने मन को मारती है, अपने लिए कुछ भी नहीं मांगा, ना तो घर में खाने को दाना है, बेटे के लिए गर्म कपड़े तक नहीं, सर्दी में ठिठुर कर मर गया। हानूश कलाकार के परिवार की आर्थिक स्थिति बदतर है उसे इस अर्थाभाव की वजह से राज्य सत्ता से अपमानित दंडित होना पड़ता है। वर्तमान में कलाकार की कलाएं दम तोड़ रही है। सरकार की अवहेलना के साथ ही अपने परिवार की आर्थिक तंगी से बेहाल कलाकारों की पीड़ा, दुख और अभाव को सुनने वाला कोई नहीं है। हानूश ऐतिहासिक नाटक नहीं है वह मानवीय पीड़ा दुख त्रासदी को प्रकट करता है। नाटक के मूल स्वर हैं, ''सामान्य मनुष्य और उसके कलात्मक संवेदनशीलता, सृजनात्मक व्यक्तित्व की छटपटाहट, उसका दमन, निरीहता और हत्या, कलाकार के पारिवारिक तनाव और लगाव सच्चा और स्वाभाविक वातावरण उसका आर्थिक संकट, घरेलू संबंध और सहज परिस्थितियां नाटक एक मानवीय स्थिति को मध्ययुगीन परिपेक्ष में दिखाने का प्रयास मात्र है।'' [7] ''मीनार घड़ी के रचयिता के जीवन में घटी उस दुर्घटना में कुछ ऐसा गंभीर सत्य जरूर मौजूद है आज भी उतना ही सच है अर्थात कोई सत्य जरूर होगा। कलाकार को शासन द्वारा प्रताड़ित किया जाना ही वह बिंदु दिखाता है जहां दर्शकों की नाट्य अनुभूति से साक्षात्कार संभव दिखता है क्योंकि वर्तमान काल की आपातकालीन स्थितियां कुछ ऐसी है जीवन संदर्भों से जुड़ी है।'' [8] साहनी जी का दूसरा नाटक 'कबीरा खड़ा बाजार में' कबीर के मूल्यवान व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने वाली चर्चित करती है। बेपरवाह, दृढ़ और उग्र, मस्तमौला कबीर का व्यक्तित्व सदियों से भारतीय मन और मनीषा को प्रभावित करता रहा है। पांच सौ वर्षों से कबीर के पद भारतीयों की जुबान पर है। ''मध्ययुगीन वातावरण में संघर्ष कर रहे कबीर को उनके पारिवारिक और सामाजिक संदर्भ सहित आज भी प्रासंगिक बनाती है। अपने युग की तानाशाही, धर्मांधाता, बाह्याचार हमारे बीच आज भी एक स्थाई और प्रेरक मूल्य की तरह स्थापित है। कबीर की फक्कड़ाना-मस्ती, निर्मम अक्खड़ता और उनकी युग-प्रवर्तक सोच इस कृति में पूरी जीवंतता के साथ मौजूद है।'' [9] हिंदू-मुस्लिम की धार्मिक कट्टरता, ऊंच-नीच का भेदभाव, कुप्रथाओं का विरोध कबीर ने कवित्र गाकर किया तथा साधुओं और मुल्लाओं को फटकारते झगड़ते थे। खंडन-मंडन की प्रवृत्ति, धर्म और समाज की लड़ाई में कबीर का इकतारा ही है जो भावनात्मक एकता स्थापित कर बुराई का विरोध करने के लिए प्रेरित करता है। नाटक में कबीर की ओजस्विता, निर्भीकता, सिद्धांतबद्धता, सत्यान्वेषी प्रखर व्यक्तित्व के गुण दिखाई देते हैं। दिल्ली के सिकंदर लोदी से कबीर से भेंट के समय निर्भीकतापूर्ण संवाद बेबाक है। सिकंदर का प्रश्न है, ''कौन है वह खुदा? हिंदू,हिंदू है और मुसलमान,मुसलमान। क्या हिंदू का बेटा हिंदू नहीं होगा?' तब कबीर का प्रत्युत्तार, ''जन्म सभी इंसान का होता है, वरना ब्राह्मण का बेटा मां के पेट में ही तिलक लगाकर निकलता और तुर्क का बेटा खतनी करवा कर निकलता।'' [10] सांप्रदायिकता, जातिवाद, वर्गवाद, पाखंड, झूठ ने आज भारत को खोखला कर के रख दिया है। आज में सांप्रदायिकता के नाम पर देश में जहर खोला जा रहा है। देश के बंटवारे का दर्द करोड़ों हिंदू-मुसलमान भुलाए नहीं भूल सके। वहीं आछूत के संबंध में साधु महंतों की सवारी के पश्चात अछूत पानी से उस स्थान को धोकर पवित्र करते थे। 21वीं सदी में इस तरह की मानसिकता दिखाई देती है। दलितों की कटिंग से नाइयों का इनकार या फिर ग्वालियर शहर में जल संकट के दौरान वहां के नलकूपों से अछूतों को पानी नहीं भरने दिया जाता है। आज भी हमारे विचार आधुनिक बनने का ढोंग रचते हैं परंतु विचारों में मानसिक संकीर्णता का डर रही है। छुआछूत,धार्मिक अंधश्रद्धा जस की तस मौजूद है। चांद पर पहुंचने वाला मनुष्य वही का वही खड़ा है। नाटक में कबीर इन कुप्रथाओ और बुराइयों का विरोध करने का हश्र उन्हें लोधी द्वारा बंधक बनाया जाना, नाटक का अंतिम दृश्य मौन संदेश देता है जहां कबीर को कैद करके ले जाना और मंच पर सिर्फ उनका एकतारा रखा हुआ है। सचमुच इस मंचित नाटक की आलोचना में आदिल कुरैशी जी की समीक्षा थी, ''खड़ा नहीं हो सका कबीर सच भी तो है कि आज सिर्फ एक कबीर के बलबूते इन कुरीतियों को नहीं मिटाया जा सकता ऐसे ना जाने कितने कबीर चाहिए जिनकी निर्भीकता, साहसीपन, सत्यभाषी, बेपरवाह, दृढ़-निश्चय और फक्कड़पन की जरूरत और साथ ही जन जागरूकता की।'' [11] लगभग 600 साल पहले जन्मे कबीर, एक शख्स जिसने सदियों से लोगों को लुभाया, अपना बनाया और अबूझ भी बना रहा। कहते हैं उनके मरने पर हिंदू जलाना चाहते थे और मुसलमान दफनाना लेकिन वह केवल पुष्प रह गई जिसे हिंदू ने पसंद किया, मुसलमान ने चाहा। एक अनुत्तरित प्रश्न और जवाब छोड़ने की कोशिश करता कबीरा यही कह रहा है, ''कबीरा खड़ा बाजार में मांगे सबकी खैर। ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर।'' [12]

भीष्म जी के ऐतिहासिक नाटकों की श्रृंखला में 'रंग दे बसंती चोला', जब ब्रिटिश कालीन हुकूमत अपनी जड़ें भारत में जमा कर उसे परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ती हैं किंतु देश प्रेम का जज्बा जिनमें था वह इसे मुक्त कर स्वतंत्र करना चाहते थे। जलियांवाला बाग हत्याकांड में डायर द्वारा हिंसक कृत्य किया जाता है। हिंसक कृत्य पंजाबियों के बैसाखी पर्व पर होता है जिसमें मेले में चहूं और खुशी का माहौल है किंतु अचानक बंदूक की गोलियां चलने की आवाज से भगदड़ मच जाती है और शाम होते होते लाशों के ढेर, तो कहीं कराहने की आवाज सुनाई देती है। डायर द्वारा खेले गए इस हत्याकांड का विभित्स रूप का स्वतंत्र भारत में नहीं खेला जाता है? आज भी सरहद पार जाने के लिए दोनों कौमों की आवाम को इन आतंकियों के आतंक का निशाना बनना पड़ता है। आज की राजनीति में सिद्धांत एवं जनहित की कोई अहमियत नहीं रही हिंदुओं को वोट पाने के लिए इन्हीं नेताओं ने ऐसे भड़काऊ

भाषण दिए कि देश में दंगों की आग भड़क उठी। पार्टी की सत्ता बचाने के लिए ऐतिहासिक यात्रा गांधी की 'दांडी यात्रा' मार्च करना एवं आवाम के लोगों को एकत्रित कर हमदर्दी बटोरने एवं 75 वर्ष पहले की जाने वाली 'दांडी यात्रा' को भुनाना, हुकूमत कायम रहे इसका स्वांग रचना, देश प्रेम का ढिंढोरा पीटना। क्योंकि नाटक में कारूनिक दृश्य है जब लाशों के ढेर में रतन देवी अपने पति को ढूंढती है, रात भर खून से लथपथ अमृत हेमराज का सिर गोद में रखकर माथा सहलाते हुए कहती है, ''तू भी भगवान के पास जा रहा है। मैं रोऊंगी नहीं, मैं तेरा सफर खराब नहीं करूंगी हंसता-हंसता जा। भगवान तुम्हें गले लगाएंगे खुशी-खुशी जा, मैं तुम्हें खुशी-खुशी विदा करूंगी।'' [13]

साहनी जी का ऐतिहासिक नाटकों श्रंखला में अंतिम नाटक 'आलमगीर' है। नाटक में चर्चित मुगल सल्तनत के तख्तो ताज पर भाइयों के बीच आपसी मतभेद को चित्रित किया है। यह पारिवारिक मतभेद का स्वरूप इतना भी बस हो जाता है कि भाई-भाई की जान का दुश्मन हो जाता है औरंगजेब का अपने भाई दाराशुकोह के प्रति शक्की स्वभाव हैं वह अपने भाई दाराशुकोह का कत्ल करवाने से पीछे नहीं हटता। दाराशुकोह की मृत्यु का दर्दनाक, क्रूर दृश्य, ''इधर ताजपोशी की रस्म-अदा की जा रही है, उस रात कुछ लोगों ने 'मियां सरमद' को जामा मस्जिद की सीढ़ियों पर चढ़ते देखा है। कहते हैं मियां सरमद हाथ में तश्तरी उठाए हुए, जिस पर उनका कटा हुआ सिर रखा था, वह सीढ़ियां चढ़ते गए, चढ़ते गए। कहते हैं, रातभर जामा मस्जिद की सीढ़ियों पर खून टपकता रहा।'' [14] यह खून औरंगजेब के अपने ही भाई दाराशुकोह का था। सत्ता एवं हुकूमत के जुनून में अंधा औरंगजेब कितना क्रूर भाई था। यह तो शाही परिवार में सत्ता का खूनी संघर्ष था। वही कोटा शहर में 5 करोड रुपए की संपत्ति अकेले हड़पने के प्रयास में छोटे भाई ने बड़े भाई को बंधक बनाकर निर्वस्त्र अवस्था में कमरे में बंद रखा। फिर डॉक्टर से सांठगांठ कर पागल करार करने की कोशिश की। अति प्राचीन युग सतयुग में रामायण और महाभारत में भी भाई-भाई की आपसी दुश्मनी राज्याधिकार को पाने के लिए हुई। सत्ता संघर्ष, संपत्ति बंटवारे की स्थिति वर्तमान समय में बेहद भयावह और विकट है। वैश्वीकरण इस अंधी दौड़ में, अर्थलिप्सु की होड़ में रिश्तो का खून बहाने में भी कोई मलाल नहीं है। निष्कर्षत: भीष्म जी ने सही अर्थों में ऐतिहासिक नाटकों को कथ्य के माध्यम से समकालीनता को चित्रित किया है नाटकों में देश की आत्मा बोलती है। जनता की पीड़ा और त्रासदी। सामाजिकता पर राजनीति का घिनौनापन, कलाकार का शोषण, कलाकार का आर्थिक संकट, पीड़ा, जातिवाद, वर्गवाद, पाखंड, ढकोसला, आडंबर, आजाद भारत की भयावह तस्वीर, अर्थलिप्स की अंधी दौड़, खूनी रिश्तो का पड़ता फीका रंग। प्रसिद्ध आलोचक नामवर सिंह के अनुसार, ''साहनी जी की रचनाओं का लाया जा सकता वितरित किया जा सकता है और ना ही मन किया जा सकता है बल्कि यह सत्य केवल अनुभव किया जा सकता है जिसका कोई आकार नहीं होता वह दुख क्या होता भी है।'' [15]

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ. धनंजय, 'हिन्दी के दिन्छ नाटकों में इतिहास तत्व, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1972, पृ. 71
2. डॉ. शांति मालिक, 'हिन्दी नाटकों की शिल्प विधि का विकास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1971, पृ. 203
3. डॉ. जयदेव तनेजा, 'समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच', सामयिक प्रका. 1971, पृ. 61
4. डॉ. भीष्म साहनी, 'हानूश' अन्तिम आवरण, पृ.
5. डॉ. भीष्म साहनी, 'हानूश', राजकमल प्रका., 1976, पृ. 129
6. दैनिक भास्कर समाचार-पत्र रसरंग 'शेष-विशेष', 27 जुलाई 2003
7. डॉ. भीष्म साहनी, 'हानूश', राजकमल प्रका., 1976, पृ. 17
8. डॉ. राजेश्वर सक्सेना, प्रताप ठाकुर, 'भीष्म साहनी का व्यक्तित्व रचना', साक्षरा प्रका., 1997, पृ. 168
9. डॉ. भीष्म साहनी, 'कबीरा खड़ा बाजार में', राजकमल प्रका. 1981, पृ. 6
10. डॉ. भीष्म साहनी, 'कबीरा खड़ा बाजार में', राजकमल प्रका. 1981, पृ. 108-109
11. दैनिक भास्कर समाचार-पत्र, 2 अक्टूबर 2004, पृ. 5
12. दैनिक भास्कर समाचार-पत्र, 24 अगस्त 2003, पृ. 3
13. डॉ. भीष्म साहनी, 'रंग दे बसंती चोला', किताबघर प्रका., 2002, पृ. 85-86
14. डॉ. भीष्म साहनी, 'रंग दे बसंती चोला', किताबघर प्रका., 2002, पृ. 69
15. डॉ. नामवर सिंह, 'कहानी : नई कहानी' पृ. 108

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

A Comparative Study of General Well Being of Students of Government and Private Schools

Dr. Ravi Kumar Sharma*

***Senior Special Correspondent, 1st India News, Udaipur (Raj.) INDIA**

Abstract - The purpose of the current study is to investigate general well-being among school Students. Well-being is based on nearly every facet of our lives, physical wellness and good health's are important for a positive sense of well-being. General Well-being is a state everyone wants to achieve it to live a healthy and happy life. A total 120(60 boys\60 girls) students from government and Private schools participated in this study. The qualitative data were gathered via. Questionnaires including scales of general well- being. To determine difference between general well-being among private and Government schools boys and girls. The results revealed that there is no significant difference between general well- being among boys and girls from both schools.
Key Word- Well-Being, Boys, Girls.

Introduction - The concept of well-being originated from positive psychology. Positive psychology has Emerged from the problem of the west. The focus of positive psychology is to study the improvement in the lives of individuals. The term 'well-being' is mostly used for specific variety of goodness e.g.-living in a good environment, being worth for the world, being able to cope with life, enjoying life etc (Singh and Shyam, 2007).

Sociologists use the word 'well-being' mostly in the sense of 'good living conditions'; ecologists and biologists in term of 'livability' and politicians and social reformers refer to preconceptions of what a good living environment is like, such as good standard of living and social equality (Veenhoven, 2004). Many dictionaries and Roget's new thesaurus (1980) refers to well-being using words like happiness, full of life, vital, energy, interest and prosperity as well as health.

Well-being is an emerging concept of present arena. Pollard and Lee (2003) describe well-being as "a complex, multi-faceted construct that has continued to elude researchers' attempts to define and measures it". It is a dynamic state characterized by a reasonable amount of harmony between an individual's abilities, needs and expectations and environmental demands and opportunities (Levi, 1987). It transcends the limitations of body, space, time and circumstances and reflects the fact that one is at peace with one's self and others (Johnson, 1986). It is connotative as a harmonious satisfaction of one's desires and goals (Checola, 1975). Pender (1982) conceptualized wellness to have 5 dimensions: self-responsibility, nutritional awareness, physical fitness, stress management and sensitivity to the effects of environment on wellness.

Thus well-being has been described as a complex, multifaceted construct (Singh and Shyam, 2007). It can be concluded that it is an intangible and amorphous concept with perception differing from person to person (Wilcock et al., 1998) and situation to situation. It can be measured by using various well-being scales. The concept of wellbeing is attracting a lot of attention in this materialistic world these days. Many researches are carried out and carrying on different aspects of well-being. It is a concept that really makes people's life happy, healthy and fulfilled in every manner. Therefore, well-being leads to attaining the World Health Organization goal of "healthy mind in a healthy body in a healthy environment" (Shri, 2007).

Concept Of General Well-Being

General Well Being - "Men must necessarily be the active agents of their own well-being and well-doing. They themselves must in the very nature of things be their own best helpers". **-Samuel Smiles -** Every moment of our life is affected by our well being in a positive or negative way. Well-being as a team has been used synonymously with 'good health' and has been introduced in various grounds for its meaning and definition. Psychological, well-being refers to a person's feeling of satisfaction and happiness toward their life. Philosophically, well-being insists on the balance of feelings experience in his life. According to an Economist, well-being is based on criteria of promoting health and happiness among the citizen of a community. Complete mental health can be conceptualized via combination of high

levels of emotional well-being, psychological well-being and social well-being (Keys and Lopez, 2002).

Well-being is based on nearly every facet of our lives, physical wellness and good healths are important for a positive sense of well-being. Disturbed sleep patterns or sleeps disorder, Social anxiety, tension, worry, depression, frustration, etc. can be detrimental to well-being. Social factors play an important role in building our positive well-being. Influencing factors like good relationship or bond among the relatives, developing trust, sharing personal interest, good social network can provide self confidence, positive sense of belonging and offer to support to develop one's self esteem in their life time.

Definitions of general well-being - Hettler (1984) has defined well-being as an active process through which a person become aware of , and make choices that he hope will lead to, a more fulfilling, more successful, more well life. As such, wellness is an approach that emphasizes the whole person, not just the biological organism.

According to Tasmania (2000), well-being is optimizing health and capabilities of self and others. Well-being is the state of successful performance throughout the life course integrating physical, cognitive and social-emotional function that results in productive activities deemed significant by one's cultural community, fulfilling social relationships, and the ability to transcend moderate psychosocial and environmental problems. Well-being also has a subjective dimension in the sense of satisfaction associated with fulfilling one's potential.

Traditional model of well-being generally:

1. Deal with adult or life-span well-being rather than childhood and adolescent well-being
2. Consider well-being in a holistic rather than a social context and
3. Provide a theoretical rather than an explicit measurement framework for considering well-being(Palombi, 1992).

Objective Of The Study :

1. To study difference between higher secondary students in different type of school (Government and private) in relation to their General Wellbeing.
2. To study difference between boys and girls higher secondary school students in relation to their General Well being.

Hypothesis:

1. There is no significant difference between Higher secondary students in different type of school (Government and Non.Government) in relation to their Genral Well being
2. There is no significant difference between boys and girls of higher secondary school students in relation to their General Well Being.

Method

Sample: The sample consisted was randomly selected 120 Government and Non Government Higher secondary school students as sample form area. Out of 120 Higher secondary school students. 60 students were selected from Government area school and 60 students were selected form nongovernment school. Again out of 60 , 50 % were boys students and 50 % were girls students have been selected for both categories.

Tools: As per the requirement of the study, the following tools were employed:

General Well-being Scale: General Well-being Scale (GWBS) is constructed and Standardized by investigator and supervisor (Kaila and Deswell, 2011). The scale consisted of 55 items represented in four sub-scales: physical well-being, emotional wellbeing,

Procedure : The instructions were explained by the researcher and the doubts were clarified. They were assured that their response will be used for research purpose only and will be kept confidential. They were suggested to give free frank and honest responses without any hesitation. The scale were administration to the teachers the scales were collected only after they were responded by the subject. After the completion of the administration. The investigator conveyed her gratitude and thanks to the teacher and schools principal for their kind co-operation. The raw scores were statistically analyzed in terms of means, standard deviation and t-test were used to compare government and non government Higher secondary school students in relation to their gender type of (Boys and Girls). To find out the relationship between the two variables.

Result And Discussion: The main objective of present study was to do study of government and non government Higher secondary school students. In it statistical 't' method was used. Results discussion of present study are as under.

TABLE 1: Mean , SD , SED and 't' Score of General Well Being of government and non government Higher secondary school students.

Sector	No	Mean	SD	SED	't'	Sign.
government	60	209.45	18.47	4	1.45	N.S
non govern -ment	60	215.27	24.99			

Non significant at 0.05 level of significant

1) Table 1 shows that the value of mean and SD of General Well Being level of students in government school were 209.45 and 18.47 respectively and those of student non government school were 215.27 and 24.99 respectively. The 't' value came out to be 1.45 which is non significant, thus the null hypothesis 1 which states "There is no significant difference between Higher secondary students in different type of school (Government and Non.Government) in relation to their Genral Well being" Was accepted. It means Government and Non Government school going students General Well Being are equal.

TABLE 2: Mean , SD , SED and 't' Score of General Well Being of boys and girls.

Gender	No	Mean	SD	SED	't'	Sign.
Boys	60	221.2	17.64	3.71	1.89	N.S
Gilrs	60	214.2	22.64			

Non.significant at 0.05 level of significant

Table 2 shows that the value of mean and SD of General Well being of boys Higher secondary school student were 2221.2 and 17.64 respectively and girls Higher secondary students were 214.2 and 22.64 respectively. The't' value came out to be 1.89 which is non significant, thus the null hypothesis 2 which states "There is no significant difference between boys and girls Higher secondary school students in relation to General Well Being" Was Accepted. It means boys and girls General Well Being are equal .

Conclusion- There is no significant difference between Higher secondary students in different type of school (Government and Non Government) in relation to their General Well Bing. There is no significant difference between boys and girls Higher secondary school students in relation to their General Well Being.

References:-

1. Diener, Ed (1984). "Subjective well-being". Psychological Bulletin 95 (3): 542–575. doi:10.1037/0033-2909.95.3.542. PMID 6399758.
2. Diener; et al. (1991). Missing or empty |title= (help)
3. Diener, Ed; Suh, E.M.; Lucas, R.E. & Smith, H.L (1999). "Subjective well-being: Three Decades of Progress". Psychological Bulletin 125 (2): 276–302. doi:10.1037/0033-2909.125.2.276. Cite uses deprecated parameters (help)
4. ^ Jump up to: a b c d e f Diener, Ed (2000). "Subjective well-being: The Science of Happiness and a Proposal for a National Index". American Psychologist 55 (1): 34–43. doi:10.1037/0003-066X.55.1.34. PMID 11392863.
5. Steel, Piers; Schmidt, Joseph & Shultz, Jonas (2008). "Refining the relationship between personality and Subjective well-being". Psychological Bulletin 134 (1): 138–161. doi:10.1037/0033-2909.134.1.138. PMID 18193998. Cite uses deprecated parameters (help)
6. Okun, M. A.; Stock, W. A.; Haring, M. J.; Witter, R. A. (1984). "Health and subjective well-being: a meta-analysis". The International journal of aging & human development 19 (2): 111–132. doi:10.2190/QGJN-0N81-5957-HAQD.
7. Diener, E.; Chan, M.Y. (1984). "Happy People Live Longer: Subjective Well-Being Contributes to Health and Longevity". Applied Psychology: Health and Well-Being 3: 1–43. doi:10.1111/j.1758-0854.2010.01045.x.
8. Diener, Ed (2008). Happiness: unlocking the mysteries of psychological wealth. Malden, MA: Blackwell Pub. ISBN 9781405146616.
9. White M and Dolan P, Accounting for the richness of our daily activities, Psychological Science, 20, 8, 1000-1008, 2009
10. Graham, Michael C. (2014). Facts of Life: ten issues of contentment. Outskirts Press. ISBN 978-1-4787-2259-5.
11. DeNeve, Kristina M.; Cooper, Harris (1998). "The Happy Personality: A Meta-Analysis of 137 Personality Traits and Subjective Well-Being". Psychological Bulletin 124 (2): 197–229. doi:10.1037/0033-2909.124.2.197. PMID 9747186.
12. Albuquerque, Brian. "Subjective Well-Being". Positive Psychology UK. Retrieved 30 November 2012.
13. DeNeve, Kristina M. (1999). "Happy as an Extraverted Clam? The Role of Personality for Subjective Well-Being". Current Directions in Psychological Science 8 (5): 141–144. doi:10.1111/1467-8721.00033.
14. Lykken, David; Tellegen (1996). "Happiness Is a Stochastic Phenomenon". Psychological Science 7 (3): 186. doi:10.1111/j.1467-9280.1996.tb00355.x.
15. McGue, Matt; Bacon, Steve & Lykken, David (1993). "Personality stability and change in early adulthood: A behavioral genetic analysis". Developmental Psychology 29 (1): 96–109. doi:10.1037/0012-1649.29.1.96. Cite uses deprecated parameters (help)
16. Bouchard, Thomas J., Jr.; Loehlin, J.C. (2001). "Genes, evolution, and personality". Behavior Genetics 31 (3): 243–273. doi:10.1023/A:1012294324713. PMID 11699599.
17. Weiss, A.; Bates, T. C.; Luciano, M. (2008). "Happiness is a personal(ity) thing: The genetics of personality and well-being in a representative sample". Psychological Science 19 (3): 205–210. doi:10.1111/j.1467-9280.2008.02068.x. PMID 18315789.
18. D. Archontaki, G. J. Lewis and T. C. Bates. (2012). Genetic influences on psychological well-being: A nationally representative twin study. Journal of Personality10.1111/j.1467-6494.2012.00787.x
19. Fowler, J. H; Christakis, N. A (4 December 2008). "Dynamic spread of happiness in a large social network: longitudinal analysis over 20 years in the Framingham Heart Study". BMJ 337 (dec04 2): a2338–a2338. doi:10.1136/bmj.a2338. PMC 2600606. PMID 19056788.
20. Lyubomirsky, Sonja (2001). "Why are some happier than others? The role of cognitive and motivational processes in well-being". American Psychologist 56 (3): 239–324. doi:10.1037/0003-066X.56.3.239.
21. Seligman, Martin E. P.; Csikszentmihalyi (2000). "Positive psychology: An introduction". American Psychologist 55 (1): 5–14. doi:10.1037/0003-066X.55.1.5. PMID 11392865.
22. Røysamb, E., Harris, J., Magnus, P., Vittersø, J., & Tambs, K. (2002) Subjective well-being. Sex-specific

effects of genetic and environmental factors. Personality and Individual Differences, 32, 211–223.
23. Lyubomirsky, Sonja (2007). The How of Happiness: A practical approach to getting the life you want. Great Britain: Sphere. p. 20. ISBN 978-1-84744-193-5.
24. Furnham & Argyle (1998). The psychology of money. Psychology Press.
25. Langner & Michael (1963). Life stress and mental health: The Midtown Manhattan study. Free Press of Glencoe (New York).
26. Wilkinson (1996). Unhealthy societies: the afflictions of inequality.
27. Smith, T; Eikeseth, Klevstrand & Lovaas (1997). “Intensive behavioral treatment for preschoolers with severe mental retardation and pervasive developmental disorder”. American Journal on Mental Retardation 102 (3):238–249.doi:10.1352/0895-8017(1997)102<0238:IBTFPW>2.0.CO;2. PMID 9394133. Cite uses deprecated parameters (help)
28. Wilson, RM; Runciman, WB; Gibberd, RW; Harrison, BT; Newby, L; Hamilton, JD. (1995). “The quality in Australian health care study”. Med J Aust 163: 458–471.
29. Mayer, J. D. & Salovey, P. (1997). What is emotional intelligence? In P. Salovey & D. Sluyter (Eds). Emotional Development and Emotional Intelligence: Implications for Educators (pp. 3-31). New York: Basic Books.
30. Aknin, Lara B.; Norton, Dunn (2009). “From wealth to well-being? Money matters, but less than people think”. The Journal of positive psychology 4 (6): 523–527. doi:10.1080/17439760903271421.
31. Norton, M.I., Dunn, E.W., & *Aknin, L.B. (2009). From wealth to well-being: Spending money on others promotes happiness. Invited talk at the Society for Personality and Social Psychology, Tampa, FL
32. Anderson, C.; Kraus, M. W.; Galinsky, A. D.; Keltner, D. (31 May 2012). “The Local-Ladder Effect: Social Status and Subjective Well-Being”. Psychological Science 23 (7): 764–771. doi:10.1177/0956797611434537.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

चन्देरी का हस्त करधा वस्त्र उद्योग

राजकुमार अहिरवार * डॉ. ममता राजावत **

* शोधीर्थी, शासकीय उत्कृष्ट महारानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) भारत
** शोध मार्गदर्शक, महाराजा मानसिंह तोमर महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – मध्य काल में चन्देरी राज्य में वस्त्र उद्योग की शुरूआत 1305 ईसबीं के लगभग मानी जाती है।

जब मौलाना मुजिबुददीन को मानने वाले लगभग 20 हजार लोगे 'लखनौटि' नामक स्थल से चन्देरी आकर बस गये। इन्हीं लोगों के द्वारा चन्देरी में मखमल मलमल का उत्पादन शुरू किया गया।

15 सदी में चन्देरी पर राज्य कर रहें। मालवा के सुल्तानों द्वारा चन्देरी के वस्त्र उद्योग को संक्षरण दिया गया। मालवा के शासको को चन्देरी के वस्त्रों की महीनता/पतलापन को अधिक पसंद किया जिससे यहाँ का वस्त्र उद्योग काफी आगे बढ़ा।

शब्द कुंजी – चन्देरी हस्त करधा वस्त्र।

प्रस्तावना – मध्य कालीन समाज में एक 'किमखबाव' नामक कपड़ा जो उस समय सम्पूर्ण भारत देश में काफी प्रचलित था। यह कपड़ा लोगों उस समय द्वारा काफी पसंद किया जाता था। यह कपड़ा बडे व्यापारिक नगरों में बनाया जाता था। उनमें चन्देरी भी एक था।

श्री हरिदत्त वेदालंकर लिखते है। मध्य युग में किमखबाव नामक कपडे का सबसे प्रमुख केन्द्र बनारस था। इसके बाद चन्देरी मुर्शिदाबाद, अहमदाबाद, औरंगाबाद, सूरत एवं तंजौर थे 'किमखबाव' शब्द का अर्थ है – 'बुना हुआ फूल' 16 वीं सदी में चन्देरी में कुछ राजस्थान के माडवाड़ से माडवाड़ी परिवार चन्देरी आकर बस गये। इन माडवाड़ी परिवारों द्वारा वस्त्र उत्पादन में काफी रूचि ली। और वस्त्र उत्पादन में नये-नये प्रयोग किये। जिससे चन्देरी हस्त करधा वस्त्र उद्योग को एक नयी पहचान मिली।[1]

इस संबंध में रचित मध्यकालीन ग्रन्थ 'नुस्खा खुत्स्तुल मुर्जीरवात (बहार-ए-आजम)' में लिखते है।

दी इंडियन जनरल ऑफ इकोनोमिक्स इलाहाबाद विश्वविद्यालय के 'श्री रंजीतसिंह एवं श्री देवेन्द्र शुक्ला' द्वारा दिया गया प्रासंग।

"Chanderi is Famous for its handloom Industry since the mughal Region of Jahagir"

17 वी सदी में चन्देरी पर बुन्देला राजाओं का आधिपत्य रहा। बुन्देला शासकों के समय हस्त करधा वस्त्र उद्योग का अधिक विकास हुआ चन्देरी के शासक दुर्जनसिंह बुन्देला (1687-1733) के काल में चन्देरी का बना हुआ वस्त्र समस्त देश में अपनी पहचान बना चुका था।

मध्य प्रदेश जिला गजेटियर गुना – 1994

"In the beginning of the 18th century we find that chanderi contonved of be a sarkar in the subah of malba, chanderi which was ruled by raja durjan singh had fame for cotton cloth extreme fineness, which were made and exported from chanderi"[2]

1857 ईसवी में चन्देरी बटालियन के प्रमुख आरक्षी. स्टर्नडैल ने तात्कालीन चन्देरी हस्त करधा वस्त्र उद्योग पर अपने विचार व्यक्त किये। चन्देरी बहुत बारीक मलमल कपडे बनाने का प्रसिद्ध स्थल है। यहाँ से बने हुए कपडे उत्तरी और दक्षिण भारत के राजाओं युवराजों, राजकुमारियों, राज्य के अधिकारियों, सामंतो द्वारा बहुत अधिक पसंद किये जाते थे।

1910 ईसवी में ग्वालियर रियासत के शासक राजा माधवराव सिंधिया के द्वारा चन्देरी वस्त्र उद्योग को काफी सहयोग प्रदान किया इन्हीं के सहयोग से बी.आर.एल. मंजुपुरिया अधीक्षक (टेक्सटाइल्स) विशेषज्ञ द्वारा ग्वालियर, लंदन से जोड़ने का काम किया। जिससे यहाँ के वस्त्रों को एक नयी पहचान मिली।

(1925 ईसवी में यहाँ के वस्त्र उद्योग में पुन: सोना चाँदी महीन तार (जरी) युक्त जरी का प्रयोग किया जाने लगा। जिसको असली जरी के नाम से जाना जाने लगा। जिसमें असली जरी का उपयोग किया जाता था। उस कपडे का मूल्य उतना ही अधिक होता था जिसमें सोने चादी की अधिक जरी लगी होती थी। इस समय जरी की विश्वसनीयता बनाये रखने के लिए वर्तमान सिंधिया सरकार की मुहर लगायी जाती थी।[3])

गणतंत्र दिवस 26 जनवरी 1992 ई. दिल्ली में आयोजित झांकी परेड में मध्यप्रदेश सरकार की तरफ से चन्देरी करधा बुनकरों द्वारा चन्देरी साड़ी की बुनाई का प्रत्यक्ष प्रदर्शन किया गया था। इस झांकी में मध्य प्रदेश (चन्देरी साड़ी झांकी) को द्वितीय स्थान मिला था जो बुनकारों के हुनर को बताता है और इसी उपलब्धि के लिए बुनकारों को भारत सरकार के द्वारा प्रशस्ती पत्रों से सम्मानित भी किया जाना चन्देरी साड़ी की लोकप्रियता को दर्शाता हैं।[4]

1980 ईसवी के समय तक चन्देरी वस्त्र उद्योग के कारीगर हाथ से कते (बाना) सूत धागे का उपयोग करते थे सूत (धागे) को स्थानीय स्तर पर कतिया समाज के लोगों द्वारा तैयार किया जाता था।

डॉ. श्री सक्सेना एवं श्री मदन मोहन जोशी लिखते है कि बुनाई में बहुत

ही महीन और पतले सूत की मजबूती के लिए बुनकरों द्वारा जंगली वनस्पति 'कोलीकांडा' के रस का प्रयोग किया जाता था इस वनस्पति के रस कारण सूत में मजबूती बनी रहती थी।

सन् 2003 में यूनिडों (United National Industrial Development organazation) – संयुक्त राष्ट्र टेक्सटाइम्स विकास संस्था का चन्देरी हस्त करधा वस्त्र उद्योग के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा 'यूनिडो' ने ही भारतीय हस्त शिल्प नगरों का चयन किया। जिसमें दो नगरों का चयन किया गया।

1. सिन्ध दुर्ग (गोवा)
2. चन्देरी (मध्यप्रदेश) इस संस्था ने चन्देरी वस्त्रों को एक नयी पहचान दिलाई ।[5]

2004 ईसवी में चन्देरी विकास निगम संस्था और यूनिडो के कुशल मार्गदर्शन से चन्देरी हस्त करधा में लगे लोगों का काफी अधिक लाभ हुआ। इसी संस्था के सहयोग से चन्देरी मध्यप्रदेश हस्त शिल्प कला, चन्देरी साड़ी औद्योगिक नीति एवं उन्नयन विभाग व्यापार तथा औद्योगिक मंत्रालय भारत सरकार (वस्तुओं का भौगोलिक उपदर्शन रजिस्ट्रीकरण तथा संरक्षण अधिनियम–1999) के अन्तर्गत 2004 में पंजीकृत किया गया।

यूनिडो के माध्यम से कई स्वसहायता समूहों को आर्थिक सहायता प्रदान की गई वर्तमान समय में 13 स्वसहायता समूहों का संचालन यूनिडो के माध्यम से किया जा रहा है। इन समूहों का वार्षिक उत्पादन लगभग 22 करोड़ रूपये है।

इसी संस्था के प्रयासों से देश विदेशों में अनेकों शोरूम संचालित करने वाली संस्था 'फैव इण्डिया' है जो अनेको देशों में चन्देरी हस्त करधा वस्त्रों को उपलब्ध कराती है।[6]

विक्रय हेतु उपलब्ध क्षेत्र – शासकीय क्षेत्र – मध्यप्रदेश शासन के उपक्रम मध्यप्रदेश हस्त शिल्प एवं हस्त करधा बुनकर सहकारी संघ और मध्यप्रदेश लघु उद्योग निगम द्वारा समय–समय पर स्वसहायता समूहों और सहकारी संस्थायों के वस्त्रों का क्रय कर लिया जाता है। इसके बाद देश के अनेक नगरों में विक्रय हेतु उपलब्ध कराया जाता है।

सहकारी क्षेत्र – सहकारी समितियों के माध्यम से चन्देरी हस्त करधा वस्त्रों का विक्रय किया जाता है। सहकारी समितियाँ सीधे बुनकरों से जुड़कर उनके उत्पादों को खरीद लेती है और फिर देश भर में विक्रय हेतु उपलब्ध कराती है। मध्यप्रदेश शासन हस्त करधा विभाग एवं हस्त शिल्प विकास निगम भारत सरकार और हाथकरधा वस्त्र मंत्रालय आदि समय–समय पर देश भर में आयोजित होने वाले एक्सपो, व्यापार मेलों, प्रदर्शनियों के माध्यम से विक्रय कराते है।

विदेशों में निर्यात – चन्देरी हाथ करधा वस्त्रों में साड़ी और सालवार कमीच (कुर्ता) का प्रमुख स्थान है। ये वस्त्र भारत के अलावा विदेशों में भी अधिक पसंद किये जा रहे है। जिससे विदेशी मुद्रा अर्जित करने का स्तर बढ़ता जा रहा है। जर्मनी, इटली, ब्रिटेन, फ्रांस जैसे कई देशों में चन्देरी वस्त्रों की मांग लगातार बढ़ती जा रही है। 1999 ईसवी चन्देरी करधा के बने वस्त्रों का निर्यात इटली के लिए किया गया था जिनमें कॉटन कवर, कुशन कवर सूट आदि सम्मिलित थे इन वस्त्रों की महिनात को काफी सराहना मिली थी।[7]

निष्कर्ष – प्राचीन काल से ही चन्देरी ऐतिहासिक महत्व रहा है। यहां का वस्त्र उद्योग भी काफी उन्नत अवस्था में था। चन्देरी का हाथ करधा वस्त्र उद्योग काफी पुराना और उन्नत था। यहाँ के शिल्पकारों के कलात्मक और महीन वस्त्रों को पुरी दुनिया में पसंद किया जाता है। मध्यकाल में यहाँ का 'किमख्बाव' नामक वस्त्र राजा महाराजाओं सामंतो राजकुमारों का सबसे प्रिय वस्त्र था। चन्देरी की बनी जरी की साड़ियाँ पूरे भारतवर्ष में प्रसिद्ध है। यहाँ की साड़ियों के अनेक प्रकार है जैसे – महारानी पाईपिंग, ढोहरा अड्डा पटेला बूटी, झाडपल्लू, प्लेन पोप, जरी नक्सा बूटी समन्दर लहर आदि अधिक प्रचलित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. पठान, मजीद खाँ : चन्देरी साड़ियाँ – 2009. पृष्ठ– 22,23,26,27
2. मध्य प्रदेश जिला गुना गजेटियर – 1994. पृष्ठ – 40
3. पठान, मजीद खाँ : पुरातत्व धरोहर चन्देरी – 2013. पृष्ठ–52,60
4. वर्मा, हरीशचन्द्र : मध्यकालीन भारत– भाग–2– (1540–1761)
5. ग्वालियर स्टेट गजेटियर – 1908. पृष्ठ–98
6. शोध संदर्भ ग्रंथ : डॉ तिवारी अर्पिता : चन्देरी का राजनैतिक और सांस्कृतिक इतिहास (1606–1857) बुन्देला राजवंश के विशेष संदर्भ में– 2013. पृष्ठ–42,43
7. अग्रवाल, कन्हैयालाल: बुन्देलखण्ड का इतिहास पृष्ठ– 110
8. चन्देरी संग्रहालय – चन्देरी
9. सार्वजनिक पुस्तकालय एवं वाचनालय– चन्देरी

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

प्राचीन यूनानी और लैटिन साहित्य में भारतीय पशु पक्षियों का विवरण : एक समीक्षात्मक अध्ययन

अजय कुमार* डॉ. अजय सिंह आर्य **

* शोधार्थी (इतिहास) शासकीय पी.जी. कॉलेज, मुरैना (म.प्र.) भारत
** प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (इतिहास) शासकीय पी.जी. कॉलेज, मुरैना (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – प्राचीन भारतीय भूमि का प्राकृतिक वातावरण पशु–पक्षियों, जीव जन्तुओं को अपनी ओर आकर्षित करने में अद्धितीय रहा। यहाँ की नदियाँ, पर्वत, पठार, पेड़–पौधे आदि जीवों के आश्रय स्थल सदा से ही रहे है। प्राचीन कालीन भारतीय परिवेश को देखकर यूनानी यात्री भी अपने प्राकृतिक प्रेम को रोक नहीं सके और अपने विचारों को उन्होंने अपने विवरणों के माध्यम से व्यक्त किया जो उनके ग्रन्थों में पर्याप्त मात्रा में मिल जाते है। यूनानी यात्रियों एवं लेखकों में हेरोडोटस, पिलनी, नियार्कस, आनेसिक्रिटस, मेगस्थनीज, प्लूटार्क आदि ने अपने विवरणों में भारतीय पशुओं में हाथी, गैड़ा, कुत्ता, चीता, सर्प, मछली, तोता, मोर आदि पशु पक्षियों का वर्णन अपने ग्रन्थों में किया है। उन्होंने जो विवरण लिख छोडे है वह भारतीय परिवेश के सम्बन्ध में अत्यन्त ही रोचक और मनोप्रिय लगते है। कुछ विवरण तो उनके गृह नगर के पशु–पक्षियों और अन्य नगरों के भी प्राप्त होते है जिनसे उन्होंने भारतीय जीवों की तुलना भी की है। उन्होंने जो कुछ भी देखा उसे समझकर अपने विवरणों में प्रस्तुत कर दिया है। यूनानी लेखकों और यात्रियों के द्धारा भारतीय पशु–पक्षी विषयक विवरण अत्यन्त ही महत्वपूर्ण हो जाते है।

शब्द कुंजी – प्राचीन यूनानी यात्रियों के पशु–पक्षी विषयक विवरण।

प्रस्तावना – प्राचीन भारत का प्राकृतिक वातावरण अत्यन्त ही रमणीय व चिरस्मरणीय रहा है। प्राकृतिक छठा सर्वत्र अपनी सुन्दरता का गुणगान कर रही थी। प्राकृतिक वातावरण अत्यन्त ही लोक लुभावन रहा जिसके लुभाने का कारण भारत की भूमि पर विविध प्रकार के प्राकृतिक सौन्दर्य को मनोहारी बनाने वाले जीव जन्तु और सुन्दर वनस्पतियों के साथ–साथ उच्चावच की स्थिति के साथ नदी जल व अरण्य का होना ही था। प्राचीन समय में भारतीय महाद्धीप में पेड़ पौधों, फल, फूल आदि की अधिकता थी क्योंकि भारत को नगरीकरण की विभीषिका ने नहीं जकड़ा था। लोगों का जीवन शांत वातावरण में व्यतीत होता था। इसी वातावरण में पशु पक्षियों का निवास अत्याधिक होता था।

भारतीय महाद्धीप को विभिन्नताओं का महाद्धीप भी कहा जाता है क्योंकि इस महाद्धीप में पर्वत, पठार, नदियों, तालाबों, वनों व वन उत्पादों की बहुलता पायी जाती है। पशु पक्षी भी अपना आश्रय स्थल उन्हीं जगहों पर बनाते है जहाँ उनके रहने योग्य वातावरण उपलब्ध हो। इसी वातावरण में अनेक प्रकार के पशु–पक्षियों के रहने का उल्लेख हमारे प्राचीन ग्रन्थों में यत्र–तत्र मिलता है ठीक उसी प्रकार यूनानी लेखकों व यात्रियों के विवरणों में भी भारतीय जीव जन्तुओं के विषय में यत्र–तत्र जानकारी प्राप्त हो जाती है। ये अलग बात है कि हम अपने भारतीय पशु–पक्षियों के विषय में अपना विशिष्ट ज्ञान रखते है लेकिन यूनानियों के द्धारा दिये गये इनके विषय में विवरण यूनानियों के पशु–पक्षियों आदि के प्रति इनका दृष्टिकोण किस प्रकार का था यह जानना महत्वपूर्ण हो जाता है।

यूनानी यात्रियों का ध्यान भारतीय पशुओं में प्रमुख रूप से हाथी की तरफ सबसे पहले जाता है। उन्हें भारतीय हाथी अफ्रीकाई हाथियों से अधिक बलवान और वृहद आकार वाले लगे।[1] जिस पर मेगस्थनीज कहता भी है कि उनकी बालिष्टता का कारण भारत में खाद्य सामग्री की प्रचुरता थी। भारतीय हाथी पशुओं में सबसे बड़ा पशु था जिसे खाद्य सामग्री की भी अधिक आवश्यकता थी जो उसे जंगलों से प्राप्त हो जाती थी[2] जैसा कि सुविदित है कि हाथियों की आयु बहुत अधिक होती है। आनेसिक्रिटस ने इस पर अपना विचार व्यक्त किया है कि भारतीय हाथियों की आयु प्राय: तीन सौ वर्षो की होती थी कोई–कोई तो लगभग पाँच सौ वर्षो तक जीवित रहते थे। इसी सम्बन्ध में एरियन भी मेगस्थनीज के आधार पर कहता है कि पूरी आयु प्राप्त करने वाले हाथी दो सौ वर्ष के होते थे परन्तु रोग आदि कारणों की वजह से उस अवस्था के पूर्व ही मर जाते थे।[3] हाथियों को सहज ही पालतू बनाया जा सकता था क्योकि उनका स्वभाव अत्यन्त ही सौम्य था। उनमें मनुष्य के जैसा विवेक था। सामान्य लोग हाथी को नहीं रख सकते थे। सामान्यत: राजा ही इनका संरक्षक होता था। प्रशिक्षण प्राप्त हाथी राजा की सेना का अंग हुआ करते थे जो शत्रु सेना को तहस–नहस करने की शक्ति रखते थे। वे अपने स्वामी के आदेशानुसार चलते लेकिन कभी–कभी जब इन्हें क्रोध आ जाये तो अपने स्वामी को भी नहीं छोड़ते थे जो उसे भोजन या प्रशिक्षण देता लेकिन बाद में पश्चाताप में वे अपने प्राणों को भी त्याग देते थे। यही उनकी स्वामी भक्ति की पराकाष्ठा थी।[4]

यूनानी ग्रन्थों में हाथियों के बाद बंदरों और सर्पो का वर्णन प्राप्त होता है जो झेलम नदी के ऊपरी क्षेत्र के जंगलों में पाये जाते थे जिनकी पूँछ अधिक लम्बी होती थी तथा आकार बड़ा होता था संभवत: ये लंगूर प्रजाति के थे।[5] क्लीटार्कस की सिकन्दर से सम्बन्धित एक कथा में लंगूरों की चर्चा की गयी है। लंगूर जो कुछ भी देखते उसकी नकल करना प्रारम्भ कर देते थे।[6]

मेगस्थनीज के वर्णनों से पता चलता है कि उसे कई प्रकार के वानरों के विषय में उसे जानकारी थी। जिनमें से एक किस्म के बंदर की शक्ल मनुष्य से मिलती थी जिसे देखने पर सहज ही किसी सन्यासी का भाव जागृत हो जाता था।[6] अधिकांशत: वे जंगलों में रहा करते थे और वन उत्पादों पर अपना जीवन निर्वाह करते थे। पूर्वी हिमालय की एक दूसरी जाति के बंदरों के विषय में भी वर्णन मिलता है जिनके बारे में वह कहता है कि यदि इनको छेड़ा न जाय तो ये शांत भाव से जंगलों में वने रहते और फल इत्यादि खाते।[7] यदि किसी शिकारी या शिकारी कुत्तों की आवाज सुन लेते तो अत्याधिक स्फूर्ति के साथ अपना स्थान छोड़कर उचित स्थान पर चले जाते। ये पहाड़ों पर स्फूर्ति के साथ चढ़ने में अभ्यस्त होते थे और अपने आक्रमणकारी पर पत्थर लुढ़काते थे। इन बन्दरों को पकड़ना बहुत ही कठिन कार्य था।[8] ये शिकारी बन्दर अन्य बन्दरों से आकार-प्रकार व सौन्दर्य में अलग थे।

मेगस्थनीज कुछ जंगली पशुओं को देखा था जिन्हें वह यूनान में बहुधा पालतू रूप में देखा था जिनमें भेड़, कुत्ते, बकरी व बैल थे। वह एक प्रसिआई बाघ को देखने की बात करता है जो सिंह का दो गुना आकार में था। वह एक पालतू बाघ को देखने की बात स्वीकार करता है जिसे चार व्यक्ति ले जा रहे थे तथा साथ में एक खच्चर था जिसे बाघ ने अपने पीछे के पैर से जकड़ रहा था। वह इतना शक्तिशाली था कि वह खच्चर को अपने पिछले पैर से घसीट रहा था।[9] यद्यापि यूनानी यात्रियों ने बाघ नहीं देखा था फिर भी नियार्कस सुनी सुनाई बातें अपने विवरण में वर्णित की है कि बाघ एक बडे से बडे घोडे के बराबर था और फुर्ती व ताकत में इसका कोई जबाव नहीं था।[10] वह चित्तीदार शरीर वाले चीते की भी चर्चा करता है। इसी प्रकरण में मेगस्थनीज एक सींग वाले घोडे को देखने की भी चर्चा करता जिसका एरियन ने विस्तृत रूप से वर्णन किया है। संभवत: यह गैड़ा रहा होगा।[11]

शिकारी कुत्तों के विषय में सेफाइटिस के दरबार की घटना की लगभग सभी लेखकों ने वर्णन प्रस्तुत किया है। सिकन्दर को ऐसे 150 से अधिक शिकारी कुत्ते उपहार में प्राप्त हुए थे।[12] फारस की खाड़ी से पहले ही नियार्कस को अपनी समुद्री यात्रा के दौरान विशाल आकार की मछली ह्वेल देखने को मिली थी जिसका मेगस्थनीज और एरियन ने दिलचस्प वर्णन प्रस्तुत किया है। ये बडे से बडे हाथी से पाँच गुना बड़ी होती थी जिनकी पसलियाँ बीस हाथ लम्बी और उनका जबड़ा 15 हाथ लम्बा होता था अर्थात ये आकार में 50 हाथ से भी लम्बी होती थी।[13]

नियार्कस ने सर्पो के विषय में वर्णन किया है कि कुछ छोटे और विषैले किस्म के होते थे जिनके शरीर पर धब्बे होते थे वे बहुत ही तेजी से रेंगते थे जिनका विष अत्याधिक घातक होता था।[14] नदियों में जब बाढ़ आ जाती थी तो ये मैदानी भाग छोड़कर या तो ऊँचे स्थानों पर चले जाते या घरों में घुस जाते जिससे घरों में रहने वाले लोग अपनी शयन शैय्या ऊँची बनाते थे[15] लेकिन जब इनकी संख्या काफी बढ़ जाती तो लोगों को अपना घर बार छोड़ना पड़ जाता। बाढ़ से इनकी संख्या कमतर हो जाती नहीं तो ये सारे देश को वीरान बना देते।[16] कुछ आकार में बडे लगभग 15-20 हाथ के होते जो काफी ताकतवर होते थे। मेगस्थनीज को अजगर के विषय में ज्ञात था जो किसी भी बैल या समकक्ष जानवर को समूचा ही निगल सकता था।[17] वह उड़ने वाले सर्पो के बारे में बताता है कि वे दो हाथ लम्बे होते थे जो रात में उड़ा करते थे और जहरीला स्त्राव उगलते रहते थे। यह यदि किसी व्यक्ति के ऊपर पड़ जाता तो उसके शरीर पर फफोले पड़ जाते।[18] वह बडे-बडे बिच्छूओं की भी चर्चा करता है जिसका डंक काफी जहरीला होता था ये यदि किसी व्यक्ति को डंक मार दे तो उस व्यक्ति का शरीर कुछ ही पलों में नीला पड़ जाता था और व्यक्ति की मृत्यु हो जाती थी।[19] सपेरे गांव-गांव में घूमते रहते जो सांप के काटने को ठीक कर सकते थे। इसीलिए सिकन्दर ने भी अपनी सेना में कुशल सपेरों को रखा था जिससे यदि किसी सैनिक को सांप काट ले तो तुरन्त ही उसका उपचार किया जा सके।[20] एरिस्टोवुलस ने भी लगभग नौ हाथ लम्बा एक सांप देखने की बात स्वीकारता है। आनेसिक्रेटस ने लिखा है कि पर्वतीय प्रदेश के राजा अविसरीज के पास दो सर्प थे जिनकी लम्बाई क्रमश: 140 हाथ तथा 80 हाथ थी।[21] हेरोडोटस ने कुत्ते के आकार की चीटियों का उल्लेख किया है जो जमीन से सोना खोदती थी। परवर्ती काल में सभी यूनानी ग्रन्थों में इन चीटियों के विषय में वर्णन मिलता है।[22] नियार्कस ने तो यहाँ तक कहा है कि उसने इन चीटियों की खाल देखी थी, जो चीते से समानता रखती थी।[23] हेरोडोटस ने तो यहाँ तक लिखा है कि घोडे को छोड़कर बाकी सभी पशु पक्षी अन्य देशों की अपेक्षा आकार में बडे होते थे।[24]

पक्षियों में मोरों और तोतों ने यूनानियों का ध्यान अपनी ओर विशेष रूप से आकृष्ट किया।[25] एरियन तोते को भारतीय पक्षी बताता है और उसका विस्तृत वर्णन प्रस्तुत करता है। तोते कई प्रकार के होते थे जिसमे से एक सिखाया हुआ तोता जो मनुष्य की तरह बात करता था और समय-समय पर टॉय-टॉय भी करता था।[26] उसने मोरों के विषय में भी वर्णन किया है कि भारतीय मोर आकार में बडे होते थे अपेक्षाकृत दुनियाँ के अन्य स्थानों के मोरों के।[27] सिकन्दर भी उनकी सुन्दरता से अत्यन्त ही प्रभावित था और उसने यह आदेश जारी कर रखा था कि यदि कोई मोर को मारेगा तो उसे सख्त से सख्त दण्ड दिया जाएगा।[28] मौर्य सम्राट अशोक ने भी अपनी राजाज्ञाओं द्वारा व्यर्थ की पशु-पक्षियों की हिंसा को कम करने का प्रयत्न किया था।

निष्कर्षत: यूनानी लेखकों और यात्रियों ने प्राचीन कालीन भारत की एक सुन्दर झलक प्रस्तुत की है जो प्राचीन कालीन भारत के पशु-पक्षियों के सम्बन्ध में अत्यन्त हो महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराती है। अन्य भारतीय साहित्यिक ग्रन्थों में भी भारतीय पशु पक्षियों के विषय में वर्णन प्राप्त होते है। यूनानी लेखकों व यात्रियों का इस सम्बन्ध में लेखन कार्य उनके प्राकृतिक साधनों को मानव जीवन में उपयोग का विस्तारपूर्वक वर्णन उनके पशुपक्षियों के प्रति प्रेम को इंगित करता है और भारतीय वातावरण की एक रूपरेखा भी प्रस्तुत करता है। उनके विवरणों से यह स्पष्ट होता है कि तत्कालीन भारतीय वातावरण कितना सौन्दर्यपूर्ण रहा होगा, पशु पक्षियों से मनुष्य का लगाव कितना अधिक रहा होगा और वातावरण भी कितना सुन्दर रहा होगा जो आज दुष्कर बनता जा रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. नीलकण्ठ शास्त्री, नन्द मौर्य युगीन भारत, पृष्ठ 98
2. वही पृष्ठ 99
3. वही पृष्ठ 99
4. वही पृष्ठ 99
5. मेगस्थनीज इण्डिका
6. एरियन, इण्डिका 15 पृष्ठ 218-19
7. वही पृष्ठ 218-19
8. वही पृष्ठ 218-19
9. नीलकण्ठ शास्त्री, नन्द मौर्य युगीन भारत, पृष्ठ 99
10. वही पृष्ठ 102
11. वही पृष्ठ 102

12. वही पृष्ठ 102
13. स्ट्रैवो 15, पृष्ठ 1, 56
14. एरियन, इण्डिका 6, पृष्ठ 41
15. वही पृष्ठ 51-52
16. नीलकण्ठ शास्त्री, नन्द मौर्य युगीन भारत, पृष्ठ 101
17. वही पृष्ठ 101
18. वही पृष्ठ 101
19. वही पृष्ठ 101
20. वही पृष्ठ 101
21. स्ट्रैवो 15,1, 28 पृष्ठ 34
22. वही पृष्ठ 34
23. मैकक्रिडंल, एंसियंट इंडिया इज डिस्क्राइव वाई मेगस्थनीज एण्ड एरियन पृष्ठ 51
24. वही पृष्ठ 51
25. नीलकण्ठ शास्त्री, नन्द मौर्य युगीन भारत, पृष्ठ 103
26. वही पृष्ठ 103
27. वही पृष्ठ 103
28. वही पृष्ठ 103

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Social Media Strategies in Post COVID - 19 Situation

Vijay Kumar Shrivastava* Hitendra Bargal Uttam Rao Jagtap*****

* Research Scholar, Shri Vaishnav Institute of Management, Devi Ahilya University, Indore (M.P.) INDIA
** Ph.D. Supervisor, Devi Ahilya University, Indore (M.P.) INDIA
*** Ph.D. Co-Supervisor, Shri Vaishnav Institute of Devi Ahilya University, Indore (M.P.) INDIA

Abstract - As the COVID-19 Pandemic causes customers to spend less time in stores, the impact of in-store advertising materials on consumer shopping and purchasing behaviours will diminish. According to the statistics, consumer use of social media is increasing. Consumers can be influenced by external entities, according to S-O-R Theory and the Consumer Decision-Making Model. That is, consumers are influenced by society and, as a result, are prone to copy the activities of others. It is not uncommon for a person to make a purchasing decision after hearing suggestions from a reliable source. Messages from satisfied customers can also have a social influence on consumers. The findings revealed that consumers are increasingly relying on social media for societal impact when they purchase and compare product options.
Keywords- COVID-19, epidemic, pandemic.

Introduction - Social media is recognized as one of the important tools of communication through the medium of technology, innovation and dynamics in depicting the ways of communication. Social media is an instant way to respond to many segments of people. On this platform we can interact, discuss, share information to many people at the same time so it is very useful sites where no cost incurred, interaction takes place. This information helps us to do business or to make friends or the users for the company sites. On social media the world is coming together with many beneficial aspects. For common goals and interest, social media helps those in fulfilling their objectives through virtual information and visibility

During the epidemic, it has been discovered that social media has become crucial to marketing. According to the poll, social media spending has surged by 74% from 13.3 percent of marketing budgets in February 2020 to 23.2 percent in June 2020. Meanwhile, traditional advertising spending is expected to fall, with CMOs estimating a 5.3 percent decrease in traditional advertising channels over the next 12 months.

The COVID-19 pandemic affected consumers' product needs, browsing and purchasing habits, and levels of post-purchase pleasure. With public healthcare concerns and government COVID-19 pandemic mitigation policies, the role and impact of social media as a marketing tool is expected to grow in importance because, at a time when social distancing is common, social media provides avenues for consumers to interact with others without having physical contact. As a result, COVID-19 is anticipated to cause changes in consumers' use of social media during consumer behaviours. As a result, businesses may discover new ways to acquire a competitive advantage through the implementation of successful social media marketing methods.

The S-O-R Theory (Mehrabian & Russell, 1974) and the Consumer Decision-Making Model can be used to frame understanding of how the COVID-19 epidemic affects consumers' social media habits (Nicosia, 1982). The S-O-R Theory is an explanation for how external stimuli might influence behaviour based on environmental psychology (Laato et al., 2020; Xu et al., 2014). Mehrabian and Russell (1974) proposed the S-O-R framework, which posits that external stimuli (S) affect an organism (O), resulting in a behavioural response (R). Kumar et al. (2020) used S-O-R to explain moderators of consumer behaviour and discovered that the model is beneficial for describing how external stimuli (S) might affect consumers' (O) affective and cognitive processes, hence influencing consumer behaviour (R). In terms of the effect of COVID-19 on customer behaviour, COVID-19 news would act as an external stimulation. As a result, S-O-R Theory explains how the COVID-19 epidemic might alter customer perceptions and actions.

Nicosia's Consumer Decision-Making Model is being used to investigate the types of behavioural changes influenced by the COVID-19 pandemic. Consumers, in particular, operationalize behaviours as they engage in consumer decision-making processes. Nicosia proposed a model to explain and research the processes involved in consumer decision-making, which consists of five stages or

behaviours related to identifying product needs, searching for product information, evaluating alternative products, making a purchase decision, and engaging in post-purchase behaviours (Nicosia, 1982). Figure 1 provides an illustration of the consumer decision-making processes:

Figure (see in next page)

With many customers anxious about physical contact with others following the declaration of the COVID-19 pandemic, it appears that consumers are increasingly embracing online platforms to conduct their consumption habits. More particular, social media, which allows consumers to connect remotely, looks to be increasing popularity as a technique for determining product needs. Furthermore, people are increasingly using social media to interact with other consumers and retailers in order to shop for product options, compare alternatives, and make purchases.

Conceptual Framework on Variables (see in next page)

The framework on studied factors related to marketing of social media for FMCGs products. It reflects that the credibility, promotional offers, reliabilit and accurac are comprised for social media strategies that compel consumers to rel on social media. Marketing environment is comprised of feedback from consumers, information that is reliable, privacy of consumer data base and brand engagement by providing trustable products. These two factors social media mareting and marketing environement lead to marketing performance resulted into chnaged in attitude of consumers and communication is effective between consumers and retailers.

Social media is claimed as a significant mediator in fostering social connections to maintain or expand the existing social network. In organizations, employees are encouraged to create universal level of networking within organization and other organizations in terms of usage of social media. Social media is useful as an interaction among employees that would enhance teamwork, collaboration and knowledge sharing within an organization. The usage of social media supports social processes in unique way along with the data, information and knowledge sharing between employees and customers. (Razmerita et al., 2014; Kaplan and Haenlein, 2010). Regardless of limitation of space and time, the convenience of interaction encourages continual increase of social media usage among employees. Furthermore, some organizations have shown high performance and healthy teamwork facilitated by social media. (Razmerita et al., 2014).

Conclusion - Changes in communication technologies, creativity and dynamics in various modes of communication, and the desire to access knowledge immediately have spawned new communication methods, one of which is social media. The most widely used means of social networking is social media. It is used for social networking, such as messaging friends and family members. In the twenty-first century, the majority of young people use social networking sites in their daily lives. It is the fusion of media and social networking, facilitated by a series of online resources that facilitate interaction and enable information to be exchanged with users. The value of social media is growing by the day, and has an impact on internet marketing It has become a common marketing tool for promoting two-way communication between businesses and customers. Social networking sites aid in the creation of brand interest as well as the development of customer trust, resulting in effective brand building. For selling their goods in online consumer markets, online businesses use social blogs and networking sites such as Facebook, LinkedIn, Twitter, and YouTube. By growing its popularity day by day, it attracted more than five million visitors a day. As a result, the importance and presence of these sites is beneficial to ecommerce businesses in terms of marketing. With the introduction of the internet, the use of web-based technologies has increased through a series of social networking platforms that provide a forum for companies to gain visibility for their products in the online market with the goal of increasing profit and expanding business while maintaining customer loyalty.

Suggestions - Marketers will benefit from the deployment or practises of technologies such as ERP for E-CRM, people soft, big data analytics, and so on to analyse and interpret consumer behaviour. This will help frame consumer retention strategies for surviving in this dynamic environment by recognising pre-sale and post-sale purchasing activity.

E-marketers may use social media tools to create customised campaigns and use resources to reach customers with specific needs. For example, give free gifts or coupons to senior citizens on October 1st (International Senior Citizen Day) or free bouquets and chocolates on Mother's Day/Day Women's in exchange for the purchase of a special category of items on Mother's Day/Day. Women's Marketers may use this benefit of social media marketing to have the highest return on investment as well as a successful customer retention strategy.

References:-

1. Laato, S., Najmul Lslam, A., Farooq, A., & Dhir, A. (2020). Unusual purchasing behavior during the early stages of the COVID-19 pandemic: The stimulus-organism-response approach. *Journal of Retailing and Consumer Services*, 57:102224
2. Mehrabian, A., & Russell, J. (1974). *An approach to environmental psychology*. The MIT Press
3. Nicosia, F. (1982). Consumer decision processes: A futuristic view. *Advances in Consumer Research*, 9, 17–19.
4. Mohammad Moein Abasin and Farid Huseynov (2020) The Impact of Social Media Marketing on Brand Loyalty in Fast-Moving Consumer Good (FMCG) Markets. Journal of Business Research-Turk. 12(2), 1023-1035.
5. Priti Salvi et al (2017), 'Influence of Social Networking Sites on Buying Behaviour of Consumers: An Empirical Study of Users of Social Networking Sites in Ahmedabad

City, ZENITH International Journal of Business Economics & Management Research, ZIJBEMR, Vol.3 (8), pp.67.

6. Xu, J., Benbasat, I., & Cenfetelli, R. (2014). The nature and consequences of trade-off transparency in the context of recommendation agents. *MIS Quarterly*, 38(2), 379–406.

Figure: Consumer Decision-Making Processes

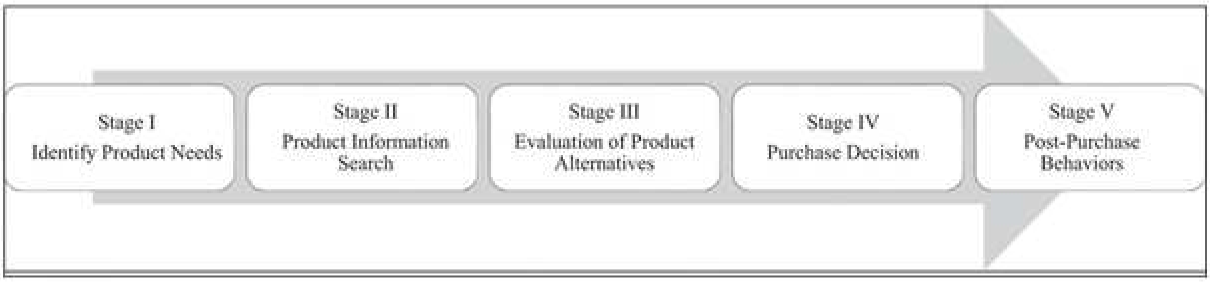

Conceptual Framework on Variables

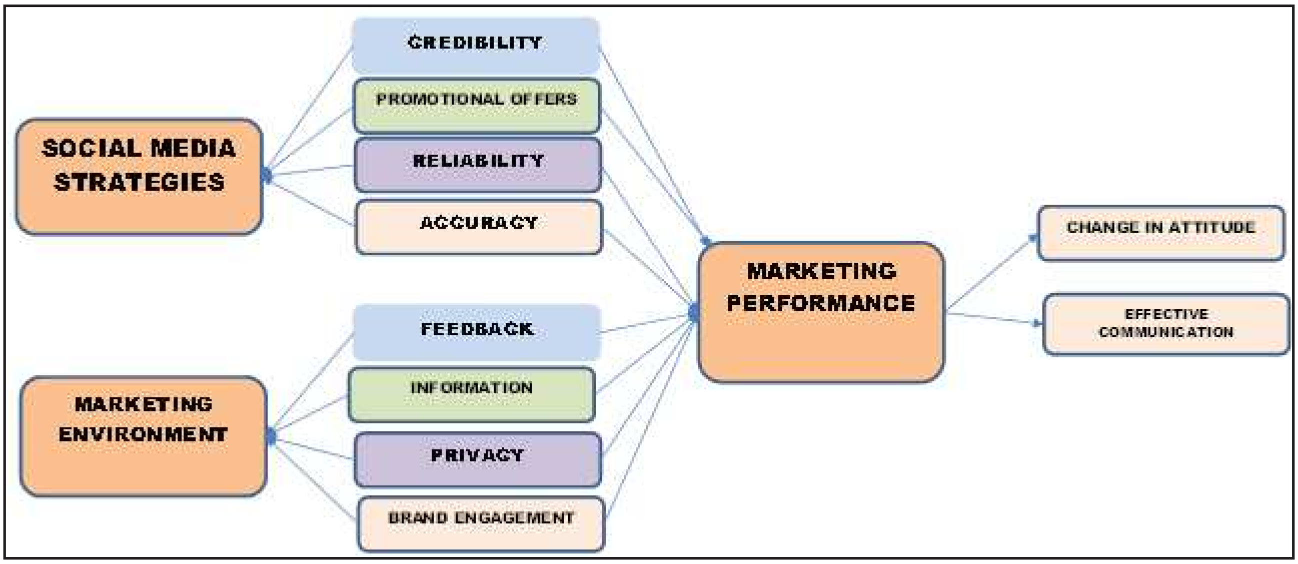

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में जीवन कौशल का अध्ययन

डॉ. खेल शंकर व्यास* शीला सालवी **

* डायरेक्टर, पेसिफिक कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन, उदयपुर (राज.) भारत
** रिसर्च स्कॉलर, पेसिफिक यूनिवर्सिटी, उदयपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – जीवन कौशल हमारे जीवन को सरल बनाता है मनुष्य की अनुकूलन तथा सकारात्मक व्यवहार व योग्यता है जो व्यक्ति को दैनिक जीवन की समस्याओं और चुनौतियों से प्रभावी तरीके से निपटने के लिए सक्षम बनाती है। जीवन कौशल शब्द का उपयोग आमतौर पर जीवन की चुनौतियों से अच्छी तरह से निपटने के लिए आवश्यक किसी कौशल के लिए किया जाता है जीवन कौशल के आधार पर विभिन्न समस्याओं का हल किया जाता है। विद्यार्थियों को लाभ प्राप्त करने के लिए सही निर्णय लेकर अपना विश्लेषण कर सके स्कूल पर्यावरण स्कूल पर्यावरण घर पर अनौपचारिक शिक्षा के लिए बालक स्कूल जाता है स्कूल दूसरा सबसे प्रभावशाली परिवर्तन है बालक के सर्वांगीण विकास हेतु विद्यालय का वातावरण बहुत महत्वपूर्ण है स्कूल पर्यावरण का अर्थ विशेष संस्थान का वातावरण जहां शिक्षा प्रदान करने का कार्य किया जाता है । स्कूल में शिक्षा सबसे अधिक प्रभावशाली औपचारिक एजेंसी है यह माना जाता है जिससे छात्र का नैतिक विकास हो सके तथा छात्रों को सीखने के लिए वातावरण के द्वारा सिखाया जाता है इसी प्रकार पारिवारिक वातावरण की भी अपनी अलग ही भूमिका होती है।

पारिवारिक वातावरण, परिवार घर का सबसे महत्वपूर्ण इकाई है जो एक बच्चे के विकास को प्रभावित करता है पारिवारिक वातावरण पहली सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें एक शिशु जन्म लेता है और सीखना शुरू करता है जवाब और अभिनय पारिवारिक परिवेश के दो शब्द होते हैं परिवार और पर्यावरण परिवार में विवाह रक्त और गोद लेने के संबंधों बच्चों की खरीद और परवरिश के संबंधों में शामिल व्यक्तियों का समूह शामिल है। जहां परिवार के सदस्य सामाजिक संस्कृति बनाने और बनाए रखने में एक दूसरे के प्रति सामाजिक भूमिका निभाते हैं परिवार के सदस्य भौतिक जैविक पोषक संस्कृति सामाजिक नैतिक आर्थिक सांस्कृतिक दोषों में सहभागिता करता है। व्यक्ति के चरित्र व्यवहार आदि तो राज्यों शोक सामाजिक शारीरिक मनोवैज्ञानिक नैतिक भावनात्मक और सांस्कृतिक विकास प्रकृति शरीर मानव हृदय को भी प्रभावित करता है।

शब्द कुंजी – किशोर, पारिवारिक, वातावरण, संघर्ष ,कौशल, जागरूक, प्रभाव, सामाजिक, जीवन, भविष्य,शिक्षा, संसाधन, संयोग, आर्थिक स्थिति,उपलब्धि,क्षमता, समाज, पर्यावरण, लक्षण, परिवर्तन, करियर, समस्या।

पारिवारिक पर्यावरण पर साहित्य की समीक्षा

डेली (2018) में किशोरों के शैक्षणिक उत्पादन पर घर के वातावरण के प्रभाव को निर्धारित करने के लिए एक जांच की जांच के विशिष्ट उद्देश्य स्कूल के छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धियों पर घर के वातावरण माता-पिता की भागीदारी माता-पिता की अपेक्षा माता-पिता के प्रोत्साहन और शैक्षणिक उत्तोजना के प्रभाव को कम करने के लिए थे। उपयोग की गई विधि वर्णनात्मक सर्वेक्षण थी नमूना में उच्च माध्यमिक स्तर की कला स्टीम से 210 छात्र शामिल थे छात्रों के पारिवारिक माहौल और शैक्षिक उपलब्धियों के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया।

भाटिया और चड्ढा (2015) में पारिवारिक वातावरण को मापने के लिए एक पैमाना विकसित किया उस पैमाने से चुने गए तीन आयामों का उपयोग इस पैमाने में किया गया था। सुझाए गए परिवर्तनों और संशोधनों को करने के लिए इन्हें फिर से 5 न्यायाधीशों को प्रस्तुत किया गया। पैमाने को 350 विषयों के लिए प्रशिक्षित किया गया था यह मध्यम वर्गीय सामाजिक आर्थिक स्थिति से संबंधित 17 से 50 वर्ष की आयु की विषयों पर मानकीकृत था। स्पीड में ब्राउन भविष्यवाणी फार्मूले का उपयोग करके पूरे परीक्षण की विश्वसनीयता गुणवत्ता का अनुमान लगाया गया था। समग्र प्रवेश परीक्षा विश्वसनीय गुणवत्ता 0.95 है।

शोध उद्देश्य:

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के ग्रामीण छात्र और छात्राओं के मध्य पारिवारिक वातावरण और जीवन कौशल का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शहरी छात्र और छात्राओं के मध्य पारिवारिक वातावरण और जीवन कौशल का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना:

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालय के ग्रामीण छात्र छात्राओं के मध्य पारिवारिक वातावरण और जीवन कौशल की शिक्षा में सार्थक अंतर नहीं है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शहरी छात्र-छात्राओं के मध्य पारिवारिक और जीवन कौशल की शिक्षा में सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श प्रतिचयन – किसी भी अनुसंधान की विश्वसनीयता व सफलता न्यादर्श पर ही आधारित होती है या देश का उपयुक्त चयन प्रत्येक शोधकर्ता के लिए आवश्यक है न्यादर्श के चयन के समय शक्ति व धन की बचत होती है न्यादर्श चयन में हम जिन विधियों का उपयोग करते हैं उसी के अनुरूप

परिणाम प्राप्त होते हैं।

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र छात्राओं के जीवन कौशल व्यक्तित्व विकास और व्यवसाय विकल्पों का संकाय वार में से संबंध ज्ञात करता है इसके लिए न्यायाधीश चुनाव विधि से किया जाएगा 1+2 में अध्ययनरत 60 विद्यार्थियों का चयन किया गया न्यादर्श हेतु बड़गांव के 5 विद्यालय को लिया गया जिसमें 60 विद्यार्थी ग्रामीण विद्यालय से छात्र-छात्राओं को लिया गया बालिका निजी विद्यालयों से 30 बालिकाओं का चयन किया गया साथ ही 30 बालकों का भी चयन निजी विद्यालय से किया गया।

दत्त संग्रहण के स्त्रोत –इस अनुसंधान कार्य के लिए दत्त संग्रहण के स्रोत के तौर पर उदयपुर के गिरवा क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के अध्ययनरत विद्यार्थियों को शामिल किया गया है न्यादर्श विधि का चयन याछीद्रीक विधि द्धारा किया जाएगा।

शोध उपकरण –प्रस्तुत शोधकर्ता के लिए आंकड़ों का संकलन करने हेतु निम्नलिखित वर्णो का प्रयोग किया जाएगा इस तरह मापनी दत्त विश्लेषण शोधकर्ता केदतों का विश्लेषण करने के लिए निम्न सांख्यिकी प्रविधि प्रयोग की जाएगी।

सह संबंध एवं अन्य उप प्रमुख सांख्यिकी

दत्त संग्रहण के स्त्रोत –इस अनुसंधान कार्य के लिए रक्त संग्रहण के स्रोत के तौर पर उदयपुर के मावलीक्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया।

अनुसंधान विधि –इस अध्ययन हेतु वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया जाएगा सर्वेक्षण विधि की में प्रस्तुत अनुसंधान में लिया जाएगा।

शोध उपकरण –शोध उपकरण वह साधन है जिसके द्धारा तत्वों का संकलन किया जाता है प्रत्येक अनुसंधान में उपकरण की आवश्यकता होती है क्योंकि इस साधान के द्धारा ही शोधकर्ता अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है शोध की प्रमाणिकता एवं वैज्ञानिकता के लिए आवश्यक है कि जैसे तत्वों का संकलन किया जाए जो की पर्याप्त व्यवस्था एवैद्य हो इसके लिए उपयुक्त उपकरण का होना नितांत आवश्यक है प्रस्तुत शोध में प्रस्तुत उपकरण शोधकृती द्धारा अपने शोध कार्य में मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया है जो इस प्रकार है।

सांख्यिकी विधियां – मध्यमान, समूह का औसत जानने के लिए t-value मदोनों वर्गों में अंतर जानने के लिये।

शोध प्रविधि – प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण आत्मक विधि का प्रयोग किया गया है अध्ययन का प्रतिदर्श उदयपुर जिले के मावली तहसील में स्थित अलग-अलग उच्च माध्यमिक विद्यालय के बालक बालिकाओं को लिया गया है जिसमें ग्रामीण पारिवारिक वातावरण की बालक बालिकाओं तथा शहरी पारिवारिक वातावरण के बालक बालिकाओं को लिया गया है दोनों का न्याय दृष्टिक प्रति दर्शन विधि का प्रयोग किया गया है उच्च माध्यमिक स्तर में ग्रामीण स्तर के 60 विद्यार्थियों को लिया गया है तथा शहरी स्तर पर 100 विद्यार्थियों को लिया गया है।

सांख्यिकी विधियां – मध्यमान ,समूह का औसत जानने के t-value दोनों वर्गों में अंतर जानने के लिये।

तालिका 1 (अगले पृष्ठ पर देखे)

परिणाम तालिका 1 सामाजिक आर्थिक स्थिति पर जीवन कौशल के औसत अंकों को दर्शाती है। उत्तरदाताओं जो निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति से संबंधित हैं, उनके पास सबसे कम स्कोर है जो कि 17.13 है और ऊपरी सामाजिक आर्थिक यूएस में 23.93 औसत स्कोर है। निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति में कम औसत स्कोर की तुलना में ऊपरी सामाजिक आर्थिक स्थिति होती है जो कि वे विभिन्न स्तरों के बीच बेहतर जीवन कौशल को दिखाते हैं। इसका मतलब है कि परिणाम तालिका सामाजिक आर्थिक स्थिति पर जीवन कौशल के औसत अंकों को दर्शाती है। उत्तरदाताओं जो निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति से संबंधित हैं, उनके पास सबसे कम स्कोर है जो कि 17.13 है और ऊपरी सामाजिक आर्थिक यूएस में 23.93 औसत स्कोर है। निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति में कम औसत स्कोर की तुलना में ऊपरी सामाजिक आर्थिक स्थिति होती है जो कि वे विभिन्न स्तरों के बीच बेहतर जीवन कौशल को दिखाते हैं।

इसका मतलब है कि निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति के उत्तरदाताओं को उच्च स्तर का कौशल पाया गया क्योंकि वे निम्न शिक्षित परिवार से संबंधित हैं, निम्न समाज में रहते हैं, अपने माता-पिता की कम आय वाले हैं। उनके पास ज्यादा पैसा, शिक्षा या पैसा नहीं है और वे जानते हैं कि कम संसाधन का अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग कैसे किया जाता है और वे अपने पास मौजूद हर चीज को महत्व देते हैं। वे सहपाठियों के साथ अधिक बातचीत करते पाए गए। वे समूह बनाने में संलग्न होने में अधिक हैं। वे दूसरों के दर्द को समझते हैं और आसानी से बता सकते हैं कि वे क्या महसूस करते हैं। उनके पास नहीं है उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पैसा ताकि वे जान सकें कि हर स्थिति में बेहतर तरीके से कैसे तालमेल बिठाया जाए और साथ ही वे उन पर किसी भी मुद्दे का बोझ न डालें। वे केवल वर्तमान के बारे में सोचते हैं, भविष्य के बारे में नहीं। वे सभी गतिविधियों में पूरे मन से भाग लेते हैं जबकि जब हम अमीर छात्रों के बारे में चर्चा करते हैं तो उन्हें जीवन की समस्याओं के बारे में पता नहीं होता है इसलिए वे स्थिति के साथ तालमेल बिठाने में असमर्थ होते हैं। वे एक या दो दोस्त बनाने में विश्वास करते हैं। उन्हें लोगों पर भरोसा नहीं है। वर्ग के साथ उनका अंतर्संबंध बहुत सीमित है। वे शिक्षक और अन्य लोगों के प्रति अधिक सम्मान दिखाते हैं और उन्हें गंभीरता से लेने में शर्म महसूस होती है। वे अध्ययन से संबंधित गतिविधियों और सह-परिपत्र गतिविधियों में अधिक लगे हुए हैं।

निष्कर्ष-उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति के उत्तरदाताओं की तुलना में निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति के उत्तरदाताओं को अधिक समायोजन पाया गया। अत: यह कहा जा सकता है कि किशोरों के दौरान सामाजिक आर्थिक स्थिति और वर्तमान सामाजिक आर्थिक स्थिति वयस्क समायोजन के लगभग सभी पहलुओं को प्रभावित करती है।

तालिका 2 (अगले पृष्ठ पर देखे)

तालिका 2 में गणना से प्राप्त धीमान 2.79 है जो कि सारणी में दिए गए 0.05 एवं 0.01 स्तर के टीम आठ 1.984 से 2.626 से अधिक है दोनों समूहों का मध्यमान क्रमश: 23.72 एवं 25.8 है मानक विचलन 3.11 एवं 3.20 है अत: जीवन कौशल के मध्य मानव में सार्थक अंतर नहीं है परिकल्पना शहरी पारिवारिक वातावरण में सार्थक अंतर पाया गया तथा यह स्वीकृत की गई।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. आलम, एम. (2018) सीनियर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों के बीच समायोजन का अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स (आईजेसीआरटी), खंड 6, पृष्ठ 47-55। आईएसएसएन:

2320-2882 www.ijcrt.org

2. वधावन, के. (2018) ए स्टडी ऑफ इमोशनल, सोशल एंड एजुकेशनल एडजस्टमेंट ऑफ सीनियर सेकेंडरी स्टूडेंट्स ऑफ पंचकुला, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज, वॉल्यूम। 8 अंक 4, पीपी 793-803।
3. अमीन, एम.,पटेल, पी. और श्रीवास्तव, ए.के. (2016) किशोरों के बीच भावनात्मक खुफिया और समायोजन, ईपीआरए इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च (आईजेएमआर), खंड 2, अंक 2, पीपी 113-116।
4. त्रिवेदी, डी.एन. (2014) समायोजन समस्याएं और छात्रों की उपलब्धि पर माता-पिता की सामाजिक आर्थिक और शैक्षिक स्थिति का प्रभाव, शिक्षा में अनुसंधान के लिए अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, वॉल्यूम। 3, अंक 85।

तालिका 1

क्र.	वर्ग ग्रामीण	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य	सार्थकता का स्तर
1	ग्रामीण पारिवारिक वातावरण के छात्र	30	23.93	4.09	7.531	अस्वीकृत
2	ग्रामीण पारिवारिक वातावरण की छात्राएं	30	17.13	2.77		

तालिका 2

क्र.	वर्ग शहरी	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य	सार्थकता का स्तर
1	शहरी पारिवारिक वातावरण के छात्र	50	23.12	3.11	2.79	अस्वीकृत
2	शहरी पारिवारिक वातावरण की छात्राएं	50	25.48	3.20		

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

न्यायपालिका की स्वतंत्रता एक अध्ययन,न्यायाधीशों की नियुक्ति के विशेष संदर्भ में

डॉ. राम सिंह पटेल*

* सहायक प्रध्यापक, पंडित मोती लाल नेहरू विधि महाविद्यालय, सागर रोड़, छत्तरपुर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – प्राचीन समय में सभी विधि शस्त्रियों को यह विचार था कि समाज में व्यक्ति के आचरण को नियंत्रित करने के लिए कानून कि नितान्त आवश्यकता है जिससे समाज में शक्ति व्यवस्था बनी है। जिससे मानव जीवन तथा सम्पति का संरक्षण संभव हों। मनुष्य का स्वभाव स्वार्थी होता है जिससे बस केवल कानून बना देने से मात्र से ही आचरण या अपराध नियंत्रित नही होता वरन इसके उल्लघंन को रोकने के लिए दण्ड की व्यवस्था हो।

भारत मे हमने लोकतान्त्रिक व्यवस्था में स्वीकार किया है। जिसमें भारत की शासन व्यवस्था में मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित किया गया है, विद्यानमण्डल, कार्यपालिका और न्यायपालिका विधानमण्डल का कार्य विधियों का निर्माण करना उन विधियों को प्रवृत्त कराने का कार्य कार्यपालिका को सौपा गया है एवं विधियों की वैधता की जांच करने का दायित्व न्यायपालिका को सौंपा गया है। साथ ही साथ न्यायपालिका के द्धारा अन्य दिवानी एवं आपराधिक विवादों के ऊपर डाला गया है। अत: आज शासन व्यवस्था को संचालित करने में तीनों अंगों का अपने–अपने क्षेत्रों में विशेष महत्व है। सामान्य जनता तीनों ही अंगों से यह अपेक्षा रखती है कि सभी अपने कार्य को स्वतन्त्र एवं निष्पेक्षता से सम्पादित करें जिससे प्रत्येक नागरिक के विकास के लिये एक अच्छा वातावरण मिल सके।

आज शासन के तीनों ही अंग अपने–अपने क्षेत्र में कार्य तो कर रहें हैं लेकिन धीरे–धीरे उनकी कार्यशैली एवं उनकी विश्वसनीयता पर निरन्तर प्रष्न उठ रहे हैं और यह संस्थायें अपनी विश्वसनीयता को धीरे–धीरे खोते जा रहे हैं। आज कोई भी नागरिक विधानमण्डल और कार्यपालिका के सदस्यों को अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान नहीं मानता क्योंकि यह बात सही है कि ऐसे व्यक्तियों की संस्था नाममात्र की रह गई। आज कोई भी व्यक्ति किसी नेता या अधिकारी पर विश्वास नहीं करता है क्योंकि इन्होनें भ्रष्टाचार का सहारा लेकर के पूरी व्यवस्था को दीमक की तरह नष्ट कर दिया। आज प्रत्येक नागरिक के लिये एक ही आशा की किरण दिखती है और वो है न्यायपालिका क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति आज भी यह मानता है कि न्यायपालिका निष्पक्ष होकर के कार्य करती है। लोग यह उम्मीद लगाकर कि उन्हें न्यायपालिका के द्धारा तो न्याय मिल ही जाएगा। आज भी न्यायपालिका कि ओर उम्मीद भरी नजरों से देखते हैं।

न्यायपालिका की निष्पक्षता के लिये सर्वप्रथम हमें न्यायपालिका के गठन में पारदर्शिता रखनी होगी अर्थात् न्यायपालिका के गठन में विधानमण्डल या कार्यपालिका का किसी प्रकार का कोई दखल नहीं होना चाहिये। इस प्रक्रिया को संवैधानिक दायरे में रहकर पूर्ण किया जाना चाहिये। न्यायधीशों कि नियुक्ति में पूरी पारदर्शिता रखी जानी चाहिए साथ ही न्यायपालिका को निष्पक्ष होकर कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिये। जिससे आम नागरिकों का विश्वास न्यायपालिका पर और दृढ़ हो सके। न्यायपालिका के कार्य में कोई दखल न दिया जाये बल्कि न्यायपालिका के कार्य में एक सहयोगात्मक भूमिका का निर्वाह किया जाये।देश की ऊपरी अदालतों में न्यायधीशों की नियुक्ति और स्थानान्तरण में पारदर्शिता की खारित लाये गये संविधान संशोधन विधेयक एस.जे.एसी. कानून 2014 और इससे जुडे 99वें संविधान संशोधन कानून 2014 दोनों को हमारे सर्वोच्च न्यायालय ने खारिज कर दिया है। इस कानून की रद्द होने के बाद सुप्रीम कोर्ट, हाई कोर्ट के न्यायधीशों की नियुक्ति की पुरानी व्यवस्था फिर से बहाल हो गई है। न्यायमूर्ति खेहर की अध्यक्षता वाली पांच सदस्यीय संवैधानिक पीठ ने हाल ही में सुनाये गये अपने एक फैसला में कहा कि राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग असंवैधानिक हैं। इससे न्यायपालिका की स्वतन्त्रता का हनन होता है।

अदालत ने अपने फैसले में साफ कहा है कि वह उच्चतम न्यायालय में जजों की नियुक्ति के लिये एन.जे.एसी. की सदस्य के तौर पर केन्द्रीय कानून मन्त्री की भागीदारी विधायिका और न्यायपालिका के बीच शक्तियों के बंटवारे के खिलाफ हैं। ये दोनों अवधारणायें निर्विवाद रूप से आधारभूत ढांचे के हिस्से हैं। पीठ ने कहा कि जजों की नियुक्ति में न्यायपालिका के प्रधानता में किसी प्रकार का समझौता नहीं किया जा सकता है। न्यायपालिका की स्वतन्त्रता संविधान के अनुच्छेद 14, 19, 21 का हिस्सा है। अगर न्यायपालिका की स्वतन्त्रता प्रभावित होती है तो मूल अधिकार भी प्रभावित होगें। पीठ ने कालेजियम सिस्टम में कथित अपारदर्शिता के इल्जाम को पूरी तरह से खारिज करते हुये कहा है कि इस व्यवस्था में कुछ भी गुपचुप तरीके से नहीं होता है।

जाहिर है शीर्ष न्यायालय के इस फैसले से सरकार को झटका लगा है। एन.जे.एसी. कानून देश ये न्यायिक सुधार का हिस्सा था जिसे पूरी संसद तथा जाने माने न्यायविदों का समर्थन प्राप्त था। लोक सभा में 13 अगस्त विधेयक 2014 और तत्संबंधी संविधान (121वां संविधान) विधेयक 2014 पारित किया गया था। राज्यसभा में यह विधेयक 14 अगस्त को पारित हुआ। इसके बाद राष्ट्रपति ने भी इस पर अनुमति प्रदान की थी।

इससे पहले देश के 29 में से 16 राज्य विधानमण्डलों ने न्यायधीशों

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

द्वारा न्यायधीशों को नियुक्त करने वाली कालेजियम प्रणाली को समाप्त करने वाले विधेयक को अपनी मंजूरी दे दी थी। चूंकि किसी भी संविधान संशोधन बिल के लिये कम से कम आधे राज्य के विधानमण्डल की मंजूरी जरूरी है। न्यायिक नियुक्ति आयोग के गठन के बाद यह उम्मीद बंधी थी कि न्यायधीशों की नियुक्ति में पहले से ज्यादा पारदर्शिता बढ़ेगी। लेकिन सरकार की मंशा धरी की धरी रह गई इस कानून को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती मिली।

सुप्रीम कोर्ट एडवोकेट आन रिकार्डस् समेत कई विधि विशेषज्ञों और बार एसोसिएशन ने एन.जे.एसी. को अदालत में चुनौती दी तथा कहा कि न्यायपालिका की स्वतन्त्रता में किसी प्रकार का समझौता नहीं होना चाहिये। इसके जरिए विधायिका न्यायपालिका की स्वतन्त्रता को छीन रही है। याचिकाकर्ता का कहना था कि 99वां संविधान संशोधन अधिनियम असंवैधानिक है। जिसके तहत एन.जे.एसी.का गठन किया गया है। न्यायपालिका को संविधान में स्वतन्त्र अधिकार मिले है जबकि ऐनजेएसी कानून अमल करने के बाद न्यायिक नियुक्ति में विधायिका का हस्तक्षेप बढ़ जाएगा यह कानून न्यायिक नियुक्तियों में सर्वोच्चता को कम करेगा। आयोग के वे दो कथित प्रबुद्ध सदस्य विदों द्वारा किसी भी नियुक्ति को रोक सकते हैं जो न्यायपालिका के काम में दखल होगा। याचिकाकर्ताओं ने राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग में विधि मन्त्री की मौजूदगी का भी विरोध किया है इस बारे में उन्होनें दलील दी थी कि आयोग में विधि मन्त्री की मौजूदगी निष्पक्षता पर नकारात्मक प्रभाव डालेगी। संविधान पीठ में जब इस मामले में सुनवाई हुई तो सरकार ने अपना पक्ष रखते हुये कहा कि कालेजियम सिस्टम में पारदर्शिता का अभाव है। यहां तक कि संविधान में कालेजियम का वजूद ही नहीं है। लिहाजा सर्वोच्च तथा उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति तथा स्थानान्तरण के लिये उसने संसद के जरिए एक व्यवस्था बनाई है जिसमें पहले से ज्यादा पारदर्शिता होगी। वहरहाल संविधान पिठ ने पूरे एक महिने तक दोनों पक्षों की दलील को सुना और सुनने के बाद एनजेएससी कानून को संविधान में दिया। अदालत ने कहा कि संविधान के आधारभूत ढाचे में ससंद कोई दखल नहीं हो सकती है और न्यायपालिका की स्वतंत्रता आधारभूत ढाचे का हिस्सा है।

नई दिल्ली उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश तीरथ सिंह ठाकुर ने स्वतंत्र न्यायपालिका को लोकतंत्र को रीढ़ की सरीखा बताते हुये कहा कि कार्यपालिका व विधायिका को न्यायपालिका के अधिकार क्षेत्र में हस्तक्षेप न करने की सलाह दी है और इसके साथ ही न्यायपालिका के प्रति लोगों की विश्वसनीयता बरकरार रखने को आन्तरिक चुनौती से निपटने की सलाह भरी दी है।

न्यायाधीश ठाकुर ने 37वें भीमसेन सच्चर स्मृति व्याख्यान माला में स्वतंत्र न्यायपालिका लोकतंत्र का बुर्ज विषय पर अपने सम्बोधन में कहा कि न्यायपालिका न केवल कार्यालिका व विधायिका के हस्तक्षेप जैसी वाहरी चुनौतियों का सामना कर रही है। तथा न्यायाधीशों में जिम्मेदारी का अभाव तथा विश्वसनीयता क्षरण जैसी आन्तरिक चुनौतीयों से भी उसे दो चार होना पड़ रहा है उन्होनें कहा कि बाहरी चुनौतियों के साथ-साथ आंतरिक चुनौतियों का सामना करना भी समय की मांग है ताकि लोगों का विश्वास न्यायपालिका के प्रति दृढ़ रह सके। संविधान केवल एक दस्तावेज नहीं वरन एक पवित्र ग्रंथ है जो नागरिकों को अनेक मौलिक अधिकार प्रदान करता है जिसकी रक्षा का दायित्व न्यायपालिका पर है।

मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि लोकतंत्र में सरकार के तीनों अंगों के अधिकारों का संविधान में अलग-अलग उल्लंघन है। लेकिन न्यायपालिका ही केवल वो अंग है जो शेष दो अंगों द्वारा अधिकरों के दुरूपयोग पर अंकुश भी रखता है उन्होनें कहा कि स्वतंत्र न्यायपालिका देश में लोकतंत्र की सफलता का प्रमुख आधार है।

यह निर्विवाद है कि दण्ड अपराधी के निवारण का एक सशक्त साधन है। दण्ड के अंतिम उद्देश्य के प्रति अपनाए जाने वाले विभिन्न दृष्टिकोण के कारण दण्ड के विभिन्न सिद्धान्तों का प्रादुर्भाव हुआ है। अत: दण्ड के सिद्धान्त के अन्तर्गत अपराध और अपराधियों के प्रति अपनायी जाने वाली दण्डनीति का समाविश रहता है। दण्ड के मुख्य सिद्धान्त है।

1. प्रतिरोधात्मक
2. प्रतिशोधात्मक
3. निरोधात्मक
4. सुधारात्मक

न्यायपालिका की स्वतंत्रता में न्यायिक सक्रियता सम्बन्धी मामले

दत्ताराज नाथू जी बनाम महाराष्ट्र राज्य[1] – उच्चतम न्यायालय ने इस बाद में अधिवक्ता संघ तथा बार कौंसिल को जनहितकारी बाद के सम्बन्ध में यह दिशा निर्देश दिया कि प्रत्येक अधिवक्ता को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जनहित याचिका का दुरूपयोग न हो सके जिससे इसकी गरिमा बरकरार रह सके साथ ही न्यायालय ने उपरोक्त वाद में यह भी सम्प्रेक्षित किया कि प्रत्येक अधिवक्ता का यह कर्तव्य है कि गलत तथ्यों के आधार पर न्यायालय के समक्ष ऐसी याचिका दायर न करे और न ही न्यायालय की किसी कार्यवाही में विलम्ब पहूंचाने की दृष्टि से ही इसका उपयोग करे बल्कि इसका उपयोग कुछ विशेष परिस्थिति में लोककल्याण के लिए करना चाहिए।

पुन:उच्चतम न्यायालय ने इस बात की पुष्टी की कि जनहित याचिका न्यायालय का एक सशक्त अस्त्र था जिसके अतिसंविधानी से लोककल्याण हेतु प्रयोग करना चाहिए।

टी.एन.गोडा वर्मन तिस्मल पद बनाम भारत संघ[2] – इस मामले में यह कहा गया कि जहा जनहितकारी बाद की विश्वसनीयता संदेहास्पद हो और न्यायालय को यह प्रतीत होता है कि जनहितकारी बाद अत्यन्त गम्भीर लोकक्षतिकारित तो कर सकता है। तो उस परिस्थिति में न्यायालयों को इस बात का विवेकाधिकार होगा। कि यह अपने सहयोग के लिए न्यायमित्र की नियुक्ति करे यदि ऐसी याचिका दुराशयपूर्ण भावना से प्रस्तुत की गई हो तो ऐसी याचिका पर विश्वास न करते हुए न्यायालय निरस्त कर सकता है।

श्रीमति एस.काठी बनाम भारत संघ[3] – प्रस्तुत बाद में अनुच्छेद 226 के अन्तर्गत इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने एक जनहित याचिका के अन्तर्गत अनुच्छेद 21 के तहत एक महत्वपूर्ण निर्णय दिया। इस बाद में न्यायालय में उ.प्र. सरकार को इस बात का निर्देश दिया कि कुष्ट रोगों से पीड़ित व्यक्तियों के लिए हर जिले में उनके लिए अलग से स्कूल खोला जाए। जिसमें उनके रहने की उचित व्यवस्था की जानी चाहिए। बच्चों को स्कूल में छुट्टीयों के दौरान व्यावसायिक कोर्स की शिक्षा भी दी जानी चाहिए।ऐसे कुष्ठ रोगियों की हर महीने मेडिकल जांच राज्य सरकार कराई जानी चाहिए।

एम.सी.महेता बनाम भारत संघ[4] – यह मामला जनहित बाद पर उच्चतम न्यायालय द्वारा निर्णित किया गया जिसमें स्वच्छ पर्यावरण एवं स्वस्थ वातावरण में श्वास लेने का अधिकार एक मौलिक अधिकार के रूप में स्वीकार किया गया।

सव्यसायी राय चौधरी बनाम भारत संघ[5] – इस मामले में न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि ऐसा कोई स्थान जो पर्यावरण प्रदूषित करता हो

जिसमें मानव जीवन के स्वास्थ्य और जीवन यापन के लिए असुरक्षित हो वहां किसी भी प्रकार का मेला या प्रदर्शनी नही लगाया जा सकता। प्रस्तुत मामले में वादी ने पुस्तक मेला को लगाने के इस आधार पर चुनौती दी की यह स्थान अत्यन्त दूषित क्षेत्र है जो मानव स्वास्थ तथा जीवन यापन के लिए असुरक्षित है न्यायालय ने प्रस्तुत साक्ष्यों के आधार पर जनहित याचिका स्वीकार किया तथा आदेश दिया कि सम्बधित स्थान पर वायु प्रदूषण तत्काल रोक दिया जाए।

भारतीय होम्योपैथिक कांलेज बनाम छात्र समिति एच एम कालेज जयपुर व अन्य[6] – इस मामले में उच्चतम न्यायालय ने कहा कि कोई भी संस्था बिना मूलभूत तथ्यों को उजागर करते हुए यदि कोई जनहित याचिका दायर करता है तो ऐसी याचिका न्यायालय द्वारा पोषणीय नही है।

एम.वी.पी.सोशल वर्कर एसोसिएशन बनाम विशाखापट्नम अर्बन डेबलपमेन्ट अर्थारटी व अन्य[7] – के बाद में न्यायालय ने एक जनहित याचिका के माध्यम से न्यायालय के समक्ष इस बात की चुनौती दी की समुद्र के किनारे इलैक्ट्रानिक विडोयोगेम पार्क न बनाया जाय। क्योंकि इसके कारण ध्वनि प्रदूषण होगा जो लोगों के हित तथा वातावरण के अनुकूल न होगा। प्रस्तुत मामले में न्यायालय ने सम्प्रेक्षित किया कि प्रतिवादी प्रदूषण को रोकने के लिए उचित कदम उठाए और प्रदूषण नियन्त्रण सम्बन्धी सभी कार्यवाही करे जिससे वातावरण प्रभावित ने हो तत्पश्चात अर्थोटी समुद्र के किनारे इलैक्ट्रनिक्श बनाने की अनुमति दे सकता है।

आर.एण्ड.एम.ट्रस्ट बनाम के आर विजिलेन्स ग्रुप[8] – इस मामले में न्यायालय ने यह सम्प्रेक्षित किया कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 32 और 226 के अन्तर्गत जनहितकारी बाद उस स्थिति में न्यायालय के समक्ष लाया जाना चाहिए जहां इसकी अत्याधिक आवश्यकता महसूस है। ऐसी याचिका का दुरूपयोग लोकप्रियता हासिल करने के लिए नही करना चाहिए बल्कि इसका प्रयोग लोकहित में करना चाहिए।

मेसर्स होलीकाऊ पिक्चर्स प्राइवेट लिमिटेड बनाम प्रेमचन्द्र मिश्रा व अन्य तथा कायनकास बनाम भारत संघ व अन्य[9] – के मामले की और इस बाद में उच्चतम न्यायालय ने अपने अधिनस्थ न्यायालयों को यह दिशा निर्देश दिया कि जब कोई जनहितकारी बाद उनके समक्ष ला प्रस्तुत किया जाय तो ऐसी याचिका का सूक्ष्य विश्लेषण करे कि ऐसी याचिका एक उचित कारण के लिए लाई गई है अथवा नहीं।

एस.पी.आनन्द बनाम एच.डी.देवगोड़ा[10] – इस बाद में न्यायालय ने कहा कि कोई भी याचिकाकर्ता जब चाहे अपनी इच्छा से याचिका वापस नही ले सकात है। याचिका तभी वापस ले सकता है जब न्यायालय पूर्णरूप से सन्तुष्ट हो या वापस लेने का आदेश दे।[11]

निष्कर्ष– इस लघु शोध में शोधार्थी ने 'न्यायपालिका की स्वतंत्रता एक अध्ययन न्यायाधीशों की नियुक्ति के विशेष संबंध में' का अध्ययन करने के पश्चात यह निष्कर्ष निकाला है कि धीरे – धीरे समय के साथ – साथ भारतीय न्याय प्रणाली में काफी बदलाव आया है। अब भारत में एक सुदृढ़ न्याय व्यवस्था स्थापित हो चुकी है। ब्रिटिश शासकों की इस देश को सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने भारतीय न्याय व्यवस्था में विधि सम्मत शासन, न्यायपालिका की स्वतंत्रता आदि संकल्पनाओं को सार्वाधिक महत्व देकर इस प्रणाली को आदर्श रूप प्रदान किया है।

संविधान में प्रारम्भ से ही यह व्यवस्था रही है कि उच्चत्तम न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति करता है। किन्तु इस मामले में राष्ट्रपति को कोई वैवेकिक शक्ति प्राप्त नहीं है। अनुच्छेद 124 (3) के अनुसार राष्ट्रपति न्यायाधीशों की नियुक्ति उच्चत्तम तथा उच्च न्यायालय के ऐसे न्यायाधीशों से परामर्श करने के पश्चात जिसे इस प्रायोजन के लिये आवश्यक समझे ही करेगा। अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति सदा मुख्य न्यायाधीश के परामर्श से करेगा। व उच्च न्यायालय के अन्य न्यायाधीशों से भी परामर्श कर सकता है।

मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति के संबंध में सदा से ही वरिष्ठता की परिपाटी रही है। संविधान में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है की मुख्य न्यायमूर्ति उसी व्यक्ति को नियुक्त किया जायेगा जो उच्चत्तम न्यायालय का वरीष्ठ न्यायाधीश हो लेकिन फिर भी भारत में वरिष्ठता क्रम ही चलता रहा है। 1956 में विधि आयोग की रिपोर्ट आयी थी जिसमें यह सुझाव दिया गया था की भारत के मुख्य न्यायमूर्ति की नियुक्ति केवल वरीष्ठता ही नहीं वरन् गुण एवं उपयुक्ता के आधार पर होनी चाहिये। विधि आयोग की इस सिफारिश के बावजूद भी सरकार वरिष्ठता क्रम का पालन करती रही परन्तु 1973 में वरिष्ठता क्रम की उपेक्षा कर दी गई। सरकार के इस रवैय की काफी आलोचना हुई।

1978 में पुन: यही प्रश्न उठा की मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति की कसौटी क्या होनी चाहिये लेकिन जनता सरकार ने पुन: वरिष्ठता क्रम को आधार बताते हुये मुख्य न्यायाधीश श्री चन्द्रचूड़ को पद पर नियुक्त कर इस विचार को समाप्त कर दिया। परन्तु समय – समय पर बहुत से मामले आय जिनमें न्यायाधीशों की नियुक्ति संबंधी प्रश्न पर विचार किया गया किसी मामले में कार्यपालिका को प्राथमिकता दी गई तो किसी में न्यायपालिका को।

21 दिसम्बर 1998 में दिल्ली में न्यायायिक सुधारों पर हुये सेमीनार में न्यायाधीशों तथा बाहर के व्यक्तियों के बीच काफी मतभेद दिखायी दिया। वहां हुई चर्चा से स्पष्ट हुआ की न्यायाधीशों की नियुक्ति तथा स्थानान्तरण पर न्यायालय के जो भी निर्णय थे वह इस मामले को हल करने में सफल नहीं हुये। संगोष्ठी में भाग लेने वाले अधिकांश लोगों का यही मत था कि न्यायाधीशों की नियुक्ति तथा स्थानान्तरण के संबंध में एक आयोग की आवश्यकता है।

संविधान में 99 वां संशोधन 2014 किया गया जिसके द्वारा 124 (2), 127, 128 मे संशोधन किया गया। फिर तीन नये अनुच्छेद 124 क, 124 ख, 124 ग अन्त: स्थापित किये गये। अब 124 (2) के अनुसार उच्चत्तम न्यायालय के मुख्य न्यायमूर्ति तथा प्रत्येक न्यायाधीश की नियुक्ति राष्ट्रपति न्याययिक नियुक्ति आयोग की सिफारिश पर करेगा। न्यायिक नियुक्ति आयोग में छह सदस्य होंगे। अनुच्छेद 124 ख में आयोग के कृत्यों को वर्णन किया गया है। 124 ख के अनुसार भारत के उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायमूर्ति की नियुक्ति अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति, उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति तथा अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति की सिफारिश राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग करेगा। तथा स्थानान्तरण की भी सिफारिश करेगा। और यह सुनिश्चित करेगा की सिफारिश किये गये व्यक्ति योग्य तथा निष्ठावान हो। अनुच्छेद 124 ग के अनुसार न्यायिक नियुक्ति आयोग प्रक्रिया का भी विनियमन करेगा।

परन्तु उच्चत्तम न्यायालय अधिवक्ता संघ बनाम भारत संघ के मामले में 99वे वां संविधान संशोधन अधिनियम 2014 तथा न्यायिक नियुक्ति आयोग अधिनियम 2014 को असंवैधानिक तथा शून्य घोषित कर दिया गया तथा

कहा गया है कि नियुक्ति तथा स्थानान्तरण के मामले में 99वें वां संविधान संशोधन के पूर्व की पद्धति ही प्रर्वतन में रहेगी।

इस प्रकार न्यायाधीशों की नियुक्ति तथा स्थानान्तरण के संबंध में पुरानी प्रणाली ही कायम रहेगी।

सुझाव – संविधान के अंतर्गत उच्चतम न्यायालय को जिस महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करने का भार दिया गया है उसे ध्यान में रखकर और उसके न्यायाधिकार की प्रकृति और व्यापक्ता पर विचार कर यह आवश्यक है कि उच्चतम क्षमता वाले व्यक्ति इस न्यायालय के लिये न्यायाधीश नियुक्त हो तथा इस संबंध में गुणो पर विचार करना चाहिये। यह न्यायालय उच्च न्यायालय के निर्णयों के विरूद्ध अपील सुनता है इससे और भी आवश्यक हो जाता है कि इस न्यायालय में नियुक्ति के संबंध में और भी पारदर्शिता लाई जाये। उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश योग्यता में उच्च न्यायालय से वरिष्ठ हो।

उच्चतम न्यायालय में ऐसे व्यक्ति हो जो स्वतंत्रता, निस्पक्षता और निर्लिप्ता के लिये उच्चतम प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुके है। भारतीय परिस्थिति को ध्यान में रखते हुये और यह भी ध्यान में लाते हुये की हम स्वतंत्रता एवं निर्लिप्तता को कितना अधिक महत्व देते है तथा उच्चतम न्यायालय का क्या महत्व है यह सावधानी का विषय है। न्यायालय में ऐसे व्यक्ति हो जिनका कोई राजनैतिक संबंध न हो और यदि हो भी तो बहुत पहले समाप्त हो चुका हो।

उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश के लिये नियुक्त न्यायाधीशों में न्यायिक और कानूनी कुशाग्रता के अतिरिक्त गुण भी भरपूर होना चाहिये जो समय के साथ अनुभव से आते है। उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायमूर्ति के पद के लिये वरिष्ठता के सिद्धांत का पालन किया जाना चाहिये इस सिद्धांत के परित्याग करने से विवाद उत्पन्न हुये है तथा मुख्य न्यायमूर्ति की छवि भी प्रभावित हुई है। ऐसे मामले में जहां क्षेत्र के आधार पर उच्चतम न्यायालय में नियुक्ति का मामला हो वहां उस क्षेत्र के योग्यतम व्यक्ति की ही नियुक्ति न्यायालय में की जानी चाहिये।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. बावेल बसन्ती लाल – भारत का संविधान सेन्ट्रल लॉ पब्लिकेशन इलाहाबाद 9वॉ संस्करण 2010
2. पाण्डेय जे.एन. –भारत का संविधान सेन्ट्रल लॉ पब्लिकेशन इलाहाबाद 42वॉ संस्करण 2017
3. अवस्थी सुधा – भारत का संविधान इंडिया पब्लिकेशन कम्पनी संस्करण – 2006
4. केसरी डॉ. यू.पी.डी. प्रशासनिक–विधि सेन्टल लॉ पब्लिकेशन 21 वॉ संस्करण 2010
5. पंराजये डॉ0 एन.वी. – भारत का संवैधानिक एवं वैधानिक इतिहास सेन्ट्रल लॉ एजेन्सी आठवां संस्करण 2006
6. मिश्र सूर्य नारायण – दण्ड प्रक्रिया संहिता सेन्ट्रल लॉ पब्लिकेशन 3 संस्करण 2010
7. गुप्ता ए. – लॉ ऑफ रिट्स जबलपुर लॉ हाउस 4वॉ संस्करण – 2008
8. shodhganga.inflibnet.ac.in
9. wikipedia.org.wiki
10. www.edristi.in
11. www.upscgetway.com
12. virtuallearningenvironment
13. https:/ofeias.com.knowledge
14. nayaydarsanlogspot.in
15. rajyasabhahindi.nic.in
16. moneycontrol.com
17. lawmin.nic.in
18. lawcommissionof india
19. Singal Archana – Sodh Patra 2012-13

Footnote:-

1. ए. आई. आर. 2005 एस. सी. डब्लू 46
2. ए. आई. आर 2006 एस. सी. 1774
3. ए. आई. आर. 1998 इलाहाबाद 331
4. ए. सी. सी. 403
5. ए. आई. आर. 1996 एस. सी. 579
6. ए. आई. आर. 1998 एस. सी. 1110
7. ए. आई. आर. 200 आ. प्र. 195
8. ए. आई. आर. 2005 एस.सी. 894
9. ए. आई. आर. 2008 एस.सी. 913
10. ए. आई. आर. 2008 एस.सी. 2116
11. प्रशासनिक विधि – डॉ0 यू0 पी0 डी0 केसरी

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

'कबीरदास' के काव्य में तत्त्वज्ञान का वैशिष्ट्य

डॉ. श्याम पाल मौर्य *

* प्रभारी एवं एसोसिएट प्रोफ़ेसर (हिंदी) बरेली कॉलेज, बरेली (उ.प्र.) भारत

प्रस्तावना – हिंदी के ज्ञानमार्गी संतों में कबीरदास का विलक्षण व्यक्तित्व अन्यतम है। परमतत्त्व के अनुभव की अपरोक्षानुभूति से सम्पन्न यह संतकवि स्वयं यह बात कहते हैं कि 'तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता आँखिन की देखी।' इनका काव्य अनुभूति के शिखर पर आरूढ़ विभूति के दिव्य और प्रामाणिक निधि के रूप में शताब्दियों तक मानव मात्र का मार्गदर्शन करता रहेगा। परमसिद्धि की दुर्लभ भूमिका पर अवस्थित व्यक्तित्व के वे अनुभव संसारी मानव के लिए अत्यन्त अगम्य हैं। जीव जीवन का चरम साध्य प्रत्येक व्यक्ति के लिए सहज सुगम नहीं होता। ऐसे अनुभवी संत का स्वयं का वचन है–

लम्बा मारग दूर घर, विकट पंथ बहु मार।
कहुँ संतो क्यों पाइये, दुर्लभ हरि दीदार ।।

निखिल विश्व की समस्त गतियों का गन्तव्य, समस्त निर्णीत सिद्धान्तों के अनुसार परब्रह्म ही है। मुण्डकोपनिषद में यही सत्य कितने सुन्दर ढंग से आप्तवाणी में व्यक्त है –

यथा नद्य: स्यन्दमाना: समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय।
तथा विद्वान् नामरूपाद् विमुक्त: परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम्।।(1)

जीव जगत का यह चरम सौभाग्य शिखर है। कबीरदास जी के काव्य में इस साधना और सिद्धि के अनुभूत भाव और विचार कलात्मक एवं अनुपम रूप में मूर्तिमन्त हुए हैं। भारतीय वाङ्मय तो स्वाभाविक रूप से आध्यात्मिक आभा का सिरमौर रहा है। विश्व के समस्त धर्म और दर्शन इस लक्ष्य के लिए प्रयास रत रहे हैं। संत प्रवर दादूदास जी ने कहा है–

पहुँचे पहुँचे एकमत, अनपहुँचे सो और।
दादू घरी अरहट की, ढुरै एकही और ।।

विश्व के विभिन्न धर्म दर्शन की चकाचौंध में सामान्य मानव ही नहीं, विद्वान भी सत्य सुनिश्चित कर पाने में असमर्थ हो जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में महात्मा कबीर जी की अनुभव सिद्ध वाणी का मार्गदर्शन तत्त्वज्ञान जैसे विषय पर कितना महत्वपूर्ण और लोक मंगलकारी हो सकता है यह कोई भी तत्त्व ग्राही और तत्त्व जिज्ञासु समझ सकता है। स्वयं कबीर भी यह गुर बताते हैं –

लिया भेदिया साथ में, दीनी वस्तु दिखाय।
कोटि जन्म का पंथ था, पल में पहुंचा जाय।।

भारतीय अधयात्म के चूड़ामणि आर्ष उपनिषद साहित्य में परम तत्त्व के स्वरूप के विषय में निरुपण किया गया है–

'सत्यं ज्ञानं अनन्तम ब्रह्म।' (2)

तात्पर्य यह है कि वह परमसत्ता तीनों कालों में सत्य, सनातन, पुरातन, अजर, अमर अविनाशी है। वह ज्ञान स्वरूप है, सर्वथा अनन्त है। कबीर जी स्वयं कहते हैं–

सद्गुरु की महिमा अनन्त, अनंत किया उपगार।
लोचन अनन्त उघाड़िया, अनन्त दिखावण हार।।

वह तत्त्व आदि मध्य, अवसान से परे और अपरिसीम है, पूर्णतम है। ईशावास्योपनिषद् में कहा गया है

ॐ पूर्णमद: पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते,
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूणमिवावशिष्यते। (3)

पूर्णतम तत्त्व का अनुभव कोई पूर्ण गुरु ही करा सकता है। परमतत्त्व की पूर्णता के लिए कबीर कहते हैं–

पूरे सूँ परचा भया, सब दुख मेल्या दूरि।
निर्मल कीन्हीं आत्माँ, ताथैं सदा हजूरि।।

विश्व के लगभग सभी दर्शनों ने उस परमसत्ता को दिव्य प्रकाश स्वरूप बताया है। कबीर कहते हैं–

कौतुक दीठा देह बिनु, रबि, ससि विना उजास।
साहिब सेवा मांहि है, बेपरवाही दास।।

मुण्डकोपनिषद में भी परब्रह्म के इसी अलौकिक अनिर्वचनीय प्रकाश स्वरूप का प्रमाण प्रसिद्ध है –

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्नि:।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ।। (4)

यह मन्त्र इतना लोकप्रिय और प्रामाणिक कि कठोपनिषद (2/2/15) में और श्वेताश्वतरोपनिषद में (6/14) में भी उपलब्धा होता है। तात्पर्य यह है कि परमेश्वर का दिव्य प्रकाश या ज्योति स्वरुप सदा सर्वत्र मान्य और अनुभव सिद्ध स्वीकार किया गया है। इसके पूर्व मन्त्र में इस सत्य को और अधिक स्पष्ट रूप व्यक्त किया गया है–

हिरण्मये परे कोशे विरजं ब्रह्म निष्कलम्।
तच्छुभ्रं ज्योतिषां ज्योतिस्तद् यदात्मविदो विदु:।।(5)

एक अन्य साखी में कबीर ने निरूपित किया है –

पारब्रह्म के तेज का, ऐसा है उनमान।
कहिवे कूँ सोभा नहीं, देख्या ही परमान।।

पारब्रह्म को कबीर रसरूप में भी स्वीकार करते हैं। वे सर्वेश्वर के सहज स्वरूप को आनन्दरस, हरिरस व प्रेमरस के पावन अभिधानों से पुकारते हैं।

राम रसांइन प्रेम रस, पीवत अधिक रसाल।
कबीर पीवण दुर्लभ है, माँगे सीस कलाल ।।

तैत्तिरीयोपनिषद् भी यहीं प्रमाण प्रदान करता है–

यद्वै तत्सुकृतम। रसो वै स:। रसं ह्येवायं लब्धवानन्दी भवति।(6)

परमात्मा का साक्षी स्वरूप सर्वाधिक प्रधान है। श्रीमद्भगवदगीता में भगवान

श्रीकृष्ण स्वयं अपने श्रीमुख से यह स्वीकार करते हैं-

ममैवांशो जीवलोके जीवभूत: सनातन:।

निज स्वरूप का बोध होने पर जीव को अपने ईश्वरत्व (ब्रह्मत्व) का ज्ञान होकर परमसत्ता के अद्वैत स्वरूप की उपलब्धि हो जाती है-

हेरत हेरत हे सखी रह्या कबीर हिराय।
बूँद समानी समुद्र में सो कत हेरी जाय।।
तू तू करता तू भया मुझमें रही न हूँ।
वारी फेरी बलि गई जित देखूँ तित तू।।
पाणी ही ते हिम भया हिम ह्वै गया विलाय।
जो कुछ था सोई भया अब कछु कह्या न जाय।।

परब्रह्म के द्रष्टा या साक्षी स्वरूप के सम्बन्ध में लिखते है-

'जग मैं देखौं जग न देखै मोहि, इहि कबीर कछु पाई हो।'(7)

श्वेताश्वतरोपनिषद में स्पष्ट कहा गया है-

'एको देव: सर्वभूतेषु गूढ: सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा।
कर्माधयक्ष: सर्वभूताधिवास: साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च।।' (8)

परब्रह्म के ज्योति और श्रुति दो स्वरूप प्रसिद्ध रहे हैं ;

मनवा जाइ दरीबे बैठा, मगन भया रसि लागा।
कहैं 'कबीर' जिय संसा नाही, सबद अनाहद वागा।।

सर्वेश्वर अनंत हैं उनके नाम रूप की कोई सीमा नही यह तत्त्व जानकर ही यथेष्ट निश्चय हो सकता है। यह वाणी का विषय नहीं 'सो जाने जो पावै।'

महात्मा कबीर दास उस तत्व की उपलब्धि के लिए भी सबसे निराली युक्तियाँ बताते हैं। परमात्मा की प्राप्ति के लिए वे आत्मज्ञान को परमावश्यक बताते हैं स्वरूप ज्ञान होने पर आत्मारूपी बूँद सागर हो जाती है फिर दोनों में कोई भेद न रहकर साधक को अद्वैत सिद्धि हो जाती है -

जल में कुम्भ कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी।
फूट कुंभ जल जलहि समाना, यह तत् कथ्या ज्ञानी।

आत्म ज्ञान के लिए वे कहते हैं-

कस्तूरी कुंडल बसे मृग ढूँढ़ै बन माँहि।
ऐसे घट-घट राम हैं दुनिया जानत नाँहि।।

और भी वे कहते हैं -

ज्यों तिल माहि तेल है, ज्यों चकमक में आग।
तेरा साईं तुझ में है, जाग सके तो जाग।।

श्वेताश्वतरोपनिषद में भी इसी प्रकार प्रभु प्राप्ति की युक्ति बतायी गयी हैं-

तिलेषु तैलं दधानीव सर्पि:
आप: स्रोतस्सु अरणीषु चाग्नि:।
एवमात्मा आत्मनि गृह्यतेऽसौ
सत्येनैनं तपसा योऽनुपश्यति।।(9)

महात्मा 'कबीर' एक पद में कहते हैं- 'कहै कबीर सुनो भाई साधो, सब सांसों की सांस में।।'नाथ पंथी साधुओं और सिद्धों की अंगीकृत साधना को वे अपनाते हैं। भारतीय साधना के ये स्वरूप भी उपनिषदों एवं अन्य वैदिक वाङ्मय की पावनी परम्परा से आये हैं। कबीर के तत्त्वज्ञान पर उपनिषदों का गहरा प्रभाव है। प्राणों के साधना-अभ्यास के लिए गीता में भगवान श्रीकृष्ण भी यही उपदेश करते हैं-

सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुधय च।
मूधर्न्याधायात्मन: प्राणमास्थितो योगधारणाम्।। (10)

श्वेताश्वतरोपनिषद में भी रहस्य प्रकट किया गया है। प्राणों की साधना से चित्त को शान्त करके प्रत्याहार द्वारा धारणा की जाती है। धारणा के बाद ध्यान और ध्यान की परिपक्वास्था के पश्चात समाधि प्राप्त की जाती है। इस प्रकार ध्याता, ध्यान और ध्येय की एकता या तल्लीनता प्राप्त कर योग का संयम किया जाता है। मूलाधार में सुप्तावस्था से जाग्रत योगाग्नि को योगी सुषुम्ना मार्ग से षट्चक्र भेदन कर सहस्रार में अपनी चेतना को ले जाता है। कुण्डलिनी शक्ति के नाम से अभिहित यह अपार विद्युत शक्ति परमात्मा से योग कर जीव को कृतकृत्य कर देती है। इस उपनिषद् का आप्त वचन है -

पृथिव्यप्तेजोऽनिलखे समुत्थिते पञ्चात्मके योगगुणे प्रवृत्ते।
न तस्य रोगो न जरा न मृत्यु: प्राप्तस्य योगाग्निमयं शरीरम्।। (11)

संत समाज में इसको तिर्यक मार्ग कहा जाता है।

सद्गुरू के अनुभवी मार्गदर्शनमें कुण्डलिनी योग को अत्यन्त शीघ्र प्राप्त किया जा सकता है। कबीरदास इस मार्ग के सिद्ध संत थे किन्तु वे प्रेम और भक्ति को भी उतना ही महत्व देते थे। साधनाकाल की समाधि सदा नहीं रह सकती। इसीलिए 'कबीरदास' भाव और प्रेम को सम्मान देते हुए अन्तत: सहजता और सरलता पूर्वक समाधि के निर्देश देते हैं-

साधो सहज समाधि भली।
गुरु प्रताप जा दिन से जागी, दिन-दिन अधिक चली।।
जहं-जहं डोलौं सो परिकरमा जो कछु करौं सो सेवा।
जब सोवौं तब करौं दंडवत, पूजौं और न देवा।।
कहौं सो नाम सुनौं सो सुमिरन, खाँव पियौं सो पूजा।
गिरह उजाड़ एक सम लेखौं, भाव मिटावौं दूजा।।
आंख न मूंदौं कान न रूंधौं, तनिक कष्ट नहिं धारौं।
खुले नैन पहिचानौं हंसि-हंसि, सुंदर रूप निहारौं।
शबद निरंतर से मन लागा, मलिन वासना त्यागी।
ऊठत बैठत कबहुं न छूटै, ऐसी तारी लागी।।
कह कबीर यह उनमनि रहनी, सो परगट करि गाई।
दुख सुख से कोई परे परमपद, तेहि पद रहा समाई।।

कबीर द्वारा 'उन्मनी अवस्था' के नाम से अभिहित यह सिद्धावस्था भक्ति में केवल भाव से भी ज्ञान की प्राप्ति की जा सकती है। प्रेम, भक्ति, योग और ज्ञान का अद्भुत समन्वय करने वाले तथा जीवमात्र को कल्याण का ऐसा व्यावहारिक, प्रामाणिक तथा सरल मार्ग दिखाने वाले महात्मा कबीर हिंदी के सबसे अनुपम और अद्भुत विभूति हैं। अपनी इसी सबसे पृथक पहचान के लिए वे शताब्दियों तक प्रेरणास्तंभ के रूप में स्मरण किये जाते रहेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. मुण्डकोपनिषद - 3/2/8
2. तैत्तिरीयोपनिषद; वल्ली-2, अनुवाग-1
3. ईशोपनिषद - 1/1
4. मुण्डकोपनिषद - 2/2/11
5. मुण्डकोपनिषद 2/2/9
6. तैत्तरीयोपनिषद - वल्ली-2। अनुवाग - 7
7. कबीर ग्रन्थावली - पद सं.-50, पृष्ठ- 175
8. श्वेताश्वतरोपनिषद - 6/11
9. श्वेताश्वतरोपनिषद 1-15
10. श्रीमद्भगवद्गीता - 8/12
11. श्वेताश्वतरोपनिषद - 2/12

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

किसानों को प्राप्त लाभ एवं संभावित समस्याओं का समग्र मूल्यांकन: नए कृषि कानूनों के संदर्भ में

भास्कर दुबे *

* सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, गंज बासोदा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – विश्व की सभी महान सभ्यताओं के उदय एवं विकास में कृषि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्राचीन काल से ब्रिटिशराज के आने से पहले तक भारतीय उपमहाद्वीप विश्व व्यापार का सबसे बड़ा केंद्र था। आधुनिक भारत में भी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से विशाल जनसंख्या रोजगार एवं भोजन के लिए खेती पर निर्भर है और 1960 के दशक में हरित क्रांति के बाद भी किसानों के एक बड़े वर्ग के लिए कृषि लाभप्रद रोजगार नहीं रही। 1990 के बाद से भारत ने आर्थिक उदारीकरण की नीति अपनाई, तभी से कृषि के विकास के लिए भी सरकार की नीतियों में परिवर्तन की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। कृषि राज्य सूची का विषय होने के कारण इसपर बने कानूनों में एकरूपता का अभाव पाया जाता है। 2016-17 के केन्द्रीय बजट में सरकार ने किसानों की कृषि से होने वाली आय को 2022 तक दोगुना करने का लक्ष्य रखा, इसी क्रम में सरकार के द्वारा 5 जून 2020 को तीन कृषि विधेयक संसद में लाए गए एवं 27 सितंबर 2020 को महामहिम के हस्ताक्षर के साथ ही इन विधेयकों ने कानून का रूप ले लिया। सरकार ने अपना उद्देश्य इन कानूनों के माध्यम से स्पष्ट किया, जिसमें कृषि व्यवस्था में सुधार, एपीएमसी को मंडी से बाहर भी व्यापार करने की अनुमति, अनुबंध कृषि को बढ़ावा तथा आवश्यक वस्तुओं की सूची से कुछ दलहन, तिलहन और आलू जैसी फसलों को हटाना शामिल है। इस शोधपत्र के माध्यम से सरकार के लक्ष्य, किसानों की चिंताओं तथा उनकी संभावित समस्याओं जैसे कि मंडी व्यवस्था और एमएसपी व्यवस्था समाप्त होना, अनुबंध कृषि के द्वारा उन्हे अपनी खेती का मालिकाना हक जाने का डर आदि विषयों पर विचार किया गया है एवं इन कानूनों में संभावित सुधार करने के विषय में चर्चा की गई है और सम्बन्धित विषयों को समेकित करने का प्रयास किया गया है।

शब्द कुंजी – कृषि कानून, अनुबंध कृषि, एपीएमसी, एमएसपी।

प्रस्तावना – प्रगति के सुनहरे अतीत पर खड़ा भारतीय कृषि क्षेत्र देश की अर्थव्यवस्था में सदैव ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है, भारत में विश्व का दसवाँ सबसे बड़ा कृषि योग्य भू-संसाधन मौजूद है। 'वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार देश की कुल जनसंख्या का 61.5 प्रतिशत हिस्सा ग्रामीण भारत में निवास करता है और कृषि पर निर्भर है। वर्ष 1970-71 में औसत भूमि धारण 2.28 हेक्टेयर था जो वर्ष 1980-81 में घटकर 1.82 हेक्टेयर और वर्ष 1995-96 में 1.50 हेक्टेयर हो गया था।' (Drishti IAS, 2020) राष्ट्रीय सांख्यिकी सर्वेक्षण 2019 के अनुसार यह आंकड़ा घटकर 0.512 हो गया है। (Press Information Bureau, 2021)

आजादी के 70 वर्षो के बाद भी कृषि में गंभीर समस्याएं मौजूद हैं, किसान लगातार कर्ज में डूबे हुए हैं और लगभग 70% किसानों का व्यय उनकी आय से अधिक है। किसानों की गंभीर समस्याओं में मुख्य रूप से उनकी उपज का सही मूल्य प्राप्त न होना, आय से अधिक खर्च होने के कारण बैंक एवं साहूकारों से ऋण लेना और उच्च ब्याज दर के कारण उसको चुका पाने में असमर्थ होने के कारण आत्महत्या जैसे कदम उठाना शामिल हैं। इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए और किसानों की आय 2022 तक दोगुना करने के उद्देश्य से सरकार कृषि सुधार हेतु तीन कृषि कानूनों को मंजूरी दी। परन्तु इन कृषि कानूनों को लेकर किसानों में चिंताएं व्याप्त है और उन्होंने इसके विरोध में भारतीय किसान संगठनों ने 25 नवंबर 2020 को आन्दोलन में बैठने की बात कही है और दिल्ली चलो आंदोलन का आह्वान किया।

वस्तुत: 5 जून 2020 को भारत सरकार ने तीन कृषि कानून पहला, कृषि उत्पादन, व्यापार, वाणिज्य (संवर्धन और सुविधा) विधेयक 2020; दूसरा, मूल्य आश्वासन और कृषि सेवाओं पर किसान (सशक्तीकरण व संरक्षण) समझौता विधेयक 2020 तथा तीसरा बिल आवश्यक वस्तु (संशोधन) विधेयक 2020 संसद में पेश किया। लोकसभा एवं राज्यसभा से पारित होने के पश्चात् इन तीनों विधेयकों पर 27 सितंबर 2020 को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने हस्ताक्षर किए, जिसके बाद ये विधेयक अधिनियम में बदल गए। सरकार का ये दावा है कि ये कृषि कानून किसानों को नए विकल्प उपलब्ध कराएंगे, जिससे किसानों को कृषि में लाभ मिलेगा तथा मंडियो के बाहर बेचने की सुविधा के कारण किसान अपनी उपज का उपयुक्त एवं वास्तविक मूल्य प्राप्त कर सकेंगे। वहीं किसान संगठनों ने इसका विरोध किया है तथा किसानों की चिंताएँ इन कानूनों को लेकर अलग है, किसानों का मानना है कि इससे मंडी व्यवस्था खत्म हो जाएगी एवं कृषि उपज की खरीदी पूर्णतया निजी हाथों में पहुँच जाएगी, इसका एक और परिणाम यह होगा कि एमएसपी अर्थात न्यूनतम समर्थन मूल्य भी समाप्त हो जाएगा। (Mustafa, 2020)

उद्देश्य – इस शोध पत्र का उद्देश्य सरकार द्वारा लाए गए तीन कृषि कानूनों का व्यापक मूल्यांकन करना तथा इन कानूनों के द्वारा किसानों को क्या

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

लाभ प्राप्त होंगे उनकी चर्चा करना है , शोध पत्र में यह भी पता लगाने का प्रयास किया गया है कि किसानों की संभावित समस्याएं इन कृषि कानूनों को लेकर क्या हैं? भविष्य की राह क्या हो सकती है? इस शोध पत्र के माध्यम से यह भी निष्कर्ष निकालने की कोशिश की गई है कि सरकार द्वारा लाए गए कृषि कानून में किस प्रकार का संसोधन लाया जाए, जिससे किसानों की चिंताऐं खत्म की जा सकें एवं उन्हे वांछित लाभ प्राप्त हो सके।

शोध प्रविधि – इस शोध पत्र में ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। यह शोध साहित्य सर्वेक्षण पर आधारित है। अध्ययन के लिए विभिन्न पत्रिकाओं, रिपोर्टों, शोध पत्रों में लिखे गये लेख, सरकारी वेबसाइटों, सरकारी संस्थाओं द्वारा जारी किये जाने वाले आंकड़ों का संग्रह किया गया है।

इतिहास – भारतीय कृषि प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से देश की एक बड़ी जनसंख्या को रोजगार उपलब्ध कराती है। बहुत हद तक यह भी सच है कि किसानों की स्थिति समय के साथ बद से बदतर होती जा रही है, जिस स्थिति में किसानों को लाभ प्राप्त होना चाहिए था, उस स्थिति में उन्हें लाभ प्राप्त नहीं हो सका है। सोलहवीं शताब्दी से जब से औद्योगिक क्रांति की शुरुआत हुई है, तब से लगातार कृषि में मशीनीकरण हुआ है, परंतु भारत में किसानों द्वारा कृषि क्षेत्र में मशीनों का प्रयोग व्यापक स्तर पर नहीं किया जा रहा है तथा कृषि में मानव कार्यबल भी आवश्यकता से अधिक है। भारत में कृषि जोत का आकार तो बढ़ा है परंतु उत्पादकता उस स्तर पर कम है। किसानों के द्वारा अपनी उपज का सही मूल्य न प्राप्त कर पाना, सूखा, बाढ़, सिंचाई के लिए उपलब्ध संसाधनों का न होना, गुणवत्तायुक्त बीज की कमी तथा किसानों पर ऋण का बोझ एक प्रमुख समस्या रही है। सरकारों ने समय-समय पर इस संबंध में कई नियम बनाए हैं, परंतु ये इतने कारगर साबित नहीं हो सके हैं कि किसानों की समस्या को मूल से खत्म किया जा सके। देश में 1960 के दशक में हरित क्रांति की शुरुआत हुई तथा पी वी नरसिंहा राव की सरकार ने कृषि को आधुनिक रूप देने की कोशिश की। वर्ष 2016-17 के केन्द्रीय बजट में सरकार ने किसानों के कल्याण और उनकी आय को 2022 तक दोगुनी करने का लक्ष्य रखा, जिसके लिए सरकार द्वारा बहुत सारी योजनाओं की शुरुआत की गई। जिसमें मृदा स्वास्थ्य कार्ड, प्रधानमंत्री ग्राम सिंचाई योजना इत्यादि योजनाएँ लागू की गई है। इसी संबंध में सरकार ने तीन कृषि कानूनों को पास किया है ताकि किसानों की आय को बढ़ाया जा सके, उनकी उपज का सही मूल्य प्राप्त किया जा सके तथा व्यापारियों के मध्य आने वाली नियामकीय बाधाओं को कम से कम किया जा सके।

विश्लेषण – किसान उत्पाद व्यापार और वाणिज्य (संवर्धन व सुविधा) अधिनियम, 2020 सरकार द्वारा लाए गए तीन कृषि कानूनों में से पहला कानून है। वास्तव में इस कानून का उद्देश्य वर्तमान में खेती में उपज की लिए बनाई गई कृषि उपज विपणन समिति एपीएमसी को मंडियों के बाहर भी कृषि उपज के संबंध में व्यापार करने की अनुमति प्रदान करना है। वस्तुत: एपीएमसी भारत में आजादी के बाद किसानों को साहूकार या व्यापारियों से संरक्षण के लिए लागू की गई थी। एग्रीकल्चरल प्रोड्यूस मार्केट कमिटी एपीएमसी कृषि बाजार की समितियां हैं, जो मुख्य रूप से राज्य सरकारों द्वारा स्थापित की जाती है। इसका प्रमुख कारण है कि खेती मुख्य रूप से राज्य सूची का विषय है। इस कारण से ये समितियाँ राज्य के द्वारा स्थापित की जाती हैं, इसलिए देश में केंद्रीय एपीएमसी का अभाव है। एपीएमसी को लाया ही इसलिए गया था कि इससे किसानों के हितों की रक्षा हो सके, परंतु वर्तमान में यह व्यापारियों का गुट बनकर रह गई और किसानों के हितों के बजाय ये समितियाँ स्वयं के हितों को प्राथमिकता देने लगीं जिससे किसानों को लाभ के बजाय हानि होने लगी। व्यापारियों की ये समितियाँ मंडियो में कृषि उपज का मूल्य गिरा देतीं हैं तथा बाद में उच्च कीमत पर इसे आगे बेच देती हैं। इस बिल के द्वारा सरकार ने एपीएमसी को मंडियो के बाहर भी कृषि उपज के व्यापार की अनुमति प्रदान की ताकि किसानों और व्यापारियों में फसल के मूल्य को लेकर मोलभाव हो सके परन्तु किसानों का डर यही है कि इससे मंडियाँ समाप्त हो जाएंगी। मंडियों के समाप्त होने की मुख्य चिंता यह है कि अभी किसान वर्ष भर अपना अनाज मण्डियों में बेच सकते हैं, परन्तु मंडियों के समाप्त होने के बाद किसान पूरी तरह से व्यापारियों की खरीद पर निर्भर होकर रह जाएंगे किसान केवल फसल आने के मौसम में ही अपनी फसल को बेच सकेंगे। जबकि वर्तमान में वे फसल का कुछ भंडारण भी कर लेते हैं और उपयुक्त दाम होने पर अपनी फसल की उपज को बेच देते हैं, इससे मंडी व्यवस्था को वे बनाए रखने के पक्ष में हैं। हालांकि सरकार ने स्पष्ट रूप से इस बात को नकारा है कि मंडी व्यवस्था खत्म की जाएगी और कृषि कानून में भी इस प्रकार का कुछ उल्लेख नहीं हैं, परंतु भारतीय लोकतंत्र संवैधानिक शासन के अनुरूप चलता है, जो भरोसे पर नहीं लिखित कार्यवाही पर चलता है। इस कारण ये डर है कि भविष्य में यह संभव हो सकता है कि मंडी व्यवस्था समाप्त हो जाए क्योंकि यदि व्यापारियों को मंडियों के बाहर अधिक लाभ प्राप्त होने लगा तो वे धीरे धीरे इस मंडी व्यवस्था से बाहर भी आ सकते हैं और किसानों की आशंका सच साबित हो सकती है। सरकार ने लिखित स्पष्टीकरण कहीं पर भी इस बिल में जारी नहीं किया है कि एपीएमसी के बाद मंडियो को समाप्त किया जाएगा अन्यथा नहीं। बिहार राज्य में एपीएमसी को खत्म किया जा चुका है ओर इसके खत्म किये जाने का नकारात्मक प्रभाव राज्य में कृषि और इससे संबंधित क्षेत्रों के ग्रोथ रेट में भी देखा गया है। कृषि से संबंधित ग्रोथ रेट साल 2004-2005 में 14.9 प्रतिशत थी, (1999-2000 के स्थिर कीमतों पर) जो घटकर साल 2018-19 में 0.6 प्रतिशत तक पहुंच गई (2011-12 के स्थिर कीमतों पर) इसलिए एपीएमसी को समाप्त करना चिंता का महत्वपूर्ण कारण माना जा सकता है। (Das, 2021)

इस विधेयक में सरकार ने यह भी आश्वासन दिया है कि व्यापारी एपीएमसी के बाहर किसी भी कीमत पर फसल खरीद सकते हैं। अर्थात फसल खरीदने के लिए उनके लिए कोई न्यूनतम मूल्य नहीं लागू किया गया है, जिससे एमएसपी की गारंटी खत्म हो जाएगी। एमएसपी के अंतर्गत जिन फसलों को शामिल किया जाता है, उनका न्यूनतम मूल्य तय कर दिया जाता है, उससे कम मूल्य मिलने पर किसान अपनी फसल को सरकार के पास बेच सकता है। परन्तु नए कानून में इस प्रकार की कोई व्यवस्था दिखाई नहीं पड़ती है। इस कारण किसानों की चिंता एमएसपी को लेकर बरकरार है। सरकार ने इस बारे में भी लिखित रूप से ये कहीं स्पष्ट नहीं किया है कि एमएसपी जारी रहेगा अथवा नहीं।

कृषि कानूनों में दूसरा कानून हैक मूल्य आश्वासन और कृषि सेवाओं पर किसान (सशक्तिकरण व समझौता) अधिनियम 2020। यह बिल मुख्य रूप से अनुबंध कृषि के बारे में बात करता है। अनुबंध कृषि मुख्य रूप से उत्पादन और कीमतों के समझौते पर आधारित होती है, यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें किसानों और व्यापारियों के मध्य फसल आने से पूर्व ही उसके मूल्य से संबंधित समझौता हो जाता है परंतु इसमें प्रमुख समस्या यह है कि यह व्यवस्था बड़े किसानों पर ध्यान केंद्रित करती है और छोटे किसानों का

दोहन होता है क्योंकि उनके पास मोलभाव की शक्ति सीमित होती है। अनुबंध कृषि का बहुत लाभ स्पष्ट रूप से भारतीय कृषि क्षेत्र में नहीं दिखाई पड़ता है, इसका कारण है कि भारत में 86.2% किसानों के 47.3% किसी क्षेत्र में औसतन दो हेक्टेयर से कम खेती के छोटे और सीमांत किसान हैं। दूसरा बिहार में यह देखने को मिलता है कि अनुबंध कृषि वर्ष 2006 से बिहार राज्य में लागू है परंतु इसका उचित लाभ किसानों को नहीं मिल पाया है।

सरकार ने इस क्रम में तीसरा कानून, आवश्यक वस्तु (संशोधन) अधिनियम, 2020 पारित किया। इस बिल का मुख्य उद्देश्य यह है कि कुछ आवश्यक वस्तुओं की सूची से अनाज, दलहन, तिलहन, प्याज और आलू जैसी वस्तुओं को हटाना है। इस विधेयक का मकसद निजी निवेशकों के बीच अत्यधिक नियामकीय बाधाओं को कम करना है। अगर उपज बड़ी कंपनियों को बेची जाएगी तो उससे अधिक दाम मिलने की संभावना है। परन्तु इसके कुछ घाटे भी स्पष्ट रूप से नजर आते हैं क्योंकि सरकार ने खरीदारी पर कोई अंकुश लगाने का नियम इसमें शामिल नहीं किया है। साथ ही वह कितनी भी खरीदारी कर सकते हैं इस बारे में यह बिल स्पष्ट नहीं करता है, जिस कारण जमाखोरी बढ़ने की उम्मीद है और यदि ऐसा होता है तो ग्रामीण क्षेत्र में खासकर किसानों पर फसल मूल्य को लेकर दबाव बढ़ेगा। पहले से भंडारण होने की दशा में व्यापारी अपने मन मुताबिक मूल्य तय करेंगे, इससे महंगाई भी बढ़ने की संभावना है। फलस्वरूप गरीबी बढ़ेगी क्योंकि हमेशा ही भंडारण महंगाई को बढ़ाता है।

परिणाम – तीनों कृषि कानूनों का उद्देश्य सिर्फ किसानों के हक में है ऐसा दिखाई नहीं पड़ता, ये व्यापारिक हित को भी बढ़ावा देते हुए प्रतीत होते हैं। भारत में वर्तमान में किसान विधिक रूप से एवं शैक्षणिक रूप से इतने सक्षम नहीं है, कि वे अनुबंध कृषि को अपना सकें तथा व्यापारियों और कृषकों के बीच में होने वाले अनुबंध और उससे उपजी समस्याओं का सामना कर सके। साथ ही सरकार का ये दावा है कि इन कानूनों से किसानों की 2022 तक आय दोगुनी हो सकती है, इस बारे में संशय है, क्योंकि जिस प्रकार हमने पूर्व में चर्चा की कि बिहार में अनुबंध कृषि 2006 से लागू है तथा एपीएमसी के बाहर भी व्यापार करने की अनुमति व्यापारियों को प्राप्त है। परंतु इसका बहुत बड़े स्तर पर लाभ बिहार में देखने को नहीं मिलता है। साथ ही यदि एमएसपी समाप्त होता है तो किसानों को इसका बड़े स्तर पर घाटा हो सकता है क्योंकि कई बार प्राकृतिक कारणों की वजह से यदि फसल की गुणवत्ता में कोई कमी आ जाती है तो यह संभव है कि अनुबंधकर्ता व्यापारी फसल खरीदने से इनकार कर दें या तय मूल्य से कम में उस फसल को खरीदे, ऐसा होने पर किसानों के पास उस उपज को बेचने का कोई दूसरा रास्ता नहीं रह जाएगा। परंतु जिन जगहों पर वर्तमान में एमएसपी लागू है, वहाँ पर अगर इस प्रकार की प्राकृतिक समस्याओं का सामना किसानों को करना पड़ता है तो उनकी फसल एमएसपी के अंतर्गत खरीद ली जाती है, जिससे किसानों को उनकी फसल का उपयुक्त मूल्य प्राप्त हो जाता है। सरकार ने कहीं पे भी लिखित रूप से एमएसपी को बनाए रखने की घोषणा नहीं की है। अनुबंध कृषि शक्ति संतुलन के आधार पर निर्भर होती है, यदि इनमें से एक भी शक्ति दूसरे से कमजोर होती है तो अनुबंध उस आधार पर बनाए रखना मुश्किल होता है। यहाँ छोटे एवं सीमांत किसानों की शक्ति बड़े व्यापारियों की तुलना में कम होती है, इस कारण विवाद निवारण वाली संस्थाओं में भी उनकी पकड़ कमजोर हो सकती है धन का अभाव उन्हें विधिक लाभ से दूर कर सकता है और वे एक तरफा अनुबंध मानने के लिए बाध्य हो सकते हैं। हालांकि सरकार के द्वारा लिए गए निर्णय आवश्यक भी प्रतीत होते हैं क्योंकि कृषि में गंभीर समस्यायें विद्यमान हैं और उनके लिए कुछ ठोस उपाय करने की आवश्यकता लगातार महसूस की जाती रही है। सरकार इसके लिए किसान संगठनों से चर्चा कर सकती है और इन कानूनों में आवश्यक बदलाव किए जा सकते हैं। जिन राज्यों में अनुबंध कृषि लागू की गई है, उन राज्यों का विश्लेषण करके इस कानून में सुधार किया जा सकता है।

निष्कर्ष – तीनों किसान कानून का अध्ययन करने के पश्चात् यह स्पष्ट है कि सरकार को वर्तमान कृषि व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता महसूस हुई। इस कारण से सरकार ने इन कानूनों को लाने का निश्चय किया, परन्तु किसानों के हित भी इससे प्रभावित हो रहे हैं। 1990 के बाद से भारत ने पूँजीवादी व्यवस्था को अपनाया है, इस कारण वैश्वीकरण का दबाव भी कृषि क्षेत्र में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। अत: किसानों की समस्याओं और उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए कुछ कानून बनाना आवश्यक है। भारत की कृषि लगातार पिछड़ती जा रही है और इसके लिए पुरानी नीतियों को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। परंतु यह भी सही है कि पूँजीवादी युग में व्यापारियों का गुट केवल अपने फायदे के बारे में ही निर्णय लेगा इस कारण किसानों का यह डर है कि अनुबंध कृषि में उन्हें घाटा हो सकता है। छोटी जोत के किसानों की मोल भाव करने की शक्ति सीमित होती है। सरकार ने कानून में न्यूनतम समर्थन मूल्य के बारे मे कोई भी स्पष्ट उल्लेख नहीं किया है बल्कि कानून में स्पष्ट है कि व्यापारी फसल को किसी भी कीमत पर खरीद सकते हैं, इसके लिए सरकार को स्पष्ट रूप से कानूनों में संशोधन करके लिखित गारंटी देनी चाहिए की एमएसपी बरकरार रहेंगी। साथ ही सरकार को विवाद निवारण संस्था को मजबूत बनाना चाहिए। अनुबंध कृषि से संबंधित विवाद होने पर उनकी तत्काल सुनवाई तथा किसानों को विधिक सहायता उपलब्ध कराने का विकल्प रखा जाना चाहिए। साथ ही सरकार को यह ध्यान देना चाहिए कि भंडारण से संबंधित कानून से कहीं जमाखोरी न बढ़े, जिसके परिणाम स्वरूप उत्पन्न होने वाली गरीबी और महंगाई की आशंका को कम किया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Das, S. (2021, July 2). एपीएमसी को साल 2006 में खत्म करने के बाद के बिहार के हालातों से सबक लेना क्यों जरूरी है? Gaon Connection. https://www.gaonconnection.com/desh/farmers-protest-farm-laws-apmc-mandi-bihar-msp-agrarian-crisis-49451
2. Drishti IAS. (2020, February 3). भारतीय कृषि क्षेत्र: समस्या और उपाय. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-editorials/thinking-beyond-farm-sops
3. Mustafa, F. (2020, December 15). An Expert Explains: The arguments for and against the three central farm laws. The Indian Express. https://indianexpress.com/article/explained/an-expert-explains-farm-acts-and-federalism-6622769

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

श्रमजीवी महिलाएँ एवं पारिवारिक संगठन का समाजशास्त्री अध्ययन

रुची गौतम *

* अतिथि विद्वान, विधि विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – श्रमजीवी महिला शब्द का प्रयोग प्राय: नौकरी करने वाली के संदर्भ में किया जाता है अर्थात् ये महिलाएँ जो घरों के बाहर नियमित रूप से आर्थिक या व्यावसायिक गतिविधियों में व्यस्त रहती हैं। काम, श्रम करने वाले स्वयं श्रम करना ही नहीं, वरन दूसरे व्यक्तियों से काम लेना तथा उनके कार्य की निगरानी करना निर्देशन आदि देना भी सम्मिलित है। आज के भौतिकवादी परिवेश में हर महिला का श्रमजीवी होना एक अनिवार्यता बन गयी है। घर की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पति और पत्नी दोनों का कार्य करना आवश्यक हो गया है जिससे पत्नी की परम्परागत प्रस्थिति एवं भूमिका में परिवर्तन आये हैं घर के बाहर काम करने के कारण पत्नी को घर और बाहर दोनों ही क्षेत्रों की भूमिकाओं का निर्वहन करना पड़ता है जिसमें कभी-कभी ऐसी स्थिति भी आती है कि दोनों भूमिकाओं में तनाव उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रम (पेशे) का परिवार के निर्माण पर परिवार की संरचना पर, परिवार की भूमिका पर और परिवार के विघटन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। उसका कारण यह प्रतीत होता है कि जो महिलाओं में नौकरी करने की लहर आयी है उसका प्रभाव उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर तथा पारिवारिक संबंधों पर पड़ता है। अब उसे एक तरह गृहणी, पत्नी, माँ और दूसरी जीविकोपार्जन दोनों की भूमिका निभानी पड़ती है।

प्रस्तावना – परम्परागत भारतीय समाज में महिलाओं के द्वारा घर की चारदीवारी से बाहर निकल कर कोई भी आर्थिक कार्य करना सामाजिक प्रतिष्ठा के विरूद्ध माना जाता था वर्तमान में महिलाओं को आर्थिक रूप में आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। स्वतंत्रता एवं समानता के संवैधानिक अधिकारों, बढ़ती हुई जनसंख्या, महिलाओं में बढ़ती जागरूकता एवं शिक्षा तथा सुविधाओं और विलासिला के साधनों की मांग ने महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया है। आज घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर लगभग सभी क्षेत्रों में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। भारतीय समाज को विवाहित श्रमजीवी महिलाओं की दोहरी भूमिका होती है। एक ही साथ वे कार्यकर्ता के साथ-साथ गृहणी भी होती है। इन दोनों भूमिकाओं में संघर्ष की भूमिका बनी रहती है। यदि श्रमजीवी महिलाओं के परिवार के सदस्य उसकी दोनों भूमिकाओं को समर्थन न प्रदान करे तो वह परिवार और कार्य से भलीभॉति समायोजित नहीं कर सकती।

शोध प्रविधि – शोध का व्यवस्थित तथा सुनियोजित प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मानवीय ज्ञान में वृद्धि की जाती है और मानव जीवन को सुगम तथा भावी बनाया जाता है। प्रस्तावित शोध अध्ययन को व्यवस्थित पूर्ण करने हेतु समकालिक, मौलिक स्त्रोतों, स्थल सर्वेक्षणों और सहायक ग्रन्थों का सूक्ष्म अध्ययन करते हुए शोध को दोनों (प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष) ही पद्धतियों का सहयोग लिया जायेगा। इसके साथ ही व्यक्तिगत निरीक्षण प्रश्नावली साक्षात्कार एवं अनुसूचियों का भी प्रयोग किया जायेगा।

समंकों के मुख्यत: स्त्रोत हैं, पहला प्राथमिक तथा दूसरा द्वितीयक। प्राथमिक स्त्रोत के अंतर्गत मुख्यत: निरीक्षण या अवलोकन, साक्षात्कार व प्रश्नावली के माध्यम से सूचनाएं एकत्र की गयी हैं तथा द्वितीय तथ्य सामग्री का प्रयोग किया है, जो कि पत्र-पत्रिकाओं, वार्षिक प्रतिवेदन, अखबारों, शोध रिपोर्ट आदि से एकत्र किया गया है।

उद्देश्य – महिला समाज की धुरी है अगर धुरी टूट गई तो समाज भी टूट जायेगा। इतिहास गवाह है कि जिन समाजों में महिलाओं को गुलाम वे खुल गुलाम बन गये, जिन समाजों ने महिलाओं को प्रगति का मौका दिया उन्हें सभ्यता के शिखर पर पहुँचने से कोई नहीं रोक सका। इस संदर्भ में कुछ उद्देश्य निम्नलिखित हैं, जो अग्रलिखित हैं :-

1. वर्तमान समय में लागू महिला संबंधी कानूनों में व्याप्त विसंगतियों को दूर करना चाहिए जिससे उनको पुरूषों के समान अधिकार मिल सके।
2. समाज में श्रमजीवी महिलाओं को राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में पुरूषों के समान कानूनी और व्यावहारिक रूप से सभी मानवाधिकार हासिल हों।
3. महिलाओं को अपनी मानसिक प्रवृत्ति में परिवर्तन लाना होगा जिससे उनमें आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

उपकल्पना – 21वीं शताब्दी की महिलाओं में आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथ व्यावसायिक आकांक्षा बहुत प्रबल हो गयी है। वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना चाहती है इससे उसमें आत्मविश्वास बढ़ेगा और वह प्रगति की सीढ़ी पर चढ़ती जायेगी एवं समाज में फैली बुराई के अन्धकार को दूर कर सकेगी। शोध कार्य के लिए शोधार्थी अपनी अध्ययन समस्या के लिए प्राथमिक ज्ञान के आधार पर एक ऐसा सामान्य निष्कर्ष बनाता है जो शोध कार्य का प्रमुख आधार बनता है, जिसे शोध परिकल्पना कहते हैं लेकिन यह

उपकल्पना केवल आकस्मिक निष्कर्ष मात्र होती है अध्ययन के पश्चात् इनके सत्य या असत्य होने का पूर्ण या आंशिक संभावनाएँ सामान्य रूप से बनी रहती हैं।

विषय-विवरण - महिलाएँ अशिक्षा, भ्रष्टाचार, शोषण, आर्थिक पराधीनता, राजनीतिक सोच का आभाव आदि ऐसी प्रमुख बाधाऐं हैं जो राजनीतिक क्षेत्र में आगे बढ़ने में एकावट लाती है। महिलाओं को समाज एवं राजनीति में आगे लाने के लिए उन्हें आर्थिक दृष्टि से स्वाबलम्बी बनाना होगा। अध्ययन क्षेत्र की महिलाओं में व्याप्त अशिक्षा और अंधविश्वास को दूर कर उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने का दाखिल है। भ्रष्टाचार और शोषण से महिलाओं को मुक्त करके उन्हें राजनीति के क्षेत्र में आगे बढ़ाया जा सकता है। महिलाओं का शिक्षित और संस्कारित होना आवश्यक है अत: भारतीय परिवार में नारी का सर्वप्रथम दायित्व और मातृत्व के साथ राजनैतिक कार्यकलाप का समन्वय होना अति आवश्यक है। एक सफल माँ और पत्नी की समाज और देश को सफल नेतृत्व दे सकती है।

सुझाव - भारत के संदर्भ में यदि देखें तो महिलाओं की स्थिति अत्यन्त सोचनीय है उनकी स्थिति को बेहतर बनाने के लिए निम्न सुझाव दिये जा सकते हैं :-

1. सर्वप्रथम महिलाओं के राजनीतिक स्थिति में सुधार के लिए प्रयास करने होंगे। महिला संगठनों, स्वयं सेवी संस्थाओं को इस दिशा में प्रयास करने होंगे।
2. महिलाओं को इनके कानूनी अधिकारों की जानकारी, महिलाओं का यौन उत्पीड़न रोकने के लिए सुप्रीम कोर्ट द्वरा दिये गये निर्देशों का सख्ती से पालन, शोषण, उत्पीड़न संबंधी मामलों का जल्दी निराकरण, महिला मामलों में पुलिस की पूरी सजगता महिलाओं के लिए पृथक महिला थानों की स्थापना आदि महिलाओं का शोषण रोकने के लिए आवश्यक है।
3. महिलाओं को अपनी मानसिक प्रवृत्ति में परिवर्तन लाना होगा, जिसमें उनमें आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

निष्कर्ष - महिलाएं समाज का अनिवार्य है। सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक क्षेत्र के साथ-साथ राजनीति के क्षेत्र में उनकी अहम भूमिका है। जैसे-जैसे शहरों के साथ ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं में राजनैतिक जागरूकता आ रही है, शिक्षा के प्रचार-प्रसार और बदलते सामाजिक परिवेश में राजनीति में महिलाएं आगे आ रही हैं और केन्द्रीय, प्रान्तीय, स्थानीय शासन में अपनी भागीदारी निभा रही हैं। इसलिए महिलाओं को सशक्त और सुदृढ़ बनाने पर ही समाज सुदृढ़ होगा। महिलाओं को सशक्त करने के लिए उनका शिक्षित होना आवश्यक है ताकि अपने अधिकारों को समझकर समाज एवं राष्ट्र का विकास कर सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. सत्येन्द्र नाथ मजूमदार, विवेकानंद चरित्र, प्रकाशित, 1971
2. शरदचन्द्र चक्रवर्ती, विवेकानन्द जी के संग में, प्रभाव प्रकाशन, हिन्दी।
3. सक्सेना (एल.एस.) पुस्तकालय एवं समाज, भोपाल, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2004, पृष्ठ 4-5
4. डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव, 21वीं सदी का महिला सशक्तिकरण मिथक एवं यथार्थ, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

तक्षशिला एक शिक्षा केन्द्र के रूप में

संजीव कुमार* डॉ. अजय सिंह आर्य**

* शोधार्थी(इतिहास) शासकीय पी. जी. महाविद्यालय, मुरैना (म.प्र.) भारत
** प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (इतिहास) शासकीय पी. जी. महाविद्यालय, मुरैना (म.प्र.) भारत

शोध सारांश - प्राचीन काल से हिन्दू ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा प्रदान करने के लिए विभिन्न अध्ययन केन्द्रों की व्यवस्था थी।, तक्षशिला विश्वविद्यालय प्राचीन समय से ही शिक्षा का केन्द्र था। बौद्धकाल में शिक्षा केन्द्र के रूप में इसकी बहुत ख्याति थी। तक्षशिला विश्वविद्यालय की शिक्षा द्वारा बालक की समस्त शक्तियों का सुसंगत विकास होता था, विश्वविद्यालय का सम्पूर्ण कार्यक्रम इस प्रकार व्यवस्थित किया गया था कि छात्र की सभी शक्तियों का सुसंगत विकासस्वत: हो सके। विद्यार्थियो का प्रवेश नि:शुल्क दिया जाता था। शिक्षा का माध्यम संस्कृत थी किन्तु अन्य भाषा में भी शिक्षा प्रदान की जाती थी। शिक्षा प्रणाली की दोनो धाराओं मे धर्म, दर्शन और अध्यात्म पर विशेष बल दिया जाता था और शिक्षकों एक परम कोटि का संस्कार मान हेतु अन्य संस्कारों की जननी माना जाता था। तक्षशिला विश्वविद्यालय में न्यूनतम 12 वर्ष की आयु प्राप्त कर चुके विद्यार्थियों को प्रवेश होता था और लगभग 12 से 15 वर्ष की अवधि शिक्षा पूर्ण करने में लग जाती थी प्राय: 24 से 30 वर्ष के भीतर सभी विद्यार्थी अपनी शिक्षा पूरी कर लेते थे। व्याकरण, शिल्प, चिकित्सा, हेतु विद्या (तर्क एवं दर्शन) तथा आध्यात्म, इन पांच विद्याओं का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर लेने के पश्चात इनसे सम्बन्धित उच्च शिक्षा प्रारम्भ होती थी।प्राचीन काल में जो शिक्षण विधियां प्रचलित थीं, वे आधुनिक काल की शिक्षण-विधियों के समान वैज्ञानिक थीं। आज की भांति विद्यार्थी ही केन्द्रीय स्थान रखता था, शिक्षक केवल उसका पथ प्रदर्शक होता था। शिष्य, गुरू के चरणों के निकट बैठकर धार्मिक शिक्षा ग्रहण करते थे। यद्यपि प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में धार्मिक शिक्षा की प्रधानता थी,किन्तु उसमें आजीविका सम्बन्धी शिक्षा की भी उपेक्षा नहीं की गयी थी। विद्यार्थियो के समस्त विकास पर ध्यान केन्द्रित किया जाता था।

प्रस्तावना - शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है।[1]जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करती हुई उसे विविध पक्षों के विकास का साधन बनाती है। शिक्षा ही वह जीवन मूल्य है, जो मनुष्य को अन्य प्राणियों से पृथकस्वरूप प्रदान करती है। शिक्षा के द्वारा ही समाज अपनी संस्कृति की रक्षा करता है और सभ्यता रूपी रथ को आगे बढ़ाता है। शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व का यथोचित एवं समुन्नत विकास करती है। व्यक्ति को प्रकृति प्रदत्त शक्तियों का ज्ञान कराती है। ज्ञान शिक्षा के माध्यम से ही अर्जित किया जा सकता है। ज्ञान असीमित और अथाह है। शिक्षा बहुमूल्य खजाने की कुन्जी है, जिसके द्वारा हमें भौतिक तथा आध्यात्मिक उपलब्धियां प्राप्त होती हैं। भौतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान तथा विविध दायित्वों के विधिवत निर्वाह के लिए शिक्षा की महती आवश्यकता को सदा से स्वीकार किया गया है। पेस्टालॉजी के शब्दों में, शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक सामंजस्यपूर्ण तथा प्रगतिशील विकास है।[2] वैदिक युग से ही इसे प्रकाश का स्रोत माना गया है। जो मानव के विभिन्न क्षेत्रों को आलोकित करती हुई सही दिशा-निर्देश देती है।

भारतीय शिक्षा का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है। विश्व की प्राचीन सभ्यताएं एवं सांस्कृतियां जब शैशवावस्था, में थी उस समय भारत ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में विश्व में अपनी पताका फैरा रहाथा और उच्च शिक्षा केन्द्रों की स्थापना करके अपने पार्श्ववर्ती देशों के विद्वानों-छात्रों तथा ज्ञान किरणों से पूरे संसार को अलोकित कर रहा था।यहां विभिन्न कालों में विभिन्न प्रकार की शिक्षण संस्थाएं संचालित थीं। तक्षशिला में विद्या के केन्द्र आश्रम या गुरुकुल थे, जिसमें विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त करने के लिए दूर-दूर से आते थे। सुदीर्घकाल तक ये गुरूकुल ही शिक्षण संस्थाओं के रूप में कार्य कर रहे थे। कालान्तर में राज्य की राजधानियों या प्रसिद्ध स्थलों पर सार्वजनिक शिक्षण संस्थाओं का उदय हुआ। राजा व सामन्त विद्या को प्रोत्साहन देते थे तथा विद्वानों को राज्य सरंक्षण दिया जाता था, इनंशिक्षण संस्थाओं में तक्षशिला, पाटलिपुत्र, कन्नौज, मिथिला, कल्याणी, तन्जौर आदि प्रमुख थे।

भारतीय इतिहास से प्राप्त स्त्रोतो के आधार पर सर्वप्राचीन विश्वविद्यालय उस युग में आधुनिक रावलपिण्डी नगर (वर्तमान में पाकिस्तान) से बीस मील दूरी पर उत्तर-पश्चिम में अवस्थित तक्षशिला विश्वविद्यालय था। तक्षशिला प्राचीन समय में गान्धार राज्य की राजधानी थी। वाल्मीकि रामायण के अनुसार 'तक्षशिला तु पुश्कल पुश्कलावते गन्धर्व देशों,रूचिरे, गान्धार विषये च स:।' अर्थात भरत ने गन्धर्वो को हराकर इस देश के पूर्वी और पश्चिमी भागों में पुष्कलावत एवं तक्षशिला नगरों को अपने पुत्र पुष्कल एवं तक्ष के नाम पर बसाया था। महाभारत में पता चलता है कि परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने इसे जीता था और यही अपना प्रसिद्ध नागयज्ञ किया था।[3] प्राचीन भारत में यह स्थान एक सुविख्यात शिक्षा केन्द्र था।[4]आज तक्षशिला के उस महान विश्वविख्यात विश्वविद्यालय के स्थान पर खण्डहर एवं वीरान स्थान है।

विश्व की प्राचीन सभ्यताएं एवं संस्कृतियां जब अपने शैश्वावस्था में थी, उस समय भारत ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में शिखर आरूढ़ था।[5]प्राचीन भारतीय मनीषियों ने इस तथ्य को भलीभांति हृदयंगम किया था और इसीलिए

सुदूरअतीत में भी शिक्षा की सुन्दर व्यवस्था दृष्टिगोचर होती है।किसी भी राष्ट्र का आदर्श उसकी शिक्षण-संस्थाओं में ही प्रतिबिम्बित होता है। प्राचीनकाल में यह बात विशेषतया यथार्थ थी,क्योंकि उस काल में उदीयमान संतति को राष्ट्रीय परम्पराओं के रंग में रंगने तथा तदानुकूल आचरण के लिए प्रोत्साहित करने के प्रधान केन्द्र विश्वविद्यालय ही थे।प्राचीन काल में हिन्दू ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा प्रदान करने के लिए विभिन्न अध्ययन केन्द्रों की व्यवस्था थी। वैदिक युग में तो गुरूकुल ही शिक्षा प्रदान करने की लिए प्रधान-केन्द्र थे। अरण्य जैसे एकान्त स्थल बृह्मर्षियों की साधन भूमि थे, जहां विद्यार्थी गुरू की सेवा करते हुए अध्ययनरत रहता था। किन्तु कालान्तर में आकर विशाल एवं भव्य शिक्षा केन्द्रों का विकास हुआ। ऐसे शिक्षा केन्द्रों के विकास में विद्धान राजाओं का सहयोग प्रमुख था, जिन्होंने आर्थिक सहायता प्रदान कर ऐसे शिक्षा केन्द्रों के उन्नयन में उल्लेखनीय कार्य किया। प्रमुख राजधानियों और बड़े-बड़े नगरों के अतिरिक्त छोटे-छोटेगांव भी शिक्षा के केन्द्र थे। ऐसे गांव अग्रहार कहे जाते थे, जिनकी व्यवस्था के लिए राजा की ओर से कुछ गाँव विद्धान शिक्षक ब्राह्मण को प्रदान कर दिये जाते थे। बौद्ध विहारों की तरह हिन्दू मन्दिर भी शिक्षा के केन्द्र के रूप में विकसित हुए। काशी, कर्नाटक, नासिक, नालन्दा जैसे नगर अपने आप विद्या के केन्द्रों के रूप में परिवर्तित होकर विख्यात हुए। तक्षशिला, पाटलीपुत्र, कन्नौज, धारा,अनहिलपाटन नामक विभिन्न राजधानियां भी प्रधान शिक्षा-केन्द्रों के रूप में पहचानी गई।शिक्षा के सम्बन्ध में भारत कीख्याति अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर थी। कोरिया,चीन, तिब्बत, जापान, मध्य एशिया के अनेक देशों के विद्यार्थी इनउच्च स्तरीय शिक्षण संस्थानों में अध्ययन हेतु आते थे। प्रवेश प्रक्रियापरीक्षण आधारित होने के उपरान्त भी जाति-पाति, ऊँच-नीच,पृश्य-अस्पृश्य आदि को बन्धन से मुक्त थी। परम्परागत प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली उच्च आदर्शो से प्रेरित होकर मानव मात्र में देवीय अनुभूतियों का संचार करती थी।चीनी यात्रियों के विवरण के आधार पर स्पष्ट होता है कि धीरे-धीरे तक्षशिला बौद्ध धर्म के एक केन्द्र के रूप में भी विकसित होना लगा था और इसी कारण यहां अनेक मठ, बिहार एवं स्तूपों के उल्लेख मिलते है। यहां का एक प्रसिद्ध स्तूप धर्मराजिका का स्तूप है।साहित्यिक साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि इस स्तूप का निर्माण अशोक के राज्यकाल में हुआ था। अशोक ने तत्कालीन विशिष्ट नगरों में स्तूपों का निर्माण कराया था। यह नगर अशोक के राज्य के उत्तर-पश्चिम प्रान्त का सबसे प्रमुख नगर था इसलिए अशोक ने तक्षशिला में भी स्तूप का निर्माण कराया था। इस नगर के स्तूपों में धर्मराजिका स्तूप सबसे महत्वपूर्ण है।तक्षशिला की पुरातत्व सामग्री के अध्ययन से पता चलता है कि विदेशी शासकों के शासन काल में यह एक कला केन्द्र के रूप में भी विकसित हुआ। यहां पर भारत की प्रसिद्ध गांधार कला का उद्भव हुआ था। चूंकि यहां यूनानी, पारसिक, शक, पहलव एवं कुषाण अनेक विदेशी शक्तियो का प्रभाव रहा था, इसीकारण इसकी कला के ऊपर पाश्चात्य प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

शिक्षा व्यवस्था – तक्षशिला विश्वविद्यालय प्राचीन समय से ही शिक्षा का केन्द्र था। बौद्धकाल में शिक्षा केन्द्र के रूप में इसकी बहुत ख्याति थी। जॉन मार्शल के नेतृत्व में किये गये उत्खननों से पता चलता है कि ई0 पू0 पांचवी शताब्दी से लेकर ई0 सन् की पांचवी शताब्दी तक तक्षशिला में निरन्तर नगरीय जीवन शैली विद्यमान थी। विभिन्न स्थानों के प्रतिभाशाली विद्यार्थी यहां के आचार्यो के ज्ञान-प्रभा से अपनी शंकाओं को मिटाकर ज्ञान प्राप्त करते थे। तक्षशिला विश्वविद्यालय की ख्याति केवल भारत में ही नहीं थी अपितु विश्व में थी। चीन, यूनान, सीरिया, बेबीलोन आदि से छात्र ज्ञान प्राप्ति के लिए यहां आया करते थे। तक्षशिला विश्वविद्यालय में चाण्डालों को छोड़कर अन्य सभी जातियों के विद्यार्थी प्रवेश पा सकते थे। उच्च शिक्षा का माध्यम संस्कृत भाषा थी,किन्तु जब प्राकृत एवं अन्य देशी भाषाओं का विकास हो गया तो अध्ययन में उनकी सहायता भी ली जाती थी। सम्पूर्ण भारत के अग्रणी विद्धान विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ के रूप में अध्यापन कार्य कराते थे।यहां के शिक्षक किसी एक विषय अथवा विषय समूह के पूर्ण ज्ञाता एवं विशेषज्ञ होते थे। अपने विषय की उच्च शिक्षा ये स्वतन्त्र रूप से अपने निवास स्थान पर ही संचालित करते थे, विशेषीकृत शिक्षा प्रदान की जाती थी। ये आचार्य न तो किसी संस्था से संयोजित थे, न संचालित थे और न स्वीकृत थे। गुरूकुलों में शिक्षको की संख्या और विषय गिने चुने होते थे किन्तु तक्षशिला में शिक्षकों की संख्याहजारों में थी वैसे विषयों का विभाजन भी अनेक विधाओं में-भाषा साहित्य, छंद व्याकरण, आयुर्वेद, धनुर्वेद नौकायन, आयुध शास्त्र आयुष विज्ञान इत्यादि में किया गया था।व्याकरण, शिल्प, चिकित्सा, हेतु विद्या (तर्क एवं दर्शन) तथा आध्यात्म, इन पांच विद्याओं का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर लेने के पश्चात इनसे सम्बन्धित उच्च शिक्षा प्रारम्भ होती थी। व्याकरण की उच्च शिक्षा में साहित्य की शिक्षा भी सम्मिलित थी। आचरण सम्बन्धी व्यावहारिक शिक्षा, शिक्षक की विभिन्न सेवाओं में स्वभावत: होती रहती थी। नैतिक समुन्नति के लिए आत्म चिन्तन भी एक माध्यम था, जो मौन चिन्तन, बैठकर, खड़े होकर अथवा आगे-पीछे स्वतन्त्रतापूर्वक घूमकर किया करते थे। नैतिक नियमों की अवहेलना पर दण्ड निर्धारित थे, जो अपराध के अनुपात में हल्के या कठोर हुआ करते थे।आचार्य अध्ययनरत विद्यार्थियों का सहयोग व सहायता नये विद्यार्थियों की देखरेख में लेते थे। तक्षशिला में आचार्य की अनुपस्थिति में उनका अग्र शिष्य ही गुरूकुल का प्रधान होता था। उदाहरणार्थ गुरू के राजकुमार सुतसोम जो तक्षशिला विश्वविद्यालय के वृद्धतर ब्रह्मचारी विद्यार्थी थे, काशी के युवराज को पढ़ाते थे। तक्षशिला विश्वविद्यालय की महत्ता का वर्णन करते हुए श्री के0 एस0 वकील ने लिखा है कि 'तक्षशिला विश्वविद्यालय हिन्दू संस्कृति का केन्द्र था जहां सैकड़ों की संख्या में छात्र एवं शिक्षक न केवल भारत के कोने-कोने से अपितु एशिया के देशों से आते थे।' तक्षशिला के लक्ष्यों कों स्पष्ट करते हुए, श्री ए0एस0 अल्तेकर ने लिखा है 'ईश्वर भक्ति और धार्मिक भावना, चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास नागरिक और सामाजिक कर्त्तव्यों का पालन, सामाजिक कुशलता की उन्नति और राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण तथा प्रसार प्राचीन भारतीय शिक्षा के उद्देश्य थे।'[6]तक्षशिला मे विद्यार्थी को परा और अपरा दोनो पक्षों के विकास हेतु शिक्षा दी जाती थी परा का अर्थ था कि ज्ञान कर्म तथा उपासना व्रत ब्रह्मचर्य द्धारा मोक्ष की प्राप्ति जबकि अपरा का अर्थ या छात्र का नियोजित समाजीकरण करना था। जिससे कि वे सामाजिक संगठन और व्यवस्था मे स्वयं का समावेशीकरण कर सकें। इस प्रकार स्पष्ट है कि तक्षशिला मे शिक्षा दो उद्देश्यों को दृष्टिगत रखकर प्रदान की जाती थी प्रथम आत्मानुभूति जिसके लिए पूरा विद्या का ज्ञान आवश्यक थी द्धितीय आत्मभिव्यक्ति का उद्देश्य जिसमे विद्यार्थियों के सामाजिक और भौतिक पक्षों का उन्नयन निहित था। दोनो पक्षों के समुचित उन्नयन हेतु छात्रों के शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास पर विशेष बल दिया जाता था। शैक्षिक उद्देश्यों को लेकर नालन्दा विश्वविद्यालय और तक्षशिला विश्वविद्यालय की शैक्षिक प्रणाली में कोई विशेष अन्तर नहीं है। अन्तर इतना है कि तक्षशिला मे विद्यार्थी के आध्यात्मिक उन्नयन और विकास पर

ज्यादा ध्यान केन्द्रित किया जात था।

शिक्षा का मूल स्वरूप – तक्षशिला की शिक्षा का मूल स्वरूप पूर्णतया आध्यात्मिक था और अपने छात्रों की पारलौकिक उन्नति करने हेतु यहाँ पर दी जाने वाली उच्च शिक्षा विन्यासित थी। तक्षशिला मे पृथक–पृथक गुरू पृथक–पृथक विषयों की शिक्षा देने के लिए सुविख्यात थे। अत: विशेषीकरण की अभिलाषा लेकर ही विद्यार्थी यहाँ प्रवेश लेता था। व्याकरण, चिकित्सा और सैन्य शिक्षा के लिए तक्षशिला प्रसिद्ध था। यहाँ वेद, व्याकरण, दर्शन और 18 शिल्पों की शिक्षा दी जाती थी। 18 शिल्पों में मुख्यत: चिकित्सा, शल्य विज्ञान, सैन्य शिक्षा, नक्षत्र विज्ञान, ज्योतिष, गणना विद्या, वाणिज्य, कृषि, जादू,सर्प विद्या, संगीत, नृत्य, चित्रकला आदि सम्मिलित थे। छात्रों गुरू शिष्य परम्परा के आधार पर ज्ञान प्रदान किया जाता था इसका मुख्य कारण मुद्रित पुस्तकों का अभाव था। गुरू शिय के सम्मुख वैदिक मंत्रों का पाठ करता था, उनकी व्याख्या करता था तथा अपना मत व्यक्त करता था। उसका मुख्य ध्येय छात्रों के द्वारा वैदिक मंत्रों का सही ढंग से समझना था। गुरु, शिष्यों को तीन कोटियों मे विभक्त कर लेता था महाप्रज्ञ अर्थात सबसे योग्य मानसिक क्षमता वाले छात्र मध्य प्रज्ञ अर्थात औसत मानसिक स्तर के छात्र अल्प प्रज्ञा अर्थात निम्न मानसिक योग्यता वाले छात्र। उनकी वैयक्तिक भिन्नता का अभिज्ञान करवाते थे। सम्पूर्ण शिक्षण विधि मौखिक थी और छात्र अपनी व्यक्तिगत अभिक्षमता के आधार पर विषय वस्तु का श्रवण, मनन चिन्तन करते थे। शिक्षण हेतु गुरू आवश्यकतानुसार प्रश्नोत्तर कहानी, कथानक, व्याख्यान, वाद–विवाद तथा क्रियात्मक विधियों का प्रयोग करते थे। श्रुति भी प्रचलित थी स्वाध्याय विद्यार्थी स्वयं चिन्तन, मनन, करके ज्ञान प्राप्त करता था जबकि श्रुति विधि मे वह दूसरों से सुनकर ज्ञान पिपासा शांत करता था।उच्च शिक्षा का शिक्षण माध्यम संस्कृत भाषा थी।[7]

शैक्षिक अनुशासन– अनुशासन और दण्ड व्यवस्था को लेकर अन्तर–तक्षशिला की शिक्षा प्रणाली वैदिक शिक्षा प्रणाली का अनुरूप थी। यहाँ प्रवेश लेने की उपरान्त विद्यार्थी को कठोर नियमों तथा अनुशासन में रहना पड़ता था।छात्रों को ब्रह्मुहूर्त मे उठना अनिवार्य था नित्य प्रति के कर्मो का निष्पादन करने के उपरान्त ही विद्यार्थी विद्यार्जन के लिए गुरू के सम्मुख उपस्थित होता था उसकी दिनभर चलने वाली दिनचर्या पूरी तरह से सुनिश्चित थी जिसमें किसी ठोस कारण के शिथिलता बरतना अनुशासन हीनता की श्रेणी मे आता था जिसके लिए दण्ड विधान भी निश्चित था।

दण्ड का स्वरूप – दण्ड का स्वरूप बहुत अधिक कठोर नहीं था शारीरिक दण्ड देने से आचार्य बचते थे। उपवास, उपदेश,समझाने बुझाने पर ही ज्यादा जोर रहता था। गम्भीर अपराध के लिए उद्दालत व्रत का पालन करने का दण्ड दिया जाता था जिससे विद्यार्थी को तीन माह तक अत्यन्त अल्प आहार पर रहकरआत्म शुद्धि करनी होती थी दो माह तक जौ का माड़ एक माह तकदूध पन्द्रह दिन तक छेन्ना आठ दिन तक धृत छ: दिन तक बिन मांगीभिक्षा, तीन दिन तक केवल पानी पीकर गुजारा करना पड़ता था तथाएक दिन निराहार रहना पड़ता था, छात्रों द्वारा सम्पत्ति रखने,गाली–गलौज तमाशा देखना, हानिप्रद खेलों में भाग लेना पूर्ण तथानिषिद्ध था। जो छात्र निषिद्ध कार्य करते थो उन्हे दण्ड भी दिया जाताथा नालन्दा का दण्ड विधान तक्षशिला के दण्ड विधान से अत्यतं कठोर था। छात्रों के नैतिकउन्नयन पर विशेष ध्यान दिया जाता था इसलिए यहाँ छात्र औरशिक्षक दोनो के लिए आत्मनिरीक्षण और स्वदोष अनुभूति के अनुशासनप्रक्रम का अनुपालन अनिवार्य था।

गुरू का स्थान – तक्षशिला विश्वविद्यालय मेवैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली की भांति गुरू का स्थान अत्यन्त पवित्र एवं देवतुल्य था। उसे विद्यार्थी का मानसिक पिता होने का गौरव प्राप्तथा गुरू का आदेश ही छात्र जीवन का मूलमंत्र था और वह हर प्रकारसे उसे आदेश का अनुपालन सुनिश्चित करना अपना धर्म समझताथा। नालन्दा विश्वविद्यालय मे भी गुरू की श्रेष्ठता व पवित्रता विद्यमानथी किन्तु तक्षशिला की तुलना मे गुरू का महत्व थोड़ा कम हो गयाथा क्योंकि विश्वविद्यालय मे प्रवेश के उपरान्त छात्र पूर्ण स्वतन्त्रता औरजीवन सम्बन्धी अधिकारों का उपभोग करने लगता था और शिक्षण भी प्राय: सामूहिक ही हुआ करताथा।

शिक्षा का स्वरूप– तक्षशिला विश्वविद्यालय की शिक्षा द्वारा बालक की समस्त शक्तियों का सुसंगत विकास होता था, विश्वविद्यालय का सम्पूर्ण कार्यक्रम इस प्रकार व्यवस्थित किया गया था कि छात्र की सभी शक्तियों का सुसंगत विकास स्वत: हो सके। शारीरिक श्रम के इतने कार्य प्रत्येक छात्र को नित्य करने होते थे कि भरपूर शारीरिक व्यायाम हो जाता था। शारीरिक शिक्षा उसी तरह थी जैसे फूलों में सुगंध। पंतजलि ने विश्व को राजयोग दिया। रामायण तथा महाभारत में भी स्पष्ट उद्देश्य है कि उस समय भी शारीरिक क्रियाकलाप/श्रम होते थे। विविध प्रकार के वाद–विवाद एवं शास्त्रार्थ के माध्यम से मानसिक एवं बौद्धिक विकास तो होता ही था, साथ ही गुरूकुल प्रणाली में गुरू के परिवार का अंग होने के कारण बालक का भावात्मक विकास भी स्वत: ही हो जाता था। चीनी यात्री हवेनसांग, इत्सिंग ने अपने इतिहास वृन्तांतो मे लिखा है कि उस समय कई प्रकार के शारीरिक, कलात्मक व अन्य क्रियाकलाप प्रचलित थे। प्रकृति के सानिध्य में रहने के कारण बालक में सौन्दर्यानुभूति का गुण स्वत: विकसित हो जाता था तथा व्यवसायिक शिक्षा का प्रावधान करके बालक में जीविकोपार्जन की क्षमता का भी विकास किया जाता था। गुरु शिष्य के बौद्धिक, शारीरिक और आध्यात्मिक विकास के लिए पूर्णत्या उत्तरदायी थे।[8]तात्पर्य यह है विश्वविद्यालय की शिक्षा व्यवस्था में जीवन के हर सम्भव पक्ष के यथेष्ट विकास का प्रयास किया जाता था।

नि:शुल्क शिक्षा – प्राचीन भारत में शिक्षा नि:शुल्क थी और अपना परिष्कार करने का सभी को समान अधिकार प्राप्त था। सुभाषित रत्न भण्डार में कहा है कि जन्म से सब शूद्र होते हैं, विद्या से परिष्कृत होकर द्विज बनते हैं, अत: विद्या प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार था, फिर चाहे वह धनी हो या निर्धन, उच्च वर्ग का हो अथवा निम्नवर्ग का, पुरूष हो या स्त्री–सभी के लिए शिक्षा की व्यवस्था की गयी थी। तक्षशिला विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने का कोई शुल्क नही लिया जाता था, क्योंकि ब्राह्मण संस्कृति एवं विद्या के प्रहरी माने जाते थे,शिक्षा ग्रहण करने योग्य सभी बालकों को शिक्षा देना, उनका अनिवार्य धर्म होता था, यदि कोई आचार्य शुल्क के लिए शिक्षण कार्य करता था तो उसे महान 'पातली' समझा जाता था। धनी–निर्धन दोनों प्रकार के छात्र समान रूप से गुरू के शिष्य हो सकते थे। शिक्षा समाप्त करने के पश्चात शिष्य अपनी सामर्थ्य के अनुसार गुरू को दक्षिणा देता था। वह गुरू दक्षिणा के रूप में धन, पशु, भूमि, अन्न कुछ भी दे सकता था। गुरू केवल धनी शिष्यों को छोड़कर शेष से इतनी दक्षिणा नहीं लेता था कि उस दक्षिणा को शिक्षक का पर्याप्त पारिश्रमिक कहा जा सकता हों। कुछ निर्धन विद्यार्थी सेवा करके गुरू दक्षिणा प्रदान करते थे। इस प्रकार तक्षशिला विश्वविद्यालय में अध्ययन–अध्यापन का उद्देश्य ज्ञान प्रदान करना था न कि उसे अर्थोपार्जन का माध्यम बनाना ।

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

प्रवेश के नियम – तक्षशिला मे प्रवेश के लिए विद्यार्थी की कम से कम 16 वर्ष की आयु का होना आवश्यकत था। विद्यार्थी या तो प्रवेश के समय सहस्त्र मुदाएं देता था अथवा शिक्षा प्राप्ति के उपरान्त। मुद्रा देने मे असमर्थी होने पर गुरू सेवा द्धारा भी शिक्षा प्राप्त की जा सकती थी।प्रवेश के लिए जाति बन्धन नहीं था विद्यार्थियों के आवास और भोजन की व्यावस्था शिक्षक ही करते थे जातकों के अनुसार कुछ धनी विद्यार्थी स्वयं अपने रहने की व्यवस्था कर लेते थे तक्षशिला की तुलना में नालन्दा वि0 वि0 में प्रवेश जाना अत्यन्त जबकि कठिन था प्रवेश हेतु द्धार पंडित द्धारा कठिन परीक्षा ली जाती थी 10 विद्यार्थियों मे से एक या दो का ही प्रवेश हो पाता था प्रवेश के समय विद्यार्थी की न्युनतम आयु 20 वर्ष निश्चित थी।

गुरू शिष्य सम्बन्ध– प्राचीन भारतीय शिक्षा सर्वश्रेष्ठ विशेषता गुरू शिष्य सम्बन्ध थी। तक्षशिला मे गुरू शिष्य का सम्बन्ध अत्यन्त मधुर, पवित्र, श्रेष्ठ एवं व्यक्तिगत था उसमे संस्था की भूमिका गौण थी अपितु दोनो के सम्बन्धों का आधार उनके पारस्परिक कर्तव्य थे। शिष्य गुरू का हृदय से सम्मान करते थे और उनकी हर एक आज्ञा का पालन करना अपना धर्म समझते थे शिष्य की नजरों में गुरू का स्थान राजा, देवता, माता–पिता से भी उच्च था। शिष्य आचार्य की सेवा करना अपना प्रथम कर्तव्य समझते थे वही गुरू भी अपने छात्रों को पुत्रवत मानकर उनके साथ स्नेह का व्यवहार करता था। वह अपने छात्रों के शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक उन्नति हेतु सदैव प्रयत्नशील रहता था। तक्षशिला विश्वविद्यालय मे शिक्षकों के रूप में ब्राह्मणों का आधिपत्य था। इसको इस प्रकार से समझा जा सकता है कि शिक्षक होने के लिए ब्राह्मण होना अनिवार्य था।

संस्कृति का संवर्धन – तक्षशीला विश्वविद्यालय के माध्यम से देश की संस्कृति का विकास व संर्वधन दोनो होता था। किसी देश की पहचान उसकी संस्कृति से होती है। संस्कृति में अन्तर्निहित विचारों, अनुभूतियों, आदर्शो, आस्थाओं, मूल्यों एवं सौदर्य बोध आदि का समावेश होता है।शिक्षा इसी संस्कृति के हस्तांतरण, संरक्षण एवं संवर्धन का प्रमुख साधन है। अत: किसी भी देश की शिक्षा उस देश उस देश की संस्कृति पर ही आधारित होती है। रवीन्द्र नाथ टैगोर का कहना है कि सम्प्रेषण केवल जीवित अभिकरणों के द्धारा संभव होता है और संस्कृति जो कि बौद्धिक एवं आध्यात्मिक जीवन है, जीवित अभिकरणों के माध्यम से प्रदान एवं प्राप्त की जा सकती है। संस्कृति व्यक्ति से व्यक्ति के सम्पर्क द्धारा प्रदान की जाती है जिसमें भाषा की भूमिका अति महत्वपूर्ण होती है।[9]संस्कृति पर बल देने के कारण ही यहां की शिक्षा का उद्देश्यमात्र केवल पढ़ना नहीं अपितु अनुभव प्राप्त करना था, ज्ञान को आत्मसात करना था।[10]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि शिक्षा के माध्यम से बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण संतुलित विकास करना ही तक्षशिला विश्वविद्यालय की शिक्षा–व्यवस्था का प्रधान ध्येय था। तक्षशिला विश्वविद्यालय की शिक्षा में केवल आध्यात्मिक, धार्मिक, चारित्रिक एवं सामाजिक उन्नयन के लिए ही शिक्षा की व्यवस्था नहीं थी,अपितु मानव की भौतिक समृद्धि की प्रगति के लिए भी यथेष्ठ शिक्षा की व्यवस्था थी। इस का प्रमाण इस से तथ्य से लगया जा सकता है कि शिक्षा के क्षेत्र में आज भी ऐसे अनेक कार्य सम्पन्न किये जा रहे हैं जो तक्षशिला विश्वविद्यालय की शिक्षा का हिस्सा थे। सारत :तक्षशीला विश्वविद्यालय भारतीय शिक्षा का महान प्रकाश स्तप्भ था जिसने पूरे भारत और पश्चिमी तथा दक्षिण पूव्र एशिया और यूरोप का अपने प्रकाश पुंज से प्रकाशित किया।आधुनिक भारतीय शिक्षा को बौद्ध शिक्षा का योगदान अत्यन्त व्यापक तथा अभिनन्दनीय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. अधिगम का आंकलन एवं क्रियात्मक अनुसंधान डॉ0 डी0पी0 मिश्रा एवं लाल बुक डिपो पृ0सं0 316।
2. ए0आर0 स्वरूप सक्सेना एवं डॉ0 डी0पी0 मिश्रा।
3. मार्शल जॉन, गाइड टू तक्षशिला कैम्ब्रिज
4. कृष्ण कुमार प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति सरस्वती सदन दिल्ली 1999 पृ0 337
5. डॉ0 डी0पी0 मिश्रा ज्ञान एवं पाठ्यक्रम आर0 लाल बुक डिपो मेरठ पृ0सं0 94।
6. तोमर लज्जाराम भारतीय शिक्षा मूलतत्व पृ0 15
7. पन्त दयानन्द शब्द का उदय विकास एवं अनुप्रयोग पृ0 60।
8. शर्मा उमारानी शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार 2013 पृ0 1971
9. शर्मा उमारानी शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार 1993 पृ0 1971
10. चौबे एस0पी0 फिलोसॉफिकल एण्ड सोसियोलाजिकल फाउण्डेशनल ऑफ एजुकेशन 2007 पृ0 336

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

A Comparative Study of Profitability of Private and Public Sector General Insurance Business in India from the Year 2007-08 to 2020-21

Dr. P. K. Sanse* Ekta Pandey**

*Professor (Commerce) Bherulal Patidar Govt. PG. College, Mhow (M.P.) INDIA
** Research Scholar (Commerce) Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore (M.P.) INDIA

Abstract - General insurance is an important service industry. It is not simply the business proposition.It provides a risk free life to an insured person. The Insurance companies cover all the risk and uncertainty and thus the need and importance of General Insurance Business are prime work for everyone. If there are no insurance then the risk are not covered by anyone. But still most people don't realize the importance of insurance in their life. This is also the reason that most of the time, they require facing problems. Any emergency that strikes can wipe off all the savings instantly. Hence, it is important to take measures against these emergencies as soon as possible, and everyone should take the necessary policy relating to their assets. Today India is one of the fastest growing economics of the world. The overall insurance penetration (premiums as % of GDP) was 4.2% in financial year 2021, which was a huge underserved market. This research study has been done with four private sector companies and four public sector companies of India from the year 2007-08 to 2020-21.Insurance is a capital consuming financial service. Thus the present research study is very helpful to understand the level of profitability of both the sectors from the year 2007-08 to 2020-21. This research study has important findings, that private sector general insurance companies showing decrease in profits whereas public sector companies are showing losses. The public sector general insurance industry in India showing lack of sufficient capital to run the business.
Keywords- General insurance, profitability, insurance industry, private sector, public sector, comparative.

Introduction - The world where we live is full of uncertainties. Every day we read about accidents happening around us or about the natural disasters that affect many people. Nobody knows what will happen tomorrow. The impact of risk can be minimized by transferring the risk to a third party. This is where insurance comes into picture. The Insurance companies cover all the risk and uncertainty and thus the need and importance of General Insurance Business are prime work for everyone. If there are no insurance then the risk are not covered by anyone. General Insurance policies are definitely very important for ensuring a happy and secure life. So it is important to know about the general insurance companies of both the sectors. The profitability of both the public and private sector general insurance companies in India.

Profitability is a situation in which any company is generating a profit. Profitability will arise only when the aggregate amount of all revenues are greater than the aggregate amount of all expenses of a period. The two key aspects of profitability are revenues and expenses. Revenues that comes in the business and expenses are that amount paid off to run the business. The main revenue of general insurance companies are premium. Here the study considered total net premium earned as operating income of all the selected private and public sector general insurance companies.

The main source of income in all trading and manufacturing companies are their net sales. Here the study is about general insurance which is service industry. Net premium earned amount of private and public sector general insurance companies are the main source of income of this service industry. This is shown here as operating income of the companies. To find out profitability ratios, this operating income considered as basic income (i.e. denominator represents the operating income amount).

The research study is presented with the help of trend and ratio based analysis. The trend analysis covers all the important aspects of all companies. The first row of a company of trend analysis table is showing amount in 100 crore and second row showing % increase or decrease as compared to 2007-08. The year 2007-08 is assumed as base year. The next all years showing data which are deducted from 100. Third row showing % increase or decrease as compared to previous year. Annual Average growth rate

(AAGR) of a particular company also find out to see the average growth rate annually of a company and total of private and public company also.The tables shows ratios in percentage (%) of four public sector companies and four private sector companies, from the year 2008-09 to 2020-21. The table shows every year ratio as well as average of annual average growth rate of four private sector companies and four companies from public sector.

General insurance in India - The origin of General Insurance in India was with the British occupation. So today it can be said that this service industry in India is a legacy of the British. In **1850**, General insurance in India has its roots in the establishment of Triton Insurance Company Ltd., was the first general insurance company established in Calcutta by the British.

The origin of India's insurance industry reflects the origin of India's economy. The insurance industry in India has also grown along with the country's economy. In **1972**, with the passing of the General Insurance Business (nationalisation) Act, general insurance business was nationalized in India with effect from 1st January 1973.

The aim of nationalization of the general insurance business of India was in order for government to better serve the country's economic needs and those of its citizens. At that time total 107 insurers were amalgamated and grouped into four companies named as- National Insurance Company, New India Assurance Company, Oriental Insurance Company and United India Insurance Company and located in four different mainly large cities in India.

Insurance Regulatory and Development Authority Act (IRDA) came into effect in the year 1999. The act was very helpful in insurance sector that it allowed foreign players also to collaborate with Indian entities to enter in insurance sector. The number of general insurance companies in India has increased quickly and they provides their services with more variety for the consumer.

In December **2000**, the subsidiaries of the General Insurance Corporation of India were restructured as independent companies and at the same times GIC was converted into a National re- insurer company. Today there are 34 general insurance companies. Total public sector companies are six including the ECGC and Agriculture Insurance Corporation of India and 4 stand-alone health insurers operating in the country.

Review of literature

There are various review of literature has been done for this study. Some of them are discussed below:-

D. SHREEDEVI & D. MANIMEGALAI (2013) in the research journal title "**A COMPARATIVE STUDY OF PUBLIC AND PRIVATE NON-LIFE INSURANCE COMPANIES IN INDIA**". According to this research comparatively public sectors firms have done well mostly because of their aggressive pricing and the retention of business. New India Assurance in PSU companies and ICICI Lombard in private companies will continue to hold the leadership position for the next few years. The Indian general insurance market is relatively underdeveloped. Compared to the other countries it is still at a budding stage, which indicates the potential opportunities available for the players. Higher disposable incomes, rising aspiration of the people and growing awareness about need for insurance are some of the factors that would continue to drive the growth of the insurance sector in India in the coming decade.

JAGENDRA KUMAR (2004), in the paper **"CHANGING SCENARIO OF INSURANCE INDUSTRY",** reports that private insurance companies can give good competition to the public sector undertakings (PSUs) in terms of customer orientation and quick settlements. There is a big scope for financiers to look a good fee based income by becoming corporate agents. Before the industry was opened up, the four public sector insurance companies were underwriting rs. 14000/- crores premium a year. So far, the eight private insurers had taken away only 14% of the business. He further states that, insurance companies are today looking at different segments where there is business potential and are trying to customize policies to suit the specific needs of their clients.

DR. N. M. LEEPSA ANDDR. SABAT KUMAR DIGAL (2013) in his paper "THE INSURANCE INDUSTRY IN INDIA: A COMPARATIVE ANALYSIS OF THE PRIVATE AND PUBLIC PLAYERS" find out the current scenario of public and private sector general insurance companies in India from 2000-01 to 2013-14. This research paper covers all insurance industry life and non-life insurance industry. This paper makes Comparison of Public and private sector non-life insurance business as well as life insurance in India.The paper probes in to the Indian Economy and observes the characteristics of Insurance Industry in India based on Strength of Insurance Industry in India and Weakness of Insurance Industry in India. After analysis of data it is find in this paper that though we have progressed yet there is dominance of LIC in life insurance and the private players in the non-life segment. Moreover, the professionalism and customer centric approach of the private players is yet to bring in substantial revenue and break the hegemony of LIC and GIC. People still trust the Government companies over private players in India. This is due to the after sale service and too much of profit oriented approach of the existing private players. This paper investigated the performance corresponding to the parameters relevant to insurance industry. This paper developed a comparative framework that can compare between the status of public and private insurance companies currently involved in doing insurance business in India. In life and non-life insurance, public sector firm is doing better than the private sector insurance firm. It is because of their dominance in market and reliability of customers on the public firms. These are the results from the analysis are in broad agreement with the main findings of this study.

Objective of the study- The objective of this research paper are as below:

1. To study the theoretical description of General Insurance business in India.
2. To analyze the profitability of General Insurance business in India.
3. To understand the problems faced by General Insurance business in India.

Hypotheses of the study - Profitability of public sector general insurance companies are increasing than private sector general insurance companies.

Research methodology - The data are presented through simple classification and with help of percentage, annual average growth rate, ratio and trend. Trend analysis is on the basis of percentage increase and decrease on the basis of the year 2007-08 and another on the basis of previous year. Annual average growth rate are also apply on this analysis. The hypothesis are tested withheld of standard ratios relating to these units. This research study is relating to selected private and public sector companies. Thus it is based on sampling method. Investigation. Secondary data has been used in the form of annual report of the companies.

List of selected private sector companies included in the present study:

1. Bajaj Allianz General Insurance Company Limited
2. Icici General Insurance Company Limited
3. Royal sundaram General Insurance Company Limited
4. Star Health and Allied Insurance Co Ltd.

List of selected public sector companies included in the present study:

1. The New India Assurance Company Ltd.
2. The United India Insurance Company Ltd.
3. The Oriental Insurance Company Ltd.
4. Agriculture Insurance Company of India Limited (AIC)

Following are the tables for trend analysis and ratio analysis for the profitability of general insurance companies:-

Table 1 (See in last page)

Explanation – As per the above table Annual Average Growth Rate of AIC is 20.02 which is highest among all companies. Annual Average Growth Rate of total of public co. is 13.62

Table 2 (See in last page)

Explanation – As per the above table Annual Average Growth Rate of Star health shown 37.90 which is highest among all companies. Annual Average Growth Rate of total of private co. are showing 15.96

Trend analysis (See in last page)

Explanation – As per the above table Annual Average Growth Rate of AIC shown 20.97 which is highest among all companies. Annual Average Growth Rate of total of public co. are showing 13.55

Table 4 (See in last page)

Explanation – As per the above table Annual Average Growth Rate of Royal sundaram shown 47.98 which is highest among all companies. Annual Average Growth Rate of total of private co. are showing 27.48

Trend analysis (See in last page)

Explanation – As per the above tablethe trend has showed very ups and down. Annual Average Growth Rate of AIC shown 13.23 which is highest among all companies. Annual Average Growth Rate of total of public co. are showing -26.52

Some important Profitability ratios with the formulas

Table 1 (See in last page)

Net claim Ratio = Net claim / Operating income*100

Net claim is one of the important operating expenses of the general insurance company. The annual average growth rate of net claim ratio shown negative in icici co. from private and negative in NIA and UII in public sector. The grand average or average of the total private is 68.64 and total of public is 86.47. This shows more net claim ratio in public sector.

Table 2 (See in last page)

Net profit after tax Ratio= net profit after tax/operating income*100

The annual average growth rate of net profit after tax ratio shown positive in all companies except star health of private sector and negative in all public sector companies. The average of the total private is 8.44 and total of public is 3.29. Here private sector are in some better condition than the public sector.

Table 3 (See in last page)

Return on total assets Ratio= net profit before tax/ total assets*100

This is an important profitability ratio. Here grand average of private sector 8.10 has showed that it is in some better condition than the public sector -3.74.

Conclusion and test of hypothesis- In financial year 2020, the Government of India infused Rs. 2,500 crore in the public sector general insurers through the first batch of supplementary demand. Which are especially for National Insurance, Oriental Insurance, and United India Insurance. According to the ratio analysis of profitability, it has shownmore net claim ratio in public sector. The net profit after tax ratio, the return on total assets ratio and the return on net capital employed ratio has shown that private sector are in much better condition than the public sector.

Thus it can said that profitability of private sector general insurance companies are increasing than public sector general insurance companies. With the help of above all these analysis, the above stated hypothesis of this research study is false and it has been proved.

References:-

1. Darzi, A. Tanveer (2011),"financial performance of insurance industry in post liberalization era in India" Ph. D. thesis submitted to Department of Commerce, DAVV, Indore.
2. Jha, Veena (2003),"An Analysis of Financial Statements of General Insurance Corporation of India with special reference to Indore Division", Ph.D. thesis, submitted to Department of Commerce, DAVV, Indore.
3. Banerjee, P.; and Parhi, C.K. (2007), "Health Insurance: Competition Among the Players is yet to Touch the Prizing Arena," *Insurance Chronicle,*

4. Garg, M.C.; and Deepti (2008), "Efficiency of General Insurance Industry in India in the Post- Liberalization Era: A Data Envelopment Approach", *The ICFAI Journal of Risk and Insurance,* Holzheu, T. (2006), "Measuring Underwriting Profitability of the Non-Life Insurance Industry", *Swiss RE Sigma,* No.3, pp. 1-3

Table 1 - Trend Analysis Of Operating Income Of Private Sector General Insurance Companies(Rs. In 100 Crore)

Private sector companies	DESCRIPTION	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	Annual Average growth rate (%)
BAJAJ ALLIANZ GIC	AMOUNT	14.15	18.91	26.31	29.69	34.55	43.57	43.16	51.24	55.52	73.23	60.59	70.10	82.06	74.36	13.61
ICICI LOMBARD GIC	AMOUNT	16.94	21.02	23.15	30.12	37.17	42.36	46.63	45.04	51.06	64.79	69.12	83.75	90.04	100.14	14.65
ROYAL SUNDARAM	AMOUNT	4.46	5.98	7.15	8.76	11.05	12.41	13.16	13.03	13.9	17.21	19.4	21.86	22.80	21.15	12.72
STAR HEALTH	AMOUNT	0.88	3.01	6.1	8.31	8.09	5.11	6.75	10.18	15.14	19.11	27.4	36.62	46.84	46.27	35.63
TOTAL OF PRIVATE CO.	AMOUNT	36.43	48.92	62.71	76.88	90.86	103.45	109.7	119.49	135.62	174.34	176.51	212.33	241.74	241.92	15.68

Trend Analysis Of Operating Income Of Public Sector General Insurance Companies(Rs. In 100 Crore)

PUBLIC SECTOR COMPANIES	DESCRIPTION	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	Annual Average growth rate (%)
NEW INDIA ASSURANCE	AMOUNT	48.11	52.49	57.11	64.73	78.75	94.51	111.97	133.15	156.58	178.15	197.25	214.88	235.29	262.34	13.94
UNITED INDIA INSURANCE	AMOUNT	27.02	31.99	38.38	46.48	60.87	72.51	76.03	88.16	100.23	120.32	128.61	131.05	137.45	139.08	13.43
ORIENTAL	AMOUNT	28.76	30.67	35.91	43.15	48.93	53.87	59.54	64.25	70.24	83.83	96.28	106.02	109.24	110.37	10.90
AGRICULTURE INSURANCE CORPORATIONS	AMOUNT	6.36	7.43	**10.23**	**12.76**	**13.2**	**14.76**	**16.48**	**15.98**	**18.62**	**20.03**	17.8	16.52	18.46	68.16	20.02
TOTAL OF PUBLIC CO.	AMOUNT	110.25	122.58	141.63	167.12	161.51	193.45	264.02	301.54	345.67	402.33	439.94	468.47	500.44	579.95	13.62

RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Table 2- Trend Analysis Of Net Claim Of Private Sector General Insurance Companies(Rs. In 100 Crore)

Private sector companies	DESCRIPTION	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	Average growth rate (%)
BAJAJ ALLIANZ GIC	AMOUNT	9.46	13.6	13.87	17.01	19.08	21.19	25.56	27.56	30.54	45.73	40.43	48.1	58.05	50.90	13.82
ICICI LOMBARD GIC	AMOUNT	13.18	18.37	19.95	28.9	37.43	35.52	38.74	37.04	41.72	52	53.15	63.08	68.52	68.71	13.54
ROYAL SUNDARAM	AMOUNT	2.98	4.12	5.09	6.6	8.66	9.24	10.04	10.17	10.8	13.45	15.6	18.55	19.39	17.01	14.33
STAR HEALTH	AMOUNT	0.67	2.58	**5 .32**	**7 .58**	**7.74**	**3.23**	**4.54**	**6.51**	**8.15**	**11.57**	**16.92**	**22.98**	30.87	43.69	37.90
TOTAL OF PRIVATE CO.	AMOUNT	26.29	38.67	38.91	52.51	72.91	69.18	78.88	81.28	91.21	122.75	126.1	152.71	176.83	180.31	15.96

Trend Analysis Of Net Claim Of Public Sector General Insurance Companies(Rs. In 100 Crore)

PUBLIC SECTOR COMPANIES	DESCRIPTION	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	Average growth rate (%)
NEW INDIA ASSURANCE	AMOUNT	41.77	46.72	51.32	65.25	76.05	81.43	95.75	111.88	131.11	162.57	168.96	204.97	215.13	220.87	13.67
UNITED INDIA INSURANCE	AMOUNT	25.06	25.15	33.29	43.86	53.87	61.35	62.77	74.43	88.01	128.82	121.38	143.36	139.45	123.02	13.02
ORIENTAL	AMOUNT	26.02	30.57	32.6	40.65	44.65	43.93	51.11	52.62	58.8	93.98	82.21	112.48	111.80	105.22	11.35
AGRICULTURE INSURANCE CORPORATIONS	AMOUNT	5.3	5.3	11.89	9.5	10.21	14.45	17.24	17.34	18.56	23.99	18.19	15.24	21.31	62.97	20.97
TOTAL OF PUBLIC CO.	AMOUNT	98.15	107.74	129.1	159.26	146.71	166.23	226.87	256.27	296.48	409.36	390.74	476.05	487.69	512.08	13.55

Table 4- Trend Analysis Of Profit After Tax Of Private Sector General Insurance Companies(Rs. In 000)

Private sector companies	DESCRIPTION	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	Annual Average growth rate (%)
BAJAJ ALLIANZ GIC	AMOUNT	0.64	0.94	8.69	8.57	11.93	17.51	10.78	19.19	18.07	18.62	8.07	7.81	10.87	12.64	25.79
ICICI LOMBARD GIC	AMOUNT	0.38	-0.14	1.3	-1.09	-4.22	3.84	5.9	5.34	4.63	5.77	9.63	9.97	13.64	14.27	32.17
ROYAL SUNDARAM	AMOUNT	0.05	0.06	0.31	-0.2	0.02	0.66	0.69	0.23	0.28	0.6	0.62	1.24	6.54	8.16	47.98
STAR HEALTH	AMOUNT	0.02	0.02	5.37	7.66	-1.47	-1.25	-0.93	-1.39	2.66	1.24	3.94	5.41	3.10	-9.48	-260.63
TOTAL OF PRIVATE CO.	AMOUNT	1.09	0.88	15.67	14.94	6.26	20.76	16.44	23.37	25.64	26.23	22.26	24.43	34.15	25.59	27.48

Trend Analysis Of Profit After Tax Of Public Sector General Insurance Companies(Rs. In 000)

PUBLIC SECTOR COMPANIES	DESCRIPTION	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	Annual Average growth rate (%)
NEW INDIA ASSURANCE	AMOUNT	9.13	0.27	3.25	-8.17	-3.30	4.35	5.04	4.76	10.30	3.95	22.22	7.61	16.72	20.88	6.57
UNITED INDIA INSURANCE	AMOUNT	6.97	5.13	7.44	1.4	4.6	5.72	15.93	13.33	3.9	-17.86	10.91	-16.94	-28.12	-20.55	-208.67
ORIENTAL	AMOUNT	0.38	-0.45	0.12	0.74	1.54	2.76	4.95	3.79	4.00	-15.98	15.30	-5.79	-10.32	-8.30	-226.77
AGRICULTURE INSURANCE CORPORATIONS	AMOUNT	1.65	2.38	0.39	4.03	5.06	3.53	2.6	1.97	2.97	3.49	5.22	4.83	2.03	8.30	13.23
TOTAL OF PUBLIC CO.	AMOUNT	18.13	7.33	11.2	-2	7.9	16.36	28.52	23.85	21.17	-26.4	53.65	-10.29	-19.69	0.33	-26.52

Some important Profitability ratios with the formulas

Table 1- Net claim Ratio

COMPANIES	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	Annual average growth rate (%)	Average of ratios
PRIVATE SECTOR COMPANIES																
BAJAJ ALLIANZ GIC	66.81	71.90	52.70	57.31	55.22	48.64	59.23	53.79	55.01	62.44	66.72	68.62	70.74	68.45	0.19	57.18
ICICI LOMBARD GIC	77.83	87.37	86.18	95.97	100.69	83.85	83.08	82.23	81.70	80.26	76.89	75.32	72.86	68.61	-0.97	76.79
ROYAL SUNDARAM	66.87	68.95	71.21	75.35	78.33	74.51	76.32	78.00	77.71	78.13	80.41	84.84	85.03	80.40	1.43	71.83
STAR HEALTH	76.21	85.74	87.05	91.22	95.76	63.18	67.21	63.96	53.81	60.51	61.76	62.73	65.91	94.44	1.66	68.74
Grand Average																**68.64**
PUBLIC SECTOR COMPANIES																
NEW INDIA ASSURANCE	86.82	89.00	89.87	100.80	96.57	86.16	85.52	84.02	83.73	91.26	85.66	95.39	91.43	84.19	-0.24	83.35
UNITED INDIA INSURANCE	92.75	78.62	86.74	94.36	88.50	84.61	82.56	84.42	87.81	107.06	94.38	109.40	101.46	88.45	-0.36	85.38
ORIENTAL	90.47	99.69	90.79	94.22	91.24	81.54	85.84	81.89	83.71	112.11	85.39	106.10	102.34	95.33	0.40	86.74
AGRICULTURE INSURANCE CORPORATIONS	83.24	71.32	116.30	74.47	77.34	97.86	104.65	108.47	99.66	119.78	102.23	92.25	115.42	92.38	0.80	90.41
Grand Average																**86.47**

Net claim Ratio = Net claim / Operating income*100

Table 2- Net profit after tax Ratio

Private sector companies	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	Annual average growth rate (%)	Average of ratios
BAJAJ ALLIANZ GIC	4.50	4.94	33.04	28.88	34.54	40.20	24.97	37.44	32.55	25.43	13.31	11.13	13.24	17.00	10.77	22.13
ICICI LOMBARD GIC	2.23	-0.69	5.61	-3.61	-11.36	9.06	12.65	11.85	9.08	8.91	13.94	11.90	14.50	14.25	15.34	7.58
ROYAL SUNDARAM	1.10	0.95	4.34	-2.27	0.22	5.34	5.27	1.74	1.98	3.47	3.19	5.68	28.69	38.56	30.93	8.61
STAR HEALTH	1.89	0.50	88.00	92.10	-18.17	-24.44	-13.81	-13.63	17.60	6.50	14.39	14.78	6.61	-20.48	-220.12	-4.55
Grand Average																**8.44**
PUBLIC SECTOR COMPANIES																
NEW INDIA ASSURANCE	18.98	0.51	5.69	-12.62	-4.19	4.60	4.51	3.57	6.58	2.22	11.27	3.54	7.11	7.96	-6.47	3.55
UNITED INDIA INSURANCE	25.79	16.03	19.38	3.02	7.56	7.89	20.95	15.12	3.89	-14.85	8.48	-12.92	-20.46	-14.78	-4.19	4.06
ORIENTAL	1.31	-1.47	0.33	1.72	3.16	5.13	8.32	5.90	5.71	-19.07	15.90	-5.47	-9.45	-7.52	-214.39	-13.99
AGRICULTURE INSURANCE CORPORATIONS	25.99	32.04	3.84	31.56	38.29	23.91	15.72	12.34	15.95	17.44	29.32	29.27	10.97	12.17	-5.67	19.54
Grand Average																**3.29**

Net profit after tax Ratio= net profit after tax/operating income*100

RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Table 3- Return on total assets Ratio

Private sector companies	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	Annual average growth rate (%)	Average of ratios
BAJAJ ALLIANZ GIC	7.95	6.71	35.79	27.84	32.68	37.02	22.08	34.12	25.47	22.65	9.32	7.56	8.31	7.83	-0.12	19.01
ICICI LOMBARD GIC	2.33	-1.02	2.66	-1.63	-4.50	3.68	5.34	6.17	5.28	3.97	5.13	5.57	5.99	5.83	7.31	3.47
ROYAL SUNDARAM	1.03	1.55	4.08	-1.35	0.22	4.56	5.52	1.41	1.68	2.95	2.86	3.99	12.08	13.79	22.09	5.10
STAR HEALTH	2.94	3.53	123.28	159.00	-26.50	-18.28	-13.27	-16.39	27.84	9.50	21.74	23.53	13.30	-21.68	-216.61	4.80
Grand Average																**8.10**
PUBLIC SECTOR COMPANIES																
NEW INDIA ASSURANCE	3.60	-0.20	0.86	-2.30	-0.96	1.55	1.57	1.55	2.05	0.92	4.30	1.21	2.99	3.87	0.56	1.44
UNITED INDIA INSURANCE	5.45	5.09	6.00	0.90	3.19	3.45	8.20	5.85	1.94	-6.76	4.54	-5.63	-9.94	-5.78	-200.45	-12.26
ORIENTAL	3.29	-0.71	0.79	1.20	2.29	4.26	3.54	2.78	1.34	-7.79	5.87	-1.63	-4.84	-4.19	-201.88	-13.05
AGRICULTURE INSURANCE CORPORATIONS	17.84	20.81	1.91	19.62	24.69	12.17	8.71	5.01	7.09	4.74	6.47	6.13	1.66	5.59	-8.54	8.93
Grand Average																**-3.74**

Return on total assets Ratio= net profit before tax/ total assets*100

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

मादक द्रव्य व्यसन व भारतीय विधि की स्थिति

ऋतिका साहनी* डॉ. दिव्या चांसोरिया**

* शोधार्थी (विधि) रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.) भारत
** विभागाध्यक्ष एवं डीन (विधि) रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – **इस घट में क्या है कलालिन।**
कालिदास को उत्तर मिलता है।
मद: प्रमाद: कलहश्य निद्र बुद्धिलक्ष्यौं धर्म कवपर्यश्य।
सुखस्य कन्या नरकस्य पन्था, अष्टावनार्धा: करके वसन्ति।।

इसमें आठ अनर्थ निवास करते है। श्रीमान् 1. मादकता 2. प्रमाद 3. कलह 4.निद्रा 5. बुद्धि का नाश 6. धर्म का नाश 7. सुख कि समाप्ति 8. नरक का मार्ग आज वर्तमान में मादक द्रव्य व्यसन प्रत्येक देश के लिए चुनौती बना हुआ है युवा वर्ग सबसे ज्यादा इससे प्रभावित है जो हर देश का भविष्य होते हैं आने वाले समय में यह एक बड़ी समस्या के रूप में दुनिया में उभरेगा, सभी देशो को कुछ प्रमुख समस्या होती हैं जैसे आतंकवाद, जनसख्या वृद्धि तथा कुछ सामाजिक समस्या किन्तु मादक द्रव्य व्यसन की समस्या व्यक्ति की अपने ही विरुद्ध एक जंग है जिसमे व्यक्ति अपराधी न होकर स्वयं पीड़ित होता है।

आदिकाल से मानव नशीले पदार्थो का सेवन करता रहा है। नशे के लिए केवल शराब का ही प्रयोग नहीं किया जाता है। वरन् अन्य वस्तुओं जैसे अफीम, गांजा, चरस, मारिजुआना, भाँग, कोकीन, माजून, मारफीन, हशीश, ब्राउन शुगर, पैथोडिन तथा एस्प्रिन आदि का भी सेवन किया जाता है। वर्तमान में तो कई ऐसे मादक पदार्थ बाज़ार में आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं जिनका उपयोग तो अन्य चीजों के लिए होता है लेकिन आज नशे के लिए उपयोग किया जा रहा है, जो बहुत खतरनाक है। बुरी वस्तु का आसानी से प्राप्त होना समाज के लिए बहुत हानिकारक होता है, कहते हैं बुरी चीज़ व्यक्ति को जल्दी आकर्षित करती है इस नशे के उपयोग को समाप्त करना सरकार द्वारा बनाये गए कानून से संभव नहीं है इस हेतु समाज की जागरूकता अति आवश्यक है।

अवैध मादक पदार्थो का उपयोग या वैध मादक पदार्थो का दुरूपयोग मादक पदार्थो का दुष्प्रयोग (Drug Abuse) कहलाता है। दूसरे शब्दों में मादक द्रव्य व्यसन वह दशा है जिसमें शरीर को कार्य करते रहने के लिए मादक पदार्थ प्रयोग की आवश्यकता महसूस होती है। यदि मादक पदार्थो का प्रयोग बंद कर दिया जाता है तो शरीर संचालन में बाधा पैदा होती है। व्यसन में मनोवैज्ञानिक निर्भरता पाई जाती है जिसे 'आदी होना' (Habituation) भी कहा जाता है।

मादक द्रव्य व्यसन को रोकने में विधि की भूमिका – किसी भी विकसित देश हेतु उस देश के कानून व्यवस्था ही सहयोगी होती है, एक समृद्ध देश में तीन स्तम्भ होते हैं विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका। विधायिका का कार्य कानून बनाना, कार्यपालिका का कार्य उस कानून को लागू करना तथा न्यायपालिका का कार्य उस कानून की रक्षा करना है, बिना कानून व्यवस्था के कोई देश तरक्की नहीं कर सकता है मादक द्रव्य व्यसन एक अपराध है इसे रोकने हेतु भारतीय विधि में संवैधानिक व वैधानिक प्रावधान किये गए हैं।

संवैधानिक प्रावधान – भारतीय संविधान में मादक द्रव्य व्यसन के नियंत्रण हेतु निम्न उपबंध किए गए हैं।

भारतीय संविधान की प्रस्तावना में व्यक्ति की गरिमा को बढ़ाने की जो घोषणा की गई है वह बिना किसी भेदभाव के है चाहे व्यक्ति स्वस्थ हो, रोग पीडित हो, अपंग हो, व्यसनी हो या किसी रोग से संक्रमित हो।

1. **विधि के समक्ष समता (अनु- 14)** – राज्य भारत के राज्य में किसी व्यक्ति को विधि के समक्ष समता से या विधियों के सामान संरक्षण से वंचित नहीं करेगा। यह अधिकार नागरिक-अनागरिक दोनों को प्राप्त है केवल इस आधार पर कि कोई व्यक्ति मादक पदार्थ का उपयोग करता है उसे विधि के समक्ष समता एवं विधियों के समान उपचार से वंचित नहीं किया जायेगा।

2. **प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता का अधिकार (अनु-21)** – किसी व्यक्ति को उसके प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता से विधि द्वारा स्थापित प्रकिया के अनुसार ही वंचित किया जाएगा अन्यथा नहीं। अत: भारत में प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता का अधिकार विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अधीन है। विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया जो किसी व्यक्ति को उसके प्राण या दैहिक स्वाधीनता से वंचित करती है उचित ऋजु और युक्तियुक्त अर्थात नैसर्गिक न्याय के सिद्धांतों के अनुरूप होनी चाहिए। यह अनुच्छेद व्यक्ति को दैहिक स्वन्त्रता का अधिकार प्रदान करती है चाहे वह अभियुक्त हो या अपराधी या व्यसनी हो। उसे प्राण या दैहिक स्वतंत्रता से वंचित नहीं किया जा सकता है।

3. **राज्य लोक कल्याण की अभिवृद्धि के लिए सामाजिक व्यवस्था बनायेगा (अनु- 38):**

(1) राज्य ऐसी सामाजिक व्यवस्था की जिसमे सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक न्याय राष्ट्रीय जीवन की सभी संस्थाओ को अनुप्रमाणित करे, भरसक प्रभावी रूप में स्थापना और संरक्षण करके लोक कल्याण की अभिवृद्धि का प्रयास करेगा।

(2) राज्य विशिष्टिया आय की असामनता को कम करने का प्रयास करेगा और न केवल व्यष्टियो के बीच बल्कि विभिन्न में रहने वाले और विभिन्न

व्यवसायों में लगे हुए लोगो के समूहो के बीच भी प्रतिष्ठा, सुविधाओ और अवसरों की असमानता समाप्त करने का प्रयास करेगा। इस अनुच्छेद मे राज्य का यह कर्त्तव्य होगा की वह लोक कल्याण हेतु समाज मे ऐसी व्यवस्था करेगा जिससे व्यक्ति अपराध से दूर रहे क्योंकि व्यक्ति माँ के पेट से अपराधी बनके पैदा नहीं होता है समाज और परिस्थितियॉ उसे अपराध करने में मजबूर करती हैं इसलिए राज्य का कर्त्तव्य होगा की यह ऐसी व्यवस्था बनाये जिससे व्यक्ति अपराध करने हेतु अग्रसर न हो।

4. राज्य द्वारा अनुसरणीय कुछ नीति तत्व (अनु- 39) - राज्य का कर्त्तव्य है कि बच्चों के साथ दुर्व्यव्हार न हो और शोषण से बच्चों और युवाओं की रक्षा की जाये।

5. पोषाहार स्तर और जीवन स्तर को ऊंचा करने और लोक स्वास्थ्य का सुधार करने का राज्य का कर्त्तव्य (अनु- 47) - राज्य अपने लोगो के पोषाहार स्तर और जीवन स्तर को ऊँचा करने और लोक स्वास्थ्य के सुधार को अपने प्राथमिक कर्त्तव्य में मानेगा और राज्य विष्टिया मादक पेयों और स्वास्थ्य के लिये हानिकर औषधि के औषधि प्रयोजनों से भिन्न उपभोग का प्रतिषेध करने का प्रयास करेगा।

राज्य का यह कर्त्तव्य होगा की जनता को मादक पदार्थो से अलग रखने का भरसक प्रयास करेगा। इसी अनुच्छेद के अनुसरण में आज कोई निजी तौर पर मादक पदार्थो की खेती नहीं कर सकता बिना अनुज्ञप्ति के मादक पदार्थो का व्यापार नहीं कर सकता है।

विधिक प्रावधान :

1. स्वापक औषधि और मन: प्रभावी पदार्थ अधिनियम 1985
2. सीमा शुल्क अधिनियम 1962
3. स्वापक औषधि और मन: प्रभावी पदार्थ अवैध व्यापार अधिनियम 1988

विभिन अधिनियमों में प्रावधान :

1. स्वापक औषधि और मन: प्रभावी पदार्थ अधिनियम 1985 - इस अधिनियम को नवम्बर 1885 को सम्पूर्ण भारत में लागु किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य मादक पदार्थो का सेवन व्यापार आयात निर्यात उत्पादन भण्डारण आदि सभी अवैध कार्यो को रोकना है। इस अधिनियम में कुल 6 अध्याय तथा 83 धाराए हैं। अध्याय 1 प्रारम्भिक के सम्बन्ध में है धारा 1 संक्षिप्त नाम - स्वापक औषधि और मन: प्रभावी पदार्थ अधिनियम 1985, विस्तार - सम्पूर्ण भारत तथा प्रारंभ तिथि - 14 नवम्बर 1985 है, धारा 2 परिभाषा खंड है, धारा 3 मन: प्रभावी पदार्थो की सूची में जोड़ने या उससे लोप करने की केंद्रीय सरकार की शक्ति के सम्बन्ध में है।

अध्याय 2 प्राधिकरण और अधिकारी (धारा 4 से 7) के सम्बन्ध में है। जिसमे मादक पदार्थो के दुरूपयोग अवैध व्यापार के निवारण और उसकी रोकथाम के लिए केंद्रीय सरकार द्वारा नियम बनाने सम्बन्धी है, केंद्रीय सरकार व राज्य सरकार के अधिकारी नियुक्ति तथा परामर्श समिति आदि के सम्बन्ध में उपबंध किये गए हैं। अध्याय 2 क औषधि के दुरूपयोग के नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय निधि के सम्बन्ध में है। अध्याय 3 (धारा 8 से 14) तक मादक पदार्थो के प्रतिषेध नियंत्रण और विनियमन के सम्बन्ध में है धारा 8 से 14 तक उपबंध किये गए हैं, इस अध्याय में ऐसे व्यापार सम्बन्धी क्रियाकलापों का प्रतिषेध, अनुज्ञा देने के समुचित सरकार की शक्ति तथा कुछ मादक पदार्थो के सम्बन्ध में विशेष उपबंध किये गए हैं।

अध्याय 4 (धारा 41 से 68) तक अपराध और शास्तियो के सम्बन्ध में हैं विभिन प्रकार के मादक पदार्थो के उत्पादन, कब्ज़ा, परिवहन, अंतर्राज्यिक आयात निर्यात, विक्रय, क्रय, उपयोग करेगा उसका भण्डारण करेगा आदि अपराधे के कारावास व जुर्माना सम्बन्धी प्रावधान है इस अध्याय में न्यूनतम 6 माह से मृत्युदंड तक का प्रावधान किया गया है, जो इस तरह के अपराधो को रोकने में बहुत अहम् भूमिका निभाता है फिर भी ये अपराध आज रुकने की बजाय बढते जा रहे हैं। अध्याय 5 इस अधिनियम के प्रक्रिया सम्बन्धी है जिसमे पुलिस अधिकारी की अपराध को रोकने हेतु विभिन्न प्रकार की शक्तियां का उपबंध किया गया है, अवैध रूप से हो रही खेती कब्ज़ा परिवहन आयात निर्यात आदि के सम्बन्ध में हो रही अवैध कार्यवाहियों को रोकने हेतु भारसाधक अधिकारी को बहुत अधिकार व शक्तिया प्रदान की गयी हैं।

अध्याय 5क धारा (68 क से 68 य) अवैध व्यापार से प्राप्त हुई या उसमे उपयोग की गयी संपत्ति का समपहरण आदि के सम्बन्ध में प्रावधान किये गए हैं, यह अध्याय मादक पदार्थो के अवैध व्यापार के संपत्ति के समपहरण सबूत का भार आदि प्रक्रिया के सम्बन्ध में है।

अध्याय 6 प्रकीर्ण धारा 69 से 83 तक उपबंधित है जो धारा 69 सदभावपूर्ण की गयी कार्यवाही के लिए संरक्षण से है व्यसनी की पहचान उपचार आदि के लिए तथा मादक पदार्थो के प्रदाय के लिए केंद्र स्थापित करने के सरकार की शक्ति के सम्बन्ध में है नियम बनाने की सरकार के शक्ति के सम्बन्ध में है। यह अधिनियम मादक पदार्थो के सम्बंधित सभी अवैध कार्यो आदि की रोकथाम, अपराध व दंड के सम्बन्ध में है।

2. सीमा शुल्क अधिनियम 1962 - यह अधिनियम 1962 को सम्पूर्ण भारत में लागू किया गया था इस अधिनियम का उद्देश्य भारत से निर्यात व भारत को आयात आदि के सम्बन्ध में नियम हेतु हैं। सीमा पर लगने वाले शुल्क का निर्धारण तथा अवैध वस्तुओ के आयात निर्यात को प्रतिषेध करने हेतु बनाया गया।

3. स्वापक औषधि मन: प्रभावी पदार्थ अवैध व्यापार निवारण अधिनियम 1988 - यह अधिनियम मादक पदार्थो के अवैध व्यापार को रोकने उस पर लगाम कसने तथा वैधा व्यापार के नियम निर्धारण सम्बन्धी प्रावधानों के सम्बन्ध में हैं। यह 1988 को सम्पूर्ण भारत में लागू किया गया।

यह समस्या वर्त्तमान की सबसे गंभीर समस्या है जिसे ख़त्म करना आज सिर्फ विधायिका का ही कर्त्तव्य नहीं है वरन आम जनता का कर्त्तव्य बनेगा तभी हम इस समस्या से बाहर निकल पाएंगे नहीं तो यह पूरे विश्व को निगल जाएगी क्योंकि इसमें सबसे ज्यादा प्रभावित आज का युवा ही है जो हर राष्ट्र का भविष्य होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Indian Constitution Bare Act
2. Criminilogy And Penal Adminstration - Paranjape
3. Narcotic Drug Psychotropic Substance Act 1985 Bare Act
4. Social Problems - Ram Ahuja

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Trace Elements Intake in Urban Population of North India

Dr. Shobha Gupta*

***Associate Professor (Chemistry) D.A.K. College, Moradabad (U.P.) INDIA**

Abstract - Trace elements are noncalorigenic chemical substances of which only traces are required in human metabolism. They are supplied from the food and the environment and are intimately associated with physiological functions of the body. In the present study, we studied the dietary intake of trace element in different groups in north India. 404 subjects between 25-65 years were randomly selected in the Moradabad city. There were 200 males and 204 females. Dietary intakes were obtained by 3 days dietary recalls and by using food models, food portions and food measures . Nutrient intake especially minerals were calculated by computation of Indian Food Composition Table. Serum concentration of minerals were estimated by spectrophotometric and flamephotometic method. The per day mineral intake in male were mean iron 13.28(3.31) mg, calcium 416(125) mg, magnesium 342(94) mg, zinc 6.63(2.0) mg, copper 2.20(.62) mg, sodium 3395((557) mg and potassium 1229(245) mg per day. The mineral intake in female were iron 12.69(3.23) mg, calcium 391(108) mg, magnesium 321(88) mg, zinc 6.34(2.2) mg, copper 2.11(.51) mg, sodium 3289(539) and potassium 1203(224) mg per day. Serum concentration of minerals in male were mean iron 117(13.5) µg/dl, calcium 9.4(0.53) mg/dl, magnesium 1.8(0.25) mEq/L, zinc 109(8.7) µg/dl, copper 118(10.5) µg/dl, sodium 146((9.8) mEq/L and potassium 4.3(0.41) mEq/L.Serum concentration of minerals in female were mean iron 111(12.4) µg/dl, calcium 9.4(0.51) mg/dl, magnesium 1.7(0.21) mEq/L, zinc 101(8.1) µg/dl, copper 115(9.2) µg/dl, sodium 145((8.5) mEq/L and potassium 4.2(0.40) mEq/L. Results indicates that calcium and magnesium intakes were significantly higher in men compared to women. Zinc and iron intakes were lower than recommended by ICMR in both men and women. Serum concentration of zinc and iron were on the lower side of normals, while rest other minerals were within normal limits.
Keywords- Dietary calcium, magnesium, iron, copper, zinc, sodium, potassium.

Introduction - Vitamins and minerals are important chemical substances which do not provide any energy[1]. However they play an important role in the regulation of several chemical reactions in the body and help in the utilization of energy producing chemicals[2]. Elements such as calcium, magnesium, phosphorous etc.are also used for the formation of body structure and skeleton[3,4,5]. Only traces of these elements are required in human body.

Many studies[6-10] shows that minerals are of immense clinical importance in growth of plants and in the maintenance of health in man and animals. These are widely distributed in nature, supplied from the food and environment and could be intimately associated with body function. A few studies have shown that fruits, vegetables and cereals are rich sources of minerals. There is evidence that potassium, magnesium, calcium, zinc, copper, iron, iodine, selenium, chromium, phosphorous are found in abundances in the foods[1]. These minerals are essential for human body[11]. Deficiency of any of these minerals can influence body functions. Different deficiency syndroms such as calcium, iron, selenium, magnesium , iodine, copper deficiency have been described which could be associated not only with chemical and physiological disfunctioning but also with structural changes in tissues. In view of these possible abnormalities, we have studied the dietary intake of minerals in different groups of sex.

Subjects and Methods - This study include 404 urbanized, free living adults(200 men and 204 women) between 25-65 years of age from a community with poor socio-economic status. Subjects were selected by random sampling in a period of four months. Clinical data such as sex, height, weight, waist and hip circumference were obtained in all the subjects through a performa specially prepared for this purpose. The criteria of presence of various diseases were based on treatment record available with the subjects. Obesity was diagnosed in the presence of body mass index more than 25kg/m^2 and low waist to hip circumference ratio. Iron deficiency was diagnosed due to presence of paleness of tongue, conjuctive and nails.

Dietary intakes were obtained after written informed consent from the head of the family. All the adult members of the family were asked to maintain their individual lifestyle

including dietary habits and physical activity. Each participant was attended personally and dietary intakes were obtained through a performa specially prepared for the purpose. Participants were asked to complete dietary diaries including three days food intake record. Nutrient intakes were obtained by asking probing questions with the help of food measures, food models and food portions to assess the caloric value of different food items. Drinking of tea, coffee and alcohol were also recorded in all the participants. Intake of measures food items such as cereals, rice, pulses, vegetables and fruits was weighed at least once in all the families. Nutrient intakes including mineral consumption was obtained by calculating the intake of nutrient content with the help of Indian food composition table.

Results - This study include 404 adults (200 men and 204 women) between 25-64 years of age.Out of 425 subjects who volunteered to participate for their nutritional assessment, 21 were excluded because of their inability to co-operate during the study.

Clinical data and anthropometric features by sex are shown in Table 1. Mean age, body-mass index, blood pressure showed no significant difference between two sexes whereas body weight is significantly higher in men compared to women.

Table 2 shows the food consumption pattern by sex. Cereals and grains were the main sources of energy intake among both sexes. Roots and tubers, milk and milk products and fruit intake were higher among men than in women. Consumption of pulses and legumes, leafy and other vegetables were comparable. Total food intake was higher in men than women.

Table 3 shows the mean intake of macrominerals and trace elements in both sexes. There were no significant differences in mineral intake between men and women however calcium and magnesium intakes were significantly higher in men compared to women. Zinc and iron intakes were lower than recommended by ICMR.

Table 4 shows the serum levels of minerals in men and women. While serum levels of zinc and iron were on the lower side of normal, rest other minerals were within normal limits.

Table 1:Clinical data and anthropometric features by sex-

Data	men n=200	women n=204
Age	41.02 (12.9)	39.09 (11.5)
Body weight (kg)	59.84 (6.12)	52.19 (6.59)
Height (cm)	163.14 (6.8)	153.07 (6.7)
Body mass index (kg/m^2)	22.48(2.19)	22.23 (2.36)
Waist/hips circumference ratio	0.88(0.04)	0.83 (0.04)
Blood pressure (mmHg)		
Systolic	132.87(20.09)	132.60 (19.57)
Diastolic	85.22 (7.39)	84.30 (6.97)

Table 2: Food consumption pattern compared to recommended food allowances (gm/day)

Foods (gm/ day)	male	female	total	recommended by ICMR
	mean (SD)			
cereals and grains	360 (931.2)	274 (27.8)	317 (29.4)	460
Roots and Tubers	60 (10.4)	51(9.8)	55 (10.1)	50
Pulses and legumes	46 (9.5)	41 (8.9)	43 (9.1)	40
Leafy & other Vegetables	100 (11.3)	89 (10.2)	94 (11.1)	66
Fruits	62 (8.5)	53 (8.9)	57 (8.6)	110
Milk and milk Products	236 (31.6)	184 (28.9)	209 (29.9)	250
Meat, egg And fish	20 (4.5)	1 (3.9)	17 (4.1)	22
Sugar and Jaggery	35 (3.8)	30 (3.7)	32 (3.7)	30
Fat and oil (total)	36 (4.5)	30 (3.6)	32 (4.1)	40
Hydrogenated (veg.ghee)	14 (2.7)	12 (2.1)	13 (2.5)	
Refined oil	10 (1.6)	9 (1.2)	9.5 (1.4)	-
Butter	4 (1.0)	3 (0.9)	3.5 (1.0)	-
Salt	11.6 (3.1)	9.4 (2.8)	10.5 (3.0)	08
Alcohol(%)	20 (5.6)	-	9.9 (5.6)	-
Total foods (gm/day)	967 (112)	776 (92)	867(106)	-

Table 3: Dietary intake of minerals in different groups by sex-

Minerals Per day	male n=200	female n=204	total n=404	recommended by ICMR
	Mean (SD)			
Sodium (mg/day)	3395 (557)	3289 (539)	3341 (546)	-
Potassium (mg/day)	1229 (245)	1203 (224)	1216 (239)	1200-1600
Calcium (mg/day)	416 (125)*	391 (108)	403 (115)	400-500
Magnesium (mg/day)	342 (94)*	321 (88)	331 (91)	350
Zinc (mg/day)	6.63 (2.0)	6.34 (2.2)	6.48 (2.5)	15.5
Copper (mg/day)	2.20 (.62)	2.11 (.51)	2.15 (.56)	2-3
Iron (mg/day)	13.28 (3.31)	12.69 (3.23)	12.98 (3.29)	28-30

* = P < 0.05 , P values were obtained by comparison of male and female

Table 4: Serum concentration of minerals in different

groups by sex-

Minerals		male n=200	female n=204	total n=404
	Mean (SD)			
Sodium	(mEq/L)	146 (9.8)	145 (8.5)	145.5 (9.4)
Potassium	(mEq/L)	4.3 (0.41)	4.2 (0.40)	4.25 (0.40)
Calcium	(mg/dl)	9.4 (0.53)	9.4 (0.51)	9.4 (0.51)
Magnesium	(mEq/L)	1.8 (0.25)	1.7 (0.21)	1.74 (0.24)
Zinc	(µg/dl)	109 (8.7)	101 (8.1)	105 (8.3)
Copper	(µg/dl)	118 (10.5)	115 (9.2)	116.5 (9.8)
Iron	(µg/dl)	117 (13.5)	111 (12.4)	114 (12.9)

Conclusions- Results indicates that calcium and magnesium intakes were significantly higher in men compared to women. Zinc and iron intakes were lower than recommended by ICMR in both men and women. Serum concentration of zinc and iron were on the lower side of normals, while rest other minerals were within normal limits

References:-

1. Narsing Rao BS, Deoschale YG, Pant KC: Nutrient Composition of Indian foods. National Institute of Nutrition publication. Hyderabad, India 1989.
2. Megan R, Long T, Alina T, Thomas S, Mark M. Heavy metals in the intensive care unit, A review of current literature on trace element supplementation in critically Ill patients. Nutr Clin Pract. 2014;29(1):78-89
3. Bischoff-ferrari HA, Dowson-Hughes B, Baron JA, Li R, Spifgelman D et al. Calcium intake and hip fracture risk in man and woman: a meta analysis of prospective cohort studies and randomised controlled trials. Am J Clin Nutr. 2007;86:1780-90
4. Tang BMP, Es;ick GD, Nowson C, Smith C, Bensoussan A. Use of calcium or calcium in combination with vitamin D supplementation to prevent fractures and bone loss in people aged 50 years and older: a meta analysis. Lancet 2007;370:657-66
5. Iso H, Stampfer MJ, Mason JE, Rexrode K, Hennekens CH, Colditz GA et al. Prospective study of calcium, poyassium, magnesium intake and risk of stroke in woman. Stroke 1999;30:1772-9
6. Foley R N, Collins A J, Ishani A, Kalra P A. Calcium-phosphate levels and cardiovascular disease in comm -unity dwelling adults. Am. Heart J. 2008;156: 556-563
7. Rebecca J. Stoltzfus. Iron-Deficiency Anemia: Re-examining the Nature and Magnitude of the Public Health Problem. J Nutr. 2001;131:697S – 701S
8. Gera T, Sachdev HS, Boy E. Effect of iron fortified foods on hematologic and biological outcomes: systematic review of randomized controlled trials. Am J Clin Nutr. 2012;96:309-24.
9. Prasad AS, Beck FW, Bao B, Fitzgerald JT et al. Zinc supplementation decreases incidence of infections in the elderly: effect of zinc on generation of cytokines and oxidative stress. Am J Clin Nutr. 2007;85(3):837-844.
10. Lyn P. Nutrients and HIV: Part 2- Vitamin A and E, zinc, B-vitamins and magnesium. Altern Med Rev. 2005;5(1):39-51.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Charting a New Path Towards Gender Equality in India - Uniform Civil Code in India

Mrs. Ganga Mishra* Dr. Neelesh Sharma**

*Research Scholar (Law) Rabindranath Tagore University, Bhopal (M.P.) INDIA
** Dean (Law) Rabindranath Tagore University, Bhopal (M.P.) INDIA

Abstract - The term Uniform Civil Code connotes the idea of same set of civil rules for the citizens irrespective of their religion, caste, etc. Civil law governs the matters pertaining to marriage, adoption, inheritance, succession and so on. In India such matters of the citizens are still governed by the personal laws of their respective communities.It's themandate upon the state as a directive principle of state policy to promulgate a Uniform Civil Code for whole the country. But even after 66 years of independence it is just a distant dream leading to various ambiguitiesin the interpretation of personal laws. So, the present paper is deliberating upon the importance of uniform civilcode as a tool to create religious harmony, their by promoting fraternity as enshrined in the Constitution. The judgments pronounced by the Hon'ble Supreme Court are very constructive in this regard and it has been discussed in an elaborate manner in this paper.
Keywords- Uniform Civil Code, Constitution, Secular, Democratic, Directive Principles.

Introduction - The term Uniform Civil Code implies the same set of secular civil laws to govern all peoples irrespective of their Religion, Caste and tribe. The areas covered under it are the Laws related to Marriage, Divorce, Adoption, and Inheritance and acquisition and Administration of property. Uniform Civil Code is a mandate upon the state underarticle 44 of the Constitution as directive principle of state policy. As it is provided under Article 37 of the Constitution that directive principles of state policy are not enforceable by the Court of Law. But this fact does not undermine the importance of the directive principles. Just after Independence the Circumstances were such that it was not feasible to impose a Uniform Civil Code on the citizens. That is why it has been covered under the directive principle of state policy.

In this context it is relevant to discuss here that whether the directive principles of state policy and the fundamental rights are contradictory to each other or vice-versa. The preamble of Indian constitution is the mirror of constitutional spirit. It aims at to constitute India as a Sovereign, Secular, Democratic, Republic. It has to secureJustice, liberty, and equality to the citizens and thereby promoting fraternity while assuring dignity of the individualand unity and integrity of the nation. It contains those elements which are the essence of the Constitution. So, all the provisions given in the preamble are moving towards a particular goal i.e. fraternity assuring mutual respect for eachother. In his sense it can be inferred from the Constitutional spirit that fundamental rights and directive principles ofstate policy are Complementary to each other. The mere fact that one is enforceable by the Court of law under article32 and 226 of the Constitution and others are non-enforceable does not undermine the importance of directive principles of state policy. Fundamental rights are the in alienable and inherent rights of the individuals by virtue of the fact that any individual exist in society.The fundamental rights impose the duty upon the state not to violate these rights. So, in sense these are the nature of negative duty imposed upon the state. But a mere guarantee of the fundamental rights in the constitution would not have been sufficient to help the attainment of socialistic pattern ofthe society.There should be some guidelines for the state to act in that direction. So, the directive principle of the state policy is not intended to curtail state action rather it is intended to make the state act. It requires a pro-activerole of the state and that is not possible in a short span of time. It is the reason that why these directives are not made enforceable.

So, in this context the importance of uniform civil code can be visualized. The framers of Indian Constitution were convinced that certain amount of modernization is required before uniform civil code is imposed upon the citizens.Though the Hon'ble Supreme Court has emphasized upon the need of Uniform civil code to settle the ambiguity which has arisen due to the different interpretations of various personal laws.

For instance itwas heldin **Sarla Mudgal vs. Union of India andothers**[1] that, "Article 44 is based upon the concept that there is no necessary connection between religion and personal law in a civilized society. Article 25 guarantees freedom where as Article 44 seeks to divest religion from social relations and personal law. Marriage,succession and like matters of a secular character cannot be brought within

the guarantee enshrined under Articles25, 26 and 27. The personal law of Hindus such as relating to marriage, succession and like haveall a sacramentalorigin, inthe same manner as in the case of the Muslims or the christens . The Hindus along with Sikhs, Buddhistsand Jains have forsaken their sentiments in the cause of national unity and integration, some other communities would not ,though the constitution enjoins the establishment of a" Common Civil Code" for the whole of India.

The Government of India if therefore requested through the Prime Minister of the Country to have a fresh look at Article 44 of the Constitution of India and Endeavour to secure for the citizens a Uniform Civil Code throughout theterritory of India. It was also reminded by kuldeep Singh j in this case that even 41 years thereafter; the rulers of thecountry are not in a mood to retrieve Article 44 from the cold storage where it is lying since 1949. The court furtheremphasized when more than 80% of the citizens have already been brought under the codified personal law there isno justification what so ever to keep in abeyance, any more, the introduction of "Uniform Civil Code" for all citizens in the territory of India."

In Sarla Mudgal case the issue was that the husband has performed the second marriage while converted into Islam but without dissolving the first marriage. So, if the literal interpretation of section 5 and section 11 of the H.M.A,1955 is done then he cannot be held liable under the Hindu marriage act for big amy because section 5 uses the world, "If a marriage is solemnized between to Hindus." The Hon'ble Supreme Court has resolved the issue by saying that if there if a controversy between two personal laws then such law should prevail which is serving thepurpose best. So, it was held that a conversion to Islam does not amount to automatic dissolution of the marriage performed under Hindu law.

In **Lily Thomas and others vs. Union of India & others**[2] ,"The court rejected the contention that the decision in Sarla Mudgal vs.Union of India is violative of rights guar anteed under article 21 of the constitution.The judgment in Sarla Mudgal case has neither changed the procedure nor created any law for the prosecution of the person sought to be proceeded against for the alleged commission of offence under section 494 IPC."So, if the Uniform Civil Codewould have been provided for the citizen as the constitutional mandate then the problems which has arisen in the cases of (Mohd. Ahmed Khan vs. Shah Bano Begum), (Daniel latifi & other Vs.UOI would have not been there.

In **Shah Bano case**[3] the issue was that whether a Muslim Woman is entitled to claim maintenance under Sec. 125Cr.P.C. It was held that Muslim women are entitled to claim to maintenance under section in 125 Cr.P.C. This is asecular provision and the benefit is available to every citizen irrespective of their caste or religion etc. It was furtherheld that although the Muslim law limits the husband's liability to provide for maintenance of divorced wife to theperiod of Iddat, it does not contemplate or countenance the situation envisaged by section 125 of the code of criminal procedure". The court held that it would be incorrect and unjust to extend the above principle of Muslim law to case in which the divorced wife is unable to maintain herself.

After the judgment of Shah Bano case there was some unrest in the Muslim community. So, in consequence of thatthe **Muslim women (Protection of Rights on divorce) Act, 1986** was passed which states that the husband is liable to pay maintenance to the wife daring iddat. But this controversy was resolved by the Hon'ble Supreme court in **Daniel latifi& other Vs. Union Of India**[4]**,** "It was held that clause (1-a) of section 3 does not limit the duty of the husband to pay maintenance only for the period of Iddat rather the duty is tomake the necessary arrangements within the Iddat period but the arrangements has to be made for the entire life of the wife until she gets remarried.Clause (I-a) requires the Husband to make necessary provisions for the wife which means provisions like her shelter and the similar means where as it also requires the payment of Maintenance Which Implies payment of Money.There are two interpretations one in which the payment etc. shall be made only for the Iddat period. This will render the provisions unconstitutional as it will be violative of Article 14 and 21.So the arrangements have to be made within the Iddat period but fortheen tire period till she gets remarried. Thiswill serve the purpose of Act better and will bring it inline with the Cr.P.C. This Interpretation shall be followed that would render the statute Constitutional. In this Case it was also emphasized that the Act of 1986 is only available to the divorced woman and therefore a woman who is still having a subsisting marriage cannot file an application under the Act. She has to file it either under the personal law or the Cr.P.C. It was held in **Iqbal Bano Vs. state of U.P. and another**[5], "That the direct a petition under section 125 can be filed by a non divorced Muslim wife. Even if a petition has will filed undersection125 by adivorced Muslim wife the Magistrate is free to treat such petition as a petition under 1986 Act.

Conclusion - So, it can be inferred from the above judgments that the Hon'ble Supreme Court has reiterated about the need of Uniform Civil Code again and again and has settled the controversies and ambiguities which have arisen due to the apparent conflicts in the personal laws. If the Uniform Civil Code would have been implemented for whole of the country then such kind of controversial issues would have been resolved by the statutory enactments only. India is acountry of Unity in Diversity having Multi religions and cultures. So, civil matters of the citizens should be taken inthe same clutches of law only then the prime constitutional goal of fraternity can be materialized in the real sense otherwise the sedivisive forces would continue to violate the constitutional spirit. So, in this sense uniform civil code is the need of the hour. A strong political will is required for the same along with the feeling of religions tolerance and mutual respect on part of each and every citizen of India.

References:-

1. Jain M.P,"Indian Constitutional Law" (6th Edition 2010)

2. Pandey J.N.,“Constitutional Law of India” (43rd Edition 2006)
3. DesaiS.A., “Mullaon Principles of Hindu Law”, (19th Edition 2005 VolI.)
4. Saxena Poonam Pradhan, “Family Law Lectures” (3rd Edition, 2011)
5. Hindu Marriage Act, 1956
6. Muslim women (Protection of Rights on divorce) Act, 1986

Footnotes:-

1. Sarla Mudgal vs.Union of India and others (1995) 3 SCC635
2. Lily Thomas and others Vs.Union of India & others (2000) 6 SCC224
3. Mohd.Ahmed KhanVs.Shah Bano Begum (1985) 2 SCC556
4. Daniel latifi & others Vs Union of India 2001 Sc.
5. In Iqbal Bano Vs. state of U.P. and another 2007 SC

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

The Relevance of the "Panchatantra"

Dr. Rajkumari Sudhir *

*Asst. Professor (English) Govt. Sarojini Naidu Girls P.G. College, Bhopal (M.P.) INDIA

Abstract - Panchatantra' by Vishnu Sharma, written thousands of years ago, has much to offer by way of insight into human behaviour though the characters are entirely from the animal kingdom.

The earliest translations were Pehlavi and Arabic. This westward migration of the 'Panchatantra' is attributed to Borzuy, the personal physician of Nushirvan, the Persian emperor. Borzuy came to India in the 6th century around 570 CE looking for the mrutasanjeevini, the mystical herb that could revive a corpse. He did not find the herb but found the 'Panchatantra' instead. And reading it, realised that the magical herb was Knowledge and the corpse was Ignorance.

Through the wisdom of its fables the 'Panchatantra' offers a vision of ourselves, wars and all in so doing, it makes us aware of the fact that solutions lie within ourselves.

Introduction - The Panchatantra is a collection of folktales and fables that were believed to have been originally written in Sanskrit by the great Hindu Scholar Pandit Vishnu Sharma more than 2500 years ago. It offers insight into human behaviour though the characters are entirely from the animal kingdom. The exact period of the composition of the Panchatantra is uncertain and vary from 1200 BCE to 300 CE. Some scholars place him in the 3rd Century BCE.

Vishnu Sharma chose the fable as his medium because he understood that humans can accept their own foibles if they are presented entertainingly, narrating as stories about beasts which we think inferior to humans in many ways.

Morals: Tales of greed, treachery, stupidity, deceit and other human qualities are unraveled like a matroshka, a succession of Russian dolls-within-dolls. The morals in the Panchatantra are not preachy tales of good overpowering evil. Franklin Edgertom, the Yale professor known for his masterly translation of the Bhagavad Gita calls the Panchatantra Machiavellian.

He notes, "This is a textbook of artha, "worldly wisdom, or niti, polity, which the Hindus regard as one of the three objects of human desire, the others being dharma, 'religion or morally proper conduct' and kama 'love'. The so-called 'morals' of the stories glorify shrewdness and practical wisdom in the affairs of life, and specially politics, of government. Joseph Jacobs said, "If one thinks of it, the very raison d'etre of the Fable is to imply its moral without mentioning it." It explains "practical wisdom".

The stories convey messages that are direct and simple. Malicious gossip can destroy even great friendships. Never trust an enemy…"reformed enemy" is an oxymoron, Deceit is the only way to overcome an unscrupulous enemy. Caste, colour and religion are no barriers to forming lasting bonds; against tyrants, unity is strength, An intelligent man can overcome adversity by the use of his wit.

Not surprisingly, the running theme of the 'Panchatantra' is "Knowledge is the true organ of sight, not the eyes" and is a practical guide to niti, or the art of intelligent living.

This collection of fables in five books, are stories told by sage Vishnu Sharma to the three not-so-bright sons of a king. The collection is divided thus: The Loss of Friends or Mitrabedha, The Winning of Friends or Mitrasamprapti, Crows and Owls or Kakolookiyam, The Loss of Gains or Labdhapranasha and Ill-Considered Action or Aprikshitakaraka.

The stories in this book aim to impart the deeper wisdom of life, through the simple portrayal of animal characters. The stories of the 'Panchatantra' offer us the possibility of making our lives richer and more meaningful. Through the wisdom of its fables the 'Panchatantra' offers a vision of ourselves, warts and all in so doing, it makes us aware of the fact that solutions lie within ourselves. The use of animals to present this message is particularly significant since animals are not sentimental.

Indian Fable: Panchantra, is perhaps the oldest collection of Indian Fables. It is a "Nitishastra" which means book of wise conduct in life. The book, as already said, is written in the form of simple stories about animals and each story having a philosophical theme and moral message.

Vishnu Sharma was the author of this anthropomorphic

political treatise called Panchatantra. He lived in Varanasi in the 3rd century BC. He was a Sanskrit scholar and the official Guru of the then prince of Kashi.He wrote Panchatantra to teach political science to his royal disciples.

According to the legend Amarashakti, King of Mahilaropya in southern India, had three dull-headed young sons. The king's minister Sumati suggested appointment of Acharya Vishnu Sharma as the official instructor for the princes. Vishnu Sharma was already 80 years old but was known to be a savant in all the Shastras and the theory of politics and diplomacy.

The King decided and called Vishnu Sharma and declared that if he was able to make his sons into able administrators, he would gift him a hundred villages and gold without bound. Vishnu Sharma politely refused the gifts and replied, "Oh King! I do not sell my education. I have no desire of any gifts but I pledge to make your sons into able administrators within 6 months. If I fail to fulfil my pledge, I would change my name."

Tantras: Vishnu Sharma, however, realized that it was more difficult than he had thought to teach his new dull-headed students through conventional means, and there was a need of a creative way of teaching. Therefore, he composed many captivating and charming short animal stories, each with a lesson, and tied them in five parts, called "tantras." This collection, that has attained over centuries, is called Panchatantra. Panchatantra comes from the individual words, 'pancha' and 'tantra'. While pancha refers to the number five, tantra refers to ways or strategies related to inner fulfillment.

The five parts (Tantras) are titled inSanskrit as Mitrabhed, Mitrasamprapti, Sandhi, Vigraham and Apareekshitkarakam. They are five principles or strategic themes one needs to keep in view for intelligent living. The English equivalents are: Part 1: The Loss of Friends; Part 2: The Winning of Friends; Part 3: Crows & Owls (Peace and War); Part 4: Loss of Gains; Part 5: Ill-Considered Action.

After listening and understanding these stories, the three princes became highly knowledgeable in politics and able administrators. The first line of Panchatantra it seems says that the stories compress the worldly wisdom contained in all books in the world! Thus, the Panchatantra came into origin. It has influenced literature all over the world since the time of its conception.

World Literature: Vishnu Sharma is one of the most widely translated secular authors in history. The Panchantanra was translated by Borzuya in 570 CE leading to Middle Persia and into Arabic language in 750 CE by a Persian scholarAbdullahIbnDimnah. In Baghdad, the translation commissioned by Al-Mansur, the second Abbasid Caliph, is claimed to have become "second only to the Qu'ran in popularity.

This westward migration of the 'Panchatantra' is mainly attributed to Borzuya the personal physician of Nushirvan, the Persian Emperor. Borzuya came to India in the 6th century around 570 CE looking for the mrutasanjeevini, the mystical herb that could revive a corpse. He did not find the herb but found the 'Panchatantra' instead.

After reading Panchatantra, he realised that the magical herb was 'Knowledge' and the corpse was none other than 'Ignorance.' The running theme of the Panchatantra is "Knowledge is the true organ of sight, not the eyes" and is a practical guide to niti or the art of intelligent living.

As early as the eleventh century Panchatantra reached Europe and before 1600 it existed in Greek language, Latin, Spanish, Italian, German, English and other Slavic languages. Its range has extended from Java to Iceland. In France, "at least eleven Panchatantra tales are included in the work of "la Fontaine"." The Panchatantra is one of the oldest collections of Indian fables surviving today.

Worldly wisdom: Vishnu Sharma chose the fable as his medium because he understood that humans can accept their own foibles if they are presented entertainingly, configured as stories about beasts that they believe to be inferior to themselves in many ways. Tales of greed, treachery, stupidity, deceit, adultery and loyalty, unravel like a matroshka, a succession of Russian dolls-within-dolls. The morals in the 'Panchatantra' are not preachy tales of good overpowering evil. Franklin Edgerton, the Yale professor known for his masterly translation of the 'Bhagavad Gita', calls the 'Panchatantra' Machiavellian. He notes, "This is a textbook of artha, 'worldly wisdom', or niti, polity, which the Hindus regard as one of the three objects of human desire, the others being dharma, 'religion or morally proper conduct' and kama 'love'... The so-called 'morals' of the stories... glorify shrewdness and practical wisdom in the affairs of life, and especially of politics, of government." Joseph Jacobs said, "...if one thinks of it, the very raison d'etre of the Fable is to imply its moral without mentioning it".

This honest depiction of "practical wisdom" explains why in the original Sanskrit, the cunning and evil jackal is the winner in the end in the First Book. This outraged some clerics and so one translator rewrote the end in which the jackal was jailed, put on trial and finally executed.

Conclusion:SCThe stories convey messages that are direct and simple. Malicious gossip can destroy even great friendships. Never trust an enemy; "reformed enemy" is an oxymoron. Deceit is the only way to overcome an unscrupulous enemy. Caste, colour and religion are no barriers to forming lasting bonds; against tyrants, unity is strength. A fool and his gains are soon parted. An intelligent man can overcome adversity by the use of his wit. The consequences of an ill-conceived hastily executed action could be death.

The stories of the 'Panchatantra' offer us the possibility of making our lives richer and more meaningful. Through the wisdom of its fables the 'Panchatantra' offers a vision of ourselves, warts and all. In so doing, it makes us aware of the fact that solutions lie within ourselves. The use of animals to present this message is particularly significant since

animals are not sentimental; in the words of the translator himself, theirs is a view of life which, “piercing the humbug of every false ideal, reveals with incomparable wit the sources of lasting joy”.

References:-

1. https://timesofindia.indiatimes.com/The-relevance-of-the-Panchatantra/articleshow. Narendra Nair | Dec 4, 2008. Web
2. https://www.freepressjournal.in/mind-matters/panchtan-tra-and-vishnu-sharma. Meera S. Sashital. April 19, 2015. Web
3. SuchetaShinde, Panchatantra: Critical Analysis from Feminist Perspective, European Academic Research, Vol. II, Issue 10, pp.1-21, 2015. 2.
4. ChendroyaperumalChendrayan, Best Human Resource Management Practices: Prescriptions in Panchatantra, Journal of Human resources management, vol.2, issue 3, pp.12-23, 2009.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Role of ICT and Women Empowerment in India

Dr. Sapna Mishra*

*Principal, Maya Devi Institute of Advanced Education, Dewas (M.P.) INDIA

Abstract - Information and Communication Technologies are diverse set of technical tools and resources to create, disseminate, store, brings value addition and manages information. The ICT sector consists of segments as diverse as telecommunications, television and radio broadcasting, computer hardware, software and services and electronic media, for example, the internet and electronic mail. This paper looks at the prospects generated by ICT supported networking processes for women's empowerment. It discusses the foremost challenges and a hindrance confronted by women and recommends strategies to address those challenges and means to revamp the situations giving rise to women's empowerment.

Keywords- Need of ICT, Status of Women in ICT, Women empowerment, ICT.

Introduction - Every second recruit entering the $60 billion Indian IT industry is a woman. Currently, Infosys employs the largest percentage of women at 33.4%, followed by TCS 30% and Wipro 29%. The major players in IT industry are now offering an environment that will retain the talented women workforce. To develop women friendly work environment leading companies are now offering benefits like lactation centers, extra maternity leave, work from home policies, creches, and option to relocate to city of their choice in case of transfer of the husband. IBM has also launched a diversity drive in the campuses specially to attract women in their workforce. In IBM the percentage of women has climbed up to 26%. (Singh Harsimran & Singh Shelley, 2009). development through the formation of new sorts of economic activity, employment openings, improvements in health-care delivery and other services, and the augmentation of networking, participation and advocacy within society. While the potential of ICT for encouraging economic growth, socioeconomic development and effective governance is well recognized, the paybacks of ICT have been unevenly disseminated within and between countries. Poverty, illiteracy, lack of computer literacy and language barriers are among the factors impeding access to ICT infrastructure, especially in developing countries. Another hindrance pertains to ICT is lack of its access to women. It is well unstated that any endeavour to revamp the quality of life of people in developing countries would be unfinished without the empowerment of women. Information and Communication Technologies [ICTs] are technological apparatus and resources to create, circulate, store, bring value addition and manage information. The ICT sector embraces diverse segments such as telecommunications, television and radio broadcasting, computer hardware, software and services and electronic media etc.

Review Of Literature

ICTs are constantly hailed as one of the most effective tools for economic progress. An ITU study (2005) describes ICTs as potentially powerful - development enablers: They are cost-effective with significant transformative power, allow developing countries to leapfrog several stages of the development process and, in furnishing individuals directly with tools for self-empowerment, avoid top-heavy and corrupt bureaucracies (Heeks, 1999; Karake Shalhoub & Al Qasimi, 2006). Specifically, Eggleston, Jensen, and Zeckhauser (2002) argue that ICTs - can enhance the functioning of markets that are critical for the well-being of the poor because ICTs can foster greater market integration in many ways:

- They allow firms and individuals in developing countries to contribute more competitively and with better ease in the regional, national and global economies and reduce uncertainty in doing business;
- Information concerning prices enables producers to plan their product mix and input purchases in a proficient manner;
- Access to ICTs allows producers to sell their products in the most profitable markets and find out the optimum timing of sale;
- Availability of price information shrinks the informational asymmetry between the rural producers and middlemen;
- ICTs reduce the exploitation of rural producers by emiddlemen;
- Increased information about the availability of jobs could result in better and faster matching between landless labourers and available jobs, ultimately leading to increased

productivity;

- ICTs provide greater access to weather-related information and credit opportunities. The literature on the enormous opportunities ICTs provide for women's empowerment is vibrant and wide ranging. Kelkar and Nathan (2002, p. 433) have argued that ITs have the potential to -redefined traditional gender roles and that -the spread of IT-enabled services has been immensely beneficial to both women and men, especially those who have limited skills or lack of resources to invest in higher education. Drucker (2001) has called ICTs the-great equalizer and pioneers in the field of gender empowerment through ICTs, both in academe and advocacy, such as Hafkin & Taggert (2001), Haflan (2002), Huyer (2002, 2005), Mitter (2003), Nath (2001), Sharma (2003), Sharma (2004), and Ng (2005) have convincingly shown that access to and effective use of ICTs contributes to women's empowerment and capacity building in numerous ways, frequently with synergetic effects:
- Training in the use and design of computer applications;
- Marketable skills create alternative possibilities for income formation and the possibility of upward mobility;
- An independent income is the basis for individual autonomy, increased agency and control and, frequently, increased self-esteem and self confidence (Huyer, 2006, p. 30; Garrido & Roman, 2006, p. 170).

Arivanandan (2013) has analyzed the socio-economic inclusions of rural women through the two kinds of information and communication technologies i.e. cell phones and internet in rural areas. For the empirical study, the author has selected 60 women, aged between 15 and 30 years from Trichirappalli District of Tamil Nadu. The author has found that the accessibility of cell phones is creating decision-making capacity and economic liberalization to women in the study area. Further, most women now search for jobs by using cell phones and personal contacts. This ability to get jobs means that rural women are earning money, which can go towards the cost of their marriage and that of their siblings. As a contrast, the study revealed that accessibility to the internet by rural people did not reach the expected level because of lack of infrastructure facilities, erratic electric power supply and internet connectivity, low levels of education and the economic condition of the people

Information and Communication Technology (ICT): The world is in the midst of a knowledge revolution, complemented by opening up of entirely new vistas in communication technologies. Recent developments in the fields of information and communication technology are indeed revolutionary in nature. In fact, IT has become the chief determinant of the progress of nations, communities and individual. The highlights of Indian IT Industries: According to NASSCOM Industry Ranking Report, 2013:

1. IT industry has generated aggregate revenue of USD 3.9 billion in Fiscal Year 1998 (Embassy of India, 2007) to more than USD 100 billion in Fiscal Year 2012.
2. IT has rapidly become one of the most economically significant industries in India in terms of share of total exports (approximately 25% for FY 2012) and export revenue (USD 69.1 billion and growing by more than 16%).
3. Its contribution to GDP is estimated to have grown from 1.2% in FY 1998 to 7.5% in FY 2012.
4. IT services alone account for more than half of the software and services exports in the industry, and is the fastest growing segment of the sector at 18% (NASSCOM, 2012).

It is considered crucial that the improvements in our society benefit all citizens. No single group should be ignored or favoured. The only way is "to make it better for all". There is potential for ICTs to eliminate gender inequality and to empower women in society.

Objectives of study:

1. To investigate women's empowerment through ICTs in rural areas.
2. To identify the barriers of usage of ICTs by women.
3. To examine the role of the Government and the NGOs in promoting the IT sector for women's development.
4. To suggest strategies to overcome barriers and offer some practical suggestions for policy makers to improve women's access to ICT.

Research methodology: Data used in this study is secondary in nature and is collected from various sources such as journals, periodicals, articles, books, reports, websites etc

Application of Information Technology in women empowerment of rural areas: There is a growing body of evidence on the benefits of ICT for women's empowerment, through increasing their access to health, nutrition, education and other human development opportunities, such as political participation. Women's sustainable livelihoods can be enhanced through expanded access of women producers and traders to markets, and to education, training and employment opportunities. By using one of the most important democratizing aspects of the Internet-the creation of secure online spaces that are protected from harassment-women are enjoying freedom of expression and privacy of communication to oppose gender discrimination and to promote women's human rights (Chat Ramilo 2005).

Largely speaking, there are three sorts of women empowerment:

- **Political empowerment:** It is concerned with augmenting the power of voice and collective action by women. Besides, it confirms equitable representation of women in decision-making structures, both formal and informal, and strengthens their voice in the formulation of policies affecting their societies.
- **Social empowerment**: This is a process of attaining information, knowledge and skills; and auxiliary participation of women in social organizations without any gender biasness in day-to-day activities. It is also concerned with inculcating a feeling of equivalence instead of subservience

among women.

- **Economic empowerment:** Women are economically endowed when they are supported to engage in a productive activity that permits them some degree of independence. This type of empowerment is also concerned with the quality of their economic involvement, beyond their presence as poorly paid employees.

Women Empowerment Through ICT- Any technology that is not proper for women is not justly appropriate technology. In the last 30 years, communication technologies have been put into action in a number of educational and developmental applications.

The national policy on education, 1986, observed that modern communication technologies have the potential to bypass numerous stages and sequences in the process of development, encountered in earlier decades. Both the restraints of time and distance become manageable at once. Further, in the policy document there are directions to endorse the enrolment of girls. The Ministry of Human Resource Development put in considerable attempts to utilise technologies in the primary school sector. These technology schemes envisaged dissemination of audio cassettes and television sets in primary schools. In addition, there were distinct schemes to offer primary teachers' training through video and television. In the last few years there have been distinctive schemes and campaigns to encourage girls to attend school and, thus, elevate their status in the family. Information networks covering the length and breadth of the country offer wide coverage. AIR has over 200 radio stations and 300 transmitters and Doordarshan has 600 transmitters. Both AIR and Doordarshan are influential tools to spread information in the country. In most of the other ICT initiatives

Empowerment through Employment: According to Data Quest's Best Employer Survey 2012, the percentage of women employed in the IT industry in India has actually decreased from 26% in 2010 to 22% in 2012 (Sharma, 2012) even though the number of jobs created in this sector continues to increase annually. Again, these statistics most likely point to a larger number of males available for employment than females and therefore a larger proportion of men being employed, but they also show that the number of women employed in the IT sector is not significantly increasing. Considering, then, how important the IT industry may be for the employment of young female professionals and if it is not now, it will be soon, the responsibility to create nondiscriminatory and comfortable workplace environments should fall heavily on the largest and most economically significant companies in the software sector, as they have the opportunity to set precedents not only for the rest of the industry but for Indian employers as a whole. However, ICT has played an important role in changing the concept of work and workplace. New areas of employment such as teleworking, i.e. working from a distance, are becoming feasible with new technology. As a result, a high proportion of jobs outsourced by big firms are going to women, therefore, work from outside the office, often from their own homes and at any time, thereby raising their incomes to become more financially independent and empowered.

Strategies to improve women's access to ICT:

1) Equitable access to ICT technology and the autonomy t receive and produce the information relevant to their concerns and perspectives are critical issues for women. They therefore need to be involved in decision-making regarding the development of new technology in order to participate fully in its growth and impact. Access and costs being some of the greatest barriers for ICT use, it is of the utmost importance to engage women and gender advocates in the policymaking process and dialogue. It is important engender ICT policy to ensure that women, particularly rural and poor women, benefits from ICT.
2) There is need to use a rights-based approach to ICT policy development, where everyone has the right to affordable access to ICTs. Only then, can we work toward securing universal access to ICTs and consequently promote and facilitate the use of ICTs for women's empowerment.
3) Personal ownership of ICT is not feasible in the foreseeable future for the vast majority of women in developing countries. Hence, the question of where and how they can gain access to ICT becomes important. This is an area where intermediary organisations can help bridge the 'last.
mile' of connectivity. They can ensure that email accounts, bulletin boards, search engines, mailing lists, and other useful functions serve as communication, networking and collaboration channels among women's groups, and between women and the external sphere. In order to facilitate access for women from other classes and sectors, these intermediary organizations need to be strategically located in local institutions to libraries, women's studies departments and institutes, community centers etc.
4) The potential of ICT for women in developing countries is highly dependent upon their levels of technical skill and education and is the principal requirement for accessing knowledge from the global pool. Government and NGOs need to impart technical education on the use of ICT as a part of both formal and informal education system and to initiate distance learning and vocational courses. It needs to be realized that information and communication technology by itself cannot answer all the problems facing women's development, but it does bring new information resources and can open new communication channels for marginalized communities.
5) Promote the enrollment of girls in ICT programs by providing incentives such as scholarships and awareness raising activities.
6) Language access must be addressed as a serious barrier to gender equity on the international ICT policy level.

Language options have to be taken as a political issue, an issue that must be in the policy decisions.

7) ICT policy must rest on the understanding that technology must be adopted to fit the needs of women. The key issue is that the technologies should be adapted to suit women rather that that women should be asked to adapt to suit the technologies. Most policymakers are proceeding on the second premise. If they can be encouraged to think and act in terms of the first premise then we will ensure that ICTs become more "women friendly" in terms of cost, access, applicability in different fields, etc.

8) Last but not the least, when policies and programs are in place to improve access, paucity of funds should not be a hindrance to establishing ICT access points or even implementing telecenter-type programs. As UN studies have indicated, though the costs of using ICTs for development may be high, not using them at all may prove to be costlier.

Conclusion- Information needs of women as well as their ICT use differ widely. However, there is no ideal ICT that fits all situations. Though women are engaged in numerous roles in agriculture, they are keen to have information on other parts, such as child health, nutrition, prevention and cure of common diseases, employment opportunities etc. Those trying to install ICTs for women empowerment should build their strategies grounded on ICT use pattern and varied information needs of rural women. Emerging a dynamic and relevant content for rural women continues to remain as a major challenge. Adequate resources need to be allocated for this activity, if profits from resources invested in connectivity and hardware have to be copiously realized. The gamut areas in which ICT can put a greater control in the hands of women is wide and continuously expanding, from managing water distribution at the village-level to standing for local elections and having access to lifelong learning opportunities. ICT have the potential to reach those women who hitherto have been not been reached by any other media, thereby empowering them to participate in economic progress and make informed decision on issues that affect them.

References:-

1. Arivanandan, M. (2013), "Socio-Economic Empowerment of Rural Women through ICTs", International Journal of Rural Studies, Vol. 20 No.
2. October, pp. 1-7. 2) Chat, Ramilo, Nancy Hafkin, and Sonia Jorge. (2005), "Gender equality and empowerment of women through ICT", Women 2000 and Beyond, September.
3. Chowdhury, S. (2006), "Empowering Rural Women Through Science and Technology", in Gender Inequality and Women's Empowerment, Rathindra, NathPramanik, and Ashim, Kumar Adhikary, Delhi: Abhijeet Publications, pp. 103-107.
4. Embassy of India. (2007), "India's Information Technology Industry", (online) Retrieved from http://www.indianembassy.org/indiainfo/india_it.htm.
5. Kinkini, DasguptaMisra. (2004), "Information & Communication Technology for Women's Empowerment in India", Information Technology in Developing Countries-A Newsletter of the IFIP Working Group 9.4 and Center for Electronic Governance, Indian Institute of Management, Ahmedabad, Vol. 14, No. 2, August.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

राष्ट्रीय एकता का वाहक भारतीय संविधान

डॉ. प्रवीण ओझा *

* प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, बी.एल.पी. शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – किसी भी देश के विकास में आर्थिक वातावरण की विशेष भूमिका होती है। स्वस्थ आर्थिक वातावरण का आधार होता है आर्थिक एकता। भारत में यह आर्थिक एकता भारतीय संविधान की अनुपम देन है। 11 दिसम्बर को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद इस सभा के स्थायी अध्यक्ष निर्वाचित हुए। जवाहरलाल नेहरू, मौलाना आजाद, डॉ. राधाकृष्णन, डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी, आचार्य कृपलानी, डॉ. भीमराव अम्बेडकर, हृदयनाथ कुंजरू, पं. गोविन्दवल्लभ पन्त, सरदार वल्लभ भाई पटेल, चक्रवर्ती राज गोपालाचारी, के.एम. मुन्शी तथा पुरूषोत्तमदास टण्डन जैसे राष्ट्र पुरूष इस सभा के सदस्य थे। महिला सदस्यों में सरोजिनी नायडू, श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख तथा श्रीमती हंसा मेहता उल्लेखनीय हैं। प्रारूप समिति का अध्यक्ष डॉ. आम्बेडकर को बनाया गया। पूरा संविधान बनने में 2 वर्ष 11 माह और 18 दिन का समय लगा। 26 जनवरी 1950 को भारत का यह गणतन्त्रीय संविधान लागू कर दिया गया।

भारतीय संविधान की प्रस्तावना में ही आर्थिक एकता को समावेशित किया गया है। हम भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न (अब संविधान की प्रस्तावना में भारत को सर्वभौम समाजवादी धर्म निरपेक्ष लोकतान्त्रिक गणराज्य के स्थान पर सर्वभौम लोकतान्त्रिक धर्म निरपेक्ष समाजवादी गणतन्त्र घोषित किया गया – भारतीय संविधान 44वाँ संशोधन अधिनियम 15/5/1978) लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतन्त्रता प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त करने के लिए तथा उस सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता सुनिश्चित करने वाली बन्धुता बढ़ाने के लिए, दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर 1949 ई. (मिति मार्ग शीर्ष शुक्ला सप्तमी, सम्वत दो हजार छ: विक्रमी) को एतद द्वारा इस संविधान को अंगीकृत अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

संविधान की इस प्रस्तावना में समूचे संविधान का सार है। उल्लेखनीय है कि इसमें जिन तथ्यों, सिद्धान्तों और आदर्शों का निरूपण हुआ है, वे सब समूचे संविधान में विद्यमान हैं। प्रस्तावना आधुनिक युग की तीन महान क्रान्तियों से प्रभावित है फ्रांसीसी, अमेरिकी और रूसी। फ्रान्सीसी क्रान्ति में स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व पर बल दिया गया था, अमेरिकी क्रान्ति में राजनीतिक स्वतन्तत्रा तथा व्यक्ति स्वातन्त्र्य पर और रूसी क्रान्ति में आर्थिक समानता पर। भारतीय संविधान ने प्रारंभ से ही इन तीनों में समन्वय स्थापित करने का प्रयत्न किया।

देश के आर्थिक विकास की स्थापना में यह संविधान अग्रणी है। हमारे संविधान की प्रस्तावना में जीवन के आर्थिक पहलू को भी स्वीकार किया गया है। जीवन के विकास में अर्थ की अपनी महत्ता है, यही कारण है कि आर्थिक समानता पर बल दिया गया है। संविधान की मूल प्रस्तावना में 42 वे संविधान संशोधन द्वारा कुछ शब्द और भाव जोड़े गए यथा–समाजवादी धर्म निरपेक्ष तथा अखण्डता और 44 वे संविधान संशोधन द्वारा प्रस्तावना के अन्तर्गत धर्म निरपेक्ष और समाजवादी शब्दों को बनाए रखा गया है। यहाँ समाजवाद से आशय है सभी प्रकार के सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक शोषण से मुक्ति। इस प्रावधान के द्वारा भारत का प्रत्येक नागरिक आर्थिक शोषण से मुक्त है। किसी भी प्रकार उसका आर्थिक दृष्टि से शोषण नहीं किया जा सकता।

उल्लेखनीय है कि संविधान में जहाँ अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा की व्यवस्था की गई है, वहीं उनके आर्थिक विकास पर भी बल दिया गया है और इसके साथ ही उनके आर्थिक स्तर को उन्नत करने के लिए संविधान में विशेष रूप से व्यवस्था की गई है। संविधान की प्रस्तावना में 'आर्थिक न्याय' पदावली का प्रयोग किया गया है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि केन्द्रीय सरकार कोई भी ऐसी व्यवस्था कर सके जिससे लोगों को समाज में आर्थिक अन्याय से मुक्ति मिल सके। निस्संदेह समाजवाद की व्यवस्था से आर्थिक न्याय को एक निश्चित दिशा प्रदान की गई है। इस प्रकार इस प्रस्तावना का आर्थिक पहलू अनेक दृष्टियों से काफी कुछ महत्वपूर्ण प्रतीत होता है।

भारतीय संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकार भी देश में आर्थिक एकता के संवाहक बने हैं। मौलिक अधिकार वे अधिकार हैं जो नागरिकों के जीवन के लिये मौलिक या अपरिहार्य होने के कारण संविधान द्वारा प्रदान किये गये हैं। इनके अभाव में नागरिकों एवं राष्ट्र की आर्थिक प्रगति संदिग्ध है। ये नागरिक को कल्याण, न्याय और उचित व्यवहार की सुरक्षा प्रदान करते हैं तथा राज्य के हस्तक्षेप से व्यक्ति को सुरक्षा प्रदान करते हैं। इनकी मुख्य विशेषता यह है कि ये राज्य द्वारा पारित विधियों से ऊपर हैं। भारतीय संविधान में भाग–3 द्वारा नागरिकों को 7 मौलिक अधिकार प्रदान किये गये थे किन्तु 44 वें संवैधानिक संशोधन (1979) द्वारा सम्पत्ति के अधिकार को मौलिक अधिकार के रूप में समाप्त कर दिया गया है। अब सम्पत्ति का अधिकार कानूनी अधिकार के रूप में है। नागरिकों को जो 6 मौलिक अधिकार प्राप्त हैं उनमें समानता के अधिकार के अन्तर्गत एक महत्वपूर्ण बिन्दु सरकारी पदों की प्राप्ति के लिये अवसर की समानता का है। अनुच्छेद–16 के अनुसार, 'सब नागरिकों को सरकारी पदों पर नियुक्ति के लिए समान अवसर प्राप्त होंगे

और इस सम्बन्ध में केवल धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्म-स्थान या इनमें से किसी के आधार पर सरकारी नौकरी या पद प्रदान करने में भेदभाव नहीं किया जायेगा।' इसके अन्तर्गत राज्य को यह अधिकार भी है कि वह राजकीय सेवाओं के लिए आवश्यक योग्यताएँ निर्धारित कर दे। संसद कानून द्वारा संघ में सम्मिलित राज्यों को अधिकार दे सकती है कि वे उस पद के उम्मीदवार के लिए उस राज्य का निवासी होना आवश्यक ठहरा दें। इसी प्रकार सेवाओं में पिछड़े हुए वर्गो के लिए भी स्थान सुरक्षित रखे जा सकते हैं।

इसी प्रकार दूसरे मौलिक अधिकार के अन्तर्गत संविधान द्वारा नागरिकों को व्यवसाय की स्वतंत्रता प्रदान कर आर्थिक एकता को पुष्ट बनाया गया है। भारत के सभी नागरिकों को इस बात की स्वतन्त्रता है कि वे अपनी आजीविका के लिए कोई भी पेशा, व्यापार या कारोबार कर सकते हैं। राज्य साधारणतया व्यक्ति को न तो कोई विशेष नौकरी, व्यापार या व्यवसाय करने के लिए बाध्य करेगा और न ही उसके इस प्रकार के कार्य में बाधा डालेगा। किन्तु इस सम्बन्ध में राज्य को यह अधिकार प्राप्त है कि वह कुछ व्यवसायों के सम्बन्ध में आवश्यक वृत्ति या योग्यताएँ निर्धारित कर सकता है अथवा किसी कारोबार या उद्योग को पूर्ण अथवा आंशिक रूप से अपने हाथ में ले सकता है।

तीसरा मौलिक अधिकार नागरिकों को शोषण के विरूद्ध अधिकार प्रदान कर उन्हें आर्थिक शोषण से बचाता है। भारत में सदियों से किसी न किसी रूप में दासता की प्रथा विद्यमान रही है, जिसके अन्तर्गत हरिजनों, खेतिहर श्रमिकों तथा स्त्रियों पर अत्याचार किये जाते रहे हैं। संविधान के अनुच्छेद 23 और 24 द्वारा सभी नागरिकों को शोषण के विरूद्ध अधिकार प्रदान किया गया है। इस सम्बन्ध में निम्न व्यवस्थाएँ हैं :-

(1) मनुष्य के क्रय-विक्रय और बेगार पर रोक - अनुच्छेद 23 (1) के अनुसार, मनुष्य के क्रय-विक्रय और बेगार (जबरदस्ती श्रम) पर रोक लगा दी गयी है, जिसका उल्लंघन विधि के अनुसार दण्डनीय अपराध है। इस सम्बन्ध में की गयी व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अपवाद यह है कि राज्य सार्वजनिक उद्देश्य से अनिवार्य श्रम की योजना लागू कर सकता है। लेकिन ऐसा करते समय राज्य नागरिकों के बीच धर्म, मूल, वंश, जाति, वर्ण या सामाजिक स्तर के आधार पर कोई भेदभाव नहीं करेगा।

(2) बाल श्रम अर्थात् बच्चों को कारखानों, आदि में नौकर रखने का निषेध - अनुच्छेद 24 में कहा गया है कि 14 वर्ष से कम आयु वाले किसी बच्चे को कारखानों, खानों या अन्य किसी जोखिम भरे काम पर नियुक्त नहीं किया जा सकता।

वास्तव में शोषण के विरूद्ध अधिकार का उद्देश्य एक वास्तविक सामाजिक लोकतन्त्र की स्थापना करना है। शोषण के विरूद्ध अधिकार को वास्तविकता का रूप देने के लिए ही जुलाई 1975 में घोषित किया गया कि 'बन्धक मजदूरी प्रथा' कहीं भी हो, गैर कानूनी घोषित कर दी जायेगी।

भारतीय संविधान में आर्थिक हितों के संरक्षणार्थ सम्पत्ति अधिकार की भी व्यवस्था की गयी जो विविध संवैधानिक संशोधनों के बाद भी आज भी आर्थिक परिप्रेक्ष्य में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सम्पत्ति का अधिकार- भारतीय नागरिकों को वर्तमान समय में सम्पत्ति का अधिकार मूल अधिकार के रूप में प्राप्त नहीं है, लेकिन 1978 तक सम्पत्ति का अधिकार मूल अधिकार के रूप में प्राप्त था। 1950 से लेकर 1978 तक इस अधिकार के सम्बन्ध के रूप में अनेक संवैधानिक संशोधन हुए और यह अधिकार बहुत अधिक विवाद का विषय रहा। अत: आज भी आर्थिक इतिहास की दृष्टि से इस अधिकार का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है।

भारतीय संविधान में सार्वजनिक कल्याण को दृष्टि में रखते हुए व्यक्तिगत सम्पत्ति के अधिकार और उस पर नियन्त्रण की आवश्यकता में सन्तुलन स्थापित किया गया है। अनुच्छेद 31 में घोषित किया गया है कि 'किसी भी व्यक्ति को उसकी सम्पत्ति से उस समय तक वंचित नहीं किया जायेगा जब तक कि ऐसा करने के लिए 'विधि का अधिकार' (Authority of Law) प्राप्त न कर लिया जाये और क्षतिपूर्ति की व्यवस्था न कर दी जाये।'

मूल रूप से संविधान में जो व्यवस्था की गयी थी उसके अनुसार कानून द्वारा भी कोई ऐसी व्यवस्था नहीं की जा सकती थी, जिसके अन्तर्गत किसी की व्यक्तिगत सम्पत्ति बिना उचित मुआवजे के ली जा सके, किन्तु 1951 के प्रथम संवैधानिक संशोधन द्वारा इसमें परिवर्तन किया गया है। इस संशोधन द्वारा यह निश्चित कर दिया गया है कि जमींदारी व जागीरदारी इत्यादि के अन्त से सम्बंधित विधेयक मुआवजे की व्यवस्था के न होते हुए भी वैध समझे जायेंगे।

प्रथम संशोधन के बाद भी राज्य द्वारा व्यक्तियों की भूमि के अतिरिक्त अन्य सम्पत्ति ग्रहण करने के मार्ग में कठिनाईयाँ बनी हुई थीं, अत: 1955 में संविधान में चतुर्थ संशोधन कर निश्चित किया गया कि 'सम्पत्ति ग्रहण करने के बदले में राज्य के द्वारा क्षतिपूर्ति की जानी चाहिए। लेकिन क्षतिपूर्ति की मात्रा विधानमण्डल द्वारा निर्धारित की जायेगी और क्षतिपूर्ति की पर्याप्तता की जांच न्यायापालिका द्वारा नहीं की जा सकेगी।'

27 फरवरी, 1967 को सर्वोच्च न्यायालय के अनुसार, 'इस निर्णय के बाद संसद को संविधान के भाग 3 के किसी उपबन्ध को इस तरह से संशोधन करने का अधिकार प्राप्त नहीं होगा जिससे कि मौलिक अधिकार छिन जाये या सीमित हो जायें।'

उपर्युक्त निर्णय से ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गयी कि संसद आर्थिक और सामाजिक प्रगति की दिशा में आगे बढ़ने के लिए या संविधान में दिये गये नीति निर्देशक तत्वों को कार्य रूप में परिणत करने के लिए कोई कार्य नहीं कर सकती थी। अत: गोकुलनाथ विवाद में किये गये निर्णय को रद्द करने के लिए 1971 में ही संविधान में 24 वाँ सशोधन किया गया। इस संवैधानिक संशोधन द्वारा यह निश्चित कर दिया गया है कि संसद को संविधान के किसी भी उपबन्ध को (जिसमें मौलिक अधिकार भी आते हैं) संशोधित करने का अधिकार होगा।

25वां संवैधानिक संशोधन, 1971 द्वारा अनुच्छेद 31 को संशोधित कर तथा अनुच्छेद 31 (ग) के बाद कुछ शब्दों को जोड़कर यह व्यवस्था की गयी कि 'सम्पत्ति के सार्वजनिक दृष्टि से अर्जन और उसके मुआवजे की राशि को न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकेगी।'

29 वां संवैधानिक संशोधन, 1972 द्वारा केरल की भूमि सुधार के दो विधेयकों को संविधान की 9वी सूची में शामिल कर लिया गया और अब इन्हें न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती। इस संवैधानिक संशोधन द्वारा यह निश्चित किया गया कि यदि भूमि के सीमाकरण से व्यक्तिगत जोत की भूमि भी प्रभावित होती है तो राज्य के द्वारा यह भूमि प्राप्त की जा सकती है और व्यवस्थापिका के द्वारा इस भूमि के बदले में मुआवजा निश्चित किया जा सकता है, जो उस भूमि के बाजार मूल्य से कम हो अर्थात् न्यायालय को मुआवजे की धनराशि पर विचार करने का अधिकार नहीं होगा। 34वां संवैधानिक संशोधन, 1974 और 40वां संवैधानिक संशोधन, 1976 भी इसी आशय के थे।

संविधान लागू किये जाने के बाद से ही अनेक पक्षों द्वारा यह सोचा जा रहा था कि भारतीय संविधान द्वारा नागरिकों को प्रदान किया गया सम्पत्ति का मूल अधिकार सामाजिक-आर्थिक-न्याय की प्राप्ति में बाधक बन रहा है और इसी कारण सम्पत्ति के अधिकार को मूल अधिकार के रूप में नहीं बनाये रखा जाना चाहिए। सम्पत्ति के अधिकार के सम्बन्ध में 44वें संवैधानिक संशोधन (अप्रैल 1979) में नवीन प्रकार से व्यवस्था की गयी है जिसके अनुसार सम्पत्ति का अधिकार अब एक मूल अधिकार ही नहीं रहा है, वरन् केवल एक कानूनी अधिकार है। 'सम्पत्ति का अधिकार' मौलिक अधिकार के रूप में न रहने पर भी कानूनी प्रक्रिया के बिना शासन द्वारा किसी भी व्यक्ति की सम्पत्ति नहीं छीनी जा सकेगी। जिन व्यक्तियों के पास भूमि सीमाकरण कानून (Land Ceiling Act) की सीमा के भीतर भूमि है और इस भूमि पर वे स्वयं कृषि कार्य करते हैं तो बाजार मूल्य पर मुआवजा दिये बिना इन व्यक्तियों की भूमि राज्य द्वारा नहीं ली जा सकेगी।

देश में आर्थिक साम्य की दिशा में संविधान में उल्लिखित नीति निर्देशक तत्वों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। संविधान के नीति निर्देशक तत्वों का उद्देश्य भारत में 'लोक कल्याणकारी राज्य' की स्थापना करना है। 'राज्य नीति के निर्देशक सिद्धान्त भारतीय संविधान की एक अनोखी और महत्वपूर्ण विशेषता है।' यह विशेषता विश्व के मात्र आयरलैण्ड के संविधान में ही पाई जाती है। भारतीय संविधान के चौथे भाग में, अनुच्छेद 36 से लेकर अनुच्छेद 51 तक में इन निर्देशक तत्वों का उल्लेख किया गया है। राज्य-नीति के उक्त निर्देशक तत्व, संविधान द्वारा राज्य को दिये गए अनुदेश पत्र हैं, जिनका पालन राज्य के विधान मण्डल एवं कार्यपालिका को करना चाहिए। ये नीति निर्देशक तत्व वे सिद्धान्त हैं, जिस पर भारत की भावी आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक नीति निर्धारित होगी। पर राज्य नीति के ये निर्देशक सिद्धान्त कानून द्वारा बन्धनकारी नहीं है।

इस संबंध में काम की न्याय तथा मानवोचित दशाओं का उपबंध अत्यंत महत्वपूर्ण है जिसके अनुसार राज्य काम की यथोचित और मानवोचित दशाओं को सुनिश्चित करने के लिए उपबन्ध करेगा।

श्रमिकों के लिए निर्वाह मजूरी संबंधी विधान या आर्थिक संगठन द्वारा अथवा और किसी दूसरे प्रकार से राज्य कृषि के, उद्योग के या अन्य प्रकार के सब श्रमिकों को काम, निर्वाह-मजदूरी, शिष्ट जीवन स्तर तथा अवकाश का सम्पूर्ण उपभोग सुनिश्चित करने वाली काम की दशायें तथा सामाजिक तथा सांस्कृतिक अवसर प्राप्त कराने का प्रयास करेगा तथा विशेष रूप से ग्रामों में कुटीर उद्योगों को वैयक्तिक अथवा सहकारी आधार पर बढ़ाने का प्रयास करेगा। राज्य जनता के दुर्बलतर विभागों के अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के शिक्षा तथा अर्थ-सम्बन्धी हितों की विशेष सावधानी से उन्नति करेगा तथा सामाजिक अन्याय तथा सब प्रकार के शोषण से उनका संरक्षण करेगा।

इन नीति निर्देशक तत्वों द्वारा राज्य की नीति के आर्थिक सिद्धान्तों का उद्घाटन होता है। यद्यपि ये राज्य के लिये अनिवार्य नहीं है तथापि जनता राज्य से अपेक्षा करती है कि नीति निर्धारण करते समय राज्य इन सिद्धान्तों को अवश्य ध्यान में रखे जिसका लाभ उठाकर भारत का प्रत्येक नागरिक स्वयं का तथा राष्ट्र का आर्थिक विकास कर सकेगा। देश में आर्थिक एकता की स्थापना कर लोक कल्याणकारी राज्य को संस्थापित करने में भारतीय संविधान की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. सुभाष सी. कश्यप - कॉन्स्टीट्यूशन ऑफ इण्डिया
2. अम्बेडकर, बी.आर.- भारत का संविधान
3. पान्डे, जयनारायण - भारत का संविधान
4. जे.साई., दीपक - ट्रेवल्स ऑफ ट्रेवर्नियर
5. करूधैया, शंकर गणेश- भारतीय अर्थव्यवस्था
6. सिंह, रमेश - भारतीय अर्थव्यवस्था

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Analysis on Marketing Strategy of FMCG Products

Dr. Preeti Anand Udaipure*

***Assistant Professor (Commerce) Government Narmada College, Hoshangabad (M.P.) INDIA**

Abstract - According to the analysis of Marketing, many analyses have focused on non-durable goods branding strategies, very few researchers have relied on FMCG firms in general, and no study has explicitly focused on the bating soap category in FMCG companies. Despite the fact that very few relevant studies have focused on washing facilities shampoo and conditioner marketing and branding methods, the current study covers a research vacuum in the area of marketing strategy.

Further, the study focuses on the top 3 selling FMCG brands pertaining to bating soaps in India. The study will help the companies to understand the ground realties on efficiency of branding strategies adopted by the FMCG companies. The core of India lives in its towns, and the "Indian country market" through its incomprehensible degree and solicitation base offers mind boggling opportunities to publicists. Rustic promoting integrates keeping an eye on in excess of 700 million expected buyers and more than 40 for each penny of the Indian center pay. Henceforth, the provincial market needs particular methods for selling items and administrations. Further, the review will likewise make an endeavor to embrace basic aspects in marking techniques, for example, Brand Association, Brand Loyalty, view of Marketers towards select FMCG brands.
Keywords- Analysis of Marketing,Branding Strategies,FMCG Companies,FMCG Brands,Indian Rural Market.

Introduction - The real strength of successful brands is that they fulfil the expectations of those who purchase them, or in other words, they represent a promise maintained, resulting in the buyer's trust, belief, and devotion to the brand, persuading them to make repeat purchases without hesitation. Today, marketing plan has a huge problem with marketing. Furthermore, it has been observed that, as a result of the fast increasing competition in the FMCG industry, FMCG companies have been diversifying in their marketing methods, particularly in terms of branding. The Brand inclination and maintenance of the purchasers are a portion of the top most difficulties to the organizations to deal with the significance that brands show for the progress of the business associations, the current section presents the point by point understanding on Brand and Branding procedures, the idea of FMCG brand, grouping of FMCG brands. Further, the part presents the itemized examination on survey of writing, need and significance of the review, goals, system and burning plan created to look at the targets.

Brand technique is a drawn out plan for the advancement of a fruitful brand to accomplish explicit objectives. A distinct and executed brand procedure influences all parts of a business and is straightforwardly associated with buyer necessities, feelings, and serious conditions. There are many sorts of marking systems in promoting that will expand brand value, enhancing the organization. Brand system can possibly develop emphatically and arrive at well past the main interest group. There are a wide range of kinds of brand techniques that change in light of interest groups, advertising efforts, and financial plans. A generally welcomed brand technique can possibly develop brand value and set its place as a laid out brand. A few organizations utilize various methodologies to expand the chances of an effective mission. Marking is a basic piece of the business building process. Enormous companies burn through a huge number of dollars constructing their brands.

Marketing Mix Strategies - A company's advertising mix is the combination of manageable and strategic displaying tools used to elicit the desired response from its target market. Everything an organisation can do to increase interest in its product is included here. It's also a tool for facilitating the planning and implementation of advertising campaigns. The 4 Ps of the showcasing mix are essential to a successful advertising strategy. It's designed to help the company achieve its marketing goals by making its customers feel valued. Using the four Ps of the advertising mix, the product's position in its target market is depicted.

Figure:-1: Elements of a marketing strategies and its environmental framework

When deciding on an organization's system, the task of promoting blend in Strategy - Marketing blend is critical. In any case, this is the first stage in developing a marketing strategy or a showcasing plan. This is due to the fact that; the ad mix choice will also effect positioning choices. For the sake of specifics, division and execution are necessary. Depending on the value, a location can be selected. To make matters more complicated, the choices you make now will undoubtedly have an impact on your future career path. Thus, the exhibiting blend approach and division focusing and positioning are interdependent for all time.

Advertising blend incorporates and joins different variables that help you recognize and survey different elements, which will empower you to discuss actually with your objective purchasers. Promoting blend You can use this guide to help you identify and survey the various aspects of your products or services, such as their utility for your customers and their importance to customer preferences. In addition, a good distribution channel, where your target customer is bound to look for your supplied services or products, can be determined using the advertising mix.

The 4 P's of Marketing: Advertising blend incorporates and joins different variables that help you recognize and survey different elements, which will empower you to discuss actually with your objective purchasers. Promoting blend guides you towards distinguishing and surveying the different parts of your items or administrations comparable to their utility for your purchasers and their significance to buyer inclinations. Besides, advertising blend likewise gives guidance for the determination of a reasonable dissemination channel, where you target shopper are bound to search for your offered administrations or items

1. **Product-**The primary thing a business needs is an item. In this manner item is additionally the main variable in the showcasing blend. Item choices are the main choices you want to take prior to making any promoting arrangement. An item can be isolated into three sections. The center item, the increased item and the tertiary item.
2. **Pricing-**An item's value is always changing due to a variety of circumstances. An important consideration in determining the value of an item is the price of the item itself, as well as the costs of publicising and advertising it, as well as potential future changes in the item's cost. Many of these variables are subject to alter on their own.
3. **Place-**The item's dispersion channel is referred to as its "place." It should be as easy to find as possible if an object is a consumer item. Assuming the item is a Premium customer exclusive, it will only be available at a limited number of retail locations. Also, if the item is a commercial one, it will necessitate a group that works with businesses and makes the item available to them.
4. **Promotion-**ATL and BTL publicizing, as well as new arrangements, are all part of the evolving marketing mix, which integrates all of the various forms of integrated advertising. Progress is heavily dependent on the item and the estimation of choice. Brand/item mindfulness advancements are required if the item is completely new to the market, whereas brand review advancements are required if it is already in use. The split of the item's purpose and location is also completed by advancements.

Fig.2: Ps of Marketing

Product Strategy: In most cases, amazing products begin with a sensible approach that is tailored to the needs of the customer and the market. The use of a technique ensures that you are only working on what matters. It's also essential if you want to convey what's important to your group or organisation. The primary goal of a methodology is to provide the product manager with a course of action so that they can drive their product team and manage the business during the planning period. With the use of procedures, item managers may also help cross-functional groups and important partners understand the value of the items and how they will contribute to major business goals. Item lifecycle procedures are the foundation of an item's execution strategy for future events. While developing their product method, item pioneers focus on the right audience and define essential product and customer attributes.

Item procedure includes three central point:

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

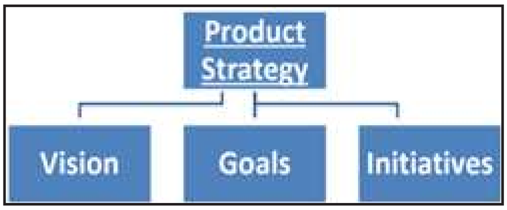

Fig.3 Factors of Product Strategy

Vision-A decent vision portrays who the clients are, what clients need, and how you intend to convey an extraordinary contribution. The vision remembers subtleties for the market an open door, target clients, situating, a cutthroat investigation, and the go-to-advertise plan. Item Strategy Vision Goals Initiatives.

Goals-Objectives characterize what you need to accomplish in the following quarter, year, or year and a half.

Initiatives-Drives are the undeniable level endeavors that will assist you with accomplishing your objectives

An extraordinary technique begins with a reasonable item plan, a dream and a material that makes sense of how client and market influences shape the item's course. That is the reason you should imagine your system and connections.

Review of literature

F.L. Lifu , 2012. As the author has already mentioned, the packing is quite strong. According to the results of his research, customers' trust and loyalty can be bolstered and even impulse purchases can be stimulated by appealing packaging. Both the goods and its packaging have the power to captivate the buyer.

AdityaMaheshwari and GujanMalhotra July – December, 2011 The creator has spoken about the strength of the bundling. In his review observing he upholds that appealing bundling can incite even drive purchasing and wind the client's certainty and steadfastness. Bundling has solidarity to draw in the purchaser comparable to the item.

Bogea (2018)in his review learned the factors that can impact web-based entertainment reception by firms and how these factors impact reception. The review has additionally proposed a hypothetical model of online entertainment and tried exactly utilizing TAM, UTAUT, and Institutional Theory. The review was directed in two stages, mix of subjective and quantitative review. In the principal stage semi-organized interviews were led with senior advertising leaders of enormous organizations of various financial areas.

Al Rahbi (2017)directed a review to perceive the variables that impact SMEs in taking the choice about the virtual entertainment reception utilizing the TechnologyOrganisation-Environment (TOE) system. The review has followed a sequential blend of both subjective and quantitative ways to deal with arrive at the exploration targets. At first semi-organized interviews with 18 SMEs proprietor administrators in Muscat were led and determined a starter TOE model of 18 variables from the examination of the meetings.

Kalkan and Bozkurt (2017)expected to inspect the impression of SMEs about the online entertainment and their intentions of utilizing the web-based entertainment instruments. The information for the examination were gathered from SMEs working in Burdur utilizing straightforward arbitrary testing. The poll was utilized as an instrument to gather information with the end goal of exploration. Further, PC and measurable examination was done by utilizing SPSS 20 factual program. At last, a recurrence table with respect to the online entertainment use in SMEs was laid out.

Lacoste (2016)has contributed towards the exploration in the time of virtual entertainment with the target to comprehend how the key administrators utilize web-based entertainment record and how it assists them with collaborating with the key clients. The review pointed toward separating the virtual entertainment use between the selling and KAM capacities. The review followed a subjective exploration approach utilizing the grounded hypothesis technique. The specialists showed a model in view of investigated exact information and widened the utilization of virtual entertainment to the KAM work. KAM is in many cases the advancement from a straightforward transient offering point of view to an intricate, longer term one with a typical center capability, which is client relationship the board.

Rural Market

Fig.4 FMCG Shop in Rural Market of India

The ascent of rustic business sectors as extraordinarily unseen potential underlines the need to explore them. Sponsors over late many years, with inventive procedures, have tried to understand and tap country markets. A portion of their undertakings paid off many business sectors still an enigma. Rustic promoting is a creating thought, and as a piece of any economy, has unseen potential; publicists have perceived the entryway lately. Change in structure and accomplish, advertisers have understood the open door as of late.

The significant attributes of provincial market are:

- Costly, varying and dissipated market-Rural promoting is colossal and dispersed into different districts. There may be less number of shops and arrangement available in natural business sectors, in view of explicit reasons.

1. Rustic purchasers rely upon farming Rural achievement is attached with agrarian thriving. In the event of yield frustration, the compensation of masses is clearly

impacted.

2. "Way of life"- It is understood that overwhelming majority of the rustic people lives under destitution line and has low capability rates, low investment funds, underneath the level lifestyle, etc.
3. Grouped "Financial" establishment Due to contrasts in topographical reaches, and lopsided land readiness, country people has assorted monetary establishment, which at last impacts the provincial business sectors.
4. "Foundation offices": The framework offices like appropriation community, correspondence systems and cash related workplaces are insufficient in country areas so actual development is a test to marketing experts.

Conclusion - The examination depends on a client investigation of three select FMCG firms' marking techniques for their Bathing Soap Brand. Clients are all around informed about store brand accessibility, selling offers, and flavor distinguishing proof. The discoveries show that buyers are entirely learned about deals/markdown offers, yet they are less educated about item gatherings and determinations. The concentrate on brand inclination show that buyers were profoundly seen positive as to inclination of brand based on execution and quality and though the purchasers are less seen towards impact of reference gatherings. With respect to marking techniques, greater part of them have concurred that adding related new items in the product offering made them to like and purchase. Further, presentation of new items with expected highlights urged them to purchase. At last it is to reason that purchasers are very much aware of Bating cleanser brand presented by the 3 select organizations and further, it is seen that shoppers inclination of brands are chiefly inspired by their experience and organizations need to focus on advancing of brand by powerful advancement of value, elements and claims to fame to impact the brand inclination of the buyers.

References:-

1. Muhammad EhsanMalik, Muhammad Mudasarghafoor, Hafiz KashifIqbal, Qasim Ali, HiraHumbal , Muhammad Noman and Bilal Ahmad(2013), "Impact of Brand image and Advertisement on consumer buying behaviour", World Applied Sciences Journal, Vol.23, issue 1, pp:117-122.
2. Jain Pk&SangeetaBhatnagar(2014), "Purchase behaviour of branded men's wear- A study on youngsters and Professionals", Research journal's Journal of Marketing, vol.2, Issue1, February, 2014.
3. Suganthi V, 'Marketing strategy of FMCG Product: A Case Study of Hindustan Unilever Limited', International Journal of Academic Research and Development', vol.1, issue 9, September, 2016, pp.16-18.
4. Jitendra K Das, Om Prakash and VarshaKattri(2016). Brand Image Mapping: A Study on Bathing Soaps, Global Business Review, Vol.17, Issue 4, 2016.
5. Dubois, M. (2012). Extended producer responsibility for consumer waste: the gap between economic theory and implementation. Waste Management & Research, 30(9 suppl), 3642.
6. Eisenhardt, K. M., & Martin, J. A. (2000). Dynamic capabilities: what are they? Strategic management journal, 21(10-11), 1105-1121.
7. Eisenhardt, K. M., Furr, N. R., & Bingham, C. B. (2010). CROSSROADS-Microfoundations of Performance: Balancing Efficiency and Flexibility in Dynamic Environments. Organization Science, 21(6), 1263-1273.
8. Kumar, V., Mudambi, R., & Gray, S. (2013). Internationalization, Innovation and Institutions: The 3 I's underpinning the competitiveness of emerging market firms. Journal of International Management, 19(3), 203-206.
9. Kumar, M., Srai, J., Pattinson, L., & Gregory, M. (2013). Mapping of the UK food supply chains: capturing trends and structural changes. Journal of Advances in Management Research, 10(2), 299326.
10. Lin, Y., Luo, J., Zhou, L., Ieromonachou, P., Huang, L., Cai, S., & Ma, S. (2014, June). The impacts of service quality and customer satisfaction in the e-commerce context. In Service Systems and Service Management (ICSSSM), 2014 11th International Conference on (pp. 1-6)
11. Muller, M (2013) Nestlé baby milk scandal has grown up but not gone away.
12. Servaes, H., & Tamayo, A. (2013). The impact of corporate social responsibility on firm value: The role of customer awareness. Management Science, 59(5), 1045-1061. 26.
13. Schaffer, R., Agusti, F., &Dhooge, L. (2014). International business law and its environment. London: Cengage Learning.
14. Schein, E.H (2012) Organisational culture and leadership. Boston: Harvard University Press.
15. Shotter, J (2012) Emerging markets sustain Nestlé s profits
16. Simons, R. (2013). Levers of control: How managers use innovative control systems to drive strategic renewal. Harvard Business Press.
17. Teece, D.J (2009) Dynamic capabilities: organsing for innovation and growth. Oxford: Oxford University Press.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

भारत में प्राचीन काल में समय की गणना- एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. मधुसूदन चौबे *

* सह प्राध्यापक (इतिहास) शहीद भीमा नायक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़वानी (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना - गणित और विज्ञान के क्षेत्र में भारतीय प्रगति का इतिहास अत्यंत प्रदीर्घ है। प्राचीनकाल में इस क्षेत्र में महती प्रगति हो चुकी थी। पश्चिमी विश्व के समय के मापन के बहुत पहले भारत में समय की गणना के अनेक मापदंड सुनिश्चित हो चुके थे। वेदों में इस संबंध में अनेक दृष्टांत मिलते हैं। वराहमिहीर और आर्यभट्ट की रचनाओं में समय के तत्वों का प्रामाणिक प्रतिपादन उपलब्ध है।

समय संबंधी भारतीय अवधारणा - भारत में समय या काल को आदि तथा अनंत एवं सृष्टि की शाश्वत सत्ता माना गया है। समय ही सृष्टि के संचालन का मूल है। काल के सापेक्ष ही सृष्टि के सभी चराचर प्राणी अपना जीवन व्यतीत करते हैं। काल के बिना इस संसार का कोई भी अस्तित्व नहीं है। काल की सत्ता अत्यंत विशिष्ट होने से यह अनिर्वचनीय है।

काल शब्द की व्युत्पत्ति कल संख्यायने धातु में घञ् प्रत्यय जोड़ने पर हुई है- 'कलयते लोकान इति काल:।' इसका आशय है- जिसकी लोक में गिनती होती है या की जा सकती है, वह 'काल' है। काल मुख्य रूप से दो श्रेणी का होता है- प्रथम- लोक का संहार करने वाला एवं द्वितीय- कलनात्मक या गणनात्मक अर्थात् गणना करने वाला। संहारक काल को महाकाल या अन्तकृत काल भी कहा जाता है।

पुराणों की दृष्टि से देखें तो हम पाते है कि काल सृष्टि का निर्माता और संहारकर्ता दोनों ही है। 'काल: सृजति भूतानि काल: संहरते प्रजा:।' या 'कालो जगद्भक्षक:।' अर्थात् काल जगत का भक्षण करने वाला है। 'कालो न यातो व्यमेव याता।' अर्थात् काल कहीं नहीं गया बल्कि हम स्वयं चले गए।

श्रीमद्भागवत के एक प्रसंग के अनुसार राजा परीक्षित द्वारा महामुनि शुकदेव से काल का अर्थ पूछने पर यह उत्तर मिला था कि - 'विषयों का रूपान्तर ही काल का आकार है। उसी को निमित्ता बना वह काल तत्व अपने को अभिव्यक्त करता है। वह अव्यक्त से व्यक्त होता है।'

वेदों में समय को 'कालपुरुष', उपनिषदों में 'आभासी सत्ता', पुराणों में 'विश्व नियंता' कहा गया है। बौद्धमत में यह 'भूत, वर्तमान तथा भविष्य' है। जैन मत इसको 'गति नियंता' एवं 'चेतन जगत का नाम देता है।

भगवान भास्कर ने 'सूर्य सिद्धांत' में काल को इस प्रकार अभिव्यक्त किया है-

'लोकानामन्तकृत काल: कालोऽनय: कलनात्मक:।
स द्विधा स्थूल सूक्ष्मत्वान् मूर्तश्चामूर्त उच्चयते।।'

इस श्लोक में काल के दो स्वरूप निरुपित किये गये हैं। पहले में काल को अन्तकृत लोक का विनाश करने वाला और दूसरे में कलनात्मक बताया गया है। कलनात्मक काल के भी दो भेद बताये गये हैं- प्रथम मूर्त एवं द्वितीय अमूर्त। जिस काल का व्यवहार किया जा सकता है वह मूर्त है तथा जिसका व्यवहार नहीं किया जा सकता, वह सूक्ष्म या अमूर्त कहा गया है।

प्रत्येक सृष्टि किसी कालखंड में अस्तित्व में होती है। यह एक शाश्वत नियम है कि जिसकी सृष्टि होती है, उसका लय भी होता है। एक सृष्टि के प्रारंभ से लेकर उसके लय तक की अवधि भी काल मापने की इकाई मानी जाती है। इस इकाई को अन्तकृत काल कहते हैं, क्योंकि इसका समापन लय के साथ होता है। जिस इकाई से सृष्टि के प्रारंभ से सृष्टि के अंत होने तक मध्य की कालावधि की गिनती की जाती है, वे सूक्ष्म एवं स्थूल इकाइयाँ कलनात्मक काल कही जाती हैं। सृष्टि का अंत या प्रलय भी काल की एक इकाई है, जिसे कल्प कहा जाता है। कल्प के अंत में ब्रह्मा विश्राम करते हैं। ब्रह्मा का एक दिन एक कल्प के बराबर होता है। उनकी एक रात्रि भी एक कल्प के समान होता है। विश्राम के उपरांत ब्रह्मा जी का दिन फिर से शुरु होता है और नई सृष्टि का सृजन होता है। इसी तरह यह क्रम गतिमान रहता है। ब्रह्मा को सृष्टि का निर्माण करने में 47400 दिव्य वर्ष की अवधि लगती है। तक कल्प में एक हजार महायुग होते हैं।

भास्कराचार्य ने अपने ग्रंथ 'सिंद्धांतशिरोमणी' में लिखा है कि-

लंकानगर्यामुदयाच्च भानोस्तस्यैव वारे प्रथमं बभूव।
मधो: सितादेर्दिनमासवर्षयुगादिकानां युगपत् प्रवृत्ति:।।

इसका अर्थ यह हुआ कि जब लंका नगरी में सूर्य का पहली बार उदय हुआ तब चैत्र शुक्ल रविवार से दिन, मास, वर्ष, युग तथा कल्प आदि की प्रवृत्ति हुई। आचार्य भास्कर के अनुसार सूर्य का पहली बार उदय लंका नगरी से हुआ और तभी से सृष्टि का प्रारंभ हुआ।

श्रीमद्भगवद्गीता में काल के संबंध में उल्लेख आया है कि-

कालोस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवत:।
ऋतेपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे यीवस्थिता: प्रत्यनीकेषु योधा:।।

इस श्लोक के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि- हे अर्जुन ! मैं सम्पूर्ण लोक का निवाश करने वाला इन उग्ररूपों से सम्पन्न बढ़ा हुआ काल हूँ। मैं इन असूर लोगों का संहार करने के लिए ही प्रवृत्त हुआ हूँ। जो इस समय तुम्हारी प्रतिपक्ष सेनाओं में योद्धा स्थित हैं, ये सभी तुम्हारे बिना भी अर्थात् तुम्हारे युद्ध न करने पर भी जीवित नहीं रहेंगे।

श्रीमद्भागवत के एक प्रसंग के अनुसार राजा परीक्षित के महामुनि शुकदेव से काल का अर्थ पूछने पर यह उत्तर मिला था कि - 'विषयों का रूपान्तर ही काल का आकार है। उसी को निमित्ता बना वह काल तत्व अपने को अभिव्यक्त करता है। वह अव्यक्त से व्यक्त होता है।'

महाभारत के आदिपर्व में काल के संबंध में वेदव्यास जी ने लिखा है कि-

काल: सृजति भूतानि काल: संहरते प्रजा:।
संहरन्तं प्रजा: कालं काल: शमयते पुन:।।

काल ही समस्त जीवों की सृष्टि करता है और वही उनका संहार करता है। इस प्रकार उनके संहार के कारणभूत काल को वही अर्थात् महाकाल या परमात्मा का शामक रूप शांत करता है। इस प्रकार सृष्टि संहार का चक्र चलता रहता है।

काले हि कुरुते भावन् सर्वलोके शुभाशुभान्।
काल: संक्षिपते सर्वा: प्रजा: विसृजते पुन:।।

सृष्टि में सभी शुभ-अशुभ पदार्थों का रचयिता काल ही है। वह सब जीवों का विनाशकर्ता है और वही उनकी पुनरुत्पत्ति का कारण है।

काल: पचति भूतानि काल: संहरते प्रजा:।
काल: सुप्तेषु जागर्ति कालो हि दुरतिक्रम:।।

काल प्राणियों को निगल जाता हैं काल सृष्टि का विनाश कर देता है। यह प्राणियों के सो जाने पर भी उनमें विद्यमान रहता है। इसका कोई भी अतिक्रमण नहीं कर सकता।

दुरतिक्रम का अर्थ अजेय होता है। काल को परास्त नहीं किया जा सकता है। जगत में कोई भी प्राणी, वनस्पति अथवा जड़ पदार्थ नहीं है, जो एक निश्चित अवधि कके बाद नष्ट होने से बच जाए। काल की सीमा का अतिक्रमण करना संभव नहीं है। रावण जैसे त्रिलोकस्वामी समझे जाने वाले असुर भी काल के समक्ष परास्त हो गये। श्रीमद्भगवतगीता में श्रीकृष्ण ने कहा- 'जातस्य ध्रुवोर्मृत्यु:' अर्थात् उत्पन्न हुए सम्पूर्ण प्राणी या पदार्थ अवश्य ही मृत्यु या विनाश को प्राप्त होते हैं। यह अंतिम सत्य है।

महाकवि क्षेमेन्द्र के अनुसार-

अहो कालसमुद्रस्य न लक्ष्यन्ते तिसंतता:।
मज्जन्तोन्तरनन्तस्य युगान्ता: पर्वता इव।।

इसका आशय यह है कि काल के महासमुद्र में कहीं संकोच जैसा अन्तराल नहीं, महाकाय पर्वतों की तरह बड़े-बड़े युग उसमें समाहित हो जाते हैं।

भास्कराचार्य के 'सूर्यसिद्धांत' में काल के अखण्ड और सखण्ड दो स्वरूपों का उल्लेख किया गया है। अखण्ड स्वरूप सतत् विद्यमान है और पूरी सृष्टि के विनाश तथा उत्पत्ति का पर हेतु है। वही परब्रह्म एवं महाकाल है। वह भूत, वर्तमान तथा भविष्य के काल खंड से अलग है। सखण्ड काल दो क्रियाओं के मध्य विद्यमान है। इसकी त्रुटि आदि गणना की इकाइयों के रूप में गणना की जा सकती है। यह अनित्य है और सृष्टि के विलीन होने के साथ ही इस काल का भी नित्य या अखण्ड काल में विलय हो जाता है।

काल की गति के संबंध में दो मत हैं- पहले मत के अनुसार यह सीधी रेखा में गति करता है और दूसरे मत के अनुसार यह चक्र में भ्रमण करता है, इसलिए इसको कालचक्र की संज्ञा दी गई है।

काल के मानों का विवरण -भारतीय ज्योतिष शास्त्र में काल की गिनती करने हेतु काल के नौ मान निरुपित किये गये हैं-

ब्राह्मं दिव्यं तथा पैत्र्यं प्राजापत्यं च गौरवम्।
सौरं च सावनं चान्द्रमर्क्षं मानानि वै नव।।

ये हैं- ब्राह्म, दिव्य, पैत्रय, प्राजापत्य, गौरव, सौर, सावन, चान्द्र एवं नाक्षत्र। ये काल के मापक हैं। इनका संक्षेप में विवरण इस प्रकार है-

1. **ब्राह्म मानम्** - ब्रह्मा के एक अहोरात्र का मान दो कल्प के बराबर होता है। एक कल्प में एक हजार महायुग होते हैं। एक महायुग में 4320000 सौरवर्ष होते हैं।

2. **दिव्य मानम्** - इसका संबंध देवताओं से है। देवताओं का एक दिन मनुष्यों के एक वर्ष के समकक्ष होता है।

3. **पैत्रय मानम्** - यह पितरों से संबंधित है। पितरों का अर्थ होता है, मनुष्यों के वे पूर्वज जिनकी मृत्यु हो गई है। पितरों का एक दिन मानवों के एक पक्ष के बराबर होता है।

4. **प्रजापति मान** - इसका संबंध प्रजापति से है।

5. **गुरु मान** - इस मान की गणना गुरु या बृहस्पति ग्रह के मध्यम मान से की जाती है।

6. **सौर मान** - यह मान सूर्य से संबंधित है। इसकी गणना सूर्य के आधार पर की जाती है।

7. **सावन मान** - एक सूर्योदय से लगाकर दूसरे सूर्योदय तक के अंतर मान को ही सावन मान कहा जाता है।

8. **चान्द्र मान** - इस मान की गणना चन्द्रमा के आधार पर की जाती है।

9. **नाक्षत्र मान** - एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र तक का उदय मान नाक्षत्र मान कहलाता है।

काल अनादि तथा अनन्त है, लेकिन उसको मापा जा सकता है। भारतीय अवधारणा में काल को मापने के लिए सूर्य, चंद्र, बृहस्पति आदि का उपयोग किया जाता है। काल को मापने के लिए उल्लिखित नवमानों में से चार कालमान हमारी दिनचर्या से सम्बद्ध है- सौर, चन्द्र, सावन एवं नाक्षत्र। मास से अधिक समय की गणना करने के लिए सौर मान का प्रयोग किया जाता है। भारतीय मान्यता में बारह राशियों का अस्तित्व है। इन राशियों के नाम इस प्रकार हैं- मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृष्चिक, धनु, मकर, कुंभ एवं धनु। सूर्य एक राशि में एक माह तक रहता है। बारह राशियों में घूमने में बारह माह या एक वर्ष का समय लगता है। मास की गणना चन्द्रमास से की जाती है। पूर्णिमा से पूर्णिमा तक एक चन्द्रमास होता है। दिन का मापन पृथ्वी के दिन या सावन दिन से की जाती है। दो सूर्योदय के मध्य के काल को सावन दिन या पृथ्वी का दिन कहा जाता है। एक नक्षत्र के उदय काल से दूसरे उदय काल तक के समय को नाक्षत्र काल कहा जाता है। नाक्षत्र दिन का मान 60 घटी या 24 घंटे होता है।

दैनिक कार्यों में जिन कालमानों का उपयोग किया जाता है, उसका विवरण इस प्रकार है-

1. **काल के अवयव** -काल के अवयवों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है-

(अ) - अमूर्त काल - सूक्ष्म -सूक्ष्म कालखंड अत्यंत सूक्ष्म होता है, अत: इसको अमूर्त कहा जाता है। इसका प्रयोग सामान्य व्यवहार में नहीं होता है। यही कारण है कि इसको अव्यावहारिक काल कहा जाता है। इसकी सबसे छोटी या प्रथम इकाई 'त्रुटि' है। आंखों की पलक को झपकने में लगने वाले समय को 'निमेष' कहा जाता है। एक निमेष का तीन हजारवां हिस्सा 'त्रुटि' कहलाता है। इससे स्पष्ट होता है कि त्रुटि समय की कितनी सूक्ष्म इकाई है। इसके अंतर्गत त्रुटि, रेणु, लव, लीक्षक, प्राण आदि इकाइयाँ होती हैं। इसमें पद्यपत्र भेदनकाल = एक त्रुटि, 60 त्रुटि = एक रेणु, 60 रेणु = एक लव, 60 लव = एक लीक्षक एवं 60 लीक्षक = एक प्राण होता है।

1. **त्रुटि** - सूक्ष्मकाल की सबसे छोटी इकाई को 'त्रुटि' कहते हैं। नारद मत के अनुसार कमल के पुष्प के पत्र को सूई से छेदने में जितना समय लगता है, उसे त्रुटि कहते हैं। भास्कर मत के अनुसार निमेष का तीन हजारवां हिस्सा त्रुटि कहलाता है। आधुनिक गणना के अनुसार बात करें तो त्रुटि एक सेकंड का

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

बत्तीस लाख चालीस हजारवाँ हिस्सा होता है।

2. रेणु – त्रुटि से बड़ी इकाई रेणु कहलाती है। नारद मत के अनुसार रेणु त्रुटि का 60 गुना होता है। एक सेकंड का चौवनवाँ हिस्सा रेणु के बराबर होता है।

3. तत्पर – भास्कराचार्य के अनुसार निमेष के खराम भाग को तत्पर कहते हैं। खराम 30 की संख्या को इंगित करता है। निमेष का तीसवां भाग तत्पर कहलाता है। निमेष एक सेकंड का बत्तीस हजार चार सौवां हिस्सा होता है।

4. निमेष – पलकों के संयोग को एक निमेष कहा जाता है। वर्तमान गणना के अनुसार निमेष मिलिसेकंड से कुछ छोटा एवं माइक्रोसेकंड से एक हजार गुना अधिक होता है। निमेष एक सेकंड का एक हजार अस्सीवां हिस्सा होता है।

5. लव – रेणु के 60 गुने के बराबर समय को 'लव' कहते हैं। एक सेकंड का नौ सौवां हिस्सा लव होता है।

6. लीक्षक – लीक्षक का मान लव से 60 गुना अधिक होता है। एक सेकंड का चौवनवाँ हिस्सा लीक्षक होता है।

(ब) – मूर्त काल – स्थूल – यह स्थूल होने के कारण इसको मूर्त कहते हैं। इसे व्यावहारिक काल भी कहते हैं, क्योंकि इसका दिन-प्रतिदिन के जीवन में प्रयोग किया जाता है। इसकी सबसे छोटी या प्रथम इकाई 'प्राण' है। इसमें प्राण, विपल, पल, घटी, अहोरात्र, मास, वर्ष आदि इकाइयाँ सम्मिलित होती हैं।

1. 6 विपल = 1 प्राण,
2. 60 विपल = 1 पल,
3. 60 पल = 1 घटी (नाडी),
4. 60 घटी = 1 अहोरात्र,
5. 30 अहोरात्र = 1 मास,
6. 12 मास = 1 वर्ष या एक सौरवर्ष की अवधि होती है।

यदि हम इसको आधुनिक काल गणना की इकाइयों में रूपांतरित करें तो, इनका विवरण इस प्रकार होगा-

1. 24 सेकेण्ड = 60 विपल = 1 पल,
2. 24 मिनिट = 60 पल = 1 घटी एवं 2
3. 4 घंटा = 60 घटी = 1 अहोरात्र।
4. 1 मास = 30 अहोरात्र।
5. 12 मास = एक वर्ष।

2. काल की दीर्घ इकाइयाँ – काल आदि और अनन्त है, अत: जहां इसके मापन के लिए उपर्युक्त सूक्ष्म इकाइयाँ उपलब्ध हैं, वहीं कालमापन की अनेक बड़ी या दीर्घकालीन इकाइयों की भी रचना हुई है। इनका विवरण निम्नानुसार है-

अ- कृतयुग या सतयुग = 1728000 सौरवर्ष,
ब- त्रेतायुग = 1296000 सौरवर्ष,
स- द्वापरयुग = 864000 सौरवर्ष,
द- कलियुग = 432000 सौरवर्ष,
इ- महायुग = 4320000 सौरवर्ष,
ई- मनु = 306720000 सौरवर्ष,
उ- कल्प = 4320000000 सौरवर्ष,
ऊ. ब्राह्म अहोरात्र = 8640000000 सौरवर्ष,

भारतीय इतिहास की चक्रीय अवधारणा के अनुसार मुख्य रूप से चार कालों सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग एवं कलियुग की मान्यता है। सबसे अधिक समय सतयुग का है। इसके उपरांत के युगों की अवधि में क्रमश: कमी आ रही हैं इन चारों युगों की कालावधि के योग को महायुग की संज्ञा दी गई है। त्रेतायुग भगवान श्रीराम का तथा द्वापरयुग भगवान श्रीकृष्ण का युग रहा है। वर्तमान में हम कलियुग में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

संवत्सर –भारतीय कालगणना में संवत्सर का भी महत्वपूर्ण स्थान है। सामान्यत: संवत्सर का उपयोग समय की गणना के लिए एक वर्ष की अवधि के संदर्भ में होता है। हमारे देश में अनेक संवत्सर प्रचलित हैं। इनकी अवधि 11 माह से लगाकर 13 माह तक की है। ऋग्वेद, अथर्ववेद एवं अन्य शास्त्रों में कालचक्र के रूप में संवत्सर का उल्लेख उपलब्ध है। ज्योतिषीय परिभाषा के अनुसार बृहस्पति के मध्यम मान से राशि के एक भोगकाल को संवत्सर की संज्ञा दी गई है।

भारत में व्यावहारिक रूप से 60 संवत्सरों का प्रचलन है। ये संवत्सर तीन श्रेणियों में विभक्त किये गये हैं। इनका विवरण इस प्रकार है-

1. ब्रह्मविंशतिका –इस श्रेणी में बीस संवत्सर सम्मिलित हैं- प्रभव, विभव, शुक्ल, प्रमोद, प्रजापति, अंगिरा, श्रीमुख, भाव, युवा, धाता, ईश्वर, बहुधान्य, प्रभावी, विक्रम, वृष, चित्रभानु, सुभानु, तारण, पार्थिव एवं ठ'।

2. विष्णुविंशतिका – इस श्रृंखला में सम्मिलित बीस संवत्सरों के नाम अग्रानुसार हैं- सर्वजित्, सर्वधारी, विरोधी, विकृति, खर, नन्दन, विजय, जय, मन्मथ, दुर्मुख, हेमलम्बी, विलम्बी, विकारी, शर्वरी, प्लव, शुभकृत्, शोभकृत्, क्रोधी, विश्वावसु एवं पराभव।

3. रूद्रविंशतिका – इस वर्ग में भी बीस संवत्सरों का समावेश है। यथा- प्लवंग, कीलक, सौम्य, साधारण, विरोधकृत्, परिधावी, प्रमादी, आनन्द, राक्षस, नल, पिंगल, कालयुक्त, सिद्धार्थी, रौद्र, दुर्मति, दुन्दुभि, रूधिरोद्गारी, रक्ताक्षी, क्रोधन एवं क्षय।

विक्रम संवत –उक्त उल्लिखित 60 संवत्सरों या संवतों में से विक्रम संवत अत्यधिक प्रसिद्ध है। वर्तमान में भी इसका प्रयोग व्यापक रूप से हो रहा है। इस संवत्सर की शुरुआत अवन्तिका (उज्जैन) के सम्राट विक्रमादित्य द्वारा 57 ई. पू. में की गई थी।

विक्रम संवत के अनुसार एक वर्ष के बारह मासों के नाम इस प्रकार हैं- चैत्र, बैशाख, जयेष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन (क्वार), कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ एवं फाल्गुन।

मास के पक्ष एवं तिथियाँ तथा सप्ताह के दिन –दो चन्द्रोदय के मध्य के समय को चन्द्र मास कहा जाता है। ऐसे चन्द्र मासों की संख्या बारह है। जिनके नामों का उल्लेख पूर्व में किया जा चुका है। एक चन्द्रमास लगभग 29.5 दिनों का होता है। एक मास में तीस तिथियाँ या 30 चन्द्र दिवस सम्मिलित होते हैं। चन्द्र रेखांक को सूर्य रेखांक से 12 अंश ऊपर जाने में लगने वाले समय को एक तिथि कहा जाता है।

एक चन्द्र मास को दो पक्षों में विभक्त किया गया है। इन दो पक्षों के नाम हैं- शुक्ल पक्ष एवं कृष्ण पक्ष। प्रत्येक पक्ष में पन्द्रह तिथियां होती हैं। शून्य का नया चन्द्र और पन्द्रहवीं तिथि या पूर्णिमा को पूर्ण चन्द्र कहा जाता है। शून्य का आशय अमावस्या और पूर्ण का आशय पूर्णिमा होता है। शुक्ल पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि पूर्णिमा होती है तथा कृष्ण पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि अमावस्या होती है। अमावस्या से पूर्णिमा तक एक क्रम होता है और फिर पूर्णिमा से अमावस्या तक दूसरा क्रम होता है। दोनों क्रम दो पक्षों में पूर्ण होते हैं। यह पूरी अवधि चन्द्र मास कहलाती है।

इन पन्द्रह तिथियों के नाम इस प्रकार हैं- प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया,

चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावस्या या पूर्णिमा।

सात दिन की अवधि को एक सप्ताह और दो सप्ताह की अवधि को एक पक्ष या पखवाड़ा कहा गया है। सात दिनों के नाम इस प्रकार हैं- सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार।

भारतीय नववर्ष या नवसंवत्सर : गुड़ी पड़वा –नवसंवत्सर का आशय है- नये वर्ष का प्रारंभ। भारतीय समय गणना के अनुसार प्रतिवर्ष चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नववर्ष का प्रारंभ होता है। इस तिथि को गुड़ी पड़वा कहते हैं। गुड़ी पड़वा का हमारे देश के लिए बहुत महत्व है।

प्रजापति ब्रहमा के द्वारा इस तिथि का सृजन किया गया था। सतयुग का प्रारंभ भी इसी तिथि से हुआ था। पौराणिक परंपरा के अनुसार भगवान विष्णु ने गुड़ी पड़वा के दिन ही मत्स्यावतार लिया था। अपने चौदह वर्षो के वनवास की अवधि के दौरान गुड़ीपड़वा को ही प्रभु श्रीराम ने किष्किंधा के राजा बाली का वध करके उसके स्वेच्छाचारी शासन का अंत किया था। बाली के वध के बाद प्रसन्न प्रजा ने पताकाएं बनाकर फहराई थीं। इन पताकाओं या झंडियों को गुड़ी कहते हैं। यह गुड़ी पड़वा के नामकरण का एक आधार है। हम प्रतिवर्ष गुड़ी पड़वा को बहुत उल्लास से मनाते हैं। इस दिन पोरण-पोली नामक स्वादिष्ट व्यंजन घर-घर में बनाया जाता है।

उपसंहार- इस तरह काल से संबंधित हमारी प्राचीन परंपराएं, धारणाएं एवं खोजें अत्यंत महत्वपूर्ण थीं। काल की सूक्ष्मतम और सटीक गणना करने का प्रारंभिक सामर्थ्य भारतीय मेधा में ही विकसित हुआ। वैदिक ग्रंथों तथा हमारे अन्य शास्त्रों में समय और अंतरिक्ष से संबंधित ऐसे अनेक सूत्र और रहस्य हैं, जिन्हें अभी भी समझने का प्रयास किया जा रहा है। साम्राज्यवादी इतिहासकारों ने भारत की छवि कपोल-कल्पनाओं, मिथकों, भ्रांतियों, अंधविश्वासों वाले देश के रूप में गढ़ी है, जो कि सही नहीं है। वस्तुत: हमारे देश में हर क्षेत्र में प्रगति के कीर्तिमान रचे गये। समय की गणना भी उनमें सम्मिलित हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. श्रीमद्भगवद् गीता, श्लोकार्थ सहित, गीता प्रेस, गोरखपुर, संस्करण- 2001.
2. श्रीरामचरित्मानस, रचयिता-तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर, संस्करण-2005.
3. महाभारत, रचयिता, वेदव्यास, गीता प्रेस, गोरखपुर, संस्करण- 1998.
4. संपादित शिवपुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर, संस्करण-1996.
5. श्रीविष्णुपुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर, संस्करण-1997.
6. श्रीअग्निपुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर, संस्करण-2002.
7. श्रीवायुपुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर, संस्करण-2002.
8. बृहत्संहिता, लेखक- वराहमिहिर, चौखम्भा प्रकाशन, विद्याभवन, वाराणसी, संस्करण-1975.
9. आर्यभट्टीयम, लेखक-आर्यभट्ट, शास्त्र पब्लिशिंग ऑफिस, विद्दूपुर, मुजफ्फरपुर, संस्करण-1906.
10. भारतीय ज्योतिष, लेखक-नेमिचन्द्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, नईदिल्ली, संस्करण-2004.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

समकालीन हिन्दी कहानी में जन-जीवन : एक अध्ययन

डॉ. जयराम त्रिपाठी *

* सहा. प्रोफेसर, हेमवती नंदन बहु. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नैनी, प्रयागराज (उ.प्र.) भारत

प्रस्तावना - हिंदी साहित्य, विशेषकर आधुनिक हिंदी साहित्य, विभिन्न आंदोलनों, अवधारणाओं, बोध और चेतना का साहित्य है। विभिन्न विधाओं का विकास हुआ। किंतु खासकर कविता और कथा-साहित्य ने युगीन चेतना से सर्वाधिक संपृक्ति दिखाई। इसमें नवीन जीवन-दृष्टि का सृजन हुआ। पर यह कभी भी एक रूप नहीं रही। इनमें हुए बदलाव स्पष्ट हैं। इन बदलावों के पीछे तदयुगीन सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनशीलता, उसकी विसंगतियाँ और कुरूताएँ प्रभावी भूमिका अदा करती रहीं। आधुनिक हिंदी साहित्य का जन्म ही नवजा गरण से हुआ। यह चेतना ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शोषण तथा उसकी जनविरोधी उन नीतियों के विरूद्ध थी जिसके तहत समूची भारतीय संस्कृति को ब्रिटिश शासकवर्ग नेस्तनाबूद कर देना चाहता था। और ऐसी परिस्थितियों में जन को वाणी देने के लिए साहित्यिक विधाओं में कविता बहुत अधिक कारगर भूमिका निभा सकती थी। फलस्वरूप खड़ी बोली गद्य के विकास के साथ-साथ कथा-साहित्य ने जन्म ग्रहण किया। कथा-साहित्य, साहित्य की वह विधा बनी जिसमें आम आदमी की उपस्थिति, उसकी सोच, उसकी समस्याएँ, उसकी पीड़ा और दर्द प्रत्यक्ष हो उठा। परिणाम यह हुआ कि कथा-साहित्य विधा लोकप्रिय ही नहीं हुई अपितु एक श्रेष्ठ साहित्यिक विधा के रूप में भी मान्य हुई।

कहानी की असली शुरूआत प्रेमचंद के आसपास होती है और प्रेमचंद इसके पहले शिल्पी हैं, प्रसाद उनके समकालीन। गुलेरी, जैनेंद्र, यशपाल से होती हुई कहानी स्वाधीनता-प्राप्ति का एक औजार बनी। यह सत्य है कि प्रेमचंद की कहानियों की पहचान अलग है तो प्रसाद की दूसरी। गुलेरी, जैनेंद्र, यशपाल आदि तो पूरी तरह से अलग। यदि ध्यान से देखा जाए तो इन सबमें मनुष्य के बदलते हुए स्वरूप का चित्रण है। पाश्चात्य भाषा, संस्कृति और सभ्यता के बढ़ते प्रभाव ने भारतीय मनुष्य को बदला। समाज का दर्पण होने के नाते साहित्य की सशक्त विधा कहानी को मनुष्य के इन बदलते रूपों को रेखांकित करना ही था और यह रेखांकन हुआ भी।

स्वाधीनता-प्राप्ति के साथ-साथ भारत तथा उसके मसीहाओं की निधि जहाँ अनेक स्वर्णिम कल्पनाएँ थीं वहीं अनेक चुनौतियाँ भी उनके सामने मुँह बाए खड़ी थी। स्वाधीनता-पूर्व भारत और स्वाधीनता-पश्चात् भारत में आधी रात के बाद जो बदलाव आया वह बदलाव किसी सर्जक कलाकार से अछूता नहीं रह सकता था। सन् 1948 में गाँधी के रूप में एक मूल्य मरता है और सन् 1952 में संविधान के रूप में एक नये मूल्य का सृजन होता है। नेहरू की कल्पनाशीलता से अप्रभावित यथार्थ की ओर उन्मुख उस काल के रचनाकार नयी कविता, नयी कहानी का सृजन करते हैं जिसमें नये शब्दों की तलाश, नये अर्थों की अभिव्यक्ति, नये क्षेत्रों की समस्याओं को साक्षात करने की पुरजोर कोशिश है। रचनाकार अंचल विशेष की ओर भी मुड़े। उनके समक्ष अज्ञात-अपरिचित मनुष्य की पूर्ण अभिव्यक्ति की चुनौती थीं। ठीक यही स्थिति भी उपन्यासकारों की भी। 1960 तक हम, हमारे रचनाकार भारतीय राजनेताओं के बड़े-बड़े, लंबे चौड़े भाषणों में, वायदों में अपने सुख और स्वाधीनता के स्वप्न देखते रहे पर सन् 1962 के आसपास हमारा मोहभंग हुआ। स्वाधीनता आम आदमी की दो जून की रोटी भी उपलब्ध नहीं करा पायी। स्वाधीनता खतरे में पड़ती दिखी। आम आदमी अपने अस्तित्व पर आये संकट से केवल घबराया ही नहीं था, कुंठित भी था। आज वह अंग्रेजों के काल से अधिक शोषित, पीड़ित, दुखी था। वह अकेला हो गया था। उसकी भूख, उसे साहित्य से भी अलग दूर कर रही थी। उसका भटकाव साहित्य भी समाप्त नहीं कर पा रहा था। यह वह दौर था जब मुक्तिबोध और धूमिल सामने आते हैं मुक्तिबोध अँधेरे में हमारे भटकाव, संत्रास को रेखांकित करते हैं तो धूमिल साहित्य के जीवन के प्रति दायित्व पर प्रश्न खड़ा करते हैं कि जो कविता रोटी न दे सके, रहने को छाँव न दे सके, उस कविता से क्या लाभ? ठीक यही स्थिति हिंदी कहानियों की थी। साहित्य का प्रश्नचिन्ह उपस्थित था और यह प्रश्नचिन्ह चीनी आक्रमण तथा उसमें मिली पराजय से और स्याह होता है। यह उस भाई का हमला था, अधिकार छीनने का प्रयास था, जो हमारा था, हमारी कल्पनाओं का राजा था।

चीन से भारत की पराजय और राजनीति में बढ़ते भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद से उत्पन्न चेतना-बोध या आम आदमी की सोच, प्रेमचंद के काल की सोच, जैनेंद्र आदि के काल की सोच से अलग की सोच थी और यह सोच, आम आदमी की यह चिंता, पीड़ा, ऐसी पीड़ा थी जो निरंतर बढ़ती गयी और 1995 के अंत तक वटवृक्ष बन चुकी। 1960 के बाद पाश्चात्य देशों की संस्कृति और सभ्यता ने भी भारतीय मानस को प्रभावित किया। उनकी अच्छाइयाँ तो नहीं आ पायीं लेकिन उनकी बुराइयों ने हमारे भीतर जड़ जरूर जमायीं। इन सब विरूपताओं से आम आदमी को संघर्ष करना था। इसका रास्ता उसे साहित्यकार ही बता-दिखा सकते थे। रचनाकारों ने रास्ते की खोज की इस खोज में वे भारत की अपेक्षा विदेशों में बहुत भटके और वहाँ प्रस्तुत समाधानों के माध्यम से यहाँ की समस्याओं का निराकरण करना चाहा।

ध्यान से देखा जाए तो सन् 1960 के बाद से लेकर आज तक की

समस्याएँ, अवधारणाएँ, बोध और चेतना एक ही है। हाँ, यह अवश्य है कि इसके समाधान के रास्ते अलग-अलग पेश हुए। लेकिन सभी समस्याएँ यथावत रह गयीं। फलस्वरूप इस एकरूपता के कारण सन् 1960 के बाद के साहित्य को समकालीन संज्ञा से अभिहित किया गया। देखने में तो यह शब्द काल-सापेक्ष दिखाई देता है किंतु यह एक अवधारणा है, बोध है और दर्शन भी। आज के रहने वाले सभी व्यक्ति समकालीन नहीं हो सकते। समकालीन वही व्यक्ति हो सकता है जिसे आज के समय-सत्य की परख हो, पहचान हो, उससे उसका तादात्म्य हो। वस्तुत: मनुष्य जाति के बेहतरी की दिशा में किये जाने वाले प्रयत्नों की विचार-प्रणाली का नाम है समकालीनता। इसकी सोद्देश्यता मनुष्य जाति के विकास की दिशा में किये जाने वाले सार्थक प्रयासों के लिए अपार संभावनाओं का द्वार खोलती है। समकालीनता आधुनिकता से यहीं पर अलग है; यद्यपि आधुनिकता भी बोध है, अवधारणा है, एक गतिशील धारा है। विविध विचार-विधियों और भाव-बोधों-यहाँ तक कि परस्पर विरोधी भाव-बोधों का समवेत रूप है। पर है यह मूल्य। यह समकालीनता की तरह प्रयत्नों को तीखा बनाने वाली विचार-सरणि नहीं है। सत्य तो यह है कि आधुनिकता के आगे की कड़ी समकालीनता है। 'इस बोध की सबसे महत्तवपूर्ण शक्ति इस बात में अंतर्निहित है कि परंपरा की अनमोल विरासत को यह न केवल सायास अर्जित करती है अपितु उसके विकास की दिशा में वह हर प्रकार का प्रयत्न भी करती है। आधुनिकता में जहाँ विकास-चरण सर्वोत्तम के चयन पर आकर अटकते हैं, वहीं समकालीनता में विकास के सारे प्रयत्न सुनियोजित भी होते हैं। उसके नियोजन में कुशलता और दक्षता का बोध भी होता है।'

समकालीन कहानियाँ अपने परिवेश से बहुत गहरे और जबर्दस्त ढंग से जुड़ी हुई कहानियाँ हैं और उनकी यह स्थिति बेहतर परिवेश प्राप्त करने की प्रबल आकांक्षा का परिणाम है। आज के जनमानस का आक्रोश, पीड़ा, दु:ख-दर्द, असंतोष समकालीन कहानियों की सृजन-शक्ति है। समकालीन कहानीकार सब कुछ को नये सिरे से रचना चाहता है। यही कारण है कि इनकी कहानियों में जन-साधारण आया पर अनसाधारण की उपस्थिति का डंका उतना प्रभावशाली नहीं हो पाया जितना आयातित विचारधाराओं का। परिणाम यह हुआ कि कहानी से कथा गायब हुई और कहानी से कहानीपन भी गायब हुआ। यहाँ तक कि आंदोलनों का केंद्र बनी कहानी किस्सागोई प्रवृत्ति को भी छोड़ बैठी जो उसकी मूल शक्ति थी। साहित्य नारा नहीं है। यह जरूर है कि सन् 1960 के बाद एक के बाद एक जन्में विभिन्न कहानी-आंदोलनों ने इस धारणा को पुष्टि प्रदान की। योरोप में नारा आया कि फिक्शन मर गया, हीरो मर गया। कमोबेश सन् 1985 तक यहाँ भी यही स्थिति थी। सुधीश पचौरी का भी उद्घोष है कि आज की कहानी का नायक या तो मर चुका है, या हाशिए पर चला गया है। किंतु मेरी अपनी दृष्टि में कहानी-रचना की दृष्टि से 1960 से 1980 तक का काल शून्य नहीं कहा जा सकता। हाँ यह सत्य अवश्व है कि इस अवधि की कहानियों में कथा गायब हो गयी। हीरो मर गया। कहानी वर्णन और विचार भर रह गयी। इसके पीछे अनेक कारण थे। सितंबर 1987 के रविवार में हिंदी कथाकारों के संदर्भ में छपी टिप्पणी मुझे याद आ रही है-'हिंदी लेखक को बहादुर कहना कठिन है। उसका जीवन और अनुभव कोई जोखिम भरे अप्रत्याशित हादसों से गुजरने का नहीं होता। वह बड़ी जात का लड़का होता है। और बड़ी नौकरी का सपना उसे उदास और पराधीन बनाता है। वह कुछ भी छोड़ने की ताकत नहीं रखता और न छोड़ने के सिलसिले में ही 'क्रांतिकारी' लफ्फाजी करता है। उसकी मनोरचना जाति, कुल और पारिवारिक संपन्नता या दरिद्रता के कारण पूर्व निर्धारित होती है। अत: यह निर्विवाद है कि हिंदी कहानीकारों की दृष्टि उच्च वर्ग के इर्द-गिर्द मँडराने का कारण स्वयं उनकी सामंतीय या उच्चवर्गीय बोध से संपृक्त दृष्टि है। पहले इस बोध से उन्हें छुटकारा पाना होगा।' मेरी अपनी दृष्टि में मध्य वर्ग, जो हिंदी कहानी में छाया है, वह भी उच्च वर्ग ही है और उसमें उसके यथार्थ भी।

विवेच्काल में कहानीकारों की तीन पीढ़ी सक्रिय है। एक पीढ़ी है नये कहानीकारों की-जिसमें प्रमुख हैं-मोहन राकेश, कमलेश्वर, मार्कंडेय, शिवप्रसाद सिंह, राजेंद्र यादव, निर्मल वर्मा, अमरकांत, रेणु, शैलेश मटियानी, रामकुमार, शेखर जोशी आदि और दूसरी पीढ़ी है-साठोत्तर कहानीकारों की जिसमें प्रमुख हस्ताक्षर हैं-मुक्तिबोध, राजकमल चौधरी, ज्ञानरंजन, कृष्णा सोबती, काशीनाथ सिंह, दूधनाथ सिंह, रवींद्र कालिया, मन्नू भंडारी, इसराइल, महीप सिंह, महेंद्र भल्ला, ममता कालिया, सुधा अरोड़ा, रमेश बत्तरा, हिमांशु जोशी, सतीश जमाली, गोविंद मिश्र, नमिता सिंह, रमेश उपाध्याय, सिम्मी हर्षिता, सूर्यबाला आदि तीसरी पीढ़ी जो 1980 के बाद कहानी को कहानी का स्वरूप प्रदान करती है उसमें उल्लेख्य हैं-संजीव, उदय प्रकाश, स्वयं प्रकाश, शिवमूर्ति, पंकज बिष्ट, सृंजय, विजयकांत, पुन्नी सिंह, नासिरा शर्मा, क्षमा शर्मा, सरयू शर्मा, ललित शाह, दिनेश पाठक, जवाहर सिंह, मिथिलेश्वर, वीरेन्द्र जैन, चित्रा मुद्गल, धीरेंद्र अस्थाना, अनिमेष, सुरभि पांडेय, जयनंदन, दीपक शर्मा, संजय खाती, बलराम प्रियंवद, अखिलेश आदि।

सन् 1930 तक और उसके बाद देश ने प्रगति की। जिंदगी में परिवर्तन आया। व्यक्ति का विकास हुआ। परंतु सामुदायिक भावना, राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक दायित्वबोध की भावना का बुरी तरह स्खलन हुआ। महानगरीय बोध ने नगरों और नगरीय बोध ने गाँवों को विखंडित किया। आम आदमी को जीवित रहने के लिए आवश्यक साधनों का अभाव, बेरोजगारी, भुखमरी, टूटते मूल्य, आदमी का गिरता हुआ चरित्र, वैज्ञानिक साधनों का अधकचरापन यह आम भारतीय की पीड़ा का कारक था। मध्यवर्ग तो और आंदोलित था। कुंठा, संत्रास, अपने अस्तित्व पर खतरे, एकाकीपन, अजनबीपन, घुटन से वह टूट गया। समकालीन रचनाकार इस स्थिति से अप्रभावित नहीं रह सके। फलस्वरूप कहानी भोगे हुए यथार्थ-जीवन का दस्तावेज बन गयी। सन् 1961 में लिखी गयी काशीनाथ सिंह की 'सुख' कहानी से एक अलग प्रकार के कटु यथार्थ को अभिव्यक्ति मिलती है और यहीं से या इसी कहानी से आगे की कहानी को समकालीन कहानी नाम मिलता है। मनुष्य जाति के जटिल, महानतम और बहुआयामी यथार्थ से एकमात्र समकालीन कहानी ही जूझती नजर आती है। विपात्र, क्लाडइथरली (मुक्तिबोध), विध्वंस (गंगा प्रसाद विमल), पारदर्शक (महीप सिंह), हररोज (वेद राही), घंटा (ज्ञानरंजन), पेपरवेट (गिरिराज किशोर), रीछ (दूधनाथ सिंह) आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं।

समकालीन हिंदी कहानी अपने अद्भूत यथार्थ बोध, भाव-व्यंजना, मूल्य-संक्रमण नवीन मूल्यों की स्थापना और राजनीतिक संदर्भों से प्रभावित होते हुए आगे बढ़ती है। अस्तिवाद ओर जनवाद या दूसरे शब्दों में मार्क्सवादी विचारधारा ने इस काल की कहानियों के शिल्प और कथ्य को प्रभावित किया। समांतर कहानी का सैद्धांतिक पक्ष व्यापक मूल्य-दृष्टि और प्रगतिशील समझ कर सबूत है। यहाँ आम आदमी उपस्थित है। दलित वर्ग की संघर्षशील जीवन-स्थिति और परिस्थिति उद्घाटित है। इसका तो लक्ष्य ही था समकालीन भ्रष्ट वातावरण की जिम्मेदार शक्तियों का पर्दाफाश। 'जनवादी कहानी' न

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

केवल किसानों और मजदूरों की कहानी है बल्कि हर शोषित जन की कहानी है। इसकी चेतना कांतिधर्मी है और व्यवस्था के खिलाफ आक्रोश, अभिव्यक्ति और लड़ाई को रूप प्रदान किया गया। नारी की संघर्षशील स्थिति का यथार्थ और जीवंत चित्रण भी इन कहानियों में मौजूद है। 'सक्रिय कहानी' आदमी की ऊर्जा और जीवंतता की कहानी है।

सत्य तो यह है कि समकालीन कहानी जन-जीवन के इतिहास की, उसके बदलते स्वरूप की कहानी है। इस काल के सशक्त हस्ताक्षर ज्ञानरंजन में आर्थिक आधार पर ध्वस्त होते निम्नवर्गीय और मध्यवर्गीय परिवारों के संबंधों के बिखराव का सशक्त अंकन है।'घंटा', 'बहिर्गमन', 'पिता', 'शेष होते हुए लोग', काला-यात्रा आदि कहानियाँ समकालीन मूल्यों और मान्यताओं को उद्घाटन करती हैं। काशीनाथ सिंह की कहानियों में व्यवस्था के प्रति व्यंग्यात्मक तीखा आक्रोश है। 'कहानी सराय मोहन की', 'लाल किले के बाज' इसके उदाहरण हैं। समकालीन कहानियों में विवाह-संस्था पर भी चोट है। रमेश बत्तारा की एक ऐसी ही कहानी है। समकालीन कहानियों में पति-पत्नी के संबंधों में पड़ती दरार ओर उसके शोषण के बहुआयामी पक्षों पर अनेक कथाकारों ने अपनी लेखनी चलायी है। इसमें महिला लेखिकाएँ आगे हैं जिनमें यौन-शोषण और अश्लील प्रसंगों की भरमार है। उसे यथार्थ तो कहा जाता है किंतु ऐसा यथार्थ रचनाकार की रचनात्मक सीमा का परिचय भी देता है।

इसराइल इस काल के एक चर्चित कथाकार हैं जिनमें जीवन के विभिन्न रंग बहुत ही गाढ़े रूप में प्रस्तुत हैं। उनकी कहानी 'रोजनामचा' ठीक इसके विपरीत भावबोध की कहानी है जिसमें मजदूरों की पीड़ा, उन पर ढाए जाने वाले जुल्मों, पूँजीपति वर्ग के कसते शिकंजे का चित्रण है। 'जलते डैने' हिमांशु जोशी की इसी तरह की कहानी है। सतीश जमाली भी पीछे नहीं है। दु:ख-दर्द और पुलिस का नंगा नाच चित्रित है। आज नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारण ईमानदार व्यक्ति का जीना कितना कठिन है-इसका प्रमाण है 'गोविंद मिश्र की जेहाद' कहानी। 'काले अँधेरे की मौत' के माध्यम से नमिता सिंह समकालीन कहानीकारों को कहानी में विचार के उपयोग का तरीका समझा जाती हैं और इसी कहानी में अशिक्षा का प्रभाव भी व्यंजित है। स्वाधीनता के बाद वोट, कुर्सी की राजनीति ने धर्म जाति और भाषा का विषवृक्ष उगा दिया। आज धर्म, जाति और भाषा के नाम पर दंगे, हत्याएँ, बलात्कार सामान्य बात हो गयी है। विजयकांत की 'राह', स्वयंप्रकाश की 'चौसा हादसा', रमेश उपाध्याय की 'पानी की लकीर' कहानी इस समय-सत्य को पूरी तरह उजागर करती हैं। यौन-शोषण या सेक्स-प्रधान कहानियों में आम आदमी की आर्थिक तंगी एक कारक बनती है। समकालीन कहानीकारों की निगाहों से हमारे नैतिक अवमूल्यन का यह कारक भी अछूता नहीं रहा। सिम्मी हर्षिता की 'भूख की बिक्री' इसका उदाहरण है।

और अंत में युगीन परिवेश की जटिलता ने कहानी के कथ्य को जटिल बनाया, उसे संश्लिष्टता प्रदान की। स्वाधीनता के प्रति मोहभंग की स्थिति, आज के परिवेश की भयावह स्थिति, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, सामंती-पूँजीवादी व्यवस्था के तंत्र, भाई-भतीजावाद के साथ आतंकवाद, स्त्री-पुरूष और परिवार की स्वच्छंदता, व्यक्तिवादिता तथा इसकी बदलती परिभाषा, अनैतिकता का बोलबाला, राजनीति के अपराधीकरण, वोट हेतु तुष्टीकरण की नीति, जाति, धर्म, भाषा के बढ़ते झगड़ों, शोषण के कसते शिकंजों, आम आदमी की भूख, पीड़ा आदि से आज का भारत मन कुंठित और संत्रस्ता तो है ही साथ ही गाँधीवाद के माखौल, मार्क्सवाद और जनवाद की गलत व्याख्या, अस्तित्ववाद के आतंक ने हमें और तोड़ा। विवेच्य काल का मनुष्य भ्रमित, क्षुब्ध, कुंठित, दिशाहीन, पीड़ित, टूटा हुआ है। उसका सब कुछ खो गया है। उसका आधार उसके पैरों के तले से खिसक गया है। ऐसे मनुष्य को क्षण-क्षण बदलते, आघात सहते मनुष्य को, उसके घावों से रिसते मवाद का सही यथार्थ संवेदनात्मक रेखांकन यदि कहीं है तो समकालीन कहानी में। उसकी असलियत का पर्दाफाश समकालीन कहानी ही करती है, नई कहानी और उसके पहले की कहानी से ठीक विपरीत।

साहित्य के इतिहास में समकालीनता एक मूल्यवाचक अवधारणा है। यों काल से भी इस अवधारणा का संबंध है, लेकिन मूलत: है यह मूल्यबोधक ही। भविष्यदृष्टि और जीवन-संदर्भ के परिवर्तित रूप, ये दो इसके प्रमुख आयाम हैं। जीवन-संदर्भों में निरंतर आने वाले इन्हीं परिवर्तनों पर आधारित होती है, समकालीनता की अवधारणा। कला या साहित्य अपने मूल उद्देश्य में इन्हीं बदलते जीवन-संदर्भों का आकलन है। जीवन-जगत के परिवर्तनों के साथ-साथ बदलते जाते हैं मानवीय रिश्ते और उसी के समानांतर साहित्य-सृजन में भी परिवर्तन आता जाता है।

साठोत्तर भारत घटनाओं के परिवर्तनों का एक प्रकार से ऐतिहासिक कालखंड प्रमाणित हुआ। राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक इन परिवर्तित घटनाओं ने भारत के आम आदमी को अपने-अपने जीवन-क्षेत्र में और अधिक सक्रिय संघर्षमय और तल्लीन होने के लिए विवश किया। यही कारण हुआ कि अपनी विरासत के बहुमूल्य तत्वों को जहाँ समकालीन कहानीकारों ने विविध प्रकार के कथ्यों के द्वारा निरंतर विकसित किया वहीं दूसरी ओर अपने समय की दुर्बलताओं पर भी तीखे प्रहार किये। व्यंग्य जो कभी शैली हुआ करता था, वह अब वस्तु रूप में विकसित हुआ। कुरूपताओं और दुर्बलताओं को साहित्य तो उजागर करता ही रहा है। समकालीन कहानीकारों ने इससे आगे बढ़कर उनके प्रति आक्रोश का भाव भी दर्शाया। परिवर्तनकारी जीवन-संदर्भों के लिए प्रयत्नशील समकालीन रचनात्मकता से अधिक किस दौर में और अधिक रूझान देखा गया, इसका इतिहास उपलब्ध नहीं है। इस शोध ग्रंथ में बदलते जीवन-संदर्भ की इसी क्रांतिकारी भूमिका को आकलित और विकसित करने में समकालीन हिन्दी कहानी ने किस प्रकार सर्जनात्मक उद्यम किया है, उस पर वैज्ञानिक रूप से विचार किया जायेगा।

समकालीन कहानी समय के सत्य-दंश को पहचानते हुए मनुष्य के बाह्य और आंतरिक रूपों को अत्यंत निकट से निरख-परख कर उससे गहरे जुड़कर समकालीन मनुष्य का दस्तावेज प्रस्तुत कर जाती है। एकसा दस्तावेज जो इतिहास का अंग ही नहीं भविष्य का निर्माता, पथ-प्रदर्शक भी है और यह ऐसा दस्तावेज है जो हमें अपने वर्तमान से निजात का अस्त्र-शस्त्र भी प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथसूची :-

1. कमलेश्वर : नयी कहानी की भूमिका, शब्दकार, 2203, गली डकौतान, तुर्कमान गेट, दिल्ली, प्रथम संस्करण : 1978
2. नरेंद्र मोहन (डॉ0) : समकालीन कहानी की पहचान, प्रवीण प्रकाशन, 1/1073-डी, महरौली रोड, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 1978
3. शर्मा रामविलास (डॉ0) : मार्क्स और पिछड़े हुए समाज, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 1986
4. सिंह पुष्पाल (डॉ0) : समकालीन हिन्दी कहानी, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़, प्रथम संस्करण : 1987

5. सिंह पुष्पपाल (डॉ0) : समकालीन कहानी, युगबोध संदर्भ, नेशनल पब्लिशिंग हाउस दरियागंज, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 1986
6. सिंह पुष्पपाल (डॉ0) : समकालीन कहानी : सोच और समझ, आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्रथम संस्करण : 1986
7. सिंह नामवर (डॉ0) : कहानी : नयी कहानी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण : 1994
8. सिंह यदुनाथ : समकालीन हिन्दी कहानी : प्रकृति और परिदृश्य, चित्रलेखा प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण : 1978

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

A Study of Corporate Social Responsibility Practices in the Selected Textile Companies of Madhya Pradesh

Mr. Sheetal Jain* Dr. Vijay Kumar Jain**

***Research Scholar, Faculty of Management, Barkatullah University, Bhopal (M.P.) INDIA**
**** Professor, Anand Institute of Management, Bhopal (M.P.) INDIA**

Abstract - In recent years, corporate social responsibility (CSR) has taken on a new meaning. In addition to being frequently debated by academics, the business community is increasingly recognizing it as a factor determining a company's competitiveness, which, if lacking, might effectively disable long-term operations. Corporate companies are faced with the requirement to have a good impact on the host communities in today's dynamic business climate by taking on specific obligations that will boost their societal and environmental influence.rather than focused solely on profit, businesses included social and environmental considerations in their operations.
Keywords- CSR, Corporate Social Responsibility, NGO, Textile Industry, Power looms and Socio economic.

Introduction - Business responsibility and an organization's activity on environmental, ethical, social, and economic issues are often referred to as corporate social responsibility (CSR). If you're unfamiliar with the language, the phrases in the region can be confusing, but don't let that deter you.

Companies are assumed to have some duty to stakeholders such as employees, consumers, communities, and the environment in addition to making profits. Economic responsibility, improving labor practices, adopting fair trade, limiting environmental damage, giving back to the community & raising employee satisfaction are all examples of CSR.

CSR can be defined as a strategy that involves a corporation doing the following:

1. Recognizes that its operations have a broader impact on the society in which it works, and that changes in society have an impact on its capacity to function sustainably.
2. Actively manages the environmental , social, economic, and human rights impacts of its activities both locally and globally, based on principles that reflect both international values and the organization's own values (ethics), benefiting both its own operations and reputation as well as the communities in which it operates.
3. Works cooperatively with other groups and organizations - local communities, civil society organizations, other businesses, and home and host governments – to accomplish these benefits.

Social Accountability- Importing countries are increasingly relying on social accountability to encourage suppliers to maintain high levels of social and environmental performance. The major goal of the social accountability program is to ensure that business partners follow local regulations as well as the company's social responsibility pledge. India is one of Asia's most major clothing sourcing locations.

SA 8000, often known as Social Accountability 8000, is an international standard for management systems that primarily address working conditions. The SA 8000 principles are as follows:

1. There is no child labor.
2. No compulsory labor
3. Workmen's health and safety must be ensured
4. Associational freedom and the right to collective bargaining must be maintained.
5. No discrimination based on gender, religion, caste, or other factors.
6. No arbitrary disciplinary actions
7. No more than eight hours of work per day

Defining CSR - Corporate Social Responsibility extends beyond the regulatory framework. It's an ethical strategy rather than a profit-driven one. Business groups, including the textile sector, are recognizing the necessity of contributing to society and the environment. It is the obligation of businesses or industries doing business with society to contribute to society as a whole. Half of the sustainability race is won if an organization dedicates its voluntary services to people and the environment. The textile industry's Corporate Social Responsibility is linked to the environment and employees' rights. Natural resources are used by almost every business, and their depletion causes environmental imbalance.

CSR In Textile Industry - The textile business is heavily reliant on natural resources, from cotton production through final product transportation. Cotton farming on a wide scale uses a lot of water, chemicals, and pesticides, which might

harm the ecosystem. The washing, dyeing, sizing, and printing processes used on the cloth pollute the environment, and the detrimental effects of chemicals are passed on to the weavers and purchasers.

In terms of human responsibility, paying reasonable salaries in accordance with the Minimum Wage Act and providing social protection ensures workers' welfare. "Everyone has the right to work, the right to equal pay for equal work, to just and favorable remuneration ensuring for himself and his family an existence worthy of human dignity, supplemented, if necessary, by other means of social protection has the right to form and join trade unions for the protection of his interests," according to the Universal Declaration of Human Rights (United Nations 1948).

Objectives of the Study- The study's main goal is to examine the impact of corporate social responsibility on organizational performance and examine how the Indian textile companies' corporate social responsibility affects their reputation profitability and corporate social responsibility in the textile industry. Specifically, the research aims to

1. Examine how the Indian textile companies' corporate social responsibility affects their reputation.
2. Examine the difference in perceived customer loyalty and patronage between companies that implement corporate social responsibility and companies that do not practice corporate social responsibility in the Indian textile industries.
3. Examine the impact of corporate social responsibility on organizational performance and profitability.
4. Examine the economic, social, and environmental aspects that influence the adoption of corporate social responsibility (CSR) by textile industry.

Methodology of Study- This is a descriptive research project. This research paper examines the secondary character of material received from numerous websites, including academic journals, books, and government publications.

Sample Area- Textile companies of Raisen District,Nagda District and Tamot District were selected for the study.and the following companies were selected for CSR practices:

1. Vardhman Group of Companies, Mandideep (Raisen).
2. Nahar Group of Companies, Mandideep (Raisen).
3. Grasim Industries Limited, Nagda M.P.
4. Sagar Manufactures Pvt. Ltd. Tamot, Raisen

The Companies (Amendment) Act of 2020 will have an impact on CSR-Activating extra CSR spending: excess CSR spending cannot currently be carried forward. As a result, a third provision has been added to Section 135's sub-section 5, which states that if a corporation spends more than 2% of its typical net profits in the three preceding financial years, the corporation may set off such excess amount against the requirement to spend under this sub-section for the number of prescribed financial years in the manner provided.

Simply put, organizations that spend more than the required 2% on CSR during a fiscal year can use the excess as credit toward meeting CSR responsibilities in subsequent fiscal years.

Textile Industry Subsectors:

Loom of Strength: A power loom is a motorized loom with a line shaft that was one of the important advances in the early industrial revolution's industrialization of weaving. As the name implies, power looms use electricity, yet India's power grid is insufficient in many areas, forcing employees to use hand looms. Handloom manufacture is inefficient when compared to power looms.

Hand loom: A handloom is a simple machine that is used to weave. The heddles are set up in the pole of a wooden vertical-shaft lingers.

Handicraft: It is a customary fundamental division of art and applies to an extensive variety of inventive and outlines exercises that are identified with making things with one's hands and expertise, incorporating work with materials, plant and inflexible materials, paper, plant filaments, and so on.

Global Textile Trade

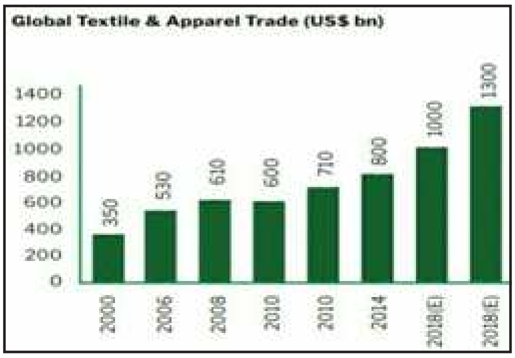

Source: Ministry of Textile India

Global Textile Trade Stood at 1300 Billion Dollar. China continued to shed its market share, but India has been clearly missing the bus – most of the gains have been captured by Bangladesh and Vietnam – clearly the 2nd and 3rd largest exports after China, respectively.

Textile Export of India

	2015-16 US$ Mn	2016-17 US$ Mn	2016 (Apr.-Nov.) US$ Mn	2017 (Apr.-Nov.) US$ Mn
India Textile & Apparel	36,257	36,007	22,201	23,030
Handicrafts	3410	3,657	1,324	1,149
Total T&C including Handicrafts	39,667	39,664	23,525	24,224
India's overall exports	262,290	276,280	175,411	194,971
% T&C Exports of overall exports	15.1	14.4	13.4	12.4

Source: DGCI&S

The India textile industry is the second largest exporter in the world after China. The share of textile and clothing

in India's total exports stands at 12.4% in 2018. India has a share of 5% of the global trade in textile and apparel.

The major textile and apparel export destination for India is the European Union and USA with 47% total textile and apparel export. It employs 4.5 crore people directly and another 6 crore people in allied sectors.

The Significance of the Study- Importance of this project is not just to analyze the practice of corporate social responsibility but to understand the current practice and the level of understanding of corporate social responsibility by textile industries in Madhya Pradesh about how it should be.

It will explain how corporate social responsibilities affect the performance of the selected companies for the study.

The research would also help to explore the impact of corporate social responsibility on employees' commitment to the organization. What part does the employee play in corporate social responsibility? Can he influence the decision-making process? What is their level of understanding of the concept?

Findings- The study reveals that in India textile sector has immense potential as the contribution to the GDP is rising every year. It straight away means that CSR practices in textile industry in India will contribute to the upliftment of various stakeholders of the nation at large.

Suggestions:

1. Investigate the authenticity of practicability of CSR Plans/Scheme on ground level.
2. The companies should implement the CSR plans in reality, not for pomp and show.
3. The companies really doing well in CSR must be awarded.
4. The public must appreciate the brand/company involved in CSR.
5. The Government must treat the CSR companies from others.

Conclusion- The basic objective of this law to make Textile Company and other companies more socially responsible. As government give a clear mandate through the corporate social responsibility by introducing in company law 2013 that it is mandatory to pay CSR .Now companies from different background participating in CSR activities. It has been observed that from data year 2010 to 2105, there is surge in CSR activities adopting by companies .It is also observed that number of listed NGO's participating actively to help companies in CSR related activities. As corporate social responsibility is new concept for India. Number of the company's voluntarily participating in it before enforcement as law but now majority of companies come together.CSR is innovative concept which based on concept of development of entire society. It must be treated as holistic subject otherwise development is not possible.

References:-

1. Gunay, G. Y. and Gunay, S. G. (2009), "Corporate Social Responsibility Practices of the Textile Firms Quoted in Istanbul Stock Exchange", International Journal of Human and Social Sciences, Vol. 4, No.14, pp. 1029-1034.
2. Gupta, Megha (2012), "Corporate Social responsibility in the Global Apparel Industry: An Exploration of Indian Manufacturer's Perceptions", A Dissertation submitted to the Faculty of The Graduate School, The University of North Carolina, Greensboro, pp. 1-168.
3. Midttun, Atle (2008), "Global governance and the interface with business: new institutions, processes and partnerships Partnered governance: aligning corporate responsibility and public policy in the global economy", Corporate Governance, Vol. 8, No. 4, pp. 406-418.
4. Neeve, Geert De (2009), "Power, Inequality and Corporate Social Responsibility: The Politics of Ethical Compliance in the South Indian Garment Industry", Economic & Political Weekly, Vol. XLIV, No. 22, pp. 63-72.
5. Nielsen, A. E. and Thomsen, C. (2007), "Reporting CSR – What and How to say it?" Corporate Communications: An International Journal, Vol. 12, No. 1, pp. 25-40.
6. Smith, N. Craig (2008), "Corporate Social Responsibilities: Not Whether, But How?" Centre for Marketing Working Paper, London Business School, pp. 1-37.
7. Yperen, Michiel Van (2006), "International Overview of CSR in the Textile Industry", IVAM Research and Consultancy on Sustainability, pp. 2-3.
8. https://www.textileexcellence.com/news/industry-news/textile-companies-focus-on-csr-but-still-fall-short-of-mandate/
9. https://www.legalserviceindia.com/legal/article-4543-impact-of-csronindiancompanies.html#:~:text=Mandatory%20 expenditure%20of%20prescribed%20amount,initiatives%20with%20their%20 corporate%20strategies.
10. https://indiancompanies.in/textile-industry-in-india-textile-of-india/
11. https://guides.loc.gov/corporate-social-responsibility#:~:text=guides%2C%20and%20more.-,Introduction,to%20their%20stockholders% 20or%20investors.&text=% 22Business%20is%20business%22.
12. https://www.management-issues.com/opinion/1944/csr-an-introduction/
13. https://www.projecttopics.org/effect-corporate-social-responsibility-performance-business-organisation.html

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Biodiversity Conservation, Sustainable Development, and Human Health : Today and Tomorrow

Dr. Jolly Garg* Anant Kumar Garg Dr. Shobha Gupta *****

*** Associate Professor and Head (Botany) D. A. K. P. G. College, Moradabad (U.P.) INDIA**
****Environmentalist, Samajik Vaikariki Sansthaan, Moradabad (U.P.) INDIA**
***** Associate Professor and Head (Chemistry) D. A. K. P. G. College, Moradabad (U.P.) INDIA**

Keywords - Biodiversity conservation, Environmental degradation, environmental rights ,environmental laws, environmental management, evolution,Suggestive measures, Gene Bank. Ecorestoration, sustainable development, human health, earth global ecosystem,

Introduction- Human tendency to exert a negative influence on ecology or nature has resulted into rapid increase in the various types of environmental problems. The effect of these problems are global, so we are call them as global envoronmental problems. The over all impact of these problems has been observed as- global climate change, global warming, depletion of ozone layer, a rise in sea level, increased greenhouse gases in the atmosphere, large scale deforestation, loss of habitat, severe land degradation and increased desertification, acid rain, increase in pollution, acid rain, increase in pollution, change in agricultural output, qualitative & quantitative loss of biodiversity etc., ultimately leading to an ecological chrisis capable of affecting the entire life and life support systems existing on our planet, earth which will ultimately influence the human health negatively.

Sustainability, in a broad sense, is the capacity to endure. For humans it is the potential for long term improvement in wellbeing, which in turn depend on the wellbeing of the natural world and the responsible minimal use of natural resources. Long-lived and healthy ecosystems like wetlands and forests are examples of sustainable biological systems. The Bio-geochemical cycles circulate water, oxygen, nitrogen, mineral, carbon and other nutrients through the world's ecosystem and have sustained life for millions of years. With rising population the demands on natural resources has multiplied. The quality of natural ecosystem has declined and changes in the balance or equallibrium of natural cycles have had a negative impact on both humans and other living systems. In 1960 most all countries in the world had more capacity than enough to meet their own demand. According to the reports of World Wide Fund for Nature (2008), [1] by 2005 the situation had changed completely, a number of countries were able to meet their needs only by importing resources from other nations. Rapid population growth and rising individual consumption has more than doubled humanity's demand on resources of the planet. There is now plenty of scientific evidence that humanity is living unsustainably. Returning human use of natural resources to level of sustainable limits will require a major collective effort. The world commission on environment defined the sustainable development as "the development which provides for the needs of the present generation without compromising the ability of the future generation to meet their own needs" [2] . Although this definition is frequently quoted it is not universally accepted and has undergone various interpretations [3, 4] it has often been criticized as a vogue, ambiguous and feel good buzzword with little meaning or substance [5, 6]. The idea of sustainable Development is sometimes also viewed as a synthesis of mutually contrasting concepts because development inevitably depletes and degrades the environment [7]. Consequently some definitions either avoid the word development and use the term sustainability exclusively or emphasize the environmental component, as in "environmentally sustainable development ".The concept of living within the limits defined by environmental capabilities forms the basis of the IUCN, UNEP and the WWF definition of sustainability which is "improving the quality of human life while living within the carrying capacity of supporting eco-systems." [8, 9, 10, 11, 12, 13].

The conservation of genetic diversity, both as a matter of insurance and as an investment necessary to sustain and improve agriculture, forestry and fisheries production; to keep future option open, as a buffer against harmful environmental changes, and as the new materials for scientific and industrial innovation and a matter of moral principle was envisaged by the great Indian scientist Dr. B.

P. Pal 50 years ago in 1946 underlining the importance of the collection, conservation, evaluation and utilization of the genetic resources of all economic plants of India both through national and international efforts and through modern and traditional practices. [14, 15, 16, 17].

Millions of years of evolution have created a wealth of structures and mechanisms at the molecular, cellular and macro-structure level, all of which function economically and interact, to perfection. Nature provides solutions to most of life's technical problems. "Natural selection" has imposed on living organisms the "Min-Max Principle" i.e., a minimum of material and energy accomplishes a maximum of efficiency and stability. This makes biological prototypes particularly important for our future given the world's resources and a solution to increasing environmental problems. Protection and preservation of the air, soil, water, Biodiversity i.e., human beings flora & fauna and other important constituents of ecosystem has become essential for the existence of mankind.

Human kind is exploiting the natural resources at a greater rate which does not allow normal regeneration under natural environmental conditions. This leads to the rate of degenerative process greater than the regenerative capacity of the earth global ecosystem. The geo-biological balance is thrown over-burdened due to over-exploitation of natural resources and simultaneously over-production of waste materials viz. pollutants which again ultimately impose a threat to the biodiversity and earth eco-system and ultimately to the human race. We can no longer see the continued loss of plant-biodiversity and ecosystem as an issue separate from the core concerns of society: to tackle poverty, to improve the health, prosperity and security of present and future generations, and to deal with climate change and such type of problems. Each of those objectives is undermined by current trends in the state of our ecosystems, and each will be greatly strengthened if we finally give biodiversity the priority it deserves. There is a need of holistic understanding of the relationship between the environment and the development processes taking place in the world . It has become the need of the hour to expand and evolve approaches to twenty- first century to biodiversity and forest conservation and to strictly follow the 'Global-environmental ecosystem approach' implementation'[18-23]. To maintain the sustainability of biodiversity on the planet earth, we ought to concern the holistic approach towards the environment conservation and sustainable development. Collective wisdom of humanity for conservation of biodiversity, embodied both in formal science as well as local systems of knowledge, therefore, is the key to pursue our progress towards sustainability.

References :-

1. World Wide Fund for Nature (2008).Living Planet Report 2008. Retrieved on : March 2009.
2. United Nations General Assembly (1987)Report of the World Commission on Environment and development: Our Common Future. Transmitted to the General Assembly as an Annex to document A/42/427.
3. International Institute for Sustainable Development (2009). "What is Sustainable Development?".htpp:// www.iisd.org/sd/.Retrieved on: Feb,2009.
4. Kates, R., Parris, T. and Leiserowitz, A. (2005). "What is Sustainable Development?"Environment 47(3): 8-21. Retrieved on: April 2009.
5. Marshall, j.d. and Toffel, M.W., 2005, Framing the illusive concept of sustainability: sustainability hierarchy. Environment and Scientific Technology, 39(3):673-682. 6 Redeliff M. Sustainable Development (1987-2005): An oxymoron comes of Age. Sustainable Development, 13(4): 212-227.
7. Redeclift, M.(2005). "Sustainable Development 1987-2005" An oxymoron comes of Age. Sustainable Development, 13(4): 212-227.
8. IUCN/IUNEPWWF(1991). "caring for the earth: A S trategy for Sustainable Living ". gland Switzerland. Retrieved on: March 2009. 9. The Earth Charter Initiative (2000). "Earth Charter."Retrieved on: 2009-04-05.
9. The Earth Charter Initiative (2000). "Earth Charter." Retrieved on: 2009-04-05.
10. Hasna, AM, 2007, "Dimensions of sustainability". Journal of Enginnering for Sustainable Development: Energy, Environment and Health, 2 (I) 47-57.
11. Adams, WM, SJ. Jeanrenand, 2008, Transition to Sustainaability: Towards Humane and Diverse World. IUCN Gland. Switzerland.
12. Sustainability: htpp//len.wikipedia.org/wiki/ sustainability.
13. Census of India, 2011. Census Directoraye, Home Ministry, Government of India, New Delhi.
14. Pal, B.P. (1940): "The Search for New Genes" Indian Council for Agricultural Research. New Delhi.
15. Pal, B.P. and H.B. Singh (1948): "Utilization of the wild relatives of Tomato for breeding" Science and Culture, Vol. 4 pp. 103 -106.
16. Pal, B.P. and H.B. Singh (1949): "Plant Introduction Report"; Indian Farming. Vol.10; pp.423 -432.
17. Pal, B.P. and H.B. Singh (1951): "Some promising recent introduction of Crop varities"; Indian Journal of Genetics and Plant Breeding; Vol 11(2); pp215-216.
18. Garg, J. 2017. Environmental Ethics : in perspective of Biodiversity Conservation and human welfare. The J. Meerut Univ. History Alumni.Vol.29.15 .2017. pp. 126-131.
19. Garg, J. 2018 a. Some Traditional and innovative approaches for Biodiversity Conservation. International Journal of Agriculuture Sciences. Vol. 10 (12) 2018 pp. 6501 - 6503.
20. Garg J. 2018 a. Some traditional and innovative approaches for biodiversity conservstion. Int J

Agriculuture Sci. 10(12): 6501-3. Available from: https://www.researchgate.net/publication/331368680_Traditional_ and_Innovative_Approaches_In_Perspective_of_Biodiversity_Conservation

21. Garg, J. 2018 b. Traditional and innovative approaches : in perspective of Biodiversity Conservation. Journal of National Development Volume 31, No.1 (Summer), 2018 pp. 1-10.
22. Garg, J. 2020 a Role of Environmental Ethics in the conservation of forests. Int. Jour. of Pharma and Biosciences 2020, pp. 29- 34.
23. Garg, J. 2020 b. Biodiversity Conservation and 42 nd amendment in the Constitution of India: In the Perspective of 21st Century. Journal of National Development Vol. 33. Number 1(Summer). 2020, pp. 26 – 35. Lawton, R. O., U.S.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

युवाओं के प्रेरक: स्वामी विवेकानन्द

डॉ. आरती कनौजिया *

* एसोसिएट प्रोफसर (शिक्षा शास्त्र विभाग) शषि भूषण बालिक विद्यालय डिग्री कॉलेज, लखनऊ (उ.प्र.) भारत

प्रस्तावना - स्वामी जी का जीवन-दर्शन तथा चिन्तन निश्चित रूप से गौरवमयी तथा प्रेरणामयी है। इसके कार्य, विचार व दर्शन युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोता है। उनका कहना था कि प्रत्येक व्यक्ति को वीर, निर्भय एवं कर्मठ होना चाहिए क्योकि डरपोक एवं उदासीन व्यक्ति जीवन में कोई कार्य नही कर सकता। उनके शब्दों में 'वीर बनों।' हमेशा कहो, 'मैं निर्भय हूँ, सबसे कहों डरो मत, भय मृत्यु है, भय पाप है, भय नर्क है, भय अधार्मिकता है तथा भय का जीवन में कोई स्थान नही।'

वे जीवन में संघर्ष को उत्तम समझते थे। उनका मानना था कि जीवन में आगे बढते रहने के लिए निरन्तर संघर्ष करते रहना चाहिए जो संघर्ष नही करता वह अन्धकार में रहता हैं। स्वामी जी मानव-सेवा को सबसे बड़ा धर्म मानते थें। उनके अनुसार जीवन का अन्तिम लक्ष्या आत्मानुभति, ईश्वर, की प्राप्ति एवं मुक्ति प्राप्त करना है। स्वामी जी बाहय-जगत एवं और वस्तु जगत ढोनो को सत्य मानते थे। उनका तर्क था सत्य से असत्य की उत्पत्ति नही हो सकती। उनके अनुसार आत्मा को परमात्मा से जोड़ना योग है। स्वामी जी मानते थे कि आत्मानुभूति के लिए धार्मिक व नैतिक जीवन जीना आवश्यक है। स्वामी जी भारत में ऐसी शिक्षा चाहते थें जिससे व्यक्ति चरित्रवान होने के साथ ही आत्मानिर्भर हो। उनके अनुसार,'हमे उस शिक्षा को आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता हो, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती हो, बुद्धि का विकास होता हो और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता हो।' उन्होने कहा कि भारत मे तकनीकी शिक्षा का विकास होना चाहिए जिससे उघोग धन्धों का विकास हो तथा देश पुन: धन धान्य से पूर्ण हो जाए। सार रूप में स्वामी जी ने सैद्धान्कि शिक्षा का खण्डन करते हुए व्यवहारिक शिक्षा पर बल दिया। स्वामी जी ने शिक्षा का तात्पर्य स्पष्ट किया:-

शिक्षा से तात्पर्य—
- पुस्तकीय ज्ञान नही
- सूचनाओं का संग्रह नही
- समग्र ज्ञान मनुष्य के भीतर
- उचित समय पर अज्ञान अनावरण हटा कर ज्ञान की प्राप्ति
- शिक्षा मनुष्य में अन्तर्निहित पूर्णता का प्रकार्य है।

स्वामी जी अंग्रजी भाषा और पाश्चात्य विज्ञान का सर्मथन करते हुए देशवासियों को परार्मश देते है, 'हमें अपने ज्ञान के विभिन्न अंगो के साथ-साथ अंग्रजी भाषा और पाश्चात्य विज्ञान का अध्ययन करने की आवश्यकता है। हमें प्रविधिक शिक्षा और उन सब विषयों का ज्ञान पाप्त करने की आवश्यकता है जिनसे हमारे देश के उघोगों का विकास हो और मनुष्य नौकारियाँ खोजने के बजाय अपने स्वयं के लिए धन का अर्जन कर सके और दुर्दिन के लिए कुछ बचा सके।'

पाठ्यक्रम में सम्मिलित विषय

वेदान्त तथा विज्ञान में समन्वय	कलाओं में शिक्षा	सामान्य भाषा	प्रादेशिक भाषायें	अंग्रेजी भाषा	इतिहास, भूगोल, संस्कृत अर्थशास्त्र, गृहविज्ञान	शारीरिक व्यावस -ायिक शिक्षा

स्वामी जी आधुनिक भारत के समाज-सुधारक, प्रखर, तथा ओजस्वी वक्ता, विश्व शिक्षक, महान विचारक, शिक्षा शास्त्री तथा व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करने वाले थे। स्वामी जी के शिक्षा व पाठ्यक्रम सम्बंधी विचारों की झलक वर्तमान राष्ट्रीय-शिक्षा नीति 2020 में देखने को मिलती है।

11 सितम्बर, 1893 को शिकागों के धर्म- सम्मेलन में दिया गया उनका सम्बोधन एक ऐतिहासिक घटना बना जिसने पूरे विश्व को चकित कर दिया और एक ही दिन में स्वामी जी विश्वविख्यात हो गये। किन्तु ख्याति उनका लक्ष्य नही था, वह तो मात्र उनका माध्यम था जिसे अत्यन्त बुद्धिमत्ता व विनम्रता से उपयोग करना चाहते थें। उनका कहना था कि जब तक मेरे लोग कष्ट से ग्रासीत है, इस ख्याति का कोई महत्व नही है। अपने भारत भ्रमण के समय उन्होने हर स्थान पर ईश्वर को पाया किन्तु यहाँ के लोगों की निर्धनता व कष्ट ने उन्हें हिला दिया। उस भ्रमण से उनके विचारों में बहुत व्यापकता आई और भविष्य में किये जाने वाले कार्य के प्रति स्पष्टता थी। उनका उद्देश्य अब स्पष्ट हो गया था वे भारत को एक गातिमान विकसित राष्ट्र बनाना चाहते थे। मात्र 39 वर्ष के जीवन में उन्होने शताब्दियों का कार्य किया। यह तथ्य स्वयं में आश्चार्यजनक व अध्ययन का विषय है और विशेषता: युवाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत भी है। उनके विचार, कार्य, भारतीय संस्कृति, धर्म, शिक्षा सम्बन्धी विचार सब में आधुनिक भारत का मार्ग-दर्शन देखने को मिलता है। युवाओं को उनके सिद्धान्तों, कार्यो से प्रेरणा ले कर, देश की संस्कृत को थाम कर आधुनिक व प्रगतीशील भारत के निर्माण में आगे बढ़ना चाहिए।

वर्तमान डिजिटल युग में युवा शक्ति का पूर्ण उपयोग नही हो पा रहा है। इसका मुख्य कारण है, उनकी दुविधा। उन्हें लगता है कि हमारी संस्कृति व आधुनिक जीवन में एक विरोधाभास है और इसमें एक का चुनाव ही मात्र

विकल्प है। भौतिकतावादी सोच उन्हें अधिक अर्कषक लगती है। जब तक उन्हें अपनी त्रुटि का आभास होता है, बहुत विलम्ब हो चुका होता है, परिणामस्वरूप उनके अमूल्य जीवन का लाभ न तो उन्हें हो मिल पाता है और न समाज को। अत: स्वामी विवेकानन्द के व्यक्तित्व के गुणों को अपना कर युवा आगे बढ़ सकते है।

1. **आत्मविश्वासी बने:-** स्वामी जी के अनुसार आस्तिक वही है जो स्वयं पर विश्वास करें। यदि कोई व्यक्ति भगवान पर विश्वास करता है, पर स्वयं पर नही, तो वह नास्तिक है। इसका अर्थ आत्मा विश्वास सबसे महत्वपूर्ण है।

2. **तन-मन हो स्वस्थ:** आत्मविश्वास को मजबूत करने के लिए स्वामी मे तन और मन को मजबूत बनाने की शिक्षा दी।

3. **दूर करे हीन भावना:-** स्वामी जी ने लोगो में हीनता-बोध दूर करने के लिए कहा कि खुद को शरीर नही, आत्मा समझें। वह आत्मा जो शक्तिशाली परमात्मा है। इससे हीनता बोध खत्म होती है और आत्माविश्वास बढ़ता है।

4. **संयम-अनुशासन:-** स्वयं पर नियंत्रण करना संयम होता है। संयमी व्यक्ति सारे व्यवधानों के बीच भी अपने कार्य को सहजता से आगे बढ़ाता है। सेवा की भावना, शान्ति, कर्मठता आदि गुण संयम से आते है। स्वामी जी के अनुसार,'किसी भी क्षेत्र में शासन वही कर सकता है, जो स्वयं अनुशासित है।'

5. **भय को तिलांजलि दे:-** सदैव यह सोचे कि मेरा जन्म कोई बड़ा काम करने के लिए हुआ है। यह सोचकर बिना किसी से डरें अपने कार्य को ईश्वर का आदेश मान कर करें।

6. **स्वावलंबी बने:-** भाग्य पर भरोसा न करें बल्कि अपने कर्म से अपना भाग्य स्वयं बनायें। 'उठों साहसी और शक्तिशाली बनों।' इससे आत्मनिर्भर बनने का सूत्र दिया।

7. **सेवा परमोधर्म:-** स्वामी जी ने नि:स्वार्थ भाव से सेवा को सबसे बड़ा कर्म माना है। सेवा का भाव उदय होने से व्यक्ति दूसरे के दु:खों को दूर करने की चेष्टा में अपने दुखों को भूल जाता है। इससे उसके तन-मन की समर्थ्थ बढ़ जाती है।

8. **अत्मा शक्ति जगाये:-** विवेकानन्द के अनुसार, आत्मा परमशक्ति शाली है, वही ईश्वर है। अपने आत्मतत्व को पहचान उसकी शक्ति को जगाएँ। तब आप स्वयं को ऊर्जावान महसूस करेगें। असफलता से परेशान होकर अपने प्रयासों को छोड़े नही और किंचित सफलता पा कर संतुष्ट होकर बैठे नही। स्वामी जी ने कहा, 'उठो, जागो और लक्ष्य पाने तक नही रूकों।'

आज हमारे युवाओं को धर्म व विज्ञान में समन्वय को समझना होगा। मानवीय जीवन कोई स्थूल वस्तु नही है। इसकी जहाँ बाह्य आवश्यकता महत्वपूर्ण है वही आन्तरिक आवश्यकताएं और भी महत्पूर्ण है। विज्ञान से हमारी बाह्य आवश्यकताएं तो पूर्ण हो सकती है,किन्तु आन्तरिक आवश्यकताए धर्म से ही दूर होगी। स्वामी जी के जीवन से युवा वर्ग के लिए संदेश यह है कि दृढ़ता से लिए गये हमारे संकल्प अवश्य पूरे होते है। इसके लिए मात्र सवेत्तम प्रयास करना होता हैं और यदि हम ऐसा करते है तो प्रकृति हमारी पूर्ण सहायता करती है।

भारत में युवा शक्ति प्रचूर मात्रा में है। यहाँ आधी से अधिक जनसंख्या 25 वर्ष से कम आयु की है। इस शक्ति का उपयोग यदि हम कर पाते है तो भारत को सर्वोच्य राष्ट्र बनने से कोई नही रोक सकता। स्वामी जी के सपनों का सच करने का संकल्प ले युवा प्रगाती के पथ पर अग्रसर हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. शिक्षा के दार्शनिक तथा: डॉ0 अरूण गुप्ता, डॉ0 उमा टण्डन, आलोक सामाजिक परिप्रेक्ष्य प्रकाशन, लखनऊ
2. विवेकानन्द साहित्य : प्रथम खण्ड अद्वैत आश्रम (प्रकाशन विभाग)- 5, डिही एण्टाली रोड, कोलकत्ता, मई 2000
3. स्वीम विवेकानन्द : डॉ0 हरमहेन्द्र सिंह बेदी, निर्मल पाब्लिकेशन्स दर्शन और विचार दिल्ली- 2003
4. दैनिक जागरण : सप्तरंग, 7 जनवरी 2015, युवाओं के प्रेरणास्त्रोत विवेकानन्द

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

स्वरोजगार योजनाओं में जिला उद्योग केन्द्र की भूमिका का अध्ययन- नागपुर जिले के विशेष संदर्भ में

नीरज सोनी* डॉ. डी. बी. कोष्टा **

* शोधार्थी, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.) भारत
** वरिष्ठ सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) गोविन्दराम सेकसरिया अर्थ-वाणिज्य (स्वशासी) महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – जब हम सशक्त युवाओं की बात करते हैं, तो हमारा मतलब एक स्वस्थ, शिक्षित और आर्थिक रूप से स्वावलंबी युवा से होता है। किसी भी देश, समाज और परिवार के लिए उसकी युवा सबसे बड़ी संपत्ति होती है क्योंकि उसके कंधों पर देश का वर्तमान और भविष्य टिका होता है। एक स्वस्थ युवा ऊर्जा और ताकत से भरा होता है और अगर उस ऊर्जा को सही दिशा में लगाया जाए, तो यह देश और समाज को नई ऊंचाइयों पर ले जा सकता है।

भारत में बड़ी संख्या में युवा हैं। लेकिन अकेले युवा आबादी किसी भी देश की प्रगति का निर्धारण नहीं कर सकती है। इन युवाओं को शिक्षित करना, कुशलता से लैस करना, रोजगार या स्वरोजगार के अवसर प्रदान करना, उनका उचित मार्गदर्शन करना कुछ प्रमुख चुनौतियाँ हैं जिनसे सरकार को निपटना है।

सरकार ने न केवल स्थिति की गंभीरता को समझा है, बल्कि इस दिशा में तुरंत कदम भी उठाए हैं। सरकार ने कौशल और उद्यमिता विकास को अपनी प्राथमिकताओं में शामिल किया है। सरकार का प्रयास एक तरफ ग्रामीण युवाओं को कौशल विकास कर आत्मनिर्भर बनाने का है तो दूसरी तरफ गांवों में बुनियादी सुविधाओं का विकास कर आगे बढ़कर गांव में ही स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराना है। इन कदमों से गांवों से युवाओं का पलायन रोकने में मदद मिली है और ग्रामीण युवा शक्ति का उपयोग गांव में ही उत्पादन कार्यों में करना संभव हो रहा है।

प्रस्तावना – यदि हम ग्रामीण क्षेत्रों में गंभीरता से देखें तो यह स्पष्ट होगा कि ग्रामीण युवाओं के लिए कृषि अभी भी उद्यम का मुख्य क्षेत्र है। वैसे तो सामान्य परिस्थितियों में भी साल भर कृषि में रोजगार का सृजन नहीं होता है, इसलिए ग्रामीण युवाओं को बेरोजगारी/अर्ध-बेरोजगारी की समस्या का सामना करना पड़ता है। अतिरिक्त आय नहीं होने के कारण ग्रामीण युवाओं का रूझान उद्यमों की ओर नहीं है। भारतीय युवाओं में जो मनोविज्ञान बनाया गया है, उसके केंद्र में उद्यम नहीं, बल्कि नौकरी है, जबकि वास्तविक मार्ग उद्यमिता के विकास से होकर जाता है। इसलिए आज की जरूरत यह है कि हमारे युवाओं को एक सफल उद्यमी बनने या सपने देखने का मनोविज्ञान विकसित करना चाहिए ताकि वे खुद रोजगार की तलाश न करें बल्कि रोजगार पैदा करें।

उद्यमिता के विकास के लिए उनमें कुछ आवश्यक गुण विकसित करना आवश्यक है जैसे नई उपलब्धियों और संभावनाओं के बारे में जागरूकता, जोखिम लेने की प्रवृत्ति, सकारात्मक सोच, पहल करने का साहस, चुनौतियों से निपटने की क्षमता, पर्यावरण का विश्लेषण करने की इच्छा, प्रयासों की दृढ़ता, सूचना एकत्र करने की विशेषता, अवसरों की खोज करना आदि।

संक्षेप में कहें तो सरकार ने ग्रामीण युवाओं के समग्र विकास के लिए उनकी शिक्षा, रोजगार की समस्याओं और खेती आदि के सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए योजनाएं बनाई हैं। इन योजनाओं में सरकार ने शहरी, ग्रामीण और आदिवासी सभी युवाओं का ध्यान रखा है। अब बस इन योजनाओं को वास्तविक धरातल पर प्रभावी रूप से संचालित करने की जरूरत है ताकि ग्रामीण युवा भी सशक्त और सक्षम बनकर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सकें।

स्वरोजगार का परिचय – स्वरोजगार शब्द तीन शब्दों से मिलकर बना है। जिसमें पहला शब्द 'स्व' है जिसका अर्थ है स्वयं, दूसरा शब्द 'रोज' है जिसका अर्थ है दैनिक, हर दिन, रोज तथा तीसरा शब्द है 'गार' जिसका अर्थ है करना। इस प्रकार स्व-रोज़गार का अर्थ है स्वयं द्वारा शुरू किया गया कुछ काम रोज करना। जब हम रोजी-रोटी के लिए कोई काम खुद से शुरू करते हैं तो उसे स्वरोजगार कहते हैं।

जिला उद्योग केन्द्र का परिचय – जिला उद्योग केन्द्र एक जिला स्तरीय संगठन है जो अपने जिले के सभी लघु एवं ग्रामीण उद्योगों की स्थापना एवं विकास के लिए आवश्यक सभी सुविधाएं, संसाधन एवं सहायता एक ही छत के नीचे उपलब्ध कराता है।

जिला उद्योग केंद्र एक ऐसी संस्था है जो उद्योगों को विभिन्न सुविधाएं प्रदान कराने के लिए वित्त निगम, औद्योगिक विकास और निवेश निगम, उद्योग निदेशालय, खनिज विकास निगम, लघु उद्योग निगम, खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड, विद्युत मंडल आदि के कार्यालयों को जोड़ता है ताकि इन एजेंसियों के माध्यम से छोटे उद्यमियों को सभी आवश्यक सुविधाएं एक ही स्थान पर उपलब्ध हो।

लघु एवं ग्रामीण उद्योग विकास कार्यक्रमों के अंतर्गत जिला उद्योग केन्द्रों की स्थापना 01 मई 1978 से प्रारंभ की गई थी।

स्वरोजगार योजनाएं – स्वरोजगार योजनायें शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के नए युवाओं को स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने हेतु सरकार द्वारा संचालित कार्यक्रम है। जिला स्तर पर इन योजनाओं का क्रियान्वयन जिला

उद्योग केंद्रों के माध्यम से किया जा रहा है।

स्वरोजगार योजनायें वास्तव में देश के लिए वरदान है। वर्तमान समय में ज्यादातर युवा नौकरी की ओर आकर्षित होते हैं लेकिन सभी को नौकरी नहीं मिलती है। यदि युवा अपनी रुचि के अनुसार स्वयं का कोई कार्य करें तो वे बिना नौकरी के भी बहुत से अच्छे कार्य कर सकते हैं और आगे बढ़ सकते है।

केन्द्र एवं महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रारंभ की गई विभिन्न स्वोजगार योजनाओं का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है :

1. **बीज मुद्रा योजना (एसएमएस) –** यह योजना महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रारंभ की गई है। इस योजना का उद्देश्य बेरोजगार व्यक्ति को संस्थागत वित्त प्राप्त करने के लिए मार्जिन मनी के हिस्से को पूरा करने के लिए सॉफ्ट लोन प्रदान करके उद्योग, सेवा और व्यवसाय के माध्यम से स्वरोजगार उद्यम स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करना है।

2. **जिला उद्योग केंद्र ऋण योजना –** यह योजना महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रारंभ की गई है योजना का उद्देश्य शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित छोटी इकाइयों और 2 लाख रुपये से कम के संयंत्र और मशीनरी में निवेश के साथ स्वरोजगार सहित रोजगार के अवसर पैदा करना है।

3. **जिला पुरस्कार योजना –** लघु उद्यम स्थापित करने वाले उद्यमियों को प्रोत्साहित करने तथा उनकी सफलता एवं उपलब्धियों को स्वीकार करने के लिए राज्य सरकार द्वारा उद्यमियों को जिला स्तर पर सम्मानित करने के उद्देश्य से जिला पुरस्कार योजना प्रारंभ की गई है।

4. **प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम –** प्रधान मंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी) पहले की दो योजनाओं प्रधान मंत्री रोजगार योजना (पीएमआरवाई) और ग्रामीण रोजगार सृजन कार्यक्रम (आरईजीपी) की पूरक है। इन दो योजनाओं के एकीकरण से शहरी और ग्रामीण प्रयासों को मिलाने में मदद मिली और इसके परिणामस्वरूप देश में नौकरियों की संख्या बढ़ाने के लिए सूक्ष्म उद्यमों की स्थापना के लिए एक अधिक एकीकृत दृष्टिकोण प्राप्त हुआ।

नागपुर जिले का परिचय – नागपुर जिला महाराष्ट्र राज्य के विदर्भ क्षेत्र के नौ जिलों में से एक है। यह राज्य के पूर्वी भाग में स्थित है, जो उत्तर में मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा और सिवनी जिलों, पश्चिम में वर्धा और अमरावती जिलों, पूर्व में भंडारा जिले और दक्षिण में चंद्रपुर जिले से घिरा हुआ है। यह उत्तरी अक्षांश 20°35' और 21°44' और पूर्वी देशांतर 78°15' और 79° 40' के बीच स्थित है। जिले का भौगोलिक क्षेत्र 9,892 किमी है। नागपुर शहर राज्य का एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक, वाणिज्यिक और औद्योगिक केंद्र है और देश के अन्य हिस्सों से रेल, सड़क और हवाई मार्ग से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है।

जिला मुख्यालय नागपुर शहर में स्थित है। 2011 की जनगणना में जिले में 14 तहसीलें, 41 शहर और 1859 गांव (242 निर्जन गांवों सहित) हैं। जिला गोदावरी बेसिन का हिस्सा है। वैनगंगा नदी जिले से होकर बहने वाली मुख्य नदी है। जिले में उगाई जाने वाली मुख्य फसलें धान, ज्वार, सोयाबीन, कपास, गेहूं और अरहर हैं।

नागपुर शहर की स्थापना 18 वीं शताब्दी के अंत में गोंड जनजाति के राजकुमार 'भक्त बुलंद' ने की थी। नागपुर भारत के भौगोलिक केंद्र को दर्शाने वाले 'ज़ीरो माइल मार्कर' के साथ भारत के केंद्र में स्थित है।

शोध साहित्य का पुनरावलोकन – यह अध्ययन नागपुर जिले के संदर्भ में किया गया है जिसमें नागपुर जिले में संचालित स्वरोजगार योजनाओं तथा इन योजनाओं में जिला उद्योग केन्द्र की भूमिका संबंधी विभिन्न पहलुओं को जानने के लिये संबंधित साहित्य का अध्ययन किया गया है।

अनुसंधान क्रियाविधि – प्रस्तुत अध्ययन जिसका शीर्षक 'स्वरोजगार योजनाओं में जिला उद्योग केन्द्र की भूमिका का अध्ययन– नागपुर जिले के विशेष संदर्भ में' है का मुख्य उद्देश्य नागपुर जिले में संचालित स्वरोजगार योजनाओं में जिला उद्योग केन्द्र द्वारा निभाई गई भूमिका को समझना है। जिसका विवरण निम्न प्रकार है–

अध्ययन का प्रस्तावित शोध के क्षेत्र में योगदान – स्वरोजगार योजनाओं में जिला उद्योग केन्द्र की भूमिका के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान न केवल महाराष्ट्र के लिए बल्कि भारत के अन्य राज्यों के लिए भी उपयोगी है। स्वरोजगार योजनाओं में जिला उद्योग केन्द्र की भूमिका के संबंध में अध्ययन के निष्कर्ष सरकारी, गैर सरकारी संगठनों, नीति निर्माताओं एवं व्यवसायियों के लिए उपयोगी हो सकते है यह अध्ययन स्वरोजगार योजनाओं के लाभार्थियों एवं जिला उद्योग केन्द्रों के लिए भी मददगार होगा।

शोध निष्कर्ष एवं सुझावों के परिपालन द्वारा छिंदवाड़ा व नागपुर जिले के अविकसित क्षेत्रों का विकास करने में मदद मिलेगी। क्षेत्रवासियों एवं आम नागरिकों को इन स्वरोजगार योजनाओं की प्रगति के साथ जिले के विकास की जानकारी भी प्राप्त होगी।

यह शोधकार्य स्वरोजगार योजनाओं में जिला उद्योग केन्द्र की भूमिका के विषय पर होने वाले शोध कार्य का इतिश्री नहीं है बल्कि यह शोधकार्य भविष्य में इससे संबंधित विषयों पर होने वाले अध्ययनों के लिए भी शोधार्थियों का मार्गदर्शन करेगा। इससे अन्य शोधकर्ताओं के लिए छिंदवाड़ा व नागपुर जिले के अलावा अन्य जिलों, संभागों और राज्यों में स्वरोजगार योजनाओं में जिला उद्योग केन्द्र की भूमिका एवं इसकी प्रगति का विश्लेषण करने हेतु रास्ता खुलेगा।

शोध का प्रकार एवं शोध अभिकल्प – यह अध्ययन मात्रात्मक प्रकार के शोध पर आधारित है तथा इसकी प्रकृति वर्णात्मक और खोजपूर्ण अनुसंधान डिजाइन पर आधारित है।

शोध के उद्देश्य – प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य निम्न है।

1. नागपुर जिले में संचालित स्वरोजगार योजनाओं का अध्ययन करना।
2. नागपुर जिले में संचालित स्वरोजगार योजनाओं में जिला उद्योग केन्द्र की भूमिका का अध्ययन करना।
3. नागपुर जिले में इन स्वरोजगार योजनाओं की वित्तीय व भौतिक प्रगति का मूल्याँकन करना।
4. नागपुर जिले में स्वरोजगार योजनाओं के आर्थिक एवं सामाजिक लाभों का अध्ययन करना।
5. नागपुर जिले में स्वरोजगार योजनाओं में जिला उद्योग केन्द्र की भूमिका से हितग्राहियों को प्राप्त संतुष्टि का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ – किसी भी शोध को वैज्ञानिक आधार प्रदान के लिए उसमें वैज्ञानिक पद्धतियों का उपयोग किया जाना आवश्यक होता है। शोध परिकल्पनाएँ ऐसे विचार हैं जो शोध समस्या के संबंध में खोज करने की प्रेरणा देती है। किसी भी शोध क्षेत्र में प्रवेश करने से पहले उसके संबंध में प्रारंभिक जानकारी प्राप्त करनी आवश्यक होती है। इसी के आधार परशोधकर्ता शोधकार्य की रूपरेखा तैयार करता है। प्रस्तुत शोध की

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

परिकल्पनाएं निम्न है –

1. नागपुर जिले में स्वरोजगार योजनाओं में जिला उद्योग केन्द्र की सार्थक भूमिका है।
2. स्वरोजगार योजनाओं में जिला उद्योग केंद्र की भूमिका का नागपुर जिले के आर्थिक व सामाजिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।
3. नागपुर जिले में स्वरोजगार योजनाओं में जिला उद्योग केंद्र की भूमिका से हितग्राही संतुष्ट है।

शोध का क्षेत्र – प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र सम्पूर्ण नागपुर जिला है। स्वरोजगार योजनाओं में जिला उद्योग केन्द्र की भूमिका का अध्ययन करने हेतु नागपुर जिले के पारसिवनी, हिंगना, काटोल, काम्पटी, उमरेड, सावनेर, नागपुर ग्रामीण आदि विकास खंडों का चुनाव किया गया है।

शोध की अवधि – प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शोध अवधि वर्ष 2015-16 से लेकर 2018-19 तक रखी गयी है। इसी अवधि में स्वरोजगार योजनाओं की भौतिक व वित्तीय प्रगति एवं उनमें जिला उद्योग केन्द्र की भूमिका से संबंधित सूचनाओं एवं आंकड़ों का संकलन किया गया है।

शोध कार्य में प्रयुक्त प्रविधियाँ, समग्र एवं न्यादर्ष – प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने न्यादर्श पद्धति का उपयोग किया है। उत्तरदाताओं के चयन के लिये संभाव्यता प्रतिचयन की सरल यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया है।

जिला उद्योग केन्द्र, नागपुर में विभिन्न स्वरोजगार योजनाओं के अंतर्गत् पंजीकृत एवं लाभान्वित 801 हितग्राहियों को समग्र के रूप में शामिल किया गया है। समग्र में उन हितग्राहियों को शामिल किया गया है जिनके ऋण प्रकरण को बैंकों द्वारा ऋण भुगतान हेतु स्वीकृत किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में जिला उद्योग केन्द्र नागपुर में बीज मुद्रा योजना, जिला उद्योग केन्द्र कर्ज योजना और प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम आदि के अंतर्गत पंजीकृत एवं लाभान्वित 80 हितग्राहियों को न्यादर्श में शामिल किया गया है। जो कि शोध क्षेत्र के सम्पूर्ण समग्र का लगभग 10 प्रतिशत है।

समंको का संग्रहण – यह अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक समंको आधारित है। प्रस्तुत शोध कार्य के अंतर्गत नागपुर जिले में स्वरोजगार योजनाओं में जिला उद्योग केन्द्र की भूमिका के आर्थिक एवं सामाजिक प्रभाव, रोजगार संख्या में वृद्धि एवं स्वरोजगार योजनाओं से हितग्राहियों की संतुष्टि के स्तर आदि को ज्ञात करने के लिए **प्राथमिक समंक** सर्वेक्षण पद्धति के आधार पर प्रश्नावली के माध्यम से एकत्रित किए गए हैं।

स्वरोजगार योजनाओं में जिला उद्योग केन्द्र की भूमिका एवं स्वरोजगार योजनाओं की वित्तीय एवं भौतिक प्रगति से संबंधित तथ्यों एवं साहित्य से संबंधित **द्वितीयक समंकों** के संकलन हेतु संदर्भ पुस्तकों, पूर्व रचित शोध प्रबंध, लघु शोध प्रबंध, शोध पत्रों, जिला उद्योग केन्द्र नागपुर द्वारा बनाई गई वार्षिक रिपोर्ट व परियोजना रिपोर्ट, जिला अध्यक्ष, कार्यालय के सांख्यिकी विभाग से प्रकाशित साहित्य एवं प्रतिवेदन, केन्द्र व राज्य सरकार के वार्षिक बजट एवं जनगणना, राष्ट्रीय, राज्यीय एवं स्थानीय समाचार पत्रों एवं शासकीय व अशासकीय वेबसाइटों आदि का उपयोग किया गया है

समंकों का प्रस्तुतिकरण एवं विश्लेषण – अध्ययन हेतु संग्रहित किये गये तथ्यों व समंकों को तालिकाओं एवं आरेखों के माध्यम से प्रस्तुत एवं विश्लेषित किया गया है तथा उसी केअनुसार उनकी व्याख्या की गई है। सारणीयन हेतु लिकर्ट पद्धति का उपयोग किया गया है। समंको को बोधगम्य एवं सहज बनाने के लिये प्रतिशत विधि का उपयोग किया गया है जिसमें गणना की नाममात्र विधि अपनाई गयी है। इसके अंतर्गत पाई चार्ट एवं स्तंभ चार्ट का उपयोग किया गया है। शोध परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु काई वर्ग सांख्यिकीय उपकरण का उपयोग किया गया है ताकि अधिक सटीक परिणाम प्राप्त हो सके।

शोध की सीमाएँ – उचित निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए साथ शोधकर्ता द्वारा सभी ईमानदार एवं पक्षपातरहित प्रयास किये गए हैं। जनसंख्या में अधिकांश उत्तरदाताओं के उच्च शिक्षित नहीं होने के कारण प्रश्नावली को समझने में कुछ समस्या हुई। कुछ उत्तरदाताओं ने प्रश्नावली में दिए गए प्रश्नों को पर्याप्त महत्व नहीं दिया जब उनसे वार्षिक आय के बारे में पूछा गया तो उन्होंने सही वार्षिक आय नहीं बताई। इसलिए उत्तरदाताओं द्वारा बताए गए ऐसे तथ्यों के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष भिन्न हो सकते हैं। कुछ उत्तरदाता अपने कार्यों में व्यस्त रहने के कारण प्रश्नावली भरने के इच्छुक नहीं थे और दूरस्थ क्षेत्रों में होने के कारण उनसे प्रश्नावली भरवाने एवं सूचनाएं एकत्र करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

निष्कर्ष :

1. स्वरोजगार योजनाओं के अंतर्गत ऋण प्राप्त करने वाले अधिकांश हितग्राही 26-35 वर्ष के है।
2. स्वरोजगार योजना के अंतर्गत महिलाओं ने पुरुषों की तुलना में कम संख्या में ऋण प्राप्त किया है।
3. ऋण प्राप्त करने वाले हितग्राहियों में सबसे कम अनुसूचित जनजाति वर्ग के हैं। अन्य पिछड़ा वर्ग के हितग्राहियों द्वारा सबसे अधिक संख्या में ऋण लिया गया है।
4. स्वरोजगार योजना के अंतर्गत प्राप्त ऋण से उद्यम की स्थापना करने वाले हितग्राहियों की संख्या सबसे कम है। अधिकांश ने व्यावसायिक इकाई की स्थापना की है।
5. जिला उद्योग केंद्रों को स्वरोजगार योजनाओं के अंतर्गत केंद्र व राज्य शासन द्वारा अत्यंत सीमित मात्रा में अधिकार एवं शक्तियां प्रदान की गई जिससे ये केंद्र हितग्राही को पर्याप्त सुविधायें उपलब्ध कराने में असमर्थ होते है। इस दृष्टि से ये केंद्र केवल ऋण प्रकरणों को बैंकों व वित्तीय संस्थाओं तक प्रेषित करने वाले माध्यम बनकर रह गये है। ऋण प्रकरणों की स्वीकृति व वितरण से संबंधित निर्णय बैंकों द्वारा लिये जाते है।
6. जिला उद्योग केंद्रों द्वारा प्रेषित किये गये ऋण प्रकरणों में से कुछ ही प्रकरण बैंकों द्वारा स्वीकृत किये जाते है और इन स्वीकृत प्रकरणों में से भी कुछ को परियोजना लागत से कम ऋण की राशि स्वीकृत की जाती है। बैंकों की प्रक्रिया में पारदर्शिता नहीं है तथा इनमें बिचौलियों का बोलबाला है। जिससे केंद्रों की कार्यप्रणाली पर प्रश्न उठने लगते है।
7. जिला उद्योग केंद्र द्वारा हितग्राहियों को इकाई की स्थापना से लेकर विपणन प्रक्रिया तक का समुचित मार्गदर्शन नही दिया जाता है जिससे उन्हे काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है।
8. स्वरोजगार योजनाओं के अंतर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन सभी हितग्राहियों के लिए नही किया जाता है।
9. अधिकांश हितग्राहियों को जिला उद्योग केन्द्र द्वारा योजना के अंतर्गत

प्रदान की जाने वाली मार्जिन मनी एवं ब्याज अनुदान की राशि प्राप्त हुई। कुछ हितग्राहियों को अनुदान की राशि प्राप्त नही हो पायी है।

10. योजना का लाभ लेने के पश्चात लगभग अधिकांश हितग्राहियों की वार्षिक आय में आय में सामान्य वृद्धि तथा जीवन स्तर में सामान्य सुधार हुआ है।
11. जिला उद्योग केंद्र ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में लघु एवं मध्यम इकाइयों की स्थापना कराने में सफल रहे हैं। इन इकाइयों में लोगों को रोजगार प्राप्त होने से जिलों में व्याप्त गरीबी एवं आय की असमानता कम हुई है तथा दोनों क्षेत्रों में उपलब्ध स्थानीय संसाधनों, मानवीय एवं वित्तीय संसाधनों का संतुलित उपयोग संभव हुआ है।
12. जिला उद्योग केंद्र महिलाओं एवं युवाओं को भी स्वरोजगार योजना के अंतर्गत आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने में सहायक रहे हैं जिससे उनमें स्वरोजगार, व्यावसायिक, तकनीकी एवं पेशेगत कौशल का विकास हुआ है।
13. स्वरोजगार योजनाओं के अंतर्गत जिला उद्योग केन्द्र की भूमिका से अधिकांश हितग्राही संतुष्ट हैं।
14. अंत में अध्ययन की सभी परिकल्पनाओं के परीक्षण में काई वर्ग का परिकलित मान सारणी मान से अधिक ज्ञात हुआ। इसलिये अध्ययन की सभी परिकल्पनाओं को स्वीकार किया गया है।

सुझाव :

1. जिला उद्योग केंद्रों को पर्याप्त अधिकार एवं शक्तियां प्रदान की जाये जिससे कि वे स्वरोजगार योजनाओं के अंतर्गत बैंकों द्वारा की जाने वाली कार्यवाही पर नियंत्रण रख सकें। ताकि बैंक से ऋण स्वीकृत एवं वितरित होने की प्रक्रिया में तेजी लायी जा सके और हितग्राहियों को परियोजना लागत के बराबर ऋण स्वीकृत एवं वितरित किया जा सके। इससे बैंकों की प्रक्रिया में पारदर्शिता आयेगी जिससे बैंको में बिचौलियों की उपस्थिति एवं भ्रष्टाचार को रोकने में भी सहायता मिलगी।
2. जिला उद्योग केंद्रों द्वारा हितग्राहियों को इकाई की स्थापना से लेकर विपणन प्रक्रिया तक समुचित मार्गदर्शन प्रदान किया जाना चाहिये। इसके लिये जिला उद्योग केंद्रों में अलग से एक सहायता केन्द्र स्थापित होना चाहिये।
3. स्वरोजगार योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन सभी हितग्राहियों के लिये किया जाना चाहिये।
4. बैंक से ऋण के ब्याज पर मिलने वाला अनुदान उचित समय पर हितग्राही को प्राप्त हो जाये इसके लिये जिला उद्योग केंद्रों को बैंक द्वारा इस संबंध में की जाने वाली प्रक्रिया पर नियंत्रण रखना चाहिये। शासन द्वारा दी जाने वाली ब्याज अनुदान की राशि निश्चित समय अवधि में बैंकों को हस्तांतरित की जानी चाहिये ताकि यह राशि निर्धारित समयावधि के पश्चात हितग्राही के खाते में हस्तांतरित की जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. कच्छल दीपिका और खुराना ललिता 'संपादकीय' मासिक पत्रिका, कुरुक्षेत्र, आषाढ़-भाद्रपद 1938, अगस्त 2016, वर्ष 62, मासिक अंक 10, पृष्ठ 4, कुल पृष्ठ 52.
2. विवरणिका, बीज मुद्रा योजना, जिला उद्योग केन्द्र, नागपुर, महाराष्ट्र
3. विवरणिका, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, जिला उद्योग केन्द्र, छिन्दवाड़ा
4. आफाक मंजर, 'महाराष्ट्र राज्य के अंतर्गत नागपुर जिले की भूजल विज्ञान की जानकारी' भारत सरकार जल संसाधन मंत्रालय, केन्द्रीय भूमिजल बोर्ड, मध्य क्षेत्र नागपुर, 2013
5. मित्तल डॉ. मोनिका,'शोध पद्धतियां एवं सांख्यिकी', एस., एम. पी. डी. डी., उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी (नैनीताल), वर्ष 2020, पृष्ठ 51-52
6. पाण्डेय डॉ. प्रदीप कुमार, 'शोध विधियाँ तथा सांख्यिकी', उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहबाद, अप्रैल 2011
7. District Census Handbook, Nagpur (Village and Town Directry),Directorate of Census Operations Maharashtra, Series- 28, Part- XII-A, Census of India 2011

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

On the Structure Equation $F^5 + F^3 = 0$

Lakhan Singh*

*Department of Mathematics, D.J. College, Baraut, Baghpat (U.P.) INDIA

Abstract - In this paper we have studied various properties of the F – Structure $F^5 + F^3 = 0$. Nijenhuis tensor, metric F-Structure, Kernel, Tangent and normal vectors have also been discussed.
Keywords - Differentiable manifold, projection operators Nijenhuis tensor, Metric, kernel, tangent and normal vectors.

1. Introduction : Let M^n be a differentiable manifold of class C^∞ and F be a (1, 1) tensorof class C^∞ defined on M^n satisfying.

(1.1) $F^5 + F^3 = 0$

We define the operators l and m on M^n by

(1.2) $l = F^4$, $m = I - F^4$ from (1.1) and (1.2) we have

(1.3) $l + m = I$, $l^2 = l$, $m^2 = m$, $lm = ml = 0$,

$F^3 l = lF^3 = F^3$, $F^3 m = mF^3 = 0$

Let

(1.4) $M = \{ m - F^5, m - F^3, m + F^3, m + F^5 \}$

(1.5) $L = \{ l - F^5, l - F^3, l + F^3, l + F^5 \}$

We study some properties of M and L

Theorem (1.1) we define (1, 1) tensors by 2

(1.6) $p = m - F^5$, $q = m + F^3$

(1.7) $\alpha = l - F^3$, $\beta = l + F^3$

(1.8) $\gamma = l - F^5$, $\delta = l + F^5$, then we have

(1.9) $p = q$, $p^2 = q^2 = m - l$, $p^4 = q^4 = I$

(1.10) $\alpha\beta = 2l$, $\alpha^2 + \beta^2 = 0$

(1.11) $\gamma^2 + \delta^2 = 0$

Proof : Using(1.1), (1.2), (1.3), (1.6), (1.7) and (1.8) we get the results. We prove only (1.9) and (1.10)

(1.12) $p = (m - F^5) = m + F^3 = q$

Thus

(1.13) $p = q$

Also

(1.14) $p^2 = (m - F^5)(m - F^5)$

$= m^2 - mF^5 - F^5 m + F^{10}$

$= m - mF^3 (F^2) - F^2 (F^3 m) + F^{10}$

$= m - 0 - 0 + (-l)$

$= m - l$

Thus

(1.15) $p^2 = m - l$, similarly $q^2 = m - l$

Thus from (1.14) (1.15) we get

$p^2 = q^2 = m - l$

Also

(1.16) $p^4 = (p^2)^2$

$= (m - l)^2$

$= m^2 - ml - lm + l^2$

$= m - 0 - 0 + l$

$= m + l$

$= I$

Thus

(1.17) $p^4 = I$, similarly $q^4 = I$

$p^4 = q^4 = I$

also

(1.18) $\alpha\beta = (l - F^3)(l + F^3)$

$= l^2 + lF^3 - F^3 l - F^6$

$= l + F^3 - F^3 + l$

$= 2l$

Thus

(1.19) $\alpha\beta = 0$, also

(1.20) $\alpha^2 + \beta^2 = (l - F^3)^2 + (l + F^3)^2$

$= (l^2 - lF^3 - F^3 l + F^6 + l^2 + lF^3 + F^3 l + F^6$

$= l - F^3 - F^3 - l + l + F^3 + F^3 - l$

$= 0$

Thus

(1.21) $\alpha^2 + \beta^2 = 0$

2. Nijenhuis tensor - The Nijenhuis Tensor corresponding to F, l and m be denoted by N_F, N_l and N_m respectively and defined by

(2.1) $N_F(X, Y) = [FX, FY] + F^2 [X,Y] - F[FX, Y] - F[X, FY]$

(2.2) $N_l(X, Y) = [lX, lY] + l^2 [X,Y] - l[lX, Y] - l[X, lY]$

(2.3) $N_m(X, Y) = [mX, mY] + m^2 [X,Y] - m[mX, Y] - m[X, mY]$

Theorem (2.1) For the F - structure F satisfying (1.1), we have

(2.4) $N_{F3}(mx, my) = -l[mX, mY]$

(2.5) $F^2 N_{F3}(mx, my) = l[mX, mY]$

(2.6) $N_l(mX, mY) = l[mX, mY]$

(2.7) $N_m(lX, lY) = m[lX, lY]$

(2.8) $N_l(lX, mY) = Nm(mX, lY) = 0$

Proof : Using (1.1), (1.2), and (1.3) in (2.1), (2.2) and (2.3) we get the result. We prove only (2.4) and (2.5) we have

(2.9) $N_{F3}(mX, mY) = [F^3 mX, F^3 mY] + F^6 [mX, mY]$

$= -F^3 [F^3 mX, mY] - F^3 [mX, F^3 mY]$

= F^6 [mX, mY] which is (2.4)

= -I [mX, mY] which is (2.4)

Also

(2.10) $F^2 N_{F3}$ (mX, mY) = F^2 F^6 [mX, mY]

= F^8 [mX, mY]

= I^2 [mX, mY]

= I [mX, mY] which is (2.5)

3. Metric F – Structure - Let the Riemannian metric g be such that

(3.1)' F (X, Y) = g (FX, Y) is symmetric, then

(3.2) g (FX, Y) = g (X, FY) and

(3.3)' m (X, Y) = g (mX, Y) = g (X, mY)

Theorem (3.1) For the F-Structure satisfying (1.1) we save

(3.4) g (F^2X, F^2Y) = g (X, Y) – 'm (X, Y)

Proof : Using (1.1), (1.3), (3.2) and (3.4)

(3.5) g (F^2X, F^2Y) = g (X, F^4Y)

= g (X, IY)

= g (X,(I – m)Y)

= g (X, Y) – g (X, mY)

= g (X, Y) – ^{1}m (X,Y)

4. Kernel, Tangent and Normal Vectors we define

(4.1) Ker F = { X : FX = 0}

(4.2) Tan F = { X : FX || X}

(4.3) Nor F = { X : g (X, FY) = 0, $\forall$ Y}

Theorem (4.1) With the structure F satisfying (1.1)

(4.4) Ker F^3 = Ker F^5

(4.6) Tan F^3 = Tan F^5

(4.6) Nor F^3 = Nor F^5

Proof Using (1.1), (4.1) (4.2) and (4.3) we get the result.

Let X $\in$ Ker F^3 $\Rightarrow$ F^3X = 0

$\Rightarrow$ -F^5X = 0

$\Rightarrow$ F^5X = 0

$\Rightarrow$ X $\in$ Ker F^5

Thus

(4.7)Ker F^3 $\underline{C}$ Ker F^5

Let X $\in$ Ker F^5 $\Rightarrow$ F^5X = 0

$\Rightarrow$ -F^3X = 0

$\Rightarrow$ F^3X = 0

$\Rightarrow$ X $\in$ Ker F^3

Thus

(4.8) Ker F^5 $\underline{C}$ Ker F^3

From (4.7) and (4.8) we get (4.4)

Let X $\in$ Tan F^3 $\Rightarrow$ F^3X 11 X

$\Rightarrow$ -F^5X 11 X

$\Rightarrow$ F^5X 11 X

$\Rightarrow$ X $\in$ Tan F^5

Thus

(4.9)TanF^3 $\underline{C}$ Tan F^5

Let X $\in$ Tan F^5 $\Rightarrow$ F^5X 11 X

$\Rightarrow$ -F^3X 11 X

$\Rightarrow$ F^3X 11 X

$\Rightarrow$ X $\in$ Tan F^3

Thus

(4.10) TanF^5 $\underline{C}$ Tan F^3

From (4.9) and (4.10) We get (4.5)

Let X $\in$ NorF^3 $\Rightarrow$ g (X, F^3Y) = 0

$\Rightarrow$ g (X, -F^5Y) = 0

$\Rightarrow$ g (X, F^5Y) = 0

$\Rightarrow$ X $\in$ Nor F^5

Thus

(4.11) Nor F^3 $\underline{C}$ Nor F^5

Let X $\in$ Nor F^5 $\Rightarrow$ g (X, F^5Y) = 0

$\Rightarrow$ g (X, -F^3Y) = 0

$\Rightarrow$ g (X, F^3Y) = 0

$\Rightarrow$ X $\in$ Nor F^3

Thus

(4.12) Nor F^5 $\underline{C}$ Nor F^3

From (4.11) and (4.12) we get (4.6)

References :-

1. A Bejancu : on semi invariant submanifolds of an almost contact metric manifold . An Stiint University, "A.I.I. Cuza" Lasi Sec. Ia Mat (Supplement) 1981, 17-21.
2. B. Prasad: Semi - invariant submanifolds of a Lorentzian Para-sasakian manifold, Bull Malaysian Math. Soc (second series) 21 (1988) 21-26
3. F. Careres : Linear invariant of Riemannian product manifold, Math Proc. Cambridge Phil. Soc 91(1982),99-106
4. Endo Hiroshi: On invariant submanifolds of connect metric manifolds, Indian J. Pure Appl. Math 22(6)(June 1991), 449-453.
5. H.B.Pandey & A. Kumar : Anti - invariant some manifold of almost para contact manifold. Prog of Maths Volume 21(1): 1987.
6. K. Yano : On a structure defined by a tensor field f of the type (1,1) satisfying f3+f = 0. Tensor N.S., 14(1963),99-109
7. R. Nivas & S.Yadav : On CR- structure and F I I (2v +3,2) - HSU - structure satisfying F2v+ 3 + I I r F2 = 0, Acta Ciencias Indica, Volume XXXVII M, No. 4,645(2012).
8. Abhishek Singh, Ramesh Kumar Pandey & Sachin Khare: On horizontal and complete lifts of (1,1) tensor fields F satisfying the structure question F (2k+S,S) = 0. International Journal of Mathematics and soft computing. Vol. 6, No. 1(2016) 143-152,ISSN 2249-3328.
9. Lakhan Singh: on the cyclic group related to the F-structure equation = 0. Naveen shodh sansar oct to Dec 2020. E-journal vol.I, Issue XXXII, ISSN2320-8767

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

वर्षा जल संरक्षण : उदयपुर जिले का एक भौगोलिक अध्ययन

प्रियंका आमेटा* डॉ. हेमेन्द्र शक्तावत**

* शोधार्थी (भूगोल) भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत
** सहायक आचार्य (भूगोल) भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – वर्षा जल किसी भी क्षेत्र में मीठे जल का मुख्य स्रोत है, प्राय: जिन क्षेत्रों में वर्षा की मात्रा अधिक होती है, वहां स्वच्छ जल के स्रोत भी व्यापक होते हैं, वहीं इसके विपरीत जिन क्षेत्रों में वर्षा की मात्रा सीमित होती है, वहां स्वच्छ जल के स्रोत भी सीमित होते हैं। अध्ययन क्षेत्र उदयपुर जिला राजस्थान के दक्षिण भाग में स्थित है, जिस कारण यह जिला अरब सागर से अपेक्षाकृत अधिक निकट है, साथ ही अरब सागर की मानसूनी पवनें नर्मदा और तापी नदियों की घाटियों से होती हुई दक्षिणी राजस्थान में प्रवेश करती हैं, जिस कारण अध्ययन क्षेत्र उदयपुर जिले में तुलनात्मक रूप से अधिक वर्षा होती है, यही कारण है कि उदयपुर जिला जल संसाधन की दृष्टि से एक संपन्न जिला है। यहां औसत वार्षिक वर्षा 29.53 इंच (750.0 मिमी) है। यहाँ वर्षा जल के प्रभावी प्रबंधन के कारण ही यहां अवस्थित बांधों, प्राकृतिक जलाशयों और तालाबों को भरने हेतु पर्याप्त वर्षा जल प्राप्त हो जाता है।

अध्ययन क्षेत्र– अध्ययन क्षेत्र उदयपुर जिला अपने जलीय निकायों के लिए विश्व विख्यात है। उदयपुर नगर में अवस्थित झीलों के कारन ही इसे झीलों की नगरी कहा जाता है। राजस्थान के दक्षिणी भाग से अवस्थित उदयपुर जिला 23°46' से 25°05' उत्तरी अक्षांश एवं 73°09' से 74°35'पूर्वी देशान्तरों में विस्तृत है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्र 11724 वर्ग किमी. है जो कि राज्य के कुल क्षेत्रफल का मात्र 3.42 प्रतिशत है।

उद्देश्य एवं विधितन्त्र– प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य उदयपुर जिले में वर्षा जल के संरक्षण में प्रयोग आने वाली परम्परागत एवं आधुनिक तकनीकों का विश्लेषण करना है। इस हेतु आवश्यक आंकड़ों एवं सूचनाओं का संकलन द्वितीयक स्त्रोतों से किया गया है। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं, शोध ग्रंथों, सरकारी प्रतिवेदनों से सूचनाओं का संकलन कर विश्लेषित किया गया है।

विश्लेषण – अध्ययन क्षेत्र में पेयजल एवं सिंचाई के लिए जलापूर्ति वर्ष के माध्यम से ही हो पाती है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि अध्ययन क्षेत्र में वर्ष से प्राप्त जल को संरक्षित किया जाकर उसका उचित प्रबन्धन एवं उपयोग हो। अध्ययन क्षेत्र में वर्ष से प्राप्त जल विभिन्न प्रकार से संरक्षण किया जाता है जिनमें मुख्यत: परम्परागत एवं आधुनिक विधियाँ महत्वपूर्ण है।

वर्षा जल संरक्षण की परंपरागत तकनीक – इसके अंतर्गत तालाब, बावड़ी में, टांकों, और भूमिगत टैंक आदि को सम्मिलित किया जा सकता है। अध्ययन क्षेत्र में तालाब और बावड़ियाँ वर्षा जल के प्रबंधन का महत्वपूर्ण माध्यम है। बावड़ी उन सीढ़ीदार कुँओं, तालाबों अथवा कुण्डो को कहते हैं, जिनके जल तक सीढ़ियों के सहारे आसानी से पहुँचा जा सकता है। देश में बावड़ियों के निर्माण और उपयोग का लम्बा इतिहास है। उदयपुर जिले में इस प्रकार की अनेक बावड़ियाँ बनाई गई हैं। इनमें से अधिकांश बावड़ियाँ, राजाओं एवं उनके सामंतों और सेठ–साहूकारों द्वारा बनाई गई है। उदयपुर नगर के सीटीआई कृषि विश्वविद्यालय के खेतों में सुंदर बाई की बावड़ी अवस्थित है। यह लगभग 360 वर्ष पुरानी है। इस बावड़ी की स्थापत्य कला एवं शिल्पकारी देखते ही बनती है। इस बावड़ी के समीप सुंदरेश्वर महादेव का मंदिर स्थित है, ऐसा माना जाता है कि इन दोनों का निर्माण एक साथ किया गया था। इतिहासकार डॉ श्रीकृष्ण जुगनू और डॉक्टर जी. एल. माथुर मानते है कि महाराणा राजसिंह के समय विक्रम संवत 1717 (1660 ईस्वी) में इस बावड़ी का निर्माण किया गया। बावड़ी के द्वार पर एक शीला लेख अवस्थित है जिस पर इस बावड़ी के संदर्भ में बताया गया है, इस शिलालेख से स्पष्ट होता है कि महाराजा राजसिंह ने सुंदरबाव बनाने के उपलक्ष्य में गोविंद राम व्यास को भुवाणा गांव में 75 बीघा जमीन दी। वारातण लाली ब्राह्मणी ने एक सराय, मंदिर और बावड़ी का निर्माण किया।

इसी प्रकार मावली में बाई जी की बावड़ी अवस्थित है। मध्यकाल में मावली को मोहाली के नाम से जाना जाता था। यह गांव महाराणा राज सिंह ने राजकुमारी चांद कंवर को दहेज में उपहार स्वरूप दिया था। इसके पश्चात महाराणा राजसिंह ने बाई जी अर्थात राजकुमारी की सुविधा के लिए यहां विक्रम संवत 1660 में बावड़ी का निर्माण कराया। किंतु यहां इस बावड़ी की देखभाल नहीं होने के कारण यह जर्जर होती जा रही है।

इसी प्रकार गोगुंदा तहसील में चोर बावडी, उदयपुर नगर में धोली बावड़ी और धौरान बावड़ी, गिर्वा तहसील में मोखी की बावड़ी आदि अनेक ऐसी बावड़ियां हैं, जो इतिहास में वर्षा जल संरक्षण का महत्वपूर्ण माध्यम थी, किन्तु वर्तमान में अपना स्वरूप होती जा रही हैं। ये बावड़ियाँ न केवल यहां वर्षा जल संरक्षण का एक महत्वपूर्ण माध्यम है, अपितु इन बावड़ियों की स्थापत्य और शिल्प कला भी अपने आप में अनूठी है, जिनमें पर्यटकों को आकर्षित करने की क्षमता विद्यमान हैं।

मेवाड़ में यहाँ के प्रजा हितैषी और प्रगतिशील राजाओं ने यहां बावड़ियों, झीलों और तालाबों का भी निर्माण करवाया। ये झीलें तत्कालीन समय में जल प्रबंधन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होने के साथ–साथ आज भी इनकी उपयोगिता कम नहीं हुई हैं। परंतु वर्तमान में इन झीलों का सौंदर्यकरण होने से ये झीलें उदयपुर जिले की अर्थव्यवस्था की जीवन रेखा भी बन गई है। यह इन झीलों का ही प्रभाव ही है, कि उदयपुर नगर आज विश्व पर्यटन मानचित्र पर अपनी महत्वपूर्ण पहचान रखता है। उदयपुर नगर से 50 किलोमीटर दूर जयसमंद झील अवस्थित है, इस झील का निर्माण 1685 से 1691 की

अवधि में महाराणा जयसिंह द्वारा गोमती नदी पर बांध बनाकर कराया गया। यह बांध 375 मीटर लंबा तथा 35 मीटर ऊंचा है। यह राजस्थान में मीठे पानी की सबसे बड़ी झील है। यह मीठे पानी की विश्व की दूसरी सबसे बड़ी कृत्रिम झील है। इस झील में 7 बड़े टापू स्थित है, जिसमें बाबा का भांगड़ा सबसे बड़ा टापू व प्यारी सबसे छोटा टापू है, इन टापुओं पर भील और मीणा जनजाति के लोग रहते हैं। यहां एक टापू पर आइसलैंड रिसोर्ट होटल का निर्माण किया गया है। ढेबर नाके पर अवस्थित होने के कारण इस झील को ढेबर झील कहा जाता है। इस झील के मधय में नर्मदेश्वर मंदिर अवस्थित है। वर्ष 1950 के पश्चात सिंचाई के लिए यहां दो नहरों का निर्माण किया गया, श्यामपुरा नहर और भाट नहर। इन दोनों नहरों की कुल लंबाई 324 किलोमीटर है, ये नहरे उदयपुर जिले में सिंचाई की सुविधा प्रदान करती है।

उदयपुर नगर के मध्य में पिछोला झील अवस्थित है। इस झील का निर्माण मेवाड़ के राणा लाखा के समय 1387 ईस्वी में छीतर नामक बंजारे ने उदयपुर के पश्चिम में स्थित पिछोला गांव में कराया। 1525 ईस्वी में महाराणा सांगा ने इस झील का जीर्णोद्धार कराया। इस झील में बूझड़ा व सीसारमा नदी का जल एकत्र होता है। इस झील की लंबाई 7 किलोमीटर तथा चौड़ाई 2 किलोमीटर है। इस झील में दो टापू स्थित हैं जिन पर जग मंदिर व जग निवास महल दो प्रसिद्ध महल बनाए गए हैं। इस झील में स्थित जगमंदिर का निर्माण कर्णसिंह ने प्रारंभ कराया, जिसे महाराणा जगतसिंह ने पूर्ण करवाया। जगनिवास टापू पर लेक पैलेस होटल स्थित है। यह राज्य की प्रथम झील है, जिसमें सौर ऊर्जा संचालित नौकाओं का संचालन प्रारंभ किया गया।

पिछोला झील के समीप ही फतेहसागर झील स्थित है, यह झील स्वरूप सागर नहर द्वारा पिछोला झील से संयोजित है। प्रारंभ में इस स्थान पर एक तालाब का निर्माण महाराणा जय सिंह द्वारा 1687 में कराया गया 1888 में इस झील का बांध टूट जाने के कारण फतेह सिंह द्वारा इसका पुनर्निर्माण कराया गया इस कारण इस झील को फतेह सागर के नाम से भी जाना जाता है, इस झील की नीव स्थापना ड्यूक ऑफ कनाट द्वारा की गयी जिस कारण इसे कनॉट बांध के नाम से भी जाना जाता है। यह झील एक नहर द्वारा पिछोला से जुड़ी हुई है।

इन झीलों के अतिरिक्त अध्ययन क्षेत्र में अनेक छोटे–बड़े तालाब भी अवस्थित हैं जो वर्षा जल का संग्रहण कर उसे लंबे समय तक प्रयोज्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनमें बड़ी तालाब, छोटी मदार, बड़ी मदार, मक्रदेव, मेनाल, समेलिया, भटेवर, नेला, लोदड़ा सलूंबर आदि प्रमुख है। इन तालाबो में कुछ तालाब कृत्रिम है जिनका निर्माण अरावली पर्वत की विभिन्न पहाड़ियों के मध्य अवस्थित निचली भूमियों में वर्षा जल के एकत्रण के परिणामस्वरूप हुआ है, तो वहीं कुछ मानव द्वारा निर्मित है, जिन्हे स्थानीय जल की आवश्यकताओं यथा कृषि हेतु और पेयजल की आपूर्ति के उद्देश्य से निर्मित किया गया है।

वर्षा जल प्रबंधान की आधुनिक तकनीकी – एक रिपोर्ट के अनुसार एक हजार वर्ग फिट छत से लगभग 35 हजार लीटर जल का संचय किया जा सकता है, जिसका उपयोग भूमिगत जल के कृत्रिम रिचार्ज के अलावा मानव की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु किया जा सकता है। वर्षा जल प्रबंधन की विभिन्न आधुनिक तकनीकियाँ वर्तमान में प्रचलित हैं यथा– सीधे ज़मीन के भीतर रिचार्ज रू इस विधि के अंतर्गत भवन परिसर में गड्ढा बनाकर उसमे बालुका, कंकर और बजरी की कई परते एक के उपर एक बिछा दी जाती है, जो वर्षा जल को फिल्टर करने का कार्य करती हैं। तत्पश्चात वर्षा ऋतु में छत पर बहने वाले वाले वर्षा जल को एक पाइप के माध्यम से इस गड्ढे में एकत्र कर लिया जाता है, तथा इस जल को एक पाइप के माध्यम से सीधे भूजल भण्डार में उतार दिया जाता है।

खाईबनाकर रिचार्जिंग: इस विधि के अंतर्गत बड़े संस्थानों के परिसरों में बाउन्ड्री वाल के सहारे बड़ी–बड़ी नालियाँ बनाकर वर्षाजल को ज़मीन के भीतर उतारा जाता है। यह पानी ज़मीन में नीचे पहुँचकर भूजल स्तर संतुलित रखने में सहायता करता है।

कुओं में पानी उतारकर रिचार्जिंग: वर्षाजल को मकानों के ऊपर की छतों से पाइप के द्वारा घर के या पास के किसी कुएँ में उतारा जाता है। इस ढंग से न केवल कुआं रिचार्ज होता है, अपितु कुएँ के माध्यम से पानी ज़मीन के भीतर भी चला जाता है। यह पानी ज़मीन के अन्दर के भूजल स्तर को ऊपर उठाता है।

ट्यूबवेल में पानी उतारकर रिचार्जिंग: भवनों की छत पर वर्षा जल को एकत्र करके एक पाइप के माध्यम से सीधो ट्यूबवेल में उतारा जाता है। इसमें छत से ट्यूबवेल को जोड़ने वाले पाइप के बीच फिल्टर लगाना आवश्यक हो जाता है। इससे ट्यूबवेल का जल हमेशा एक समान बना रहता है।

टैंक में जमा करके रिचार्जिंग: भूजल भण्डार को रिचार्ज करने के अलावा वर्षा जल को टैंक में एकत्र कर अपनी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता है। इस विधि से बरसाती पानी का लम्बे समय तक उपयोग किया जा सकता है।

चित्र में वर्षा जल संचयन के मॉडल को प्रस्तुत किया गया है, जिसमे संकेत 1. के द्वारा वर्षा को, 2. के द्वारा गटर को, 3. के द्वारा अंतर्वाही पाइपलाइन को, 4 के द्वारा फिल्टर को, 5. के द्वारा मोटर को, 6. के द्वारा संचयित जल का उद्यान में उपयोग, 7. के द्वारा संचयित जल का शौचालय में उपयोग, 8. के द्वारा संचयित जल का वाहन धोने में उपयोग, 9. के द्वारा संचयित जल का कपड़े धोने में उपयोग, 10.के द्वारा ओवरफ्लो पाइप को और 11. के द्वारा ओवरफ्लो जल को कुएं के माध्यम से भूमिगत जल में निस्तांतरण को प्रदर्शित किया गया है वर्षा जल संचयन की इस प्रणाली के अंतर्गत वर्षा पूर्व भवन की छत को अच्छी तरह से साफ कर लिया जाता है तत्पश्चात वर्षा ऋतु में वर्षा जल को भवन की छत पर एकत्र कर उसे अंतर्वाही पाइप की मदद से घर के आंगन में स्थापित किए गए फिल्टर टैंक में भेज दिया जाता है। यहां से यह जल भंडारण टैंक में पाइप की सहायता से पहुंचता है–

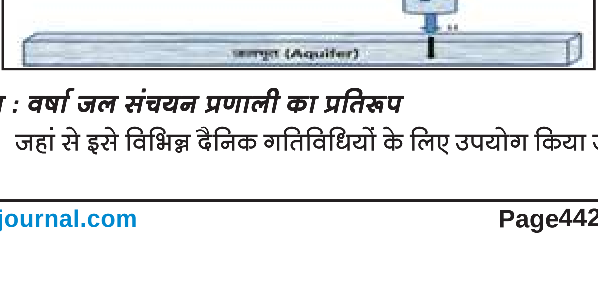

चित्र : वर्षा जल संचयन प्रणाली का प्रतिरूप

जहां से इसे विभिन्न दैनिक गतिविधियों के लिए उपयोग किया जाता

है। भंडारण टैंक में एक मोटर स्थापित की जाती है, जिसकी सहायता से यह जल भवन के अलग-अलग स्थानों पर पाइपलाइन की सहायता से पहुंचाया जाता है। भंडारण टैंक में अतिरिक्त जल को पाइप की माध्यम से भवन परिसर के निकट किसी कुएं अथवा ट्यूबवेल में निष्कासित कर दिया जाता है, जिससे भूमिगत जल का स्तर संतुलित किया जा सके। वर्षा जल संचयन की इस प्रणाली से ना केवल जल की घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकती है, अपितु इस से भू-जल स्तर को संतुलित भी रखा जा सकता है।

उल्लेखनीय है कि वर्षा जल संरक्षण की इन आधुनिक तकनीकों का उपयोग मुख्य रूप से नगरीय क्षेत्रों में ही हो रहा है। उदयपुर नगर में अवस्थित विभिन्न सरकारी कार्यालयों, सरकारी आवासीय परिसरों और अन्य भवनों में इस प्रकार की प्रणालियों को प्रमुख रूप से स्थापित किया गया है। हाल के वर्षों में उदयपुर नगर निगम द्वारा नगरीय क्षेत्रों में नए भवनों को बनाने समय इन तकनीकों के उपयोग को अनिवार्य करने हेतु विभिन्न प्रकार के नियम बनाए हैं, किंतु जनता में जागरूकता का अभाव, वर्षा जल संरक्षण की इन तकनीकों की अधिक लागत और पर्याप्त स्थान का अभाव वर्षा जल संरक्षण की इन आधुनिक तकनीक के उपयोग को सीमित करती है।

निष्कर्ष – राजस्थान में उदयपुर जिला जल स्त्रोतों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यहाँ के अनेक प्राकृतिक एवं कृत्रिम जलाशय न केवल जल की आवश्यकता पूर्ति करते हैं बल्कि ये आर्थिक लाभ के साधन भी बन चुके है। ये जलाशय पर्यटन के महत्वपूर्ण केंद्र बनकर उभरे है जिनसे स्थानीय क्षेत्र में रोजगार के अवसर भी बढ़े है जिससे आर्थिक लाभ प्राप्त हो रहा है। इन जल स्त्रोतों के जल का मुख्य स्त्रोत वर्षा जल ही है, अतः आवश्यक है कि इनका संरक्षण किया जाये। इसके लिए आवश्यक है कि जल संरक्षण में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए सरकार को पर्याप्त प्रयास किये जाने चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. जाट, बी.सी. (2020) जल संसाधन भूगोल, रावत पब्लिकेशन, जयपुर
2. शर्मा, एच. एस. शर्मा, एम. एल. (2016), राजस्थान का भूगोल, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
3. Majid Husain(2020) Agricultural Geography (2nd ed.) Rawat Publication, Jaipur
4. Rainfall Profile of Udaipur, India Meteorological Department, Ministry of Earth Sciences, Government of India
5. hhttp://water.rajasthan.gov.in

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Impact of Covid-19 on Education

Dr. Kiran Yadav*

*Associate Professor, M.B.P. Govt. P.G. College, Ashiyana, Lucknow (U.P.) INDIA

Abstract - The covid-19 pandemic has created the largest disruption of education systems in human history, affecting more than 200 countries, closures of schools, institutions and other learning spaces have impacted more than 94% of the worlds students population. This has brought far reaching changes in all aspects of our lives, social distancing restrictive movement policies have significantly disturbed traditional educational practices. The covid-19 pandemic has provided us with an opportunity to pave the way for introducing digital learning.

Introduction: The global out break of the covid-19 pandemic has spread world wide, affecting almost all countries. The out break was first indentified in December 2019 in Wuhan China. The countries around the world cautioned the public to take responsive care. The Public care strategies have included hand washing, wearing face mask, social distancing and avoiding mass gathering.

The covid-19 pandemic has affected educational system worldwide, leading to the near-total closures of schools, universities and colleges. Most government decided to temporarily close educational institutions in an attempt to reduce the spread of covid-19. School closures impact not only students, teachers and families but have far reaching economic and societal consequences. School closures in response to the Pandemic have shed light on various social and economic issues, including students debt, digital learning food insecurity and homelessness as well as access to child care, health care, housing internet and disability services. The impact was more severe for disadvantaged children and their families, causing interrupted learning compromised nutrition, child care problems, and consequent economic cost to families who could not work.

Impact on formal education: The majority of data collected on the number of students and learners impacted by Covid-19 has been calculated based on the closure of formal education systems. Primary or elementary education typically consists of the first four to seven years of formal education. Kindergarten is the first time children participate in formal education. One study predicted that covid-19 school closures would slow the rate of literacy ability gain by 66% in Kindergarten children in the absence of mitigating alternative educational strategies. The study estimates that over an 8 months period from January to September 2020, assuming school closures from march to September 2020 and taking into account the summer vacation that would have still normally taken place during that time.

The closure of colleges and universities has widespread individual organizational, and learning and teaching implications, for students, faculty, administrators, and the institutions themselves. The initial period of rapid adoption during 2020 contained three primary responses to covid-19: Minimal legal response, delayed commencement of study periods, and rapid digitalization of curriculum. Thoughts about what to make of this situation resulted in optional learning online or in person depending on what the university declared as being mandatory.

Open Education Community Response: Commonwealth of learning created the resource “keeping the doors of learning open”. The project brings together a curated list of resources for policy makers, school and college administrators, teachers, parents and learners that will assist with student learning during the closure of educational institutions. Community contributed open educational Resources for teaching and learning in the covid-19 Era is a co-created spreadsheet of resources. There are multiple tabs on the spreadsheet providing links to student support, online teaching and more.

Conclusion: Covid-19 has impacted immensely to the education sector of India. Though it has created many challenges, various opportunities are also evolved. The Indian Govt. and deferent stakeholders of education have explored the possibility of open and distance learning by adopting different digital technologies to cope up with the present crisis of Covid-19 India is not fully equipped to make education reach all corners of the nation via digital platforms. The students who are not privileged like the others will suffer

due to the present choice of digital platforms. Universities and the government of India are relentlessly trying to come up with a solution to resolve problem. The priority should be to utilize digital technology to create an advantageous position for millions, of young students in India. It is need of the hour for the educational institutions to strengthen their knowledge and information Technology infrastructure to be ready for facing Covid-19 like situations.

References:-

1. Marcotte D.E., Helmelt S.W. Unscheduled school closings and student performance. *Educ Finance Policy.* 2008;3(3):316–338.
2. Kuhfeld M., Soland J., Tarasawa B., et al. Projecting the potential impact of COVID-19 school closures on academic achievement. *Educ Res.* 2020;49(8):549–565.
3. Wolfson J.A., Leung C.W. Food insecurity and COVID-19: disparities in early effects for US Adults. *Nutrients.* 2020;12(6):1648.
4. Yeomans M. Adverse effects of consuming high fat–sugar diets on cognition: Implications for understanding obesity. *Proc Nutr Soc.* 2017;76(4):455–465.
5. Keogh B. Celebrating PL 94-142: the education of All Handicapped Children Act of 1975. *Issues Teach Educ Fall.* 2007;16(2):65–69.
6. Nicolson A.C., Lazo-Pearson J.F., Shandy J. ABA finding its heart during a pandemic: an exploration in social validity. *Behav Anal Pract.* 2020;13:757–766.
7. McGrath J. ADHD and COVID-19: current roadblocks and future opportunities. *Ir J Psychol Med.* 2020;21:1–8.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

परम्परा और साहित्य

डॉ. ओमवती देवी *

* एसो. प्रोफेसर (हिन्दी) दिगम्बर जैन कॉलेज, बड़ौत (बागपत) (उ.प्र.) भारत

प्रस्तावना – परम्परा का शब्दार्थ है एक का दूसरे को, दूसरे का तीसरे को दिया जाने वाला क्रम। हिन्दी कोश के अनुसार परम्परा के विभिन्न शब्दार्थ हैं – 'अविच्छिन्न क्रम चला आता हुआ, अटूट सिलसिला, क्रमबद्ध समूह या पंक्ति, प्रथा, प्रणाली, संतति-वंश- अनुक्रम।'

'श्रीवामन शिवराम आप्टे ने परम्परा शब्द के अर्थ सन्दर्भो को पाँच वर्गों में प्रस्तुत किया है–

(क) अविच्छिन्न श्रृंखला, नियमित सिलसिला

(ख) नियमित वस्तुओं की पंक्ति

(ग) प्रणाली क्रम सुव्यवस्था

(घ) वंश, कुटुम्ब, कुल

(ङ) क्षति, चोट मार डालना।

अंग्रेजी में परम्परा शब्द 'ट्रेडीशन' का पर्याय है और 'ट्रेडोशन' का कोशगत अर्थ ' रीतिरिवाजों, विचारधाराओं, धारणाओं एवं सिद्धान्तों का पुरानी पीढ़ी द्वारा भविष्य की पीढ़ी हेतु प्रतिदान अथवा मौखिक आधार पर भूत की वर्तमान के प्रति सम्प्रेरणा। एक विचार, रीति-रिवाज अथवा धारणा, सिद्धान्तों एवं संचित अनुभवों का एक प्रकार से दूसरी पीढ़ी को दिया जाना।'

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार – 'परम्परा का शब्दार्थ है एक का दूसरे को, दूसरे का तीसरे को दिया जाने वाला क्रम: वह अतीत का समानार्थक नहीं है। परम्परा जीवित प्रक्रिया है, जो अपने परिवेश के संग्रह व त्याग की आवश्यकताओं के अनुरूप निरन्तर क्रियाशील रहती है। कभी-कभी इसे गलत ढंग से अतीत के सभी आचार-विचारों का बोधक मान लिया जाता है।'

ऑक्सफोर्ड इंगलिश डिक्शनरी में 'ट्रेडीशन' में भी इस शब्द को प्रमुखत: सौंपने के अर्थ में ग्रहण किया गया है। 'एन्साइक्लोपीडिया ऑव ब्रिटेनिका' में उन रीति-रिवाजों तथा प्रयत्नों को परम्परा की संज्ञा दी गई है जो किसी संस्कृति, सभ्यता या समाज वर्ग को उसके विचारों को सातत्य और आकार दे सकें।'

गोपाल दत्त सारस्वत के अनुसार 'परम्परा में स्वीकृत विधियों प्रथाओं तथा प्रणालियों का अनुसरण एवं पूर्वकाल से चली आती हुई विचारधाराओं की अभिव्यक्ति होती है। यदि किसी युग के मनुष्यों की कतिपय विचित्र एवं अद्‌भुत बातों को तथा किसी दूसरे समाज से आई हुई अनुकरणमूलक प्रथाओं को छोड़ दें तो सामाजिक जीवन की समग्र बातें परम्परा के क्षेत्र में आ जाती है।'

'परम्परा' एक व्यापक शब्द है और जोवन के प्रत्येक क्षेत्र से इसका सम्बन्ध है। हमारे आचार, व्यवहार, विधि, मान्यताएं एवं भाषा सभी परम्परा के ही अंग हैं। किसी भी समाज, धर्म, संस्था, जाति और यहाँ तक कि राष्ट्र के संगठन में परम्पराओं का बहुत अधिक योगदान होता है। क्योंकि राष्ट्र को एक ऐसी सामाजिक चेतना से बद्ध सामाजिक समूह का नाम दिया जा सकता है जो उसके ऐतिहासिक अतीत के द्वारा जाग्रत रूढ़ियों से निकलती हो और जो एक निश्चित देश से प्रत्यक्ष रूप में सम्बद्ध हो। धर्म के मूल में भी पूर्वकाल से चली आई मान्यताओं और विश्वासों का तत्व निहित रहता है। कुल मिलाकर जीवन के विविध क्षेत्रों में परम्परा का वह तत्व विद्यमान है, जो उन्हें अतीत युग से अनुप्राणित करता आया है। अतीत से प्राप्त यह धारोहर व्यक्ति के आचार व्यवहार एवं विश्वास को एक ऐसा दृढ़ आधार प्रदान करती है जिससे एक समूह के लोगों में समानता और आत्मीयता का भाव स्थापित होता है। यह मनुष्य की एक निजी विशेषता है कि वह एक ही साथ कालजीवी और कालजयी दोनों होता है। वह देशकाल की सीमा में स्वेच्छा से आवद्ध भी है, साथ ही अतीत और भविष्य की ओर अपनी चेतना दृष्टि का विस्तार करके उन्हें वर्तमान में आत्मसात करते हुए अपनी सर्जनात्मकता में कालातीत भी हो जाना चाहता है। मनुष्य काल को जब एक अखण्ड अनुक्रम के रूप में स्वीकार करता है तब काल उसके लिए स्थानबद्ध और संज्ञाबद्ध नहीं रहता। बल्कि वह उसकी संवेदना को विस्तार देता हुआ उसे संकुचित प्रतिबद्धता से मुक्त कर देता है। इस स्थिति में 'वह अनुभव करेगा कि 'अतीत' उसी का नाम है, जो पहले से वर्तमान है, जबकि 'आज' वह है जो वर्तमान होना आरम्भ हुआ है। अतीत और वर्तमान के इस दोहरे अस्तित्व की, उसकी पृथक वर्तमानता और उनकी एकसूत्रता की निरन्तर अनुभूति ही ऐतिहासिक चेतना है, और इस चेतना का अनवरत स्पन्दनशील विकास ही परम्परा का ज्ञान।'

इस प्रकार जब हम परम्परा को अतीत के दाय रूप में समझने एवं परिभाषित करने का प्रयत्न करते हैं तो हमारे सामने कुछ अपरिहार्य प्रश्न उभरते हैं क्योंकि परम्परा मूलत: इस प्रश्न पर आधारित है कि 'अतीत' को हम किस रूप में ग्रहण करते हैं ? अतीत है क्या ? क्या जो बीत गया वही अतीत है ? अथवा अतीत और वर्तमान में कोई सर्जनात्मक सम्बन्ध है ? नि:सन्देह परम्परा के संदर्भ में अतीत केवल 'व्यतीत' का नाम नहीं है बल्कि उसका सम्बन्ध काल की निरन्तरता से है बीता हुआ समय आज का अतीत है तो 'वर्तमान का आज' 'आने वाले कल' का अतीत बनेगा। अत: अतीत की किसी भी मान्यता को यदि आँख मूंदकर हठधर्मिता के साथ स्वीकार किया जाय तो वह रूढ़ि बन जाती है किन्तु जब उसे गतिशीलता व रचनात्मकता के साथ एक अनुभूति, एक मनोदशा या एक दृष्टि के रूप में स्वीकार किया जाय तो परम्परा कहलाती है।

उपर्युक्त सभी कोशों और ग्रंथों में उपलब्ध परम्पराओं के अर्थ एवं परिभाषा सम्बन्धी विवेचन या विचारों का मन्थन करें तो हमें जो सूत्र प्राप्त होते हैं वे इस प्रकार है :

1. परम्परा शब्द संदर्भ सापेक्ष है। इसके विषय में तटस्थ होकर सोचना बहुत कम संभव हो पाया है। एक और पुराणपंथी जब जीवन और सृजन के लिए परम्परा को ही एकमात्र विकल्प घोषित करते हैं और मान्यताओं के सन्दर्भ में हठवादिता दिखलाते हैं तो यहाँ परम्परा का वास्तविक स्वरूप धुंधला होकर रूढ़ि का रूप ले लेता है। वहीं दूसरी ओर आधुनिकतावादियों द्वारा भी नवीन प्रयोगों की पक्षधरता में परम्परा का अनावश्यक अवमूल्यन किया गया। इन दोनों अतिवादों का परिणाम यह हुआ कि परम्परा विषयक अवधारणा स्पष्ट होने के बजाय और धुंधली व अस्पष्ट होती गयी। स्पष्ट है कि परम्परा को परिभाषित करने के लिए हमें वस्तुपरक दृष्टिकोण अपनाना होगा।
2. परम्परा से तात्पर्य उन आदर्श रीतियों प्रवृतियों एवं स्थापनाओं से हैं जो पूर्ववर्ती रचनाकारों से उत्तारवर्ती रचनाकारों को प्राप्त होती चली आई है और जो साहित्य क्षेत्र में स्वीकृत होने से स्वयमेव काव्य में प्रचलित हो गयी हैं। वस्तु, भाव, शीर्षक, चरित्र, तुक, लय, छन्द, रूप, भाषा एवं अप्रस्तुत विधान में इनका अस्तित्व मिलता है।

- परम्परा में मान्यता, विश्वास एवं नैरन्तर्य का आधार होता है।
- परम्परा का सम्बन्ध काल की समग्र अवधारणा में निहित 'अतीत' से है।
- प्राचीन सभ्यता से जो पूर्ण प्रवाह निकल कर आया है तथा जो रचनाकारों की सृजनशीलता का स्रोत बन गया है, वह परम्परा है।
- परम्परा एक धरोहर है।
- कहीं-कहीं परम्परा को जीवन के व्यावहारिक पक्ष से असम्बद्ध मानकर धर्म की सुरक्षा को ही उसका प्रमुख आधार स्वीकार कर लिया गया है।
- साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में अधिकांश विद्वान परम्परा को पीढ़ीगत दाय के अर्थ में ग्रहण करते हैं। सातत्य और पीढ़ीगत संक्रमण को ही शब्दभेद से अधिकांश परिभाषाओं में स्वीकार किया गया है।

इस प्रकार बहुत सी मान्यताएं किसी शास्त्रीय ग्रंथ में प्रतिपादित नहीं होती। इनकी मान्यता गतानुगतिक न्याय से चली आती है। पूर्ववर्ती रचनाकारों ने साहित्य के क्षेत्र में जो पथ परिपाटियाँ, प्रवृत्तियां एवं रीतियां स्थापित कर दी हैं, उन्हें उत्तरवर्ती कवि, साहित्यकार अपने आप ग्रहण कर लेते हैं। अत: इनकी मान्यता व्यवहार के आश्रित है, किसी सिद्धान्त के नहीं। कवि सम्प्रदाय में स्वीकृत हो जाना इनकी प्रथम आवश्यकता है। इसलिए सर्वमान्यता, सर्वसम्मति एवं सर्वस्वीकृति अपेक्षिता है। वस्तुत: साहित्य के क्षेत्र में काव्य-रूढ़ियों (कवि प्रसिद्धियों) का विशाल भंडार है जो कवि समाज में प्रचलित हो जाने के कारण सब के द्वारा स्वीकृत हो चुकी हैं। यहाँ इन काव्य-मान्यताओं के मूल में स्वीकृति व अनुकरण जन्य ग्रहण का भाव हो निहित है।

किसी भी मान्यता के प्रति यह ग्रहणीयभाव और विश्वास जब हठधार्मिता का रूप ले लेता है तो वह रूढ़ि बन जाता है अर्थात ऐसी मान्यताएं या विश्वास जो समाज के लिए उपयोगी सिद्ध नहीं होते फिर भी उनसे चिपके रहने के प्रयास होते रहते हैं, तब परम्परा रूढ़ि का रूप धारण कर लेती है। रूढ़िवादिता में परिवर्तन को गुंजाइश नहीं होती, वह जड़ होती है। जबकि परम्परा को पूर्णत: स्थिर तत्व मानना भूल होगी। परम्परा गतिमयी है, वह पूर्णत: स्थिर नहीं है।

'परम्परा का प्रवाह सरिता का सा प्रवाह है, जिसमें आगे प्रवाहमान होते समय विभिन्न स्रोतों से जल को आत्मसात करने की प्रवृत्ति होती है। रूढ़ि का प्रवाह नहर का है जो अपने दोनों बंधे किनारों में बहने में ही तुष्ट रहा करती है। न तो इसमें नवीनता के प्रति आकर्षण रहता है और न स्फूर्तिदायक सजीवता।' वास्तव में परम्परा मुक्त प्रवाह है, उसमें युगानुरूप बदलने की क्षमता होती है इसीलिए 'जो परम्परा का एक जड़ निष्कर्ष प्रस्तुत कर नए साहित्य को उसी पर परखते हैं, वे गलत राह जाते हैं।

परम्परा की रक्षा जितनी महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण परम्परा का विकास भी है। जब तक साहित्य का सम्बन्ध जीवन और उसकी व्यापकता से रहेगा तब तक काव्य प्रतिभा इन सीमाओं तक नहीं रह सकती। वह पुरानी सीमाएं तोड़ेगी, नयी बनाएगी, नयी से भी आगे नयी सम्भावनाओं की ओर विकसित होगी। अनुप्राणित जीवन का प्रत्येक क्षण उसे नयी अनुभूति देता है। नई प्रेरणा शक्ति देता है। नया स्वर, नयी लय, नए प्रतिबिम्ब, प्रतीक, शब्द और रचना शक्ति का ओज उसमें विकसित होता रहता है। इसलिए प्रतिभा सम्पन्न कलाकार इस परम्परा की रूढ़िवादी व्यंजना को कभी ग्रहण नहीं कर सकते। साहित्य के लिए जीवनन्त परम्परा का ही महत्व है। महाकवि जयशंकर प्रसाद परम्परा की प्रक्रिया का चित्रण करते हुए कहते हैं-

'यह नीड़ मनोहर कृतियों का
यह विश्वकर्म रंग स्थल है,
है परम्परा लग रही यहाँ
ठहरा जिसमें जितना बल है।'

यहाँ प्रसादजी ने परम्परा के गतिशील रूप का ही चित्र प्रस्तुत किया है साथ ही यह भी स्पष्ट किया है कि जिन व्यक्तियों या तत्वों में शक्ति होती है, और जितनी शक्ति होती है, उतने ही काल तक वे अमर रहते हैं। अत: केवल वही परम्पराएं काल में स्थिर हो सकती है जिनमें शक्ति होती है तथा शेष केवल क्षणिक चमत्कार प्रदर्शित कर विलीन हो जाती हैं।

साहित्य की परम्पराओं को ऐतिहासिक क्रम में देखने से कार्य कारण का सम्बन्धा प्रकट होता है क्योंकि अतीत वर्तमान का जनक है। हमारी वर्तमान परिस्थिति पूर्वकालीन परिस्थिति का प्रतिफल है तथा पूर्व की परिस्थिति उससे पूर्व की स्थिति का परिणाम है। कार्य-कारण को यह अखण्ड परम्परा एक महानद की भाँति रचनाकार अपने से पूर्व परम्परा से दाय के रूप में बहुत कुछ प्राप्त करते रहे हैं। परम्परा से विच्छिन्न होकर कोई रचनाकार कुछ भी मूल्य नहीं रखता। टी.एस. इलियट ने भी कहा है-'कोई भी कवि या कलाकार अपने आप में सर्वथा पूर्ण नहीं होता है। प्राचीन युग के कवि या कलाकारों के सम्बन्ध से ही उसके गुण तथा गौरव की सराहना की जाती है। उसकी स्वतंत्र या निरपेक्ष सत्ता का कोई मूल्य नहीं होता। समान या असमान बातों में पुराने कवियों के साथ उसकी तुलना करने से ही उसका विशेषत्व प्रकट होता है। साहित्य में परम्परा का जड़ रूप जो कि रूढ़ि बन जाता है, ग्राह्य नहीं हो सकता।

इसीलिए नए रचनाकार पुरानी परम्पराओं को नए रूप में ग्रहण करते हैं। उनकी विकृति को दूर करके नए रंग, नए रूप तथा नयी छवियों में उनकी प्राण प्रतिष्ठा करते है। परम्पराओं की इस प्रयोगशीलता में ही आधुनिकता का अंकुर फूटता है। यदि ग्रहीता ने इतिहासबोध की प्रक्रिया से जूझना सीख लिया है तो वह परम्परा का ग्रहण अपने विवेक के मानदण्ड पर करेगा।

निष्कर्षत: यद्यपि ऊपरी तौर पर ऐसा लगता है कि परम्परा अब तक के सभी आचार-विचारों का एक जमाव है। सभी पुरानी बातें परम्परा कह दी जाती है,

जबकि सत्य यह है कि परम्परा भी एक गतिशील प्रक्रिया की देन है। हमने अपनी पिछली पीढ़ी से जो कुछ प्राप्त किया है, वह समूचे अतीत की पुंजीभूत विचार राशि नहीं है। सदा नए परिवेश में कुछ पुरानी बातें छोड़ दी जाती है और नयी बातें जोड़ दो जाती है। एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को हू-ब-हू वहीं नहीं देती जो अपनी पूर्ववर्ती पीढ़ी से प्राप्त करती है, कुछ न कुछ छटता रहता है, बदलता रहता है। यह निरन्तर चलते रहने वाली प्रक्रिया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. बृहत्त हिन्दी कोश, स. कालिका प्रसाद, पृ. 440, ज्ञानमण्डल लिमिटिड वाराणसी, संवत् 2020
2. संस्कृत हिन्दी कोश, वी.एस.आप्टे, पृ. 577-78
3. Tradition according to the Dictionary is the handing down of customs, opinions deeforsiones from ancestors to posterity from past to the present to by oral communities an opinion, custom or doctrine thus handed down principles or accumulated experiences earliers generation handed on to the others stage Direction (Tradition. style & theatre) - John Gielgard, P. 104
4. 'सामंजस्य की खोज, परम्परा और आधुनिकता' लेख, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, धर्मयुग - 28 सितम्बर 1969, पृ.12
5. The Oxford English Dictionary, Vol. X, T-U.P. 226
6. Engyclopeadia of Britanica, Vol. X,P.84
7. आधुनिक हिन्दी काव्य में परम्परा तथा प्रयोग, गोपालदत्त सारस्वत, पृ. 1, सरस्वती प्रकाशन मंदिर इलाहाबाद, प्रथम संस्करण
8. अज्ञेय, त्रिशंकु, पृ. 34-35, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली
9. "The Word Tradition' means etymologically, `handing over the conception of tradition, therefore, implies (a) `deposit' which handed over and (b) `depositiaries' ie. persons who are in possession of the deposit, and are commissioned to preserve it and transmit it to successors' - Encyclopedia of Religion and Ethics, Vol. XII, P. 411.
10. Encylopedia of social sciences, Vol. XV. P. 63
11. प्रयोगवादी काव्य, पवन कुमार मिश्र, पृ. 21, हिन्दी अकादमी भोपाल, मध्यप्रदेश , 1977
12. नयी कविता का स्वरुप विकास, श्यामसुन्दर घोष, पृ. 16
13. कामायनी, जयशंकर प्रसाद, कामसर्ग, पृ. 75, भारती भण्डार, इलाहाबाद, सम्वत् 2003
14. सेलेक्टेट प्रोज (पेंग्विन) टी.एस. इलियट, पृ. 23

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

On CR- Structure and F- Structure Satisfying $F^{p_1 p_2} + F = 0$

Lakhan Singh*

*Department of Mathematics, D.J. College, Baraut, Baghpat (U.P.) INDIA

Abstract - In this paper we have studied a relationship between CR- structure and F- structure satisfying $F^{p_1 p_2} + F = 0$. Where p_1 and p_2 are twin primes. Nijenhuis tensor and integrability conditions have also been discussed.

Keywords- Projection operators, Distributions, Nijenhuis tensor, Integrability condition and CR-structure.

Introduction - Let M be a differentiable manifold of class C¥. Let F be a non-zero tensor of type (1,1) and class C^{∞} defined on M such that

(1.1) $F^{p_1 p_2} + F = 0$.where p_1 and p_2 are twin primes.

Let rank((F)) = r, which is constant everywhere. We defined the operators on M as

(1.2) $l = -F^{p_1 p_2 -1}$, $m = F^{p_1 p_2 -1} + I$

Where I is the identity operator on M.

Theorem(1.1) Let M be an F-structure satisfying (1.1) then

(1.3) (a) $l + m = I$

(b) $l^2 = l$

(c) $m^2 = m$

(d) $lm = ml = 0$

Proof From (1.1) and (1.2) we get the results.

Let D_l and D_m be the complementary distributions corresponding to the operators l and m respectively . then $dim((D_l)) = r$, $dim((D_m)) = n-r$

Theorem (1.2) Let M be an F-structure satisfying (1.1) then

(1.4) (a) $lF = Fl = F$, $mF = mF = 0$

(b) $F^{p_1 p_2 -1} l = -l$, $F^{p_1 p_2 -1} m = 0$

Proof : Using (1.1), (1.2) , (1.3) (a)(b) we get the results.

From (1.4)(b), it is clear that $F^{(p_1 p_2 -1)/2}$ acts on D_l as an almost complex structure and on D_m as a null operator.

2. Nijenhuis tensor.

Let X and Y be any two vector fields on M , then their Lie bracket [X,Y] is defined by

(2.1) $[X,Y] = XY - YX$

And Nijenhuis tensor $N[X,Y]$ of F is defined as

(2.2) $N(X, Y) = [FX, FY] - F[FX, Y] - F[X, FY] + F^2[X,Y]$

Theorem (2.1) : A necessary and sufficient condition for the F- structure to be integrable is $N(X,Y) = 0$, for any two vector fields X and Y on M.

Theorem(2.2): Let F-structure satisfying (1.1) be integrable , then

(2.3) $(-F^{p_1 p_2 -2})([FX, FY] + F^2[X,Y]) = l([FX, Y] + [X,FY])$

Proof : using theorem (2.1) in (2.2), we get

(2.4) $[FX, FY] + F^2[X,Y] = F([FX,Y] + [X,FY])$

Operating by $(-F^{p_1 p_2 -2})$ on both the sides of (2.4) and using (1.2), we get the results.

Theorem (2.3) : on the F-structure satisfying (1.1)

(2.5) (a) $m\,N(X,Y) = m\,[FX,FY]$

(b) $m\,N(F^{p_1 p_2 -2}X, Y) = m[F^{p_1 p_2 -1}X, FY]$

Proof : operating m on both sides of (2.2) and using (1.4) (a) we get (2.5)(a). Replacing X by $F^{p_1 p_2 -2}X$ in (2.5)(b).

Theorem (2.4) : on the F-structure satisfying (1.1), the following conditions are all equivalent

(2.6)(a) $mN(X,Y) = 0$

(b) $m[FX,FY] = 0$

(c) $mN(F^{p_1 p_2 -2} X, Y) = 0$

(d) $m\,[F^{p_1 p_2 -1}X, FY] = 0$

(e) $m[F^{p_1 p_2 -1}lX, FY] = 0$

Proof : using (1.4) (a), (b) in (2.5)(a), (b) we get the results.

3.CR – Structure

Let T_c (M) denotes the complexified tangent bundle of the differentiable manifold M . A CR- structure on M is a complex sub -bundle H of T_c (M) such that

(3.1) (a) $H_p \cap H_p = \{0\}$

(b) H is involutive that is $X, Y \in H \Rightarrow [X,Y]$ H for complex vector fields X and Y.

For the integrable F- structure satisfying (1.1) rank ((F)) = r = 2m on M.

We define

(3.2) $H_p = \{X - \sqrt{-1}FX : X \quad X(D_l)\}$

Where $X(D_l)$ is the $F(D_m)$ module of all differentiable sections of D_l.

Theorem (3.1) if P and Q are two elements of H, then

(3.3) $[P,Q] = [X,Y] - [FX,FY] - \sqrt{-1}\,(-1)([FX,Y] + [X,FY])$.

Proof : defining $P = X - \sqrt{}1\,(-1)FX$, $Q = Y - \sqrt{-1}\,(-1)FY$ and simplifying , we get (3.3)

Theorem (3.2) : for $X, Y, \in X(D_l)$

(3.4) $l([FX,Y] + [X,FY]) = [FX,Y] + [X,FY]$

Proof : using (1.4) (a) and (2.1), we get the results as

(3.5) $l([FX,Y] + [X,FY]) = l\,(FXY - YFX + XFY - FYX)$

$= FXY - YFX + XFY - FYX$

$= [FX,Y] + [X,FY]$

Theorem (3.3) : the integrable F- structure satisfying (1.1) on M defines a CR – structure H on it such that

(3.6) $R_e(H) = D_l$

Proof : since $[X,FY], [FX,Y] \in X\,(D_l)$ then from (3.3), (3.4), we get

(3.7) $l[P,Q] = [P,Q]$

$\Rightarrow [P,Q] \in X\,(D_l)$

Thus F structure satisfying (1.1) , defines a CR- structure on M.

Definition (3.2) Let K be the complementary distribution of $R_e(H)$ to TM. We define a morphism $F : TM \to TM$, given by $F(X) = 0, \forall X \in X\,(K)$ such that

(3.8) $F(X) = \sqrt{-1}(-1)(P - P)$

Where $P = X + \sqrt{-1}(-1)\,Y\ X\,(H_P)$ and P is complex conjugate of P.

Corollary (3.1) : from (3.8) we get

(3.9) $F^2X = -X$

Theorem (3.4) : if M has CR- structure then $F^{p_1 p_2} + F = 0$ and consequently F- structure satisfying (1.1) is defined on M such that D_l and D_m concide with $R_e(H)$ and K respectively.

Proof : since p_1 and p_2 are twin primes of the form 4K+3 , where K is a positive integer , thus by repeated application of (3.9) gives ,

$F^{p_1 p_2} = F^3(X)$

$= F(F^2X)$

$= F(-X)$

Thus , $F^{p_1 p_2} + F = 0$

References:-

1. Bejancu , A, CR-submanifolds of a Kaehler Manifold I, proc. Amer. Math. Soc ., 69,135-143(1978).
2. Demetropoulou-Psomopoulou, D. and Andreou, F. Gouli, On Necessary and sufficient conditions for an N-Dimensional Manifold to admit a Tensor Field f(0) of type (1,1) satisfying) $f^{2v+3} + f = 0$ Tensor (N.S.), 42,252-257(1985)
3. Blair, D.E. and Chen , B.Y., On CR- submanifolds of Hermitian Manifolds . Israel Journal of Mathematics ,34(4),353-363(1979).
4. Goldberg, S.I. and Yano,K., On normal globally framed f- manifolds . Tohoku Math., I. 22,362-370(1970).
5. Goldberg, S.I., On the Existance of Manifold with an F-structure . Tensor (N.S.),26,323-329(1972).
6. Upadhyay, M.D. and Gupta, V.C. Integrability conditions of a structure f_λ satisfying $f^3 + \lambda^2 f = 0$, publications mathematics , 24(3-4),249-255(1977).
7. Yano, K., On structure defined by a tensor Reid f of type (1,1) satisfying $f^3 + f = 0$, Tensor (N.S.) 14,99-109(1963)
8. Yano, K. and Kon, M., Differential geometry of CR-submanifolds ,Geometriate Dedicala.10, 369-391(1981).
9. Das , L.S., Nivas, R. and Singh , A. On CR-structures and F-structures satisfying $F^{4n} + F^{4n-1} \ldots\ldots + F^2 + F = 0$, Tesor N.S.70.255-260(2008).
10. Das , L.S., On CR-structure and F(2K+1.1)- structure satisfying $F^{2k+1} + F = 0$, JTSI, India. 22,1-7(2004).
11. Lakhan Singh : on the cyclic group related to the F - structure equation $\sum_{k=1}^{p} F^k = 0$. Naveen shodh sansar oct to Dec 2020. E - journal vol I , Issue XXXII , ISSN 2320 – 8767.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Host Specificity Tests for *Zygogramma Bicolorata* on Some Indigenous and Economically Important Flora Species, Closely Related to *Parthenium Hysterophorus*

Dr. Neeta Sharma*

***Ph. D, Govt. College, Kota (Raj.) INDIA**

Introduction - *P.hysterophorus*, a drought resistant plant can grow in almost all soil types; but is particularly successful on vertisols (Towers, 1992 and Karim, 2012). Firstly, it is a highly adaptable weed and can grow anywhere, invade all types of pasture lands and causes substantive losses in the yield of agriculture (Qureshi *et al*., 1980). Secondly it creates health hazards to livelihood (Trounce and Gray, 2004). The neotropical weed *Parthenium hysterophorus* (Asteraceae) is one of the top 10 notorious weeds in India (Joshi, 1991; Navie *et al*., 1996 and Annapurna and Singh, 2003). *Parthenium* weed is known to be allelopathic (Belgeri *et al*., 2012) with root and shoot leachetes capable of reducing growth or germination of numerous crops. A revolution for the control of *Parthenium* has been achieved through a beetle *Zygogramma bicolorata* Pallister which is an effective bio-control agent of *P. hysterophorus* (Jayanth and Visalakashy, 1994; Jayanth and Bali, 1995; McClay *et al*., 1995; Sushilkumar and Bhan, 1995). The practice of host specificity testing has benefited much from such basic studies but we can continue to tune testing methodology by applying the latest information and concepts (Withers, 1997; Driesche *et al*., 1999; Klinken, 1999; McFadyen and Heard, 1999; Sands *et al.,* 1999; Tallamy, 1999; Futuymma, 2000; Withers *et al*., 2000 and 2009; Sushilkumar and Ray, 2010 and McConnachie, 2015). During the present research work for testing of feeding behavior of *Zygogramma* bicolorata (both adults and instars) a host specificity test was carried out in the experiments.

Material And Method: Host specificity tests in laboratory conditions (Feeding preference of *Z. bicolorata* on different hosts in laboratory conditions):

The present investigation on the feeding preference of larvae and adults of test insect *Z. bicolorata* on different hosts (11 selected species) were carried out under laboratory conditions. *Oryza sativa, Vigna radita, Vigna mungo, Abelmoschus esculentus, Zea mays, Sorghum bicolor, Glycine max, Thevetia peruviana, Tagetes erecta, Helianthus petiolaris* and *Parthenium hysterophorus* as some host plants were taken for feeding preference of host insect. The equipments and materials used were digital balance, plastic containers of 11*14 cm (for 1st instars) and 15*10 cm (for 2nd, 3rd, 4th instars) with a lid having plastic mesh windows. 1st, 2nd, 3rd, 4th instars and adults *(Z. bicolorata)* were transferred to plastic containers for recording the observations on feeding potential of *Z. bicolorata* beetles. 5 plastic containers were taken. In each container ten numbers of different stages of *Zygogramma* were transferred, offering fresh leaves (weight 1000 mg) of host plants (HP1 - HP11) to mexican beetle. Extra weights of leaves were cut by scissors (The twigs were 42 placed in water containing Petri dish for keeping them fresh). The experiments were set up for 48 hours.

Observation: Host specificity tests in laboratory conditions (Food preference by the instars and adult *Z. bicolorata* in laboratory conditions):

For testing food preference of *Zygogramma bicolorata* (adults and instars) verities of leaves were offered to the *Z. bicolorata* e.g. *Oryza sativa, Vigna radiata, Vigna mungo, Abelmoschus esculentus, Zea mays, Sorghum bicolor, Glycine max, Thevetia peruviana, Tagetes erecta, Helianthus petiolaris* and *Parthenium hysterophorus.* But in the observations report feeding behavior was reported only on *Parthenium hysterophorus* leaves by *Zygogramma bicolorata* (adults and instars) and no other host plants leaves were damaged by the beetle. During observation containers containing different stages of *Z. bicolorata* fed voraciously on *Parthenium* but maximum food was consumed by 3rd instars, which was followed by 4th instars and then feeding behavior was shown by 2nd instars while the adults consumed the least food (*Parthenium* leaves). Observations indicated that *Z. bicolorata* show host specificity towards *Parthenium* plants only and specially its leaves.

Observation Table:
(see in last page)

Results and discussion: Food preference by the instars and adult *Z. bicolorata* in laboratory conditions: During present investigations, it was found that HP11 (Here HP means host plant) – *Parthenium* was the most preferred host food of *Zygogramma bicolorata* in comparison to other plants (HP1 – HP10). The maximum food (*Parthenium*) was consumed by 3rd instars (991.196 mg/ day/ 10individual) followed by 4th instars (971.889 mg/ day/ 10indi.), 2nd instars (944.152 mg /day/ 10indi.), 1st instars (928.068 mg/ day/ 10indi.) and adults (870.07 mg/ day/ 10indi.) respectively. HP1 - *Oryza sativa* (0.00 mg/ day/ 10indi.), HP2 - *Vigna radita* (0.00 mg/ day/ 10indi.), HP3 - *Vigna mungo* (0.00 mg/ day/10indi.), HP4 - *Abelmoschus esculentus* (0.00 mg/ day/ 10indi.), HP5 - *Zea mays* (0.00 mg/ day/ 10indi.), HP6 - *Sorghum bicolor* (0.00mg/day/10indi.), HP7 - Glycine max (0.00 mg/ day/ 10indi.), HP8 - Thevetia peruviana (0.00 mg/ day/ 10indi.), HP9 - *Tagetes erecta* (0.00 mg/ day/ 10indi.) and HP10 - *Helianthus petiolaris* (0.00 mg/ day/ 10indi.) were the non preferred plants for *Zygogramma bicolorata*. Bhumannaver and Balasubramanian (1998) reported the consumption and food utilization of 1st instar 2.67 ± 0.48 mg/ day/ individual, 2nd instar 5.08 ± 0.28 mg/ day/ indi, 3rd instar 11.01 ± 5.81 mg / day/ indi., 4th instar 8.10 ± 0.38 mg /day/ indi., and adult 0.37 ± 0.00 mg/ day/ indi., respectively, in their study. However, the similar results were found in the present research work where maximum food was consumed by 3rd instars, followed by 4th instars, 2nd instars, 1st instars and adult (*Z. bicolorata*). Malkapure *et al* (2012) mentioned that, there were different host plants tested for feeding preference of *Z. bicolorata* and other plants may be stated as non-preferred hosts. The maximum food was consumed by 3rd instar (111.93 mg/ day/ individual) followed by 4th (72.84 mg/ day/ indi.), 2nd instar (56.63 mg/day/indi.), 1st instar (28.11 mg/ day/ indi.) and adult beetles (7.80 mg / day/ indi.), respectively. From above discussions the present study also showed maximum food consumed by 3rd instars (991.196 mg/ day/ 10 indi.) which was important instar for consuming *Parthenium* and defoliation of this invasive weed, followed by 4th instars (971.889 mg/ day/ 10 indi.), 2nd instars (944.152 mg/ day/ 10 indi.), 1st instars (928.068 mg/ day/ 10 indi.) and adult beetles (870.07 mg/ day/ 10 indi.) respectively.

Conclusion: Defoliation by the beetle was also found to reduce flower production by the weed, besides encouraging the growth of other vegetation which were formerly suppressed by *Parthenium*. Fundamental host range, which represents the absolute limits of the insect's host specificity, is described first for aspects of the insect's life history that need to be host specific. If non- target species are included, prediction can be made as to whether non-target species within the fundamental host range will indeed be attacked in the field. It acknowledges that fundamental host range can be described for any aspect of an insect's life history where the insect interacts with plants.

References :-

1. Annapurna, C. and Singh, T. S. 2003. Variation of *Parthenium* hysterophorus in response to soil quality: Implications for invasiveness. Weed research. 43(3): 190-198.
2. Belgeri, M.A.; Navie, C. S. and Adkins, W. S. 2012. Screening *Parthenium* weed (*Parthenium hysterophorus* L.) Seedlings for their Allopathic Potential. Pak. J. Weed Sci. Res. 18: 727-731.
3. Bhumannavar, B. and Balasubramanian, C. 1998. Food consumption and utilization by the mexican beetle, *Zygogramma bicolorata* Pallister (Coleoptera: Chrysomelidae) on *Parthenium hysterophorus* Linnaeus. *Biological control*. 12: 19-23.
4. Driesche, V. R.; Heard, A. T.; McClay, A. and Reardon, R. 1999. Technique of host specificity. *Host Specificity Testing of Exotic Arthropod Biological Control Agents. The Biological Basis for Improvement in Safety*. *Proceeding: International Symposium on Biological control of weeds:* 1-100.
5. Futuyma, J. D. 2000. Potential evaluation of Host Range in Herbivorous Insects. *Proceedings: Host Specificity Testing of Exotic Arthropod Biological Control Agents: The Biological Basis for Improvement in Safety:* 42-53.
6. Jayanth, K. P. and Bali, G. 1993. Effect of some commonly used weedicides on *Parthenium* beetles *Zygogramma bicolorata* Pallister (Coleoptera: Chrysomelidae). *Abstract Journal of Biological Control*. 7(1): 53-50.
7. Jayanth, K. P. and Bali, G. 1995. Effect of soil, moisture on population and adult emergence of *Z. bicolorata* Pallister. *Journal of Entomology Research*. 19(2): 183-185.
8. Jayanth, K. P and Visalakshy, G. P. N. 1994. Field evaluation of Sunflower varieties for Susceptibility to the *Parthenium* beetle *Zygogramma bicolorata*. *Abstract Journal of biological control*. 8(1): 402.
9. Joshi, S. 1991. Biocontrol of *Parthenium hysterophorus* L. *Crop Protection*. 10(6): 429-431.
10. Karim, S. 2012. Impacts of *Parthenium* weed on human health, livestock production & environment. *Proceeding* of *Seminar at West Virginia University:* 1-5.
11. Klinken, D. R. 1999. Host specificity Testing: Why Do We Do It and How Can Do It Better. *Proceeding: Host Specificity Testing of Exotic Arthropod Biological Control Agents: The Biological Basis for Improvement in Safety:* 54-68.
12. McClay, S. A.; Palmer, A. W.; Bennet, D. F. and Pullen, R. K. 1995. Phytophagous Arthropods Associated with *Parthenium hysterophorus* (Asteraceae) in North America. *Env. Entomology*. 24(4): 796-809.
13. McConnachie, J. A. 2015. Host range and risk assessment of *Zygogramma bicolorata*, a defoliation agent released in South Africa for the biological control of *Parthenium hysterophorus*. *Bio-control Sciences and Technology*. 25(9): 975-991.

14. McFadyen, R. E. and Heard, A. T. 1999. Decision Making Based on Host Range Tests. *Proceeding: Host specificity, Testing of Exotic Arthropoda Biological control Agents: The Biological Basis for Improvement in Safety*: 83-88.
15. Navie, S. C.; McFadyen, R. E.; Panetta, F. D. and Adkins, S.W. 1996. The biology of Australian weed. *Parthenium hysterophorus* L. *Plant Protection Quarterly*. 11:76-88.
16. Qureshi, M. L.; Vadlamudi, V. P. and Wagh, K. R. 1980. A study on sub acute toxicity of *Parthenium hysterophorus* Linn. In goats. *Livestock Adviser.* 5(12): 39-40.
17. Sands, P. D. and Driesche, G. R. 1999. Evaluating the Host Range of Agents for Biological Control of Arthropod: Rational, Methodology and Interpretation. *Proceeding: Host Specificity Testing of Exotic Arthropod Biological Control Agents: The Biological Basis for Improvement in Safety:* 69-82.
18. Suhilkumar and Bhan, V. M. 1995. *Parthenium* control by insects in India: retrospects and prospects. *Journal of Applied Zooogical Research*. 6: 109-112.
19. Sushilkumar and Ray, P. 2010. Activity enhancement of *Zygogramma bicolorata* biocontrol agent of *Parthenium hysterophorus*, temperature regulated diapause aversion. *Biocontrol Science and Technology*. 20(9): 903-908.
20. Tallamy, W. D. 1999. Physiological Issues in host range Expansion. *Proceeding: Host Specificity Testing of Exotic Arthropod Biological Control Agents: The Biological Basis for Improvement in Safety*: 11-26.
21. Towers, G. and Rao, P. 1992. Impact of the tropical weed, *Parthenium hysterophorus* L. on human affairs. *Proceeding of the first International Weed control congress grass*: 134-138.
22. Trounce, B. and Gray, P. 2004. *Parthenium* weed. *Ag. Fact fifth edition*: 1-4.
23. Withers, T. 1997. Changes in plant Attack Overtime in No-choice Tests: An Indicator of Specificity. *Proc. 50th N.Z. Plant Protection Conference*: 214 -217.
24. Withers, T.; Browne, B. L. and Stanley, J. 2000. How Time - Dependent Process can affect the Outcome of Assays. *Proceedings: Host Specificity Testing of Exotic Arthropoda Biological Control Agents: The Biological Basis for Improvement in Safety:* 27-41.
25. Withers, T.; Christensen, J. and Burwell, C. 2009. *Erixestus Zygogramma* & *Grissel* (Hymenoptera: Pteromalidae): An exotic egg parasitoid of *Zygogramma bicolorata* Pallister (Coleoptera: Chrysomelidae) in Australia. *Australian Journal of Entamology*. 37(1): 83-84.

Observation Table: Mean weight of consumed food by the instars and adult *Z. bicolorata*

Host plants (HP)	Weight of fresh food offered (mg)	Weight of consumed food (mg/day/10 individual)				
		1st instars	2nd instars	3rd instars	4th instars	Adults
HP1*Orya sativa*Leaves	1000 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg
HP2*Vigna radiata*Leaves	1000 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg
HP3*Vigna mungo*Leaves	1000 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg
HP4*Abelmoschus esculentus*Leaves	1000 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg
HP5*Zea mays leaves*	1000 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg
HP6*Sorghum bicolor* leaves	1000 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg
HP7*Glycine max*Leaves	1000 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg
HP8*Thevetia peruviana*Leaves	1000 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg
HP9*Tagetes erecta*Leaves	1000 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg
HP10*Helianthus petiolaris* Leaves	1000 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg	0.00 mg
HP11*Parthenium hysterophorus* Leaves	1000 mg	928.068 mg	944.152 mg	991.196 mg	971.889 mg	870.07 mg

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

हरियाणा में पारिस्थितिकी पर्यटन: समस्याएं व समाधान

डॉ. मुकेश कुमार *

* एसोसिएट प्राफेसर (भूगोल विभाग) हरद्वारी लाल गोयल राजकीय महाविद्यालय, तावडू, जिला नूह, हरियाणा (भारत)

शोध सारांश – संभवत: पर्यटन विश्व का प्रारम्भिक कार्य रहा है। अपने कौतुहल को शांत करने व अन्य विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मानव प्राचीन युगों से ही विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा करता रहा है। इसी महत्व के कारण इतिहास में 15 वीं व 16 वीं शताब्दी को खोज युग के नाम से जाना जाता है। परन्तु इन भ्रमणों के दौरान मानव के अमर्यादित आचरण व प्रकृति से खिलवाड़ ने वर्तमान में पारितन्त्र के समक्ष बड़े खतरे उत्पन्न कर दिए हैं। भारत देश का उत्तरी राज्य हरियाणा पर्यटन की असीम संभावनाएं रखता है। इसके पर्यटन स्थलों में ऐतिहासिक, धार्मिक व प्राकृतिक पर्यटक स्थलों की भरमार है। प्रस्तुत शोधपत्र में प्राथमिक व द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों की सहायता से हरियाणा राज्य के इन्ही पर्यटक स्थलों के खतरों को पहचानने व उनके उचित समाधान प्रदान करने के प्रयास किए गए हैं।

प्रस्तावना – वह व्यक्ति जो स्वेच्छा से किसी भी पर्यटन स्थल की यात्रा अपने नियोजित संमय के अनुसार करता है, पर्यटक कहलाता है। परिवहन व सूचना तकनीकी विकास के कारण आज प्रकृति के दुर्गम व निर्जन प्रदेश भी मानव पंहुच मे आ चुके हैं। मानव की प्रकृति के प्रत्येक पहलू के अवलोकन व अनुभव कर लेने की लालसा ने पर्यटन व्यवसाय को जन्म दिया तथा इस व्यवसाय को विश्व का सबसे प्रमुख व्यवसाय बना दिया है। यहां तक की वर्तमान समय में कुछ देशों की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था पूर्णत: पर्यटन व्यवसाय पर ही अश्रित है। मानव की पृथ्वी के प्रत्येक भाग को स्वयं देख कर अनुभव कर लेने की इसी लालसा ने प्रकृति के समक्ष कुछ समस्याएं उत्पन्न कर दी हैं जिससे इस धरा पर जैविक अस्तित्व को बचाए रखने सम्बंधी अनेकों प्रश्न खडे हो गए हैं। जिनमें प्रमुख निम्नवत् हैं-

1. अनियन्त्रित जल संसाधन दोहन
2. प्रदूषण
3. वनोन्मूलन
4. कचरा निपटान
5. जैव विविधता का विनाश
6. सांस्कृतिक गठबंधन में बिखराव

आज आवश्यकता है कि पर्यटन व्यवसाय के पर्यावरणीय प्रभावों का गहनता से अध्ययन किया जाए। पर्यटक तथा पर्यटन व्यवसाय से जुड़े लोग पारिस्थितिकी पर्यटन जैसी संकल्पना पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान केन्द्रित करें।

अध्ययन क्षेत्र – भारत के उत्तरी भाग में स्थित हरियाणा राज्य $27^{0}39'$ उत्तरी अक्षांश से $30^{0}55'$ उत्तरी अक्षांश तक तथा $74^{0}8'$ पूर्वी देशान्तर से $77^{0}36'$ पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है। यह राज्य कुल 44212 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल रखता है। जो भारत में कुल क्षेत्रफल का 1.34 प्रतिशत है। यह राज्य राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के समीप स्थित है। सम्पूर्ण हरियाणा राज्य भूगर्भिक इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण समय अभिनूतन काल के दौरान निर्मित सिंधु गंगा के जल विभाजक के रूप में पहचाना जाता है। हरियाणा का 93.7 प्रतिशत भू-भाग समतल व सामान्य तरंगित जलौढ मैदानी प्रदेश है, जो कि सामान्यत: घग्घर-यमुना मैदान के नाम से जाना जाता है।

इसकी सर्वाधिक उंचाई इस राज्य के उत्तरी जिले पंचकूला के समीप है। जहाँ नवीनतम शिवालिक पर्वत श्रेणी का विस्तार है। शनै-शनै इस जल विभाजक का ढाल यमुना नदी के साथ-साथ दक्षिण-पश्चिम की ओर कम होता जाता है। हरियाणा राज्य के दक्षिणी जिलों में प्राचीनतम पर्वत श्रेणी अरावली की अवशिष्ट पहाडियाँ पाई जाती हैं। हरियाणा की पूर्वी सीमा के साथ-साथ यमुना नदी प्रवाहित होती है। यहाँ की साहिबी, सरस्वती व इन्दौरी जैसी बरसाती नदियाँ अब लुप्त हो चुकी हैं। भारत के कम वर्षा वाले राज्यों में माना जाने वाला यह राज्य औसतन 700 मि.मी. वर्षा प्राप्त करता है। यहाँ न तो अरब सागर की मानसून पवनें पर्याप्त वर्षा कर पाती है, न ही बंगाल की खाड़ी की। इन दोनों के सम्मिलित प्रभाव के कारण ही यहाँ हल्की वर्षा प्राप्त हो जाती है। अगस्त महीना सर्वाधिक वर्षा वाला महीना है। शीतकाल में यह क्षेत्र पश्चिमी विक्षोभों से नवम्बर, दिसम्बर मास में अल्प वर्षा प्राप्त करता है। यहाँ पर वार्षिक ताप परिसर शीत ऋतु में 30 से ग्रीष्म ऋतु में 470 तक पाया जाता है। मई-जून के माह में लू नामक उष्ण व शुष्क पवनें चलती हैं। जिनके

कारण इन पवनों के प्रवाह क्षेत्र मुख्यत: दक्षिण-पश्चिमी भाग में वाष्पीकरण की दर तीव्र हो जाती है। डॉ0 जसवीर सिंह ने अपनी पुस्तक 'हरियाणा का कृषि भूगोल' में हरियाणा राज्य को 8 मुख्य भू-आकृतिक भागों में बाँटा है।

हरियाणा राज्य एक कृषि प्रधान राज्य है। जो प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से कृषि पर ही निर्भर है। यहाँ की जलवायु सामान्यत: अर्ध-उष्ण महाद्वीपीय प्रकार की मानसूनी प्रकृति रखती है। यहाँ का 93.7 प्रतिशत भाग समतल मैदानी है। यहाँ वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 65.2 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ कुल जनसंख्या 2.53 करोड तथा जनसंख्या धनत्व 573 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है।

शोध उद्देश्य:

1. हरियाणा के प्रमुख पर्यटन क्षेत्रों की पहचान करना।
2. पर्यटन स्थलों का उचित वर्गीकरण करना।
3. पर्यटन क्षेत्रों से जुड़ी समस्याओं की पहचान करना तथा उनके समाधान तलाशना।

विधितन्त्र एवं आंकड़ा स्त्रोत – इस अध्ययन में आंकड़ा संग्रह के लिए द्वितीयक व प्राथमिक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया गया है। द्वितीयक आंकड़े मुख्यत: पर्यटन मंत्रालय, हरियाणा तथा पर्यटन मंत्रालय विभाग, भारत सरकार द्वारा उपलब्ध सूचनाओं पर आधारित हैं। इनके अतिरिक्त द्वितीयक आंकड़ों अनेक अन्य उपलब्ध प्रकाशित शोधपत्रों, पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों तथा विभिन्न विभागों की वेबसाईटों से प्राप्त किए गए हैं। प्राथमिक आंकड़े मुख्यत: क्षेत्रीय भ्रमण सें प्रत्यक्ष अनुभव (अवलोकन विधि) व अप्रत्यक्ष मौखिक साक्षात्कार द्वारा प्राप्त किए गए हैं।

विश्लेषण – एक जिम्मेदारी से भरा पर्यटन जो पर्यावरण का संरक्षण करता है व स्थानीय लोगों के सुख-कल्याण को बढावा देता हो, पारिस्थितिकी पर्यटन कहलाता है। इसकी संकल्पना सन 1970 में पर्यावरण आन्दोलन के समय सतत पोषणीय पर्यटन के रूप में विश्व के समक्ष आई। 20 वीं शताब्दी के उतरार्द्ध में पर्यटन भूगोल के अन्तर्गत पारिस्थितिकी पर्यटन की संकल्पना ने जन्म लिया। इसके समकक्ष ही कुछ अन्य विचारधाराओं ने भी जन्म लिया। जिनमें प्रमुख थी – प्रकृति पर्यटन, निम्न प्रभाव पर्यटन, जैव पर्यटन तथा हरित पर्यटन आदि। परन्तु पारिस्थितिकी पर्यटन विचारधारा अपने सर्वाधिक व्यापक उद्देश्यों के कारण पर्यटन भूगोल के साथ-साथ सम्पूर्ण विश्व के विद्वानों में प्रमुखता से स्वीकार की जाती है।

पारिस्थितिकी पर्यटन के प्रमुख घटकों में निम्न बिन्दुओं का सम्मिलित किया जाता है-

1. पर्यावरण का संरक्षण करना ताकि ये पर्यटन स्थल सदैव आकर्षण का केन्द्र बनें रहें।
2. पर्यटकों के सामाजिक-शैक्षणिक व सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा प्राकृतिक ज्ञान में वृद्धि करना।
3. पर्यावरण व विविध प्रकार की संस्कृति के प्रति आदर उत्पन्न करना।
4. पर्यटकों व स्थानीय लोगों में सकारात्मक अनुभव की छाप छोड़ना।
5. पर्यटन स्थलों के संरक्षण के लिए सीधे तौर पर धन अर्जन की व्यवस्था बनाना।
6. पर्यटन स्थलों के पंहुच मार्गो को सुरक्षित करना तथा इन पर यात्रियो के बुरे अनुभव व प्रभावों को न्यून करना।
7. स्थानीय लोगों को सीधे तौर पर धन, रोजगार व अन्य सामाजिक-सांस्कृतिक लाभ पहुंचाना।

हरियाणा राज्य के प्रमुख दर्शनीय पर्यटक स्थलों का वर्गीकरण निम्नवत् है

धार्मिक पर्यटक स्थल(नाम व स्थान)

बड़शाही बाग गुरूद्वारा –अम्बाला
शीश गंज गुरूद्वारा –अम्बाला
मंजी साहिब गुरूद्वारा –अम्बाला
लक्खी शाह मस्जिद –अम्बाला
भवानी अम्बा मन्दिर –अम्बाला
लोहारू पीर – भिवानी
गीता भवन मन्दिर – भिवानी
बाबा जहरगीर समाधि – भिवानी
जोगी वाला मन्दिर – भिवानी
किरोड़ीमल मन्दिर – भिवानी
श्रीकृष्ण प्रणामी राधिका धाम – भिवानी
शीतला माता मन्दिर –गुड़गांव
भूतेश्वर मन्दिर –गुड़गांव
बिश्नोई मन्दिर –हॉसी
लाट की मस्जिद –हिसार
भीमेश्वरी देवी मन्दिर –बेरी
जैयन्ती देवी मन्दिर –जीन्द
भूतेश्वर मन्दिर – जीन्द
फेलगू तालाब मन्दिर – कैथल
बिडख्यार झील (तीर्थ) –कैथल
ज्योतिसर तालाब –कुरूक्षेत्र
बाण गंगा तालाब –कुरूक्षेत्र
ब्रह्म सरोवर –कुरूक्षेत्र
श्रीकृष्ण संग्रहालय –कुरूक्षेत्र
सन्निहित सरोवर –कुरूक्षेत्र
भीमा देवी मन्दिर –पिन्जोर
गुरूद्वारा नाडा साहिब –मोरनी
मनसा देवी मन्दिर –मोरनी
जैन मन्दिर –पानीपत
लाल मस्जिद –रेवाड़ी
हनुमान मन्दिर –रेवाड़ी
घण्टेश्वर मन्दिर –रेवाड़ी
डेरा सच्चा सौदा –सिरसा
गीता भवन मन्दिर –सोनीपत
हनुमान मन्दिर (पंच) –यमुनानगर
हुमायूँ मस्जिद –फतेहाबाद
संत शाह चौका –नूह
गुरूकुल –झज्जर
सफेद मस्जिद –दुजाना
पेहोवा –पेहोवा
गुरूद्वारा बंगला साहिब –रोहतक
बाघेश्वर शिव मन्दिर –महेन्द्रगढ

ऐतिहासिक पर्यटक स्थल(नाम व स्थान)

चोर गुम्बद –नारनौल

छत्ता राय बालमुकुन्द –नारनौल
शाह वलियत मकबरा –नारनौल
पृथ्वीराज की चुतरी – भिवानी
लोहारू का किला – भिवानी
छाछरौली का किला – यमुनानगर
ठब्राहिम लोदी मकबरा – पानीपत
खोखर किला –रोहतक
ख्वाजा खिज्र मकबरा –सोनीपत
बाबा फरीछ मकबरा –फरीदाबाद
गुजरी महल –हिसार
फिरोज शाह महल –हिसार
असीगढ किला –हॉसी
किला दरवाजा –हॉसी
रजिया सुल्तान मकबरा –कैथल
पुराना किला –करनाल
पिन्जोर बाग –पिन्जोर
शीश महल –फरूखनगर
दिल्ली गेट –फरूखनगर
गोल बावड़ी –फरूखनगर
रेल म्यूजियम –रेवाड़ी
ट्रांसपोर्ट म्यूजियम –बिलासपुर
पुरानी बावड़ी –लुहारी
काला अम्ब पार्क –पानीपत
पैनोरमा महाभारत –कुरूक्षेत्र

प्राकृतिक पर्यटक स्थल(नाम व स्थान)

तिलयार झील –रोहतक
भिण्डावास झील –झज्जर
भिण्डावास पक्षी अभयारण्य –झज्जर
सुल्तानपुर पक्षी अभयारण्य –फरूखनगर
मोरनी हिल स्टेशन –मोरनी
जल महल –नारनौल
कर्ण झील –करनाल
बडखल झील –फरीदाबाद
नाहड़ बीड़ –कोसली
मातनहेल बीड़ –मातनहेल
प्राकृतिक गर्मजल चश्मा –सोहना
ढोसी की पहाड़ी –नारनौल
दमदमा झील –गुड़गॉव
सुखना झील –चण्डीगढ
कैक्टस गार्डन –पंचकूला
कोटला झील –नूह

सामाजिक पर्यटक स्थल(नाम व स्थान)

सुरजकुण्ड शिल्प मेला –फरीदाबाद
किंगडम ऑफ ड्रीम्स –गुरूग्राम
गोल्फ कोर्स मरूद्यान –करनाल
तारामण्डल –कुरूक्षेत्र
रॉक गार्डन –चण्डीगढ

हरियाणा राज्य के पर्यटन स्थलों में से प्रमुख स्थलो को इस अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। हरियाणा सरकार के पर्यटन मंत्रालय की वर्ष 2011–12 की प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार हरियाणा में पर्यटकों की पसंद प्रमुख जिले निम्न थे–

विदेशी पर्यटक– गुड़गॉव, फरीदाबाद, सिरसा, पंचकूला, कुरूक्षेत्र।

भारतीय पर्यटक– कुरूक्षेत्र, सिरसा, गुड़गॉव, फरीदाबाद।

इससे अभिप्राय है कि विदेशी पर्यटकों द्वारा आर्थिक दृष्टि से अधिक विकसित जिलों को भ्रमण के लिए प्राथमिकता दी गई। जबकि भारतीय पर्यटकों की दृष्टि से धार्मिक यात्रा व आराम प्रमुख कारण बने। हरियाणा राज्य में 63 लाख पर्यटक प्रतिवर्ष आते हैं तथा वर्तमान में हरियाणा में पर्यटन को एक उद्योग का दर्जा दिया हुआ है। हरियाणा राज्य के पर्यटन स्थलों के वर्गीकरण में धार्मिक व ऐतिहासिक स्थल ही प्रमुख पर्यटन स्थलों के रूप में दिखाई देते हैं। परन्तु इन स्थलों पर अनेक समस्याओं के पाए जाने से वे हतोत्साहित व दिग्भ्रमित हाते हैं। इन समस्याओं का विवरण निम्नवत् है–

धार्मिक पर्यटक स्थलों में समस्याएं– इन धार्मिक पर्यटन स्थलों में अधिकांश में यात्रियों के लिए उचित आवास की कमी है। यहॉ विभिन्न स्तर के होटल व भोजनालयों का अभाव है तथा जो कुछ अल्प मात्रा में यहॉ उपलब्ध हैं उनका स्तर व रखरखाव भी ठीक नही पाया जाता है। इन धार्मिक पर्यटन स्थलों पर लोगो का कुछ विशेष अवसरों, मेलों व दिनों में अधिक आना होता है। ऐसे विशेष दिवसों पर भीड़ से निपटनें के लिए कोई व्यवस्था नही पाई जाती। यहॉ तक सुगमतापूर्वक पहुंच के लिए स्थान–स्थान पर पर्याप्त मार्गदर्शक चिन्हों व बोर्डों का भी अभाव पाया जाता है। अधिकांश स्थलों में अवशिष्ट पदार्थो का उचित निपटान तथा उचित जल निकास प्रणाली नही होने से यात्रियों को मार्ग पर चलने मे असुविधाओं का सामना करना पड़ता है। इससे इन स्थलों का पारिस्थितिकी संतुलन भी पूर्णत: बिगड़ जाता है। पर्यटन स्थल के आसपास दुकानों व आवासों के अनियंत्रित निर्माण से पर्यटन स्थल तक पहुंच का मार्ग अत्यन्त तंग हो जाता है जिससे यात्री वाहन उस स्थल पर सुगमता से नही पंहुच पाते। ऐसे स्थलों तक पंहुच के लिए इन क्षेत्रों में कोई व्यवस्थित परिवहन व्यवस्था का भी प्राय: अभाव पाया जाता है। इन पर्यटन स्थलों पर व्यवस्था बनाए रखने के लिए सरकारी नियन्त्रण का लगभग अभाव पाया जाता है कहीं–कहीं स्थानीय निजी संगठन व संस्थाएं भी व्यवस्था नियन्त्रण करती दिखाई देती हैं। परन्तु इस प्रकार स्थानीय संस्थाओं द्वारा व्यवस्था नियन्त्रण अकुशल हाथों द्वारा बिना किसी उचित प्रशिक्षण के होने के कारण अधिक प्रभावी नही पाया जाता। इससे कभी–कभी स्थिति नियन्त्रण से बाहर भी हो जाती है जो कि कई बार यात्रियों को हतोत्साहित भी कर देती है।

ऐतिहासिक पर्यटक स्थलों में समस्याएं– इन ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों के रखरखाव की कोई उचित निति न होने तथा स्थानीय लोगों की इनके महत्व को न जानने के कारण ये पर्यटन स्थल सर्वाधिक उपेक्षित हैं तथा अधिकांशत: जीर्ण–शीर्ण हालत में हैं। इनके समीप कहीं भी इन स्मारकों सम्बन्धित सूचनाएं दर्ज नही होती। जिससे इनके इतिहास व महत्व का किसी को ज्ञान नही हो पाता। स्थानीय लोगों में इन स्मारकों से सम्बन्धित कुछ किवदन्तियां प्रचलित हो जाती हैं जो अत्यधिक भ्रमित करने वाली होती हैं तथा पीढी दर पीढी चलती रह कर और अधिक अपभ्रंशित होती जाती हैं। इनके लिए कुछ क्षेत्रों को छोड़कर अधिकांश पर गाईड आदि की कोई उपलब्धता नही होती। इनके महत्व के प्रति अनभिज्ञता के कारण ये स्थल अधिकतर समय जनशून्य रहने की दशा में असुरक्षित क्षेत्रों के रूप में पनपने लगते हैं। इनके समीप पारितन्त्र अत्यन्त जर्जर हालत में पाया जाता

है। अधिकांश इमारतें रखरखाव के अभाव में मलबे के ढेर में बदलती जा रहीं हैं तथा प्रदूषण की शिकार हैं। इन स्थलों तक पंहुच के लिए भीं कोई व्यवस्थित परिवहन व्यवस्था नही पाई जाती है। आसपास दुकानों व आवासों के अनियंत्रित निर्माण से इन स्थलों के अतिक्रमण के भी प्रयास होने लगते हैं।

प्राकृतिक व अन्य पर्यटक स्थलों में समस्याएं- इन पर्यटन स्थलों में भी पर्यावरण की दृष्टि से उचित रखरखाव का अभाव पाया जाता है। असामाजिक तत्वों द्वारा इनमें अवैध तरीके से वृक्षों की कटाई व अतिक्रमण किया जाता है। कचरा निपटान व्यवस्था भी उचित नही पाई जाती। इनके लिए प्रदूषण सम्बन्धी मापदण्ड कठोर न होने के कारण इनमें प्रदूषण जैसी समस्या गम्भीर रूप लेती जा रही है। यहाँ प्रर्यटकों के लिए उपलब्ध सुविधाओं का अभाव है तथा यदि सुविधाएं हैं भी तो अत्यन्त कम व महंगे दामों पर मिलती हैं। इनसे पर्यटकों में निराशा की भावना आती है।

समाधान व निष्कर्ष - उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि धार्मिक पर्यटन स्थल हरियाणा राज्य में पारिस्थितिकी पर्यटन में प्रमुख स्थान रखते हैं। इनके अत्यधिक राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय महत्व के कारण सैलानियों हेतू ये स्थल पर्यटन के मुख्य केन्द्र बन गए हैं। महाभारत जैसा महायुद्ध व श्रीमद्भगवदगीता जैसे उपदेशक ग्रन्थ की रचना हरियाणा के कुरूक्षेत्र में होने के कारण और महाभारत समय के कौरवों-पाण्डवों के राज्य की राजधानी इन्द्रप्रस्थ (वर्तमान समय का दिल्ली) हरियाणा की दक्षिण-पूर्वी सीमा पर स्थित हाने के कारण इनसे जुड़े हुए धार्मिक स्थानों के आकर्षण न केवल भारतीयों के लिए बल्कि विदेशी पर्यटकों के लिए भी अत्यन्त आकर्षण के बिन्दु हैं। हरियाणा राज्य में कुछ स्थल ऋषि मुनियों व सूफी सन्तों की भूमि के रूप में भी प्रसिद्ध हुए हैं। उदाहरणत: पेहोवा में महर्षि विश्वामित्र, वशिष्ठ व ययाति; कुरूक्षेत्र में दधीचि ऋषि; ढोसी की पहाड़ी-नारनौल में महर्षि च्यवन; दुबलधन-झज्जर मे महर्षि दुर्वासा तथा निर्गुण परम्परा के सन्त नितानन्द आदि जहॉं लोगों का वर्षभर आना-जाना लगा रहता है।

ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों की उपेक्षा के कारण इनका अस्तित्व लगातार समाप्त होता जा रहा है। प्राकृतिक व अन्य पर्यटन स्थल प्रमुखत: पर्यावरणीय समस्याओं के शिकार हैं। हरियाणा राज्य में पर्यटन क्षेत्रों के महत्व को देखते हुए पारिस्थितिकी पर्यटन ही वह माध्यम है जिससे इन स्थलों को सुरक्षित रख जा सकता है और पर्यटन व्यवसाय में वृद्धि की जा सकती है। ऐसे मे चार प्रमुख घटक स्तर हैं जोकि इनके रक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इनके द्वारा पर्यटक स्थल की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए दायित्वों का वर्णन निम्नवत् है-

1. पर्यटक स्थलों के संरक्षण के लिए सभी लोग स्वैच्छिक रूप से धनराशी दान करने आर्थिक मदद के लिए आगे आएं।
2. प्रशासन को पूर्ण सहयोग करते हुए पर्यटक तय नियमों व मापदण्डों का ईमानदारी से पालन करें।
3. पर्यटन स्थलों पर पर्यटक पर्यावरण को कोई क्षति ना पहुंचाएं।
4. इन स्थलों पर यदि कचरा निपटान की कोई उचित व्यवस्था न हो तो स्थानीय लोगों का यह पूर्ण दायित्व बनता है कि वे पर्यटको व अन्य लोगों की सहायता से इसे दुरूस्त करने का प्रयास करें।
5. पर्यटन स्थलों की आयोजक समितियॉं व लोग पर्यटको को दी जाने वाली सुविधाओं का पूरी निष्ठा के साथ ध्यान रखें व इनकी गुणवत्ता का उच्च स्तर बनाने की दिशा में निरन्तर प्रयासरत रहें ताकि स्थानीय स्तर पर लोगों को मिलने वाले रोजगार में भी वृद्धि हो।
6. स्थानीय लोगों, निजी समूहों व सरकार द्वारा इन स्थलों के आस-पास ग्राम कुटीर आवासों, होटल, रेस्टोरेन्ट आदि की उचित व्यवस्था व रख रखाव आवश्यक रूप से की जाए।
7. पर्यटन स्थलों की पारिस्थितिकी पर्यटन की आचार संहिता छपवा कर इस का पर्यटन स्थल की पूर्ण जानकारियों सहित अधिक से अधिक ऑनलाईन व ऑफलाईन वितरण किया जाए।
8. प्रशासन पर्यटन गाईडों की नियुक्ति, पंजीकरण व शुल्क निर्धरण जैसी व्यवस्था सजगता से करे व इनकी अधिक से अधिक ऑनलाईन व ऑफलाईन सूचना प्रचारित प्रसारित की जाए।
9. प्रशासन द्वारा इन स्थलों पर आसान पहुंच के लिए उचित परिवहन व्यवस्था तथा परिवहन मार्गो का निर्माण और समय-समय पर रख रखाव किया जाए।
10. प्रशासन इन स्थलों पर वाहनों की पार्किंग की उचित व्यवस्था व परिवहन नियमों की सुचारू रूप से अनुपालना करवाना सुनिश्चित करें।
11. प्रशासन द्वारा इन पर्यटन स्थलों पर असामाजिक तत्वों, लूटमार करने वाले चोरों व ठगों की धरपकड़ करके कठोर दण्डात्मक कानूनी कार्यवाही की जाए ताकि पर्यटक व उनके परिजन इन स्थलों पर पंहुचकर स्वयं को सुरक्षित महसूस कर सकें।

अन्तत: कहा जा सकता है कि पारिस्थितिकी पर्यटन के तहत मुख्यत: पर्यटक स्थल संरक्षण, उचित सूचना व शिक्षा का प्रसार, सरकारी नियन्त्रण, पर्यटक जिम्मेदारी के साथ-साथ स्थानीय सामुदायिक भागीदारी की भी नितान्त आवश्यकता है। निश्चित रूप से इससे इतनी पूंजी एकत्रित होगी कि जिससे इन स्थलों के संरक्षण के साथ-साथ लोगों के रोजगार, शैक्षिक, सांस्कृतिक व वैचारिक उत्थान भी होगा। इससे सही अर्थो में पारिस्थितिकी पर्यटन विकसित होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Malik, Jagbir Book: Paryatan Bhugol.
2. Robinson H. Book: A Geography of Tourism, Mac Donald and Evans Ltd, London.
3. Kapoor, VK: Paryatan Bhugol, Vishvabharti Publication, New Delhi.
4. Sub-Regional Plan for Haryana Sub Region of NCR, Heritage and Tourism, Govt. of Haryana.
5. Tourism Policy 2008, 2015, Govt. of Haryana.
6. Tourism Survey for the State of Haryana (2011-12), Ministry of Tourism, Govt. of India.
7. https://tourism.gov.in/sites/default/files/2020-04/haryana.pdf
8. https://haryanatourism.gov.in/WriteReadData/downloads/tourism-policy-english.pdf
9. https://tcpharyana.gov.in/ncrpb/FINAL%20SRP% 20 FOR%20WEB-HOSTING/13_Heritage_Tourism.pdf
10. https://studysafar.com/haryana-ke-pramukh-rishi-muni-sadhu-sant-list/
11. https://haryana.gov.in
12. https://hindi.holidayrider.com
13. www.bhaskar.com
14. www.amarujala.com
15. https://imvashi.com/
16. http://www.agriharyana.nic.in/gwc_dark.htm

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Perceptions of Body Image among College Girls in Udaipur City: A Comparative Analysis with Models and Celebrities

Rashmi Manoj* Vinita Sharma**

*Guru Nanak Girls' P G College, Udaipur (Raj.) INDIA
** Govt. Meera Girls' College, Udaipur (Raj.) INDIA

Abstract - This study aims to examine the perceptions of body image among college girls, with a specific focus on their comparisons with models and celebrities. By understanding how college girls perceive their own body image in relation to these idealized standards, it will be possible to gain insights into the potential negative consequences and devise strategies to promote healthier body image perceptions. The random sampling method was used for selection of samples. Five point rating scale was used. All the calculations were done with SPSS. It was found that there is no significant difference in opinions of the rural and urban girls, girls studying in government and private colleges regarding comparison of own body image with models and celebrities but the girls studying in undergraduate and postgraduate classes differ in opinion regarding comparison of own body image with models and celebrities.
Keywords: Body Image, College Girls, Urban/Rural Girls, Models, Celebrities.

Introduction - The perception of body image among college girls is a topic of significant interest and concern due to its potential impact on various aspects of their lives, including self-esteem, mental health, and overall well-being. Research has shown that college-age individuals, particularly females, are particularly vulnerable to societal pressures and media influences that shape their body image perceptions (Tiggemann & Slater, 2014). These pressures often stem from the idealized portrayals of beauty and unrealistic body standards perpetuated by the media, including the representation of models and celebrities.

Understanding the perceptions of body image among college girls is crucial as it provides insights into the factors that contribute to body dissatisfaction, disordered eating behaviors, and other negative psychological outcomes. It also allows for the development of targeted interventions and strategies to promote positive body image and well-being among this vulnerable population.

Numerous studies have explored the perceptions of body image among college girls. Cash and Pruzinsky (2002) conducted a comprehensive review of literature on body image and identified several factors that contribute to body image dissatisfaction, including media exposure, and interpersonal experiences. Grabe et al. (2008) found a significant association between exposure to thin-ideal media and increased body dissatisfaction.

Moreover, studies have specifically investigated the comparison of college girls' own body image with models and celebrities. Perloff et al. (2014) explored the influence of social comparison with models on body dissatisfaction among college women and discovered that upward comparisons to thin models were associated with greater body dissatisfaction and negative effect. Another study by Hargreaves and Tiggemann (2009) found that exposure to thin-ideal media resulted in increased body dissatisfaction and greater desire for thinness among college women.

Results and Discussion: Association between opinions about comparison of own body image with models/ celebrities and study groups (Urban Vs Rural, Government Vs Private and UG Vs PG) are shown in Table 1.

Table 1 (see in last page)

Out of total college girls 14.4% were strongly disagree, 14.2 % were disagree, 6.1 % were indecisive, 22.8 % were agree and 42.5 % were strongly agree regarding comparison of own body image with models and celebrities. Out of total urban girls, 15.6 % were strongly disagree, 11.7% were disagree, 6.1 % were indecisive, 21.7% were agree and 45.0 % were strongly agree regarding comparison of own body image with models and celebrities while out of total rural girls, 13.3 % were strongly disagree, 16.7 % were disagree, 6.1 % were indecisive, 23.9 % were agree and 40.0 % were strongly agree with regards to comparison of own body image with models and celebrities. The Chi-Square value was found to be 2.620 which is insignificant (p>0.05). It infers that there is no significant difference in opinions of the rural and urban girls regarding comparison of own body image with models and celebrities.

Out of total girls studying in Government colleges, 17.2

% were strongly disagree, 15.0 % were disagree, 7.2 % were indecisive, 21.1 % were agree and 39.4 % were strongly agree regarding comparison of own body image with models and celebrities while out of total girls studying in private colleges, 11.7 % were strongly disagree, 13.3 % were disagree, 5.0 % were indecisive, 24.4 % were agree and 45.6 % were strongly agree regard to comparison of own body image with models and celebrities. The Chi-Square value was found to be 4.057 which is insignificant ($p>0.05$). It infers that there is no significant difference in opinions of the girls studying in government and private colleges regarding comparison of own body image with models and celebrities.

Out of total girls studying in undergraduate classes, 18.3 % were strongly disagree, 15.6 % were disagree, 8.3 % were indecisive, 22.8 % were agree and 35.0 % were strongly agree regarding comparison of own body image with models and celebrities while out of total girls studying in postgraduate classes, 10.6 % were strongly disagree, 12.8 % were disagree, 3.9 % were indecisive, 22.8 % were agree and 50.0 % were strongly agree regards to comparison of own body image with models and celebrities. The Chi-Square value was found to be 11.933 which is significant ($p<0.05$). It infers that the girls studying in undergraduate and postgraduate classes differ in opinion regarding comparison of own body image with models and celebrities.

Although there is no significant difference between opinion of urban and rural girls; government and private college girls; but a significant difference is found between undergraduate and post graduate girls regarding comparison of own body image with models and celebrities. About 78.8% post graduate girls compare their body image with models and celebrities. This may be due to a change in role models of PG girls. In their early college years females in their surrounding with perfect body image (perfect in their opinion) used to be their role models. But, later they found that media presents more perfect body image of females than their role models. Due to perfect body images shown in media their role model changes and by comparing own body image with their role model they try to find how close they are to their dream body image. In a study Cattarin et. al. (2000) concluded that college girls make automatic comparison about their bodies with a single image presented in the media. In another study Gregg (2008) concluded that women as well men compare themselves to media images. Similar results were also obtained by Choate (2007.

Conclusion: The study revealed that there was no statistically significant difference in the perceptions of body image comparisons with models and celebrities between rural and urban girls, as well as between girls studying in government and private colleges. However, notable variations were observed among girls studying in undergraduate and postgraduate classes regarding the comparison of their own body image with models and celebrities.

References:-

1. Cash, T. F., & Pruzinsky, T. (2002). Body image: A handbook of theory, research, and clinical practice. Guilford Press.
2. Cattarin, J. A., Thompson, J. K., Thomas, C., & Williams, R. (2000). Body image, mood, and televised images of attractiveness: The role of social comparison. Journal of Social and Clinical Psychology, 19(2), 220–239.
3. Choate, L. H. (2007). Counseling adolescent girls for body image resilience: Strategies for school counselors. Professional School Counseling, 10, 317-324.
4. Grabe, S., Hyde, J. S., & Ward, L. M. (2008). The role of the media in body image concerns among women: A meta-analysis of experimental and correlational studies. Psychological Bulletin, 134(3), 460–476.
5. Gregg Anna (2008) "Media's Impact on Male and Female College Age Students Perspective of Body Image" A Research Paper Submitted in Partial Fulfillment of the Requirements for the Master of Science Degree in Guidance and Counseling, The Graduate School University of Wisconsin-Stout December, 2008.
6. Hargreaves, D. A., & Tiggemann, M. (2009). The effect of "thin ideal" television commercials on body dissatisfaction and schema activation during early adolescence. Journal of Youth and Adolescence, 38(2), 342–358.
7. Perloff, R. M., Fetters, M. D., & Popovich, M. N. (2014). Social media effects on young women's body image concerns: Theoretical perspectives and an agenda for research. Sex Roles, 71(11-12), 363–377.
8. Tiggemann, M., & Slater, A. (2014). NetGirls: The media, body image concerns, and disordered eating in young women. Sex Roles, 71(11-12), 380–389.

Table 1: Association between opinions about comparison of own body image with models/ celebrities and study groups (Urban Vs Rural, Govt.t Vs Private and UGVs PG)

		Comparison of own body image with models/ celebrities					Total	Chi-Square (p value)
		Strongly Disagree	Disagree	Indecisive	Agree	Strongly Agree		
Total Urban	F	28	21	11	39	81	180	2.620(0.623)
	%	15.6%	11.7%	6.1%	21.7%	45.0%	100.0%	
Total Rural	F	24	30	11	43	72	180	
	%	13.3%	16.7%	6.1%	23.9%	40.0%	100.0%	
Total Government	F	31	27	13	38	71	180	4.057(0.398)
	%	17.2%	15.0%	7.2%	21.1%	39.4%	100.0%	
Total Private	F	21	24	9	44	82	180	
	%	11.7%	13.3%	5.0%	24.4%	45.6%	100.0%	
Total UG	F	33	28	15	41	63	180	11.933(0.018)
	%	18.3%	15.6%	8.3%	22.8%	35.0%	100.0%	
Total PG	F	19	23	7	41	90	180	
	%	10.6%	12.8%	3.9%	22.8%	50.0%	100.0%	
TOTAL	F	52	51	22	82	153	360	
	%	14.4%	14.2%	6.1%	22.8%	42.5%	100.0%	

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

दक्षिणी राजस्थान क्षेत्र के विश्वविद्यालय के बॉक्सिंग एवं कुश्ती के खिलाड़ियों की शारीरिक क्षमताओ का एक तुलनात्मक अध्ययन

संदीप कुमार *

* शोधार्थी (शारीरिक शिक्षा) शिक्षा संकाय, भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – विभिन्न खेलो में खेल के अच्छे प्रदर्शन के लिये शारीरिक क्षमता के मूल शरीर की रचना के तथा शरीर क्रियात्मक के मापदण्ड अधिक सहायक है। किसी भी खेल में शारीरिक क्षमता की कितनी आवश्यकता होगी, उसके मापदण्ड है उसे उस मात्रा में उसे सहेजना पड़ता है, साथ ही उसके कौशल्य की निपुणता की आवश्यकता होती है। इसी संदर्भ में हम थोड़ा आगे बढ़ते है, प्रत्येक खेल के लिये अलग अलग मात्रा में शारीरिक क्षमता की आवश्यकता होगी। तेज गति की दौड़ के धावक की आवश्यक शारीरिक क्षमता तथा लंबी दूरी की दौड़ के धावक की आवश्यक शारीरिक क्षमता में पूर्णत: अंतर होगा। इसी तरह भिन्न-भिन्न खेलो में आवश्यक शारीरिक क्षमता भी भिन्न भिन्न होगी। बॉक्सिंग व कुश्ती के खिलाड़ियों में गति, बल, सहनशीलता, चपलता, शक्ति आदि शारीरिक क्षमता के घटक भिन्न भिन्न होने चाहिये।

खेल के स्तर को उपर उठाने के लिये उसकी योग्यता में वृद्धि करने के लिये शरीर की गामक योग्यता व शरीर की क्रियात्मक दक्षता का विकास अति आवश्यक है। इसके बिना खेल के प्रदर्शन का स्तर उच्च करना संभव नहीं हो पायेगा। खिलाड़ी की शारीरिक वृद्धि और काम करने कि दक्षता में वृद्धि उस पर निर्भर करती है कि वह किस प्रकार के खेल में भाग लेने में रूचि रखता है। शारीरिक व्यायाम द्वारा शरीर का ढांचा निर्मित करते समय उस भाग पर अधिक ध्यान देना होगा काम करने कि दक्षता में वृद्धि हो जिसका उपयोग विभिन्न खेल कूद प्रतियोगिताओ में भाग लेते रहे। शारीरिक कार्य क्षमता मे सबसे बड़ी भूमिका हृदय की क्षमता फुफ्फुसीय और मांसपेशियां का कार्य अनुकूलतापुर्वक आवश्यक है।

उद्देश्य : बॉक्सिंग के खिलाड़ियों की शारीरिक क्षमता का अध्ययन करना।

परिकल्पना – बॉक्सिंग व कुश्ती के खिलाड़ियों की शारीरिक क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता हैं।

प्रस्तुत संशोधन में मापन की पूर्ति के लिये न्यादर्श के चयन के लिये शोधकर्ता ने प्रस्तुत अभ्यास में यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से न्यादर्शो का चयन किया गया था। प्रस्तुत संशोधन के अभ्यास के लिये दक्षिणी राजस्थान क्षेत्र के विश्वविद्यालय के स्तर के कुल 80 खिलाड़ियों का चयन कर प्रयोज्यों के रूप में किया गया था। कुल 80 खिलाड़ियों में से 40 खिलाडी बॉक्सिंग खेल तथा 40 खिलाड़ी कुश्ती खेल के चयनित किये गये थे। प्रयोज्यों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया था। खिलाड़ियों की आयु 18 से 25 के बीच निर्धारित की गई थी।

Design of study and Sample selection

बॉक्सिंग खेल के खिलाड़ी	कुश्ती खेल के खिलाड़ी	कुल
40	40	80

बॉक्सिंग एवं कुश्ती खेल के खिलाड़ियों पर अभ्यास के निम्न चरों का चयन किया गया था।

1. गति
2. मांसपेशिय क्षमता
3. सहनशीलता
4. शक्ति
5. स्फूर्ति
6. चपलता

उपकरण –शारीरिक दक्षता के घटकों का मूल्यांकन के लिये आपहर यूथ टेस्ट सर्वविदित है जिसका इस्तेमाल किया गया था।

क्र.	**शारीरिक घटक**	**मापन**
1.	मांसपेशिय क्षमता	सीट अप्स
2.	स्फूर्ति (चपलता)	आपहर यूथ टेस्ट द्वारा 4x10 मीटर शटल रन
3.	गति	आपहर यूथ टेस्ट द्वारा 50 यार्ड डेश रन
4.	एन्डोरेन्स	रन वाक टेस्ट छ: सौ यार्ड आपहर यूथ टेस्ट द्वारा
5.	ताकत	खडी लंबी कूद आपहर यूथ टेस्ट द्वारा

गति– बॉक्सिंग के एवं कुश्ती खेल के खिलाड़ियों के बीच शारीरिक दक्षता के चर का तुलनात्मक विश्लेषण के लिये गति एवं टी रेशियों को प्रदर्शित करती सारणी

बॉक्सिंग के एवं कुश्ती खेल के खिलाड़ियों के बीच शारीरिक दक्षता के चर का गति तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	कुश्ती खेल के खिलाड़ी	बॉक्सिंग खेल के खिलाड़ी
मध्यमान	5.90	6.53
मानक विचलन	0.11	0.13
N	50	50
मध्यमान अन्तर	0.732	
df	98	
t	31.74	
सार्थकता	0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर	

सारणी – 1 के आंकडों से पता चलता हैं कि कुश्ती के खिलाड़ियों के शारीरिक क्षमता चर गति के मध्यमान 5.90 एवं मानक विचलन 0.11 देखनें को मिला। तथा बॉक्सिंग के खिलाड़ियों के शारीरिक दक्षता गति के मध्यांक 6.53 एवं मानक विचलन 0.13 देखनें को मिला।

सारणी के विश्लेषण करने पर मध्यमान अन्तर 0.732 तथा टी रेशियों 31.74 देखने को मिला था। जिसको सार्थकता का स्तर 0.01 स्तर सार्थक है एवं जो यह प्रदर्शित करता है कि दोनों समुहों के बीच शारीरिक क्षमता चर गति के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर देखने को नहीं मिला था।

आलेख– 1: बॉक्सिंग के एवं कुश्ती खेल के खिलाड़ियों के बीच शारीरिक दक्षता चर के गति का तुलनात्मक विश्लेषण

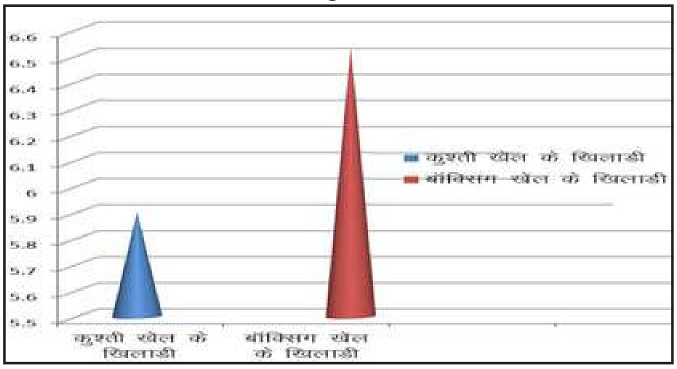

मांसपेशिय क्षमता – बॉक्सिंग के एवं कुश्ती खिलाड़ियों के बीच शारीरिक दक्षता के चर का तुलनात्मक विश्लेषण के लिये मांसपेशिय क्षमता एवं रेशियों को प्रदर्शित करती सारणी

बॉक्सिंग के एवं कुश्ती खेंल के खिलाड़ियों के बीच शारीरिक दक्षता के चर का मांसपेशिय क्षमता तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	कुश्ती खेल के खिलाड़ी	बॉक्सिंग खेल के खिलाड़ी
मध्यमान	27.35	38.27
मानक विचलन	3.89	0.13
N	50	50
मध्यमान अन्तर	10.45	
df	98	
t	11.88	
सार्थकता	0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर	

सारणी – 2 के आंकडों से पता चलता हैं कि कुश्ती के खिलाड़ियों के शारीरिक दक्षता चर मांसपेशिय क्षमता के मध्यमान 27.35 एवं मानक विचलन 3.89 देखनें को मिला। तथा बॉक्सिंग के खिलाड़ियों के शारीरिक दक्षता चर मांसपेशिय क्षमता के मध्यांक 38.27 एवं मानक विचलन 0.13 देखनें को मिला।

सारणी के विश्लेषण करने पर मध्यमान अन्तर 10.45 तथा टी रेशियों 11.88 देखने को मिला था। जिसको सार्थकता का स्तर 0.01 स्तर सार्थक है एवं जो यह प्रदर्शित करता है कि दोनों समुहों के बीच शारीरिक क्षमता चर मांसपेशिय क्षमता के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर देखने को नहीं मिला था।

आलेख– 2

बॉक्सिंग के एवं कुश्ती खेंल के खिलाड़ियों के बीच शारीरिक दक्षता चर के मांसपेशिय क्षमता का तुलनात्मक विश्लेषण

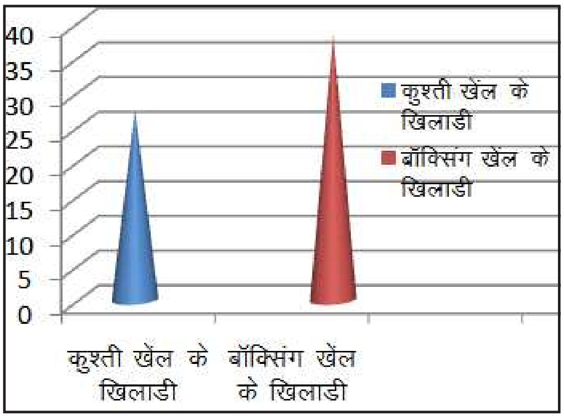

सहनशीलता – बॉक्सिंग के एवं कुश्ती खेल के खिलाड़ियों के बीच शारीरिक दक्षता के चर सहनशीलता का तुलनात्मक विश्लेषण के लिये टी रेशियों को प्रदर्शित करती सारणी

बॉक्सिंग के एवं कुश्ती खेंल के खिलाड़ियों के बीच शारीरिक दक्षता के चर का सहनशीलता तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	कुश्ती खेल के खिलाड़ी	बॉक्सिंग खेल के खिलाड़ी
मध्यमान	84.32	99.39
मानक विचलन	3.89	0.13
N	2.82	2.98
मध्यमान अन्तर	15.60	
df	98	
t	27.22	
सार्थकता	0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर	

सारणी – 3 के आंकडों से पता चलता हैं कि कुश्ती के खिलाड़ियों के शारीरिक क्षमता चर सहनशीलता के मध्यमान 84.32एवं मानक विचलन 2.82 देखनें को मिला। तथा बॉक्सिंग के खिलाड़ियों के शारीरिक दक्षता सहनशीलता के मध्यांक 7.46 एवं मानक विचलन 2.98 देखनें को मिला।

सारणी के विश्लेषण करने पर मध्यमान अन्तर 15.60 तथा टी रेशियों 27.22 देखने को मिला था। जिसको सार्थकता का स्तर 0.01 स्तर सार्थक है एवं जो यह प्रदर्शित करता है कि दोनों समूहों के बीच शारीरिक क्षमता चर सहनशीलता के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर देखने को नहीं मिला था।

आलेख– 3

बॉक्सिंग के एवं कुश्ती खेल के खिलाड़ियों के बीच शारीरिक दक्षता चर के सहनशीलता का तुलनात्मक विश्लेषण

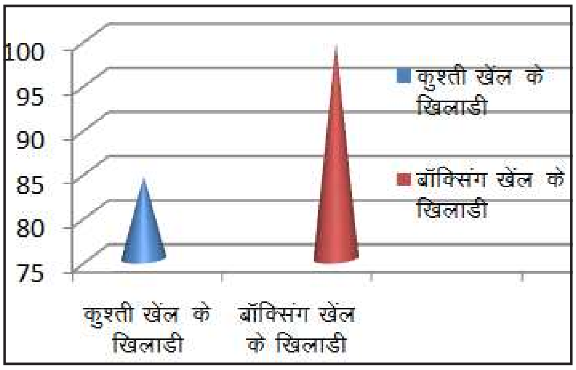

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

शक्ति – बॉक्सिंग के एवं कुश्ती खेल के खिलाड़ियों के बीच शारीरिक दक्षता के चर शक्ति का तुलनात्मक विश्लेषण के लिये टी रेशियों को प्रदर्शित करती सारणी

बॉक्सिंग के एवं कुश्ती खेल के खिलाड़ियों के बीच शारीरिक दक्षता चर शक्ति का तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	कुश्ती खेल के खिलाड़ी	बॉक्सिंग खेल के खिलाड़ी
मध्यमान	183.10	220.44
मानक विचलन	39.80	45.90
N	2.82	2.98
मध्यमान अन्तर	42.8	
df	98	
t	4.72	
सार्थकता	0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर	

सारणी – 4 के आंकडों से पता चलता हैं कि कुश्ती के खिलाड़ियों के शारीरिक दक्षता चर शक्ति के मध्यमान 183.10 एवं मानक विचलन 39.80 देखनें को मिला। तथा बॉक्सिंग के खिलाड़ियों के शारीरिक दक्षता चर शक्ति के मध्यांक 220.44 एवं मानक विचलन 45.90 देखनें को मिला।

सारणी के विश्लेषण करने पर मध्यमान अन्तर 42.8 तथा टी रेशियों 4.72 देखने को मिला था। जिसको सार्थकता का स्तर 0.01 स्तर सार्थक है एवं जो यह प्रदर्शित करता है कि दोनों समुहों के बीच शारीरिक क्षमता चर शक्ति के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर देखने को नहीं मिला था

आलेख– 4 : बॉक्सिंग के एवं कुश्ती खेल के खिलाड़ियों के बीच शारीरिक दक्षता चर के शक्ति का तुलनात्मक विश्लेषण

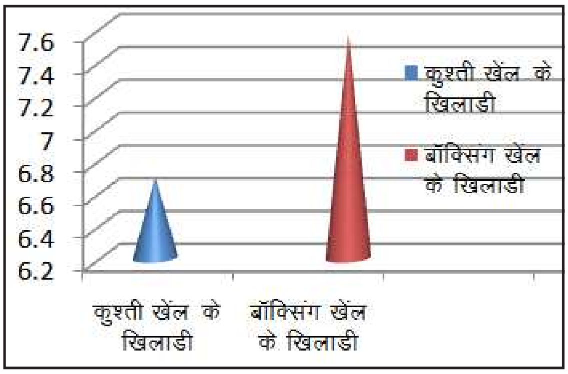

स्फूर्ति (चपलता) – बॉक्सिंग के एवं कुश्ती खेल के खिलाड़ियों के बीच शारीरिक दक्षता के चर स्फूर्ति (चपलता) का तुलनात्मक विश्लेषण के लिये टी रेशियों को प्रदर्शित करती सारणी

बॉक्सिंग के एवं कुश्ती खेल के खिलाड़ियों के बीच शारीरिक दक्षता के चर का स्फूर्ति (चपलता) तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	कुश्ती खेल के खिलाड़ी	बॉक्सिंग खेल के खिलाड़ी
मध्यमान	9.15	8.98
मानक विचलन	0.42	0.51
N	2.82	2.98
मध्यमान अन्तर	0.394	
df	98	
t	4.72	
सार्थकता	0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर	

सारणी – 5 के आंकडों से पता चलता हैं कि कुश्ती के खिलाड़ियों के शारीरिक क्षमता चर स्फूर्ति (चपलता) के मध्यमान 9.15 एवं मानक विचलन 0.42 देखनें को मिला। तथा बॉक्सिंग के खिलाड़ियों के शारीरिक दक्षता स्फूर्ति (चपलता) के मध्यांक 8.98 एवं मानक विचलन 0.51देखनें को मिला।

सारणी के विश्लेषण करने पर मध्यमान अन्तर 0.394तथा टी रेशियों 4.72 देखने को मिला था। जिसको सार्थकता का स्तर 0.01 स्तर सार्थक है एवं जो यह प्रदर्शित करता है कि दोनों समुहों के बीच शारीरिक क्षमता चर स्फूर्ति (चपलता) के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर देखने को नहीं मिला था।

आलेख– 5: बॉक्सिंग के एवं कुश्ती खेल के खिलाड़ियों के बीच शारीरिक दक्षता चर के स्फूर्ति (चपलता) का तुलनात्मक विश्लेषण

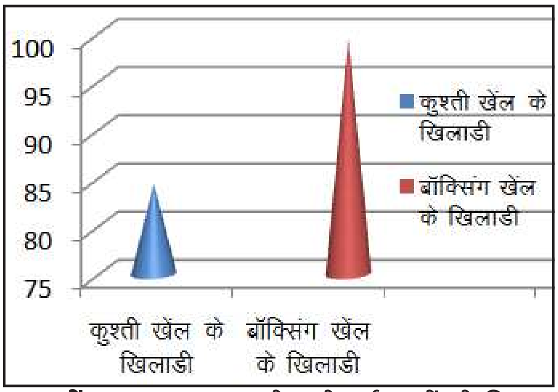

परिकल्पनाओं का सत्यापन – शोध से पुर्व मन में जो विचार आये थे उसे आधार मानकर अभ्यास से पूर्व परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया था, संशोधन के बाद आये परिणामों के आधार पर उन परिकल्पनाओं का सत्यापन किया गया जो इस प्रकार है–

बॉक्सिंग व कुश्ती के खिलाड़ियों की शारीरिक क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता हैं।

संशोधन से प्राप्त निष्कर्ष से स्पष्ट होता है कि बॉक्सिंग व कुश्ती के खिलाड़ियों की शारीरिक क्षमता के चयनित चरों में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है, जिससे पूर्व में की गई परिकल्पना का परीणाम परिकल्पना के विपरित आया कि बॉक्सिंग व कुश्ती के खिलाड़ियों की शारीरिक क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता हैं। यह पूर्ण रूप से असत्य सिद्ध हुई।

निष्कर्ष – आँकडों कों एकत्र करने के बाद सांख्यकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणाम से जो निष्कर्ष प्राप्त हुये है यह इस प्रकार है शारीरिक क्षमता के चरों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष :

1. बॉक्सिंग व कुश्ती के खिलाड़ियों के बीच शारीरिक क्षमता के चयनित चर गति के प्राप्तांकों में सार्थक रूप से अंतर प्राप्त हुआ है।
2. बॉक्सिंग व कुश्ती के खिलाड़ियों के बीच शारीरिक क्षमता के चयनित चर मांसपेशिय क्षमता के प्राप्तांकों में सार्थक रूप से अंतर प्राप्त हुआ है।
3. बॉक्सिंग व कुश्ती के खिलाड़ियों के बीच शारीरिक क्षमता के चयनित चर सहनशीलता के प्राप्तांकों में सार्थक रूप से अंतर प्राप्त हुआ है।
4. बॉक्सिंग व कुश्ती के खिलाड़ियों के बीच शारीरिक क्षमता के चयनित चर शक्ति के प्राप्तांकों में सार्थक रूप से अंतर प्राप्त हुआ है।
5. बॉक्सिंग व कुश्ती के खिलाड़ियों के बीच शारीरिक क्षमता के चयनित चर स्फूर्ति (चपलता) के प्राप्तांकों में सार्थक रूप से अंतर प्राप्त हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. मनमोहन कौर लाम्बा, (1980) द कम्पेरेटिव स्टडी आफ सलेक्टेड़ फिजिकल कॅम्पोनेन्ट एण्ड़ फिजियोलोजिकल पैरामिटर्स आफ आफन्सिव एण्डडिफेन्सिव हाकी प्लेयर्स आफ कालेज लेवल, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध,लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षण संस्थान, ग्वालियर।
2. मुकेश कुमार उपाध्याय, (1980) रिलेशनशिप आफ सलेक्टेड़ फिजिकलकॅम्पोनेन्ट एण्ड़ फिजियोलोजिकल पैरामिटर्स विथ बास्केटबाल प्लेइंग एबिलिटी आफ फिमेल प्लेयर्स, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षण संस्थान, ग्वालियर।
3. नलवाया रेखा, (2004) नीजी एवं सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों का शैक्षिक तनाव और व्यक्तित्व गुण, अप्रकाशित लघु शोध, एम.एड़ मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर।
4. पौलराज, कुमार एवं कुट्टी, (2004)'इफैक्ट ऑफ एरोबिक डान्स प्रोग्राम ऑन सलेक्टेड़ फिजियोलोजिकल वैरियेबल्स आफ सिडेन्टरी वुमेन, साईन्टिफिक जनरल इन स्पोर्टस एण्ड़ एक्सरसाइज', संस्करण, 1, भाग 2 जुलाई–दिसम्बर (2004) 6–9.
5. पमा थिनलें, (2003) 'रिलेशनशिप बिटविन सेल्फ कन्सेप्ट एण्ड़ फिजिकलफिटनेस अमंग अनडर ग्रेजुऐट स्टुडेन्ट' अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षण संस्थान, ग्वालियर।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Gender Gap in India: Based on Global Gender Gap Report 2018

Dr. Saba Agwani*

***Assistant Professor (Geography) Government College, Gogunda, Udaipur (Raj.) INDIA**

Introduction - Difference in opinion or attitudes between men and women concerning a variety of public and private issues can be termed as Gender Gap. When economist speaks of the "gender gap". They usually are referring to systematic differences in the outcomes that men and women achieve in the labor market. These differences are seen in the percentage of men and women in the labor force, the type of occupation they choose, and their relative incomes or hourly wages. But it doesn't give an overall view of gender gap now a days. The World Economic Forum measures the gender gap through Global Gender Gap Index. Which was first introduce by World Economic Forum in 2006 as a frame work for identify the magnitude of gender based disparity around the world, simultaneously track their progress over the time.

In the year 2018, total 149 were examined on their progress towards gender parity across four thematic dimensions or the sub-indexes.

1. Economic Participation and Opportunities
2. Education Attainment
3. Health and Survival
4. Political Empowerment

Table 1 : India in Global Gender Gap Index

S.	Global index	2006		2018	
		Rank	Score	Rank	Score
1	Economic Participation and Opportunities	98	0.601	108	0.665
2	Education Attainment	110	0.397	142	0.385
3	Health and Survival	103	0.819	114	0.953
4	Political Empowerment	20	0.962	147	0.940

The Global Gender Gap Score stands at 68%. This means, approximately there is 32% gap to close and according to the data no country has achieve parity. In 2018 Index, India got overall 108th position among 149 countries worldwide. India ranks below the global average with 33% gap yet to be bridge. As the table 1.1 shows the Global Gender Gap Index examine the gap between men and women across 4 fundamental categories (sub-indexes) and 70 gender related indicators that provide a fuller context for the country's performance. Let's discuss it in reference of India.

1. Economic Participation and Opportunity: With 142nd and 38.5% score, the gender gap looks mammoth. Proportion of unpaid work is quiet high in women. Higher gender gap is also found in legislator, senior officials and managers as well as professional and technical worker. What are the reasons behind it? Our customs / traditions / social norms or anything else. To encourage women participation in economic activities, we need family friendly policies. World Bank's Vise President, Southern Asia, Annelle Dixon told about their program "The Skill India Mission, in India is training women and also making sure that training systems are becoming more sensitive to their needs." We need families to see their girls as capable future professionals. Household responsibilities should be equally divided between men and women.

According to International Labor Organization (ILO 2018), in India around 32% women aged 15 to 64 participating in labor market, while 80% of male of same age group. The gender gap is quite wide. Besides this, women are also more likely than men to work in Non-Standard Forms of Employment (NSFE), like part time work, temporary agency work, dependent self-employment etc. The reason behind their higher presence in NSFE are: their domestic responsibilities, care giving responsibilities, the structure of economy, women's lower bargaining power because of their lower unionization rate and lower coverage by collective agreements.

The latest available time use survey data shows that in India, 4.57 hours of women's time devoted to unpaid care work. When the number of hours spent in paid and unpaid work are combined, women's working hours are longer than men. This is why women who work for pay are often said to work a "Second Shift", one at work and another at home.

Table 2 : Per Day Working Hours in India

Gender	Paid Work	Unpaid work	Total
Women	2.4	4.57	7.37
Men	6.0	0.31	6.31

(Source: ILO, 2018)

It is the right time to revise and reform outdated laws

and policies that act as an obstacle to women entering or staying the labor market. Fostering the creation of better jobs providing support for child and elder care and ensure mobility to and from work can remove significantly, the structure barriers for women to access employment. Employers need to talk and commit to supporting diversity at the work place by hiring women and paying them same wages as men for similar jobs. The private sector should take leading role in expanding women's share of employment and firms' ownership in emerging industries.

2. Education Attainment: India scores 0.953 with 114th rank in this subindex. Through there is an improvement in score from 2006 (0.819). India closed its tertiary education gender gap for the first time and keep primary and secondary education gap closed for the third year running and achieved parity. But the country is still lacking in literacy rate with score 0.882 and 121st rank worldwide. Literacy rate in 65+ and 25 to 54 age group or elder education is still lacking in India, so the parameter needs an improvement. India has had a patriarchal structure of society for many generations. Gender inequality and gender bias practices have prevented women from availing opportunities that have been easily offered to their male counterpart and it is still reflecting in literacy rate in 65+ age group. The female literacy rate in India is gradually increasing every year. This is reflective of two things- one is the slow and steady change in the mindset of people, especially parents of girl, who are now sending their daughters to primary schools. Two, the easy availability of school, universities and institutions for primary and further education for girls and women. Distant education is also playing a vital role in women education.

3. Health and Survival: Health is significantly determined by social, economic and environmental factors that lie beyond the health sector. Factors such as poverty, education and physical security plays a vital rale in health and survival. With 147TH rank worldwide, India continues to rank third lowest in the world in this subindex. India remains unimproved country, at the contrary the gender gap widens this year as sex ratio at birth is remain in favor of male child. According to WHO sex ratio at child birth is 110 males per 100 females. Though the life expectancy at birth is improving but the disease burden is different between men and women. The survival and nutritional status of children under 5 years of age have improved steadily. However, Children of mothers with lower education level and children from lower income group of rural households tend to fare worse.

The solution remains with forward looking policies, and their effective implementation through suitable institutional mechanism. It is important to put a gender perspective in to health interventions in India. When applying a gender lance to health, it is important to remember that gender interacts with other forms of social exclusion, such as ethnicity, age, sextual orientation and socio-economic position.

4. Political Empowerment: Though women were given equal voting right, the day India become independent. India has also produced a number of powerful and consequential women politician, more than most democracies. Indira Gandhi, J. Jaylalitha, Mayawaty, Sushma Swaraj, Mamta Banerjee and so on. They have held and still hold power at the highest levels in state and national politics. India ranks 20th in Political Empowerment, better than the other dimensions of the Index. But the gender gap is at its highest level with the score 0.382 in 2018. India lacking in other indicators of this subindex like, gap between men and women at the highest level of political decision making, the ratio of women to men in ministerial positions and the ratio of female and male heads of the state in the past 50 years. The gender gap score below 0.3.

Though the 73rd constitutional amendment ensures by reserving 33% seats (the 33% quota was raised to 50% in 2009) for women in Panchaity Gaj System. Several states have attended gender parity in municipal bodies, but the Women Reservation Bill, which is still pending in parliament that that will ensure women representation in both the state and national assembly. The greatest obstacle, women faces are the political parties, who refuse to field a fair number of female candidates. In 1952, women comprised 6% of India's first Lok Sabha. 62 years later, the representation of women in Lok Sabha in 2014 reached out on all time high of 12.15%. The situation is worse at the state level, where the average representation ratio of women is only 7.3%.

Conclusion: Unicef says, in Indian girls and boys see gender inequality in their homes and community every day, in textbooks, in movies, in the media and among the men and women, who provide them help and support. Across India gender gap results in inequal opportunities and while it impacts in the lives of both the gender, statistically it is female that are more disadvantaged. Globally the girls have higher survival rate and birth rate, are more likely to be developmentally on track, and just as likely to participate in preschool, but India is the only large country, where more girls die than boys. Girls are also more likely to drop out of school.

In India girls and boys experience adolescence differently. While boys tend to experience greater freedom, girls to face extensive limitations on their abilities to move freely, and to make decision affecting their work, education, marriage and social relationship. As girls and boys age, the gender barriers continue to expand and continue in to adulthood, where we see only a quarter of women in the formal work place. Some Indian women are global leaders and powerful voice in diverse fields but most women and girls in India don't enjoy many of their rights due to deeply rooted deeply entrenched patriarchal views, norms, traditions and structures of society. There are risk, violations and vulnerability women faces, just because they are women. Most of these risks are directly linked to the economic, political, social and cultural disadvantages women

deal with in their daily lives. This became acute during crisis and disasters.

With the prevalence of gender discrimination and social norms and practices girls become exposed to the possibilities of child marriage, teenage pregnancy, child domestic work, poor education and health, sexual abuse, exploitation and violence. Many of these manifestations will not change unless girls are valued more. **India will not fully develop unless both men and women are equally supported to reach their full potential.**

References:-

1. Anker, Richard, 1998, Gender and Jobs Sex Segregation of Occupation in the World. ILO.
2. International Labor Organization and The Organization of Economic Cooperation and Development. Japan G20 Precedency. (2019) Women at Work in G20 Countries: Progress and Policy Action. 2019.
3. Lok Sabha Secretariate Reference Note No. 9/RN/Ref./ February/2016. Safety of Women: Challenges and Measures Implementations.
4. Lok Sabha Secretariate Reference Note No. 207/RN/ Ref./July/2018. Girls Education In India.
5. National Family and Health Survey. (NFHS), Mumbai. India. International Institute of Population Sciences. Report 2017.
6. World Economic Forum. Geneva. (2018). The Global Gender Gap Report 2018.
7. World Health Organization. Regional office. South East Asia. (2017). India: Gender and Health. 2017.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

भारतीय युवाओं में नशे की चुनौतियां एवं समाधान

हेमन्त कुमार मिश्रा *

* पोस्ट डॉक्टोरल फेलो, आई सी एस एस आर, नई दिल्ली, भारत

प्रस्तावना – समाज वैज्ञानिकों एवं इतिहासकारों का मानना है कि पिछली चौथाई सदी में, व्यसन के इतिहासकारों ने व्यसन के राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अर्थों को प्रासंगिक बनाने पर ध्यान केन्द्रित किया है। हैरी जीन लेवाइन के क्लासिक 1978 के लेख, 'द डिस्कवरी ऑफ एडिक्शन' पर धारणा विकसित करते हुए इतिहासकारों ने सुझाव दिया है, कि कुछ पदार्थों का अवैध या वैध रूप में वर्गीकरण हमें सामाजिक मानदंडो और शक्ति सम्बन्धों के बारे में अधिक बताता है, न कि स्वयं पदार्थों के साइकोफामार्कोलॉरुजिकल गुणों के बारे में (हैरिंगटन 1987, कुशनर 2011:75 से उद्धृत)।

इतिहासकारों ने व्यसन की परिभाषाओं का संदर्भ देते हुए हमें सचेत किया है, कि कस हद तक शराब निषेध और नशीले पदार्थों और उत्तोजक पदार्थों के अपराधीकरण ने मजबूत वैज्ञानिक निष्कर्षों के बजाय प्रमुख सांस्कृतिक मूल्यों को प्रतिबिम्बित किया है। यह अध्ययन व्यसन के उपचार और नियंत्रण के लिए एक बौद्धिक चुनौती पेश करते हैं। हालांकि, अब तक उन्होंने व्यसन-नीति और उपचार पर कम महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। हाल के एक लेख में उन्होने तर्क दिया कि व्यसन के इतिहासकारों को जीव विज्ञान को गंभीरता से लेना चाहिए। (कुशनगर 2006, कुशनर 2011:76 से उद्धृत)।

भारत में संघीय सरकार ने व्यसन अनुसंधान के लिए दो अलग-अलग प्रभाग बनाएं हैं- (1) नेशनल इंस्टीट्यूट ऑन अल्कोहल एब्यूज एण्ड अल्कोहलिज्म, जिसने विशेष रूप से अल्कोहल पर ध्यान केन्द्रित किया है, और (2) नेशनल इंस्टीट्यूट ऑन ड्रग एब्यूज, जिसने अन्य सभी नशीले पदार्थों के उपयोग का अध्ययन किया है। अल्कोहल को अन्य दवाओं से आधिकारिक रूप से अलग किए जाने के बावजूद, हाल के एक संग्रह आल्टरिंग अमेरिकन कॉन्शसनेस रूद हिस्ट्री ऑफ अल्कोहल एंड ड्रग यूज इन द यूनाइटेड स्टेट्स, 1800-2000 में इतिहासकार सारा डब्ल्यू ट्रेसी और कैरोलिन जीन एकर का तर्क है, कि उन्हे एक साथ लाना न्यायोचित, 'कानून द्वारा बनाई गई खाई के बावजूद, जो उन्हें कानूनी और अवैध श्रेणियों में अलग करती है, सभी साइकोएक्टिव ड्रग्स महत्वपूर्ण समातनाएं साझा करते हैं' (ट्रेसी और एकर 2004 पृष्ठ 22 सी0एफ0 कुशनर 2011:76)।

सदियों से भांग, अफीम और कोकीन जैसी नशीली दवाओं की खेती की जाती रही है और यह औषधीय रूप के साथ ही मनोरंजक रूप से उपयोग की जाती रही है। माना जाता है कि अफीम की खसखस को सबसे पहले 3400 ईसा पूर्व में आधुनिक इराक के पास के क्षेत्र में उगाया गया था। अफीम का उपयोग मुख्य रूप से एक एनाल्जेसिक/दर्दनिवारक और संवेदनाहारी/पीड़ाहारी के रूप में किया जाता था, लेकिन 1800 के दशक की शुरूआत में डाइपोडमिर्क सुई के विकास तक चिकित्सा उपयोग व्यापक नहीं हुआ (मस्टो, कोर्समियेर और मलूसी 2002, हसीन, डेबोरा और कीज, कैथरीन 2011 से उद्धृत)।

ऐतिहासिक विश्लेषण यह भी इंगित करता है कि प्राचीन चीन में 2737 ई0पू0 में मारिजुआना का मनोरंजक और चिकित्सकीय रूप से धूमपान किया जाता था। मस्टो 1999, कुशनर 2011 से उद्धृत)। दक्षिण अमेरिका में समाज सदियों से कोकीन बनाने के लिए उगाए जाने वाले पौधे कोका को उगाते और खाते हैं। सेवन का सबसे आम तरीका कोका पौधे की पत्तियों को चबाना है, या पत्तियों को चाय में मिलाना है (स्ट्रीटफिल्ड 2002, कुशनगर 2011 से उद्धृत)। बीसवीं शताब्दी में फार्माकोलॉजिकल ज्ञान में नवाचारों ने सिंथेटिक दवाओं के विकास के लिए नेतृत्व किया है, जैसे कि लिसेर्जिक एसिड डायथाइलैमाइड, एक मतिभ्रम के रूप में वगी र्कृत और मिथाइलेन-डाई- ऑक्सीमेथाफेटामाइन एक एम्फैटेमिन के रूप में वगीर्कृत है।

सन् 1960 के दशक से पहले पश्चिमी देशों में, नशीली दवाओं का उपयोग दुर्लभ था और व्यापक रूप से अलग-अलग परिणामों के साथ हेरोइन पर केन्द्रित प्रसार को सम्बोधित करने वाले कुछ अध्ययन। माना जाता है कि उन्नीसवीं और बीसवीं सदी की शुरूआत में मुख्य रूप से क्षय रोग से पीड़ित व्यक्तियों की पीड़ा को कम करने के लिए मॉफिन को मुख्य रूप से निधार्रित किया गया था, हालांकि अनुभवजन्य रूप से घटना और व्यापकता का अनुमान लगाने के लिए कोई डेटा उपलब्ध नहीं है। गृह युद्ध के दौरान, यह माना जाता है कि 400,000 से अधिक सैनिक मॉफिन पर निर्भर हो गए थे, क्योंकि यह दर्द से जुड़े युद्ध के घावों के लिए उदारतापूर्वक निर्धारित किया गया था (DuPont 1973, Greene et al. 1975 andSinger 1971, c.f. Kusner 2011)।

सन् 1960 के दशक में संयुक्त राज्य अमेरिका में नशीली दवाओं के उपयोग के अधिक व्यवस्थित सवेर्क्षण शुरू हुए। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑन ड्रग एब्यूज और बाद में मादक द्रव्यों के सेवन और मानसिक स्वास्थ्य सेवा प्रशासन द्वारा किए गए नशीली दवाओं के उपयोग पर राष्ट्रीय घरेलू

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

सर्वेक्षणों की एक श्रृंखला से पता चला है कि 1960 के दशक के अंत के बाद अवैध दवा का उपयोग, विशेष रूप से मारिजुआना में बहुत वृद्धि हुई है।

सन् 1960 के दशक के अंत में हीरोइन का उपयोग भी बढ़ गया, जब उपयोगकर्ताओं की प्रोफाइल 'बोहेमियन' से आंतरिक शहर, बेरोजगार पुरूषों में बदल गई। 1975 से संयुक्त राज्य अमेरिका के युवाओं (140) के वार्षिक सवेर्क्षणों से संकेत मिलता है कि - 12वीं कक्षा के 50 प्रतिशत छात्रों ने एक अवैध दवा का उपयोग किया है, 1982 में 66 प्रतिशत की उच्च, 1992 में 41 प्रतिशत की निम्न दर, और 2004 में 51 प्रतिशत। सन् 1975 के बाद से, 80 प्रतिशत से अधिक छात्रों ने महसूस किया कि मारिजुआना आसानी से उपलब्ध था, 1992 में 82.7 प्रतिशत से लेकर 1998 में 90.4 प्रतिशत तक।

मादक पदार्थो के दुरुपयोग को मादक-द्रव्य व्यसन व्यवहार की श्रेणी में रखा जा सकता है। इस प्रकार का व्यवहार स्वास्थ्य समस्या के साथ एक सामाजिक समस्या के बहुआयामी दृष्टिकोण को स्थापित करता है। यह व्यवहार किसी व्यक्ति के सामाजिक समायोजन की कमी को दर्शाता है, जिसका परिणाम समाज के लिए खतरनाक सिद्ध होता है। दुनिया के पश्चिमी देशों में मादक-द्रव्यों के दुरुपयोग को लंबे समय से एक प्रमुख सामाजिक समस्या के रूप में जाना जाता रहा है। दूसरी ओर भारत जैसे विकासशील देश में इसे पिछले चार दशकों से सामाजिक समस्या के रूप में पहचान मिली है। ऐसा मानाजाता है, कि वर्तमान में भारत मादक पदार्थों का पारगमन केन्द्र बन चुका है। यहां तक किमादक पदार्थो के दुरुपयोग का प्रचलन भारत में भी खतरनाक रूप ले चुका है।

भारत में अन्य वर्ग की अपेक्षा बच्चों व युवाओं में नशा खोरी की लत लगातार बढ़ती जा रही है। भारत में एक गैर सरकारी संस्था के सर्वे में जो तथ्य निकलकर सामने आये, उसके अनुसार 63.6 प्रतिशत मरीज जो नशाखोरी की आदत छुड़ाने के लिए आते हैं, उनकी आयु 15 वर्ष से नीचे हैं। एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार 13.1 प्रतिशत लोग जो ड्रग्स के आदी है 20 वर्ष की आयु के नीचे के हैं। हीरोईन, अफीम, एल्कोहल, कैनविस, और परोपोसीफिंस, पाँच प्रकार के ड्रग्स भारतीय बच्चों द्वारा बड़ी मात्रा में इस्तेमाल किये जा रहे हैं। सवेर्क्षण के आधार पर बताया गया है कि एल्कोहल, कैनविस और अफीम के 18 वर्ष से कम आयु के उपभोगकर्ता क्रमश: 21 प्रतिशत, 3 प्रतिशत, 0.1 प्रतिशत हैं। आजकल बच्चों में ड्रग्सध्नशे को इंजेक्शन के माध्यम से भी लेने का ट्रेंड चल पड़ा है, और एक सुई का इस्तेमाल कई बच्चे कर रहे हैं, जिसके चलतेक्खत का खतरा भी बढ़ रहा है।

किशोरों में मादक द्रव्यों के सेवन के जोखिम कारक

किशोरों में मादक द्रव्यों के सेवन के जोखिम कारकों पर त्रिपाठी और लाल (1999:570) ने बताया कि-

1. सहकर्मीकारक, व्यक्तित्व, व्यवहार (उदाहरण के लिए साथियों का नशा, खराब आत्मसम्मान, आक्रामकता)
2. पारिवारिक कारक (जैसे पारिवारिक दवा का उपयोग, पारिवारिक संघर्ष और अस्थिरता)
3. स्कूल के कारक (जैसे खराब शैक्षणिक प्रदर्शन, कम बुद्धि)
4. सह-मौजूदा मनोरोग विकार (जैसे ध्यान कम लगने का विकार, अवसाद, आचरण विकार)
5. सामाजिक अव्यवस्था
6. प्रारंभिक और लगातार समस्या व्यवहार (उदाहरण के लिए नशीली दवाओं के उपयोग की शुरुआत)

वर्तमान में बच्चों द्वारा निम्न प्रकार के ड्रग्स इस्तेमाल किये जा रहे हैं-

1. टोबेको (Tobacco) सिगरेट, बीडी, गुटका,
2. एल्कोहल- बीयर, बिस्की, रम, बोड़का।
3. कैंनबिस- भांग, गांजा, चरस।
4. इनहैलेन्ट- इंक इरेजर, फ्लूड, ग्लू, पैट्रोल।
5. ओपिओइड्स-अफीम, हीरोईन, फार्मास्यूटिकल ओपिओइड्स
6. सेडेटिवस-Diazepam, Nitragepam, Alprazolam.

तालिका-1: नशीली दवाओं की श्रेणी एवं उदाहरण

क्र.	वर्ग/श्रेणी	उदाहरण
1	सीएनएस अवसादक	शराब, हिप्नोटिक्स, चिंतारोधी दवाएं
2	सीएनएस उत्तेजक	एम्फैटेमिन कोकीन
3	गहरा नशा	अफीम, हेरोइन, मॉर्फिन, बुप्रेनॉर्फिन
4	कैनाबिनोल	गांजा, भांग, चरस
5	मतिभ्रम	एलएसडी, मेस्केलिन, साइलोसाइबिन
6	सॉल्वैंट्स	पेट्रोल, पेंट थिनर, गोंद
7	अन्य दवाएं	एंटीहिस्टामिनिक्स, कफ सिरप
8	निकोटीन	तम्बाकू और तम्बाकू उत्पाद

स्रोत : बी.एम. त्रिपाठी और राकेश लाल (1999:572)।

भारत जैसे निम्न और मध्यम आय वाले देशों में तम्बाकू के बोझ को कम करना महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। जहाँ भारत में दुनिया के 80% तम्बाकू उपयोगकर्ता निवास करते हैं और वैश्विक स्तर पर तम्बाकू से संबंधित सबसे ज्यादा मौतें भारत में होती हैं (WHO 2016, c.f. Melisa et al, 2016:624)।भारत में एक तिहाई से अधिक (15 वर्ष के) लोग किसी न किसी रूप में तम्बाकू का उपयोग करते हैं, जो सालाना दस लाख मौतों का कारण बनता है (सेण्टर फॉर डिजीज कन्ट्रोल 2010, c.f. Melisa et al- 2016:624)। यहाँ, 5500 युवा हर दिन तम्बाकू का उपयोग शुरू करते हैं। और 13 से 15 साल के स्कूल जाने वाले युवाओं में से 14.6% वर्तमान में तम्बाकू का उपयोग करते हैं। हालांकि, इस बोझ को कम करने के प्रयासों को सूचित करने के लिए कुछ हस्तक्षेपों को डिजाइन और मूलयांकित किया गया है (Melisa et al- 2016:624)।

बच्चों में नशा खोरी की लत का अध्ययन करने वालों का कहना है कि ज्यादातर बच्चों को नशे की लत उनके वयस्क या हम उम्र नशा खोरो के जरिये ही लगती है। परिवार की उपेक्षा के कारण ये भोले-भाले बच्चे नशा करने वालों को ही अपना सच्चा साथी मानते हैं और नशे के आदी बन अनेक प्रकार के शोषण का शिकार बन जाते हैं। नशे की गिरफ्त में आये ये बच्चे जब मनचाहा नशा नहीं कर पाते तो वे खून में बढ़ती मादक पदार्थों की मांग को पूरा करने के लिए शरीर के लिए घातक पदार्थों का भी सेवन करने लगते हैं, जैसे कि बोन फिक्स, व्यूफिक्स, और आयोडेक्स, कई बच्चे तो केरोसीन और पेट्रोल सूंघकर/पीकर नशे की प्यास बुझाते हैं। कुछ बच्चे नशे में इतने अंधे हो जाते है कि अपना घर छोड़कर भाग जाते है, नशे के गुलाम ये बच्चे या तो बेमौत मर जाते हैं या फिर अपराध की अंधी दुनिया में प्रवेश कर समाज और देश के लिए विकट समस्या बन जाते हैं। इनमें से अधिकांश बच्चे रेलवे स्टेशन, बस स्टैन्ड इत्यादि पर रहकर भीख मांगते है और रात में संगीन वारदातों को अंजाम देते है। देश में बच्चों के

अनेकों ऐसे गिरोह बन चुके है जिनका दुरूपयोग बडे–बड़े लोग घर बैठकर करते और बच्चों की कमाई से अय्याशी करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. UNICFE, Publication Section, Division of Communication, UNICFE, NY-The State of the world's children 2006- Excluded and Invisible.
2. A Yuku D. Kaplan CD, Baars HM, De Vries MW. Characteristics and personal social networks of the `on' the street of the street, shelter and school children in eldoret Kenya, 2004
3. Mehra, Jyoti, New Delhi, India : National Report, Ministry of Welfare, UNDCP, UNICFE WHO and Naco : 1996. Reducing Risk Behavior Related to HIV/AIDS, STDs and Drug Abuse Among Street Children.
4. Bhat D.P., Singh M, Meena GS, Screening for abuse and mental health problems among illiterate runaway adolescents in an Indian metropolis, Arch Dis child-2012.
5. Pagare D. Meena GS, Singh MM, Sahu R, Risk factors of substance use among street children from Delhi, Indian Pediatr -2004.
6. Praveen D. Maulik PK, Raghavendra B., Khanm, Guggilla RK. Bhatia P. Determinants of inhalant use among street children in a south Indian city 2012.
7. Thapa K, Ghatane, S. Rimal SP, Health Problem among the street children of Dharam Municipality. Kathamandu Univ. Med. J. 2009.
8. Sharma S, Lal R. Volatile Substance misuse among street children in India. A Preliminary report substance misure, 2011.
9. National Institute on Drug Abuse (NIDA) preventing drug & use among children and adolescents. A research based guide for parents, educators, and community leaders, 2nd ed. 2010.
10. Adolescent Drug abuse Awareness & Prevention Editorial Indian J. Med Res. June 2013.
11. Sinha DN, Reddy KS, Rahman K. Warren CW Linking Global Youth Tabacco Survey data to the WHO framework convention on Tobacco Central : Indian J. Public Health 2006.
12. Jena R. Shukla TR, Drug abuse in a rural community in Bihar : Some Psychological Correlates. Indian J. Psychiatry, 1996.
13. Narain R., Satyanarayana L. Tobacco use among school students in India : The need for behavioral change. Indian Rediatr. 2005.
14. Deepti Pagare, G.S. Meena – Risk Factors of substance use among street children from Delhi-2003.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Impact of Pilates Yoga on Fitness & Health

Dr. Pravita Khatri*

***Associate Professor (Physical Education) JAV Girls Degree College, Baraut (Baghpat) (U.P.) INDIA**

Abstract - Pilates Yoga fuses the stretching and balance of Yoga with the muscle tone of Pilates. The objective is to promote “enjoyment of life through the body”, creating balance between the muscles, lengthening the spine, and freeing the back and chest.

There are many benefits of practicing yoga and Pilates: as the body begins to function is at its peak, stamina rises, strength improves and body confidence hits an all-time high. There are opportunities to modify postures according to experience, and to focus on key areas of the body in order to perfect the pose. Simple props are also recommended for less flexible students.

Pilates aligns the muscles in the back and abdominals, to create a vita support for the torso and internal organs, with a revolutionary impact on posture.

Pilates Yoga is a dynamic combination for maximum effect, simple exercises to tone and strengthen the body. Both Pilates and yoga are low-impact exercises, but there is one important difference. When participating yoga, you typically adopt a position and hold it, or flow into a different position. In Pilates, you adopt a position and then challenge your core by moving your arms or legs. Yoga focuses more on flexibility and broad muscle groups while Pilates focuses on muscle toning, body control and core strength.

Introduction - Exercise is well documental as having various health benefits. Abundant evidence suggests that regular physical activity is associated with lower obesity rate and cardiovascular disease incidence, better sleep pattern and slower aging-related deterioration of the immune system. Individuals who exercise routinely also tend to report better mood states than those who do not.

Indeed, exercise is generally accepted as an integral component of health-promoting behaviour, defined as a broad set of lifestyle elements-including consuming nutritious foods, maintainingadequate sleep, minimizing stress, and staying away from health-detrimental habits such as smoking-positively related to better health. From a pubic health standpoint, exercise is one of the most cost-effective means by which public health goals can be attained.

Among many kinds of physical activity programs, it is note worthy that Pilates and yoga have gained increasing popularity amongst the general public over the past two decades. Pilates and yoga are particularly appealing due to their direct benefits on physical wellbeing-including weight control and improved posture, flexibility and cardio-vascular function-that come with low risks of sports-related injuries, Evidence of the direct health benefits of Pilates and yoga is growing : some studies showed that regular engagement in Pilate is associated with a boost in functional anatomy, balance, flexibilityand musclestrength.

Holistic Fitness : Exercise Mind and Body: More of us are looking for fitness programs that address not just the body but the mind, too. Yoga and Pilates are the two leading forms of mind-body fitness taught in the west. If practical regularly, they can benefit every aspect of our lives, from our posture to our moods, and our physical well-being to our sense of happiness and peace.

Yoga and Pilates have evolved as they have beentaught and studied, and as our understanding of the body has developed. Yoga Pilates is the latest incarnation of mind-body exercise, a practice that draws on both systems to create a dynamic and fully integrated workout.

What is Pilates?

Pilates is a very focused from of exercise that helps to strengthen the body without adding muscle bulk. Over time it helps to develop a sculpted, toned physique.

The Pilates system was created by Joseph Pilates in the early 20th Century. Pilates developed an in interest in fitness during a sickly childhood in Germany. The studied many forms of exercise, including Yoga, gymnastics and body building.

Pilates is based on the idea that bad habits or injuries lead to imbalance and weakness in the body controlled, repetitive actions are used to realign and re-educate the body. Mental focus and breathing techniques are used to encourage graceful movements and improvedawareness.

What is Yoga?

Yoga is the best possible exercise there is for improving

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

suppleness. Yoga postures are more than physical poses, they work on the mind and spirit, and promote increased awareness, vitality and inner peace.

Anyone can practice Yoga. No matter what level of fitness or ability you have you can enjoy the benefits of this ancient discipline. Yoga is a good way of improving and maintaining good health, but it works on much more than just the body. Conceived as a form of spiritual training, the main aim of yoga is to create harmony between the mind, body and spirit. It is worth nothing that the word yoga is Sanskrit for union.

Much of what we know about the philosophy of Yoga comes from a text called the Yoga sutras, written about 2000 years ago by the Indian sage Patanjali.

He described yoga as an eight-fold path to enlightenment. Physical postures (asana), breathings exercises (pranayama) and meditation (dhyana) are all aspects of this spiritual pathway.

Patanjali described how are can transform ourselves through the practice of Yoga, gaining control over the mind and emotions and overcoming obstacles to self-realization. At the highest level of practice, we can transcend human consciousness and achieve oneness with the universe.
As one practise yoga, each asana will become more familiar to them. Practising the asanas in the right order will help you gain the very most from Yoga. Always end the yoga session with a full relaxation.

Pilates Yoga : an integrated system : Pilates yoga can be combined to create a fitness programme tailored to individual needs. Pilates & yoga naturally share many features. For example, some Pilates exercises are based on yoga poses, and both practices emphasize the importance of good breathing, awareness, and of working within your own abilities.

Pilates Yoga aims to take the best from both methods, combining the core strength that is the fundamental idea of Pilates with the flexibility and versatility of yoga. In practice, this might mean warming up with pilates, then moving on to a series of yoga postures in one session. No need to know yoga or Pilates in order to do yoga-Pilates, however if one is already a student of Pilates or Yoga, it can show new ways of working of mind and body.

For example, practicing Pilates may bring extra strength and stability to Yoga, while incorporating yoga into Pilates workout can help withrelaxation and breathing. In Yoga, great attention to detail is needed to perfect alignment. Practising Pilates may help to bring added strength to practice and enable to target specific areas of weakness.

Effect of Pilates Yoga on Health Promoting Behaviours : Pilates aims to achieve full control of one's behaviour through mind-body co-ordination and fitness, as its original name "Contrology" implies. Similarly yoga was developed and evolved to achieve the intigration of mind, body and spirit.

Pilates is designed to release stress, aid fatigue recovery, facilitate spiritual rejuvenation, and heighten self awareness and self confidence.

Yoga practitioners also aim to achieve similar goals. A growing body of evidence suggests that regularly practicing Pilates yoga brings many benefits for the people and their physical, emotional and psychological well-being.

Pilates is associated with improved mood states and quality of life among older adults. Even among healthy individuals, evidence suggests that Pilates is, in general instrumental in developing dynamic balance, flexibiity and muscle tone.

Despite the increasing popularity of Pilates and yoga among adults who desire to escape from by and sedentary lifestyles. Pilates and yoga's precise effects on a healthy balance restoration in life are less well known.

Health promoting behaviours refers to the activities geared toward promoting fitness and reducing physical and mental damages.

Conclusions : It is essential to ensure that people practice a healthy lifestyle with a beief about its positive effect on their health. Such a lifestyle should include a wholistic approach, taking both physical and pschological aspects of well-being seriously.

It this article, various elements of health-promoting behaviours can reinforce one author, highlighting the important role of exercise such as Pilates and yoga. Pilates and yoga help recruit health-promoting behaviours in all and engender positive beliefs about subjective health status. Promotion of Pilates and yoga can serve as an effective intervention strategy that helps individuals change behaviours adverse to health.

References :-

1. Thompson W.R. Worlwide survey of Fintess Trends for 2018. The CREP edition. ACSM'S Health Fit. J. 2917; 4:10-19.
2. Archer S.Pilates and Yoga Trends. [(accessed on 31 October 2017)]. IDEA Fit. J. 2008, 5:77-78.
3. Cold Well K., Adams M., Quin R., Harrison M., Greeson J. Pilates, Mindfulness and Somatic Education, J. Danc. Somat. Pract. 2013; 5:141-153.
4. Lesson D. The PMA Pilates, Certification Exam Study Guide. Pilates Method Alliana; Miami, FL,USA:2014.
5. Friedman P., Eisen G. The Pilates Method of Physical and Mental Conditioning. Viking; New York, NY, USA:2005.
6. Jones N. Mat 1, 2 and Toys. A Detailed Guide for teaching Pilates. Balanced body; Sacraments, CA, USA : 2007.
7. Selvalakshmi S. Effect of Yogic Practices on selected physiological variables among Postnatal Care Women. Int. J. Recent Res. Appl. Stud.
8. Pender N.J. Health Promotion in Nursing Practice. 2nd ed. Appleton and Lange; New York, NY, USA:1987.
9. Oliveira L.C., Oliveira R.G., Pires Oliveira D.A. Effects of Pilates on Muscle strength, Postural Balance and Quality of Life of Older Adults: A randomized, Controlled, Clinical Trial. J. Phys.Sci. 2015; 27:871-876.

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

राजसमंद जिले में मार्बल उद्योग की अवस्थिति को प्रभावित करने वाले कारक

बद्रीलाल रेगर* डॉ. वीना सनाढ्य**

* शोधार्थी (भूगोल) मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,उदयपुर (राज.) भारत
** सहायक आचार्य (भूगोल) एसएमबी रंगलाल कोठारी राजकीय महाविद्यालय, नाथद्वारा, राजसमंद, (राज.) भारत

शोध सारांश – राजसमंद जिले में कुल1844 मार्बल व 300 ग्रेनाइट खदानें, 3 हजार कटर, 500 मार्बल गैंगसा तथा 300 ग्रेनाइट गैंगसा कटर संचालित हैं, जिनमें 40 हजार श्रमिक नियोजित हैं। **अध्ययन** क्षेत्र राजसमंद जिला $23^{0}31'49.64''$ उत्तरी अक्षांश से $24^{0}30'16.57''$ उत्तरी अक्षांश और $74^{0}13'19.93''$ पूर्वी देशान्तर से $74^{0}58'59.58''$पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इस शोध पत्र का उद्देश्य शोधकर्ता द्वारा उन कारकों को विवेचन करना है, जो यहाँ मार्बल उद्योग की अवस्थिति को प्रभावित करते हैं। इस अध्ययन से विदित होता है कि, राजसमंद जिले में मार्बल उद्योग के विकास के लिए एक से अधिक कारक उत्तरदायी हैं, जिनमें मार्बल खनिज की उपलब्धता, जिले में मार्बल खदानों का परस्पर समीप अवस्थित होना, जिले में मार्बल व्यवसाय के लिए पर्याप्त पूंजी, बाजार, श्रम, परिवहन और संचार साधनों की उपलब्धता है इन सभी गायकों के सम्मिलित प्रभाव के कारण अध्ययन क्षेत्र में मार्बल उद्योग ने पर्याप्त उन्नति की है।

शब्द कुंजी– मार्बल खनिज, मार्बल उत्खनन, मार्बल प्रसंस्करण, मार्बल उद्योग, औद्योगिक अवस्थिति।

प्रस्तावना – राजसमंद का मार्बल अपनी सुंदरता, उच्च गुणवत्ता और मजबूती के लिए विख्यात है। यही कारण है कि 19वीं और 20वीं शताब्दी के दौरान, मार्बल उद्योग का तेजी से विकास हुआ। 19 दिसम्बर, 1966 को राजसमन्द में सर्वप्रथम 'स्टोन एण्ड मिनरल एसोसिएट लिमिटेड' के रूप संस्थागत रूप से मार्बल उद्योग की शुरुआत की। वर्तमान समय में राजसमंद जिले में कुल 1844 मार्बल व 300 ग्रेनाइट खदानें, 3 हजार कटर, 500 मार्बल गैंगसा तथा 300 ग्रेनाइट गैंगसा कटर संचालित हैं जिनमें 40 हजार श्रमिक नियोजित हैं। य क्षेत्र में मार्बल उद्योग के विकास का कारण केवल यहाँ मार्बल खानों कि अवस्थिति ही नहीं है, अपितु यहाँ ऐसे अनेक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक कारक विद्यमान हैं, जिन्होंने संयुक्त रूप से राजसमंद जिले में मार्बल उद्योग को उत्प्रेरित किया है। इस शोध पत्र में शोधकर्ता द्वारा इन्हीं कारकों को विवेचन करने का कार्य किया है। जिससे य क्षेत्र में मार्बल की अवस्थिति का विश्लेषण कर मार्बल उद्योगों की अवस्थिति संबंधी समस्याओं को चिह्नित कर उनका निराकरण किया जा सके।

अध्ययन क्षेत्र –राजसमंद जिला राजस्थान राज्य का एक महत्वपूर्ण जिला है। राजनगर शहर, राजसमंद जिला का मुख्यालय है। राजसमंद जिले का कुल क्षेत्रफल 4,768 वर्ग किमी है, जो राजस्थान राज्य का 1.32 प्रतिशत है। राजसमंद जिला, राज्य की राजधानी जयपुर से 352 किमी दक्षिण में अवस्थित है। राजसमंद जिला राष्ट्रीय राजमार्ग 48 पर स्थित है। राजसमंद जिला $23^{0}31'49.64''$ उत्तरी अक्षांश से $24^{0}30'16.57''$ उत्तरी अक्षांश और $74^{0}13'19.93''$ पूर्वी देशान्तर से $74^{0}58'59.58''$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। राजसमंद जिले में दिल्ली, अरावली और भीलवाड़ा सुपर ग्रुप से संबंधित चट्टानों को उपलब्धता है। राजसमंद जिला बनास नदी और उसकी सहायक नदियों के जलग्रहण क्षेत्र में स्थित है, यहाँ बहने वाली कुछ अन्य नदियां अरी, गोमती, चंद्रभागा है। **अध्ययन** क्षेत्र राजसमंद जिले की जलवायु 'शीतोष्ण कटिबंधीय मानसूनी जलवायु' मानी जाती है, **अध्ययन** क्षेत्र में कुल 11,56,597 जनसंख्या निवास करती है, जिसमें 5,81,339 (50.6प्रतिशत) पुरुष एवं 5,75,258 (49.74प्रतिशत) महिला जनसंख्या है।

मानचित्र–1

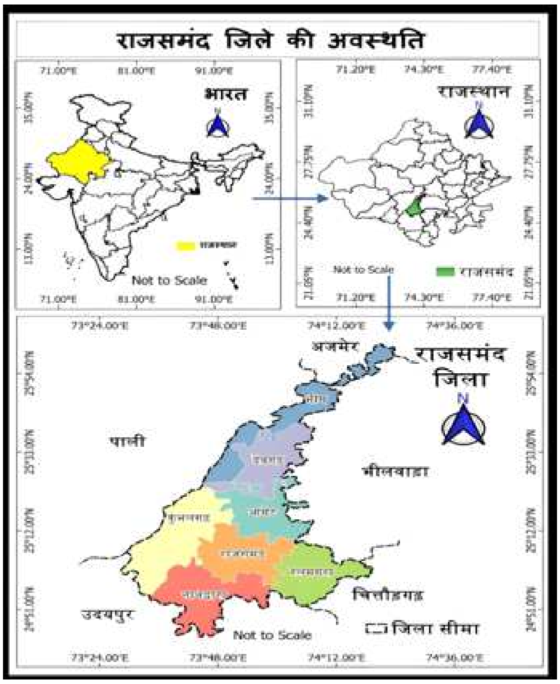

शोध के उद्देश्य– प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

क. अध्ययन क्षेत्र राजसमंद जिले में मार्बल व्यवसाय की अवस्थिति को निर्धारित करने वाले कारकों का विवेचित करना है।

ख. राजसमंद जिले में मार्बल व्यवसाय की अवस्थिति से संबंधित समस्याओं को रेखांकित और उनके निराकरण हेतु सुझाव प्रस्तुत करना है।

विधि तंत्र – यह अनुसंधान विवरणात्मक शोध प्रविधि पर आधारित है। इस शोध हेतु शोधकर्ता द्वारा द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया है, जिन्हें विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं के कार्यालय और वेबसाइट से प्राप्त किया गया है। तत्पश्चात, इन आंकड़ों का विभिन्न सांख्यिकी विधियों में द्वारा विश्लेषित किया गया है, एवं उससे प्राप्त निष्कर्षों को तालिकाओं और आरेखों द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

शोध परिणाम – यहाँ राजसमंद में जिले में मार्बल व्यवसाय की अवस्थिति को प्रभावित करने वाले मुख्य कारणों का विवेचन किया गया है–

कच्चा माल– देश में मार्बल के अनुमानित ज्ञात भंडार 1200 मिलियन टन है, जिसमें लगभग 90 प्रतिशत ज्ञात भण्डार अकेले राजस्थान में है। उत्पादन की दृष्टि से भी राजस्थान भारत में मार्बल का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है। राजस्थान देश के कुल उत्पादन का 94 प्रतिशत मार्बल उत्पादन करता है। राजसमन्द तहसील में 1243, आमेट में 428, कुम्भलगढ़ में 114, नाथद्वारा में 34, रेलमगरा में 23, और देवगढ़ में 2 मार्बल की खदानें हैं, कुल मिलाकर 1844 मार्बल की खदानें हैं।

तालिका 1 : राजसमन्द जिले में पायी जाने वाली मार्बल की खाने

तहसील	खदानों की संख्या
राजसमन्द	1243
आमेट	428
कुम्भलगढ़	114
नाथद्वारा	34
रेलमगरा	23
देवगढ़	2
कुल	1844

स्रोत: राजसमंद मार्बल एसोसिएशन, 2020

जलापूर्ति –राजसमंद जिले में स्वच्छ एवं सतही जल स्रोतों की निकटता ने इस उद्योग की अवस्थिति को प्रभावित किया है। जल का उपयोग मार्बल ब्लॉक की ड्रेसिंग करने, ब्लॉक को चीरने, स्लेब व टाइल्स को आकार में काटने, पॉलिशिंग करने तथा पीने के लिये किया जाता है।

तालिका–2: मार्बल प्रसंस्करण मशीन के अनुसार पानी की आवश्यकता

मशीन का नाम	मार्बल उद्योग में पानी की आवश्यकता (ली.)
ब्लॉक कटर	260
व्हील कटर	41
ग्राइडिंग एण्ड पॉलिशिंग मशीन	35
ऐज कटिंग मशीन	21
कम्परिंग एण्ड ग्रुविंग मशीन	16
डायमण्ड गैंग–सॉ	11

स्रोत: Smith, J. A. (2020)

राजसमंद जिले में इस उद्योग को जल गोमती, कोठारी, ताली, केलवा, खारी, बनास आदि नदियों से प्राप्त होता है। इन नदियों का जल जिले की विभिन्न राजसमंद सहित विभिन्न छोटी झीलों और तालाबों में संचित होता है, जिसे जलदाय विभाग द्वारा जिले के विभिन्न भागों में वितरित किया जाता है। इसके साथ ही इन नदियों के कारण राजसमंद जिले में भू–जल का स्तर भी तुलनात्मक रूप से ऊंचा है, जिसके कारण यहाँ मार्बल उद्योग के लिए भू–जल की उपलब्धता भी सहज हो गई है। इसी प्रकार राजसमंद के औद्योगिक क्षेत्र में गोमती नदी से निकली गई नहरों से भी जल की उपलब्धता सुनिश्चित की गई है।

शक्ति – मार्बल उद्योग के लिए शक्ति अपरिहार्य है। मार्बल खनन् में मार्बल ब्लॉक को चट्टान से विलग करने में ड्रिलिंग, चेन–सॉ, डायमण्ड–सॉ मशीन एवं क्रेन से ब्लॉक को उठाने में भारी शक्ति की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार मार्बल प्रसंस्करण इकाइयों में शक्ति का प्रयोग मुख्य रूप से मार्बल कटिंग और पॉलिशिंग मशीनों के संचालन में होता है। इन इकाइयों में विद्युत आपूर्ति का मुख्य स्रोत 'राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल' है, तथा उसकी 42 सब डिग्री स्टेशन राजसमन्द जिले में है। जिससे घरेलू, व्यापारिक, औद्योगिक, कृषि के रूप में विद्युत प्राप्त होती है।

जलवायु – राजसमंद जिले की जलवायु उपोष्ण कटिबंधीय मानसूनी जलवायु है। कोपेन के जलवायु वर्गीकरण के अनुसार राजसमंद जिले की जलवायु ❊Cwg❊ (उप आर्द्र जलवायु) है। मार्बल उद्योग के लिए इस जलवायु का अत्यधिक महत्व है, क्योंकि उप आर्द्र जलवायु में मार्बल कटिंग और पॉलिश मशीनें अधिक दक्षता और कुशलता पूर्वक ढंग से निष्पादन करती हैं। लेकिन वर्तमान युग में जलवायु का अवस्थिति प्रभाव कम हो गया है, क्योंकि वर्तमान में मार्बल प्रसंस्करण हेतु उपयोग में आने वाली सभी मशीनें पर्यावरणीय प्रभावों के प्रति सहनीय है, जो सभी प्रकार की जलवायु में समान रूप से निष्पादन करती हैं। जिले में आर्द्र शुष्क जलवायु होने के कारण प्राय: सभी प्लान्ट में आर्द्रता का नियंत्रण कृत्रिम साधनों द्वारा किया जाता है।

बाजार – विस्तृत स्थानीय, प्रादेशिक, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय बाजार की सुविधा ने राजसमन्द में मार्बल उद्योग को अत्यधिक आकर्षित किया है। जिले की सभी मार्बल प्रसंस्करण इकाइयां सड़क परिवहन द्वारा राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात आदि राज्यों के सभी प्रमुख नगरों से सड़क मार्ग द्वारा जुडे होने के कारण उत्पादित कच्चा मार्बल और प्रसंस्कृत मार्बल बिक्री के लिए अच्छा बाजार निर्मित हो गया है। विदित है कि कुल उत्पादित मार्बल का केवल 5 प्रतिशत भाग राजसमंद जिले में ही उपभोग किया जाता है तथा शेष 95 प्रतिशत राज्य के अन्य जिलों को जैसे उदयपुर, अजमेर, नागौर, (मकराना), जयपुर, कोटा, जिलों सहित गुजरात, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक जैसे राज्यों को भेज दिया कर दिया जाता है। इसके साथ ही कुछ उच्च गुणवत्ता का प्रसंस्कृत मार्बल कांडला बंदरगाह द्वारा निर्यात कर दिया जाता है।

परिवहन और संचार – कच्चे माल (ब्लॉक्स) को प्लान्ट्स तक लाने एवं तैयार माल (स्लेब व टाइल्स) को बाजार में वितरण करने हेतु, जिले में उपलब्ध परिवहन साधनों की सुविधा का इस उद्योग की अवस्थिति पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। हालांकि यहाँ मार्बल खनन् क्षेत्रों से जिला मुख्यालय तक की सड़कों की स्थिति अत्यंत जर्जर हो गई हैं। जिले कुल 2259.22 किमी लंबा सड़क मार्ग है। जिनमें राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 48

(पूर्व में NH-8) सबसे बड़ा मार्ग है। यह राष्ट्रीय राजमार्ग दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिल नाडु राज्यों को परस्पर जोड़ता है। इसी राष्ट्रीय राजमार्ग द्वारा ही राजसमंद से मार्बल कांडला बंदरगाह तक पहुंचाया जाता है, जहाँ से इसे अन्य देशों में निर्यात किया जाता है। वर्तमान में सूचना एवं संचार क्रांति के कारण यहां इंटरनेट आधारित संचार के अत्याधुनिक माध्यम लोकप्रिय हो रहे हैं। यहां इंटरनेट के लिए अधिकांश उपभोक्ता स्मार्टफोन, 4G इंटरनेट, फाइबर इंटरनेट का उपयोग कर रहे हैं। यहां सरकार द्वारा 'राष्ट्रीय ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क (NOFN)' के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों को ऑप्टिकल फाइबर के माध्यम से इंटरनेट से जोड़ रही है। इंटरनेट के माध्यम से मार्बल बाजार एकीकृत हो रहे हैं, जिससे उत्पादकों को अपने उत्पादों के लिए बाजार ढूंढना सरल हो गया है, जिससे खनिज उत्पादों की मांग और उत्पादन में वृद्धि हुई है।

पूँजी -**अध्ययन** क्षेत्र में मार्बल उद्योग के अंतर्गत लगभग 1000 करोड़ रुपये से अधिक पूंजी नियोजित होने का अनुमान है। इसमें मशीनरी, उपकरण, कच्चे माल और श्रम की लागत सम्मिलित है। यहाँ मार्बल उद्योग के परिचालन स्तर के आधार पर पूंजी की आवश्यकता भिन्न-भिन्न होती है। यह पूंजी विभिन्न स्रोतों से प्राप्त की गई है। **अध्ययन** क्षेत्र में मार्बल उद्योग के अंतर्गत पूंजी के निम्नलिखित स्रोत हैं-

क. स्व-वित्तपोषित: राजसमंद जिले में कई छोटी और मध्यम आकार की मार्बल इकाइयां स्व-वित्तपोषित हैं। इन इकाइयों के मालिक व्यवसाय शुरू करने और संचालित करने के लिए स्वयं अपना पैसा निवेश करते हैं।

ख. बैंक ऋण: जिले में 70 प्रतिशत से अधिक मार्बल इकाइयों को बैंक ऋण प्रदान करते हैं, लेकिन इस स्रोत की सबसे बड़ी समस्या अधिक ब्याज दरें और केवल चुनिंदा व्यापार घरानों को ही ऋण प्रदान करना।

ग. सरकारी ऋण: सरकार मार्बल इकाइयों को बैंकों की तुलना में कम ब्याज दरों पर ऋण प्रदान करती है। हालाँकि, ऋण राशि भी सरकार के बजट द्वारा सीमित है। इसलिए इस प्रकार का ऋण अत्यंत सीमित व्यापारियों को ही मिल पाता है। **अध्ययन** क्षेत्र में लगभग 12 प्रतिशत इकाइयां सरकार से ऋण लेती है।

घ. वित्तीय संस्थान: गैर बैंकिंग जैसे- वित्तीय संस्थान भी मार्बल इकाइयों को ऋण प्रदान करते हैं। इनकी ब्याज दरें बैंकों की तुलना में कम हैं, लेकिन ऋण राशि भी सीमित है। इससे सीमित राशि से मार्बल व्यवसाय का विकास संभव नहीं है।

ङ. निवेशक: कुछ मार्बल इकाइयों को निवेशकों द्वारा वित्त पोषित किया जाता है। निवेशक वे व्यक्ति या संस्थाएं हैं जो लाभ के हिस्से के बदले व्यवसाय में पैसा निवेश करते हैं। पूंजी के इस स्रोत में अधिकांश पूंजी का स्रोत काला धन होता है।

अध्ययन मार्बल उद्योग के अंतर्गत पूंजी की व्यवस्था करने में 'राजस्थान औद्योगिक एवं विनियोग निगम' तथा 'राजस्थान वित्त निगम' की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

श्रम - मार्बल उद्योग में अत्यधिक मशीनीकरण के उपरान्त भी मानव श्रम का उपयोग आवश्यक है। राजसमन्द जिला औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है व जनजातीय बहुल जिला है। अत: यहाँ श्रमिक आसानी से उपलब्ध हो जाते है। जनगणना, 2011 के अनुसार, राजसमंद जिले में खनन और उद्योग में कुल 1,18,185 लोग कार्यरत थे। इनमें से 1,11,281 पुरुष और 6,904 महिलाएं थीं। राजसमंद जिले में मार्बल उद्योग प्रमुख नियोक्ता हैं।

तकनीकी कारक - तकनीकी विकास राजसमंद जिले में खनन और मार्बल उद्योग की दक्षता बढ़ाने, सुरक्षा में सुधार, गुणवत्ता नियंत्रण बढ़ाने, पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने और लागत कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आधुनिक मशीनरी और उपकरण, मानवीय श्रम की अपेक्षा खनन कार्यों को अधिक दक्षतापूर्ण रूप से निष्पादित करते हैं। क्योंकि मशीनें लंबे समय तक और तेजी से काम कर सकती हैं, जिससे उत्पादन दर में वृद्धि होती है।

निष्कर्ष और सुझाव - उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि राजसमंद जिले में मार्बल उद्योग के विकास के लिए एक से अधिक कारक उत्तरदायी हैं जिनमें मार्बल खनिज की उपलब्धता, जिले में मार्बल खदानों का परस्पर समीप अवस्थित होना, जिले में मार्बल व्यवसाय के लिए पर्याप्त पूंजी, बाजार, श्रम, परिवहन और संचार साधनों की उपलब्धता है इन सभी गायकों के सम्मिलित प्रभाव के कारण **अध्ययन** क्षेत्र में मार्बल उद्योग ने पर्याप्त उन्नति की है। परंतु, **अध्ययन** क्षेत्र में मार्बल खनिज क्षेत्रों में टूटी और जर्जर सड़कें, मार्बल उद्योग में सरकार द्वारा उपलब्ध वित्तीय संसाधनों की न्यूनता, स्थानीय प्रशिक्षित एवं कुशल श्रमिकों का अभाव, जिले की जनसंख्या का निम्न जीवन स्तर आदि इस उद्योग की अवस्थित ही संबंधी समस्याएं हैं जिन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है विशेष रूप से परिवहन और वित्तीय क्षेत्र में सुधार करने के लिए सरकार द्वारा अभी और अधिक प्रयास करना अपेक्षित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Adewole, M. B., & Adesina, M. A. (2011). Impact of marble mining on soil properties in a part of Guinea Savanna zone of southwestern Nigeria. Ethiopian Journal of environmental studies and management, 4(2), 1-8.
2. Bhandari, S. (2000); Marble Resources, Mining &Processing in India; Key note address; National workshop on safety & technology in marble mining and processing in new millennium; Udaipur; March 10-11, 2000
3. Bohra, S. G. & Verdia, P. K. (1998); Marble Mining in Rajsamand – A brief History; Golden Jubilee Seminar on Mineral Development in Rajasthan, RAJMINEREX; Udaipur 3-5 July 1998.
4. Gupta, C. (1998); Development of Mining of Decorative and Dimensional stones in Rajasthan"; Golden Jubilee Seminar on Mineral Development in Rajasthan, RAJMINEREX; Udaipur 3-5 July 1998.
5. Gupta, K.P. & Bhatnagar, A. (2001); Total Resource Utilization in Marble Industry in Southern Rajasthan; Marble Safety week organized by DGMS, Udaipur, Jan. 2001
6. Menaria, K.L., Menaria, N., & Mathuria, P. (2000); Utilization of Marble Waste of Rajasthan in Manufacturing of Marketable Chemicals; National

workshop on safety & technology in marble mining and processing in new millennium; Udaipur; March 10-11, 2000.

7. Rathore, S.S. (2009); Environmental Effects and Gainful Utilization of Marble slurry Including Solid Waste; Symposium of Marble Wastes and Decreasing Environmental Effects; Itlay;16-17 Oct.2009.
8. Sharma, G.D. (1990); Mining, Processing and Trading of Marble, DDSR'90. Organized by Deptt. Of Mines and Geology. Rajasthan, Udaipur. April 26-27,1990
9. https://economictimes.indiatimes.com/company/stone-and-mineral-associates-limited/U74210RJ1966PLC002004
10. Smith, J. A. (2020). Environmental impacts of marble quarrying: A case study. Journal of Environmental Studies, 15(3), 123-134.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Textile Recycling

Dr. Punita Chordia*

*Professor (Home Science) Govt. Girls College, Nathdwara, Rajsamand (Raj.) INDIA

Abstract - The pressing issue of textile waste generation, estimated at 550,000 to 900,000 tonnes annually, predominantly from households. A significant portion ends up in landfills, with potential value of £400 million. Recycling textiles not only curtails landfill usage but also reduces resource strain, pollution, and energy consumption. Donations to charitable organizations and innovative recycling methods can minimize textile waste, with benefits for both the environment and the economy.

Introduction - Fleece, flannel, corduroy, cotton, nylon, denim, wool, and linen. What can you do with these fibres,when you are finished wearing them, sleeping on them, or draping them over your windows? Totalarising of textile wastes is estimated to be between 550,000 and 900,000 tonnes per year, withmost of this coming from household sources; textiles make up about 3% by weight of a household bin.

It is estimated that 400,000 to 700,000 tonnes of textiles are land filled every year, worth anestimated £400 million. At least 50% of the textiles going to landfill are recyclable. The amounts oftextile wastes reused or recycled annually in the UK are estimated to be 250,000 tonnes. Althoughthe majority of textile waste originates from household sources, waste textiles also arise during yarnand fabric manufacture, garment-making processes and from the retail industry. These are termedpost-industrial waste, as opposed to the post-consumer waste, which goes to sales and charityshops. Together they provide a vast potential for recovery and recycling.

Recovery and recycling provide both environmental and economic benefits.

Textile recovery:

1. Reduces the need for landfill space. Textiles present particular problems in landfill, as synthetic products will not decompose, while woollen garments do decompose and produce methane, which contributes to global warming.
2. Reduces pressure on virgin resources.
3. Aids the balance of payments as we import fewer materials for our needs.
4. Results in less pollution and energy savings, as fibres do not have to be transported from abroad.

One way to benefit both your community and the environment is to donate used textiles tocharitable organizations. Most recovered household textiles end up at these organizations, whichsell or donate the majority of these products. The average lifetime of a garment is about three years.Over 70% of the world's population use second hand clothes The remainders go to either a textilerecovery facility or the landfill.

Collecting fabric "rags" for re-use has a long history —not for making new textiles, but for making paper. Ancient Chinese historical documents record that the source of fibre for Ts'ai Lun's paper included discarded cloth and rags. After Gutenberg's invention of the printing press in Europe in 1455, there was a great demand for paper. At first it was made exclusively from old linen rags, but by the mid-1700s rags made from imported cotton were also used. When the first paper mill in America was constructed in l690, old linen rags were also the main source of fibre, although as cotton plantations developed in the South, cotton rags were also used.

With thebeginning of industrialization, demand for paper exceeded the supply of rags. By 1880, many newspapers were printed on paper made from wood pulp, and as mechanization made the process cheaper and cheaper, paper made from wood became the standard. It was likely that in pre- industrial times cotton cloth was reclaimed and reused as many times as possible because of its expense and rarity. Until industrialization, cotton was the most expensive form of cloth available. In 1800 it took about 12 to 15 days to produce cotton thread and only 2 to 5 days to produce linen.

Since prior to industrialization, women spun thread, wove fabric, then sewed garments for their entire family at home, every scrap of fabric that could be salvaged and reused meant a saving oftime, money, and energy for the homemaker.Today, recycled and reclaimed textiles are being usedto make a variety of products.

Reclaimed fabrics are fabrics such as scraps for making quilts or rag rugs, or items made from fabric items recut to make new items, such as t-shirts cut to make cleaning cloths. According to the Council for Textile Recycling US, nationwide over four million tons of post- consumer textiles enter the waste stream every year. Most go to landfills, but charity groups collect around a million tons. About half of the textile products collected are sold as second-hand items, and the rest eventually goes to rag graders. There they are sorted for different markets, or chopped up and reclaimed to make items such as blankets. Today, rags and certain vegetable fibre by-products are still used in making top-quality paper, such as that from which bank notes are made.

Technology now exists to make new cotton yam from gin waste, commercial fabric trimmings, and mills-ends, and used clothing. Recycled cotton is recovered cotton that would be wasted during theSpinning, weaving and cutting processes. Up to 40% of cotton grown is wasted between the harvestand the manufacture of garments. Yarn purchasers have many different grades, thickness andstrength options to choose from. Any yarn that is overproduced or does not meet the exacts specifications of the purchaser is considered waste, even though it is perfectly useable. This is the"waste" that is re-spun into new yarn. The irregular colours textures of this yarn reveal it'srecycledorigins and are not considered flaws. Paper made from recycled cotton is readily available in all finestationery and office supply stores. In the past, this waste went directly into landfills. By recyclingcotton wastes, we not only conserve landfill space, we reduce the amount of land, water, energy,pesticides and human labour that goes into cotton production.

Uses of Textiles:

1. Clothing
2. Sheets,towels, tablecloths
3. Curtains, mats, rugs, carpets
4. Furniture covers and stuffing
5. Rope, twine, canvas,sacking
6. Rags and dusters
7. Bags and toys

Recycling Textiles: Textile recovery facilities separate overly worn or stained clothing into a variety of categories. Some recovered textiles become wiping andpolishing cloths. Cotton can be made into rags or form a component for new high-quality paper.

Knitted or woven woollens and similar materials are "pulled" into a fibrous state forreuse by the textileindustry in low-grade applications, such as car insulation or seat stuffing. Other types of fabric can bereprocessed into fibres for upholstery, insulation, and even building materials. Buttons and zippersare stripped off for reuse. Very little is left over at the end of the recycling process. The remainingnatural materials, such as various grades of cotton, can be composted. If all available means of reuseand recycling are utilized, the remaining solid waste that needs to be disposed of can be as low as 5percent.

More than 500 textile-recycling companies handle the stream of used textiles in the UnitedStates. As a whole, the industry employs approximately 10,000 semi-skilled workers at the primaryprocessing level and creates an additional 7,000 jobs at the final processing stage. Primary andsecondary processors account for annual gross sales of $400 million and S300 million, respectively.

You can help by:

1. Giving unwanted clothes and accessories to local charity shops, or taking them to atextile bank.
2. Handing down children's clothes to younger brothers and sisters or other familymembers when one child has grown out of them.
3. Used clothing, linens and textiles by-productsprovide an important source of raw materials for the textile and paper manufacturing industries.
4. Buyyour goods carefully, things that you are likely to wear a long time and not go off ina couple ofweeks.
5. Look for recycled content in the garments you buy as some company state this on the label.
6. Buy cloth wipers that can be washed and used again rather than disposable paper ones.

References:-

1. "Style that's sustainable: Anew fast –fashion formula McKinsey"
2. Hawley, J.M.(2006-01-01). "Textile recycling: A system perspective "InWang,Youjiang(ed.). 2. pp.7-24.
3. Sandin, Gustav;Peter, Greg M. (2018-05-20)." Environmental impact of textile reuse and recycling – A review" Journal of Cleaner Production.184:353-365.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

A Study of Job Satisfaction of B.Ed. Trained Teachers Working at Primary Level in Relation to Their Teaching Effectiveness

Dr. Satish Chand*

***Asst. Professor (Teacher Education) Km. Mayawati Govt. Girls (P.G.) College, Badalpur G.B. Nagar (U.P.) INDIA**

Abstract - The investigators studies job satisfaction of B.Ed. trained teachers working at Primary level in Relation to their teaching effectiveness. Data were collected from 150 B.Ed. trained, Primary school teachers of Baghpat District. The investigators found the relationship of teaching effectiveness with job satisfaction. Job satisfaction was found to have a positive impact on teaching effectiveness of B.Ed. trained primary school teachers. Further more, teachers who are more job satisfied are most effective in teaching and who are less job satisfied are least effective in teaching. In the study it was also found that female teachers are more satisfied towards their job and most effective in teaching than male counterparts.

Introduction - Education is general and primary education is particular, is an essential input in the process of National development. Primary education is that crucial stage of education which lays the foundation of later development. Good primary education requires good teachers. It demand teachers who are more satisfied towards their job and possess effective teaching.

The role of teachers is influencing the future of our advancing development is becoming increasingly important. Practically every Commission, which has examined the educational problems of the country, has drawn specific attention to the teachers. **The Education Commission (1964-66)** also gave respectable status of teachers when it observed, " of all the different factor which influence the quality of education and its contribution to the national development, the quality competence and character of teachers and undoubtedly the most significant. Nothing is more important than securing a sufficient supply of high quality recruits to the teaching profession providing them with the best of work in which they can be fully effective". According to Programme of Action (POA) (1992) "Teacher performance is the most crucial input in the field of education. Whatever policies may be laid down in the ultimate analysis, these have to be interpreted and implemented by teachers as much through their personal example as through teaching learning process. Teacher selection and training competency motivation and the condition of work impinge directly on teachers performance." The teacher is obliged to transplant the best of the knowledge of the subject matter in the people in order to make him a better human being. Who can suitable fit himself in the socio-cultural milieu of the country. One who does it more usefully can clam to be effective in his profession must pass on his knowledge to be student to the maximum extent.

The concept of job satisfaction reveals inter relatedness of various elements at work with the physical condition of work such as working hours, the phenomena of monotony fatigue incentives, employees etc. People like to work is an environment. Which is favorable to his attitude and when he works like that, it is said that his satisfied with his work. The chief sources of job satisfaction are feeling of accomplishment, recognition and chance of advancement while dissatisfaction is related to job context. **According to Dale Yoder (1963)** "A job is collection of duties talks and responsibilities that are assigned to an individual and which is different from other's assignment."

According to Goyal "Job satisfaction is one of the determinants of efficiency which motivates the person to produce more." Job satisfaction is a widely accepted psychological aspect of functioning in any profession.

Gion (1958) "Job satisfaction is the extent to which the individual needs are satisfied and the extent to which the individual perceives that satisfaction is stemming from his total job situation."

"Teachers profession requires expert knowledge and specialized skill acquired and maintained through rigorous and continuing study and their application to the served

humanity." "Procession teachers are those who discover and act on their judgment and who develop ways of working collaboratively to make school better place for children and perhaps the profession a better place fort the teachers"

Review of the related Literature:-

Thakkar (1977) Conducted a study of potential teachers effectiveness and their educational attitudes in relation to their rapport with the students and job satisfaction. It was found that job satisfaction was positively and significantly related to the rapport of students teacher.

Olson (1979) Conducted that the criterion of teaching effectiveness having such components as classroom control knowledge of subject matter and rapport with students is relatively a better criterion that the product presage components criterion.

Shah Beena (1991) Predicted the attitude, intelligence values self concept, job motivation job satisfaction, Personality and school climate on teaching effectiveness among the teachers. It was found teaching effectiveness was significantly effected by teaching attitude, intelligence, job satisfaction and school climate. **Saxena, Hyotsna (1995)** Examined relationship between teacher effectiveness and adjustment, teacher effectiveness and job satisfaction and teacher effectiveness and professional attitude. The findings of the study were both effective and ineffective teachers were found to be will adjusted, derive satisfaction from their work and had favorable attitude towards teaching profession. **Panday and Mukhari (1999)** examined the attitude of effective and un effective teachers toward teaching profession with reference to their age and experience. It was found no significant differences between effective teachers having high and low experience in term of their attitude towards their profession. **Khatoon and Hassan (2000)** have also shown that job satisfaction also has effect on success in teaching. **Shilpi Sharma, (2006)** Conducted a study job satisfaction and teachers effectiveness of secondary school teachers in relationship their emotional intelligence. It was found job satisfaction were found to have a positive impact on teaching effectiveness and emotional intelligence.

Rubina malti (2008) Conducted a study teacher effectiveness and values on secondary school teachers. It was found both the group of the teachers through classified as effective and less effective teachers process almost similar values.

Chamundeswari and Vasanthi (2009) Conducted a study of job satisfaction and occupational commitment among teachers. It was found that if the teachers attain adequate job satisfaction they will be in a position to fulfill the educational objectives and national goals. **Sumangala and Usha devi (2009)** also conducted that role conflict and attitude towards teaching profession are capable of predicting success in teaching. **Saveri (2009)** conducted a study relationship between job satisfaction and life satisfaction among B.T. assistant teachers. It was found that there is a significant relationship between job satisfaction and life satisfaction of B.T. Assistant teachers.

Need for the present study: The quality of education and the standard of achievement are inseparably inter related with the quality of teachers. Teacher effectiveness is very important in education. It is in the teachers hand to make the student future bright. Since a teacher will be a role model for the students the job satisfaction and teaching effectiveness becomes very vital in the field of education.

There have been many studies conducted on primary and secondary school teachers, college teachers related to variable like job satisfaction, motivation, occupational stress, accountability organization health etc. But no study has been done on the topic under investigation. Thus the researcher feel the need to investigation the job satisfaction and teaching effectiveness of B.Ed. trained teachers working at primary level.

Objective of the study:

1. To study the job satisfaction of B.Ed. trained teachers working at primary level
2. To study the teaching effectiveness of B.Ed. trained teachers working at primary level.
3. To find out the relationship between job satisfaction and teaching effectiveness of B.Ed. trained teachers working at primary level.
4. To compare the job satisfaction of male and female B.Ed. trained teachers working at Primary level.
5. To compare the teaching effectiveness of male and female B.Ed. trained teachers working at primary level.

Hypothesis of the study:

1. There is no significance relationship between job satisfaction and teaching effectiveness of B.Ed. trained teachers working at Primary level.
2. There is no significance difference in job satisfaction of male and female B.Ed. trained teachers working at Primary level.
3. There is no significance difference in teaching effectiveness of male and female B.Ed. trained teachers working at primary level.

Method and Procedure: Keeping in view the objective of the study 150 B.Ed. trained primary school teachers from 60 government school of Baghpat district were taken as the sample of the study. The investigator used **"descriptive Survey method" and "random sampling"** for the present study. For collection of data the investigator used **Job satisfaction scale (JSS)** constructed and standardized by **P. Meera Dexit** and used Teacher effectiveness scale (TES) developed and standardized by **P.Kumar and D.N. Mutha.** The above scale helped the researchers to identify teachers having more, average and less job satisfied as well as teacher having most, average and least effective in teaching for analysis the data they were used Arithmetic mean, standard deviation "t" value and Carl Pearson product moment correlation

Result and Discussion

1. To study the job satisfaction of B.Ed. trained teachers working at primary level: To study the level of job satisfaction of B.Ed. trained primary teachers. Three categories of teachers viz more satisfied average satisfied and less satisfied with their job were made. The level of teachers job satisfaction show table No. 1

Table No. 1

Variable	More Satisfied		Average Satisfied		Less Satisfied		Total	
Job	No.	%	No.	%	No.	%	No.	%
Satisfaction	30	20	85	56.67	35	23.33	150	100

Table No. 1 Show that out of 150 teachers only 30 teachers i.e. 20% are more satisfied 85 teachers i.e. 56.67% average satisfied and the rest 35 teachers i.e. 23.33% teachers are less satisfied towards their job. This finding is in congruence with the finding of the study made by **Charu Saxena (2005)** Where she found that 54.67% were average satisfied and only 20% teachers were more satisfied towards their job.

2. To study the teaching effectiveness of B.Ed. trained teachers working at Primary level: To study the status of teaching effectiveness of B.Ed. trained teachers. Three categories of teachers viz most effective, average effective and least effective in teaching were made. The status of teaching effectiveness of B.Ed. trained teachers show table No. 2

Table No. 2

Variable	More Satisfied		Average Satisfied		Less Satisfied		Total	
Teaching	No.	%	No.	%	No.	%	No.	%
effectiveness	23	21.33	78	52	40	26.67	150	100

As is clear table no 2 that out of 150 B.Ed. trained teachers only 32 teachers i.e. 21.33% are most effective in teaching 40 teachers i.e. 26.67% are least effective and almost 78 teachers i.e. 520% are average effective in teaching, because they are average. Job satisfied and they have average in academic, Professional and moral areas. This finding is supported by the study made by. **Thakkar (1977)** where they found that 18% teachers were most effective and 61.27% teachers were average effective is teaching.

3. To find out the relationship between job satisfaction and teaching effectiveness of B.Ed. trained teachers working at primary level: An important objective of the study required investigators of the relationship between job satisfaction and teaching effectiveness. For the purposes the coefficient of correlation was computed to see the relationship between the two variable. The obtained value of the coefficient of correlation has been summarized and presented in the table no. 3

Table No. 3

Variable	N	df	Coefficient of correlation	Level of significance
Job satisfaction	150	148	.38	Significant at .01 level
Teaching effectiveness	150			

Table no 3 Reveals that the coefficient of correlation between teachers job satisfaction and teaching effectiveness is positive and significant at .01 level. It indicate that teachers who are more satisfied with their job have high level of teaching effectiveness on the other hand teachers who are less job satisfied are least level of teaching effectiveness.

The positive relationship between job satisfaction and teaching effectiveness of B.Ed. trained primary teachers can be justified psychologically. One's positive attitude towards profession, working condition, institutions functions as a motive force in the life of individual. It make them more effective teacher in the related fields. It contributes to hsi success in that field resulting in to satisfaction with that job. It seem, to quite logical to argue in this way, If this is so teachers favorable attitude towards profession, working condition, authority and institution may be expected to result into greater effectiveness of teaching. This result of present study has resemblance with the result of the studied conducted by **Shash Beena (1971)** and **Saxena (1993)** where they found that job satisfaction and their teaching effectiveness are positive correlated with each other.

4. Comparison the job satisfaction of male and female B.Ed. trained teachers working at primary level: To study the job satisfaction of B.Ed. trained primary school teachers in relation to gender. The hypothesis that was framed in this context was that there is no significance difference in job satisfaction of male and female teachers. To test this hypothesis t-test was applied. The difference of mean scores of male and female teachers on job satisfaction was computed and show in table no. 4.

Table No. 4

Group	N	M	SD	S_{ED}	"t"	Level of significance
Male teachers	75	22.20	7.85	1.16	3.59	Significant at .01 level
Female teachers	75	26.37	6.35			

Table no. 6 Depicts that "t" ratio for the difference the mean score of male and female teachers is significant at .01 level. It means that there is a significant difference in job satisfaction of male and female teachers. The mean value of the teachers job satisfaction clearly indicated that female teachers are more satisfied towards their job as compared to male teachers.

The Result obtained appear to be quite plausible. This is what one may expect under circumstances prevailing in India. In India the lades prefer to work as teachers at primary level. Science it is less exiting and can be conveniently carried on simultaneously along with various domestic responsibilities that they are expected to perform. Since this is the job that suits them most, they most remain more satisfied having got one. On the other hand male teachers give priority to other jobs, which bring them more power, prestige and money. Teaching job is said to be the last on their priority list. They go for teaching job only when nothing better is available. Obviously, they should not be expected

to be very happy on the job, which is not of their choice. Hence, the difference in the levels of job satisfaction male and female teachers.

5. **Comparison the teaching effectiveness of male and female B.Ed. trained teachers working at primary level:** One of the objective of the study was to study the teaching effectiveness of B.Ed. trained primary teachers in relation to gender. For the purpose the "t" value was computed to see the significant difference in teaching effectiveness of male and female teachers. The obtained value of the mean SD and "t" value has been presented in the table no. 5

Table no. 5

Group	N	M	SD	S_{ED}	"t"	Level of signifi-cance
Male teachers	75	205.13	25.21	3.72	2.90	Signifi-cant at .01 level
Female teachers	75	215.92	20.11			

Table no. 5 show that "t" ratio for the difference the mean scores of male and female teachers is significant at .01 level. It means that there is a significant difference in teaching effectiveness of male and female B.Ed. trained teachers. The mean value of the teaching effectiveness clearly indicated that female teachers have higher level of teaching effectiveness in comparison to male teachers.

The finding seems to be quite logical and visual. It can be argued that being the artifact of Indian culture and social environment, the teaching job suits the female teachers most of all other jobs. Hence the female teachers perhaps have greater teaching effectiveness. For this reason they, perhaps, have move positive attitude towards it., In case of male teachers the job of primary level teaching is perhaps the last choice. There are other job, which they like more. Hence, they are likely to have less favorable towards teaching and less teaching effectiveness in comparison to female teachers.

Conclusion: Considering the above discussion it can be conducted most of the B.Ed. trained teachers working at primary level are average satisfied towards their job and average effective in teaching. It can also be conducted that job satisfaction generals a substantial positive impact on teaching effectiveness of B.Ed. trained teachers and more job satisfied leads to most teaching effectiveness among the teachers.

It is believed that their exists a positive correlation between job satisfaction and teaching effectiveness. Effective teaching requires feeling of satisfaction on the other hand feeling of dissatisfaction affects the efficiency one's thinking and emotional reaction's in fact the totality of nes behaviors.

References:-

1. **Ebel, R.L. (1969)** "Encyclopedia of educational research., "London MC Millan company.
2. **Thakkar, V.R. (1977)** "A study of potential teachers effectiveness their educational attitude in relation to their rapport with the student and their survival and job satisfaction in the profession "Ph.D. thesis, MSU, second survey of research in education by M.B. Buch, P. 451.
3. **Aggarwal; Y.P. (1990)** "Statistical methods: concept application and computation." New Delhi sterling publishers pvt. ltd.
4. **Anastasi, A. (1991)** "Psychological Testing". New York, McMillan publishing.
5. **Shah, Beena (1991)** "Determinants of teachers effectiveness" independent study, Ruhelkhand University.
6. **Best JW., (1993)** Research in Education (7th ed) New Delhi: Prentice hall of India.
7. **Panday, Mukhari (1999)** "A study of attitude of effective and ineffective teachers towards teaching profession". Indian journal of psychometric and education, vol. 30(1) 43-46
8. **Khatoon, and Hassan (2000)** Job satisfaction of secondary school teachers in relation to their personal variables sex experience professional training salary and religion. Indian educational Journal Abstracts vol. (2), no (1), Jan 2002.
9. **Sharma, Shilpi (2006)** " A study of job satisfaction and teaching effectiveness of secondary school teachers in relation to their emotional intelligence" Ph.D. Thesis, Bundelkhand University, Jhansi
10. **Rubina Malti (2008)** "Teacher effectiveness and values A study on secondary school teachers" Indian journal of educational research vol. (27) No. (1) Jan-June PP 17-21.
11. **Sumangala and Usha Devi (2009)** "Role conflict attitude towards teaching professin and job satisfaction as predictors of success in teaching". Edutracks, vol (8) no. (9) May 2009 PP. 25-27
12. **Saveri (2009)** "Relationship between job satisfaction and life satisfaction among B.T. assistant teachers. "Edutracks vol (8) no. (9) May 2009.
13. **Chamundeswari and Vasanthi (2009)** "Job satisfaction and occupational commitment among teachers" Edutracks vol (8) no (6) PP 29-37.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित हायर सेकेन्डरी विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के शिक्षक अभिवृत्ति में भिन्नतापरक प्रभाव का अध्ययन

रामचन्द्र* डॉ. राजेन्द्र सिंह**

* शोध छात्र, वीर वहादुर सिंह पूर्वाचंल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ.प्र.) भारत
** एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष (मनोविज्ञान विभाग) राजा श्री कृष्णदत्त स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उ.प्र.) भारत

शोध सारांश – शिक्षक की सफलता कई निर्धारकों के माध्यम से उनकी क्षमताओं और कक्षा में उनकी प्रस्तुतियों के माध्यम से निर्धारित की जा सकती है। अत्यधिक उत्साह से दक्षता में वृद्धि होती है जो सामान्य रूप से संपूर्ण शैक्षणिक व्यवस्था की चिंता है। भावनात्मक बुद्धि एक महत्वपूर्ण निर्धारक है जो शिक्षकों की प्रस्तुतियों को प्रभावित करती है। सांवेगिक बुद्धि द्वारा विशिष्ट परिस्थितियों में प्रतिक्रिया करने की समझ विकसित होती है। सांवेगिक बुद्धि को जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में अधिकतम लाभ प्राप्त करने हेतु संवेगों का उपयोग करने वाली संज्ञानात्मक योग्यताओं का समूह माना जाता है। संवेगात्मक बुद्धि विद्यालय तथा कार्यक्षेत्र में सफलता को निर्धारित करती है तथा विशिष्ट परिस्थितियों में उपयुक्त प्रतिक्रिया करने की समझ विकसित करती है। किशोरों में सांवेगिक बुद्धि आक्रामकता में कमी व अधिक लोकप्रियता एवं सुधारात्मक अधिगम की ओर अग्रसर करती हैं। उच्च सांवेगिक बुद्धि के विद्यार्थी स्वयं को प्रत्येक परिस्थिति में समायोजित कर लेते हैं तथा घर, विद्यालय, समाज, कार्यस्थल आदि सभी स्थानों में अपने कर्तव्यों का सफलतापूर्वक सम्पादन करते हैं। उचित सांवेगिक प्रबन्ध उनके चिन्तन में सहायक होता है। प्रस्तुत शोध से पता चलता है कि सहायता प्राप्त और गैर-सहायता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता सहायता प्राप्त और गैर-सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की तुलना में शिक्षण कार्य के लिए अनुकूल शिक्षक का रवैया काफी अधिक मात्रा में था। अत: परिकल्पना-1 जिसमें कहा गया है कि अध्ययन के निष्कर्ष से 'सांवेगिक बुद्धि की भिन्नता परक मात्र के कारन हायर सेकेंडरी शिक्षकों के शिक्षक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर प्राप्त होगा' सत्य सिद्ध हुआ।
शब्द कुंजी – उच्च माध्यमिक, अध्ययनरत् विद्यार्थियों, शिक्षक अभिवृत्ति, सांवेगिक बुद्धि।

प्रस्तावना – शिक्षण को एक प्रभावी कार्य बनाने के लिए, शिक्षकों को अच्छी नौकरी की भागीदारी प्रदान करनी चाहिए। शिक्षक-प्रशिक्षकों में अपने कार्य के प्रति जुड़ाव उनकी जिम्मेदारियों को सही ढंग से निभाने की उनकी क्षमता को बढ़ाता है और इस प्रकार उनके शिक्षण के गुणों में सुधार होता है और जिससे छात्रों को शिक्षक क्षेत्र की उपलब्धियां और सफलता मिलती है। शिक्षक प्रशिक्षकों को पेशेवर विकास की दिशा में निर्देशित करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए मान्यता और प्रतिक्रिया को सुधार की भागीदारी के रूप में उद्धृत किया गया है और शिक्षक प्रशिक्षकों की नौकरी में भागीदारी में सुधार का मतलब है कि उन्हें अपनी वर्तमान नौकरी से संतुष्ट होना चाहिए और इस तरह वे एक अनुकूल माहौल बनाने में सक्षम हैं। उनकी नौकरी की ओर।

साहित्य समीक्षा से पता चलता है कि विकसित देशों में मनोवैज्ञानिक समस्या के विशेष संदर्भ में शिक्षक के जीवन के विभिन्न आयामों पर अनेक अध्ययन किए गए। हालाँकि, इस संबंध में विकासशील देशों में विशेष रूप से भारत में बहुत कम अध्ययन किए गए हैं। साहित्य इस तथ्य को उजागर करता है कि शिक्षक तनाव और भावनात्मक समस्या से ग्रस्त हैं और विभिन्न जोड़ने वाले कारकों की भी खोज की गई है। तनाव अन्य मनोवैज्ञानिक समस्या को जन्म देता है। वर्तमान अध्ययन निष्कर्ष शिक्षकों के बीच मनोवैज्ञानिक समस्या की गतिशीलता को समझने और उनके विभिन्न आयामों की जांच करने में मदद करेंगे। यह अध्ययन सहायता प्राप्त और गैर-सहायता प्राप्त वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में सेवारत शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता, नौकरी की भागीदारी, शिक्षक के दृष्टिकोण और उनके जीवन की गुणवत्ता को समझने का प्रयास करेगा और शिक्षकों की मनोवैज्ञानिक समस्याओं के साथ चर के संबंध को खोजेगा। वे निश्चित रूप से इन युवा शिक्षकों के मन को समझने में मदद करेंगे और समाज को उनके साथ बेहतर बातचीत करने में मदद करेंगे और उन्हें एक स्वस्थ मंच प्रदान करेंगे जहां वे खुद को पूरी तरह से अभिव्यक्त कर सकें और एक स्वस्थ और शांतिपूर्ण जीवन जी सकें। इसलिए, अध्ययन के निष्कर्षों से यह समझने में मदद मिलेगी कि शिक्षकों के अशांत मन क्यों हैं और क्या कारण है कि वे अपने जीवन के सामान्य कामों से विचलित हो जाते हैं और अपने लिए एक ऐसा जीवन प्राप्त कर लेते हैं जो कभी नहीं चाहते थे। निष्कर्ष आगे शिक्षकों के लिए आवश्यकता-आधारित उपायों का सुझाव देने में मदद करेंगे, शिक्षकों के लिए समय पर हस्तक्षेप के उपाय कर सकते हैं। साहित्य समीक्षा से पता चलता है कि विकसित देशों में मनोवैज्ञानिक

समस्याओं के विशेष संदर्भ में शिक्षकों के जीवन के विभिन्न आयामों पर अनेक अध्ययन किए गए। हालाँकि, इस संबंध में विकासशील देशों में विशेष रूप से भारत में बहुत कम अध्ययन किए गए हैं। इसलिए, यह अध्ययन शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने में बहुत मददगार होगा और यह स्कूल प्रशासन विभाग को तनाव के अनुकूल बनाने में भी मदद करेगा।

Ciarrochi, Chan, Caputi & Roberts (2001) ने व्यक्ति के दैनिक जीवन में सांवेगिक बुद्धि के महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार किया है। इन्होंने अपने अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया है कि व्यक्ति के संवेगों का प्रत्यक्षीकरण, उसकी अभिव्यक्ति, उसकी समझ एवं प्रबन्धन का प्रत्यक्ष सम्बन्ध उसके जीवन में घटित होने वाली उन घटनाओं से होता है जिनका वे अनुभव करते हैं। इन संवेगों की व्याख्या एवं अनुकूलन जीवन के उन घटनाओं के कारण होता है जो विधेयात्मक अथवा निषेधात्मक होते हैं। अत: जीवन में संवेगों को समझ कर और उसका प्रबन्धन करना मानव प्राणी के समायोजित जीवन के लिए अति महत्वपूर्ण है।

वर्तमान शोध का ध्यान सहायता प्राप्त और गैर-सहायता प्राप्त वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता, नौकरी की भागीदारी, शिक्षकों के दृष्टिकोण और जीवन की गुणवत्ता पर होगा। वर्तमान अध्ययन समाज, शैक्षिक संस्थानों, छात्रों और उनके माता-पिता के लिए बड़े पैमाने पर प्रयास करेगा। वर्तमान अध्ययन में सहायता प्राप्त और गैर सहायता प्राप्त वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों ने क्रमश: शिक्षकों के दृष्टिकोण, नौकरी की भागीदारी और जीवन की गुणवत्ता के बीच महत्वपूर्ण अंतर का पता लगाने के लिए उत्तार प्रदेश से लिया है।

शिक्षक अभिवृति-शिक्षक अभिवृत्ति एक मनोवैज्ञानिक पद है जो अपने शिक्षण कार्य के प्रति व्यक्ति के मानसिक एवं सांवेगिक वृति की ओर संकेत करता है। शिक्षक अभिवृत्ति अनुभव के परिणामस्वरूप एवं जटिल एक अर्जित अवस्था है। यह व्यक्ति में पाई जाने वाली एक प्रवृति है जो उसके शिक्षण कार्य से सम्बन्धित है जो व्यक्ति के वर्तमान एवं पूर्व अनुभवों से सम्बन्धित है।

विधेयात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के शिक्षक का कक्षा में व्यवहार विधेयात्मक होता है, वे विद्यार्थियों के व्यवहार को पुर्नवलित करते है जिससे उनकी योग्यता विकसित हो सके तथा वे अच्छी योजनाये बनाकर शिक्षार्थियों में विधेयात्मक अभिवृत्ति को विकसित करने का प्रयास करता है। प्रभावशाली शिक्षक जहां विद्यार्थियों के संवेग और विचारों (उत्साह, स्नेह, धैर्य, दुख, अस्वीकृति) में सहभागिता प्रदर्शित करते है वहीं वे उनकी देख भाल भी करते है। ऐसे शिक्षक जहां अपने छात्रों से स्नेह प्रदर्शित करते हैं, वहीं वह उनकी सहायता भी करता है, और उन्हें प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए प्रेरित भी करते हैं। शिक्षक को अपने व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने के लिये अपने शिक्षण कार्य के प्रति विधेयात्मक अभिवृत्ति विकसित करनी चाहिये। उन्हें अपने छात्रों को इस बात के लिये प्रेरित करना चाहिये वे अपने ज्ञान वृद्धि का प्रयास करें। उन्हें अपने छात्रों में अपने विषय कि प्रति आकर्षण विकसित करना चाहिये तथा उन्हे वर्तमान में जीने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये।

अध्ययन का औचित्य- वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में यह आवश्यक है कि संज्ञानात्मक एवं गत्यात्मक परिक्षेत्रों के साथ-साथ भावात्मक परिक्षेत्र को भी विकसित करने की प्रक्रिया तेज की जाय । भावात्मक परिक्षेत्र के अन्तर्गत भावनाओं को समझना, व्यक्ति के संवेगों को समझना, उन्हें मूल्य प्रदान करना, संवेगों के औचित्य एवं अनौचित्य की समझ विकसित करना एवं तदनुरूप निर्णय लेना आता है। यदि बालक में संवेगात्मक बुद्धि उच्च होगी तो उसका अधिगम भी प्रभवित होगा। मीर मुईन मकबूल (1989) ने सांवेगिक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि व सीखने के परिणाम, फर्न, शिंग, चेन, यिंग, मिंग, लीन व अन्य (2005) ने जीवन समायोजन, उमा देवी एण्डएण्ड रोमाला रयाल (2005) ने बौद्धिक क्षमता के साथ अध्ययन किया। निष्कर्षत: पाया गया कि विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि अधिगम को प्रभवित करती है।

शोध से प्राप्त परिणाम अभिभावकों के लिए उपयोगी होंगे क्योंकि आज का अभिभावक अपने बालक से प्रत्येक क्षेत्र में उपलब्धियां उच्च चाहता है परिणाम यह प्राप्त होता है कि बालक सभी परिस्थितियों में समायोजित नहीं हो पाता एवं आत्मविश्वास का स्तर कम हो जाता है, जो दुशचिन्ता व भय को जन्म देती है जिसका शैक्षिक उपलब्धि पर सीधा प्रभाव पड़ता है। बालक में संवेगात्मक बुद्धि उपस्थित होगी तो वह सभी तनावों से मुक्त होकर उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर माता-पिता की आकांक्षाओं पर खरा उतरेगा क्योंकि संवेगात्मक बुद्धि से व्यक्ति अपने व दूसरों के संवेगों को समझने व उनका प्रबन्धन करने में सक्षम होता है व अपने संवेगों को विचार शील तरीके से प्रदर्शित करता है।

समस्या कथन- अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित हायर सेकेन्डरी विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों के शिक्षक- अभिवृत्ति पर सांवेगिक बुद्धि के भिन्नतापरक प्रभाव का अध्ययन

शोध के उद्देश्य- हायर सेकेन्डरी विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों के शिक्षक-अभिवृत्ति (Teacher-Attitude) सांवेगिक बुद्धि के भिन्नतापरक मात्रा के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाऐं

परिकल्पना 1- सांवेगिक बुद्धि की विभिन्नपरक मात्रा के कारण हायर सेकेंन्डरी शिक्षकों के शिक्षक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर प्राप्त होगा।

शोध विधि -समस्या की प्रकृति के आधार पर शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन के स्रोत - जौनपुर जिले के सी.बी.एस.ई. तथा बी.एस.ई. यू. द्वारा संचालित विद्यालयों में नियमित रूप से कक्षा 12 में अध्ययनरत् विद्यार्थी ।

जनसंख्या - प्रस्तुत शोध अध्ययन में जौनपुर जिले में स्थित उच्च माधयमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श - शोधकर्त्ता द्वारा जौनपुर जिले का चयन सोद्देश्य न्यादर्शन विधिा द्वारा किया गया है। जिसमें से दो विद्यालय सी.बी.एस.ई. तथा दो विद्यालय बी.ओ.एस.ई. यू. बोर्ड से सम्बद्ध है। प्रत्येक विद्यालय से संकायवार (कला, विज्ञान, वाणिज्य) 90-90 विद्यार्थी लिये गये है। इस प्रकार चार विद्यालय से चयनित 360 विद्यार्थी यादृच्छिक रूप से चयनित किये गये है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण - प्रस्तुत शोध अध्ययन में सांवेगिक बुद्धि के मापन हेतु **डॉ. एस. के मंगल तथा श्रीमती शुभ्रा मंगल** द्वारा निर्मित मानकीकृत इमोश्नल इन्टेलिजन्स इन्वेन्टरी का प्रयोग किया गया है। तथा **शिक्षक अभिवृत्ति मापनी डा0 एस0 पी0 अहलूवालिया** द्वारा निर्मित प्रयोग किया गया है।

Hypothesis- सांवेगिक बुद्धि की विभिन्नपरक मात्रा के कारण हायर

सेकेन्डरी शिक्षकों के शिक्षक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर प्राप्त होगा।

Table no. 1: Means, SDs, and SED and results of t-ratio between mean teacher's attitude score of high and low emotional intelligenceaided higher secondary school teachers.

Variables	Group	N	Mean	SD	SED	t	P
Teacher's attitude	High Emotional intelligence	225	285.5	12.606	.824	14.196	<.001
	Low Emotional intelligence	275	260.6	11.928			

उपरोक्त तालिका 1 में दिए गए परिणामों में से, यह प्रतीत होता है कि उच्च भावनात्मक बुद्धि सहायता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों और निम्न भावनात्मक बुद्धि सहायता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का औसत शिक्षक कारवैया क्रमश: 285.5 और 260.6 पाया गया। इसका मतलब है कि उच्च भावनात्मक बुद्धि सहायता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों ने कम भावनात्मक बुद्धि सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की तुलना तम शिक्षक कर वैये पर अधिक औसत अंक प्राप्त किए हैं। उच्च भावनात्मक बुद्धि सहयाता प्रापत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों और निम्न भावनात्मक बुद्धि सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए मानक विचलन क्रमश: 12.606 और 11.928 थे। दो साधनों के बीच टी-अनुपात 14.196 आया जो .01 स्तर पर महत्वपूर्ण था।

Table no. 2: Means, SDs, and SED and results of t-ratio between mean teacher's attitude score of high and low emotional intelligence non-aided higher secondary school teachers

Variables	Group	N	Mean	SD	SED	t	P
Teacher's attitude	High Emotional intelligence	240	278.05	12.591	.447	27.711	<.001
	Low Emotional intelligence	260	240.10	13.807			

उपरोक्त तालिका 2 मे दिए गए परिणाम में से यह प्रतीत होता है कि उच्च भावनात्मक बुद्धि वाले गैर-सहायता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालया के शिक्षकों और कम भावनात्म बुद्धि वाले गैर-सहायता प्राप्त उच्च माध्यमि विद्यालय के शिक्षकों का माध्य शिक्षक का रवैया स्को क्रमश: 278.05 और 240.10 पाया गया। इसका मतलब यह है कि उच्च भावनात्मक बुद्धि गैर-सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों ने कम भावनात्मक बुद्धि वाले गैर-सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की तुलना में शिक्षक रवैये पर अधिक औसत अंक प्राप्त किए है। उच्च भावनात्म बुद्धिमत्ता गैर-सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों और निम्न भावनात्मक बुद्धिमत्ता गैर-सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए मानक विचलन क्रमश: 12.591 और 13.807 थे। दो साधनों के बीच टी-अनुपात 27.711 आया जो .01 स्तर से अधिक महत्वपूर्ण था। इन निष्कर्षों से पता चलता है कि सहायता प्राप्त और गैर सहायता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षको में उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता सहायता प्राप्त और गैर-सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की तुलना में शिक्षण कार्य के लिए अनुकूल शिक्षक का रवैया काफी अधिक मात्रा में था।

Hypothesis- इन निष्कर्षों से पता चलता है कि सहायता प्राप्त और गैर-सहायता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता सहायता प्राप्त और गैर-सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की तुलना में शिक्षण कार्य के लिए अनुकूल शिक्षक का रवैया काफी अधिक मात्रा में था। अत: परिकल्पना-1 जिसमें कहा गया है कि अध्ययन के निष्कर्ष से 'सांवेगिक बुद्धि की भिन्नता परक मात्र के कारन हायर सेकेंडरी शिक्षकों के शिक्षक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर प्राप्त होगा' सत्य सिद्ध हुआ।

निष्कर्ष – उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में विद्यालयी बोर्ड के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जाता है। सी.बी.एस.ई. तथा बी.एस.ई.यू. के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि समान होती है। उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता से सहायता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों ने कम भावनात्मक बुद्धि-सहायता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की तुलना में शिक्षक के रवैये, नौकरी में भागीदारी और जीवन की गुणवत्ता पर काफी अधिक औसत अंक प्राप्त किए। इसका अर्थ यह है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में उच्च भावनात्मक बुद्धि सहायता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की तुलना में कम भावनात्मक बुद्धि सहायता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की तुलना में काफी अधिक शिक्षक रवैया, नौकरी की भागीदारी और जीवन की गुणवत्ता थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. Goleman, D.; Boyalzis, R.E. & Mckee, A. (2002) :Primal leadership: Realizing the pwoer of emotional intelligence, Boston Harvard University Press.
2. Goleman, D. (1998) :Working with emotional intelligence, New York Bantam Books.
3. Kobassa, S.C. (1979) Stressful life events, personality and health : An inquiry into hardness. *Journal of Personality and Social Psychology* 37, 1-11.
4. Lazarus, R.S. & Folkman, S. (1984) Stress, appraisal and coping. New York, Behavioural Science Book.
5. Bar-on, R. (1997) : Emotional Intelligence Quotlient Inventory. Toronto, DN : Multi Health Systems, Inc.
6. Cheriss, C. & Goleman, D. (Eds.) (2001) The emotionally intelligent work place. San Francisco, C.A. Jossey Base.
7. Ciarrochi, J.P.; Chan, A.; Caputi, P. and Roberts, R. (2001) : Citied in Candace M. Wannamaker (2005) : A study of the need for emotional intelligence in university judicial officers. Ph. D. Drexel University.
8. Cooper, R.K. & Sawaf, Al (1996) Executive I.Q. : Emotional Intelligence in lendership and organizations Grosset/Putname, New York, New York.
9. Cooper, R.K. (1997) Apply emotional in Inlligence in the work place. *Training and Development* 51, 31-38.
10. Gardner, H. (1983) :Frames of mind : The theory of

multiple ingelligence, New York : Basic Books.

11. Goleman, D. (1995) :Take the E-1Q required will calculate your score for you. *Special to Utnetlagazine,* Nov./Dec.
12. Goleman, D. (1998) :Emotional intelligence. Why it malter more than I.Q. London; Bloomsbury.
13. जेम्स, डी.ए. पार्कर व अन्य 2004, द रिलेशनशिपप बिटविन इमोशनल इन्टेलीजेन्स एण्ड एकेडेमिक एचीवमेन्ट इन एलीमेन्ट्री स्कूल चिल्ड्रन रिट्राइवड फ्रॉम 22 जुलाई 2017, http//www.doestoc.com
14. उमा देवी एण्ड रोमाला रयाल (2005) द रिलेशनशिप बिट्वीन इमोशनल इन्टेलीजेन्स एन्ड इन्टेलेक्चुअल एबिलिटीज ऑफ एडॉलसेन्टस जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलोजी (23) (2) विशाखापत्तनम, आंध्रा यूनिवर्सिटी प्रेस
15. सौम्याह एस. एन्ड निगम्मा सी.बी. (2010) इमोश्नल इन्टेलिजन्स इन रिलेशन टु पर्सनैलिटी साइको लिंगवा. (40) जन. जुलाई 2010 साइको लिंग्विस्टिक एसोसिएशन ऑफ इन्डिया आइ.एस.एस. एन. 0377-3132 (93-96)
16. बिन्धु सी.एम. (2011). सेल्फ असर्टिवनेस एन्ड इमोशनल इन्टेलिजन्स ऑफ हायर सेकेडरी स्ट्यूडेन्ट्स जी.सी.टी.ई. जनरल ऑफ रिसर्च एन्ड एक्सटेन्शन एन एजुकेशन, (6) (2) जुलाई 2011, पृष्ठ (14-17) गवर्मेट कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन तिरुवनन्तपुरम केरल International Journal of Applied Research
17. खान, महमूद अहमद व अन्य 2012, इमोशनल इन्टेलीजेन्स ऑफ चिल्ड्रन ऑफ वर्किंग एण्ड नॉन वर्किंग मदर्स, रिट्राइवड फ्रॉम 18अगस्तhttp//www.sciencepub.net/researcher2017
18. शर्मा, दर्शना व बन्दना 2012 इम्पैक्ट ऑफ इमोशनल इन्टेलीजेन्स एण्ड होम इन्वायरमेन्ट ऑन सेल्फ कॉनसेप्ट ऑफ एडोलेसेन्टस इण्डियन स्ट्रीमस रिसर्च जनरल, (2).

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
April to June 2021, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIV

Importance of Social Studies as A Mandtory Subject in Entire Schooling

Dr. Rita Bisht*

*Dean (Education) University Of Technology, Jaipur (Raj.) INDIA

Abstract - Education is as old as mankind and is actually the matter of all living beings. In each and every society, modern or ancient, complex or simple, advanced or primitive, one finds provision for education. Social studies are actually a compulsory subject up to secondary stage of school education. It's an important element of basic education since it can help the learners in understanding the surroundings in its totality and creating a broader perspective and an empirical, humane and reasonable outlook. Teaching is actually a complicated task carried on in the complicated situation of the school by human beings (teachers) directed towards pupils that are continuously undergoing complex changes.

Keywords: Education, Human learning, teaching, learning, teacher, social study, etc.

Introduction - Education isn't a brand new procedure though it's having fresh interpretations. Whatever influences a person in such a way as to determine his future conduct or maybe action is actually a means of education. Hence we might generalize that education is actually for change change in the fashion in which a particular person behaves in a specific situation. The change in behavior of an organism might be linked to many things such as growth, experiences, maturation, methods etc. The growth attributable to very first two components a natural though the growth attributable to various other elements may be termed as learning In reality, the learning has been identified as a process of change in human behavior.

The sort of things an individual learns are certainly affected by the environment in which he lives. Learning by simply being a part of a cultural milieu happens in the natural course of social interactions. This's described as socialization process. Nevertheless, one also observes that 2 individuals participating in a typical scenario don't always discover the exact same issues. Along with all these, people also learn through instructional process. Instructional procedure is actually a set of created conditions meant to bring about learning is actually expected ways. This makes learning by pupils within instructional process very unique from the organic learning within social milieu. In order to cause some learning, it's needed to produce conditions that are favorable within which learning is able to take place. These problems are actually created in the schools which are actually the agencies of proper system of teaching and education. The final functional is actually the educational one. The various other tasks couldn't be continued without some ways for teaching them. Without education no society may last much more than a generation.

Teaching-Learning At Schools: The Formal System Of Education : Education is a method which demonstrates and keeps a society. Education is actually a community institution which produces a new cultural being by imparting knowledge, abilities (social and personal), values etc. through years. In other words socialization is actually process through which transmission of culture takes place. This approach in an institution takes place formally and consciously by utilizing the facilities specifically provided for the purpose, like schools, colleges etc. It calls for deliberate transmission of knowledge, values and abilities. Besides being a procedure, education is also a product. As merchandise, education is actually the sum total of what's received through learning i.e. values, ideas, skill, and the knowledge etc. which are actually the results of learning. The process of education is actually constant one and it's numerous types. Some essential types of education are actually as under:

i. **Informal Education:** Education which isn't formally planned and has no clear goals and strategies is actually called informal education. It might take place anywhere, anytime occasionally. Something learned in family, community and society falls under this category. Education that is Such is actually a lifelong process.

ii. **Formal Education:** Education that is managed and planned consciously by state or maybe its designated agencies such as school with certain specific goals is actually proper education. In Such a process of education, there are actually strict rules for age of admission, duration

and content of course, procedure of examination, choice of elective subjects etc.

iii. Non formal Education: In contrast to formal education, that is identified as teaching of specific understanding or maybe instruction in a specific department of learning in a structured and programmed manner, non-formal education refers to consciously structured and patterned instruction in particular aspects of expertise, values or ability, which take place outside the school or maybe similarly designated institutions, with flexibility with regards to age, period of instruction, and also with a choice of what to find out. Non-formal education is actually a really important mode through which India's objectives of common elementary education and literacy are actually being encouraged.

Social Studies At School Level- Some Basic Ideas : Social studies are actually a compulsory subject up to secondary stage of school education. It's an important element of basic education since it can help the learners in understanding the surroundings in its totality and creating a broader perspective and an empirical, humane and reasonable outlook. This's of essential importance since it can help them develop into properly informed and responsible people with essential characteristics and abilities to be in a position to take part and contribute efficiently in the process of growth and nation building. In social studies, the focus is often upon connection rather compared to people, upon social activities instead of specific performances, worrying that society can make the people and isn't just composed of people. Its 3 major usually stated purposes are actually in conditions of satisfying specific needs, acquiring academic public and scientific understanding and offering citizens education related to community needs. It clarifies that no human being lives for him/her and that social studies is actually dedicated to the study of life of the individuals with reference to and in the context of modern society where one lives.

Social studies aren't a subject but are actually composed of a team of topics that are related with the social environment of an individual. The need of teaching social studies in a team had been stressed by Secondary Education Commission (1952 53) as "It is not often found that the complaint of overcrowding is primarily as a result of the multiplicity of topics, provided as individual entities, without bringing out their natural inter relationship. Therefore, in framing the curriculum, an effort must be made seeing whether some subjects could be grouped in large organically related units dealing with certain wide aspects of human understanding and interest. As a result, it's mentally better to current subjects centering round the research of the social environment and human relations under the comprehensive heading of "social studies" rather than to teach a selection of individual subject like history, geography, civics etc. in a water tight compartment."

Objectives Of Teaching Social Studies: Social studies are able to add to the balanced improvement of kid. The expected results may be laid down in terms of-

Knowledge Structures: The framework of subject content of social studies necessitates relevant sequences which would help build the expertise system in the head of the pupil.

Relevant Understanding: It's really important to recognize the relevance of facts to the structured set. The teacher has to assist the kid to get info in the right perspective.

Desirable Attitudes: The facts are actually forgotten very easily while attitudes keep on to last in an individual's brain. The teacher is able to help develop desirable attitudes by different activities and learning experiences. Attitudes are actually formed unknowingly and that's exactly why instructor must be a little more aware in projecting the right attitudes through his own behavior

CBSE (2000) has developed following objectives of teaching social studies at school level:

i. In order to build an understanding of the tasks of development both and change in terms of space and time, through which human societies have evolved.

ii. In order to make learners understand that the method of change is actually constant and any event or maybe trend or maybe issue can't be seen in isolation but in a wider context of time and space.

iii. In order to build an understanding of contemporary India with the historical perspective of its, of the standard framework of the objectives and policies of national development in independent India, and of the method of change with right connections to world development.

iv. In order to deepen information about and understanding of India's independence struggle and of the values and ideals that it represented, as well as in order to create an appreciation of the efforts made by folks of all the sections and areas of the nation.

Approaches Of Teaching Social Studies: The aims and goals of teaching are attained through various methods of teaching. No single technique could match in all of the situations or perhaps may be used for achieving all the goals of teaching social sciences at a specific stage. The teaching is actually an exercise that is created as well as done for numerous goals, in terms of changes in pupil behaviors. Pupils have multidimensional personalities having various learning styles. The common implication of both these facts is the fact that the instructors should utilize various approaches of teaching matching the goals of teaching and pupils learning styles and personality dimensions. The teacher education programs in India, nonetheless, create the instructor for one of a couple of fixed means of teaching such as Herbartian Method (or maybe traditional teaching Method) or perhaps so.

The conventional teaching method: The first efforts towards a systematic, logical explication of teaching learning process, maybe, were that of Herbart. His contribution is actually priceless as he, for the very first time, evidenced

through the practice of his that educational notion can be made into practice. This marked the start of discernment of teaching methodology as pedagogy.

Teaching is often referred to as Herbartian steps. These measures are:

i) Preparation;
ii) Presentation;
iii) Association;
iv) Systematization; and
v) Application

Innovations in teaching methods: The word development means the arrival of novelties, the modification of what's established a novel train along with a change in established methods. In general, in the area of education, to innovate is actually creating something new which markedly by deviates from standard methods which have been implemented since a long time to impart education at levels that are quite different.

i. Programmed Instruction: Programmed instruction is actually a highly individualized method for improving teaching. It's a teaching strategy where learning is actually impacted in each learner in a controlled scenario even without the presence of teacher. It's, therefore, a technique of providing private teaching to a student giving him the chance to find out at his own pace involving himself alone in the learning process. In this particular mechanism of learning, the learner understands the outcome of the attempt of his at every step. The product has been created on the foundation of understanding of psychology of learning. The method was created for student learning though it is able to also be used as a feedback device for modification of teacher's behavior for effecting better teaching.

ii. Computer Assisted instruction (CAI): Computer Assisted Instruction (CAI) is actually an all natural outgrowth of the concepts of Programmed instruction. It addresses the entire educational spectrum and is actually gaining much more recognition as an useful and important tool in the teaching of different subjects. The origin of CAI was an attempt by some specialists to find out in case a device might be programmed to work together with human.

Conclusion: Teaching is actually a complicated task carried on in the complicated situation of the school by human beings (teachers) directed towards pupils that are continuously undergoing complex changes. In the existing fast growing age, great deal of info has to be collected from multi different sources, integrated and then processed in a gainful manner not only within person but to the subsequent generations social analysis is actually an important element of basic education since it can help the learners in understanding the surroundings in its totality and creating a broader perspective and an empirical, realistic and humane outlook.

References:-

1. Ahluwalia, S.P. (2007). Manual for Teacher Attitude Inventory. National Psychological Corporation: Agra.
2. Akkus, O. (2010). Teachers' burnout levels and their attitudes towards teaching profession. Paper presented at EABR & ETLC Conference, Dublin, Ireland.
3. Bondhu Raju, Viswanathappa, G. (2007). Competency of D.Ed. and B.Ed. Trained Teachers Working in Primary Schools of Andhra Pardesh. Edutracks, 7(1), 29-33
4. Aggarwal, J.C. (2009). Essentials of educational technology. New Delhi: Vikas Publishing House.
5. Anisha, (2008). Relationship between self efficacy and teaching competency of secondary teacher education students. New Frontiers in Education, 41(3), 305- 317.
6. Aruna, P.K., & Smitha, E.T. (2009). Effectiveness of concept attainment model of teaching on achievement in biology. Edutracks, 9, 1.
7. Bency P.B.B. & Raja, B.W.D. (2010 a). Performance in physical science education by dint of advance organiser model of teaching, i-manager's Journal on School Educational Technology, 6 (1), 70 - 76.
8. Bency, P.B.B, & Raja, B.W.D. (2010 b). Relative effectiveness between concept attainment of model and conventional method of teaching in physical science among prospective teachers. New Horizons in Educational Research, 2(2), 20-24.
9. Bency, P.B.B, & Raja, B.W.D. (2011). Spirit of inquiry and social intelligence of prospective teachers. Social Science Reporter, 1(1), 60 - 63.
10. Bruhwiler, Christian & Blatchford, Peter. (2011). Effects of class size and adaptive teaching competency on classroom processes and academic outcome. Learning and Instruction, 21(1), 95 - 108.

****